स्थापित वि. संवत् १९३२ (१८७५ ई.)

शिमला व दिल्ली की दैनिक लग्न सारणी सहित

गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र पं. पन्ना लाल ज्योतिषी की असली व प्रामाणिक पंचाँग 2016-17 ई.

गौरवशाली 141 वाँ प्रकाशन वर्ष

स्थापित संवत् १९३२

मशहूरे आलम

पण्डित देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़

माई हीरां गेट (अड्डा होशियारपुर), जालन्धर शहर — 144008

एकमात्र वितरक :

जनरल बुक डिपो

चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर

फोन : 0181-2457959

मूल्य: ₹ 87/-

श्रीगणेशाय नमः

'पंचाँगदिवाकर' सम्बन्धी आवश्यक निर्देशन

यस्मिन् काले यतः खेटा यान्ति दृग्गणितैक्यताम्।
तत् एव स्फुटाः कार्याः दिक्कालौ स्फुटौ विदा॥ (वृहत् पाराशर)

अर्थात्–जिस पद्धति या सिद्धान्त से दृक्-गणितैक्य युक्त वेध-सिद्ध ग्रह स्पष्ट प्राप्त हों, उसी पद्धति का अनुसरण करना चाहिए। उसी के द्वारा स्पष्ट दिशा एवं ग्रह-स्पष्ट, कालादि साधन करने चाहिएं।

(1) इस पंचाँग का निर्माण ग्रीनविच से पूर्व रेखांश (Longitude) 75°/34'E तथा अक्षांश (Latitude) 31°/19'N, उत्तर के आधार पर किया गया है। पंचाँग में दिए गए तिथि, नक्षत्र, योगादि के मान एवं सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राशि-परिवर्तन (घड़ी-पलादि) में जालन्धर नगर के सूर्योदय अस्तादि का प्रयोग किया गया है।

(2) इस पंचाँग की गणित प्रक्रिया में सूक्ष्म दृक्-गणित एवं चित्रा-पक्षीय निरयण पद्धति का आश्रय लिया गया है। जोकि महर्षि पाराशर, केतकर, वसिष्ठ, भास्कराचार्य, पं. बापूदेव शास्त्री आदि प्राचीन एवं अर्वाचीन मनीषियों/ज्योतिष आचार्यों द्वारा अनुमोदित है। पंचाँग में दिए गए व्रत, पर्व एवं मुहूर्त्तों में प्रयुक्त तिथि, नक्षत्रादि की गणित शास्त्र सम्मत है तथा यह भारत सरकार द्वारा भी प्रमाणित एवं अनुमोदित है।

(3) पक्ष वाले पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय, सूर्यास्त भारतीय समयानुसार जालन्धर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण वक्री भवन-संस्कार रहित होने से सूर्योदयादिष्टादि बनाने में यही ग्राह्य होते हैं। प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में 3 मिनट घटावें और सूर्यास्त में जमा कर लेवें।

(4) तिथि, नक्षत्र, योग एवं करणों के सामने दिए गए घड़ी पल उनका सूर्योदय से समाप्तिकाल बतलाते हैं। उनके घड़ी पलों के घण्टे-मिनट बनाकर उसमें स्थानीय (अपने नगर) का सूर्योदय जमा कर देने तिथि-नक्षत्रों आदि का समाप्तिकाल भा. स्टैं. टाईम में निकल आएगा। पाठकों की सुविधा हेतु तिथि-नक्षत्रों एवं ग्रहों आदि के समाप्तिकाल भा. स्टै. टा. घंटा मिंटों में अलग से दिए गए हैं। जहाँ पर 24, 25, 26आदि अंक लिखे हैं। वहाँ 24 को रात्रि 12 बजे, 25 को रात्रि के 1 बजे, 26को रात्रि के 2 बजे जानें। इसी प्रकार आगे के अंकों में भी 24 घटा करके अर्ध रात्रि के बाद का समय जानें। जब तक आगामी दिवसीय सूर्योदय न हो, तब तक **भारतीय ज्योतिष शास्त्रानुसार पिछली तारीख** का दिन ही माना जाता है।

(5) दिनमान घड़ी पलों में है तथा दाएँ अंग्रेज़ी तारीख एवं देशीय प्रविष्टों के पश्चात् लस्टर में चन्द्र राशि-संचार भद्रा, पंचक आदि व सूर्यादि ग्रहों के नक्षत्र राशि प्रवेश, उदयास्तादि घड़ी पलों में दिए गए हैं। निर्दिष्ट घड़ी पलों को घण्टे मिनट बनाकर उन में स्थानीय सूर्योदय जमा करके उनको घं. मिं. भा. स्टै. टा. में परिवर्तित किया जा सकता है।

पंचांगदिवाकर के तिथि, नक्षत्र, योग, ग्रह-नक्षत्र प्रवेश आदि की गणित पं. पंकज शर्मा द्वारा विकसित Computer Programme से की जाती है।

ध्यान रखें– चंद्र संचार व सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र प्रवेश सूर्योदयात् प्रवेश काल है, न कि समाप्ति काल हैं। पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि, नक्षत्रादि के घंटा मिनट एवं **दैनिक ग्रह स्पष्ट भू-केन्द्रीय होने से भा. स्टैं. टा. में सर्वत्र भारतोपयोगी होंगे।** अन्तिम पृष्ठों पर भारत के मुख्य शहरों के भी सूर्योदयास्त दिए गए हैं। प्रतिवर्ष ज्योतिष सम्बन्धी नए-नए विषयों का समावेश किया जाता है।

(6) पक्ष वाले पृष्ठों में तिथि के नीचे 15 तिथि को पूर्णिमा तथा अमा. तिथि को 30 के अंकों से संकेत किया गया है। तिथि क्षय के आगे शून्य (०) के चिन्ह लगाए गए हैं तथा जहाँ कहीं, **नक्षत्र या योग का क्षय** हुआ है, उसे क्षय सहित दोनों नक्षत्रों (या योगों) को बारीक करके लिख दिया है। जहाँ तिथि, नक्षत्र या योग के आगे ६०।०० घड़ी लिखा है, उससे तिथि, नक्षत्रादि की वृद्धि समझें। वह तिथि, नक्षत्रादि अगले दिन तक व्याप्त रहेगा।

सुतभाव प्रकाश (भाषा-टीका)

संतान सुख की कामना प्रत्येक प्राणी में एक सहज एवं स्वाभाविक वृत्ति है। प्रकृति के सृष्टि संचालन के लिए सदियों से चला आ रहा यह एक ईश्वरीय विधान है। प्रत्येक प्राणी के हृदय में संतान सुख की कामना रहती है। गृहस्थ जीवन रूपी उपवन में संतान वृक्षों पर फल एवं पुष्पों की तरह होती है, जिनसे वृक्षों को सार्थकता मिलती है। संसार में ऐसा कोई दम्पत्ति नहीं होगा, जिसे संतान की चाहना न हो। सभी लोग श्रेष्ठ, योग्य एवं प्रतिभावान् संतान की कामना करते हैं।

गृहस्थ जीवन में पुत्र-पुत्री-यद्यपि दोनों के जन्म का अपना–अपना विशेष महत्त्व है। परन्तु भारतीय समाज में पुत्र जन्म को एक कर्त्तव्य के रूप में ग्रहण किया जाता है। भारतीय धर्म मान्यताओं के अनुसार देव-ऋषि, पितृ आदि ऋणों से मुक्ति हेतु तथा वंश परम्परा को चलाने के लिए पुत्रोत्पत्ति आवश्यक मानी जाती है। पुत्र प्राप्ति के लिए हमारे प्राचीन ज्योतिष एवं आयुर्वेदा[illegible] का वर्णन किया है, जिनका उल्लेख पुस्तक के भीतर [illegible] द्वारा पुत्र सन्तति प्राप्त करना, मंत्र जाप से पुत्र प्राप्ति, जपनीय मंत्र, श्री दुर्गासप्तशती पाठ से पुत्र सन्तति सुख, पितृ-मातृ आदिशाप की शान्ति एवं कालसर्प आदि दोषों के लिए उपाय, गर्भदोष निवारक उपाय, हरिवंश, भागवतादि सद्ग्रंथों [illegible] द्वारा एवं जड़ी/बूटी धारण एवं स्नान से संतान सुख तथा स्तोत्र पाठ से पुत्र संतान सुख लाभ होने के विविध उपाय दिए गए हैं। आशा है हमारे द्वारा उल्लिखित शास्त्रीय उपाय ज़रूरतमंद दम्पत्तियों तथा ज्योतिषियों के लिए लाभप्रद होंगे।

लेखक : पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

मूल्य-135 रु. वितरक–जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालंधर (पंजाब)

इस पंचांग का कापी राइट नं. A 27587/80 तथा Trade ... 584 भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड है।
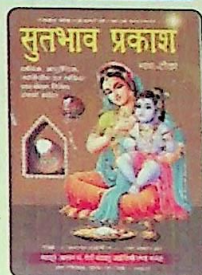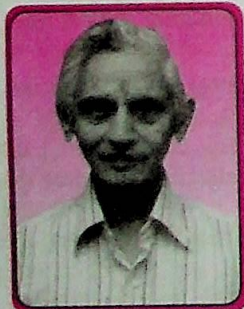
स्वर्गीय : पं. श्री पन्ना लाल ज्योतिषी

श्री गणेशाय नमः
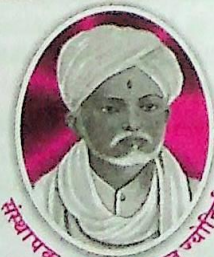
संस्थापक : पं. देवीदयालु ज्योतिषी

श्री सरस्वत्यै नमः
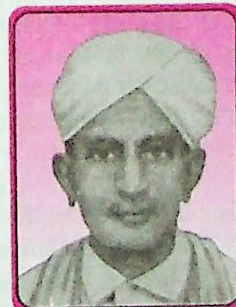
स्वर्गीय : पं. चूनी लाल ज्योतिषी

अखिल भारतोपयोगी चित्रापक्षीय दृक् गणिताधारित

पंचाँग दिवाकर

"सौम्य" नामक नया वि. संवत् पंचाँग दिवाकर के पाठकों के लिए शुभ एवं मंगलमय हो

वि. संवत् २०७३ (सन् 2016-17 ई.)

राजा शुक्र

मन्त्री बुध

शुद्ध एवं प्रामाणिक पंचाँग

मशहूरे आलम

पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़ (लाहौर वाले)

गौरवशाली प्रकाशन वर्ष १४१ वां

स्थापित वि. संवत् १९३२

लेखक एवं गणितकर्त्ता : पं. विवेक शर्मा (एम. ए. एल. एल. बी.) सह-संपादक : पं. पंकज शर्मा (एम. कॉम)

सुपुत्र: स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी प्रपौत्र पं. देवी दयालु ज्योतिषी

(ज्योतिष, कर्मकाण्ड सम्बन्धी अनेक ग्रन्थों के यशस्वी लेखक)

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर-144 008 (भारत) फोन नं. 0181-2457959

प्रकाशक : जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पं.) मोबाईल 094172-91325, 097799-13583

एक दिव्यात्मा को श्रद्धासुमन

[परम-श्रद्धेय स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी के निमित्त पाठकों के श्रद्धांजली संदेश]

विगत् वर्ष 15 मई, 2014 ई. को हमारे परमश्रद्धेय एवं सर्वस्व पंडित श्री पन्ना लाल जी का स्वर्गवास हो गया था। यह समाचार **'पंचांगदिवाकर'** के लाखों पाठकों को वि. संवत् 2072 के पंचांग से ही विदित हुआ। तदुपरान्त उनके हज़ारों की संख्या में शोक सन्देश, संवेदना पत्र एवं टैलीफोन प्राप्त हुए हैं। उनमें से कुछ-एक हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

वस्तुतः पिता रूपी वृक्ष को खोने का क्या दुःख होता है, इसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन ही है। यद्यपि संक्षेप में मैंने गतवर्ष कुछ शब्द लिखे थे। पिताजी (पं.) के विचार एवं लेखनकार्य हमारे बीच रहेंगे, जो उनके होने का अहसास दिलाएंगे। पिता का स्नेह और वात्सल्य रूपी कवच, जो जीवनभर हर आपदा में हमारी रक्षा करते हुए हमारा पालन-पोषण और जटिल परिस्थितियों में सही जीवन जीने की शिक्षा प्रदान करता है। वह छाया जो हमें सदैव निश्चिन्तिता का बोध देती थी, अब लुप्त है। पं. जी द्वारा लिखे रफ़ पृष्ठों/आध्यात्मिक पंक्तियों को भी सहेज कर रखने का मन करता है, जैसे उन्होंने अभी-अभी हमारे लिए ही लिखा हो। हमारे दैनिक जीवन में सचमुच एक शून्य पैदा हो गया है।

श्रद्धाञ्जली संदेश

(1) दैवज्ञ पं. श्री पन्ना लाल जी जैसी विभूति के असामयिक महाप्रयाण से ज्योतिष जगत् को अपूर्णीय क्षति हुई है। जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में असम्भव प्रतीत हो रही है। पं. देवीदयालु जी द्वारा प्रणीत व सुस्थापित पंचांग-प्रकाशन व लेखन की अटूट श्रृंखला को पं. पन्ना लाल जी ने उत्तरोत्तर वृद्धि की एवं अपनी सटीक भविष्यवाणियों तथा पुस्तक-लेखन से संस्थान की ख्याति को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ले गए। पं. जी जैसे **'सर्वभूतहित'** भाव रखने वाले के लिए जगत् में कुछ दुर्लभ नहीं था। पं. जी पर श्रीमद्भगवत्गीता के पंचम अध्याय का यह श्लोक सटीक घटित होता है—

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः। छिन्नद्वेधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।।

अर्थात् जिनके सब पाप नष्ट हो गये हैं, जिनके सब संशय ज्ञान के द्वारा निवृत्त हो गये हैं, जो सम्पूर्ण प्राणियों के हित में रत है और जिनका वश में किया हुआ मन निश्चलभाव से परमात्मा में स्थित है, वे ब्रह्मवेत्ता पुरुष शान्त ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

—पं. दिनेश शास्त्री (मानव कल्याण ज्योतिष प्रतिष्ठान), जाहू, भोरंज, ज़िला-हमीरपुर (हि.प्र.)

(2) भृगु ज्योतिष अनुसंधान संस्थान (रजि.), अम्बाला छावनी को दैवज्ञ पं. श्री पन्ना लाल ज्योतिषी जी के असामयिक निधन के हृदय विदीर्ण समाचार नये पंचांगदिवाकर से प्राप्त हुआ। संस्थान द्वारा उसी समय विशेष बैठक का आयोजन कर दिवंगत आत्मा के प्रति दो मिनट का मौन रख उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके गौरवमयी प्रभावशाली लेखन कला एवं भविष्यवाणियों को स्मरण किया गया। उन्होंने पंचांग में अपने लेख तथा पुस्तकों द्वारा भारतीय ज्योतिष जगत् में पर्व-त्यौहार की भ्रान्तियों बारे न केवल मार्गदर्शन, दिशा-निर्देश ही किया बल्कि ऐसे दुर्लभ सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जो कि लगभग विलुप्त प्रायः थे। उनकी विद्वता को देखते हुए ही संस्थान 2006 में उन्हें अम्बाला छावनी में सर्वश्रेष्ठ विद्वान के रूप में सम्मानित करके सभा गौरान्वित हुई थी। निःसन्देह दिवंगत आत्मा वैकुण्ठवासी है। गीता के 15वें अध्याय में भगवन् श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है कि जिस प्रकार वायु सुगन्ध को लेकर जाती है, उसी प्रकार शुद्ध जीवात्मा भी भगवान् के चरणों में निवास करती है। पंडित पन्नालाल जी द्वारा किए गए कार्य ही उनकी प्रामणिकता एवं दिव्यात्मा का बोध कराते हैं। आशा है कि पं. जी के दोनों सुयोग्य पुत्र पंचांग तथा अन्य कार्यों द्वारा अपनी वंश-परम्परा को और भी अधिक समृद्ध, गौरान्वित एवं प्रतिष्ठित करेंगे।

—पं. अशोक शास्त्री, पं. तिलकराज शर्मा एवं समस्त सदस्यगण (भृगु ज्योतिष अनुसंधान संस्थान (रजि.), पुल चमेली, अम्बाला छावनी (हरि.)

(3) पं. पन्ना लाल जी आधुनिक युग के **'जीवन्मुक्त निरक्त महात्मा'** थे। उनके कार्य, जीवन-दृष्टि और सादगी दीर्घकाल तक आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेंगी। आपके परिवार द्वारा पं. जी के निमित्त करवाई गयी श्रीभागवत् कथा के बारे में भी विदित हुआ। भागवत् में सत्य ही लिखा गया है—**धन्याभागवती वार्ता प्रेतपीडा विनाशिनी सप्ताहोऽपि तथा धन्यः कृष्णलोकफलप्रदः।।** (श्रीमद्भागवत् म. ५/५३)

अर्थात् धन्य है श्रीमद्भागवत् सप्ताह परायण की कथा जिससे जीव के जन्म-जन्मान्तरों के पाप विनाश हो जाते हैं और जीव कृष्ण लोक की प्राप्ति करता है। यथा—जो भी व्यक्ति अपने पितरों के निमित्त इस मुक्तिमयी कथा का सप्ताह परायण उनके वार्षिक श्राद्धादि पर करवाता है, उनके दश पूर्व एवं दश परा (पूर्वापरः) के वंशज मोक्ष प्राप्ति कर गोलोक धाम में वास करते हैं।

—पं. सुरेश कु. त्यागी, V.P.O.-दुन्दाहेरा, N.H. 24, बाईबास, गाज़ियाबाद (उ.प्र.)

(4) पंचांग क्रय करने पर पता चला कि माननीय पं. पन्ना लाल जी इस नश्वर संसार को छोड़ चुके हैं। मन बड़ा उदास हुआ। वे मेरे प्रिय मित्र थे। उनका स्वभाव अत्यन्त निर्मल एवं परोपकारी था। उनमें अभिमान लेश-मात्र भी नहीं था, वे बड़े सज्जन तथा विनम्र पुरुष थे। पं. पन्ना लाल जी को भी ज्योतिष क्षेत्र में सूर्य के समान चमकने के लिए सूर्य की तरह जलना पड़ा। वह एक महान् ज्योतिषी के साथ उच्च चरित्र, सरलता, ज्ञान का अथाह सागर और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे। इस दुःख के

समय में आपको सान्त्वना देता हूँ और प्रार्थना है कि इस दिव्यात्मा को परमात्मा अपने चरणों में स्थायी निवास दें।

–शोकसन्तप्त मित्र–पं. श्रीकण्ठ पाठक, भविष्यवाणी केन्द्र, S-33 (GF), ऐलडको ग्रीन मीडोस, ग्रेटर नौयडा, जिला–गौतमबुद्धनगर (उ.प्र.)

(6) पं. पन्ना लाल जी का जीवन असाधारण था। वह एक लेखक, ज्योतिषी के साथ–साथ अनन्य भक्त एवं आध्यात्मिक व्यक्ति थे। साधन–सम्पन्न होते हुए भी उनका पहरावा बिल्कुल साधारण था। उनकी वाणी में सचमुच सरलता व मधुरता थी। उनकी भविष्यावाणियां यूँ ही नहीं अक्षरशः सत्य निकलती थी।

–पं. पुरुषोत्तम दास, गाँव–देवक,–सुन्दरबनी (जानीपुर), जिला–राजौरी (ज.–का.)

(7) ब्राह्मण संगठन द्वारा दैवज्ञरत्न पं. पन्ना लाल जी के निधन का समाचार प्राप्त होने पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। पं. पन्ना लाल जी का जीवन देश एवं समाज को प्रेरणा देता रहेगा। उन्होंने शाण्डिल्य गोत्रीय पं. देवी दयालु नामक वंश–वृक्ष को पुष्पित किया, जिसकी सुगन्ध से उनका (शर्मा) परिवार ही नहीं, बल्कि पूरा समाज सुगन्धित (महका) हुआ है। उनके जैसा सरलहृदय व्यक्ति सचमुच दुर्लभ है। ईश्वरीय नियम या निर्देश मानते हुए उनके पदचिन्हों पर चलकर देश व समाज को ज्योतिष, कर्मकाण्ड, आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा नई दिशा व दशा देने की शक्ति ईश्वर उनके दोनों पुत्रों को दे तथा पूर्वजों की इस अनमोल सम्पत्ति को अक्षुण्ण बनाए रखेंगे।

–पं. लुदरमणी शर्मा (उपाध्यक्ष)–हिमाचल प्रदेश ब्राह्मण सभा, पटड़ीघाट, वाया–रिवालसर, ज़िला–मण्डी (हि.प्र.)

(8) पंचांगदिवाकर (जालन्धर) के प्रधान सम्पादक गणित, फलित, मन्त्रशास्त्र एवम् कर्मकाण्ड पर अनेक ग्रन्थों के लेखक पं. पन्ना लाल जी के आकस्मिक निधन से ज्योतिष जगत् को भारी आघात पहुँचा है। **'श्रीमार्तण्ड–पंचांग'** (कुराली) का सम्पादक परिवार उनके सुपुत्रों व पारिवारिक सदस्यों के प्रति शोक व्यक्त करता है। पं. पन्ना लाल जी बहुत मृदु, सरल प्रकृति के व्यक्ति एवं भारतीय संस्कृति के अनन्य भक्त थे। **'श्रीमार्तण्ड पञ्चांग'** सम्पादक मण्डल उनकी आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक सदस्यों को उनका विछोह सहन करने की शक्ति दे, यही ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति –सम्पादक मण्डल 'श्रीमार्तण्ड पञ्चांग, कुराली (मोहाली) पं.

(9) देश एवं समाज ने एक महान् विद्वान व आत्मा को खो दिया है। उनकी कर्त्तव्य–परायणता, चरित्र–बल, आचार–विचार, सामाजिक व्यवहारिकता, विनम्रता तथा आध्यात्मिक वैभव आदि सब गुणों ने मिलकर ही उनको एक महान् एवं सफल व्यक्ति बनाया। उनका नाम और विचार आने वाली पीढ़ियों को भी स्पंदित करते रहेंगे। वास्तव में वे अमर हैं। अमर होने का अर्थ है कि जब आप देह रूप में नहीं भी हैं, तो भी लोग आपके नाम की, आपकी कृति की प्रशंसा के साथ चर्चा करें और आपका नाम और जीवन दूसरों को वैसा ही अच्छा काम करने की प्रेरणा दें।

–पं. श्रीबृहजमोहन शर्मा (सरस्वती ज्योतिष कार्यालय), गाँव–बरना, ज़िला–पानीपत (हरि.)

(10) स्वर्गीय वैकुण्ठवासी पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी की पावन स्मृतियां, जीवन की अनुभूतियां, कृतियां व उपलब्धियां सदैव समाज का मार्गदर्शन करती रहेंगी। अपने प्रत्येक लेख में वह भारतीय सभ्यता/संस्कृति के प्राचीन स्वर उद्धृत करते थे। उन्होंने अनेक विलुप्त शास्त्रीय सिद्धान्तों की वैधता सिद्ध कर उन्हें फिर से पुर्नस्थापित कर ज्योतिष जगत् में मान्यता दिलाई और नए सूत्र व मान्यतायें प्रतिस्थापित कीं। वह भारत के समृद्ध रत्न, महान् भविष्यदृष्टा थे। उनका देहावसान सचमुच मानवता के लिए एक बड़ी क्षति है।

–श्रीअश्विनी कुमार शर्मा, 1438/B–2, मोहल्ला कबीर पंथी, पिंजौर, ज़िला–पंचकूला (हरि.)

इसके अतिरिक्त कार्यालय में अनेक निजी एवं संस्थाओं के शोक–सन्देश प्राप्त हुए। जिनका हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं तथा जिन सज्जनों का स्थानाभाव के कारण नाम प्रकाशित नहीं कर सके, सम्पादक–मण्डल क्षमा प्रार्थी हैं।

स्वर्गीय परमश्रद्धेय पं. श्रीपन्ना लाल ज्योतिषी जी की पुण्य स्मृति में श्रीमद्भागवत् कथा का आयोजन

'पञ्चांगदिवाकर' के आधार–स्तम्भ **'पं. पन्ना लाल जी'** का आकस्मिक देहावसान गतवर्ष 15 मई, 2014 ई. को हुआ था। पितरों के आशीर्वाद से उनकी पुण्यतिथि (6 अप्रै., 2015 ई.) के उपलक्ष्य में उनके परिवार द्वारा गृह में श्रीमद्भागवत महापुराण की पतित पावनी, भक्ति–ज्ञान–मोक्ष प्रदायिनी कथा का आयोजन किया गया। स्व. पं. पन्ना लाल जी समाज में सूर्य के समान प्रदीप्त थे। वस्तुतः उनकी दिव्यात्मा ने ही दुर्लभ मोक्षदायिनी भागवत् कथा करवाने की प्रेरणा दी। कथावाचक व्यासाचार्य श्रीमदन मोहन भट्ट (गंगोत्री–उत्तरकाशी) तथा मुख्य आचार्य श्रीदशरथ प्रसाद जी महाराज ने 31 मार्च, 2015 ई. से 6 अप्रैल, 2015 ई. तक प्रतिदिन भागवत् रूपी गंगा का प्रवाह किया। आचार्य पं. बनवारी प्रसाद शास्त्री, पं. ललित प्रसाद जी ने सभा का संचालन व प्रबन्ध किया। श्रीभद्भागवतकथा की रस–धारा का आस्वादन करते समय प्रेमी श्रोताओं की दृष्टि में सब ओर भगवान् की सच्चिदानन्दमयी लीला प्रकाशित हो गई और सर्वत्र श्रीकृष्णचन्द्र का साक्षात्कार होने लगा। सभी पारिवारिक सदस्यगणों को भी स्वयं ईश्वर के साथ–साथ पितृगणों का भी साक्षात्कार हुआ। दिनांक 6 अप्रैल, 2015 ई. को पितृभोज तथा वार्षिकी सम्बन्धी नैमित्तिक कार्य किए गए। वस्तुतः श्रीभागवत् कथा के माध्यम से दिव्यात्मा पण्डित जी हमारे हृदय में व्याप्त हैं। **ॐ पितृभ्यः नमः**

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥

('पञ्चांगदिवाकर' परिवार एवं सम्पादक मण्डल)

एक दिव्यात्मा को श्रद्धासुमन

[परम-श्रद्धेय स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी के निमित्त पाठकों के श्रद्धांजली संदेश]

विगत् वर्ष 15 मई, 2014 ई. को हमारे परमश्रद्धेय एवं सर्वस्व पंडित श्री पन्ना लाल जी का स्वर्गवास हो गया था। यह समाचार **'पंचांगदिवाकर'** के लाखों पाठकों को वि. संवत् 2072 के पंचांग से ही विदित हुआ। तदुपरान्त उनके हज़ारों की संख्या में शोक सन्देश, संवेदना पत्र एवं टैलीफोन प्राप्त हुए हैं। उनमें से कुछ-एक हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।

वस्तुतः पिता रूपी वृक्ष को खोने का क्या दुःख होता है, इसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन ही है। यद्यपि संक्षेप में मैंने गतवर्ष कुछ शब्द लिखे थे। पिताजी (पं.) के विचार एवं लेखनकार्य हमारे बीच रहेंगे, जो उनके होने का अहसास दिलाएंगे। पिता का स्नेह और वात्सल्य रूपी कवच, जो जीवनभर हर आपदा में हमारी रक्षा करते हुए हमारा पालन-पोषण और जटिल परिस्थितियों में सही जीवन जीने की शिक्षा प्रदान करता है। वह छाया जो हमें सदैव निश्चिन्तिता का बोध देती थी, अब लुप्त है। पं. जी द्वारा लिखे रफ़ पृष्ठों/आध्यात्मिक पंक्तियों को भी सहेज कर रखने का मन करता है, जैसे उन्होंने अभी-अभी हमारे लिए ही लिखा हो। हमारे दैनिक जीवन में सचमुच एक शून्य पैदा हो गया है।

श्रद्धाञ्जली संदेश

(1) दैवज्ञ पं. श्री पन्ना लाल जी जैसी विभूति के असामयिक महाप्रयाण से ज्योतिष जगत् को अपूर्णीय क्षति हुई है। जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में असम्भव प्रतीत हो रही है। पं. देवीदयालु जी द्वारा प्रणीत व सुस्थापित पंचांग-प्रकाशन व लेखन की अटूट श्रृंखला को पं. पन्ना लाल जी ने उत्तरोत्तर वृद्धि की एवं अपनी सटीक भविष्यवाणियों तथा पुस्तक-लेखन से संस्थान की ख्याति को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर ले गए। पं. जी जैसे **'सर्वभूतहित'** भाव रखने वाले के लिए जगत् में कुछ दुर्लभ नहीं था। पं. जी पर श्रीमद्भगवत्गीता के पंचम अध्याय का यह श्लोक सटीक घटित होता है-

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः। छिन्नद्वेधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।।

अर्थात् जिनके सब पाप नष्ट हो गये हैं, जिनके सब संशय ज्ञान के द्वारा निवृत्त हो गये हैं, जो सम्पूर्ण प्राणियों के हित में रत है और जिनका वश में किया हुआ मन निश्चलभाव से परमात्मा में स्थित है, वे ब्रह्मवेत्ता पुरुष शान्त ब्रह्म को प्राप्त होते हैं।

—पं. दिनेश शास्त्री (मानव कल्याण ज्योतिष प्रतिष्ठान), जाहू, भोरंज, ज़िला-हमीरपुर (हि.प्र.)

(2) भृगु ज्योतिष अनुसंधान संस्थान (रजि.), अम्बाला छावनी को दैवज्ञ पं. श्री पन्ना लाल ज्योतिषी जी के असामयिक निधन के हृदय विदीर्ण समाचार नये पंचांगदिवाकर से प्राप्त हुआ। संस्थान द्वारा उसी समय विशेष बैठक का आयोजन कर दिवंगत आत्मा के प्रति दो मिनट का मौन रख उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके गौरवमयी प्रभावशाली लेखन कला एवं भविष्यवाणियों को स्मरण किया गया। उन्होंने पंचांग में अपने लेख तथा पुस्तकों द्वारा भारतीय ज्योतिष जगत् में पर्व-त्यौहार की भ्रान्तियों बारे न केवल मार्गदर्शन, दिशा-निर्देश ही किया बल्कि ऐसे दुर्लभ सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया जो कि लगभग विलुप्त प्रायः थे। उनकी विद्वता को देखते हुए ही संस्थान 2006 में उन्हें अम्बाला छावनी में सर्वश्रेष्ठ विद्वान के रूप में सम्मानित करके सभा गौरान्वित हुई थी। निःसन्देह दिवंगत आत्मा वैकुण्ठवासी है। गीता के 15वें अध्याय में भगवन् श्रीकृष्ण ने स्वयं कहा है कि जिस प्रकार वायु सुगन्ध को लेकर जाती है, उसी प्रकार शुद्ध जीवात्मा भी भगवान् के चरणों में निवास करती है। पंडित पन्नालाल जी द्वारा किए गए कार्य ही उनकी प्रामणिकता एवं दिव्यात्मा का बोध कराते हैं। आशा है कि पं. जी के दोनों सुयोग्य पुत्र पंचांग तथा अन्य कार्यों द्वारा अपनी वंश-परम्परा को और भी अधिक समृद्ध, गौरान्वित एवं प्रतिष्ठित करेंगे।

—पं. अशोक शास्त्री, पं. तिलकराज शर्मा एवं समस्त सदस्यगण
(भृगु ज्योतिष अनुसंधान संस्थान (रजि.), पुल चमेली, अम्बाला छावनी (हरि.)

(3) पं. पन्ना लाल जी आधुनिक युग के **'जीवन्मुक्त निरक्त महात्मा'** थे। उनके कार्य, जीवन-दृष्टि और सादगी दीर्घकाल तक आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेंगी। आपके परिवार द्वारा पं. जी के निमित्त करवाई गयी श्रीभागवत् कथा के बारे में भी विदित हुआ। भागवत् में सत्य ही लिखा गया है-**धन्याभागवती वार्ता प्रेतपीडा विनाशिनी सप्ताहोऽपि तथा धन्यः कृष्णलोकफलप्रदः।।** (श्रीमद्भागवत् म. ५/५३)

अर्थात् धन्य है श्रीमद्भागवत् सप्ताह परायण की कथा जिससे जीव के जन्म-जन्मान्तरों के पाप विनाश हो जाते हैं और जीव कृष्ण लोक की प्राप्ति करता है। यथा-जो भी व्यक्ति अपने पितरों के निमित्त इस मुक्तिमयी कथा का सप्ताह परायण उनके वार्षिक श्राद्धादि पर करवाता है, उनके दश पूर्व एवं दश परा (पूर्वापरः) के वंशज मोक्ष प्राप्ति कर गोलोक धाम में वास करते हैं।

—पं. सुरेश कु. त्यागी, V.P.O.-दुन्दाहैरा, N.H. 24, बाईबास, गाज़ियाबाद (उ.प्र.)

(4) पंचांग क्रय करने पर पता चला कि माननीय पं. पन्ना लाल जी इस नश्वर संसार को छोड़ चुके हैं। मन बड़ा उदास हुआ। वे मेरे प्रिय मित्र थे। उनका स्वभाव अत्यन्त निर्मल एवं परोपकारी था। उनमें अभिमान लेश-मात्र भी नहीं था, वे बड़े सज्जन तथा विनम्र पुरुष थे। पं. पन्ना लाल जी को भी ज्योतिष क्षेत्र में सूर्य के समान चमकने के लिए सूर्य की तरह जलना पड़ा। वह एक महान् ज्योतिषी के साथ उच्च चरित्र, सरलता, ज्ञान का अथाह सागर और दृढ़ निश्चयी व्यक्ति थे। इस दुःख के

समय में आपको सान्त्वना देता हूँ और प्रार्थना है कि इस दिव्यात्मा को परमात्मा अपने चरणों में स्थायी निवास दें।

—शोकसन्तप्त मित्र—पं. श्रीकण्ठ पाठक, भविष्यवाणी केन्द्र, S-33 (GF), ऐलडको ग्रीन मीडोस, ग्रेटर नौयडा, जिला—गौतमबुद्धनगर (उ.प्र.)

(6) पं. पन्ना लाल जी का जीवन असाधारण था। वह एक लेखक, ज्योतिषी के साथ—साथ अनन्य भक्त एवं आध्यात्मिक व्यक्ति थे। साधन—सम्पन्न होते हुए भी उनका पहरावा बिल्कुल साधारण था। उनकी वाणी में सचमुच सरलता व मधुरता थी। उनकी भविष्यवाणियां यूँ ही नहीं अक्षरशः सत्य निकलती थी।

—पं. पुरुषोत्तम दास, गाँव—देवक,—सुन्दरबनी (जानीपुर), जिला—राजौरी (ज.—का.)

(7) ब्राह्मण संगठन द्वारा देवज्ञरत्न पं. पन्ना लाल जी के निधन का समाचार प्राप्त होने पर उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए गए। पं. पन्ना लाल जी का जीवन देश एवं समाज को प्रेरणा देता रहेगा। उन्होंने शाण्डिल्य गोत्रीय पं. देवी दयालु नामक वंश—वृक्ष को पुष्पित किया, जिसकी सुगन्ध से उनका (शर्मा) परिवार ही नहीं, बल्कि पूरा समाज सुगन्धित (महका) हुआ है। उनके जैसा सरलहृदय व्यक्ति सचमुच दुर्लभ है। ईश्वरीय नियम या निर्देश मानते हुए उनके पदचिन्हों पर चलकर देश व समाज को ज्योतिष, कर्मकाण्ड, आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा नई दिशा व दशा देने की शक्ति ईश्वर उनके दोनों पुत्रों को दे तथा पूर्वजों की इस अनमोल सम्पत्ति को अक्षुण्ण बनाए रखेंगे।

—पं. लुदरमणी शर्मा (उपाध्यक्ष)—हिमाचल प्रदेश ब्राह्मण सभा, पटड़ीघाट, वाया—रिवालसर, ज़िला—मण्डी (हि.प्र.)

(8) पंचांगदिवाकर (जालन्धर) के प्रधान सम्पादक गणित, फलित, मन्त्रशास्त्र एवम् कर्मकाण्ड पर अनेक ग्रन्थों के लेखक पं. पन्ना लाल जी के आकस्मिक निधन से ज्योतिष जगत् को भारी आघात पहुँचा है। **'श्रीमार्तण्ड—पंचांग'** (कुराली) का सम्पादक परिवार उनके सुपुत्रों व पारिवारिक सदस्यों के प्रति शोक व्यक्त करता है। पं. पन्ना लाल जी बहुत मृदु, सरल प्रकृति के व्यक्ति एवं भारतीय संस्कृति के अनन्य भक्त थे। **'श्रीमार्तण्ड पञ्चांग'** सम्पादक मण्डल उनकी आत्मा की शान्ति एवं पारिवारिक सदस्यों को उनका विछोह सहन करने की शक्ति दे, यही ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति —सम्पादक मण्डल 'श्रीमार्तण्ड पञ्चांग, कुराली (मोहाली) पं.

(9) देश एवं समाज ने एक महान् विद्वान व आत्मा को खो दिया है। उनकी कर्त्तव्य—परायणता, चरित्र—बल, आचार—विचार, सामाजिक व्यवहारिकता, विनम्रता तथा आध्यात्मिक वैभव आदि सब गुणों ने मिलकर ही उनको एक महान् एवं सफल व्यक्ति बनाया। उनका नाम और विचार आने वाली पीढ़ियों को भी स्पंदित करते रहेंगे। वास्तव में वे अमर हैं। अमर होने का अर्थ है कि जब आप देह रूप में नहीं भी हैं, तो भी लोग आपके नाम की, आपकी कृति की प्रशंसा के साथ चर्चा करें और आपका नाम और जीवन दूसरों को वैसा ही अच्छा काम करने की प्रेरणा दें।

—पं. श्रीबृहजमोहन शर्मा (सरस्वती ज्योतिष कार्यालय), गाँव—बरना, ज़िला—पानीपत (हरि.)

(10) स्वर्गीय वैकुण्ठवासी पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी की पावन स्मृतियां, जीवन की अनुभूतियां, कृतियां व उपलब्धियां सदैव समाज का मार्गदर्शन करती रहेंगी। अपने प्रत्येक लेख में वह भारतीय सभ्यता/संस्कृति के प्राचीन स्वर उद्धृत करते थे। उन्होंने अनेक विलुप्त शास्त्रीय सिद्धान्तों की वैधता सिद्ध कर उन्हें फिर से पुर्नस्थापित कर ज्योतिष जगत् में मान्यता दिलाई और नए सूत्र व मान्यतायें प्रतिस्थापित कीं। वह भारत के समृद्ध रत्न, महान् भविष्यदृष्टा थे। उनका देहावसान सचमुच मानवता के लिए एक बड़ी क्षति है।

—श्रीअश्विनी कुमार शर्मा, 1438/B—२, मोहल्ला कबीर पंथी, पिंजौर, ज़िला—पंचकूला (हरि.)

इसके अतिरिक्त कार्यालय में अनेक निजी एवं संस्थाओं के शोक—सन्देश प्राप्त हुए। जिनका हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं तथा जिन सज्जनों का स्थानाभाव के कारण नाम प्रकाशित नहीं कर सके, सम्पादक—मण्डल क्षमा प्रार्थी हैं।

स्वर्गीय परमश्रद्धेय पं. श्रीपन्ना लाल ज्योतिषी जी की पुण्य स्मृति में श्रीमद्भागवत् कथा का आयोजन

'पञ्चांगदिवाकर' के आधार—स्तम्भ **'पं. पन्ना लाल जी'** का आकस्मिक देहावसान गतवर्ष 15 मई, 2014 ई. को हुआ था। पितरों के आशीर्वाद से उनकी पुण्यतिथि (6 अप्रै., 2015 ई.) के उपलक्ष्य में उनके परिवार द्वारा गृह में श्रीमदभागवत महापुराण की पतित पावनी, भक्ति—ज्ञान—मोक्ष प्रदायिनी कथा का आयोजन किया गया। स्व. पं. पन्ना लाल जी समाज में सूर्य के समान प्रदीप्त थे। वस्तुतः उनकी दिव्यात्मा ने ही दुर्लभ मोक्षदायिनी भागवत् कथा करवाने की प्रेरणा दी। कथावाचक व्यासाचार्य श्रीमदन मोहन भट्ट (गंगोत्री—उत्तरकाशी) तथा मुख्य आचार्य श्रीदशरथ प्रसाद जी महाराज ने 31 मार्च, 2015 ई. से 6 अप्रैल, 2015 ई. तक प्रतिदिन भागवत् रूपी गंगा का प्रवाह किया। आचार्य पं. बनवारी प्रसाद शास्त्री, पं. ललित प्रसाद जी ने सभा का संचालन व प्रबन्ध किया। श्रीभद्भागवतकथा की रस—धारा का आस्वादन करते समय प्रेमी श्रोताओं की दृष्टि में सब ओर भगवान् की सच्चिदानन्दमयी लीला प्रकाशित हो गई और सर्वत्र श्रीकृष्णचन्द्र का साक्षात्कार होने लगा। सभी पारिवारिक सदस्यगणों को भी स्वयं ईश्वर के साथ—साथ पितृगणों का भी साक्षात्कार हुआ। दिनांक 6 अप्रैल, 2015 ई. को पितृभोज तथा वार्षिकी सम्बन्धी नैमित्तिक कार्य किए गए। वस्तुतः श्रीभागवत् कथा के माध्यम से दिव्यात्मा पण्डित जी हमारे हृदय में व्याप्त हैं। ॐ पितृभ्यः नमः

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः।।

('पञ्चांगदिवाकर' परिवार एवं सम्पादक मण्डल)

विषय-सूची-पंचांगदिवाकर-संवत् २०७३ (सन् 2016-17 ई.)

इस वर्ष के कुछ नवीन, उपयोगी एवं आकर्षक विषय

आगामी वर्ष के आकर्षक विषय

- मिलान एवं मुहूर्त्तों सम्बन्धी अनेक आकर्षक एवं सारगर्भित विषय।
- उपायों सम्बन्धी भी विशेष लेख दिए जाएंगे।

पंचाँग दिवाकर के १४१वें गौरवमयी वर्ष प्रवेश पर

अनन्त श्री विभूषित

श्री श्री १००८ काशी धर्म पीठाधीश्वर
जगद् गुरु शंकराचार्य
स्वामी नारायणानन्द तीर्थ
महाराज जी का
शुभाशीर्वाद

भारतीय पञ्चाङ्ग पद्धतिरस्माकं हिन्दु-सभ्यताया: गौरवान्विताया: समृद्धयाश्च संस्कृतेर-भिव्यंजनां करोति।

शताधिकवर्षेभ्य: प्राक् गणिताचार्येण सु-प्रसिद्धेन ज्योतिर्विद पण्डित देवीदयाल महाभागेन लवपुरे संस्थापितं प्रकाशितं च प्रसिद्धं लोकप्रियं च पञ्चाङ्गदिवाकरम् आगामिवर्षे निज १२५तमे वर्षे प्रवेशं लभमानमस्ति। सम्प्रति तस्यैव पण्डितप्रवरस्य प्रपौत्र: गणिताचार्य: पण्डित पन्नालाल शर्मा ज्योतिर्विद् निज सुयोग्य पुत्र द्वयमाध्ययेन पञ्चाङ्ग कार्ये शुद्धस्फुटसूक्ष्म-गणितागत चित्रापक्षीय निरयणपद्धतिमनुसरन् पञ्चाङ्गदिवाकरस्य लेखनं सम्पादनं च कुर्वन्नस्ति। नवीने पञ्चाङ्गदिवाकरे ज्योतिष: व्रतपर्वादि धर्मशास्त्र विषयकानामु-पयोगिविषयानां च समावेशनात् पञ्चाङ्ग दिवाकरं सम्प्रति सर्वविधर्मपरायण जनसामान्यस्य कृते सुतरामु-पेयोगी प्रतीयते।

आशस्यते यद् लोकहितं सम्मुखीनं कृत्वा निज कुल परम्परा परिपालने पण्डित पन्ना लाल ज्योतिर्विद् निज सुपुत्रयो: सहयोगेन पञ्चाङ्गमिदमतोऽप्यधिकं उपयोगिनं कर्तुं प्रयासरतो भविष्यति। अस्य प्रचुर: प्रचार: प्रसारश्च भवेत् अस्योन्नतिं सुतरां कामय-मान: शुभाशीरपि कामये।

तिथौ
वैशाख पूर्णिमा, भृगुवासर:
प्रविष्टे १७ वैशाख, सं. २०५६ विक्रमी
श्री हस्त-मुद्रा-
१००८ स्वामी नारायणान्द तीर्थ रामेश्वर मठ:
श्री काशी धर्मपीठाधीश्वर काशीक्षेत्रम् (वाराणसी)

Choice Boos & Printers (P) Ltd. F-19, Focal Point Ext; Jalandhar City.

सर्वकल्याणकारी शास्त्र वचन

[दैवज्ञ स्वर्गीय पं. श्री पन्ना लाल ज्योतिषी जी की व्यक्तिगत डायरी में से उद्धृत]

दिव्यात्मा पण्डित पन्ना लाल जी महान् ज्योतिर्विद के साथ धर्म, शास्त्र एवं आध्यात्म अनुरागी भी थे। उनके जीवनाचार्य में प्रमुख उद्देश्य स्वाध्याय एवं सत्संग श्रवण ही था। साथ-ही-साथ वे जहाँ से भी अनमोल वाक्य, शास्त्र-वचन एवं आध्यात्मिक प्रवचन श्रवण अथवा पढ़ते, उन्हें अपने रजिस्टर/डायरियों में लिख लेते थे। उन्हीं के हस्तलिखित प्रवचनों/अनमोल वाक्यों में से हम गतवर्ष की भान्ति यहाँ कुछ अंश प्रकाशित कर रहे हैं। ये वाक्य संग्रह तत्वज्ञ तथा आध्यात्मिक चेतना-पुरुष पण्डित जी द्वारा अभिव्यक्त अनेक लौकिक एवं पारलौकिक (आध्यात्मिक) विषयों पर सरल, सुबोध भाषा में शास्त्रानुमोदित, स्वानुभूत विचारों और सिद्धान्तों का दिग्दर्शन है। हमें विश्वास है कि सभी कल्याणकामी सत्पुरुषों के लिए पं. जी की प्रेरणाप्रद व आध्यात्मिक बातें उपयोगी मार्गदर्शक सिद्ध होंगी।

(1) यह सारा जगत् स्नेह (मोह) की रज्जू (रस्सी) से बन्धा हुआ है। कहाँ यह पंचभूतों से बना अनात्मा शरीर और कहाँ प्रकृति से परे आत्मा ? न किसी का कोई पति है, न पुत्र है और न ही सम्बन्धी है। मोह ही मनुष्य को नचा रहा है। (श्रीमद्भागवत्) (मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि भगवान् की भक्ति कभी व्यर्थ नहीं होती।)

(2) **तुल्यन्दिास्तुतिः मौनी सन्तुष्टो येन्केनचित्।**
अनिकेतः स्थिरमतिः भक्तिमान मे प्रियः नरः।। (गीता १२/१९)

अर्थात् जो निन्दा-स्तुति को समान समझने वाला और जिस किसी स्थिति में भी सदा सन्तुष्ट एवं मौन है और रहने के स्थान में आसक्ति एवं ममता रहित है, ऐसा स्थिर बुद्धि और भक्तिमान पुरुष मुझको प्रिय है।

(3) भय को छोड़े (निर्भय होकर जिएँ सम्पूर्ण जीवन को)

जीवन में डर दो तरह से बना रहता है। पहला-हम जो चाहते है, वह मिल ही जाए। हमारा पूरा व्यक्तित्व चिन्तित रहता है कि यदि न मिला तो क्या होगा ? इसे कहते हैं, न मिलने का डर।।

दूसरा कारण यह कि जो हमारे पास है, वह कहीं खो न जाए। समान्यजन 'प्राप्त-अप्राप्त' इन दोनों से ही भयभीत रहता है।

हमारा आत्मतत्त्व जिसने प्राणों को धारण किया हुआ है, जन्म के समय में भी हमारे पास था, युवावस्था में भी था और अब प्रौढ़ावस्था में भी है। अतएव, हम वस्तुओं के रहने या खोने का भय छोड़े और अपने अस्तित्व में बसते हुए निर्भय होकर जीवन बताएं। जैसे श्रीराम को वनवास जाते समय किंचित् भी क्षोभ नहीं था, न कुछ खोने का-न पाने का, क्योंकि वे निज स्वरूप में स्थित थे।

(4) जीवन-यात्रा उसी की सफल होती है, जो मानसिक रूप से अपने गृह में पहुँच जाए तो जीवन मुक्त है। जीवन की लालसा ही जीवन-मृत्यु के भय से आक्रान्त है।

(5) **मातृवत्परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्।**
आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः।।

अर्थात् जो मनुष्य परायी स्त्रियों में मातृभाव रखता है, जो दूसरों के द्रव्यों को मिट्टी-पत्थर के ढेले के समान नगण्य समझता है, और सभी प्राणियों में अपने ही स्वरूप का दर्शन (आत्मदर्शन) करता है, वही पण्डित अर्थात् विद्वान है।

(6) **बन्धन और मोक्ष–**

द्वे पक्षे बन्धमोक्षाय न ममेति ममेति च।
ममेति बध्यते जन्तुः न ममेति प्रमुच्यते।।

अर्थात् बन्धन और मोक्ष के लिए इस संसार में दो ही पद हैं-एक पद है 'यह मेरा नहीं है', दूसरा पद है-'यह मेरा है' (ममेति)। मेरा है-इस ज्ञान से वह बन्ध जाता है और यह मेरा नहीं है-इस ज्ञान से वह मुक्त हो जाता है।

(7) देवपूजा सम्बन्धी विशेष ज्ञातव्य नियम–

- पानी (जल), दूध, दही, घी आदि में अँगूठा, अंगुलियां नहीं डालनी चाहिए। उन्हें कटोरी, लोटा, चम्मच आदि से ग्रहण करना चाहिए क्योंकि नाखुन स्पर्श से वस्तु अपवित्र हो जाती है। फिर ये वस्तुएँ देवपूजा के योग्य नहीं रहती है।
- देवताओं को चकले पर से चन्दन आदि घिसकर सीधे तिलक न करें, बल्कि चन्दनादि को चाँदी, पत्थरादि की छोटी कटोरी में या बाईं हथेली पर रखकर मन्त्रपूर्वक तिलक लगावें।
- पूजा के फूलों को पानी की बाल्टी, लोटा, जल में डालकर, फिर निकालकर नहीं चढ़ाना चाहिए।
- आचमन करने से मानसिक व शारीरिक शुद्धि होती है। होम, भोजन एवं दोनों सन्ध्याकाल में आचमन करने के पश्चात् पुनः आचमन करें, अन्यत्र केवल एक बार आचमन करें–

होमे भोजनकाले च सन्ध्ययोरूभयोरपि।
आचान्तः पुनराचमेद्रन्यत्रापि सकृत सकृत।।

किसी कारणवश आचमन न हो, तो मन्त्रपूर्वक दाहिना कान का स्पर्श करने पर भी आचमन के तुल्य माना जाता है। (आचमन करने से त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु, महेश प्रसन्न होते हैं।)

प्रमुख पर्व-त्यौहार, व्रत एवं छुट्टियाँ (सन् 2016-17 ई.)

» जनवरी 2016 ई. »

पर्व	तिथि
इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शुक्र
लोहड़ी पर्व	13 जन. बुध
मकर (माघ) संक्रान्ति	14 जन. गुरु
पुण्यस्नानादि माघ सं.	15 जन. शुक्र
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	16 जन. शनि
पुत्रदा एकादशी व्रत	20 जन. बुध
पौष पूर्णिमा	23 जन. शनि
माघस्नान प्रारम्भ	23 जन. शनि
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. मंग.
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	27 जन. बुध

» फरवरी »

पर्व	तिथि
माघ (मौनी) अमावस	8 फर. चंद्र
सोमवती अमावस	8 फर. चंद्र
महोदय योग (14/22 तक)	8 फर. चंद्र
गौरी तृतीया (गोंतरी)	11 फर. गुरु
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	11 फर. गुरु
वसन्त पंचमी, श्री ५	12 फर. शुक्र
सरस्वती पूजन	12 फर. शुक्र
रथ-आरोग्य सप्तमी	14 फर. रवि
भीष्माष्टमी	15 फर. चंद्र
भीष्म द्वादशी, तिल १२	19 फर. शुक्र
माघ पूर्णिमा	22 फर. चंद्र
माघस्नान समाप्त	22 फर. चंद्र
श्रीगुरु रविदास जयंती	22 फर. चंद्र

» मार्च »

पर्व	तिथि
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	7 मार्च चंद्र
खण्डग्रास सूर्यग्रहण	9 मार्च बुध
होलाष्टक प्रारम्भ	16 मार्च बुध
अन्नपूर्णा-अष्टमी	16 मार्च बुध
गोविन्द द्वादशी	19 मार्च शनि
महाविषुव दिवस	20 मार्च रवि
अर्द्धकुंभी स्नान प्रा. (हरिद्वार)	20 मार्च रवि
होलिका दहन	23 मार्च बुध
होलाष्टक समाप्त	23 मार्च बुध
पूर्णिमा, होली (पं.)	23 मार्च बुध
वसन्तोत्सव, होली (उ.प्र.)	24 मार्च गुरु
होला मेला (श्रीआनन्दपुर-व पांओटा साहिब)	24 मार्च गुरु
गुड फ्राईडे (क्रिश्चि.)	25 मार्च शुक्र

» अप्रैल »

पर्व	तिथि
शीतलाष्टमी व्रत	1 अप्रै. शुक्र
वारुणी पर्व	5 अप्रै. मंग.
वि. संवत् 2072 पूर्ण	7 अप्रै. गुरु
वि. संवत् 2073 प्रा.	8 अप्रै. शुक्र
चैत्र (वासन्त) नवरात्रे प्रा.	8 अप्रै. शुक्र
गौरी तृतीया (गणगौर)	9 अप्रै. शनि
श्री (लक्ष्मी) पंचमी	11 अप्रै. चंद्र
स्कन्द षष्ठी	12 अप्रै. मंग.
वैशाख संक्रां. (वैशाखी)	13 अप्रै. बुध
अर्द्धकुम्भी स्नान (हरिद्वार)	13 अप्रै. बुध
श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति	14 अप्रै. गुरु
अशोकाष्टमी	14 अप्रै. गुरु
श्रीरामनवमी	15 अप्रै. शुक्र
वासन्त नवरात्रे समा.	15 अप्रै. शुक्र
नवरात्र व्रत पारणा	16 अप्रै. शनि
विष्णुदमनोत्सव	18 अप्रै. चंद्र
अनङ्ग त्रयोदशी व्रत	19 अप्रै. मंग.
श्रीमहावीर जयन्ती	19 अप्रै. मंग.
शिवदमनोत्सव	20 अप्रै. बुध
वैशाखस्नान प्रा., चैत्र पूर्णिमा	22 अप्रै. शुक्र

» मई »

पर्व	तिथि
मई (मजदूर) दिवस	1 मई रवि
भगवान् परशुराम जयं.	8 मई रवि
अक्षय-तृतीया	9 मई चंद्र
आद्यगुरु शंकराचार्य जयं.	11 मई बुध
श्रीगङ्गा जयन्ती	12 मई गुरु
जानकी जयं. (सीता ९)	14 मई शनि
बगुलामुखी जयन्ती	14 मई शनि
श्रीनृसिंह जयन्ती	20 मई शुक्र
श्रीकूर्म जयन्ती	21 मई शनि
वैशाख-बुद्ध पूर्णिमा	21 मई शनि
वैशाख स्नान समाप्त	21 मई शनि
कुम्भ महापर्व (उज्जैन) -मुख्य शाही स्नान	21 मई शनि

» जून »

पर्व	तिथि
अपरा-भद्रकाली एकादशी	1 जून बुध
शनैश्चर जयन्ती	4 जून शनि
वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष)	4 जून शनि
ज्येष्ठ (भावुका) अमा.	5 जून रवि
रम्भा तृतीया व्रत	7 जून मंग.
विन्ध्यवासिनी पूजा	10 जून शुक्र
श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयं.	12 जून रवि
श्रीगङ्गा दशहरा (हरिद्वार)	14 जून मंग.
निर्जला एकादशी व्रत	16 जून गुरु
वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा)	19 जून रवि
सन्त कबीर जयन्ती	20 जून चंद्र
सायन दक्षिणायन प्रा.	20 जून चंद्र

» जुलाई »

पर्व	तिथि
आषा. सोमवती अमा.	4 जुला. चंद्र
श्रीजगन्नाथ यात्रा (पुरी)	6 जुला. बुध
कुमार-षष्ठी	9 जुला. शनि
विवस्वत सप्तमी	11 जुला. चंद्र
हरिशयनी एकादशी	15 जुला. शुक्र
चातुर्मास्य व्रतनियम प्रा.	15 जुला. शुक्र
श्रीविष्णु शयनोत्सव	15 जुला. शुक्र
शिवशयनोत्सव	19 जुला. मंग.
कोकिला व्रत	19 जुला. मंग.
गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा	19 जुला. मंग.

» अगस्त »

पर्व	तिथि
हरियाली (भौम) अमा.	2 अग. मंग.
मे. चिन्तपूर्णी(हि.प्र.)प्रा.	3 अग. बुध
मधुस्त्रवा-हरियाली तीज	5 अग. शुक्र
नाग-पंचमी	7 अग. रवि
श्रीदुर्गाष्टमी (मे. चिन्तपूर्णी)	11 अग. गुरु
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. चंद्र
ऋक् उपाकर्म	17 अग. बुध
श्रावण पूर्णिमा	18 अग. गुरु
रक्षा-बन्धन (राखी)	18 अग. गुरु
श्रावणी उपाकर्म	18 अग. गुरु
कजली तृतीया	20 अग. शनि
श्रीगणेश (बहुला) चतुर्थी	21 अग. रवि
चन्दन षष्ठी व्रत	23 अग. मंग.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत(स्मा.)	24 अग. बुध
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वैष्ण.)	25 अग. गुरु
गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव	25 अग. गुरु
दूर्वाष्टमी व्रत	25 अग. गुरु
श्रीगुग्गा नवमी	26 अग. शुक्र
वत्स द्वादशी (पूजा)	29 अग. चंद्र

» सितम्बर »

पर्व	तिथि
कुशाग्रहणी-पिठोरी अमा.	1 सितं. गुरु
साम उपाकर्म	4 सितं. रवि
हरितालिका तृतीया	4 सितं. रवि
सिद्धि विनायक व्रत	5 सितं. चंद्र
कलंक-चतुर्थी, पत्थर चौथ	5 सितं. चंद्र
ऋषि-पंचमी पर्व	6 सितं. मंग.
सूर्य षष्ठी व्रत	7 सितं. बुध
सन्तान सप्तमी व्रत	8 सितं. गुरु
श्रीराधाष्टमी	9 सितं. शुक्र
श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रा.	9 सितं. शुक्र
श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन)	10 सितं. शनि
श्रीवामन-जयन्ती	13 सितं. मंग.
अनन्त चतुर्दशी व्रत	15 सितं. गुरु
मेला बाबा सोढल (जालं.)	15 सितं. गुरु
प्रोष्ठपदी, पूर्णिमा श्राद्ध	16 सितं. शुक्र
पितृपक्ष (श्राद्ध) प्रा.	17 सितं. शनि
श्रीमहालक्ष्मी व्रत समा.	23 सितं. शुक्र
महालय श्राद्ध समाप्त	30 सितं. शुक्र
सर्वपितृ श्राद्ध	30 सितं. शुक्र

» अक्तूबर »

पर्व	तिथि
शरद् नवरात्रे शुरु	1 अक्तू. शनि
महात्मा गाँधी जयं.	2 अक्तू. रवि
उपाङ्ग ललिता व्रत	6 अक्तू. गुरु
सरस्वती आवाहन	7 अक्तू. शुक्र
सरस्वती पूजन	9 अक्तू. रवि
श्रीदुर्गाष्टमी	9 अक्तू. रवि
सरस्वती बलिदान	10 अक्तू. चंद्र
सरस्वती विसर्जन(श्रवणे)	10 अक्तू. चंद्र
महानवमी, नवरात्रे समा.	10 अक्तू. चंद्र
विजयादशमी (दशहरा)	11 अक्तू. मंग.
भरत-मिलाप	12 अक्तू. बुध
शरद् पूर्णिमा व्रत	15 अक्तू. शनि
कोजागर व्रत	15 अक्तू. शनि
महर्षि वाल्मीकि जयं.	16 अक्तू. रवि
कार्तिक स्नान प्रा.	16 अक्तू. रवि
व्रत करवा-चौथ	19 अक्तू. बुध
अहोई अष्टमी व्रत	22 अक्तू. शनि
गोवत्स द्वादशी	26 अक्तू. बुध
धन त्रयोदशी	28 अक्तू. शुक्र
श्रीहनुमान जयं. (उ.भा.)	28 अक्तू. शुक्र
नरक चतुर्दशी	29 अक्तू. शनि
श्रीमहालक्ष्मी पूजन	30 अक्तू. रवि
दीपावली	30 अक्तू. रवि
विश्वकर्मा दिवस (पं.)	31 अक्तू. चंद्र
अन्नकूट, गोवर्धन पूजन	31 अक्तू. चंद्र

» नवम्बर »

पर्व	तिथि
यम-द्वितीया, भाई-दूज	1 नवं. मंग.
विश्वकर्मा पूजन	1 नवं. मंग.
सूर्य षष्ठी (विहार)	6 नवं. रवि
गोपाष्टमी	8 नवं. मंग.
अक्षय नवमी	9 नवं. बुध
भीष्मपंचक प्रारम्भ	10 नवं. गुरु
हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वै.)	11 नवं. शुक्र

चातुर्मास्य व्रतादि समा.	11 नवं. शुक्र
तुलसी विवाह	11 नवं. शुक्र
वैकुण्ठ चतुर्दशी	13 नवं. रवि
कार्तिक पूर्णिमा	14 नवं. चंद्र
श्रीगुरु नानक जयंती	14 नवं. चंद्र
भीष्मपंचक समाप्त	14 नवं. चंद्र
कार्तिक स्नान समाप्त	14 नवं. चंद्र
पद्मक योग (पुष्कर)	14 नवं. चंद्र
श्रीकालभैरवाष्टमी	21 नवं. चंद्र

» दिसम्बर »

स्कन्द (गुह) षष्ठी	5 दिसं. चंद्र
मित्र (विष्णु) सप्तमी	6 दिसं. मंग.
मोक्षदा एकादशी व्रत	10 दिसं. शनि
श्रीगीता जयन्ती	10 दिसं. शनि
पिशाचमोचन श्राद्ध	12 दिसं. चंद्र
श्रीदत्तात्रेय जयन्ती	13 दिसं. मंग.
क्रिसमिस डे (क्रिश्चि.)	25 दिसं. रवि

» जनवरी-2017 ई० »

इंग्लिश नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. रवि
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	5 जन. गुरु
पुत्रदा एकादशी व्रत (वै.)	9 जन. चंद्र
पौष पूर्णिमा	12 जन. गुरु
माघस्नान प्रारम्भ	12 जन. गुरु
लोहड़ी-पर्व	13 जन. शुक्र
मकर (माघ) संक्रां.	14 जन. शनि
श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी	15 जन. रवि
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. गुरु
माघ (मौनी) अमा.	27 जन. शुक्र
गौरी तृतीया (गोंतरी)	30 जन. चंद्र
श्रीगणेश तिल चतुर्थी	31 जन. मंग.

» फरवरी-2017 ई० »

वसन्त पंचमी, श्री ५	1 फर. बुध
सरस्वती पूजन	1 फर. बुध
रथ-आरोग्य सप्तमी	3 फर. शुक्र
भीष्माष्टमी	4 फर. शनि
भीष्म द्वादशी, तिल १२	7 फर. मंग.
माघ पूर्णिमा (7/31 बाद)	10 फर. शुक्र
माघस्नान समाप्त	10 फर. शुक्र
श्रीगुरु रविदास जयं.	10 फर. शुक्र
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	24 फर. शुक्र

» मार्च -2017 ई० »

होलाष्टक प्रारम्भ	5 मार्च रवि
अन्नपूर्णा-अष्टमी	5 मार्च रवि
गोविन्द द्वादशी	9 मार्च गुरु
होलिका दहन (प्रदोषे)	12 मार्च रवि
होलाष्टक समाप्त	12 मार्च रवि
पूर्णिमा, होली (पं.)	12 मार्च रवि
वसन्तोत्सव	13 मार्च चंद्र
होली (उ.प्र., मथुरा आदि)	13 मार्च चंद्र
होला मेला (श्रीआनन्दपुर-व पांओटा साहिब)	13 मार्च चंद्र
महाविषुव दिवस	20 मार्च चंद्र
शीतलाष्टमी व्रत	21 मार्च मंग.
महावारुणी योग (16/58 से)	25 मार्च शनि
वारुणी योग (पर्व)	26 मार्च रवि
वि. संवत् 2073 पूर्ण	28 मार्च मंग.

एकादशी व्रत-2016-17 ई.

'धर्मसिंधु' अनुसार एकादशी दो प्रकार की होती है। विद्धा और शुद्धा॥

1. दशमी तिथि से युक्त एकादशी विद्धा एकादशी कहलाती है।

2. सूर्योदयकालिक एकादशी तिथि द्वादशी तिथि युक्त हो तो वह शुद्धा एकादशी कहलाती है।

सर्वसाधारण गृहस्थों एवं साधकों को शुद्धा एकादशी का व्रत रखना प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक माना गया है।

सफला (पौष कृ.) वैष्ण*	6 जन. बुध
पुत्रदा एकादशी (पौष शुक्ल)	20 जन. बुध
षट्तिला (माघ कृष्ण)	4 फर. गुरु
जया (माघ शुक्ल)	18 फर. गुरु
विजया (फाल्गु. कृष्ण)	5 मार्च शनि
आमलकी (फाल्गुन शुक्ल)	19 मार्च शनि
पापमोचनी (चैत्र कृ.) वैष्ण*	4 अप्रै. चंद्र
कामदा (चैत्र शुक्ल)	17 अप्रै. रवि
वरूथिनी (वैशाख कृष्ण)	3 मई मंग.
मोहिनी (वैशाख शुक्ल)	17 मई मंग.
अपरा (ज्येष्ठ कृष्ण)	1 जून बुध
निर्जला (ज्येष्ठ शुक्ल)	16 जून गुरु
योगिनी (आषाढ़ कृ.) वैष्ण*	1 जुला. शुक्र
हरिशयनी (आषा. शुक्ल)	15 जुला. शुक्र
कामिका (श्रावण कृष्ण)	30 जुला. शनि
पवित्रा (श्रावण शुक्ल)	14 अग. रवि
अजा (भाद्रपद कृष्ण)	28 अग. रवि
पद्मा (भाद्र. शुक्ल)	13 सितं. मंग
इन्दिरा (आश्विन कृष्ण)	26 सितं. चंद्र
पापांकुशा (आश्वि शु.)	12 अक्तू. बुध
रमा (कार्तिक कृष्ण)	26 अक्तू. बुध
हरिप्रबोधिनी (कार्तिक शु.)	11 नवं. शुक्र
उत्पन्ना (मार्ग. कृष्ण)	25 नवं. शुक्र
मोक्षदा (मार्ग. शुक्ल)	10 दिसं. शनि
सफला (पौष कृष्ण)	24 दिसं. शनि

(सन् 2017 ई.)

पुत्रदा (पौष शुक्ल)	9 जन. चंद्र
षट्तिला (माघ कृष्ण)	23 जन. चंद्र
जया (माघ शुक्ल)	7 फर. मंग.
विजया (फाल्गु. कृष्ण)	22 फर. बुध
आमलकी (फाल्गु. शुक्ल)	8 मार्च बुध
पापमोचनी (चैत्र कृष्ण)	24 मार्च शुक्र

*वैष्ण.-वैष्णवों (गृहस्थियों) के लिए व्रत स्मार्तों का व्रत वैष्णवों के व्रत के दिन से एक दिन पहले होता है। जिस तिथि के आगे कुछ नहीं लिखा, उसका अभिप्राय: यह है कि यह तिथि स्मार्तों और वैष्णवों-दोनों के लिए ग्राह्य है।

श्रीसत्यनारायण व्रत
(सन् 2016-17 ई.)

श्रीसत्यनारायण व्रत का उदयकालिक पूर्णमाशी की तिथि से कभी-कभी एक तारीख का अन्तर पड़ सकता है। क्योंकि चन्द्रोदय कालिक एवं प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा ही व्रत हेतु ग्रहण करनी चाहिए।

पौष	23 जन. शनि
माघ	22 फर. चंद्र
फाल्गुन	22 मार्च मंग.
चैत्र	21 अप्रै. गुरु
वैशाख	21 मई शनि
ज्येष्ठ	19 जून रवि
आषाढ़	19 जुला. मंग.
श्रावण	17 अग. बुध
भाद्रपद	16 सितं. शुक्र
आश्विन	15 अक्तू. शनि
कार्तिक	14 नवं. चंद्र
मार्गशीर्ष	13 दिसं. मंग.

——(सन् 2017 ई.)——

पौष	11 जन. बुध
माघ	10 फर. शुक्र
फाल्गुन	12 मार्च रवि

निरयण संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल (सन् 2016-17 ई.)

नाम संक्रान्ति	ता. मास वार	प्रवेशकाल (घं. मिं.)	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टै. टा.)
माघ संक्रान्ति	14 जन. गुरु	25-25	अगले दिन मध्याह्न तक
फागुन संक्रान्ति	13 फर. शनि	14-24	प्रात: 8/00 से सारा दिन
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च चंद्र	11-17	सूर्योदय से 17/41 तक
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. बुध	19-47	दोपहर 13/23 बाद से
ज्येष्ठ संक्रान्ति	14 मई शनि	16-41	प्रात: 10/17 बाद
आषाढ़ संक्रान्ति	14 जून मंग	23-19	मध्याह्न बाद से अगले दिन प्रात: 5/43 तक
श्रावण संक्रान्ति	16 जुला. शनि	10-15	प्रात: सूर्योदय से सायं 16/39 तक
भाद्र. संक्रान्ति	16 अग. मंग	18-39	दोपहर 12/15 बाद
आश्विन संक्रान्ति	16 सितं. शुक्र	18-35	दोपहर 12/11 बाद
कार्तिक संक्रान्ति	16 अक्तू. रवि	30-31	अगले दिन दोप. 12/55 तक
मार्ग. संक्रान्ति	15 नवं. मंग.	30-17	अगले दिन दोप. 12/41 तक
पौष संक्रान्ति	15 दिसं. गुरु	20-54	मध्याह्न बाद से
माघ संक्रान्ति (17)	14 जन. शनि	7-38	दोपहर 14/02 तक
फाल्गुन संक्रान्ति	12 फर. रवि	20-38	मध्याह्न बाद
चैत्र संक्रान्ति	14 मार्च मंग.	17-33	दोपहर 11/09 बाद

अमावस्याएँ (स्नान-दानार्थ)

पौष (7/54 बाद)	9 जन. शनि
माघ (सोमवती)	8 फर. चंद्र
फाल्गुन (7/25 तक)	9 मार्च बुध
चैत्र	7 अप्रै. गुरु
वैशाख	6 मई शुक्र
ज्येष्ठ	5 जून रवि
आषाढ़ (सोमवती)	4 जुला. चंद्र
श्रावण (भौमवती)	2 अग. मंग.
भाद्रपद	1 सितं. गुरु
आश्विन	30 सितं. शुक्र
कार्तिक	30 अक्तू. रवि
मार्गशीर्ष (भौमवती)	29 नवं. मंग.
पौष	29 दिसं. गुरु

——(सन् 2017 ई.)——

माघ	27 जन. शुक्र
फाल्गुन	26 फर. रवि
चैत्र (भौमवती)	28 मार्च मंग.

—श्रीगणेश चतुर्थी व्रत—

माघ (संकट चतुर्थी)	27 जन. बुध
फाल्गुन	26 फर. शुक्र
चैत्र	27 मार्च रवि
वैशाख	25 अप्रै. चंद्र
ज्येष्ठ	25 मई बुध
आषाढ़	23 जून गुरु
श्रावण	23 जुला. शनि
भाद्रपद	21 अग. रवि
आश्विन	19 सितं. चंद्र
कार्तिक (करवाचौथ)	19 अक्तू. बुध
मार्गशीर्ष	17 नवं. गुरु
पौष	17 दिसं. शनि

(सन् 2017 ई.)

माघ (संकष्ट चतुर्थी)	15 जन. रवि
फाल्गुन (अङ्गारकी)	14 फर. मंग.
चैत्र	16 मार्च गुरु

पितृपक्ष में श्राद्ध-2016 ई.

(आश्विन कृष्ण पक्ष-श्राद्ध तिथियाँ)

अपने पूर्वज पितरों के प्रति श्रद्धा भावना रखते हुए पितृ-तर्पण एवं श्राद्ध कर्म करना नितान्त आवश्यक है। इससे स्वास्थ्य, समृद्धि, आयु एवं सुख-शान्ति रहती है। सन् 2016 ई. में श्राद्ध की तिथियों का विवरण—

प्रोष्ठपदी/पूर्णिमा श्राद्ध	16 सितं. शुक्र
प्रतिपदा का श्राद्ध	17 सितं. शनि
द्वितीया का श्राद्ध	18 सितं. रवि
तृतीया का श्राद्ध / चतुर्थी का श्राद्ध	19 सितं. चंद्र
पंचमी का श्राद्ध	20 सितं. मंग.
षष्ठी का श्राद्ध	21 सितं. बुध
सप्तमी का श्राद्ध	22 सितं. गुरु
अष्टमी का श्राद्ध	23 सितं. शुक्र
नवमी/सौभाग्यवतीनां श्राद्ध	24 सितं. शनि
दशमी का श्राद्ध	25 सितं. रवि
एकादशी का श्राद्ध	26 सितं. चंद्र
द्वादशी/संन्यासियों का श्राद्ध	27 सितं. मंग.
त्रयोदशी का श्राद्ध	28 सितं. बुध
✤चतुर्दशी का श्राद्ध	29 सितं. गुरु
अमावस/अज्ञात तिथि श्राद्ध	30 सितं. शुक्र
सर्वपितृ श्राद्ध	30 सितं. शुक्र
नाना/नानी का श्राद्ध	1 अक्तू. शनि

✤ = चतुर्दशी तिथि को केवल शस्त्र, विष, दुर्घटनादि (अपमृत्यु) से मृतों का श्राद्ध होता है। उनकी मृत्यु चाहे किसी अन्य तिथि में हुई हो। चतुर्दशी तिथि में सामान्य मृत्यु वालों का श्राद्ध अमावस्या तिथि में करने का शास्त्र विधान है।

पर्व श्रीपिण्डोरीधाम (गुरदासपुर)

श्रीरामानन्दाचार्य जयन्ती	14 फर. रवि
श्रीहोलिका दहन	23 मार्च बुध
श्रीभगवतनारायण जयं.	27 मार्च रवि
वैशाखी पर्व	13 अप्रै. बुध
रामनवमी पर्व	15 अप्रै. शुक्र

जानकी जयन्ती	14 मई शनि
गंगा दशहरा	14 जून मंग.
गुरु पूर्णिमा	19 जुला. मंग.
तुलसी जयन्ती पर्व	10 अग. बुध
कृष्ण जयन्ती पर्व	24-26 अग.
महंत गु. गोबिन्ददास जयं.	26 अक्तू. बुध

प्रदोष व्रत-2016-17 ई.

पौष कृष्ण	7 जन. गुरु
पौष शुक्ल	21 जन. गुरु
माघ कृष्ण	6 फर. शनि
माघ शुक्ल	20 फर. शनि
फाल्गुन कृष्ण	6 मार्च रवि
फाल्गुन शुक्ल	20 मार्च रवि
चैत्र कृष्ण (भौम)	5 अप्रै. मंग.
चैत्र शुक्ल (भौम)	19 अप्रै. मंग.
वैशाख कृष्ण	4 मई बुध
वैशाख शुक्ल	19 मई गुरु
ज्येष्ठ कृष्ण	2 जून गुरु
ज्येष्ठ शुक्ल	17 जून शुक्र
आषाढ़ कृष्ण (शनि)	2 जुला. शनि
आषाढ़ शुक्ल	17 जुला. रवि
श्रावण कृष्ण	31 जुला. रवि
श्रावण शुक्ल (सोम)	15 अग. चंद्र
भाद्रपद कृष्ण (सोम)	29 अग. चंद्र
भाद्रपद शुक्ल	14 सितं. बुध
आश्विन कृष्ण	28 सितं. बुध
आश्विन शुक्ल	13 अक्तू. गुरु
कार्तिक कृष्ण	28 अक्तू. शुक्र
कार्तिक शुक्ल (शनि)	12 नवं. शनि
मार्गशीर्ष कृष्ण (शनि)	26 नवं. शनि
मार्गशीर्ष शुक्ल	11 दिसं. रवि
पौष कृष्ण (सोम)	26 दिसं. चंद्र

(सन् 2017 ई.)

पौष शुक्ल	10 जन. मंग.
माघ कृष्ण	25 जन. बुध
माघ शुक्ल	8 फर. बुध
फाल्गुन कृष्ण	24 फर. शुक्र
फाल्गुन शुक्ल	10 मार्च शुक्र
चैत्र कृष्ण	25 मार्च शनि

सिद्ध महापुरुषों के जन्मदिन/स्मरणोत्सव

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. मंग.
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. शनि
लाला लाजपतराय जी	28 जन. गुरु
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	31 जन. रवि
सिद्ध बाबा लालदयाल जी	10 फर. बुध
श्रीगुरु रविदास जी	22 फर. चंद्र
गुरु रामदास जी	3 मार्च गुरु
महर्षि दयानन्द सरस्वती	4 मार्च शुक्र
श्रीरामकृष्ण परमहंस	10 मार्च गुरु
श्रीचैतन्य महाप्रभु	23 मार्च बुध
शहीदी स: भगत सिंह जी	23 मार्च बुध
सन्त तुकाराम जी	25 मार्च शुक्र
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर	14 अप्रै. गुरु
श्रीमहावीर जयंती	19 अप्रै. मंग.
श्रीवल्लभाचार्य	3 मई मंग.
श्रीरवीन्द्रनाथ टैगोर	7 मई शनि
श्रीछत्रपति शिवाजी	8 मई रवि
भगवान् परशुराम	8 मई रवि
आद्यगुरु शंकराचार्य	11 मई बुध
स्वामी रामानुजाचार्य	12 मई गुरु
महात्मा बुद्ध	21 मई शनि
श्रीनारद जयन्ती	23 मई चंद्र
श्रीमहाराणा प्रताप	7 जून मंग.
सन्त कबीर जयन्ती	20 जून चंद्र
श्रीध्यानू भगत	24 जून शुक्र
ऋषि वेदव्यास	19 जुला. मंग.
लोकमान्य गंगाधर तिलक	23 जुला. शनि
शहीदी दि. स: ऊधम सिंह	31 जुला. रवि
लोकमान्य तिलक स्मरण	1 अग. चंद्र
गोस्वामी तुलसीदास जी	10 अग. बुध
सन्त ज्ञानेश्वर	25 अग. गुरु
भक्त नवल (जोधपुर)	25 अग. गुरु
स्वामी शिवानन्द जी	8 सितं. गुरु
महाराजा अग्रसेन	1 अक्तू. शनि
महात्मा गांधी, शास्त्री जी	2 अक्तू. रवि
श्रीमाधवाचार्य	11 अक्तू. मंग.
स्वामी रामतीर्थ	22 अक्तू. शनि
श्रीधनवन्तरी जयं.	28 अक्तू. शुक्र
श्रीहनुमान जयंती	28 अक्तू. शुक्र
श्रीविश्वकर्मा जयंती	1 नवं. मंग.
श्रीवीर वैरागी	12 नवं. शनि
महाराजा रणजीत सिंह	13 नवं. रवि
श्रीजवाहर लाल नेहरू	14 नवं. चंद्र
श्रीगुरु नानकदेव जी	14 नवं. चंद्र
शहीदी लाला लाजपतराय	17 नवं. गुरु
श्रीसत्यसाईं बाबा	23 नवं. बुध
श्रीदत्तात्रेय	13 दिसं. मंग.
शही. स: ऊधम सिंह जयं.	26 दिसं. चंद्र

(सन् 2017 ई.)

स्वामी विवेकानन्द जी	12 जन. गुरु
स्वामी रामानन्दाचार्य जी	19 जन. गुरु
नेताजी सुभाषचन्द्र बोस	23 जन. चंद्र
लाला लाजपतराय जी	28 जन. शनि
सिद्ध बाबा लालदयालजी	29 जन. रवि
श्रीगुरु रविदास जी	10 फर. शुक्र
श्रीगुरु रामदास जी	20 फर. चंद्र
महर्षि दयानन्द सरस्वती	21 फर. मंग.
श्रीरामकृष्ण परमहंस	28 फर. मंग.
श्रीचैतन्य महाप्रभु	12 मार्च रवि
सन्त तुकाराम जी	14 मार्च मंग.
शहीदी स: भगत सिंह	23 मार्च गुरु

पूर्णिमा व्रत (2016-17 ई.)

(उदय-व्यापिनी, स्नानदानार्थ)

पौष	23 जन. शनि
माघ	22 फर. चंद्र
फाल्गुन	23 मार्च बुध
चैत्र	22 अप्रै. शुक्र
वैशाख	21 मई शनि
ज्येष्ठ	20 जून चंद्र
आषाढ़	19 जुला. मंग.
श्रावण	18 अग. गुरु
भाद्रपद	16 सितं. शुक्र
आश्विन	16 अक्तू. रवि
कार्तिक	14 नवं. चंद्र
मार्गशीर्ष (9/17 बाद)	13 दिसं. मंग.
पौष (2017 ई.)	12 जन. गुरु
माघ	10 फर. शुक्र
फाल्गुन	12 मार्च रवि

दशमहाविद्या जयन्ती

श्रीमहातारा जयन्ती	15 अप्रै. शुक्र
श्रीमातङ्गी जयन्ती	9 मई चंद्र
श्रीबगुलामुखी जयन्ती	14 मई शनि
श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती	21 मई शनि
श्रीधूमावती जयन्ती	12 जून रवि
श्रीमहाकाली जयन्ती	24 अग. बुध
श्रीभुवनेश्वरी जयन्ती	13 सितं. मंग.
श्रीकमला जयन्ती	18 अक्तू. मंग.
श्रीत्रिपुरभैरवी जयन्ती	13 दिसं. मंग.
श्रीललिता जयन्ती (17)	10 फर. शुक्र

दशावतार जयन्तियां-2016 ई.

श्रीमत्स्यावतार जयन्ती	9 अप्रै. शनि
श्रीरामावतार जयन्ती	15 अप्रै. शुक्र
श्रीपरशुराम जयन्ती	8 मई रवि
श्रीनृसिंहावतार जयन्ती	20 मई शुक्र
श्रीकूर्मावतार जयंती	21 मई शनि
श्रीबुद्धावतार जयन्ती	21 मई शनि
श्रीकल्कि अवतार	8 अग. चंद्र
श्रीकृष्णावतार जयं.	24 अग. बुध
श्रीवाराहावतार जयं.	4 सितं. रवि
श्रीवामनावतार जयं.	13 सितं. मंग.

मासशिवरात्रि व्रत-2016-17

पौष	8 जन. शुक्र
माघ	6 फर. शनि
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	7 मार्च चंद्र
चैत्र	5 अप्रै. मंग.
वैशाख	5 मई गुरु
ज्येष्ठ	3 जून शुक्र
आषाढ़	2 जुला. शनि
श्रावण	1 अग. चंद्र
भाद्रपद	30 अग. मंग.
आश्विन	29 सितं. गुरु
कार्तिक	28 अक्तू. शुक्र
मार्गशीर्ष	27 नवं. रवि
पौष	27 दिसं. मंग.

—(सन् 2017 ई.)—

माघ	26 जन. गुरु
फाल्गुन (श्रीमहाशिवरात्रि)	24 फर. शुक्र
चैत्र	26 मार्च रवि

पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, उ.खण्ड और उ.प्र. के मुख्य मेले—सन् 2016 ई.

मेला/पर्व	तिथि
मरोज पर्व (जौनसार) उत्तरां.	12 जन.
मेला लोहड़ी (पं.)	13 जन.
मे. दांऊ (चण्डीगढ़-मोहाली)	13 जन.
बिन्दरख (रोपड़) (पं.)	13-14 जन.
मे. माघी (मुक्तसर) पं.	14 जन.
मे. मस्तुआणा (पं.) (बरसी सन्त अतर सिंह जी)	1 फर.
मे. मौनी अमावस, हरिद्वारादि	8 फर.
मेला वसन्त पंचमी	12 फर.
मे. जैसलमेर (राज.)	20-22 फर.
जयन्ती देवी (चण्डीगढ़)	21-22 फर.
माघी पूर्णिमा (यू.पी.)	22 फर.
मे. श्रीमहाशिवरात्रि	7 मार्च
नीलकण्ठ महादेव (गढ़वाल)	7 मार्च
होलियां-होलाष्टक (यू.पी.)	16-23 मार्च
मे. सावातिल्ला	21 मार्च
होला मेला (श्रीआनन्दपुर सा.) पं.	24 मार्च
श्रीगुरुरामराय (देहरादून) उत्तरां.	28 मार्च
नवचण्डी (मेरठ) यू.पी.	28 मार्च
श्रीवीरमदास, बधौछी (पटियाला)	29 मार्च
भण्डा. स्वा. सन्तदास, जालन्धर	30 मार्च
मे. शीतलामाता (कुराली) पं.	31 मा.-1 अप्रै.
वैशाखी मेला-श्रीलक्ष्मण चौंतरा-हांसी (हरियाणा)	4-14 अप्रै.
पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	6 अप्रै.
मेला चीमा (नानकसर) पं.	8 अप्रै.
मेला नवरात्रे-मनसादेवी (हरिद्वार व पंचकूला) हरि.	8-15 अप्रै.
गौरी तृतीया (जयपुर) राज.	9 अप्रै.
माईसरखाना (बठिण्डा) पं.	12 अप्रै.
मेला वैशाखी (पं.)	13 अप्रै.
अर्द्धकुम्भी पर्व (हरिद्वार)	13 अप्रै.
मे. वैशाखी-गंगभेवा (बावड़ी) ढकरानी, देहरादून (उ. खण्ड)	13-18 अप्रै.
मे. रामथनदास (फाजिल्का) पं.	13 अप्रै.
मे. नरीसैंभरी (मथुरा) उ.प्र.	14 अप्रै.
ज्वालामुखी (हरचोवाल) पं.	14 अप्रै.
मे. रामनवमी (जालंधर) पं.	15 अप्रै.
मे. ठाणा डांडा, नागी--बागीधार (उत्तराखण्ड)	16 अप्रै.
मे. काँसा देवी (चण्डीगढ़)	21-22 अप्रै.
वीर केसरी चन्द मेला चोलीथात (चकराता) देहरादून, उ.खण्ड	3 मई
पिंजौर (कालका) हरि.	6 मई
गंगा सप्तमी (हरिद्वार)	12 मई
कुम्भ महापर्व (उज्जैन) म.प्र.	21 मई
जोड़ मेला-संत खुशीराम जी गाँव-भरोमजारा, नवांशहर पं.	23-24 मई
मे. भद्रकाली-कपूरथला (पं.)	1 जून
मे. जखोली (उत्तराखण्ड)	2 जून
यज्ञ-नन्दाचौर धाम, होशियारपुर (पं.)	5-7 जून
साईं टेऊँराम पुण्यतिथि भूपतवाला रोड, हरिद्वार	10 जून
गंगा दशहरा (हरिद्वार)	14 जून
रथयात्रा उत्सव (पुरी) उड़ीसा	6 जुला.
साईं टेऊँराम जयंती, सप्तसरोवर भूपतवाला रोड, हरिद्वार	10 जुला.
गुरु पूर्णिमा उत्सव	19 जुला.
मे. काहनूवाल (गुरदासपुर)	19 जुला.
मेला नाग-पंचमी (राज.)	24 जुला.
पं. जोगराज (जंडियाला)	1-2 अग.
मे. नुणाई (जौनसार-बावर) उत्तरां	4 अग.
मेला सिंघारा तीज (पं.)	5 अग.
गौरी-तीज (जयपुर) राज.	5 अग.
मे. जयन्ती-देवी (मुल्लापुर--गरीबदास), चण्डीगढ़	17-18 अग.
मे. बग्गी-देहरी, गाँव-कण्डे लालोवाल, गुरदासपुर	18 अग.
कृष्ण जन्माष्टमी पर्व (मथुरा)	25 अग.
मे. गुग्गा नवमी (अम्बाला) हरि.	26 अग.
गुग्गा जाहिरपीर, **नकोदर** (पं.)	26 अग.
जोड़ मेला सन्त मेलाराम जी, गाँव-भरोमजारा, नवांशहर (पं.)	27-28 अग.
मे. बाबा सुथरेशाह (दिल्ली)	1 सितं.
रानी सती मेला (झुंझुनूं) राज.	1 सितं.
मे. महासू (ढुंगारा) जौनसार (उ.खण्ड)	5 सितं.
रामदेव रोणेचा (जोधपुर) राज.	12 सितं.
वामन द्वादशी (अम्बाला) राज.	13 सितं.
मे. छपार, मलेरकोटला, पं.	14-16 सितं.
मे. **बाबा सोढल** (जालन्धर)	15 सितं.
मे. गोईन्दवाल सा. (तरनतारन)(पं.)	16 सितं.
मे. गुग्गापीर (लुधियाना) पं.	16 सितं.
मे. आशापूर्णी (पठानकोट) पं.	1-10 अक्तू.
अचलेश्वर (बटाला)(पं.)	9-10 नवं.
मे. जन्म वीरवैरागी (नकोदर) पं.	12 नवं.
मे. बग्गी देहरी, कण्डे--लालोवाल (गुरदासपुर) पं.	13-14 नवं.
मे. रामतीर्थ (अमृतसर) पं.	14 नवं.
मे. कपालमोचन (हरि.)	14 नवं.
मे. गढ़गंगा, पुष्करतीर्थ	14 नवं.
पुरानी दीपावली-जौनसार, जौनपुर (उत्तरां.)	30 नवं.
भण्डा. सन्त प्रीतमदास, जालं.	30 नवं.
महायज्ञ श्रीओमदरबार नन्दाचौर धाम, होशियारपुर पं.	1-3 दिसं.
मे. जोड़-फतेहगढ़ सा. प्रा.	26 दिसं.

श्रीनिजात्म प्रेमधाम आश्रम भूपतवाला (हरिद्वार)-2016

पर्व	तिथि
स्वा. स्वरूपानन्द जयन्ती	12 फर.
निर्वाण स्वा. निजात्मानन्द जी	26 मार्च
निर्वाण स्वा. स्वरूपानन्द जी	24 अप्रै.
श्री स्वा. निजात्मानन्द जयन्ती	7 मई
महामंड. गुरु प्रेमानन्दजी जयन्ती	19 जुला
निर्वाण महा. गुरु प्रेमानन्द जी	6 अग.

जम्मू-कश्मीर के मेले

मेला/पर्व	तिथि
लोहड़ी पर्व	13 जन.
मार्तण्ड तीर्थ यात्रा	14 फर.
मे. शिवरात्रि (पंचवटी-दवलैहड़) (जम्मू)	7 मार्च
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	5-6 अप्रै.
गुप्तगंगा, कफी-अखनूर	6 अप्रै.
नवरात्रे पर्व	8-15 अप्रै.
गुरुगद्दी 1008 सत्गुरु बाबा कांशीगिरजी (सुन्दरबनी)	13-14 अप्रै.
मे. बाहूफोर्ट (जम्मू)	14 अप्रै.
मेला रामबन	15 अप्रै.
नृसिंह चौदश (ऊधमपुर)	20 मई
मे. मानसर	10-11 जून
मे. क्षीर (खीर) भवानी, तलमुल	12 जून
सपोर यात्रा-धारलदा (ऊधमपुर)	14 जून
शुद्ध महादेव (ऊधमपुर)	20 जून
मे. वानसुल देवता, चब्बा, रामबन	20-27 जून
माँ सरथलदेवी यात्रा (किश्तवाड़) प्रा.	12 जुला
मे. शरीक भवानी	13 जुला.
मे. हरिप्रयाग (बनी)	15 जुला.
मे. ज्वालामुखी	18 जुला.
मे. रुद्रगंगा, चंद्रेणीदेसा, डोडा	19 जुला.
शोपियान यात्रा	15 अग.
दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा	18 अग.
मे. स्वामी शंकराचार्य (श्रीनगर)	18 अग.
कृष्ण-जन्माष्टमी उत्सव (रामबन)	24-25 अग.
कैलाश यात्रा प्रारम्भ	30-31 अग.
मेला पात (भद्रवाह)	6-8 सितं.
मे. आशापति (मार्तण्ड)	29-30 सितं.
मे. झिड़ी बाबा	14 नवं.
मे. पुरमण्डल (जम्मू)	13 दिसं.

दरबार श्रीध्यानपुर (गुरदासपुर) के मुख्य पर्व-2016 ई.

पर्व	तिथि
श्रीबाबा लालदयाल जयंती	10 फर. बु.
वसन्त-पंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	12 फर. शु.
होलिका दहन (सायंकाले)	23 मार्च बु.
वैशाखी पर्व	13 अप्रै. बु.
श्रीरामनवमी पर्व	15 अप्रै. शु.
महंत नारायणदास जयं.	29 मई र.
व्यास पूजा	19 जुला. मं.
श्रीकृष्णजन्माष्टमी (वैष्ण.)	25 अग. गु.
विजयादशमी (दशहरा)	11 अक्तू. मं.
दीपावली पर्व	30 अक्तू. र.
गद्दी स्वा. रामसुन्दरदास जी	1 नवं. मं.
(सन् 2017 ई.)	
श्रीबाबा लालदयाल जयंती	29 जन. र.
वसन्त पंचमी (पं. द्वारकादास जयं.)	1 फर. बु.

तपोभूमि श्रीबाबा निकोदरदास धर्मशाल महन्ता, अम्ब, ऊना (हि.प्र.)

पर्व	तिथि
मकर संक्रान्ति	14 जन. गुरु
श्रीमहाशिवरात्रि	7 मार्च चंद्र
चैत्र नवरात्रे प्रारम्भ	8 अप्रै. शुक्र
वैशाख संक्रान्ति मेला	13 अप्रै. बुध
गुरु पूर्णिमा पर्व	19 जुला. मंग.
अनन्त चतुर्दशी	15 सितं. गुरु
श्राद्ध षष्ठी (चन्द्र ६)	21 सितं. बुध
गोपाष्टमी	8 नवं. मंग.
पंचभीष्म	10-14 नवं.

विशेष नोट—यदि आप अपने स्थानीय ग्राम/नगर/ज़िले का कोई मेला/पर्व सम्मिलित करवाना चाहते हैं, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेज़ी तारीख, जिसके मुताबिक उसे मनाया जाता है—अच्छी तरह विवरण सहित लिखकर भेजें—सम्पादक।

हिमाचल प्रदेश के मेले—सन् 2016 ई.

मेला	तिथि
श्रीदेवता खुड्डी-जल,, देहुरी, आनी, कुल्लू	14 जन.
श्रीब्रह्मा (न्यूल, कुल्लू)	20 जन.
वसन्त पंचमी (बिलासपुर)	12 फर.
श्रीमहाशिवरात्रि (मण्डी)	7-15 मार्च
मे. काठगढ़	7 मार्च
मे. रिवालसर (मण्डी)	7 मार्च
स्वर्गाश्रम (नूरपुर)	7 मार्च
मे. बैजनाथ (कांगड़ा)	9 मार्च
मे. बाबा बालकनाथ प्रा.	14 मार्च
मे. कनिहारा (धर्मशाला) प्रा.	14 मार्च
बड़भाग सिंह (ऊना)	16-23 मार्च
मेला नलवाड़ (बिलासपुर)	17-22 मार्च
मे. नलवाड़ (सुन्दरनगर)	22-29 मार्च
सुजानपुर टिहरा (हमीरपुर)	23-27 मार्च
होला मेला (पांओटा साहिब)	24 मार्च
मे. नलवाड़ (घुमारवीं)	5-9 अप्रै.
मेला नयनादेवी (बिलासपुर)	8-15 अप्रै.
बालासुन्दरी (सिरमौर)	8-22 अप्रै.
ललवाड़ (सुन्दरनगर)	9-14 अप्रै.
मे. नैनादेवी-धर्मपुर-बनवार	12 अप्रै.
मे. मारकण्डा (बिलासपुर)	12-15 अप्रै.
मेला रिवालसर (मण्डी)	13 अप्रै.
मे. लाहौल (मण्डी)	13 अप्रै.
मेला राजगढ़ (सिरमौर)	13-15 अप्रै.
मेला बिशू प्रारम्भ	13 अप्रै.
मेला श्रीदुर्गाष्टमी (काँगड़ा)	14 अप्रै.
मेला त्राम्बली (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. कशाधा हुरला (कुल्लू)	16-17 अप्रै.
मे. रोहरू (महासू)	17-18 अप्रै.
मे. खनाणी (शिम., कुल्लू)	19-20 अप्रै.
चचौहली (जगतसुख) कुल्लू	27-29 अप्रै.
मे. पीपल-जातर (कुल्लू)	28-30 अप्रै.
मेला स्वीटी	30 अप्रै.
मेला आनी (कुल्लू)	7-9 मई
मे. माहूनाग (करसोग)	10-11 मई
मेला घाघरस (बिलासपुर)	14 मई
मे. डुंगरी जातर (मनाली)	14-15 मई
मे. बन्जार (कुल्लू)	14-18 मई
पशु मेला (हमीरपुर) प्रा.	16 मई
मे. मनीकरण (कुल्लू)	16-21 मई
मे. शाढ़ी जातर, नगर	18-23 मई
मे. हरिदेवी (घुमारवीं)	21 मई
कमलाहिया (धर्मपुर)	22 मई
मे. शीतलादेवी (सुन्दरनगर)	22-24 मई
मे. मिरपरी (मण्डी)	24-25 मई
मुरारीदेवी (सरकाघाट)	25-27 मई
ग्राम-पंजगाई (बिलासपुर)	29-30 मई
श्यामाकाली (सरकाघाट)	29 मई
मेला स्थूल मढोल	1-4 जून
मे. बाड़ी-सरयांझ (सोलन)	14 जून
मेला अहल (हमीरपुर)	14 जून
मे. नौवाही देवी (सरकाघाट)	14 जून
भुन्तर मेला (कुल्लू)	15-17 जून
मे. पीपलू (हमीरपुर)	16 जून
मे. टाणी देवी (हमीरपुर)	23 जून
मे. माँ शूलिनी (सोलन) प्रा.	24 जून
मे. त्रिमौणी (सिरमौर)	10 जुला.
मेला नागनी (नूरपुर)	16 जुला.
मे. सिद्ध बाबा शिव्वो (ज्वाली)	17 जुला.
मेला मिंजर (चम्बा) प्रा.	24 जुला.
मे. छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी)	3-11 अग.
सन्तोषी माता (लदरौर)	16 अग.
श्रीदेवता खुडी-जल, गाँव-देहुरी तह-आनी, जिला कुल्लू	18-25 अग.
मे. गुग्गा नवमी (बिलासपुर)	26 अग.
मे. बंद्राल (कुल्लू)	26 अग.
अम्बिकादेवी, सदर (मण्डी)	31 अग.
गणपति उत्सव (मण्डी)	5-15 सितं.
हिमाचल गणेशोत्सव अम्बिकानगर-अम्ब (ऊना)	5-15 सितं.
मे. महासू (शिलाई) सिरमौर	5-6 सितं.
यात्रा मनीमहेश (चम्बा) प्रा.	7 सितं.
गुग्गामाड़ी, सुबाथू, सोलन	10 सितं.
मे. वामन द्वादशी (नाहन)	13 सितं.
मे. लदरौर (हमीरपुर)	16 सितं.
मे. सायर (अर्की)	16-17 सितं.
मेला रामलीला	1-11 अक्तू.
बगुलामुखी (वनखण्डी)	1-11 अक्तू.
तारादेवी (शिमला)	9-11 अक्तू.
मेला ज्वालामुखी	9-10 अक्तू.
शीतलामाता (मच्छिभवन) कांगड़ा	9 अक्तू.
मेला दशहरा (अर्की)	11 अक्तू.
मेला दशहरा (कुल्लू)	11-16 अक्तू.
मेला काली-बाड़ी (शिमला)	29-30 अक्तू.
मे. लावी (रामपुर-चिच्चोट)	11-14 नवं.
मेला रेणुका-नाहन (सिरमौर)	11 नवं.
बाबा रुद्रीनन्द नारी (ऊना)	11-14 नवं.
मेला हरिप्रयाग (शिमला)	11 नवं.

श्रीविनायक चतुर्थी व्रत
(सन् 2016-17 ई.)

मास	तिथि
पौष शुक्ल पक्ष	13 जन. बुध
माघ	11 फर. गुरु
फाल्गुन	12 मार्च शनि
चैत्र	10 अप्रै. रवि
वैशाख	9 मई चन्द्र
ज्येष्ठ	8 जून बुध
आषाढ़	8 जुला. शुक्र
श्रावण	6 अग. शनि
भाद्रपद (सिद्धि विनायक)	5 सितं. चंद्र
आश्विन	5 अक्तू. बुध
कार्तिक	3 नवं. गुरु
मार्गशीर्ष	3 दिसं. शनि
—(सन् 2017 ई.)—	
पौष	2 जन. चंद्र
माघ (अङ्गारकी)	31 जन. मंग.
फाल्गुन	2 मार्च गुरु

विशेष नोट—यदि आप अपने स्थानीय ग्राम/नगर/जिले का कोई मेला/पर्व सम्मिलित करवाना चाहते हैं, तो तिथि, प्रविष्टा या अंग्रेजी तारीख, जिसके मुताबिक उसे मनाया जाता है—अच्छी तरह विवरण सहित लिखकर भेजें—**सम्पादक।**

जैन व्रत-पर्व व उत्सव (2016-17 ई.)

श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	4 जन. चंद्र
मेरू त्रयोदशी	6 फर. शनि
मर्यादा महोत्सव	14 फर. रवि
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	21-23 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	31 मार्च गुरु
वरसी तप प्रारम्भ	1 अप्रै. शुक्र
ओली तप प्रारम्भ	14 अप्रै. गुरु
श्रीमहावीर जयन्ती	19 अप्रै. मंग.
ओली तप समाप्त	22 अप्रै. शुक्र
वरसी तप समाप्त	9 मई चंद्र
केवलज्ञान दिवस	16 मई चंद्र
मे. चक्रेश्वरीदेवी (सरहिंद)	5-7 जून
चातुर्मास्य नियम प्रा.	19 जुला. मंग.
तेरापन्थ स्थापना दिवस	19 जुला. मंग.
जैन महोत्सव	31 जु.-2 अग.
पर्युषण पर्व प्रारम्भ	30 अग. मंग.
सम्वत्सरी महापर्व (पंचमी पक्ष)	6 सितं. मंग.
श्रीकालू निर्वाण दिवस	7 सितं. बुध
आचार्य श्रीतुलसी पट्टारोहण	10 सितं. शनि
श्रीमहावीर निर्वाण	30 अक्तू. रवि
श्रीवीर संवत् 2542 प्रा.	31 अक्तू. चंद्र
आचार्य श्रीतुलसी जन्म	1 नवं. मंग.
ज्ञान पंचमी	5 नवं. शनि
चातुर्मास्य व्रत समाप्त	14 नवं. चंद्र
श्रीमहावीर दीक्षा दिवस	23 नवं. बुध
मौनी एकादशी	10 दिसं. शनि
आचार्य श्रीतुलसी दीक्षा	18 दिसं. रवि
श्रीपार्श्वनाथ जयन्ती	23 दिसं. शुक्र
—(सन् 2017 ई.)—	
मेरू त्रयोदशी	25 जन. बुध
मर्यादा महोत्सव	3 फर. शुक्र
जैन महोत्सव (कांगड़ा)	10-12 मार्च
ऋषभदेव जयन्ती	19 मार्च रवि
वरसी तप प्रारम्भ	21 मार्च मंग.
ओली तप प्रारम्भ	3 अप्रै. चंद्र

❖मुस्लिम त्यौहार❖

ग्यारहवीं शरीफ़	22 जन. शुक्र
उर्स मोईनुद्दीन चिश्ती (अजमेर)	9-14 अप्रै.
जन्म श्रीहजरत अली	21 अप्रै. गुरु
शबे-मिराज	5 मई गुरु
शबे-बारात	23 मई चंद्र
रमज़ान (रोज़े शुरु)	7 जून मंग.
शहादत-ए-हजरत अली	27 जून चंद्र
जमातुलविदा	1 जुला. शुक्र
शबे-कदर	3 जुला. रवि
ईद-उल-फितर*	7 जुला. गुरु
ईदुलजुहा (बकरीद)*	13 सितं. मंग.
मुहर्रम (हिजरी 1438 प्रा.)	3 अक्तू. चंद्र
मुहर्रम (ताजिया)	12 अक्तू. बुध
चेहलुम	20 नवं. रवि
शहादत-ए-इमामहसन	29 नवं. मंग.
आखिरी-चहार	30 नवं. बुध
ईद-ए-मिलाद	13 दिसं. मंग.
ईद-ए-मौलाद	18 दिसं. रवि
(सन् 2017 ई.)	
ग्यारहवीं शरीफ	10 जन. मंग.

*नोट—स्थानभेद एवं अक्षांशभेद के कारण चन्द्रदर्शन (नया चाँद दिखाई देना) की तारीख में अन्तर आ जाने से इन मुस्लिम त्योहारों की तारीखों में एक दिन का अन्तर सम्भव है।

क्रिश्चियन त्यौहार

नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. शुक्र
गुड फ्राइडे	25 मार्च शुक्र
ईस्टर सण्डे	27 मार्च रवि
लो (Low) सण्डे	3 अप्रै. रवि
रोगेशन सण्डे	1 मई रवि
विंटसण्डे-Pentecost	15 मई रवि
क्रिसमिस डे	25 दिसं. रवि
—(सन् 2017 ई.)—	
नववर्ष प्रारम्भ	1 जन. रवि
गुड फ्राइडे	14 अप्रै. शुक्र
ईस्टर सण्डे	16 अप्रै. रवि

भारत सरकार एवं प्रादेशिक सरकारों की छुट्टियां (सन् 2016-17 ई.)

(इन छुट्टियों को भारत सरकार के गज़ट की सूची से मिला लें)

मकर संक्रान्ति	14 जन. गु.
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	16 जन. श.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. मं.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	22 फर. चं.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	7 मार्च चं.
होली पर्व	23 मार्च बु.
होला मेला (पंजा.)	24 मार्च गु.
गुड फ्राइडे	25 मार्च शु.
वैशाखी (पं.)	13 अप्रै. बु.
डॉ. बी.आर. अम्बेदकर जयं.	14 अप्रै. गु.
श्रीरामनवमी	15 अप्रै. शु.
श्रीमहावीर जयन्ती	19 अप्रै. मं.
जन्म श्रीहजरत अली (का.)	21 अप्रै. गु.
श्रीबुद्ध जयन्ती	21 मई श.
जमातुलविदा	1 जुला. शु.
रथयात्रा (पुरी) उड़ीसा	6 जुला. बु.
ईदु-उल-फितर	7 जुला. गु.
शही. सः ऊधमसिंह (पं.)	31 जुला. र.
भारत स्वतन्त्रता दिवस	15 अग. चं.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (वै.)	25 अग. गु.
सिद्धि विनायक व्रत (महा.)	5 सितं. चं.
ईदुलजुहा (बकरीद)	13 सितं.मंग.
महात्मा गाँधी जयन्ती	2 अक्तू. र.
दशहरा	11 अक्तू. मं.
मुहर्रम (ताजिया)	12 अक्तू. बु.
महर्षि वाल्मीकि जयन्ती	16 अक्तू. र.
दीपावली	30 अक्तू. र.
श्रीगुरु नानक जयन्ती	14 नवं चं.
ईद-ए-मिलाद	13 दिसं. मं.
क्रिसमिस डे	25 दिसं. र.
(सन् 2017 ई.)	
श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयं.	5 जन. गु.
मकर संक्रान्ति (माघी)	14 जन. श.
भारत गणतन्त्र दिवस	26 जन. गु.
श्रीगुरु रविदास जयन्ती	10 फर. शु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	24 फर. शु.
होला मेला (पं.), होली (उ.प्र.)	13 मार्च चं.

सिक्ख पर्व एवं गुरुपर्व आदि (2016-17 ई.)

नाम गुरु साहिबान	(प्राचीन परम्परा अनुसार)			(नानकशाही कलैण्डर अनुसार)		
	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत	जन्मदिन	गुरयाई	ज्योति ज्योत
1. श्रीगुरु नानक देव जी	14 नवंबर	जन्म से	25 सितं.	14 नवंबर*	जन्म से	22 सितंबर
2. श्रीगुरु अंगददेव जी	7 मई	21 सितं.	10 अप्रैल	18 अप्रै.	18 सितंबर	16 अप्रैल
3. श्रीगुरु अमरदास जी	20 मई	8 अप्रैल	16 सितंबर	23 मई	16 अप्रैल	16 सितंबर
4. श्रीगुरु रामदास जी	17 अक्तूबर	14 सितंबर	4 सितंबर	9 अक्तू.	16 सितंबर	16 सितंबर
5. श्रीगुरु अर्जुनदेव जी	29 अप्रैल	3 सितंबर	8 जून	2 मई	16 सितंबर	8 जून*
6. श्रीगुरु हरगोबिन्द जी	21 जून	29 मई	11 अप्रैल	5 जुलाई	11 जून	19 मार्च
7. श्रीगुरु हरिराय जी	20 फर., 16 ई. 9 फर., 17 ई.	5 अप्रै., 16 ई. 26 मार्च, 17 ई.	24 अक्तू.	31 जनवरी	14 मार्च	20 अक्तूबर
8. श्रीगुरु हरकिशन जी	28 जुलाई	24 अक्तू.	20 अप्रैल	23 जुलाई	20 अक्तूबर	16 अप्रैल
9. श्रीगुरु तेगबहादुर जी	27 अप्रैल	19 अप्रैल	4 दिसंबर	18 अप्रैल	16 अप्रैल	24 नवंबर
10. श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जी	16 जन. 16 ई. 5 जन., 17 ई.	2 दिसंबर	5 नवंबर	*16 जन. 16 ई 5 जन., 17 ई.	24 नवंबर	5 नवंबर*

श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी का प्रथम प्रकाश	भाद्र. शुक्ल प्रतिपदा तदनुसार	2 सितंबर	16 भादों (ना.शा.)	1 सितं., 2016 ई.
श्रीगुरु ग्रन्थ साहिब जी को गुरयाई मिली (नन्देड़)	कार्तिक शुक्ल द्वितीया तदनुसार	1 नवंबर	पुरातन परम्परा अनुसार ही	1 नवंबर, 2016 ई.
खालसा पंथ साजना दिवस	1 वैशाख प्रविष्टे अनुसार	13 अप्रैल	1 वैशाख (ना. शा.)	13 अप्रैल, 2016 ई.

*चिन्हित गुरुपर्व शिरोमणी गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी द्वारा 14 मार्च, 2010 ई. को प्रस्तावित कैलण्डर पर आधारित है।

वि. संवत् २०७३ में विभिन्न सम्वतों का प्रारम्भ

वर्ष का राजा–शुक्र	वर्ष का मन्त्री-बुध

- वि. संवत् (सौम्य) २०७३ का शुभारम्भ = ८ अप्रैल, शुक्रवार
- कल्पादि से गत वर्ष = 1,97,29,49,117 वर्ष
- सृष्टि का आरम्भ वर्ष = 1,95,58,85,117 वर्ष
- इनमें सतयुग की कुल समयावधि = 17,28,000 वर्ष
- ☛ त्रेतायुग की कुल समय अवधि = 12,96,000 वर्ष
- ☛ द्वापर युग की कुल समय अवधि = 8,64,000 वर्ष
- ☛ कलियुग की कुल समय अवधि = 4,32,000 वर्ष
- भोग्य कलि वर्ष (Balance) = 4,26,883 वर्ष
- २०७३ में कलि वर्ष = 5117वां वर्ष (8 अगस्त, सोमवार, 2016 ई.)
- श्रीकृष्ण जन्म संवत् = 5252 प्रा. (24 सितम्बर, बुधवार 2016 ई.)
- सप्तर्षि संवत् 5092 प्रारम्भ = 8 अप्रैल, शुक्रवार, 2016 ई.
- महात्मा बुद्ध सम्वत् 2640 प्रा. = 21 मई, शनिवार, 2016 ई.
- महावीर निर्वाण संवत् 2542 प्रा. = 31 अक्तूबर, रविवार, 2016 ई.
- सन् ईस्वी (क्रिश्चियन) 2017 प्रारम्भ = 1 जनवरी, रविवार
- शाका संवत् 1939 प्रारम्भ = 22 मार्च, बुधवार, 2017 ई.
- हिजरी सन् 1438 (मुस्लिम) प्रा. = 3 अक्तूबर, चन्द्रवार, 2016 ई.
- बंगाली सन् 1423 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, बुधवार, 2016 ई.
- (क) नानकशाही संवत् 548 प्रारम्भ = 14 मार्च, सोमवार, 2016 ई.
  (ख) नानकशाही संवत् 549 प्रारम्भ = 14 मार्च, मंगलवार, 2017 ई.
- खालसा संवत् 318 प्रारम्भ = 13 अप्रैल, बुधवार, 2016 ई.
- जय हिन्द संवत् 70वाँ प्रारम्भ = 15 अगस्त, सोमवार, 2016 ई.
- पंचांगदिवाकर' का प्रवेश वर्ष 141वाँ = 8 अप्रैल, शुक्रवार, 2016 ई.

सन् 2016–17 ई. में संक्रान्ति, पूर्णिमा, अमावस्यादि–एक दृष्टि में

(मास) 2016-17 ↓	संक्रान्ति	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	सत्य–नारायण व्रत	पूर्णिमा (उदय व्या.)	श्रीगणेश चतुर्थी	अमावस (स्नानदान)
जनवरी	14 (माघ)	6(वै.), 20	7, 21	23	23	27	9
फरवरी	13 (फाल्गु.)	4, 18	6, 20	22	22	26	8
मार्च	14 (चैत्र)	5, 19	6, 20	22	23	27	9
अप्रैल	13 (वैशा.)	4(वै.), 17	5, 19	21	22	25	7
मई	14 (ज्ये.)	3, 17	4, 19	21	21	25	6
जून	14 (आषा.)	1, 16	2, 17	19	20	23	5
जुलाई	16 (श्राव.)	1, 15, 30	2, 17, 31	19	19	23	4
अगस्त	16 (भाद्र.)	14, 28	15, 29	17	18	21	2
सितम्बर	16 (आश्वि.)	13, 26	14, 28	16	16	19	1, 30
अक्तूबर	16*(कार्ति.)	12, 26	13, 28	15	16	19	30
नवम्बर	15 (मार्ग.)	11, 25	12, 26	14	14	17	29
दिसम्बर	15 (पौष)	10, 24	11, 26	13	13	17	29
जनवरी (17)	14 (माघ)	9, 23	10, 25	11	12	15	27
फरवरी	12 (फाल्गु.)	7, 22	8, 24	10	10	14	26
मार्च	14 (चैत्र)	8, 24	10, 25	12	12	16	28

*सूचना–स्थानभेद के अनुसार कार्तिक संक्रान्ति 17 अक्तू. (१ प्रविष्टे कार्तिक) को भी होगी। (स्पष्टता के लिए देखें पृ. 89)

आगामी वि. संवत् २०७४ के सम्भावित व्रत-पर्व

(सन् 2017-18 ई.)

वासन्त नवरात्रे प्रा.	28 मार्च. मं.
श्रीदुर्गाष्टमी	4 अप्रै. मं.
श्रीरामनवमी	4 अप्रै. मं.
श्रीमहावीर जयंती	9 अप्रै. र.
वैशाख संक्रान्ति	13 अप्रै. गु.
अक्षय तृतीया	28 अप्रै. शु.
श्रीबुद्ध जयन्ती	10 मई बु.
श्रीगंगा दशहरा	4 जून र.
गुरु पूर्णिमा	9 जुला. र.
रक्षा-बन्धन	7 अग. र.
श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मा.)	14 अग. चं.
सिद्धि विनायक व्रत	25 अग. शु.
श्राद्ध (पक्ष) प्रारंभ	6 सितं. बु.
श्राद्ध समाप्त(अमा.)	20 सितं. बु.
शरद् नवरात्रे प्रारम्भ	21 सितं. गु.
श्रीदुर्गाष्टमी	28 सितं. गु.
दशहरा	30 सितं. श.
शरद् पूर्णिमा व्रत	5 अक्तू. गु.
करवा-चौथ व्रत	8 अक्तू. र.
दीपावली	19 अक्तू. गु.
भाई दूज	21 अक्तू. श.
श्रीगुरु नानक जयं.	4 नवं. श.
श्रीगीता जयन्ती	30 नवं. गु.

(सन् 2018 ई.)

लोहड़ी पर्व	13 जन. श.
मकर संक्रान्ति	14 जन. र.
श्रीवसन्त पंचमी	22 जन. चं.
श्रीगुरु रविदास जयं.	31 जन. बु.
श्रीमहाशिवरात्रि व्रत	14 फर. बु.
होलिका दहन	1 मार्च गु.

गण्डमूलक नक्षत्रों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल (भा. स्टें. टा.) संवत् २०७३ वि.

(1 जनवरी, सन् 2016 ई. से 30 मार्च, 2017 तक)

रेवती, अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एवं मूल–ये गण्डमूल नक्षत्र कहलाते हैं–इन नक्षत्रों में उत्पन्न जातक स्वयं अपने या माता-पिता के स्वास्थ्य, व्यवसाय एवं उन्नति आदि के सम्बन्ध में अशुभ होते हैं। गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक के नक्षत्र की लगभग 27 दिन पश्चात् उसी नक्षत्रकाल में विद्वान् एवं योग्य ब्राह्मण द्वारा शान्ति करवानी चाहिए। यदि जन्मकाल के समय शान्ति न करवाई गई हो तो, जातक के जन्मदिन के निकट उसी नक्षत्र में दान-पूजन करवा लेना शुभकारक रहता है।

नोट–हमारे कार्यालय से छपी **'सम्पूर्ण गण्डमूल नक्षत्र शान्ति प्रयोग'** पुस्तक पूजनादि कार्यों के लिए मंगवा सकते हैं। **मूल्य 65/- रु.**

पता–जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर

प्रारम्भ काल					समाप्ति काल				
ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.	ता.	मास	नक्षत्र	घं.	मिं.
7	जन.	ज्येष्ठा	8	57	9	जन.	मूल	10	01
15	जन.	रेवती	26	33	17	जन.	अश्विनी	23	58
24	जन.	आश्लेषा	20	44	26	जन.	मघा	23	39
3	फर.	ज्येष्ठा	18	08	5	फर.	मूल	19	43
12	फर.	रेवती	9	07	14	फर.	अश्विनी	05	33
21	फर.	आश्लेषा	04	00	23	फर.	मघा	7	22
1	मार्च	ज्येष्ठा	26	37	4	मार्च	मूल	5	20
10	मार्च	रेवती	18	21	12	मार्च	अश्विनी	13	15
19	मार्च	आश्लेषा	9	49	21	मार्च	मघा	13	46
29	मार्च	ज्येष्ठा	9	41	31	मार्च	मूल	13	23
7	अप्रै.	रेवती	5	20	8	अप्रै.	अश्विनी	23	23
15	अप्रै.	आश्लेषा	15	36	17	अप्रै.	मघा	19	33
25	अप्रै.	ज्येष्ठा	15	40	27	अप्रै.	मूल	19	43
4	मई	रेवती	16	01	6	मई	अश्विनी	10	23
12	मई	आश्लेषा	22	45	14	मई	मघा	25	53
22	मई	ज्येष्ठा	21	34	24	मई	मूल	25	19
31	मई	रेवती	24	41	2	जून	अश्विनी	20	16
9	जून	आश्लेषा	7	30	11	जून	मघा	9	29
19	जून	ज्येष्ठा	4	14	21	जून	मूल	7	31
28	जून	रेवती	7	04	30	जून	अश्विनी	3	56
6	जुला.	आश्लेषा	16	59	8	जुला.	मघा	18	10
16	जुला.	ज्येष्ठा	11	56	18	जुला.	मूल	15	03
25	जुला.	रेवती	12	26	27	जुला.	अश्विनी	9	41
2	अग.	आश्लेषा	25	52	4	अग.	मघा	26	58
12	अग.	ज्येष्ठा	20	17	14	अग.	मूल	23	46
21	अग.	रेवती	18	46	23	अग.	अश्विनी	15	13
30	अग.	आश्लेषा	09	13	1	सितं.	मघा	10	53
9	सितं.	ज्येष्ठा	04	26	11	सितं.	मूल	8	44
18	सितं.	रेवती	03	22	19	सितं.	अश्विनी	22	29
26	सितं.	आश्लेषा	15	04	28	सितं.	मघा	17	25
6	अक्तू.	ज्येष्ठा	11	41	8	अक्तू.	मूल	16	47
15	अक्तू.	रेवती	14	01	17	अक्तू.	अश्विनी	8	16
23	अक्तू.	आश्लेषा	20	39	25	अक्तू.	मघा	23	03
2	नवं.	ज्येष्ठा	17	57	4	नवं.	मूल	23	21
11	नवं.	रेवती	25	00	13	नवं.	अश्विनी	19	36
20	नवं.	आश्लेषा	03	44	22	नवं.	मघा	05	09
29	नवं.	ज्येष्ठा	23	56	2	दिसं.	मूल	05	05
9	दिसं.	रेवती	10	12	11	दिसं.	अश्विनी	06	14
17	दिसं.	आश्लेषा	13	09	19	दिसं.	मघा	13	03
27	दिसं.	ज्येष्ठा	6	27	29	दिसं.	मूल	11	17
(सन् 2017 ई.)									
5	जन.	रेवती	16	45	7	जन.	अश्विनी	14	18
13	जन.	आश्लेषा	23	50	15	जन.	मघा	22	44
23	जन.	"ज्येष्ठा	13	56	25	जन.	मूल	18	47
1	फर.	रेवती	22	07	3	फर.	अश्विनी	20	02
10	फर.	आश्लेषा	9	40	12	फर.	मघा	8	40
19	फर.	ज्येष्ठा	22	07	22	फर.	मूल	03	17
1	मार्च	रेवती	04	44	2	मार्च	अश्विनी	25	41
9	मार्च	आश्लेषा	17	12	11	मार्च	मघा	17	07
19	मार्च	ज्येष्ठा	6	14	21	मार्च	मूल	11	51
28	मार्च	रेवती	13	41	30	मार्च	अश्विनी	9	24

पंचकारम्भ एवं समाप्ति काल–सं० २०७३ वि.

(1 जन., 2016 ई. से 30 मार्च, 2017 ई. तक)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
ता. मास	घं.	मिं.	ता. मास	घं.	मिं.
12 जन.	19	18	16 जन.	25	13
9 फर.	04	12	13 फर.	7	13
7 मार्च	14	51	11 मार्च	15	42
3 अप्रै.	25	15	7 अप्रै.	26	22
1 मई	9	43	5 मई	13	18
28 मई	16	01	1 जून	22	39
24 जून	21	26	29 जून	5	38
21 जुला	27	42	26 जुला.	11	06
18 अग.	11	53	22 अग.	16	58
14 सितं.	21	44	18 सितं.	24	55
12 अक्तू.	7	52	16 अक्तू.	11	14
8 नवं.	16	33	12 नवं.	22	30
5 दिसं.	23	03	10 दिसं.	8	29
(सन् 2017 ई.)					
2 जन.	04	29	6 जन.	15	45
29 जन.	10	54	2 फर.	21	12
25 फर.	19	18	2 मार्च	03	16
25 मार्च	04	57	29 मार्च	11	39

भारत के प्रसिद्ध नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीसत्यनारायण व्रत व श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (भा. स्टैं. टा.) वि.सं.२०७३ (सं. 2016-17 ई.)

नगर	सत्यव्रत 21 अप्रै., 16		गणेशचतुर्थी 25 अप्रै.,16		सत्यव्रत 21 मई,16		गणेशचतुर्थी 25 मई,16		सत्यव्रत 19 जून,16		गणेशचतुर्थी 23 जून,16		सत्यव्रत 19 जुला.,16		गणेशचतुर्थी 23 जुला.,16	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
अमृतसर	18	26	21	55	18	58	22	22	18	38	21	43	19	03	21	57
अजमेर	18	23	21	46	18	50	22	14	18	27	21	46	18	53	21	55
अम्बाला	18	17	21	45	18	48	22	12	18	27	21	43	18	52	21	49
अहमदाबाद	18	29	21	50	18	54	22	17	18	31	21	50	18	56	22	01
अलवर (राज.)	18	16	21	41	18	45	22	08	18	23	21	40	18	48	21	48
आगरा	18	11	21	33	18	39	22	02	18	17	21	34	18	42	21	43
ईलाहाबाद	17	53	21	16	18	20	21	43	17	57	21	16	18	22	21	26
ऊना	18	21	21	50	18	53	22	17	18	32	21	48	18	57	21	52
उदयपुर (राज.)	18	26	21	48	18	53	22	16	18	29	21	49	18	55	21	58
ऊधमपुर	18	25	21	57	18	59	22	24	18	39	21	54	19	04	21	56
कपूरथला	18	23	21	52	18	55	22	19	18	34	21	50	18	59	21	55
करनाल	18	16	21	44	18	47	22	11	18	26	21	42	18	51	21	48
काँगड़ा (हि.प्र.)	18	21	21	51	18	52	22	18	18	33	21	48	18	58	21	52
कानपुर	18	01	21	24	18	27	21	52	18	06	21	24	18	31	21	33
कैथल	18	18	21	46	18	49	22	13	18	28	21	44	18	53	21	50
कुल्लू	18	17	21	47	18	49	22	14	18	29	21	44	18	54	21	48
कुराली	18	19	21	48	18	51	22	15	18	30	21	46	18	55	21	51
कुरुक्षेत्र	18	17	21	45	18	48	22	12	18	27	21	43	18	52	21	49
कोलकाता	17	24	20	45	17	50	21	14	17	27	20	47	17	51	20	57
गाज़ियाबाद	18	13	21	40	18	43	22	07	18	22	21	38	18	47	21	45
ग्वालियर	18	09	21	31	18	36	22	00	18	14	21	32	18	39	21	41
गुरदासपुर	18	24	21	54	18	56	22	21	18	36	21	51	19	01	21	55
गुड़गाँव	18	15	21	47	18	45	22	09	18	24	21	39	18	48	21	47
चण्डीगढ़	18	16	21	46	18	49	22	13	18	28	21	44	18	53	21	49
चम्बा	18	10	21	52	18	55	22	20	18	34	21	50	18	59	21	53
चेन्नई	17	54	21	05	18	12	21	32	17	46	21	08	18	11	21	27
जयपुर (राज.)	18	19	21	43	18	46	22	11	18	26	21	43	18	51	21	51
जम्मू	18	26	21	58	19	00	22	25	18	40	21	55	19	05	21	58
जालन्धर (पं.)	18	23	21	52	18	55	22	19	18	34	21	50	18	59	21	55
जोधपुर (राज.)	18	30	21	53	18	57	22	21	18	35	21	53	19	00	22	02
जीन्द (हरि.)	18	18	21	45	18	48	22	12	18	27	21	43	18	52	21	50
दिल्ली	18	14	21	41	18	44	22	08	18	23	21	39	18	47	21	46
देहरादून	18	12	21	40	18	43	22	07	18	22	21	38	18	47	21	44
धर्मशाला	18	21	21	51	18	53	22	18	18	33	21	49	18	58	21	52
नंगल (पंजा.)	18	19	21	49	18	51	22	16	18	30	21	46	18	55	21	51
नादौन (हि.प्र.)	18	20	21	51	18	52	22	18	18	33	21	48	18	58	21	52

नगर	सत्यव्रत 17 अग.,16		गणेशचतुर्थी 21 अग.,16		जन्माष्टमी (स्मार्त) 24 अगस्त		जन्माष्टमी (वैष्णव) 25 अगस्त		सत्यव्रत 16 सितं.,16		गणेशचतुर्थी 19 सितं.,16		सत्यव्रत 15 अक्तू,16		गणेशचतुर्थी 19 अक्तू,16 करवाचौथ	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.					घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.		
अमृतसर	18	28	21	15	23	25	24	14	18	28	20	35	17	42	20	53
अजमेर	18	21	21	17	23	24	24	24	18	26	20	41	17	43	20	50
अम्बाला	18	18	21	08	23	21	24	10	18	20	20	30	17	35	20	49
अहमदाबाद	18	25	21	25	23	54	24	36	18	33	20	52	17	52	21	16
अलवर (राज.)	18	15	21	08	23	18	24	13	18	19	20	32	17	35	20	53
आगरा	18	09	21	03	23	12	24	10	18	14	20	27	17	31	20	49
ईलाहाबाद	17	51	20	48	23	07	23	56	17	57	20	13	17	15	20	36
ऊना	18	23	21	10	23	20	24	09	18	23	20	30	17	37	20	48
उदयपुर (राज.)	18	23	21	21	23	40	24	30	18	30	20	46	17	48	21	09
ऊधमपुर	18	29	21	13	23	22	24	10	18	28	20	33	17	40	20	49
कपूरथला	18	25	21	13	23	24	24	13	18	26	20	34	17	40	20	52
करनाल	18	17	21	07	23	20	24	09	18	19	20	29	17	34	20	48
काँगड़ा (हि.प्र.)	18	23	21	10	23	20	24	08	18	23	20	30	17	37	20	47
कानपुर	17	59	20	55	23	12	24	02	18	05	20	19	17	22	20	41
कैथल	18	19	21	09	23	22	24	11	18	21	20	31	17	36	20	50
कुल्लू	18	19	21	06	23	16	24	04	18	19	20	26	17	33	20	43
कुराली	18	21	21	09	23	20	24	09	18	22	20	30	17	36	20	48
कुरुक्षेत्र	18	18	21	08	23	21	24	10	18	20	20	30	17	35	20	49
कोलकाता	17	20	20	23	22	43	23	33	17	30	19	49	16	50	20	13
गाज़ियाबाद	18	13	21	05	23	20	24	09	18	16	20	28	17	32	20	48
ग्वालियर	18	07	21	03	23	20	24	10	18	12	20	27	17	30	20	49
गुरदासपुर	18	26	21	13	23	23	24	11	18	26	20	33	17	39	20	50
गुड़गाँव	18	15	21	07	23	22	24	11	18	18	20	31	17	34	20	50
चण्डीगढ़	18	19	21	07	23	18	24	07	18	20	20	28	17	34	20	46
चम्बा	18	24	21	09	23	18	24	07	18	23	20	29	17	37	20	46
चेन्नई	17	43	20	58	23	28	24	21	17	59	20	29	17	24	21	01
जयपुर (राज.)	18	17	21	13	23	29	24	19	18	23	20	36	17	40	20	58
जम्मू	18	30	21	14	23	23	24	11	18	29	20	34	17	41	20	50
जालन्धर (पं.)	18	25	21	13	23	24	24	13	18	26	20	34	17	40	20	52
जोधपुर (राज.)	18	28	21	24	23	41	24	31	18	33	20	48	17	51	21	10
जीन्द (हरि.)	18	19	21	10	23	24	24	14	18	21	20	33	17	37	20	53
दिल्ली	18	14	21	06	23	21	24	10	18	17	20	29	17	33	20	49
देहरादून	18	13	21	03	23	16	24	05	18	15	20	25	17	30	20	44
धर्मशाला	18	23	21	10	23	20	24	08	18	23	20	30	17	36	20	47
नंगल (पंजा.)	18	21	21	09	23	20	24	09	18	22	20	30	17	35	20	48
नादौन (हि.प्र.)	18	23	21	10	23	20	24	08	18	23	20	30	17	36	20	47

भारत के प्रसिद्ध नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीसत्यनारायण व्रत व श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (भा. स्टैं. टा.) वि.सं.२०७३ (सं. 2016-17 ई.)

नगर	सत्यव्रत 21 अप्रै., 16 घं. मि.	गणेशचतुर्थी 25 अप्रै.,16 घं. मि.	सत्यव्रत 21 मई,16 घं. मि.	गणेशचतुर्थी 25 मई,16 घं. मि.	सत्यव्रत 19 जून,16 घं. मि.	गणेशचतुर्थी 23 जून,16 घं. मि.	सत्यव्रत 19 जुला.,16 घं. मि.	गणेशचतुर्थी 23 जुला.,16 घं. मि.	सत्यव्रत 17 अग.,16 घं. मि.	गणेशचतुर्थी 21 अग.,16 घं. मि.	जन्माष्टमी (स्मार्त) 24 अगस्त	जन्माष्टमी (वैष्णव) 25 अगस्त	सत्यव्रत 16 सितं.,16 घं. मि.	गणेशचतुर्थी 19 सितं.,16 घं. मि.	सत्यव्रत 15 अक्तू.,16 घं. मि.	गणेशचतुर्थी 19 अक्तू.,16 करवाचौथ
नाहन	18 16	21 44	18 47	22 12	18 26	21 42	18 51	21 48	18 17	21 06	23 18	24 07	18 19	20 27	17 33	20 46
पठानकोट	18 23	21 53	18 56	22 20	18 35	21 51	19 00	21 54	18 25	21 12	23 22	24 10	18 25	20 32	17 38	20 49
पटियाला	18 18	21 46	18 49	22 13	18 28	21 44	18 53	21 50	18 19	21 09	23 22	24 11	18 21	20 31	17 36	20 50
पंचकूला	18 17	21 46	18 49	22 13	18 28	21 44	18 53	21 49	18 19	21 07	23 18	24 07	18 20	20 28	17 34	20 46
पानीपत	18 15	21 42	18 46	22 09	18 24	21 40	18 49	21 47	18 16	21 07	23 21	24 11	18 18	20 30	17 34	20 50
पालमपुर	18 20	21 50	18 52	22 17	18 32	21 47	18 57	21 51	18 22	21 09	23 19	24 07	18 22	20 29	17 35	20 46
फगवाड़ा	18 22	21 51	18 54	22 18	18 33	21 49	18 58	21 54	18 24	21 12	23 23	24 12	18 25	20 33	17 39	20 51
फरीदकोट	18 25	21 54	18 57	22 21	18 36	21 52	19 01	21 57	18 27	21 15	23 26	24 15	18 28	20 36	17 42	20 54
फरीदाबाद	18 14	21 40	18 43	22 07	18 22	21 39	18 47	21 46	18 15	21 06	23 22	24 11	18 17	20 29	17 33	20 50
फाजिल्का	18 28	21 56	18 59	22 23	18 38	21 54	19 03	22 00	18 29	21 19	23 32	24 21	18 31	20 41	17 46	21 00
फिरोज़पुर	18 26	21 55	18 58	22 22	18 37	21 53	19 02	21 58	18 28	21 16	23 27	24 16	18 29	20 37	17 43	20 55
बीकानेर	18 29	21 55	18 59	22 23	18 38	21 55	19 03	22 02	18 29	21 22	23 38	24 27	18 33	20 46	17 49	21 06
बिलासपुर (हि.प्र.)	18 18	21 47	18 50	22 14	18 29	21 45	18 54	21 50	18 20	21 08	23 19	24 08	18 21	20 29	17 35	20 47
बैंगलूरु	18 05	21 16	18 23	21 43	17 57	21 18	18 22	21 38	17 54	21 09	23 39	24 32	18 10	20 40	17 36	21 12
महेन्द्रगढ़ (हरि.)	18 18	21 44	18 47	22 11	18 26	21 42	18 51	21 50	18 17	21 10	23 26	24 15	18 21	20 34	17 37	20 54
मेरठ	18 12	21 39	18 42	22 06	18 21	21 37	18 46	21 44	18 12	21 04	23 19	24 08	18 15	20 27	17 31	20 47
मण्डी (हि.प्र.)	18 18	21 48	18 50	22 15	18 30	21 45	18 55	21 49	18 20	21 07	23 23	24 05	18 20	20 27	17 34	20 44
मथुरा	18 11	21 36	18 40	22 04	18 18	21 36	18 44	21 43	18 11	21 05	23 20	24 10	18 15	20 28	17 31	20 49
मुम्बई	18 25	21 42	18 48	22 09	18 24	21 42	18 48	21 59	18 19	21 25	23 50	24 41	18 31	20 59	17 52	21 22
यमुनानगर	18 15	21 43	18 46	22 10	18 25	21 41	18 50	21 47	18 16	21 06	23 19	24 08	18 18	20 24	17 33	20 47
रोपड़	18 19	21 48	18 51	22 15	18 30	21 46	18 55	21 51	18 21	21 09	23 20	24 09	18 22	20 30	17 36	20 48
रोहतक	18 16	21 43	18 46	22 10	18 25	21 42	18 50	21 48	18 16	21 08	23 23	24 12	18 20	20 31	17 35	20 51
रूड़की	18 12	21 40	18 43	22 07	18 22	21 38	18 47	21 44	18 13	21 03	23 16	24 05	18 15	20 25	17 30	20 44
लुधियाना	18 21	21 50	18 53	22 17	18 32	21 48	18 57	21 53	18 23	21 11	23 22	24 11	18 24	20 32	17 38	20 50
लखनऊ	17 58	21 23	18 27	21 50	18 05	21 22	18 30	21 30	17 57	20 52	23 08	23 58	18 02	20 16	17 19	20 37
वाराणसी	17 48	21 11	18 15	21 39	17 53	21 12	18 19	21 22	17 47	20 44	23 02	23 52	17 53	20 09	17 11	20 32
शिमला	18 16	21 49	18 48	22 12	18 27	21 43	18 52	21 48	18 18	21 06	23 17	24 06	18 19	20 27	17 33	20 45
श्रीगंगानगर	18 29	21 57	19 00	22 24	18 39	21 55	19 04	22 01	18 30	21 20	23 33	24 22	18 32	20 42	17 43	21 01
संगरूर (पं.)	18 20	21 48	18 51	22 15	18 30	21 46	18 55	21 52	18 21	21 11	23 24	24 13	18 23	20 33	17 38	20 52
सरकाघाट	18 21	21 51	18 53	22 18	18 33	21 48	18 58	21 52	18 23	21 10	23 20	24 08	18 23	20 30	17 36	20 47
सहारनपुर	18 14	21 42	18 45	22 09	18 24	21 40	18 49	21 46	18 15	21 05	23 18	24 07	18 17	20 27	17 32	20 46
सोनीपत	18 15	21 42	18 46	22 09	18 24	21 41	18 49	21 47	18 16	21 07	23 21	24 11	18 18	20 30	17 34	20 50
हिसार (हरि.)	18 20	21 47	18 51	22 14	18 29	21 46	18 54	21 52	18 21	21 12	23 26	24 16	18 23	20 35	17 39	20 55
होशियारपुर	18 22	21 52	18 54	22 18	18 34	21 49	18 58	21 53	18 24	21 11	23 21	24 10	18 24	20 31	17 38	20 49
हरिद्वार	18 11	21 39	18 42	22 06	18 21	21 37	18 46	21 43	18 12	21 02	23 15	24 04	18 14	20 24	17 29	20 43
हमीरपुर (हि.प्र.)	18 20	21 50	18 52	22 17	18 32	21 47	18 57	21 51	18 22	21 09	23 19	24 07	18 22	20 29	17 36	20 46

भारत के प्रसिद्ध नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीसत्यनारायण व्रत व श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (भा. स्टैं. टा.) वि.सं.२०७३ (सं. 2016-17 ई.)

नगर	सत्यव्रत 14 नवं.,16		गणेशचतुर्थी 17 नवं.,16		सत्यव्रत 13 दिसं.16		गणेशचतुर्थी 17 दिसं.16		सत्यव्रत 11 जन.,17		गणेशचतुर्थी 15 जन.,17		सत्यव्रत 10 फर.,17		गणेशचतुर्थी 14 फर.,17		सत्यव्रत 12 मार्च,17		गणेशचतुर्थी 16 मार्च,17	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
अमृतसर	17	45	20	32	17	12	21	19	16	51	21	02	17	42	21	39	18	30	22	12
अजमेर	17	53	20	44	17	24	21	28	17	02	21	09	17	52	21	40	18	25	22	06
अम्बाला	17	40	20	29	17	09	21	14	16	48	20	57	17	38	21	32	18	24	22	02
अहमदाबाद	18	05	20	56	17	36	21	40	17	16	21	18	18	04	21	47	18	43	22	11
अलवर (राज.)	17	43	20	33	17	13	21	25	16	52	20	59	17	41	21	32	18	25	22	00
आगरा	17	39	20	29	17	09	21	19	16	49	20	55	17	37	21	27	18	20	21	54
ईलाहाबाद	17	25	20	16	16	56	21	00	16	36	20	40	17	24	21	11	18	05	21	36
ऊना	17	40	20	28	17	08	21	14	16	47	20	57	17	37	21	34	18	25	22	06
उदयपुर (राज.)	17	59	20	49	17	29	21	33	17	09	21	13	17	47	21	44	18	38	22	09
ऊधमपुर	17	41	20	29	17	09	21	15	16	48	21	06	17	40	21	38	18	28	22	12
कपूरथला	17	43	20	32	17	12	21	17	16	51	21	01	17	41	21	37	18	28	22	09
करनाल	17	39	20	28	17	08	21	13	16	47	20	56	17	37	21	31	18	23	22	01
काँगड़ा (हि.प्र.)	17	39	20	27	17	07	21	13	16	46	20	57	17	37	21	34	18	25	22	07
कानपुर	17	31	20	22	17	02	21	06	16	41	20	47	17	29	21	18	18	12	21	44
कैथल	17	41	20	30	17	10	21	15	16	49	20	58	17	39	21	33	18	25	22	03
कुल्लू	17	35	20	23	17	03	21	09	16	42	20	53	17	33	21	30	18	21	22	03
कुराली	17	39	20	28	17	08	21	13	16	47	20	57	17	37	21	33	18	24	22	04
कुरुक्षेत्र	17	40	20	29	17	09	21	14	16	48	20	57	17	38	21	32	18	24	22	02
कोलकाता	17	02	19	54	16	34	20	38	16	13	20	15	17	02	20	44	17	40	21	08
गाज़ियाबाद	17	39	20	28	17	08	21	13	16	47	20	55	17	37	21	29	18	22	21	58
ग्वालियर	17	39	20	30	17	13	21	14	16	49	20	55	17	37	21	26	18	20	21	52
गुरदासपुर	17	42	20	30	17	10	21	16	16	49	21	00	17	40	21	37	18	28	22	10
गुड़गाँव	17	41	20	31	17	10	21	16	16	50	20	57	17	40	21	31	18	24	21	59
चण्डीगढ़	17	37	20	26	17	06	21	11	16	45	20	55	17	35	21	31	18	22	22	02
चम्बा	17	37	20	26	17	05	21	12	16	45	20	53	17	35	21	30	18	24	22	08
चेन्नई	17	46	20	42	17	22	21	23	17	03	20	56	17	46	21	16	18	17	21	32
जयपुर (राज.)	17	48	20	38	17	18	21	22	16	57	21	04	17	46	21	36	18	30	22	03
जम्मू	17	42	20	30	17	10	21	16	16	49	21	01	17	49	21	39	18	29	22	13
जालन्धर (पं.)	17	43	20	32	17	12	21	17	16	51	21	01	17	41	21	37	18	28	22	08
जोधपुर (राज.)	18	00	20	51	17	31	21	35	17	10	21	16	17	58	21	47	18	41	22	13
जीन्द (हरि.)	17	44	20	33	17	13	21	17	16	52	21	00	17	41	21	34	18	26	22	03
दिल्ली	17	40	20	29	17	09	21	14	16	48	20	56	17	38	21	30	18	23	21	59
देहरादून	17	35	20	24	17	04	21	09	16	43	20	52	17	33	21	26	18	19	21	57
धर्मशाला	17	39	20	27	17	07	21	13	16	46	20	57	17	37	21	34	18	25	22	07
नंगल (पंजा.)	17	39	20	28	17	08	21	13	16	47	20	57	17	37	21	33	18	24	22	05
नादौन (हि.प्र.)	17	39	20	27	17	07	21	13	16	46	20	57	17	37	21	34	18	25	22	07

वास्तु दोष निवारण हेतु चमत्कारी उपाये

यदि आपका भवन/निवास स्थान वास्तु सिद्धान्त के विपरीत हो तो कुछ निम्न दैनिक दिनचर्या में परिवर्तन कर आप शुभ फल प्राप्त तथा अनिष्ट प्रभाव से बच सकते हैं।

1. जब भी पानी पीएं अपना मुख उत्तर-पूर्व की ओर रखें।

2. जब भी भोजन ग्रहण करें थाली दक्षिण-पूर्व की ओर रखें और पूर्वाभिमुख होकर भोजन करें।

3. जब भी सोएं दक्षिण-पश्चिम कोण में दक्षिण की ओर सिरहाना करके सोने से नींद गहरी और अच्छी आती है।

4. जब भी पूजा करें तो मुख उत्तर-पूर्व या उत्तर-पश्चिम की ओर करके बैठें।

5. सम्यक उन्नति हेतु लक्ष्मी, गणेश, कुबेर, स्वास्तिक, ॐ, मीन, एवं आदि मांगलिक चिह्न मुख्यद्वार के ऊपर स्थापित करें।

6. यदि घर में कोई पूजा-स्थल नहीं है तो उस उत्तर-पूर्व (ईशान) कोण में रखें।

7. दक्षिण-पूर्व, उत्तर-पश्चिम या दक्षिण-पश्चिम कोण में कुआं या ट्यूबवैल है तो उसे भरवाकर उत्तर-पूर्व कोण में ट्यूबवैल या कुआँ खुदवाएँ। अन्य दिशा में कुएँ को भरवा न सकें तो उसे प्रयोग में लाना बन्द कर दें अथवा उत्तर-पूर्व में एक ओर ट्यूबवैल या कुआँ लगवाएँ जिससे वास्तु का सन्तुलन हो सके।

8. दक्षिण-पश्चिम दिशा में अधिक दरवाज़े और खिड़कियां हों तो उन्हें बन्द करके उनकी संख्या कम कर दें।

9. रसोईघर गलत स्थान पर हो तो अग्निकोण में एक बल्ब लगा दें और सुबह-शाम उसे अनिवार्य रूप में जलायें।

10. बीम के दोष को शान्त करने के लिए बीम को सीलिंग टॉयल्स से ढंक देवें। बीम के दोनों और बाँस की बाँसुरी लगायें।

11. दुकान की शुभता बढ़ाने के लिए प्रवेश द्वार के दोनों ओर गणपति की मूर्ति या स्टिकर लगायें। एक गणपति की दृष्टि दुकान पर पड़ेगी, दूसरे गणपति की बाहर की ओर।

12. द्वार दोष और वेध दोष को दूर करने के लिए शंख, सीप, समुद्र झाग, कौड़ी, ताम्बे या सोने की तुश लाल कपड़े में या मोली में दरवाज़े पर लटकायें।

भारत के प्रसिद्ध नगरों में श्रीगणेश चतुर्थी, श्रीसत्यनारायण व्रत व श्रीकृष्णजन्माष्टमी चन्द्रोदय (भा. स्टैं. टा.) वि.सं.२०७३ (सं. 2016-17 ई.)

नगर	सत्यव्रत		गणेशचतुर्थी		सत्यव्रत		गणेशचतुर्थी		सत्यव्रत		गणेशचतुर्थी		सत्यव्रत		गणेशचतुर्थी		सत्यव्रत		गणेशचतुर्थी	
	14 नवं.,16		17 नवं.,16		13 दिसं.16		17 दिसं.16		11 जन.,17		15 जन.,17		10 फर.,17		14 फर.,17		12 मार्च,17		16 मार्च,17	
	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	संकटचौथ		घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
नाहन	17	37	20	26	17	06	21	11	16	45	20	54	17	35	21	30	18	21	22	01
पठानकोट	17	41	20	29	17	09	21	15	16	48	20	59	17	38	21	36	18	27	22	09
पटियाला	17	41	20	30	17	10	21	15	16	49	20	58	17	39	21	33	18	25	22	03
पंचकूला	17	37	20	26	17	06	21	11	16	45	20	55	17	35	21	31	18	22	22	02
पानीपत	17	41	20	30	17	10	21	14	16	49	20	57	17	39	21	31	18	24	22	00
पालमपुर	17	38	20	26	17	06	21	12	16	45	20	56	17	35	21	33	18	24	22	06
फगवाड़ा	17	42	20	31	17	11	21	16	16	50	21	00	17	40	21	36	18	27	22	08
फरीदकोट	17	45	20	34	17	14	21	19	16	53	21	03	17	43	21	39	18	30	22	10
फरीदाबाद	17	41	20	31	17	11	21	15	16	50	20	57	17	39	21	30	18	23	21	58
फाजिल्का	17	51	20	40	17	20	21	25	16	59	21	08	17	49	21	43	18	35	22	13
फिरोजपुर	17	46	20	35	17	15	21	20	16	54	21	04	17	44	21	40	18	31	22	12
बीकानेर	17	57	20	47	17	27	21	31	17	06	21	13	17	55	21	46	18	39	22	14
बिलासपुर(हि.प्र.)	17	38	20	27	17	07	21	12	16	46	20	56	17	36	21	32	18	23	22	04
बेंगलूरु	17	57	20	56	17	33	21	34	17	14	21	07	17	57	21	27	18	28	21	44
महेन्द्रगढ़(हरि.)	17	45	20	34	17	15	21	19	16	54	21	01	17	43	21	34	18	27	22	02
मेरठ	17	38	20	27	17	07	21	12	16	46	20	54	17	36	21	28	18	21	21	57
मण्डी (हि.प्र.)	17	36	20	24	17	04	21	10	16	43	20	54	17	33	21	31	18	22	22	04
मथुरा	17	39	20	29	17	09	21	14	16	48	20	55	17	38	21	28	18	21	21	55
मुम्बई	18	09	21	03	17	43	21	44	17	23	21	21	18	08	21	46	18	43	22	06
यमुनानगर	17	38	20	27	17	07	21	12	16	46	20	55	17	36	21	30	18	22	22	00
रोपड़	17	39	20	28	17	08	21	13	16	47	20	57	17	37	21	33	18	24	22	05
रोहतक	17	42	20	31	17	11	21	16	16	50	20	58	17	39	21	32	18	25	22	01
रूड़की	17	35	20	24	17	04	21	09	16	43	20	52	17	33	21	27	18	19	21	57
लुधियाना	17	41	20	30	17	10	21	15	16	49	20	59	17	39	21	35	18	26	22	07
लखनऊ	17	27	20	17	16	57	21	02	16	37	20	43	17	25	21	15	18	09	21	42
वाराणसी	17	21	20	12	16	52	20	56	16	32	20	36	17	20	21	07	18	01	21	32
शिमला	17	36	20	25	17	05	21	10	16	44	20	54	17	34	21	30	18	21	22	02
श्रीगंगानगर	17	52	20	41	17	21	21	26	17	00	21	09	17	50	21	44	18	36	22	14
संगरूर (पं.)	17	43	20	32	17	12	21	17	16	51	21	00	17	41	21	35	18	27	22	05
सरकाघाट	17	38	20	27	17	07	21	13	16	46	20	57	17	36	21	34	18	25	22	07
सहारनपुर	17	37	20	26	17	06	21	11	16	45	20	54	17	35	21	29	18	21	21	59
सोनीपत	17	41	20	30	17	10	21	15	16	49	20	57	17	39	21	31	18	24	22	00
हिसार (हरि.)	17	45	20	35	17	15	21	20	16	54	21	02	17	43	21	36	18	29	22	05
होशियारपुर	17	40	20	29	17	08	21	14	16	48	20	58	17	38	21	35	18	26	22	08
हरिद्वार	17	34	20	23	17	03	21	08	16	42	20	51	17	32	21	26	18	17	21	56
हमीरपुर(हि.प्र.)	17	38	20	26	17	06	21	12	16	45	20	56	17	36	21	33	18	24	22	06

गृह-निर्माण की सामग्री

1. ईंट, लोहा, पत्थर, मिट्टी और लकड़ी–ये नये मकान में नये ही लगाने चाहिए।

2. **ग्राह्य वृक्ष**–अशोक, महुआ, साखू, असना, चन्दन, देवदारु, शीशम, श्रीपर्णी, तिन्दुकी, कटहल, खदिर, अर्जुन, शाल और शमी–इन वृक्षों की लकड़ी शुभ फल देने वाली है।

3. **पत्थर का प्रयोग**–वर्तमान में घरों में पत्थर का प्रयोग अधिक किया जाने लगा है ; परन्तु वास्तुशास्त्र में इसका प्रयोग निषिद्ध है। उदाहरणार्थ–

पाषाणतः सौख्यकरा नृपाणां धनक्षयं सोऽपि करोति गेहे।। (वास्तुराज. ९।१३)

'पाषाण-पट्ट (पत्थर के पटरे) राजाओं के महल में सुखदायी होते हैं, पर दूसरे के घर में धनका नाश करते हैं।'

प्रासादे च मठे नरेन्द्रभवने शैलः शुभो नो गृहे।
तस्मिन् भित्तिषु बाह्यकासु शुभदः प्राग्भूमिकुम्भ्यां तथा।। (वास्तुराज. ५।३६)

'मन्दिर, राजमहल और मठ में पत्थर शुभदायक है, पर साधारण घर में पत्थर शुभ नहीं है। परन्तु दीवार से बाहर लगाने में हानि नहीं।'

अग्निवास का परिहार

विवाहयात्रा व्रत गोचरेषु चूड़ोपनीति ग्रहणे युगादौ।
दुर्गा विधाने सुत प्रसूते नैवाग्नि चक्रं परिचिन्तनीयम्।।

अर्थात् नित्य नैमित्तिक कार्य, जन्म व मृत्यु के समय, विवाह में, यात्रा आरम्भ या यात्राकाल में, व्रतोद्यापन में, ग्रहों की अनिष्ट गोचर स्थिति में, मुण्डन, उपनयादि संस्कार में, ग्रहण शान्ति, रोग-पीड़ा की शान्ति, नवरात्र-दुर्गा-पूजा, पुत्रादि सन्तान जन्म काल में अग्निवास का विचार नहीं किया जाता।

अर्धकुम्भ (हरिद्वार) एवं कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व (उज्जैन)

(13 अप्रैल, सन् 2016 ई., बुधवार तथा 21 मई, सन् 2016 ई., शनिवार)

(कुम्भमहापर्व एवं अर्धकुम्भ पर्व की परम्परा, माहात्म्य व स्नान तिथियां)—लेखक : पं. विवेक शर्मा

'कुम्भ-महापर्व' भारत की अति-प्राचीन परम्परा है। यह पर्व भारत की प्राचीन गौरवमयी वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक है। भगवान् आदि शङ्कराचार्य ने भी वैदिक काल से प्रचलित **'कुम्भ'**-पर्व की परम्परा का उद्धार एवं प्रचार किया। मूल रूप में **'कुम्भ'**-पर्व की यह अत्यन्त प्राचीन परम्परा मनुष्य के द्वारा रत्न-ऐश्वर्य, सुख-आरोग्य, आत्म-ज्ञान-अमरत्व की इच्छा से जुड़ी हुई है।

सर्वश्रेष्ठ **'आत्म-ज्ञान'**-अमरत्व को समझने या समझाने के लिए ऋषियों-मुनियों ने **'कुम्भ'**-रूपी सुन्दर प्रतीक को हमारे सम्मुख रखा है।

अन्तः शून्यो बहिः शून्यः, शून्यः 'कुम्भ' इवाम्बरे।
अन्तः पूर्णो बहिः पूर्णः, 'पूर्ण'—कुम्भ इवार्णवे।।

अर्थात् जिस प्रकार एक खाली **'कुम्भ'** आकाश में पड़ा हो, तो उसके भीतर तथा बाहर सर्वत्र आकाश ही रहता है तथा जल से पूर्ण **'कुम्भ'** समुद्र में डूबा हो, तो उसके भीतर और बाहर सर्वत्र जल ही रहता है, उसी प्रकार इस जगत् में सर्वत्र तथा इसके बाहर भी सर्वश्रेष्ठ **'आत्मा'** ही है। स्पष्ट है कि कुम्भ-पर्व आत्मा, आत्म-ज्ञान जैसी सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति से जुड़ा हुआ है। आवश्यकता है कि इसके विविध पक्षों पर चिन्तन-मनन किया जाए।

धर्म के आधार पर ही समस्त मानव समाज प्रतिष्ठित है—**'धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'**।—धर्म ही सम्पूर्ण जगत् का आधार है। धर्म का अपलाप कोई भी नहीं कर सकता है। धर्म ने ही मानव-समाज को एकसूत्र में बाँध रखा है जिसका एकमात्र मूलतत्त्व परमात्मतत्त्व ही है। इसी प्रकार हिन्दू धर्म का प्रतीक कुम्भपर्व है। इस महापर्व के अवसर पर सारे भारत से ही नहीं, अपितु विश्व के अनेक देशों से असंख्य धर्मपरायण श्रद्धालुगण एकत्र होकर नासिक (त्र्यम्बक), हरिद्वार, प्रयाग या उज्जैन में स्नान, दान, तपादि करके तथा वहाँ के समीपवर्ती तीर्थस्थल पर रहने वाले महात्माओं के अमृत वचनों का श्रवण करके धन्य होते हैं।

आजकल कुम्भ को अधिकतर **'कुम्भ'**-मेला कहा जाता है। सम्भवतः इसलिए क्योंकि राजकीय भाषा में इसे **'कुम्भ-मेला'** ही कहा जाता है। **'कुम्भ'**-मेला से सीमित अर्थ का बोध होता है। **'मेला'** उसे कहते हैं, जहाँ जन समुदाय क्रय-विक्रय, मनो-विनोद, खेल-तमाशे, नाटक, चल-चित्र, भोजन आदि के लिए एकत्रित होता है। परन्तु **'कुम्भ'** का आयोजन हमारे शास्त्रों द्वारा इन बातों के लिए कदापि नहीं हुआ है। **'कुम्भ'** के साथ **'पर्व'** कहने पर ही पूरा भाव स्पष्ट होता है। अपितु प्रायः ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक आयोजनों का मुख्य उद्देश्य होता है—**आत्मशुद्धि एवं आत्मकल्याण**। ऋषि-महर्षि, साधु-सन्त और विद्वत्-जनों का समागम राष्ट्र की ऐहिक तथा पारलौकिक व्यवस्था पर विचार-विमर्श का हेतु था। इससे समाज को नवीन चेतना प्राप्त होती थी और देश-काल एवं वातावरण पर धार्मिक महत्ता का वर्चस्व भी स्थापित होता था।

कालिक दृष्टि से ऐसे ग्रहयोग जो खगोल में लुप्त-सुप्त अमृत्व को प्रत्यक्ष और प्रबुद्ध कर देते हैं, चार स्थानों में 12-12 वर्ष पर कालयोग से प्रकट होते हैं। तब गङ्गा (हरिद्वार), त्रिवेणी जी (प्रयाग), शिप्रा (उज्जैन) और गोदावरी (नासिक)—ये पतितपावनी नदियाँ अपनी जलधारा में अमृतत्व को प्रवाहित करती है अर्थात् देश, काल एवं वस्तु तीनों अमृत के प्रादुर्भाव के योग्य हो जाते हैं। फलस्वरूप अमृतघट या कुम्भ का अवतरण होता है। ''**कलश के मुख में विष्णु, कण्ठ में रुद्र, मूल भाग में ब्रह्मा,** मध्य भाग में मातृगण, कुक्षि में समस्त समुद्र, पहाड़ और पृथ्वी रहते हैं और अङ्गों के सहित ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद भी रहते हैं।''

कालचक्र न केवल जीवन के क्रिया-कलाप का मूलाधार है, अपितु समस्त यज्ञकर्म, अनुष्ठान एवं संस्कार आदि भी कालचक्र पर आधारित हैं। कालचक्र में सूर्य, चन्द्रमा एवं देवगुरु बृहस्पति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इन तीनों का योग ही कुम्भ-पर्व का प्रमुख आधार है।

कुम्भ पर्व क्यों मनाया जाता है ?

कुम्भ-पर्व का प्रारम्भ कब से हुआ है, इसका ठीक-ठीक निर्णय करना कठिन है। वेदों में कुम्भपर्व का आधार सूत्रों-मन्त्रों में वर्णित है, जबकि पुराणों में चार कथाओं का उल्लेख मिलता है, जिनमें (1) भगवान् शिव एवं गङ्गा जी की कथा (2) महर्षि दुर्वासा की कथा (3) कद्रू-विनता की कथा और (4) समुद्र मन्थन की कथा—ये प्रसिद्ध हैं। इनमें सर्वाधिक प्रचलित आख्यान समुद्र-मंथन की कथा है। स्कन्दपुराण में वर्णित कथानुसार-एक समय भगवान् विष्णु के निर्देशानुसार देवों तथा असुरों ने मिलकर संयुक्तरूप से अमृत-कुम्भ प्राप्ति के लिए क्षीरोद् सागर में 'मन्दराचल पर्वत' एवं 'वासुकि' नाग के द्वारा समुद्र-मन्थन किया जिससे पहले हलाहल (१) 'विष' उत्पन्न हुआ जिसे भगवान् शिव ने पी लिया। हलाहल विष की ज्वालाओं के शान्त होने पर पुनः समुद्र-मन्थन में से (२) पुष्पक विमान, (३) ऐरावत-हाथी, (४) पारिजात-वृक्ष, (५) नृत्यकला में प्रवीण रम्भा, (६) कौस्तुभ-मणि, (७) द्वितीया का बाल चन्द्रमा, (८) कुण्डल, (९) धनुष, (१०) धेनु (कामधेनु), (११) अश्व (उच्चैःश्रवा), (१२) लक्ष्मी, (१३) धनवन्तरि, (१४) देव-शिल्पी विश्वकर्मा उत्पन्न हुए।

धन्वन्तरि के हाथों में शोभायमान **'कुम्भ'** उत्पन्न हुआ, जो मुख तक **'अमृत'** से पूर्णतया भरा हुआ था। भगवान् विष्णु की कृपा से वह अमृत-कुम्भ इन्द्र को प्राप्त हुआ। देवताओं के संकेत पर इन्द्रपुत्र **'जयन्त'** अमृत कुम्भ को लेकर बड़े वेग से भागने लगे। दैत्यगण जयन्त का पीछा करने लगे। अमृत प्राप्ति के लिए देवताओं और राक्षसों के मध्य बारह दिव्य दिनों

(मानुषी बारह वर्ष) तक भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में **'अमृत-कुम्भ'** की रक्षा करते समय पृथ्वी के जिस-जिस स्थानों पर अमृत की बूँदें गिरी थीं, उस-उस स्थान (प्रयाग, हरिद्वार, उज्जैन, नासिक) पर कुम्भ महापर्व मनाया जाता है। तत्पश्चात् मोहिनीरूपधारी भगवान् विष्णु ने दैत्यों को अमृत का भाग न देकर देवताओं को पिला दिया। इसलिए देवगण अमर हो गए।

पुराणानुसार **'अमृत-कुम्भ'** की रक्षा में **बृहस्पति, सूर्य व चन्द्रमा** ने विशेष सहायता की थी। इसी कारण सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति-तीनों ग्रहों के विशेष योग से ही कुम्भ महापर्व आयोजित होता है।

इन चार महाकुम्भ पर्वों के अतिरिक्त हरिद्वार एवं प्रयागराज में अर्धकुम्भ पर्व भी मनाए जाते हैं, जो स्थानीय कुम्भमहापर्व से लगभग 6 वर्ष बाद घटित हुआ करते हैं।

आगामी वर्ष (2016 ई.) भारतवर्ष में दो महापर्व घटित हो रहे हैं-

(1) अर्द्धकुम्भ-पर्व (हरिद्वार)—13 अप्रैल, बुधवार, 2016 ई.

(2) कुम्भ-महापर्व (उज्जैन)—21 मई, शनिवार, 2016 ई.

(1) अर्द्धकुम्भ-पर्व (हरिद्वार)

सिंहस्थ गुरु के संचारकाल में जब सूर्य मेष राशि में प्रवेश करता है, उस दिन हरिद्वार तीर्थ पर अर्धकुम्भ-पर्व का आयोजन होता है। इस दिन हरिद्वार में श्रीगङ्गा-स्नान तथा जप, दानादि का विशेष माहात्म्य माना गया है। इस वर्ष चैत्र शुक्ल सप्तमी तिथि, बुधवार के दिन 13 अप्रैल, सन् 2016 ई. को अर्ध-कुम्भी का पुण्य योग बन रहा है। हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक- इन चारों तीर्थों में क्रमशः बारह-बारह वर्ष बाद पूर्णकुम्भ का मेला लगता है, जबकि हरिद्वार तथा प्रयाग में अर्धकुम्भ-पर्व भी आयोजित किया जाता है। यह अर्धकुम्भ पर्व उज्जैन और नासिक में मनाने की परम्परा नहीं है।

अर्धकुम्भ-पर्व क्यों ?

अर्धकुम्भ-पर्व प्रारम्भ होने के सम्बन्ध में कुछ लोगों का मत है कि मुगल-साम्राज्य में हिन्दू-हिन्दू-धर्म पर अधिक कुठाराघात होने लगा, उस समय चारों दिशाओं के शंकराचार्यों ने हिन्दू-धर्म की रक्षा के लिए हरिद्वार एवं प्रयाग में साधु-महात्माओं एवं विद्वानों को बुलाकर विचार-विमर्श किया था, तभी से हरिद्वार और प्रयाग में अर्धकुम्भ-मेला होने लगा। कुम्भ महापर्व की भान्ति ही अर्ध-कुम्भी पर्व पर भी हरिद्वार में स्नान, दान, हवन-यज्ञ एवं मन्त्र-अनुष्ठानादि शुभ कर्मों को करने का विशेष माहात्म्य माना जाता है। ता. 13 अप्रैल, बुधवार को हरिद्वार में अर्धकुम्भी का मुख्य स्नान होगा। परन्तु श्रीगंगा-स्नान का मुख्य पुण्यकाल सूर्योदय पूर्व अरुणोदय काल (प्रातः 04/27 से 05/57 तक) और संक्रान्ति का विशेष पुण्य समय दोपहर 13/23 बाद से होगा।

अर्ध-कुम्भ पर्व, हरिद्वार के पावन तीर्थस्थल पर लाखों की संख्या में श्रद्धालु जन पहुँचकर स्नान, दानादि करके अपना जीवन सार्थक करेंगे। श्रद्धालु लोग सिद्ध-पुण्यात्मा महात्माओं के दर्शन करके एवं उनके प्रवचनों से कृतार्थ होंगे। कई महात्मा जन कुछ मास पूर्व ही तीर्थस्थल की पुण्य-भूमि पर आकर परम तत्त्व की प्राप्ति के लिए जप, तप, यज्ञ एवं ध्यान आदि साधना में तल्लीन हो जाते हैं।

—अर्धकुम्भी (हरिद्वार) की स्नान-तिथियां—

(1) प्रथम स्नान—फाल्गुन शुक्ल द्वादशी, रविवार (20 मार्च, 2016 ई., वि. संवत् २०७२)—महाविषुव दिवस तथा सायन मेष संक्रान्ति होने से इस स्नान का विशेष महत्त्व है।

(2) द्वितीय स्नान—चैत्र अमावस, गुरुवार (7 अप्रैल, सन् 2016 ई.)

(3) तृतीय स्नान—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, शुक्रवार (8 अप्रैल, सन् 2016 ई.)। इसदिन नव संवत्सर (वि. 2073) और नवरात्र प्रारम्भ तिथि है।

(4) चतुर्थ (प्रमुख) स्नान—चैत्र शुक्ल सप्तमी, बुधवार **(13 अप्रैल, सन् 2016 ई.)। मेष संक्रान्ति** के कारण यह तिथि इस अर्ध-कुम्भ की प्रमुख स्नानतिथि है। संक्रान्ति का पुण्यकाल दुपैहर 13/23 बजे से शुरु होगा, परन्तु इसदिन अरुणोदय कालिक स्नान (प्रातः 04/27 से 5/57 तक) तथा उसके बाद सारा दिन भी स्नान-दान, पूजा आदि के लिए विशेष प्रशस्त एवं पुण्यप्रद रहेगा। इसदिन हरिद्वार में सूर्योदय 5 बजकर 57 मिंट पर होगा।

(5) पंचम स्नान—चैत्र शुक्ल अष्टमी, गुरुवार **(14 अप्रैल, सन् 2016 ई.)**, मेष संक्रान्ति का पुण्यकाल ता. 14 अप्रैल दोपहर 11/47 तक रहने से यह तिथि भी गङ्गा (कुम्भ) स्नान के लिए विशेष पुण्यप्रदायक होगी।

(6) षष्ठ स्नान—चैत्र शुक्ल एकादशी, रविवार (17 अप्रैल, सन् 2016 ई.)

(7) सप्तम स्नान—चैत्र पूर्णिमा, शुक्रवार (22 अप्रैल, सन् 2016 ई.) 21 अप्रैल प्रातः 8/21 बाद से 22 अप्रैल, 2016 ई. प्रातः 7/19 तक चैत्र पूर्णिमा चित्रा नक्षत्र युक्त होने से यह तिथि भी गङ्गास्नान हेतु मोक्षदायिनी बन जाएगी। अनेक संस्थाएं इस तिथि को ही समापन कर देंगी।

(8) अष्टमस्नान—वैशाख कृष्ण एकादशी, मंगलवार (3 मई, 2016 ई.)

(9) नवम (अन्तिम) स्नान—वैशाख अमावस, शुक्रवार (6 मई, सन् 2016 ई.)

(2) कुम्भ (सिंहस्थ) महापर्व-उज्जैन

इस वर्ष वैशाख पूर्णिमा (21 मई, शनिवार, सन् 2016 ई.) को उज्जैन (अवन्तिकापुरी) में शिप्रा नदी के तट पर कुम्भ-महापर्व समायोजित होगा। शास्त्रानुसार जब वैशाखी पूर्णिमा के दिन गुरु सिंह राशि में हो, तब उज्जैन में कुम्भ-महापर्व का योग होता है-

''मेषराशिगते सूर्ये सिंहराशौ वृहस्पतौ।
उज्जयिन्यां भवेत्कुम्भः सर्वसौख्यविवर्धनः।।''

स्कन्दपुराण में भी आया है-

माधवे धवले पक्षे सिंहे जीवे अजे रवौ।। तुलाराशौ निशानाथे पूर्णायां पूर्णिमातिथौ। उज्जयिन्यां तथा कुम्भ योग जातः क्षमातले।।

उपरोक्त ग्रहयोग 21 मई, शनिवार (वैशाख पूर्णिमा) को घटित हो रहा है, जिससे उज्जैन में कुम्भ महापर्व का योग बन रहा है। मुख्यतः देवगुरु बृहस्पति के सिंह राशिकालीन ही यह महापर्व घटित होता है। इस कारण इसे **'सिंहस्थ महापर्व'** भी कहा जाता है।

कुम्भ-महापर्व (उज्जैन) की मुख्य स्नान-तिथियां

(1) प्रथम स्नान-चैत्र शुक्ल सप्तमी, बुधवार (13 अप्रैल, 2016 ई.) से उज्जैन कुम्भ महापर्व का स्नान माहात्म्य शुरु हो जाएगा।

(2) द्वितीय स्नान-चैत्र शुक्ल एकादशी, रविवार (17 अप्रैल, 2016 ई.) कुम्भ पर्व के उपलक्ष्य में तीर्थस्नान सूर्योदय से पूर्व अरुणोदय काल में करने का शास्त्रविधान है। जप-पाठादि सूर्योदय के बाद भी कर सकते हैं। तद्नुसार 17 अप्रैल को पुण्यकाल प्रात: 04/38 से सूर्योदय 6/08 बजे तक विशेष रूपेण रहेगा।

(3) तृतीय स्नान-चैत्री पूर्णिमा, शुक्रवार को चित्रा नक्षत्रकालीन तद्नुसार 22 अप्रैल, 2016 ई. को अरुणोदय काल प्रात: 04/35 से ही शुरु हो जाएगा।

(4) चतुर्थ स्नान (वरूथिनी एकादशी)-वैशाख कृष्ण एकादशी, मंगलवार तद्नुसार 3 मई, 2016 ई. को अरुणोदय काल प्रात: 04/31 से 05/58 बजे तक रहेगा।

(5) पंचम स्नान-वैशाख अमावस, शुक्रवार तद्नुसार 6 मई, 2016 ई. को अरुणोदय काल प्रात: 04/29 से 05/56 बजे तक रहेगा।

(6) षष्ठ स्नान-वैशाख शुक्ल तृतीया, सोमवार तद्नुसार 9 मई, 2016 ई. को अरुणोदय काल प्रात: 04/27 से 05/54 बजे तक रहेगा।

(7) सप्तम स्नान-वैशाख शुक्ल पंचमी, बुधवार तद्नुसार 11 मई, 2016 ई. को अरुणोदय काल प्रात: 04/26 से 05/53 बजे तक रहेगा। यह तिथि आद्यगुरु स्वामी शंकराचार्य जी की अवतारतिथि है।

(8) अष्टम स्नान-वैशाख शुक्ल एकादशी, मंगलवार तद्नुसार 17 मई, 2016 ई. को अरुणोदय काल प्रात: 04/24 से 05/51 बजे तक रहेगा।

(9) नवम (प्रमुख शाही) स्नान-**वैशाख पूर्णिमा, शनिवार (21 मई, 2016 ई.) को कुम्भ पर्व की प्रमुख स्नान तिथि होगी।** इस दिन विभिन्न अखाड़ों एवं साधु-महात्माओं की शाही शोभा यात्राएं निकलेंगी। इसदिन उज्जैन में सूर्योदय 5 घं. 48 मिं. पर होगा, परन्तु स्नानादि का विशेष पुण्यकाल प्रात: 04 घं. 21 मिं. से ही प्रारम्भ हो जाएगा।

विशेष-उज्जयिनी के सिंहस्थ कुम्भ में शाही स्नान एक बार ही होता है।

यदि अरुणोदय काल में भीड़ आदि के कारण कुम्भ या अर्धकुम्भी स्नान सम्भव न हो, तो सूर्यास्त पर्यन्त कभी भी कर लेना चाहिए। कुम्भ-महापर्व का माहात्म्य तो सारा दिन ही रहेगा।

-जो लोग हरिद्वार या उज्जैन में न जा सकें-

जो श्रद्धालु जन किसी अपरिहार्य कारणों से हरिद्वार (अर्धकुम्भी) या उज्जैन (कुम्भ-पर्व) न जा सकें, उन्हें अर्धकुम्भ एवं कुम्भ-महापर्व की केवल प्रमुख स्नान तिथियों में (13 अप्रैल, सन् 2016 ई. तथा 21 मई, सन् 2016 ई. के दिन) अपने निवास स्थान के निकट पड़ने वाली नदी, तालाब, बावड़ी, समुद्र में अथवा अपने स्नानागार में बाल्टी आदि में ही गङ्गाजल मिश्रित जल से स्नान एवं श्रीगंगा जी (हरिद्वार) अथवा शिप्रा का ध्यान करते हुए भगवान् विष्णु, शिव एवं सूर्यादि देवों के स्तोत्रों का जाप करना चाहिए। सूर्य भगवान् को विधिपूर्वक अर्घ्य तथा बर्तन, अन्न, वस्त्र, फल, कुम्भादि यथाशक्ति दान कर अमृत-तुल्य पुण्यार्जन किया जा सकता है।

-कुम्भ-महापर्व (उज्जैन) का माहात्म्य-

कल्पभेद से 'उज्जैन' के दूसरे एवं पौराणिक नाम अवन्तिकापुरी, महाकालपुरी, उज्जयिनी, कुशस्थली, विशाला और अमरावती भी हैं। महाकालपुरी का नाम प्रत्येक युग में परिवर्तित होता रहता है। इसके सम्बन्ध में स्कन्दपुराण में वर्णित है-

कल्पे कल्पेऽखिलं विश्वं कालयेद्यः स्वलीलया।
तं कालं कलयित्वा यो महाकालोऽभवत्किल।।

उज्जैन को पृथ्वी का नाभिदेश कहा गया है। द्वादश ज्योतिर्लिङ्गों में महाकाल लिङ्ग यहीं है और 51 शक्तिपीठों में यहाँ एक शक्तिपीठ भी है। द्वापर में श्रीकृष्ण-बलराम यही महर्षि सांदीपनि के आश्रम में अध्ययन करने आये थे। महाराज विक्रमादित्य के समय में उज्जयिनी भारत की राजधानी थी। भारतीय ज्योतिषशास्त्र में देशान्तर की शून्य रेखा उज्जयिनी से प्रारम्भ हुई मानी जाती थी। यह सप्तपुरियों में एक पुरी है। शिप्रा नदी सर्वत्र पुण्यदायिनी, अतिशय पवित्र तथा पापहारिणी है। परन्तु अवन्तीपुरी (उज्जैन) में उसका महत्त्व बहुत बढ़ जाता है। जो मनुष्य शिप्रा नदी में स्नान करके भगवान् महेश्वर का पूजन करता है, वह महादेव जी तथा महादेवी की कृपा से सम्पूर्ण कामनाओं को पा लेता है।

-कुम्भ महापर्व पर स्नान, दानादि का महत्त्व

शास्त्रों में उज्जैन, हरिद्वार, प्रयाग, नासिक आदि तीर्थों पर कुम्भ-स्नान, दान, जप, ध्यान एवं यज्ञादि अनुष्ठान करने का विशेष माहात्म्य माना जाता है। हजारों अश्वमेघ यज्ञ करने से एवं सैंकड़ों वाजपेय यज्ञ करने से अथवा सारी पृथ्वी की लाख बार प्रदक्षिणा करने से जो पुण्यफल प्राप्त होते हैं, वो सब फल मात्र कुम्भ स्नान करने प्राप्त हो जाते हैं-

अश्वमेघ सहस्राणि वाजपेय शतानि च। लक्षं प्रदक्षिणा भूमेः कुम्भ स्नानेन हि तत्फलम्।।

स्नान करने के बाद सन्ध्या-तर्पणादि से निवृत्त होकर श्रीगणेश पूजन सहित कुम्भ (कलश) स्थापित करें। तदोपरान्त श्रद्धा-भक्ति से कुम्भ का षोडशोपचारपूर्वक पूजन करें। तत्पश्चात् एक, चार, ग्यारह आदि यथाशक्ति सुवर्ण, चाँदी, पीतल या ताम्र के कलशों में घृत भरकर वस्त्र, फल, गुड़ादि मिष्ठान्न, दक्षिणा संकल्प सहित किसी सुपात्र विद्वान ब्राह्मणों को दान करें।

कुम्भ-पर्व के समय यथाविधि घृतपूर्ण कुम्भ का पूजन कर, उसे वस्त्र, अलंकार, आभूषण, मुद्रा सहित सदाचारी ब्राह्मण या विद्वान को संकल्पूर्वक देने से सैंकड़ों गोदान करने का फल मिलता है। कुम्भ-पर्व पर साधु-महात्माओं को भोजन खिलाना व दक्षिणा देने से आत्म कल्याण के साथ-साथ पितरों की आत्मा की तृप्ति होती है।

वस्तुत: अर्धकुम्भ एवं कुम्भपर्व भारतीय जन-जीवन की आध्यात्मिक, बौद्धिक एवं सांस्कृतिक चेतना के विभिन्न आयामों के अद्भुत संगम का प्रतीक होता है, जिसमें भारत के ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक धर्म-गुरुओं, सिद्ध महात्माओं, महापुरुषों एवं धर्म-परायण श्रद्धालुओं का समागम होता है। जो इस महापुण्य बेला पर (21 मई) को गङ्गाजल (या क्षिप्रा) के मिश्रित जल में खड़े होकर '**ॐ नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमो नमः। नमस्ते विष्णुरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोऽस्तुते।**' तदनन्तर गंगास्तोत्र, शिवाष्टक, शिवस्तोत्रादि का पाठ करता है, वह सब पापों से मुक्त हो जाता है।

ग्रहण विवरण (संवत् २०७३ वि.)

परिलेख–
–पं. विवेक शर्मा

वि. संवत् २०७३ (सन् 2016–17 ई.) में भूलोक पर दो सूर्यग्रहण ही घटित होंगे–
(1) कंकण सूर्यग्रहण (1 सितम्बर, 2016 ई., गुरुवार)
(2) कंकण सूर्यग्रहण (26 फरवरी, 2017 ई., रविवार)

ये दोनों ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे। इसके अतिरिक्त भूलोक पर कोई सूर्य या चन्द्रग्रहण घटित नहीं होगा। यद्यपि तीन उपच्छाया चन्द्रग्रहण (Penumbral Lunar Eclipse) घटित होंगे।

● भारत में अदृश्य (दिखाई न देने वाले) ग्रहणों का संक्षिप्त विवरण ●

(1) कंकण सूर्यग्रहण (1 सितम्बर, 2016 ई., भाद्रपद अमावस, गुरुवार)–

यह ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देगा। यह ग्रहण केवल दक्षिणी एशिया के देशों (मारिशस आदि), पूर्वी आस्ट्रेलिया, अफ्रीका के देशों (नैरोबी, कीनिया, तन्ज़ानिया, कोंगो आदि), एंटलांटिक-हिन्द महासागर तथा अण्टार्क्टिका में दिखाई देगा। भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रहण का प्रारम्भ/समाप्तिकाल इस प्रकार होगा–

	घं. मिं.	
ग्रहण प्रारम्भ	11-41	(भा. स्टैं. टा.)
कंकण प्रारम्भ	12-46	
परमग्रास	14-30	
कंकण समाप्त	16-24	
ग्रहण समाप्त	17-29	

इस कंकण सूर्यग्रहण सम्बन्धी स्नान, दान, सूतक, माहात्म्य का विचार भारतवर्ष में नहीं होगा क्योंकि भारत में यह ग्रहण बिल्कुल दृष्टिगोचर नहीं होगा। हाँ, भाद्रपद अमावस सम्बन्धी दान, स्नान, पितृतर्पण आदि कार्य तो करने ही चाहिए।

(2) कंकण सूर्यग्रहण (26 फरवरी, 2017 ई., फाल्गुन अमावस, रविवार)–

यह ग्रहण भी भारत में दृष्टिगोचर नहीं होगा। यह ग्रहण दक्षिणी-पश्चिमी अफ्रीका (अंगोला आदि), दक्षिणी अमरीका के दक्षिणी-पश्चिमी देशों (ब्राज़ील आदि) में, प्रशान्त-एटलांटिक एवं हिन्द महासागर तथा अण्टार्क्टिका में दिखाई देगा। भा.स्टैं.टा. अनुसार इस ग्रहण के प्रारम्भ/समाप्तिकाल इस प्रकार होगा–

	घं. मिं.	
ग्रहण प्रारम्भ	17-41	(भा. स्टैं. टा.)
कंकण प्रारम्भ	18-46	
परमग्रास	20-23	
कंकण समाप्त	22-01	
ग्रहण समाप्त	23-06	

इस कंकण सूर्यग्रहण सम्बन्धी धार्मिक कार्य भारतवर्ष में नहीं करणीय होंगे। अमावस को दान, पितृ-तर्पण तो करना ही चाहिए।

चन्द्रमा के उपच्छाया ग्रहण

वि. संवत् 2073 मध्य भूलोक में कोई चन्द्रग्रहण घटित नहीं होगा। सन् 2016-17 ई. में केवल तीन उपच्छाया ग्रहण घटित होंगे।

उपच्छाया ग्रहण वास्तव में चन्द्रग्रहण नहीं होता। प्रत्येक चन्द्रग्रहण के घटित होने से पूर्व चन्द्रमा पृथ्वी की उपच्छाया में अवश्य प्रवेश करता है, जिसे चन्द्र-मालिन्य अथवा इंग्लिश में Penumbra भी कहा जाता है। उसके बाद ही वह पृथ्वी की वास्तविक छाया [दूसरे शब्दों में भूभा (umbra)] में प्रवेश करता है। तभी उसे वास्तविक ग्रहण कहा जाता है। भूभा में चन्द्रमा के संक्रमणकाल को चन्द्रग्रहण कहा जाता है।

ध्यान रहे, कई बार पूर्णिमा को चन्द्रमा उपच्छाया में प्रवेश कर, उपच्छाया शंकु से ही बाहर निकल जाता है। इस उपच्छाया के समय चन्द्रमा का बिम्ब केवल धुन्धला पड़ता है, काला नहीं होता तथा इस धुंधलेपन को साधारण नंगी आँख से देख पाना सम्भव नहीं होता। धर्मशास्त्रकारों ने इस प्रकार के उप-ग्रहणों (उपच्छाया) में चन्द्र बिम्ब पर मालिन्य मात्र छाया आने के कारण उन्हें ग्रहण की कोटि में नहीं रखा। प्रत्येक चन्द्रग्रहण घटित होने से पूर्व तथा बाद में भी चन्द्रमा को पृथ्वी की इस उपच्छाया में से गुज़रना पड़ता है, जिसे ग्रहण-काल नहीं कहा जा सकता।

आगामी वर्ष 2016-17 ई. में भूलोक पर तीन उपच्छाया चन्द्रग्रहण घटित होंगे–
(1) 23 मार्च, 2016 ई., बुधवार (वि. संवत् 2072)
(2) 16/17 सितम्बर, 2016 ई., शुक्रवार (वि. संवत् 2073)
(3) 10/11 फरवरी, 2017 ई., शुक्र/शनिवार (वि. संवत् 2073)

(1) प्रथम चन्द्र उपच्छाया ग्रहण (23 मार्च, 2016 ई., बुधवार)–यह उपच्छाया चन्द्रग्रहण आंशिक रूप से समाप्ति के समय भारत में देखा जा सकेगा। इसके स्पर्शादिकाल (भा.स्टैं.टा.) इस प्रकार हैं–

	घं. मिं.	
(Enters Penumbra) स्पर्श	15-09	(भा. स्टैं. टा.)
(परमग्रास) मध्य	17-07	
[Leaves Penumbra] मोक्ष	19-24	

इस बात का ध्यान रहे कि यह उपच्छाया ग्रहण वास्तव में चन्द्रग्रहण नहीं होता। इस उपच्छाया ग्रहण की समयावधि में चन्द्रमा की चाँदनी में केवल कुछ धुन्धलापन आ जाता

है। इस उपच्छाया ग्रहण के सूतक, स्नानदानादि माहात्म्य का विचार भी नहीं होगा। भारत में मोक्ष के समय इसे दूरबीन द्वारा देखा जा सकेगा।

(2) द्वितीय चन्द्र उपच्छाया ग्रहण (16/17 सितम्बर, 2016 ई., शुक्रवार)–इस उपच्छाया ग्रहण का प्रारम्भ एवं समाप्ति भारत में दृश्य होगी। इसके स्पर्शादिकाल का (भा.स्टैं.टा. में) विवरण इस प्रकार है

	घं. मिं.	
स्पर्श (Penumbra Ecl. Begin)	22-24	(भा.स्टैं.टा.)
मध्य	00-24	16/17 सितं., 2016 ई.
मोक्ष (Penumbra Ecli. Ends)	02-23	

इस उपच्छाया चन्द्रग्रहण के सूतकादि, धार्मिक कृत्यों का विचार नहीं होगा।

(3) तृतीय चन्द्र उपच्छाया ग्रहण (10/11 फरवरी, 2017 ई., शुक्र-शनि)–इस उपच्छाया चन्द्रग्रहण का केवल प्रारम्भ एवं मध्य ही विशेष लैंस या दूरबीन द्वारा देखा जा सकेगा। स्पर्शादिकाल इस प्रकार होंगे–

	घं. मिं.	
स्पर्श	04-04	11 फरवरी, 2017 ई.
मध्य	06-13	(भा.स्टैं.टा.)
मोक्ष	08-23	

इस उपच्छाया ग्रहण के स्नान, सूतकादि का विचार नहीं होगा।

ध्यान रहे, भारतीय ज्योतिष के प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थों में भी इस उपच्छाया या धुंधलेपन का धार्मिक महत्त्व नहीं बतलाया गया। उपच्छाया ग्रहण में न तो अन्य पूर्ण अथवा खण्डग्रास ग्रहणों की भान्ति पृथ्वी पर उनकी काली छाया पड़ती है, न ही सौरपिण्डों (सूर्य-चन्द्र) की भान्ति उनका वर्ण काला होता है। केवल चन्द्रमा की आकृति में उसका प्रकाश कुछ धुंधला सा हो जाता है।

सूर्य चन्द्र ग्रहण सदृश विशेष पुण्यप्रदायोग

1. विषुव दिवस–सायन मेष संक्रांति एवं सायन तुला संक्रान्ति को विषुव योग होता है-अर्थात् इन दोनों संक्रान्ति काल में रात और दिन बराबर होते हैं। सा० मेष संक्रान्ति को महाविषुव दिवस भी कहते हैं। यह दोनों संक्रान्तियां प्रतिवर्ष क्रमश: 20/21 मार्च तथा 22/23 सितम्बर को आती हैं। विषुव संक्रान्तियों में स्नान, दान, जपानुष्ठान एवं यंत्र-मंत्र-तन्त्र सिद्धि के अनुष्ठान दीपावली पर्व की भान्ति ही सिद्धि प्रदायक होते हैं। यन्त्र-तन्त्रादि निर्माण में भी यह समयावधि प्रशस्त होती है।

2. अर्धोदय योग–मौनी अमावस्या को यदि रविवार, व्यतीपात योग और श्रवण नक्षत्र का संयोग हो तो 'अर्धोदय योग' होता है। इस योग में सभी स्थानों का जल गंगा तुल्य हो जाता है और सभी ब्राह्मण ब्रह्म संनिभ हो शुद्धात्मा हो जाते हैं। इस योग में यतकिंचित किए हुए स्नानदानादि का फल मेरू समान हो जाता है एवं अनेक सूर्य ग्रहणों के समान है। धर्मसिन्धु के वाक्यानुसार–

अमार्कपात श्रवणैर्युक्ता चेत्पौषमाघयोः। अर्धोदयः स विज्ञेयः कोटिसूर्य ग्रहैः समः॥
अर्धोदय तु सम्प्राप्ते सर्व गंगा समं जलम्। शुद्धात्मानो द्विजा सर्वे भवेयु ब्रह्म संनिभाः

यह किंचित महोदय योग बनता है। इस योग में संकल्पपूर्वक अन्न, वस्त्र,सुवर्ण, धनादि का दान करने से अक्षयफल प्राप्त होता है। इस दिन पितृतर्पण करने का भी विशेषफल माना गया है।

3. क्रान्तिसाम्य–सूर्य-चन्द्र की क्रान्तियों में समता होने से क्रांतिसाम्य (महापात) का योग बनता है। भास्कराचार्य अनुसार क्रान्तिसाम्य काल स्नान, दान, जप, मन्त्र, तन्त्रादि अनुष्ठान की सिद्धि के लिए विशेष फलप्रदायक माने गए हैं। यद्यपि विवाह आदि मंगल कार्यों को क्रांतिसाम्य में करने का निषेध माना गया है, परन्तु यन्त्र, मन्त्रादि सिद्धि में सहायक होते हैं।

पातस्थिति कालान्तर्गत मंगलकृत्यं न शस्यते तज्ज्ञैः।
स्नानः जप–होम दानादिकमत्रोपैति खलु वृद्धिम्॥

4. वारूणी एवं महावारुणी पर्व–चैत्र कृष्ण त्रयोदशी तिथि के शतभिषा नक्षत्र का सम्पर्क होने से 'वारूणी पर्व' होता है। यदि उस दिन शनिवार भी आ जाए तो 'महावारूणी पर्व' कहलाता है। इस योग काल में गंगा (हरिद्वार, प्रयाग, काशी आदि) तीर्थों पर स्नान, दान, जप-पाठ, होम आदि करने का अक्षय फल होता है। कोटि सूर्यग्रहणों का फल होता है–

वारुणेन समायुक्ता मधौ कृष्णा त्र्योदशी। गङ्गायां यदि लभ्येत्–कोटि सूर्य ग्रहैः समा॥

5. पुष्कर योग– **विशाखास्थो यदा भानुः कृत्तिकासुच चन्द्रमाः।**
स योगः पुष्करो नाम पुष्करेष्वति दुर्लभः॥

–अर्थात् जब सूर्य विशाखा नक्षत्र में और चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र में हो, तो पुष्कर नाम योग होता है। इस योग में भी स्नान, दान, मन्त्रानुष्ठान का बड़ा फल होता है।

6. अक्षयातीज–वैशाख शुक्ल पक्ष की मध्यान्ह व्यापिनी तृतीया तिथि को अक्षय-तृतीया का व्रत पर्व होता है। यह धर्मपरायण सनातन धर्मियों का प्रधान त्यौहार है। इस दिन किए हुए शुभ संकल्प, स्नान, जप, तप, हवन, स्वाध्याय, पितृतर्पण, दानादि जो कुछ भी पुण्य कर्म किया जाता है, उन सबका फल अनन्त एवं अक्षय्य होता है। सत्ययुग का आरम्भ भी इसी तिथि को हुआ था। इसलिए इसे **कृतयुगादि तिथि** भी कहते हैं। भविष्यपुराणानुसार यह सम्पूर्ण पापों का नाश करने वाली एवं सभी सुखों को प्रदान करने वाली है। इसी कारण इसकी गणना स्वयं सिद्ध मुहूर्तों में भी की जाती है।

7. गजच्छाया योग–(क) जब हस्त नक्षत्र पर सूर्य हो, तब मघा नक्षत्र युक्त त्रयोदशी को गजच्छाया योग होता है। इस योग में स्नान, दान, जपादि तथा श्राद्ध करने से महान् फल की प्राप्ति होती है। धर्मसिन्धु अनुसार–**हस्तनक्षस्थे सूर्ये मघायुता त्रयोदशी गजच्छायासंज्ञिता अस्यां श्राद्धेन फलभूयस्त्वम्॥**

(ख) जब सूर्य हस्त नक्षत्र पर हो तथा चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र से युक्त अमावस्या हो, उसे गजच्छाया योग कहते हैं। इस योग भी तीर्थ पर स्नान, दान तथा श्राद्ध करने का विशेष माहात्म्य है।

सूर्य-बुध भेदयुति (संक्रमण) (Transit of Mercury)

--(9 मई, 2016 ई. को एक अद्वितीय आकाशीय दृश्य)--

खगोल शास्त्र का साधारण ज्ञान रखने वालों को भी यह विदित है कि बुध एवं शुक्र का भ्रमण मार्ग (कक्षाएं) सूर्य एवं पृथ्वी के मध्य में पड़ता है, अत: अपने भ्रमण मार्ग पर चलते-चलते कभी-कभी ये पृथ्वी एवं सूर्य के मध्य में आ जाते हैं। विशेष परिस्थितियों में इनका क्रान्तिवृत्त से अन्तर शून्यासन्न होने पर इनका सूर्य के साथ '**भेदयोग**' पृथ्वी पर दिखाई देगा।

वस्तुत: ग्रहण केवल सूर्य और चन्द्रमा में ही नहीं लगते, प्रत्युत अन्य ग्रहों, उपग्रहों में भी होते हैं, जिसके लिए विशेष कृत्य निर्धारित नहीं हैं। ग्रहों, उपग्रहों की गतिशीलता की विशेष स्थिति में एक ग्रह से अन्य के प्रकाश का आवरण हो जाना या छाया से ढक जाना नितान्त सम्भव है, जो सूर्य-चन्द्र से सम्बन्ध होने पर '**ग्रहण**' कहा जाता है। किन्तु सूर्य-बुध का यह अन्तर्योग ग्रहण नहीं '**अधिक्रमण**' कहा जाएगा। बुध व शुक्र अन्य ग्रहों की भान्ति सूर्य के चारों ओर अण्डाकार मार्ग में भ्रमण करते हैं। यह भेदयुति मंगल, गुरु, शनि आदि ग्रहों के साथ दृश्य नहीं हो सकती। साधारण आकाश-दर्शन के समय भी यद्यपि मंगल, गुरु, शुक्र एवं शनि आदि ग्रहों को नंगी आँखों से देख पाना सम्भव होता है, परन्तु बुध ग्रह आकार में छोटा होने के कारण इसका बिम्ब बहुत छोटा होता है तथा इसे दूरबीन द्वारा ही देखना सम्भव होता है। यद्यपि एक वर्ष में बुध सूर्य और पृथ्वी के मध्य तीन बार गुज़रता है, परन्तु क्रान्तिवृत्त अन्तर शून्य केवल मई या नवम्बर में ही होता है।
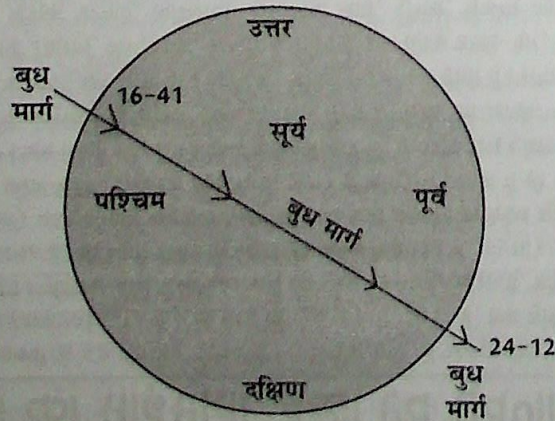
इस वर्ष 9 मई, 2016 ई. को भा.स्टैं.टा. अनुसार सायं 16घं.-41मि. से रात्रि 24घं.-12मि. तक यह सूर्य-बुध संक्रमण होगा। अर्थात् सायं 16/41 बजे बुध सूर्य बिम्ब के पूर्व से प्रविष्ट होकर रात्रि सूर्य बिम्ब के पश्चिम भाग से बाहर निकल जाएगा **क्योंकि यह संक्रमण सायंकाल प्रारम्भ होकर रात्रि तक चलेगा, परन्तु भारत में सायं 6 से 7:15 तक स्थानीय सूर्यास्त तक इस अद्भुत आकाशीय घटना को देखा जा सकता है। इस प्रकार भारत में इस घटना को आंशिक रूप में ही देखा जा सकेगा।** जबकि दक्षिणी अमरीका, पूर्वी-उत्तरी अमरीका, पश्चिमी यूरोप के देशों में इस खगोलीय घटना को पूर्ण रूप से (प्रारम्भ से समाप्ति तक) देखा जा सकेगा।

बुध का यह सूर्यबिम्ब पर संक्रमण सूर्य पर छोटे से कलंक के समान चलबिन्दु रूप में दिखाई पड़ेगा। ज्योतिषी एवं वैज्ञानिक इसे ग्रहण तुल्य महत्त्वपूर्ण नहीं मानते, परन्तु यह आकाशीय घटना दर्शनीय होती है। इसे सामान्यत: 3, 7 या 13 वर्ष बाद ही देखा जा सकता है। ध्यान रहे, इस समय बुध वक्री भी होगा। बुध की अपनी दूरी के कारण सूर्य पर इसका बिम्ब बहुता ही छोटा होगा। अत: सूर्यबिम्ब से गुज़रते हुए इसे नंगी आँख से नहीं देखा जा सकेगा। तथा न ही देखने का प्रयास करना चाहिए। साधारण दूरबीन (विशेष लैंसयुक्त अथवा काले शीशे युक्त) इसे देखा जा सकेगा। बुध-सूर्य के चमकते बिम्ब में एक बहुत छोटे काले धब्बे (Black-Drop) की भान्ति नज़र आएगा। नंगी आँख से इस दृश्य को कदापि न देखें। नेत्र-ज्योति पर इसका तुरन्त कुप्रभाव पड़ेगा।

फल–वृहत् संहिता आदि संहिता ग्रन्थों में इस भेद-युति को अनिष्टकारी बताया गया है। सत्ता-परिवर्तन, नेतृत्व परिवर्तन की प्रबल संभावना, कहीं वृष्टि का अभाव तथा राजनीतिक उथल-पुथल के योग बनते हैं। तेल, घी, दालों के मूल्यों में वृद्धि होगी।

आगामी सूर्य-बुध संक्रमण

सामान्यत: सूर्य-बुध संक्रमण मई एवं नवम्बर मास में ही घटित होते हैं।

(1) 9 मई, 2016 ई.
(2) 11 नवम्बर, 2019 ई.
(3) 13 नवम्बर, 2032 ई.
(4) 7 नवम्बर, 2039 ई.
(5) 7 मई, 2049 ई.
(6) 9 नवम्बर, 2052 ई.

--स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त--

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, श्रीरामनवमी, अक्षय तृतीया, विजयादशमी, दीपावली तिथियां स्वयं सिद्ध (अणपुच्छ) मुहूर्त्त कहलाती हैं। आवश्यक परिस्थितिवश गृहारंभादि मुहूर्त्तों में कोई मुहूर्त्त न बन पड़े तो इन स्वयं सिद्ध मुहूर्त्तों में से शुभ कार्य का सम्पादन कर सकते हैं।

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या एवं सुवर्णादि पाया फल विचार-सं. २०७३ (सन् 2016-17 ई.)

गतवर्षों से (2 नवम्बर, 2014 ई.) वृश्चिक राशि में संचरणशील शनि देव वि. संवत् २०७३ (सन् 2016-17 ई.) के मध्य ता. 26 जनवरी, 2017 ई. तक वृश्चिक राशि में ही संचार करेंगे। वृश्चिक राशि संचरणकाल में शनि देव 25 मार्च, 2016 ई. को वक्री होकर 13 अगस्त, 2016 ई. को मार्गी होंगे। तदुपरान्त **26 जनवरी 2017 ई.** को रात्रि 7 बजकर 28 मिनट (19/28) पर पूर्वाषाढ़ा **नक्षत्र** एवं **धनु** राशिस्थ चन्द्र कालीन **शनिदेव मूल नक्षत्र** एवं **धनु राशि** में प्रवेश करेंगे। संवतान्त (28 मार्च, 2017 ई. तक) धनु राशि में ही संचार करेंगे।

ध्यान रहे ! जब किसी जातक की जन्म कुण्डली या राशि पर शनि नीच राशिस्थ, शत्रु आदि विरुद्ध राशि में अशुभकारक होकर वक्री अवस्था में संचरित हो, तो जातक को मानसिक तनाव, शारीरिक कष्ट, धन सम्बन्धी (आर्थिक) परेशानियां उत्पन्न होती हैं। समाज/देश में भी कहीं राजनीतिक टकराव, अव्यवस्था, अत्यधिक महँगाई, राजनैतिक उलट-फेर, क्लिष्ट रोग-भय, उपद्रव, हिंसक घटनाएँ, अस्थिरता, असन्तोष, बाढ़, दुर्भिक्ष, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय एवं असुरक्षा का वातावरण बनता है।

गोचरवश शनिदेव जब किसी जातक की जन्मराशि (अथवा नाम-राशि) से द्वादश, प्रथम या द्वितीय स्थान में हो, तो शनि की प्रस्तुत गोचरस्थिति शनि-साढ़ेसती कहलाती है। इसके प्रभावस्वरूप मानसिक संताप, शारीरिक कष्ट, कलह-क्लेश, आर्थिक परेशानियां, आय कम व खर्च की अधिकता, रोग एवं शत्रु भय, बनते कामों में विघ्न-बाधाएँ, सन्तान एवं परिवार सम्बन्धी परेशानियां उत्पन्न होती हैं। यथा-

राशौ द्वादशमूर्ध्नि जन्म हृदये पादौ, द्वितीये शनिः।
नानाक्लेश करोति दुर्जन भयं पुत्रान् पशून् पीडयेत्।।

शनि प्रत्येक राशि में लगभग अढ़ाई वर्ष तक संचार करता है। शनि की वक्री-मार्गी गति के कारण अढ़ाई वर्षों के काल में न्यून-अधिकता भी होती रहती है। शनि जिस राशि पर संचरित होता है, उससे पहले, बारहवें और द्वितीय भावों में स्थित राशियों को विशेषतः प्रभावित करता है। इसी को शनि की साढ़ेसाती (साढ़ेसात वर्षीय) कहा जाता है।

शनि की ढैय्या-जब गोचरवश शनि चन्द्र (जन्म) राशि (या नामराशि) से चौथे, या आठवें स्थान पर संचार करता है, तब शनि की ढैय्या कहलाती है, यह लगभग अढ़ाई (2½) वर्ष के लिए होती है। इसका प्रभाव भी अशुभ होता है-

"लघु कल्याणी (ढैय्या) प्रददाति वै रविसुतोः राशे चतुर्थाष्टमे,
व्याधिं बन्धु विरोधं विदेशगमनं, क्लेशं च चिन्ताधिकम्।।

अर्थात् शनि की ढैय्या के प्रभावस्वरूप जातक को रोग, शोक, कलह-क्लेश, धन-हानि, बन्धु-विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, विघ्न-बाधाओं एवं आर्थिक उलझनों का सामना रहता है।

☆ वृश्चिक राशिस्थ शनि संचारकालीन साढ़ेसाती एवं ढैय्या ☆

(जनवरी 2016 ई. से 26 जनवरी, सन् 2017 ई. तक)

☆ **साढ़ेसाती**-(i) **तुला राशि** वाले जातक/जातिकाओं को साढ़ेसाती पाँव पर उतरती हुई अर्थात् अन्तिम चरण में होगी।

(ii) **वृश्चिक राशि** वालों को शनि साढ़ेसाती हृदय पर चढ़ती हुई अर्थात् मध्य अवस्था में होगी।

(iii) **धनु राशि** वालों को शनि साढ़ेसाती सिर पर चढ़ती हुई अर्थात् प्रारम्भिक अवस्था में होगी।

ध्यान रहे, तुला राशि को अन्तिम अढ़ाई वर्ष, वृश्चिक राशि को मध्य के अढ़ाई वर्ष तथा धनु को प्रारम्भ के अढ़ाई वर्ष विशेषतः अशुभकारक रहते हैं।

☆ **ढैय्या विचार**-**मेष** एवं **सिंह राशि** वाले जातकों को **शनि की ढैय्या** (अढैय्या) का अशुभ प्रभाव अभी रहेगा।

विभिन्न राशियों पर वृश्चिक राशि के संचार का फल यद्यपि हम गतवर्षीय पंचांग २०७२ पृष्ठ 23/24 पर लिख चुके हैं। परन्तु चूंकि सन् 2016 ई. में शनि के अतिरिक्त मंगल, गुरु, राहु-केतु आदि ग्रहों के राशि-संचार में अन्तर पड़ जाने से मेष आदि विभिन्न राशियों पर शनि के गोचरफल में भी अन्तर पड़ने की सम्भावनाएं होंगी। इसी परिप्रेक्ष्य में आगामी वर्ष के वृश्चिक राशिगत शनि का गोचरफल लिखा जा रहा है।

ध्यान रहे, मेषादि राशियों पर शनि के सुवर्णादिक पाया गतवर्ष की भान्ति ही रहेंगे।

☆वृश्चिक राशिगत शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव☆

✤ **मेष**-वर्षारम्भ से 19 फर. तक मंगल की स्वगृही तथा 10 अग. तक गुरु की शुभ नवम दृष्टि रहने से धन लाभ व प्रतिष्ठा में वृद्धि, उन्नति के अवसर प्राप्त होते रहेंगे। ता. 20 फर. से 17 जून, पुनः 12 जुला. से 17 सितं. तक मंगल अष्टमस्थ शनियुक्त, वर्षभर शनि की ढैय्या तथा पाया सुवर्ण होने से घरेलू परेशानियों के कारण तनाव व आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी। स्वास्थ्य नर्म, निकट भाई-बन्धुओं से मतान्तर बढ़ेंगे।

✤ **वृष राशि**-वर्षभर शनि की, 20 फर. से 17 जून, तदुपरान्त 12 जुला. से 17 सितं. तक मंगल-शनि की संयुक्त तथा 11 अग. से वर्षान्त तक गुरु की शत्रु दृष्टियां रहने से व्यवसाय/नौकरी में परेशानियां, आय कम तथा खर्च भी अधिक होंगे। शनि का पाया ताम्र होने से बीच-बीच में वाहन, धन-सम्पदा का लाभ, पदोन्नति आदि लाभ प्राप्त होंगे।

✤ **मिथुन**-शनि षष्ठस्थ होने से विषम परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन के साधन बनते रहेंगे। ता. 20 फर. से 17 जून, तदुपरान्त 12 जुला. से 17 सितं. तक मंगल की

दृष्टि रहने से क्रोधाधिक्य, उत्तेजना से कार्य बिगड़ेंगे। परन्तु शनि का पाया चाँदी होने से धन, भूमि, वाहन एवं पारिवारिक सुखों की प्राप्ति होती रहेगी।

✤ **कर्क**–शनि पंचमस्थ रहने से सोची हुई योजनाओं में विघ्न-बाधाएँ रहेंगी। शनि का पाया भी लोहा होने से आर्थिक उलझनें एवं परिवारिक परेशानियों का सामना रहे। दुर्घटना से चोटादि का भी भय रहे। शनि सम्बन्धी उपाय करने शुभ रहेंगे।

✤ **सिंह**–शनि की ढैय्या का प्रभाव अभी रहेगा। ता. 29 जन. से राहु का संचार भी इस राशि पर होने से वृथा दौड़-धूप, व्यवसायिक उलझनें, विलम्ब, धन का खर्च अधिक होगा, परन्तु ता. 11 अग. तक गुरु का संचार रहने तथा शनि का पाया ताम्र होने से गृह में मंगल कार्य हों, कुछ बिगड़े काम बनें, आकस्मिक धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

✤ **कन्या**–राशि से शनि तृतीयस्थ होने से पराक्रम में वृद्धि, भूमि, वाहनादि सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हो। परन्तु इस राशि पर शनि का पाया सुवर्ण होने से अचानक खर्चों में वृद्धि, मानसिक व शारीरिक, कष्ट तथा गुप्त चिन्ताएँ रहेंगी। श्रीहनुमान उपासना व शनि के उपाय करने शुभ रहेंगे।

✤ **तुला**–राशि पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव अभी रहेगा। घरेलू एवं आर्थिक उलझनें, आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। परन्तु इस राशि पर शनि का पाया चाँदी होने से उलझनों के बावजूद धन लाभ एवं भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति होती रहेंगी।

✤ **वृश्चिक राशि**--राशि पर शनि-साढ़ेसाती होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे, बनते कार्यों में अड़चनें एवं विलम्ब हो, किसी रोग के कारण कष्ट हो। शनि का पाया लोहा होने से भी संघर्ष व तनाव अधिक रहे। स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें।

✤ **धनु**–शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव अभी रहेगा। परन्तु 11 अग. तक गुरु की दृष्टि रहने से कार्य-व्यवसाय में कठिनाईयों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। इस राशि पर शनि का पाया ताम्र होने से धन लाभ व उन्नति के अवसर भी मिलेंगे। धर्म-कर्म की ओर रूझान बढ़ेगा।

✤ **मकर**–राशि पर शनि की स्वगृही दृष्टि वर्षभर रहेगी। परिश्रम के बाद धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। तृतीय दृष्टि के कारण स्त्री, सन्तान एवं सवारी आदि की चिन्ता भी रहेगी। शनि का पाया भी चाँदी होने से विविध अड़चनों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

✤ **कुम्भ**–राशि से शनि दशमस्थ तथा केतु का संचार रहने से व्यवसाय एवं गृह सम्बन्धी कठिन आर्थिक परिस्थितियों का सामना रहेगा। शनि का पाया भी सुवर्ण होने से रोग एवं शत्रु-भय, पारिवारिक कलह, तनाव एवं वृथा खर्च भी रहेंगे। 11 अग. तक गुरु की दृष्टि रहने से धार्मिक प्रवृत्ति तथा गुज़ारे लायक आय होती रहेगी।

✤ **मीन**–शनि नवमस्थ होने से भाग्योन्नति में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। खर्च अधिक, व्यापार में लाभ कम, निकटस्थ भाई-बन्धु से मतान्तर हों। शनि का पाया लोहा होने से आय के साधन सीमित, परन्तु खर्चों में वृद्धि रहे, मानसिक तनाव भी बढ़े।

☆धनु राशिस्थ शनि कालीन साढ़ेसाती एवं ढैय्या☆

(26 जनवरी, 2017 ई. से संवतान्त 28 मार्च, 2017 ई. तक)

साढ़ेसाती–वृश्चिक, धनु व मकर राशि वाले जातक/जातिकाओं की शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव अभी रहेगा।

शनि की ढैय्या–वृष व कन्या राशि के जातकों को शनि की ढैय्या (अढैय्या) का अशुभ प्रभाव अभी रहेगा।

☆शनि का धनु-राशिस्थ सामान्य गोचरफल–

धान्यं चारुप्रभूतं रसकसबहुलं याति धान्यं प्रसारं,
सर्वेषां वाजनानां प्रहसतिवदनं सूर्यपुत्रे धनस्थे।।

अर्थात् धनु राशि में शनि आए तो पृथ्वी पर सभी प्रकार के लोग सुखी, प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहें। रस-कस, गेहूँ, धान्य आदि कृषि उत्पादन अधिक होगा। ब्राह्मण लोग पठन-पाठन एवं अध्ययन में व्यस्त रहेंगे।

परन्तु एक अन्य मतानुसार-पृथ्वी में जल की कमी महसूस हो तथा दुर्भिक्ष का भय रहे।

तोयहीना धरा तत्र दुर्भिक्ष च विनिर्दिशेत्।।

सुवर्णादि पाया विचार–शनिदेव 26 जनवरी, सन् 2017 ई. को धनु राशिस्थ चन्द्रमा, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रकालीन धनु राशि में प्रवेश करेंगे। तदनुसार मेषादि राशियों पर ताम्रादि पाया इस प्रकार से होगा–

(1) मेष, सिंह और वृश्चिक राशियों पर चाँदी का पाया होने से गत किए गए प्रयासों में सफलता मिलती है। आकस्मिक धन लाभ, उच्च-प्रतिष्ठा, पदोन्नति, स्त्री-सन्तान एवं भूमि, वाहनादि सुखों की प्राप्ति होगी।

(2) वृष, कन्या और मकर राशियों पर लोहे का पाया होने से आर्थिक व पारिवारिक परेशानियाँ अधिक होंगी। स्वास्थ्य नर्म (ढीला), तनाव एवं उलझनें बढ़ती हैं। दुर्घटना से चोटादि का भय, व्यवसाय में विघ्न-बाधाएँ हों, प्रयत्न करने पर भी लाभ कम व खर्च अधिक रहे।

(3) मिथुन, तुला और मीन राशियों पर ताम्र का पाया होने से शुभ फल घटित होंगे। कार्य-व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क, उच्च विद्या में सफलता, विवाह एवं पारिवारिक सुख, वाहन, धन-सम्पदा आदि भौतिक सुखों की प्राप्ति होगी। देश-विदेशादि यात्राओं के भी अवसर प्राप्त होंगे।

(4) कर्क, धनु एवं कुम्भ राशियों पर सोने का पाया होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। पारिवारिक एवं व्यवसायिक उलझनें, शत्रु एवं रोग भय, मानसिक तनाव अधिक रहे। वृथा खर्च एवं कलह-क्लेश भी रहे।

☆धनु राशिगत शनि का द्वादश राशियों पर प्रभाव☆

(26 जनवरी, 2017 ई. से संवतान्त तक)

मेष–राशि को शनि नवमस्थ होने से भाग्योन्नति में विघ्न एवं विलम्ब पैदा होंगे। खर्च अधिक एवं लाभ कम होंगे। परन्तु इस राशि पर शनि का पाया चाँदी होने से धन लाभ एवं परिवार में मंगल कार्य होने के योग हैं। विगत किए हुए प्रयासों में सफलता तथा घरेलू सुख-साधनों में वृद्धि होगी।

वृष–अष्टमस्थ शनि तथा शनि की ढैय्या का प्रभाव अशुभ रहेगा। शरीर-कष्ट, मानसिक-तनाव, निकट-बन्धुओं से व्यर्थ का विरोध तथा कार्य-व्यवसाय में बाधाओं के बाद सफलता मिलेगी। पाया भी लोहा होने से बीच में परिस्थितियां विकट हो सकती हैं। शनि सम्बन्धी उपाय करने शुभ रहेंगे।

मिथुन–सप्तमस्थ शनि पूज्य होगा। व्यवसाय एवं परिवार सम्बन्धी विशेष चिन्ता रहेगी। शरीर कष्ट, गुप्त परेशानियां तथा खर्च अधिक रहें। परन्तु शनि का पाया ताम्र होने से गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कर्क–राशि से शनि षष्ठस्थ होने से विषम परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। परन्तु शनि का पाया सुवर्ण होने से रोग एवं शत्रु भय, पारिवारिक कलह, तनाव एवं वृथा खर्च भी रहेंगे।

सिंह–राशि से शनि पंचमस्थ एवं राहु का संचार होने से उच्च-विद्या प्राप्ति एवं परिवार सम्बन्धी कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हों। स्त्री को कष्ट एवं सन्तान सम्बन्धी गुप्त चिन्ता हो। कार्यों में संघर्ष के बाद सफलता मिले। परन्तु चाँदी का पाया होने से आय में वृद्धि तथा भूमि, वाहनादि सुखों में वृद्धि होगी।

कन्या–चतुर्थस्थ शनि होने से ढैय्या का प्रभाव भी रहेगा। निकट भाई-बन्धुओं से वैमनस्य, बनते कार्यों में विघ्न व विलम्ब होगा। शनि का पाया भी लोहा होने से घरेलू तथा व्यवसाय सम्बन्धी उलझनें व परेशानियां बढ़ेंगी।

तुला–शनि तृतीयस्थ होने से धन लाभ, मकान, वाहनादि सुख-सुविधाओं एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। पाया ताम्र होने से भी लाभ व उन्नति के भी अवसर प्राप्त होंगे। ता. 20 जन. से संवतान्त तक मंगल की दृष्टि रहने से क्रोध एवं उत्तेजना अधिक रहेगी।

वृश्चिक–राशि पर शनि-साढ़ेसाती का अशुभ प्रभाव रहेगा। आय कम व खर्च बढ़ेंगे, आर्थिक तथा पारिवारिक उलझनों के कारण मानसिक अशान्ति रहेगी। शनि का पाया चाँदी होने से धन-लाभ, विदेश-गमन तथा कुछ निर्वाह योग्य आय के स्रोत बनते रहेंगे।

धनु–राशि को लग्न भाव पर अर्थात् मध्यम अवस्था में शनि-साढ़ेसाती होने से अत्यन्त संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे, खर्च भी बढ़ेंगे। पाया सुवर्ण होने से अपने नज़दीकी लोग भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। मानसिक तनाव व उलझनें बढ़ेंगी। शिवोपासना करनी लाभप्रद होगी।

मकर–शनि साढ़ेसाती का प्रभाव अभी चढ़ती अवस्था में है तथा शनि का पाया भी लोहा होने से आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। घरेलू व कार्य सम्बन्धी उलझनें रहेंगी। गुरु की नीच दृष्टि रहने से मानसिक तनाव तथा बन्धुओं से मतभेद पैदा हों।

कुम्भ–राशि से शनि 11वें (लाभ) स्थान में होने से कुम्भ राशि पर स्वगृही दृष्टि रहेगी। परन्तु केतु का संचार भी होगा। विशेष कठिनाईयों के बावजूद धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। शनि का पाया लोहा होने से संघर्ष व तनाव अधिक रहे। स्वास्थ्य सम्बन्धी सावधानी बरतें।

मीन–राशि से शनि दशमस्थ होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। परन्तु इस राशि पर शनि का पाया ताम्र होने से किसी नए कार्य की योजना बनेगी, विदेशगमन एवं वाहनादि सुखों की प्राप्ति के योग बनेंगे।

✌ शनि साढ़ेसाती एवं ढैय्या सम्बन्धी विशेष उपाय ✌

शनि साढ़ेसाती अथवा शनि ढैय्या का फल सदा अनिष्टकारी ही होगा–ऐसा आवश्यक नहीं। **ध्यान रहे,** शनि सभी राशियों पर एक जैसा प्रभाव नहीं करता है, बल्कि स्वराशि, उच्च-मित्रादि स्थिति से एवं शुभाशुभ दृष्टियों के प्रभावस्वरूप इसके फल में न्यूनाधिक अन्तर पड़ना भी सम्भव है। जन्मकुण्डली एवं नवांश में शनि की स्थिति अच्छी हो एवं जातक की ग्रह-दशा भी शुभ हो, तो शनि की साढ़ेसति या ढैय्या का अशुभ प्रभाव भी अपेक्षाकृत कुछ कम होगा। इसके अतिरिक्त वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर या कुम्भ राशि पर शनि की स्थिति या दृष्टि शुभ, लाभदायक एवं योगकारक भी हो सकती है। किसी विशेष राशि पर शनि साढ़ेसाती का विचार करते समय उस राशि पर अन्य ग्रहों की स्थिति, दृष्टि आदि का प्रभाव, सुवर्णादि पाया का अवश्य विचार करना चाहिए।

कुण्डली में शनि की स्थिति एवं दशाऽन्तर्दशा शुभ होने पर कार्य-व्यवहार व योजनाओं में सफलता, लाभ, व्यवसायिक विद्याओं में उन्नति, क्रय-विक्रय विशेषकर लोहे, तेल के कार्य-व्यवसाय में विशेष लाभ प्राप्त करने वाला होता है।

शनि की दशाऽन्तर्दशा अथवा साढ़ेसाती अशुभ स्थिति में होने से व्यक्ति को विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता अथवा परिश्रम करने पर भी सफलता प्राप्त नहीं होती। वह कुछ चिड़चिड़े स्वभाव का हो जाता है, उसके प्रत्येक कार्य में विघ्न पैदा होते हैं। निकट सहयोगी भी परायों जैसे व्यवहार करने लगते हैं। अतएव ऐसी स्थिति में जातक को शनि का पूजन, दान, मन्त्र-जाप तथा औषधि स्नान आदि करने से शनि के अरिष्ट की शान्ति होती है।

जन्म कुं. में शनि यदि अशुभ हो अथवा जन्म-नक्षत्र पर शनि का संचार हो, तो जातक/जातिका को वायु-विकार, त्वचा रोग, घुटनों में दर्द, उच्च या निम्न रक्तचाप आदि रोग होते हैं।

शनि प्रायः क्लिष्ट रोग एवं दुःख देकर दुष्ट-कर्मों का भुगतान करवाता है। शनि के अरिष्टकाल में कोई-न-कोई झंझट चलता रहता है। आर्थिक संकट एवं घरेलू कलह का भय होता है। वायु प्रकोप आदि शरीर कष्ट, मानसिक अशान्ति रहती है। अपने भी पराये होने लगते हैं। आय कम तथा खर्चों में अधिकता होने लगती है।

उपाय–शास्त्रों में प्रतिपादित उपायों को विधिपूर्वक करने से अवश्य लाभ पहुँचेगा।

(1) प्रत्येक शनिवार को शनि मन्त्र का संकल्पपूर्वक पाठ करें–

'ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः'

कम-से-कम 3 माला अवश्य करें। पाठ उपरान्त निम्न शनि स्तोत्र का पाठ करना शुभ होगा–

नमः कृष्णाय नीलाय शितिकण्ठनिभाय च।
नमः कालाग्निरूपाय कृतान्ताय च वै नमः॥

(2) शनिवार को सुन्दरकाण्ड का पाठ या श्रवण करना शुभ होगा।

(3) शनिवासरी अमावस्या हो, तो उस दिन सायं सूर्यास्त के बाद शनि पूजन, मन्त्र जाप एवं स्तोत्र पाठ करना विशेष कल्याणप्रद होगा।

गुरु का सिंह एवं कन्या राशिस्थ गोचरफल–संवत् २०७३

गतवर्ष 14 जुलाई, मंगलवार, सन् 2015 ई. से गुरु देव (बृहस्पति) सिंह राशि में संचार कर रहे हैं। आगामी वि. संवत् २०७३ में 11 अगस्त, गुरुवार, सन् 2016 ई. को रात्रि 9 बजकर 25 मिनट (21/25) पर गुरु कन्या राशि में प्रवेश करेंगे तथा संवत् के अन्त (28 मार्च, सन् 2017 ई.) तक कन्या राशि में ही संचार रहेगा।

वक्री-मार्गी–गतसंवत् में 8 जनवरी, 2016 ई. से वक्री होकर आगामी वि. संवत् २०७३ में 9 मई, 2016 ई. तक वक्री अवस्था में संचार करेंगे। सिंह राशिगत गुरु जब वक्री अथवा अतिचारी होता है तो देश में सुभिक्ष अर्थात् अनाज आदि का पर्याप्त उत्पादन हो एवं प्रजा में कुशल-क्षेम एवं आरोग्यता रहे। सब लोग प्रसन्न रहे। सर्वधान्यों तथा बर्तनों का संग्रह करने से नौ मास बाद लाभ प्राप्त होता है–

सिंह राशिगतोजीवो विकारं कुरुते यदा।
सुभिक्षं क्षेममारोग्यं सर्वलोके प्रसन्नता॥
सर्वधान्यं च संगृह्यतुलभाण्डानियानि च।

अन्य मतानुसार भी, सिंह के बृहस्पति के समय पृथ्वी पर सुभिक्ष अर्थात् सब प्रकार के अनाजों की पैदावार में वृद्धि हो तथा वर्षा भी पर्याप्त एवं प्रबल होगी। देश में नई-नई तकनीकों से विभिन्न प्रकार के अनाजों, सब्जियों आदि का उत्पादन होगा–

यदासिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं त जायते।
मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहुसस्याच मेदिनी॥

ता. 11 अग., 2016 ई. को गुरु कन्या राशि में प्रवेश करेगा। गुरु के कन्या राशि में संचार से कार्तिक से लेकर वैशाख तक सुभिक्ष अर्थात् सर्वधान्य सस्ते हो जाएंगे। इस अवसर पर इनका संग्रह करने से आगामी भाद्रपद में द्विगुणित लाभ लिया जा सकता है। इस वर्ष चौपायों (गाय, भैंस आदि) में पीड़ा अर्थात् रोग आदि रहें। गेहूँ, धान्य, शक्कर, तेल, उड़द, ईख तथा गुड़ादि महँगे होंगे।

कन्याभोगगुरौ ततः परं सुभिक्षं स्यात्कार्तिकान्माधवावधि।
धान्यसंग्रहणे लाभो द्विगुणो भाद्रमासजः॥
चतुष्पदानां पीडापि गोधूमाः शालिशर्कराः।
तैलंमाषा महर्घाणि गुडादीक्षुरसस्तथा॥ व.प्र.

अन्यऽपि, चैत्र या वैशाख मास में मुस्लिम, अरब आदि देशों में छत्रभंग अर्थात् शासन-परिवर्तन की घटनाएं होंगी। गेहूँ, घी, तेल, महँगे होंगे।

ध्यान रहे, जुला.-अगस्त में सिंहस्थ एवं कन्यास्थ गुरु शीघ्र गति से संचरणशील है। ता. 13 अग. तक शनि भी वक्री स्थिति में है। इसका फल भी शास्त्र में अशुभ कहा गया है–

अतिचारगते जीवेवक्रीभूते शनैश्चरे।
हाहाभूतं जगत्सर्वं रुण्डमाला महीतले॥

अर्थात् बृहस्पति यदि अतिचारी (या शीघ्र गति वाला) हो और शनैश्चर वक्री हो, तो पृथ्वी या देश के किसी क्षेत्र में भूस्खलन, बाढ़ आदि प्राकृतिक उपद्रवों से जन-धन हानि, अनाज एवं आवश्यक वस्तुओं की कमी हो, रोग एवं शत्रुभय रहे।

आगे संक्षेप में सिंह एवं कन्याराशिस्थ गुरु का द्वादश राशियों पर शुभाशुभ फल लिख रहे हैं–

✤ सिंह राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल–सं. २०७३ ✤

(1 जनवरी, 2016 ई. से 10 अगस्त, 2016 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
गुरु पंचम में होने से विद्या एवं कार्यों में सफलता, वाहन आदि सुखों में वृद्धि, धन लाभ के अवसर मिलेंगे।	गुरु चतुर्थ होने से विशेष संघर्ष के बाद किंचित् धन लाभ हो, गृह कलह व खर्च के कारण मन अशान्त हो।	गुरु तृतीय होने से कठिनता से धन प्राप्ति हो। आय-कम व खर्च अधिक रहे। शरीर कष्ट, रोग भय।	धन लाभ व उन्नति के अवसर, धर्म कार्यों पर खर्च अधिक हो, गत किए कार्यों में सफलता हो।	संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य धन मिले, परन्तु खर्चों में विशेष तेजी हो, रोग व शत्रु भय रहे। धर्म-कर्म में रुचि बढ़े	द्वादश होने से वृथा दौड़ धूप रहे, आय कम खर्च अधिक हों, कामों में बाधाएँ रोग व कष्टभय, गुप्त चिन्ताएँ हो।	गुरु लाभ में होने से किसी श्रेष्ठ जन की मदद से धन लाभ के अवसर मिलेंगे। विद्या या कार्य क्षेत्र में सफलता मिले।	गुरु दशमस्थ होने से विशेष कठिनाईयों के बाद ही गुजारे योग्य आय हो। खर्च अधिक रहें। तनाव व रोग भय।	गुरु भाग्यस्थ होने से गत किए गए कार्यों में सफलता हो, भूमि, वाहन आदि सुखों की प्राप्ति हो, धन लाभ के साथ खर्चे भी बढ़ेंगे।	गुरु अष्टम में होने से बनते कामों में अड़चनें होंगी। आय कम व खर्च अधिक होंगे। घरेलू उलझनों के कारण अशान्ति हो।	गुरु सप्तम में होने से अत्यंत संघर्ष के बाद आय के साधन बनेंगे। खर्च अधिक तथा आय अल्प हो कार्य क्षेत्र में दौड़धूप अधिक हो।	गुरु छटे होने से आय कम व खर्च अधिक होंगे, रोग व शत्रु से भय हो। घरेलू उलझनों के कारण मन परेशान एवं अशान्त रहे।

✤ कन्या राशिस्थ गुरु का शुभाशुभ फल–सं. २०७३ ✤

(11 अगस्त, 2016 ई. से 28 मार्च, 2017 ई. तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
षष्ठस्थ गुरु होने से खर्च बढ़ेंगे, रोग एवं गुप्त शत्रुओं का भय रहे, निकट बन्धु से वृथा तकरार हो व तनाव बढ़े।	पंचमस्थ गुरु होने से भूमि, वाहनादि की प्राप्ति उच्च विद्या में सफलता, विवाहादि सुखों की, श्रेष्ठजनों के सम्पर्क से लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे।	आराम कम व संघर्ष अधिक रहे, धन-हानि, भूमि-वाहन सम्बन्धी परेशानी, निर्वाह योग्य आय बने।	सामान्य आय, आकस्मिक खर्च, निकटस्थ भाई-बन्धु को शरीर-कष्ट व घरेलू उलझनें व तनाव बढ़ेंगे।	धन-लाभ, शुभ कार्यों पर खर्च, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मेल, दीर्घ यात्रा के योग धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति बढ़े।	लग्नस्थ गुरु शत्रु राशिस्थ होने से अत्यन्त संघर्ष के बाद निर्वाह योग्य आय के साधन बनें, धर्म-कर्म में रूचि, शरीर कष्ट भय।	द्वादशस्थ गुरु होने से आय कम एवं खर्च अधिक, घरेलू व व्यवसाय सम्बन्धी उलझनों से तनाव हो, बनते कार्यों में विलम्ब हो।	धन लाभ व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। भूमि, वाहनादि सुखों की प्राप्ति विघ्नों के बाद होगी। प्रिय मिलन हो।	कार्य-व्यवसाय में उलझनों के बाद धन प्राप्ति हो खर्च अधिक, तनाव के कारण स्वास्थ्य भी खराब हो।	गुरु भाग्यस्थ होने से कार्यों, विद्या एवं कैरियर में सफलता व उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। प्रिय-बन्धु से मिलाप सन्तान सम्बन्धी सुख।	अष्टमस्थ गुरु होने स क्लिष्ट रोग का भय, आय कम व खर्च अधिक, ऋण, घरेलू उलझनें, व्यर्थ यात्रा व तनाव बढ़ेंगे।	सप्तमस्थ गुरु होने से धन-लाभ एवं सवारी आदि सुखों की प्राप्ति होगी। विशेष संघर्ष के बाद लाभ के चाँस मिलें, तीर्थ यात्रा का विचार बने।

गुरु का कारकत्व–गुरु पति-सुख, धर्म-आध्यात्म, सन्तान, पुत्र, विद्या, विवेक-बुद्धि, बड़ा भाई, सुवर्ण, ज्योतिष आदि विद्याओं का कारक माना जाता है। शरीर में लिवर, हृदयकोश, पाचन प्रक्रिया, कान आदि का भी कारक माना जाता है। कुण्डली में गुरु अशुभ हो अथवा अशुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या युक्त हो, तो गुरु सम्बन्धित सुख में कमी करता है।

हमारे कार्यालय से छपी **'ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) भाग-1'** में गोचर विचार पढ़ना चाहिए।

गुरु के अशुभ फल की शान्ति के लिए दान–गुरु की शुभता बढ़ाने के लिए वृद्ध ब्राह्मण को भोजन कराना, गुरुवासरी अमावस्या तथा गुरुवार का व्रत रखना, पुखराज धारण करना, पीले वस्त्र, चने की दाल, कांस्य पात्र, सुवर्ण, शक्कर, केले, लड्डुओं, धार्मिक ग्रन्थ आदि का दान यथाशक्ति करने तथा गुरु के बीज मन्त्र अथवा गुरु गायत्री मंत्र का जाप 19,000 की संख्या में विधिपूर्वक करना शुभ एवं फलदायक रहेगा। गुरु धनु और मीन राशि का स्वामी है। पति सौख्य की प्राप्ति के लिए स्त्रियों को गुरु के बीज मंत्र, व्रत, पुखराज धारण तथा यथाशक्ति दान करना लाभदायक रहता है। प्रत्येक गुरुवार केसर का तिलक भी लगाना चाहिए।

गुरु गायत्री मन्त्र–

"ॐ अंगिरो जाताय विद्महे वाचस्पतये धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात्॥"

गुरु बीज मन्त्र–"ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः॥"

गुरु का वैदिक मन्त्र–ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ (जप संख्या १९०००)

पुराणोक्त गुरु मन्त्र– ॐ देवानां च मुनीनां च गुरु कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमानि बृहस्पतिम्॥

☆ राहु-केतु का शुभाशुभ गोचरफल–संवत् २०७३ ☆

गत वि. संवत् २०७२ के अन्तर्गत 29 जनवरी, सन् 2016 ई. की रात्रि 1 बजकर 21 मिनट (25/21) पर राहु सिंह राशि में तथा केतु कुम्भ राशि में प्रविष्ट हो चुके हैं।

आगामी वि. संवत् 2073 (सन् 2016-17 ई.) में राहु सिंह राशि में तथा केतु कुम्भ राशि में ही संचार करते रहेंगे।

✤ सिंह राशिस्थ राहु का गोचरफल ✤

(29 जनवरी, 2016 ई. से संवतान्त तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
निज-बन्धु से कलह-क्लेश, रोग व शत्रु-भय, खर्च व चिन्ता बढ़े, सन्तान/विद्या सम्बन्धी कार्यों में विघ्न।	किसी बन्धु से क्लेश, लाभ कम व खर्चों में वृद्धि हो, वृथा दौड़-धूप बढ़े। व्यवसाय में संघर्ष रहे।	पराक्रम व उत्साह में वृद्धि, शुभ-यात्रा, धन-लाभ व पदोन्नति के अवसर बनेंगे। विदेश यात्रा की योजना भी बने।	घरेलू व व्यवसाय में तनाव-पूर्ण परि-स्थितियां रहें, वृथा खर्च बढ़े, शरीर-कष्ट, रोग व मानसिक परेशानियां रहे। ऋण न लें तथा न ही दें।	निकट बन्धुओं से विरोध, बनते कार्यों में अड़चनें हों, रोग व शत्रु-भय, खर्चों में वृद्धि, दीर्घ यात्रा हो। तनाव बढ़े।	बनते कार्यों में विघ्न, वृथा दौड़-धूप व खर्च अधिक एवं अकस्मात खर्चें होंगे। मन अशान्त रहे।	कुछ बिगड़े कामों में सुधार, भूमि-वाहनादि सुख प्राप्ति, धन-लाभ, विदेश यात्रा के योग हैं।	वृथा दौड़-धूप अधिक रहे, बनते कार्यों में अड़चनें, घरेलू उलझनों से मन अशान्त रहे।	घरेलू उलझनों के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनेंगे, निज बन्धु से विरोध, वाहनादि सुखों की प्राप्ति।	लाभ कम खर्च अधिक हो, शरीर कष्ट व मित्रों से विरोध हो, अ प ने भी परायों जैसा व्यवहार करें।	बनते कामों में बाधाएं, धन-लाभ कम, खर्च अधिक रहे, तनाव भी रहे, विशेषकर पति/पत्नी में।	अचानक धन-लाभ, प्रिय-बन्धु से मेल, कार्य-व्यवसाय में सफलता मिले, शुभ यात्रा एवं परिवार से मेल-मिलाप हो।

कुम्भ राशिस्थ केतु का गोचरफल

(29 जनवरी, 2016 ई. से संवतान्त (28 मार्च, 2017 ई.) तक)

मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
भूमि, वाहन आदि सुख-साधनों में वृद्धि, धन-लाभ साधारण, संघर्ष, अधिक रहे।	लाभ अल्प व खर्च अधिक रहे, गृह में कोई मंगल कार्य हो, विदेश यात्रा का योग बने।	भाग्य-उन्नति में विघ्न, वृथा खर्च बढ़े, दुर्घटना से चोटादि का भय, वाहनादि पर खर्च हो।	धन-हानि, रोग व शत्रु भय, विद्या में विघ्न, परिवार व सेहत सम्बन्धी चिन्ता, खर्च अधिक रहे।	कुटुम्ब में किसी प्रियजन से वैमनस्य, खर्च अधिक, किसी से धोखा मिले।	पराक्रम से धन लाभ हो, बिगड़े कामों में सुधार, शुभ-समाचार मिलेगा।	घरेलू कलह-क्लेश से मन अशान्त व परेशान, लाभ कम व खर्च अधिक, संतान सम्बन्धी चिन्ता रहे।	आर्थिक परेशानियों के कारण घरेलू झंझट व अशान्ति रहे। गुज़ारे योग्य आय ही होगी।	बिगड़े हुए कार्यों में सुधार, परिश्रम से धन लाभ अच्छा, वाहनादि सुखों की प्राप्ति होगी।	वृथा दौड़-धूप अधिक हो, लाभ कम, खर्च अधिक व नुकसान होने का भय रहे। शरीर कष्ट व तनाव बढ़े।	आर्थिक परेशानियां बनते कार्यों में विघ्न व शरीर कष्ट, तनाव रहे। खर्च अधिक हों।	रोग-शोक व शत्रु-भय, अपने भी परायों जैसा व्यवहार रखें, खर्च अधिक व गुप्त परेशानी रहे।

अनिष्ट राहु की शान्ति हेतु तिल, तेल, भूरे रंग का वस्त्र, कम्बल, नारियल, सप्तधान्य, सतनाजा, कृष्ण पुष्प आदि का दक्षिणा सहित दान करना कल्याणकारी रहता है। इसके अतिरिक्त राहु के जन्मपत्री अनुशीलन के बाद गोमेध भी धारण किया जा सकता है। राहु के बीज मन्त्र '**ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः**' का 18 हज़ार की संख्या में जाप करें। गजेन्द्र मोक्ष स्तोत्र का पाठ भी शुभ है। राहु का गायत्री मन्त्र–

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्॥

केतु के अरिष्ट की शान्ति हेतु लोहा, सप्तधान्य, लाल-काला वस्त्र, नारियल, कम्बल, कस्तूरी, बेल, कुष्ठाश्रम आदि में भोजन, क्षीर का दान तथा जन्मपत्री विश्लेषण के पश्चात् लहसनिया नग धारण करना कल्याणकारी रहता है। केतु के बीज मन्त्र '**ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः**' की 17 हज़ार की संख्या में जाप करना तथा श्री गणेश स्तोत्र एवं अपराजिता स्तोत्र का पाठ करना शुभ है। केतु की शान्ति के लिए गायत्री मन्त्र–

ॐ पद्म पुत्राय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो केतुः प्रचोदयात्॥

अनिष्ट ग्रहों की शान्ति के सम्बन्ध में और अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी प्रकाशित पुस्तक **अनिष्ट ग्रहों के चामत्कारी उपाय/टोटके** मँगवाकर पढ़ें। मूल्य–200/–

नक्षत्रानुसार पाया फल जानना

* आर्द्रा, पुर्न., पुष्य, अश्ले., मघा, पू.फा., उ.फा., हस्त, चित्रा, स्वाती–इन दश नक्षत्रों के मध्य किसी जातक का जन्म हो, तो चान्दी का पाया।
* विशा., अनु., ज्ये., मूल, पू.षा., उ.षा., श्रवण, धनि., शतभिषा के मध्य जन्म हो, तो ताम्बे का पाया।
* रेवती, अश्वि, भर., कृति, रोह, मृग = सोना (सुवर्ण)
* पू.भा., उ.भा. = लौह पाया

आर्द्रा दश रूपाणां, विशाखा नवताम्रका। रेवती षट् हेमश्च, शेषा द्वौ लौह-प्रकीर्तिता।।

चान्दी एवं ताम्र के पाया शुभ एवं लाभदायक तथा सुवर्ण एवं लौह के पाया धन हानि एवं कष्टकारी फल देते हैं।

कुछ विद्वानों एवं मुहूर्त्त ग्रन्थों अनुसार जन्म-राशि से चन्द्रस्थिति तक गणना करने पर विभिन्न स्थानों के अनुसार चन्द्रमा के सुवर्णादि पाद का विचार किया जाता है। यथा–

स्थान	१,६,११	२,५,९	३,७,१०	४,८,१२
चन्द्रपाद	स्वर्ण	रजत	ताम्र	लोह
फल	सौभाग्य	शुभत्व	दारिद्रय	मृत्यु

जन्मराशि से इन्हीं स्थानों पर अन्य ग्रहों के भी चरणों का विचार किया जाता है परन्तु फल भिन्न-भिन्न रहता है–"**सौरी लोहे शुभः प्रोक्तो हेमपादे च वै गुरुः। रजते चंद्रशुक्रौ च, ग्रहाश्चान्ये च ताम्रके।।**"

अर्थात् शनि का लौह पाद, बृहस्पति का सुवर्णपाद, चंद्र शुक्र का रजत पाद तथा अन्य ग्रहों (सू.मं.बु.श.के.) के ताम्र पाद श्रेष्ठ होते हैं।

सूर्यादि ग्रहों के अनिष्टफल की शान्ति हेतु दान एवं जपादि मन्त्र

													जप संख्या	जपकाल	जपनीय बीजमन्त्राः	हवन समिधा
सूर्य	कनक	माणिक्य	तांबा	सोना	लाल गाय	गुड़	घी	कमलादि	रक्तवस्त्र	लालचंदन	मूंगा	केशर	७०००	सूर्योदय	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः	आक् काष्ठ
चन्द्र	चावल	मोती	चांदी	सोना	श्वेत बैल	मिश्री	दही	श्वेत पुष्प	श्वेतवस्त्र	श्वेतचंदन	शंख	कपूर	११०००	संध्याकाले	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः	पलाश
मंगल	मसूर	मूंगा	तांबा	सोना	लाल बैल	गुड़	घी	लाल कनेर	लालवस्त्र	लाल चंदन	केशर	कस्तूरी	१००००	सू.उ. २।१५	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः	खैर
बुध	मूंग	पन्ना	कांस्य	सोना	शस्त्र	शक्कर	घी	सर्व रंग पु.	हरावस्त्र	अनेक फल	हाथीदांत	कपूर	९०००	सू.उ. ५ घड़ी	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः	अपामार्ग
गुरू	पीतधान्य	पुखराज	कांस्यपात्र	सोना	अश्व	लवण श	घी	पीले पुष्प	पीतवस्त्र	पीला फल	धर्मग्रंथ	लवणशहद	१९०००	संध्याकाले	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः	पीपल
शुक्र	चावल	हीरा	चांदी	सोना	श्वेत घोड़ा	मिसरी	दूध	श्वेत पुष्प	सफेदवस्त्र	सफेद चंदन	दही	सुगन्धित द्रव्य	१६०००	सू. उ. काल	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः	गूलर
शनि	उड़द	नीलम	लोहा	सोना	काली गाय	कुलथी	तैल	काले पुष्प	कालावस्त्र	काले जूते	भैंस	कस्तूरी	२३०००	संध्याकाल	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः	शमी
राहु	सप्तधान्य	गोमेद	सीसा	सोना	काला घोड़ा	ताम्र पात्र	तैल	कृष्ण पुष्प	नीलवस्त्र	नारियल	कंबल	खड्ग	१८०००	रात्रि	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः	दूर्वा
केतु	सप्तधान्य	लसनिया	लोहा	सोना	बकरा	नारियल	तेल	धूम्र पुष्प	कालावस्त्र	शस्त्र ध्वज	कंबल	कस्तूरी	१७०००	रात्रि	ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः	कुशा
मुंथा	चावल	मोती	कांस्यपात्र	सोना	श्वेतचंदन	ऋतुपुष्प	घृत	श्वेतपुष्प	श्वेतवस्त्र	हाथीदांत	मुंथेश ग्रह.	ग्रह अनुसार	मुंथेश ग्रहानुसार	प्रातः	मुन्था स्वामी मन्त्र	

विशेष—ध्यान रहे, प्रत्येक ग्रह के दान के साथ यथाशक्ति दक्षिणा भी अवश्य देनी चाहिए। **सप्तधान्य**—गेहूँ, उड़द, मूंगी, चने, जौं, कंगनी और धान्य, चावल।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारण हेतु औषधि स्नान

सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मन:शिला	पंचगव्य	बिल्व छाल	गोबर	चमेलीपुष्प	पिपरामूल	कालेतिल	लोबान	लोबान
इलायची	गोदूध	लाल पुष्प	अक्षत	पुष्प	जायफल	सूरमा	तारपीन	तारपीन
देवदारू	गोबर	हींग	मोती	श्वेत सरसों	केशर	लोबान	मोथा	तिलपत्र
केशर	गजमद	गोदनी	शहद	शहद	मूली बीज़	सौंफ	गजदंत	गजदंत
खस	शंख सीप	जटामांसी	सुवर्ण	गुलर	मन:शिल	खस	कस्तूरी	छागमूत्र
रक्तपुष्प	गंगाजल	मौलसिरी	जायफल	दमयंती	इलायची	खिल्ला	बिल्वपत्र	लाल चंदन
रक्तचंदन	श्वेत चंदन	सिगरफ	पिपरामूल	मुलट्ठी	श्वेतचंदन	शतकुसुम	गंगाजल	गंगाजल
कनेर पुष्प	स्फटिक	मालकंगनी	नागकेशर	नवीनपत्ते	गंगाजल	गाँदमिश्रित	लालचंदन	कस्तूरी
मि. गंगाजल	गोमूत्र	गंगाजल	गंगाजल	गंगाजल	श्वेतकमल			

होमादि में अग्नि वास जानना

जिस दिन को होम/हवन करना हो, उस दिन की तिथि और वार की संख्या को जोड़कर १ जमा करें फिर कुल जोड़ को ४ द्वारा भाग देवें। यदि शेष शून्य (०) अथवा ३ बचें, तो **अग्नि का वास पृथ्वी** पर होगा। इस दिन होम करना कल्याणकारक होता है। यदि शेष २ बचें तो अग्नि का वास **पाताल में** होता है। इसी दिन होम करने से धन का नुक्सान होता है। यदि ४ का भाग देने से १ शेष बचे तो आकाश में अग्नि का वास होगा, इसमें होम करने से आयु का क्षय होता है। **वार की गणना रविवार** से तथा तिथि की गणना **शुक्ल प्रतिपदा** से करनी चाहिए। तदुपरान्त ग्रह के मुख आहुति चक्र का विचार करना चाहिए।

ग्रहों के मुख में आहुति चक्र

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने से यदि ३ या ३ से कम की संख्या आए तो होमाहुति सूर्य के मुख में जाने, तीन से आगे की संख्या से ६ तक की संख्या में मिले, तो बुध के मुख में आहुति जानें। इसी प्रकार, निम्न क्रमानुसार सब ग्रहों में होमाहुति जानें।

ग्रह	सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चंद्र	मंग.	गुरु	राहु	केतु
नक्षत्र	३	३	३	३	३	३	३	३	३
फल	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ

नवग्रहों के जपनीय होमार्थ (हवन) मन्त्र

सूर्य मन्त्र—अर्क (आक) समिधा द्वारा "ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्येन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥ ॐ सूर्याय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम॥१॥

चन्द्रमा मन्त्र—(पलाश या ढाक समिधा के साथ)-"ॐ इमं देवाऽसपत्न Ω सुवध्वम् महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां Ω राजा। ॐ सोमाय स्वाहा॥ इदं चन्द्रमसे न मम॥२॥

भौम मन्त्र—(खैर की लकड़ी से) "ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा Ω रेता Ω सि जिन्वति स्वाहा। ॐ भौमाय स्वाहा॥ इदं भौमाय इदं न मम॥"

बुध मंत्र—(अपामार्ग की समिधा से) ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहित्वमिष्टापूर्ते स Ω सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ ॐ बुधाय स्वाहा। इदं बुधाय इदं न मम॥

गुरू मन्त्र—(पीपल) ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐ बृहस्पतये स्वाहा॥ इदं बृहस्पतये, इदं न मम।

शुक्र मन्त्र—(गूलर) ॐ अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत् क्षत्रं पयः। सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं पिवानं Ω शुक्रमन्धसऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥ ॐ शुक्राय स्वाहा॥ इदं शुक्राय, न मम।

शनि मन्त्र—(शमी की समिधा) ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंय्योरभिस्रवन्तु नः। ॐ शनैश्चराय स्वाहा। इदं शनैश्चराय, इदं न मम्॥

राहु मन्त्र—(दूर्वा) ॐ कयानश्चित्र आ भुवदृती सदा वृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥ ॐ राह्वे स्वाहा॥ इदं राहवे इदं न मम॥

केतु मन्त्र—(कुशा से) ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजा यथाः। ॐ केतवे स्वाहा॥ इदं केतवे, इदं न मम॥

ग्रहों के गुण, वर्ण, स्वभाव, उच्च-नीच, स्व-गृही राशि आदि चक्र

नाम ग्रह	स्व-ग्रही राशि	मूल त्रिकोण	गुण	चरादि	वर्ण जाति	रंग	उच्च राशि	नीच राशि	पुरुष स्त्री	तत्त्व	कारक	संबंध	स्व-भाव	प्रकृति	धातु	रस	शरीरांग	दिशा	दृष्टि विशेष	भाग्योदय काल
सूर्य Sun	सिंह	सिंह	सत्त्व	स्थिर	क्षत्रिय	रक्त वर्ण	मेष	तुला	पुरुष	अग्नि	आत्मा	पिता	क्रूर	पित्त	सोना	तिक्त	शिर, नेत्र	पूर्व	७	२२ से २४
चन्द्र Moon	कर्क	वृष	सत्त्व	चंचल	वैश्य	श्वेत	वृष	बृश्चि.	स्त्री	जल	मन	माता	सौम्य	वातश्ले	चांदी	क्षार	बुद्धि, रक्त	पशि. उत्तर	७	२४ से २५
मंगल Mars	मेष, वृश्चिक	मेष	तम	चर	क्षत्रिय	लाल	मकर	कर्क	पुरूष	अग्नि	बल	भाई	क्रूर	पित्त	ताम्र	कटु	मज्जा	दक्षिण	७,४,८	२८ से ३२
बुध Merc	मिथुन, कन्या	कन्या	रज	द्विस्वभा	वैश्य	हरा	कन्या	मीन	नपुंसक	पृथ्वी	वाणी	बंधु/मित्र	मिश्र	त्रिधातु	कांस्य	मिश्र	त्वचा, मुख	उत्तर	७	३२ से ३६
गुरू Jup.	धनु, मीन	धनु	सत्त्व	स्थिर	ब्राह्मण	पीला	कर्क	मकर	पुरूष	आकाश	विद्या	संतान	शुभ	कफ	सोना	मधुर	चर्बी	ईशान	५७९	१६ से २४
शुक्र Ven.	वृष, तुला	तुला	रज	चर	वैश्य	सफेद	मीन	कन्या	स्त्री	जल	काम	स्त्री	शुभ	वात, कफ	चांदी	अम्ल	वीर्य	दक्षि., पूर्व	७	२६ से २८
शनि Sat.	मकर, कुम्भ	कुम्भ	तम	स्थिर	शुद्र	नीला काला	तुला	मेष	नपुंसक	वायु	संघर्ष	भृत्य	क्रूर	वात, श्ले	लोहा	कषाय	स्नायु	पश्चि.	३,७,१०	३६ से ४२
राहु Rahu	कन्या	कर्क	तम	चर	अत्यज	धूम्र	वृष	बृश्चि.	पुरुष	छाया	दु:ख	शत्रु	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	हड्डी	दक्षिण	७	४४ से ५०
केतु Ketu	मीन	मकर	तम	चर	शूद्र	धूम्र	बृश्चि.	वृष	पुरुष	छाया	कष्ट	बाधा	क्रूर	वायु	लोहा	कषाय	चर्म	उत्तर	७	४८ से ५०

राशियों के गुण-स्वभाव तत्त्व, शुभ रत्नादि चक्र

राशि	स्वा. ग्रह	अंग्रेज़ी नाम	वर्ण	जाति	क्रूरादि	चरादि	तत्त्व	गुण	जीवादि	समादि	दिशा	शुभ रत्न	बल समय	शरीरांग	दीर्घादि	नरादि	प्रकृति	गुण	पृष्ठोदय आदि
मेष	मंगल	Aries	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	चर	अग्नि	रज	धातु	विषम	पूर्व	मूंगा	रात्रि	शिर	ह्रस्व	पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
वृष	शुक्र	Taurus	श्वेत	वैश्य	सौम्य	स्थिर	पृथ्वी	तम	मूल	सम	दक्षिण	हीरा	रात्रि	नेत्र	ह्रस्व	पशु	वात	शांत	पृष्ठोदय
मिथुन	बुध	Gemini	हरा	शूद्र	क्रूर	द्वि. स्व.	वायु	सत	जीव	विषम	पश्चि.	पन्ना	रात्रि	भुजाएँ, गला	सम	नर	वात	चंचल	शीर्षोदय
कर्क	चंद्र	Cancer	श्वेत	विप्र	सौम्य	चर	जल	रज	धातु	सम	उत्तर	मोती	रात्रि	वक्ष, फेफड़े	सम	जल चर	कफ	शांत	पृष्ठोदय
सिंह	सूर्य	Leo	लाल	क्षत्रिय	क्रूर	स्थिर	अग्नि	तम	मूल	विषम	पूर्व	माणक	दिन	मेरू, रक्त, हृदय	दीर्घ	पशु	पित्त	उष्ण	शीर्षोदय
कन्या	बुध	Virgo	मिश्रित	वैश्य	सौम्य	द्वि. स्व.	पृथ्वी	सत	जीव	सम	दक्षिण	पन्ना	दिन	पेट, नाभि	दीर्घ	नर	त्रिदोष	शीत	शीर्षोदय
तुला	शुक्र	Libra	नीला	शूद्र	क्रूर	चर	वायु	रज	धातु	विषम	पश्चि.	हीरा	दिन	गुर्दे, कमर	दीर्घ	नर	वात	उष्ण	शीर्षोदय
बृश्चिक	मंगल	Scorpio	ताम्र	विप्र	सौम्य	स्थिर	जल	तम	मूल	सम	उत्तर	मूंगा	दिन	गुप्तांग	दीर्घ	कीट	कफ	शीत	शीर्षोदय
धनु	गुरु	Sagittarius	पीला	क्षत्रिय	क्रूर	द्वि. स्व.	अग्नि	सत	जीव	विषम	पूर्व	पुखराज	रात्रि	जंघा	सम	नर पशु	पित्त	उष्ण	पृष्ठोदय
मकर	शनि	Capricor	भूरा	वैश्य	सौम्य	चर	पृथ्वी	रज	धातु	सम	दक्षिण	नीलम	रात्रि	घुटने	सम	जल पशु	वात	शीत	पृष्ठोदय
कुम्भ	शनि	Aquarius	काला	शूद्र	क्रूर	स्थिर	वायु	तम	मूल	विषम	पश्चि.	नीलम	दिन	पिंडली	लघु	जल चर	त्रिदोष	उष्ण	शीर्षोदय
मीन	गुरु	Pisces	पीला	विप्र	सौम्य	द्वि. स्वा.	जल	सतो	जीव	सम	उत्तर	पुखराज	दिन	पाँव दोनों	लघु	जल चर	कफ	शीत	उभयोदय

चर, शीर्षोदयादि राशियों का महत्त्व–उपरोक्त राशियों के **गुण, स्वभाव, तत्वादि** का फलित ज्योतिष में विशेष महत्त्व होता है। संक्षेप में, **चर** का अर्थ है चलित अर्थात् जिसमें कार्य जल्दी हो। यात्रा करें, तो शीघ्र वापिस आ जावे। स्थिर लग्न राशि में कार्य करने से स्थायी प्रभाव होता है। मकान, दुकान, व्यवसायादि में प्रवेश करे, तो बहुत वर्षों तक रहे। द्वि-स्वभाव राशि में मिला-जुला प्रभाव होता है। अर्थात् पहिला आधा भाग स्थिर प्रभाव दिखाता है, अन्तिम आधा भाग 'चर' का प्रभाव दिखाता है। इसी भान्ति धातु का अर्थ है, सोना, चाँदी, लोहा, भूमि, सवारी धनादि पदार्थ। **'मूल'** का अर्थ है, फल, वृक्ष, अनाजादि भोग्य पदार्थ। **'जीव'** का अर्थ प्राणी–स्त्री, पुत्र, पौत्र, भाई आदि। **उदाहरणार्थ**–मान लीजिए, सौम्य राशि **मीन** में यदि कोई सौम्य ग्रह (शुक्र) बैठा है, तो प्रश्नकर्त्ता को स्त्री, संतानादि का सुख लाभ होगा (क्योंकि मीन राशि जीव सम्बन्धी राशि है) और यदि कोई अशुभ या क्रूर ग्रह स्थित हो, तो स्त्री, संतानादि सुख सम्बन्धी हानि होगी। ऐसा कहना चाहिए। इसी भान्ति, राशियों की दिशा बताने का तात्पर्य यह है कि जिस राशि में कारक ग्रह बैठे हों, उस राशि की दिशा में भाग्योदय होता है। **उदाहरण** के लिए किसी की जन्म कुण्डली में लग्नेश एवं नवमेश ग्रह वृष राशि में हो, तो जातक का भाग्योदय जन्म से दक्षिण दिशा में होगा–ऐसा कहना चाहिए। जैसे–यदि **कन्या लग्न** हो, तो बुध लग्नेश, दशमेश होगा। द्वितीयेश व नवमेश शुक्र, बुध (लग्नेश) सहित नवम् (भाग्य) स्थान पर इकट्ठे हों, तो वृष राशि (दक्षिण) में भाग्योदय होगा।

सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, गुरु पुष्यादि योग-वि. संवत् २०७३ (सन् 2016-17 ई.)

किसी विशेष कार्य हेतु आवश्यक परिस्थितिवश अथवा शीघ्रता में कोई सुनियोजित एवं निर्धारित मुहूर्त न मिलता हो, तो आगे लिखे गए सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि योग, गुरु पुष्य आदि योगों में अभीष्ट कार्यों का शुभारम्भ करके मनोवांछित कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

सर्वार्थ सिद्धि योगों में—अनुबन्ध करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करना इत्यादि कृत्य किए जा सकते हैं। **अमृत सिद्धि योगों में** स. सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम विवाह करना, विदेश यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि। रवि योग स. सि. योगों की भान्ति शुभ कार्यों के लिए प्रशस्त माने जाते हैं। **रवि योग की** उपलब्धता में यदि कोई कुयोग भी हो, तो '**रवि योग**' अन्य कुयोगों का नाश करके शुभ फल प्रदान करता है।

रविपुष्य योग—में जड़ी-बूटी तोड़ना तथा तोड़कर औषध तैयार करना, किसी विशेष रोग में रोगी को औषधि देना शुभ होता है। यन्त्र-मन्त्र-तन्त्रादि प्रयोगों में यह योग शुभ होते हैं।

गुरुपुष्य योग— गुरू अथवा पिता, दादा या श्रेष्ठ व्यक्ति से मन्त्र, तन्त्र या किसी विशिष्ट विषय के सम्बन्ध में उच्च विद्या ग्रहण करना, धन, भूमि-विद्या एवं आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना, कोई धार्मिक अनुष्ठान प्रारम्भ करना, गुरु धारण करना, विदेश-यात्रा आरम्भ करना शुभ होता है।

उपरोक्त सभी योगों में से कोई योग विशेष ग्रहण करने से पूर्व तिथि एवं चन्द्रमा का बल भी ध्यान में रख लेवें, तो अत्यन्त लाभदायक होगा। (अर्थात् कृष्ण पक्ष की त्र्योदशी से शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा पर्यन्त चन्द्र निर्बल माना जाता है।) इनके अतिरिक्त गुरु-शुक्र ग्रहों के अस्त काल, अधिक मास, ग्रहण काल, श्राद्ध पक्ष आदि का भी ध्यान कर लेना शुभ होगा। **विवाह, मुण्डन, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश आदि कार्य निर्धारित मुहूर्त्तों में ही करने शुभ होंगे।** ध्यान रहे, 9 सितं. से 7 अक्तू., 2016 ई. तक गुरु अस्त तथा 28 अप्रै. से 9 जुलाई, 2016 ई. तक शुक्र अस्त रहेगा।

—पण्डित विवेक शर्मा, गणितकर्ता

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2016 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2016 ई.	घं. मिं.
7 अप्रै.	सू. उ.	8 अप्रै.	सू. उ.
8 अप्रै.	सू. उ.	8 अप्रै.	23 23
11 अप्रै.	सू. उ.	12 अप्रै.	सू. उ.
14 अप्रै.	सू. उ.	15 अप्रै.	सू. उ.
19 अप्रै.	सू. उ.	19 अप्रै.	25 10
20 अप्रै.	सू. उ.	21 अप्रै.	04 14
23 अप्रै.	सू. उ.	23 अप्रै.	10 18
25 अप्रै.	सू. उ.	25 अप्रै.	15 40
29 अप्रै.	21 48	30 अप्रै.	21 55
5 मई	सू. उ.	6 मई	10 23
8 मई	4 36	8 मई	सू. उ.
9 मई	सू. उ.	9 मई	24 09
12 मई	सू. उ.	12 मई	22 45
16 मई	04 24	16 मई	सू. उ.
17 मई	सू. उ.	17 मई	7 19
18 मई	सू. उ.	18 मई	10 25
27 मई	सू. उ.	28 मई	03 59
31 मई	सू. उ.	31 मई	24 41
2 जून	सू. उ.	2 जून	20 16
4 जून	15 05	5 जून	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2016 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2016 ई.	घं. मिं.
6 जून	सू. उ.	6 जून	10 26
9 जून	सू. उ.	9 जून	7 30
12 जून	11 36	13 जून	सू. उ.
17 जून	25 57	18 जून	सू. उ.
24 जून	सू. उ.	24 जून	9 25
28 जून	सू. उ.	28 जून	7 4
2 जुला	सू. उ.	2 जुला	21 57
8 जुला	18 10	9 जुला	सू. उ.
10 जुला	सू. उ.	11 जुला	सू. उ.
15 जुला	9 36	16 जुला	सू. उ.
17 जुला	13 46	18 जुला	सू. उ.
24 जुला	13 37	25 जुला	सू. उ.
26 जुला	11 06	27 जुला	सू. उ.
1 अग.	26 9	2 अग.	सू. उ.
5 अग.	सू. उ.	6 अग.	04 26
7 अग.	सू. उ.	8 अग.	सू. उ.
11 अग.	17 44	12 अग.	20 17
14 अग.	सू. उ.	14 अग.	23 46
21 अग.	सू. उ.	21 अग.	18 46
23 अग.	सू. उ.	23 अग.	15 13

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2016 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2016 ई.	घं. मिं.
24 अग.	13 34	25 अग.	सू. उ.
29 अग.	9 03	30 अग.	सू. उ.
30 अग.	9 13	31 अग.	सू. उ.
2 सितं.	सू. उ.	2 सितं.	12 26
4 सितं.	सू. उ.	4 सितं.	16 54
7 सितं.	25 38	9 सितं.	4 26
11 सितं.	सू. उ.	11 सितं.	8 44
18 सितं.	24 55	19 सितं.	सू. उ.
20 सितं.	20 11	22 सितं.	सू. उ.
25 सितं.	14 37	26 सितं.	15 4
27 सितं.	सू. उ.	27 सितं.	16 00
5 अक्तू.	8 43	6 अक्तू.	11 41
9 अक्तू.	18 34	10 अक्तू.	सू. उ.
16 अक्तू.	11 14	17 अक्तू.	सू. उ.
18 अक्तू.	सू. उ.	18 अक्तू.	26 32
19 अक्तू.	सू. उ.	20 अक्तू.	सू. उ.
21 अक्तू.	21 00	22 अक्तू.	सू. उ.
23 अक्तू.	सू. उ.	23 अक्तू.	20 39
2 नवं.	सू. उ.	2 नवं.	17 57
6 नवं.	सू. उ.	6 नवं.	27 15
7 नवं.	सू. उ.	8 नवं.	4 18

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2016-17	घं. मिं.	समाप्ति काल 2016-17	घं. मिं.
11 नवं.	25 00	12 नवं.	सू. उ.
13 नवं.	सू. उ.	13 नवं.	19 36
15 नवं.	सू. उ.	15 नवं.	13 17
16 नवं.	सू. उ.	17 नवं.	सू. उ.
18 नवं.	5 37	19 नवं.	4 17
26 नवं.	15 04	27 नवं.	सू. उ.
28 नवं.	21 04	29 नवं.	सू. उ.
4 दिसं.	सू. उ.	4 दिसं.	9 7
5 दिसं.	सू. उ.	5 दिसं.	10 32
9 दिसं.	10 12	10 दिसं.	सू. उ.
12 दिसं.	24 39	13 दिसं.	सू. उ.
14 दिसं.	सू. उ.	14 दिसं.	18 52
15 दिसं.	16 23	16 दिसं.	14 25
21 दिसं.	16 12	22 दिसं.	सू. उ.
24 दिसं.	सू. उ.	24 दिसं.	24 37
26 दिसं.	सू. उ.	27 दिसं.	6 27
31 दिसं.	14 48	1 जन.	सू. उ.
(सन् 2017 ईसवी में)			
5 जन.	16 45	7 जन.	सू. उ.
9 जन.	10 17	10 जन.	सू. उ.
12 जन.	सू. उ.	13 जन.	सू. उ.

सर्वार्थ सिद्धि योग

प्रारम्भ काल 2017 ई.	घं. मिं.	समाप्ति काल 2017 ई.	घं. मिं.
17 जन.	सू. उ.	17 जन.	24 37
18 जन.	सू. उ.	18 जन.	26 38
21 जन.	सू. उ.	21 जन.	8 4
23 जन.	सू. उ.	23 जन.	13 56
27 जन.	21 50	28 जन.	22 39
31 जन.	22 45	1 फर.	सू. उ.
2 फर.	सू. उ.	3 फर.	20 2
6 फर.	सू. उ.	7 फर.	सू. उ.
9 फर.	सू. उ.	10 फर.	सू. उ.
14 फर.	सू. उ.	14 फर.	9 57
15 फर.	सू. उ.	15 फर.	11 32
24 फर.	सू. उ.	25 फर.	7 11
28 फर.	सू. उ.	1 मार्च	04 44
2 मार्च	सू. उ.	2 मार्च	25 41
4 मार्च	22 29	5 मार्च	सू. उ.
6 मार्च	सू. उ.	6 मार्च	19 42
9 मार्च	सू. उ.	9 मार्च	17 12
12 मार्च	17 41	13 मार्च	सू. उ.
18 मार्च	3 19	18 मार्च	सू. उ.
24 मार्च	सू. उ.	24 मार्च	16 45
28 मार्च	सू. उ.	28 मार्च	13 41

अमृत सिद्धि योग

विशेष—कुछ विद्वानों के मतानुसार सर्वार्थ सिद्ध योग एवं अमृत सिद्ध योग के संयोग से रविवार से शनिवार तक (क्रमशः) 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां एवं प्रारंभ की 6 घड़ियाँ विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई है।

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2016 ई.	घं. मिं.	2016 ई.	घं. मिं.
11 अप्रै., चं.	16 12	12 अप्रै.	सू. उ.
14 अप्रै., गु.	14 36	15 अप्रै.	सू. उ.
7 मई, श.	28 36	8 मई	सू. उ.
9 मई, चं.	सू. उ.	9 मई	24 09
12 मई, गु.	सू. उ.	12 मई	22 45
4 जून, श.	15 05	5 जून	सू. उ.
6 जून, चं.	सू. उ.	6 जून	10 26
9 जून, गु.	सू. उ.	9 जून	7 30
2 जुला, श.	सू. उ.	2 जुला	21 57
10 जुला, र.	22 10	11 जुला	सू. उ.
26 जुला, मं.	11 06	27 जुला	सू. उ.
7 अग., र.	6 29	8 अग.	सू. उ.
23 अग., मं.	सू. उ.	23 अग.	15 13
4 सितं., र.	सू. उ.	4 सितं.	16 54
7 सितं., बु.	25 38	8 सितं.	सू. उ.
5 अक्तू., बु.	8 43	6 अक्तू.	सू. उ.
2 नवं., बु.	सू. उ.	2 नवं.	17 57
11 नवं., शु.	25 00	12 नवं.	सू. उ.
9 दिसं., शु.	10 12	10 दिसं.	सू. उ.
(सन् 2017 ईसवी में)			
6 जन., शु.	सू. उ.	6 जन.	15 45
12 जन., गु.	25 20	13 जन.	सू. उ.
6 फर., चं.	15 29	7 फर.	सू. उ.
9 फर., गु.	10 48	10 फर.	सू. उ.
4 मार्च, श.	22 29	5 मार्च	सू. उ.
6 मार्च, चं.	सू. उ.	6 मार्च	19 42
9 मार्च, गु.	सू. उ.	9 मार्च	17 12

रवि योग–संवत् २०७३ वि०

रवि योग वार, तिथि जनित आदि कुयोगों के दोषों को दूर करता है। सामान्यतः अन्नदान, गोदान, भूदान एवं सरकारी क्षेत्रों में सेवाओं (जैसे–प्रतिष्ठित पद ग्रहण आदि) के लिए इनका उपयोग किया जाता है–

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2016 ई.	घं. मिं.	2016 ई.	घं. मिं.
9 अप्रै.	20 34	10 अप्रै.	18 08
11 अप्रै.	16 12	12 अप्रै.	14 54
15 अप्रै.	15 36	17 अप्रै.	19 33
19 अप्रै.	25 10	21 अप्रै.	04 14
28 अप्रै.	21 03	29 अप्रै.	21 48
9 मई	02 07	9 मई	24 09
10 मई	22 53	11 मई	05 49
11 मई	22 23	12 मई	22 45
14 मई	25 53	17 मई	7 19
19 मई	13 31	20 मई	16 28
28 मई	03 59	29 मई	03 56
7 जून	8 46	7 जून	23 56
8 जून	7 45	9 जून	7 30
10 जून	8 05	11 जून	9 29
13 जून	14 16	15 जून	20 20
17 जून	25 57	19 जून	04 14
26 जून	8 56	27 जून	8 10
7 जुला	17 12	8 जुला	18 10
9 जुला	19 51	10 जुला	22 10
13 जुला	03 54	15 जुला	9 36
17 जुला	13 46	18 जुला	15 03
25 जुला	12 26	26 जुला	11 06
6 अग.	04 26	7 अग.	6 29
8 अग.	9 01	9 अग.	11 53
11 अग.	17 44	13 अग.	22 20
15 अग.	24 34	16 अग.	18 39
16 अग.	24 43	17 अग.	24 17
23 अग.	15 13	24 अग.	13 34
4 सितं.	16 54	5 सितं.	19 40
6 सितं.	22 38	7 सितं.	25 38

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2016 ई.	घं. मिं.	2016 ई.	घं. मिं.
10 सितं.	6 52	12 सितं.	9 56
13 सितं.	8 26	13 सितं.	10 24
15 सितं.	9 10	16 सितं.	7 38
21 सितं.	18 10	22 सितं.	16 32
4 अक्तू.	5 41	5 अक्तू.	8 43
6 अक्तू.	11 41	7 अक्तू.	14 26
9 अक्तू.	18 34	10 अक्तू.	12 54
10 अक्तू.	19 40	12 अक्तू.	19 32
14 अक्तू.	16 26	15 अक्तू.	14 01
20 अक्तू.	22 15	21 अक्तू.	21 00
2 नवं.	17 57	3 नवं.	20 46
4 नवं.	23 21	5 नवं.	25 33
6 नवं.	7 31	7 नवं.	03 15
9 नवं.	4 37	11 नवं.	02 56
12 नवं.	22 30	13 नवं.	19 36
19 नवं.	4 17	19 नवं.	13 38
20 नवं.	3 44	21 नवं.	04 02
2 दिसं.	05 05	2 दिसं.	17 52
3 दिसं.	7 17	4 दिसं.	9 07
5 दिसं.	10 32	6 दिसं.	11 25
8 दिसं.	11 17	10 दिसं.	8 12
12 दिसं.	3 34	12 दिसं.	24 39
19 दिसं.	13 03	20 दिसं.	14 15
(सन् 2017 ईसवी में)			
1 जन.	16 01	2 जन.	16 52
3 जन.	17 17	4 जन.	17 15
6 जन.	15 45	8 जन.	12 27
10 जन.	7 56	10 जन.	25 05
11 जन.	05 33	12 जन.	3 17

2017 ई.	घं. मिं.	2017 ई.	घं. मिं.
17 जन.	24 37	19 जन.	2 38
30 जन.	23 04	31 जन.	22 45
1 फर.	22 07	2 फर.	21 12
4 फर.	18 39	7 फर.	13 49
9 फर.	10 48	10 फर.	9 40
16 फर.	13 41	17 फर.	16 18

2017 ई.	घं. मिं.	2017 ई.	घं. मिं.
1 मार्च	04 44	2 मार्च	03 16
2 मार्च	25 41	3 मार्च	24 04
4 मार्च	17 20	4 मार्च	22 29
6 मार्च	19 42	8 मार्च	17 46
10 मार्च	16 59	11 मार्च	17 07
19 मार्च	06 14	20 मार्च	9 09

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग (2016–17 ई.)

(गाड़ी, आभूषणादि बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने हेतु विशेष मुहूर्त्त)

द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे–ज़मीन-जायदाद, हीरे–जवाहरात, स्वर्ण–चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है। इन योगों में यदि कोई अनिष्ट हो जाए, तो भी दुगुनी अथवा तीन गुणा हानि होने की सम्भावना हो जाती है। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर में दो गौओं के मूल्य और तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा। (वसिष्ठ.)

द्विपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2016-17	घं. मिं.	2016-17	घं. मिं.
4 अप्रै.	05 38	4 अप्रै.	सू. उ.
28 मई	7 09	29 मई	3 56
30 जुला	8 34	31 जुला	3 56
9 अग.	8 14	9 अग.	11 53
2 अक्तू.	7 46	3 अक्तू.	2 44
26 नवं.	सू. उ.	26 नवं.	15 04
6 दिसं.	सू. उ.	6 दिसं.	11 25
29 जन.-17	5 44	29 जन.	23 03
14 मार्च	20 12	14 मार्च	21 50
25 मार्च	सू. उ.	25 मार्च	13 34
गुरुपुष्य योग			
14 अप्रै.	14 36	15 अप्रै.	सू. उ.
12 मई	सू. उ.	12 मई	22 45
9 जून	सू. उ.	9 जून	7 30
12 जन.-17	25 20	13 जन.	सू. उ.
9 फर.	10 48	10 फर.	सू. उ.
9 मार्च	सू. उ.	9 मार्च	17 12
रविपुष्य योग			
25 सितं.	14 37	26 सितं.	सू. उ.
23 अक्तू.	सू. उ.	23 अक्तू.	20 39

त्रिपुष्कर योग

प्रारम्भ काल		समाप्ति काल	
2016-17	घं. मिं.	2016-17	घं. मिं.
23 अप्रै.	13 20	24 अप्रै.	13 06
3 मई	14 58	3 मई	18 20
7 मई	21 17	8 मई	04 36
26 जून	14 21	27 जून	सू. उ.
5 जुला	14 36	5 जुला	17 28
10 जुला	15 09	10 जुला	22 10
20 अग.	सू. उ.	20 अग.	10 45
28 अग.	15 22	29 अग.	सू. उ.
3 सितं.	सू. उ.	3 सितं.	14 27
13 सितं.	7 57	13 सितं.	10 24
22 अक्तू.	सू. उ.	22 अक्तू.	13 11
1 नवं.	सू. उ.	1 नवं.	15 00
6 नवं.	12 17	7 नवं.	03 15
20 दिसं.	14 15	20 दिसं.	18 44
25 दिसं.	03 32	26 दिसं.	03 37
31 दिसं.	सू. उ.	31 दिसं.	14 48
9 जन.17	5 04	9 जन.	सू. उ.
18 फर.	सू. उ.	18 फर.	11 48
4 मार्च	8 24	4 मार्च	22 29

तिथि-वार-नक्षत्र जनित कुछ शुभ-अशुभ योग

आगे पृष्ठ पर तिथि, वार, नक्षत्रों के संयोग से सुयोगों एवं कुयोगों का कोष्ठक दिया गया है। चार्ट के नीचे भी लिखा गया है तथा मुहूर्त्त चिन्तामणि अनुसार भी–

कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथि भोत्था भवारजाः।
हूणवङ्गखशेष्वेव वर्ज्यास्त्रितयजास्तथा।।

अर्थात् ये तिथि, वार, नक्षत्रों से उत्पन्न कुयोग केवल हूण (मंगोलिया), बंग (बंगाल) और खश (नेपाल) देशों में ही वर्जित हैं। अन्य प्रदेशों में नहीं। अतएव अन्य प्रदेशों में इसका शुभाशुभ विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं। जबकि सुयोगों का प्रभाव सभी प्रदेशों में होगा। अतएव, दैनिक जीवन में आने वाले महत्त्वपूर्ण कार्यों के लिए शीघ्र ही सर्वांगशुद्ध मुहूर्त्त का अभाव हो तथा इन शुभ मुहूर्त्तों की प्रतीक्षा में अधिक दिनों तक रुका न जा सके, तो इन सुयोग वाले मुहूर्त्तों को सरलता से ग्रहण किया जा सकता है। इनसे प्राप्त होने वाले अभीष्ट शुभ फल के विषय में संशय नहीं करना चाहिए। ये सुयोग हैं–सिद्धि, अमृतसिद्धि, सर्वार्थसिद्धि, अमृत, रत्नांकुर एवं प्रशस्तादि योग **'यथा नाम तथा गुणाः'** उक्ति के अनुसार सर्वाङ्गीण सिद्धि-कारक हैं।

(1) सर्वार्थ सिद्धि योग–महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक कार्य जैसे कोई व्यापारिक या राजकीय अनुबन्ध (कान्ट्रैक्ट) करना, परीक्षा, नौकरी अथवा चुनाव आदि के लिए आवेदन करना, क्रय-विक्रय करना, यात्रा या मुकद्दमा करना, भूमि, सवारी, वस्त्र-आभूषणादि का क्रय करने के लिए शीघ्रतावश गुरु-शुक्रास्त, अधिमास एवं वेधादि का विचार सम्भव न हो, तो ये सर्वार्थ सिद्ध योग ग्रहण किए जा सकते हैं।

(2) अमृतसिद्धि योगों में स.सि. योगों वाले कृत्यों के अतिरिक्त प्रेम-विवाह करना, विदेश-यात्रा, किसी कार्य सिद्धि हेतु सकाम अनुष्ठान करना आदि कृत्य किए जा सकते हैं। अमृसिद्धि योग संज्ञा वाले सर्वार्थसिद्धि योग विशेष शुभ फलदायक माने गए हैं। परन्तु अमृतसिद्धि योग के दिन कुछ तिथियां त्याज्य मानी है। रविवार से शनिवार क्रमशः 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11 तिथियां वर्जित हैं। उदाहरण–जैसे रविवार को हस्त नक्षत्र हो, तो अमृतसिद्धि योग बना, परन्तु यदि उस दिन पंचमी तिथि आ पड़े तो उस तिथि काल में स.सि. एवं अमृतसिद्धि योग दूषित होगा। अतः इस काल को त्याग देना चाहिए।

(3) रवि योग–वार, तिथि, नक्षत्र जनित आदि कुयोगों के दोषों को विध्वंस (दूर) कर देता है। सामान्यतः सर्वार्थसिद्धि योग में किए जाने वाले शुभकृत्यों के अतिरिक्त अन्नदान, गोदान, भूदान एवं सरकारी क्षेत्रों में सेवाओं (जैसे, प्रतिष्ठित पद ग्रहण आदि में) के लिए भी इनका उपयोग किया जाता है। **'कुयोगविध्वंसकराः शुभेषु'** (मु.-चि.)

(4) सिद्धि योग–भी अपने नाम के अनुसार ही सभी कुयोगों के प्रभावों को नष्ट कर देता है। **'सिद्धिवारिऽर्काद्ये तत्फलं नामतुल्यम्।'** स. सि. यो., अमृत तथा रवि योग में किए जा सकने वाले सभी कार्य इस योग में कर सकते हैं।

अशुभ-योग (कुयोग)

(i) आगे पृष्ठ में दिए गए क्रकच, दग्ध, विष, अग्निजिह्वा, मृत्यु, कुलिक, यमघण्टक, उत्पात, यमदंष्ट्रा, मृत्यु आदि तिथि-वार-नक्षत्रों से उद्भूत अशुभ योग मंगल कार्यों में अशुभ माने गए हैं। अतएव उनका शुभ यात्रा या मंगलादि कार्यों में यथासम्भव त्याग करना चाहिए। अति-आवश्यक स्थिति में उस दिन में नक्षत्र, वार, ग्रह व चन्द्र की शान्ति व दानपूर्वक कार्य सम्पादन करना चाहिए।–**'शुभकार्य प्रसूतौ च सर्वदा परिवर्जयेत्।।'**

(ii) अग्निजिह्वा आदि सप्त कुयोगों को वसिष्ठ संहिता में भी मंगल कार्यों में कुलनाशी माना गया है– **''सप्त षष्ठयादि तिथयः सोमवारादिभिर्युताः।**
अग्निजिह्वा सप्तयोगा मङ्गले कुलनाशदाः।।'' (४२/१४)

(iii) हुताशन, विष, यमघण्टक तथा दग्ध आदि योगों को गृहप्रवेश, यात्रादि में निषेध कहा गया है। परन्तु यात्रा में तो अवश्य इनका त्याग करना चाहिए–

–एते दग्धादियोग शुभकार्ये विवर्ज्यास्त्याज्याः। तुर्विशेषे। गमने यात्रायां त्ववश्यं वर्ज्याः।।

(iv) अमृत-योग और सिद्धियोग–दोनों योग किसी एक दिन साथ घटित हो जाए तो वह दिन अशुभ हो जाता है। शहद और घी के सम्मिश्रण से जिस प्रकार विषोत्पत्ति होती है, तद्वत **'अमृत'** तथा **'सिद्धि'** योग का एक ही दिन समागम विषयोग का निर्माण करता है। परन्तु कुछ विद्वानों के अनुसार सिद्धि योग के प्रारम्भ की 6 घटी (2 घण्टे-24 मिनट) ही विषाक्त एवं त्याज्य मानी गई है। तदुपरान्त यात्रा आदि कार्य कर सकते हैं।

अमृतं सिद्धियोगश्च यद्येकस्मिन्दिने भवेत्।
तद्दिनं तु भवेद् दुष्टं, मधुसर्पिर्यथा विषम्।। –ज्योतिस्तत्त्व

तिथि, वार, नक्षत्रादि जनित अशुभ योगों का परिहार

(1) दुष्ट योगों के समय कोई शुभ योग भी हो, तो दुष्ट योग का परिहार हो जाता है–

अयोगो सुयोगोऽपि चेत् स्यात्तदानीमयोगं निहत्यैष सिद्धिं तनोति।
परे लग्नशुद्धया कुयोगादिनाशं दिनाद्धोत्तरं विष्टिपूर्व च शस्तम्।।

अन्यत्रऽपि–

अयोगः सिद्धियोगश्च द्वावेतौ भवतो यदि।
अयोगो हन्यते तत्र, सिद्धियोगः प्रवर्त्तते।। (राजमार्तण्ड)

अर्थात् कुयोग के समय कोई अन्य सिद्धयादि सुयोग भी वर्तमान हो, तो सुयोग की विजय होकर कुयोग अकर्मण्य हो जाता है।

(2) वसिष्ठ जी अनुसार सामान्य दुष्टयोगों का अनिष्ट प्रभाव केवल दिन को ही होता है, रात्रि को नहीं। **'दिवामृत्युप्रदाः पापा दोषाः तु ऐते न रात्रिषु।।'** (वसिष्ठ)

(3) मंगलवार और अश्विनी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धि योग' गृहप्रवेश में, शनिवार व रोहिणी नक्षत्र के संयोग से 'सिद्धियोग' यात्रा में तथा गुरुपुष्य जनित **'सिद्धियोग'** पाणिग्रहण (विवाह) में सर्वथा त्याज्य है–

भौमाश्विनीं प्रवेशे च, प्रयाणे शनिरोहिणीम्।
गुरुपुष्यं विवाहे च, सर्वथा परिवर्जयेत्।। (राजमार्तण्ड)

तिथि-वार-नक्षत्र जनित शुभाशुभ योग चक्र

		रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1.	*सर्वार्थसिद्धि योग	अश्वि., पुष्य, उ.फा., हस्त, मूल, उ.षा., उ.भा.	रोहि., मृग., पुष्य, अनु., श्रवण	अश्विनी, कृति., आश्लेषा, उ.भा.	कृतिका, रोहि. मृग., हस्त, अनु.	अश्विनी, पुन., पुष्य, अनु., रेवती	अश्विनी, पुन., श्रव. अनु., रेवती	रोहिणी, स्वाती श्रवण
2.	*अमृतसिद्धि (वर्ज्य तिथि)	हस्त 5	मृगशिर 6	अश्विनी 7	अनुराधा 8	पुष्य 9	रेवती 10	रोहिणी 11
3.	*सिद्धि योग	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृतिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाती
4.	*अमृत योग	रोहि., उ.फा., उ.षा., उ.भा., पुष्य, हस्त, मूल, रेव.	अश्वि., रोहि., मृग., पू.फा., उ.फा., हस्त, श्रव., धनि., पू.भा., उ.भा.	कृति., पुष्य, आश्ले., स्वा., उ.भा. रेव.	कृति., रोहि., अनु., शत.	पुन., पुष्य, स्वा., अनु.	अश्वि., पू.फा., उ.फा., अनु., श्रव., पू.भा., उ.भा.	रोहि., स्वाती
5.	*प्रशस्त योग	रेवती	हस्त	पुष्य	रोहिणी	स्वाती	उ.फा.	मूल
6.	दग्ध नक्षत्र	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनि.	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
7.	उत्पात योग	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
8.	यमघण्टक	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृतिका	रोहिणी	हस्त
9.	यमदंष्ट्रा	मघा, धनि.	मूल, विशाखा	भरणी, कृतिका	पुन., रेवती	अश्वि., उ.षा.	रोहि., अनु	श्रव., शतभिषा
10.	मृत्यु योग	अनु.	उत्तराषाढ़ा	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	आश्लेषा	हस्त
11.	काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
12.	*सिद्धिदा योग	–	–	3, 8, 13 (जया)	2, 7, 12 (भद्रा)	5, 10, 15 (पूर्णा)	1, 6, 11 (नन्दा)	4, 9, 14 (रिक्ता)
13.	मृत्युदा तिथि (अधम योग)	1, 6, 11 (नन्दा)	2, 7, 12 (भद्रा)	1, 6, 11 (नन्दा)	3, 8, 13 (जया)	4, 9, 14 (रिक्ता)	2, 7, 12 (भद्रा)	5, 10, 15 (पूर्णा)
14.	विष योग	4	6	7	2	8	9	7
15.	क्रकच योग	12	11	10	9	8	7	6
16.	संवर्त योग	7	–	–	1	–	–	–
17.	दग्धा तिथि	12	11	5	3	6	8	9
18.	अग्निजिहवा (हुताशन)	12	6	7	8	9	10	11
19.	कुलिक योग	7	6	5	4	3	2	1
20.	*रत्नांकुर योग	3, 8, 13	1	4, 9, 14	5, 10, 15	2, 7, 12	5, 10, 15	3, 8, 13

टिप्पणी—ऊपर चार्ट में दिए गए 1, 2, 3 आदि संख्या प्रतिपदा, द्वितीया आदि तिथियों के द्योतक हैं। तिथि, वार एवं नक्षत्र के योग से उत्पन्न ये योग दो प्रकार के हैं–(1) सुयोग एवं (2) कुयोग। क्रकच, संवर्त, दग्ध, विष, अग्निजिह्वा, मृत्यु, कुलिक, उत्पात, यमघण्टक और यमदंष्ट्रा आदि कुयोग मंगल कर्मों के लिए अशुभ होने के कारण निषिद्ध हैं। जबकि *चिन्हित (स.सि.यो., अमृत-सिद्धि, अमृत, रत्नांकुर एवं प्रशस्तादि योग सुयोग होने के कारण सिद्धिदायक हैं। सर्वांग-शुद्ध मुहूर्त के अभाव में, शीघ्रता में इन्हें ग्रहण किया जा सकता है। पुनः, ये सभी सुयोग अपने काल में कुयोगों के दुष्प्रभाव को नष्ट कर देते हैं। कुयोग हूण (मंगोलिया), बंग (बंगाल से पूर्व), खश (नेपाल) क्षेत्रों में ही वर्जित हैं, अन्य प्रदेशों में नहीं। जबकि सुयोग सभी जगह ग्राह्य माने गए हैं।

रवि योग

सूर्य स्थित नक्षत्र ↓	← चन्द्र स्थित नक्षत्र → ४थां	६ठां	९वां	१०वां	१३वां	२०वां
अश्विनी	रोहि.	आर्द्रा	आश्ले.	मघा	हस्त	पू.षा.
भरणी	मृग	पुर्न	मघा	पू.फा.	चित्रा	उ.षा.
कृतिका	आर्द्रा	पुष्य	पू.फा.	उ.फा.	स्वाती	श्रवण
रोहिणी	पुर्न	आश्ले	उ.फा.	हस्त	विशा.	धनि.
मृग	पुष्य	मघा	हस्त	चित्रा	अनु	शत.
आर्द्रा	आश्ले	पू.फा.	चित्रा	स्वा.	ज्ये.	पू.भा.
पुर्न	मघा	उ.फा.	स्वा	विशा	मूल	उ.भा.
पुष्य	पू.फा.	हस्त	विशा	अनु.	पू.षा.	रेवती
आश्ले.	उ.फा.	चित्रा	अनु.	ज्ये.	उ.षा.	अश्वि
मघा	हस्त	स्वा.	ज्ये.	मूल	श्रव.	भरणी
पू.फा.	चित्रा	विशा	मूल	पू.षा.	धनि.	कृतिका
उ.फा.	स्वा.	अनु.	पू.षा.	उ.षा.	शत	रोहि.
हस्त	विशा	ज्ये.	उ.षा.	श्रवण	पू.भा.	मृग
चित्रा	अनु	मूल	श्रव.	धनि	उ.भा.	आर्द्रा
स्वा.	ज्ये.	पू.षा.	धनि	शत	रेवती	पुर्न
विशा	मूल	उ.षा.	शत	पू.भा.	अश्वि	पुष्य
अनु.	पू.षा.	श्रव.	पू.भा.	उ.भा.	भर.	आश्ले
ज्येष्ठा	उ.षा.	धनि	उ.भा.	रेवती	कृति	मघा
मूल	श्रवण	शत	रेवती	अश्वि	रोहि.	पू.फा.
पू.षा.	धनि	पू.भा.	अश्वि	भर.	मृग	उ.फा.
उ.षा.	शत.	उ.भा.	भर.	कृति	आर्द्रा	हस्त
श्रवण	पू.भा.	रेवती	कृति	रोहि.	पुर्न	चित्रा
धनि.	उ.भा.	अश्वि	रोहि.	मृग	पुष्य	स्वा.
शत.	रेवती	भर.	मृग	आर्द्रा	आश्ले	विशा
पू.भा.	अश्वि	कृति	आर्द्रा	पुर्न	मघा	अनु.
उ.भा.	भर.	रोहि.	पुर्न	पुष्य	पू.फा.	ज्ये.
रेवती	कृति	मृग	पुष्य	आश्ले	उ.फा.	मूल

रवि-योग–सूर्य एवं चन्द्रमा के नक्षत्रों के संयोग से '**रवियोग**' बनते हैं। सूर्य नक्षत्र से चन्द्र नक्षत्र गिनने पर यदि 4, 6, 9, 10, 13, 20 संख्या प्राप्त हो, तो वह रवियोग होता है। रवियोग अनेक कुदोषों का विध्वंस कर शुभफल करता है।

सूर्याच्चतुर्थे दशमे च षष्ठे विश्वक्षके विंशती।
भवन्ति षड्भानुमदार्क्षयोगाः कुयोग विध्वंस शुभेषु।। (वसिष्ठ)

आनन्दादि योग बोधक चक्र एवं प्रभाव

वार → / योग ↓	रवि नक्षत्र	चन्द्र नक्षत्र	मंगल नक्षत्र	बुध नक्षत्र	बृहस्पति नक्षत्र	शुक्र नक्षत्र	शनि नक्षत्र	फल	वर्ज्य आदि घटियां
आनन्द	अश्वि.	मृग	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अर्थसिद्धि	–
कालदण्ड	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	मृत्युभय	60
धूम्र	कृति.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल	श्रव.	उ.भा.	दुःख	1
प्रजापति	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	सौभाग्य	–
सौम्य (सुधाकर)	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	बहुसुख	–
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भर.	धनहानि	5
ध्वज	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल	श्रव.	उ.भा.	कृति.	सौभाग्य	–
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	रोहि.	ऐश्वर्य	–
वज्र	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	धनक्षय	5
मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	धनहानि	5
छत्र	पू.फा.	स्वा.	मूल	श्रव.	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	सम्मान	–
मित्र	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	रोहि.	पुष्य	सौख्य	–
मानस	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग	आश्ले.	सौभाग्य	–
पद्म	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	मघा	धनागम	4
लुंबक	स्वा.	मूल	श्रव.	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	पू.फा.	धननाश	4
उत्पात	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	प्राणनाश	60
मृत्यु	अनु.	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	मरणभय	60
काण	ज्ये.	अभि.	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	क्लेश	2
सिद्धि	मूल	श्रव.	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	सिद्धि	–
शुभ	पू.षा.	धनि.	रेव.	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	कल्याण	–
अमृत	उ.षा.	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	राजसम्मान	–
मुसल	अभि.	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	धनहानि	2
गद	श्रव.	उ.भा.	कृत्ति	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल	रोग	7
मातंग	धनि.	रेव.	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	वंशवृद्धि	–
राक्षस	शत.	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	कष्ट	60
चर	पू.भा.	भर.	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्ये.	अभि.	लाभ	–
सुस्थिर	उ.भा.	कृत्ति.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल	श्रव.	गृहप्राप्ति	–
प्रवर्द्धमान	रेव.	रोहि.	पुष्य	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	सुमंगल	–

नोट–उपरोक्त चक्र में वर्णित तात्कालिक आनन्दादि 28 योगों का प्रादुर्भाव भी वार और नक्षत्र के समाहार (मेल) से होता है। इन योगों को ज्ञात करने के लिए वार-विशेष को निर्दिष्ट नक्षत्र से विद्यमान (वर्तमान) नक्षत्र तक साभिजित् गणना की जाती है। रविवार को अश्विनी से, सोम को भरणी से, मंगल को आश्लेषा से, बुध को हस्त से, गुरु को अनुराधा से, शुक्र को उत्तराषाढ़ा से तथा शनैश्चर को शतभिषा से तद्दिन के चन्द्र-नक्षत्र तक गिनने पर प्राप्त संख्या को ही उस दिन वर्तमान आनन्द योग का क्रमांक जानें।

आनन्दादि योग परिहार

आनन्दादि 28 योगों में शुभनाम वाले योग शुभ फल तथा अशुभ नाम के अनुसार अशुभ फलदायक होते हैं। इनमें अपने नाम के अनुसार 13 अशुभ तथा 15 शुभ योग हैं। पूर्वोक्त योग-निकाय में साधारण श्रेणी के योगों की प्रारम्भिक घटियों का विवर्जन कर देने के अनन्तर उनकी अशुभता की दोषापत्ति नहीं रहती। परन्तु राक्षस, मृत्यु, उत्पाद और कालदण्ड-ये चारों योग तो समग्र रूप से त्याज्य हैं अर्थात् इनका सम्पूर्ण काल का त्याग करना चाहिए। अन्य योगों की त्याज्य आदि (आरम्भिक) घटियां चक्र में ही अन्तिम कालम में निर्दिष्ट हैं।

पुनः ध्यान रहें–कालदण्ड आदि कुयोग के समय यदि कोई अन्य सिद्धयादि सुयोग भी वर्तमान हो, तो सुयोग की विजय होकर कुयोग अकर्मण्य हो जाता है तथा ये अशुभयोग केवल हूण, बंग तथा खश आदि प्रदेशों में वर्ज्य माने गए हैं।

त्रिपुष्कर योग बोधक चार्ट

ग्राह्य वार	ग्राह्य तिथियां	ग्राह्य नक्षत्र
रवि	2, 7, 12	कृतिका, पुनर्वसु, उ.फा. विशाखा, उ.षा., पू.भा.
मंगल	2, 7, 12	कृतिका, पुनर्वसु, उ.फा. विशाखा, उ.षा. पू.भा.
शनि	2, 7, 12	कृतिका, पुनर्वसु, उ.फा., विशाखा, उ.षा., पू.भा.

द्विपुष्कर योग बोधक चार्ट

ग्राह्य वार	ग्राह्य तिथियां	ग्राह्य नक्षत्र
रवि	2, 7, 12	धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिर
मंगल	2, 7, 12	धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिर
शनि	2, 7, 12	धनिष्ठा, चित्रा, मृगशिर

'द्विपुष्कर योग' द्विगुणित और **'त्रिपुष्कर योग'** त्रिगुणित लाभ-हानिकारक होता है। यदि इन योगों में कोई अनिष्ट हो जाए या हानि हो जाए तो भी दुगुनी अथवा त्रिगुणित हानि होने की सम्भावना बन जाती है। इसी प्रकार इन योगों में यदि कोई शुभ कार्य आरम्भ या सम्पन्न किया जाए अथवा किसी प्रकार की वस्तु का क्रय किया जाए तो भविष्य में उसका द्विगुणित या त्रिगुणित होने की सम्भावना बन जाती है। इसीलिए इन उपरोक्त योगों में बहुमूल्य एवं उपयोगी पदार्थ, वस्तुएँ जैसे-जमीन-जायदाद, हीरे-जवाहरात, स्वर्ण-चाँदी के आभूषण, कार, ट्रक, स्कूटर, गाय-भैंस क्रय करना, नवीन उद्योग की स्थापना आदि करना लाभदायक रहता है।

परिहार–द्विपुष्कर/त्रिपुष्कर योगों में यदि किसी की मृत्यु हो जाए या किसी अन्य वस्तु के नष्ट होने पर शान्ति करवानी चाहिए। त्रिपुष्कर दोष की शान्ति के लिए तीन गौओं के मूल्य का धन तथा द्विपुष्कर के लिए दो गौओं के मूल्य का धन तथा तिलों द्वारा निर्मित पीठी का दान करना शुभ होगा।

''त्रितयं गवां हि दद्याद्दोषस्यापनुत्तये विद्वान। द्वितयं द्विपुष्करेऽपि च तिलपिष्टैर्वि प्रमुख्येभ्यः।।'' वसिष्ट

ज्वालामुखी योग-(वि. संवत् २०७३)

ज्वालामुखी योग का फल अशुभ माना गया है। इस योग में आरम्भ किया हुआ कार्य पूर्णतया सिद्ध नहीं हो पाता अथवा बार-बार विघ्न-बाधाएं होती हैं। इस योग में शुभ कार्य आरम्भ नहीं करने चाहिए। दुष्ट शत्रुओं पर प्रयोग करने के लिए यह मुहूर्त अच्छा समझा जाता है।

जब प्रतिपदा को मूल नक्षत्र, पंचमी को भरणी, अष्टमी को कृतिका, नवमी को रोहिणी अथवा दशमी को आश्लेषा नक्षत्र आता है, तो ज्वालामुखी योग बनता है। इस प्रकार 5 नक्षत्रों एवं 5 तिथियों के संयोग से ज्वालामुखी योग बनता है। इस योग के अशुभ फल को प्रकट करने के लिए निम्नलिखित लोकोक्ति प्रचलित है-

जन्मे तो जीवे नहीं, बसे तो उजड़े गाँव,
नारी पहने चूड़ियां, पुरुष विहीनी होय।
बोवे तो काटे नहीं, कुएँ उपजे न नीर॥

यद्यपि यह लोकोक्ति अतिशयोक्तपूर्ण हो सकती है, परन्तु इसके अशुभ प्रभाव के सम्बन्ध का उल्लेख कई ग्रन्थों में मिलता है। ज्वालामुखी योगानुसार यदि बालक इस योग में पैदा हो तो उसे अरिष्ट योग होता है। यदि इस योग में विवाह किया जाए तो वैधव्य का भय होता है। यदि बीजवपन किया जाए तो फसल अच्छी नहीं होती तथा जल आदि हेतु कूआँ खोदा जावे तो जलाशय (कूआँ) शीघ्र सूख जाए-यदि कोई रोगग्रस्त हो तो जल्दी ठीक न हो-इत्यादि अशुभ फल घटित होते हैं।

ज्वालामुखी योग (संवत् २०७३)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मि.	तारीख	घं.	मि.
15 अप्रै.	22	03	16 अप्रै.	17	17
20 जून	16	32	21 जून	7	31
24 अग.	22	17	25 अग.	12	06
25 अग.	20	08	26 अग.	10	52
20 सितं.	11	58	20 सितं.	20	11
24 अक्तू	12	31	24 अक्तू	21	32
4 फर.(17)	18	39	4 फर.	20	45
5 फर.	17	07	5 फर.	18	30
2 मार्च	25	41	3 मार्च	10	44

यमघण्टक योग (सन् 2016-17 ई.)

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
2 जन.	सू.	उ.	2 जन.	23	35
5 जन.	05	17	5 जन.	सू.	उ.
30 जन.	सू.	उ.	30 जन.	7	45
1 फर.	13	46	2 फर.	सू.	उ.
22 फर.	05	28	22 फर.	सू.	उ.
29 फर.	सू.	उ.	29 फर.	24	17
3 मार्च	4	20	3 मार्च	सू.	उ.
20 मार्च	11	35	21 मार्च	सू.	उ.
28 मार्च	सू.	उ.	28 मार्च	7	05
30 मार्च	11	49	31 मार्च	सू.	उ.
12 अप्रै.	14	54	13 अप्रै.	सू.	उ.
17 अप्रै.	सू.	उ.	17 अप्रै.	19	33
27 अप्रै.	सू.	उ.	27 अप्रै.	19	43
10 मई	सू.	उ.	10 मई	22	53
7 जून	सू.	उ.	7 जून	8	46
1 जुला.	02	00	1 जुला.	सू.	उ.
1 जुला.	23	58	2 जुला.	सू.	उ.
28 जुला.	8	11	29 जुला.	सू.	उ.
25 अग.	सू.	उ.	25 अग.	12	06
26 अग.	सू.	उ.	26 अग.	10	52
3 सितं.	14	27	4 सितं.	सू.	उ.
1 अक्तू	सू.	उ.	1 अक्तू	23	58
4 अक्तू	05	41	4 अक्तू.	सू.	उ.
31 अक्तू	12	01	1 नवं.	सू.	उ.
28 नवं.	सू.	उ.	28 नवं.	21	04
1 दिसं.	02	37	1 दिसं.	सू.	उ.
18 दिसं.	12	40	19 दिसं.	सू.	उ.
28 दिस.	9	02	29 दिसं.	सू.	उ.
(सन् 2017 ईसवी में)					
11 जन.	05	33	11 जन.	सू.	उ.
15 जन.	सू.	उ.	15 जन.	22	44
25 जन.	सू.	उ.	25 जन.	18	47
7 फर.	13	49	8 फर.	सू.	उ.

व्यापारिक वस्तुओं तथा शेयर-बाज़ार में मन्दा-तेजी-सन् 2016 ई.

वायदा व्यापारियों के लिए आवश्यक सुझाव—व्यापारिक वस्तुओं अथवा जिन्सों के दैनिक उतार-चढ़ाव के अध्ययन के बाद ही वस्तुओं का क्रय-विक्रय करना सफल व्यापार की कुंजी है। संसार के सभी पदार्थों पर प्रभाव रखने वाले ग्रह होते हैं तथा अपने में सभी पदार्थों का समावेश करने वाली राशियां होती हैं। जब ग्रह भ्रमण करता हुआ राशि-भोग करता है, तो उसकी हर गति का प्रभाव प्रत्येक वस्तु पर पड़ता है, क्योंकि उस समय वे पदार्थ उस ग्रह के प्रभाव में रहते हैं और वस्तु के मूल्यों में जो परिवर्तन (घटाबढ़ी) होता है, उसे हम तेजी-मन्दी कहते हैं।

ज्योतिष शास्त्र का वायदा-व्यापार से गहरा सम्बन्ध है। ध्यान रहे, हाजिर एवं वायदा बाज़ार पर राजनीतिक, सामाजिक, प्राकृतिक एवं आजकल अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं का प्रभाव भी अवश्य रहता है। इसके अतिरिक्त कुशल व्यापारी को अपनी वर्तमान विशोंतरी ग्रहदशा तथा आर्थिक सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए ही व्यापार करना चाहिए। जन्म/वर्ष कुण्डली में हानिप्रद या अनिष्ट ग्रह से सम्बन्धित वस्तु का व्यापार न करें। अनुकूल ग्रह-दशा जातक को व्यवसाय में विपुल धन लाभ तथा प्रतिकूल ग्रहदशा अकस्मात् धन-हानि करवा सकती है। सदैव उतने ही लाभ की आशा करके व्यापार करें, जितनी की हानि साधारणतया उठा सकने का सामर्थ्य हो।

गतवर्षों सन् 2010 से 2015 ई० में हमारे द्वारा निर्दिष्ट ग्रहस्थिति एवं तेजी-मन्दी के चान्सों से सोना, चाँदी, गुड़, सोयाबीन, कॉपर, तेल, लोहे, स्टील, चने तथा शेयरों से सम्बन्धित अनेक व्यापारी लाभान्वित हुए। (विशेषकर जून-जुलाई में सोने-चांदी में हुई तेजी-मन्दी से विशेष लाभ उठाया।)

आगे गोचर ग्रहों, नक्षत्रों के आधार पर व्यापारिक वस्तुओं (जिन्सों) के दैनिक मन्दा-तेजी की विशेष लाइनों एवं तूफानी तेजी आदि का विवरण लिख रहे हैं। **यदि आप प्रतिमास किसी विशेष एक जिन्स (वस्तु) की दैनिक तेजी-मन्दी रिपोर्ट या वायदा हाजिर का चांस चाहते हैं तो प्रति जिन्स की एक मास की फीस 751 रु., 2 मास की फीस 1400 रु. होगी। पूरी फीस अग्रिम ड्राफ्ट द्वारा भेजें।** रिपोर्ट लिखित रूप में रजिस्ट्री या कोरियर के माध्यम से भेज दी जाएगी। D.D. (ड्राफ्ट) या चैक या मनीआर्डर इस पते पर भेजें। **—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी S/o स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर—144008 (पंजाब), फोन 0181-2457959**

☞ **जनवरी**—व्यापारी वर्ग के लिए इंग्लिश नववर्ष मंगलमय एवं लाभप्रद रहे। मासारम्भ में मुख्य जिन्सों में घटाबढ़ी के मध्य मन्दी रहने के बाद ता. 4 को मंगल स्वाती नक्षत्र में आने से रूई, वस्त्र, गेहूँ, सरसों, तिल, तेल में तेजी बनेगी। चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी तथा सोने में भी मामूली मन्दी बनेगी ।

5 जन. को मकर राशिस्थ बुध वक्री होगा। बुध पर मंगल एवं शनि की दृष्टियां हैं। रूई, सोना, चाँदी, अलसी, तेल, तिलहन, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि में तेजी की अच्छी लाईन बनेगी । जबकि गेहूँ, जौं, चना आदि अनाजों में मन्दी का योग होने पर भी साधारण तेजी बन जाएगी।

8 जन. को सिंह राशिस्थ गुरु वक्री होगा। गुरु पर शनि की दृष्टि चल रही है। गेहूँ, जौं, चना, घी, रूई, चावल, हल्दी, अलसी, सोना, चाँदी में मन्दी के चाँस के बावजूद अचानक तेजी का रुख बन जाएगा। **ध्यान रहे, गुरु 8 मई तक वक्री रहेगा।**

वक्रभूतोयदाजीवः सुभिक्षं भूतले भवेत्। जनभूपाल सौख्यं स्यात् समर्घ गोरसं घृतम्।।

अर्थात् जब बृहस्पति वक्री हो, तो पृथ्वी पर सुभिक्ष हो और सब मनुष्यों, राजाओं को सुख, सुविधाएं प्राप्त हों। गोदुग्ध, घी आदि रस सस्ते हों। परन्तु हमारे विचारानुसार शनि की दृष्टि के कारण यहाँ मन्दी न बन, तेजी ही बनेगी।

8 जन. को ही वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा तथा शुक्र ज्येष्ठा नक्षत्र में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, चाँदी, चावल, तेल, तिलहन, हींग, चना तथा सभी प्रकार के अनाजों में पहले मन्दी बनकर अचानक तेजी का झटका लगेगा। सोने में शुरु से ही तेजी रहे।

ता. 9 को शनिवारी अमावस भी मुख्य व्यापारिक जिन्सों में तेजीकारक रहेगी।

11 जन. को सूर्य उ.षा. नक्षत्र में आएगा तथा सोमवारी चन्द्रदर्शन होने से उड़द, मूँग, चावल, चना, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, लाल शक्कर, कपास, पिप्पलामूल, चमड़ा, सरसों में तेजी की लाईन बनेगी।

ता. 14 को सूर्य मकर राशि में आएगा। इस पर मंगल एवं शनि की दृष्टियां रहेंगी। घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रूई में पहले घटाबढ़ी, फिर अचानक तेजी का झटका लगेगा। गेहूँ, चना आदि अनाजों में भी पहले मन्दी बनकर फिर तेजी का रुख बन जाएगा। इसी दिन वक्री बुध धनु राशि में आएगा। उस पर गुरु की दृष्टि भी रहेगी। फलस्वरूप रूई, कपास, चाँदी में तेजी बनकर अचानक मन्दी का रुख बन सकता है। इसलिए इन जिन्सों में सावधानीपूर्वक आगे बढ़े।

ता. 16 को वक्री बुध पू.षा. में आने से गेहूँ, चना आदि अनाज, सोना, चाँदी में अचानक मन्दी, खल-बिनौले में तेजी रहे।

19 जन. को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में प्रवेश कर बुध के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की दृष्टि रहेगी। गेहूँ, जौं, चना आदि अन्न, सोना, चाँदी, ताँबा आदि धातु, वस्त्रों, शेयरों (विशेषकर I.T. सेक्टर से सम्बन्धित) में विशेष तेजी बनेगी। रूई, सूत, कपास, घी में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी का रुख बन जाएगा।

20 जन. को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से घी, अनाज, शेयरों, चाँदी, चना, कपास, खल-बिनौले, सोने, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

24 जन. को सूर्य श्रवण में आने से गेहूँ, जौं, चावल, रूई, सूत, सन, सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग, पीपल में तेजी बनेगी।

25 जन. को बुध मार्गी होगा। गुरु की बुध पर दृष्टि होने से बाज़ार के रुख में परिवर्तन होगा। रूई-चाँदी में पहले मन्दी बनकर तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, चना, अनाज में अच्छी तेजी बनेगी। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चन्दन, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में कुछ मन्दी बने।

29 जन. को राहु उ.फा. (I), सिंह राशि एवं केतु पू.भा. (3), कुम्भ राशि में प्रवेश करेगा। इसीदिन शुक्र पू.षा. नक्षत्र में आएगा। सिंह राशिस्थ आकर राहु गुरु के साथ मेल करेगा तथा इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। सभी करियाना वस्तुओं में तेजी का रुख बनेगा। कालीमिर्च, पीपल, दालचीनी, हल्दी, धनिया, सोंठ, नारियल, सरसों, तिलहनादि तेज होंगे। धनिया, सोंठ, नमक, जीरा, काली मिर्च, चूषने (आचार, मुरब्बे, आम तथा ईख), मसाले आदि आगे 2-3 महीने में अच्छी तेजी की तरफ बढ़ेंगे। इनका संग्रह करना चाहिए–

सिंहराशौक्रमाद्वक्रोयदाराहुः प्रवर्तते। अवश्य संग्रहः कार्यः तदा चोष्येषुवस्तुषु।।

30 जन. को मंगल विशाखा में आने से रूई, कपास, वस्त्र, चना, गेहूँ, सोना, चाँदी, कॉपर में अच्छी तेजी बनेगी।

31 जन. को शनि ज्येष्ठा (2) में आने से भी क्रूड-आयल, सोना, चाँदी, कॉपर में तेजी की लाईन बन सकती है।

[**विशेष**–ता. 8 से शेयर बाज़ार के रुख में अचानक परिवर्तन आ सकता है, इसलिए व्यापारी सावधानीपूर्वक धीरे-धीरे आगे बढ़े। मासान्त ता. 29 से NIFTY में तेजी की लाईन बनेगी।]

☞फरवरी–मासारम्भ में ता. 4 तक मुख्य जिन्सों में घटाबढ़ी के मध्य बहुत मामूली तेजी रहेगी।

5 फर. को बुध उ.षा. नक्षत्र में आने से चना, बाजरा, ज्वार, चावल आदि सभी धान्यों में मन्दी का वातावरण रहेगा।

6 फर. को सूर्य धनिष्ठा में आने से सोना, चाँदी, मोती, मणि आदि जवाहरात, मूँग, मसूर, गेहूँ आदि अनाजों, अलसी, रूई में तेजी बनेगी।

8 फर. को बुध मकर राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। इन पर शनि एवं मंगल की दृष्टि भी रहेगी। फलस्वरूप रूई, सोना, चाँदी, चना, दालों, तेल, सरसों तथा क्रूड-आयल में अच्छी तेजी बनेगी।

9 फर. को शुक्र उ.षा. नक्षत्र में आएगा तथा इसीदिन मंगलवारी चन्द्रदर्शन होने से चना आदि अन्न तथा अन्य वायदा व्यापारिक वस्तुओं में तेजी की लाईन बनेगी। रूई, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, सरसों, मूँगफली में घटाबढ़ी के बाद तेजी होगी।

12 फर. को शुक्र मकर राशि में आकर सूर्य, बुध के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल एवं शनि की दृष्टियां भी रहेंगी। शेयरों (विशेषकर सॉफ्टवेयर सेक्टर में), अफीम, गुड़, खाण्ड, घी, रूई, चाँदी तथा गेहूँ, चना आदि सब अनाजों में अच्छी तेजी बनेगी।

13 फर. को सूर्य कुम्भ राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। इनका गुरु-राहु के साथ समसप्तक योग भी रहेगा। घी, तेल, लवण, सरसों, मूँगफली, राई, गेहूँ, चना, हल्दी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, काली मिर्च, अजवैयन में तेजी बनेगी। परन्तु गुड़, शक्कर, खाण्ड में अचानक मन्दी बन सकती है।

17 फर. को बुध श्रवण में तथा वक्री गुरु पू.फा. (4) में आने से गुड़, खाण्ड, अलसी, चना, चावल में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी। बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी बने।

19 फर. को सूर्य शतभिषा में आने से सोना, चाँदी, सूत, सन, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, सोंठ, हल्दी, गेहूँ, गुड़ के भावों में तेजी बनेगी।

20 फर. को मंगल वृश्चिक (स्व.) राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। इसी दिन शुक्र श्रवण में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गुड़, रूई, सोना, चाँदी, तांबा आदि धातुओं, लाल-मिर्च, उड़द, तिल, तेल, सरसों व अन्य लाल रंग की वस्तुओं के भावों में अच्छी ज़ोरदार तेजी बनेगी।

26 फर. को बुध धनिष्ठा में आएगा। सोना, चाँदी, चावल, रूई, मूँग आदि दालों तथा ग्वार में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

28 फर. को मंगल अनुराधा में आने से रूई, कपास, गेहूँ, लाल मिर्च, लाल चंदन एवं लाल रंग की अन्य जिन्सों, सोना, तांबा में तेजी का रुख रहेगा।

[**विशेष**–ता. 20 से 16 जून तक मंग.-शनि का एक राशि में संचार होने से धातुओं में विशेष तेजीकारक रहेगा। कहीं राजनीतिक उथल-पुथल, प्राकृतिक प्रकोप, भीषण अग्निकाण्ड आदि से व्यापार जगत् भी प्रभावित होगा। अतएव व्यापारी वर्ग सावधानीपूर्वक धीरे-धीरे व्यापार को आगे बढ़ाएं। शेयर बाज़ार में अच्छी तेजी बनकर अचानक मन्दी का रुख बन जाएगा।]

☞मार्च–मासारम्भ 1 मार्च को ही बुध कुम्भ राशि में आकर सूर्य एवं केतु के साथ योग करेगा। इन पर मंगल की चतुर्थ तथा गुरु-राहु के साथ सप्तम दृष्टि सम्बन्ध भी रहेगा। घी, तेल, रस, गुड़, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। अलसी, रूई में कुछ मन्दी बनेगी।

2 मार्च को शुक्र धनिष्ठा में आएगा। शुक्र पर शनि की दृष्टि पहले से ही चल रही है। चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाजरा, चाँदी, सोना, रूई, कपास में अच्छी तेजी बनेगी। चना आदि गेहूँ में थोड़ी मन्दी बनेगी।

4 मार्च को सूर्य पू.भा. में आने से भी रेशम, सोना, चाँदी, गेहूँ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, सरसों, तिल, तेल, गुड़, खाण्ड, गुग्गुल, पीपलामूल, रूई में अच्छी तेजी बनेगी।

5 मार्च को बुध शतभिषा में आने से सोने, चाँदी, तांबा आदि धातुओं में कुछ मन्दी परन्तु चना आदि अनाजों में घटाबढ़ी के बाद कुछ तेजी बनेगी।

7 मार्च को शुक्र कुम्भ राशि में आकर सूर्य-बुध-केतु के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। इन पर मंगल-गुरु-राहु की दृष्टि रहेगी। यद्यपि कुम्भ राशि में अकेला शुक्र मन्दी करता है, परन्तु ग्रहयोग से यहाँ तेजी के ही योग हैं। रूई, चाँदी, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, चना, जौं, मूँग, ज्वार, बाजरा तथा अन्य श्वेत वस्तुओं में मन्दी की जगह तेजी बनेगी।

8 मार्च को बुध पूर्व में अस्त होने से वायदा बाजार में विशेष घटाबढ़ी रहेगी। सोना, चाँदी, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी, घी, अनाज, चनादि में कुछ मन्दी बने।

9 मार्च को ग्रस्तोदय खण्डग्रास सूर्यग्रहण फाल्गुन मास में होने से अनाज व घी, तेल, गुड़, खाण्ड, घास, चना, रूई, कपास, लोहे आदि में तेजी का रुझान बनेगा।

10 मार्च को गुरुवारी चन्द्रदर्शन होने से रूई, सूत, रेशमी, ऊनी, वस्त्र, सरसों, तेल, घी में तेजी हो तथा सोना, चाँदी, खाण्ड, गुड़ में मन्दी का रुख बने।

12 मार्च को शुक्र शतभिषा में आने से चना, गेहूँ, गुड़, खाण्ड, चावल, घी, सरसों, रूई, सोना, चांदी में पहले मन्दी बनकर बाद में तेज़ी का झटका लगेगा।

13 मार्च को बुध पू.भा. में आने से सोना, चान्दी, तांबा, लोहा, अनाज, रूई में घटाबढ़ी के बाद मामूली मन्दी बनेगी।

14 मार्च को सूर्य मीन राशि में आएगा। अलसी, तिल,- तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, शक्कर, रूई, सोने में तेजी बनेगी। चना, मक्की आदि अनाजों में पहले तेजी बनकर अचानक मन्दी का रुख बन जाएगा। चाँदी, घी में भी कुछ मन्दी बनेगी।

15 मार्च को गुरु पू.फा. (3) में आने से गुड़, खाण्ड, शक्कर, चना, मक्की, गेहूँ आदि अनाजों, रूई में घटाबढ़ी के बाद कुछ मन्दी बनेगी।

17 मार्च को सूर्य उ.भा. में आने से चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, गेहूँ, तेल, सरसों में कुछ तेजी बनेगी।

18 मार्च को बुध मीन में आकर सूर्य के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। यह योग तेजीकारक रहेगा। रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, सोना, बिनौला, तांबा, मूँग में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी का रुख बनेगा।

20 मार्च को बुध उ.भा. में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। चाँदी, सोना, रूई, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहूँ आदि अनाज में पहले मामूली मन्दी बनकर पुनः तेजी का रुख बन जाएगा।

23 मार्च को शुक्र पू.भा. में आने से रूई, चावल, घी, चाँदी में तेजी, अनाजों में कुछ मन्दी बनेगी।

25 मार्च को वृश्चिक राशिस्थ एवं मंगल युक्त **शनि वक्री** होने से सभी व्यापारिक वस्तुएं विशेषकर काली मिर्च, लौंग, जीरा, काले तिल, सीमेण्ट, क्रूड-आयल, सोना, तांबा, लोहा, तेल, तिलहन, **सरसों में विशेष ज़ोरदार तेजी का झटका लग सकता है।**

27 मार्च को बुध रेवती में आने से केसर, मजीठ, लालचन्दन, लालमिर्च आदि लाल वस्तुओं में तेजी और गुड़, खाण्ड, तिल, तेल, सरसों, घी और चांदी में कुछ मन्दी बनेगी।

31 मार्च को सूर्य रेवती नक्षत्र में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। **इसीदिन शुक्र मीन राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। अलसी, सरसों, एरण्ड, मूँगफली, लहसुन, मोती, लाख, रूई, गेहूँ, जौं, चना, चावल में तेजी बनेगी। चाँदी में अच्छी तेजी बनेगी।**

[**विशेष**—ता. 25 के बाद व्यापारिक जिन्सों में विशेष तेजी की लाईन बनेगी। फिर भी बाज़ार के रुख को देखते हुए आगे बढ़ें।]

☞ अप्रैल—1 अप्रै. को ही राहु पू.फा. 4 तथा केतु पू.भा. 2 मे आने से अनाज, चना, मूँग, रुई, खाण्ड, चावल, घी, सरसों में तेजी बनेगी।

2 अप्रै. को बुध अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आएगा। इस पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। मूँगा, मोती, जवाहरात, सोना, चाँदी, तांबा आदि धातुओं, गेहूँ, चना, जौं आदि अन्न, तिल, तेल, सरसों, रूई, कपास, घी, गुड़, खाण्ड में पहले घटाबढ़ी के मध्य कुछ तेजी बनकर अचानक मन्दी का वातावरण बनेगा।

3 अप्रै. को शुक्र उ.भा. में आने से चावल, मोती, चाँदी, कपूर, नमक, खाण्ड, रूई, कपास आदि सफेद वस्तुओं में मन्दी बनेगी।

5 अप्रै. को बुध पश्चिम में उदय होने से रूई में पहले मन्दी बनकर तेजी बने, तिल, तिलहन, चाँदी, सोने, शेयरों तथा सरसों में भी तेजी का रुख रहे।

8 अप्रै., शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होने से सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र में मन्दी तथा रूई, सोना, चाँदी में घटाबढ़ी होकर बाद में तेजी हो।

10 अप्रै. को बुध भर. में आने से चावल, चना, गेहूँ आदि अनाजों, खाण्ड, मूँग, चाँदी में पहले कुछ मन्दी के बाद में तेजी बनेगी।

13 अप्रै. को सूर्य मेष राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। यह योग यद्यपि तेजीकारक है, परन्तु इन पर गुरु की दृष्टि होने से तेजी बनकर शीघ्र ही मन्दी का रुख बन जाएगा। रुई, कपास, सूत, घी, तेल, तिल, सरसों, नारियल, सुपारी, गुड़, खाण्ड, फल, शक्कर, सोना, चाँदी में तेजी बनकर भी शीघ्र मन्दी बन सकती है। इसलिए तुरन्त मुनाफा काट ले। गेहूँ, चावल, उड़द, मूँग, अरहर, चना, जौं, मटर आदि में मन्दी बनेगी।

14 अप्रै. को शुक्र रेवती में आने से भी रूई, कपास, चाँदी, चावल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चन्दन, कपूर तथा जवाहरात में मन्दी बनेगी।

16 अप्रै. को वक्री गुरु पू.फा. 2 में आने से गुड़, खाण्ड, शक्कर तथा गेहूँ आदि अनाजों में मन्दी बने। रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

17 अप्रै. को वृश्चिक राशिस्थ एवं शनि युक्त मंगल वक्री होगा। रूई, सोना, चाँदी, अलसी, गेहूँ, सरसों, गुड़ तथा अन्य लाल रंग की वस्तुओं में अच्छी ज़ोरदार तेजी बनेगी।

20 अप्रै. को बुध कृतिका में आने से चाँदी, घी, शेयर्ज़, मूँग, सरसों में घटाबढ़ी होकर मन्दी बने, अनाज, रूई में कुछ तेजी बने।

25 अप्रै. को शुक्र अश्विनी नक्षत्र तथा मेष राशि में आकर सूर्य-बुध के साथ मेल करेगा। इन पर गुरु की विशेष दृष्टि रहेगी। जौं, गुड़, शक्कर, चना, गेहूँ आदि अन्न, घी, सोना, चाँदी में अच्छी तेजी का झटका लगेगा। **परन्तु यह तेजी अस्थायी रहेगी।** शीघ्र ही मन्दी का रुख बन सकता है। **अतएव तेजी बनते ही तेजी का काम करके निकल जाएं।** ऊन, तिल, तेल, सरसों, अलसी, अरण्डी में कुछ मन्दी रहेगी।

27 अप्रै. को सूर्य भरणी में आने से सोना, चाँदी, ताँबा, मूंगा, पीतल के बर्तन, चादर आदि तथा गेहूँ, चना, चावल, मोंठ, अलसी, रूई, सरसों, गुड़, घी में तेजी बनेगी।

28 अप्रै. को मेष राशिगत बुध वक्री होगा। इस पर वक्री गुरु की पहले से ही दृष्टि है। इसीदिन मेष राशिगत ही शुक्र पूर्व में अस्त हो जाएगा। करियाना वस्तुओं में तेजी बनकर अचानक मन्दी का रुख बनेगा। घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, हींग, केसर, बैंकिंग शेयर्ज़, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, चना, रूई में मन्दी बनेगी।

☞ मई—1 मई को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होगा। सोने, चाँदी, रूई, घी, मूँग, बैंकिंग शेयर्ज में साधारण तेजी ही बन पाएगी। (ता. 1 से 6 मई तक घटाबढ़ी के मध्य पहले तेजी, फिर मन्दी का वातावरण बनेगा। अतएव हमारे विचारानुसार तुरन्त सौदे सैटल कर लें।)

ता. 7 को वक्री बुध पुनः भरणी नक्षत्र में आकर सूर्य एवं शुक्र के साथ सम्बन्ध बनाएगा। यह योग तेजीकारक रहेगा। चावल, गेहूँ, चना आदि अनाजों, खाण्ड, दालों, हींग, जौं में तेजी बनेगी।

8 मई को रविवारी चन्द्रदर्शन होने से गुड़, तेल, सोना-चाँदी में तेजी तथा रूई में घटाबढ़ी से मन्दी बनेगी।

9 मई को सिंहराशिस्थ राहु युक्त गुरु मार्गी होगा। गुरु पर शनि की दृष्टि पहले से चल रही है। रूई, चाँदी, घी, चावल में पहले तेजी बनकर बाद में कुछ मन्दी बन सकती है।

परन्तु हमारे विचारानुसार तेजी का ही रुख रहे। अलसी, सरसों, हल्दी, गुड़, तम्बाकू में तेजी बनेगी।

11 मई को सूर्य कृतिका में आने से घी, रूई, सोना, चाँदी, अलसी, एरण्ड, गेहूँ, जौं, चना, मूँग, मोठ, चावल, राई, सरसों में तेजी बनेगी।

14 मई को सूर्य वृष राशि में आकर मंगल एवं शनि के साथ समसप्तक योग बनाएगा। यह योग बाज़ार में व्यापक उठा-पटक करेगा। जिन वस्तुओं में मन्दी होगी, उनमें अचानक अच्छी तेजी का रुख ले आएगा तथा जिन वस्तुओं में तेजी चल रही होगी, उनमें मन्दी का रुख बना देगा। सोना, चाँदी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, कपास, रुई, सूत, बादाम, सुपारी, नारियल, तिल, तेल, सरसों आदि में तेजी बने। जौं, चना, गेहूँ, मटर, अरहर, मूंग, चावल में भी मन्दी बनकर भी तेजी बन जाएगी।

16 मई को शुक्र कृतिका में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। जौं, चावल, हींग, तिल, तेल, सरसों, रूई, सूत, वस्त्र, चाँदी, सोना आदि धातुओं में मन्दी के योग के बावजूद तेजी बनेगी। क्योंकि अकेला शुक्र कृतिका में मन्दी करता है, परन्तु हमारे विचारानुसार साधारण तेजी अवश्य बनेगी।

17 मई को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से घी, अनाज, शेयरों, चाँदी, चना, कपास, खल-बिनौला, सोना, रूई में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

19 मई को शुक्र वृष राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। सूर्य-शुक्र का मंगल-शनि के साथ समसप्तक सम्बन्ध रहेगा। अकेला शुक्र यद्यपि यहाँ रूई, कपास में मन्दी करता है, परन्तु ग्रहयोग से यहाँ तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, साफ्टवेयर शेयर्ज, घी, तेल में तेजी बनेगी।

21 मई को वक्री शनि ज्येष्ठा 1 मे आने से चना, गेहूँ आदि अनाजों, चान्दी, सोने, क्रूड-आयल में तेजी बनेगी। कहीं प्राकृतिक आपदा, अकाल, सूखे के कारण व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख बन सकता है।

22 मई को मेषराशिगत बुध मार्गी होने से गुड़, सरसों, रुई, गेहूँ, जौं, चना आदि अनाजों तथा सोना-चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। कपूर, चन्दन, रेशम, मूंगफली, अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी बनेगी।

24 मई को सूर्य रोहिणी में आने से तिल, तेल, एरण्ड, अलसी, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी, गेहूँ, जौं, चना, ज्वार, बाजरा, ऊन, सूत, वस्त्र, सन्, सुपारी, मिर्च में तेजी बनेगी। शेयर बाज़ार (निफ्टी) तथा चाँदी में मन्दी बने।

27 मई को शुक्र रोहिणी में आकर पुनः सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बना लेगा। इनका मं.-श. के समसप्तक सम्बन्ध भी चल रहा है। सोना, चाँदी आदि धातुओं, अलसी, एरण्ड, सरसों, घी, तेल, गुड़, खाण्ड, सुपारी, नारियल, ऊन में मन्दी की जगह तेजी बनेगी।

[**विशेष**—मासान्त तक यह घटाबढ़ी चलती रहेगी तथा वायदा बाज़ार में मुख्यतः तेजी का रुख रहेगा।]

जून—मासारम्भ 2 जून को गुरु पू.फा. 3 में आने से गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, रुई में घटाबढ़ी के मध्य कुछ मन्दी बन सकती है। परन्तु शीघ्र ही पुनः तेजी का रुख बने। (**ध्यान रहे**, गुरु-राहु का एकनक्षत्र सम्बन्ध चल रहा है तथा शनि की इन पर दृष्टि भी है।) 3 जून को राहु पू.फा. 3 एवम् केतु पू.भा.-1 में आने से रुई, चना, हल्दी, बाजरा, दालों, गेहूँ आदि अनाजों में तेजी बनेगी।

4 जून को वक्री मंगल विशाखा तथा बुध कृतिका नक्षत्र में आने से रूई, कपास, वस्त्र, गेहूँ, सोना, चाँदी, कॉपर में भी घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी बनेगी।

6 जून को सोमवारी मिथुन राशिस्थ चन्द्रदर्शन होने से गेहूँ, चना, जौं, रूई, सूत, सोने में तेजी, परन्तु चाँदी, घी में मन्दी बनेगी।

7 जून को सूर्य एवम् शुक्र एक साथ मृगशिर नक्षत्र में आएँगे। पहले से ही मंग.-शनि के साथ सप्तम दृष्टि सम्बन्ध होने से रूई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चाँदी, उड़द, मूँग, मोठ, चने, बाजरा, अलसी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी।

8 जून को बुध भी वृष राशि में आकर सूर्य-बुध के साथ मेल एवम् मंग.-शनि के साथ दृष्टि सम्बन्ध बनाएगा। वायदा बाज़ार में और ज़बरदस्त तेजी का रुख बनेगा। रुई, घी, बैंकिंग शेयर्ज़, मूंग में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। गेहूँ, जौं, चना, चावल, मटर, रुई, कपास, सूत, तिल, तेल, सरसों, क्रूड में तेजी बनेगी।

[तेजी का यह क्रम ता. 12 तक चलेगा। तुरन्त मुनाफा काट लें।]

13 जून को शुक्र मिथुन राशि में आएगा। इस पर मंगल की दृष्टि रहेगी। रूई, कपास, सूत, बारदाना, अरण्डी, तिल, तेल, सरसों, अरहर, ग्वार आदि में मन्दी बनकर एकदम तेजी का रुख शुरु हो जाएगा। अलसी, गुड़, घी, चना, जौं, चावलों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

14 जून को सूर्य मिथुन राशि में शुक्र के साथ मेल करेगा। इन पर मंगल की दृष्टि रहेगी। रेशम, सूत, कपास, रुई, सरसों, लोहा, तिल, तेल, गुड़, शक्कर, चीनी, घी, मूँग, उड़द, गेहूँ, चना, चावलादि सभी प्रकार के अनाजों, सोना, चाँदी में अच्छी तेजी का रुख बनेगा।

15 जून को भी बुध रोहिणी में आने से रुई, कपास, सूत, सोना, चाँदी, तिल, तेल, सरसों, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। राई, सन्, ऊनी व रेशमी वस्त्रों, रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

17 जून को वक्री मंगल तुला राशि में आने से रुई, कपास, सूत, बारदाना, मूँगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, उड़द, मूँग आदि अनाजों में तेजी बनेगी।

18 जून को शुक्र आर्द्रा में आने से चना, चावल, मूँग, गेहूँ आदि अनाजों के भावों में अकस्मात् मन्दी का वातावरण बनेगा।

21 जून, मंगलवार को सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करने से रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, एरण्ड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौं, चाँदी में तेजी बनेगी।

23 जून को बुध मृगशिर में आएगा। इस पर वक्री मंगल की विशेष दृष्टि रहेगी। रूई, चाँदी, गेहूँ, तिल, सरसों, उड़द में पहले मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी का रुख बन जाएगा।

25 जून को बुध पूर्व में अस्त होगा। घी, चना, गेहूँ, दालें आदि अनाज कुछ मन्दे, सोना, चाँदी, रूई, कपास, ग्वार में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

27 जून को बुध मिथुन राशि में आकर सूर्य एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। जिन वस्तुओं में तेजी चल रही होगी, बुध उनमें तेजी को ओर बढ़ावा देगा। सरसों, सोना, चाँदी, मूँग, बैंकिंग शेयर्ज में अच्छी तेजी का झटका लग सकता है।

29 जून को तुला राशिगत मंगल मार्गी होगा तथा शुक्र पुनर्वसु में आने से रूई, घी में कुछ मन्दी बने तथा तेल, सरसों, चाँदी, चना में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

30 जून को बुध आर्द्रा में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। गेहूँ, तिल, उड़द, जौं, चना, मूँग, मोठ, सरसों में मन्दी के चाँस के बावजूद बाद में तेजी बन जाएगी।

☞ जुलाई—मासारम्भ 3 जुला. को गुरु पू.फा. 4 में आने से गुड़, हल्दी, हींग, खाण्ड, शक्कर, चना, गेहूँ आदि अनाजों में कुछ मन्दी बनकर शीघ्र तेजी का रुख बन जाएगा।

5 जुला. को सूर्य पुनर्वसु में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। बाज़ार तेजी की तरफ ही बढ़ेगा। सोना, चाँदी, ताँबा, रूई, गुड़, खाण्ड, कपास, बिनौला, एरण्ड, अलसी, सरसों, लाख, तिल, ज्वार, मोठ, बाजरा, उड़द, चावल, नमक, सब्ज़ी, हरड़, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल आदि सुगन्धित पदार्थों में तेजी का रुख बनेगा।

6 जुला. को बुधवारी चन्द्रदर्शन तथा बुध पुनर्वसु में आकर सूर्य एवं शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। फलस्वरूप सोना, चाँदी, चावल, चना, घी, रूई, सूत, बारदाना, जूटादि गुड़, शक्कर, खाण्ड में मामूली मन्दी बनकर तुरन्त तेजी की तरफ बढ़ेंगे।

7 जुला. को शुक्र कर्क राशि में आने से अलसी, एरण्ड, तेल, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी एवम् चाँदी, गेहूँ, जौं, चना, मटर, अरहर में मन्दी बनेगी। रुई में मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

8 जुला. को वक्री शनि अनुराधा नक्षत्र में आने से मिर्च, केसर, चन्दन, कपूर, चना आदि गेहूँ, गुड़, सरसों, कपास में तेजी बनेगी।

9 जुला. को शुक्र उदय होने से घी, खाण्ड में कुछ मन्दी, जबकि रूई, वस्त्र, सूत, सन्, सोना, चाँदी, तिल, चावल में तेजी का रुख बनेगा। बाज़ार के रुख में अचानक परिवर्तन होगा।

10 जुला. को शुक्र पुष्य में आने से रूई, सूत, सन्, रेशम, ऊन व धान्य में तेजी, परन्तु लाख, चमड़ा, कपूर, पारा, हींग, गुड़, खाण्ड, शक्कर में मन्दी बनेगी।

11 जुला. को बुध कर्क राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। गुड़, दूध, तेल, मूँगफली, सरसों, सोने, रूई में घटाबढ़ी के मध्य पहले तेजी, 2-3 दिन बाद कुछ मन्दी बन सकती है।

12 जुला. को मंगल वृश्चिक राशि में पुनः प्रवेश कर शनि के साथ मेल करेगा। गुड़, रुई, सोना, चाँदी आदि धातुओं, क्रूड-आयल, काली मिर्च, सरसों, सोयाबीन में अच्छी तेजी बनेगी। इसी दिन बुध पुष्य में आकर शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। सोना-चाँदी में मन्दी की जगह तेजी ही बनेगी।

16 जुला. को सूर्य कर्क राशि में आकर बुध एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। वायदा बाज़ार में जिन वस्तुओं में तेजी चल रही होगी, उनमें तेजी को ओर बल मिलेगा। रूई, सूत, बादाम, सुपारी, फल, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, नारियल, सरसों, सोना आदि में अच्छी तेजी बने। गेहूँ, चना, जौं, उड़द, मूँग, चावल में कुछ मन्दी बनकर बाद में तेजी बने।

18 जुला. को बुध पश्चिम में उदय होने से रूई में पहले मन्दी बनकर फिर तेजी बने, तिल, तिलहन, चाँदी, सोने, शेयरों में भी तेजी का रुख रहे।

19 जुला. को सूर्य पुष्य नक्षत्र में शुक्र के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। तिल, तेल, सरसों, चावल, गेहूँ, जौं, ज्वार, बाजरा, सुपारी, सोंठ, गुग्गुल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सन, ऊनी, वस्त्र, सिक्का, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी। रुई में पहले तेजी होकर फिर मन्दी बनेगी। इसीदिन बुध आश्लेषा में आने से गुड़, खाण्ड, उड़द, मूँग, मूँगफली में तेजी बनेगी।

20 जुला. को शुक्र भी आश्लेषा में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। चावल, रूई, चाँदी, शेयरों में घटाबढ़ी को बढ़ावा देगा।

24 जुला. को गुरु उ.फा.-1 में आने से गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी आदि धातुओं एवं अनाज के भावों में मन्दी बनेगी। रूई में यदि पहले तेजी बन गई तो आगे मन्दी बन जाएगी। यदि पहले मन्दी बने, तो आगे तेजी बन जाएगी। परन्तु शनि की दृष्टि के कारण शीघ्र ही मन्दी तेजी में बदल जाएगी।

26 जुला. को मंगल अनुराधा में आने से रूई, कपास, गुड़, गेहूँ, लाल-मिर्च, लाल-चन्दन, लाल रंग की वस्तुओं में विशेष तेजी बनेगी।

27 जुला. को बुध मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में आकर गुरु एवं राहु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। सोना, चाँदी, सूत, रूई व ऊनी वस्त्र, गेहूँ, जौं, चना में अच्छी तेजी बनेगी। कपूर, गुड़, खाण्ड, शक्कर आदि रस पदार्थों में घटाबढ़ी के मध्य पहले मन्दी बनकर तेजी बन जाएगी।

31 जुला. को शुक्र भी मघा नक्षत्र एवं सिंह राशि में प्रवेश कर बुध, गुरु एवं राहु के साथ एकराशि-सम्बन्ध बनाएगा। शनि की इन पर दृष्टि रहेगी। वायदा बाज़ार तूफानी तेजी की तरफ बढ़ सकता है। **अतएव व्यापारी वर्ग को इस तेजी का अवश्य लाभ लेना चाहिए।** सोना, ताँबा, जौं, चना, गेहूँ, लाल-चन्दन, मजीठ, लाल-मिर्च, लाल रंग की वस्तुओं, घी में अच्छी तेजी बनेगी। रूई-चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

[**विशेष**—मासान्त ता. 27 से वायदा एवं हाजिर बाज़ार में विशेष तेजी का चान्स है।]

☞ अगस्त—2 अग. को सूर्य आश्लेषा में आने से सोना, चाँदी, रुई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तिल, तेल, सरसों, एरण्ड, अलसी, मिर्च में तेजी का रुख बनेगा।

4 अग. को गुरुवारी चन्द्रदर्शन तथा बुध पू.फा. में आकर राहु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, सूत तथा सूती, रेशमी, ऊनी वस्त्र, सरसों, तेल, घी में अच्छी तेजी बनेगी। गुड़, खाण्ड, सोना, चाँदी में मन्दी बनकर बाद में तेजी का रुख बनेगा।

5 अग. को राहु पू.फा. 2 केतु शत. 4 में आने से अलसी, अरण्डी, सरसों, खाण्ड, चना में तेजी बनेगी। घटाबढ़ी के मध्य यह रुख ता. 10 तक चलेगा।

11 अग. को गुरु कन्या राशि में आकर शनि की दृष्टि से हट जाएगा। वायदा बाज़ार तथा धातुओं के भावों में शीघ्र ही परिवर्तन होगा। इसलिए ता. 11 से पहले अपनी सभी सौदे निपटा लें। रूई तथा चाँदी में मन्दी बनेगी। ज्वार, चावल, गेहूँ, मूँग, उड़द, चना, तिल, तेल, सरसों, घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी बनेगी।

13 अग. को शनि मार्गी होने से तिल, तेल, सरसों, हींग, मिर्च, गुड़ में तेजी बनेगी।

15 अग. को बुध उ.फा. में आकर गुरु के साथ एकनक्षत्र बनाएगा। उड़द, मूँग, मोंठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी बनेगी। रूई, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

16 अग. को सूर्य मघा नक्षत्र तथा सिंह राशि में आकर बुध-शुक्र एवं राहु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहने से वायदा एवं हाजिर में तूफानी तेजी बन सकती है। सोना, चाँदी, रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों आदि तथा लाल रंग

की वस्तुओं में विशेष तेजी बनेगी। शेयरों, चने आदि में घटाबढ़ी के पहले कुछ मन्दी बाद में तेजी बनेगी।

19 अग. को बुध कन्या राशि में आकर गुरु के साथ एकराशि तथा एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। अतः गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी, सोना, चाँदी में तेजी बनेगी।

नोट–19 अग. को बुध का गुरु के साथ मेल बाज़ारों में अफवाहों से मन्दी भी कर सकता है। विशेषकर रुई या चाँदी में, इसलिए सावधान रहें।

22 अग. को शुक्र उ.फा. में चना, मूँग, उड़द आदि दालों, गेहूँ आदि अनाज व रूई में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी में घटाबढ़ी चलेगी।

25 अग. को शुक्र कन्या राशि में आकर बुध एवम् गुरु के साथ एकराशि तथा एक ही नक्षत्र उ.फा. में मेल करेंगे–**यह योग अच्छी तेजी का संकेत देता है।** चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। गेहूँ, चना आदि सभी प्रकार के अनाज, तिलहन, दालें, गुड़, खाण्ड, शक्कर, घी, खाद्य तेल, सोना, ऊनी/सूती वस्त्र, सफेद रंग की सभी चीजें, हाजर एवं वायदा बाज़ार तेज रहेंगे। इस समय शेयर मार्किट तथा चावलों में विशेष तेजी का झटका आ सकता है। **शीघ्र मुनाफा ले लेवें, क्योंकि यह तेजी अस्थायी होगी।**

कन्याराशिगते शुक्रे सर्वसस्यं विनश्यति। तत्र धान्यमहर्घाणि शालिश्चैव विशेषतः।।

26 अग. को मंगल ज्येष्ठा में आने से चाँदी में कुछ मन्दी, रुई में घटाबढ़ी तथा अफीम में तेजी बनेगी।

28 अग. को गुरु उ.फा. (3) में आने से रुई, घी, हल्दी, मूँग, ग्वार, चना में घटाबढ़ी के बाद मामूली तेजी बने।

30 अग. को सूर्य पू.फा. में आकर राहु के साथ एक नक्षत्र सम्बन्ध बनाने तथा बुध वक्री होने से जीरा, सोना, गुड़, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, घी, गेहूँ, ज्वार, चावल, ऊनी कपड़ा, रूई, सूत में तेजी बनेगी। शीघ्र ही मुनाफा काट लें, तेजी स्थिर नहीं होगी।

नोट–अगस्त मास में शेयर्ज़ तथा धातुओं में भी तेजी के अस्थायी झटके लगने की उम्मीद है। तुरन्त मुनाफा लेकर सौदे निपटाते रहें।

☞ सितम्बर–2 सितं. को शुक्र हस्त में आने से रूई, चाँदी, चावल, कपास, कॉटन, सूत में मन्दी बनेगी। यदि दालों आदि अनाज में मन्दी बने, तो आगे के लिए संग्रह करने से लाभ होगा। सोना, खाण्ड, गुड़, शक्कर, चाँदी में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी।

3 सितं. को शनिवारी चन्द्रदर्शन होने से रूई, सूत, वस्त्र, चाँदी, सोना, सरसों, मूँगफली में अच्छी तेजी बनेगी।

6 सितं. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से सोना, चाँदी, रूई में अच्छी तेजी का चाँस है। शेयर-बाज़ार, कॉपर, कपास, बिनौला, मूँग में भी तेजी बनेगी।

9 सितं. को वक्री बुध सिंह राशि में आकर सूर्य एवं राहु के साथ मेल करेगा। इन पर शनि की विशेष दृष्टि रहेगी। यह योग अच्छी तेजी का संकेत देता है। सोना, चाँदी, सूत, रूई व ऊनी वस्त्रों, घी, सरसों, तेल, क्रूड-आयल में अच्छी तेजी बनेगी। गुड़, खाण्ड, शक्कर में भी मन्दी बनकर तेजी का रुख बन जाएगा। परन्तु इसीदिन गुरु अस्त होने से सोना, चाँदी में शीघ्र ही मन्दी का रुख शुरु हो सकता है। **इसलिए व्यापारी तुरन्त मुनाफा काट लें।** रूई तथा शेयरों में विशेष तेजी बनेगी।

12 सितं. को वक्री बुध पू.फा. 4 तथा गुरु उ.फा. 4 में आने से गुड़, खाण्ड, दालें, गेहूँ आदि अनाज तथा सोना, चाँदी आदि धातुओं में मन्दी का वातावरण बनेगा।

13 सितं. को सूर्य उ.फा. में आकर गुरु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। रूई, कपास, रेशम, सूत, सोना, चाँदी, लोहा, घी, तेल, अलसी, सरसों, एरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल में तेजी के संकेत हैं।

16 सितं. को सूर्य कन्या राशि में आकर गुरु एवं शुक्र के साथ मेल करेगा। यह योग कृषि आदि की हानि के संकेत करता है। रूई, नारियल, सुपारी, तिल, तेल, मजीठ, लाल वस्तुएं, सोने, घी, चना, सरसों में अच्छी तेजी बनेगी। चाँदी तथा शेयरों में कुछ मन्दी के योग बनेंगे।

17 सितं. को शनि ज्येष्ठा 1 में आकर मंगल के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। चाँदी, गुड़, क्रूड-आयल, सरसों, चावल में तेजी बनेगी।

18 सितं. को मंगल मूल नक्षत्र, धनु राशि में तथा शुक्र तुला राशि में आएगा। रूई, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। बिनौला, सरसों, सोयाबीन, चना, घी तथा सभी प्रकार के अनाजों में तेजी बनेगी।

19 सितं. को वक्री बुध पूर्व में उदय होने से सोना, चाँदी आदि धातुओं, रूई, कपास, गुड़, मूँग, घी में तेजी तथा अनाजों में कुछ मन्दी बने।

22 सितं. को बुध मार्गी होगा। इस समय सिंह राशिगत बुध-राहु पर शनि की दृष्टि पहले से चल रही है। वायदा व हाजर बाज़ार के रुख में एकदम परिवर्तन हो सकता है। इसलिए सावधानीपूर्वक धीरे-धीरे आगे बढ़ें। रूई, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी। गेहूँ, जौं, चना, अनाज में अच्छी तेजी बने। रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चंदन अगर आदि सुगन्धित वस्तुओं में मन्दी बनकर शीघ्र ही तेजी बन जाएगी।

24 सितं. को शुक्र स्वाती में आने से गुड़, खाण्ड, शक्कर, चाँदी में तेजी बनेगी। गेहूँ, चना, दालों में कुछ मन्दी बने।

28 सितं. को गुरु हस्त 1 में आएगा। यद्यपि अकेला गुरु यहाँ रूई, गुड़, खाण्ड, शक्कर, अरण्डी, अलसी, सरसों, घी, तेल, सोना, चाँदी, मोती, गेहूँ, चना हल्दी में मन्दी लाता है, परन्तु सूर्य युक्त होने से शीघ्र ही भावों में तेजी आ जाएगी।

☞ अक्तूबर–1 अक्तू. को बुध उ.फा. में आने से उड़द, मूँग, मोठ, मसूर, अरहर में कुछ तेजी बनेगी। रूई, चाँदी में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

2 अक्तू. को रविवारी चन्द्रदर्शन होने से गुड़, तेल, सोना, चाँदी में तेजी, रुई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

3 अक्तू. को बुध कन्या राशि में आकर सूर्य एवं गुरु के साथ मेल करेगा। कन्या राशि में सू.-बु.-गु. का मेल बाज़ारों में अस्थायी रूप से ज़ोरदार घटाबढ़ी चलाएगा। परन्तु बाज़ार तेजी की तरफ रहेंगे। रुई, चाँदी में पहले मन्दी रहे, गेहूँ, जौं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी बनेगी।

5 अक्तू. को शुक्र विशाखा में आने से भी रूई, कपास, सूत, अनाजादि में मन्दी रहेगी।

7 अक्तू. को गुरु पूर्व में उदय होने से अच्छे उत्पादन, सुभिक्ष का संकेत है। कपास, हल्दी, घी, दूध, अरहर, सोने में कुछ मन्दी बने। इसीदिन राहु पू.फा. 1 केतु शत. 3 आने से चाँदी, क्रूड-आयल, चने, दालों में तेजी बनेगी।

8 अक्तू. को मंगल पू.षा. में आने से भी सोना, चाँदी, चावल, उड़द, घी, दूध, तिल, तेल, सरसों, मूँगफली में तेजी बने। चना, गेहूँ आदि अनाजों में कुछ मन्दी बनेगी।

9 अक्तू. को बुध हस्त नक्षत्र में आकर भी अनाजों, घी में मन्दा करेगा। सोना, रूई, चाँदी, मूँग, सरसों में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

10 अक्तू. को सूर्य चित्रा में आने से रूई, सूत, सोना, चाँदी तथा मोती आदि रत्नों, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूँ, चना, तिल, नारियल, सन्, केशर, कपूर में तेजी बनेगी।

13 को शुक्र वृश्चिक राशि में आकर शनि के साथ एक राशि सम्बन्ध बनाएगा। यह योग विशेष तेजी का संकेत दे रहा है। यद्यपि अकेला शुक्र यहाँ मन्दी लेकर आता है। परन्तु क्रूर ग्रहयोग से यहाँ रूई, शेयरों, चाँदी, अफीम, गुड़ में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बने। गेहूँ, जौं, उड़द, मूँग, मोंठ, बाजरा आदि अनाजों में तो अच्छी तेजी बनेगी।

16 अक्तू. को शुक्र अनुराधा में आने से गुड़, खाण्ड, चाँदी, चावल, नमक में कुछ मन्दी बनेगी।

17 अक्तू. को सूर्य प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व तुला राशि में प्रवेश करेगा। रूई, चाँदी में कुछ मन्दी, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सोना, ताम्बा, लाल-चन्दन, मजीठ, श्रीफल, सुपारी में कुछ तेजी बनेगी। इसीदिन बुध चित्रा में आकर धातुओं में घटाबढ़ी करेगा।

21 अक्तू. को बुध तुला राशि में आकर सूर्य के साथ मेल करेगा। यद्यपि तुलाराशि में बुध बाज़ारों में मन्दा करता है, लेकिन गुड़, सरसों, सोना, सोयाबीन में ज़ोरदार घटाबढ़ी करेगा-ऐसा विचार है। मन्दे में खरीदें, तेजी में माल निकाल कर लाभ लेते रहें। हमारे विचार से चाँदी, अलसी, बिनौला, मूँगफली, एरण्ड, सरसों में ज़ोरदार मन्दी एवं तेजी के झटके आएंगे।

23 अक्तू. को सूर्य स्वाती में आने से भी रूई, सूत, सन्, रेशम, कपड़ा, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपारी, मिर्च, अलसी, सरसों, राई, हींग, गुग्गुल में तेजी बनेगी।

25 अक्तू. को बुध भी स्वाती में आकर सूर्य के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाकर बाज़ारों में विशेषकर रूई, मूँग, गुड़, सरसों, चना, शेयरों में विशेष घटाबढ़ी करेगा। रूई में कुछ मन्दी बने।

27 अक्तू. को मंगल उ.षा. में तथा शुक्र ज्येष्ठा में आकर शनि के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। यद्यपि अकेला शुक्र यहाँ मन्दी लेकर आता है। परन्तु ग्रहयोग अनुसार तेजी का ही संकेत है। सोना, चाँदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग, रूई, घी, उड़द में तेजी बनेगी।

29 अक्तू. को शनि ज्येष्ठा 2 तथा गुरु हस्त (3) में आने से रुई, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, चना, हल्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

30 अक्तू. को रविवारी दीपावली भी तेजीकारक रहेगी।

☞ नवम्बर—मासारम्भ ता. 1 को मंगल अपनी उच्चराशि (मकर) में प्रवेश करेगा। इस पर शनि की स्वगृही एवं गुरु की नीच दृष्टि रहेगी। वायदा एवं हाजर बाज़ारों में विशेष उथल-पुथल एवं घटाबढ़ी बनेगी। रुई, सोना, चाँदी, ताम्बा, गुड़, खाण्ड, घी, तेल, अलसी, ऊन में अच्छी तेजी के झटके लगेंगे। अनाजों में कुछ मन्दी बन सकती है।

2 नवं. को बुध विशाखा में आने से चना, मूँग आदि दालें, गेहूँ, चावल आदि अनाजों में मन्दी बनेगी।

6 नवं. को सूर्य विशाखा में आकर बुध के साथ एकनक्षत्र बनाएगा। जौं, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रूई, सूत, सरसों, तिल, एरण्ड, अफीम, अलसी, चाँदी में तेजी बनेगी।

7 नवं. को शुक्र मूल नक्षत्र एवं धनु राशि में आकर मेदिनी ग्रह प्लूटो से मेल करेगा। गेहूं, जौं, चना, चावल आदि अनाज, सोना, चाँदी, ताम्बा आदि धातु एवं शेयरों में तेजी होगी। रुई, सूत, कपास में पहले मन्दी, बाद में तेजी बने या पहले तेजी, बाद में मन्दी बने।

8 नवं. को बुध वृश्चिक राशि में आकर शनि के साथ मेल करेगा। बुध अस्त है। इस समय व्यापारी ध्यान रखें-यदि बाज़ार मन्दे हों तो बुध-शनि का योग ज़बरदस्त मन्दा करेगा। यदि तेजी चल रही हो तो ज़ोरदार तेजी का उछाला आएगा। हमारे विचार से घी, तेल, सरसों, रुई, चाँदी, सोने, क्रूड-आयल में तेजी बने। यदि नहीं भी बने, तो स्टॉक कर लें, आगे नवम्बर के अन्त में अच्छा लाभ मिलेगा।

10 नवं. को बुध अनुराधा में आकर सूत, सन्, रुई, सोना, चान्दी और अनाज के भाव सम रहेंगे।

15 नवं. को सूर्य वृश्चिक राशि में आकर बुध एवं शनि के साथ मेल करेगा। यह योग विशेष तेजी का रुख बना सकता है। लेकिन विशेष ज़ोखिम न लें। बाज़ार के आरम्भिक (ता. 16 से) रुख को थोड़ा देख लें क्योंकि बुध अस्त है, अतः बाज़ार उलटे भी चल सकते हैं। हमारे विचारानुसार रूई, ताम्बा, चाँदी, सोना, ऊनी वस्त्रों, क्रूड-आयल, गुड़, सरसों, सोयाबीन में तेजी बनकर शीघ्र मन्दी बन सकती है।

18 नवं. को शुक्र पू.षा. में आने से मूँग, मोठ, उड़द, तिल, तेल, सरसों में मन्दी बनेगी।

19 नवं. को सूर्य अनुराधा तथा बुध ज्येष्ठा में आने से जौं, चना, चावल आदि धान्यों, ऊन, सोना, चाँदी, घी, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। इसी दिन बुध पश्चिमोदय होने से शेयरों, घी, रूई में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी।

23 नवं. को शनि अस्त होने से रूई, शेयरों, सोने में मन्दी, जबकि क्रूड, अनाजों में तेजी बनेगी। बाज़ार का जो रुख 23-24 ता. को बन जाएगा, वह ता. 27 तक रहेगा।

28 नवं. को बुध मूल नक्षत्र तथा धनु राशि में आकर शुक्र के साथ एकराशि सम्बन्ध बनाएगा। **अकेला बुध यद्यपि यहाँ मन्दी करता है, परन्तु शुक्र के साथ होने से** रूई, चाँदी, शेयरों में तेजी बनाएगा। कुछ जिन्सों में मन्दी का वातावरण भी बनेगा।

29 नवं. को भौमवती अमावस वायदा एवं हाज़िर बाज़ारों में तेजी लेकर आएगी।

☞ दिसम्बर—1 दिसं. को गुरुवारी चन्द्रदर्शन होने से रूई, सूत तथा सूती, रेशमी, ऊनी वस्त्र, सरसों, तेल, घी में तेजी बनेगी। सोना, चाँदी, खाण्ड, गुड़ में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

2 दिसं. को सूर्य ज्येष्ठा तथा मंगल धनिष्ठा में आएगा। सोना, चाँदी, चावल, गेहूँ, जौं, चना, अलसी, सरसों, एरण्ड, हींग, गुग्गुल, पारा, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी। रूई में पहले मन्दी बनकर बाद में तेजी बनेगी।

2 दिसं. को ही शुक्र मकर राशि में आकर मंगल के साथ मेल करेगा। इन पर शनि एवं गुरु की विशेष दृष्टियां रहेंगी। यह योग घटाबढ़ी एवं तेजी को ओर बल देगा। उपरोक्त जिन्सों तथा घी आदि में अच्छी घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

4 दिसं. को गुरु चित्रा (1) में आने से चाँदी, चना, घी, हल्दी, शेयरों तथा रूई में घटाबढ़ी के बाद मन्दी बनेगी।

8 दिसं. को बुध पू.षा. में आने से सरसों, सोयाबीन, खल-बिनौला, अलसी में तेजी, चना, गेहूँ आदि अनाज, सोने-चाँदी में मन्दी बनेगी।

9 दिसं. को राहु मघा (4), केतु शत. (2) में आने से अलसी, सरसों, सोयाबीन, घी में अच्छी तेजी बनेगी।

11 दिसं. को मंगल कुम्भ राशि में आकर केतु के साथ मेल करेगा। वायदा बाज़ार में विशेष तेजी का रुख बनने की उम्मीद है। व्यापारी लाभ लें। रूई, चाँदी, चना, गेहूँ आदि सब अनाजों, घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड के भावों में ज़ोरदार तेजी चलेगी। इसीदिन शुक्र श्रवण में आने से सोना, चाँदी में अच्छी घटाबढ़ी के बाद थोड़ी मन्दी का झटका भी लेकर आएगा।

15 दिसं. को सूर्य मूल नक्षत्र तथा धनु राशि में आकर बुध के साथ मेल करेगा। रूई, कपास, सूत, तिल, तैल, सोना, चाँदी आदि तेज होंगे। चाय, चावल, अनाजादि में कुछ मन्दा रहे।

19 दिसं. को धनु राशिगत बुध वक्री होने से घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर, चाँदी, बैंकिंग शेयर्ज़ में तेजी जबकि चना, दालों, गेहूँ आदि में कुछ मन्दा बनेगा।

20 दिसं. को मंगल शतभिषा में आकर केतु के साथ एकनक्षत्र सम्बन्ध बनाएगा। वायदा एवं हाज़र में विशेष उथल-पुथल के मध्य तेजी रहेगी। रुई, चाँदी, सोना, गुड़, सरसों, सोयाबीन में तेजी बनेगी।

22 दिसं. को शुक्र धनिष्ठा में आने से भी चावल, मूँग, मोठ, उड़द, ज्वार, बाज़रा, चाँदी, सोना, रूई, कपास में तेजी बनेगी।

23 दिसं. को वक्री बुध पश्चिम में अस्त होने से मूँग, बैंकिंग शेयर्ज़, चाँदी, रूई में घटाबढ़ी के बाद अच्छी तेजी की उम्मीद है, जबकि सोने, ताँबे, सरसों में कुछ मन्दी बनेगी।

26 दिसं. को शनि ज्येष्ठा (4) में आने से चाँदी, सरसों, सोयाबीन, मिर्च, तिल, क्रूड में तेजी बने।

परन्तु 27 दिसं. को ही शनि उदय होने से रूई, शेयरों, अलसी, सरसों, एरण्ड, बिनौला, मूँगफली में मन्दी बने। जबकि लोहा, जिस्त, सीसा, रंग आदि काले पदार्थ, लहसुन, चावल, गुड़, खाण्ड में तेजी बनेगी।

28 दिसं. को सूर्य पू.षा. तथा वक्री बुध मूल नक्षत्र में जाएंगे। तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गुग्गुल, चाँदी, ऊनी-वस्त्र में तेजी बनेगी।

इसीदिन ता. 28 को शुक्र कुम्भ राशि में आकर मंगल एवं केतु के साथ मेल करेगा। अकेला शुक्र यहाँ मन्दीकारक होता है, परन्तु यहाँ क्रूर ग्रहों के योग से बाज़ार में तेजी को बल मिलेगा, लाभ उठाएं। चाँदी, रूई, खाण्ड, मूँग, क्रूड-आयल, काली मिर्च में तेजी बनेगी।

30 दिसं. शुक्रवार को चन्द्रदर्शन होने से सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, चावल, उड़द, ऊनी वस्त्रों में कुछ मन्दी बनेगी। रूई, सोना,चान्दी में घटाबढ़ी के बाद तेजी बनेगी।

नोट—गोचर ग्रहस्थिति अनुसार ऊपर दिए गए व्यापारिक रुख, लाईन तथा चांसों के विपरीत बाज़ार का रुख चले या वायदा व्यापार की लाईन न चले, तो तुरन्त सौदा काटकर हानि से बचें। व्यापार में किसी प्रकार की हानि होने पर हम जिम्मेवार न होंगे।—सम्पादक

आज का दिन कैसा गुजरेगा ?

जिस दिन को मालूम करना हो कि **आज का दिन आपका कैसा गुजरेगा ?** तो उस दिन आप पंचांग में देखें कि चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। आप उस नक्षत्र को नं. १ पर से गिन कर ऊपर लिखे चक्र के क्रमानुसार 28 नक्षत्र लगा लें। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र किस स्थान पर आता है। वैसा फल जानें। यदि आपके नाम का नक्षत्र वृत्त (गोलाकार) के अन्दर पड़ेगा तो उस दिन शुभ समाचार, प्रिय बन्धु से मिलाप व धन लाभ होगा। यदि गोल वृत्त के बाहर पड़े तो दिन का आधा भाग खुशी में, आधा भाग फिकर और चिन्ता में व्यतीत होगा। यदि त्रिशूल के ऊपर पड़े तो पूरा दिन परेशानी, झगड़े, धन हानि व चिन्ता में व्यतीत होगा। **उदाहरणार्थ आज यदि मघा नक्षत्र हो तो, उसे नं. १ लें।** इसी क्रम में पू.फा. आदि 28 नक्षत्र क्रम से लिख लें। नक्षत्रों की तालिका इसी पंचाँग के अन्तिम पृष्ठों में देखें।
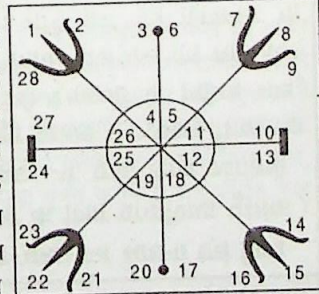
खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं ?

विनष्टार्थस्य लाभोऽन्धे शीघ्रं मन्दे प्रयत्नतः। स्यात् दूरेश्रवणं मध्ये श्रुत्याप्ती न सुलोचने॥

१. **अन्धाक्ष नक्षत्रों** में गुम हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा की ओर जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति की शीघ्र सम्भावना रहती है।

२. **सुलोचन नक्षत्रों** में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है।

३. **मध्याक्ष नक्षत्र** में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। पता चलने पर भी प्राप्त (हस्तंगत) नहीं होती।

४. **मन्दाक्ष नक्षत्र** में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है। अन्धाक्षादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं–

नक्षत्र संज्ञा	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
(१) अन्धाक्ष	रोहणी	पुष्य.	उ.फा.	विशा.	पू.षा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
(२) सुलोचन	कृतिका	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूल.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
(३) मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा.	मघा.	चित्रा.	ज्येष्ठा	अभि.	पू.भा.	पता लगाने पर भी नहीं मिलेगी।
(४) मन्दाक्ष	अश्विनी	मृग.	आश्ले.	हस्त.	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत प्रयत्न करने पर मिलेगी।

चमत्कारिक मन्त्र-तन्त्र एवं यन्त्र

'मन्त्र' वह दिव्य शक्ति है, जिसके द्वारा दैवी शक्तियों का अनुग्रह उपयुक्त साधना द्वारा सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए कर्त्तव्य की प्रेरणा देनी वाली शक्ति साधना को भी मन्त्र कहते हैं।

मन्त्र सिद्धि एवं साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति एवं श्रद्धा भावना का होना आवश्यक है। जैसा कि 'भावचूड़ामणि' में लिखा गया है–

बहुजापात् तथा होमात् कायक्लेशादिविस्तरैः। न भावेन विना देवो यन्त्रमन्त्राः फलप्रदाः॥

अर्थात् चाहे कितना भी अधिक जप, होम तथा शारीरिक प्रयास किया जाए, परन्तु भाव के बिना देवता, मन्त्र और यन्त्र आदि फलप्रद नहीं होते।

प्राचीनाचार्यों ने मन्त्र-तन्त्रादि के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए कुछ विशेष नियमों को पालन करने के भी निर्देश दिए हैं। जैसे-गोपनीयता, मन व शरीर की शुद्धि, शुभ स्थान, सात्विक भोजन, शुभासन, विनियोग, मन्त्र, देवता, दिशा एवं शुभ मुहूर्त्तादि का ज्ञान होना आवश्यक बताया गया है। जिनका पालन करके मन्त्रानुष्ठान शीघ्र व सुलभ हो जाती है। इनकी विस्तृत व्याख्या हमारी प्रकाशित पुस्तक **'शिव मन्त्रावली'** में दी गई है।

मन्त्र एवं यन्त्रों के अनुष्ठान एवं सिद्धि के लिए सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, सूर्य-चन्द्र क्रान्तिसाम्य का काल, श्रीमहाशिवरात्रि काल, दीपावली, अक्षय तृतीया, सायन एवं निरयण संक्रान्ति पुण्यकाल, होलाष्टक, रवि-गुरु पुष्यादि योग, नवरात्रों में, अमृत सिद्धि योगों, भौमवासरी अमावस आदि पर्वों को विशेष प्रशस्त माना गया है।

मन्त्र-तन्त्र साधना के लिए महत्त्वपूर्ण काल

सायन संक्रान्ति प्रवेश एवं पुण्यकाल–(सन् 2016–17 ई.)

भारतीय मुहूर्त्त शास्त्रों ने निरयण संक्रान्ति के पुण्यकाल की भान्ति सायन संक्रान्ति के पुण्यकाल को भी यन्त्र-मन्त्र साधना हेतु विशेष सिद्धिदायक बताया है।

2016–17 ई.	राशि	प्रवेशकाल	पुण्यकाल विवरण (भा. स्टैं. टा.)
20 जनवरी	कुम्भ	20–57	दोपहर 14–33 से अर्द्धरात्रि 27/21 तक
19 फरवरी	मीन	11–04	प्रात: 04/40 से सायं 17/28 तक
20 मार्च	मेष	10–00	प्रात: 03/36 से सायं 16/24 तक
19 अप्रैल	वृष	21–00	दोप. 14/36 से अर्द्धरात्रि 27/24 तक
20 मई	मिथुन	20–07	दोप. 13/43 से अर्द्धरात्रि 26/31 तक
20 जून	कर्क	28–05	20 ता. की रात्रि 21/41 से 21 की प्रात: 10//29 तक
22 जुलाई	सिंह	15–00	प्रात: 8/36 से रात्रि 21/24 तक
22 अगस्त	कन्या	22–09	दोप. 15/45 से अगले दिन प्रात: 04/33 तक
22 सितम्बर	तुला	19–51	दोप. 13/27 से अर्द्धरात्रि 26/15 तक
22 अक्तूबर	वृश्चिक	29–16	22 की रात्रि 22/52 से 23 दोप. 11/40 तक
21 नवम्बर	धनु	26–53	21 की रात्रि 20/29 से 22 की प्रात: 9/17 तक
21 दिसम्बर	मकर	16–14	प्रात: 9/50 से रात्रि 22/38 तक
19 जन.(2017)	कुम्भ	26–54	रात्रि 20/30 से 20 ता. की प्रात: 9/18 तक
18 फरवरी	मीन	17–02	प्रात: 10/38 से रात्रि 23/26 तक
20 मार्च	मेष	15–59	प्रात: 9/35 से रात्रि 22/23 तक

क्रान्तिसाम्य काल (सन् 2016–17 ई.)

यहाँ सूर्य-चन्द्रमा का महापात गणित द्वारा प्रणीत सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल दिया जा रहा है। विवाहादि मुहूर्त्तों में इसी सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य काल को वर्जित किया गया है। यह समयावधि विवाहादि शुभ मुहूर्त्तों के लिए अशुभ एवं निषिद्ध है, परन्तु मन्त्र-यन्त्र अनुष्ठान के लिए श्रेष्ठ व शुभ होती है।

प्रारम्भ काल			समाप्ति काल		
तारीख	घं.	मिं.	तारीख	घं.	मिं.
3 फर.	6	33	3 फर.	19	20
14 फर.	20	05	15 फर.	03	13
27 फर.	13	57	27 फर.	20	42
10 मार्च	21	20	10 मार्च	26	17
23 मार्च	04	48	23 मार्च	10	55
5 अप्रै.	04	49	5 अप्रै.	10	04
16 अप्रै.	19	37	17 अप्रै.	02	37
29 अप्रै.	25	01	30 अप्रै.	09	50
10 मई	15	33	11 मई	11	11
30 जुला.	9	19	31 जुला.	02	38
11 अग.	16	37	12 अग.	02	19
23 अग.	19	52	24 अग.	02	04
5 सितं.	6	57	5 सितं.	13	18
17 सितं.	24	11	18 सितं.	05	05
29 सितं.	25	33	30 सितं.	7	24
13 अक्तू.	6	56	13 अक्तू.	12	29
24 अक्तू.	17	43	25 अक्तू.	00	50
6 नवं.	21	47	7 नवं.	8	25
(सन् 2017 ई.)					
5 फर.	12	52	5 फर.	21	28
17 फर.	16	26	17 फर.	23	45
2 मार्च	9	12	2 मार्च	14	43
14 मार्च	11	02	14 मार्च	16	39
27 मार्च	14	01	27 मार्च	19	01
8 अप्रै.	8	04	8 अप्रै.	14	23

अर्द्धकुम्भी एवं कुम्भ योग

13 अप्रै.	13 23	13 अप्रै.	सूर्यास्त
21 मई	सू. उ.	21 मई	सूर्यास्त

वारुणी पर्व

4 अप्रै.	27 07	5 अप्रै.	10 35
(सन् 2017 ई.)			
26 मार्च	सू. उ.	26 मार्च	12 29

महावारुणी योग (पर्व)-2017 ई.

25 मार्च	16 58	25 मार्च	सूर्यास्त

–सूर्य-चन्द्रग्रहण–

भारतवर्ष में इस वर्ष कोई भी सूर्य एवं चन्द्रग्रहण दृश्य नहीं होगा।

दीपावली पर्व

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र साधना, अनुष्ठान के लिए 30 अक्तूबर, रविवार को दीपावली पर्व में प्रदोष एवं निशीथ काल विशेष सिद्धिदायक होगा। देखें पृ. 92

–आर्थिक संकट निवारणार्थ श्रीलक्ष्मी गायत्री मन्त्र–

ॐ ह्रीं महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नीं च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ह्रीं ॐ।।

उपरोक्त मन्त्र को कमलगट्टे की माला पर अत्यन्त गुप्त रूप से पूर्ण शुद्धतापूर्वक अर्द्धरात्रि में 1008 जप प्रतिदिन करना चाहिए। सवा लाख पूर्ति के पश्चात् दशमांश के साथ हवन भी करें तो शीघ्र ही 2-3 मास में शुभ फल प्राप्त होगा

–ऋण मुक्ति के लिए कुछ उपयोगी मन्त्र–

(1) कुश की जड़, बिल्व का पञ्चाङ्ग (पत्र, फल, बीज, लकड़ी और जड़) तथा सिन्दूर– इन सबका चूर्ण बनाकर चन्दन की पीठिका पर नीचे लिखे मन्त्र को लिखे। तदनन्तर पञ्चोपचार से पूजन करके गोघृत से 44 दिनों तक प्रतिदिन सात बार संक्षिप्त हवन करें। मन्त्र की जप संख्या कम-से-कम 10 हज़ार है, जो 44 दिनों में पूरी होनी चाहिए। 43 दिनों तक प्रतिदिन 228 मन्त्रों का जाप हो और 44वें दिन 196 मन्त्रों का। तदनन्तर १०००० मन्त्र का जप, जप के बाद उसका दशांश १००० हवन या जपादि करना आवश्यक है। मन्त्र यह है–

ॐ आं ह्रीं क्रौं श्रीं श्रियै नमः ममालक्ष्मीं नाशय नाशय मामृणोत्तीर्णं कुरु कुरु सम्पदं वर्धय वर्धय स्वाहा।।

(2) निम्न मन्त्र का एक वर्ष तक निरन्तर 1100 जप करने से साधक (कर्त्ता) शीघ्र ही ऋणमुक्त हो जाता है। साथ ही ऋणहर्ता गणेश स्तोत्र का भी पाठ कर लेना चाहिए–

मन्त्र–ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्।।

ऋण-मुक्ति गणेश स्तोत्रम्–

(3)

विनियोगः–**अस्य श्रीऋणविमोचनमहागणपतिस्तोत्रमन्त्रस्य शुक्राचार्य ऋषिः, ऋणविमोचन महागणपतिर्देवता, अनुष्टुप् छन्दः, ऋणविमोचनमहागणपतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।**

ॐस्मरामि देवदेवेशं वक्रतुण्डं महाबलम्। षडक्षरं कृपासिन्धुं नमामि ऋणमुक्तये।। १।।
महागणपतिं वन्दे महासेतुं महाबलम्। एकमेवाद्वितीयं तु नमामि ऋणमुक्तये।। २।।
एकाक्षरं त्वेकदन्तमेकं ब्रह्म सनातनम्। महाविघ्नहरं देवं नमामि ऋणमुक्तये।। ३।।
शुक्लाम्बरं शुक्लवर्णं शुक्लगन्धानुलेपनम्। सर्वशुक्लमयं देवं नमामि ऋणमुक्तये।। ४।।
रक्ताम्बरं रक्तवर्णं रक्तगन्धानुलेपनम्। रक्तपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।। ५।।
कृष्णाम्बरं कृष्णवर्णं कृष्णगन्धानुलेपनम्। कृष्णयज्ञोपवीतं च नमामि ऋणमुक्तये।। ६।।
पीताम्बरं पीतवर्णं पीतगन्धानुलेपनम्। पीतपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।। ७।।
सर्वात्मकं सर्ववर्णं सर्वगन्धानुलेपनम्। सर्वपुष्पैः पूज्यमानं नमामि ऋणमुक्तये।। ८।।
एतदृणहरं स्तोत्रं त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः। षण्मासाभ्यन्तरे तस्य ऋणच्छेदो न संशयः।। ९।।
सहस्रदशकं कृत्वा ऋणमुक्तो धनी भवेत्।। १०।।

–श्री दुर्गा सप्तशती के कुछ सिद्ध मन्त्र–

श्री दुर्गासप्तशती के ७०० श्लोक, सभी मन्त्र स्वरूप हैं। जो धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों क्षेत्रों में सिद्धि एवं सफलता प्रदान करने वाले हैं, जो व्यक्ति जिस भावना एवं कामना से श्रद्धा एवं विधिपूर्वक मन्त्र का जाप एवं अनुष्ठान करता है तदनुसार ही उसे फल की प्राप्ति होती है। आगे हम कुछ कांम्य मन्त्र लिख रहे हैं, जिनका विधिपूर्वक अनुष्ठान करने से मनोवाँछित फल की प्राप्ति होगी। **श्री दुर्गा मन्त्र जाप** की सरल एवं बोधगम्य विधि ज्ञात करने के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित **श्री दुर्गा सप्तशती** का संशोधित संस्करण मंगवा कर पढ़ें। प्रत्येक मन्त्र का सवा लाख की संख्या में विधिवत् पाठ करके दशमांश के तिल, क्षीर, घृतादि द्वारा हवन, उसका दशांश तर्पण, मार्जन एवं कन्या पूजन कराने से मनोवाँछित फल अवश्य प्राप्त होता है।

(१) समस्त कार्यों में सिद्धि के लिए–

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।। अध्याय ११, श्लोक ९ ॥

(२) सब प्रकार के अरिष्ट की शान्ति के लिए–

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।९।। अर्गला स्तोत्र॥

(३) क्लिष्ट रोग की शान्ति हेतु–

रोगानशेषानपंहसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलान् अभीष्टान्॥
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता हि आश्रयतां प्रयान्ति॥

–शीघ्र मकान-सुख प्राप्ति मन्त्र–

कुछ लोगों को स्वयं का घर निर्माण करने में विभिन्न प्रकार की समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं तथा अनावश्यक विलम्ब उत्पन्न होता है। मकान बनाने हेतु भूमि की व्यवस्था, निर्माण हेतु धन की व्यवस्था, बन जाने के बाद सुख-शान्ति व स्मृद्धि प्राप्त करने के लिए इस यंत्र-मंत्र का प्रयोग उस व्यक्ति को कर लेना चाहिए जो मकान बनाने का इच्छुक हो। यह प्रयोग दीपावली, क्रान्तिसाम्य काल, सूर्यग्रहण कालादि में करने पर विशेष प्रभावी होता है। दीपावली या शुभ मुहूर्त्त की पूर्व रात्रि पर भोजपत्र पर निम्न यंत्र का लेखन केसर के लेप से व चमेली वृक्ष की टहनी की कलम द्वारा करना चाहिए। यंत्र लेखन के पश्चात् धूप-दीप, पुष्पादि से पूजन करना चाहिए। पूजन के पश्चात् निम्न मंत्र का 11000 जाप कमलगट्टे की माला से करना चाहिए। अगले दिन

दीपावली या शुभ मुहूर्त्त पर इस यंत्र को समस्त सामग्री सहित किसी नदी-तालाब में प्रवाहित कर देना चाहिए। आपकी स्वयं के मकान की इच्छा अवश्य शीघ्र पूर्ण होगी।

मंत्र– **ॐ ह्रीं श्रीं चिंतामणि गणपते वांछितार्थ।**
पुष्य लक्ष्मीदायक लक्ष्मीदायक ऋद्धि वृद्धि कुरु-कुरु
सर्वसौख्य सौभाग्यं कुरु-कुरु श्री ह्रीं स्वाहा॥
ॐ ह्रीं क्लीं भगवती मम वांछित देहि-देहि स्वाहा॥

"दुकान में बिक्री बढ़ाने के लिए शाबर मन्त्र"

"भंवर वीर तू चेला मेस, खोल दुकान कहा कर मेरा
उठे जो डण्डी बिके जो माल भंवर वीर सोखे नहीं जाय॥"

रविवार वाले दिन हाथ में काले (साबुत) उड़द लेकर यह मन्त्र 21 बार बोलकर दुकान में बिखेर दें। ऐसा चार रविवार करने से बिक्री में वृद्धि होती है। इन बिखरे हुए उड़दों को दूसरे दिन बुहारी निकालते समय उठाकर या तो चौराहे में डाल आएं या उठाकर एक पोटली में बाँधकर ऊँचे आले या ताक में रख दें। यह प्रयोग केवल रविवार को ही आरम्भ करें।

अज्ञात का पता मालूम करना

ऐं	ह्रीं	क्लीं
डा	मुं	चा
यै	वि	च्चे
भागे हुए का नाम		

एक कोरा घड़ा व कसोरा ले आएं। उस पर कोई काला दाग न हो। घड़े के ऊपर और कसोरे के बीच में नीचे लिखा मंत्र लिखें। एक कागज़ पर लिखकर उसे घड़े में डाल दें और साथ ही चार पैसे तांबे के रख दीजिए। थोड़े या अधिक न हों कसोरे से ढक कर बाईं ओर घुमाइए और यह मन्त्र पढ़ें **"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"** सात बार घड़े को घुमा कर पृथक् स्थान पर रख दो। सात दिन करने से ही वह मनुष्य चल पड़ेगा या वह अपना पता पत्र के द्वारा भेज देगा। अज्ञात का नाम नीचे लिखें। इस यन्त्र को सफेद कागज़ पर लिखकर चरखे से बाँध कर उल्टा भी घुमा सकते हैं।

–शत्रु विजय मन्त्र प्रयोग–

निम्न मन्त्र के दस हज़ार बार जप करने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है तथा प्रयोग करने से पहले 108 बार जप करने से प्रयोग सिद्ध होता है। झगड़ा, फिसाद, मुकद्दमा एवं शत्रु पर विजय प्राप्त करने में इस मन्त्र का प्रयोग सफल माना जाता है।

मन्त्र– **"ॐ नमो विश्वरूपाय अमुकस्य अमुकेन सह**
विवादे विजयं कुरू-कुरू स्वाहा।"

विशेष–यह प्रयोग अत्यन्त गुप्त विधि से करने चाहिए इसके सम्बन्ध में किसी को प्रकाशित करने से निःसन्देह विघ्न होते हैं। निर्विघ्न पूरा करने से शीघ्र सिद्धि होती है। इन महामन्त्रों को छुपा कर रखें। चाहे जिसको अर्थात् अनाधिकारी को न देवें। नीच प्रवृत्ति वालों के स्पर्श से विद्या का फल घट जाता है। ऐसा स्पष्ट तौर पर लिखा गया है–

"गोप्यं चेदं महत्तन्त्रं यस्मै कस्मै न दापयेत्।
दुर्जनस्पर्शनाद्विद्या भवत्यल्पफला यतः।"

दाम्पत्य-सुख एवं शत्रु विजय हेतु हनुमान प्रयोग

शुक्ल पक्ष के मंगलवार से प्रारम्भ कर यह प्रयोग लगातार ७ या ११ मंगलवार करें। यदि सम्भव हो तो प्रतिदिन करें। हनुमान जी की प्रतिमा लेकर चन्दन, पीला सिन्दूर और देसी घी से तिलक लगाएं। श्री हनुमान जी से इसी बात की प्रार्थना करनी है कि जिस प्रकार आपने सीता और श्रीराम का मिलन करवाया था, उसी प्रकार मुझे मेरे पति की प्राप्ति कराएं।

"दारिद्दुःखदहनं विजयं विवादे, कल्याण साधनममंगलवारणं च।
दाम्पत्यदीर्घसुखसर्वमनोरथाप्तिम, श्री मारुतेः स्तवमहो नितरां तनोति॥"

हर बार मन्त्र उच्चारण के पश्चात् ललाट से पूँछ तक तिलक लगाएं, तत्पश्चात् पूंछ से ललाट तक पुनः यही क्रिया सम्पन्न करें। प्रतिदिन कम-से-कम २१ बार अवश्य इस मन्त्र का जप करें। प्रति मंगलवार एक माला का पाठ करें। मन्त्र जप करते हुए मन ही मन हनुमान जी से यह प्रार्थना करनी चाहिए कि हे हनुमान ! जिस प्रकार आपने माता सीता को उनके अधीष्ठ राम से मिलवाया था, उसी प्रकार मेरे मार्ग की सभी बाधाओं तथा विपदाओं का शमन कर मुझे मेरे पति से मिलाने की कृपा करें।

शीघ्र विवाह के लिए एक प्रयोग

श्रावण या माघ मास में शुक्ल पक्ष के सोमवार या बृहस्पतिवार से २१ या ११ बिल्वपत्रों पर (१-२-३) अनार की कलम से हल्दी (की स्याही) से 'ॐ नमः शिवायः' लिखकर शिवलिङ्ग के मूल भाग में कच्ची लस्सी चढ़ा कर इसी मन्त्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाना और कम-से-कम एक माला का जाप रूद्राक्ष की माला से करें। यह लगातार २१ दिन तक करने से विवाह के लिए शीघ्र संयोग बनता है। इसी के साथ ही श्री पार्वती चालीसा का पाठ अवश्य करना चाहिए।

लक्ष्मी प्रदायक-श्री कनकधारा मन्त्र

प्राण प्रतिष्ठा युक्त कनकधारा यन्त्र को स्थापित करके नित्य निम्न कनकधारा मन्त्र की स्फटिक माला से एक या तीन माला का पाठ करने से लक्ष्मी देवी प्रसन्न होती है तथा आर्थिक प्रगति होती है। "ॐ वं श्री वं एं ह्रीं क्लीं कनकधारायै स्वाहा॥"

कनकधारा मन्त्र का एक लाख जप पूरा करें तथा यदि सम्भव हो तो देवीदयालु की पं. पन्ना लाल कृत **'श्री दुर्गा सप्तशती'** में से कनकधारा स्तोत्र का पाठ भी अवश्य करें। जिन साधकों के पास श्री यन्त्र है, उन्हें भी कनकधारा यन्त्र अवश्य रखना चाहिए। दोनों यन्त्रों में परस्पर सामञ्जस्य होने से फल शत गुणा अधिक बढ़ जाता है।

चेचकादि संक्रामक रोगों के निवारण हेतु शीतला की प्रार्थना का मन्त्र

'ॐ श्रीं श्रीं श्रूं श्रैं श्रौं श्रः ॐ खरस्थां दिगम्बरां विकटनयनां तोयस्थितां भजामि स्वाहा स्वाङ्गस्थां प्रचण्डरूपां नमाम्यात्मविभूतये॥'

इस मन्त्र को ग्यारह बार श्रद्धापूर्वक उच्चारण करते हुए, जिसको शीतला निकली हो, उसको चिमटे या मोरपंख से झाड़ दें और इस मन्त्र से अभिमन्त्रित जल उसे पिला दे तथा उसके बदन पर उसके छीटें दे दे। जब तक शीतला शान्त न हो जाए तब तक प्रतिदिन सुबह शाम दो बार इस प्रकार करते रहें।

❖श्री लक्ष्मी-विशांक यन्त्र (बीसा यन्त्र)❖

बीसा यन्त्र को यदि एक लाख मन्त्र जपकर हवन द्वारा यन्त्र सिद्ध कर लिया जाए तो इसका दर्शनमात्र ही समस्त संकटों का निवारण कर देता है। धन-सम्पदा, अर्थ-लाभ, वैभव-सम्मान प्राप्ति, शत्रु-दमन के लिए बीसा यन्त्र एक अद्भुत एवं परम प्रभावी यन्त्र है।

प्रतिदिन स्नान, पूजा के पश्चात् श्रीलक्ष्मी जी की मूर्त्ति, चित्र (या यन्त्र जो भी हो) के सामने धूप-दीप जलाकर लक्ष्मी जी का ध्यान करते हुए नीचे लिखे किसी भी मन्त्र का जाप (१, ३, ७ माला) नियमित रूप से संयमपूर्वक निर्धारित संख्या (५१ हज़ार अथवा सवा लाख) में करें अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवाएँ। कमलगट्टे की माला हो तो अच्छा है। पाठ से पूर्व एवं पाठ के बाद निम्न श्री लक्ष्मी स्तुति पढ़ लेवें तो अत्यन्त शुभकारी होगा–

भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी। सुपूजिता प्रसन्नां स्यान्महालक्ष्म्यै नमोऽस्तुते॥
सर्वज्ञ सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी। सर्व दुख-हरे देवि महालक्ष्मि नमोऽस्तुते॥

श्रीमहालक्ष्मी मन्त्राः–

- **"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः"**
- **ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्री ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद।**
- **श्री ह्रीं श्री महालक्ष्म्यै नमः॥ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं श्री सिद्ध लक्ष्म्यै नमः।**
- **ॐ ह्रीं महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्नीम् व। धीमहि तन्नोलक्ष्मी प्रचोदयात् ह्रीं ॐ॥**

उपरोक्त मन्त्रों में से कोई एक मन्त्र संकल्प एवं श्रद्धापूर्वक किसी शुभ मुहूर्त्त जैसे नवरात्रे, अक्षय तृतीया, गुरुपुष्य, रविपुष्य योग, दीपावली, ग्रहण काल में यथेष्ठ संख्या में करने से शीघ्र लाभ होता है। पाठ के उपरान्त श्रीसूक्त अथवा लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना प्रशस्त रहता है। ध्यान रहे, पाठोपरान्त निष्ठापूर्वक अभीष्ट कार्य हेतु पुरुषार्थ एवं उद्यम करना भी अनिवार्य है।
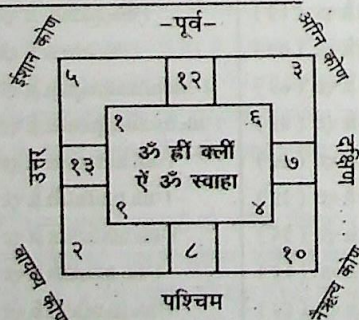
"संक्षिप्त लक्ष्मी स्तोत्र"

त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णु वल्लभे। यथा त्वमचला कृष्णे तथा भव मयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरि प्रिया। पद्मा पद्मालया सम्पदुच्चैः श्री पद्मा धारिणी॥
द्वादशैतानि नमानि लक्ष्मीं सम्पूज्य यः पठेत्। स्थिरा लक्ष्मीर्भवेत्तस्य पुत्रदारादिभिः सह॥

⇨'सर्वव्याधि नाश के लिए महमृत्युञ्जय मन्त्र'⇦

'ॐ हौं जूँ सः, ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ हौं ॐ।'

अर्थ–हम परमपिता त्र्यम्बक (भगवान् शिव) की आराधना करते हैं। वह परमसुखदायक एवं पुष्टिवर्धक हैं। जैसे तरबूज आदि फल (पक जाने पर स्वयं ही) बेल से छूट जाता है, वैसे ही (पूर्ण आयु भोगकर) मैं मृत्युमय जीवन से (बिना कष्ट भोगे) छूट जाऊँ, परन्तु अमृतमय जीवन से मत छूटूँ।

संक्षिप्त विधि–यह सम्पुटयुक्त मन्त्र है। ॐकार का प्रतीक शिवलिङ्ग है; उसी के ऊपर अविच्छिन-अनवरत जलधारा के प्रवाहवत अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युंजय महामन्त्र का जाप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनन्द की अनुभूति होती है।

किसी शुभ मुहूर्त्त में शुद्ध शान्तचित्त, संयमपूर्वक देवालय (विशेषकर शिव मन्दिर), गंगादि तीर्थ स्थान, जलाशय, पीपल वृक्ष के पास अथवा अपने निवास स्थान में स्वच्छ एकान्त स्थान पर संकल्पपूर्वक निश्चित विषम संख्या (एक, तीनादि) में नियमित रूप में श्रद्धापूर्वक पाठ करने से अवश्य लाभ मिलता है। जप संख्या में उलट-फेर या कमी बेशी करने से विक्षिप्तता का भय रहता है। जपसंख्या पूर्ण हो जाने पर जपसंख्या का दशमांश हवन, हवन का दशांश तर्पण तथा तर्पण का दशांश मार्जन एवं यथेष्ठ दानादि सहित ब्राह्मण भोजन करवाना चाहिए तथा पाठोपरान्त शिव कवच पढ़ना चाहिए। जप के बाद इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए।

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादन्महेश्वर॥
मृत्युंजय महारुद्र त्राहि मां शरणागतम्। जन्ममत्युजरारोगैः पीडितं कर्मबन्धनैः॥

श्रीमहामृत्युञ्जय मंत्र के जप से अकालमृत्यु का निवारण, दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त जन्मकुण्डली में ग्रह-नक्षत्र दोष, नाड़ी दोष, मंगलीक दोष, शत्रुषडाष्टक, विधुर एवं वैधव्यादि दोषों के निवारण हेतु तथा अतिशय विलष्ट एवं असाध्य रोगों और मृत्युतुल्य शारीरिक एवं मानसिक रोगों में उपायस्वरूप अचूक एवं सिद्ध मन्त्र माना गया है।

बृहस्पति अष्टोत्तर शतनामावली

(पितृदोष निवारणार्थ एवं विद्यार्थियों के लिए विद्या प्राप्ति में सफलता के लिए)

आगामी वर्ष में सन् 2016 ई. में गोचरवश 29 जनवरी, 2016 ई. से 11 अग., 2016 ई. तक 'गुरु-राहु' योग रहेगा। जिन जातक/जातिकाओं की जन्मकुण्डली में गुरु-राहु योग हो, उन्हें बृहस्पति के 108 नाम का नित्य जप करने से इस योग जनित अशुभ प्रभाव दूर होंगे।

—श्रीबृहस्पति अष्टोत्तरशत नामावली—

(1) ॐ वृं गुरवे नमः।
(2) ॐ वृं गुणवराय नमः।
(3) ॐ वृं गोप्त्रे नमः।
(4) ॐ वृं गोचराय नमः।
(5) ॐ वृं गो-पतिप्रियाय नमः।
(6) ॐ वृं गुणिने नमः।
(7) ॐ वृं गुणवतां श्रेष्ठाय नमः
(8) ॐ वृं गुरुणां गुरवे नमः।
(9) ॐ वृं अव्ययाय नमः।
(10) ॐ वृं जेत्रे नमः।
(11) ॐ वृं जयन्ताय नमः।
(12) ॐ वृं जयदाय नमः।
(13) ॐ वृं जीवाय नमः।
(14) ॐ वृं अनन्ताय नमः।
(15) ॐ वृं जयावहाय नमः।
(16) ॐ वृं आङ्गीरसाय नमः।
(17) ॐ वृं अध्वरासक्ताय नमः।
(18) ॐ वृं विविक्ताय नमः।
(19) ॐ वृं अध्वरकृत्पराय नमः।
(20) ॐ वृं वाचस्पतये नमः।
(21) ॐ वृं वशिने नमः।
(22) ॐ वृं वश्याय नमः।
(23) ॐ वृं वरिष्ठाय नमः।
(24) ॐ वृं वाग्विचक्षणाय नमः।
(25) ॐ वृं चित्तशुद्धिकराय नमः।
(26) ॐ वृं श्रीमते नमः।
(27) ॐ वृं चैत्राय नमः।
(28) ॐ वृं चित्रशिखण्डिजाय नमः।
(29) ॐ वृं बृहद्रथाय नमः।
(30) ॐ वृं बृहद्भानवे नमः।
(31) ॐ वृं वृहस्पतये नमः।
(32) ॐ वृं अभीष्टदाय नमः।
(33) ॐ वृं सुराचार्याय नमः।
(34) ॐ वृं सुराध्यक्षाय नमः।
(35) ॐ वृं सुरकार्यहितकराय नमः।
(36) ॐ वृं गीर्वाणपोषकाय नमः।
(37) ॐ वृं धन्याय नमः।
(38) ॐ वृं गीष्पतये नमः।
(39) ॐ वृं गिरीशाय नमः।
(40) ॐ अनघाय नमः।
(41) ॐ वृं धीवराय नमः।
(42) ॐ वृं दिव्यभूषणाय नमः।
(43) ॐ वृं देवपूजिताय नमः।
(44) ॐ वृं धनुर्धराय नमः।
(45) ॐ वृं दैत्यहन्त्रे नमः।
(46) ॐ वृं दयासाराय नमः।
(47) ॐ वृं दयाकराय नमः।
(48) ॐ वृं दारिद्र्यविनाशनाय नमः।
(49) ॐ वृं धन्याय नमः।
(50) ॐ वृं धिषणाय नमः।
(51) ॐ वृं दक्षिणायनसम्भवाय नमः।
(52) ॐ वृं धनुर्वीराधिपाय नमः।
(53) ॐ वृं देवाय नमः।
(54) ॐ वृं धनुर्बाणधराय नमः।
(55) ॐ वृं हरये नमः।
(56) ॐ वृं अङ्गीरसाब्दसञ्जाताय नमः।
(57) ॐ वृं अंगिरसकुलोद्भवाय नमः।
(58) ॐ वृं सिन्धुदेशाधिपाय नमः।
(59) ॐ वृं धीमते नमः।
(60) ॐ वृं स्वर्णकायाय नमः।
(61) ॐ वृं चतुर्भुजाय नमः।
(62) ॐ वृं हेमाङ्गदाय नमः।
(63) ॐ वृं हेमवपुषे नमः।
(64) ॐ वृं हेमभूषणभूषिताय नमः।
(65) ॐ वृं पुष्यनाथाय नमः।
(66) ॐ वृं पुष्परागमणि मण्डनमण्डिताय नमः।
(67) ॐ वृं काशपुष्पसमानाभाय नमः।
(68) ॐ वृं कलिदोषनिवारकाय नमः।
(69) ॐ वृं इन्द्रादिदेवदेवेशाय नमः।
(70) ॐ वृं देवताऽभीष्टदायकाय नमः।
(71) ॐ वृं असमानबलाय नमः।
(72) ॐ वृं सत्त्वगुणसम्पद्विभावसवे नमः।
(73) ॐ वृं भूसुराभीष्टफलदाय नमः।
(74) ॐ वृं भूरियशसे नमः।
(75) ॐ वृं पुण्यविवर्धनाय नमः।
(76) ॐ वृं धर्मरूपाय नमः।
(77) ॐ वृं धनाध्यक्षाय नमः।
(78) ॐ वृं धनदाय नमः।
(79) ॐ वृं धर्मपालनाय नमः।
(80) ॐ वृं सर्वदेवतार्थतत्त्वज्ञाय नमः।
(81) ॐ वृं सर्वापद्विनिवारकाय नमः।
(82) ॐ वृं सर्वपापप्रशमनाय नमः।
(83) ॐ वृं स्वमतानुगतामराय नमः।
(84) ॐ वृं ऋग्वेदपारगाय नमः।
(85) ॐ वृं सदानन्दाय नमः।
(86) ॐ वृं सत्यसन्धाय नमः।
(87) ॐ वृं सत्यसङ्कल्प मानसाय नमः।
(88) ॐ वृं सर्वागमज्ञाय नमः।
(89) ॐ वृं सर्वज्ञाय नमः।
(90) ॐ वृं सर्ववेदान्तविदुषे नमः।
(91) ॐ वृं ब्रह्मपुत्राय नमः।
(92) ॐ वृं ब्राह्मणेशाय नमः।
(93) ॐ वृं ब्रह्मविद्याविशारदाय नमः
(94) ॐ वृं समानाधिक निर्मुक्ताय नमः
(95) ॐ वृं सर्वलोक वंशकराय नमः
(96) ॐ वृं सुरासुरगन्धर्ववन्दिताय नमः।
(97) ॐ वृं सत्यभाषणाय नमः।
(98) ॐ वृं सुराचार्याय नमः।
(99) ॐ वृं दयावते नमः।
(100) ॐ वृं शुभलक्षणाय नमः।
(101) ॐ वृं लोकत्रयगुरवे नमः।
(102) ॐ वृं श्रीमते नमः।
(103) ॐ वृं सर्वगाय नमः।
(104) ॐ वृं सर्वतोविभवे नमः।
(105) ॐ वृं सर्वेशाय नमः।
(106) ॐ वृं सर्वदा तुष्टाय नमः।
(107) ॐ वृं सर्वपूजिताय नमः।
(108) ॐ वृं सर्वदेवेभ्यो नमः।

शतनाम स्तोत्र से पूर्व गुरु (बृहस्पति) देवता का विनियोग, अंग-न्यास तथा ध्यान मन्त्र का भी यथा पाठ करना चाहिए। [स्त्रियों तथा जिनका यज्ञोपवीत नहीं हुआ है, उन्हें प्रत्येक नाम के पहले 'ॐ' के स्थान पर '**श्री**' शब्द का प्रयोग करना चाहिए।]

परदेस (विदेश) गया व्यक्ति वापिस घर आए

यन्त्र

७२	७६	२	७
६	३	७६	७६
७८	७३	८	१
४	५	७४	७७

इस यन्त्र को भोजपत्र या कागज़ पर किसी शुभ मुहूर्त्त में लिखकर, जिस व्यक्ति को वापिस बुलाना है, उसके पुराने वस्त्र में लपेट कर किसी चक्की आदि के नीचे दबा दें, तो वह शीघ्र ही वापिस स्वदेश आने की कोशिश करने लगेगा।

विविध समस्याओं के लिए उपयोगी उपाय एवं टोटके

(1) शीघ्र विवाह के लिए–(i) यदि किसी जातक/जातिका के विवाह में विलम्ब हो रहा है अथवा हर बार विवाह की बात चलने पर कोई न कोई बाधा उपस्थित हो जाती है, तो सप्तम भाव, सप्तमेश ग्रह सम्बन्धी सम्यक विचार करके तत् ग्रह सम्बन्धी उपयुक्त उपाय करने चाहिए। आगे कुछ उपयोगी उपाय दे रहे हैं, जिन्हें प्रयोग में करके आप इसका प्रभाव शीघ्र अनुभव करेंगे–

(i) जिस कन्या के विवाह कार्य में बार-बार विघ्न-बाधाएँ पड़ रहीं हो अथवा विवाह न हो पा रहा हो, तो किसी भी पूर्णिमा की रात्रि में एक कलश को जल से भरकर, उसमें कमल का पुष्प व एक कमलगट्टा डाल दें। फिर भी पांच सुहागिनों से उस कलश को एक चौकी पर लाल वस्त्र के ऊपर रखवा दें। उस कलश को किसी कर्मकांडी ब्राह्मण द्वारा श्रीसूक्त से अभिमंत्रित करवाकर सुहागिनों से ही अभिषेक करवाकर निम्न मन्त्र का बीस माला जप उसी ब्राह्मण के श्रीमुख से करवाएं। फिर अगले दिन उस कलश को श्रीलक्ष्मी नारायण मन्दिर में रख दें।

मन्त्र–तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।

यस्यां हिरण्यं विन्देयं गमश्वं पुरूषानहम्।।

पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को खीर युक्त भोजन, वस्त्र एवं सुहागिनों को भी श्रृंगार, वस्त्र एवं मिष्टान्न आदि का दान करना चाहिए। इससे कन्या का विवाह शीघ्र होने के संयोग प्रबल होंगे।

(ii) यदि कुण्डली में गुरू विशेष शुभ फल प्रकट न करता हो, तो किसी भी शुक्ल पक्ष के प्रथम वृहस्पतिवार को श्री गुरू यंत्र को अभिमंत्रित करके केले के वृक्ष में अथवा श्री लक्ष्मी नारायण मन्दिर में स्थापित करके सात गुरूवार के मीठे व्रत का संकल्प लेकर व्रत आरम्भ करें।

श्री वृहस्पति स्तोत्र के साथ वृहस्पति के अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र का पाठ हल्दी की माला से जप करें। गाय को मीठी चपातियां और हरा चारा अवश्य खिलावें। साथ ही संध्याकाल में दीप अर्पित करें। शीघ्र विवाह के लिए प्रार्थना करें।

(iii) जिन लड़कों के विवाह में बार-बार विघ्न एवं विलम्ब हो अथवा मनोऽकूल कन्या स्त्री से विवाह हेतु निम्न मन्त्र की प्रातःकाल शुद्ध होकर श्रीदुर्गा जी के चित्रपट या मूर्त्ति पर लाल पुष्प समर्पित करें। दीप प्रज्वलित करके षोडशोपचार पूजन करें। निम्न मन्त्र की कम-से-कम 3 या 5 माला का जप प्रतिदिन करना चाहिए। यदि मंत्र जप करना संभव न हो तो विद्वान् ब्राह्मण द्वारा विधिपूर्वक सवा लाख जप करवाना एवं प्रतिदिन कार्यसिद्धि तक कम-से-कम एक माला का जप अवश्य करते रहना चाहिए।

मन्त्र–पत्नी मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।

तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्य कुलोद्भवाम्।। (श्री दुर्गासप्त. २४)

(iv) किसी भी शुक्ल पक्ष के प्रथम बृहस्पतिवार को (गुरू व शुक्र अस्त न हो) सात केले, सात सौ ग्राम गुड़ व एक नारियल लेकर किसी तीर्थस्थल पर नदी या गंगाजी के तट पर जाएं। कन्या को वस्त्र सहित गंगाजी में स्नान करवाकर उसके ऊपर से एक जटा वाले नारियल को उसारकर उसी नदी में प्रवाहित कर दें।

[इस बात का विशेष ध्यान रखें कि जो नारियल आप प्रवाहित कर रहे हैं वह कन्या से दूर की ओर जाने वाली धारा में प्रवाहित करना चाहिए।]

इसके बाद भीगे वस्त्रों में ही थोड़ा-सा गुड़ व एक केला चन्द्र देव के नाम पर और इतनी ही सूर्य देव के नाम पर नदी के किनारे रखकर प्रणाम करें। थोड़े-से गुड़ को प्रसाद के रूप में कन्या स्वयं खाए तथा बचे पांच केले व गुड़ किसी गाय को खिला दें। कन्या का विवाह शीघ्र होने के संयोग बनेंगे।

(v) विवाह योग्य लड़कों को विघ्नों के निवारण हेतु शुक्रवार के व्रत करना। प्रत्येक शुक्रवार को श्री दुर्गा मन्दिर में एक नारियल मौली लपेकर एवं सफेद पुष्पों के हार सहित मिश्री या बत्ताशों के साथ चढ़ाना चाहिए। श्री शुक्र गायत्री मन्त्र का जप 108 बार स्फटिक की माला से करना शुभ होगा।

श्री शुक्र गायत्री मन्त्र–'' ॐ भृगुसुताय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्।

(2) सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए–(i) यदि पति और पत्नी दोनों एक दूसरे के मनोभावों को नहीं समझते, छोटी-छोटी बातों से वैमनस्य एवं अशान्ति पैदा हो रही हों, तो प्रतिदिन श्री शिव परिवार की तस्वीर, जिसमें भगवान् शिव, माता-पार्वती तथा गणेश जी होने चाहिए। धूप-दीप जलाकर रुद्राक्ष की माला से निम्न मन्त्र की पांच माला जप करें–

ॐ नमः संभवाय च मयो भवाय च नः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च।।

यदि सम्भव हो, तो शिवलिङ्ग का पूजन करके भी जप कर सकते हैं।

(ii) जो स्त्री शनिवार को चमेली के तेल का दीपक जलाकर श्री सुन्दरकांड का पाठ करती है, उसका दाम्पत्य जीवन सुखों से युक्त रहता है।

(iii) पति-पत्नी में आपसी अनबन या विवाद हो, तो किसी भी शुभ योग अथवा नवरात्रों में दोनों को काँसे के बर्तन में घी लेकर उसी मन्दिर में जाएं यहाँ पर अखण्ड ज्योति जलती हो। उस अखण्ड-ज्योति में घी दान कर दें।

नौकरी आरम्भ करने के नियम । Muhurt for Service Joining

सरकारी अर्धसरकारी या प्राइवेट क्षेत्र में नौकरी की शुरुआत (Joining) करने के लिए शुभ मुहूर्त चयन करने के लिए अधोलिखित नियम का अवश्य ही ध्यान रखना चाहिए।

1. **वार शुद्धि विचार :-** मंगलवार को छोड़कर शेष सभी दिन नौकरी ज्वाइन करने के लिए अच्छा माना जाता है। सेना तथा पुलिस की नौकरी में मंगलवार भी शुभ माना गया है।
2. **तिथि शुद्धि विचार :-** प्रतिपदा, रिक्ता (4,1 तथा 14) अमावस्या, षष्ठी एवं अष्टमी को छोड़कर शेष तिथियां ग्राह्य है
3. **नक्षत्र शुद्धि विचार :-** अश्विनी, रोहिणी, मृगशीर्ष, पुष्य, हस्त तीनों उत्तरा, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्र शुभ है इस नक्षत्र में ही नौकरी ज्वाइन करना चाहिए।
4. **योग शुद्धि विचार :-** प्रीति, आयुष्मान, सोभाग्य, शोभन, धृति एवं सुकर्मा योग में नौकरी ज्वाइन करनी चाहिए।
5. **करण शुद्धि विचार :-** विष्टी, नाग एवं शकुनी को छोड़कर शेष करण ग्रहण करने योग्य है
6. **काल शुद्धि विचार :-** अमावस्या, संक्रांति, श्राद्ध पक्ष एवं होलिकाष्टक में नौकरी ज्वाइन नहीं करनी चाहिए।
7. **लग्न शुद्धि विचार :-** चर लग्न (मेष, कर्क, तुला एवं मकर) को छोड़कर शेष लग्न में नौकरी ज्वाइन करना चाहिएइसमें भी स्थिर लग्न में ज्वाइन करे तो अच्छा रहेगा। लग्न से षष्ट एवं अष्टम भाव शुद्ध होना चाहिए इस भाव में कोई अशुभ ग्रह नहीं होना चाहिए।
8. **चंद्र शुद्धि विचार :-** नौकरी ज्वाइन करते समय चंद्र शुद्धि का अवश्य ही विचार कर लेना चाहिए। इसके लिए जन्म राशि से 4,6,8 और 12 वे स्थान में चन्द्रमा नहीं होना चाहिए।

नौकरी ज्वाइन करते समय उपर्युक्त पंचांग शुद्धि का विचार करने पर आपकी नौकरी सही तरीके से चलती रहेगी ऐसा समझना चाहिए।

मेषादि राशियों का ग्रहगोचर अनुसार फलादेश-2016 ई०

भविष्यफल-जनवरी-सन् 2016 ई.

मेष-राशिस्वामी मंगल की स्वगृही एवं गुरु की शुभ दृष्टि रहने से पुरुषार्थ एवं उत्साह में वृद्धि, धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति तथा दीर्घ योजनाएं बनेंगी। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण खर्च अधिक, ता. 29 से सन्तान सम्बन्धी चिन्ता एवं मानसिक परेशानियां बढ़ेंगी। मकर संक्रान्ति को तिल एवं गर्म वस्त्रों का दान करना शुभ होगा।

वृष-18 जन. तक राशिस्वामी शुक्र की स्वगृही दृष्टि रहने से उच्च-प्रतिष्ठित लोगों/स्त्री के सहयोग से लाभ तथा उन्नति की सम्भावनाएं बढ़ेंगी, परन्तु खर्च भी बढ़ेंगे। ता. 19 से शुक्र अष्टमस्थ होने से बनते कार्यों में अड़चनें, धन-हानि, स्वास्थ्य में कमी तथा खर्चों की अधिकता रहेगी।

मिथुन-ता. 13 जन. तक राशिस्वामी बुध अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट अधिक रहे, पेट, वायु एवं कफादि रोगों के कारण मानसिक तनाव रहे। पारिवारिक उलझनों, कार्य-व्यवसाय में परेशानियां रहें। ता. 14 से बुध की स्वगृही दृष्टि होने से कठिन परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कर्क-13 जन. तक बुध की, 15 जन. से मासान्त तक सूर्य की दृष्टि होने से स्वास्थ्य विकार तथा आय के साधनों में अड़चनें रहेंगी। व्यर्थ का वाद-विवाद, मानसिक तनाव, सरकारी क्षेत्र से परेशानी, शत्रु द्वारा हानि की सम्भावना बनी रहेगी। यद्यपि विशेष परिश्रम एवं पारिवारिक सहयोग से कुछ समस्याओं का निदान होगा। आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ शुभ रहेगा।

सिंह-राशि में गुरु का संचार रहने से गतवर्ष के कुछ बिगड़े हुए काम बनेंगे। व्यवसाय में लाभ व उन्नति, नवीन कार्य की योजना, नौकरी में शीघ्र ही पदोन्नति होगी। परन्तु ता. 29 से राहु का संचार होने से बनते कार्यों में विलम्ब, रुकावटें शुरु होंगी।

कन्या-मासारम्भ से ता. 29 तक राहु का संचार रहने से बनते हुए कार्यों में विघ्न तथा विलम्ब होगा। बुध पंचमस्थ संचार करने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। भविष्य के सम्बन्ध में विशेष दीर्घ योजनाएं बनेंगी। ता. 26 से बुध मार्गी होने से स्वास्थ्य में सुधार एवं पारिवारिक सहयोग मिलेगा।

मेष राशि (Aries)

चु, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

वर्षारम्भ से 10 अग. तक गुरु की शुभ नवम दृष्टि रहने से वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में बिगड़े कार्य बनेंगे। आय के साधनों में भी सुधार होगा। व्यवसाय सम्बन्धी कोई नवीन योजना भी बनेगी। परन्तु वर्षभर शनि की ढैय्या रहने से वृथा दौड़धूप एवं खर्च अधिक रहेंगे। घरेलु एवं व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी। **वर्षारम्भ से 19 फर. तक मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से धन लाभ व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।** ता. 20 फर. से 17 जून तक मंगल अष्टमस्थ होने से घरेलु परेशानियों के कारण तनाव व आर्थिक उलझनें बढ़ेंगी।

वृष राशि (Taurus)

इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो

वर्षभर वृष राशि पर शनि की सप्तम (मित्र) दृष्टि रहेगी, वर्षारम्भ से 18 जन. तक राशिस्वामी शुक्र की

आय से खर्च अधिक, वृथा मानसिक तनाव रहेगा। कार्यक्षेत्र में संघर्ष अधिक रहेगा। यद्यपि परिश्रम एवं पराक्रम के प्रभाव से गुजारेलायक आय के साधन बनते रहेंगे। क्रोधाधिक्य से बचें।

वृश्चिक-मासारम्भ में राशि पर शुक्र-शनि का संचार एवं राशिस्वामी मंगल द्वादशस्थ है। फलस्वरूप विपरीत परिस्थितियों के कारण मन में अशान्ति व तनाव बना रहेगा। खर्च अधिक, स्थानपरिवर्तन एवं वृथा यात्रा भी होगी। पारिवारिक उलझनें, वृथा भागदौड़ एवं निकट बन्धुओं से मनमुटाव रहेगा।

धनु-मासारम्भ से राशि पर सूर्य का संचार तथा गुरु की शुभ स्वगृही दृष्टि होने से धन लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। शुभ एवं धार्मिक कार्यों की ओर रुचि रहेगी, गृह में प्रसन्नता का वातावरण बनेगा, बिगड़े कार्यों में सुधार, सन्तान प्राप्ति अथवा सन्तान सम्बन्धी शुभ समाचार प्राप्त होगा। परन्तु शनि साढ़ेसति के कारण यथेष्ठ लाभ प्राप्त नहीं होंगे।

मकर-मासारम्भ से राशिस्वामी शनि की स्वगृही तथा मंगल की उच्च दृष्टि रहने से अकस्मात् धन-लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। ता. 14 से सूर्य का संचार रहने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियां रहेंगी। विशेष परिश्रम एवं उद्यम करने पर भी यथानुकूल लाभ प्राप्त नहीं होगा। क्रोध व तनाव अधिक रहे।

कुम्भ-गुरु की शुभ सप्तम दृष्टि से परिश्रम एवं पुरुषार्थ से आय के साधनों में वृद्धि, विविध यात्राएं एवं उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। ता. 29 तक राहु अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य ढीला, गुप्त रोग एवं चोटादि का भय रहेगा। सावधानी बरतें। आर्थिक उलझनें पैदा होंगी परन्तु पारिवारिक सहयोग प्राप्त होगा।

मीन-मासारम्भ से राशि पर केतु का संचार तथा राशिस्वामी गुरु षष्ठस्थ वक्री अवस्था में संचार करने से संघर्षमयी परिस्थितियों का सामना रहेगा। स्थान-परिवर्तन, दूरस्थ यात्राएं एवं व्यवसाय में अनेक उतार-चढ़ाव के मध्य निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

भविष्यफल-फरवरी-सन् 2016 ई.

मेष-मंगल एवं गुरु की दृष्टियां रहने से शनि की ढैय्या के बावजूद किसी मित्र/सहयोगी की सहायता से बिगड़े हुए कार्य बनेंगे। गत किए हुए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। ता. 20 से मंगल अष्टमस्थ शनि युक्त संचार करने से

स्वास्थ्य में विकार, चोटादि का भय तथा घरेलू [illegible] को पीपल वृक्ष की प्रदक्षिणा तथा ब्राह्मण भोजन करवाना शुभ रहेगा।

वृष–चतुर्थ भाव में गुरु-राहु योग होने से बनते कार्यों में विघ्न एवं माता-पिता से कुछ मतभेद भी रहेंगे। मंग.-शनि की दृष्टियां होने से यद्यपि पुरुषार्थ से आय के साधन बनते रहेंगे, परन्तु क्रोधाधिक्य से परिवार में कलह-क्लेश, तनाव व उलझनें अधिक रहेंगी।

मिथुन–मासारम्भ में बुध की स्वगृही दृष्टि होने से व्यवसाय में उन्नति, कार्यसिद्धि, आय के साधनों में, मान-सम्मान में वृद्धि होगी। ता. 8 से बुध अष्टमस्थ होने से बनते कामों में विघ्न, आर्थिक परेशानियां, स्वास्थ्य नर्म, पेट-विकार के कारण परेशानी के योग हैं। घरेलू उलझनों के कारण परिवार में तनाव की स्थिति रहेगी।

कर्क–पूर्वार्द्ध भाग में सूर्य की दृष्टि होने से स्वास्थ्य कुछ ढीला एवं वृथा मानसिक तनाव होगा। शनि पंचमस्थ होने से सन्तान सम्बन्धी चिन्ता एवं वृथा भागदौड़ बनी रहेगी। उत्तरार्द्ध में बुध-शुक्र की संयुक्त दृष्टि एवं सूर्य अष्टमस्थ होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। मनोरंजन में रूचि, सुख-साधनों, वाहनादि पर खर्च होगा।

सिंह–कार्य-व्यवसाय में अड़चनों के बावजूद दैनिक कार्यों में सफलता मिलेगी। व्यर्थ की दौड़-धूप, खर्च की अधिकता और निकट-बन्धु से मनमुटाव होगा। उत्तरार्द्ध में सूर्य की स्वगृही दृष्टि तथा लग्नस्थ गुरु-राहु के प्रभाव से आय के साधनों में वृद्धि और सन्तान से खुशी मिलेगी। सुख-साधनों पर खर्च होगा।

कन्या–चतुर्थ भाव में बुध-शुक्र योग होने से गत किए गए प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी। गृह में मंगल कार्य होंगे। उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध में सन्तान के कैरियर सम्बन्धी विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। अकस्मात् धन का व्यय होगा।

तुला–ता. 20 तक मंगल का संचार रहने से व्यवसायिक क्षेत्र में संघर्ष अधिक तथा क्रोधाधिक्य से बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है। एकादशस्थ गुरु-राहु होने से लाभ में कमी, खर्च अधिक रहे। ता. 20 के बाद घरेलू हालात में परिवर्तन एवं खुशी के अवसर भी मिलेंगे। वृथा वाद-विवाद से बचें।

वृश्चिक–मासारम्भ में मंगल द्वादशस्थ संचार करने से सोची योजनाओं में विघ्न, व्यवसायिक क्षेत्रों में आंशिक सफलता, मानसिक तनाव एवं वृथा वाद-विवाद रहे। धन भाव पर गुरु की स्वगृही दृष्टि होने से आय के निर्वाह योग्य साधन बनते रहेंगे। ता. 20 से मंगल लग्न में शनि युक्त संचार करने से मान-सम्मान में वृद्धि, धन लाभ एवं नवीन योजनाएं बनेंगी।

धनु–भाग्यस्थान में गुरु-राहु, परन्तु गुरु की स्वगृही दृष्टि रहने से बनते कामों में विघ्न-बाधाएं, आय के साधन सीमित रहेंगे। उत्तरार्द्ध में तृतीय में सूर्य-केतु योग, शनि साढ़ेसति के कारण परिवारिक व आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। निकट-बन्धु से मतभेद एवं झगड़े के भी संकेत हैं।

मकर–पूर्वार्द्ध में राशि पर लग्नस्थ सूर्य पर शनि की स्वगृही तथा मंगल की उच्च दृष्टि होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पराक्रम व अपने उद्यम द्वारा आय के साधनों में वृद्धि होगी। मानप्रतिष्ठा में वृद्धि एवं आय से खर्च अधिक होगा। परन्तु पिता-पुत्र जैसे निकट सम्बन्धों में मतभेद एवं सहयोग की कमी रहेगी।

[illegible] होंगी। उच्च-प्रतिष्ठित लोगों व स्त्री के सहयोग से लाभ की सम्भावनाएं बढ़ेंगी। ता. 19 जन. से शुक्र अष्टमस्थ होने से बनते कार्यों में अड़चनें, धन-हानि, स्वास्थ्य में कमी तथा खर्चों की अधिकता रहेगी। वर्षारम्भ से 17 सितं. तक मंगल की विशेष दृष्टि रहने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। धनागमन के साधनों में वृद्धि होगी, सुख-साधनों पर अनावश्यक खर्च अधिक होंगे। क्रोधाधिक्य रहे, रक्त-विकार, ब्लडप्रैशर आदि के कारण मानसिक परेशानियां अधिक रहेंगी।

मिथुन राशि (Gemini)

क, की, कु, घ, ङ, छ, [illegible], को, ह

वर्षारम्भ से 13 जन. तक, पुन: 8 फर से 1 मार्च तक बुध अष्टम भाव-गत संचार करने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट अधिक रहें, सावधानी बरतें। ता. 14 जन. से 7 फर. तक बुध की स्वगृही दृष्टि रहने से कुछ मिश्रित प्रभाव रहेंगे। ता. 20 फर. से 17 जून तक मंगल की विशेष दृष्टि इस राशि पर होने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि परन्तु भागदौड़ अधिक रहेगी। क्रोध, उत्तेजना अधिक रहे। ता. 1 मार्च से 18 मार्च तक बुध भाग्यस्थ होने से भाग्योन्नति तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। ता. 19 मार्च से 2 अप्रै. तक बुध नीचस्थ होने से स्वास्थ्य हानि, मानसिक तनाव, बनते कामों में विघ्न। ता. 2 अप्रै. से 7 जून तक बुध मेष

कुम्भ–[illegible] संचार एवं दशम भावे शत्रुराशिगत शनि होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में बनते कामों में विघ्न, व्यवसायिक परेशानियां एवं सांझेदारी के कार्यों में हानि होगी। उत्तरार्द्ध में सूर्य-केतु संचार एवं मंगल की दृष्टि होने से मानसिक तनाव, वृथा खर्च, उचाटता एवं स्वास्थ्य में विकार रहेगा।

मीन–राशिस्वामी गुरु षष्ठ भाव में राहु युक्त एवं दशम में बुध-शुक्र योग होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। मासारम्भ में घर-परिवार में कोई खुशी का वातावरण बनेगा। संघर्ष के बावजूद (गुरु के कारण) आय के साधन बनते रहेंगे, परन्तु कार्य-व्यवसाय में परिश्रम एवं संघर्ष अधिक रहेगा। मासान्त में स्वास्थ्य में विकार एवं बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी।

भविष्यफल–मार्च–सन् 2016 ई.

मेष–अष्टम भाव में मंग.-शनि योग रहने से आय सम्बन्धी चिन्ता तथा घरेलू परेशानियों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। निकटस्थ बन्धुओं के साथ तनाव, वाद-विवाद रहेगा। धन लाभ अल्प, स्वभाव में क्रोध, स्वास्थ्य में विकार रहेगा। पंचमस्थ गु.-रा. योग होने से सन्तान के किसी विशेष कार्य के बनने से अकस्मात् धन का व्यय होगा।

वृष–शनि की सप्तम दृष्टि के बावजूद राशिस्वामी शुक्र भाग्यस्थान में होने से तनाव एवं उलझनों के रहते धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। उत्तरार्द्ध में शुक्र दशम भाव में सूर्य-बुध-केतु युक्त होने से व्यवसाय/नौकरी में विभिन्न परेशानियों एवं विपरीत परिस्थितियों का सामना रहे। भाई-बन्धुओं से मतभेद भी रहेगा।

मिथुन–पूर्वार्द्ध भाग में बुध भाग्य स्थान में आने से भाग्योन्नति तथा उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बनेंगे। परन्तु केतु युक्त होने से यथेष्ठ लाभ नहीं होंगे। ता. 19 से बुध मीन (नीच) राशिस्थ अस्तगत होकर संचार करने से स्वास्थ्य हानि, मानसिक तनाव, बनते कार्यों में विघ्न तथा अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे।

कर्क–ता. 7 से मासान्त तक लाभेश एवं सुखेश शुक्र अष्टमस्थ संचार करने से सोची हुई योजनाओं में विलम्ब, खर्च अधिक, कार्य-व्यवसाय में भी लाभ कम हो। घरेलू सुख में भी कमी रहे। ता. 18 तक बु.-शु.-के. योग अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य परेशानी, पेट-विकार एवं चोटादि का भय रहेगा।

सिंह–13 मार्च तक राशिस्वामी सूर्य की इस राशि पर स्वगृही दृष्टि रहने से आय के साधनों में वृद्धि, मान-सम्मान बढ़ेगा। प्रयास करने पर बिगड़ा काम बनेगा, परन्तु केतु के कारण अशान्ति भी रहेगी। ता. 14 से सूर्य अष्टमस्थ होने से पुन: विघ्न-बाधाएं, स्वास्थ्य-हानि, चिन्ता रहेगी।

कन्या–मासारम्भ में बुध षष्ठ भाव में सूर्य-केतु युक्त होने से अत्यन्त संघर्ष के पश्चात् ही आय के साधन बनेंगे। किसी व्यक्ति विशेष से धोखे की सम्भावना भी रहेगी। शत्रु सरगर्म, सरकारी क्षेत्रों में परेशानी रहेगी। ता. 18 से बुध नीचराशिस्थ होने से पारिवारिक उलझनें, व्यर्थ की चिन्ता रहे। निकटस्थ बन्धु से वैचारिक मतभेद रहे।

तुला–ता. 7 से राशिस्वामी शुक्र पंचम भाव में मित्रक्षेत्री होने से विद्या में सफलता, सोची हुई योजनाओं में कामयाबी, स्त्री अथवा सन्तान सुख तथा सवारी आदि सुखों को प्रदान करेगा। परन्तु केतु साथ होने से प्रत्येक कार्य रुकावटों एवं विघ्नों के बाद होगा। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, वृथा भागदौड़ भी रहेगी।

वृश्चिक–लग्न में मंग.-शनि एवं दशमस्थ गुरु-राहु योग होने से मिश्रित प्रभाव होंगे। आय के साधनों में वृद्धि एवं भूमि-सवारी आदि का क्रय-विक्रय भी होगा। ता. 14 से पंचमेश गुरु एवं दशमेश सूर्य में स्थानपरिवर्तन एवं षडाष्टक योग होने से विद्या व व्यवसायिक क्षेत्र में उथल-पुथल व उतार-चढ़ाव रहेगा। स्थान परिवर्तन भी सम्भव है।

धनु–द्वादशस्थ मंग.-शनि योग होने से क्रोध अधिक, उत्तेजना एवं भूमि-सवारी आदि के क्रय-विक्रय में विभिन्न परेशानियों का सामना रहे। आय में वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी अधिक होगा। सन्तान सम्बन्धी किसी विशेष कार्य में पारिवारिक सहयोग से सफलता मिलेगी।

मकर–पूर्वार्द्ध में द्वितीय भाव में पंचग्रही योग रहने से व्यवसाय में परेशानी, तनाव, धन सम्बन्धी समस्याएं एवं परिवार में मतभेद रहेंगे। अनावश्यक कार्यों पर खर्च अधिक होगा। शनि की स्वगृही दृष्टि होने से विघ्न-बाधाओं के बावजूद गुज़ारे योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कुम्भ–मासारम्भ में इस राशि पर सू.-बु.-के. का संचार एवं मंगल की दृष्टि होने से दौड़-धूप अधिक रहेगी। आराम कम व संघर्ष अधिक रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, सिर-दर्द, आँखों में कष्ट एवं चोटादि का भय रहेगा। ता. 25 से शनि वक्री होने से घरेलू हालात में अनिश्चितता बनेगी। आय कम व व्यय अधिक रहेगा।

मीन–पूर्वार्द्ध में षष्ठ भाव में गुरु-राहु तथा द्वादश भाव में सूर्य-केतु योग होने संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा, परन्तु निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 14 से सूर्य का संचार होने से क्रोध, उत्तेजना अधिक रहेगी। निकट-बन्धुओं से विचार-वैमनस्य रहेगा।

भविष्यफल–अप्रैल–सन् 2016 ई.

मेष–मंगल अष्टमस्थ शनि युक्त स्वराशिगत, परन्तु राशि पर गुरु की शुभ दृष्टि रहने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। अल्प आय एवं खर्च में अधिकता से मन अशान्त एवं परेशान रहेगा। ता. 13 से सूर्य इस राशि में उच्चस्थ बुध के साथ संचार करने से कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएं बढ़ेंगी।

वृष–ता. 1 से 24 तक राशिस्वामी शुक्र उच्चस्थ (मीन) रहने से अकस्मात् धन लाभ के चांस बनेंगे, परन्तु खर्च भी अधिक होंगे। वाहनादि सुख-सुविधाओं एवं मनोरंजन कार्यों पर खर्च अधिक होंगे। परन्तु मंग.-शनि की दृष्टि के कारण स्वभाव में तेजी, रक्तविकार एवं ब्लडप्रैशर आदि के कारण मानसिक परेशानियां रहेंगी।

मिथुन–ता. 2 से राशिस्वामी बुध लाभ (मेष) भाव में संचार करने से धनागमन के साधनों में वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी बढ़ेंगे। धर्म-कर्म में रुझान रहे। ता. 28 से बुध वक्री होने से लाभ कम तथा परिश्रम अधिक रहेगा। किसी निकट-बन्धु से धोखा मिलने के भी संकेत हैं।

कर्क–उच्चप्रतिष्ठित लोगों से मेलजोल एवं निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। सुखेश शुक्र उच्चराशिस्थ होने से गृह में मंगल कार्य होगा। आशाओं में किंचित सफलता प्राप्त होगी। भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों से लाभ होगा। केतु

(लाभ) में होने से लाभ/आय प्राप्ति के चाँस बढ़ेंगे। ता. 8 से 26 जून तक बुध 12वें संचार करने से दीर्घ यात्रा के योग बन सकते हैं। 27 जून से 10 जुला. तक बुध मिथुन में होने से अकस्मात् धन लाभ, मान-सम्मान में वृद्धि तथा बिगड़े कामों में सुधार होने के संकेत मिलते हैं। ता. 19 अग. से 29 अग. तक, पुनः 3 अक्तू. से 20 अक्तू. तक बुध की स्थिति शुभ (कन्यास्थ) होने से धन प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

कर्क राशि (Cancer)

हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

वर्षारम्भ से 13 जन. तक बुध की तथा 15 जन. से 12 फर. तक सूर्य की दृष्टि रहने से स्वास्थ्य विकार तथा आय के साधनों में अड़चनें रहेंगी। ता. 9 फर. से 1 मार्च तक पुनः बुध की सप्तम दृष्टि रहने से परिवार में व्यर्थ की उलझनें व तनाव बढ़ेगा। 7 मार्च से 31 मार्च तक लाभेश एवं सुखेश शुक्र अष्टमस्थ संचार करने से सोची हुई योजनाओं में विलम्ब, खर्च अधिक, कार्य-व्यवसाय में भी लाभ कम हो। 11 जुला. से 26 जुला. तक बुध का तथा 16 जुला. से 16 अग. तक सूर्य का संचार इस राशि में होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी तथा निकट भाई-बन्धुओं से मनमुटाव व विरोध बढ़ेंगे। ता. 18 सितं. से 31 अक्तू. तक इस राशि पर मंगल की अष्टम तथा 1 नवं. से 11 दिसं. तक सप्तम नीच दृष्टि पड़ने से स्वभाव में उत्तेजना एवं मानसिक

सिंह–शनि की ढैय्या तथा सूर्य अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य नर्म, गुप्त रोग, बनते कार्यों में विघ्न एवं आर्थिक परेशानियां रहेंगी। ता. 13 से सूर्य उच्चस्थ (मेषस्थ) संचार करने से उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ मेल-जोल बढ़ेगा। पदोन्नति एवं धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। गृह में कोई मंगल कार्य होगा। किसी नए कार्य की योजना बनेगी।

कन्या–राशिस्वामी बुध अष्टमस्थ रहने से स्वास्थ्य में विकार, बनते कार्यों में विघ्न तथा धन हानि के संकेत हैं। अत्यधिक कठिनाई से निर्वाह योग्य धन के साधन प्राप्त होंगे। परन्तु गुरु की अष्टम भाव पर दृष्टि होने से धैर्य एवं संयम रखकर पुरुषार्थ द्वारा उन्नति व लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

तुला–मासारम्भ में शुक्र उच्च राशि में सूर्य युक्त संचार करने से गत किए गए प्रयासों का प्रतिफल मिलेगा। आय में वृद्धि के साथ-साथ सुख-साधनों में वृद्धि होगी। ता. 13 से इस राशि पर सूर्य की नीच दृष्टि होने से बनते कामों में विघ्न, व्यवसाय में आय कम व खर्च अधिक रहेंगे। स्वास्थ्य में विकार तथा घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।

वृश्चिक–लग्नस्थ शनि वक्री होने से परिवार में तनाव एवं असमंजसपूर्ण स्थितियां बनेंगी। मनमुटाव एवं कलह के कारण परेशानी रहे। ता. 17 से मंगल भी वक्री होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, मानसिक तनाव, स्वभाव में उग्रता वाणी में कटुता तथा क्रोध के कारण निकट बन्धुओं से मतभेद उभरेंगे।

धनु–मं.-श. योग द्वादश भाव में रहने से धन का अपव्यय, सन्तान व दाम्पत्य जीवन सम्बन्धी परेशानी, क्रोध एवं उत्तेजना से घरेलू परिस्थितियां चिन्ताजनक होंगी। ता. 13 से सूर्य पंचम भाव में उच्चस्थ होने से परिवार में शुभ एवं मंगल कार्य होंगे। व्यवसाय में भाग्यवश उन्नति के योग हैं।

मकर–शनि की स्वगृही दृष्टि तथा तृतीयस्थ सूर्य-बुध-शुक्रादि ग्रहों का संचार होने से शुभ कार्यों पर धन का खर्च, किसी विशेष कार्य की योजना बनेगी, विदेश सम्बन्धी कार्यों में प्रगति एवं दूरस्थ यात्राएं होंगी। ता. 13 से सूर्य उच्चस्थ होने से भूमि-जायदाद, सवारी आदि सुखों की प्राप्ति, आय के साधनों में वृद्धि होगी।

कुम्भ–राशि पर केतु का संचार, द्वितीय भाव में सूर्य-शुक्र का योग एवं दशम भाव में मंग.-श. योग होने से यद्यपि मान-प्रतिष्ठा व आय के साधनों में बढ़ौत्तरी होगी। परन्तु श. वक्री होने से स्वास्थ्य ढीला एवं कुछ घरेलू व व्यवसायिक कारणों से विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा।

मीन–ता. 24 तक शुक्र इस राशि पर उच्च स्थिति में सूर्य-युक्त संचार करने से आय के साधनों में वृद्धि एवं मनोरंजन, वाहनादि साधनों पर धन का खर्च होगा। परिवार में खुशी के अवसर मिलेंगे। परन्तु क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है।

भविष्यफल–मई–सन् 2016 ई.

मेष–अष्टमस्थ वक्री मंगल, शनि की ढैय्या के प्रभाव से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहेगा। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। अत्यधिक भागदौड़ करने पर भी धन लाभ अल्प रहे। सन्तान सम्बन्धी भी कुछ-न-कुछ चिन्ता अवश्य रहेगी।

वृष–ता. 19 तक शुक्र द्वादशस्थ (व्यय) होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट, खर्च अधिक तथा वृथा भागदौड़ रहेगी। ता. 19 से शुक्र स्वराशिगत होने से कुछ बिगड़े हुए कार्यों में सुधार, पराक्रम में वृद्धि एवं सुख-साधनों पर खर्च होगा। **ध्यान रहे,** शुक्र अस्त से स्वास्थ्य परेशानी, व्यवसाय में अत्यधिक खर्च और संघर्षपूर्ण हालात रहेंगे।

मिथुन–राशिस्वामी बुध वक्री होकर लाभ स्थान में, मंगल की दृष्टि रहेगी। क्रोध एवं उत्तेजना के कारण कुछ बने हुए कार्य बिगड़ सकते हैं। घरेलू उलझनों के कारण मन अशान्त रहे, परन्तु दूरस्थ यात्राएं, आय की अपेक्षा खर्च अधिक एवं स्वास्थ्य ढीला रहेगा।

कर्क–धन (द्वितीय) भाव में गुरु-राहु योग रहने से घरेलू तथा आर्थिक क्षेत्र में संघर्षपूर्ण परिस्थितियां रहेंगी। बनते कार्यों में विघ्न, मानसिक तनाव, गुप्त चिन्ता तथा भूमि-जायदाद सम्बन्धी कार्यों में परेशानी होगी। ता. 19 से शुक्र लाभ स्थान में संचार करने से उद्यम द्वारा व्यवसाय में लाभ व उन्नति के योग बनेंगे।

सिंह–राशिस्वामी सूर्य उच्चस्थ तथा भाग्येश मंगल की स्वगृही दृष्टि होने से आय के साधन बनते रहेंगे। शुभ एवं धार्मिक कार्यों पर धन का व्यय होगा। परन्तु शनि की ढैय्या तथा सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग (ता. 14 के बाद) रहने से परिवारिक सदस्यों में मतभेद एवं तकरार के हालात बनेगें। वृथा भागदौड़ एवं व्यवसायिक क्षेत्रों में भी आशानुकूल लाभ में कमी रहेगी।

कन्या–राशिस्वामी वक्री बुध अष्टमस्थ होने से बनते कामों में विघ्न, मानसिक तनाव, स्वास्थ्य ढीला, आर्थिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा। चतुर्थ भाव पर गुरु की दृष्टि रहने से पारिवारिक सहयोग से शुभ मंगल कार्यों पर खर्च तथा सुखों में वृद्धि होगी।

तुला–पूर्वार्द्ध तक सूर्य की सप्तम नीच दृष्टि रहने से घरेलू उलझनें तथा मानसिक तनाव रहेंगे। ता. 19 तक शुक्र की दृष्टि रहने से नौकरी में पदोन्नति व मान-सम्मान में वृद्धि होगी। शुभ यात्रा भी होगी। ता. 19 से शुक्र अष्टमस्थ होने से मानसिक तनाव, शरीर कष्ट, स्वास्थ्य हानि एवं गुप्त चिन्ता रहेगी।

वृश्चिक–राशिस्वामी मंगल एवं शनि दोनों वक्री होने से पारिवारिक एवं आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहे। कठिन परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। ता. 14 से सूर्य-शनि मध्य समसप्तक योग होने से स्वभाव में तेजी होने से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है।

धनु–राशिस्वामी गुरु की दृष्टि होने से धर्म-कर्म में रूचि एवं मानप्रतिष्ठा भी बढ़ेगी। धन लाभ एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। ता. 9 से गुरु मार्गी होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में अनेक उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तनों के बावजूद लाभ में वृद्धि होगी।

मकर–ता. 13 तक सूर्य चतुर्थस्थ उच्चस्थ संचार करने से धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। ता. 14 से सूर्य पंचमस्थ तथा सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग होने से निकट भाई-बन्धुओं के साथ सम्बन्धों में तनाव, क्रोध की भावना रहेगी। व्यर्थ की भागदौड़ रहे।

कुम्भ–गुरु की शुभ दृष्टि रहने से पुरुषार्थ में वृद्धि, विविध यात्राएं एवं उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। भूमि, वाहनादि सुख प्राप्त होंगे। ता. 14 से सूर्य-शनि मध्य समसप्तक योग रहने से शरीर कष्ट, उदरविकार और शिरपीड़ा से परेशानी होगी। परिवारिक समस्याएं बनी रहेंगी।

सिंह राशि (Leo)

मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

वर्षारम्भ से 11 अग. तक सिंह राशि में गुरु का संचार रहने से गतवर्ष के कुछ बिगड़े हुए काम बनेंगे। व्यवसाय में लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। नवीन कार्य की योजना बनेगी। परन्तु ता. 29 जन. से वर्षान्त तक राहु का संचार तथा वर्षभर शनि की ढैय्या रहने से बनते कार्यों में रुकावटें रहेंगी, घरेलू परेशानियों के कारण मानसिक तनाव, उचाटता रहेगी। 13 फर. से 13 मार्च तक सूर्य की स्वगृही दृष्टि रहने से आय के साधनों में वृद्धि, मान-सम्मान बढ़ेगा। प्रयास करने पर बिगड़ा कार्य बनेगा। 14 मार्च से सूर्य अष्टमस्थ होने से पुनः विघ्न-बाधाएं रहेंगी। ता. 13 अप्रै. से 13 मई तक सूर्य उच्चस्थ संचार करने से इस अवधि में उच्च प्रतिष्ठित लोगों के साथ मेलजोल बढ़ेगा। 14 मई से 14 जून तक मध्य सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध रहने से घरेलू तनाव, अशान्ति रहेगी। ता. 11 अग. से गुरु का संचार हटने से लग्नस्थ राहु तथा शनि की दृष्टि का प्रभाव अधिक होगा। 1 नवं. से 11 दिसं. तक मंगल की अष्टम दृष्टि रहने से गुप्त शत्रु हानि पहुँचाने की चेष्टा करेंगे।

कन्या राशि (Virgo)

टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

वर्षारम्भ से 29 जन. तक राहु का संचार रहने से बनते हुए कार्यों में विलम्ब एवं रुकावटें रहेंगी।

मीन–राशिस्वामी गुरु राहु युक्त और भाग्यस्थान में मंग.-शनि का योग होने से कुछ सोची योजनाओं में विघ्न-बाधाएं एवं धन का खर्च अधिक होगा। दूरस्थ यात्राएं परन्तु शुक्रास्त होने से भाई-बन्धुओं से मनमुटाव एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।

भविष्यफल–जून–सन् 2016 ई.

मेष–व्यर्थ की दौड़-धूप एवं उलझनें रहेंगी। माता-पिता के सहयोग से परिस्थिति में परिवर्तन होगा। ता. 17 से वक्री मंगल द्वारा पुनः तुला राशिस्थ होकर मेष राशि पर सप्तम दृष्टि रखने से पराक्रम एवं पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। किसी नवीन कार्य की योजना बनेगी।

वृष–ता. 12 तक सूर्य-शुक्र योग लग्न भाव में होने से बिगड़े हुए कार्यों में सुधार, पराक्रम में वृद्धि, आमोद-प्रमोद में अधिक समय व्यतीत होगा। सूर्य के कारण क्रोध, उत्तेजना से बचना चाहिए। ता. 13 से शुक्र द्वितीय भाव में संचार करने से किसी बिगड़े काम में सुधार एवं भाई-बन्धु का सहयोग प्राप्त होगा।

मिथुन–ता. 8 से 26 जून बुध 12वें संचार करने से दीर्घ यात्रा के योग बनेंगे। वृथा भागदौड़, धन का खर्च अधिक रहे। कठिन परिश्रम करने पर भी सरकारी क्षेत्रों में विघ्नों का सामना रहेगा। कारोबार में अस्थिरता एवं स्वास्थ्य ढीला रहे।

कर्क–लाभेश शुक्र शुभ स्थिति में होने से व्यवसाय में भाग्यवश धन लाभ एवं मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। नए लोगों के साथ व्यापारिक सम्बन्ध बनेंगे। स्त्री एवं सन्तान सुख मिलेगा। ता. 13 से शुक्र द्वादशस्थ होने से बनते कामों में विघ्न, स्वास्थ्य परेशानी एवं घरेलू सुख में कमी के संकेत हैं।

सिंह–लग्नस्थ गुरु-राहु एवं राशिस्वामी सूर्य दशमस्थ होने से भाग्यवश निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धर्म-आध्यात्म की ओर रुझान रहेगा एवं शुभ मंगल कार्यों पर धन का व्यय होगा। तीर्थ यात्रा भी सम्भव है। परन्तु शनि की ढैय्या के कारण मन अशान्त एवं उचाट रहेगा।

कन्या–ता. 8 से 27 तक बुध भाग्यस्थ रहने से परिस्थितियों में सुधार एवं गत किए प्रयास फलीभूत होंगे। कुछ बिगड़े कामों में सुधार एवं भाग्यवश उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे। आय से खर्च अधिक तथा स्थान-परिवर्तन के भी योग हैं।

तुला–ता. 12 तक शुक्र अष्टमस्थ होने से खर्च बहुत अधिक, घरेलू उलझनें व स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट रहे। शुक्रास्त रहने से शुभ फल में कमी रहेगी। ता. 13 से शुक्र भाग्यस्थान में सूर्य के साथ होने से संघर्षपूर्ण कठिन परिस्थितियां रहने के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

वृश्चिक–ता. 13 तक सूर्य-शनि में समसप्तक योग एवं मंगल वक्री होने से शरीर कष्ट, भाई-बन्धुओं से मतभेद एवं व्यवसाय के क्षेत्र में (सांझेदारी में) विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। ता. 17 से मंगल द्वादश भावगत होने से स्वास्थ्य में विकार, गुप्त चिन्ता व चोटादि का भय रहेगा।

धनु–गुरु की स्वगृही दृष्टि होने से कार्यक्षेत्र में स्थिति अनुकूल होगी। नौकरी/व्यवसायिक क्षेत्रों में विघ्नों के बावजूद धन लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। मासान्त में दूरस्थ यात्राएं, धन का अपव्यय, वृथा भागदौड़ एवं मानसिक उलझनें भी रहेंगी।

मकर—राशिस्वामी शनि वक्री होने से परिवारिक एवं आर्थिक स्थिति अनिश्चित रहेगी। दशमेश शुक्र अस्तगत होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में अनेक कठिनाइयों के बावजूद गुजारेलायक धन प्राप्त होगा। ता. 17 से **मंगल की उच्च** दृष्टि होने से मान-सम्मान में वृद्धि, धन लाभ व उन्नति के विशेष अवसर मिलेंगे।

कुम्भ—व्यवसाय में धन लाभ एवं सुख-साधनों में वृद्धि होगी। किसी नवीन कार्यक्षेत्र, धर्म-कर्म, आध्यात्म की ओर रुझान रहेगा। ता. 13 से हालात कुछ असमंजसपूर्ण रहेंगे। मन अशान्त, क्रोध अधिक भाई-बन्धुओं से वृथा तकरार, धन का खर्च अधिक, शरीर कष्ट एवं पारिवारिक उलझनें बढ़ेंगी।

मीन—कार्यक्षेत्र में विघ्नों के बावजूद स्थिति कुछ अनुकूल होने के आसार बढ़ेंगे। कुछ सोची योजनाओं में आंशिक सफलता मिलेगी। राशि स्वामी गुरु राहु युक्त छटे भाव में होने से गुप्त चिन्ता, अज्ञात भय, पेट व लीवर में खराबी के कारण विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा।

भविष्यफल—जुलाई—सन् 2016 ई.

मेष—मासारम्भ में ता. 11 तक मंगल की स्वगृही दृष्टि रहने से पुरुषार्थ में वृद्धि, तीर्थ-यात्रा तथा रुके हुए कार्य बनेंगे। ता. 12 से मंग. पुनः अष्टमस्थ शनि युक्त रहने से स्वास्थ्य में विकार, योजनाओं के क्रियान्वन में विलम्ब होगा। व्यर्थ की दौड़धूप अधिक रहेगी।

वृष—संयम और गंभीरता से कार्य करने पर लाभ व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। स्त्री एवं संतान सुख मिलेगा, परन्तु शुभ कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। अत्यधिक संघर्ष के पश्चात् ही कुछ परिवारिक समस्याओं के सुलझनें के योग बनेंगे। ता. 7 से शुक्र तृतीयस्थ एवं ता. 9 से शुक्रोदय होने से परिस्थितियों में विशेष सुधार होगा।

मिथुन—ता. 10 तक बुध मिथुन में संचार करने से अकस्मात् धन लाभ, मान-सम्मान में वृद्धि तथा बिगड़े कामों में सुधार होने के योग हैं। ता. 11 से बुध द्वितीय भावस्थ होने से घरेलू समस्याओं का सामना रहे। बनते कामों में विघ्न एवं स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा।

कर्क—ता. 11 से 26 जुला. के मध्य बुध का तथा ता. 16 से सूर्य का संचार इस राशि में होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी (पेट, ब्लड-प्रैशर, रक्त सम्बन्धी रोग) तथा निकट भाई-बन्धुओं से मनमुटाव व विरोध बढ़ेंगे। ता. 26 के बाद स्वास्थ्य में सुधार एवं निकट बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा।

सिंह—लग्नस्थ गुरु-राहु पर शनि की दृष्टि होने से घरेलू परेशानियों के कारण मन व्यथित रहेगा। व्यवसाय की स्थिति मध्यम रहेगी। बनते कामों में विघ्न उत्पन्न होंगे। ता. 16 से सूर्य द्वादशस्थ रहने से आलस्य एवं निराशा में वृद्धि होगी। वाहनादि चलाते समय सावधानी बरतें। शरीर कष्ट का भय है।

कन्या—मासारम्भ में राशिस्वामी बुध दशमस्थ होन से दैनिक कार्यों में प्रगति होगी। भूमि-वाहनादि के क्रय-विक्रय की योजना बनेगी। ता. 11 से बुध लाभ स्थान में आने से अनेक उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तनों का सामना रहेगा। यद्यपि धन लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होते रहेंगे।

तुला—मंगल का संचार ता. 11 तक रहने से वृथा भागदौड़, क्रोध अधिक, [illegible]

में संचार करने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 7 से राशिस्वामी शुक्र दशमस्थ (कर्क) तथा शनि साढ़ेसति के प्रभाव से आजीविका के लिए दौड़धूप अधिक रहे, भाई-बन्धुओं से व्यर्थ का टकराव हो सकता है।

वृश्चिक—ता. 12 तक राशिस्वामी मंगल द्वादशस्थ होने से क्रोध अधिक, निकट बन्धुओं से मनमुटाव, आय सीमित, खर्च अधिक परन्तु संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 12 के पश्चात् उच्च प्रतिष्ठित लोगों से सम्पर्क और धर्म-कर्म में रुचि होगी। व्यवसाय सम्बन्धी अधिक भागदौड़ होगी। चोटादि का भय रहे।

धनु—मासारम्भ में सूर्य, बुधादि ग्रहों की दृष्टि के कारण स्वभाव में तेजी एवं उत्तेजना रहे। परिश्रम एवं संघर्ष के बावजूद धन प्राप्ति सामान्य रहे, परन्तु खर्च अधिक रहे। ता. 16 से सूर्य अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी विभिन्न परेसानियों का सामना रहे। साढ़ेसति के कारण मन संतप्त रहे।

मकर—ता. 7 से 31 तक शुक्र की सप्तम तथा ता. 16 से मासान्त तक इस राशि पर सूर्य की दृष्टि रहने से बनते कार्यों में अड़चनें पैदा होंगी। सरकारी क्षेत्रों में रुकावटें पैदा होने की सम्भावनाएं होंगी, आय में वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी बहुत अधिक होंगे। अधिकतर समय विलासादि कार्यों में व्यतीत होगा।

कुम्भ—सोची हुई योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्ति होगी। सरकारी कार्यों में विघ्न-बाधाएं परन्तु पुरुषार्थ एवं परिश्रम से धनागमन के साधन बनते रहेंगे। दाम्पत्य जीवन में परेशानी एवं मतभेद बढ़ेंगे। स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष सावधानी बरतें।

मीन—भाग्येश मंगल अष्टमस्थ तथा चतुर्थ भाव में सू.-बु.-शु. योग होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना रहे। ता. 16 के बाद सू.-बु.-शु. पंचमस्थ तथा भाग्य भाव में मंग.-श. का योग होने से धन लाभ एवं उन्नति के योग हैं।

भविष्यफल—अगस्त—सन् 2016 ई.

मेष—स्वास्थ्य परेशानी व परिवारिक चिन्ता रहेगी। शनि की ढैय्या तथा मंगल अष्टमस्थ रहने से योजनाओं के क्रियान्वयन में विलम्ब, विघ्न होंगे। ता. 11 से गुरु की दृष्टि भी हट जाएगी। धन का अपव्यय एवं गुप्त परेशानी रहेगी। स्वास्थ्य भी ठीक न रहे, ऐसे योग हैं।

वृष—ता. 24 तक चतुर्थस्थ शुक्र पर शनि की दृष्टि होने से माता का स्वास्थ्य ढीला, मानसिक तनाव एवं वाहनादि पर धन का खर्च अधिक होगा। आकस्मिक खर्चों में वृद्धि एवं गुप्त शत्रु सरगर्म रहेंगे। मासान्त में शुक्र नीचस्थ होने से परिवारिक अशान्ति बढ़ेगी, भाई-बन्धुओं से वृथा तकरार, अपव्यय, स्वास्थ्य परेशानी एवं घरेलू उलझनें बढ़ेंगी।

मिथुन—राशिस्वामी बुध राहु युक्त तृतीय भाव में होने से व्यर्थ की दौड़धूप और फिजूलखर्ची बढ़ेगी। आय के साधनों में भी कमी होगी। ता. 19 से बुध उच्चस्थ (कन्या) होने से परिस्थितियों में विशेष परिवर्तन होंगे। धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। नए-नए लोगों से व्यवसायिक सम्बन्ध बनेंगे।

कर्क—सूर्य का संचार इस राशि पर होने से यद्यपि स्वास्थ्य कुछ ढीला, बनते कामों में विघ्न एवं निकट-बन्धुओं से वैचारिक मतभेद रहेंगे। परन्तु ता. 11 से

बुध पंचम भाव में 13 जन. तक रहने से भविष्य के सम्बन्ध में विशेष दीर्घ योजनाएँ बनेंगी। 18 मार्च से 2 अप्रै. तक बुध नीचस्थ रहने से स्वास्थ्य की हानि तथा आय में कमी एवं खर्चों में वृद्धि होगी, परन्तु बुध की स्वगृही दृष्टि होने से तथा ता. 14 मार्च से 13 अप्रै. तक सूर्य की मित्र दृष्टि होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 2 अप्रै. से 7 जून तक बुध अष्टमस्थ तथा 28 अप्रै. से 22 मई तक वक्री रहने से स्वास्थ्य में विकार, बनते कार्यों में विघ्न तथा धन हानि होने के संकेत हैं। ता. 11 अग. से इस राशि पर गुरु का संचार होने से बिगड़ी हुई परिस्थितियों में कुछ सुधार होगा, धार्मिक कार्यों में समय व्यतीत होगा। नौकरी में पदोन्नति कुछ रुकावटों के बाद ही हो पाएगी।

तुला राशि (Libra)

रा, री, रू, रे, रो, ता, ति, तू, ते

शनि साढ़ेसति का प्रभाव अभी वर्षभर (उतरती अवस्था) रहेगा। जिससे घरेलू तनाव, कार्यक्षेत्र सम्बन्धी परेशानियां एवं गुप्त चिंताएं बनी रहेंगी। वर्षारम्भ से 20 फर. तक मंगल का संचार भी इस राशि पर रहने से कार्यक्षेत्र में संघर्ष अधिक रहेगा। यद्यपि परिश्रम एवं पराक्रम के प्रभाव से गुज़ारे लायक आय के साधन बनते रहेंगे। निकट-बन्धुओं से मनमुटाव व तनाव तथा क्रोधाधिक्य रहे। 18 सितं. से 13 अक्तू. तक शुक्र इसी राशि में संचार करने से मान-प्रतिष्ठा एवं धन लाभ के अवसर बनेंगे।

भाग्येश गुरु कन्याराशिस्थ संचार करने से परिवारिक सुख में वृद्धि एवं सन्तान सुख के भी संकेत हैं।

सिंह–मासारम्भ में इस राशि पर गुरु की स्थिति रहने से सोची योजनाओं में आंशिक सफलता प्राप्त होगी। अधिक समय धार्मिक कार्यों में व्यतीत हो। कार्य-व्यवसाय में लाभादि की सम्भावनाएं बढ़ेंगी। ता. 16 से सूर्य स्वराशिगत संचार करने से आय में वृद्धि एवं सुख-साधनों पर खर्च होगा।

कन्या–ता. 11 से गुरु का संचार होने से बिगड़ी हुई परिस्थितियों में कुछ सुधार होगा, धार्मिक कार्यों में समय व्यतीत होगा। नौकरी में पदोन्नति कुछ रुकावटों के बाद ही हो पाएगी, कार्य-व्यवसाय में आय में कमी रहेगी। ता. 25 से शुक्र संचार करने से मन में उदासीनता एवं दाम्पत्य जीवन में व्यर्थ की परेशानी होगी।

तुला–ता. 25 तक राशिस्वामी शुक्र लाभस्थान में राहु युक्त होने से कुछ बिगड़े कामों में सुधार होगा। परिश्रम और पुरुषार्थ करने पर धन लाभ के अवसर मिलेंगे। विलासादि कार्यों पर धन का खर्च होगा। मन-सम्मान में वृद्धि होगी, शनि साढ़ेसति के कारण मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

वृश्चिक–राशि स्वामी मंगल लग्न में शनि युक्त होने से नवीन योजनाएँ बनेंगी। नए-नए लोगों के साथ सम्बन्ध बनेंगे और पुरुषार्थ में वृद्धि होगी। उत्तरार्द्ध भाग में किसी मंगल कार्य पर खर्च होगा। स्वभाव में उग्रता एवं वाणी में क्रोध के कारण मित्रों और सम्बन्धियों से मतभेद भी उभरेंगे।

धनु–शनि साढ़ेसति के कारण मन में तनाव एवं अशान्ति, पारिवारिक उलझनें तथा बन्धुओं से मतभेद भी रहेंगे। आर्थिक उलझनों के कारण मन में उचाटता एवं उदासीनता रहेगी। ता. 11 से गुरु दशमस्थ शत्रुराशिगत संचार करने से दौड़धूप अधिक एवं आय से खर्च भी अधिक होगा।

मकर–अत्यधिक संघर्ष के बाद धन लाभ अल्प रहेगा। ता. 11 से गुरु की नीच पंचम दृष्टि इस राशि पर रहने से विपरीत परिस्थितियों का सामना रहेगा। कार्यक्षेत्र में व्यस्तताएँ बढ़ेंगी। अनावश्यक खर्च एवं स्वास्थ्य में विकार उत्पन्न होने के योग हैं। वृथा यात्रा तथा धन हानि के भी संकेत हैं।

कुम्भ–11 अग. से धन भाव पर गुरु की स्वगृही दृष्टि पड़ने से मंगल कार्य आयोजित होगा। भूमि, वाहन, वस्त्रादि सुखों की प्राप्ति भी होगी। धार्मिक कृत्यों की ओर भी अभिरूचि रहेगी।

मीन–ता. 11 से गुरु की राशि पर स्वगृही दृष्टि होने से धर्म-कर्म एवं आध्यात्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। परिवार में भाई-बन्धुओं का सहयोग प्राप्त होगा। ता. 19 से स्वास्थ्य में विकार, मानसिक तनाव, परिवार में मतभेद एवं गुप्त चिन्ता बनी रहेगी।

भविष्यफल–सितम्बर–सन् 2016 ई.

मेष–मासारम्भ में मंगल अष्टमस्थ शनि युक्त रहने से सर्विस/व्यवसाय में संघर्षपूर्ण परिस्थितियों का सामना करना पड़े। अत्याधिक भागदौड़ करने पर भी आय से व्यय अधिक होगा। ता. 18 से मंगल भाग्य स्थान में होने से भाग्यवश आय व लाभ के साधन बनेंगे। बढ़ते पुरुषार्थ से आत्मबल विकसित होगा।

वृश्चिक राशि (Scorpio)

तो, ना, नी, नु, ने, नो, या, यी, यु

शनि का संचार एवं साढ़ेसाती का प्रभाव वर्षभर रहेगा। मंगल वर्षारम्भ से 19 फर. तक द्वादशभावगत होने से खर्च अधिक, वृथा यात्रा तथा विपरीत परिस्थितियों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। ता. 20 फर. से 17 जून तक मंगल इसी राशि में ही शनि के साथ संचार करेगा। फलस्वरूप मान-सम्मान में वृद्धि, धन लाभ तथा नई-नई योजनाएं बनेंगी। परन्तु क्रोध व तनाव अधिक रहेगा। ता. 17 अप्रै. से 29 जून तक मंगल वक्री तथा 17 जून से पुनः बाहरवें संचार करने से पुनः खर्चों की अधिकता, स्वभाव में उचाटता व उत्तेजना अधिक रहेगी। ता. 12 जुला. से 17 सितं. तक पुनः मंगल इस राशि में संचार करने से परिस्थितियां कुछ अनुकूल होंगी तथा 1 नवं. से 11 दिसं. तक मंगल उच्चस्थ संचार करने से पराक्रम में वृद्धि, धन प्राप्ति व उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

धनु राशि Sagittarius)

ये, यो, भा, भी, भू, ध, फ, ढ, भे

शनि–साढ़ेसाती का प्रभाव वर्षभर होने पर भी राशि- स्वामी गुरु भाग्य-स्थान में वर्षारम्भ से 11 अग. तक रहेगा। गुरु की इस राशि पर तथा पंचम भाव पर इस अवधि तक शुभ दृष्टि भी रहेगी। इस अवधि में शुभ एवं धार्मिक कार्यों की ओर रूचि रहेगी। नौकरी में पदोन्नति तथा व्यवसाय में आय के साधनों में बढ़ौत्तरी होगी। गृह में खुशी का वातावरण

वृष–ता. 18 तक शुक्र गुरु युक्त कन्या राशि में संचार करने से सन्तान सम्बन्धी विभिन्न परेशानियों का सामना रहेगा। घरेलू हालात चिन्ताजनक रहेंगे। किसी दुष्ट व्यक्ति द्वारा धन की हानि अथवा धोखे की सम्भावना बनी रहेगी। ता. 19 से विशेष परिश्रम एवं संघर्ष के पश्चात् निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे।

मिथुन–राशि पर मंगल की दृष्टि रहने से क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है। राशिस्वामी बुध भी वक्री अवस्था में ता. 9 से तृतीयस्थ रहने से यद्यपि निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे, परन्तु घरेलू परेशानियों के कारण मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा।

कर्क–भाग्येश गुरु की भाग्य स्थान पर दृष्टि होने से भाग्यवश कुछ सोची योजनाओं में सफलता, धर्म-कर्म के कार्यों में रूचि बढ़ेगी। ता. 18 से मंगल की नीच दृष्टि होने से क्रोध की अधिकता, चोटादि का भय एवं परिवार में कलह के योग हैं।

सिंह–मासारम्भ में लग्नस्थ सूर्य-राहु पर शनि की दृष्टि होने से वृथा भागदौड़, बनते कामों में विघ्न, गुप्त चिन्ता एवं धन का अपव्यय होगा। किसी नज़दीकी भाई-बन्धु से तनाव की स्थिति बने। ता. 16 के बाद परिस्थितियां कुछ सुधरेंगी। परन्तु लग्नस्थ राहु के प्रभाव से मानसिक तनाव, स्वभाव में तेजी एवं जिद्दीपन रहेगा।

कन्या–पूर्वार्द्ध में सूर्य-राहु का संचार द्वादशभाव में होने से स्वास्थ्य नर्म, बनते कामों में विघ्न, सरकारी क्षेत्रों में परेशानी एवं सिरदर्द, आँखों में कष्ट एवं चोटादि का भय रहेगा। ता. 16 से सूर्य-गुरु-राहु योग होने से कार्य व्यवसाय सम्बन्धी नवीन योजना बनेगी।

तुला–द्वादश भाव में गुरु-शुक्र योग होने से आय कम और खर्च अधिक रहेगा। वृथा भागदौड़ और फिज़ूलखर्ची बढ़ेगी। स्वास्थ्य में विकार, माता-पिता से मतभेद एवं नौकरी/व्यवसाय में परिवर्तन का विचार बनेगा। अपने भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे।

वृश्चिक–राजदरबार में मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। किसी मित्र/सम्बन्धी के सहयोग से रुका हुआ कार्य बनेगा। परन्तु शनि साढ़ेसति के कारण मानसिक तनाव, गुप्तचिन्ता एवं चोटादि का भय रहेगा। ता. 18 से राशिस्वामी धनु राशिगत संचार करने से आय के साधनों में वृद्धि एवं शुभ मंगल कार्यों पर धन का खर्च होगा।

धनु–राशिस्वामी गुरु दशम भावस्थ (शत्रुराशिस्थ) होने से व्यवसायिक क्षेत्रों में मुश्किल हालात के बावजूद धन लाभ साधारण होगा। ता. 9 से गुरु अस्त रहने से बनते कामों में विघ्न, स्वास्थ्य परेशानी, क्रोध एवं उत्तेजना से कुछ बने हुए कार्य बिगड़ सकते हैं।

मकर–मासारम्भ में अष्टम भाव में सूर्य-राहु तथा भाग्य स्थान पर गुरु-बुध-शुक्रादि योग होने से बनते कामों में विघ्न, साधारण लाभ एवं स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी के योग हैं। यद्यपि धर्म-कर्म में रुझान रहे, मान-सम्मान में वृद्धि एवं भाग्यवश कार्य-व्यवसाय में उन्नति के चाँस मिलेंगे।

कुम्भ–अष्टम भाव में गु.-बु.-शु. ग्रहों का योग होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, बनते कामों में विघ्न, वृथा भागदौड़ एवं मानसिक तनाव रहेगा। दूरस्थ यात्राएं, धन का खर्च भी अधिक होगा। ता. 18 से भाग्येश शुक्र भाग्य स्थान में होने से भूमि-वाहनादि का क्रय-विक्रय एवं सौन्दर्य वस्तुओं पर धन खर्च हो।

मीन—लग्न भाव पर गु.-बु.-शु. आदि ग्रहों की दृष्टि होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद व्यवसायिक क्षेत्रों में धन लाभ एवं उन्नति के योग हैं। व्यवसायिक व्यस्तताएं बढ़ेंगी। धर्म एवं आध्यात्मिक क्षेत्रों में रूझान बढ़ेगा। उत्तरार्द्ध में क्रोध एवं उत्तेजना से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है।

भविष्यफल—अक्तूबर—सन् 2016 ई.

मेष—मंगल भाग्य स्थान में होने से संघर्ष के बाद भाग्यवश आय व लाभ के साधन बनते रहेंगे, भाग्योन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। व्यवसाय में लाभ एवं उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु धन का व्यय विलासादि कार्यों पर होगा। शनि की ढैय्या के कारण वृथा दौड़धूप, घरेलू व व्यवसायिक उलझनें बढ़ेंगी।

वृष—स्वास्थ्य नर्म एवं बनते कामों में विघ्न रहेंगे। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, व्यर्थ की भागदौड़, फिजूलखर्ची एवं गुप्त चिन्ता बनी रहेगी। ता. 13 से शुक्र की स्वगृही दृष्टि होने से परिस्थितियों तथा कुछ बिगड़े कामों में सुधार, आकस्मिक धन लाभ के अवसर भी मिलेंगे। पं. देवी दयालु संस्थान द्वारा प्रकाशित **'कार्तिक माहात्म्य'** का पाठ करें।

मिथुन—ता. 3 से 20 तक राशिस्वामी बुध चतुर्थस्थ होने से धन प्राप्ति के मार्ग प्रशस्त होंगे। सुख-साधनों में वृद्धि होगी। नए-नए एवं प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। ता. 21 से बुध तुला राशि में सूर्य युक्त होने से व्यवसायिक एवं सरकारी क्षेत्रों में अनेक उतार-चढ़ाव एवं परिवर्तन होंगे।

कर्क—मंगल की अष्टम नीच दृष्टि रहने से विभिन्न आर्थिक योजनाओं को क्रियान्वित करने में परेशानी एवं विलम्ब होने से मानसिक तनाव बना रहेगा। परिवार में व्यर्थ की उलझनें उत्पन्न हों, क्रोध अधिक एवं स्वभाव में उत्तेजना, स्वास्थ्य ढीला रहे।

सिंह—धार्मिक कार्यों एवं सामाजिक क्षेत्रों में रुझान बढ़ेगा। मान-सम्मान में वृद्धि, धन लाभ एवं आय के स्रोतों में वृद्धि होगी। ता. 17 से राशिस्वामी सूर्य नीच-राशिगत होने से शत्रु हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे। परिवार में अकारण ही विरोधाभास और तनाव उत्पन्न होगा।

कन्या—ता. 3 से 21 तक बुध स्वराशिगत (कन्यास्थ) होने से शुभ कार्यों में खर्च, धन-लाभ और उन्नति के अवसर मिलेंगे। कुछ बिगड़े कामों में सुधार एवं मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पारिवारिक माहौल पहले से बेहतर होगा।

तुला—राशिस्वामी शुक्र इसी राशि पर संचार करने से मान-प्रतिष्ठा एवं धन-लाभ के अवसर बढ़ेंगे। किसी क्लिष्ट समस्या का प्रियजन के सहयोग से समाधान होने के योग हैं। नौकरी में तरक्की एवं व्यवसाय को बढ़ाने के लिए नई योजनाएं भी बनेंगी। भूमि-सवारी आदि का क्रय-विक्रय भी होगा।

वृश्चिक—राशिस्वामी मंगल धनु राशिगत संचार करने से भाग्योन्नति में विघ्न-बाधाओं का सामना रहे, क्रोध की अधिकता, व्यर्थ की दौड़-धूप, मानसिक तनाव एवं भाई-बन्धुओं से मनमुटाव रहेगा। स्वास्थ्य नर्म रहे। शनि-साढ़ेसति के कारण परिवारिक समस्याएं एवं आर्थिक उलझनें उभरती व सिमटती रहेगी।

धनु—लग्नभाव में मंगल का संचार रहने से संघर्षशक्ति प्रबल होगी। कार्य-व्यवसाय सम्बन्धी नई-नई योजनाएं बनेंगी। भूमि, वाहनादि कार्यों पर विशेष खर्च होंगे। परन्तु परिवार में मनमुटाव, क्रोध अधिक, वृथा भागदौड़ और सन्तान सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी।

बनेगा, ता. 8 जन. से 9 मई तक गुरु वक्री अवस्था में परन्तु 29 जन. से राहु युक्त सिंह राशि में संचार करने तथा साढ़ेसाती के प्रभाव कारण यथेष्ठ लाभ प्राप्त नहीं होंगे। ता. 11 अग. से वर्षान्त तक गुरु दशम भाव में शत्रुराशिगत संचार करने से व्यवसाय में दौड़-धूप अधिक तथा आय भी कम रहेगी।

मकर राशि (Capricorn)

भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

वर्षभर राशिस्वामी शनि की स्वगृही दृष्टि रहेगी। वर्षारम्भ से 19 फर. तक मंगल की भी विशेष उच्च दृष्टि रहेगी। फल-स्वरूप मान-सम्मान में वृद्धि होगी। ता. 14 जन. से 12 फर. तक सूर्य का संचार इस राशि पर होने से क्रोध व तनाव अधिक, आय कम खर्च भी अधिक रहेगा। ता. 14 मई से 14 जून तक सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग रहने से निकट भाई-बन्धुओं के साथ सम्बन्धों में तनाव, क्रोध की भावना रहेगी। ता. 7 से 31 जुला. तक शुक्र की सप्तम तथा 16 जुला. से 15 अग. तक सूर्य की दृष्टि रहने से बनते कामों में अड़चनें पैदा होंगी। सरकारी क्षेत्रों में रुकावटें आएंगी, आय में वृद्धि के साथ-साथ खर्च भी बहुत अधिक होंगे। ता. 11 अग. से वर्षान्त तक गुरु की नीच पंचम दृष्टि रहेगी।

कुम्भ राशि (Aquarius)

गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

वर्षारम्भ से 11 अग. तक गुरु की दृष्टि रहने से पुरुषार्थ में वृद्धि, विविध यात्राएं एवं

मकर—शनि की स्वगृही परन्तु गुरु की पंचम (नीच) दृष्टि होने से यद्यपि गत किए गए प्रयासों में लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। परन्तु आर्थिक उलझनों के कारण मन परेशान रहेगा। यात्रादि में चोटादि का भय रहेगा। उत्तरार्द्ध भाग में परिवारिक सहयोग से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

कुम्भ—दशमेश मंगल धनु राशि में संचार कर रहा है और द्वितीय भाव पर मंगल की मित्र तथा गुरु की स्वगृही दृष्टि है, जिससे आय के साधन बनते रहेंगे। परिवार में शुभ मंगल कार्य भी सम्पन्न होंगे। भूमि-सवारी आदि का क्रय-विक्रय करने की योजना भी बनेगी। परन्तु सूर्य भाग्यभाव में नीचराशिगत होने से सरकारी क्षेत्रों में परेशानी रहे।

मीन—राशि पर मंग.-गुरु की दृष्टियां तथा भाग्य स्थान पर शुक्र-शनि का योग होने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। धन का अधिक खर्च विलासादि कार्यों पर होगा। ता. 17 से सूर्य नीच राशिगत अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य परेशानी, सिर-दर्द तथा क्रोध अधिक रहे।

भविष्यफल—नवम्बर—सन् 2016 ई.

मेष—मासारम्भ से ही राशिस्वामी मंगल उच्चराशिस्थ होने से स्वगृही दृष्टि रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार, प्रतिष्ठा में वृद्धि, आय के साधनों में सुधार होने के योग बनेंगे। परन्तु शनि-ढैय्या के प्रभाव से परिवारिक समस्याओं के कारण मन विक्षुब्ध रहेगा। शरीर कष्ट एवं रक्त-विकार का भय है।

वृष—मासारम्भ में शुक्र की स्वगृही दृष्टि रहने से बिगड़े हुए कार्यों में सुधार होगा। सन्तान सुख में वृद्धि एवं सुख-साधनों पर धन का खर्च होगा। परन्तु ता. 8 से मासान्त तक शुक्र अष्टमस्थ होने से स्वास्थ्य परेशानी, गुप्तरोग, शरीरकष्ट एवं पेट सम्बन्धी विकार के कारण परेशानी बनी रहेगी।

मिथुन—मासारम्भ में सन्तान सम्बन्धी कोई शुभ समाचार प्राप्त हो। परन्तु ता. 8 से 28 के मध्य बुध षष्ठस्थ होने से वृथा भागदौड़, आय में कमी, धन का खर्च अधिक और स्वास्थ्य कुछ ढीला रहेगा। संघर्ष के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। आर्थिक एवं परिवारिक उलझनों के कारण मन अशान्त रहेगा।

कर्क—मंगल की सप्तम शत्रु दृष्टि तथा दशम भाव पर स्वगृही दृष्टि होने से संघर्षपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद धन प्राप्ति के साधन बनते रहेंगे। आय से खर्च अधिक होगा। वृथा भागदौड़, मन में अशान्ति एवं असन्तुष्टता रहेगा। क्रोध अधिक एवं चोटादि का भय रहेगा।

सिंह—मासारम्भ में राशिस्वामी सूर्य नीचराशिगत होने से बनते कामों में विघ्न, परिवारिक जीवन में तनाव व उलझनें होंगी। मंगल की अष्टम दृष्टि रहने से भी कारोबार में रूकावटें, गुप्त चिन्ता एवं शत्रु हानि पहुँचाने का प्रयास करेंगे। ता. 17 से सूर्य चतुर्थस्थ होने से कार्य सिद्धि के योग बनेंगे।

कन्या—मासारम्भ में सूर्य-बुध द्वितीय भाव में होने से उच्चप्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क रहेंगे। आकस्मिक धन-लाभ एवं मनोरंजन आदि के कार्यों पर धन का खर्च अधिक होगा। स्त्री सुख, सवारी, वाहनादि सुखों में वृद्धि होगी। गुरु का संचार होने से कार्य-व्यवसाय में उन्नति व लाभ के अवसर मिलेंगे।

तुला–राशि पर सूर्य का संचार होने से स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानी, बनते कामों में विघ्न, परिवार में मतभेद एवं खर्च की अधिकता से मन परेशान रहेगा। शनि साढ़ेसति रहने से भी व्यवसाय में उथल-पुथल तथा स्वास्थ्य ढीला रहेगा। चोटादि का भय है। कार्तिक माहातम्य का पाठ करें।

वृश्चिक–मासारम्भ में राशि पर शुक्र-शनि का संचार होने से मनोरंजन आदि कार्यों पर धन का खर्च होगा। धन लाभ कम तथा घरेलू उलझनों के कारण मानसिक तनाव रहेगा। परनतु मंगल उच्चस्थ होने से उच्च प्रतिष्ठित लोगों के सहयोग से व्यवसाय में उन्नति के अवसर मिलेंगे।

धनु–शनि साढ़ेसति एवं भाग्येश सूर्य नीचराशिगत लाभस्थान में होने से बनते कामों में विघ्न, मानसिक तनाव, असमंजसपूर्ण परिस्थितियों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। ता. 7 से इस राशि पर शुक्र का संचार होने से विलासादि कार्यों पर धन का अपव्यय होगा।

मकर–राशि पर मंगल उच्चस्थ होने से मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि, धन-लाभ व उन्नति के अवसर मिलेंगे। व्यवसायिक क्षेत्र में व्यस्तताएं बनी रहेंगी। कोई रुका हुआ कार्य बनेगा। मंगल की सप्तम भाव पर नीच दृष्टि होने से दाम्पत्य जीवन में परेशानी, शनि-गुरु की दृष्टि होने से स्वास्थ्य में विकार, क्रोध अधिक, वृथा भागदौड़ रहेगी।

कुम्भ–मासारम्भ में दशम भाव में शुक्र-शनि योग होने से व्यवसायिक क्षेत्र में अनेक उतार-चढ़ाव के हालात बनेंगे। परन्तु विघ्नों के बावजूद निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे। ता. 16 से सूर्य-शनि दशमस्थ होने से वृथा भागदौड़, भाई-बन्धु से मतभेद एवं धन का खर्च अधिक हो।

मीन–राशि पर गुरु की दृष्टि एवं दशमस्थ शुक्र के प्रभाव से कार्य-व्यवसाय में स्थितियां पहले से कुछ अनुकूल होंगी। परन्तु सूर्य अष्टमस्थ नीच राशिगत होने से स्वास्थ्य में विकार, सिर-दर्द के योग हैं। ता. 16 के बाद भाग्यवश आय के साधन बनेंगे। परन्तु परिवार में तनाव एवं वैचारिक मतभेद भी रहेंगे।

भविष्यफल–दिसम्बर–सन् 2016 ई.

मेष–ता. 10 तक मंगल उच्चस्थ होने से आय के साधनों में सुधार होगा। कार्यक्षेत्र में कुछ परिवर्तन और मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। परिवारिक जीवन में वातावरण सुखद रहेगा। विशिष्ट योजनाओं को क्रियान्वित कर सकते हैं।

वृष–राशिस्वामी शुक्र भाग्यस्थान में एवं शनि की इस राशि पर दृष्टि होने से कुछ बिगड़े काम बनेंगे। अपने पुरुषार्थ एवं पराक्रम से उन्नति के अवसर मिलेंगे। किसी नवीन कार्य की योजना भी बनेंगी। किन्तु सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, मानसिक तनाव एवं सिर-दर्द रहे।

मिथुन–राशि पर बुध की स्वगृही दृष्टि रहने से यद्यपि उन्नति के अवसर मिलेंगे, परन्तु विशेष अधिक लाभ नहीं होगा। ता. 19 से बुध वक्री होने से आय में वृद्धि के साथ-साथ खर्च अधिक तथा स्वास्थ्य नर्म रहे।

उच्च-प्रतिष्ठित लोगों के साथ सम्पर्क बढ़ेंगे। वर्षभर राशिस्वामी शनि शत्रुराशिगत संचार करने से खर्च भी बढ़चढ़ कर होंगे। स्त्री/पति आदि पारिवारिक बन्धुओं के साथ मनमुटाव रहे। ता. 30 जन. से वर्षान्त तक इस राशि पर केतु का भी संचार होने से मानसिक तनाव, उचाटता, आय के साधनों में अड़चनें तथा स्वास्थ्य विकार की सम्भावनाएं रहेंगी। ता. 12 फर. से 13 मार्च तक सूर्य का संचार होने से मन में उत्तेजना, क्रोध, अशान्ति तथा निकट बन्धुओं से मतान्तर पैदा होंगे। ता. 20 फर. से 17 जून, पुनः 12 जुला. से 17 सितं. तक दशम भाव में मंगल-शनि का योग रहने से मन में तनाव, उलझनें, आय में कमी रहे। ता. 11 अग. से वर्षान्त तक दूसरे भाव पर गुरु की स्वगृही दृष्टि पड़ने से निर्वाह योग्य आय के साधन बनते रहेंगे।

मीन राशि (Pisces)

दि, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, चि

वर्षरम्भ से 29 जन. तक मीन राशि पर केतु का संचार तथा 8 जन. से 8 मई तक राशिस्वामी गुरु छटे भाव में वक्री अवस्था में संचार करने से संघर्षमयी परिस्थितियां रहेंगी। यद्यपि ता. 30 जन. से केतु का संचार हट जाने से कुछ रुके हुए कार्यों में सफलता तथा उत्साह में वृद्धि होगी। परन्तु 30 जन. से 10 अग. तक गुरु-राहु योग रहने से घरेलू एवं व्यवसायिक उलझनों के कारण मानसिक तनाव व परेशानियां रहेंगी। ता. 11 अग. से राशिस्वामी गुरु कन्या राशि में आकर इस राशि पर स्वगृही दृष्टि रखेगा। फलस्वरूप धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़े, उच्च-प्रतिष्ठित लोगों से मेल-जोल बढ़ें एवं तीर्थ-यात्रा का प्रोग्राम भी बन सकता है।

कर्क–मासारम्भ में यद्यपि कुछ बिगड़े कार्य बनेंगे, परन्तु शीघ्र उत्तेजित या जल्दबाजी से कोई बना हुआ कार्य बिगड़ सकता है। व्यवसाय में अस्थिरता एवं अनिश्चितता बनी रहेगी। दाम्पत्य जीवन में मतभेद व तनाव रहे।

सिंह–शनि की ढैय्या एवं चतुर्थस्थ सूर्य-शनि योग होने से गुप्त चिन्ता, गुप्त रोग एवं दुर्घटना में चोटादि का भय रहेगा। मानसिक तनाव व उलझनों के बावजूद धन लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। सन्तान सम्बन्धी चिन्ता, वृथा दौड़धूप रहेगी।

कन्या–गुरु लग्नस्थ तथा बुध चतुर्थस्थ होने से गृह में मांगलिक एवं धार्मिक कार्य सम्पन्न होंगे। उत्साह और सौभाग्य में वृद्धि होगी। धर्म-कर्म में रुझान रहेगा। व्यवसाय में उन्नति के अवसर मिलेंगे।

तुला–व्यवसायिक क्षेत्रों में यथोचित लाभ में कमी रहेगी। अधिकांश समय व्यर्थ के कामों में व्यतीत होगा। शनि साढ़ेसति होने से आर्थिक उलझनों के कारण मन चिन्तित रहेगा। दाम्पत्य जीवन में कुछ मतभेद, धन का लेन-देन करते समय कुछ विवाद हो सकता है।

वृश्चिक–कारोबार में कई तरह के उतार-चढ़ाव व अन्य परेशानियां रहेंगी। परिश्रम व दौड़-धूप अधिक रहेगी। फिर भी निर्वाह योग्य आय के साधन बनेंगे। ता. 11 से मंगल चतुर्थस्थ होने से घरेलू समस्याएँ मानसिक तनाव का कारण बनेंगे। दुर्घटना में चोटादि का भय रहेगा।

धनु–राशिस्वामी गुरु दशम भाव में एवं भाग्येश सूर्य-शनि युक्त द्वादश भाव में है, जिससे बनते कामों में विघ्न, मानसिक तनाव, व्यवसायिक एवं आर्थिक परेशानियां रहेंगी। स्वास्थ्य नर्म, दिमागी परेशानी एवं सन्तान सम्बन्धी चिन्ता बनी रहेगी।

मकर–मंगल-शुक्र का संचार इस राशि पर होने से भूमि-वाहन आदि का क्रय-विक्रय, मनोरंजन आदि का रूझान तथा धन का खर्च अधिक होगा। गुरु की नीच दृष्टि होने से भाई-बन्धुओं का सहयोग कम प्राप्त होगा। व्यर्थ की यात्रा तथा स्वास्थ्य कुछ नर्म रहेगा।

कुम्भ–सूर्य-शनि दशम भावस्थ तथा मंगल द्वादशस्थ होने से स्वास्थ्य नर्म एवं चोटादि का भय रहेगा। मन अशान्त एवं असन्तुष्ट रहेगा। गुरु की धन भाव पर दृष्टि से मान-सम्मान में वृद्धि, धर्म-कर्म में अभिरूचि एवं शुभ मंगल कार्यों पर धन का खर्च होगा।

मीन–राशि पर गुरु की स्वगृही दृष्टि रहने से अचानक धन प्राप्ति के साधन बढ़ेंगे और नौकरी में उन्नति के अवसर प्राप्त होंगे। धार्मिक कार्यों की ओर प्रवृत्ति रहेगी। किसी मित्र के सहयोग से नया कार्य आरम्भ होगा। आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होगा।

वि. संवत् २०७३ में संवत्सर एवं राजा-मन्त्री आदि का फल

ॐ स्वस्ति नः श्रीगणेशाय नमः। अचिन्तयाव्यक्तरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः। आदौ गणपतिं नमस्कृत्य प्रणम्य च पूर्वजानहम्। चन्द्रमिश्रं तत्पुत्रं रामजी दत्तस्य सूनं विश्वविख्यातं पण्डित देवीदयालु ज्यो. स्व वृद्धप्रतिपितामहम् स्मरन् भक्त्या लोकहितार्थाय सुखसम्पत्ति हेतवे **'सौम्य' नामक** नवविक्रमी सम्वत्सरे शुभे एक चत्वारिंशत्योत्तर शत वर्षाणि (१४१) वर्ष प्रवेशे पण्डित विवेक शर्मा ज्योतिषी अहं पुत्र दैवज्ञरत्न पण्डित श्रीपन्ना लाल ज्योतिषी, कनिष्ठ भ्रातृ पण्डित पंकज शर्मा सहितोऽहं कुर्वे **पंचाँग दिवाकरम्।**

सृष्टि सम्वत् १९५,५८,८५,११७ के अन्तर्गत, **श्रीविक्रमी संवत् २०७३,** शक संवत् १९३८-३९, कलि (कल्कि) संवत् ५११७, श्रीकृष्ण सम्वत् ५२५२, सप्तर्षि संवत् ५०९२, श्रीबुद्ध संवत् २६३९-४०, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन) **संवत् २५४१-४२,** हिजरी सन् १४३७-३८, इंग्लिश सन् २०१६-१७ ईसवी, फसली सन् १४२३-२४, खालसा संवत् ३१७-१८, नानकशाही सम्वत् ५४७-४८, सृष्टि संवत् के अन्तर्गत सतयुग प्रमाण १७२८०००, त्रेतायुग १२९६०००, द्वापर युग प्रमाण ८६४००० एवं कलियुग का प्रमाण ४३,२००० वर्षों का होता है।

—'सौम्य' नामक नव-सम्वत्सर का फल—(सं. २०७३)

नव विक्रमी संवत् २०७३ के आरम्भ में गुरुमान से शिव (रुद्र) विंशति के अन्तर्गत 'नवम युग' का तृतीय (३रा) **'सौम्य'** नामक नया संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा अर्थात् 8 अप्रैल, सन् 2016 ई., तदनुसार २६ चैत्र, शुक्रवार से प्रारम्भ होगा। शुक्रवार से प्रारम्भ होने से आगामी वर्ष (सम्वत्) का राजा भी **'शुक्र'** होगा।

नववर्ष प्रवेश लगन

६ ५ ४ ७ गु. रा. ३ ८ २ मं. श. ११ १ ९ के. बु. १२ १० सू.चं.शु.

'सौम्य' नामक नया विक्रमी संवत् २०७३ चैत्र अमावस की समाप्ति (7 अप्रैल) प्रविष्टे २५ चैत्र, गुरुवार, रेवती नक्षत्र एवं वैधृति योगकालीन सायं 4 बजकर 54 मिनट पर (16/54) सिंह लग्न में प्रवेश करेगा। परन्तु शास्त्र-नियमानुसार नवसंवत् का प्रारम्भ तथा राजा आदि का निर्णय चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के वारादि अनुसार ही किया जाता है। तदनुसार सौम्य नामक नव वि. सं. २०७३ तथा चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 8 अप्रैल, शुक्रवार (प्रविष्टे २६ चैत्र) वैधृति योग में होगा।

चैत्र (वासन्त) नवरात्र अर्थात् 8 अप्रैल (२६ चैत्र), शुक्रवार से जप, पाठ, पूजन, दान, व्रतानुष्ठान, यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठान कर्मों के आदि में, संकल्पादि प्रयोग कार्यों में सौम्य नामक नव सम्वत्सर का प्रयोग होगा। वर्ष का **राजा शुक्र** तथा **मन्त्री बुध** होगा। **'सौम्य'** सम्वत्सर का फल शास्त्रों में इस प्रकार से वर्णित है—
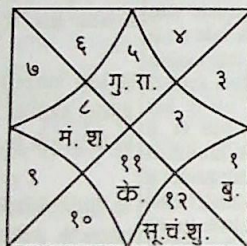
धान्याकुला धरा लोकाः स्वस्थाश्च निरुपद्रवाः।
सौम्यवृष्टिर्वरारोहे सौम्ये सैन्धवविप्लवः।।

अर्थात्—**'सौम्य'** संवत्सर में सभी प्रकार के खाद्यान्नों का अच्छा उत्पादन हो, प्रजा में रोगों की कमी, देश में शासनतन्त्र अर्थात् सरकार द्वारा शान्ति, कानून एवं न्याय व्यवस्था को सुचारु एवं सुदृढ़ (सशक्त) बनाए रखने के लिए विशेष नियम बनाए एवं प्रयास किए जाएंगे। देश में उपयोगी एवं अनुकूल वर्षा होगी। परन्तु सिन्ध प्रदेश अर्थात् पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों में उपद्रव, विस्फोट एवं अशान्ति फैलेगी।

'भविष्यफल भास्कर' अनुसार भी **'सौम्य'** सम्वत्सर होने से देश में पर्याप्त वर्षा होने से गेहूँ, धान्यादि विभिन्न खाद्यान्नों की पैदावार प्रचुर मात्रा में होगी। प्रशासक तथा राजनेता/मन्त्री लोग निर्वैर अर्थात् प्रजा के साथ एक समान व्यवहार करेंगे। ब्राह्मण लोग यज्ञादि शुभ कार्यों को करने में तत्पर रहें—

सौम्याब्देनिखिलालोकाः बहुसस्यार्घवृष्टिभिः।
विवैरिणो धराधीशा विप्राश्चाध्वर तत्पराः।।

नोट—नवसंवत् (वर्ष-कुण्डली) के ग्रहों के अनुसार राजनैतिक एवं सामाजिक प्रभाव हेतु ग्रहों की आकाशी कौंसिल का प्रभाव वाले पृष्ठों का अवलोकन करें। **क्योंकि इस वर्ष स्थानभेद अनुसार नव संवत् (वर्ष) प्रवेश कुण्डली में लग्नभेद भी रहेगा।**

रोहिणी का वास—वि. संवत् २०७३ में मेष संक्रान्ति का प्रवेश पुनर्वसु नक्षत्रकालीन है। ज्योतिष गणनानुसार संवत् २०७३ में रोहिणी का वास **'पर्वत'** में रहेगा। यथा—

रोहिणी नामनक्षत्रं पर्वतस्थं यदा भवेत्।
वृष्टि हानिस्तदा ज्ञेया सर्वसस्य—विनाशनम्।।

अर्थात् रोहिणी का वास पर्वत पर होने से इस वर्ष देश में उपयोगी एवं अनुकूल वर्षा की कमी रहेगी। कहीं अतिवृष्टि या अनावृष्टि के कारण बाढ़ादि का प्रकोप रहे और कहीं गेहूँ, चने, चावलों आदि धान्यों की फसलों को हानि पहुँचेगी। फलस्वरूप खाद्य पदार्थों व अन्य आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में अचानक वृद्धि होगी।

✤ **सम्वत् का वास**—रोहिणी का वास पर्वत पर होने से सम्वत् का वास 'कुम्हार' (कुम्भकार) के घर होगा। फलस्वरूप अनेक स्थलों एवं प्रान्तों में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। पेयजल, कृषि-जल, भूमिगत जल और अन्य जल के प्राकृतिक स्रोतों में कमी रहेगी। घास, तृण, वृक्षादि हरियाली, फल, गेहूँ, धान्यादि अनाजों का उत्पादन कम होगा। महँगाई में अप्रत्याशित वृद्धि के कारण सामान्य लोगों में असन्तोष एवं आक्रोश की भावना रहे। कृषि-भूमि तथा अन्य सभी प्रकार के भूस्थलों-खण्डों के मूल्यों में और तेजी होगी।

हस्तशिल्प, खादी, लघु-उद्योग आदि क्षेत्रों तथा दूरसंचार व यातायात के संसाधनों में विस्तार एवं प्रगति होगी।

संवत् (समय) का वाहन—नव. वि. संवत् २०७३ का राजा शुक्र होने से सम्वत् का वाहन दादुर अर्थात् मेंढक होगा। जिसके फलस्वरूप कुछ प्रदेशों में विपुल वर्षा होने के संकेत हैं। वहाँ बाढ़, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोप होंगे, जिससे कृषि, जन-धनादि की क्षति का भय रहेगा। जबकि कुछ प्रदेशों में उपयोगी वर्षा की कमी से फसलों को क्षति पहुँचेगी।

वि. संवत् २०७३ के दशाधिकारियों का फल

(1) वर्ष के राजा शुक्र का फल—

शुक्रस्य राज्ये बहुसस्य-संकुला सुतीव्रवेगाः सरितोऽम्बुराशिभिः।
फलन्ति वृक्षा बहुगोप्रसूतिः वसुन्धरा पार्थिव सौख्य संयुता।।

अर्थात् संवत्सर का राजा शुक्र हो, तो उस वर्ष धान्य, गन्ना, गेहूँ आदि अनाजों एवं मौसमी फूल-फूलों का यथेष्ठ अर्थात् प्रचुर उत्पादन होगा। वर्षा अच्छी होने से नदियां जल से परिपूर्ण होकर तीव्र वेग से बहेंगी। वृक्षों/पौधों पर मौसमी फल अधिक मात्रा में लगेंगे। गाय-भैंस आदि चौपायों की संख्या में वृद्धि हो। राजा लोग (प्रशासक वर्ग) भूमि आदि सुख-साधनों से सम्पन्न होंगे। व्यापारी वर्ग भी व्यापार से विशेष लाभान्वित होंगे। पुरुष-स्त्रियों में परस्पर प्रेमाकर्षण अधिक बढ़ेगा। समाज एवं मीडिया में राग-रंग, गायन, नृत्यादि द्वारा अश्लीलता एवं निर्लज्जता के अशोभनीय प्रदर्शन को बढ़ावा दिया जाएगा।

अन्य संहिता ग्रन्थ अनुसार भी—

सस्याढ्यो धर्मबहुलो गतातंको बहूदकः। कामिनां कामदः कामं सिताब्दो नृपशर्मदः।।

अर्थात् संवत् में चीनी, गेहूँ व अच्छे (बासमती) चावलों की फसलें श्रेष्ठ होंगी अर्थात् इनकी पैदावार में विशेष वृद्धि होगी। उपयोगी एवं अनुकूल वर्षा होने से फूलों, इत्र व खुशबू से सम्बन्धित वस्तुओं के व्यापार में विशेष लाभ होगा। फैशन आदि के क्षेत्र में नए प्रचलन आएंगे, स्त्री-पुरुष के परस्पर सम्बन्धों में अधिक स्वच्छन्दता एवं अमर्यादित व्यवहार देखने को मिलेगा। विभिन्न कलाओं तथा कामवासना में वृद्धि होगी। परन्तु देश में नए बांधों, नहरों व नदियों को पुर्नजीवित करने सम्बन्धी अनेक योजनाएं बनेंगी तथा बिजली का संकट सीमित रहेगा।

(2) सम्वत् के मन्त्री बुध का फल—

शशिसुते शुभमन्त्रिपदं गते स्वपतिना रमते मदनक्रियाम्।
बहुधनं बहुवारि-समन्वितं यव-मसूर-चणान्न महर्घताम्।।

सम्वत् का मन्त्री बुध होने पर उस वर्ष अधिकांश लोग विशेषतया स्त्रियां अपने पतियों (जीवन-साथी) के साथ रमन, ऐशो-आराम, भोग-विलासादि विषयों में अधिक आसक्त रहेंगी। काम-वासना सम्बन्धी अपराधों में वृद्धि होने से स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों में प्रायः कुलीनता की कमी आ जाती है। धन का प्रसार अधिक होने से अमीर लोग और अधिक धनाढ्य होंगे। वर्षा भी प्रचुर मात्रा में होने से जौं, चने, मसूर, तेल, गेहूँ, धान्यादि की फसलों को हानि होगी। फलस्वरूप इनके तथा गैस, पैट्रोलियम वस्तुओं के भाव तेज होंगे। शिल्प-कला सम्बन्धी, खाद्यान्न एवं दैनिक उपभोग्य वस्तुओं से सम्बन्धित व्यापारी तथा बुद्धिजीवी लोग व्यवसाय से विशेष लाभान्वित होंगे। गर्मी-खुश्की एवं त्वचा सम्बन्धी रोग अधिक होंगे।

(3) सस्येश शनि का फल—

रविसुते यदि धान्यपतौ जनाः नृपतिभिः परिपीड़ित-विग्रहाः।
गदभयं तुषधान्यहरं सदा दुरित वाद-विवादयुताः नराः।।

—अर्थात् ग्रीष्मकालीन फसलों का स्वामी (सस्येश) शनि हो, तो उस वर्ष सरकारी तन्त्र के कठोर व विचित्र नियमों के कारण साधारण लोग दुखी एवं पीड़ित रहें। प्रजा में क्लिष्ट एवं विचित्र रोगों का भय एवं पीड़ित रहें। जौं, मक्का,धान्य, गेहूँ आदि ग्रीष्मकालीन फसलों को प्राकृतिक प्रकोपों से हानि पहुँचे एवं उनके मूल्य तेज होंगे। अधिकांश लोग वृथा वाद-विवाद एवं कानूनी झगड़ों में संलिप्त रहें।

(4) धान्येश गुरुका फल—

गुरौ धान्यपतौ याते यव-गोधूम-शालयः।
पच्यन्ते सर्वदेशेषु यज्वानो ब्राह्मणादयः।।

अर्थात्-यदि गुरु (बृहस्पति) धान्येश (शीतकालीन फसलों का स्वामी) हो, तो शीतकालीन फसलें-गेहूँ, जौं, बाजरा,मोठ, मूँग आदि धान्य का उत्पादन अच्छा होगा। उत्तम विचारों वाले ब्राह्मण आदि विद्वान एवं धर्मपरायण लोग यजन-याजन आदि धार्मिक एवं शुभ कृत्यों में प्रवृत्ति रखेंगे।

(5) मेघेश (वर्षा का स्वामी) मंगल का फल—

अवनिजे जलदस्य-पतौ भुविश्रुति विचार-विहीन-धरामराः।
क्वचिदपि प्रचुरं जलमल्पकं क्वचिदपि प्रशमं बहुतापदम्।।

अर्थात् मेघेश (वर्षा का स्वामी) मंगल हो, तो ब्राह्मणादि उच्च वर्ण के लोग वेद-विचार से हीन, अपने धर्म-कर्म से च्युत अर्थात् शास्त्र मर्यादित कर्त्तव्यों से च्युत होंगे। प्रतिकूल एवं असामयिक वर्षा अर्थात् कहीं वर्षा बहुत कम और कहीं बहुत अधिक होगी। कहीं भूस्खलन एवं बाढ़ादि तथा कहीं वर्षा न होने से पेयजल की कमी, दुर्भिक्ष आदि का भय तथा तापमान में वृद्धि होगी।

(6) रसेश का फल–

इस वर्ष रसेश पद दो ग्रहों **सूर्य** एवं **चन्द्र** को प्राप्त है। (ध्यान रहे, रसेश का निर्णय तुला (कार्तिक) संक्रान्ति के वारेश अनुसार किया जाता है।)

इस वर्ष 17 अक्तूबर, 2016 ई. को तुलाऽर्क प्रवेश प्रातः 06 घं., 31 मिं. पर है, परन्तु जालन्धर (पं.) में सूर्योदय 6 घं. 35 मिं. है, अतः सूर्य प्रवेश सूर्योदय से पूर्व (पहिले) होने से जालन्धर, अमृतसर, जम्मू, पश्चिमी राजस्थान आदि क्षेत्रों में तुला संक्रान्ति 16 अक्तूबर को होने से यहाँ रसेश पद **सूर्य (रवि)** होगा, जबकि 6 घं. 31 मिं. से पूर्व (पहिले) सूर्योदय होने वाले स्थलों (चण्डीगढ़, हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली तथा सम्पूर्ण मध्य-पूर्वी भारत) पर यह पद चन्द्रमा के पास रहेगा। **(विशेष विवरण के लिए पृ. 89 व 90 देखें।)**

(क) रसेश सूर्य का फल–

रसपतौ तरणी धरणो तदाविरस भागरताल्प पयोधरा।
वसन–तैल–घृतप्रिय–मानवाः सुखरसं न भुनक्ति महीपतिः।।

अर्थात् रसाधिपति सूर्य होने से उपयोगी वर्षा की कमी रहे। दूध, रसादि वाले फलों का उत्पादन कम हो। घी, मक्खन, तेल, खाद्य-तेल, वस्त्रादि की भी न्यूनता हो अर्थात् महंगे होंगे। प्रजा एवं प्रशासक वर्ग में सुख की कमी रहे। सामान्य लोगों को विविध प्रकार की उलझनों, परेशानियों एवं गम्भीर आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा।

(ख) रसेश चन्द्र का फल–

यदि विधौ रसपे भुवि मानवो नवनवां युवति बुभुजे प्रियाम्।
जलधरा बहुवारि विधायका रसवती धनधान्यवती मही।।

अर्थात् चन्द्रमा रसेश हो, तो मनुष्य युवतियों के नए-नए रूपों से आकर्षित होकर उनसे सम्बन्ध रखें तथा विलासमय जीवन-यापन करने लगते हैं। बादलों से पर्याप्त मात्रा में जल बरसे। ईख, गुड़, दूध, तेल व अन्य रसदार पदार्थों की पैदावार में विशेष वृद्धि होगी तथा पृथ्वी पर लोगों में धन-धान्य, ऐश्वर्य, भोग्य आदि पदार्थों का प्रसार बढ़ेगा।

(7) नीरसेश (धातुओं के स्वामी) शनि का फल–

अयः पिण्डादि–लोहानां कृष्णवस्त्रादि वस्तुनाम्।
अर्घवृद्धिः प्रजायेत मन्दे नीरस–नायके।।

अर्थात् नीरसेश (धातुओं के स्वामी) शनि होने से स्टील, लोहा एवं लोह निर्मित कलपूर्जे, कच्चा लोहा, कोयला तथा अन्य काले वर्ण की वस्तुएं जैसे-पैट्रोलियम, डीज़ल, तेल, क्रूड-ऑयल, औद्योगिक मशीनरी, काले एवं ऊनी वस्त्र, उड़द, काली मिर्च, लकड़ी, दालचीनी, गर्म-मसालों व अन्य वस्तुओं के भावों में विशेष तेजी (वृद्धि) होती है।

(8) फलेश (फलों का स्वामी) मंगल का फल–

फलपतिर्यदि भूतनयो भवेन्न बहुपुष्प फलान्वित–पादपाः।
गदभयान्वित देश–जनास्तदा नृपतयो बहुविग्रह–कारकाः।।

अर्थात् फलों का स्वामी **मंगल** हो, तो वृक्षों पर फल-फूल, वनस्पतियों, औषधियों की पैदावार कम हो। लोगों में अनेक प्रकार के (नानाविविध) क्लिष्ट रोगों से कष्ट एवं भय हों। राष्ट्राध्यक्षों (प्रशासकों) में परस्पर संघर्ष, टकराव एवं युद्ध-भय की स्थिति बने।

(9) धनेश शुक्र का फल–

द्रविणपो भृगुजो द्रविणैर्युताः समधना सकलाः ननु मानवाः।
समसुखाः क्रयविक्रय जीविनो नृपतयो जनपालन–तत्पराः।।

अर्थात् **शुक्र धनेश** (कोशपति) हो, तो सामान्य लोग भी सरकारी नीतियों द्वारा लाभान्वित होंगे अर्थात् सरकारी नीतियों से निम्न वर्ग के लोग भी लाभ प्राप्त करने में सफल होंगे। जनता का जीवन-स्तर ऊँचा उठे, जनता धनवान् हो, धन-धान्य सुविधाएं समान रूप से उपलब्ध होंगी। क्रय-विक्रय करने वाले व्यापारी लोगों को लाभ व उन्नति में समान रूप से लाभ व सुख के अवसर प्राप्त होंगे। प्रशासकवर्ग लोक हितकारी योजनाओं एवं कार्यों में तत्पर रहेंगे।

(10) दुर्गेश (सेनापति) मंगल का फल–

अवनिजो गढ़नायकतां गतो विविध–दुःख–वियोग–समन्वितः।
जनपदेषु जनाः क्रय–विक्रये भय विशेषतया न फलं क्वचित्।।

अर्थात् दुर्गेश (सेना का स्वामी) **मंगल** होने से सर्वसाधारण लोग (रोग, महंगाई, आवश्यक वस्तुओं की कमी, असुरक्षा एवं कठोर सरकारी नियमों आदि) अनेक प्रकार के दुःखों एवं परेशानियों से व्याकुल (पीड़ित) रहें। वियोग, सम्बन्ध-विच्छेद (Divorce) आदि की घटनाएं अधिक घटित होंगी। क्रय-विक्रय में लगे व्यापारी लोग (पेचीदा सरकारी नीतियों के कारण) व्यापार में विशेष रूप से लाभान्वित न हो पाएँगे।

नवमेघों में 'नील' नामक मेघ का फल–

सत्पयोदिशति गोकुल पूर्णा वस्त्रताखिल महीपरिपूर्णा।
नीलनाम्नि जलदे जलवृष्टिर्जायते सकल मानव–तुष्टिः।।

अर्थात् **'नील'** नामक मेघ हो, तो उस वर्ष गाय आदि चौपाय पशु दूध पर्याप्त मात्रा में देंगे। रूई, कपास, वस्त्रों आदि का उत्पादन भी अधिक हो। वर्षा भी अच्छी होगी, लोगों में सुख-सुविधाओं की वस्तुओं का प्रसार अधिक हो। कृषक वर्ग एवं सर्वसाधारण जनता सन्तुष्ट रहें।

चतुर्मेघ-विचार–आवर्तकादि चतुर्मेघों में **'आवर्त'** नामक मेघ है।

फल–"आवर्ते वृष्टिहानिः स्यात्'–अर्थात् इस वर्ष देश के अनेक प्रान्तों में खण्ड एवं अनोपयोगी वर्षा होगी। कुछ क्षेत्रों में वर्षा की कमी रहेगी। कुछ क्षेत्र में अकाल तथा दुर्भिक्ष की स्थिति रहे।

द्वादश नागों में 'अश्वतर' नामक नाग का फल–

यस्मिन् अब्दे भुजंगेन्द्रो जायतेश्वतराभिधः।
नववर्षतिजलं व्रजीतदासस्यं विनश्यति।।

अर्थात् '**अश्वतर**' नामक नाग होने से मेघ उपयुक्त एवं उपयोगी वर्षा नहीं करते। कुछ प्रान्तों में चावल, मक्की आदि अनाजों की फसलों के सूख (खराब) हो जाने का भय होता है। फलस्वरूप कुछ स्थलों पर अकालजन्य परिस्थितियां बनेंगी।

सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश फल–वि. २०७३
(वर्षा, कृषि एवं वायुमण्डल विचार)

सूर्य आर्द्रा प्रवेश कुं.
21 जून, 2016 ई., 22घं. 59मिं.

वि. संवत् २०७३ में सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा परं द्वितीया तिथि, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र एवं ब्रह्म योग कालीन रात्रि 10 बजकर 59 मिनट, **21 जून, मंगलवार** को कुम्भ लग्न में प्रवेश करेंगे। सूर्य आर्द्रा प्रवेश कालीन कुम्भ लग्न उदित हुआ है। कुम्भ राशि वायु तत्त्व राशि है। कुम्भ लग्नेश शनि (वायु-तत्त्वकारक) दशमस्थ जल-तत्त्व राशि वृश्चिकस्थ है। आकाश तत्त्व ग्रह गुरु की लग्नस्थ चरसंज्ञक केतु व वायुकारक राशि कुम्भ पर शुभ दृष्टि है। परन्तु जलतत्त्वकारक ग्रह चन्द्रमा एवं शुक्र अग्नि व वायु तत्त्व राशियों में स्थित है। शुक्र 9 जुला. तक अस्त भी रहेगा।
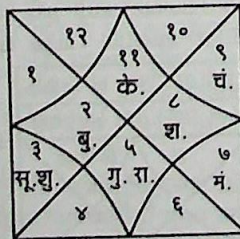
लग्न पर गुरु की दृष्टि तथा लग्नेश शनि जलतत्त्व राशि (वृश्चि.) में होने से 21 जून के बाद भारत में व्यापक रूप से मानसून का प्रारम्भ हो जाएगा। चार ग्रह (सूर्य, मंगल, शुक्र, केतु) वायु तत्त्व राशियों में होने से पर्याप्त वायु वेग अर्थात् बादल चाल होने के बावजूद जल-वर्षा की कमी रहेगी। यद्यपि गुरु-शनि के कारण कुछ स्थलों पर पर्याप्त वर्षा होने के बावजूद अनुकूल एवं उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी। कहीं अतिवर्षा से.बाढ़ादि का भय तो कहीं अल्प वर्षा से फसलों को क्षति पहुँचने के संकेत हैं, अकाल-जन्य परिस्थितियां बनें। मेघेश मंगल भी वायुतत्त्व राशि तुला में होने से दुर्भिक्ष, खाद्यान्न में कमी तथा तापमान में वृद्धि होगी। मौसम एवं वर्षा प्रायः अनिश्चित एवं अनियमित हो। अग्निकाण्ड, भूस्खलन, तेज़ आँधियां (वायु-प्रकोप) अधिक रहें। लग्न पर गुरु की दृष्टि से यद्यपि कृषि-उत्पादन में वृद्धि होगी, परन्तु गेहूँ, गन्ना, मक्का तथा भूमि के नीचे पैदा होने वाली फसलों की पर्याप्त आकांक्षित पैदावार नहीं हो सकेगी। फलस्वरूप मूल्यों में वृद्धि होगी।

परन्तु आर्द्रा प्रवेश द्वितीया तिथि कालीन होने से सरकारी नीतियों तथा आयात-निर्यात आदि के कारण गेहूँ, दालें आदि सभी प्रकार के धान्य तथा वस्त्रादि के भावों में मन्दी अर्थात् सस्ते होंगे-**तर्हिस्यात् सर्वधान्यानां वस्त्रादीनां विवर्धनम्।।**

सूर्य आर्द्रा प्रवेश मंगलवार को होने से किसी राजनेता की शस्त्राघात, दुर्घटना आदि में आकस्मिक मृत्यु का भय रहे–

भानोर्वेश पृथ्वीसूनोर्वारे रौद्रेधिष्ण्ये चेत्स्यात्।
शस्त्राघातात्पृथ्वीशानां निःसंदेहं मृत्युस्तर्हि।।

आर्द्रा प्रवेश पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र कालीन होने से सभी राजनेताओं, पार्टियों तथा राष्ट्राध्यक्षों में परस्पर विरोध एवं आलोचनात्मक व्यवहार रहेगा तथा ब्रह्म योगकालीन आर्द्रा प्रवेश होने से वर्षा मध्यम रूपेण ही हो पाएगी तथा सभी प्रकार के धान्यों का मध्यम उत्पादन ही हो पाएगा।

आर्द्रा में सूर्य का प्रवेश रात्रि के समय हुआ है। फलस्वरूप सभी लोगों के लिए सुखमय परिस्थितियां बनें। लोगों में भोग-विलास अधिक रहे।-**रात्रौ स्थितार्द्रा सर्वसुखायलोके। भोगप्रदत्तेखलु मध्यरात्रेः।।**

शनि की दृष्टि–2 नवम्बर, सन् 2014 ई. से शनिदेव **वृश्चिक राशि** में संचार कर रहे हैं। आगामी वि. संवत् २०७३ में शनि 25 जनवरी, 2017 ई. तक वृश्चिक राशि में संचार करेंगे। वृश्चिक राशि संचारकालीन शनि की मकर, वृष तथा सिंह राशियों पर दृष्टि रहेगी तथा तुला, वृश्चिक एवं धनु राशि वाले जातकों/राष्ट्रों पर शनि साढ़ेसति का प्रभाव अभी रहेगा। शनि की दृष्टि उत्तर दिशा की तरफ रहेगी। फलस्वरूप उत्तरी प्रान्तों तथा उत्तरी देशों (विशेषकर वृष, सिंह एवं मकर राशि वाले देशों/प्रान्तों) जैसे–आयरलैण्ड, मध्यप्रदेश, आस्ट्रेलिया, ईरान, सूरत, जर्मनी, बिहार, सिक्किम, दिल्ली, फ्रांस, अफगानिस्तान, छत्तीसगढ़, इटली, महाराष्ट्र, पंजाब, पश्चिमी-बंगाल, बंगलादेश, उत्तराखण्ड, हि.प्र. में प्राकृतिक प्रकोप, बाढ़, तूफान, भूकम्प, आतंकवादी विस्फोट एवं हिंसक घटनाएं, भूकम्प, भूखमरी तथा राजनैतिक क्षेत्रों में आरोप-प्रत्यारोप, पूर्वी राज्यों में सत्ता-परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएं बनेंगी।

26 जनवरी, सन् 2017 ई. से संवतान्त तक शनि धनु राशि में संचार करेंगे। धनु राशि संचारकालीन शनि की कुम्भ, मिथुन तथा कन्या राशियों पर दृष्टि रहेगी तथा वृश्चिक, धनु एवं मकर राशि वाले जातकों/राष्ट्रों पर शनि-साढ़ेसाती का प्रभाव रहेगा। **शनि की दृष्टि पश्चिम दिशा अर्थात् पश्चिमी गोलार्द्ध की तरफ रहेगी।** अतएव पश्चिमी प्रान्तों तथा पश्चिमी देशों (विशेषकर कन्या, वृश्चिक, धनु, कुम्भ तथा मीन राशि वाले देशों/प्रान्तों) जैसे–ईराक, टर्की, पाकिस्तान, राजस्थान, मोरक्को, ब्राज़ील, दिल्ली, महाराष्ट्र, मुम्बई, उड़ीसा, स्पेन, गुजरात, आस्ट्रेलिया, उत्तर-प्रदेश, महाराष्ट्र, पंजाब, बनारस में राजनैतिक-

अस्थिरता, प्राकृतिक प्रकोप, समुद्री तूफान, सत्ता-परिवर्तन, कहीं भूकम्प आदि की प्रबल सम्भावनाएँ बनेंगी। इन प्रभावित राशि वाले देशों/प्रान्तों/नगरों में आन्दोलन, हत्याकाण्ड, भयंकर रोग से व्यापक जन-धन हानि का संकेत है।

गुर्राफल विचार (सन् 2016-17 ई.)

इस्लामी मतानुसार एकं (यकम) मुहर्रम से ही नया हिजरी सन् आरम्भ होता है।

वि. संवत् 2072 में 15 अक्तू., 2015 ई., गुरुवार को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1437 शुरु होगा। गुरुवार हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से इस्लामी वर्ष 1437 (2015-16 ई.) (15-10-2015 से 2-10-2016 ई. तक) का बादशाह गुरु (बृहस्पति) होगा।

इस्लामी नववर्ष कुण्डली (1)

1, 12 के., 11, 2, 10, 3, 9, 4, 6 सू. बु. रा., 8 श., 5 मं.गु.शु., 7 चं.

हिजरी सन् 1437 (2015-16)

सूर्यास्त 14 अक्तू., 2015 ई.

ईस्लामी मतानुसार निर्धारित नववर्ष कुण्डली नं. 1 में मीन लग्न उदित हुआ है। साल का बादशाह और लग्नेश गुरु षष्ठभावगत अग्नितत्त्व राशि सिंह में मंगल-शुक्र युक्त होकर शनि द्वारा दृष्ट है। सप्तम भाव (वैदेशिक/अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों, युद्ध, विवाद, विदेशी व्यापार का भाव) में सू.-बु.-रा. का सम्बन्ध तथा मंगल-शनि के मध्य परस्पर दृष्टि सम्बन्ध (4-10) होने से ईराक, सीरिया, टर्की, पाक, इज़रायल-गाज़ा में भयानक युद्धमय वातावरण बनेगा। ग्रहस्थिति अनुसार आई.एस.आई.एस. तथा अलकायदा ग्रुप द्वारा मुस्लिम कट्टरपंथी देशों-ईराक, अफगानिस्तान, सीरिया, लीबिया में आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाओं को अंजाम देने के अतिरिक्त अल्प-मुस्लिम देशों फ्रांस, इण्डोनेशिया, आस्ट्रेलिया, जर्मनी आदि देशों में भी विस्फोटक घटनाओं को अंजाम देंगे। मुस्लिम राष्ट्रों में फैली आतंकवाद की आग सम्पूर्ण विश्व में धीरे-धीरे फैल जाएगी। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक (बगदाद), टर्की आदि मुस्लिम देशों में आन्तरिक एवं राजनीतिक हालात अत्यन्त असमंजसपूर्ण, अस्थिर एवं संघर्षपूर्ण रहेंगे। अमरीका आदि साधन-सम्पन्न राष्ट्रों द्वारा आर्थिक व सैनिक सहायता के बावजूद आई.एस.आई.एस. तथा तालिबान ग्रुप अपनी जड़े धीरे-धीरे मज़बूत बनाते जाएंगे। इन विरोधी गुटों द्वारा ज़बरदस्त विस्फोटक घटनाएं अंजाम दी जा सकती हैं। साधारण जनता (लोगों) को एवं सत्तारूढ़ फौजी ताकतों का काफी नुकसान होगा। महंगाई, धार्मिक, उन्माद, कहीं गृहयुद्ध व हिंसक घटनाएं अधिक हों। कहीं बाढ़, भूकम्पादि प्राकृतिक आपदाओं के कारण भी जन-धन की क्षति होने के संकेत मिलते हैं।

वि. संवत् 2073 में 3 अक्तू., 2016 ई. को 1 मुहर्रम (यकम) के दिन हिजरी सन् 1438 शुरु होगा। सोमवार को हिजरी सन् का प्रारम्भ होने से मुस्लिम (इस्लामी) वर्ष 1438 (2016-17 ई.) का बादशाह चन्द्रमा होगा।

ईस्लामी नववर्ष प्रवेश कुण्डली में मीन लग्न उदित हुआ है। लग्नेश गुरु सप्तमस्थ शत्रु राशिगत सूर्य के साथ अस्तगत होकर स्थित है। कन्या राशि जोकि पाकिस्तान, ईराक, टर्की आदि मुस्लिम देशों में प्रभावराशि भी है। सप्तमेश (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का भाव) बुध षष्ठ भावस्थ राहु युक्त होकर शनि द्वारा दृष्ट है। साल का बादशाह चन्द्रमा अष्टमस्थ शुक्र युक्त है। ग्रहस्थिति अनुसार पाकिस्तान, ईराक, अफगानिस्तान, सूडान, टर्की आदि कट्टरपंथी मुस्लिम राष्ट्रों को ज़बरदस्त राजनीतिक (स्यासी), सामाजिक व आर्थिक चुनौतियों का सामना रहेगा। पाकिस्तान, बंगलादेश सहित अनेक मुस्लिम राष्ट्रों के नेता निज़ी स्वार्थपूर्ति और अपनी खुशहाली के लिए प्रयासरत रहेंगे। समाज में ऐश-इशरत, सुख-साधन एवं विलासमय प्रवृत्तियाँ बढ़ेंगी। जातीय एवं साम्प्रदायिक झगड़े, बम-विस्फोट भी अधिक होंगे। रूढ़िवादी एवं कट्टरवादी अधिकांश मुस्लिम देश (अफगानिस्तान, ईराक, पाकिस्तान आदि) विश्व के शान्तिप्रिय देशों की आलोचना एवं निन्दा के पात्र बनेंगे। गुप्त रूप से इस्लामी देशों में नए समीकरण बनेंगे। मध्य एशिया में ज़हरीला एवं युद्धमय राजनीतिक वातावरण बन जाएगा। कई आतंकवादी संगठनों जैसे-आई.एस.आई.एस., अलकायदा आदि के प्रभुत्व को ठेस पहुँचेगी। समृद्ध एवं सम्पन्न देश इन आतंकी संगठनों के खिलाफ एकजुट होकर निर्णय लेने की तरफ बढ़ेंगे।

इस्लामी नववर्ष कुण्डली (2)

1, 12, 11 के., 2, 10, 3, 9 मं., 4, 6 सू. गु., 8 श., 5 बु. रा., 7 चं. शु.

हिजरी सन् 1438 (2016-17)

सूर्यास्त 2 अक्तू., 2016 ई.

—वर्षादि के विश्वामान—

वर्षादि विश्वा का कुल मान २० विश्वे होते हैं। जिस पदार्थ (विषय) के विश्वा 1 से 20 अंकों के मध्य जितने अधिक (20 अथवा उसके समीपस्थ) होंगे, उस वस्तु के उत्पादन की मात्रा उतनी अधिक होंगी। जैसे-आगे वि. संवत् २०७३ में धान्य के विश्वा १५ लिखे हैं, इसका तात्पर्य यह हुआ कि आगामी वर्ष धान्य का पर्याप्त उत्पादन होगा।

वर्षा १३, धान्य १५, तृण ७, शीत ७, तेज १७, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, क्षुधा ९, तृषा ११, निद्रा ५, आलस्य ७, उद्यम १३, शान्ति १५, क्रोध १३, दम्भ ५, लोभ ३, मैथुन १५, रस ९, फल १३, उत्साह ११, उग्रता १३, पाप १३, पुण्य १, व्याधि ११, व्याधिनाश १५, आचार १५, अनाचार ३, मृत्यु १७, जन्म ९, देशउपद्रव १५, देशस्वास्थ्य ३, चोरभय ९, चोरनाश १, अग्नि १५, अग्निशान्त १, उद्भिज ७, जरायुज ३, अंडज १३, स्वेदज ९, टिड्डी ९, तोता ५, मूषक १३, सोना १३, तांबा १५, स्वचक्र १७, परचक्र ५, वृष्टि ७, अनावृष्टि १५ तथा संवत् विश्वा ५ हैं।

जल आदि चार स्तम्भों का फल-वि. संवत् २०७३

(1) जल स्तम्भ-चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र का सम्पर्क 46.86% है। जलस्तम्भ मध्यम बली ही है। फलस्वरूप आगामी वर्ष कुछ प्रदेशों में मध्यम-स्तरीय वर्षा होगी। मध्य एवं पूर्वी क्षेत्रों में जैसे बिहार, उड़ीसा, असम, प. बंगाल, उ. प्रदेश आदि में प्रतिकूल एवं खण्ड वर्षा होगी। अनियमित वर्षा के कारण जन-धन हानि अर्थात् कहीं बाढ़ तो कहीं वर्षा की कमी से अकाल-जन्य एवं दुर्भिक्ष की परिस्थितियां बनेंगी। अतः वर्ष में

पेयजल का संकट, इस संदर्भ में जल-बोर्ड आदि सरकारी विभागों में तालमेल की कमी रहेगी। भूमिगत जलस्तर में प्रारम्भ में कुछ उत्साहवर्धक परिणाम आने के बावजूद पुनः गिरावट आ जाएगी। विद्युत् उत्पादन तथा सिंचाई हेतु नदियों में पर्याप्त जल-भण्डार की कुछ कमी का अनुभव होगा।

(2) तृणस्तम्भ–वैशाख शुक्ल प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र का सम्पर्क 31.63 प्रतिशत है। तृणस्तम्भ गतवर्ष की भान्ति निर्बल रहने से तिनके, बांस, घास, पुष्पों, भूसे से निकलने वाले मुख्य अनाज, वनस्पतियों, जड़ी-बूटियों तथा अन्य वन-औषधियों के उत्पादन व उपलब्धता में विचारणीय कमी रहेगी। पशुचारे का भी अभाव रहे। मानसून के विलम्ब या अनियमित होने से गर्मी की अधिकता, खड़ी फसलों का सूखना, सब्ज़ियों आदि की कम पैदावार तथा कहीं अत्यधिक गर्मी, ऊष्णता व कहीं अति वर्षा के कारण लोगों व पशु-पक्षियों को कष्ट रहे। आयुर्वैदिक औषधियां तथा दूध, डायरी उत्पाद महंगे होंगे।

(3) वायुस्तम्भ–ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा को मृगशिर नक्षत्र का सम्पर्क 80.41 प्रतिशत है। वायुस्तम्भ सबल होने से कुछ प्रदेशों में अनुकूल वायु-वेग एवं अनुकूल मेघ संचार से वर्षा का क्रम अच्छा रहेगा। ग्रीष्म ऋतु में (वैशाख-ज्येष्ठ मासों) स्वाभाविक रूप से होने वाली लू और तेज़ हवाएं चलेंगी। अर्थात् ऋतु-अनुसार वायु-वेग रहेगा। परन्तु वायु-स्तम्भ की दृढ़ता से दक्षिणी-पूर्वी तटीय प्रदेशों में विशेष रूप से तथा उत्तरी-भारत में भी भीषण वायु-वेग, चक्रावात एवं तेज़ आँधियों से खड़ी फसलों, धनादि सम्पदा को हानि पहुँचेगी।

(4) अन्न-स्तम्भ–आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का सम्पर्क 90.79 प्रतिशत रहकर बहुत शुभ है। तृण-स्तम्भ निर्बल एवं अनियमित मानसून रहने के बावजूद खाद्यान्न का उत्पादन व उपलब्धता समुचित रहेगी। कुछ प्रदेशों में गेहूँ, चने, चावल, मक्का, ईख, धान्यादि का उत्पादन यथेष्ठ रहेगा। शासन-तन्त्र को अन्न-भण्डारण व अनाज-वितरण सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। इस सम्बन्ध में विशेष नीति-योजना निर्धारण एवं निर्णय लिए जाएंगे।

ऊपर वर्णित चारों स्तम्भ वर्ष (संवत्) में किसी भी देश की आर्थिक सम्पन्नता को समझने एवं जानने के लिए विशेष महत्त्व रखते हैं क्योंकि देश की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से वर्षा, मानसून तथा अन्न उत्पादन पर ही निर्भर करती है। आगामी वर्ष (वि. संवत् २०७३) में जलस्तम्भ मध्यम, तृणस्तम्भ निर्बल, परन्तु वायु-अन्नस्तम्भ सुदृढ़ होने से भारत की अर्थव्यवस्था प्रगति-पथ पर रहेगी।

आर्षमान द्वारा रक्षा फल–विचार

ये चार आर्षमान वर्ष में जनता व देश की सुरक्षा, कानून-व्यवस्था, सामाजिक शान्ति एवं सौहार्द, नैतिक मूल्यों, समृद्धि एवं सौभाग्य का निर्धारण करते हैं। आर्षमान भी स्तम्भों की भान्ति विशेष तिथियों एवं नक्षत्रों के संयोग से निर्धारित किए जाते हैं। इनकी निर्बलता देश में उपद्रव, दुर्घटनाओं, आपदाओं, विस्फोट, अशान्ति व लोगों के चारित्रिक पतन को निमन्त्रित करती हैं। आर्ष शब्द का अर्थ है–ऋषियों से सम्बन्धित, ऋषियों का। आर्षमान का मूलतः [illegible] माना। तिथि व नक्षत्र का संयोग जितना अधिक होगा। आर्षमान उतना ही अधिक बलवान समझा जाएगा।

(1) प्रथम आर्ष–गतवर्ष की पौष अमावस्या को मूल नक्षत्र के स्पर्श से माना जाता है। मूल नक्षत्र का सम्पर्क 9.15 प्रतिशत है।

(2) द्वितीय आर्ष–वैशाख शुक्ल तृतीया को रोहिणी नक्षत्र का सम्पर्क 39.30 प्रतिशत है।

(3) तृतीय आर्ष–श्रावण पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र का सम्पर्क 34.81 प्रतिशत है।

(4) चतुर्थ आर्ष–कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र का सम्पर्क 14.53 प्रतिशत है।

फल–इस वर्ष चारों आर्षदुर्ग लगभग निर्बल हैं। केवल द्वितीय एवं तृतीय दुर्ग मध्यम से भी कुछ कम बली हैं। चारों दुर्गों का विचार चिन्ताजनक स्थिति का संकेत कर रहा है। सुरक्षा, समृद्धि एवं राजनैतिक दृष्टि से यह वर्ष विशेष उलझन एवं असमंजसपूर्ण रहेगा। कहीं आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाओं के कारण आन्तरिक सुरक्षा को खतरा रहेगा। भारतीय उपमहाद्वीप में हिंसा, संघर्ष, कानून का उपहास, यान दुर्घटनाएं, राजनैतिक दलों में अन्दरूनी विवाद, विरोध, सरकारी क्षेत्र में स्थापित जिम्मेवार लोगों का चिन्ताग्रस्त होकर बचाव की मुद्रा ग्रहण करना अर्थात् **नीतियों के क्रियान्वन में विलम्ब करना, धरने, प्रदर्शन आदि का द्योतक है।** सामान्य प्रजा में युद्धादि का भय बनेगा। प्राकृतिक आपदाओं से भी देश की आर्थिक, सामाजिक एवं सुरक्षा की स्थिति चिन्तनीय हो सकती है। द्वितीय एवं तृतीय आर्ष (दुर्ग) कुछ बली होने से अनेक अवरोधों के बावजूद अन्तर्राष्ट्रीय सन्धियों, परमाणु ऊर्जा तथा अन्य ऊर्जा एवं सुरक्षा के क्षेत्र में भारत उल्लेखनीय प्रगति करेगा।

▲ सिंहस्थ एवं कन्यास्थ गुरु का प्रवेशफल-2016 ई. ▲

सन् 2016 ई. के आरम्भ में गुरु सिंह राशि में संचरणशील है। ता. 8 जन. से सिंह राशि में ही वक्री होकर 9 मई को मार्गी होगा। ता. 11 अग., 2016 ई. से गुरु कन्या राशि में प्रविष्ट होगा। सिंह व कन्या–दोनों राशियों में संचार का फल शास्त्र में इस प्रकार वर्णित है–

सिंह राशि में गुरु-संचार का फल (वर्षारम्भ से 10 अगस्त तक)

यदासिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं तत्र जायते।
मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहुसस्या च मेदिनी।।

अर्थात् बृहस्पति देव जब सिंह राशि में होवे, तो उस वर्ष सुभिक्ष हो अर्थात् गेहूँ, धान्य, चना आदि अनाज का उत्पादन पर्याप्त होगा एवं वर्षा अनुकूल तथा वेग के साथ होगी। विभिन्न प्रकार की फसलें, मिश्रित करके नए फल-फूल, तृण आदि की पैदावार की जाएगी। गायें, चौपाये आदि दूध अधिक देंगे। भैंस, गाय आदि चौपायों में भी तेजी होगी। देवताओं, विद्वानों, महापुरुषों एवं ब्राह्मणों का आदर-सम्मान भी किया जाएगा। यद्यपि प्रजा में क्लिष्ट रोग भय तथा व्यर्थ के साम्पर्दायिक वाद-विवाद भी होंगे। आषाढ़ और भाद्रपद मास में अच्छी वर्षा होगी। श्रावण में कम वर्षा तथा कार्तिक में सुकाल अर्थात् शुभ वातावरण एवं समय होगा।

देवब्राह्मण पूजास्यान्नराणां मान्यतासताम्।
रोगाविवादश्चान्योन्यं चतुष्पद महर्घता।।

कन्या राशि में गुरु का प्रवेश-संवत् २०७३
(11 अगस्त से संवातन्त तक)

कन्याराशिगते जीवे मेघवृष्टिः तथोत्तमा।
सुभिक्षं सर्वधान्यानाम् आरोग्यं लभते जनः।।

अर्थात् बृहस्पति जब कन्या राशि में प्रविष्ट हो, तो उस वर्ष अनुकूल एवं पर्याप्त वर्षा के योग बनते हैं। उपयोगी एवं समयानुसार वर्षा होने से गेहूँ, चावल, चना, मक्की, बाजरा आदि सम्पूर्ण धान्यों का यथेष्ठ उत्पादन होगा एवं धान्यों के भावों में कुछ कमी बनेगी। सभी मनुष्यों (लोगों) में आरोग्यता के प्रति जागरुकता फैले तथा सभी अपने-अपने कार्यों में संलग्न तथा कुशल रहेंगे। परन्तु उस वर्ष में गाय, भैंस आदि चौपायों में पीड़ा/रोगादि फैले। कार्तिक से लेकर वैशाख तक सुभिक्ष रहता है। इस समयावधि में धान्य संग्रह करने से भाद्रपद में दोगुणा लाभ होता है। चैत्र या वैशाख में राजस्थान आदि मरु-प्रदेश में सत्ता-परिवर्तन (छत्रभंग) के योग बनेंगे। घी, तेल महँगे होंगे।

मरुदेशे छत्रभंगश्चैत्रेवामाधवे भवेत्।
गोधूमघृततैलानि महर्घाणि समादिशेत्।।

सोमवती, भौमवासरी आदि अमावस्या का माहात्म्य

सोमवार से युक्त अमावस्या का शास्त्रों में विशेष माहात्म्य कहा गया है। स्कन्द पुराण के अनुसार सोमवार और अमावस्या का योग कभी-कभी होता है। इस दिन भगवान शिव के दर्शन करके पूजन आदि करने का विशेष महत्त्व होता है। विशेषकर सोमेश्वर महादेव की पूजार्चना करने से कोटि (करोड़ों) यज्ञों का फल प्राप्त होता है–

अमासोमेन संयुक्ता कदाचिद् यदि लभ्यते। तस्यां सोमेश्वरं दृष्ट्वा कोटियज्ञफलं लभेत्॥

सोमवती अमावस्या को तीर्थ स्थान, जप, पाठ एवं ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दक्षिणादि सहित दान करना विशेष पुण्यप्रद माना गया है।

पुरुषार्थ चिन्तामणि के अनुसार, यदि अमावस्या सोमवार या मंगलवार अथवा गुरुवार को हो तो उस योग के पर्व को **पुष्कर योग** कहते हैं। इन योगों का फल सूर्यग्रहणों में किए हुए दान-पुण्य से सौ गुणा अधिक होता है–

अमा सोमे तथा भौमे गुरुवारे यदा भवेत्। तत्पर्व पुष्करं नाम सूर्यपर्वशताधिकम्॥

स्नानदान आदि पुण्य कर्मों में मंगलवारी अमावस्या भी सोमवती अमावस्या के समान मनानी चाहिए। यदि मंगलवारी अमावस्या हो तो गंगा के स्नानमात्र से सहस्त्र गौओं के दान का फल प्राप्त होता है–

स्नानदानादौ भौमवती अपि सोमवती समा ज्ञेया। अमावस्या भवेद्वारे यदा भूमिसुतस्य वै। जाह्नवी स्नान-मात्रेण गोसहस्त्रफलं लभेत्। –हेमाद्रौ शातातप

सोमवार से युक्त अमावस्या हो तो वहाँ अनन्त फल देने वाली और पितृगणों को दिया हुआ श्राद्ध अक्षय होता है–

सोमवारेण संयुक्ता अमावस्या यदा भवेत्। तत्रानन्तफलं श्राद्धं पितृणां दत्तभक्षयम्॥

सोमवती एवं मंगलवारी अमावस्या के विशिष्ट योग में पितृदोष शान्ति, सम्पदा सम्बन्धी परेशानियां, लड़के/लड़की के विवाह में विलम्ब, सन्तान एवं क्लिष्ट रोगों की शान्ति तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्म शुद्धि, स्नानदान, जप-पाठ आदि का विशेष माहात्म्य होता है। इस दिन व्रत धारण करके भगवान श्री विष्णु एवं शिवपूजन, चन्द्रपूजन तथा पीपल वृक्ष की गंगाजल युक्त दुग्ध, पुष्पाक्षत, एवं पुष्प-फल-मिष्ठान से धूप-दीप आदि से पूजन करके 108 प्रदक्षिणा के उपरान्त ब्राह्मणों को दक्षिणा सहित भोजन, वस्त्र, फलों का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है।

वर्ष 2016-17 ई. में प्रमुख अमावस्याएँ

पौष (7/54 बाद) शनैश्चरी	9 जन. शनि	श्रावण (भौमवती)	2 अग. मंग.
माघ (सोमवती)	8 फर. चंद्र	मार्गशीर्ष (भौमवती)	29 नवं. मंग.
फाल्गुन (10/34 बाद) (पितृकार्येषु)	8 मार्च मंग.	चैत्र (सोम) पितृकार्येषु	27 मार्च सोम
ज्येष्ठ (11/50 बाद) शनैश्चरी (पितृकार्येषु)	4 जून शनि	चैत्र (भौम) स्नानदान	28 मार्च मंग.
आषाढ़ (सोमवती)	4 जुला. सोम		

वि. संवत 2073 में ग्रहों की आकाशीय कौंसिल व मुख्य भविष्यवाणियाँ

वि. संवत् २०७३ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल व मुख्य भविष्यवाणियां

- नया 'सौम्य' नामक संवत् होने से देश में सभी प्रकार के खाद्यान्नों का उत्पादन अच्छा हो, प्रजा में रोगों की कमी, शासनतन्त्र अर्थात् सरकार द्वारा शान्ति, कानून एवं न्याय व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने के लिए विशेष नियम व कानून बनाए जाएंगे। देश में उपयोगी एवं अनुकूल वर्षा होगी।
- राजा शुक्र तथा मन्त्री बुध होने से समाज एवं मीडिया में राग-रंग, गायन, नृत्यादि के कार्यक्रम, पुरुष व स्त्रियों के परस्पर सम्बन्धों में अश्लीलता, स्वच्छन्दता व अमर्यादित व्यवहार का अशोभनीय प्रदर्शन बढ़ेगा। प्रत्येक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी एवं प्रभाव बढ़ेगा। काम-वासना सम्बन्धी अपराधों में वृद्धि होगी।
- जगत् लग्न एवं नववर्ष प्रवेश कुण्डली में स्थित ग्रहस्थिति अनुसार ईराक, पाकिस्तान, सीरिया, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम बाहुल्य देश विश्व राजनीति का ध्रुवीकरण बने रहेंगे। इस्लामी उग्रवाद एवं आई.एस. से उग्र विचारधारा के ये पोषक देश वर्तमान वैश्विक व्यवस्था को चुनौती देते रहेंगे।
- मध्य एशिया का ज़हरीला भौगोलिक राजनीतिक परिदृश्य पूरे विश्व को उत्तेजित एवं उद्वेलित करेगा। सभ्य समाज और मानवता को मज़हबी जुनून से लैस आतंकवादी तत्त्वों की देशघाती मानसिकता तथा कट्टरवाद डसता रहेगा। युद्धमय वातावरण के मध्य बड़े पैमाने पर साधारण जनता एक देश से दूसरे देश में पलायन करेगी।
- चीन, पाकिस्तान आदि कुछ राष्ट्र कुटिल व कपटपूर्ण नीतियों का प्रयोग करते हुए बाह्य तौर पर शान्ति वार्ताओं के बावजूद आन्तरिक स्तर पर भारत के साथ अविश्वास तथा अनवरत शत्रुता का माहौल रहेगा। पाकिस्तान के भीतर राजनीतिक माहौल छिन्न-भिन्न हो जाएगा।
- 29 जन. से 11 अग., 2016 ई. तक गुरु-राहु एवं मंगल-शनि योग तथा ग्रहस्थिति अनुसार मोदी सरकार का विकास के प्रति प्रतिबद्धता का भाव आरोप-प्रत्यारोप की धुंध में विलुप्त हो जाएगा। पूर्ण बहुमत के बावजूद विपक्षी आन्दोलनों, संसदीय गतिरोध व कुछ मन्त्रियों की प्रतिबद्धता में कमी से अनेक विकास योजनाओं के क्रियान्वयन में विलम्ब होगा।
- अनेक अवरोधों एवं समस्याओं के बावजूद प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश उन्नति व प्रगति पथ पर रहेगा। विश्व में भारत की छवि आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में विकसित होगी। विकास के नए प्रतिमान स्थापित होंगे। विश्व के अनेक राष्ट्र भारत से मैत्री और संवाद के लिए उत्सुक रहेंगे।
- विकास की गति में तीव्रता लाने हेतु सरकार प्रशासनिक एवं पार्लियामैंट्री ढांचे में मूलभूत परिवर्तन कर नए कानून एवं नियम लाने के लिए बाध्य हो जाएगी। राष्ट्र हित समाहित अनेक निर्णय एवं फैसले लिए जाएंगे। सरकारी लोक हितकारी योजनाओं से निम्न-निर्धन वर्ग के लोग भी लाभ प्राप्त करने में सफल होंगे।
- 14 अप्रै. से 13 मई तक सूर्य-मंगल मध्य षडाष्टक, 14 मई से 13 जून मध्य सूर्य-शनि मध्य समसप्तक योग होने से प्रधानमन्त्री एवं केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के लिए असमंजसपूर्ण एवं अनिष्टकारी समय होगा। राजनीतिक उथल-पुथल एवं मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन के संकेत हैं।
- बंगाल, बिहार, असम, केरल आदि राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा के जनाधार में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। भाजपा के विरुद्ध विपक्षी पार्टियां एकजुट एवं नए राजनीतिक गठजोड़ बना लेंगी। बिहार एवं असम में भाजपा सशक्त पार्टी के रूप में उभरेगी। यद्यपि बंगाल में भी मुख्य विपक्षी पार्टी के रूप में आएगी। कांग्रेस अभी खण्डित पार्टी के रूप में ही दृश्यमान रहेगी।

ज्योतिष शास्त्र मानव जीवन के भूत, भविष्य एवं वर्तमान काल की साकार कहानी है। मनुष्य के संचित, प्रारब्ध एवं क्रियमाण (वर्तमान) कर्मों एवं उनके शुभाशुभत्व का ज्ञान ज्योतिष शास्त्र के द्वारा ही सम्भव है। मनुष्य के भूत-भविष्य सम्बन्धी शुभाशुभ घटनाएँ, सुख-दुःख, सफलता-असफलता, लाभ-हानि, मान-अपमान, भाग्योदय के कालादि का ज्ञान भी इसी शास्त्र द्वारा किया जा सकता है। जातक के जन्म समय सौर-मण्डल एवं जन्मकुण्डली में जिस प्रकार के ग्रहों की स्थिति होती है, उन्हीं के अनुरूप मनुष्य (जीव) का बाह्य एवं अभ्यान्तरिक जीवन प्रभावित होता रहता है–

ग्रहाधीनं जगत्सर्वं ग्रहाधीना नरावराः।
सृष्टिरक्षण–संहाराः सर्वे चापि ग्रहानुगाः।। वृह.

प्रकृति के त्रिगुणात्मक गुणों की भान्ति ग्रहों में भी सत्त्व, रज एवं तमादि गुणों की न्यूनाधिकता होती है। गुरु, चन्द्रादि सत्त्वगुणी ग्रहों के प्रभाव से जातक के हृदय में करुणा, दया, परोपकारिता, उदारता, सत्यनिष्ठता आदि धार्मिक रूचियों की बहुलता होती है, जबकि शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रहों के प्रभाव से प्राणी में तामसिक प्रवृत्तियों की अभिवृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, मनुष्य के अन्तःकरण की सूक्ष्म प्रवृत्तियों के अनुसार भी ग्रह अपना शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। जो व्यक्ति मन, वचन व कर्म से किसी की हिंसा नहीं करता है, धर्म-मर्यादानुसार धन का अर्जन करता है। दानपूर्वक शास्त्र नियमों का पालन करता है–ऐसे व्यक्ति पर ग्रह कुछ अनिष्ट नहीं करते। अर्थात् अपना अनुग्रह बनाए रखते हैं–

'अहिंसकस्य दान्तस्य धर्मार्जित धनस्य च। सदा नियमस्थस्य, सदा सानुग्रहाः।।'

सभी ग्रह मनुष्य को अपने शुभ-अशुभ कर्मों के अनुसार अच्छा या बुरा फल प्रदान करते हैं। इस प्रकार ज्योतिष ग्रह-नक्षत्रों सम्बन्धी कुछ विशेष शास्त्रीय सिद्धान्त देता है जिनके द्वारा हम अपने पूर्व एवं इस लोक के कर्मों के प्रतिफल को जानकर अपने जीवन को उच्चतर स्थिति की ओर ले जा सकते हैं।

ईश्वर की अपार कृपा से उत्तरी भारत के सर्वाधिक प्रतिष्ठित एवं सर्वप्राचीन प्रकाशन **'पंचांगदिवाकर', 'मुफीद आलम जन्त्री' (उर्दू-हिन्दी-पंजाबी) एवं 'तिथ-पत्रिका' (पंजाबी)** को प्रकाशित होते हुए प्रस्तुत संवत् २०७३ (2016-17 ई.) में गौरवशाली 141 वर्ष हो जाएंगे। इस पंचांग समूह के प्रवर्त्तक एवं संस्थापक हमारे परम पूज्य वृद्धप्रतिपितामह-विश्वविख्यात मशहूर आलम पण्डित देवीदयालु जी (लाहौर वाले) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में हमारे प्रकाशनों को जो राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति एवं प्रशंसा प्राप्त हो चुकी है, वह सुविज्ञ पाठकगणों से छिपी हुई नहीं है। उत्तरी भारत में शताब्दि से अधिक वर्षों पर्यन्त ज्योतिष जगत् के क्षेत्र में हमारी पंचांग, जन्त्री एवं अन्य प्रकाशनों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। सुविज्ञ पाठकों से अनुरोध है कि वह असली व प्रामाणिक पंचांगदिवाकर, तिथ पत्रिका गुरमुखी, मुफीद आलम जन्त्री तथा हमारे पूज्य-पिता स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी का नाम व फोटो, गणितकर्त्ता पं. विवेक शर्मा (एम.ए.एल.एल.बी.) एवं पं. पंकज शर्मा तथा मुख्य वितरक **'जनरल बुक डिपो'** जालन्धर का नाम अवश्य पढ़ लिया करें, जिससे कि आप असली, शुद्ध एवं प्रामाणिक जन्त्री/पंचांग ही प्राप्त कर सकें।

गतवर्षीय दिवाकर पंचांगों में 'स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी जी' की भविष्यवाणियाँ जो अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं

स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी की वाणी एवं लेखनी में सचमुच साक्षात् माता सरस्वती देवी का वास था। आगे हम संक्षिप्त रूप में पंडित पन्ना लाल ज्योतिषी जी की उन भविष्यवाणियों का उल्लेख कर रहे हैं जो ईश्वर कृपावश अक्षरशः सत्य सिद्ध हुईं।

(1) **बंगलादेश के रूप में पाकिस्तान का विभाजन (वि. संवत् २०२७)**

(2) **कांग्रेस (ई) की पराजय** (२०३३) तथा **पुनः सत्ता में आना (२०३६) ईरान-ईराक युद्ध (वि. संवत् २०३९)**

(3) **पूर्व प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी की आकस्मिक मृत्यु (वि. संवत् २०४१)**

(4) **पूर्व प्रधानमन्त्री राजीव गाँधी की आकस्मिक मृत्यु (वि. संवत् २०४७)**

(5) **सन् 1988 में मोर्चा सरकार** (गुजराल सरकार) के पतन तथा मध्यावधि चुनाव की भविष्यवाणी स्पष्टतः पण्डित जी ने कर दी थी–वि. संवत् २०५५ के पृष्ठ 48 पर स्पष्टतः लिखा गया था–***'वर्तमान सत्तारूढ़ मोर्चा सरकार येनकेन प्रकारेन फरवरी, 1998 तक चल पाएगी, परन्तु मार्च, 1998 के उपरान्त केन्द्रीय मोर्चा सरकार का पूर्वार्द्ध भाग से पूर्व कभी भी टूटने की आशंका बनी रहेगी–ऐसे योग हैं।'*** साथ ही चुनावों से पूर्व ही 'दैनिक पंजाब केसरी' समाचार पत्र में दिनांक 19-02-1998 को ही भाजपा के पुनः सत्तारूढ़ होने की भविष्यवाणी की गई थी तथा इसी संवत् के **'पंचांगदिवाकर'** के पृष्ठ 191 पर स्पष्ट पढ़ें–आगामी लोकसभा के निर्वाचनों में भाजपा निःसन्देह **अग्रिम, बहुमत एवं सशक्त पार्टी के रूप में उभरेगी तथा केन्द्र में सत्तारूढ़ होगी।**

(6) वि. संवत् २०५६ के 'पंचांगदिवाकर' के पृष्ठों 48/49/50 पृष्ठों पर *''भाजपा सरकार के आकस्मिक गिर जाने के सम्बन्ध में भविष्यवाणी स्पष्ट तौर पर पढ़ें।''*

पृष्ठ 47 पर कारगिल (जम्मू-कश्मीर) में पाक सैनिक घुसपैठ एवं युद्ध के बारे में भी स्पष्ट भविष्यवाणी कर दी थी।

(7) ***वि. संवत् २०५७ के 'पंचांग' में पाकिस्तान में शरीफ सरकार का तख्ता पलटना तथा मार्शल-लॉ का लगना, शासन परिवर्तन, हिंसक घटनाओं से सम्बन्धित भविष्यवाणियाँ*** पृष्ठ 50-51 पर स्पष्टतः लिखी थीं। पुनः इस वर्ष के पंचांग के पृष्ठ 52 पर *भाजपा सरकार का गिरकर केन्द्र में भाजपा गठबन्धन सरकार का पुनः सत्ता ग्रहण*

(8) वि. संवत् २०५८ के 'पंचांगदिवाकर' ... लोकतांत्रिक प्रणाली की गरिमा को गहरा धक्का

(8) वि. संवत् २०५८ के 'पंचांगदिवाकर' में पृष्ठ 56 पर **''अमरीका में 9/11** सम्बन्धित दुःखद त्रासदी के बारे में सांकेतिक भविष्यवाणी लिखी दी गई थी।

(9) वि. संवत् २०५९ के **'पंचांग'** के पृष्ठ 60 पर **''पंजाब विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी की विजय सम्बन्धित भविष्यवाणी''** भी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई।

(10) वि. संवत् २०६० में 'अमरीका-ईराक युद्ध' तथा **ईराक में सत्ता-परिवर्तन के योग** बारे भविष्यवाणी स्पष्टतः पृष्ठ 63 पर लिखी गई थी।

(11) वि. संवत् २०६१ (सं. 2004-05) की पंचांग में स्पष्टतः पढ़ें-**आगामी लोकसभा चुनावों में श्रीमती सोनिया गाँधी (कांग्रेस) की विजय तथा कांग्रेस पार्टी भाजपा की अपेक्षा अधिक सीटों पर कामयाब होकर निकलेगी।** (पृष्ठ 67)

(12) वि. संवत् २०६२ (2005-06) में **'पाकिस्तान और भारत के मध्य दोस्ती और शान्तिवार्ताओं के नए आयाम जुड़ना'** (पृष्ठ 56)

(13) वि. संवत् २०६३ (2006-07) की पंचांग में **पंजाब, बिहार में नेतृत्व परिवर्तन के योग** (पृष्ठ 55)-जैसा कि **बादल सरकार एवं नितीश कुमार का सत्तासीन होना तथा पृष्ठ 59 पर मुम्बई में 11 जुलाई को बम-विस्फोट सम्बन्धित भविष्यवाणियां पं. जी की लेखन-आधिपत्य शैली तथा विद्वत्ता की स्पष्ट प्रमाण थीं।**

(14) वि. संवत् २०६४ (2007-08) में पृष्ठ 56 पर मुख्य बॉक्स पर स्पष्टतः पढ़ें-**''उ. प्र., उत्तराखण्ड, पंजाब प्रदेशों में नेतृत्व परिवर्तन के योग होंगे।''** परिणाम आपके सामने थे।

(15) वि. संवत् २०६५ (2008-09) में पृष्ठ 59 पर स्पष्टतः पढ़ें-**''गुजरात में अनेक अवरोधों के बावजूद भाजपा एवं मोदी सरकार विजयी होगी।''**

(16) वि. संवत् २०६६ (2009-10 ई.) के पृष्ठ 71 पर अमरीकी राष्ट्रपति बराक ओबामा को सफलता प्राप्ति होना, पृष्ठ 75 पर 'जम्मू-कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत-**'चुनावों में उमर-अब्दुल्ला की नैशनल-कांफ्रेंस गठबन्धन का प्रभावक्षेत्र बढ़ना तथा राजस्थान में भाजपा को चुनावों में हार का सामना।**

(17) संवत् २०६७ (2010-11) के पृष्ठ 67 पर **चीन, पाक की ओर से घुसपैठ** तथा पृष्ठ 75 पर **हरियाणा में कांग्रेस प्रत्याशी श्री भूपेन्द्र हुड्डा का पुनः जीत प्राप्त करने सम्बन्धी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई।**

(18) वि. संवत् २०६८ (2011-12 ई.) में प्रधानमन्त्री की निर्णयात्मक पग उठाने में अक्षमता, अमरीका सहित कुछ देशों में आर्थिक मन्दी तथा लीबिया, मिस्र, सूडान, सीरिया, चिली आदि देशों में आन्तरिक क्रान्ति तथा **सत्ता-परिवर्तन सम्बन्धी भविष्यवाणियाँ पं. जी की गहन व सूक्ष्म तत्त्वदर्शी विद्वत्ता की परिचायक हैं।**

(19) वि. संवत् २०६९ (2012-13 ई.) में भी पृष्ठ 66 पर उन्होंने स्पष्ट उद्घोषित कर लिखा था कि **'मुस्लिम बाहुल्य एवं कट्टर इस्लामी देशों में आन्तिरक गृह-युद्ध, सत्ता-परिवर्तन की प्रबल सम्भावनाएं हैं।** पृष्ठ 68 पर 'अनेकों घोटालों एवं महँगाई सम्बन्धी आरोपों के कारण भारतीय लोकतान्त्रिक प्रणाली की गरिमा को गहरा धक्का पहुँचेगा।

इसी वर्ष पृ. 70 पर पंजाब में अकाली-भाजपा गठबन्धन के पुनर्विजयी सम्बन्धी भविष्यवाणी भी अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई।

(20) वि. संवत् २०७० (2013-14 ई.) में पृष्ठ 66 पर **अरब व खाड़ी देशों में क्रान्तिकारी परिवर्तन होने सम्बन्धी, प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह एवं यू.पी.ए. सरकार की विश्वसनीयता में ज़बरदस्त कमी आएगी। आगामी विधानसभा चुनावों में यू.पी.ए. कांग्रेस सरकार को भारी क्षति होने के योग हैं एवं च, उत्तराखण्ड में महावृष्टि के संकेत** पृष्ठ 73 कालम-II में स्पष्टतः लिखे थे।

(21) वि. संवत् २०७१ के **'पंचांगदिवाकर'** में **'श्री नरेन्द्र मोदी'** के प्रधानमन्त्री बनने के योग के सम्बन्ध में स्पष्टतः भविष्यवाणी लिखी गई थी-पढ़ें पृष्ठ 76, कालम-II—**''यद्यपि नरेन्द्र मोदी के ही प्रधानमन्त्री पद के प्रबल योग बन रहे हैं।''** पृष्ठ 81 पर स्पष्ट पढ़ें-**'कठिन चुनौतियों एवं अवरोधों के बावजद उच्चतम पद प्राप्त करने के योग मिलते हैं।'**

पृष्ठ 81 कालम-I में श्री राहुल गाँधी के बारे में स्पष्ट पढ़ें-**'उपरोक्त ज्योतिषीय कारणों से श्रीराहुल गाँधी का अभी प्रधानमन्त्री पद पर प्रतिष्ठित होना संदिग्ध है।'**

इसी प्रकार, पृष्ठ 71, मुख्य कॉलम में विधानसभा चुनावों से सम्बन्धित भविष्यवाणी स्पष्टतः पढ़ें-**आगामी पाँच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भाजपा की स्थिति बेहतर होगी।** परिणाम आपके समक्ष हैं। पृष्ठ 80 पर **'दिल्ली, उत्तर-प्रदेश एवं राजस्थान'** शीर्षकों के अन्तर्गत **लोकसभा एवं विधानसभा चुनावों में भाजपा की सफलता प्राप्ति की भविष्यवाणियाँ तथा पंजाब में कांग्रेस के प्रभावक्षेत्र में वृद्धि की भविष्यवाणी** अक्षरथः सत्यसिद्ध हुईं।

(22) (*i*) **गतवर्ष वि. संवत् २०७२ के 'पंचांगदिवाकर'** सीमा पर फौजी टकराव सम्बन्धी भविष्यवाणी स्पष्टतः पढ़ें-देखें पृष्ठ 71 कालम-I—**''संवत् के प्रारम्भिक पाँच मासों में भारत के पश्चिमी, उत्तर-पश्चिमी, सीमावर्त्ती प्रदेशों की सीमाओं पर पाकिस्तान एवं चीनी फौजों द्वारा सीमा अतिक्रमण की घटनाओं से युद्धजन्य वातावरण बनेगा।''** जैसा कि मई से जुलाई मास तक सीमाओं पर व्यापक गोलाबारी हो रही है।

(*ii*) पृष्ठ 71 पर ही कालम-I एवं II में पढ़ें-**''भारत सरकार द्वारा प्रजा की भलाई हेतु अनेक विकासोन्मुखी योजनाओं का आरम्भ तथा विस्तार किया जाएगा। महिला विकास योजनाएं, रूस, जापान, अमरीका, चीन आदि पड़ोसी देशों के साथ अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर विशेष बल एवं बढ़ावा दिया जाएगा।''**-पंचांग में लिखे ये वाक्य भी सत्य सिद्ध प्रमाणित हो रहे हैं। पुनः कालम-II में ही-''पश्चिमी एशियाई देशों (ईराक, सूडान, सीरिया, यूगाण्डा, मिस्र आदि) में आन्तरिक, सामाजिक एवं राजनीतिक परिस्थितियां अस्थिर एवं अशान्तिपूर्ण होंगी।''

(*iii*) पृष्ठ 72, कालम-I में किसी देश में (नेपाल में दुर्भाग्यवश) अग्निकाण्ड या भूकम्प के भय की भविष्यवाणी लिखी गई थी। **देखें**–मेष संक्रान्ति मंगलवार को होने से अग्निकाण्ड, भूकम्प का भय रहेगा–''**सूर्योपरागः सुलभाच्च भीतिः भूकम्पनं स्याद्गदितं हि वर्षे।।**''

(*iv*) पृष्ठ 73, कालम-I अमरीका शीर्षक के अन्तर्गत स्पष्टतः पढ़ें–''**विश्व में अपना प्रभुत्व-प्रसार स्थायी रखने व बढ़ाने के लिए भारत, चीन जैसे विकासशील देशों के साथ नए राजनैतिक एवं व्यवसायिक अनुबन्ध करेगा**। पश्चिमी एशिया के विरोधी देशों के मध्य शान्ति स्थापित करने हेतु शान्ति-वार्ताएं एवं मध्यस्तता भी समायोजित करेगा।'' **जैसा कि अमरीका–ईरान के मध्य जून, 2015 ई. में समझौता हो गया।**

(*v*) पृष्ठ 73 पर ही कालम-II में पाकिस्तान शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ें–'**भारत के साथ शान्ति वार्ताओं एवं व्यापारिक सन्धियों के बावजूद सीमा से उकसाने वाली हरकतों को जान-बूझकर अंजाम दिया जाएगा।......घुसपैठ, सीमोल्लंघन का प्रयास होता** रहेगा। शरीफ सरकार को भी आन्तिरक विरोध का सामना करना पड़ेगा।

(*vi*) पृष्ठ 73 पर ही कालम-II में मुस्लिम देशों के शीर्षक के अन्तर्गत पढ़ें–**विस्फोट, सामूहिक हत्याएं तथा खूनी-संघर्ष ओर अधिक उग्र हो जाएगा**। जैसा कि सीरिया, सूडान में रमज़ान (जून, 2015 ई.) के महीने में भी सामूहिक हत्याएं हुईं।

(*vii*) पृष्ठ 74 कालम-I में स्पष्ट पढ़ें–.......व्यापक राष्ट्रहित में कई नई योजनाएं एवं नीतियां बनाकर फैसले लिए जाएंगे, परन्तु केतु के प्रभाव से कुछ क्षेत्रियों पार्टियों एवं विपक्ष का विरोध प्रखर रूप से सामने आएगा। एवं च इसी पृष्ठ पर–'**केन्द्रीय सरकार को योजनाओं को क्रियान्वित करने में विशेष क्लिष्ट एवं पेचीदा समस्याओं तथा अवरोधों का सामना रहेगा।**'–संसद् का मानसूत्र सत्र इन वाक्यों का स्पष्टतः प्रमाण है।

(*viii*) पृष्ठ 74 पर ही कालम-II में स्पष्ट पढ़ें–''मुंथा के प्रभावस्वरूप पाक, चीन आदि विरोधी देशों के साथ व्यापारिक रिश्ते बढ़ने के बावजूद सीमा पर तनाव व घुसपैठ यथावत जारी रहेंगे।'' मार्च, 2015 से अगस्त, 2015 ई. तक पाकिस्तान के साथ हुआ घटनाक्रम इन पंक्तियों की सत्यता स्वतः प्रामाणित कर रहा है।–इसी पृष्ठ पर पढ़ें–''**प्रभावस्वरूप भारत विदेश नीति के अन्तर्गत पड़ोसी देशों को विशेष महत्त्व देगा। परन्तु पाक-चीन भरोसे का कत्ल करना नहीं छोड़ेंगे। विकासशील देशों में भारत का प्रभाव एवं प्रभुत्व बढ़ेगा।**

(*ix*) पृष्ठ 74 कालम-II में ही देखें–लोकसभा में अप्रत्याशित जीत की भान्ति आगामी कुछ राज्यों के विधानसभा चुनावों जैसे–महाराष्ट्र, हरियाणा, झारखण्ड में भी भाजपा को विजय की प्राप्त होगी।' विपक्षी पार्टियां आपस में गठजोड़ कर लेंगी। पुनः पृष्ठ 76 पर रहेगा। सरकार द्वारा पुराने कानूनों के प्रावधानों पर पुर्नविचार करने से विपक्षी दलों द्वारा आलोचना की जाएगी, जिससे **ऐसी कई योजनाओं का क्रियान्वन लम्बित हो जाएगा। जैसा कि भूमि अधिग्रहण कानून के विषय में हुआ।**

(*x*) पृष्ठ 77 कालम-I & II में पढ़ें–''''''प्रधानमन्त्री''''''अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर अपनी लोकप्रियता बढ़ाएंगे। वैश्विक जगत् पर मोदी जी के प्रभामंडल का प्रभाव बढ़ने के साथ-साथ भारत का भी गौरव बढ़ेगा।'....'**परन्तु द्वादश** (गुप्त शत्रु, विपक्ष) **भाव में शनि-राहु योग होने से अधिकतर समय आरोप-प्रत्यारोप में व्यतीत होगा।**'

(*xi*) पृष्ठ 78 पर 'जम्मू-कश्मीर' शीर्षक के अन्तर्गत लिखी गई भविष्यवाणी भी सत्य प्रामाणित हुई–'**ग्रहस्थिति अनुसार पी.डी.पी. एवं भाजपा का जनाधार तथा सीटें बढ़ने के बावजूद स्पष्ट बहुमत किसी भी पार्टी को नहीं प्राप्त होगा। चुनाव पश्चात् गठबन्धन सरकार अस्तित्व में आएगी। त्रिशंकु विधानसभा बनने के ही संकेत हैं।**' ईश्वरकृपावश अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई।

संवत् २०७३ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल और भविष्यफल

वि. संवत् २०७३ में ग्रहों की आकाशी कौंसिल (ग्रह-परिषद्) के दश पदाधिकारों में से छः (6) अधिकार उग्र (क्रूर) ग्रहों को तथा केवल चार (4) अधिकार सौम्य (शुभ) ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। '**राजा**' **एवं** '**धनेश**' जैसे महत्त्वपूर्ण पद **स्त्री ग्रह शुक्र** को प्राप्त हुए हैं। जिसके फलस्वरूप वर्षा पर्याप्त होने से धान्य एवं अन्य फसलों का यथेष्ठ उत्पादन होगा। सिनेमा, संगीत, स्त्री-पुरुषों के परस्पर सम्बन्धों में अधिक स्वच्छन्दता एवं अमर्यादित व्यवहार दृष्टव्य होगा। नाच-गायन, नृत्य, उत्सव, धन-लोलुपता, कलाओं तथा कामवासना में वृद्धि होगी। समाज के प्रत्येक कार्य में स्त्रियों का वर्चस्व बढ़ेगा। समाज में भोग-विलासिता, प्रदर्शन एवं फैशन परस्ती की प्रवृत्तियां बढ़ेंगी। सरकारी लोक हितकारी योजनाओं से निम्न वर्ग के लोग भी लाभ प्राप्त करने में सफल होंगे। वर्ष में मन्त्री का अधिकार भी सौम्य एवं नीतिज्ञ ग्रह बुध को मिला है। फलस्वरूप विश्व के कुछ राष्ट्र कुटिल नीतियों का प्रयोग करते हुए बाह्य तौर पर शान्ति वार्ताओं का ढिंढोरा करते हुए भी परोक्ष रूप से सैन्य एवं संहारक हथियारों की वृद्धि में संलग्न रहेंगे। राजनेताओं एवं लोगों में भी सरलता व सादगी की अपेक्षा कुटिलता एवं चालाकी के व्यवहार अधिक रहेंगे। धन का प्रसार अधिक होने से धनाढ्य लोग और अधिक अमीर होंगे। अधिकांश स्त्री-पुरुष शृंगार-प्रिय और भोगविलास में अधिक आसक्त रहेंगे। बुद्धिजीवी लोग, हस्तकला व शिल्पकला सम्बन्धी विज्ञान तथा खाद्यान्न एवं दैनिक माल-पंसारी की वस्तुओं से सम्बन्धित व्यापारी-वर्ग व्यवसाय द्वारा विशेष लाभान्वित रहेंगे। गर्मी-खुश्की, त्वचा एवं विविध प्रकार के रोगों की

सस्येश (कृषि) एवं नीरसेश (धातुओं) के अधिकार क्रूर **ग्रह शनि** को प्राप्त हुए हैं। | में होगा। जिन नगरों में सिंह लग्न 16घं.-54मिं. से पूर्व ही समाप्त हो जाएगा, वहाँ नववर्ष

सस्येश (कृषि) एवं नीरसेश (धातुओं) के अधिकार क्रूर ग्रह शनि को प्राप्त हुए हैं जिसके प्रभावस्वरूप लोहा, स्टील, कोयला, पैट्रोल, डीज़ल, कलपुर्जे, ऊनी व गर्मवस्त्र, लकड़ी, दालचीनी, छोटी इलायची, काले चने, गेहूँ, उड़द एवं सर्वप्रकार की दालें तेज़ भाव होंगी। कुछ प्रदेशों में बाढ़ आदि प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी फसलों को भारी क्षति पहुँचने के योग हैं। साधारण लोग एवं राजनेता वृथा वाद-विवाद, आरोप-प्रत्यरोप एवं कानूनी झगड़ों में संलिप्त रहें। परन्तु शीतकालीन फसलों का स्वामी (धान्येश) गुरु होने से गेहूँ, जौं, मूँग आदि का यथेष्ठ उत्पादन होगा तथा ब्राह्मण एवं विद्वान लोगों की शुभ कृत्यों की ओर प्रवृत्ति रहे। मेघेश, फलेश और दुर्गेश (सेनापति) मंगल होने से प्रतिकूल एवं असामयिक वर्षा अर्थात् कहीं वर्षा बहुत कम और कहीं बहुत अधिक होगी। कहीं भूस्खलन, दुर्भिक्ष एवं तापमान में वृद्धि होगी। फलों का उत्पादन कम, राष्ट्राध्यक्षों में युद्ध-जन्य माहौल रहेगा। **सर्वसाधारण लोग एवं व्यापारी कठोर एवं पेचीदा सरकारी नियमों से व्याकुल (पीड़ित) रहें।** रसों का स्वामी उग्र ग्रह सूर्यदेव है, जिससे पंजाब, जम्मू, राजस्थान आदि के क्षेत्रों में न्यून वर्षा से दूध, रसादि फलों का कम उत्पादन हो, जबकि उत्तर-पूर्वी कुछ राज्यों में अनुकूल वर्षा से दूध, रसादि पदार्थों का यथेष्ठ उत्पादन होगा। परन्तु इन सब अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद 'सौम्य' नामक सम्वत्सर होने से संवत् (वर्ष) में सभी प्रकार के खाद्यान्नों का अच्छा उत्पादन होगा, परन्तु सिन्ध प्रदेश अर्थात् पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों में उपद्रव, विस्फोटक एवं अशान्तिपूर्ण वातावरण रहेगा।

नववर्ष प्रवेश एवं जगत् लग्न कुण्डली अनुसार भविष्यवाणियाँ

नववर्ष प्रवेश कुं. (1)	नववर्ष प्रवेश कुं. (2)	जगत् लग्न कुण्डली
07-04-2016 ई., $16^{घं.}-54^{मिं.}$	07-04-2016 ई., $16^{घं.}-54^{मिं.}$	13 अप्रैल, सन् 2016 ई. $19^{घं.}-47^{मिं.}$
राज., जम्मू, पंजाबादि राज्यों के लिए	(दिल्ली, हि.प्र., हरियाणा आदि तथा शेष भारत के लिए)	(भा. स्टैं. टा.)

'सौम्य' नामक नव वि. संवत् २०७३ का प्रवेश चैत्र अमावस्या की समाप्ति **7 अप्रैल, 2016 ई.** की सायं $16^{घं.}-54^{मिं.}$ (२६/४३) पर रेवती नक्षत्र, वैधृति योग कालीन सिंह लग्न में होगा। जिन भागों में सिंह लग्न $16^{घं.}-54^{मिं.}$ से पूर्व ही समाप्त हो जाएगा, वहाँ नववर्ष प्रवेश कुण्डली (हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, उ.प्र. तथा शेष भारत) में कन्या लग्न उदित होगा। **नववर्ष प्रवेश कुण्डली (1)** में वर्ष लग्नपति सूर्य अष्टम (प्राकृतिक आपदा) भाव में मित्रराशिगत चन्द्र एवं शुक्र के साथ स्थित है। इन पर मंगल एवं शनि की प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि है। सप्तम भाव (अन्तर्राष्ट्रीय एवं वैदेशिक सम्बन्धों का भाव) में केतु की स्थिति तनावपूर्ण एवं असमंजसपूर्ण वातावरण का संकेत दे रही है।

नववर्ष प्रवेश कुण्डली (2) में भी (जिसका प्रभाव भारत के अधिकतर क्षेत्र पर रहेगा)। वर्ष लग्नपति बुध अष्टम भाव (प्राकृतिक आपदा, आकस्मिक दुर्घटनाएं) में है। सप्तम भाव में सूर्य, चन्द्र, शुक्र की स्थिति तथा इन पर मंगल-शनि की प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि रहेगी। गुप्त शत्रु के भाव (12वें) में गुरु सिंहस्थ होकर राहुयुक्त है। विश्व की प्रमुख शक्तियों अमरीका, फ्रांस, जर्मनी, भारत आदि के सामने 'इस्लामिक कट्टरवाद' एवं आई.एस. का बढ़ता प्रभाव मुख्य मुद्दा बन उद्वेलित करता रहेगा। दोनों कुण्डलियों में अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का स्वामी शुक्र उच्च स्थिति में है। फलस्वरूप विश्व के राष्ट्र भारत से मैत्री और संवाद के लिए उत्सुक रहेंगे। विश्व-राजनीति में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी। विश्व शान्ति के लिए किए गए भारत के प्रयासों की सार्वभौमिक श्लाघा होगी। भारत की प्रभावराशि मकर का स्वामी शनि शत्रुराशिगत एवं शत्रु ग्रह मंगल युक्त तृतीय भाव (पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध) में होने से पाकिस्तान, चीन आदि पड़ोसी देशों के साथ शान्ति वार्ताओं के बावजूद कोई विशेष नतीजें सामने नहीं आएंगे। भारत की पड़ोसी देशों के साथ अपनी नीति में निरन्तरता का अभाव नज़र आएगा। अर्थात् **कभी वार्ताएं और कभी आतंकवादी एवं फौजी घटनाएँ परिस्थितियों को तनावपूर्ण एवं युद्धजन्य बनाएंगी।**

सिंह लग्न में वर्षप्रवेश का फल इस प्रकार लिखा गया है-**सिंहलग्ने दक्षिणास्यां द्रंष्ट्रा भय मुदीर्य ते। धान्ये समर्घता मास षट्कंयावद् धनंमहत्।। पश्चिमायां धातुर्वस्तु फलादीनां महर्घता। उत्तरस्यां महावृष्टिः सुखं राज्ये प्रजासु च।।**

अर्थात् **सिंह लग्न** में वर्षलग्न का उदय हो, तो दक्षिण दिशा में बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से हानि हो, धान्यादि की फसलों की क्षति हो। पश्चिमी भागों में सर्वप्रकार की धातुएँ, जवाहरात एवं फल महँगे हों, पूर्व में भी कृषि आदि का उत्पादन कम हो। उत्तरी क्षेत्रों में वर्षा अच्छी हो तथा सुख रहे। मध्यदेश में राजनेताओं के मध्य विग्रह रहे-"**मध्यदेशे राजयुद्धं मासपंचकमुदुतम्।।**" कुछ प्रदेशों में छत्रभंग, जनांदोलन का भी संकेत है।

जबकि **नववर्ष प्रवेश कन्या लग्न** में होने का फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है-[उत्तर-मध्य एवं पूर्वी भारत के लिए-(हरियाणा, हि.प्र., दिल्ली, उत्तराखण्ड, उ.प्र., म.प्र. आदि राज्यों में]-**कन्यायां सुस्थिरा प्राच्यां घृते महर्घतामता। मारिर्दक्षिण देशस्यात्तथा वंगेप्युपद्रवः। लोकदुःखं पश्चिमायां विग्रहोन्न समर्घता।।**

अर्थात् **कन्या लग्न में** नववर्ष प्रवेश होने से पूर्वी देशों एवं राज्यों में स्थिरता व सुखपूर्ण वातावरण रहे, दक्षिण में अनाज की कमी, बंगाल में उपद्रव (चुनाव पूर्व हिंसा का भय है) तथा पश्चिमी राज्यों में कहीं विग्रह, उपद्रव तथा पूर्वोत्तर (उ.प्र., उ. खण्ड, बिहार) में छत्रभंग होने के संकेत हैं।

जगत् लग्न एवं घटनाक्रम

जगत् लग्न कुण्डली में तुला (चर) लग्न उदित हुआ है। लग्नेश एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों का ग्रह शुक्र षष्ठ (परोक्ष एवं प्रत्यक्ष शत्रु भाव) में है। इस पर मंगल एवं शनि की मित्र दृष्टि तथा इसकी व्यय (गुप्त शत्रु भाव, युद्ध सम्बन्धी कार्य, षड्यन्त्र भाव) पर नीच दृष्टि है। **फलस्वरूप विश्व में ईस्लामी उग्रवाद एवं आई.एस. से सम्बद्ध उग्र विचारधारा के पोषक देश व संगठन वर्तमान वैश्विक व्यवस्था को चुनौती देते रहेंगे।** ज़हरीला भौगोलिक राजनीतिक परिदृश्य पूरे विश्व को उत्तेजित करेगा। अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन आदि विकसित देश इसका राजनीतिक एवं सैन्य प्रतिकार करेंगे। परन्तु आतंकवादी तत्त्वों की देशघाती मानसिकता के कारण सभ्य समाज और मानवता को मज़हबी जुनून से लैस कट्टरवाद डसता ही रहेगा। मुस्लिम देशों विशेषकर–सीरिया, सूडान, लीबिया, ईराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि देशों सहित फ्रांस, आदि कुछ यूरोपीय देशों में भी विध्वंसक आतंकी घटनाएं व भीषण दुर्घटना से जन–धन की हानि होने की सम्भावनाएं हैं। वस्तुतः आतंकवाद और उग्रवाद की चुनौती एक नया आयाम ग्रहण कर लेगी। जिसके चलते एक सर्वांगीण ग्लोबल रणनीति की आवश्यकता होगी। अमेरिका तथा विकसित देशों के प्रयास यथेष्ठ नहीं होंगे।

द्वितीय (धन) भाव में शत्रु राशिगत शनि की स्थिति के कारण अमेरिका, स्पेन, फ्रांस, मिस्र, ग्रीस, इटली आदि यूरोपीय देशों में मुद्रा अवमूल्यन तथा वैश्विक माँग में सुस्ती के कारण **आर्थिक मन्दी का वातावरण बन जाएगा।** जगत् लग्न कुण्डली अनुसार चीन, मिस्र, ग्रीस, ब्राज़ील, फ्रांस, इटली, ईराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देश आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक तौर पर विशेष रूप से प्रभावित होंगे। इन्हीं देशों में आतंकी गतिविधियों के कारण विस्फोटक घटनाएँ अथवा बाढ़, भूकम्प, समुद्री तूफान, भूस्खलन आदि प्राकृतिक आपदाओं के कारण जन, धन एवं सम्पदा की क्षति होने के संकेत हैं। तुला लग्न में जगत् लग्न का उदय होने का फल शास्त्र में इस प्रकार वर्णित है–

तुलालग्ने मध्यदेशे छत्रभंगश्च विग्रहः। धान्यस्यविक्रयः प्राच्यां छत्रभंगमुपद्रवः।।

अर्थात् तुला लग्न में जगत् लग्न उदय होने से मध्य देशों जैसे–ईराक, अफगानिस्तान, सीरिया, तुर्की आदि देशों में छत्रभंग अर्थात् राजपरिवर्तन, पूर्वी देशों में भी छत्रभंग, हिंसक घटनाएं और उपद्रव हो। पश्चिमी देशों में महायुद्ध अर्थात् आतंकवादी घटनाओं की सम्भावना रहेगी।

सन् 2016 ई. में ग्रहगोचर और विश्व के हालात

संवत् के राजा शुक्र एवं मन्त्री बुध के प्रभावस्वरूप तथा वर्षप्रवेश व जगत्–लग्न दोनों कुण्डलियों में ग्रहस्थिति का अनुशीलन करने से यही विदित होता है कि आगामी वर्ष विश्व के बहुत से देशों की आन्तरिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ तथा राजनीतिक वातावरण विक्षुब्ध, अशान्त तथा तनावपूर्ण रहेगा। यद्यपि बाह्य तौर पर शान्ति वार्ताओं का दौर चलता रहेगा। मन्त्री बुध के कारण उपभोग्य सुख–साधनों, दूर–संचार, दवाईयों, अन्तरिक्ष

वर्षारम्भ **पौष मास** [ता. 26 दिसं. से. 23 जन. तक] में पाँच शनिवारों का समावेश होना, 8 जन. से गुरु वक्री, 9 जन. को शनिवारी अमावस तथा ता. 14 जन. से 12 फर., 2016 ई. तक सूर्य पर शनि की दृष्टि होना विश्व राजनीति में विशेष उथल–पुथल तथा भयावह परिस्थितियां लेकर आएगी। अनेक देशों के मध्य नए समीकरण बनेंगे तथा कहीं विद्रोहियों एवं तानाशाही सत्ताधारियों के मध्य खूनी टकराव, संघर्ष एवं हिंसक घटनाएँ घटित होने के समाचार मिलेंगे, विशेषकर सीरिया, लीबिया, ईराक, यूगांडा, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों में दहशतगर्दी की हिंसक वारदातें घटित होने के संकेत हैं–

शनिवारा यदा पंचपाताले कम्पते फणीः।
ईशान देश भङ्गश्च वह्णि दाहो महर्घता।।

कहीं भूकम्प, भूस्खलन, अग्निकाण्ड आदि प्राकृतिक दुर्घटनाएं एवं उत्पात अधिक हों। **माघ मास में** (24 जन. से 22 फर. तक) पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार होने से पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईराक सहित कुछ देशों में अनाज की कमी, सूखा व कहीं, दुर्भिक्ष का भय, उपद्रव, जातीय हिंसा एवं आकस्मिक विस्फोटों के कारण अस्थिरता, छत्रभंग व हिंसक घटनाएँ घटित होने के योग हैं–

माघमासे रविवाराः जायन्ते पंचसततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंग स्यात् दास्ते च महद्भयं।।

फाल्गुण मास (23 फरवरी से 23 मार्च तक) में पाँच मंगलवार होने से कहीं युद्धभय, उपद्रव, हिंसक घटनाएं एवं छत्रभङ्ग (सत्ता–परिवर्तन) के योग हों। किसी प्रमुख नेता की आकस्मिक मृत्यु या अपदस्थ होने के भी संकेत हैं।

यत्रमासे महीसूने जायन्ते पंचवासराः।
रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।

चैत्र मास (24 मार्च से 22 अप्रै. तक) में पाँच गुरुवार एवं पाँच शुक्रवारों का समावेश होना पश्चिमी देशों में कहीं सत्तारूढ़ शासन के प्रति उपद्रव, विद्रोह एवं युद्ध का भय रहेगा। इस समय गुरु–राहु योग एवं गुरु–शनि के मध्य (4–10) दृष्टि सम्बन्ध वैश्विक परिस्थितियों को उलझनपूर्ण एवं विषाक्त बना देगा।

यत्रमासे पञ्चवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः।
विग्रह पश्चिमेदेशे खड्ग युद्धं च जायते।।

वैशाख मास [23 अप्रै. से 21 मई तक] में पाँच शनिवार आने, शनि का शत्रुराशि में वक्र स्थिति में होना विश्व का राजनीतिक पटल असमंजसपूर्ण एवं अशान्त बना देगा। विश्व में कहीं भूकम्प, दुर्भिक्ष, यान–दुर्घटना, बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोप एवं उत्तर–पूर्वी देशों में कहीं छत्रभंग, अग्निकाण्ड एवं युद्धभय होगा।

ज्येष्ठ मास [22 मई से 20 जून तक] में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार होने, सूर्य–शनि, सूर्य–मंगल मध्य समसप्तक योग होने से मुस्लिम एवं विरोधी देशों के मध्य युद्धमय वातावरण, तनाव, उपद्रव, आतंकी विस्फोट आदि घटनाएं घटित होंगी। पश्चिमी ऐशायाई एवं मुस्लिम बाहुल्य अफ्रीकी देशों में कहीं दुर्भिक्ष एवं छत्रभंग होने का भय होगा। कहीं

आषाढ़ मास (21 जून से 19 जुलाई तक) में पांच मंगलवार तथा **गुरु-शनि** के मध्य (4-10) दृष्टि सम्बन्ध होने से सीमावर्त्ती क्षेत्रों में युद्ध का वातावरण बनेगा। भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि पड़ोसी देशों में कहीं युद्ध के बादल गहराएंगे। कहीं शासन-परिवर्तन, किसी वरिष्ठ व्यक्ति की हत्या या निधन की भी सम्भावना है।

श्रावण मास (20 जुला. से 18 अग. तक) में पाँच बुधवार एवं पाँच बृहस्पतिवार का होना, **गुरु-राहु** का योग तथा **गुरु-शनि** मध्य दृष्टि सम्बन्ध रहने से कहीं अतिवृष्टि, अनावृष्टि से बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन व सम्पदा को क्षति पहुँचेगी। कहीं दूध की कमी और पृथ्वी पर कहीं दुर्भिक्ष का भय तथा कहीं पेयजल की कमी हो। पश्चिम एशिया के देशों में कहीं राजविग्रह, हिंसा, छद्म युद्ध (गुरिल्ला युद्ध) चलेगा।

मासाद्यदिवसे सोमसुतवारो यदाभवेत्।
धान्यं महर्घं त्रीन् मासान् भावेवर्षे हि दुःखकृत।।

भाद्रपद मास (19 अग. से 16 सितं. तक) **में पांच शुक्रवारों का होना, सूर्य-शनि** के मध्य दृष्टि सम्बन्ध तथा **गुरु-शुक्र** योग होने से पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि देशों के भीतरी भागों तथा सीमावर्ती सरहदी इलाकों पर पाक हकूमत और मुजाहिदीन एवं आतंकी ग्रुपों के मध्य हिंसक व विस्फोटक घटनाओं का क्रम जारी रहने के योग बनते हैं। पाक, अफगानिस्तान, सीरिया, ईराक आदि मुस्लिम देशों के आन्तरिक, सामाजिक व राजनीतिक हालात अस्थिर एवं असमंजसपूर्ण रहेंगे। सरकारी तन्त्र और दहशतगर्द ग्रुपों के मध्य टकराव बढ़ेंगे।

आश्विन मास (17 सितं. से 16 अक्तू. तक) में पाँच शनिवार और पाँच रविवार होने से इस अवधि में विश्व में अनेक स्थलों पर बाढ़ादि का प्रकोप, क्लिष्ट रोगोत्पात, उपद्रव, जातीय एवं साम्प्रदायिक दंगे-फ़िसाद, निर्दोश लोगों का कत्लेआम व अनाज के मूल्यों में तेजी होगी। ईशान कोण अर्थात् उत्तर-पूर्वी देशों में कहीं छत्रभंग, उपद्रव, विस्फोट व अग्निकाण्ड की वारदातें हों-

कार्तिक मास (17 अक्तू. से 14 नव. तक) में पाँच सोमवार होने से विश्व में कई विरोधी देशों के मध्य शान्ति वार्ताओं का समायोजन होगा, परन्तु गोचर में **कालसर्प योग** के प्रभाव के कारण इन वार्ताओं में लिए गए निर्णयों का फलीभूत होना संशयात्मक रहेगा।

मार्गशीर्ष मास [15 नवं. से 13 दिसं. तक] में पाँच मंगलवारों का समावेश होने, सूर्य-शनि योग, गुरु-मंगल मध्य षडाष्टक योग होने से किसी प्रमुख राजनेता की आकस्मिक मृत्यु, विश्व में कहीं युद्ध भय, राजनीतिक उलट-फेर, विस्फोट, गुरिल्ला युद्ध जैसी घटनाएं होने के संकेत हैं।

पौष मास (14 दिसं. से 12 जन. तक) में पाँच बुध एवं पाँच गुरुवार होने, गुरु-मंग. मध्य षडाष्टक योग होने से विश्व में मिश्रित प्रभाव घटित होंगे। पश्चिमी एवं मुस्लिम देशों जैसे-ईराक, सूडान, इजरायल-फिलीस्तीन आदि देशों में राजनीतिक व आतंकवादी टकराव तथा युद्ध-जन्य हालात बनेंगे।

विश्व के कुछ प्रसिद्ध देश

अमेरिका (America)-इसकी प्रभाव राशि मिथुन है। जगत् लग्न कुं. में मिथुन राशि का भाग्य भाव पर आधिपत्य है। चन्द्र की स्थिति तथा उस पर मंगल की अष्टम दृष्टि है। ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष अमेरिका में होने वाले राष्ट्रपति चुनावों में ड्रेमोक्रेटिक एवं रिपब्लिकन पार्टी के मध्य काँटे की टक्कर रहेगी तथा अन्तिम निर्णय तक असमंजस व अस्थिरता की स्थिति रहेगी। रिपब्लिकन पार्टी एवं उनके सम्भावित प्रत्याशी बॉबी जिन्दल को व्यापक समर्थन प्राप्त होगा, परन्तु डैमोक्रेट पार्टी की सम्भावित प्रत्याशी हिलेरी या अन्य प्रत्याशी से कट्टर मुकाबला होगा। मध्य एशिया में व्याप्त खूनी आतंकी संघर्ष में परोक्ष रूप से सत्तारूढ़ सरकारों को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए हथियारों की आपूर्ति करते रहेगा। नए राष्ट्रपति द्वारा नई नीतियों की घोषणा के बाद भारत के साथ सम्बन्ध ओर सुदृढ़ होंगे जबकि आतंकवाद एवं पाकिस्तान, सीरिया, ईराक के ऊपर अपना शिकंजा ओर कसेगा। ईरान, क्यूबा जैसे विरोधी देशों के साथ भी शान्ति वार्ताएं एवं समझौतों के बाद पुनः अन्य विरोधी देशों के साथ शान्ति स्थापित करने हेतु शान्ति वार्ताएँ, बैठकें समायोजित करेगा। आतंक प्रणीत मध्य-एशिया में अपना प्रभुत्व एवं साम्राज्य पुर्नस्थापित करने के लिए विरोधी संगठनों एवं देशों के साथ भी राजनैतिक एवं व्यवसायिक अनुबन्ध करेगा।

पाठक कृपया ध्यान दें-गतवर्ष पृष्ठ 73 पर इसी कॉलम के अन्तर्गत लिखे गए एक-एक शब्द अक्षरशः सत्य सिद्ध हुआ। जैसा कि पाठकगण जानते हैं कि अमेरिका ने ईरान, क्यूबा आदि विरोधी देशों के साथ भी आर्थिक एवं सामरिक समझौते कर लिए हैं। **पृष्ठ 73 पर लिखे गए शब्द स्पष्टतः पढ़ें-''पश्चिमी एशिया के विरोधी देशों के मध्य शान्ति स्थापित करने हेतु शान्ति-वार्ताएं एवं मध्यस्तता भी समायोजित करेगा।''** पुनः 'पाक, ईरान, ईराक आदि मुस्लिम बाहुल्य देशों के साथ विदेश-नीति का पुनरावलोकन करेगा तथा विशेष बदलाव दृष्टिगत होंगे।' जिन पाठकों के फोन या पत्राचार माध्यम से बधाई-संदेश प्राप्त हुए हैं, उनका हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

पाकिस्तान-जगत् लग्न कुं. में इसकी प्रभावराशि कन्या द्वादश भाव में स्थित है तथा राशिस्वामी बुध सप्तभावस्थ गुरु द्वारा दृष्ट है। फलस्वरूप पाकिस्तान के अस्तित्व पर ही आतंरिक और बाहरी खतरे मंडराते रहेंगे। अच्छे आतंकवादियों और बुरे आतंकवादियों (पाकिस्तान के विरुद्ध कार्य करने वाले) के बीच अन्तर लगातार जारी रखते हुए लश्करे तैयबा जैसे आतंकी संगठनों को संरक्षण प्रदान करते रहेगा। प्रधानमन्त्री नवाज़ शरीफ़ का सेना पर नियन्त्रण रखना कठिन हो जाएगा। भारत के साथ अविश्वास का ही माहौल, अनवरत शत्रुता तथा हिंसा के मकड़जाल में फंसा रहेगा। भारत को स्थायी शत्रु मानते हुए भारत को अस्थिर करने की अपनी नीति का परित्याग नहीं करेगा। यद्यपि अपने बलूचिस्तान, फाटा तथा अन्य अफगान सीमावर्ती क्षेत्रों में विद्रोह, विस्फोट आदि का सामना करना पड़ेगा तथा पाक के भीतर सामाजिक ताना-बाना तथा राजनीतिक माहौल छिन्न-भिन्न हो जाएगा। पाक के मुख्य शहरों, हवाई अड्डों पर आतंकी हमलों में विशेष वृद्धि होगी।

वि. सम्वत् २०७३ में गोचर ग्रहस्थिति और भारत का भविष्यफल

जन्मकुंडली स्वतंत्र भारत
15 अगस्त, 1947 ई.
(23घं.-59मिं.) भा. स्टैं. टा.
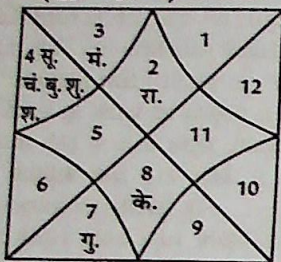
कुंडली गणतंत्र दिवस
26 जनवरी, 1950 ई.
10घं.-19मिं. (भा. स्टैं. टा.)
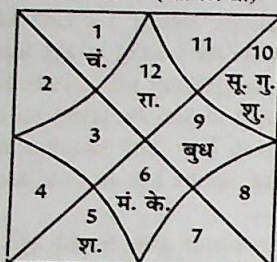
कुं. स्वतंत्र भारत (69वाँ वर्ष)
15 अग. 2015 ई.
(10घं.-22मिं.) (दिल्ली)
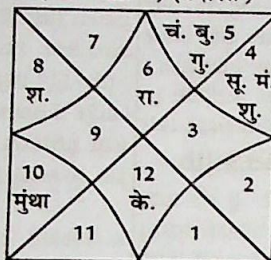
कुं. स्वतंत्र भारत, 70वाँ वर्ष
14-08-2016 ई.
(16घं.-31मिं.) (दिल्ली)
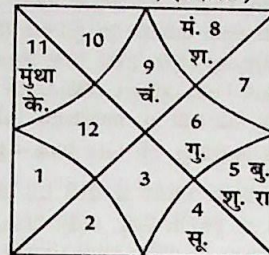
कुं. गणतन्त्र दिवस, 67वाँ वर्ष
27 जनवरी, 2016 ई.
(08घं.-24मिं.) (A:M.), (दिल्ली)
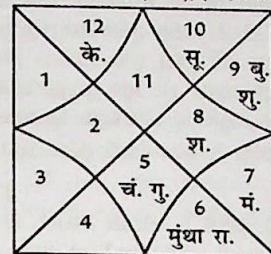
स्वतन्त्र भारत के 69वें वर्ष की कुण्डली में [15-08-2015 ई .] कन्या लग्न उदित हो चुका है। लग्न भाव में राहु की स्थिति तथा वर्ष लग्नपति बुध द्वादश (गुप्त शत्रु, युद्ध सम्बन्धी कार्य, व्यय भाव) भाव में चंद्र-गुरु युक्त है तथा इस पर शनि की गुप्त शत्रु दृष्टि का भी होना देश में चिन्ताजनक एवं असमंजसपूर्ण परिस्थितियाँ उत्पन्न करेगा। मोदी सरकार का विकास के प्रति प्रतिबद्धता का भाव आरोप-प्रत्यारोप की धुंध में विलुप्त हो जाएगा। यद्यपि केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रणीत नई विकास योजनाओं जैसे-स्मार्ट सिटी, डिजीटल इंडिया, स्किल इंडिया आदि पर तथा कुछ पुरानी योजनाओं के प्रावधानों पर पुर्नविचार करने से विपक्षी दलों द्वारा अवरोध उत्पन्न करने से ऐसी कई योजनाओं का क्रियान्वन लम्बित रहेगा। **पूर्ण बहुमत के बावजूद विपक्षी आन्दोलनों, संसदीय गतिरोध तथा अन्य कारणों से मोदी सरकार यथेष्ठ काम नहीं कर पाएगी।** यद्यपि मोदी सरकार विकास की गति तेज करने तथा व्यर्थ की बातों में देश की ऊर्जा बर्बाद होने से बचाने हेतु प्रशासनिक एवं पार्लियामैंट्री ढांचे में मूलभूत परिवर्तन लाने के लिए मजबूर (बाध्य) हो जाएगी। ऐसे फैसले एवं निर्णय लिए जाएंगे, जिनमें राष्ट्रीय हित समाहित होंगे।

मुंथेश शनि का तृतीय भाव में (पड़ोसी देशों के साथ सम्बन्ध, संचार साधन भाव) शत्रुराशिगत होना इस बात का द्योतक हो रहा है कि भारत की अपने पड़ोसी देशों पाक, चीन आदि के साथ विदेश नीति में निरन्तरता का अभाव नज़र आएगा। अर्थात् **कभी एक-दूसरे के साथ शान्ति-वार्ताएं एवं बातचीत का दौर चलेगा परन्तु कभी सीमा सम्बन्धी विवाद, घुसपैठ या आतंकी घटनाओं के कारण व्यापक मतभेद प्रकट होंगे।**

मुंथा पंचम भाव (विकास योजनाओं, प्रशासनिक बुद्धि) में होने से केन्द्रीय मोदी सरकार विकास सम्बन्धी अनेक नवीन योजनाओं का आरम्भ तथा क्रियान्वन की प्रक्रिया आरम्भ करेगी। जैसे-अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार (निर्यात), [illegible]

सड़क व परिवहन सम्बन्धी, जनधन योजना, प्रधानमन्त्री जीवन-बीमा और दुर्घटना बीमा योजना, स्वच्छता तथा शौचालय अभियान, कौशल विकास नीति, हृदय योजना आदि अनेक योजनाओं द्वारा **भारतवर्ष के कायाकल्प में विशेष परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाएगा।** मुंथा पर सूर्य-मंगल-शुक्र की शुभाशुभ दृष्टियां भी होने से इन सब योजनाओं का व्यापक समर्थन तथा विरोध भी होगा। सरकार को संसद् के बिना ही सुधारों और विकास कार्यों को अंजाम देना पड़ेगा तथा उन पर आगे बढ़ना पड़ेगा। खाद्य सुरक्षा, सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण, खादी संस्थाओं का जीर्णोद्वार तथा अनेक स्थानों पर टेक्नोलॉजी डेवलमेंट सेंटर्स खोले जाएंगे।

अष्टमेश (विपक्ष का भाव) मंगल एकादश भाव में (चुनाव) नीच राशिगत होने से कांग्रेस तथा अन्य विपक्षी दल विपक्ष की अपेक्षाओं के विपरीत एवं विरुद्ध आचरण करेंगे। राजनीतिक दल प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संसदात्मक व्यवस्था और लोकतंत्र को ही चुनौती देंगे। संसद का गतिरोध धीरे-धीरे संवैधानिक संकट की ओर बढ़ जाएगा। संसदीय नियमों में कुछ बदलाव लाए जाएंगे।

67वें गणतन्त्र दिवस (27 जन., 2016 ई.) की कुण्डली में कुम्भ लग्न उदित हुआ है। वर्ष लग्नेश शनि दशम भाव में शत्रुराशिगत होकर स्थित है। इस पर चन्द्र-गुरु की गुप्त शत्रु दृष्टि है। अष्टम भाव में मुंथा राहु युक्त होना एक व्यक्ति और देश दोनों के लिए अनिष्टकारी व कष्टकारी होता है। मुंथेश बुध भी शत्रुराशिगत है, फलस्वरूप केन्द्रीय भारत सरकार द्वारा प्रणीत विभिन्न विकास योजनाओं पर आशातीत खर्चों के बावजूद वांछित लाभ नहीं हो पाएंगे। लघु एवं वृहद् विकास योजनाओं में अनावश्यक खर्चों में वृद्धि, आकस्मिक अड़चनों तथा विपक्षी विरोध के कारण विकास की गति धीमी रहेगी तथा कई योजनाओं का क्रियान्वन लम्बित रहेगा। [illegible]

परन्तु लग्न पर (केन्द्रीय नेतृत्व, मन्त्रीमण्डल के हालात) चंद्र-गुरु की मित्र दृष्टि के फलस्वरूप प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश उन्नति व प्रगति के पथ पर रहेगा। एक सक्षम और सामर्थ्यवान राष्ट्र के रूप में भारत का उदय होगा। विश्व में भारत की छवि आत्मविश्वासी और आत्मनिर्भर राष्ट्र के रूप में विकसित होगी। मुंथेश बुध पर मंगल एवं गुरु की गुप्त एवं प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि पड़ने से सरकार द्वारा क्षेत्रीय भाषाओं और सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण, संवर्धन और प्रोत्साहन पर बल दिया जाएगा। भारत में बौद्धिक कौशल, रचनात्मक, सृजनात्मक क्षमता पर आधारित अर्थव्यवस्था का प्रभाव बढ़ेगा। फलस्वरूप इको-विकास कार्यक्रम, हरित ऊर्जा, इको-पर्यटन और स्थानीय कौशल पर आधारित हरित उद्यम की गतिविधियों को प्रोत्साहन किया जाएगा।

एकादश भाव में (अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध) बुध-शुक्र के प्रभाव से **विश्व के अनेक राष्ट्र भारत से मैत्री व संवाद के लिए उत्सुक रहेंगे।** धरती ही नहीं अंतरिक्ष में भी भारत की प्रतिष्ठा बढ़ेगी अर्थात् नये-नये प्रक्षेपास्त्र एवं अन्तरिक्ष सम्बन्धी अनुसन्धान किए जाएंगे। परन्तु भविष्यवादी परिकल्पनाओं को पंख लगाने के लिए विशेष (भारी) विदेशी निवेश आपेक्षित होगा। 'डिजीटल इंडिया' आदि अग्निपथ सरीखी चुनौतियों में मोदी सरकार को अल्प रुपेण सफलता ही प्राप्त होगी। विभिन्न विकास योजनाओं के क्रियान्वन में विघ्न-बाधाएं अधिक आएंगी। स्वार्थपरता एवं राजनेताओं का अपने दायित्व की प्रतिबद्धता में कमी के कारण अधिकांश विकास सम्बन्धी कार्यों का लाभ सामान्य लोगों तक नहीं पहुँच पाएगा। मुंथेश बुध की अष्टमस्थ (प्राकृतिक आपदा) मुंथा पर ही विशेष दशम गुप्त शत्रु दृष्टि पड़ने से जनवरी, 2016 ई. के बाद केन्द्रीय सरकार एवं भारतीय जनता को गम्भीर आर्थिक संकट एवं बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों का सामना करना पड़ेगा। ग्रहस्थिति अनुसार आगामी वर्ष के पूर्वार्द्ध भाग में भारतीय जन-साधारण को आतंकवाद एवं नक्सलवादी हिंसक घटनाओं का भय, कहीं जातीय व साम्प्रदायिक जनान्दोलन, विद्युत् संकट, औद्योगिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में मन्दी, बेमौसमी एवं अत्याधिक वर्षा से आई प्रलंयकारी बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से अनेक प्रदेशों में करोड़ों की फसलों, धन-सम्पदा एवं लोगों की क्षति का होना, देश के उत्तर-पूर्वी भागों जैसे-उ.प्र., म.प्र., बिहार, उड़ीसा, असम आदि प्रदेशों में कहीं दुर्भिक्ष, महामारी, क्लिष्ट रोग, लूटमार एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण लोगों की आकस्मिक मृत्यु का भय होगा। वस्तुतः आने वाले वर्ष में भारत के राजनीतिक (आन्तरिक एवं बाह्य परिस्थितियां), सामाजिक एवं आर्थिक हालात अत्यन्त क्लिष्ट, कठिन एवं संघर्षपूर्ण होंगे।

स्वतन्त्र भारत के 70वें वर्ष की कुण्डली में 14 अगस्त, 2016 ई. को धनु लग्न उदित हुआ है। इस वर्ष कुण्डली में भारत की प्रभावराशि मकर पर मुंथेश शनि की गुप्त मित्र दृष्टि रहने से केन्द्रीय मोदी सरकार द्वारा अनेक विकासोन्मुखी योजनाओं का शुभारम्भ एवं क्रियान्वन किया जाएगा। परन्तु तृतीय भावस्थ मुंथा केतु युक्त होने तथा मंगल-शनि की गुप्त शत्रु तथा बुध-शुक्र-राहु की प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि होने से आगामी वर्ष का उत्तरार्द्ध भाग में केन्द्रीय सरकार को विशेष क्लिष्ट एवं पेचीदा समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। भारत सरकार के लिए चुनौतियों से भरा एवं अग्नि-परीक्षा जैसा होगा। वर्षलग्नपति गुरु.की दशम भाव (प्रधानमन्त्री, प्रशासन, सरकार) में गुरु की विरुद्ध राशि में स्थिति के बावजूद सूर्य की मित्र दृष्टि है। फलस्वरूप केन्द्रीय एवं राज्य स्तरीय नीतियों-योजनाओं, रणनीतियों पर प्रधानमन्त्री कार्यालय का पूर्ण नियन्त्रण रहेगा। परन्तु गुरु की प्रभावराशि मकर पर मित्र परन्तु नीच दृष्टि होने से राजनीति में नेताओं के बचकाने और हास्यास्पद बयानों पर वाद-विवाद बढ़ेंगे। अनेक अवरोधों एवं समस्याओं के बावजूद मोदी सरकार द्वारा विकास के लिए प्रतिमान स्थापित होंगे।

सन् 2016 ई. में ग्रहगोचर और भारतवर्ष

वर्षारम्भ पौष मास (26 दिसं., 2015 से 23 जन. तक) में पाँच शनिवार होने, ता. 14 जन. से **सूर्य-शनि मध्य** (3-10), ता. 18 जन. से **गुरु-शुक्र** (5-9) दृष्टि सम्बन्ध होने से देश में कहीं उपद्रव, झगड़े, फ़िसाद एवं आन्दोलन के संकेत हैं। जातीय उत्पात और साम्प्रदायिक दंगे फ़साद बढ़ेंगे। कहीं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के संकेत हैं। जनोपयोगी आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में तेज़ी का रूझान रहेगा। ता. 8 जन. से सिंहराशिस्थ गुरु वक्री होने से अनाजादि की पैदावार अच्छी होगी। दूध, घी आदि सस्ते तथा प्रजा में सुख के साधन बढ़ेंगे।

वक्रभूतो यदा जीवः सुभिक्षं भूतले भवेत्।
जनभूपाल सौख्यं स्यात् समर्घ गोरसं घृतम्।।

माघ मास (24 जन. से 22 फर. तक) में पाँच रविवार एवं पाँच सोमवार आने, 12 फर. तक **सूर्य-शनि** (3-10) व **गुरु-शुक्र** मध्य (5-9) दृष्टि सम्बन्ध, 20 फर. से मंग.-शनि योग होने से राजनीतिक एवं सामाजिक माहौल विक्षुब्ध एवं अशान्त रहेगा। कहीं शासन परिवर्तन (छत्रभंग), दुर्भिक्ष, आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में आशातीत वृद्धि एवं कहीं युद्ध का भय होगा। **सत्तारूढ़ तथा विपक्षी पार्टियों के मध्य आरोप-प्रत्यारोप का वातावरण संसदीय परम्पराओं को तहस-नहस कर देगा।** विदेशी असमाजिक तत्त्वों, सोशल मीडिया द्वारा साम्प्रदायिक विद्वेष भड़काने का कार्य किया जाएगा।

'माघमासे रविवाराः जायन्ते पंचसततम्।
दुर्भिक्षं छत्रभंग स्यात् दारुते च महद्भयं।।

अत्यधिक महँगाई के कारण लोगों में आक्रोश एवं असन्तोष बढ़ेगा। परन्तु पाँच सोमवार होना समर्घताकारक एवं सरकार की ओर से लोकभलाई के लिए नई नीतियों की घोषणा होगी।

फाल्गुन मास (23 फर. से 23 मार्च तक) में पांच मंगलवार और पाँच बुधवार होना, **मंगल-शनि योग** तथा ता. 7 से **गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक** योग होने से प्रजा में असन्तोष एवं उपद्रव की घटनाएं अधिक होंगी। विपक्षी दलों द्वारा सरकारी फैसलों की आधारहीन तथा खोखले तर्कों के साथ आलोचना की जाएगी। साम्प्रदायिक टकराव एवं हिंसा की घटनाएं होने के संकेत हैं। देश के किसी प्रमुख नेता का निधन होने के योग हैं।

भौमसौरीश्चैक राशौ द्वयोस्थिते समसप्तकमथवा।
दुर्भिक्षं राज्यभंगं च मेदिन्यामग्नितो भयम्।।

अर्थात् मंगल व शनि–ये दोनों ग्रह एक ही राशि में स्थित हो, तो देश में कहीं दुर्भिक्ष हो और कहीं राज्यभङ्ग एवं हिंसक घटनाएं घटित होंगी, कहीं अग्निकाण्ड या विस्फोट आदि से जन, धनादि की क्षति हो।

चैत्र मास (24 मार्च से 22 अप्रै. तक) में पांच बृहस्पतिवार तथा पाँच शुक्रवार होने, **मंगल-शनि** योग तथा **गुरु-राहु** योग के प्रभावस्वरूप देश में कहीं उपद्रव, बाढ़, हिंसा, आँधी, तूफान आदि प्राकृतिक घटनाएं घटित होंगी। कुछ प्रदेशों में दुर्भिक्ष का भी भय रहेगा। ता. 25 मार्च से शनि वक्री होने से सत्तारूढ़ व विपक्षी दलों के नेताओं में परस्पर टकराव व खींचातानी बढ़ेगी। सत्तारूढ़ गठबन्धन की विभिन्न पार्टियों में आपसी सामंजस्य में कमी व तनाव रहे। सरकारी कठोर नीतियों, बढ़ती महँगाई के विरुद्ध उपद्रव, जनांदोलन एवं तोड़-फोड़ की घटनाएं बढ़ेंगी। प्रजा में सुख-शान्ति की कमी हो, देश के कुछ भागों में युद्ध-जन्य वातावरण बने। कहीं दुर्भिक्ष एवं कहीं सीमावर्त्ती क्षेत्रों में युद्ध का आतंक छाया रहे–

शनि वक्रे दुर्भिक्षं च राज्ञां युद्धं परस्परम्। रूण्ड मुण्ड च मेदिनीम्।

वैशाख मास (23 अप्रै. से 21 मई तक) में पाँच शनिवार का समावेश, गुरु-राहु योग, मंगल-शनि योग तथा 14 मई से मं.-श. का सूर्य-शुक्र के साथ सम-सप्तक योग के फलस्वरूप देश में प्राकृतिक आपदाओं, भूकम्प, अग्निकाण्ड, तूफान, बादल-विस्फोट आदि से भारी जन-धन हानि का भय है। कुछ प्रदेशों में सत्ता-परिवर्तन, उपद्रव व टकराव के हालात पैदा होंगे। बंगाल आदि राज्यों में भाजपा के प्रभावक्षेत्र में उल्लेखनीय वृद्धि होगी। परन्तु सत्ता प्राप्त करने में सफल नहीं होगी। गुरु-राहु योग के प्रभावरूप सब प्रकार के अनाजों, दालों में विशेष तेजी बनेगी। राजनेताओं एवं प्रशासक वर्ग में भय और अशान्ति का वातावरण बनेगा।

गुरु-राहु यदैकग भवेतां सहितो यदा। सर्वधान्य महर्घत्वं राजानो भय विह्वलाः।।

एवं च, 28 अप्रैल को मनुष्य गण में शुक्र अस्त होने से उत्तरी भारत के विभिन्न प्रान्तों में दुर्भिक्ष का भय हो–'**दुर्भिक्षमुत्तरेदेशेविग्रहोद्रविडाश्रये।।**' मेष राशि में शुक्र का अस्त होने से सभी प्रकार के धान्य महँगे होंगे–'**शुक्रस्यास्तंगमान्मेषेसर्वधान्यमहर्घता।।**'

ज्येष्ठ मास (22 मई से 20 जून तक) में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार होने एवं सूर्य-शनि के मध्य समसप्तक योग एवं मगं.-शनि योग के प्रभावस्वरूप लोगों में अनेक क्लिष्ट रोग फैलने का भय रहेगा।

"**ज्येष्ठ कृष्णप्रतिपदा भौमार्कबुधवासरा एवं भवेत् यदायोगो लोकानां व्याधिपीडनम्।।**" सूर्यादि क्रूर ग्रहों का समसप्तक योग होने से उ.प्र., म.प्र., बिहार, असम तथा जम्मू-कश्मीर के पश्चिमोत्तर भागों में हिंसा, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, साम्प्रदायिक हिंसा व विस्फोटक घटनाएँ घटित होने के योग हैं।

यदा सौरि भौमे सुरराजमन्त्री भार्गवश्च यदैकं राशौ (समसप्तके वा)
अयोध्या मध्यदेशे लंकापुरे पूर्वस्यां चक्षुधाभयं शस्त्रं करोति।।

4 जून को शनिवारी अमावस्या का भी योग होने से कई स्थानों पर पेयजल, अनाज आदि की कमी होने से दुर्भिक्ष जैसी स्थिति बनेगी। साधारण लोगों में महँगाई, रोग, शोक एवं कष्टों में वृद्धि होगी।

दुर्भिक्षं रौरवं घोरं महादुखं महद् भयम्।
पराङ्गमुखाः पितुः पुत्रा व्यसनं शनिवासरे।।

पाँच रवि व पाँच सोमवार होने से मिश्रित फल घटित होंगे। कुछ प्रदेशों में सत्ता-परिवर्तन, कहीं उपद्रव तथा कुछ प्रदेशों में धन-धान्य, कृषि-उत्पादन तथा सुख-साधनों में वृद्धि होगी।

आषाढ़ मास (21 जून से 19 जुला. तक) में पांच मंगलवार, शुक्र अस्त तता गुरु-शनि के मध्य दृष्टि सम्बन्ध (4-10) होने से देश के किसी प्रमुख नेता के लिए अनिष्टकर एवं अशुभ समय होगा। देश के किसी क्षेत्र विशेष में अग्निकाण्ड, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ अधिक होंगी। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल अथवा किसी प्रान्त में सत्ता-परिवर्तन (या छत्रभंग) के भी संकेत हैं–

यत्रमासे महीसूनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेनपूरित पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।

आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से प्रजा में आक्रोश एवं गहन असन्तोष व्याप्त रहे। परन्तु ग्रहगोचरानुसार सूर्य-बुध-शुक्र-तीनों एक ही राशि (मिथुन) में होने से सरकारी प्रयासों से धान्यादि के भावों में विशेष तेजी नहीं बन पाएगी।

श्रावण मास (20 जुला. से 18 अग. तक) में पाँच बुधवार एवं पाँच गुरुवार होने, पुनः मंगल-शनि योग के प्रभावस्वरूप अनाजादि की पैदावार में वृद्धि होगी तथा उच्च-वर्ग में सुख-सुविधाओं के साधनों का विस्तार होगा। परन्तु पाँच बृहस्पतिवार होने से कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, तों कहीं अतिवृष्टि से बाढ़ादि प्राकृतिक प्रकोपों से जन व धन सम्पदा को क्षति पहुँचे। कुछ प्रदेशों में दुर्भिक्ष का भी भय रहेगा। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन के संकेत हैं।

यत्रमासे पञ्चवाराः जायन्ते च वृहस्पतेः।
विग्रहः पश्चिमे देशे खड्गयुद्धं च जायते।।

2 अग. को मंगलवारी अमावस होने तथा बुध, गुरु, शुक्र एवं राहु-ग्रहों का चतुर्ग्रही योग 11 अग. तक रहने से देश की विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह, टकराव एवं गतिरोध की स्थिति रहेगी। केन्द्रीय नीतिगत निर्णयों का अकारण विरोध किया जाएगा, जिससे विकासोन्मुखी योजनाओं के क्रियान्वयन में विलम्ब होगा।। किसी प्रदेश में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव एवं हिंसक घटनाएं घटित होंगी। कहीं अतिवृष्टि या अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में तेजी रहे। किसी प्रमुख राजनेता की पदच्युति या छत्रभंग के योग प्रतीत होते हैं।

16 अग. को भाद्रपद संक्रान्ति भी मंगलवार को होने तथा सूर्य पर शनि की दृष्टि के प्रभावस्वरूप राजनीतिक टकराव, विभिन्न राजनेताओं में परस्पर टकराव एवं विग्रह हो, आरोप-प्रत्यारोप की तुच्छ राजनीति सभी सीमाएं लांघ जाएगी। कहीं छत्रभंग, उत्पात, उपद्रव, हिंसक घटनाएं एवं जन-धन सम्पदादि की क्षति होगी। प्राकृतिक आपदाएं बढ़ें।

राज्यभ्रंशोराजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्।
उपघातोऽल्पवृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।।

भाद्रपद मास (19 अग. से 16 सितं. तक) में पांच शुक्रवार होने से अनाजादि के मूल्यों में वृद्धि होगी। धन का प्रसार बढ़ेगा, सरकार द्वारा प्रदत्त सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। जनसंख्या में वृद्धि के कारण कुछ गम्भीर समस्याएँ बढ़ेंगी-

शुक्रस्य पंचवारास्यु यत्रमासे निरन्तरम्।
प्रजावृद्धिं सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्त्तते।।

आश्विन मास (17 सितं. से 16 अक्तू. तक) में पाँच शनिवार तथा पाँच रविवार होने से भारत के अनेक प्रदेशों में उपद्रव, साम्प्रदायिक दंगे, हिंसक घटनाएँ, अग्निकाण्ड की वारदातें अधिक होंगी। केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में वृहद स्तर पर परिवर्तन होगा, जिस कारण भाजपा या सहयोगी पार्टियों में मतभेद उभर सकते हैं। उपभोग्य वस्तुओं की कीमतों में अत्यधिक तेजी तथा लोगों में क्लिष्ट-पेचीदा रोगों की उत्पत्ति होने से कष्टों व दुःखों में वृद्धि होगी।

शनिवारा यदा पंचजायन्ते रविपंचकम्।
महार्घं जायते धान्यं रोग-शोकाकुला पृथिवी।।

कार्तिक मास (17 अक्तू. से 14 नवं. तक) में पांच रविवार तथा पाँच सोमवार होने, 1 नवं. से शनि-मंगल के मध्य दृष्टि सम्बन्ध होने से देश में कहीं अनाज की कमी, अत्यधिक महंगाई, प्राकृतिक प्रकोपों से जन-धन हानि, उपद्रव, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) आदि आकस्मिक घटनाएं घटित हों।

मार्गशीर्ष मास (15 नवं. से 13 दिसं. तक) में पाँच मंगलवार होने से देश के सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्रों के लिए शुभ नहीं है। देश में कहीं आतंकी एवं हिंसक घटनाओं की सम्भावना, राज-सत्ता परिवर्तन व साम्प्रदायिक घटनाओं का भय रहेगा। किसी प्रमुख राजनेता के अपदस्थ या आकस्मिक मृत्यु के भी संकेत हैं। सूर्य-शनि योग के प्रभावस्वरूप उत्तरप्रदेश, बंगाल, जम्मू-कश्मीर, बिहार आदि प्रदेशों में व्यापक हिंसा, अग्निकाण्ड, उपद्रव एवं साम्प्रदायिक विद्वेष की घटनाएं अधिक होंगी। ता. 29 नवं. को भौमवती अमावस भी राजनीति में विशेष उथल-पुथल लेकर आएगी। देश में राजनीतिक टकराव तथा राजनेताओं में परस्पर विग्रह एवं आरोप-प्रत्यारोप हों, कहीं छत्रभंग हो। अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में तेजी हो।

पौष मास (14 दिस. से 12 जन., 2017 ई. तक) में पाँच बुधवार एवं पाँच बृहस्पतिवार होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पाँच गुरुवार होने तथा गुरु-शुक्र के मध्य (5-9) दृष्टि सम्बन्ध होने से प्राकृतिक प्रकोपों, रेल-वायुयान दुर्घटनाओं से जन व धन-सम्पदा को क्षति पहुँचे। भारत के पश्चिमी प्रदेशों एवं पश्चिमी सीमाओं पर आतंकवादी एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं। ता. 28 दिसं. से मंग.-शुक्र-केतु योग होने से राजनीतिक टकराव तथा अनावृष्टि, बर्फबारी से फसलों को हानि होगी-

शुक्रस्य यदि भौमेन योगो वा समसप्तकम्। वृष्टिर्मासे तदाकाले।।

वि. संवत् २०७३ में कांग्रेस पार्टी का भविष्य

कुण्डली कांग्रेस पार्टी

10 मं.
सू. 8 बु.
11 रा.
9
7 गु. शु.
12
6
1 चं. श.
3
5 के.
2
4

कांग्रेस पार्टी की जन्म कुण्डली में धनु लग्न उदित है। गोचर ग्रहस्थिति अनुसार लग्नेश गुरु नवम भाव में सिंहस्थ एवं राहु युक्त होकर अगस्त, 2016 ई. तक संचार करेगा। गुरु की लग्न पर स्वगृही दृष्टि भी रहेगी। परन्तु शनि शत्रु (वृश्चिक) राशिगत वर्षभर संचार कर लग्नेश गुरु एवं राहु पर शत्रु दृष्टि रखेगा। फलस्वरूप ग्रहगोचर स्थिति अनुसार कांग्रेस पार्टी मुख्य विपक्षी पार्टी की आपेक्षाओं, उम्मीदों और आकांक्षाओं पर खरी नहीं उतर सकेगी। केन्द्रीय सरकार की आधारहीन आलोचना करते-करते स्वयं ही आलोचना का केन्द्र बनने के संकेत हैं। कांग्रेस एक खण्डित पार्टी के रूप में दृष्टिगोचर होगी। बंगाल, बिहार तथा अन्य राज्यों के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की संगठनिक विफलता और दिशाहीनता उसे नुकसान पहुँचाएंगी। बदलाव के दौर में कांग्रेस रहेगी।

कुण्डली श्रीराहुल गाँधी
19-06-1970 ई., 5:05AM

कांग्रेस पार्टी के उपप्रधान एवं कर्णधार श्रीराहुल गाँधी का जन्म लग्न वृष तथा जन्मराशि वृश्चिक है। पंचमेश एवं धनेश बुध लग्न में वर्गोत्तम (नवांश कुं. में भी बुध वृषस्थ है) होकर स्थित है। फलस्वरूप जातक तीव्र बुद्धिमान, वाक्पटु, स्फूर्तिवान एवं तेजस्वी नेता के रूप में उभरकर आए हैं। वर्तमान में इनको चन्द्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है (24-08-2015 ई. तक)। फलस्वरूप उनके राजनीतिक व्यवहार में अपरिपक्वता और अतार्किकता दृष्टिगोचर हुई। परन्तु आगे 24-08-2015 ई. से 24-04-2017 ई. तक चन्द्र मध्ये शुक्र की अन्तर्दशा तथा शनि साढ़ेसति के कारण अनेक परेशानियों के मध्य कांग्रेस पार्टी में नवशक्ति एवं उत्साह पैदा करने के लिए अनेग पग व्यापक स्तर पर उठाएंगे। कुछ अदूरदर्शी निर्णयों एवं विरोध की ही राजनीति के कारण कांग्रेस की लोकप्रियता को गहरा धक्का पहुँचेगा। भ्रष्टाचार एवं अन्य स्कैण्डलों से पार्टी प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचेगी।

प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी एवं भाजपा सरकार

जन्मकुण्डली श्री नरेन्द्र मोदी 17 सितं., 1950 ई. रविवार 11घं-00मिं. A:M, महेसाना (गुज.)	प्रधानमंत्री मोदी द्वारा शपथ कालीन कुं 26 मई, 2014 ई., 18घं-13मिं., 7-29°-38'-12"	भाजपा मंत्रीमण्डल द्वारा शपथकालीन कुण्डली 26 मई, 2014 ई., 18घं-15मिं. बाद
9, 7, 8 चं. मं., 6 सू. बु. के., 10, 11 गु., 5 शु. श., 12 रा., 2, 4, 1, 3	8, 7 श. रा. (व.), 6 मं., 9, 5, 4, 10, 1 चं. शु. के., 3 बु. गु., 11, 12, 2 सू.	9, 7 श. रा., 10, 8, 6 मं., 11, 5, 12, 2 सू., 4, 1 चं. शु. के., 3 बु. गु.
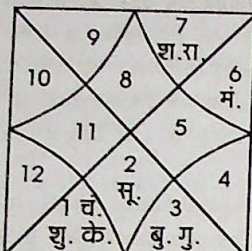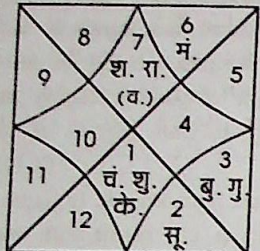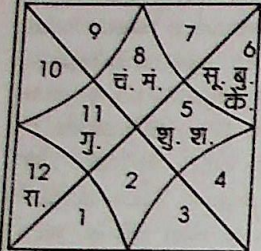
[कृपया पाठकगण ध्यान दें, गतवर्ष इसी कॉलम में अन्तर्गत '**पंचांग-दिवाकर**' के पृष्ठ 77 पर लिखी गई अनेक भविष्यवाणियां एवं संकेत ईश्वर-कृपावश अक्षरशः सत्य सिद्ध हुए। जिन पाठकों ने पत्र या फोन द्वारा हमें प्रशंसापत्र एवं श्लाघा संदेश भेजे हैं, उनका हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं।] इस वर्ष हम ग्रहगोचर अनुसार ही प्रधानमन्त्री की जन्म कुं. तथा शपथकालीन कुं. की विवेचना करेंगे।

कुण्डली भाजपा

4, 2 शु., 5 मं. गु. श. रा., 3, 1, 6, 12 सू., 7, 9, 11 बु. के., 8 चं., 10

देश के वर्तमान प्रधानमन्त्री श्रीनरेन्द्र मोदी ने 26 मई, 2014 ई. को सायं 6 बजकर 13 मिनट पर चर लग्न तुला में पद की शपथ ग्रहण की थी। जबकि उनके मन्त्रीमण्डल ने स्थिर लग्न वृश्चिक में अपने-अपने पदों की शपथ ग्रहण की थी। प्रधानमन्त्री की शपथकालीन कुं. में स्थिरसंज्ञक शनि ग्रह उच्चस्थ राहु युक्त है, उस पर गुरु की शुभ दृष्टि है। फलस्वरूप **प्रधानमन्त्री मोदी अनेक अवरोधों, आलोचनाओं तथा आरोपों के बावजूद भारत को विकास पथ यात्रा पर अग्रसर करेंगे तथा विकास, सुशासन के नए प्रतिमान स्थापित करेंगे।** आगामी वर्ष प्रधानमन्त्री जी की जन्म कुं. में गुरु पंचमेश होकर कर्म स्थान में राहु युक्त होकर अग., 2016 तक संचार करेगा। फलस्वरूप श्री मोदी अपने राजनीतिक कौशल से देश की राजनीति में व्यापक बदलाव लाने में सक्षम होंगे। कांग्रेस सहित क्षेत्रीय दलों को हाशिये पर जाना पड़ सकता है। गतवर्ष की भान्ति ही सरकार एवं मोदी जी के समक्ष देश की आन्तरिक एवं बाह्य समस्याओं के सम्बन्ध में गम्भीर चुनौतियां तथा व्यवधान आएंगे। सभी समस्याओं का यथायोग्य निराकरण करते हुए अपनी तथा भारत की प्रतिष्ठा को बढ़ाएंगे। मोदी जी की विचारधारा को वैश्विक समर्थन प्राप्त होगा। मोदी जी जन और सत्ता के बीच संवाद बढ़ाएंगे।
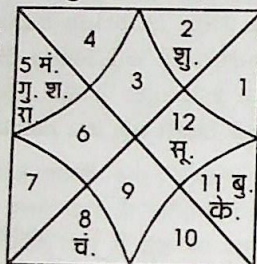
श्रीनरेन्द्र मोदी जी को वर्तमान काल में चन्द्र मध्ये गुरु की (5-11-2014 ई. से 6-03-2016 ई. तक) अन्तर्दशा शुभ एवं मोदी जी के प्रभावमण्डल, प्रतिष्ठा एवं प्रभुत्व में विशेष वृद्धिकारक होगी। आगे भी गुरु (2015-16 एवं 2016-17 ई. में) केन्द्र एवं त्रिकोण भावों में संचार करने से श्रीमोदी जी को विश्व के प्रमुख नेताओं में से जाना जाएगा। विश्व के सभी विकसित एवं विकासशील देश भारत एवं मोदी जी से मैत्री और संवाद के लिए उत्सुक एवं तत्पर रहेंगे। (6-03-2016 ई. से 6-10-2017 ई. तक) चन्द्र मध्ये शनि की अन्तर्दशा स्वयं मोदी जी के लिए तथा केन्द्रीय सरकार के लिए संघर्षमयी एवं अग्नि परीक्षा वाला समय रहेगा। अनेक सामरिक, आर्थिक निर्णयों के कारण यद्यपि मोदी जी को आलोचना का सामना करना पड़े, परन्तु देश के दीर्घकालीन स्वास्थ्य एवं प्रगति के लिए विशेष प्रबुद्ध वर्ग द्वारा प्रशंसा भी की जाएगी।

भाजपा की स्थापना कुण्डली में स्थित ग्रहों तथा वर्तमान गोचर ग्रहस्थिति अनुसार वर्ष का पूर्वार्द्ध भाग पार्टी की अस्मिता के लिए अत्यन्त संघर्षमय एवं चुनौतिपूर्ण रहेगा। पार्टी की प्रतिबद्धता, लोकप्रियता एवं प्रतिष्ठा को भविष्य मे ज़बरदस्त ठेस पहुँचेगी। कुछ मन्त्रियों के ग़ैर-जिम्मेदार बयानों एवं दोषपूर्ण नीतियों/फैसलों से मोदी सरकार की ईमानदारी छवि धूमिल होगी। यद्यपि इसी वर्ष नवम्बर, 2015 में बिहार तथा आगामी वर्ष बंगाल आदि राज्यों में विपक्षी दलों की अपेक्षा स्थिति सुदृढ़ एवं कामयावी देने वाली होगी। गोचरस्थ भी तृतीयस्थ राहु का संचार तथा शनि-साढ़ेसति के कारण कुछ प्रदेशों में आशानुकूल कामयाबी संदिग्ध रहेगी। भाजपा को हराने के लिए विपक्षी पार्टियां एकजुट एवं गठजोड़ बना लेंगी। बंगाल में भाजपा प्रमुख विपक्षी पार्टी के रूप में उभरेगी।

भारत के कुछ मुख्य प्रान्त

हिमाचल प्रदेश—इसकी प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि कर्क है। 69वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में प्रभावराशि पर केतु का संचार तथा कर्क (नाम) राशि पर सूर्य, मंगल, शुक्र आदि विरुद्ध एवं क्रूर ग्रहों का संचार है। 67वें गणतन्त्र दिवस (2016-17 ई.) कुण्डली में भी प्रभावराशि पर केतु का संचार तथा राशिस्वामी गुरु पर शनि की अशुभ (शत्रु) दृष्टि रहने से अगस्त, 2015 ई. से अगस्त, 2016 ई. तक ग्रहस्थिति अनुसार प्रदेश में प्राकृतिक आपदाओं, सड़क दुर्घटनाओं, अतिवृष्टि आदि से व्यापक कृषि एवं जन-धन हानि के संकेत हैं। वर्तमान में प्रदेश कांग्रेस सरकार राज्य में अनेक अधूरी एवं रूकी हुई विकासोन्मुखी योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए प्रयत्नशील रहेगी। सत्तारूढ़ कांग्रेस सरकार का केन्द्रीय सरकार से कुछ आर्थिक मुद्दों पर टकराव की स्थिति भी बनेगी। यद्यपि उपयोगी वर्षा से तथा विशेष जापानी आदि आधुनिक तकनीकी सहायता से हिमाचल में सब्ज़ियों एवं फलों का यथेष्ठ उत्पादन होने से किसानों एवं राज्य की आर्थिक प्रगति होगी। औद्योगिक निवेश के लिए अनुकूल माहौल तथा प्रोत्साहन दिया जाएगा। 20 फर. से 16 जून के मध्य **मंग.-शनि** योग, पुनः 12 जुला. से 17 सितं. तक **मं.-श.** योग तथा 29 जन. से 11 अग. तक **गुरु-राहु** योग रहने से प्राकृतिक आपदाओं जैसे-अतिवृष्टि, भूस्खलन, बादल-स्फुटन आदि से भारी क्षति होने के संकेत हैं।

पंजाब—इसकी प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि कन्या है। गोचर ग्रहस्थिति अनुसार

वर्षारम्भ से 28 जन. तक ही कन्या राशि पर राहु तथा मीन राशि पर केतु का संचार रहेगा। परन्तु 29 जन. से 11 अग., 2016 ई. तक राशिस्वामी गुरु के साथ राहु का संचार सिंह राशि में तथा शनि की अशुभ दृष्टि रहने से पंजाब का सामाजिक एवं राजनीतिक माहौल अत्यन्त पेचीदा, तनावपूर्ण एवं असमंजसपूर्ण रहने के संकेत हैं। सन् 2017 ई. में होने वाले विधानसभा चुनावों के दृष्टिगत बादल सरकार द्वारा खाद्य सुरक्षा, फूड-पार्क स्थापना आदि विकासोन्मुखी अनेक योजनाओं एवं नीतियों का शिलान्यास एवं क्रियान्वयन किया जाएगा। प्रान्त प्रगति की ओर उन्मुख रहेगा। परन्तु टैक्सों, बिजली दरों में वृद्धि तथा ग्रामीण क्षेत्रों की तुष्टीकरण नीति के कारण शहरी लोगों तथा छोटे व्यापारियों एवं उद्योगपतियों में गहन असन्तोष एवं आक्रोश की भावना रहेगी। राज्य के सीमावर्ती नगरों में आतंकी घुसपैठ तथा घटनाओं के अंजाम देने के प्रयास भी किए जाएंगे।

जम्मू-कश्मीर—प्रभावराशि तुला तथा नामराशि मकर है। प्रभावराशि पर शनि साढ़ेसति तथा नामराशि मकर पर मुंथा स्थित है। **गतवर्ष इसी कॉलम में पृष्ठ 78 पर विधानसभा चुनावों सम्बन्धी भविष्यवाणी पूर्ण रूप से स्पष्टतः हू-ब-हू सत्य प्रमाणित हुई—'......अनुसार पी.डी.पी. एवं भाजपा का जनाधार तथा सीटें बढ़ने के बावजूद स्पष्ट बहुमत किसी भी पार्टी को नहीं प्राप्त होगा। चुनाव पश्चात् गठबन्धन सरकार अस्तित्व में आएगी। त्रिशंकु विधानसभा बनने के ही संकेत हैं।' संवत् 2071 में भी भविष्यवाणी अक्षरशः सत्य सिद्ध हुई थी—'आगामी विधानसभा एवं लोकसभा चुनावों में पी.डी.पी. का प्रभाव बढ़ेगा। जम्मू क्षेत्र में भाजपा पुनः विजयी होगी।'** इत्यादि अनेक भविष्यवाणियां अपनी सत्यता की प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

69वें स्वतन्त्र भारत की कुं. में मकर राशि पर स्थित मुंथा पर सूर्य-मंग.-शुक्र आदि ग्रहों की शत्रु दृष्टि पड़ रही है। फलस्वरूप राज्य में भाजपा और पी.डी.पी. दोनों सत्तारूढ़ पार्टियां भारी अंतर्द्वंद्व की स्थिति से गुज़रेंगी। दोनों पार्टियों में आपसी खींचतान और विरोध राज्य को राजनीतिक अस्थिरता एवं असमंजसपूर्ण वातावरण की ओर ले जाएगा। शीतयुद्ध जैसी स्थिति के बावजूद राजनीतिक विवशता के चलते सरकार चलती रहेगी। वर्षों से अलगाववाद और आतंकवाद की मार झेलते-झेलते अस्थिरता एवं अशान्त माहौल में राज्य में विधवाओं, अनाथ बच्चों और बेसहारा बुजुर्गों की संख्या लगातार बढ़ती जाएगी। मुस्लिम नौजवानों में अलगाव की भावना बढ़ने से सरकार की परेशानियां बढ़ेंगी। आई.एस.आई. द्वारा प्रदेश में जेहादी संस्कृति का पोषण किया जाएगा। पाक प्रेरित आतंकवादी घाटी में विध्वंसक कार्यवाहियां करके विश्व का ध्यान काश्मीर की ओर करने की कुचेष्ठा करते रहेंगे। फलस्वरूप प्रान्तीय सरकार को आर्थिक व सामाजिक अवरोधों का सामना करना पड़ेगा।

हरियाणा—प्रभावराशि मीन तथा नाम राशि मिथुन है। 69वें स्वतन्त्र दिवस कुण्डली तथा नवगणतन्त्र दिवस कुण्डली में ग्रहस्थिति के अनुसार वर्तमान भाजपा सरकार को विशेष राजनैतिक एवं आर्थिक चुनौतियों का सामना रहेगा। **ध्यान रहे**, हरियाणा शीर्षक के सन्दर्भ में गतवर्षीय संवत् 2072 के पंचांग में पृष्ठ 78 पर हमारी भविष्योक्त (प्रभु-कृपावश) अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुई है—"**....यद्यपि भाजपा सबसे बड़े दल के रूप में उभरेगी।**"—एवं 'नई सरकार पुराने कानूनों के प्रावधानों विशेषकर भूमि अधिनियमों में परिवर्तन करेगी।"

69वें स्वतन्त्र कुण्डली में कर्क राशि पर सूर्य-मंग.-शुक्र आदि विरुद्ध ग्रहों का प्रभाव परन्तु 67वें गणतन्त्र दिवस कुण्डली में मिथुन राशि पंचम (विकास/योजना भाव) भाव में शुभाशुभ ग्रहों की दृष्टियां रहने से यद्यपि योग और नैतिक शिक्षा के बेहतर परिणाम मिलेंगे तथा केन्द्र सरकार द्वारा प्रणीत योजनाओं के क्रियान्वयन से राज्य प्रगति पथ पर रहेगा। किसानों तथा गरीब में अपनी छवि सुधारने हेतु अनेक लोकलुभावन योजनाओं की घोषणा की जाएगी। परन्तु विपरीत ग्रहस्थिति के कारण कुछ क्षेत्रों में भाजपा का जनाधार का सिकुड़ना तथा लघु निकाय आदि चुनावों में पार्टी को यथेष्ठ सफलता प्राप्ति में बाधाएं रहेंगी। मन्त्रिमण्डल में सामूहिक कार्यशैली का अभाव होगा, यद्यपि विपक्ष भी खण्डित एवं अन्दरूनी गुटबाज़ी से ग्रस्त रहेगा।

राजस्थान—प्रभावराशि कर्क है। 69वें स्वतन्त्र भारत की कुण्डली में कर्क राशि पर विरुद्ध एवं क्रूर ग्रहों का संचार तथा मुंथा की दृष्टि के प्रभावस्वरूप आगामी वर्ष सत्तारूढ़ भाजपा सरकार को विषम एवं कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। साधारण जनता तथा किसानों तक विकास का प्रभाव नगण्य रहेगा, फलस्वरूप उनमें सरकारी नीतियों के विरुद्ध असन्तोष एवं विक्षोभ की भावना रहेगी। मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन एवं किसी प्रमुख नेता को त्यागपत्र भी देना पड़ सकता है।

उत्तर-प्रदेश—प्रभाव राशि धनु तथा नाम राशि वृष है। 67वें गणतन्त्र दिवस (26-01-2016 ई.) कुं. में धनु राशि पर विरोधी ग्रहों के प्रभाव के कारण सपा सरकार के लिए बिगड़ती कानून व्यवस्था, सामाजिक एवं साम्प्रदायिक विद्वेष की भावनाओं पर अंकुश लगाना कठिन हो जाएगा। सन् 2017 ई. में होने वाले विधानसभा चुनावों से पूर्व अनेक लोकलुभावन योजनाओं का शिलान्यास तथा पुरानों योजनाओं को नई धार देने का प्रयास किया जाएगा। भाजपा विरुद्ध नवीन महागठबन्धन अस्तित्व में आएंगे।

दिल्ली—नए 69वें स्वतन्त्र भारत की कुं. में इसकी प्रभावराशि मकर पर मुंथा की स्थिति तथा 67वें गणतन्त्र दिवस कुं. में मकर राशि द्वादश (गुप्त शत्रु, हानि, व्यय, युद्ध सम्बन्धी भाव) भाव में स्थित है। राशिस्वामी शनि शत्रु राशि में स्थित है। गतवर्ष भी वृश्चिक राशिस्थ शनि के अशुभ प्रभाव दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) पर विशेष रूप से पड़ता है—ऐसा शास्त्रों में वर्णित है—लिखा गया था—'**वर्षमात्रमथोचोर्ध्वामिंद्रप्रस्थो विनश्यति**'—अर्थात् एक वर्ष के भीतर दिल्ली शहर में विनाशकारी (हिंसक) कृत्य अधिक हों। **दिल्ली राज्य एवं शहर आरोप-प्रत्यारोप की दूषित एवं विषैली राजनीति का केन्द्र बन जाएगा। केन्द्र एवं राज्य सरकार में टकराव की राजनीति उपहास का कारण बन जाएगी। 'आप' सरकार के लोक लुभावन नारों और नीतियों की कीमत अंततः जनता को चुकानी पड़ेगी।**

उपरोक्त भविष्यवाणियां देश, स्थान आदि की जन्म-कुण्डलियों में ग्रहों की स्थिति, दशा एवं गोचर ग्रहों के प्रभाव व संकेतों के आधार पर अपनी अल्पबुद्धि के अनुसार लिपिबद्ध की गई हैं। वास्तव में सर्वश्रेष्ठ भविष्यवेत्ता एवं सर्वज्ञ तो स्वयं भगवान् ही हैं—

"फलानि ग्रह संचारेण सूचयन्ति मनीषिणः। को वक्तः तारतम्यस्य वेधसं विना।"

लेख लिपिबद्धम्—
श्रावण शुक्ल प्रतिपदा
15 अगस्त, शनिवार, 2016 ई.

शुभ चिन्तकः
पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र परम श्रद्धेय स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी,
जालन्धर(पंजाब)

सूर्यादि ग्रहों का राशि प्रवेश, वक्री-मार्गी एवं उदयास्त (घं. मिं.) (सन् 2016-17 ई.)

सूर्य राशि प्रवेश (वर्षारम्भ में धनु में)

ता. मास	राशि	घं. मिं.	ता. मास	राशि	घं. मिं.
14 जन.	मकर	25/25	16 अग.	सिंह	18/39
13 फर.	कुम्भ	14/24	16 सितं.	कन्या	18/35
14 मार्च	मीन	11/17	17 अक्तू.	तुला	6/31
13 अप्रै.	मेष	19/47	15 नवं.	वृश्चिक	30/17
14 मई	वृष	16/41	15 दिसं.	धनु	20/53
14 जून	मिथुन	23/19	14 जन.(17)	मकर	7/38
16 जुला.	कर्क	10/15	12 फर.	कुम्भ	20/38
			14 मार्च	मीन	17/33

मंगल राशि प्रवेश (संवतारम्भ में वृश्चिक में)

17 अप्रै.	वक्री	17/41	18 सितं.	धनु	7/42
17 जून	व. तुला	23/52	1 नवं.	मकर	8/37
30 जून	मार्गी	05/09	11 दिसं.	कुम्भ	18/53
12 जुला.	वृश्चिक	14/02	20 जन.(17)	मीन	13/47
			1 मार्च	मेष	26/38

बुध राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मेष में)

28 अप्रै.	वक्री	22/46	3 अक्तू.	कन्या	17/48
22 मई	मार्गी	18/48	21 अक्तू.	तुला	14/19
8 जून	वृष	9/47	8 नवं.	वृश्चिक	24/39
27 जून	मिथुन	8/06	28 नवं.	धनु	22/13
11 जुला.	कर्क	9/48	19 दिसं.	वक्री	16/21
27 जुला.	सिंह	7/11	8 जन(17)	मार्गी	15/09
19 अग.	कन्या	17/24	3 फर.	मकर	13/17
30 अग.	वक्री	18/31	22 फर.	कुम्भ	18/43
9 सितं.	व. सिंह	17/47	10 मार्च	मीन	26/36
22 सितं.	मार्गी	10/58	27 मार्च	मेष	7/38

गुरु राशि प्रवेश (संवतारम्भ में सिंह में वक्री)

9 मई	मार्गी	17/39	6 फर.(17)	वक्री	12/17
11 अग.	कन्या	21/25			

शुक्र राशि प्रवेश (संवतारम्भ में मीन में)

25 अप्रै.	मेष	10/50	31 जुला.	सिंह	25/28
19 मई	वृष	19/45	25 अग.	कन्या	11/53
13 जून	मिथुन	5/36	18 सितं.	तुला	24/05
7 जुला.	कर्क	15/36	13 अक्तू.	वृश्चिक	15/27

शुक्र राशि प्रवेश

ता. मास	राशि	घं. मिं.
7 नवं.	धनु	11/57
2 दिसं.	मकर	18/42
28 दिसं.	कुम्भ	26/46
(सन् 2017 ई.)		
27 जन.	मीन	20/18
4 मार्च	वक्री	14/38

—शनि—

(संवतारम्भ में वृश्चिक में वक्री)

13 अग.	मार्गी	15/10
26 जन.(17)	धनु	19/28

संवतान्त तक धनु राशि में ही संचार करेगा।

राहु (संवतारम्भ में सिंह में)

सारा संवत् सिंह राशि में ही संचार करेगा।

—केतु—

(संवतारम्भ में कुम्भ में)

सारा संवत् कुम्भ राशि में ही संचार करेगा।

—यूरेनस—

(संवतारम्भ में मीन में)

27 जून	मेष	16/52
29 जुला.	वक्री	22/09
31 अग.	व. मीन	17/59
29 दिसं.	मार्गी	14/12

—नैपच्यून—

सारा संवत् कुम्भ राशि में ही संचार करेगा।

—प्लूटो—

सारा संवत् धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रहों का वक्री-मार्गी

मंगल

17 अप्रै.	वक्री	17/41
30 जून	मार्गी	05/09

बुध

28 अप्रै.	वक्री	22/46
22 मई	मार्गी	18/48
30 अग.	वक्री	18/31
22 सितं.	मार्गी	10/58
19 दिसं.	वक्री	16/21
(सन् 2017 ई.)		
8 जन.	मार्गी	15/09

गुरु

9 मई	मार्गी	17/39
6 फर.(17)	वक्री	12/17

शुक्र

4 मार्च (17)	वक्री	14/38

शनि

13 अग.	मार्गी	15/10

यूरेनस

29 जुला.	वक्री	22/09
29 दिसं.	मार्गी	14/12

नैपच्यून

13 जून	वक्री	21/15
20 नवं.	मार्गी	8/01

प्लूटो

18 अप्रै.	वक्री	8/58
26 सितं.	मार्गी	17/42

ग्रहों का उदय-अस्त (वि. संवत् २०७३)

मंगल

पूरा संवत् उदय रहेगा।

बुध

5 अप्रै. पश्चिमोदय	19/53
1 मई व.पश्चिम-अस्त	12/17
17 मई व. पूर्वोदय	22/19
25 जून पूर्व में अस्त	28/19
18 जुला. पश्चिमोदय	29/13
6 सितं. व.पश्चिमस्त	21/24
19 सितं. व. पूर्वोदय	25/28
9 अक्तू. पूर्वास्त	17/36
19 नवं. पश्चिमोदय	20/57
23 दिसं. व.पश्चिमास्त	8/04

बुध (2017 ई.)

3 जन. व. पूर्वोदय	10/59
18 फर. पूर्व में अस्त	5/55
20 मार्च पश्चिमोदय	22/56

गुरु

9 सितं. पश्चिमास्त	20/08
7 अक्तू. पूर्वोदय	22/37

शुक्र

28 अप्रै. पूर्वास्त	27/50
9 जुला. पश्चिमोदय	05/40
21 मार्च (17) व पश्चिमास्त	22/54
25 मार्च व. पूर्वोदय	29/15

शनि

23 नवं. पश्चिमास्त	23/50
27 दिसं. पूर्वोदय	9/13

ग्रहों का नक्षत्र-चरण प्रवेश-संवत् २०७३ वि. (सन् 2016-17 ई.)

सूर्य नक्षत्र प्रवेश

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मि.
10 अप्रै.	रेव. (4)	10/14
13 अप्रै.	अश्वि(1)मेष	19/47
17 अप्रै.	अश्वि (2)	05/32
20 अप्रै.	अश्वि (3)	15/26
23 अप्रै.	अश्वि (4)	25/30
27 अप्रै.	भर. (1)	11/43
30 अप्रै.	भर. (2)	22/03
4 मई	भर. (3)	8/31
7 मई	भर. (4)	19/05
11 मई	कृति.(1)	05/49
14 मई	कृति (2) वृष	16/41
17 मई	कृति(3)	27/42
21 मई	कृति (4)	14/55
24 मई	रोहि. (1)	26/07
28 मई	रोहि. (2)	13/28
31 मई	रोहि. (3)	24/53
4 जून	रोहि. (4)	12/23
7 जून	मृग. (1)	23/56
11 जून	मृग. (2)	11/35
14 जून	मृग. 3 मिथुन	23/19
18 जून	मृग. (4)	11/09
21 जून	आर्द्रा (1)	22/59
25 जून	आर्द्रा (2)	10/51
28 जून	आर्द्रा (3)	22/46
2 जुला.	आर्द्रा (4)	10/42
5 जुला.	पुन. (1)	22/33
9 जुला.	पुन.(2)	10/28
12 जुला.	पुन.(3)	22/20
16 जुला.	पुन.4 कर्क	10/15
19 जुला.	पुष्य (1)	22/06
23 जुला.	पुष्य (2)	9/57
26 जुला.	पुष्य (3)	21/43
30 जुला.	पुष्य (4)	9/25
2 अग.	आश्ले.(1)	21/01
6 अग.	आश्ले.(2)	8/32

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मि.
9 अग.	आश्ले.(3)	19/59
13 अग.	आश्ले.(4)	7/22
16 अग.	मघा(1)सिंह	18/39
20 अग.	मघा (2)	05/52
23 अग.	मघा (3)	16/55
26 अग.	मघा (4)	27/52
30 अग.	पू.फा.(1)	14/39
2 सितं.	पू.फा. (2)	25/17
6 सितं.	पू.फा. (3)	11/49
9 सितं.	पू.फा. (4)	22/12
13 सितं.	उ.फा.(1)	8/26
16 सितं.	उफा 2 कन्या	18/35
19 सितं.	उ.फा.(3)	28/34
23 सितं.	उ.फा.(4)	14/22
26 सितं.	हस्त (1)	24/00
30 सितं.	हस्त (2)	9/27
3 अक्तू.	हस्त (3)	18/44
6 अक्तू.	हस्त (4)	27/53
10 अक्तू.	चित्रा (1)	12/54
13 अक्तू.	चित्रा (2)	21/47
17 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	06/31
20 अक्तू.	चित्रा (4)	15/04
23 अक्तू.	स्वा. (1)	23/29
27 अक्तू.	स्वा. (2)	7/43
30 अक्तू.	स्वा. (3)	15/47
2 नवं.	स्वा. (4)	23/42
6 नवं.	विशा. (1)	7/31
9 नवं.	विशा. (2)	15/12
12 नवं.	विशा. (3)	22/48
16 नवं.	विशा.4 वृश्चिक	6/17
19 नवं.	अनु. (1)	13/38
22 नवं.	अनु. (2)	20/51
25 नवं.	अनु. (3)	27/57
29 नवं.	अनु. (4)	10/57
2 दिसं.	ज्ये.(1)	17/52

2016-17 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मि.
5 दिसं.	ज्ये.(2)	24/42
9 दिसं.	ज्ये.(3)	7/29
12 दिसं.	ज्ये.(4)	14/13
15 दिसं.	मूल(1)धनु	20/53
18 दिसं.	मूल.(2)	27/32
22 दिसं.	मूल.(3)	10/07
25 दिसं.	मूल.(4)	16/38
28 दिसं.	पू.षा.(1)	23/06
31 दिसं.	पू.षा.(2)	29/35
(सन् 2017 ई.)		
4 जन.	पू.षा.(3)	12/04
7 जन.	पू.षा.(4)	18/32
10 जन.	उ.षा.(1)	25/05
14 जन.	उषा.2मकर	7/38
17 जन.	उ.षा.(3)	14/14
20 जन.	उ.षा.(4)	20/48
23 जन.	श्रव.(1)	27/26
27 जन.	श्रव.(2)	10/06
30 जन.	श्रव.(3)	16/48
2 फर.	श्रव.(4)	23/37
6 फर.	धनि.(1)	6/31
9 फर.	धनि.(2)	13/32
12 फर.	धनि. 3 कुम्भ	20/38
15 फर.	धनि.(4)	27/50
19 फर.	शत.(1)	11/07
22 फर.	शत.(2)	18/30
25 फर.	शत.(3)	25/59
1 मार्च	शत.(4)	9/37
4 मार्च	पू.भा.(1)	17/20
7 मार्च	पू.भा.(2)	25/15
11 मार्च	पू.भा.(3)	9/19
14 मार्च	पू.भा.4 मीन	17/33
17 मार्च	उ.भा.(1)	25/54
21 मार्च	उ.भा.(2)	10/23
24 मार्च	उ.भा.(3)	19/00
27 मार्च	उ.भा.(4)	27/45
31 मार्च	रेव.(1)	12/40

मंगल नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में अनु. (4) में)

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मि.
17 अप्रै.	वक्री	17/41
2 मई	व. अनु. (3)	27/09
15 मई	व. अनु. (2)	20/41
25 मई	व. अनु. (1)	15/55
4 जून	व. विशा. (4)	12/03
17 जून	व. विशा.3 तुला	23/52
30 जून	मार्गी	05/09
12 जुला.	विशा. 4 वृश्चिक	14/02
26 जुला.	अनु.(1)	11/35
4 अग.	अनु.(2)	22/19
12 अग.	अनु.(3)	19/36
19 अग.	अनु.(4)	20/44
26 अग.	ज्ये.(1)	8/59
1 सितं.	ज्ये.(2)	11/51
7 सितं.	ज्ये.(3)	7/38
12 सितं.	ज्ये.(4)	21/48
18 सितं.	मूल 1 धनु	7/42
23 सितं.	मूल.(2)	14/01
28 सितं.	मूल.(3)	17/17
3 अक्तू.	मूल.(4)	17/54
8 अक्तू.	पू.षा.(1)	16/16
13 अक्तू.	पू.षा.(2)	12/48
18 अक्तू.	पू.षा.(3)	7/42
22 अक्तू.	पू.षा.(4)	25/13
27 अक्तू.	उ.षा.(1)	17/29
1 नवं.	उषा. 2 मकर	8/37
5 नवं.	उ.षा.(3)	22/46
10 नवं.	उ.षा.(4)	12/07
14 नवं.	श्रव.(1)	24/45
19 नवं.	श्रव.(2)	12/52
23 नवं.	श्रव.(3)	24/25
28 नवं.	श्रव.(4)	11/32
2 दिसं.	धनि.(1)	22/15
7 दिसं.	धनि.(2)	8/42
11 दिसं.	धनि. 3 कुम्भ	18/53

मंगल नक्षत्र प्रवेश

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं.मि.
16 दिसं.	धनि.(4)	04/59
20 दिसं.	शत.(1)	14/59
24 दिसं.	शत.(2)	24/54
29 दिसं.	शत.(3)	10/48
(सन् 2017 ई.)		
2 जन.	शत.(4)	20/44
7 जन.	पू.भा.(1)	6/44
11 जन.	पू.भा.(2)	16/54
15 जन.	पू.भा.(3)	27/14
20 जन.	पूभा 4 मीन	13/47
24 जन.	उ.भा.(1)	24/34
29 जन.	उ.भा.(2)	11/35
2 फर.	उ.भा.(3)	22/53
7 फर.	उ.भा.(4)	10/31
11 फर.	रेव.(1)	22/32
16 फर.	रेव.(2)	10/58
20 फर.	रेव.(3)	23/46
25 फर.	रेव.(4)	12/59
1 मार्च	अश्वि 1 मेष	26/38
6 मार्च	अश्वि.(2)	16/45
11 मार्च	अश्वि.(3)	7/17
15 मार्च	अश्वि.(4)	22/29
20 मार्च	भर.(1)	14/08
25 मार्च	भर.(2)	6/17
29 मार्च	भर.(3)	22/56

बुध नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में अश्वि. (3) में)

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मि.
8 अप्रै.	अश्वि.(4)	9/59
10 अप्रै.	भर.(1)	8/24
12 अप्रै.	भर.(2)	10/47
14 अप्रै.	भर.(3)	19/12
17 अप्रै.	भर.(4)	13/36
20 अप्रै.	कृति.(1)	28/54
28 अप्रै.	वक्री	22/46

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मि.
7 मई	व. भर.(4)	14/38
12 मई	व. भर.(3)	28/49
22 मई	मार्गी	18/48
31 मई	भर.(4)	21/43
4 जून	कृति.(1)	26/57
8 जून	कृति.2 वृष	9/47
11 जून	कृति.(3)	05/32
13 जून	कृति.(4)	17/53
15 जून	रोहि.(1)	25/17
17 जून	रोहि.(2)	28/42
19 जून	रोहि.(3)	28/56
21 जून	रोहि.(4)	26/33
23 जून	मृग.(1)	22/02
25 जून	मृग.(2)	15/47
27 जून	मृग. 3 मिथुन	8/06
28 जून	मृग.(4)	23/13
30 जून	आर्द्रा (1)	13/26
1 जुला.	आर्द्रा (2)	27/00
3 जुला.	आर्द्रा (3)	16/06
4 जुला.	आर्द्रा (4)	28/58
6 जुला.	पुन.(1)	17/47
8 जुला.	पुन.(2)	6/46
9 जुला.	पुन.(3)	20/02
11 जुला.	पुन.(4)कर्क	9/48
12 जुला.	पुष्य(1)	24/08
14 जुला.	पुष्य(2)	15/13
16 जुला.	पुष्य(3)	7/18
17 जुला.	पुष्य(4)	24/04
19 जुला.	आश्ले.(1)	18/05
21 जुला.	आश्ले.(2)	13/16
23 जुला.	आश्ले.(3)	9/46
25 जुला.	आश्ले.(4)	7/41
27 जुला.	मघा(1) सिंह	7/11
29 जुला.	मघा (2)	8/20
31 जुला.	मघा (3)	11/36
2 अग.	मघा (4)	16/57
4 अग.	पू.फा.(1)	24/49

बुध नक्षत्र प्रवेश

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
7 अग.	पू.फा.(2)	11/45
9 अग.	पू.फा.(3)	26/28
12 अग.	पू.फा.(4)	22/19
15 अग.	उ.फा.(1)	25/31
19 अग.	उफा 2 कन्या	17/24
24 अग.	उ.फा.(3)	16/14
30 अग.	वक्री	18/31
5 सितं.	व. उ.फा.(2)	10/56
9 सितं.	व. उफा (1) सिंह	17/47
12 सितं.	व.पू.फा.(4)	26/00
16 सितं.	व.पू.फा.(3)	10/02
22 सितं.	मार्गी	10/58
27 सितं.	पू.फा.(4)	27/36
1 अक्तू.	उ.फा.(1)	6/32
3 अक्तू.	उ.फा. 2 कन्या	17/48
5 अक्तू.	उ.फा.(3)	22/50
7 अक्तू.	उ.फा.(4)	24/25
9 अक्तू.	हस्त (1)	24/09
11 अक्तू.	हस्त (2)	22/50
13 अक्तू.	हस्त (3)	21/02
15 अक्तू.	हस्त (4)	19/05
17 अक्तू.	चित्रा (1)	17/13
19 अक्तू.	चित्रा (2)	15/36
21 अक्तू.	चित्रा 3 तुला	14/19
23 अक्तू.	चित्रा (4)	13/30
25 अक्तू.	स्वा. (1)	13/08
27 अक्तू.	स्वा. (2)	13/17
29 अक्तू.	स्वा. (3)	13/57
31 अक्तू.	स्वा. (4)	15/08
2 नवं.	विशा. (1)	16/49
4 नवं.	विशा. (2)	18/59
6 नवं.	विशा. (3)	21/36
8 नवं.	विशा. 4 वृश्चि.	24/39
10 नवं.	अनु. (1)	28/07
13 नवं.	अनु. (2)	7/58
15 नवं.	अनु. (3)	12/11

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
17 नवं.	अनु. (4)	16/38
19 नवं.	ज्ये. (1)	21/40
21 नवं.	ज्ये. (2)	27/00
24 नवं.	ज्ये. (3)	8/46
26 नवं.	ज्ये. (4)	15/07
28 नवं.	मूल (1) धनु	22/13
1 दिसं.	मूल. (2)	6/21
3 दिसं.	मूल. (3)	16/09
5 दिसं.	मूल. (4)	28/23
8 दिसं.	पू.षा.(1)	21/05
11 दिसं.	पू.षा. (2)	22/30
15 दिसं.	पू.षा. (3)	27/34
19 दिसं.	वक्री	16/21
22 दिसं.	व. पू.षा. (2)	23/01
26 दिसं.	व. पू.षा. (1)	12/02
28 दिसं.	व. मूल. (4)	25/08
31 दिसं.	व. मूल. (3)	21/28
(सन् 2017 ई.)		
3 जन.	व. मूल (2)	18/44
8 जन.	मार्गी	15/09
13 जन.	मूल. (3)	26/44
18 जन.	मूल. (4)	06/47
21 जन.	पू.षा.(1)	13/06
24 जन.	पू.षा. (2)	10/48
26 जन.	पू.षा. (3)	27/33
29 जन.	पू.षा. (4)	16/57
31 जन.	उ.षा. (1)	28/05
3 फर.	उषा (2) मकर	13/17
5 फर.	उ.षा. (3)	20/59
7 फर.	उ.षा.(4)	27/22
10 फर.	श्रव. (1)	8/34
12 फर.	श्रव. (2)	12/40
14 फर.	श्रव. (3)	15/45
16 फर.	श्रव. (4)	17/53
18 फर.	धनि. (1)	19/04
20 फर.	धनि. (2)	19/20

2017 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
22 फर.	धनि. 3 कुम्भ	18/43
24 फर.	धनि.(4)	17/16
26 फर.	शत.(1)	14/57
28 फर.	शत. (2)	11/51
2 मार्च	शत.(3)	7/57
3 मार्च	शत.(4)	27/20
5 मार्च	पू.भा. (1)	21/59
7 मार्च	पू.भा. (2)	16/03
9 मार्च	पू.भा. (3)	9/34
10 मार्च	पूभा 4 मीन	26/36
12 मार्च	उ.भा. (1)	19/20
14 मार्च	उ.भा. (2)	11/53
15 मार्च	उ.भा. (3)	28/27
17 मार्च	उ.भा. (4)	21/20
19 मार्च	रेव.(1)	14/49
21 मार्च	रेव. (2)	9/21
23 मार्च	रेव. (3)	05/34
24 मार्च	रेव. (4)	28/29
27 मार्च	अश्वि (1) मेष	7/38
29 मार्च	अश्वि.(2)	17/51

गुरु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में वक्री पू.फा. (3) में)

16 अप्रै.	व. पू.फा.(2)	8/54
9 मई	मार्गी	17/39
2 जून	पू.फा. (3)	9/53
3 जुला.	पू.फा. (4)	17/44
24 जुला.	उ.फा. (1)	20/33
11 अग.	उफा 2 कन्या	21/25
28 अग.	उ.फा.(3)	10/47
13 सितं.	उ.फा. (4)	5/35
28 सितं.	हस्त (1)	16/43
13 अक्तू.	हस्त (2)	28/35
29 अक्तू.	हस्त (3)	26/30
15 नवं.	हस्त (4)	23/41
4 दिसं.	चित्रा (1)	20/38
28 दिसं.	चित्रा (2)	17/12
(सन् 2017 ई.)		
6 फर.	वक्री	12/17
18 मार्च	व. चित्रा (1)	13/55

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
(संवतारम्भ में उ.भा. (2) में)		
9 अप्रै.	उ.भा. (3)	5/40
11 अप्रै.	उ.भा. (4)	22/28
14 अप्रै.	रेव. (1)	15/19
17 अप्रै.	रेव. (2)	8/09
19 अप्रै.	रेव. (3)	25/02
22 अप्रै.	रेव. (4)	17/56
25 अप्रै.	अश्वि. 1 मेष	10/50
27 अप्रै.	अश्वि. (2)	27/46
30 अप्रै.	अश्वि. (3)	20/42
3 मई	अश्वि. (4)	13/39
6 मई	भर. (1)	6/37
8 मई	भर. (2)	23/36
11 मई	भर. (3)	16/37
14 मई	भर. (4)	9/38
16 मई	कृति. (1)	26/41
19 मई	कृति. 2 वृष	19/45
22 मई	कृति. (3)	12/48
25 मई	कृति. (4)	5/54
27 मई	रोहि. (1)	23/00
30 मई	रोहि. (2)	16/04
2 जून	रोहि. (3)	9/11
4 जून	रोहि. (4)	26/17
7 जून	मृग. (1)	19/22
10 जून	मृग. (2)	12/29
13 जून	मृग. 3 मिथुन	5/36
15 जून	मृग. (4)	22/42
18 जून	आर्द्रा (1)	15/50
21 जून	आर्द्रा (2)	8/58
23 जून	आर्द्रा (3)	26/05
26 जून	आर्द्रा (4)	19/12
29 जून	पुन. (1)	12/18
1 जुला.	पुन. (2)	29/24
4 जुला.	पुन. (3)	22/30
7 जुला.	पुन. 4 कर्क	15/36
10 जुला.	पुष्य (1)	8/41
12 जुला.	पुष्य (2)	25/46
15 जुला.	पुष्य (3)	18/52

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
18 जुला.	पुष्य (4)	11/58
20 जुला.	आश्ले.(1)	29/04
23 जुला.	आश्ले.(2)	22/10
26 जुला.	आश्ले.(3)	15/16
29 जुला.	आश्ले.(4)	8/22
31 जुला.	मघा 1 सिंह	25/28
3 अग.	मघा (2)	18/34
6 अग.	मघा (3)	11/40
8 अग.	मघा (4)	28/48
11 अग.	पू.फा. (1)	21/55
14 अग.	पू.फा. (2)	15/04
17 अग.	पू.फा. (3)	8/14
19 अग.	पू.फा. (4)	25/26
22 अग.	उ.फा.(1)	18/39
25 अग.	उफा 2 कन्या	11/53
27 अग.	उ.फा.(3)	29/08
30 अग.	उ.फा.(4)	22/23
2 सितं.	हस्त (1)	15/40
5 सितं.	हस्त (2)	8/59
7 सितं.	हस्त (3)	26/19
10 सितं.	हस्त (4)	19/42
13 सितं.	चित्रा (1)	13/07
16 सितं.	चित्रा (2)	6/35
18 सितं.	चित्रा 3 तुला	24/05
21 सितं.	चित्रा (4)	17/37
24 सितं.	स्वा. (1)	11/12
26 सितं.	स्वा. (2)	28/49
29 सितं.	स्वा. (3)	22/27
2 अक्तू.	स्वा. (4)	16/10
5 अक्तू.	विशा.(1)	9/54
7 अक्तू.	विशा.(2)	27/41
10 अक्तू.	विशा.(3)	21/32
13 अक्तू.	विशा. 4 वृश्चि.	15/27
16 अक्तू.	अनु.(1)	9/26
18 अक्तू.	अनु.(2)	27/29
21 अक्तू.	अनु.(3)	21/37
24 अक्तू.	अनु.(4)	15/48

2016 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
27 अक्तू.	ज्ये.(1)	10/04
29 अक्तू.	ज्ये.(2)	28/24
1 नवं.	ज्ये. (3)	22/49
4 नवं.	ज्ये. (4)	17/21
7 नवं.	मूल(1) धनु	11/57
10 नवं.	मूल (2)	6/42
12 नवं.	मूल (3)	25/36
15 नवं.	मूल (4)	20/39
18 नवं.	पू.षा. (1)	15/51
21 नवं.	पू.षा. (2)	11/13
24 नवं.	पू.षा. (3)	6/46
26 नवं.	पू.षा. (4)	26/31
29 नवं.	उ.षा. (1)	22/29
2 दिसं.	उषा 2 मकर	18/42
5 दिसं.	उ.षा. (3)	15/12
8 दिसं.	उ.षा. (4)	12/02
11 दिसं.	श्रव. (1)	9/13
14 दिसं.	श्रव. (2)	6/49
16 दिसं.	श्रव. (3)	28/52
19 दिसं.	श्रव. (4)	27/26
22 दिसं.	धनि. (1)	26/34
25 दिसं.	धनि. (2)	26/19
28 दिसं.	धनि. 3 कुंभ	26/46
31 दिसं.	धनि. (4)	28/02
(सन् 2017 ई.)		
4 जन.	शत. (1)	06/16
7 जन.	शत. (2)	9/37
10 जन.	शत. (3)	14/16
13 जन.	शत. (4)	20/29
16 जन.	पू.भा.(1)	28/28
20 जन.	पू.भा.(2)	14/50
23 जन.	पू.भा.(3)	27/49
27 जन.	पू.भा. 4 मीन	20/18
31 जन.	उ.भा. (1)	17/22
4 फर.	उ.भा. (2)	20/46
9 फर.	उ.भा. (3)	9/44
14 फर.	उ.भा. (4)	15/00
21 फर.	रेव. (1)	8/28

शुक्र नक्षत्र प्रवेश | राहु नक्षत्र प्रवेश | यूरेनस नक्षत्र प्रवेश | ग्रहों की अंशात्मक यतियां (सन 2016-17 ई.)

शुक्र नक्षत्र प्रवेश

2017 ई.	नक्षत्र चरण	घं. मिं.
4 मार्च	वक्री	14/38
15 मार्च	व. उभा (4)	8/07
21 मार्च	व. उभा (3)	15/52
26 मार्च	व. उभा (2)	24/38

शनि नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में वक्री ज्ये. (2) में)

21 मई	व. ज्ये. (1)	05/42
8 जुला.	व.अनु.(4)	24/32
13 अग.	मार्गी	15/10
17 सितं.	ज्ये.(1)	17/00
29 अक्तू.	ज्ये.(2)	8/34
28 नवं.	ज्ये.(3)	13/11
26 दिसं.	ज्ये.(4)	21/51
(सन् 2017 ई.)		
26 जन.	मूल(1)धनु	19/28
16 मार्च	मूल (2)	9/42

राहु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.फा. (4) में)

3 जून	पू.फा.(3)	21/00
5 अग.	पू.फा.(2)	18/51
7 अक्तू.	पू.फा.(1)	16/39
9 दिसं.	मघा (4)	14/21
10 फर.(17)	मघा (3)	12/02

केतु नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.भा. (2) में)

3 जून	पू.भा.(1)	21/00
5 अग.	शत.(4)	18/51
7 अक्तू.	शत.(3)	16/39
9 दिसं.	शत.(2)	14/21
10 फर.(17)	शत.(1)	12/02

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में रेव. (3) में)

15 अप्रै.	रेव.(4)	10/40
27 जून	अश्वि(1)मेष	16/52
29 जुला.	वक्री	22/09
31 अग.	व. रेव.4 मीन	17/59

यूरेनस नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में रेव. (3) में)

7 दिसं.	व. रेव (3)	19/47
29 दिसं.	मार्गी	14/12
(सन् 2017 ई.)		
20 जन.	रेव. (4)	7/20

नैपच्यून नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में शत. (4) में)

13 जून	वक्री	21/15
29 अग.	व. शत. (3)	7/34
20 नवं.	मार्गी	8/01
4 फर.(17)	शत.(4)	18/29

प्लूटो नक्षत्र प्रवेश

(संवतारम्भ में पू.षा. (4) में)

18 अप्रै.	वक्री	8/58
3 मई	व. पू.षा.(3)	27/10
26 सितं.	मार्गी	17/42
14 जन.(17)	पू.षा.(4)	6/10

पं. देवीदयालु कृत श्री दुर्गा सप्तशती (हिन्दी भाषा में)

श्री दुर्गासप्तशती मात्र धर्मग्रन्थ ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध ग्रंथ है। पं. पन्ना ज्योतिषी द्वारा प्रणीत श्री दुर्गा-सप्तशती के प्रस्तुत सरल हिन्दी भाषा संस्करण में अनेक उपयोगी विषयों का समावेश किया गया है। इस पुस्तक में श्री दुर्गा यन्त्र, संक्षिप्त पाठ एवं संकल्प विधि, श्री देवी कवच, श्री अर्गलास्तोत्र, श्री कीलक स्तोत्र, रात्रिसूक्त, नवार्णमन्त्र, 13 पाठ अध्याय, श्री चण्डी पूजा, चरित्र एवं स्तोत्र, चालीसा एवं आरतियों सहित विस्तृत वर्णन किया है।

ध्यान रहे—बिना संकल्प विधि के किया जप-पाठ एवं कोई भी अनुष्ठान पूर्ण फल नहीं देता। मार्कीट में बिकने वाली अधिकांश हिन्दी भाषी सप्तशतियों में संकल्पविधि, पूजन विधि आदि आवश्यक विषयों का अभाव मिलता है। श्रद्धा पूर्वक सही विधि द्वारा श्री दुर्गा जी के चरित्रों का विधिपूर्वक पाठ करने से मनुष्यों के पाप नष्ट होकर उन्हें धन-धान्य, सौभाग्यादि की प्राप्ति एवं मनोवांछित कामनाओं की सहज पूर्ति होती है। **भेंट-80 रु०**

नोट—आज ही स्थानीय पुस्तक विक्रेता से खरीदें अथवा पत्र लिखकर वी.पी. द्वारा मंगवाकर एवं पाठ कर लाभान्वित हों।

—जनरल बुक डिपो, अड्डा होशियारपुर चौंक, जालन्धर (पंजाब)

ग्रहों की अंशात्मक युतियां (सन् 2016-17 ई.)

9 जन. ➽ शुक्र-शनि (वृश्चि)
14 जन. ➽ सूर्य-बुध (धनु)
24 मार्च ➽ सूर्य-बुध (मीन)
9 मई ➽ सूर्य-बुध (मेष)
13 मई ➽ बुध-शुक्र (मेष)
7 जून ➽ सूर्य-शुक्र (वृष)
25 जून ➽ गुरू-राहु (सिंह)
7 जुला ➽ सूर्य-बुध (मिथुन)
17 जुला ➽ बुध-शुक्र (कर्क)
16 अग. ➽ शुक्र-राहु (सिंह)
22 अग. ➽ बुध-गुरु (कन्या)
24 अग. ➽ मंग.-शनि (वृश्चि.)
27 अग. ➽ गुरु-शुक्र (कन्या)
29 अग. ➽ बुध-शुक्र (कन्या)
4 सितं. ➽ सूर्य-राहु (सिंह)
26 सितं. ➽ सूर्य-गुरु (कन्या)
11 अक्तू ➽ बुध-गुरु (कन्या)
27 अक्तू ➽ सूर्य-बुध (तुला)
30 अक्तू ➽ शुक्र-शनि (वृश्चि.)
23 नवं. ➽ बुध-शनि (वृश्चि.)
10 दिसं. ➽ सूर्य-शनि (वृश्चि.)
28 दिसं. ➽ सूर्य-बुध (धनु.)

(सन 2017 ई.)

7 मार्च ➽ सूर्य-बुध (कुम्भ)
18 मार्च ➽ बुध-शुक्र (मीन)
25 मार्च ➽ सूर्य-शुक्र (मीन)

द्विग्रही-योग—सन् 2016-17

सूर्य-बुध ➽ 19 मार्च से 2 अप्रै. तक (कुम्भ)
सूर्य-बुध ➽ 3 अप्रै. से 13 अप्रै. तक (मीन)
गुरु-राहु ➽ संवतारम्भ से 11 अग. तक (सिंह)
मंग.-शनि ➽ संवतारम्भ से 16 जून तक (वृश्चि.)
सूर्य-शुक्र ➽ 19 मई से 12 जून (वृष)
सूर्य-शुक्र ➽ 14 जून से 6 जुला. (मिथुन)
सूर्य-बुध ➽ 27 जून से 10 जुला. (मिथुन)
सूर्य-बुध ➽ 16 जुला. से 26 जुला. (कर्क)
बुध-शुक्र ➽ 11 जुला. से 26 जुला. (कर्क)
मंग.-शनि ➽ 12 जुला. से 17 सितं. (वृश्चि.)
बुध-गुरु ➽ 19 अग. से 8 सितं. (कन्या)
गुरु-शुक्र ➽ 25 अग. से 18 सितं. (कन्या)
सूर्य-बुध ➽ 9 सितं. से 15 सितं. (सिंह)
सूर्य-राहु ➽ 16 अग. से 15 सितं. (सिंह)
बुध-राहु ➽ 9 सितं. से 2 अक्तू. (सिंह)
सूर्य-गुरु ➽ 16 सितं. से 16 अक्तू. (कन्या)
शुक्र-शनि ➽ 13 अक्तू. से 6 नवं. (वृश्चि.)
सूर्य-बुध ➽ 21 अक्तू. से 8 नवं. (तुला)
बुध-शनि ➽ 8 नवं. से 28 नवं. (वृश्चिक)
सूर्य-शनि ➽ 15 नवं. से 14 दिसं. (वृश्चिक)
बुध-शुक्र ➽ 28 नवं. से 2 दिसं. (धनु)
मंग.-शुक्र ➽ 2 दिसं. से 11 दिसं. (मकर)
सूर्य-बुध ➽ 15 दिसं. से 13 जन. (धनु)
मंग.-शुक्र ➽ 29 दिसं. से 19 जन.(17) (कुम्भ)

(सन् 2017 ई.)

बुध-शनि ➽ 26 जन. से 2 फर. (धनु.)
मंग.-शुक्र ➽ 27 जन. से 28 फर. (मीन)
सूर्य-बुध ➽ 3 फर. से 11 फर. (कुम्भ)
मंग.-शुक्र ➽ 11 मार्च से 26 मार्च (मीन)
सूर्य-शुक्र ➽ 14 मार्च से 28 मार्च (मीन)
मंग.-बुध ➽ 20 मार्च से संवतान्त (मेष)

तीनग्रही-योग—सन् 2016-17

सू.+बु.+शु. ➽ 25 अप्रै. से 13 मई तक (मेष)
सू.+बु.+शु. ➽ 27 जून. से 6 जुला. (मिथुन)
सू.+बु.+शु. ➽ 16 जुला. से 26 जुला. (कर्क)
बु.+गु.+शु. ➽ 25 अग. से 8 सितं. (कन्या)
सू.+गु.+शु. ➽ 16 सितं. से 17 सितं. (कन्या)
सू.+बु.+गु. ➽ 3 अक्तू. से 16 अक्तू. (कन्या)
सू.+बु.+श. ➽ 15 नवं. से 28 नवं. (वृश्चिक)
मं.+शु.+के. ➽ 29 दिसं. से 19 जन. (कुम्भ)
सू.+बु.+शु. ➽ 14 मार्च से 26 मार्च (मीन)

चतुर्ग्रही-योग—सन् 2016-17

बु.+गु.+शु.+रा. ➽ 31 जुला. से 11 अग. (सिंह)
सू.+बु.+शु.+रा. ➽ 16 अग. से 18 अग. (सिंह)

समसप्तक-योग—सन् 2016-17

सूर्य-शनि ➽ 14 मई से 13 जून (वृष-वृश्चिक)
सूर्य+मंग. ➽ 14 मई से 13 जून (वृष-वृश्चिक)
मंग.+गुरु ➽ 20 जन. (17) से 1 मार्च (मीन-कन्या)
गुरु+शुक्र ➽ 27 जन. (17) से संवतान्त (मीन-कन्या)

-षडाष्टक योग-

सूर्य+मंग. ➽ 14 अप्रै. से 13 मई (मेष-वृश्चिक)
बुध+मंग. ➽ 17 जून से 26 जून (वृष-तुला)
मंग.+गुरु ➽ 11 दिसं. से 19 जन. (कुम्भ-कन्या)

संदिग्ध व्रत-पर्वों का शास्त्रीय निर्णय-वि.सं.२०७३

लेखक :-पं. विवेक शर्मा,
जालन्धर

(1) चैत्र (वासन्त) नवरात्रारम्भ (घटस्थापन) (8 अप्रै., शुक्रवार)

शास्त्रनियम अनुसार सूर्योदय के बाद की 10 घड़ी तक या मध्याह्न में अभिजित् मुहूर्त्त (दिन के अष्टम मुहूर्त्त) के समय चैत्र (वासन्त) शुक्ल प्रतिपदा में नवरात्रारम्भ व कलश (घट)-स्थापन किया जाता है। शास्त्रानुसार इस विहितकाल में प्रतिपदा तिथि की पहली (आदिम) 16 घड़ीयां तथा चित्रा-नक्षत्र एवं वैधृति योग का सम्पर्क यथाशक्य वर्जनीय है। शास्त्र-वचन अनुसार इन दोषों का जहाँ तक सम्भव हो, त्याग करना चाहिए। धर्मसिन्धुकार अनुसार–

'प्रतिपदाद्य–षोडश नाड़ीनिषेधः चित्रावैधृतियोग–निषेधश्च उक्तकालानुरोधेन सति सम्भवे पालनीयः। न तु निषेधानुरोधेन पूर्वाह्न, प्रारम्भकालः प्रतिपत्तिथिर्वा अतिक्रमणीयः।। (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष चैत्र शुक्ल प्रतिपदा 8 अप्रैल, 2016 ई. के दिन वैधृति योग प्रातः 10घं.–44मिं. तक है। यद्यपि शास्त्रों में चित्रा एवं वैधृति का पूर्वार्द्ध भाग ही विशेष रूप से वर्जनीय माना है। परन्तु मतान्तर से कुछ विद्वान वैधृति के सम्पूर्ण काल को दूषित मानते हैं। अतएव जहाँ तक सम्भव हो 8 अप्रैल, 2016 ई. को वैधृति काल को त्यागकर प्रातः 10घं.–44मिं. बाद ही नवरात्रारम्भ, घटस्थापन, दीपपूजन आदि शुभ कार्य करने चाहिए।

[पंजाब, हिमाचलादि क्षेत्रों में इस दिन अभिजित मुहूर्त्त दोपहर 12घं.–06मिं. से 12घं.–54मिं. तक रहेगा।]

(2) श्रीगङ्गा-जयन्ती (12 मई, गुरुवार)

वैशाख शुक्ल सप्तमी को श्रीगङ्गा जी की उत्पत्ति हुई थी। श्रीगङ्गा-पूजन, भागीरथ आदि देव-ऋषि पूजन मध्याह्न-व्यापिनी वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि में करना चाहिए। धर्मसिन्धुकार का यह वाक्य है–

**''वैशाखशुक्ल सप्तम्यां गंगोत्पत्तिः।
तस्यां मध्याह्नव्यापिन्यां गंगापूजनं कार्यम्। दिनद्वये तव्द्याप्तौ पूर्वा।।''**

सप्तमी तिथि यदि दोनों दिन मध्याह्न को व्याप्त या अव्याप्त हो, तो यह पर्व पहले दिन मनाना चाहिए।

इस वर्ष वैशाख शुक्ल सप्तमी तिथि केवल 12 मई, गुरुवार को व्याप्त हो रही है। अतएव गङ्गा-जयन्ती (सप्तमी) पर्व 12 मई, 2016 ई., गुरुवार को मनाया जाएगा।

(3) श्रीजानकी (सीता) जयन्ती (14 मई, शनिवार)

वैशाख शुक्ल नवमी, पुष्य नक्षत्रकालीन, मंगलवार, मध्याह्नकाले सन्तान-प्राप्ति [illegible] समय पृथ्वी से भगवती सीता का प्राकट्य हुआ था। वैष्णव मतानुसार भी वैशाख शुक्ल नवमी, मंगलवार को मध्याह्नकाल में शुभ माङ्गलिक वेला में भगवती जानकी का प्रादुर्भाव हुआ था। अतएव इस दिन व्रत रखकर श्रीजानकी-राम का संकल्पपूर्वक जन्मोत्सव तथा पूजन करना चाहिए। यथा–

**पुष्यान्वितायां तु कुजे नवम्यां श्रीमाधवे मासि सिते हलाग्रतः।
भुवोऽर्चयित्वा जनकेन कर्षणे सीताविरासीद् व्रतमत्र कुर्यात्।।**

(वैष्णवमताब्ज–भास्कर–७९)

शास्त्रानुसार नवमी तिथि दोनों दिन मध्याह्न में व्याप्त अथवा अव्याप्त हो, तो श्रीजानकी जयन्ती पहले दिन मनाई जाएगी। **(नवमी सर्वत्राष्टमीविद्धैव ग्राह्या।)**

इस वर्ष वैशाख शुक्ल नवमी, दो दिन (14 एवं 15 मई) मध्याह्नकाल को व्याप्त कर रही है। इन दो दिनों में पंजाब, दिल्ली, हि.प्र., हरि. आदि में मध्याह्नकाल लगभग 11घं.–03मिं. से 13घं.–46मिं. तक रहेगा। **स्पष्ट है,** 14 मई, शनिवार को नवमी तिथि अष्टमी-विद्धा तथा मध्याह्न-काल को पूर्ण रूप से व्याप्त है। अतएव शास्त्र-नियमानुसार **श्रीजानकी जयन्ती** (सीता ९) **पर्व 14 मई, शनिवार को ही मनाना तथा व्रत हेतु ग्रहण करना चाहिए।**

(4) श्रीगङ्गा दशहरा (14 जून, मंगलवार)

ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को **'गंगा-दशहरा'** पर्व मनाया जाता है। पुराणों में वर्णित आख्यायन अनुसार पूर्वाह्णव्यापिनी ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को हस्त नक्षत्र कालीन स्वर्ग से श्रीगङ्गा का अवतरण हुआ था। अतएव इसदिन श्रीगंगा आदि का स्नान, अन्न-वस्त्रादि का दान, पितृ-तर्पण, जप-तप, उपासना और उपवास किया जाए तो दस प्रकार के पाप (तीन प्रकार के कायिक, चार प्रकार के वाचिक और तीन प्रकार के मानसिक) दूर होते हैं। यदि दशमी दो दिन हो, तो शास्त्रों में इस पर्व की तिथि के निर्णायक वाक्य इस प्रकार वर्णित हैं–

**(1) ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशम्यां बुधहस्तयोः।
व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ।
दशयोगे नरः स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते।।** (स्कन्दपुराण)

**(2) ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता।
हरते दश पापानि तस्माद् दशहरा स्मृता।।** (ब्रह्मपुराण)

**(3) ज्येष्ठशुक्ल दशम्यां तु भवेद् भौमदिनं यदि।
ज्ञेया हस्तर्क्ष-संयुक्ता सर्वपापहरा तिथिः।।** (भविष्यपुराण)

इस प्रकार, यदि दशमी दो दिन पूर्वाह्ण व्यापिनी हो, तो निम्न दस योगों (तत्त्वों)

धर्मसिन्धुकार का यह वाक्य–'यत्र बहूनां योगः सा ग्राह्या'। इस बात की पुष्टि करता है।

(6) कुमार (स्कन्द) षष्ठी (9 जुलाई, शनिवार)

धर्मसिन्धुकार का यह वाक्य-'यत्र बहूना योगः सा ग्राह्या।।' इस बात की पुष्टि करता है। ये दस योग इस प्रकार हैं-(1) ज्येष्ठ मास (2) शुक्ल पक्ष (3) दशमी तिथि (4) बुधवार (5) हस्तनक्षत्र (6) व्यतिपात योग (7) गर करण (8) आनन्द योग (बुधवार व हस्त नक्षत्र का संयोग होने पर) (9) वृष का सूर्य और (10) कन्यास्थ चन्द्र।

जिस दिन उपर्युक्त योग अधिक हों, उस दिन विशेष को गंगा-दशहरा सम्बन्धी स्नान, दान, जप-तप, व्रतादि करने की शास्त्राज्ञा है।

इस वर्ष (वि. संवत् २०७३ में) गंगा-दशहरा सम्बन्धी योग 14 एवं 15 जून-दो दिन प्राप्त हो रहे हैं। उपरोक्त स्कन्दपुराणोक्त दस तत्त्वों को अलग-अलग बाँटने पर हमें स्पष्ट हो जाएगा कि **'गंगा-दशहरा'** पर्व किस दिन मनाना प्रशस्त रहेगा। स्कन्दपुराणानुसार तो यदि दोनों दिन इन योगों की संख्या समान हो (6-6 या 5-5), तो यह पर्व पहले दिन प्रशस्त होगा। यथा-**दशमी तु प्रकर्त्तव्या सदुर्गा द्विजसत्तम**।।-(स्कन्दपुराण)

14 जून को (i) ज्येष्ठ मास, (ii) शुक्ल पक्ष, (iii) दशमी तिथि, (iv) हस्त नक्षत्र, (v) कन्यास्थ चन्द्रमा, (vi) वृषस्थ सूर्य तथा 15 जून को (i) ज्येष्ठ मास (ii) शुक्ल पक्ष, (iii) दशमी तिथि, (iv) बुधवार, (v) गर-करण, (vi) योग-कन्यास्थ चन्द्रमा केवल प्रातः 6/47 तक उपलब्ध हैं। ऐसी स्थिति में **'यत्र बहूनां योगाः सा ग्राह्या'** (जिस दिन उपरोक्त दस योगों में से अधिक योग बाहुल्य प्राप्त हों, उसी दिन गंगादशहरा पर्व मनाना चाहिए।) **के शास्त्र-वाक्यानुसार 14 जून, मंगलवार को ही गंगा-दशहरा पर्व मनाया जाना चाहिए।** वराह, भविष्य और विष्णु धर्मोत्तर पुराणों के वाक्य मंगलवार को भी इस पर्व का निर्णायक पदार्थ मानते हैं। (15) जून दशमी तिथि परविद्धा भी नहीं है अर्थात् हरिद्वार में दशमी तिथि का इसदिन मान ५ घड़ी १८ पल रहेगा। त्रिमुहूर्त्त-न्यून होने से यह परविद्धा भी नहीं है।

अतएव हरिद्वार आदि तीर्थ पर स्नान, मेले, दान, व्रत तथा मुख्य पर्व 14 जून, मंगलवार **को ही होगा।**

***श्रीगङ्गा पूजा मन्त्र-*''ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः।।''**

(5) वटसावित्री व्रत (पूर्णिमा-पक्ष) (19 जून, रविवार)

वटसावित्री व्रत के पालन में दो परम्पराएं (मत) प्रचलित हैं। स्कन्द और भविष्योत्तर पुराण के अनुसार यह व्रत ज्येष्ठ पूर्णिमा को और निर्णयामृतादि के अनुसार ज्ये. अमावस्या को किया जाता है। दोनों परम्पराओं में यह व्रत पूर्व (चतुर्दशी) विद्धा अमावस या पूर्णिमा के दिन ही ग्रहण करने योग्य कहा गया है। धर्मसिन्धुकार अनुसार-

पूर्णिमास्यमावस्ये तु सावित्रीव्रतं विना परे ग्राह्ये।
कुलधर्मादौ पूर्वा गृह्यते, तत्र मूलं मृग्यम्।।

'ब्रह्मवैवर्त्त पुराण' में भी सावित्री व्रत परविद्धा का निषेध लिखा है-

भूतविद्धे न कर्त्तव्ये दर्शपूर्णे कदाचन।
वर्जयित्वा मुनिश्रेष्ठ सावित्रीव्रतमुत्तमम्।। (निर्णयसिन्धु)

अतएव शास्त्र-वचनानुसार इस वर्ष ज्येष्ठ पूर्णिमा वाला वटसावित्री व्रत चतुर्दशी विद्धा पूर्णिमा वाले दिन 19 जून, रविवार को होगा।

(6) कुमार (स्कन्द) षष्ठी (9 जुलाई, शनिवार)

कुमार (स्कन्द) षष्ठी व्रत पूर्व (पंचमी) विद्धा षष्ठी के दिन ग्रहण करना चाहिए। इसमें कुमार कार्तिकेय जी का पूजन किया जाता है। 'वसिष्ठ' जी अनुसार-

कृष्णाष्टमी स्कन्दषष्ठी शिवरात्रि चतुर्दशी।
एताः पूर्वयुताः कार्या तिथ्यन्ते पारणं भवेत्।।

धर्मसिन्धु में भी इस बात की पुष्टि की गई है-

षष्ठी स्कन्दव्रते पूर्वविद्धा। अन्यव्रतेषु परविद्धैव।।

इस वर्ष आषाढ़ शुक्ल षष्ठी 9 जुलाई, शनिवार को पंचमीविद्धा है, अतएव यह व्रत इसी दिन ग्रहण करना चाहिए।

(7) श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत

(i) 24 अगस्त-बुधवार, अर्धरात्रि-व्यापिनी अष्टमी (स्मार्त)

(ii) 25 अगस्त-गुरुवार, उदयकालिक अष्टमी रोहिणी योग (वैष्णव)

श्रीमद्भागवत्, श्रीभविष्य, अग्नि, विष्णु आदि पुराणों, संहिताओं एवं व्रतोत्सव निर्णायक सभी धर्मग्रन्थों के अनुसार भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार (जन्म) भाद्रपद कृष्ण अष्टमी तिथि, बुधवार, रोहिणी नक्षत्र एवं वृष राशिस्थ चन्द्रमाकालीन अर्धरात्रि के समय हुआ था-

''सिंहराशि गते सूर्ये गगने जलदाकुले। मासि भाद्रपदे अष्टम्यां कृष्ण पक्षेऽर्धरात्रिके। वृषराशि स्थिते चन्द्रे, नक्षत्रे रोहिणी युते।। (भविष्यपुराण) उत्तरपर्व ५५/१४

परन्तु ध्यान रहे, इन सभी निर्णायक तत्त्वों की विद्यमानता प्रतिवर्ष भाद्र. कृष्णाष्टमी को नहीं हो पाती अर्थात् यदि अष्टमी अर्धरात्रि में आ जाए, तो कभी रोहिणी नक्षत्र का अभाव होता है। यदि अर्धरात्रि कालीन रोहिणी नक्षत्र आ जाए, तो कई बार अष्टमी तिथि अर्धरात्रि-व्यापिनी नहीं होती इत्यादि। विभिन्न स्थितियों में दो दिनों में व्याप्त श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत के विषय में संशय आना स्वाभाविक होता है। सम्भवतः इसी कारण हमारे पुराण, व्रत निर्णायक धर्मग्रन्थों ने एकादशी, श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी आदि व्रतों की तिथि का निर्णय स्मार्त एवं वैष्णव सम्प्रदायों के लिए भिन्न-भिन्न निर्णायक सिद्धान्तों से किया है। इसीलिए भारत के लगभग सभी पंचांगकारों द्वारा जन्माष्टमी व्रत (तिथि) को दो अलग-अलग दिनों में स्मार्तों और वैष्णवों के लिए लिखा रहता है। अधिकांश शास्त्रकारों ने सिद्धान्त रूप में अर्धरात्रि एवं चन्द्रोदय व्यापिनी अष्टमी में ही व्रतादि करने को मान्यता दी है।

सिद्धान्त ग्रन्थ धर्मसिन्धु में भी पूर्वविद्धा (सप्तमीयुता) अर्द्धरात्रि-कालीन भाद्र. अष्टमी को ग्रहण करने की आज्ञा दी है-

कृष्ण जन्माष्टमीऽयं निशीथ व्यापिनी ग्राह्या। पूर्वदिन एव निशीथयोगे पूर्वा।।

पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, राज. आदि के करोड़ों स्मार्त धर्मावलम्बी गृहस्थी लोग गत सहस्रों वर्षों से इसी परम्परा का अनुसरण करते हुए सप्तमी युक्ता अर्द्धरात्रिकालीन वाली अष्टमी को व्रत, जपोपासना आदि कृत्य करते आ रहे हैं, यथा– धर्मसिन्धु अनुसार,

'स्मार्तानां गृहिणी पूर्वा पोष्या, यर्तिर्भिः निष्कामि गृहिभिः वनस्थे विधवाभिः वैष्णवैश्च परै वो पोष्याः।।

ऋषि व्यास, नारद आदि ऋषियों के मतानुसार सप्तमी युक्ता अष्टमी ही व्रत, पूजन आदि हेतु ग्रहण करनी चाहिए–

कार्या विद्धाऽपि सप्तम्यां रोहिणी सहिताष्टमी।
तत्रोपवासं कुर्वीत तिथ्यान्ते पारणम्।। (नारद)

इस प्रकार स्मार्त्त सम्प्रदाय के लोग जन्माष्टमी व्रत के दिन का चयन करते हुए इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि भगवान् कृष्ण से सम्बद्ध या व्रत भी अर्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी के दिन ही किया जाए, यदि उसमें रोहिणी का भी योग हो, तो और भी श्रेष्ठ है।

परन्तु वैष्णव मत वाले लोग विशेषकर मथुरा-वृन्दावन सहित उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में उदयकालिक अष्टमी (नवमी युता) के दिन ही श्रीकृष्ण-जन्मोत्सव मनाते आ रहे हैं, चाहे उस दिन अर्धरात्रि को अष्टमी हो या न हो। वैष्णव सम्प्रदाय के अधिकांश लोग दूसरे दिन उदयकालिक (नवमी विद्धा, अष्टमी वाले दिन ही) अष्टमी को ही व्रत, उत्सव करेंगे, पहिले दिन अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी को सप्तमी विद्धा मानकर त्याग देंगे।

वैष्णावास्तु अर्धरात्रि व्यापिनीमपि रोहिणी युतामपि सप्तमी विद्धामष्टमी परित्यज्य नवमी युतैव ग्राह्या।। (तिथि निर्णय)

ज्योतिर्निबन्धानुसार भी वैष्णव लोग नवमी युता अष्टमी में ही व्रतादि ग्राह्य मानते हैं–

सर्वथा सप्तमी युक्ता संत्याज्या सर्ववैष्णवैः।
उपोष्या नवमी युक्ता, तदुक्तं पुष्करे स्फुटम्।। ज्यो. निबन्ध

इस प्रकार वैष्णव सम्प्रदाय के अनुसार निर्धारित जन्माष्टमी के दिन ही तथा श्रीकृष्ण जन्म-स्थली मथुरा को आधार मानकर मनाई जाने वाली श्रीकृष्णाष्टमी के दिन ही केन्द्रीय सरकार अवकाश (छुट्टी) की घोषणा करती है। साधारण गृहस्थी लोग भी इस अवकाश एवं उत्सव वाले दिन ही व्रत रख लेते हैं, जोकि शास्त्र-विरुद्ध हो जाता है क्योंकि सभी डायरीयां व मीडिया आदि भी सरकार द्वारा उद्घोषित अवकाश को प्रमाण मान लेते हैं तथा उसी दिन व्रत कर लेते हैं जबकि उनमें से 98 प्रतिशत से भी अधिक लोग स्मार्त्त सम्प्रदाय से सम्बद्ध होते हैं।

परन्तु सत्य तो यह है कि अधिकांश शास्त्रकारों ने स्मार्त्त सम्प्रदाय वाली जन्माष्टमी अर्थात् अर्द्धरात्रिकालिक अष्टमी को ही मान्यता प्रदान की है–

दिवा वा यदि व रात्रौ नास्ति चेद् रोहिणी कला।

प्रस्तुत वर्ष 24 सितम्बर, 2016 ई., बुधवार को सप्तमी तिथि रात्रि 10 बजकर, 17 मिनट तक (22/17) व्याप्त है, तदुपरान्त रात्रि 22घं.–17मिं. से अर्धरात्रि में अष्टमी,– चन्द्रोदय व्यापिनी तथा वृष के चन्द्रमा का योग भी है। अतएव गृहस्थी आदि स्मार्त लोगों को व्रत, पूजन, चन्द्रमा को अर्घ्य देना, झूला-झुलाना आदि के लिए यही दिन प्रशस्त होगा, जबकि 25 अगस्त, 2016 ई., गुरुवार को अष्टमी तिथि रात्रि 8 बजकर 08 मिनट (20/08) तक ही व्याप्त है अर्थात् अर्धरात्रि के समय नवमी तिथि व्याप्त है। यद्यपि 25 ता. को दोपहर 12/06 के बाद रोहिणी नक्षत्र रहने से अर्धरात्रि के समय रोहिणी नक्षत्र व्याप्त रहेगा। परन्तु अष्टमी का अभाव रहेगा।

तिथि-निर्णय अनुसार भी जन्माष्टमी में अर्धरात्रि को ही मुख्य निर्णायक तत्त्व माना है– रोहिणी नक्षत्र मुख्य निर्णायक नहीं है। अष्टमी तिथि चाहे शुद्धा (सूर्योदय से अर्धरात्रि तक) हो अथवा सप्तमी विद्धा-पूर्व (पहिले) दिन को ही व्रत करना युक्ति संगत है–

''केचित् अर्द्धरात्रि एव मुख्य निर्णायकः। रोहिणी योगस्तु तने निर्णयासम्भवे निर्णायकः। तन्मते तादृश शुद्धा-विद्धा विषये पूर्वदिने एव व्रतम्।।

गरुड़ पुराण और विष्णु धर्म के अनुसार भी पूर्व विद्धा श्रीकृष्ण जयन्ती में उपवास करके तिथि के अन्त में व्रत का पारण करना चाहिए।

25 अग., 2016 ई. को अष्टमी एवं रोहिणी नक्षत्र का संयोग केवल दोपहर 12घं.–06मिं. से रात्रि 20घं.–08मिं. तक रहेगा। इसके बाद अर्द्धरात्रि में नवमी तिथि तथा रोहिणी नक्षत्र व्याप्त होने से जन्माष्टमी के व्रत, पूजन, अर्घ्यदान का विशेष अधिक पुण्य लाभ नहीं होगा। जैसा कि उपरोक्त तिथिनिर्णय के प्रमाण से स्पष्ट है। **भट्टोजिदीक्षित के इस प्रमाण से तो सारी स्थिति स्पष्ट हो जाएगी–**

रोहिणीयोगऽभावेऽपि अर्द्धरात्रिव्यापिनी अष्टमी ग्राह्या।
परदिने नक्षत्र योगः अकिंचित्करः।।

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र का योग न होने पर भी अर्द्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी में ही यह (कृष्ण-जन्माष्टमी) व्रत करना चाहिए। दूसरे दिन रोहिणी नक्षत्र का योग विचार करना व्यर्थ है।

सिद्धान्त ग्रन्थों में भी अधिकांशतः व्रत, पर्व, त्यौहारों के कर्मकाल (व्रत, पर्व से सम्बद्ध विशेष पूजन आदि कार्य किए जाते हैं, उस व्रत-पर्व का कर्मकाल कहलाता है।) विद्यमान् तिथि के दिन ही करने के निर्देश दिए गए हैं। यथा–

तत्र सर्वातिथिः यदह कर्मकाल व्यापिनी सैव ग्राह्या।। (निर्णयसिन्धु) एवं च, कर्मणो यस्य यः कालस्तत् कालव्यापिनी तिथिः। तस्य कर्माणि कुर्वीत।। (विष्णुधर्मोत्तर)

अर्थात् जो तिथि कर्म के समय तक जिस दिन रहे, वही ग्रहण करनी चाहिए।

श्रीकृष्ण का जन्म अर्धरात्रि व्यापिनी अष्टमी में हुआ था, अतः जन्माष्टमी व्रत का कर्मकाल (श्रीकृष्ण की विशेष पूजा, श्रीकृष्ण के निमित्त व्रत, बालरूप पूजा, झूला-झुलाना,

अर्धरात्रि में अष्टमी का होना अनिवार्य है। अर्धरात्रि के समय नवमी तिथि का कोई औचित्य नहीं है। **पहले दिन अर्धरात्रि-व्याप्त अष्टमी को छोड़कर व्रत उस दिन करना, जिस दिन अर्धरात्रि के समय अष्टमी व्याप्त नहीं कर रही अपितु वहाँ नवमी तिथि है, किसी भी दृष्टि से शास्त्र-सम्मत एवं तर्क-संगत नहीं है।**

ध्यान रहे, भगवान् श्रीकृष्ण की जन्म-स्थली मथुरा-वृन्दावन में वर्षों की परम्परानुसार जन्मोत्सव सूर्य-उदयकालिक एवं नवमी विद्धा अष्टमी में मनाने की परम्परा है, जबकि उत्तरी भारत में लगभग सभी प्रान्तों में सैंकड़ों वर्षों से अर्द्धरात्रि एवं चन्द्रोदयव्यापिनी जन्माष्टमी में व्रतादि ग्रहण करने की परम्परा है। **वास्तव में, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत तथा जन्मोत्सव दो अलग-अलग स्थितियां हैं।**

इस प्रकार, 24 अगस्त, बुधवार को ही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का कर्मकाल-(अर्द्धरात्रि अष्टमी, वृषस्थ चन्द्र, चन्द्रोदय काल एवं च बुधवार का संयोग) है। इसलिए इसी समय से पूर्व श्रीकृष्ण के निमित्त व्रत, बालरूप पूजा, झूला-झुलाना, चन्द्र का अर्घ्य-दान, जागरण-कीर्तन का विधान होगा।

हमारे मतानुसार 25 अगस्त, गुरुवार को भी श्रीकृष्ण-स्तोत्र पाठ, ध्यान, कीर्तनादि करके इन पुण्य सुअवसरों का लाभ उठाना चाहिए। **व्रत एवं उत्सव तो 24 अगस्त, बुधवार को ही श्रेष्ठ एवं उत्तम रहेगा।**

स्मार्त्त और वैष्णव का भेद

स्मार्त्त-वेद, श्रुति-स्मृति आदि ग्रन्थों को मानने वाले धर्मपरायण प्रायः सभी गृहस्थी लोग स्मार्त्त कहलाते हैं। पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा, दिल्ली, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात आदि राज्यों के साधारण गृहस्थी परिवार स्मार्त्त सम्प्रदाय अनुसार ही अपने सभी व्रतोपवास के साधारण नियम अनुकरणीय करते हैं। पुराण, संहिता एवं स्मृतियों में स्मार्त्तों के लिए स्थान-स्थान पर गृही या गृहस्थ शब्द का और वैष्णवों के लिए वनवासी या यति शब्दों का प्रयोग किया गया है।

वैष्णव-वे धर्मपरायण लोग जिन्होंने किसी प्रतिष्ठित वैष्णव सम्प्रदाय के गुरु से दीक्षा ग्रहण की हो, गले में श्रीगुरु द्वारा दी गई कण्ठी धारण की गई हो तथा मस्तक एवं गले पर श्री खण्ड, चन्दन या गोपी चन्दन या विष्णुचरण का तिलक, त्रिपुण्ड्र, उर्द्धपुण्ड आदि के चिन्ह धारण किए हुए एवं विशिष्ट सम्प्रदाय से सम्बन्धित भक्तजन वैष्णव कहलाते हैं।

धर्मसिन्धुकार ने एकादशी, अष्टमी आदि व्रतों में स्मार्त्त एवं गृहस्थ-जनों को पूर्वविद्धा में व्रतादि करने का निर्देश दिया है, जबकि वैष्णवों एवं विधवाओं आदि को परवर्ती तिथि में व्रतादि करने का निर्देश दिया है-

''स्मार्त्तानां गृहिणां पूर्वा पोष्या। यतिर्भिः निष्काम गृहिभिः वनस्थैः विधवाभिर्वैष्णवैश्च परैवोपोष्या।। (धर्मसिन्धु)

(8) दूर्वाष्टमी व्रत (25 अगस्त, गुरुवार)

भाद्रपद शुक्ल अष्टमी (पूर्वविद्धा) को सन्तान सुख एवं वंशवृद्धि की कामना से यह व्रत किया जाता है। शास्त्रानुसार जिस किसी वर्ष में भाद्र. शुक्लाष्टमी के समय कन्या का सूर्य (आश्विन मास) आ जाए अथवा अगस्त्य तारा का उदय हो जाए, तो उस स्थिति में पूर्ववर्त्ती किसी अन्य मास की अष्टमी (भाद्र. कृष्ण या श्रावण शुक्लाष्टमी) में इस व्रत का पालन करना चाहिए, जब अगस्त्य तारा अदृश्य (अस्तगत) हो। यह रौहिण या ब्राह्म (दिन के नवम मुहूर्त्त) में व्याप्त अष्टमी में किया जाता है।

इदं दूर्वा पूजनं व्रतं कन्याऽर्केऽगस्त्योदये च वर्ज्यम्।। (धर्मसिन्धु)
भाद्र शुक्लाष्टम्यां अगस्त्योदये भाविनी सति पूर्व कृष्णाष्टम्यामेव कुर्यात्।। (हेमाद्रि)

इस वर्ष भाद्र. शुक्लाष्टमी 9 सितम्बर को है, परन्तु पंजाब, हिमाचल-प्रदेश, हरियाणा आदि पश्चिमोत्तर प्रदेशों में अगस्त्योदय 2 या 3 सितम्बर को उदय हो जाने से 9 सितम्बर को दूर्वाष्टमी का व्रतादि करना शुभ नहीं होगा। अतएव शास्त्र निर्देशानुसार दूर्वाष्टमी का व्रतादि पूर्ववर्ती भाद्रकृष्ण की रौहिण व्याप्त अष्टमी 25 अगस्त, गुरुवार, सन् 2016 ई. को करना शुभ एवं शास्त्र-सम्मत होगा।

(9) तृतीया एवं चतुर्थी का महालय श्राद्ध

आश्विन कृष्ण पक्ष (पितृ-पक्ष) में मृत व्यक्ति की जो तिथि आए, उस तिथि में पार्वण श्राद्ध करने का विधान है। पार्वण श्राद्ध में पिता, पितामह, प्रपितामह, सपत्नीक अर्थात् माता, दादी और परदादी सहित छः जनों का श्राद्ध होता है। इन्हें अपराह्ण व्यापिनी मृत्युतिथि के दिन करने का निर्देश है।

यथा- **पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धमपराह्ने तु पैतृकम्।**

यदि मृत्युतिथि दोनों दिन अपराह्ण काल में व्याप्त न हो, तो पहले दिन श्राद्ध करना चाहिए-'**न स्पृशेदपराह्णौ चेत् पूर्वा स्यात्।।**'

इस वर्ष चतुर्थी तिथि का श्राद्ध 19 सितं., 2016 ई. को होगा, क्योंकि चतुर्थी तिथि इसी दिन अपराह्ण-काल को कुछ समय तक व्याप्त कर रही है। 19 सितं. को 15घं.-07मिं. से 16घं.-00मिं. तक के अपराह्णकाल में चतुर्थी तिथि व्याप्त रहेगी। जबकि 20 सितं. को चतुर्थी तिथि अपराह्ण काल को बिल्कुल भी स्पर्श नहीं कर रही। अतएव, **तृतीया एवं चतुर्थी तिथि का श्राद्ध 19 सितं.** को होगा।

ध्यान दें, 19 सितं., 2016 ई. को अपराह्ण-काल लगभग 13घं.-34मिं. से 16घं.-00मिं. तक रहेगा।

(10) प्रदोष व्रत (आश्विन शुक्ल) (13 अक्तूबर, गुरुवार)

प्रत्येक पक्ष (कृष्ण-शुक्ल) की प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी में यह व्रत किया जाता है। यह नक्त व्रत है। ता. 13 अक्तू., 2016 ई. को त्रयोदशी रात्रि 19घं.-15मिं. से 20घं.-26मिं. तक प्रदोष व्यापिनी है, अतएव **प्रदोष व्रत** इस दिन लिखा गया है। इसदिन प्रदोषकाल भा.स्टें.टा. अनुसार लगभग 17घं.-55मिं. से 20घं.-26मिं. तक रहेगा।

(11) करक चतुर्थी (करवा-चौथ व्रत) (19 अक्तू., बुधवार)

करवा-चौथ का व्रत भारतीय संस्कृति के उस पवित्र-बन्धन एवं अखण्ड सौभाग्य हेतु का प्रतीक है, जो पति-पत्नी के बीच प्रेम रूपी डोरी को जोड़ता है। सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा यह व्रत चन्द्रोदय व्यापिनी कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को किया जाता है। धर्मशास्त्र निर्णय अनुसार यदि किसी वर्ष तृतीयायुक्त चतुर्थी में चन्द्रोदय न हो और दूसरे दिन चतुर्थी में चन्द्रोदयन हो, तो परयुक्ता अर्थात् उदय-व्यापिनी चतुर्थी ग्रहण करें। यदि दोनों दिन चतुर्थी व्यापिनी में चन्द्रोदय हो, तो पहली तृतीया युक्त लें। परन्तु यदि दोनों दिन चतुर्थी में चन्द्रोदय न हो, तो परयुता चतुर्थी ही ग्रहण करें अर्थात् दूसरे दिन ही व्रत करने की शास्त्राज्ञा है–

'करक चतुर्थी चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या।। परदिने एव चन्द्रोदयव्याप्तौ परैव।। उभयदिने चन्द्रोदयव्यापित्वे तृतीया-युतैव ग्राह्या।।' दिनद्वये चन्द्रोदयव्याप्त्यभावे परैव।। (धर्मसिन्धुः)

प्रस्तुत वर्ष 18 अक्तूबर, मंगलवार को तृतीया तिथि रात्रि 22घं.–48मिं. तक व्याप्त रहेगी। चन्द्रोदय लगभग सारे भारत में तृतीया तिथि कालीन 19घं.–30मिं. से 20घं.–15मिं. तक हो जाएगा। परन्तु 19 अक्तू., बुधवार को चतुर्थी तिथि रात्रि 19घं.–33मिं. तक ही व्याप्त रहेगी। सम्पूर्ण भारत में इसदिन चन्द्रोदय चतुर्थी तिथि की समाप्ति (19-33) के बाद ही होगा। **अतः शास्त्र-निर्णयानुसार करवा-चौथ व्रत दूसरे दिन ही (अर्थात् 19 अक्तू., बुधवार को ही) किया जाएगा।**

(12) प्रदोष व्रत (कार्तिक कृष्ण) (28 अक्तूबर, शुक्रवार)

प्रदोषव्यापिनी त्रयोदशी वाले दिन प्रदोष व्रत किया जाता है। सूर्यास्त के बाद त्रि-मुहूर्त्त व्यापिनी त्रयोदशी ग्रहण करनी चाहिए–

सूर्यास्तमानोत्तर त्रिमुहूर्त्तात्मक प्रदोष व्यापिनी त्रयोदशी ग्राह्या।। (धर्मसिन्धु)

परन्तु यदि दो दिन त्रयोदशी प्रदोष-व्यापिनी हो, तो अगली ग्रहण करनी चाहिए। यथा–**दिनद्वये प्रदोषव्याप्तौ साम्येन तदेकदेशस्पर्शे वा उत्तरा।।**

'कालमाधवकार' का भी यह वाक्य इस बात की पुष्टि करता है–

प्रदोषव्यापिनी नक्ते तिथि व्याप्तिर्दिनद्वये।
अव्याप्तिर्वाथवांशेन व्याप्तिः स्यात्सर्वथोत्तरा।।

इस वर्ष कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी 27 एवं 28 अक्तू.-दो दिन प्रदोषव्यापिनी है। परन्तु उपरोक्त शास्त्र प्रमाणानुसार 28 अक्तू., शुक्रवार को प्रदोष व्रत ग्राह्य होगा।

(13) पद्मक योग (14 नवम्बर)

कार्तिक पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा कृतिका नक्षत्र और सूर्य विशाखा नक्षत्र पर हो, तो **'पद्मक'** योग होता है, इस योग में तीर्थ विशेषकर पुष्कर तीर्थ में दान, जप करना विशेष पुण्यदायक होता है। **विशाखासु यदा भानुः कृतिकासु च चन्द्रमा।**

स योगः पद्मको नाम पुष्करे स्वाति दुर्लभः।। (पद्मपुराण)

[illegible]

के सम्बन्ध में यथाशक्ति दान, जप तथा कृतिका स्वामी (विश्वस्वामी सूर्य) के दर्शन किए जाएँ, तो ब्राह्मण सात जन्म तक वेद परायण और धनाढ्य होता है–

कार्तिक्यां कृतिका योगे च कुर्यात् स्वामिदर्शनम्।
सप्तजन्म भवेद् विप्रो धनाढयो वेदपारगः।। (काशीखण्ड)

वि. संवत् 2073 अर्थात् सन् 2016 ई. में यह कार्तिक पूर्णिमा, सोमवार, 14 नवम्बर को कृतिका नक्षत्र, वरीयान योग, सूर्य के विशाखा नक्षत्र रहते–प्रशस्त **'पदमक योग'** बना है। सायं 16घं.–27मिं. से सायं 19घं.–22मिं. तक इसका विशेष माहात्म्य रहेगा।

(14) श्रीसत्यनारायण व्रत (पौष-पूर्णिमा) (11 जन., बुध, 2017 ई.)

श्रीसत्यनारायण व्रत प्रदोषव्यापिनी एवं चन्द्रोदय-व्यापिनी पूर्णिमा के दिन किया जाता है। इस वर्ष पौष की पूर्णिमा 12 जन., 2017 ई. को सायं 17घं.–04मिं. पर समाप्त हो रही है, जिस कारण यह इस दिन प्रदोष-व्यापिनी नहीं होगी। इस दिन या एक दिन पूर्व पंजाब, हिमाचल आदि पश्चिमोत्तर प्रान्तों में प्रदोषकाल लगभग 17घं.–39मिं. से रात्रि 20घं.–26मिं. तक रहेगा। ता. 11 जनवरी, सन् 2017 ई. को पूर्णिमा 19घं.–52मिं. पर प्रारम्भ हो रही है, जिससे इसी दिन प्रदोषव्यापिनी एवं रात्रिव्यापिनी पूर्णिमा होगी। अतएव श्रीसत्यनारायण का व्रत इसी दिन (11 जन., 2017 ई.) को रखना प्रशस्त होगा।

(15) भीष्म-द्वादशी (7 फरवरी, 2017 ई.)

माघ शुक्ल द्वादशी को भीष्म-द्वादशी मनाई जाती है। इसमें व्रत को ब्रह्मार्पण करके ब्राह्मणों को भोजन कराकर पारणा करें। युग्मवाक्य के अनुसार यह द्वादशी एकादशी विद्धा ही ली जाती है–**द्वादशी तु एकादशीविद्धा ग्राह्या।।**

इसीलिए भीष्म-द्वादशी 7 फरवरी, 2017 ई. को लिखा गया है।

(16) श्रीमहाशिवरात्रि व्रत (24 फर., 2017 ई. शुक्रवार)

शास्त्र एवं पुराणानुसार निशीथ व्यापिनी (रात्रि के अष्टम-मुहूर्त्त) फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को **'श्रीमहाशिवरात्रि'** का सर्वकल्याणकार व्रत किया जाता है। आगामी वर्ष यह तिथि 24 फर., 2017 ई. को निशीथ-व्यापिनी है, इसलिए यह व्रत इसी दिन ग्राह्य होगा।

24 या 25 फर., को निशीथकाल अर्थात् रात्रिमान का अष्टम मुहूर्त्त भा.स्टैं.टा. अनुसार लगभग 24घं.–11मिं. से 25घं.–02मिं. तक होगा।

(17) वासन्त (चैत्र) नवरात्र-आरम्भ (चैत्र शुक्ल, वि. सं. 2074) (28 मार्च, सन् 2017 ई., मंगलवार)

वि. संवत् 2074 में चैत्र (वासन्त) नवरात्रों का प्रारम्भ 28 मार्च, 2017 ई. को ही हो जाएगा, क्योंकि यहाँ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तिथि का क्षय हुआ है। प्रतिपदा के क्षय की स्थिति में नव चान्द्र विक्रमी संवत् एवं नवरात्रे आरम्भ अमावस-युक्त प्रतिपदा से ही किये जाएंगे। इस दिन प्रातः 8 बजकर 27 मिनट तक अमावस, तदुपरान्त चैत्र नवरात्रों का प्रारम्भ होगा। विस्तृत विवेचन, शास्त्रप्रमाण तथा दुर्गा-पूजन, घटस्थापन के समय आदि आगामी वर्ष (वि. संवत् 2074) के पंचांगदिवाकर में दिए जाएंगे।

वि. संवत 2073 में तुला (कार्तिक) संक्रान्ति–दो दिन ?

वि. संवत् 2073 में तुला (कार्तिक) संक्रान्ति–दो दिन ?

[स्थानभेद (सूर्योदयभेद) से तुला संक्रान्ति 16 अक्तू., तथा 17 अक्तू., 2016 ई. को होगी।] –लेखक : पं. विवेक शर्मा

भारतीय ज्योतिष के अनुसार सूर्य जब एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है, तो उसे संक्रान्ति कहते हैं। जिस वार के दौरान (में) सूर्य राशि-परिवर्तन करता है, उसी वार को पश्चिमोत्तर भारत (विशेषकर पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू आदि) में संक्रान्ति पर्व मनाया जाता है और वहाँ उसी वार/दिन से सौर मास (सौर-मास का प्रथम प्रविष्टा अर्थात् सौर-मास की प्रथम तारीख) शुरु होता है।

[यहाँ यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि भारतीय ज्योतिष के अनुसार प्रत्येक नवीन 'वार' का प्रारम्भ सूर्योदय से होता है। अतः सूर्योदय से प्रारम्भ होकर दूसरे (आगामी) दिन के सूर्योदय तक के समय को 'वार' कहा जाता है।]

संक्रान्ति-दिन और संक्रान्ति-पुण्यकाल

शास्त्र-निर्देश एवं भारतीय ज्योतिष सिद्धान्त अनुसार संक्रान्ति-प्रवेश (सूर्य का राशि-परिवर्तन) चाहे प्रातःकाल हो, मध्याह्न में हो, सायंकाल या अर्द्धरात्रि या अर्द्धरात्रि के बाद ही क्यों न हो, पश्चिमोत्तर भारतीय प्रान्तों में उसी दिन सौर-मास का प्रथम प्रविष्टा (प्रथम तारीख) माना जाएगा। यद्यपि संक्रान्ति के पुण्यकाल का नियम अलग है।

मूलतः संक्रान्ति प्रवेश से 16 घड़ी पहिले और 16 घड़ी पश्चात् में संक्रान्ति का पुण्यकाल मानना चाहिए।

संक्रान्तिकालादुभयत्र नाडिकाः पुण्या मताः षोडश-शोडशोऽगणोः।। (मु. चि.)

यदि अर्द्धरात्रि से पूर्व संक्रान्ति प्रवेश हो, तो पूर्व (उसी) दिन का उत्तरार्द्धभाग (मध्याह्न बाद) पुण्यकाल और यदि अर्द्धरात्रि के उपरान्त संक्रान्ति प्रवेश हो, तो परदिन (दूसरे दिन) का पूर्वार्द्ध (मध्याह्न-पूर्व) भाग में पुण्यकाल होता है–

निशीथतोऽर्वागपरत्र संक्रमे पूर्वापराहान्तिमपूर्वभागयोः।। (मु. चिन्तामणि)

उपरोक्त विवेचन से पाठक समझ गए होंगे कि संक्रान्तिदिन और संक्रान्तिपुण्यकाल भिन्न-भिन्न दिन हो सकते हैं। एवं च वार का आरम्भ स्थानीय नगर के सूर्योदय से होगा। यदि सूर्य का राशि-प्रवेश सूर्योदय के ही आस-पास हो, तो स्थानभेद के कारण संक्रान्तिदिन का अन्तर आ जाना स्वाभाविक है।

इस वर्ष (वि. संवत् 2073 में) भारत में तुला संक्रान्ति का दिन भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग दिन रहेगा। यद्यपि सभी क्षेत्रों में कार्तिक (तुला) संक्रान्ति के स्नान, दानादि का पुण्यकाल 17 अक्तू., सोमवार, सन् 2016 ई. को दोपहर 12 बजकर 55 मिनट तक रहेगा।

वि. संवत् 2073 में सूर्य का तुला राशि में प्रवेश 17 अक्तू., सोमवार, 2016 ई. को प्रातः 6घं.-31मिं.-24सैकिं. (भा. स्टैं. टा.) पर होगा। क्योंकि इसदिन जालन्धर का सूर्योदय 6घं.-36मिं. है। अतः संक्रान्ति प्रवेश सूर्योदय से पूर्व होने के कारण **'पंचांगदिवाकर'** में संक्रान्ति दिन अर्थात् कार्तिक सौर मास का प्रथम प्रविष्टा (तारीख) 16 अक्तू., रविवार, 2016 ई. को लिखा गया है। इसप्रकार भारत के जिन नगरों में सूर्योदय 6घं.-31मिं-24सैकिं. के बाद होगा, वहाँ कार्तिक सौरमास 16 अक्तू., को ही प्रारम्भ होगा।

तथा भारत के जिन नगरों/क्षेत्रों में ता. 17 अक्तू., सोमवार को सूर्योदय 6घं.-31मिं.-24सैकिं. से पूर्व (पहिले) होगा, वहाँ कार्तिक सौरमास अर्थात् कार्तिक संक्रान्ति दिन 17 अक्तू., सोमवार को होगा। इसका स्पष्टीकरण हमने आगे दिए गए भारत के मानचित्र में भी कर दिया है तथा आगामी पृष्ठ पर भारत के उन नगरों का सूर्योदय भी दे दिया है जहाँ संक्रान्ति प्रवेश (सूर्य का तुला राशि प्रवेश) के निकट समय पर सूर्योदय होगा। **'क-ख' रेखा के दाईं ओर के नगरों/क्षेत्रों में संक्रान्ति दिन 17 अक्तू., को रहेगा, जबकि रेखा के बाईं ओर के नगरों में संक्रान्ति दिन 16 अक्तू., रविवार को होगा।**

ध्यान दें, दोनों परिस्थितियों में कार्तिक संक्रान्ति का पुण्यकाल 17 अक्तू., सोमवार को ही दोप. 12घं.-55मिं. तक रहेगा।

एक अन्य उदाहरण लेते हैं, 17 अक्तू., 2016 ई. को मण्डी (हि.प्र.) में सूर्योदय 6घं.-31मिं.-01सैकिं. पर हो रहा है। जोकि संक्रान्ति प्रवेश 6घं.-31मिं.-

$24^{\text{सैकिं.}}$ से कुछ समय पूर्व ही है। इसलिए यहाँ संक्रान्ति दिन (प्रविष्टा १) तथा संक्रान्ति पुण्यकाल दोनों 17 अक्तू., 2016 ई., सोमवार को मान्य होगा। इस प्रकार पंचांगदिवाकर में जालन्धर नगर के अनुसार लिखे कार्तिक सौरमास के प्रविष्टों एवं मण्डी, सोलन, चण्डीगढ़, अर्की तथा अन्य पूर्वी भारत के नगरों के प्रविष्टों में एक दिन का अन्तर आ जाएगा।

वि. संवत् 2073 में स्थानभेद से दो रसेश

आगामी पृष्ठ पर दिए गए भारतीय मानचित्र में दर्शायी गई 'क-ख' रेखा से दाईं ओर स्थित नगरों/भारतीय क्षेत्र पर इस वर्ष रसेश चन्द्रमा और बाईं ओर स्थित नगरों/भारतीय क्षेत्र पर रसेश सूर्य का प्रभाव रहेगा। क्योंकि इस वर्ष तुला संक्रान्ति कालिक वार, जिसका स्वामी रसेश माना गया है, इस रेखा से दायीं ओर चन्द्र तथा बायीं ओर सूर्य होगा।

राजा-मन्त्री आदि वर्ष (संवत्) के दश-अधिकारियों का संक्रान्ति दिन के वारेशों से सम्बन्ध के कारण प्रत्येक 2-3 वर्षों के बाद स्थानभेद से सूर्योदय में भिन्नता के कारण अन्तर आना स्वाभाविक है।

मानचित्र से सहायता लेने के बाद आप अपने स्थानीय नगर में सूर्योदय के अनुसार कार्तिक संक्रान्ति का प्रथम दिन (प्रविष्टा) तथा रसेश का निर्णय कर सकते हैं। जिन नगरों में सूर्योदय 17 अक्तू., 2016 ई. को प्रातः $6^{\text{घं.}}$-$31^{\text{मि.}}$-$24^{\text{सैकिं.}}$ से पूर्व (पहिले) होगा, वहाँ रसेश चन्द्रमा माना जाएगा तथा जिन नगरों में सूर्योदय प्रातः $6^{\text{घं.}}$-$31^{\text{मि.}}$-$24^{\text{सैकिं.}}$ के बाद होगा, वहाँ रसेश सूर्य एवं कार्तिक संक्रान्ति का दिन (प्रविष्टा) 16 अक्तू., 2016 ई., रविवार को माना जाएगा।

–कार्तिक (तुला) संक्रान्ति का माहात्म्य–

मेष एवं तुला की संक्रान्ति को विषुवत् संज्ञा दी गई है। मेष एवं तुला संक्रान्ति अपने मध्य के दस दिनों में विशेष प्रभाव करती हैं। इस संक्रान्ति से प्रतिदिन कार्तिक माहात्म्य का पाठ तथा नित्य श्री तुलसी पूजा एवं तुलसी व पीपल के मूल पर दीपक जलाने का विशेष माहात्म्य होता है। जिन जातक/जातिकाओं की कुण्डली में सूर्य नीच राशिगत हों, उन्हें इस मास प्रतिदिन सूर्य भगवान् को 'ॐ घृणि सूर्याय नमः' मन्त्र से अर्घ्य देना तथा आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करना

दो अलग-अलग वारों में संक्रान्तिदिन होने से संक्रान्ति फल में भी अन्तर रहेगा। रविवार की संक्रान्ति अशुभ मानी गई है, जबकि सोमवार की संक्रान्ति शुभ मानी गई है। इसी प्रकार रसेश के अलग-अलग फल के लिए राजा-मन्त्री वाले पृष्ठों का अवलोकन करें।

स्थानीय सूर्योदय अनुसार अपने नगर में कार्तिक संक्रान्ति तथा रसेश का निर्णय करें।

[17 अक्तू., 2016 ई. को भारत के विभिन्न नगरों का सू.उ. जहाँ तुला-संक्रान्ति दिन के बारे सन्देह होगा।]

नगर	सूर्योदय घं. मि. सैं.	नगर	सूर्योदय घं. मि. सैं.	नगर	सूर्योदय घं. मि. सैं.	नगर	सूर्योदय घं. मि. सैं.
अमृतसर	6-39-02	खरड़	6-31-13	नवांशहर	6-33-39	मन्दसौर(म.प्र.)	6-31-56
अम्बाला	6-30-10	गोआ	6-30-08	नाहन (हि.प्र.)	6-28-26	मैसूर(कर्ना.)	6-16-58
अहमदाबाद	6-40-55	घुमारवीं(हि.प्र.)	6-31-34	नालागढ़(हि.प्र.)	6-31-13	मुम्बई	6-36-59
अजमेर	6-35-35	चम्बा(हि.प्र.)	6-34-56	नूरपुर (हि.प्र.)	6-35-37	गुड़गांव	6-27-41
अर्की	6-30-18	चण्डीगढ़	6-30-37	परवाणू	6-30-05	गोआ (पंजि.)	6-30-27
अम्ब (हि.प्र.)	6-34-10	जम्मू	6-40-10	पंचकूला	6-30-18	यमुनानगर	6-28-06
उज्जैन	6-28-26	जालन्धर	6-36-04	पानीपत	6-28-44	राजपुरा	6-31-10
ऊना (हि.प्र.)	6-33-20	जयपुर	6-31-14	पिंजौर	6-30-11	रोपड़	6-31-57
इन्दौर (म.प्र.)	6-27-48	जोगिन्द्रनगर	6-31-52	पटियाला	6-31-50	रोहतक	6-29-55
करनाल	6-28-56	जीन्द (हरि.)	6-31-17	पूणे	6-32-32	रिवाड़ी(हरि.)	6-29-10
करसोग (हि.प्र.)	6-29-35	टोहाना	6-33-17	पणजी(गोआ)	6-30-27	लुधियाना	6-34-48
कराड़ (महा.)	6-30-17	थानेसर(हरि.)	6-29-54	पालमपुर	6-32-55	श्रीगंगानगर	6-41-47
किश्तवाड़	6-37-07	धर्मशाला	6-33-53	फिरोज़पुर	6-39-34	शिमला	6-29-40
कोटा (राज.)	6-29-45	धूले (महा.)	6-30-37	बिलासपुर(हि.प्र.)	6-31-20	सरकाघाट	6-31-44
कोचीन (केर.)	6-17-02	नगरोटा बगवां	6-33-35	बाड़मेर	6-48-01	सतारा(महा.)	6-30-20
कुरुक्षेत्र	6-29-48	नाहन (हि.प्र.)	6-28-26	बीकानेर (रा.)	6-42-14	सिरसा	6-36-40
कुराली	6-31-33	नंगल	6-32-52	बैजनाथ(हि.प्र.)	6-32-24	सोलन	6-29-30
कैथल	6-31-28	नागपुर(महा.)	6-14-09	भोपाल	6-21-48	सोनीपत	6-28-12
काँगड़ा	6-33-58	नीमच(महा.)	6-43-00	भरुच (गुज.)	6-38-30	सुन्दरनगर	6-31-02
कुल्लू	6-30-31	नारनौल(हरि.)	6-31-06	भुन्तर (हि.प्र.)	6-30-22	हमीरपुर(हि.प्र.)	6-32-35
कालकाजी	6-26-49	नादौन(हि.प्र.)	6-33-21	मण्डी(हि.प्र.)	6-31-01	हनुमानगढ़	6-39-31
खन्ना	6-32-54	नासिक(महा.)	6-33-47	मनाली	6-30-31	हाँसी	6-32-30

नोट–जिन नगरों में सूर्योदय $6^{\text{घं.}}$-$31^{\text{मि.}}$-$24^{\text{सैकिं.}}$ से पूर्व (पहिले) होगा, वहाँ कार्तिक संक्रां. का पहिला प्रविष्टा (तारीख) 17 अक्तू. को तथा जहाँ सू.उ. $6^{\text{घं.}}$-$31^{\text{मि.}}$-$24^{\text{सैकिं.}}$ के बाद होगा, वहाँ
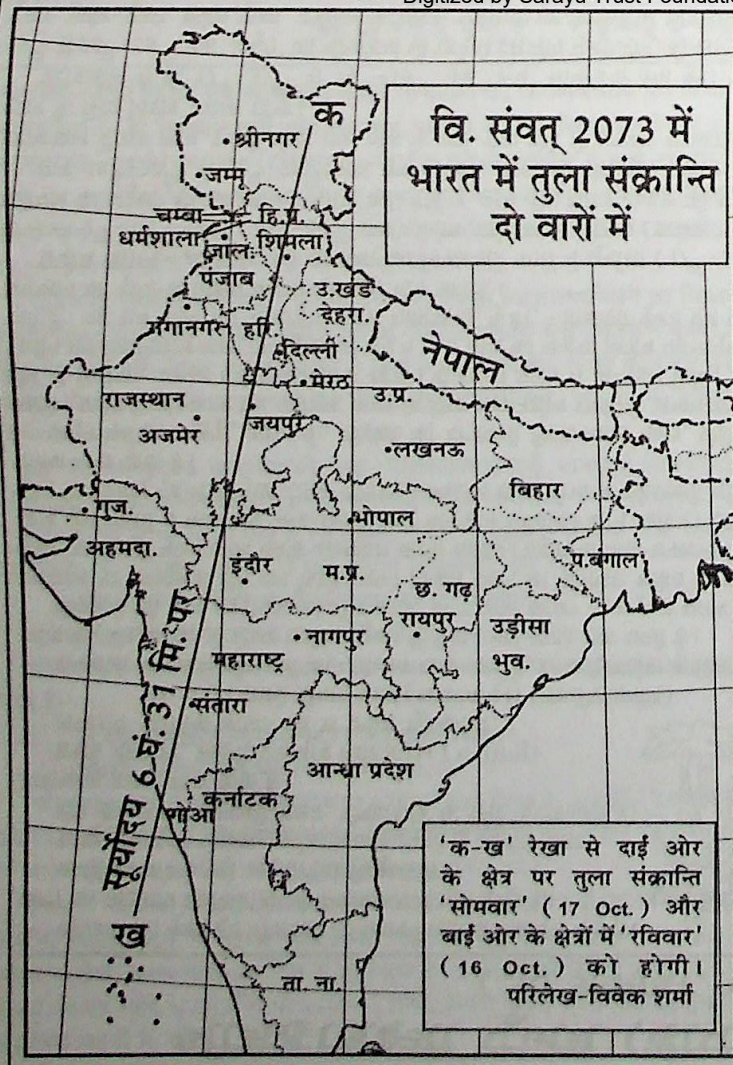
वि. संवत् 2073 में भारत में तुला संक्रान्ति दो वारों में

'क-ख' रेखा से दाईं ओर के क्षेत्र पर तुला संक्रान्ति 'सोमवार' (17 Oct.) और बाईं ओर के क्षेत्रों में 'रविवार' (16 Oct.) को होगी।
परिलेख-विवेक शर्मा

☆ वि. संवत् 2073 में लाभ-हानि चक्र ☆

(विंशोत्तरी मतानुसारेण)

आगामी वर्ष में आपको जिस राशि का लाभ-हानि का विवरण ज्ञात करना हो, तो आप निम्नलिखित चक्र में अपनी राशि के नीचे लिखे लाभ-हानि के अंकों को जमा कर दें, फिर कुल जमा जोड़ में से 1 कम करके जोड़ को 8 से भाग दे देवें। भाग करने के पश्चात् यदि 1 बचे तो आगामी वर्ष में धन लाभ अच्छा रहेगा। मनोवांछित योजनाएं सफल होंगी। मनोरंजक कार्यों की ओर रूचि बढ़ेगी। यदि शेष 2 बचे तो, धन लाभ मध्यम परन्तु विभिन्न कार्यों पर खर्च अधिक होगा। यदि शेष 3 बचें तो लाभ कम, खर्च (अपव्यय) अधिक रहेगा। व्यर्थ भाग-दौड़ अधिक रहेगी और घरेलू उलझनें बढ़ेंगी। यदि शेष 4 बचें तो, मानसिक तनाव, शरीर कष्ट और रोगादि पर खर्च हो, घरेलू एवं आर्थिक समस्याएं उत्पन्न होंगी। यदि शेष 5 बचें तो लाभ कम तथा फिजूलखर्ची अधिक रहेगी। बनते कार्यों में विघ्न पड़ेगा। यदि शेष 6 बचें तो, भाग्योन्नति और धन लाभ के मार्ग प्रशस्त होंगे। रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि शेष 7 बचें तो, व्यापार, लॉटरी, सट्टे आदि द्वारा अकस्मात् धन लाभ होगा। ज़मीन-जायदाद आदि कार्यों पर खर्च भी रहेंगे। आय के साधनों में भी वृद्धि होगी। यदि 8 अर्थात् 0 बचे, तो उस वर्ष लाभ कम व खर्च अधिक रहेगा, मानसिक परेशानियाँ भी बढ़ने के संकेत हैं।

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
लाभ	११	५	११	५	८	११	५	११	८	२	२	८
हानि	५	१४	११	८	५	११	१४	५	११	१४	१४	११

श्रीमहालक्ष्मी पूजन (दीपावली) के शुभ-काल (मुहूर्त्त)

(30 अक्तूबर, रविवार–सन् 2016 ई.)

श्रीमहालक्ष्मी पूजन एवं दीपावली का महापर्व कार्तिक अमावस में प्रदोष काल एवं अर्द्धरात्रि व्यापिनी हो, तो विशेष रूप से शुभ होती है।

कार्तिकस्यासिते पक्षे लक्ष्मीर्निदां विमुञ्चति।
स च दीपावली प्रोक्ताः सर्वकल्याणरूपिणी।। ज्योतिर्निबन्ध

दीप प्रज्वलन, महालक्ष्मी-पूजन, दीपदानादि के लिए प्रदोषकाल ही विशेषतया प्रशस्त माना जाता है।

प्रदोषे दीपदान, लक्ष्मी पूजनादि विहितम्।। (धर्मसिन्धु)
अन्येऽपि-**कार्तिक कृष्ण पक्षे च प्रदोषे भूतदर्शयोः,**
नरः प्रदोष समये दीपान् दद्यात् मनोरमान्।। (तत्त्वचिन्तामणि)

दीपावली वास्तव में पाँच पर्वों का महोत्सव माना जाता है, जिसकी व्याप्ति कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी (धन-तेरस) से लेकर कार्तिक शुक्ल द्वितीया (भाई-दूज) तक रहती है।

दीपावली की शाम (प्रदोषकाल) में स्नानादि के उपरान्त स्वच्छ वस्त्राभूषण धारण करके धर्मस्थल पर मन्त्रपूर्वक दीप दान करके अपने निवास स्थान पर श्रीगणेश सहित महालक्ष्मी, कुबेर, महाकाली पूजन आदि करके अल्पाहार करना चाहिए। तदुपरान्त यथा-उपलब्ध निशीथ आदि शुभ मुहूर्त्तों में मन्त्र-जप, यन्त्र-सिद्धि आदि अनुष्ठान सम्पादित करने चाहिएं। दीपावली पूजन के पश्चात् गृह में चौमुखा दीपक रात्रिभर प्रज्ज्वलित रहना सौभाग्य एवं लक्ष्मी वृद्धि का द्योतक माना जाता है।

प्रस्तुत वर्ष 30 अक्तू., 2016 ई., रविवार को दीपावली चित्रा/स्वाती नक्षत्र, प्रीति योग कालीन प्रदोष निशीथकाल एवं आंशिक काल के लिए महानिशीथ व्यापिनी अमावस्या युक्त होने से विशेषतः प्रशस्त एवं पुण्यप्रदायक रहेगी। दीर्पावली पूजन में अमावस तिथि, प्रदोष, निशीष एवं महानिशीथ काल तथा तुला का सूर्य व तुला राशि का चन्द्रमा विशेष महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं। यह सब काल एवं चौघड़ियां मुहूर्त्त महालक्ष्मी, कुबेर, महाकाली पूजन एवं जपादि अनुष्ठान की दृष्टि से विशेष प्रशस्त एवं शुभ माने जाते हैं।

प्रदोष काल–30 अक्तू. को जालन्धर एवं निकटवर्ती नगरों में सूर्यास्त ($17^{\text{घं.}}$-$37^{\text{मिं.}}$) से लेकर $2^{\text{घं.}}$-$37^{\text{मिं.}}$ पर्यन्त ($20^{\text{घं.}}$-$14^{\text{मिं.}}$ तक) प्रदोष काल व्याप्त रहेगा। (प्रत्येक नगर के रात्रिमान के अनुसार इसका समय निर्धारण करें–देखें पृ. 259-वि. संवत् २०६९ की पंचांग)

सायं $18^{\text{घं.}}$-$30^{\text{मिं.}}$ से $20^{\text{घं.}}$-$25^{\text{मिं.}}$ तक वृष (स्थिर) लग्न भी विशेषतः प्रशस्त होगा। प्रदोषकाल में वृष लग्न, स्वाती नक्षत्र तथा तुला के सूर्य-चन्द्र होने से अत्यन्त शुभकाल तथा पूजन के लिए विशेष प्रशस्त रहेगा।

प्रदोषकाल में ही $17^{\text{घं.}}$-$37^{\text{मिं.}}$ से $19^{\text{घं.}}$-$15^{\text{मिं.}}$ तक 'शुभ' चौघड़ियां तथा पुनः $19^{\text{घं.}}$-$15^{\text{मिं.}}$ से $20^{\text{घं.}}$-$53^{\text{मिं.}}$ तक 'अमृत' की चौघड़ियां भी रहने से इस योग में दीपदान, श्रीमहालक्ष्मी-पूजन, कुबेर-पूजन, गणेश पूजन, बही-खाता पूजन, धर्म एवं गृह-स्थलों पर दीप प्रज्वलित [illegible]

30 अक्तूबर के चौघड़िया मुहूर्त्त

दिन की चौघड़ियां (घं. मिं.)		रात्रि की चौघड़ियां (घं.-मिं.)	
उद्वेग	6:45 से 8:06 तक	शुभ	17:37 से 19:15 तक
चर	8:06 से 9:27 तक	अमृत	19:15 से 20:53 तक
लाभ	9:27 से 10:48 तक	चर	20:53 से 22:32 तक
अमृत	10:48 से 12:10 तक	रोग	22:32 से 24:11 तक
काल	12:10 से 13:22 तक	काल	24:11 से 25:49 तक
शुभ	13:22 से 14:54 तक	लाभ	25:49 से 27:48 तक
रोग	14:54 से 16:16 तक	उद्वेग	27:28 से 29:07 तक
उद्वेग	16:16 से 17:37 तक	शुभ	29:07 से 30:46 तक

नोट–(1) चर, लाभ, अमृत और शुभ की चौघड़ियां ग्राह्य होती हैं।

(2) 25 बजे का अर्थ अर्द्धरात्रि 1 बजे से है तथा 30 बजे का अर्थ आगामी दिन प्रातः 6 बजे से है।

(3) यहाँ चौघड़ियां मुहूर्त्त 30 अक्तू., 2016 ई. को जालन्धर के दिनमान व रात्रिमान के अनुसार है। अपने स्थानीय नगर के चौघड़ियां मुहूर्त्त के लिए स्थानीय सूर्योदय-सूर्यास्त निकाल कर इसी पंचांग के पृष्ठ नं.– का अवलोकन करें।

निशीथ-काल–30 अक्तू., 2016 ई. को जालन्धर व समीपवर्ती नगरों में **निशीथ काल** रात्रि $20^{\text{घं.}}$-$14^{\text{मिं.}}$ से $22^{\text{घं.}}$-$52^{\text{मिं.}}$ तक रहेगा। निशीथकाल में ही $22^{\text{घं.}}$-$39^{\text{मिं.}}$ तक मिथुन लग्न मध्यम, तदुपरान्त अर्द्धरात्रि तक $24^{\text{घं.}}$-$58^{\text{मिं.}}$ 'कर्क' लग्न विशेष रूप से प्रशस्त होगा।

$19^{\text{घं.}}$-$15^{\text{मिं.}}$ से $20^{\text{घं.}}$-$53^{\text{मिं.}}$ तक 'अमृत' की चौघड़ियां तथा तदुपरान्त $22^{\text{घं.}}$-$32^{\text{मिं.}}$ तक **'चर'** की चौघड़ियां भी शुभ रहेंगी। इस अवधि में श्रीसूक्त, कनकधारा स्तोत्र और लक्ष्मी स्तोत्र आदि मन्त्रों का जपानुष्ठान करना चाहिए।

इस वर्ष अमावस रात्रि $23^{\text{घं.}}$-$08^{\text{मिं.}}$ तक ही रहने से निशीथकाल का भी विशेष माहात्म्य रहेगा तथा यथासम्भव इस काल तक पूजन कर लेना चाहिए।

महानिशीथ काल–रात्रि $22^{\text{घं.}}$-$52^{\text{मिं.}}$ से $25^{\text{घं.}}$-$31^{\text{मिं.}}$ तक महानिशीथकाल रहेगा। इस समयावधि में अमावस तिथि केवल $23^{\text{घं.}}$-$08^{\text{मिं.}}$ (कुल 15 मिंट) तक रहेगी। इसलिए यथासम्भव निशीथकाल में ही जपानुष्ठान प्रारम्भ कर लेना चाहिए। महानिशीथकाल में भी $22^{\text{घं.}}$-$39^{\text{मिं.}}$ से $25^{\text{घं.}}$-$02^{\text{मिं.}}$ तक कर्क लग्न, तदुपरान्त सिंह लग्न विशेष प्रशस्त रहेंगे। महानिशीथकाल में श्रीमहालक्ष्मी व महाशक्ति काली की उपासना, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र आदि क्रियाएं विशेष काम्य प्रयोग, तन्त्र-अनुष्ठान, साधनाएं व यज्ञादि किए जाते हैं।

नोट–महालक्ष्मी पूजन एवं साधना के लिए प्रशस्त **वृष-कर्क** आदि लग्न के लिए पृष्ठ 267 का अवलोकन कर निकालें अथवा स्थानीय पंडित जी से **'पंचांगदिवाकर'** दिखाकर परामर्श लें।

प्रश्नोत्तर समस्याएं एवं समाधान

समस्या—क्या विवाह एवं अन्य शुभ कार्यों में घातचन्द्र, घातनक्षत्रादि का विचार करना चाहिए ? –पं. रमाकान्त शर्मा, गाँव-बसन्तपुर, पत्रालय-सन्धोल, ज़िला-मण्डी (हि.प्र.)

समाधान—मुहूर्त्त चिन्तामणि (पीयूषधारा) में स्पष्ट रूप से ग्रन्थकार ने यात्रा-प्रकरण में लिखा है कि–घातचन्द्र, घातनक्षत्रादि का विचार केवल राजसेवा (सरकारी-नौकरी), विवाद (मुकद्दमा, झगड़ा, अपील आदि), युद्ध, विद्या सम्बन्धी कार्यों तथा यात्रा में ही करना चाहिए, अन्यत्र नहीं। अर्थात् अन्य शुभ कार्यों में वर्जित नहीं है। यथा–

स घातचन्द्रो राजसेवायां विवादे प्रतिवादिना सह कलहे विद्यासम्बन्धिनि वा विवादे युद्धे आदिशब्दान्मृगयादिषु वर्ज्यः। अन्यत्र विवाह-अन्नप्राशनादि-मङ्गलकृत्ये न वर्ज्यः।।

इस विषय में आगे जाकर पीयूषधाराकार ने अन्य ग्रन्थकार का मत उद्धृत करते हुए पुनः स्पष्ट रूप से लिखा है कि घातचन्द्रादि का विचार तीर्थयात्रा, विवाह, अन्नप्राशन, उपनयन आदि सभी माङ्गलिक कार्यों में नहीं करना चाहिए–

युद्धे चैव विवादे च कुमारीपूजने तथा। राजसेवावाहनादौ घातचन्द्रं विवर्जयेत्। तीर्थयात्राविवाहन्नप्रशानोपनयादिषु। माङ्गल्यसर्वकार्येषु घातचन्द्रं न चिन्तयेत्।।

ज्योतिर्निबन्ध में भी लिखा गया है कि विवाह, चौल, यज्ञोपवीत, सीमन्त-यात्रा, निषेक, वास्तु-प्रवेश और जलाशय-निर्माण में घात चन्द्रमा विचारणीय नहीं होता–

उद्वाहकाले व्रतबंधने च सीमन्तयात्रा च तथा निषेके।
वास्तुप्रवेशे च जलाशये च नो चिंतनीयः खलुः घातचन्द्रः।।

इसीप्रकार, यात्रा-प्रकरण में ग्रन्थकार ने आगे घातनक्षत्र, घातलग्न, घातवार को भी अशुभ लिखा है–

भूमिद्वयब्य्यद्रिदिक्सूर्याङ्गगष्टाङ्केशाग्निसायका।
मेषादि घातलग्नानि यात्रायां वर्तयेत्सुधीः।।

'पीयूषधाराकार' ने इसका भी स्पष्टीकरण करते हुए आगे लिखा है–**एतदपि (घातलग्नं) यात्रायां वर्ज्यम्।। एवं च, तद् (घातनक्षत्रम्) यात्रायां सत् शोभनं न।।** अर्थात् इन घातनक्षत्रों एवं घातलग्नों को यात्रा में ही पण्डित (ज्योतिषीगण) वर्जित करें।

इन सभी घातचन्द्र, घातनक्षत्र, घात लग्न एवं घाटवारादि दोषों की चर्चा एवं विवरण मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह, उपनयन, मुण्डन आदि किसी माङ्गलिक मुहूर्त्तों के प्रकरण में नहीं दिया। इसका उल्लेख केवल यात्रा-प्रकरणम् में ही किया है। इसलिए इसे केवल यात्रा, सरकारी नौकरी, विवाद आदि के मुहूर्त्तों में भी उपयोग में लाया, अर्थात् वर्जित करना चाहिए। शुभ एवं माङ्गलिक मुहूर्त्तों में नहीं।

समस्या—(i) यदि कोई 8 मास से किसी की मृत्यु पर मासिक श्राद्ध कर रहा हो, तो क्या अधिक (मल) मास में मासिक श्राद्ध करना चाहिए ?

(ii) अधिक (मल) मास में किसी की मृत्यु हो जाए, तो उसकी शुद्धि, सांवत्सरिक श्राद्ध कब होगा ?

(iii) यदि वार्षिकी से पहले अधिक मास आ जाए, तो कौन-से मास वार्षिकी (द्वादशमासिक) करनी चाहिए ? –पं. गणानन्द शर्मा, लड्डु-भरोल, ज़िला-मण्डी (हि.प्र.)

समाधान—(i) एवं (iii) अधिक मास में भी मासिक श्राद्ध करना चाहिए। क्योंकि यदि वार्षिकी (द्वादशमासिक) से पूर्व अधिक मास आ जाए तो मासिक श्राद्ध करके त्रयोदश (१३) मास में ही प्रथमाब्दिक को करे और जब वार्षिकी अधिक मास के मध्य में आ रही हो, तब मासिक श्राद की दो बार आवृत्ति करके चौदहवें शुद्ध मास में ही प्रथमाब्दिक (वार्षिकी) को करें।

उदाहरण—यदि किसी व्यक्ति की मृत्यु श्रावण शुक्ल तृतीया, वि. संवत् २०७१ (सन् 2014 ई. में) हुई, तो उसके निमित्त वार्षिक श्राद्ध द्वितीय शुद्ध आषाढ़ शुक्ल तृतीया को होगा (क्योंकि वि. संवत् २०७२ में आषाढ़ अधिक मास था।) श्राद्धकर्त्ता को अधिक आषाढ़ मास में मासिक श्राद्ध ही करना चाहिए। धर्मसिन्धुकार का यह वाक्य देखिए–

प्रथमाब्दिकं त्रयोदशे मलमासे कार्यमित्युक्तम्। तेन यत्र द्वादशमासिकं शुद्ध मास भवति तत्र त्रयोदशेधिक एवं प्रथमाब्दिकं कार्यम्।। यदा त्वधिकमध्ये द्वादशमासिकं तदा द्वादशमासिकस्य द्विरावृत्तिं कृत्वा चतुर्दशे शुद्धे मासे प्रथमाब्दिकं।

(ii) **एवं च, मलमासमृतानां तु यदा स एव मलमासो भवति।। तदाधिक एवं सांवत्सरिकं न शुद्धे। (धर्मसिन्धु)**

अर्थात् यदि किसी की मलमास में मृत्यु हो जाए, तो उसका सांवत्सरिक श्राद्ध चतुर्थ वर्ष मलमास में ही होगा, शुद्ध में नहीं।

समस्या—(i) क्या गण्डमूल शान्ति, जन्मदिन पूजा 'होलाष्टक' में कर सकते हैं ?

(ii) कुछ उत्तर-पूर्वी प्रदेशों में तो होलाष्टक में भी विवाह सम्पन्न हो रहे हैं। ऐसा क्यों ? –पं. दीवान चन्द शर्मा ज्यो., गाँव-पोलियां, होराली, ज़िला-ऊना (हि.प्र.)

समाधान—(i) फाल्गुन शुक्लाष्टमी से होलिका दहन पर्यन्त 8 दिन **'होलाष्टक'** के नाम से प्रसिद्ध हैं। यह समयावधि विवाहादि समस्त मंगल-कृत्यों में त्याज्य है। यथा–

'शुक्लाष्टमीं समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्। पूर्णिमावधिकं त्याज्यं होलाष्टकमिदं शुभे।।'–शीघ्रबोध

शेष पृष्ठ 98 पर देखें

चान्द्र परम्परा अनुसार प्रत्येक मास के मुख्य व्रत-त्यौहार

(व्रत-पर्वों के तिथि-निर्णय एवं संक्षिप्त विधि-विधान सहित)

[इस श्रृंखला के अन्तर्गत भारतीय सनातन वैदिक संस्कृति के अनुसार **'पंचांगदिवाकर'** के प्रत्येक शुक्ल/कृष्ण पक्ष में दिए जाने वाले मुख्य पर्व/व्रत/त्यौहारों का संक्षिप्त विवरण (शास्त्रोक्त तिथि निर्णय एवं करणीय कर्म) क्रमानुसार दिया जाएगा। आशा है, धर्मपरायण पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगा। इस वर्ष हम चैत्र मास में आने वाले मुख्य व्रत/पर्वों के बारे में ही चर्चा करेंगे।-**पं. विवेक शर्मा सुपुत्र स्वर्गीय पं. पन्ना लाल ज्योतिषी, अड्डा होशियारपुर, जालन्धर**]

व्रत-पर्वों की महिमा व नियम

किसी भी देश की सभ्यता और संस्कृति की महक वहाँ के लोगों द्वारा परम्परा से मनाए जाने वाले पर्व-त्यौहारों से अवश्य प्रतिभासित होती है। भारत देश धर्मप्राण देश रहा है। आध्यात्मिक ऊर्जा यहाँ के कण-कण में समाविष्ट है। यहाँ के व्रत-नियमों का सम्बन्ध अध्यात्मदर्शन, देवदर्शन और निरामयता से जुड़ा हुआ है। इसीलिए हमारे यहाँ व्रत-उपवासों की सुदीर्घ परम्परा सदा से चली आ रही है। वर्ष में कोई भी दिन ऐसा नहीं रहता जिस दिन कोई व्रत, उपवास, पूजन, हवन या पर्व न हो। हमारी संस्कृति की नींव इसी के आधार पर टिकी है।

व्रत को इहलोक तथा परलोक का उपकारी कहा गया है। शारीरिक आरोग्यलाभ तो व्रत का प्रत्यक्ष फल है। व्रत के द्वारा सर्वप्रथम अन्तः शुद्धि और विचार में शालीनता तथा सदाचार में शुद्धता के साथ ईश्वर-भक्ति, श्रद्धा आदि सद्भावों का अभ्युदय देखा जाता है।

व्रत तीन प्रकार के होते हैं-**कायिक, वाचिक और मानसिक।** कायिक व्रत में शास्त्रवर्जित हिंसा, कदाचार एवं कुत्सित दर्शन आदि का त्याग करना पड़ता है। वाचिक व्रत में कुवचन, निन्दा आदि का परित्याग करना पड़ता है। मानसिक व्रत में विषय-वासनाओं से दूर रहकर मन को सात्त्विक भावापन्न करना पड़ता है। इसी प्रकार, **नित्य, नैमित्तिक और काम्य** के भेद से व्रत तीन प्रकार के होते हैं। **जैसे**-एकादशी आदि व्रत, जिनके न करने से प्रत्यवाय (दोष) होता है, पतिव्रता नारी के लिए पातिव्रत्य व्रत, इन्हें-**'नित्यव्रत'** कहते हैं। **नैमित्तिक** व्रत वह है जो किसी निमित्त (हेतु) के लिए किया जाता है, **जैसे**-सुख-सौभाग्य, नैरुज्य आदि के लिए शिवरात्रि व्रत, सूर्य व्रत आदि। **'काम्य'** व्रत वह है जिसमें किसी वस्तु या विशेष की कामना संनिहित होती है। पति, पुत्रादि के लिए सौभाग्य, दीर्घायु आदि की भावना होती है। जैसे-वटसावित्री व्रत, जीवित्पुत्रिका व्रत आदि।

सनातन धर्म में किसी भी धार्मिक कृत्य के लिए संकल्प लेने का विधान है। संकल्प में कल्प से लेकर संवत्, अयन, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, ग्रह, नक्षत्रादि सबका उच्चारण आवश्यक माना गया है। यह परम्परा इस बात का द्योतक है कि भारत में अनादि काल से व्रत (संकल्प), पर्व और उत्सवों की अक्षुण्ण परम्परा चली आ रही है।

व्रतों का पर्वों और उत्सवों से अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है। व्रत (संकल्प) सभी पर्वों एवं महोत्सवों में प्राणशक्ति का प्रादुर्भाव करते हैं, जबकि सभी पर्व और उत्सव, उत्तम व्रतों को व्यावहारिक मूर्तस्वरूप प्रदान करते हैं। ये दिव्य व्रत, पर्व एवं उत्सव नास्तिक को आस्तिक, भोगी को योगी, स्वार्थी को परमार्थी, कृपण को उदार और नीरस जीवन को सरस बनाकर मानव को उसके चरम लक्ष्य की ओर अग्रसारित करते हैं।

व्रतों के सामान्य नियम-नित्य-नैमित्तिक अथवा काम्य व्रतों में क्षमा, सत्य, दया, दान, शौच, इन्द्रियनिग्रह, अहिंसा, संतोष एवं चोरी न करना, देवपूजा तथा हवन इत्यादि व्रतों के सामान्य नियम कहे गए हैं।

उपवास में बार-बार जल पीने से, एक बार भी ताम्बूल (पान) चबाने से, दिन में शयन करने से, अष्टविध मैथुन करने आदि से व्रत-भङ्ग हो जाता है। धर्मसिन्धुकार का मत है कि एक से अधिक बार जल न पीने से यदि प्राण संकट में हो तो दुबारा जल पीने में कोई दोष नहीं है। लेकिन क्रोध करने से, असत्य भाषण करने से, चोरी करने से, प्रतिग्रह से, इन्द्रियों के वशीभूत होने से, हिंसा करने से, दिन में सोने से, तैलमर्दन से, सुगन्धित उबटन लगाने से, गाय से भिन्न पशुओं का दूध ग्रहण करने से, मसूरान्न भक्षण से, व्रत-नियम के विरुद्ध आचरण होने से व्रत-भङ्ग हो जाता है। व्रत करके परान्न कृसरान्न, श्राद्धान्न आदि भक्षण करने से और क्षौरकर्म कराने से भी व्रत-भङ्ग हो जाता है।

इसी प्रकार व्रत, उपवासों तथा पर्वों के सम्बन्ध में अनेक, मूल नियम हैं जिनका विवरण आप हमारी पुस्तक **'भारतीय व्रत-त्यौहार एवं विधि-विधान'** में देख सकते हैं। यहाँ केवल व्रतों के सम्बन्ध में अंशमात्र जानकारी ही दी जा सकती है।

चैत्र शुक्ल पक्ष

चैत्र शुक्ल पक्ष का आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत महत्त्व है। इसमें नौ दिनों तक आद्याशक्ति भगवती का व्रत और श्रीदुर्गासप्तशती का पाठ करने से आध्यात्मिक, आधिभौतिक दोषों पर विजय प्राप्त करने में बड़ी सफलता मिलती है। निखिल ब्रह्माण्डाधीश्वरी माँ का पूजन होते ही विश्वपति भगवान श्रीराम की जन्मोत्सव नवमी

आ जाती है। सदा ही रामनवमी को श्रीरामचन्द्र जी का

"...स्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः।''

आ जाता है। सदा ही रामनवमी को श्रीरामचन्द्र जी को दिव्य मंगल भूमण्डल में अवतीर्ण होकर विघ्नों एवं दानवी शक्तियों का मर्दन करके सत्पुरुषों का संरक्षण करता है। रामनवमी का व्रत और राम-जन्मोत्सव, भगवान् का पूजन प्राणियों में निश्चित रूप से दिव्य शक्ति प्रदान करता है।

(1) नवसंवत्सर प्रारम्भ (संवत्सर प्रतिपदा)

(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा)

भारत की गौरवमयी सभ्यता एवं संस्कृति में **सम्वत्सर** का विशेष महत्त्व है। हिन्दुओं के प्रायः सभी शुभ **संस्कारों (विवाह-मुण्डनादि) एवं मन्त्र-जपादि अनुष्ठानों में संकल्पादि के समय सम्वत् के नाम का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है।** चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवीन सम्वत् का प्रारम्भ होता है। सतयुग का आरम्भ भी इसी दिन हुआ माना जाता है तथा ब्रह्मा जी ने सृष्टि का आरम्भ भी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को किया था। "**चैत्रे मासि जगद् ब्रह्मा संसर्ज प्रथमेऽहनि (ब्रह्मपुराण)।**" सम्भवतः इसी कारण **इसे स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त** माना जाता है। इस दिन किए गए जप-दानादि शुभ कर्मों के प्रभाव से वर्ष भर धन-सम्पदा एवं सुख-शान्ति बनी रहती है। इस तिथि का ऐतिहासिक महत्त्व भी है, इसी दिन सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने शकों पर विजय प्राप्त की थी और उसे चिरस्थायी बनाने के लिए विक्रमी संवत् का प्रारम्भ किया था।

नव सम्वत्सर के आगमन पर प्रातः तैलाभ्यंग, नित्यकर्मों से निपटकर आसन, पाद्य, अर्घ्य, वस्त्र, यज्ञोपवीत, गन्ध, अक्षत, पुष्प, धूप-दीप, ताम्बुल, नैवेद्य, फल आदि से देश-काल के उच्चारण के साथ निम्नलिखित संकल्प करना चाहिए-'**मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य स्वजनपरिजनसहितस्य वा आयुरारोग्यैश्वर्यादि सकल शुभफलोत्तरोत्तराभिवद्ध्यर्थं ब्रह्मादिसंवत्सर देवतानां पूजनमहं करिष्ये।**' सम्वत्सर पूजन एवं फल श्रवणादि, नवरात्र घट-स्थापन, मिट्टी के पात्र में रखी रेत-मिट्टी में जौं-गेहूँ आदि के बीज बोना, ओंकार सहित श्री गणेश, ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा-इन पंचदेवों तथा नवग्रहों की स्वयं अथवा किसी सुयोग्य ब्राह्मणों द्वारा पूजार्चना करवाकर उन्हें क्षीर सहित सात्त्विक भोजन करवाकर उनका '**पंचांगदिवाकर**' सहित यथाशक्ति अन्न, वस्त्र, फल एवं धनादि देकर सत्कार करना चाहिए।

पूजन के समय भगवान् ब्रह्मा एवं विष्णु की मूर्त्तियों के समक्ष पुष्पाक्षत, नैवेद्य, अर्घ्य गंगाजल आदि लेकर निम्न मन्त्र पढ़ें-

ॐ ब्रह्मणे नमः से ब्रह्मा जी का आवाहन, षोडशोपचार पूजन तथा बहुरूपाय विष्णवे परमात्मने नमः परमात्म-विष्णुमावाहयामि स्थापयामि च। फिर सम्वत्सर की मूर्त्ति अथवा प्रतीक रूप में सुपारी रखकर निम्नमन्त्रों से ब्रह्मा जी का पूजन एवं प्रार्थना करें-

भगवतस्त्वत्प्रसादेन वर्षं क्षेममिहास्तु मे। संवत्सरोपसर्गा मे विलयं यान्त्वशेषतः।

ॐ सम्वत्सराय नमः, चैत्राय नमः, वसन्ताय नमः आदि नाम-मन्त्रों से पूजन करके विद्वान् ब्राह्मण का पूजन-अर्चन करें। तथा क्षीर सहित भोजन करवाकर यथाशक्ति वस्त्र, फलों तथा नया पंचाँग दिवाकर आदि का दान करें।

तदुपरान्त स्वास्ती वाचन, शान्ति पाठ आदि मांगलिक मन्त्रों का पाठ करने के पश्चात् सूर्य देव को ताम्र बर्तन से मन्त्रपूर्वक तीन बार अर्घ्य देकर **गायत्री मन्त्र** का जाप करना चाहिए। तत्पश्चात् दिवाकर पंचाँग में किसी ब्राह्मण के श्री मुख से **सम्वत् का नाम**, सम्वत् **का वास**, सवारी, **राजा, मन्त्री आदि का फल श्रवण करना** चाहिए। चैत्र, प्रतिपदा से लेकर नवमी तक भगवान्-विष्णु, शिव एवं श्री दुर्गा के समक्ष नित्य ज्योति जलाकर श्रद्धानुसार श्री दुर्गासप्तशती का जप, पाठ करने का विधान है।

चैत्र प्रतिपदा से नवमी तक प्रतिदिन प्रातः कटु नीम की कोमल पत्तियाँ व पुष्पों का चूर्ण बनाकर, उसमें काली मिर्च, हींग, सेंधा नमक, ईमली, अजवायन, जीरा तथा शक्कर या चीनी बराबर मात्रा में मिलाकर चूर्ण बनाकर भगवान् को भोग लगाकर ग्रहण करने से वर्षभर आरोग्यता बनी रहती है तथा रक्त विकार, त्वचा, कुष्ठ आदि रोगों का भय नहीं रहता।

(2) वासन्त-नवरात्रारम्भ

(चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक)

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त (नौ दिन) नवरात्रे कहलाते हैं। इन नौ दिनों में आद्याशक्ति भगवती दुर्गा की विशेष आराधना की जाती है। आदिशक्ति के हर रूप की नवरात्रों के नौ दिनों में क्रमशः अलग-अलग पूजा की जाती है, जिससे माँ प्रसन्न होकर आशीर्वाद देती हैं। **नवानां रात्रीणां समाहारः नवरात्रम्** अर्थात् नौ रात्रियों के सम्मिश्रण का नाम नवरात्र है। श्रीदेवीभागवत् अनुसार संवत् (वर्ष) में चार नवरात्र होते हैं-

(1) चैत्र (वासन्त) नवरात्र, (2) आषाढ़ (गुप्त) नवरात्रे, (3) आश्विन (शारदीय) नवरात्रे, (4) माघ (गुप्त) नवरात्रे।

पूजा विधि-चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से पूजन प्रारम्भ होता है। यदि एक मुहूर्त्त भी प्रतिपदा मिले, तो उसमें पूजन करना चाहिए। यदि प्रतिपदा का क्षय हो जाए तो ही अमावस युक्ता प्रतिपदा में पूजन करने का शास्त्रनिर्देश है।

सर्वप्रथम स्वयं स्नानादि से पवित्र हो पूजा-स्थल को पवित्र कर लेना चाहिए। तत्पश्चात् प्रातः घटस्थापन (जलापूरित) करना चाहिए, (परन्तु चित्रा या वैधृति योग हो तो उस समय घटस्थापन न कर मध्याह्न के समय (अभिजित् मुहूर्त्त में) स्थापन करे। यह नवरात्रे व्रत स्त्री-पुरुष दोनों को करना चाहिए। यदि स्वयं न कर सके तो पति, पत्नी, पुत्र

या ब्राह्मण को प्रतिनिधि बनाकर व्रत पूर्ण कराया जा सकता है। इन नवरात्रों में श्रद्धानुसार अथवा सामर्थ्यानुसार कुछ लोग उपवास, अयाचित (बिना मांगे प्राप्त भोजन), नक्त (रात में भोजन करना) या एकभुक्त (एक बार भोजन करना) करते हैं।

यदि नवरात्रों में घटस्थापन के बाद सूतक (अशौच) हो जाए तो कोई दोष नहीं लगता, परन्तु पहले हो जाये तो पूजनादि स्वयं न करे। कलश के साथ ही दीवार या चौकी पर देवी की मूर्त्ति भी स्थापित करके उसके सामने बैठकर '**मम महामायाभगवती (वा मायाधिपति भगवत्) प्रीतये (आयुर्बलवित्तारोग्य समादरादिप्राप्तये वा) नवरात्रव्रतमहं करिष्ये।**' यह संकल्प करके षोडशोपचारपूर्वक पूजन स्वयं करें या ब्राह्मण द्वारा करवाएं। घटस्थापन के साथ ही एक मिट्टी या धातु के खुले मुख वाले पात्र में जौं और गेहूँ बोयें। साथ ही '**भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं**' आदि मन्त्रों से घी का दीपक भी जलाना चाहिए।

तदनन्तर '**श्रीदुर्गासप्तशती**' का सम्पुट या साधारण पाठ प्रतिदिन विधि एवं क्रमानुसार करना चाहिए। पाठ की पूर्णाहुति के दिन दशांश हवन अथवा पाठ एवं कन्या पूजन करना चाहिए।

कुमारी पूजन–कुमारी पूजन नवरात्र व्रत का अनिवार्य अङ्ग है। कुमारिकाएँ जगज्जननी जगदम्बा का प्रत्यक्ष विग्रह हैं। सामर्थ्य हो तो नौ दिन तक एक-एक को, अन्यथा नौवें दिन नौ, सात, पाँच, तीन या एक ही कन्या को देवी मानकर पूजा करके भोजन कराना चाहिए। इसमें ब्राह्मण कन्या को प्रशस्त माना गया है। कुमारियों को एक पंक्ति में बिठाकर पहले '**ॐ गं गणपतये नमः**' से गणेश जी का पञ्चोपचार पूजन करे, फिर '**ॐ वं वटुकाय नमः**' से वटुक का तथा '**ॐ कुमार्यै नमः**' से कुमारियों का पञ्चोपचार पूजन करें। इसके बाद पुष्पों से निम्न मन्त्र द्वारा कुमारियों की स्तुति करें–

मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणां रूपधारिणीम्। नवदुर्गात्मिकां साक्षात् कन्यामावाहयाम्यहम्।
जगत्पूज्ये जगद्वन्द्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणी। पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते।।

कुछ क्षेत्रों में अष्टमी या नवमी के दिन कड़ाही-पूजा की परम्परा है। कड़ाही में हलवा बनाकर उसे देवी जी की प्रतिमा के सम्मुख रखकर चमचे और कड़ाही में मौली बाँधकर '**ॐ अन्नपूर्णायै नमः**' इस नाम मन्त्र से कड़ाही का पञ्चोपचार पूजन कर, माँ को नैवेद्य लगाकर कुमारी बालिकाओं को भोजन कराकर उन्हें यथाशक्ति वस्त्राभूषण, दक्षिणादि देने का विधान है।

नवरात्रे व्यतीत होने के बाद दसवें दिन विसर्जन (पारण) करना चाहिए। विसर्जन से पूर्व भगवती दुर्गा का गन्ध, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन कर निम्न प्रार्थना करें–

रूपं देहि यशो देहि भाग्यं भगवति देहि मे।

महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनी।
आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहि देवि नमोऽस्तु ते।।

यहाँ पाठ-विधि अति संक्षेप से लिखी गई है। अधिक विस्तार से विधि जानने के लिए हमारे कार्यालय से छपी '**श्रीदुर्गा-सप्तशती**' **(संस्कृत-हिन्दी) अथवा केवल हिन्दी भाषा वाली मंगवाकर पढ़ें।**

महाशक्ति ही परब्रह्म परमात्मा है, जो विविध रूपों में विभिन्न लीलाएँ करती हैं। इन्हीं की शक्ति से ब्रह्मा विश्व की उत्पत्ति करते हैं। इन्हीं की शक्ति से श्री विष्णु सृष्टि का पालन करते हैं। अर्थात् यही सृजन, पालन और संहार करने वाली आद्या पराशक्ति है। सभी देवताओं की कारणभूता सनातनी होने के कारण वह सर्वदेवमयी है। वह विश्वरूपिणी है। वह दुखदारिद्र्या का शमन करने वाली, भवभीति से युक्त व्यक्ति का उद्धार करने वाली, सर्व मन्त्रों की मातृका, सर्व शब्दों की ज्ञानरूपिणी, चिन्मयी, परमानन्द स्वरूपा और समस्त दुराचारों की विध्वंसिका उस शक्ति को पदे-पदे नमस्कार करना चाहिए।

"तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्। नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।।"

(3) बालेन्दु व्रत

प्रदोषकालीन चैत्र शुक्ल द्वितीया को व्रत किया जाता है। इसमें सूर्यास्त के समय स्नान करके चावलों का बालेन्दु मण्डल बनाकर अथवा चन्द्रदर्शन के समय आकाशस्थ बालचन्द्र की गन्ध-पुष्पादि से पूजन करें। (**ॐ बालचन्द्रमसे नमः**)। इस प्रकार एक वर्ष तक प्रत्येक शुक्ल द्वितीया को करने से सुख और भाग्य की वृद्धि होती है। इसमें तेल से पके पदार्थ खाने की मनाही है।

(4) गौरी तृतीया व्रत (गोंतरी)

चैत्र, भाद्रपद और माघ मासों की शुक्ल पक्ष की तृतीयाएं को '**गौरी तृतीया व्रत**' किया जाता है। यह व्रत चतुर्थी विद्धा तृतीया तिथि में करने का शास्त्रनिर्देश है, क्योंकि गौरी तृतीया का गणेश जी की चतुर्थी तिथि से सम्पर्क का विशेष माहात्म्य है। द्वितीया का योग (सम्पर्क) निषिद्ध है–**द्वितीया-योगनिषेधस्य बलवत्त्वात्।।**

इस व्रत में सौभाग्यवती स्त्रियां प्रातः स्नान करके रंगीन वस्त्र धारण करके वेदी पर उमा-गौरी की मूर्त्ति स्थापन कर उनकी गन्ध-पुष्पादि से पूजार्चना करती हैं। भोजन में केवल एक बार दूध पिएं तो पति-पुत्रादि का अखण्ड सुख प्राप्त होता है। यह व्रत सौभाग्यवती महिलाओं के लिए पति का अनुराग उत्पन्न करने वाला तथा कुमारिकाओं

(5) श्रीमत्स्य जयन्ती

अपराह्न-व्यापिनी चैत्र शुक्ल तृतीया को मत्स्य जयन्ती मनायी जाती है-

'चैत्र शुक्ल तृतीयायामपराह्ले मत्स्योत्पत्तिः।। (धर्मसिन्धु)

यदि तृतीया तिथि दो दिन अपराह्न-काल को व्याप्त करे, तो यह जयन्ती दूसरे दिन मनाई जाएगी।

(6) श्री (लक्ष्मी) पंचमी

यह व्रत चैत्र शुक्ल पंचमी तिथि को किया जाता है। इसमें चतुर्थीविद्धा पंचमी तिथि ली जाती है। इसमें लक्ष्मी का पूजन और व्रत करके सुवर्ण के बने हुए कमल का दान करें तो सब प्रकार के दुःख दूर होते हैं।

(7) स्कन्द षष्ठी

पंचमी-विद्धा चैत्र शुक्ल षष्ठी को यह व्रत किया जाता है।

षष्ठी स्कन्द व्रते पूर्वविद्धा, अन्यव्रतेषु परविद्धैव।। पूर्वेद्युः षण्मुहूर्त्त-न्यूनपंचम्यां वेधे पूर्वापि।। (धर्मसिन्धु)

(8) अशोकाष्टमी

यह व्रत चैत्र शुक्ल अष्टमी को किया जाता है। इस दिन स्नानादि उपरान्त अशोक वृक्ष का पूजन करके उसके पुष्प अथवा कोमल पत्तों की आठ कलिकाएँ लेकर उनसे शिवजी का पूजन करे और **'त्वामशोक नमाम्येनं मधुमाससमुद्भवम्। शोकार्तः कलिकां प्राश्य मामशोकं सदा कुरु।।'** से आठ कलिकाएं भक्षण करके व्रत करे तो वह शोकरहित (दुखों से निवृत्त) रहता है। इस व्रत में बुधवार या पुनर्वसु नक्षत्र हो, तो विशेष प्रशस्त है।

(9) श्रीदुर्गाष्टमी व्रत

चैत्र शुक्ल अष्टमी को भवानी का प्रादुर्भाव हुआ था, अतः इस दिन अष्टमी का व्रत किया जाता है। धर्मसिन्धुकार अनुसार-**चैत्र शुक्लाष्टम्यां भवान्या उत्पत्तिः, तत्र नवमी-युता ग्राह्या।।**

परन्तु यदि दूसरे दिन अष्टमी तिथि तीन मुहूर्त्त (6 घड़ी) से कम हो तो उस स्थिति में पहले दिन सप्तमी विद्धा अष्टमी में ही व्रत कर लेना चाहिए। इसी प्रकार यदि अष्टमी तिथि का क्षय हो जाए तो भी सप्तमी युता में ही यह व्रत होगा।

(10) श्रीरामनवमी व्रत

शास्त्रानुसार यह व्रत पुनर्वसु नक्षत्र युक्त तथा मध्याह्न-व्यापिनी चैत्र शुक्ल नवमी में किया जाता है।

चैत्र शुक्ल नवमी रामनवमी। अस्यां मध्याह्नव्यापिन्यामुपोषण कार्यम्। पूर्वेद्युरेव मध्याह्ले सत्त्वे सैव ग्राह्या।। दिन द्वये मध्याह्नव्याप्तौ-अव्याप्तौ वा परा, अष्टमीविद्धाया निषेधात्।।

अर्थात् चैत्र शुक्ल नवमी रामनवमी है। इसे मध्याह्न-व्यापिनी ग्रहण करें। पहले दिन मध्याह्न में होय, तो वही ग्रहण करें। यदि नवमी दो दिन मध्याह्न में व्याप्त हो या दोनों दिन मध्याह्न में अव्याप्त हो, तो दूसरे दिन त्रिमुहूर्त्तव्यापिनी परविद्धा नवमी में यह व्रत ग्रहण करें क्योंकि अष्टमी विद्धा का निषेध कहा गया है। पुनः इसे पहले दिन सम्पूर्ण मध्याह्न-व्यापिनी नवमी को त्यागकर दूसरे दिन मध्याह्न-काल के कुछ एक चरण में व्याप्त नवमी वाले दिन ही यह व्रत ग्रहण किया जाता है-**''अतः पूर्वेद्युः सकलमध्याह्नव्यापिनीमपि त्यक्त्वा मध्याह्नैकदेश-व्यापिन्यपि परैव ग्राह्या।।**

अपरं च, यदि दूसरे दिन शुद्ध नवमी (सूर्योदय सहित) न मिलने पर अर्थात् क्षय होने पर अथवा तीन मुहूर्त्त से न्यून होने पर भी सभी अष्टमी से युक्त नवमी को उपवास करें।

शुद्धाया नवम्यां अलाभे मुहूर्त्तत्रय न्यूनत्वे वा सर्वेरप्यष्टमीविद्धैवोपोष्येत्याहुः।।

यद्यपि कुछ विद्वानों का मत है कि यदि नवमी दूसरे दिन तीन मुहूर्त्त मिले तो पहिले दिन अष्टमी विद्धा मध्याह्न-व्यापिनी नवमी को छोड़कर दूसरे दिन यह व्रत करना चाहिए। परन्तु इस मत को अधिक मान्यता प्राप्त नहीं है क्योंकि वामनपुराण में भी मध्याह्न-व्यापिनी नवमी को ही रामनवमी व्रत करने का निर्देश है।

श्रीरामनवमी यदि पुनर्वसु नक्षत्र युता तथा मध्याह्न-व्यापिनी हो, तो विशेष पुण्यप्रदा हो जाती है। जो मनुष्य रामनवमी का भक्ति और विश्वास के साथ व्रत करते हैं, उन्हें महान् फल मिलता है। प्रातः स्नानादि कर **'उपोष्य नवमी त्वद्य यामेष्वष्टसु राघव। तेन प्रीतो भव त्वं भो संसारात् त्राहि मां हरे।।'** इस मन्त्र से भगवान् के प्रति व्रत करने की भावना प्रकट करे और **'मम भगवत्प्रीतिकामनया (वा अमुक फलप्राप्ति कामनया) राम जयन्तीव्रतमहं करिष्ये'** यह संकल्प करके काम-क्रोध-लोभ-मोहादि से वर्जित होकर व्रत करें। तत्पश्चात् मन्दिर अथवा घर में ही राम-परिवार सहित मूर्त्ति की आवाहनादि सहित षोडशोपचार पूजन करे। उस दिन दिनभर भगवान् का भजन-स्मरण, स्तोत्रपाठ, दान-पुण्य, हवन, पितृश्राद्ध और उत्सव करें और दूसरे दिन दशमी को पारण करके व्रत का विसर्जन करें। ब्राह्मण भोजन भी करवाएं। मुमुक्षु जनों को चाहिए कि आत्मकल्याण के लिए सदा श्रीरामनवमी व्रत करें।

(11) कामदा एकादशी व्रत

चैत्र शुक्ल एकादशी कामदा एकादशी कहलाती है। इसदिन प्रातः स्नानादि करके **'ममाखिलपापक्षयपूर्वकपरमेश्वर प्रीतिकामनया कामदैकादशी व्रतं करिष्ये'** यह संकल्प करके दूसरे दिन पारण करे तो सब प्रकार के पाप दूर होते हैं। कथासार तथा विस्तृत विवेचन के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित **'एकादशी-माहात्म्य'** देखें।

(12) दोलोत्सव

चैत्र शुक्ल एकादशी को श्रीकृष्ण और राधा को दोलारूढ़ अर्थात् झूला झुलाया जाता है।

(13) दमनोत्सव

चैत्र शुक्ल द्वादशी के दिन विष्णु जी का दमनोत्सव करना चाहिए। यह एकादशी के पारणा वाले दिन एक घड़ी द्वादशी मिलने पर किया जाता है। यदि एक घड़ी भी द्वादशी न मिले, तो पवित्र दमन के अर्पण में त्रयोदशी ग्रहण करनी चाहिए। इसी प्रकार भगवान् शिव का दमनोत्सव चैत्र शुक्ल चतुर्दशी को करना चाहिए।

(14) अनङ्ग त्रयोदशी व्रत

चैत्र शुक्ल त्रयोदशी **'अनङ्गत्रयोदशी'** कहलाती है। इसमें पूर्वविद्धा त्रयोदशी ग्रहण की जाती है। यदि त्रयोदशी दो दिन व्याप्त हो, तो द्वादशी विद्धा त्रयोदशी ही व्रत हेतु ग्रहण की जाएगी।

इस दिन व्रत करने से दाम्पत्य-प्रेम में वृद्धि होती है तथा पति-पुत्रादि का अखण्ड सुख प्राप्त होता है। इस दिन कामदेव, रति और वसन्त की पूजा का विधान है। यह व्रत इस तिथि को प्रारम्भ करके वर्षभर प्रत्येक त्रयोदशी को किया जाता है। इस व्रत को स्त्री-पुरुष दोनों ही करते हैं। त्रयोदशी भगवान् शंकर जी की भी प्रिय तिथि है और भगवान् शंकर दाम्पत्य प्रेम के आदर्श माने जाते हैं। अतः इस दिन व्रत करने से दाम्पत्य प्रेम की अभिवृद्धि होती है। इस दिन घी से निर्मित मोदकों का नैवेद्य निम्नलिखित मन्त्र से लगाना चाहिए-

नमो रामाय कामाय कामदेवस्य मूर्तये।
ब्रह्मविष्णुशिवेन्द्राणां नमः क्षेमकराय वै।।

इसके बाद फलाहार या उपवास करके दूसरे दिन पारण करना चाहिए। ब्राह्मण भोजन कराकर अनङ्ग प्रतिमा या चित्र का पूजनसामग्री सहित दान करना चाहिए। महाराष्ट्र तथा बंगाल में इस व्रत का विशेष प्रचलन है।

इसी प्रकार चैत्र शुक्ल पक्ष में प्रदोष व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत, चैत्र-पूर्णिमा का व्रत किया जाता है। जिसका विधि-विधान अन्य पक्ष के व्रत-अनुसार ही होगा। इनका विशेष विवरण तथा वैशाख मास के व्रत-पर्वों का आगामी वर्ष के **'पंचांगदिवाकर'** में दिया जाएगा।

पृष्ठ 93 का शेष भाग

अन्य च, मुहूर्त्त-गणपति में **'होलाष्टक'** की समयावधि विवाहादि शुभ-कार्यों के लिए त्याज्य कहीं है-

'ऐरावत्यां विपाशायां शतद्रौ पुष्करत्रये।
होलिका प्राग्दिनान्यष्टौ विवाहादौ शुभे त्यजेत्।।'

परन्तु गण्डमूल शान्ति, जन्मदिन पूजा आदि नैमित्तिक कर्म हैं अर्थात् विशेष दोषशान्ति कृत्य हैं। इन्हें मंगलकृत्य न मानते हुए शान्ति कार्य मानना चाहिए। अतः इन्हें होलाष्टक में सम्पन्न किया जा सकता है।

(ii) मुहूर्त्त-गणपति के उपरोक्त वाक्य तथा मुहूर्त्तचिन्तामणि में भी होलाष्टक-दोष को केवल पंजाब में सतलुज नदी के तटीय स्थित नगरों (धवलपुर, लुधियाना, शिमला, फिरोज़पुर आदि) ; रावी के तट पर मुलतान, लाहौर, अमृतसर आदि तथा व्यास नदी के तटीय नगरों गुरदासपुर, होशियारपुर, काँगड़ा, मण्डी, कपूरथला एवं सुल्तान त्रिपुष्कर आदि में ही विशेष रूप से मान्य एवं दुष्ट-प्रभावोत्पादक माना है, अन्यत्र नहीं।

विपाशैरावतीतीरे शुतुद्र्याश्च त्रिपुष्करे।
विवाहादिशुभे नेष्टं होलिका प्राग्दिनाष्टकम्।। (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

नोट—ये तीनों नदियां पंजाब में हैं। ये नदियां पूर्व-पश्चिम धारा से सिन्ध नदी में मिलती हैं। त्रिपुष्कर क्षेत्र अजमेर में है।

अतएव, होलाष्टक का विचार पंजाब, हरियाणा, हिमाचल-प्रदेश, जम्मू एवं राजस्थान आदि क्षेत्रों में ही विशेष रूप से विचारणीय एवं शुभ कृत्यों के लिए त्याज्य माना गया है।

समस्या—माता–पिता, दादा–दादी आदि की मृत्यु के मास–पक्ष–तिथि में पृथक–पृथक श्राद्ध के दिन पिण्डदान, श्राद्ध करना शास्त्र–सम्मत् है या पितृपक्ष में ही उपरोक्त कार्य करना चाहिए ? –भुवनेश्वरदत्त शर्मा, लसहराणा, सन्धोल, मण्डी (हि.प्र.)

समाधान—माता-पिता की क्षयतिथि अर्थात् मृत्युतिथि पर (प्रथम वर्ष) सांवत्सरिक एकोद्दिष्ट श्राद्ध करना चाहिए। कुछ विद्वान (द्वितीय एवं तृतीय वर्ष छोड़कर) चतुर्थ (चार) वर्ष एकोद्दिष्ट श्राद्ध करने का शास्त्र-निर्देश का भी उल्लेख करते हैं। यथा-**यथा दिवोदासीये-संपिंडो करणादूर्ध्वे यावद्वर्षत्रयं भवेत्। तावदेव न भोक्तत्यं श्राद्धे हनि कदाचन्।** अतः ये आशौच श्राद्ध उसी मास की उसी तिथि में करना चाहिए, जिस तिथि में पितृगण की मृत्यु हुई है। तदुपरान्त प्रत्येक वर्ष आश्विन कृष्ण पक्ष (पितृ-पक्ष) में ही मृत्यु तिथि अनुसार श्राद्ध आदि कार्य करने चाहिए। वार्षिक श्राद्ध को मध्याह्नकाल (लगभग 10 बजकर 48 मिनट से 1 बजकर 12 मिनट तक) में करने की नियम है। ब्रह्मपुराण अनुसार-**पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धमराह्णे तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टं तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्।।**

अर्थात् पूर्वाह्न में अन्वष्टका श्राद्ध, अपराह्न में पितृश्राद्ध, मध्याह्न में एकोद्धिष्ट तथा प्रातः आभ्युदयिक (वृद्धि)-श्राद्ध करना चाहिए। पुनः, पति के रहते मृत नारी अथवा पति के साथ दाह से मृत नारी के श्राद्ध में ब्राह्मण के साथ सुवासिनी ब्राह्मणी को भी भोजन कराना चाहिए।

वि. संवत् २०७३, चैत्र शुक्ल पक्ष — शाकः १९३८ — तारीखें — सन् 2016 ई. (ता. 8 अप्रैल से 22 अप्रैल तक) ... वसन्त–ग्रीष्म ऋतुः — जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	करण	समाप्ति काल घं.	मि.	सौर शक	मुस्लि.	अप्रैल	प्रवि.
३१.२८	१	शुक्र	१७	१०	अश्वि	४२	५८	वैधृ	११	२०	बव	१७	१०	19	29	8	२६
३१.३३	२	शनि	८	००	भर.	३५	५८	विष्क प्रीति	०/५०	४०/३८	कौ	८	००	20	रज्ज	9	२७
००.००	३	शनि	५९	२३	००	००	००	००	००	००	०	०	०	०	०	0	०
३१.३८	४	रवि	५१	५३	कृति	२९	५८	आयु	४१	३०	व	२५	३८	21	2	10	२८
३१.४०	५	चंद्र	४५	४८	रोहि	२५	१०	सौभा	३३	२८	बव	१८	५१	22	3	11	२९
३१.४५	६	मंग	४१	२५	मृग.	२१	५८	शोभ	२६	४५	कौ	१३	३७	23	4	12	३०
३१.५०	७	बुध	३८	५८	आर्द्रा	२०	४०	अति	२१	३५	गर	१०	१२	24	5	13	वैश
३१.५३	८	गुरु	३८	३०	पुन.	२१	१८	सुक	१८	००	वि	८	४४	25	6	14	२
३२.००	९	शुक्र	३९	५८	पुष्य	२३	५०	धृति	१५	५८	बा	९	१४	26	7	15	३
३२.०५	१०	शनि	४३	८	श्ले.	२८	५	शूल	१५	२०	तै	११	३३	27	8	16	४
३२.०८	११	रवि	४७	४३	मघा	३३	४८	गंड	१५	५३	व	१५	२६	28	9	17	५
३२.१५	१२	चंद्र	५३	१५	पू.फा.	४०	३०	वृद्धि	१७	२०	बव	२०	२९	29	10	18	६
३२.१८	१३	मंग	५९	२८	उ.फा.	४७	५५	ध्रुव	१९	२८	कौ	२६	२२	30	11	19	७
३२.२०	१४	बुध	६०	००	हस्त	५५	३८	व्या.	२१	५५	गर	३२	४३	31	12	20	८
३२.२५	१४	गुरु	५	५८	चित्रा	६०	००	हर्ष	२४	३३	व	५	५८	वैश	13	21	९
३२.३०	१५	शुक्र	१२	२३	चित्रा	३	२५	वज्र	२७	३	बव	१२	२३	2	14	22	१०

ग्रह दर्शन– प्रातः शुक्र पूर्वक्षितिज में तथा मंग.–शनि पास–पास याम्योत्तर से पश्चिम की ओर होंगे। सायं बुध पश्चिमक्षितिज में तथा गुरु पूर्व में दिखाई देगा।

तिथि	चन्द्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	पर्व / व्रत	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	घट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
१	मेष	**'सौम्य' नाम वि. संवत् २०७३ प्रारम्भ, चैत्र** (वासन्त) **नवरात्रे शुरु (A)**	११	२४	३२	१०	6	12	18	47
२	वृ. ४९/२०	गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	११	२५	३१	०३	6	11	18	48
३	००	तृतीया तिथि का क्षय ०० ०० ०० ००	००	००	००	००	००	००	००	००
४	वृष	भ. २५/३८ से ५१/५३ तक, बुध भर. में ५/३८, दमनक चतुर्थी	११	२६	२९	५७	6	9	18	49
५	मि. ५३/१८	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग–पंचमी, स.सि.यो.	११	२७	२८	५०	6	8	18	49
६	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत,	११	२८	२७	४०	6	7	18	50
७	मिथुन	भ. ३८/५८ से, **सूर्य अश्वि (१) मेष में ३४/१३, वैशाख संक्रान्ति मु. ४५,(B)**	११	२९	२६	२७	6	6	18	51
८	क. ५/५५	भ. ८/४४ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी,** भवान्युत्पत्ति, शुक्र रेव. में २३/०५ **(C)**	०	००	२५	१३	6	5	18	51
९	कर्क	**श्रीरामनवमी, नवरात्रे समाप्त,** मेला मनसादेवी (पंचकूला) (हरि.)**(D)**	०	०१	२३	५५	6	4	18	52
१०	सिं. २८/५	वक्री गुरु पू.फा. (२) में ७/०८, नवरात्र–पारणा, गण्डमूल विचार	०	०२	२२	३६	6	3	18	53
११	सिंह	भ. १५/२६ से ४७/४३ तक, **कामदा एकादशी व्रत, मंगल वक्री (E)**	०	०३	२१	१२	6	2	18	53
१२	कं. ५७/२०	श्रीविष्णु दमनोत्सव, प्लूटो वक्री 8घं.-58मि.	०	०४	१९	४८	6	1	18	54
१३	कन्या	**भौम प्रदोष व्रत,** श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), **अनङ्ग त्रयोदशी, सूर्य(F)**	०	०५	१८	२३	6	00	18	55
१४	कन्या	बुध कृति में ५७/१८, श्रीशिव–दमनोत्सव, अगस्त्यास्त, स.सि.यो.	०	०६	१६	५४	5	59	18	55
१४	तु. २९/३३	भ. ५/५८ से ३९/११ तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, शक वैशाख प्रारम्भ	०	०७	१५	२५	5	58	18	56
१५	तुला	**चैत्र पूर्णिमा** (स्नानदानादि), श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण–भारत) **(G)**	०	०८	१३	५२	5	57	18	57

'सौम्य' नाम संवत्सर

(A) घटस्थापन (अभिजित मुहूर्त्त में) देखें पृ. 84, संवत्सरफल श्रवण, चन्द्रदर्शन, मु. ३०, ध्वजारोहण, तैलाभ्यङ्ग, **(B)** पुण्यकाल सं. दोपहर 13/23 बाद से, **अर्द्धकुम्भी पर्व-मुख्य स्नान (हरिद्वार)** (देखें पृ. 18), **वैशाखी (पं.)** **(C)** अशोकाष्टमी, **मेला बाहूफोर्ट (जम्मू)**–काँगड़ादेवी, नैनादेवी (हि.प्र.), अन्नपूर्णा-पूजन **(D)** गण्डमूल 15/36 से **(E)** २९/०८, दोलोत्सव, **(F)** सायन वृष में ३७/३३, ग्रीष्म ऋतु प्रा., **(G)** वैशाखस्नान प्रारम्भ,

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	२	७	०	४	११	७	४	१०
००	२८	१४	१९	२०	१६	२२	२६	२६
२३	२२	४४	१४	०९	०९	००	०१	०१
४७	५५	३७	३०	१७	४५	३०	००	००
58	776	2	79	4	74	1	3	3
45	58	9	47	27	2	56	11	11
अश्वि १	पुन ३	अनु ४	भर. २	पू.फा ३	उ.भा ४	ज्ये. २	पू.फा ४	पू.भा २
०	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

१ सू. बु. | २ | ३ चं. | ४ | ५ गु. रा. | ६ | ७ | ८ मं. श. | ९ | १० | ११ के. | १२ शु.

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 22 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	६	७	०	४	११	७	४	१०
०८	०५	१४	२७	१९	२६	२१	२५	२५
१२	४६	४१	२२	३८	०१	४२	३५	३५
४९	३३	३६	४०	२४	४३	३७	३४	३४
58	711	3	35	3	73	2	3	3
29	9	43	42	5	58	37	10	10
अश्वि ३	चित्रा ४	अनु ४	कृति १	पू.फा २	रेव ३	ज्ये. २	पू.फा ४	पू.भा २
०	मा	व	मा	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

१ सू. बु. | २ | ३ | ४ | ५ गु. रा. | ६ | ७ चं. | ८ मं. श. | ९ | १० | ११ के. | १२ शु.

चैत्र शुक्ल पक्षफल–

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा (8 अप्रैल, 2016 ई., शुक्रवार) से गुरुमान से शिव विंशति का **'सौम्य'** नामक नया **वि. संवत् २०७३** प्रारम्भ होगा। आगामी संवत्काल में व्रतानुष्ठान, यज्ञ, दानादि कार्यों के शुभ संकल्प में **'सौम्य'** नामक सम्वत् का ही प्रयोग होगा। नए संवत् का **राजा शुक्र** तथा **मन्त्री बुध** होगा। नव संवत्सर एवं राजा–मन्त्री के प्रभावस्वरूप आगामी वर्ष खाद्यान्न व अन्य मौसमी फलों का यथेष्ट उत्पादन होगा, लोगों में शीतकालीन (शीत–ऋतु में होने वाले) रोग अधिक होंगे। पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के उत्सवों, राग–रंगादि का प्रदर्शन होगा। लोगों में भोग–विलास व प्रदर्शन की प्रवृत्ति बढ़े। प्रत्येक क्षेत्र में स्त्रियों का प्रभाव बढ़ेगा। 'चैत्र शु. प्रतिपदा को नए संवत् का नाम, वास, सवारी आदि के फल का श्रवण किसी प्रतिष्ठित ब्राह्मण, गुरु या अग्रज (पिता/दादादि) के श्रीमुख द्वारा श्रवण करना शुभ होता है। चैत्र प्रतिपदा से नवमी पर्यन्त (ता. 8 से 15 अप्रै. तक) प्रतिदिन श्रीदुर्गा व श्रीगणेश प्रतिमा के सामने शुद्ध चित्त होकर मंत्रपूर्वक अग्रजों द्वारा कलश–स्थापन एवं ज्योति प्रज्वलन करना तथा श्रीदुर्गा सप्तशती के पाठारम्भ का विधान है। प्रतिपदा को ही प्रातः 10/44 के बाद अभिजित् मुहूर्त्त में घटस्थापन करके पंचदेव पूजनार्चना कर ब्राह्मणों को भोजन, वस्त्र, दान–दक्षिणा, पंचांग आदि देकर सम्मानित करना चाहिए। **वैशाख संक्रान्ति–13 अप्रैल, बुधवार** को सायं 7 बजकर 47 मिनट (19/47) पर पुनर्वसु नक्षत्र, सुकर्मा योग तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा कालीन तुला लग्न में प्रवेश करेगी। 45 मुहूर्त्ती इस संक्रान्ति का पुण्यकाल ता. 13 को दोपहर 13/23 से प्रारम्भ होगा। वारानुसार मन्दाकिनी तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह संक्रान्ति राजनेताओं एवं भ्रष्ट लोगों के लिए सुखकर होगी। ता. 13 अप्रैल, बुधवार को **अर्द्धकुम्भ पर्व (मुख्य स्नान) हरिद्वार में होगा।** (देखें पृष्ठ 18) **संक्रान्ति राशिफल–** धनु, मकर, मीन, मेष, मिथुन व कर्क राशि के जातकों को लाभप्रदायक रहेगी। **आकाश लक्षण–** संध्या के समय संक्रान्ति प्रवेश होने से उत्तर–भारत में अल्प व खण्ड–वर्षा के योग हैं। परन्तु कहीं आँधी/चक्रवात के कारण खडी फसलों को हानि पहुँचे।

वि. संवत् २०७३, वैशाख कृष्ण पक्ष शाक: १९३८ तारीखें

सन् 2016 ई. (ता. 23 अप्रैल से 6 मई तक) हिजरी सन् 1437 — भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

ग्रह दर्शन–28 अप्रै. से शुक्र पूर्व में अस्त हो जाएगा। प्रात: मंग.–शनि याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम में दिखेंगे। सायं बुध पश्चिमक्षितिज में तथा गुरु पूर्व में दिखेगा। ता. 1 मई से बु. पश्चिम में अदृश्य हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	वैशाख शक	रजब मु.	अप्रैल	वैशाख प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३२.३३	१	शनि	१८	३०	स्वा.	१०	५५	सिद्धि	२९	२०	कौ	१८	३०	3	15	23	११	तुला	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, स. सि. यो. 10/18 तक,	०	०९	१२	१८	5	56	18	57
३२.३८	२	रवि	२४	१०	विशा	१७	५८	व्य.	३१	१३	गर	२४	१०	4	16	24	१२	वृ. १/१५	भद्रा ५६/४२ से,	०	१०	१०	४२	5	55	18	58
३२.४५	३	चंद्र	२९	१३	अनु	२४	२८	वरी	३२	३८	वि	२९	१३	5	17	25	१३	वृश्चिक	भ. २९/१३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17), **शुक्र अश्वि(A)**	०	११	०९	०६	5	53	18	59
३२.४८	४	मंग	३३	१८	ज्ये.	३०	५	परि	३३	२०	बव	१	१६	6	18	26	१४	ध. ३०/०५	सती अनुसूया जयन्ती, गण्डमूल विचार	०	१२	०७	२६	5	52	18	59
३२.५३	५	बुध	३६	२३	मूल	३४	४०	शिव	३३	१३	कौ	४	५१	7	19	27	१५	धनु	सूर्य भर. में १४/४०, गण्डमूल 19घं.–43मिं. तक	०	१३	०५	४५	5	51	19	00
३२.५८	६	गुरु	३८	८	पू.षा.	३८	३	सिद्ध	३२	८	गर	७	१६	8	20	28	१६	म. ५३/३८	भ. ३८/०८ से, **बुध वक्री ४२/२०, शुक्र पूर्व में अस्त** ५५/१०,	०	१४	०४	०२	5	50	19	01
३२.५८	७	शुक्र	३८	२०	उ.षा.	३९	५५	साध्य	२९	५३	वि	८	१४	9	21	29	१७	मकर	भद्रा ८/१४ तक,	०	१५	०२	१९	5	50	19	01
३३.०३	८	शनि	३७	००	श्रव.	४०	१५	शुभ	२६	२३	बा	७	४०	10	22	30	१८	मकर	स. सि. यो. 21घं.–55मिं. तक	०	१६	००	३३	5	49	19	02
३३.०८	९	रवि	३३	५८	धनि	३८	५५	शुक्ल	२१	३०	तै	५	२९	11	23	मई	१९	कुं. ९/४८	**पंचक प्रा. ९/४८**, वक्री बुध पश्चिम में अस्त १६/१३, मई मास प्रा.	०	१६	५८	४६	5	48	19	03
३३.१०	१०	चंद्र	२९	१५	शत	३५	५५	ब्रह्म	१५	२०	व	१	३७	12	24	2	२०	कुम्भ	भद्रा १/३७ से २९/१५ तक	०	१७	५६	५८	5	47	19	03
३३.१५	११	मंग	२३	००	पू.भा.	३१	२५	ऐन्द्र/वैधृ	७/५१	५०/१०	बा	२३	००	13	25	3	२१	मी. १७/४०	**वरूथिनी एकादशी व्रथ**, श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	०	१८	५५	०७	5	46	19	04
३३.२०	१२	बुध	१५	२८	उ.भा.	२५	४०	विष्क	४९	३८	तै	१५	२८	14	26	4	२२	मीन	प्रदोष व्रत, गण्डमूल 16घं.–01मिं. से प्रारम्भ,	०	१९	५३	१६	5	45	19	05
३३.२३	१३	गुरु	६	५३	रेव	१८	५५	प्रीति	३९	२५	व	६	५३	15	27	5	२३	मे. १८/५५	भ. ६/५३ से ३२/१६ तक, **पंचक समाप्त १८/५५**, मासशिवरात्रि **(B)**	०	२०	५१	२३	5	44	19	05
००.००	१४	गुरु	५७	३८	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३३.२८	३०	शुक्र	४८	१३	अश्वि	११	४०	आयु	२८	५३	च	२२	५६	16	28	6	२४	मेष	**वैशाख अमावस** (स्नानदानादि), शुक्र भर. में २/१५, **(C)**	०	२१	४९	२९	5	43	19	06

शुक्र अस्त 28 अप्रैल

(A) (१) मेष में १२/२३ (10घं.–50मिं.), शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ ५४/५३, गण्डमूल 15/40 बाद से, **(B)** व्रत, गण्डमूल विचार **(C)** गण्डमूल 10/23 तक, मेला पिंजौर (कालकाजी-हरियाणा)

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 30 अप्रैल

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	९	७	०	४	०	७	४	१०
१५	१४	१३	२९	१९	०५	२१	२५	२५
५९	१३	५०	२६	१८	५३	१९	१०	१०
५०	२१	३४	४३	३९	११	३२	०९	०९
58	803	9	9	1	73	3	3	3
15	10	46	19	40	54	12	11	11
भर. १	श्रव. २	अनु. ४	कृति. १	पूफा. २	अश्वि. २	ज्ये. २	पूफा. ४	पूभा. २
०	मा	व	व	व	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

१: सू. बु. शु.; २; ३; ४; ५: गु. रा.; ६; ७; ८: मं. श.; ९; १०: चं.; ११: के.; १२

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 6 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	०	७	०	४	०	७	४	१०
२१	१०	१२	२७	१९	१३	२०	२४	२४
४९	१४	४०	२५	११	१६	५९	५१	५१
००	३२	४१	२३	२५	३२	१५	०४	०४
58	913	14	32	0	73	3	3	3
6	3	8	19	34	53	36	10	10
कृति. १	अश्वि. ४	अनु. ३	ज्ये. ४	पूफा. २	अश्वि. ४	ज्ये. २	पूफा. ४	पूभा. २
०	मा	व	व	व	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस्या, प्रात: 5:30

१: सू. चं. बु. शु.; २; ३; ४; ५: गु. रा.; ६; ७; ८: मं. श.; ९; १०; ११: के.; १२

वैशाख कृष्ण पक्षफल–

वैशाख मास (चैत्र पूर्णिमा से वैशाख पूर्णिमा पर्यन्त) प्रतिदिन प्रात: सूर्योदय से पूर्व किसी तीर्थस्थान, नदी या कुआं, बावली, तालाब अथवा अपने निवास पर ही गंगाजलादि मिश्रित पवित्र जल से स्नान करके भगवान् लक्ष्मी नारायण की पूजार्चन करके नित्य **श्रीविष्णु सहस्त्रनाम, वैशाख माहात्म्य** तथा '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' आदि नाम मन्त्रों का जप करना चाहिए। वैशाख पूर्णिमा को ब्राह्मणों को यथाशक्ति वस्त्र, ऋतुफल, वस्त्रादि का दान देने तथा भगवान् विष्णु की विधिपूर्वक पूजा करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। **ग्रह-गोचर**–वृश्चिक राशि में मंगल-शनि एवं सिंह राशि में गुरु-राहु योग बना हुआ है। गुरु-शुक्र के मध्य दृष्टि सम्बन्ध भी है। फलस्वरूप सर्वप्रकार के अनाज-गेहूँ, धान्य, चावल, चने, सर्वप्रकार की दालें तेज़ भाव होंगी। राजनेताओं एवं प्रशासक-वर्ग में भय एवं उथल-पुथल होगी। मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन आदि फल घटित होंगे। ता. 25 अप्रै. को शुक्र मेष राशि में आकर सूर्य एवं बुध के साथ मेल करेगा। जिससे गेहूँ आदि अनाज, सोना, चाँदी, गुड़, शक्कर, खाण्ड में विशेष तेजी हो–दैत्यगुरु **यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता। महिषी पशुपीडा च मेघवर्षाभविष्यति।।** षष्ठी तिथि से शुक्र इसी राशि में अस्त होने से सर्वप्रकार के अनाजों में विशेष तेजी तथा चाँदी आदि धातुओं, घी, रूई में अचानक मन्दी का वातावरण बनेगा। गाय, भैंसादि, चौपायों के भाव तेज होंगे। **चान्द्र वैशाख मास में पाँच शनिवार** होने से कहीं भूकम्प, बादल-विस्फोट, यानादि दुर्घटना अथवा अग्निकाण्ड, तूफान आदि प्राकृतिक प्रकोपों से भारी जन-धन हानि होने का भय है। भारत-पाक तथा अन्य मुस्लिम देशों में आतंकवादी, विस्फोटक एवं हिंसक घटनाओं से भारी रक्तपात एवं जन-धन की क्षति होने का भय है। लोगों में क्लिष्ट रोगों का भी भय रहे। कुछ पूर्वी प्रदेशों में सत्ता-परिवर्तन, उपद्रव व टकराव के हालात पैदा होंगे। **आकाश लक्षण**–वायु वेग के साथ अल्प वर्षा की सम्भावना है।

भा.स्टैं.टा.

वि. संवद् २०७३, वैशाख शुक्ल पक्ष शाकः १९३८ सन् 2016 ई. (ता. 7 से 21 मई तक) हिजरी सन् 1437

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रहदर्शन—प्रातः मंग.-शनि पश्चिम में दिखाई देंगे। ता. 17 मई से बुध पूर्वी क्षितिज में दृश्य हो जाएगा। सायं गुरु याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में होगा। शुक्र अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	अंग्रेज़ी	मुस्लिम	मई	बंगाली	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै.रा.	सू.अ.	स्प.क.	ष्ट.वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३३.३३	१	शनि	३८	५८	भर. कृति	४ ५७	१८ १५	सौभा	१८	२५	किं	१३	३६	17	29	7	२५	वृ. १७/२८	वैशाख शुक्ल पक्षारम्भ, वक्री बुध भर. (4) में २२/२०, श्रीटैगोर जयंती	०	२२	४७	३३	5	42	19	07
३३.३५	२	रवि	३०	२५	रोहि	५१	५	शोभ अति	८ ५९	२३ ३	बा	४	४२	18	30	8	२६	वृष	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, **भगवान् श्रीपरशुराम जयन्ती**, श्रीशिवाजी जयन्ती	०	२३	४५	३८	5	41	19	07
३३.३८	३	चंद्र	२३	००	मृग	४६	१०	सुक	५०	५३	गर	२३	००	19	शव्व	9	२७	मि. १८/२५	भ. ५०/०३ से, **अक्षय तृतीया, गुरु मार्गी 17घं.-39मिं.**, शब्बान **(A)**	०	२४	४३	३८	5	41	19	08
३३.४३	४	मंग	१७	५	आर्द्रा	४३	३	धृति	४४	१०	वि	१७	५	20	2	10	२८	मिथुन	भद्रा १७/०५ तक,	०	२५	४१	३७	5	40	19	09
३३.४५	५	बुध	१३	५	पुन	४१	५०	शूल	३९	३	बा	१३	५	21	3	11	२९	क. २६/५८	सूर्य कृति. में ०/२५, **आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**	०	२६	३९	३३	5	39	19	09
३३.५०	६	गुरु	११	१०	पुष्य	४२	४८	गंड	३५	४०	तै	११	१०	22	4	12	३०	कर्क	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, श्रीगङ्गा-जयन्ती (मध्याह्न व्या.) (देखें पृ. 84) **(B)**	०	२७	३७	३१	5	38	19	10
३३.५३	७	शुक्र	११	२३	अश्ले	४५	४५	वृद्धि	३३	५८	व	११	२३	23	5	13	३१	सिं. ४५/४५	भ. ११/२३ से ४२/३२ तक, गण्डमूल विचार	०	२८	३५	२५	5	38	19	11
३३.५८	८	शनि	१३	४०	मघा	५०	४०	ध्रुव	३३	४८	बव	१३	४०	24	6	14	ज्ये	सिंह	**सूर्य वृष में २७/४०, ज्येष्ठ संक्रान्ति**, मु ३०, पुण्यकाल सं. प्रातः**(C)**	०	२९	३३	२६	5	37	19	12
३४.००	९	रवि	१७	४५	पू.फा.	५७	००	व्या.	३४	५५	कौ	१७	४५	25	7	15	२	सिंह		१	००	३१	०८	5	36	19	12
३४.०३	१०	चंद्र	२३	५	उ.फा.	६०	००	हर्ष	३६	५५	गर	२३	५	26	8	16	३	कं. १३/४५	भ. ५६/१२ से, शुक्र कृति. में ५२/४३,	१	०१	२८	५६	5	36	19	13
३४.०७	११	मंग	२९	१८	उ.फा.	४	२०	वज्र	३९	२८	वि	२९	१८	27	9	17	४	कन्या	भ. २९/१८ तक, **मोहिनी एकादशी व्रत**, वक्री बुध पूर्व में उदय ४१/५०	१	०२	२६	४३	5	35	19	13
३४.०८	१२	बुध	३५	४३	हस्त	१२	५	सिद्धि	४२	१०	बव	२	३१	28	10	18	५	तु. ४६/००	स.सि.यो. 10घं.-25मिं. तक,	१	०३	२४	२७	5	35	19	14
३४.१३	१३	गुरु	४२	३	चित्रा	१९	५३	व्य.	४४	४५	कौ	८	५३	29	11	19	६	तुला	प्रदोष व्रत, **शुक्र वृष में ३५/२८ (19घं.-45मिं.)**	१	०४	२२	१२	5	34	19	15
३४.१५	१४	शुक्र	४७	५३	स्वा	२७	१८	वरी	४६	५८	गर	१४	५८	30	12	20	७	तुला	भ. ४७/५३ से, **श्रीनृसिंह जयन्ती**, सूर्य सायन मिथुन में ३६/२५	१	०५	१९	५४	5	33	19	15
३४.१८	१५	शनि	५२	५८	विशा	३४	३	परी	४८	३८	वि	२०	२६	31	13	21	८	वृ. १७/२५	भ. २०/२६ तक, **वैशाख पूर्णिमा, कुम्भ-महापर्व (उज्जैन), (E)**	१	०६	१७	३४	5	33	19	16

(A) (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ, टैगोर जयन्ती (मतान्तरे), मातंगी जयन्ती, **(B)** गण्डमूल, **गुरुपुष्य योग** **(C)** 10/17 बाद, **जानकी (सीता) नवमी** (देखें पृ. 84), **श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीबगुलामुखी जयन्ती,** गण्डमूल 25घं.-53मिं. तक **(E)** **(मुख्य शाही स्नान)** (देखें पृ. 18), **श्रीबुद्ध-जयन्ती**, व. शनि ज्ये. (1) में ०/२३, श्रीकूर्म जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत, (देखें पृ. 14-17), वैशाखस्नान समाप्त, श्रीछिन्नमस्तिका जयन्ती

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
०	४	७	०	४	०	७	४	१०
२९	०२	१०	२२	१९	२३	२०	२४	२४
३३	५३	३०	४५	१२	०७	२८	२५	२५
०२	३७	४२	५३	०६	१७	५६	३९	३९
57 52	736 51	18 37	30 51	0 54	73 49	4 1	3 11	3 11
कृति ५	मघा १	अनु ३	भर. ३	पूफा २	भर. ३	उभा. २	पूफा ४	पूभा २
०	मा	व	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

२ | १ सू. बु. शु. | १२ | ११ के. | ३ | ४ | १० | ५ चं.गु. रा | ६ | ७ | ८ मं. श. | ९

शनौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	६	७	०	४	१	७	४	१०
०६	२६	०८	२०	१९	०१	२०	२४	२४
१७	२९	१२	२०	२२	४३	००	०३	०३
३२	४०	५१	३६	१२	४५	०२	२३	२३
57 41	722 32	20 46	4 43	2 9	73 46	4 15	3 10	3 10
कृति ३	चित्रा २	अनु. २	भर. ३	पूफा २	कृति २	उभा. २	पूफा ४	पूभा २
०	मा	व	व	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

३ | २ सू. शु. | १ बु. | १२ | ४ | ५ गु. रा. | ११ के. | ६ | ८ मं. श. | १० | ७ चं. | ९

वैशाख शुक्ल पक्षफल–

भविष्यपुराण अनुसार भगवान् के अंशावतार **श्रीपरशुराम** का जन्म **वैशाख शुक्ल तृतीया** तिथि को रात्रि के प्रथम प्रहर (प्रदोषकाल) में हुआ था। तदनुसार 8 मई, रविवार को सूर्यास्त के पश्चात् सायं 19घं.-07मिं. के बाद भगवान् परशुराम का जन्मोत्सव मनाना शुभ होगा। **अक्षय तृतीया पर्व (9 मई)** को देवताओं व पितरों की संतुष्टि हेतु तीर्थस्थान, श्रीविष्णु पूजन, श्रीविष्णुसहस्रनाम का पाठ, ब्राह्मण भोजन, जलपूरित कलश, पंखा, चरणपादुका, छाता, वस्त्र, अन्न, गाय, फलों, मिष्ठान्नादि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। यह **'स्वयं सिद्ध मुहूर्त्त'** तिथि कहलाती है। कल्पभेद से त्रेतायुग का प्रारम्भ इसी तिथि से हुआ था। **श्रीगङ्गा जयन्ती** (12 मई) को श्रीगङ्गा जी का पृथ्वी पर अवतरण मध्याह्न काले हुआ था। इस पक्ष एवं तिथि में हरिद्वार में गंगास्नान एवं पुष्पाक्षत व दीपादि द्वारा गङ्गापूजन, जप-पाठ एवं अन्न, वस्त्र, फलादि दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। ता. 14 मई को रात्रिव्यापिनी नवमी तिथि को शक्तिरूपा बगुलामुखी माता की पूजार्चन करने से ऋण, रोग एवं शत्रुभय नहीं होता। **ज्येष्ठ संक्रान्ति**– 14 मई, शनिवार को सायं 4 बजकर 41 मिनट पर (16/41) मघा नक्षत्राकालीन कन्या लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्त्ति इस सं. के स्नानदान, जपादि का पुण्यकाल प्रातः 10/17 के बाद शुरु होगा। नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह संक्रान्ति नीच व दुष्ट लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। **लोक-भविष्य**–शनिवार को संक्रां. प्रवेश होने से पृथ्वी पर राजाओं (प्रशासकों) के मध्य टकराव तथा लोगों में भी परस्पर विग्रह एवं विरोध अधिक रहे। लोगों में क्लिष्ट रोगों का प्रसार हो। **राशिफल**–कन्या, धनु, मकर, मीन, वृष, कर्क राशि के जातकों के लिए इस संक्रान्ति का फल लाभप्रद रहेगा। वै. शु. ३ या १० को वर्षा होना भविष्य में अच्छी फसल व सुभिक्ष के संकेत हैं।

आकाश लक्षण–उत्तरी भारत के अनेक भागों में गर्म लू व तेज़ आँधियां चलने के योग हैं। वै. शु. ३ या १० को वर्षा होना भविष्य में अच्छी फसल व सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७३, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष शाक: १९३८

सन् 2016 ई. (ता. 22 मई से 5 जून तक) हिजरी सन् 1437

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः मंग.–शनि पश्चिम में दिखेंगे, बुध पूर्वक्षितिज में होगा। सायं गुरु खमध्यासन्न होगा। शुक्र अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मि.	योग	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मि.	करण	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मि.	तारीखें ज्ये. शक	तारीखें प्रविष्टे	तारीखें मई	तारीखें हि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
३४.२३	१	रवि	५७	१८	अनु.	४०	५	शिव	४९	४०	बा	२५	८	ज्ये.	14	22	९	वृश्चिक	बुध मार्गी ३३/१० ($18^{घं.}$–$48^{मि.}$), शक ज्येष्ठ प्रारम्भ,	१	०७	१५	१५	5	32	19	17
३४.२३	२	चंद्र	६०	००	ज्ये.	४५	१३	सिद्ध	५०	००	तै	२८	५१	2	15	23	१०	ध. ४५/१३	श्रीनारद जयन्ती, वीणादान, गण्डमूल	१	०८	१२	५४	5	32	19	17
३४.२८	२	मंग	०	४३	मूल	४९	३०	साध्य	४९	३८	गर	०	४३	3	16	24	११	धनु	भद्रा ३१/५६ से, सूर्य रोहि. में ५१/३०, गण्डमूल $25^{मि.}$–$19^{मि.}$ तक	१	०९	१०	३१	5	31	19	18
३४.३०	३	बुध	३	८	पू.षा.	५२	४८	शुभ	४८	३०	वि	३	८	4	17	25	१२	धनु	भ. ३/०८ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17)	१	१०	०८	०८	5	31	19	19
३४.३०	४	गुरु	४	३३	उ.षा.	५५	३	शुक्ल	४६	३०	बा	४	३३	5	18	26	१३	म. ८/२८	शुक्र अस्त है।	१	११	०५	४३	5	31	19	19
३४.३५	५	शुक्र	४	५५	श्रव.	५६	१३	ब्रह्म	४३	४०	तै	४	५५	6	19	27	१४	मकर	शुक्र रोहि. में ४३/४५, स. सि. योग	१	१२	०३	१८	5	30	19	20
३४.३५	६	शनि	४	८	धनि	५६	५	ऐन्द्र	३९	५०	व	४	८	7	20	28	१५	कुं. २६/१८	भद्रा ४/०८ से ३३/०७ तक, **पंचक प्रारम्भ** २६/१८ ($16^{घं.}$–$01^{मि.}$)	१	१३	००	५२	5	30	19	20
३४.४०	७	रवि	२	५	शत	५४	४३	वैधृ	३४	५८	बव	२	५	8	21	29	१६	कुम्भ		१	१३	५८	२३	5	29	19	21
००.००	८	रवि	५८	४०	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**अष्टमी तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३४.४२	९	चंद्र	५३	५८	पू.भा.	५२	००	विष्क	२८	५८	तै	२६	१९	9	22	30	१७	मी. ३७/४८		१	१४	५५	५६	5	29	19	22
३४.४३	१०	मंग	४७	५८	उ.भा.	४८	००	प्रीति	२१	५५	व	२०	५८	10	23	31	१८	मीन	भ. २०/५८ से ४७/५८ तक, गण्डमूल $24^{घं.}$–$41^{मि.}$ से, स. सि. यो.	१	१५	५३	२७	5	29	19	22
३४.४५	११	बुध	४०	५३	रेव	४२	५५	आयु	१३	५५	बव	१४	२६	11	24	जून	१९	मे. ४२/५५	**पंचक समाप्त ४२/५५, अपरा एकादशी व्रत,** भद्रकाली एकादशी **(A)**	१	१६	५०	५७	5	29	19	23
३४.४८	१२	गुरु	३३	००	अश्वि	३७	००	सौभा/शोभ	५/५५	८/४०	कौ	६	५७	12	25	2	२०	मेष	प्रदोष व्रत, गुरु पू.फा. (३) में ११/०३, गण्डमूल $20^{घं.}$–$16^{मि.}$ तक,	१	१७	४८	२७	5	28	19	23
३४.५०	१३	शुक्र	२४	३३	भर	३०	३५	अति	४५	५८	व	२४	३३	13	26	3	२१	वृ. ४३/५५	भ. २४/३३ से ५०/१४ तक, राहु पू.फा. (३) केतु पू.भा. (१) में **(B)**	१	१८	४५	५७	5	28	19	24
३४.५०	१४	शनि	१५	५५	कृति	२४	३	सुक	३६	१३	श	१५	५५	14	27	4	२२	वृष	**शनैश्चर जयन्ती,** अमावस (पितृकार्येषु), **वटसावित्री व्रत (C)**	१	१९	४३	२५	5	28	19	24
३४.५३	३०	रवि	७	३५	रोहि	१७	५०	धृति	२६	५३	ना	७	३५	15	28	5	२३	मि. ४५/००	**ज्येष्ठ अमावस,** भावुका अमावस, श्रीगङ्गा-स्नान प्रारम्भ, **(D)**	१	२०	४०	५३	5	28	19	25

(A) -कपूरथला (पंजाब), जून मास प्रारम्भ, **(B)** ३८/५०, मासशिवरात्रि व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ **(C)** (अमावस पक्ष), वक्री मंगल विशा. (४) में १६/२८, बुध कृति. में ५३/४३, **(D)** करवीर व्रत, ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा 8/30 बाद से

रवौ सप्तभ्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 29 मई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१०	७	०	४	१	७	४	१०
१३	०७	०५	२१	१९	११	१९	२३	२३
५८	३३	२५	४८	४४	३३	२५	३७	३७
२८	००	११	२२	१४	४४	१९	५७	५७
57	820	20	30	3	73	4	3	3
33	44	41	41	30	45	26	10	10
रोहि २	शत १	अनु १	भर ३	पूफा २	रोहि १	ज्ये. १	पूफा ४	पूभा २
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. सप्तमी, प्रात: 5:30

भाव	राशि	ग्रह
1	२	सू. शु.
2	३	
3	४	
4	५	गु. रा.
5	६	
6	७	
7	८	मं. श.
8	९	
9	१०	
10	११	चं. के.
11	१२	
12	१	बु.

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 5 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	१	७	०	४	१	७	४	१०
२०	१८	०३	२६	२०	२०	१८	२३	२३
४१	५७	०६	४५	१२	०९	५४	१५	१५
००	१३	२२	४४	१३	५४	१३	४२	४२
57	883	18	57	4	73	4	3	3
27	32	16	20	38	44	27	11	11
रोहि ४	रोहि ३	विशा ४	कृति १	पूफा ३	रोहि ४	ज्ये. १	पूफा ३	पूभा १
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

भाव	राशि	ग्रह
1	२	सू. चं. शु.
2	३	
3	४	
4	५	गु. रा.
5	६	
6	७	
7	८	मं. श.
8	९	
9	१०	
10	११	के.
11	१२	
12	१	बु.

ज्येष्ठ कृष्ण पक्षफल–

ज्येष्ठ मास में संक्रान्ति, एकादशी, अष्टमी, गंगा-दशहरा, आदि पर्वों पर श्रद्धापूर्वक व्रत रखकर जलापूरित घड़ा (पात्र), गेहूँ, चावल, सत्तु आदि अनाज, दूध, चीनी, वस्त्र, छाता, पंखा, आम्र, खरबूजे आदि मौसमी फल एवं अन्य ग्रीष्मोपयोगी वस्तुओं के दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। इस मास में जितेन्द्रिय रहकर, अल्पाहार करते हुए सादा एवं सात्विक भोजन करना चाहिए। '**ॐ नमो भगवते वासुदेवाय**' मन्त्र का जाप एवं श्रीविष्णु सहस्रनाम, नारायण कवच आदि स्तोत्रों का पाठ करने से धन-सम्पत्ति, विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य आदि की प्राप्ति होती है। ता. 4 जून को चतुर्दशी विद्धा अमावस के दिन वैधव्य दोष की शान्ति हेतु स्त्रियों को **वटसावित्री का व्रत** रखना कल्याणकारी होता है। "**मम वैधव्यादि सकलदोष परिहारार्थं ब्रह्मसावित्री प्रीत्यर्थं सत्यवत्सावित्री प्रीत्यर्थं च वटसावित्री व्रतमहं करिष्ये।।**" यह संकल्प करके त्र्योदशी से अमावस्या तक सामर्थ्यानुसार उपवास करके प्रतिपदा को समाप्त करे। किसी कन्या की जन्मकुण्डली में यदि वैधव्य योग या विवाहारिष्ट योग पड़ा हो, उसे भी यह व्रत (विधिपूर्वक) रखवाया जा सकता है। **लोक-भविष्य**– पक्ष में सूर्य-शुक्र ग्रहों का मंग.-शनि के साथ समसप्तक दृष्टि सम्बन्ध (ता. 13 जून तक) रहने से उ.प्र., म.प्र., बिहार, असम तथा जम्मू-कश्मीर के पश्चिमोत्तर भाग में हिंसा, राजनीतिक टकराव, उपद्रव, साम्प्रदायिक हिंसा एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं। ज्येष्ठ अमावस का शनिवार को भी योग होने से कई स्थानों पर पेयजल, अनाज आदि की कमी होने से दुर्भिक्ष जैसी स्थिति बनेगी। आम लोगों में महंगाई, रोग, शोक एवं कष्टों की वृद्धि होगी। बहुत नजदीकी रिश्तेदार भी परायों जैसा व्यवहार करेंगे। चांद्र ज्येष्ठ में पाँच रविवार एवं पाँच सोमवार होने से भी शुभाशुभ दोनों प्रकार के फल घटित होंगे। कुछ प्रदेशों में सत्ता-परिवर्तन, कहीं उपद्रव तथा कहीं धन-धान्य, कृषि उत्पादन तथा सुख-साधनों में वृद्धि होगी। आकाश लक्षण–उत्तर भारत

वि. संवत् २०७३, ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष शाक : १९३८ — सन् 2016 ई. (ता. 6 जून से 20 जून तक) हिजरी सन् 1437

सूर्य उत्तरायण, उत्तर गोल, ग्रीष्म ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	तारीखें राष्ट्रीय	तारीखें मुस्लिम	तारीखें जून	तारीखें सौर प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
००.००	१	रवि	५९	५५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
३४.५३	२	चंद्र	५३	२५	मृग	१२	२५	शूल	१८	१५	बा	२६	४०	16	29	6	२४	मिथुन
३४.५८	३	मंग	४८	२८	आर्द्रा	८	१८	गंड	१०	४३	तै	२०	५७	17	रम	7	२५	क. ५१/१३
३४.५८	४	बुध	४५	२३	पुन.	५	४५	वृद्धि ध्रुव	४ ५१	३० ५०	व	१६	५६	18	2	8	२६	कर्क
३५.००	५	गुरु	४४	१८	पुष्य	५	८	व्या.	५६	५३	बव	१४	५१	19	3	9	२७	कर्क
३५.००	६	शुक्र	४५	२३	अश्ले	६	३५	हर्ष	५५	३५	कौ	१४	५६	20	4	10	२८	सिं. ६/३५
३५.००	७	शनि	४८	२३	मघा	१०	५	वज्र	५५	४५	गर	१६	५३	21	5	11	२९	सिंह
३५.०३	८	रवि	५३	३	पू.फा.	१५	२३	सिद्धि	५७	१०	वि	२०	४३	22	6	12	३०	कं. ३१/५८
३५.०३	९	चंद्र	५८	४५	उ.फा.	२२	३	व्य.	५९	२३	बा	२५	५४	23	7	13	३१	कन्या
३५.०५	१०	मंग	६०	००	हस्त	२९	३०	वरी	६०	००	तै	३१	५३	24	8	14	आ.	कन्या
३५.०६	१०	बुध	५	००	चित्रा	३७	१३	वरी	१	५८	गर	५	००	25	9	15	२	तु. ३/२३
३५.०६	११	गुरु	११	१०	स्वा.	४४	३५	परि	४	३३	वि	११	१०	26	10	16	३	तुला
३५.०६	१२	शुक्र	१६	४५	विशा	५१	१३	शिव	६	४०	बा	१६	४५	27	11	17	४	वृ. ३४/३८
३५.०७	१३	शनि	२१	२८	अनु	५६	५५	सिद्ध	८	१३	तै	२१	२८	28	12	18	५	वृश्चिक
३५.०८	१४	रवि	२५	८	ज्ये.	६०	००	साध्य	८	५८	व	२५	८	29	13	19	६	वृश्चिक
३५.०८	१५	चंद्र	२७	४०	ज्ये.	१	३३	शुभ	८	४८	बव	२७	४०	30	14	20	७	ध. १/३३

ग्रह दर्शन– प्रातः बुध पूर्व क्षितिज में होगा। सायं मंगल–शनि को पूर्व कपाल में देखें, गुरु याम्योत्तरवृत्त के पास दिखेगा। शुक्र अभी अस्त है।

तिथि	वार	पर्व, व्रत एवं ग्रह संचार	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
१	रवि	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२	चंद्र	चन्द्रदर्शन, मु. १५, स. सि. यो. $10^{\text{घं.}}$–$26^{\text{मिं.}}$ तक,	१	२१	३८	२०	5	28	19	25
३	मंग	**रम्भा तृतीया व्रत,** सूर्य मृग. में ४६/१३, शुक्र मृग. में ३४/४८, **(A)**	१	२२	३५	४६	5	27	19	26
४	बुध	भ. १६/५६ से ४५/२३ तक, **बुध वृष में १०/५०,** उमा-अवतार,	१	२३	३३	०८	5	27	19	26
५	गुरु	गण्डमूल $7^{\text{घं.}}$–$30^{\text{मिं.}}$ से प्रा., **गुरु-पुष्य योग** 7/30 तक, स.सि.यो.	१	२४	३०	३२	5	27	19	27
६	शुक्र	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी, गण्डमूल विचार,	१	२५	२७	५५	5	27	19	27
७	शनि	भद्रा ४८/२३ से, गण्डमूल 9/29 तक,	१	२६	२५	१७	5	27	19	27
८	रवि	भ. २०/४३ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी,** धूमावती जयन्ती, **मेला क्षीर-भवानी(B)**	१	२७	२२	३७	5	27	19	28
९	चंद्र	**शुक्र मिथुन में ०/२३** ($5^{\text{घं.}}$–$36^{\text{मिं.}}$), उमा-ब्राह्मणी व्रत, नैपच्यून वक्री $21^{\text{घं.}}$–$15^{\text{मिं.}}$	१	२८	१९	५७	5	27	19	28
१०	मंग	**सूर्य मिथुन में ४४/४०, आषाढ़ संक्रान्ति,** मु. ३०, पुण्यकाल **(C)**	१	२९	१७	१६	5	27	19	29
१०	बुध	भद्रा ३८/०५ से प्रा., बुध रोहि. में ४९/३५,	२	००	१४	३४	5	27	19	29
११	गुरु	भ. ११/१० तक, **निर्जला एकादशी व्रत**	२	०१	११	५१	5	27	19	29
१२	शुक्र	प्रदोष व्रत, **वक्री मंगल तुला में ४६/००,** वटसावित्री व्रतारम्भ, चम्पक द्वादशी	२	०२	०९	०८	5	28	19	30
१३	शनि	शुक्र आर्द्रा में २५/५५, **(D)** कर्क में ५६/३३, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रा.	२	०३	०६	२३	5	28	19	30
१४	रवि	भ. २५/०८ से ५६/२४ तक, **वटसावित्री व्रत** (देखें पृ. 85), श्रीसत्यनारायण व्रत	२	०४	०३	४१	5	28	19	30
१५	चंद्र	**ज्येष्ठ पूर्णिमा (ज्येष्ठी योग),** सन्त कबीर जयन्ती, सूर्य सायन **(D)**	२	०५	००	५६	5	28	19	30

(A) महाराणा प्रताप जयन्ती, रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रा. **(B)** **(काश्मीर),** स.सि.यो. 11/36 बाद **(C)** सं. मध्याह्न बाद से अगले दिन प्रातः 05/43 तक, **गंगा–दशहरा पर्व (हरिद्वार)** (देखें पृ. 84)

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१	४	७	१	४	१	७	४	१०
२७	२३	०१	०४	२०	२८	१८	२२	२२
२२	३४	१०	३६	४७	४६	२३	५३	५३
४७	५२	२६	५५	५५	००	१८	२७	२७
57	723	13	80	5	73	4	3	3
20	40	59	6	41	43	22	11	11
मृग २	पू.फा ४	विशा ४	कृत्ति ३	पू.फा ३	मृग २	ज्ये. १	पू.फा ३	पू.भा १
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

२ सू. बु. शु.
३
१
४
१२
५ चं. गु. रा.
११ के.
८ मं. श.
६
१०
७
९

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 20 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	७	६	१	४	२	७	४	१०
०५	२९	२९	१६	२१	०८	१७	२२	२२
०१	४१	३९	४२	३७	३५	४९	२८	२८
०३	५४	३२	२२	२५	४०	१२	०१	०१
57	754	7	103	6	73	4	3	3
14	36	50	58	49	42	7	11	11
मृग ४	ज्ये. ४	विशा ३	रोहि ३	पू.फा ३	आर्द्रा १	ज्ये. १	पू.फा ३	पू.भा १
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

३ सू. शु.
४
२ बु.
५ गु. रा.
१
६
१२
७ मं.
११ के.
९
८ चं. श.
१०

ज्येष्ठ शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की तृतीया तिथि को (7 जून) को रम्भा देवी का विधिपूर्वक व्रत-दान करने से स्त्रियों को विवाह, सन्तान एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। देवी माँ की पुष्प, नैवेद्य आदि से पूजन करके इस मन्त्र से प्रार्थना करनी चाहिए–'**देवि! त्वं शक्तिस्त्वं स्वधा स्वाहा त्वं सावित्री सरस्वती। पतिं देहि गृहं देहि सुतान् देहि नमोऽस्तु ते।।**' माता पार्वती का जन्म भी इसी तिथि को हुआ था। **अष्टमी तिथि** (12 जून) को माता खीर (क्षीर) भवानी का मेला जम्मू-कश्मीर एवं दिल्ली के मन्दिरों में खीर, मेवे आदि का भोग लगाकर श्रद्धा से मनाया जाता है। **श्रीगंगा-दशहरा** का पर्व 14 जून, मंगलवार को होगा। ता. 15 जून, को दशमी तिथि त्रिमुहूर्त्त से भी कम प्रातः $7^{\text{घं.}}$–$27^{\text{मिं.}}$ तक रहेगी। (देखें पृ. 84), ता. 14 जून, गंगा दशहरा पर्व पर गंगास्नान एवं श्रीगङ्गा जी का पूजार्चन एवं दानादि कर्म करने से मनुष्य के दस प्रकार के पापों का नाश होता है। इसलिए इसे दशहरा कहा जाता है। निम्न मन्त्र से आवाहन व प्रार्थना करें–'**ॐ नमः शिवायै नारायण्यै दशहरायै गङ्गायै नमः।।**' ता. 16 जून **को निर्जला एकादशी** को निराहार व्रत रखकर भगवान् श्री विष्णु उपासना, जप तथा यथाशक्ति ब्राह्मणों को दान करने से वर्षभर की एकादशियों के पुण्य फल प्राप्त हो जाते हैं। अमावस्या की भान्ति पूर्णिमा को (चतुर्दशी विद्धा) भी वटसावित्री का व्रत वैधव्यादि दोष निवारण हेतु किया जाता है। **आषाढ़ संक्रान्ति**–ता. 14 जून, मंगलवार को रात्रि 11 बजकर 19 मिनट पर कुम्भ लग्न में प्रवेश करेगी। संक्रान्ति (३० मुहूर्त्ति) का पुण्यकाल मध्याह्न बाद से अगले दिन ता. 15 की प्रातः 5/43 तक रहेगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह संक्रान्ति चोरों, भ्रष्ट राजनेताओं के लिए लाभकारी होगी। **लोक भविष्य**–ता. 14 से सूर्य मिथुन राशि में आकर शुक्र के साथ मेल करेगा। ता. 17 जून को वक्री मंगल तुला राशि में आने से कुछ प्रदेशों में कम वर्षा से दुर्भिक्ष की स्थिति बने, पूर्वी राज्यों में शासन-परिवर्तन तथा मुस्लिम देशों में आतंकवादी घटनाओं एवं युद्धमय वातावरण के मध्य लोग भयभीत रहें।–'**शुक्रगेहे यदावक्रोजायते क्षितिनंदनः, दुर्भिक्षं देशभंग च लोकानां च महद्भयम्।।**' ज्येष्ठ मास में मिथुन संक्रां. मंगलवार को होने से देश में कहीं अग्निकाण्ड, क्लिष्ट रोगों से भय तथा अनाजादि दैनिक उपयोगी वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि होगी। **आकाश लक्षण**–गर्मी व लू का प्रकोप बढ़ेगा, उत्तर-पश्चिमी राज्यों में गर्म हवाओं के साथ कहीं-कहीं बौछारें पड़ने के योग हैं।

वि. संवत् २०७३, आषाढ़ कृष्ण पक्ष शाक: १९३८ — सन् 2016 ई. (ता. 21 जून से 4 जुलाई तक) हिजरी सन् 1437

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

ग्रह दर्शन—प्रातः पूर्वक्षितिज में दिखने वाला बुध 25 जून से अस्त हो जाएगा। सायं मंग.–शनि पूर्वकपाल में तथा गुरु पश्चिमकपाल में दिखाई देगा। शुक्र अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	तारीखें रा. शक	रमज़ान मु.	जून	आषा. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
३५.०८	१	मंग.	२९	८	मूल	५	८	शुक्ल	७	५०	कौ	२९	८	31	15	21	८	धनु	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रा., सूर्य आर्द्रा में ४३/४८, गण्डमूल 7/31 तक	२	०५	५८	१०	5	28	19	31
३५.०८	२	बुध	२९	३५	पू.षा.	७	३८	ब्रह्म	६	००	गर	२९	३५	आ.	16	22	९	म. २३/८	भद्रा ५९/१८ से प्रारम्भ, शक आषाढ़ प्रारम्भ,	२	०६	५५	२३	5	28	19	31
३५.०७	३	गुरु	२९	००	उ.षा.	९	१०	ऐन्द्र	३	२३	वि	२९	००	2	17	23	१०	मकर	भ. २९/०० तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14–17), बुध मृग. में ४१/२३,	२	०७	५२	३६	5	29	19	31
३५.०७	४	शुक्र	२७	३५	श्रव	९	५०	वैधृ विष्क	० ५६	३ ३	बा	२७	३५	3	18	24	११	कुं. ३९/५३	**पंचक प्रारम्भ ३९/५३**, स. सि. यो. 9/25 तक,	२	०८	४९	५१	5	29	19	31
३५.०६	५	शनि	२५	२०	धनि	९	४०	प्रीति	५१	२०	तै	२५	२०	4	19	25	१२	कुम्भ	बुध पूर्व में अस्त ५७/०५,	२	०९	४७	०४	5	29	19	31
३५.०६	६	रवि	२२	१०	शत	८	३८	आयु	४५	५५	व	२२	१०	5	20	26	१३	मी. ५२/१८	भद्रा २२/१० से ५०/०९ तक,	२	१०	४४	१९	5	29	19	32
३५.०५	७	चंद्र	१८	८	पू.भा.	६	४०	सौभा	३९	४५	बव	१८	८	6	21	27	१४	मीन	**बुध मिथुन में ६/३० (8 घं.-06 मिं.), यूरेनस** अश्वि (1) **मेष में 16 घं.-52 मिं.**	२	११	४१	३२	5	30	19	32
३५.०५	८	मंग	१३	१५	उ.भा.	३	५५	शोभ	३२	५५	कौ	१३	१५	7	22	28	१५	मीन	गण्डमूल प्रात: 7/04 से प्रा.,	२	१२	३८	४५	5	30	19	32
३५.०४	९	बुध	७	३५	रेव. अश्वि	० ५६	२० ५	अति	२५	३०	गर	७	३५	8	23	29	१६	मे. ०/२०	भ. ३४/२४ से, **पंचक समाप्त ०/२०, मंगल मार्गी ५९/०८, (A)**	२	१३	३५	५८	5	30	19	32
३५.०४	१०	गुरु	१	१३	भर.	५१	१५	सुक	१७	३०	वि	१	१३	9	24	30	१७	मेष	भ. १/१३ तक, **योगिनी एकादशी व्रत** (स्मार्त), बुध आर्द्रा में १९/५०	२	१४	३३	१३	5	30	19	32
००.००	११	गुरु	५४	२०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० **(A)** शुक्र पुन. में १७/००	०	०	०	०	०	०	०	०
३५.०३	१२	शुक्र	४७	१०	कृति	४६	८	धृति	९	८	कौ	२०	४५	10	25	जुला	१८	वृ. ४/५८	**योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव)**, जुलाई मास प्रारम्भ	२	१५	३०	२६	5	31	19	32
३५.०२	१३	शनि	४०	५	रोहि	४१	३	शूल गंड	० ३७	३८ २५	गर	१३	३८	11	26	2	१९	वृष	भ. ४०/०५ से, **शनि प्रदोष व्रत**, मासशिवरात्रि व्रत, स. सि. यो.	२	१६	२७	४१	5	32	19	32
३५.०१	१४	रवि	३३	२३	मृग	३६	००	वृद्धि	४४	१५	वि	६	४४	12	27	3	२०	मि. ८/३८	भ. ६/४४, गुरु पू.फा. (४) में ३०/३० **(B)** तीर्थ–स्नान माहात्म्य	२	१७	२४	५४	5	32	19	32
३५.००	३०	चंद्र	२७	२८	आर्द्रा	३२	३३	ध्रुव	३६	५८	चतु	०	२६	13	28	4	२१	मिथुन	**आषाढ़ी अमावस, सोमवती अमावस, मेला हरिद्वार–प्रयागराजादि(B)**	२	१८	२२	०७	5	32	19	32

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 28 जून

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	११	६	२	४	२	७	४	१०
१२	१५	२८	०१	२२	१८	१७	२२	२२
३८	४४	५९	४८	३५	२५	१७	०२	०२
४७	५९	५५	३७	२७	२१	२६	३५	३५
57	850	1	123	7	74	3	3	3
13	13	13	49	49	4	45	11	11
आर्द्रा २	उ.भा. ४	विशा ३	मृग ३	पू.फा. ३	आर्द्रा ४	ज्ये. १	पू.फा. ३	पू.भा. १
०	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

३ सू. बु. शु. | ४ | २ | ५ गु. रा. | १ | ६ | १२ चं. | ७ मं. | ११ के. | ९ | ८ श. | १०

चन्द्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 4 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	२	६	२	४	२	७	४	१०
१८	१२	२९	१४	२३	२५	१६	२१	२१
२२	१७	०४	३२	२४	४७	५५	४३	४३
०५	०३	५५	३३	०६	४५	४४	३०	३०
57	847	3	130	8	73	3	3	3
14	44	42	19	31	45	25	10	10
आर्द्रा ४	आर्द्रा २	विशा ३	आर्द्रा ३	पू.फा. ४	पुन. २	ज्ये. १	पू.फा. ३	पू.भा. १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

३ सू.चं.बु. शु. | ४ | २ | ५ गु. रा. | १ | ६ | १२ | ७ मं. | ११ के. | ९ | ८ श. | १०

आषाढ़ कृष्ण पक्षफल—

आषाढ़ मास में भगवान् श्रीविष्णु की प्रसन्नता के लिए ब्रह्मचारी रहते हुए स्नानोपरान्त नित्यप्रति लक्ष्मी सहित भगवान् विष्णु की पूजार्चन एवं स्तोत्र पाठ के बाद ब्राह्मण दम्पत्ति को क्षीर सहित भोजन करवाना तथा यथाशक्ति वस्त्र, धन, जूते, आँवले, आम्र, खरबूजे, आड़ू आदि ऋतुफल का दान करना तथा स्वयं भी एकभुक्त भोजन करना इत्यादि कृत्यों से जातक को अक्षय पुण्यों की प्राप्ति होती है। **स्वास्थ्य विचार**—आषाढ़ मास में स्वयं को (विशेषकर सिर को) धूप व गर्मी से बचाना चाहिए। इस मास में शीतल जल, सादा भोजन, छाछ, मौसमी फलों का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रदायक होता है। ब्रह्मपुराणानुसार इस पक्ष में **योगिनी एकादशी** का व्रत करके भगवान् विष्णु की यथाविधि पूजा करके रात्रि में जागरण करने तथा दूसरे दिन अन्न, वस्त्रादि का दान करने से कुष्ठादि त्वचा रोगों की शान्ति होती है। ता. 4 जुला. को **आषाढ़ी अमावस सोमवार** को होने से हरिद्वार आदि तीर्थों पर स्नान, जप-पाठ, तर्पण–दानादि का विशेष माहात्म्य होगा। ***लोक भविष्य***—**चान्द्र आषाढ़ मास में पाँच मंगलवार** होने देश के किसी प्रमुख नेता के लिए अनिष्टकर एवं अशुभ होंगे। देश में अग्निकाण्ड हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं अधिक होंगी। केन्द्रिय मन्त्रीमण्डल अथवा किसी प्रान्त में सत्ता-परिवर्तन (या छत्रभंग) के भी संकेत हैं—**यत्र मासे महीसूनो जायन्ते पंचवासरा:। रक्तेनपूरिता पृथ्वी छत्रभंगस्तदा भवेत्।।** आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि से प्रजा में आक्रोश एवं गहन असन्तोष व्याप्त रहे। विश्व में कहीं हवाई दुर्घटनाएं तथा आतंकवादी व युद्धन्मोदी घटनाएँ अधिक घटित होंगी। परन्तु ग्रहगोचरानुसार पक्ष में सूर्य–बुध–शुक्र–तीन ग्रहों का योग एक ही राशि (मिथुन) में होने से सरकारी प्रयासों से धान्यादि के भावों में विशेष तेज़ी नहीं बन पाएगी। **यथा—आदित्य बुधशुक्राश्च ह्येकराशिंत्रयोयदि। यानिकानि च धान्यानि सर्वसाम्यं स्मृतंबुधै:।।**

आकाश लक्षण—पक्ष में भारत के उत्तर-पूर्वी, क्षेत्रों में व्यापक तथा उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा होगी। **शकुन**—सूर्य आर्द्रा प्रवेश के समय (21 जून) यदि वर्षा हो, तो आगे वर्षाकाल में उपयोगी वर्षा की कमी रहेगी।

वि. संवत् २०७३, आषाढ़ शुक्ल पक्ष शाक: १९३८

सन् 2016 ई. (ता. 5 जुला. से 19 जुलाई तक) हिजरी सन् 1437 — सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतुः — भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

ग्रह दर्शन—सायं मंग.–शनि पूर्वकपाल में गुरु पश्चिमकपाल में दिखाई देंगे। ता. 9 जुला. से शुक्र तथा 18 जुला. से बुध भी सायंकाल पश्चिमक्षितिज में दिखेंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	तारीखें आषा. शक	शव्वाल मु.	जुलाई	आषा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३४.५८	१	मंग.	२२	३८	पुन.	२९	४८	व्या.	३०	३८	बव	२२	३८	14	29	5	२२	क. १५/२०	सूर्य पुन. में ४२/३०, **गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ,**	२	१९	१९	२४	5	33	19	32
३४.५५	२	बुध	१९	१८	पुष्य	२८	३५	हर्ष	२५	३३	कौ	१९	१८	15	30	6	२३	कर्क	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **रथयात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी),** बुध पुन. में ३०/३५, **(A)**	२	२०	१६	३९	5	33	19	31
३४.५३	३	गुरु	१७	४०	अश्ले	२९	५	वज्र	२१	५०	गर	१७	४०	16	शव्वा	7	२४	सिं. २९/५	भ. ४७/४९ से, **शुक्र कर्क में २५/०५,** शव्वाल (मु.) मास प्रा., गण्डमूल	२	२१	१३	५४	5	34	19	31
३४.५३	४	शुक्र	१७	५८	मघा	३१	३०	सिद्धि	१९	४०	वि	१७	५८	17	2	8	२५	सिंह	भ. १७/५८ तक, वक्री शनि अनु. (४) में ४७/२५, गण्डमूल 18घं.–10मिं. तक,	२	२२	११	०८	5	34	19	31
३४.५०	५	शनि	२०	५	पू.फा.	३५	४०	व्य.	१८	५८	बा	२०	५	18	3	9	२६	कं. ५१/५८	**शुक्र पश्चिम में उदय** ०/१३, स्कन्द-षष्ठी, कुमार षष्ठी **(B)**	२	२३	०८	२१	5	35	19	31
३४.५०	६	रवि	२३	५५	उ.फा.	४१	२८	वरी	१९	३५	तै	२३	५५	19	4	10	२७	कन्या	शुक्र पुष्य में ७/४५, पद्मक योग — **'शुक्र उदय'–9 जुलाई**	२	२४	०५	३४	5	35	19	31
३४.४६	७	चंद्र	२९	००	हस्त.	४८	३०	परि	२१	१०	व	२९	००	20	5	11	२८	कन्या	भ. २९/०० से प्रा., **बुध कर्क में १०/३०,** विवस्वत सप्तमी	२	२५	०२	५०	5	36	19	30
३४.४५	८	मंग.	३४	५५	चित्रा	५५	४५	शिव	२३	२८	वि	१	५८	21	6	12	२९	तु. २२/००	भ. १/५८ तक, **मंगल वृश्चिक में २१/०५,** बुध पुष्य में ४६/२०, श्रीदुर्गाष्टमी+	२	२६	००	०२	5	36	19	30
३४.४३	९	बुध	४०	५८	स्वा.	६०	००	सिद्ध	२५	५५	बा	७	५७	22	7	13	३०	तुला	भढली नवमी, **गुप्त नवरात्रे समाप्त, मेला शरीक भवानी** (काश्मीर)	२	२६	५७	१७	5	37	19	30
३४.४३	१०	गुरु	४६	३५	स्वा.	३	८	साध्य	२८	१०	तै	१३	४७	23	8	14	३१	वृ. ५३/२०	+शुक्र बाल्यत्व समाप्त ०/१३	२	२७	५४	३३	5	37	19	30
३४.३८	११	शुक्र	५१	१५	विशा	९	५५	शुभ	२९	४८	व	१८	५५	24	9	15	३२	वृश्चिक	भ. १८/५५ से ५१/१५ तक, **हरिशयनी एकादशी व्रत,** चातुर्मास्य व्रत**(C)**	२	२८	५१	४६	5	38	19	29
३४.३८	१२	शनि	५४	४५	अनु.	१५	४५	शुक्ल	३०	३३	बव	२३	००	25	10	16	श्रा.	वृश्चिक	**सूर्य कर्क में ११/३३, श्रावण संक्रान्ति,** मु. ३०, पुण्यकाल सं. सायं **(D)**	२	२९	४८	५९	5	38	19	29
३४.३३	१३	रवि	५६	५०	ज्ये.	२०	१८	ब्रह्म	३०	१५	कौ	२५	४८	26	11	17	२	ध. २०/१८	प्रदोष व्रत, गण्डमूल विचार	३	००	४६	१४	5	39	19	28
३४.३०	१४	चंद्र	५७	३०	मूल	२३	२८	ऐन्द्र	२८	५०	गर	२७	१०	27	12	18	३	धनु	भ. ५७/३० से, बुध पश्चिम में उदय ५८/५३, अम्बिका व्रत, मेला **(E)**	३	०१	४३	२८	5	40	19	28
३४.२८	१५	मंग.	५६	३८	पू.षा.	२५	२०	वैधृ	२६	२५	वि	२७	४	28	13	19	४	म. ४०/३५	भ. २७/०४ तक, **आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा,** व्यास पूजा, सूर्य **(F)**	३	०२	४०	४६	5	40	19	27

(A) गण्डमूल 16/59 से **(B)**(पञ्चमी-विद्धा) (देखें पृ. 85) **(C)** नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु-शयनोत्सव, स.सि.यो. 9/36 बाद, **(D)** 16/39 तक, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ, गण्डमूल 11/56 से **(E)** ज्वालामुखी (काश्मीर), गण्डमूल 15/03 तक **(F)** पुष्य में ४१/०५, बुध आश्लेषा में ३१/०३, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, वायु परीक्षा

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
२	५	६	३	४	३	७	४	१०
२५	२५	२९	०१	२४	०५	१६	२१	२१
५९	३६	५६	४३	३५	३७	३०	१८	१८
५०	२६	२८	२५	१२	४३	२०	०४	०४
57	711	9	124	9	73	2	3	3
13	12	52	28	21	45	51	10	10
पुन 2	चित्रा 1	चित्रा 3	पुन 4	पूफा 4	पुष्य 1	अनु 4	पूफा 3	पूभा 1
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

३ सू. | ४ बु. शु. | ५ गु. रा. | ६ चं. | ७ मं. | ८ श. | ९ | १० | ११ के. | १२ | १ | २

भौमे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 19 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	८	७	३	४	३	७	४	१०
०२	२१	०१	१५	२५	१४	१६	२०	२०
४०	०५	२०	४०	४२	१३	१२	५५	५५
२२	१७	०६	५४	३८	५२	०२	४९	४९
57	784	14	112	10	73	2	3	3
14	47	37	47	00	44	17	11	11
पुन 4	पुष्य 3	चित्रा 4	पुष्य 4	पूफा 4	पुष्य 4	अनु 4	पूफा 3	पूभा 1
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

४ सू. बु. शु. | ५ गु. रा. | ६ | ७ | ८ मं. श. | ९ चं. | १० | ११ के. | १२ | १ | २ | ३

आषाढ़ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की द्वितीया तिथि (6 जुला.) को भगवान् श्रीजगन्नाथ की **रथयात्रा** का भव्य उत्सव बड़ी श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ पुरी (उड़ीसा) तथा अन्य तीर्थस्थलों पर मनाया जाता है। पुष्य-नक्षत्र युक्ता द्वितीया तिथि होने से यह पर्व इस वर्ष विशेष पुण्यप्रदा होगा। **हरिशयनी एकादशी** से कार्तिक शुक्ल एका. पर्यन्त धर्मपरायण एवं तपस्वी लोग चातुर्मास्य व्रतादि नियमों का पालन करते हुए चार मास तक नित्य शतनामादि विष्णुस्तोत्र पाठ सहित भगवान् विष्णु की उपासना की जाती है। पूजनोपरान्त ब्राह्मण-भोजन करवाना चाहिए। यद्यपि भगवान् क्षण भर भी कभी सोते नहीं, परन्तु प्रबोधिनी एकादशी के दिन भगवान् योगनिद्रा को त्यागकर प्रत्येक प्रकार की क्रिया में प्रवृत्त हो जाते हैं और प्राणी मात्र का पालन-पोषण और संरक्षण करते हैं। **गुरु पूर्णिमा** (19 जुला.) ज्ञान, ध्यान एवं गुरु-भक्ति की तरफ ले जाने वाली होती है। इस दिन परब्रह्म ईश्वर का ध्यान करते हुए ऋषि व्यास, शुकदेव आदि ऋषियों का आवाहन-पूजनादि करके अपने इष्ट गुरु का पुष्पाक्षत, मिष्ठान्न, वस्त्र, दक्षिणा द्वारा सम्मान करना चाहिए। **श्रावण संक्रान्ति**–16 जुलाई, शनिवार को ३० मुहूर्त्ति, प्रातः 10 बजकर 15 मिनट पर सिंह लग्न में प्रवेश करेगी। वारानुसार राक्षसी तथा नक्षत्रानुसार मन्दाकिनी नामक यह संक्रान्ति दुष्ट, नीच जनों एवं राजनेताओं के लिए सुखकर एवं लाभदायक रहेगी। शनिवार की सं. होने तथा **गुरु-राहु** योग पर शनि की शत्रु-दृष्टि होने से राजनीतिक पार्टियों के मध्य विरोध एवं टकराव पैदा होंगे। सर्वप्रकार के अनाज, धान्य, चने, तिल, तैल आदि पदार्थ तेज़ भाव होंगे। पृथ्वी पर राजाओं के मध्य टकराव तथा लोगों में भी परस्पर विग्रह एवं विरोध अधिक रहे। क्लिष्ट रोगों का प्रसार अधिक रहे। ता. 9 जुला. को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र (मनुष्यगण) में शुक्रोदय होने से जालन्धर आदि पंजाब के कुछ क्षेत्रों में दुर्भिक्ष, विग्रह तथा महाराष्ट्र, राज. आदि उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों में राजनीतिक पार्टियों में विरोध, मंत्रीमण्डल में परिवर्तन तथा उपद्रव होंगे–**'मनुष्यगणभेशुक्रोदये सौराष्ट्र विग्रहः ।।'**

आकाश लक्षण–पक्ष के उत्तरार्द्ध भाग में व्यापक वर्षा के योग हैं। **शकुन**–आषाढ़ पूर्णिमा को सायंकाल यदि पूर्व दिशा की वायु चले तो पृथ्वी पर आगे सुभिक्ष के संकेत हैं।

वि. संवत् २०७३, श्रावण कृष्ण पक्ष शाक: १९३८ | सन् 2016 ई. (ता. 20 जुलाई से 2 अगस्त तक) हिजरी सन् 1437 | भा.स्टैं.टा. जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतु:

ग्रह दर्शन– सायं मंग.–शनि याम्योत्तरवृत्त से पूर्व में, बुध–शुक्र पास–पास पश्चिमक्षितिज में तथा गुरु भी पश्चिम–क्षितिजासन्न दिखाई देंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	तारीखें श्रा. शक	मुहर्रम	जुलाई	श्रावण प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
३४.२५	१	बुध	५५	१०	उ.षा.	२५	५८	विष्क	२२	५८	बा	२५	५४	29	14	20	५	मकर
३४.२५	२	गुरु	५२	३०	श्रव.	२५	३५	प्रीति	१८	४०	तै	२३	५०	30	15	21	६	कुं. ५५/३
३४.२०	३	शुक्र	४८	५८	धनि	२४	१८	आयु	१३	३८	व	२०	४४	31	16	22	७	कुम्भ
३४.१५	४	शनि	४४	४८	शत	२२	१८	सौभा	८	००	बव	१६	५३	श्रा.	17	23	८	कुम्भ
३४.१५	५	रवि	४०	१०	पू.भा.	१९	४५	शोभ अति	१ ५५	५५ २८	कौ	१२	२९	2	18	24	९	मी. ५/२५
३४.१०	६	चंद्र	३५	५	उ.भा.	१६	४५	सुक	४८	३८	गर	७	३८	3	19	25	१०	मीन
३४.१०	७	मंग	२९	४०	रेव	१३	२५	धृति	४१	३५	वि	२	२३	4	20	26	११	मे. १३/२५
३४.०५	८	बुध	२४	३	अश्वि	९	५०	शूल	३४	१८	कौ	२४	३	5	21	27	१२	मेष
३४.००	९	गुरु	१८	१५	भर	६	३	गंड	२६	५८	गर	१८	१५	6	22	28	१३	वृ. २०/०५
३४.००	१०	शुक्र	१२	३३	कृति रोहि	२ ५८	१८ ४०	वृद्धि	१९	४०	वि	१२	३३	7	23	29	१४	वृष
३३.५५	११	शनि	६	५८	मृग	५५	२३	ध्रुव	१२	३३	बा	६	५८	8	24	30	१५	मि. २६/५८
३३.५३	१२	रवि	१	५०	आर्द्रा	५२	४३	व्या. हर्ष	५ ५९	४८ ३३	तै	१	५०	9	25	31	१६	मिथुन
००.००	१३	रवि	५७	१८	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
३३.५०	१४	चंद्र	५३	३८	पुन.	५०	५३	वज्र	५३	५८	वि	२५	२८	10	26	अग	१७	क. ३६/१३
३३.४५	३०	मंग	५१	५	पुष्य	५०	८	सिद्धि	४९	२०	चतु	२२	२२	11	27	2	१८	कर्क

तिथि	विवरण	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
१	चांद्र श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र आश्ले. में ५८/२८,	३	०३	३७	५९	5	41	19	27
२	**पंचक प्रारम्भ ५५/०३** (27घं.–42मिं.), अशून्यशयन व्रत	३	०४	३५	१५	5	41	19	27
३	भद्रा २०/४४ से ४८/५८ तक, सूर्य सायन सिंह में २३/१५	३	०५	३२	३२	5	42	19	26
४	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14–17), शक श्रावण प्रारम्भ	३	०६	२९	४०	5	43	19	25
५	**नागपंचमी (राज. व बंगाल)**, गुरु उ.फा. (१) में ३७/०५	३	०७	२७	०७	5	43	19	25
६	भद्रा ३५/०५ से, गण्डमूल 12/26 से, चान्द्र श्रावण सोमवार व्रत प्रा.	३	०८	२४	२७	5	44	19	24
७	भ. २/२३ तक, **पंचक समाप्त १३/२५**, मंगल अनु. में १४/३८, **(A)**	३	०९	२१	४६	5	44	19	24
८	**बुध मघा (१) सिंह में ३/३५**, गण्डमूल 9/41 तक,	३	१०	१९	०७	5	45	19	23
९	भद्रा ४५/२४ से प्रा., **(A)** शीतला सप्तमी, मङ्गलागौरी व्रत प्रारम्भ	३	११	१६	३१	5	46	19	22
१०	भद्रा १२/३३ तक, यूरेनस वक्री ४०/५८ (22/09)	३	१२	१३	५४	5	46	19	22
११	**कामिका एकादशी व्रत,**	३	१३	११	१७	5	47	19	21
१२	भ. ५७/१८ से, प्रदोष व्रत, **शुक्र मघा (१) सिंह ४९/१३**	३	१४	०८	४२	5	47	19	20
१३	त्रयोदशी तिथि का क्षय **(B)** लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव	०	०	०	०	०	०	०	०
१४	भ. २५/२८ तक, मासशिवरात्रि व्रत, अगस्त मास प्रारम्भ **(B)**	३	१५	०५	०७	5	48	19	20
३०	**हरियाली (भौमवती अमावस)**, सूर्य आश्ले. में ३८/००	३	१६	०३	३५	5	49	19	19

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 27 जुलाई

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	०	७	३	४	३	७	४	१०
१०	१०	०३	२९	२७	२४	१५	२०	२०
१८	५१	३४	५३	०४	०३	५६	३०	३०
३४	५५	००	०५	५९	४३	०३	२३	२३
57	852	19	98	10	73	1	3	3
21	52	21	33	39	44	36	11	11
पुष्य ३	अश्वि ४	अनु. १	आश्ले ४	उफा १	आश्ले ३	अनु. ४	पूफा ३	पूभा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

४ सू. बु. शु.; ५ गु. रा.; ३; ६; २; ७; १ चं.; ८ मं. श.; १०; १२; ९; ११ के.

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 2 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	३	७	४	४	४	७	४	१०
१६	०५	०५	०९	२८	०१	१५	२०	२०
०२	१४	३८	१८	१०	२६	४७	११	११
५२	१२	०६	०१	०३	०८	४७	१९	१९
57	806	22	87	11	73	1	3	3
27	56	29	58	6	44	3	11	11
पुष्य ४	पुष्य १	अनु. १	मघा ३	उफा १	मघा १	अनु. ४	पूफा ३	पूभा १
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

४ सू. चं.; ५ शु. गु. बु. रा.; ३; ६; २; ७; १; ८ मं. श.; १०; १२; ९; ११ के.

श्रावण कृष्ण पक्षफल–

श्रावण मास में प्रतिदिन अथवा प्रति सोमवार को एकभुक्त व्रत रखकर शिव पूजन बिल्वपत्र, दूध, दही, ताण्डुल, चीनी, पुष्प गंगाजल सहित '**ॐ नम: शिवाय**' मंत्रपूर्वक भगवान् शिव का अभिषेक आदि करने से मनोवांछित कामनाओं की पूर्ति होती है। श्रावण मास के ही प्रत्येक मंगलवार को मंगलागौरी का व्रत एवं पूजनादि करने से स्त्रियों को सौभाग्यादि सुखों की प्राप्ति होती है। कामिका एकादशी (30 जुला.) का व्रत रखकर मंजरी सहित तुलसीदल से भगवान् श्रीकृष्ण (या श्रीविष्णु) का पूजन करना चाहिए। घी का दीपक प्रज्वलित रखें तथा ब्राह्मणों को यथाशक्ति दान करने से सुखैश्वर्य साधनों की प्राप्ति होती है। हरियाली अमावस (2 अग.) मंगलवार को होने से इसदिन श्रीगङ्गादि तीर्थ पर स्नान, जप, दान, देवपूजन एवं पितृतर्पण, ब्राह्मण भोजनादि कराने से एक हज़ार गोदान का फल मिलता है–**अमावस्या भवेद् वारो यदा भूमिसुतस्य वै। जाह्णवी स्नाने गोसहस्रदान-समफलं लभेत्।।** परन्तु राजनीतिक पक्ष से मंगलवारी अमावस का फल शुभ नहीं माना गया।। '**राज्यभ्रंशो राजयुद्धं क्लेशानां च प्रवर्द्धनम्। उपघातोऽल्प वृष्टिश्च क्षयश्चार्थस्य भूमिजे।।**' अर्थात् देश में राजनीतिक पार्टियों के मध्य विग्रह एवं टकराव की स्थिति रहे, किसी प्रदेश में छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन), उपद्रव एवं हिंसक घटनाएँ घटित होंगी। कहीं अतिवृष्टि या अल्पवृष्टि एवं प्राकृतिक आपदाओं के कारण आवश्यक वस्तुओं में कमी के कारण मूल्यों में तेजी हो। चान्द्र श्रावण मास में पाँच बुध तथा पाँच गुरुवार होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। पाँच बुधवारों के प्रभाव से अनाजादि की पैदावार में वृद्धि होगी तथा उच्च-वर्ग में सुख-सुविधाओं का विस्तार होगा। परन्तु पाँच बृहस्तपतिवार होने से कुछ प्रदेशों में उपयुक्त वर्षा की कमी रहे, तो कहीं अतिवृष्टि से जन व धन-सम्पदा को क्षति पहुँचे। पश्चिमी देशों-ईराक, सूडान, ईज़रायल-फिलीस्तीन आदि देशों में कहीं युद्ध एवं फौजी टकराव होने के आसार बनेंगे। केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में परिवर्तन के संकेत हैं। **ग्रहगोचर**–ता. 31 जुला. से सिंह राशि में बु. गु. शु. रा. ग्रहों का चतुर्ग्रही योग ता. 11 अग. तक रहेगा, इन पर शनि की शत्रु दृष्टि रहने से राजनीतिक पार्टियों में टकराव व गतिरोध होगा। केन्द्रीय नीतिगत निर्णयों का विरोध किया जाएगा। जिससे विकासोन्मुखी योजनाओं के क्रियान्वयन में विलम्ब होगा। **आकाश लक्षण**– भारत के उत्तर तथा उत्तर-पूर्वी राज्यों में व्यापक वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७३, श्रावण शुक्ल पक्ष शाक : १९३८

सन् 2016 ई. (ता. 3 अग. से 18 अगस्त तक) हिजरी सन् 1437

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा ऋतुः

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	तारीखें श्राव. शाके	मुस्लिम मा.	अगस्त	श्राव. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
३३.४३	१	बुध	४९	५५	अश्ले	५०	४५	व्य.	४५	४८	किं	२०	३०	12	28	3	१९	सिं. ५०/४५
३३.३८	२	गुरु	५०	१३	मघा	५२	५०	वरी	४३	२५	बा	२०	४	13	29	4	२०	सिंह
३३.३३	३	शुक्र	५२	८	पू.फा.	५६	२८	परि	४२	१८	तै	२१	११	14	जि	5	२१	सिंह
३३.३३	४	शनि	५५	३५	उ.फा.	६०	००	शिव	४२	२३	व	२३	५२	15	2	6	२२	कं. १२/३८
३३.२८	५	रवि	६०	००	उ.फा.	१	३३	सिद्ध	४३	३०	बव	२७	५५	16	3	7	२३	कन्या
३३.२३	५	चंद्र	०	१५	हस्त	७	५०	साध्य	४५	२३	बा	०	१५	17	4	8	२४	तु. ४१/२०
३३.२०	६	मंग	५	५३	चित्रा	१५	००	शुभ	४७	४३	तै	५	५३	18	5	9	२५	तुला
३३.१५	७	बुध	११	५३	स्वा.	२२	२५	शुक्ल	५०	३	व	११	५३	19	6	10	२६	तुला
३३.१३	८	गुरु	१७	४५	विशा	२९	३५	ब्रह्म	५२	००	बव	१७	४५	20	7	11	२७	वृ. १२/५०
३३.०८	९	शुक्र	२२	४८	अनु	३५	५५	ऐन्द्र	५३	१०	कौ	२२	४८	21	8	12	२८	वृश्चिक
३३.०३	१०	शनि	२६	३८	ज्ये.	४१	००	वैधृ	५३	१३	गर	२६	३८	22	9	13	२९	ध. ४१/००
३३.००	११	रवि	२९	००	मूल	४४	३५	विष्क	५२	८	वि	२९	००	23	10	14	३०	धनु
३२.५५	१२	चंद्र	२९	४०	पू.षा.	४६	३३	प्रीति	४९	३८	बा	२९	४०	24	11	15	३१	धनु
३२.५०	१३	मंग	२८	४०	उ.षा.	४६	५३	आयु	४५	५०	तै	२८	४०	25	12	16	भाद्र	म. १/४३
३२.४८	१४	बुध	२६	१३	श्रव	४५	४८	सौभा	४०	५८	व	२६	१३	26	13	17	२	मकर
३२.४३	१५	गुरु	२२	२५	धनि	४३	२८	शोभ	३४	५८	बव	२२	२५	27	14	18	३	कुं. १४/४५

अगस्त	ग्रह दर्शन—सायं मंग.—शनि पास—पास याम्योत्तरवृत्त के पास दिखाई देंगे, बुध—गु.—शु. पास—पास पश्चिमक्षितिज में दृश्य होंगे।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
3	श्रावण शुक्ल पक्षारम्भ, **मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रारम्भ(A)**	३	१७	०१	०४	5	49	19	18
4	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, बुध पू.फा. में ४७/२८, गण्डमूल 26/58 तक	३	१७	५८	३१	5	50	19	17
5	**मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज,** राहु पू.फा. (२) केतु शत. **(B)**	३	१८	५६	०२	5	51	19	16
6	भ. २३/५२ से ५५/३५ तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी	३	१९	५३	३१	5	51	19	16
7	**नाग-पंचमी**	३	२०	५१	०५	5	52	19	15
8	श्रीकल्कि जयन्ती (सायाह्न-व्यापिनी)	३	२१	४८	३८	5	53	19	14
9		३	२२	४६	०९	5	53	19	13
10	भ. ११/५३ से ४४/४९ तक, **गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती**	३	२३	४३	४५	5	54	19	12
11	**श्रीदुर्गाष्टमी,** गुरु उ.फा. २ कन्या में ३८/४८, शुक्र पू.फा. में ४०/०३ **(C)**	३	२४	४१	२०	5	54	19	11
12	गण्डमूल 20घं.-17मिं. से प्रा.,	३	२५	३८	५५	5	55	19	10
13	भ. ५७/४९ से प्रा., **शनि मार्गी 15घं.-10मिं.**, गण्डमूल विचार	३	२६	३६	३१	5	56	19	09
14	भ. २९/०० तक, **पवित्रा एकादशी व्रत,** गण्डमूल 23/46 तक, स.सि.यो.	३	२७	३४	०७	5	56	19	08
15	**सोम प्रदोष व्रत,** बुध उ.फा. में ४८/५५, **भारत स्वतन्त्रता दिवस**	३	२८	३१	४७	5	57	19	07
16	**सूर्य मघा (१) सिंह में ३२/०३, भाद्रपद संक्रान्ति,** मु. ४५, **(D)**	३	२९	२९	२८	5	58	19	06
17	भ. २६/१३ से ५४/१९ तक, ऋग्वेदि उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत	४	००	२७	०७	5	58	19	05
18	**श्रावण पूर्णिमा, रक्षा-बन्धन (राखी), पंचक प्रारम्भ १४/४५(E)**	४	०१	२४	५१	5	59	19	04

(A) गण्डमूल विचार **(B)** (४) में ३२/३०, जिल्काद (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, स.सि.यो. **(C)** मेला चिन्तपूर्णी-चामुण्डादेवी (हि.प्र.) समाप्त **(D)** पुण्यकाल सं. दोपहर 12/15 बाद,
(E) यजुर्वेदि-अथर्ववेदि उपाकर्म, दर्शन श्रीअमरनाथ गुफा, ऋषि तर्पण, श्रावणी उपाकर्म, संस्कृत दिवस, हयग्रीव जयन्ती, गायत्री जयन्ती, कोकिला व्रत समाप्त

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 11 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
३	६	७	४	४	४	७	४	१०
२४	२७	०९	२१	२९	१२	१५	१९	१९
४०	१५	१७	२१	५२	२९	४१	४२	४२
२२	०८	३२	५५	१६	३५	४५	४२	४२
57	718	26	70	11	73	0	3	3
35	5	36	21	40	42	11	11	11
आश्ले 3	विशा 3	अनु 2	पूफा 3	उफा 1	मघा 4	अनु 4	पूफा 2	शत 4
०	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

शु. ५ गु. बु. रा. | ३ | ६ | ४ सू. | २ | ७ चं. | १ | ८ मं. श. | १० | १२ | ९ | ११ के.

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 18 अगस्त

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	९	७	४	५	४	७	४	१०
०१	२६	१२	२८	०१	२१	१५	१९	१९
२३	१९	३१	४३	१५	०५	४२	२०	२०
४३	३७	५५	२२	०२	१३	२८	२७	२७
57	835	29	52	12	73	0	3	3
42	35	15	16	1	38	30	11	11
मघा 1	धनि 1	अनु 3	उफा 1	उफा 2	पूफा 3	अनु 4	पूफा 2	शत 4
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

६ गु. | ४ | ७ | ५ सू. बु. शु. रा. | ३ | ८ मं. श. | २ | ९ | ११ के. | १ | १० चं. | १२

श्रावण शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की प्रतिपदा से अष्टमी (3 से 11 अग.) तक माता छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी), ज्वालामुखी एवं चामुण्डा (कांगड़ा) के दरबार में भगवती जागरण, कीर्तन, लंगर एवं भव्य मेले का आयोजन किया जाता है। ता. 5 अग. को सिंघारा (हरियाली) तीज के दिन सुहागिन स्त्रियाँ अपने पीहर जाकर हाथों में मेहंदी रचाकर झूले झूलती हुई श्रावण के मलहार गीत गाती हैं। **नाग-पंचमी** (7 अग.) को अपने गृह द्वार की दहलीज़ के दोनों ओर गोबर के सर्प बनाकर उनका दूध, दूर्वा, कुशा, गन्ध, पुष्प, अक्षत, लड्डुओं आदि से एवं '**ॐ कुरुकुल्ये हुं फट् स्वाहा**' मन्त्र का जप किया जाए तो सर्प-विष का भय नहीं रहता। **श्रावण-पूर्णिमा** (18 अग.) को भाई-बहिन के पवित्र सम्बन्धों का प्रतीक रक्षाबन्धन का त्यौहार अपराह्न-काल (13घं.-51मिं. से 16घं.-27मिं. तक) में समस्त भारत में मनाया जाएगा। यद्यपि उत्तरी भारत विशेषकर पंजाबादि में प्रातःकाल ही रक्षाबन्धन पर्व मनाने की परम्परा है। **भाद्रपद संक्रान्ति**—ता. 16 अग., मंगलवार को ४५ मुहू., सायं 6घं. 39मिं. पर मकर लग्न में प्रवेश करेगी। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह संक्रान्ति भ्रष्ट, चोर, लेखकों एवं ब्राह्मणों के लिए लाभप्रद रहेगी। **लोक-भविष्य**—मंगल-शनि योग अभी वृश्चिक राशि में चल रहा है। देश में कहीं दुर्भिक्ष, अकाल होने से उपभोग्य वस्तुओं में तेजी तथा किसी प्रदेश में राज्यभंग (अर्थात् शासन-परिवर्तन) होगा। हिंसक घटनाओं, कहीं अग्निकाण्ड से जन-धनादि की क्षति होगी। ता. 16 अग. से सूर्य पर शनि की शत्रु दृष्टि रहने से केन्द्रीय सरकार के मन्त्रीमण्डल में परिवर्तन एवं उलटफेर के संकेत हैं। ता. 11 अग. को गुरु कन्या में आने से कार्तिक से वैशाख मास तक सुभिक्ष, अन्न आदि का पर्याप्त उत्पादन होगा। परन्तु ईराक, अफगानिस्तान, सूडान, अरब आदि मरुस्थल देशों में युद्ध, छत्रभंग (शासन-परिवर्तन) के संकेत हैं।

आकाश लक्षण—पंजाब, हिमाचल, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर के अधिकतर भागों में अच्छी वर्षा के योग हैं। श्रा. शु. ८ को यदि प्रातःकाले बादल आएं, तो आगे अच्छी वर्षा होगी।

वि. संवत् २०७३, भाद्रपद कृष्ण पक्ष शाक: १९३८

सन् 2016 ई. (ता. 19 अगस्त से 1 सितंबर तक) हिजरी सन् 1437

भा.स्टैं.टा. — जालन्धर

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, वर्षा–शरद् ऋतु:

ग्रह दर्शन–सायं मंगल–शनि पास–पास याम्योत्तरवृत्त से पश्चिम की ओर दृश्य, इसी समय बु.–गु.–शु. पास–पास पश्चिमक्षितिज में दिखाई देंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल प.	तारीखें श्राव. शाके	विक्र. मा.	अगस्त	भाद्र. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
३२.४०	१	शुक्र	१७	३५	शत	४०	१३	अति	२८	१३	कौ	१७	३५	28	15	19	४	कुम्भ	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **बुध कन्या में** २८/३३, गायत्री जपम्	४	०२	२२	३३	5	59	19	03
३२.३५	२	शनि	११	५३	पू.भा.	३६	१५	सुक	२०	५०	गर	११	५३	29	16	20	५	मी. २२/१५	भ. ३८/४८ से, कज्जली तृतीया (चं. उ. व्यापिनी)	४	०३	२०	१८	6	00	19	02
३२.३०	३	रवि	५	४३	उ.भा.	३१	५३	धृति	१३	३	वि	५	४३	30	17	21	६	मीन	भ. ५/४३ तक, **श्रीगणेश बहुला चतुर्थी** (देखें पृ. 14-17), गण्डमूल **(A)**	४	०४	१८	०२	6	01	19	01
००.००	४	रवि	५९	१८	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३२.२८	५	चंद्र	५२	५०	रेव	२७	२३	शूल / गंड	५ / ५७	८ / १०	कौ	२६	४	31	18	22	७	मे. २७/२३	**पंचक समाप्त २७/२३**, शुक्र उ.फा. में ३१/३५, सूर्य सायन कन्या में**(B)**	४	०५	१५	५१	6	01	19	00
३२.२३	६	मंग	४६	३३	अश्वि	२२	५८	वृद्धि	४९	२०	गर	१९	४२	भा.	19	23	८	मेष	भ. ४६/३३ से, **चन्दन षष्ठी व्रत,** चन्द्रोदय 22/38 (जालंधर), हल षष्ठी **(C)**	४	०६	१३	४२	6	02	18	59
३२.२०	७	बुध	४०	३८	भर	१८	५०	ध्रुव	४१	५३	वि	१३	३६	2	20	24	९	वृ. ३२/५३	भ. १३/३६ तक, शीतला सप्तमी, **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त)(D)**	४	०७	११	३३	6	02	18	57
३२.१३	८	गुरु	३५	१३	कृति	१५	८	व्या.	३४	४५	बा	७	५६	3	21	25	१०	वृष	**श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत** (वैष्णव) (देखें पृ. 85), **शुक्र कन्या में (E)**	४	०८	०९	२५	6	03	18	56
३२.०८	९	शुक्र	३०	२५	रोहि	१२	००	हर्ष	२८	१०	तै	२	४९	4	22	26	११	मि. ४०/४३	भ. ५८/२५ से, **श्रीगुग्गा-नवमी,** मंगल ज्ये. में ७/१८	४	०९	०७	२१	6	04	18	55
३२.०५	१०	शनि	२६	२५	मृग	९	३८	वज्र	२२	१३	वि	२६	२५	5	23	27	१२	मिथुन	भद्रा २६/२५ तक,	४	१०	०५	१८	6	04	18	54
३२.००	११	रवि	२३	१३	आर्द्रा	८	३	सिद्धि	१६	५५	बा	२३	१३	6	24	28	१३	क. ५२/३०	**अजा एकादशी व्रत,** गुरु उ.फा. (३) में ११/४५,	४	११	०३	१५	6	05	18	53
३१.५८	१२	चंद्र	२१	३	पुन	७	२५	व्य.	१२	२५	तै	२१	३	7	25	29	१४	कर्क	**वत्स द्वादशी** (पूजा), **सोम प्रदोष व्रत,** स.सि.यो. 9/03 बाद	४	१२	०१	१६	6	05	18	52
३१.५३	१३	मंग	१९	५३	पुष्य	७	४८	वरी	८	४३	व	१९	५३	8	26	30	१५	कर्क	भ. १९/५३ से ४९/५३ तक, सूर्य पू.फा. में २१/२३, **बुध वक्री ३१/०३(F)**	४	१२	५९	१६	6	06	18	51
३१.४५	१४	बुध	१९	५३	आश्ले	९	१५	परि	५	५५	शकु	१९	५३	9	27	31	१६	सिं. ९/१५	गण्डमूल विचार, **वक्री यूरेनस मीन में 17घं.-59मिं.**	४	१३	५७	२१	6	07	18	49
३१.४३	३०	गुरु	२१	५	मघा	११	५५	शिव	४	५	ना	२१	५	10	28	सितं	१७	सिंह	**भाद्रपद अमावस, कुशोत्पाटनी-पिठोरी अमावस, 'ॐ हुँ फट् स्वाहा' (G)**	४	१४	५५	२७	6	07	18	48

(A) 18/46 से, **(B)** ४०/२०, शरद् ऋतु प्रारम्भ **(C)** शक भाद्रपद प्रारम्भ, गण्डमूल 15/13 तक, स.सि.यो. **(D)** (देखें पृ. 85), पुत्रव्रत **(E)** १४/३५, **गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव, दूर्वाष्टमी व्रत** (देखें पृ. 87) **(F)** मासशिवरात्रि व्रत, अघोरा-डाकिनी चतुर्दशी, **कैलाश यात्रा प्रारम्भ**-3 दिन, गण्डमूल 9/13 बाद **(G)** इह मन्त्रेण कुशोत्पाटनम्, लोहार्गल यात्रा (स्नान), सितम्बर मास प्रा., रानी सती मेला (झुंझुनू) (राज.), गण्डमूल 10/53 तक,

गुरौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 25 अग.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१	७	५	५	४	७	४	१०
०८	०६	१६	०३	०२	२९	१५	१८	१८
०८	०६	०३	३६	४०	४०	४७	५८	५८
०८	४६	४७	५४	०९	२७	५६	११	११
57	845	31	26	12	73	1	3	3
53	6	33	9	19	34	9	11	11
मघा ३	कृति ३	अनु ४	उफा ३	उफा २	उफा १	अनु ४	पूफा २	शत ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

भाव	राशि	ग्रह
1	५	सू. शु. रा.
2	४	
3	३	
4	२	चं.
5	१	
6	१२	
7	११	के.
8	१०	
9	९	
10	८	मं. श.
11	७	
12	६	गु. बु.

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 1 सितं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	४	७	५	५	५	७	४	१०
१४	१०	१९	०४	०४	०८	१५	१८	१८
५३	२९	५१	५३	०७	१५	५८	३५	३५
५८	४३	०४	०३	१६	२०	०६	५६	५६
58	754	33	11	12	73	1	3	3
6	55	38	48	34	32	50	11	11
पूफा १	मघा ४	ज्ये. १	उफा ३	उफा ३	उफा ४	अनु ४	पूफा २	शत ४
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

भाव	राशि	ग्रह
1	५	सू. चं. रा.
2	४	
3	३	
4	२	
5	१	
6	१२	
7	११	के.
8	१०	
9	९	
10	८	मं. श.
11	७	
12	६	शु. गु. बु.

भाद्रपद कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में श्रीगणेश बहुला चतुर्थी (21 अग.) तथा चन्दन षष्ठी (23 अग.) का व्रत विधिपूर्वक रखकर रात्रि में उदित चन्द्रमा को अर्घ्य देने से कष्टों की निवृत्ति तथा गृहस्थ सुख, सौभाग्य-सन्तति, धन आदि सुखों की प्राप्ति होती है। **पुत्र व्रत**-भाद्र. कृ. सप्तमी (24 अग.) को व्रत रखकर भगवान् विष्णु का पूजन करें, दूसरे दिन '**ॐ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजन वल्लभाय स्वाहा।।**' मन्त्र की तिलों की 108 आहुतियां देकर ब्राह्मणों को भोजन कराकर स्वयं बिल्वफल एवं षड्रस सहित भोजन करें। इस प्रकार प्रत्येक कृष्ण सप्तमी का व्रत करके वर्षान्त में गोदान संकल्पपूर्वक करें। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का व्रत 24 अग., बुधवार को सप्तमी विद्धा एवं रात्रि 22 घं. 17 मिं. बाद अर्द्धरात्रि को अष्टमी व्याप्त रहेगी। ता. 25 अग. को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी उदय व्यापिनी रात्रि 20 घं. 08 मिं. तक ही रहेगी, जबकि अर्द्धरात्रि के समय नवमी तिथि व्याप्त होगी। वैष्णव मतानुसार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी इसीदिन ग्राह्य होगी। (देखें पृ. 85)। **वत्स द्वादशी** (29 अग.) को प्रात: बछड़े सहित गाय का पूजन करके मूँग, मोठ और बाजरा सहित भोजन का भोग लगाते हैं। इसदिन गाय का दूध, दही या गोघृत से परहेज़ करके भैंस का दूध प्रयोग में लाते हैं। **कुशाग्रहणी अमावस** (1 सितं.) को वर्षभर देव-पितृ कार्यों के लिए पूर्व या उत्तरमुख होकर दिन के द्वितीय प्रहर में दाएं हाथ से मन्त्रपूर्वक कुशा संग्रह करनी चाहिए। भाद्रपद मास में पाँच शुक्रवार होने से अनाज आदि के मूल्यों में वृद्धि होगी। धन का प्रसार बढ़ेगा, सरकार द्वारा प्रदत्त सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। जनसंख्या में वृद्धि के कारण कुछ गम्भीर समस्याएँ बढ़ेंगी। इस पक्ष में भी मंग.-शनि योग तथा सूर्य पर शनि की विशेष शत्रु दृष्टि रहने से पूर्ववत फल घटित होंगे।

आकाश लक्षण–पक्ष में उत्तरी भारत में अनेक प्रान्तों में तीव्र बौछारों के साथ खण्ड वर्षा के योग हैं। भाद्र कृ. ८ को यदि मौसम खुश्क रहे, तो अनाज के मूल्यों में तीन मास तक तेजी रहे।

वि. संवत् २०७३, भाद्रपद शुक्ल पक्ष शाक : १९३८ | सन् 2016 ई. (ता. 2 सित. से 16 सित. तक) हिजरी सन् 1437

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर गोल, शरद् ऋतुः

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

सायं मंग.-शनि याम्योत्तरवृत्त से कुछ पश्चिम की ओर हटे होंगे। सायं ही बुध-गुरु एवं शुक्र पश्चिम में होंगे। ता. 6 से बुध तथा 9 सित. से गुरु पश्चिम में अस्त हो जाएगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	भा. शक	मु. जिल्हि.	सितम्बर	भा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मि.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मि.
३१.३८	१	शुक्र	२३	३३	पू.फा.	१५	४५	सिद्ध	३	१०	बव	२३	३३	11	29	2	१८	कं. ३१/५५	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र हस्त में २३/५०, स.सि.यो. 12/26 तक	४	१५	५३	३५	6	08	18	47
३१.३५	२	शनि	२७	१३	उ.फा.	२०	४८	साध्य	३	१३	कौ	२७	१३	12	30	3	१९	कन्या	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, अगस्त्योदय	४	१६	५१	४५	6	08	18	46
३१.२८	३	रवि	३१	५५	हस्त	२६	५३	शुभ	४	८	गर	३१	५५	13	जिल	4	२०	कन्या	**हरितालिका तृतीया**, गौरी तृतीया, श्रीवराह-जयन्ती, सामवेदि **(A)**	४	१७	४९	५४	6	09	18	44
३१.२३	४	चंद्र	३७	३०	चित्रा	३३	४५	शुक्ल	५	४५	व	४	४३	14	2	5	२१	तु. ०/१३	भ. ४/४३ से ३७/३० तक, **सिद्धि विनायक व्रत, कलंक-चतुर्थी (B)**	४	१८	४८	०७	6	10	18	43
३१.२०	५	मंग	४३	३५	स्वा	४१	१०	ब्रह्म	७	५५	बव	१०	३३	15	3	6	२२	तुला	**ऋषि पंचमी पर्व**, सम्वत्सरी महापर्व (जैन), वक्री बुध पश्चिम में अस्त ३८/०५+	४	१९	४६	२१	6	10	18	42
३१.१५	६	बुध	४९	४०	विशा	४८	३८	ऐन्द्र	१०	१८	कौ	१६	३८	16	4	7	२३	वृ. ३१/४५	सूर्य षष्ठी व्रत, +गुरु वार्धक्य प्रारम्भ ३४/५५	४	२०	४४	३४	6	11	18	41
३१.१०	७	गुरु	५५	२०	अनु	५५	३८	वैधृ	१२	३३	गर	२२	३०	17	5	8	२४	वृश्चिक	भ. ५५/२० से, मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी व्रत, श्रीमहालक्ष्मी व्रत (सप्तमी-योगे)	४	२१	४२	५१	6	11	18	39
३१.०५	८	शुक्र	५९	५८	ज्ये.	६०	००	विष्क	१४	१८	वि	२७	३९	18	6	9	२५	वृश्चिक	भ. २७/३९ तक, **वक्री बुध सिंह में २८/५८, श्रीराधाष्टमी, (C)**	४	२२	४१	०८	6	12	18	38
३१.०३	९	शनि	६०	००	ज्ये.	१	४०	प्रीति	१५	१३	बा	३१	३४	19	7	10	२६	ध. १/४०	**श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन-सम्प्रदाय)**, श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ**(D)**	४	२३	३९	२९	6	12	18	37
३०.५८	९	रवि	३	१०	मूल	६	१८	आयु	१४	५३	कौ	३	१०	20	8	11	२७	धनु	गण्डमूल 8/44 तक, स.सि.यो.	४	२४	३७	५०	6	13	18	36
३०.५०	१०	चंद्र	४	४०	पू.षा.	९	१५	सौभा	१३	१३	गर	४	४०	21	9	12	२८	म. २४/४३	भ. ३४/२९ से, वक्री बुध पू.फा. (४) में ४९/२५, गुरु उ.फा. (४) में ५८/२३,	४	२५	३६	११	6	14	18	34
३०.४८	११	मंग	४	१८	उ.षा.	१०	२५	शोभ	१०	५	वि	४	१८	22	10	13	२९	मकर	भ. ४/१८ तक, **पद्मा एकादशी व्रत, वामन जयन्ती** (द्वादशी)**(E)**	४	२६	३४	३५	6	14	18	33
३०.४३	१२	बुध	२	००	श्रव.	९	४३	अति/सुक	५/५१	२५/२५	बा	२	००	23	11	14	३०	कुं. ३८/४३	**पंचक प्रारम्भ ३८/४३**, प्रदोष व्रत	४	२७	३३	०४	6	15	18	32
००.००	१३	बुध	५८	००	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	त्रयोदशी तिथि का क्षय ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३०.३८	१४	गुरु	५२	३३	धनि	७	१८	धृति	५२	१०	गर	२५	१७	24	12	15	३१	कुम्भ	भ. ५२/३३ से, **अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला बाबा सोढल (जालन्धर)**, कदली व्रत	४	२८	३१	३०	6	15	18	30
३०.३३	१५	शुक्र	४५	४८	शत/पू.भा.	१/५८	२५/२८	शूल	४३	५५	वि	१९	११	25	13	16	आ.	मी. ४४/४८	भ. १९/११ तक, **भाद्रपद पूर्णिमा**, प्रोष्ठपदी-पूर्णिमा का श्राद्ध, **(F)**	४	२९	२९	५९	6	16	18	29

गुरु अस्त 9 सितंबर

(A) उपाकर्म, जिल्हिजा (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, स.सि.यो. **(B)** (चन्द्रदर्शन-निषेध), चन्द्रास्त 21/08 (जालन्धर), पत्थर चौथ **(C)** गुरु पश्चिम में अस्त ३४/५०, दधीची जयन्ती, श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ,
(D) गण्डमूल विचार **(E)** सूर्य उ.फा. में ५/३०, शुक्र चित्रा में १७/१३, श्रवण-द्वादशी **(F)** सूर्य कन्या में ३०/४८, आश्विन संक्रान्ति, मु. ३०, पुण्यकाल सं. दोप. 12/11 बाद, श्रीसत्यनारायण व्रत

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 सितं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	७	७	५	५	५	७	४	१०
२२	१७	२४	००	०५	१८	१६	१८	१८
३९	१२	२७	२८	४८	०३	१५	१०	१०
२७	१३	३१	५२	४०	०९	२२	२९	२९
58 18	726 21	35 51	56 22	12 48	73 15	2 35	3 11	3 11
पूफा ३	ज्ये. १	ज्ये. ३	उफा २	उफा ३	हस्त ३	अनु ४	पूफा २	शत ४
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

शु. ६ गु. बु. | ४ | ५ सू. रा. | ३ | ७ | ८ चं. मं. श. | २ | ९ | ११ के. | १ | १० | १२

शुक्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 सितं.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
४	१०	७	४	५	५	७	४	१०
२९	१८	२८	२३	०७	२६	१६	१७	१७
२८	४३	४१	३९	१८	३६	३५	४८	४८
०७	०९	५७	११	३३	४२	१५	१४	१४
58 30	871 16	37 11	48 33	12 54	73 18	3 11	3 11	3 11
उफा १	शत ४	ज्ये. ४	पूफा ४	उफा ४	चित्रा १	अनु ४	पूफा २	शत ४
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

६ शु. गु. | ४ | ५ सू. बु. रा. | ३ | ७ | ८ मं. श. | २ | ९ | ११ चं. के. | १ | १० | १२

भाद्रपद शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष में **हरितालिका तृतीया** (4 सितं.) का व्रत तथा शिव-गौरी की पूजा करना विशेषकर सौभाग्यवती विवाहित स्त्रियों के लिए पति, पुत्र-सन्तति एवं पौत्रादि सुखों को बढ़ाने वाला होता है। **सिद्धिविनायक** (5 सितं.) का व्रत रखकर श्रीगणेश जी के बीजमन्त्र (**ॐ गं. गणपतये नमः**) तथा श्रीगणेश स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इसी दिन सायंकाल चन्द्रदर्शन करना शुभ नहीं माना जाता। इसीदिन गणेश जी का अवतार हुआ था। ता. 8 सितं. को **सन्तान सप्तमी** का व्रत सन्तान सुख प्राप्ति के लिए किया जाता है। ता. 9 सितं. को श्रीराधा एवं श्रीमहालक्ष्मी का व्रत एवं पूजन सौभाग्यवती स्त्रियां अपने सुहाग व परिवार के सौभाग्य एवं सन्तान सुख में वृद्धि के लिए करती हैं। ता. 13 सितं. को वामन जयंती के दिन प्रातः 10घं.-24मि. बाद द्वादशी श्रवण नक्षत्र युक्त होने से भगवान् विष्णु जी के पूजन-स्तोत्र पाठ दानादि के लिए विशेष प्रशस्त होगी। इसदिन दिए गए दान का फल अक्षय होता है। ता. 15 सितं. को अनन्त चतुर्दशी का व्रत रखकर भगवान् विष्णु के अनन्तस्वरूप का ध्यान हुए '**ॐ अनन्ताय नमः**' मंत्रपूर्वक पूजन करना चाहिए। भाद्रपद पूर्णिमा (16 सितं.) को ही महालय पूर्णिमा का श्राद्ध होने से अपराह्ण काल में अपने दिवंगत आत्मीय पितरों के निमित्त पूर्णिमा का श्राद्ध किया जाता है। **आश्विन संक्रान्ति**–16 सितं, शुक्रवार को सायं 6 बजकर 35 मिनट पर मीन लग्न में प्रवेश करेगी। 30 मुहू. इस संक्रां. का पुण्यकाल दोप. 12 बजकर 11 मिन्ट से प्रारम्भ होगा। वारानुसार मिश्रा तथा नक्षत्रानुसार घोरा नामक यह संक्रां. नीच, दुष्ट एवं पशुओं का क्रय-विक्रय करने वालों के लिए लाभप्रद रहेगी। इस पक्ष में भी मंग.-शनि तथा गुरु-शुक्र का योग होने से उ.प्र., असम, प. बंगाल, बिहार आदि पूर्वी प्रदेशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होने के योग हैं। ता. 9 सितं. को कन्याराशिस्थ गुरु अस्त होने से सभी धान्य, अनाज सस्ते होंगे, प्रजा में कुशल-क्षेम व प्रगति होगी। **संक्रां. राशिफल**–मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु एवं मकर राशि वालों के लिए संक्रां. मासभर शुभ एवं लाभप्रद रहेगी। **आकाश लक्षण**–उ. भारत के विभिन्न क्षेत्रों में खण्ड वर्षा होने के योग हैं।

वि. संवद् २०७३, आश्विन कृष्ण पक्ष शाक: १९३८ सन् 2016 ई. (ता. 17 से 30 सितंबर तक) हिजरी सन् 1437

सूर्य दक्षिणायन, उत्तर-दक्षिण गोल, शरद् ऋतु:

ग्रह दर्शन– 19 सितं. से बु. प्रातः पूर्व में उदित हो जाएगा। सायं शुक्र पश्चिम में, शनि इससे ऊपर तथा मंग. पश्चिमकपाल में होगा। गुरु अभी अस्त है।

भा. स्टैं. टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	भाद्र. शक	जमादि. मु.	सितंबर	आश्वि. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
३०.२८	१	शनि	३८	१३	उ.भा.	५२	४३	गंड	३४	५८	बा	१२	१	26	14	17	२	मीन	**महालय श्राद्ध (पितृपक्ष) प्रारम्भ**, शनि ज्ये. (१) में २६/४८ (A)	५	००	२८	२९	6	17	18	28
३०.२५	२	रवि	३०	१३	रेव	४६	३५	वृद्धि	२५	३५	तै	४	१३	27	15	18	३	मे. ४६/३५	भ. ५६/०८ से, **पंचक समाप्त ४६/३५, मंगल मूल (1) धनु में (B)**	५	०१	२७	०३	6	17	18	27
३०.१८	३	चंद्र	२२	३	अश्वि	४०	२८	ध्रुव	१६	५	वि	२२	३	28	16	19	४	मेष	भ. २२/०३ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14), वक्री बुध पूर्व(C)	५	०२	२५	३७	6	18	18	25
३०.१५	४	मंग	१४	१०	भर	३४	४३	व्या. हर्ष	६ / ५७	४८ / ५५	बा	१४	१०	29	17	20	५	वृ. ४८/२३	भरणी श्राद्ध, पंचमी का श्राद्ध	५	०३	२४	१४	6	18	18	24
३०.१०	५	बुध	६	४८	कृति	२९	३८	वज्र	४९	४०	तै	६	४८	30	18	21	६	वृष	चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी तिथि का श्राद्ध	५	०४	२२	५४	6	19	18	23
३०.०८	६	गुरु	०	२३	रोहि	२५	३३	सिद्धि	४२	२०	व	०	२३	31	19	22	७	मि. ५३/५५	भ. ०/२३ से २७/४२ तक, **बुध मार्गी ११/३८**, सप्तमी का श्राद्ध, (D)	५	०५	२१	३७	6	19	18	21
००.००	७	गुरु	५५	००	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
३०.००	८	शुक्र	५०	५३	मृग	२२	३५	व्य.	३५	५५	बा	२२	५७	आ.	20	23	८	मिथुन	**श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न** (सू.उ. व्या.),जीवित्पुत्रिका व्रत, अष्टमी(E)	५	०६	२०	२१	6	20	18	20
२९.५५	९	शनि	४८	८	आर्द्रा	२०	५५	वरी	३०	३८	तै	१९	३१	2	21	24	९	मिथुन	**सौभाग्यवतीनां श्राद्ध**, शुक्र स्वा. में १२/०८, नवमी का श्राद्ध, मातृ-नवमी	५	०७	१९	०७	6	21	18	19
२९.५०	१०	रवि	४६	४५	पुन	२०	४०	परि	२६	२८	व	१७	२७	3	22	25	१०	क. ५/३८	भ. १७/२७ से ४६/४५ तक, दशमी का श्राद्ध	५	०८	१७	५४	6	21	18	17
२९.४५	११	चंद्र	४६	४३	पुष्य	२१	४५	शिव	२३	१८	बव	१६	४४	4	23	26	११	कर्क	**इन्दिरा एकादशी व्रत**, सूर्य हस्त में ४४/०५, एकादशी का श्राद्ध, (F)	५	०९	१६	४३	6	22	18	16
२९.४३	१२	मंग	४८	००	अश्ले	२४	५	सिद्ध	२१	१५	कौ	१७	२२	5	24	27	१२	सिं. २४/५	संन्यासीनां श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध, **गजच्छाया योग 25/34से**, स.सि.यो.	५	१०	१५	३७	6	22	18	15
२९.३८	१३	बुध	५०	२३	मघा	२७	३५	साध्य	२०	३	गर	१९	१२	6	25	28	१३	सिंह	भ. ५०/२३ से, प्रदोष व्रत, गुरु हस्त (१) में २५/५०, मघा श्राद्ध, (G)	५	११	१४	३१	6	23	18	14
२९.३०	१४	गुरु	५३	५०	पू.फा.	३२	८	शुभ	१९	४३	वि	२२	७	7	26	29	१४	कं. ४८/२५	भ. २२/०७ तक, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध, मासशिवरात्रि व्रत	५	१२	१३	२९	6	24	18	12
२९.२८	३०	शुक्र	५८	१५	उ.फा.	३७	३८	शुक्ल	२०	१०	चतु	२६	३	8	27	30	१५	कन्या	**आश्विन (महालय) अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध**, चतुर्दशी/अमावस(H)	५	१३	१२	२९	6	24	18	11

(A) प्रतिपदा का श्राद्ध, विश्वकर्मा पूजन (B) ३/३३, **शुक्र तुला में ४४/३०**, द्वितीया का श्राद्ध, गण्डमूल (C) में उदय ४७/५५, तृतीया एवं चतुर्थी का श्राद्ध (देखें पृ. 87), गण्डमूल (D) सूर्य सायन तुला में ३३/५३, दक्षिण गोल प्रारम्भ (E) का श्राद्ध, शक आश्विन प्रारम्भ (F) गण्डमूल 15/4 से, प्लूटो मार्गी 17/42 (G) **गजच्छाया योग 17/25 तक**, त्रयोदशी का श्राद्ध, गण्डमूल (H) तिथि का श्राद्ध, श्राद्ध समाप्त, पितृविसर्जन

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 23 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	२	८	४	५	६	७	४	१०
०६	००	०३	२०	०८	०५	१६	१७	१७
१८	५६	०६	४६	४९	०९	५९	२५	२५
१८	५१	२०	५६	०५	२५	१९	५९	५९
58	829	38	12	12	73	3	3	3
44	46	31	36	58	12	46	11	11
उफा ३	मृगा ३	मूल १	पूफा ३	उफा ४	चित्रा ४	उषा १	पूफा २	शत ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

भाव	राशि	ग्रह
1	६	सू. गु.
2	७	शु.
3	८	श.
4	९	मं.
5	१०	
6	११	के.
7	१२	
8	१	
9	२	
10	३	चं.
11	४	
12	५	रा. बु.

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 30 सितंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	५	८	४	५	६	७	४	१०
१३	०१	०७	२५	१०	१३	१७	१७	१७
१०	५४	३९	२५	१९	४१	२७	०३	०३
१६	३५	३५	३८	५३	२५	२०	४३	४३
59	729	39	71	12	73	4	3	3
00	34	43	3	58	5	19	11	11
हस्त १	उफा २	मूल ३	पूफा ४	हस्त १	स्वा ३	उषा १	पूफा २	शत ४
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

भाव	राशि	ग्रह
1	६	सू. चं. गु.
2	७	शु.
3	८	श.
4	९	मं.
5	१०	
6	११	के.
7	१२	
8	१	
9	२	
10	३	
11	४	
12	५	बु. रा

आश्विन कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष में अपने दिवंगत पितरों के निमित्त जो व्यक्ति तिल, जौं, अक्षत, कुशा एवं गंगाजल सहित संकल्पपूर्वक पिण्डदान व तर्पणादि करने के बाद ब्राह्मणों को यथाशक्ति भोजन, फल-वस्त्रादि का दान दक्षिणा सहित करता है, उसके पितर संतृप्त होकर साधक को दीर्घायु, आरोग्य, स्वास्थ्य, धन-यश-सम्पदा, मोक्ष आदि सुख प्राप्ति का आशीर्वाद देते हैं–'**आयु पुत्रान् यशः स्वर्गकीर्ति पुष्टिं बलं श्रियम्। पशून सौख्यं धन-धान्यं प्राप्नुयात् पितृ पूजनात्।।**' जो व्यक्ति जान-बूझकर श्राद्धकर्म नहीं करता, वह शापग्रस्त होकर अनेक प्रकार के कष्टों एवं अभावों से पीड़ित रहता है। अष्टमी तिथि (23 सितं.) को श्रीमहालक्ष्मी एवं जीवित्पुत्रिका व्रत, पूजनादि सौभाग्यवती स्त्रियाँ अपने सुहाग एवं सन्तान की दीर्घायु की कामना से करती हैं। ता. 30 सितं. को सर्वपितृ श्राद्ध के दिन ज्ञात-अज्ञात तिथियों में मृतकजनों के निमित्त श्राद्ध कर्म करने से पितरों की शान्ति तथा श्राद्धकर्त्ता के गृह में सुख-शान्ति एवं पारिवारिक सौभाग्य में वृद्धि होती है। **शास्त्र में मध्याह्न विशेषकर अपराह्न-काल में श्राद्ध कर्म करने का विधान कहा गया है।** उस दिन गौ-ग्रास एवं पीपल पर जल-तिलाञ्जली अर्पण करना शुभ होता है। सायंकाल को गृहद्वार के बाहर दीप-प्रज्वलित करके श्रद्धापूर्वक पितृ-विसर्जन करना चाहिए। **गजच्छाया योग**–इस योग में स्नान, दान, जप एवं ब्राह्मणों को भोजन, अन्न, वस्त्रादि का दान व श्राद्ध करने का विशेष माहात्म्य माना गया है। उपरोक्त पितृपक्ष में यह विशिष्ट योग 27 सितं., रात्रि 25/34 से 28 सितं. की सायं 17घं.-25मि. तक होगा।

आकाश लक्षण–पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में कहीं अति वर्षा से बाढ़ादि का प्रकोप, तो कहीं [illegible]

वि. संवत् २०७३, आश्विन शुक्ल पक्ष शाक : १९३८

तारीखें | **चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल**

सन् 2016 ई. (ता. 1 अक्तू. से 16 अक्तू. तक) हिजरी सन् 1437-38 | भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद् ऋतुः

ग्रह दर्शन–प्रातः बुध पूर्व में दृश्य, 9 अक्तू. से पूर्व में अस्त (अदृश्य) हो जाएगा। सायं शुक्र पश्चिम में, उससे ऊपर शनि तथा मं. पश्चिमकपाल में होगा। ता. 7 अक्तू. से गुरु प्रातः पूर्व में दृश्य होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	प.	योग	समाप्ति काल घं.	प.	करण	समाप्ति काल घं.	प.	आश्वि. शु.	मु.	अक्टू.	आश्वि. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल
२९.२०	१	शनि	६०	००	हस्त	४३	५३	ब्रह्म	२१	१३	किं	३०	४८	9	28	1	१६	कन्या
२९.१५	१	रवि	३	२०	चित्रा	५०	४५	ऐन्द्र	२२	५०	बव	३	२०	10	29	2	१७	तु. १७/१३
२९.१३	२	चंद्र	९	८	स्वा.	५८	८	वैधृ	२४	५५	कौ	९	८	11	मु.	3	१८	तुला
२९.०८	३	मंग	१५	१८	विशा	६०	००	विष्क	२७	१०	गर	१५	१८	12	2	4	१९	वृ. ४८/४५
२९.०३	४	बुध	२१	३८	विशा	५	४०	प्रीति	२९	३३	वि	२१	३८	13	3	5	२०	वृश्चिक
२८.५८	५	गुरु	२७	४०	अनु	१३	३	आयु	३१	३८	बा	२७	४०	14	4	6	२१	वृश्चिक
२८.५३	६	शुक्र	३३	३	ज्ये.	१९	५३	सौभा	३३	१३	कौ	०	२२	15	5	7	२२	ध. १९/५३
२८.५०	७	शनि	३७	२०	मूल	२५	४५	शोभ	३३	५८	गर	५	१२	16	6	8	२३	धनु
२८.४३	८	रवि	४०	३	पू.षा.	३०	१०	अति	३३	३०	वि	८	४२	17	7	9	२४	म. ४६/०३
२८.४०	९	चंद्र	४०	५८	उ.षा.	३२	५३	सुक	३१	४०	बा	१०	३१	18	8	10	२५	मकर
२८.३५	१०	मंग	३९	५३	श्रव.	३३	४३	धृति	२८	२०	तै	१०	२६	19	9	11	२६	मकर
२८.३०	११	बुध	३६	४८	धनि	३२	३०	शूल	२३	२३	व	८	२१	20	10	12	२७	कुं. ३/२०
२८.२५	१२	गुरु	३१	४५	शत	२९	२५	गंड	१६	५०	बव	४	१७	21	11	13	२८	कुम्भ
२८.२३	१३	शुक्र	२५	८	पू.भा.	२४	४३	वृद्धि ध्रुव	८ ५९	५५ ५०	तै	२५	८	22	12	14	२९	मी. ११/००
२८.१५	१४	शनि	१७	१०	उ.भा.	१८	३८	व्या.	४९	५०	व	१७	१०	23	13	15	३०	मीन
२८.१०	१५	रवि	८	१५	रेव	११	३८	हर्ष	३९	१८	बव	८	१५	24	14	16	का.	मे. ११/३८

अक्टू.	व्रत, पर्व आदि	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
1	**आश्विन-शरद् नवरात्रे प्रारम्भ,** घटस्थापन, बुध उ.फा. में ०/१८ (A)	५	१४	११	३१	6	25	18	09
2	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **महात्मा गाँधी जयन्ती**	५	१५	१०	३३	6	26	18	08
3	**बुध कन्या में २८/२५,** मुहर्रम (मु.), सं. 1438 हिजरी प्रारम्भ	५	१६	०९	४०	6	26	18	07
4	भ. ४८/२८ से प्रारम्भ	५	१७	०८	४६	6	27	18	06
5	भ. २१/३८ तक, शुक्र विशा. में ८/३८, स.सि.यो. 8/43 से	५	१८	०७	५६	6	27	18	04
6	**उपाङ्ग ललिता व्रत,** गण्डमूल 11/41 से,	५	१९	०७	०५	6	28	18	03
7	**गुरु पूर्व में उदय ४०/२०,** राहु पू.फा. (१), केतु शत.(३) में २५/२५ (B)	५	२०	०६	२०	6	29	18	02
8	भ. ३७/२० से, मंगल पू.षा. में २४/२८, भद्रकाली अवतार, गण्डमूल 16/47 तक	५	२१	०५	३५	6	29	18	01
9	भ. ८/४२ तक, **श्रीदुर्गाष्टमी,** महाष्टमी, सरस्वती पूजन पू.षाभे, बुध(C)	५	२२	०४	५०	6	30	17	59
10	सूर्य चित्रा में १५/५८, महानवमी, **नवरात्रे समाप्त,** सरस्वती बलिदान उ.षा.भे	५	२३	०४	१०	6	31	17	59
11	**विजयादशमी (दशहरा),** अपराजिता पूजन, सरस्वती विसर्जन (D)	५	२४	०३	२९	6	31	17	57
12	भ. ८/२१ से ३६/४८ तक, **पंचक प्रारम्भ ३/२०, पापांकुशा (E)**	५	२५	०२	५४	6	32	17	56
13	प्रदोष व्रत, **शुक्र वृश्चिक में २२/१५,** पद्मनाभ द्वादशी, गुरु हस्त (२) में ५५/०५	५	२६	०२	१८	6	33	17	55
14	(देखें पृष्ठ 87)	५	२७	०१	४२	6	33	17	54
15	भ. १७/१० से ४२/४५ तक, **शरद् पूर्णिमा व्रत,** कोजागर व्रत, (F)	५	२८	०१	११	6	34	17	52
16	**आश्विन पूर्णिमा** (स्नानदानादि), सूर्य तुला में ५९/५०, **कार्तिक (G)**	५	२९	००	४०	6	35	17	51

गुरु उदय 7 अक्तू.

(A) श्रीदुर्गा पूजा, महाराजा अग्रसेन जयन्ती, मातामह (नाना) का श्राद्ध (B) सरस्वती आवाहन (मूलभे), गण्डमूल विचार (C) हस्त में ४४/०८, बुध पूर्व में अस्त २७/४५ (D) आयुध (शस्त्रादि)-शमी पूजा, नवरात्रे प्रारणा (E) **एकादशी व्रत, भरत मिलाप** (F) श्रीसत्यनारायण व्रत, गण्डमूल 14/01 से प्रा., (G) **संक्रान्ति** (देखें पृ. 89), मु. ३०, पुण्यकाल सं. अगले दिन दोप. 12/55 तक, **पंचक समाप्त ११/३८,** शुक्र अनु. में ७/०८, **महर्षि वाल्मीकि जयन्ती,** कार्तिक स्नान प्रारम्भ

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 9 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	८	८	५	५	६	७	४	१०
२२	१९	१३	०८	१२	२४	१८	१६	१६
०२	५२	४२	४१	१६	३८	०८	३५	३५
२५	२५	३०	०५	१९	२६	४६	०७	०७
59	753	41	101	12	72	4	3	3
17	17	2	37	53	53	58	11	11
हस्त ४	पूषा २	पूषा १	उफा ४	हस्त १	विशा २	ज्ये १	पूफा १	शत ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

६ सू. बु. गु.
५ रा.
४
३
२
१
१२
११ के.
१०
९ चं. मं.
८ श.
७ शु.

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 16 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
५	११	८	५	५	७	७	४	१०
२८	२६	१८	२०	१३	०३	१८	१६	१६
५८	२२	३२	४५	४६	०८	४४	१२	१२
००	५४	१८	१५	०२	०४	४७	५१	५१
59	911	41	104	12	72	5	3	3
30	39	52	4	44	42	23	10	10
चित्रा २	रेव ३	पूषा २	हस्त ४	हस्त २	विशा ४	ज्ये १	पूफा १	शत ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

६ सू. बु. गु.
५ रा.
४
३
२
१
१२ चं.
११ के.
१०
९ मं.
८ शु. श.
७

आश्विन शुक्ल पक्षफल–

आश्विन शुक्ल प्रतिपदा (1 अक्तू.) से **शारदीय नवरात्रों का शुभारम्भ** होगा। प्रतिपदा को स्नान, ध्यानादि के बाद शुद्ध पात्र में शुद्ध रेत/मिट्टी डालकर मंगलमंत्रपूर्वक जौं/गेहूँ/सप्तधान्य के बीज वपन करने चाहिए तथा सूर्योदय से १० (४ घण्टे) घटी तक अथवा अभिजित् मुहूर्त्त में मंत्रोच्चारण सहित घटस्थापन करना चाहिए। फिर ज्योत प्रज्वलित कर षोडशोपचार पूजन सहित श्रीदुर्गा पूजन करके नवरात्रों में **श्रीदुर्गा-सप्तशती** का नियमत रूप से पाठ करना चाहिए। ***पूजन मन्त्र*–ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी। दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते। आगच्छ वरदे देवी। पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये।** ता. 11 अक्तू. मंगलवार को सायंकाले **विजयादशमी** का पर्व मनाया जाएगा। **शरद् पूर्णिमा** (15 अक्तू.) का व्रत रखकर व भगवान् लक्ष्मीनारायण का पूजन करके रात्रि को छिटकती चांदनी में किशमिश/बादाम युक्त रखी हुई खीर दूसरे दिन भगवान् को भोग लगाकर ब्राह्मणों को खिलाकर प्रसाद रूप में स्वयं सपरिवार ग्रहण करने से अनेक प्रकार के मानसिक व शारीरिक रोगों की शान्ति होती है। ता. 16 से कार्तिक मास का स्नान भी शुरु होगा। **कार्तिक संक्रान्ति**–ता. 16 अक्तू., रविवार की रात्रि बाद (17 अक्तू. की प्रातः सूर्योदय से पूर्व) प्रातः 06 बजकर 31 मिं. (30/31) पर कन्या लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहू. इस सं. का पुण्यकाल 17 अक्तू. की दोप. 12/55 तक रहेगा। वारानुसार घोरा तथा नक्षत्रानुसार ध्वांक्षी नामक यह सं. नीच, दुष्ट तथा व्यापारियों के लिए लाभप्रद रहेगी। रविवारी सं. होने से कुछ देशों में टकराव एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। खाद्यान्नों में कमी तथा महंगाई के कारण सामान्य लोग दुःखी एवं असहाय अनुभव करेंगे। **लोक भविष्य**–चांद्र आश्विन मास में पाँच शनि तथा पाँच रविवार होने से दैनिक उपभोग्य वस्तुओं के मूल्यों में अत्यधिक तेजी तथा प्रजा में क्लिष्ट/पेचीदा रोगों की उत्पत्ति होने से कष्टों व दुःखों में वृद्धि होगी। ता. 7 अक्तू. को **गुरु कन्या राशि में उदय होने से बालकों, वृद्धजनों एवं असहाय लोगों को पीड़ा एवं कष्ट देने वाली घटनाएं घटित होंगी।–कन्यास्थितस्य च गुरोरुदये शिशूनां पीडातथैव गणिकासुच वृद्धलोके।।** परन्तु कुछ विशेष वर्ग के लोगों में सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। **आकाश लक्षण**–उत्तर-पश्चिमी राज्यों में खण्ड वर्षा हो। कहीं आर्द्रता, कहीं प्रतिकूल वर्षा हो।

वि. संवत् २०७३, कार्तिक कृष्ण पक्ष शाकः १९३८ — सन् 2016 ई. (ता. 17 अक्तू. से 30 अक्तू. तक) हिजरी सन् 1438

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, शरद्–हेमन्त ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन–प्रातः गुरु पूर्व क्षितिज में परमासन्न होगा। सायं शुक्र–शनि पास–पास पश्चिम में तथा मंग. पश्चिम–कपाल में होगा। बुध अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	उर्दू मा.	मु.	अक्तू.	कार्तिक प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी–पल
००.००	१	रवि	५८	५५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००
२८.०५	२	चंद्र	४९	३०	अश्वि भर	४ ५६	१० ४८	वज्र	२८	३५	तै	२४	१३	25	15	17	२	मेष
२८.०३	३	मंग	४०	३०	कृति	४९	५०	सिद्धि	१८	५	व	१५	००	26	16	18	३	वृ. १०/००
२७.५८	४	बुध	३२	२०	रोहि	४३	४८	व्य. वरी	८ ५९	५ ००	बव	६	२५	27	17	19	४	वृष
२७.५३	५	गुरु	२५	२३	मृग	३९	३	परि	५१	००	तै	२५	२३	28	18	20	५	मि. ११/१३
२७.५०	६	शुक्र	२०	००	आर्द्रा	३५	५५	शिव	४४	२३	व	२०	००	29	19	21	६	मिथुन
२७.४५	७	शनि	१६	२०	पुन	३४	३०	सिद्ध	३९	१०	बव	१६	२०	30	20	22	७	क. १९/४०
२७.४०	८	रवि	१४	३३	पुष्य	३४	५८	साध्य	३५	२८	कौ	१४	३३	का	21	23	८	कर्क
२७.३५	९	चंद्र	१४	३५	अश्ले	३७	८	शुभ	३३	८	गर	१४	३५	2	22	24	९	सिं. ३७/०८
३७.३३	१०	मंग	१६	२०	मघा	४०	५५	शुक्ल	३२	५	वि	१६	२०	3	23	25	१०	सिंह
२७.२८	११	बुध	१९	३३	पू.फा.	४५	५५	ब्रह्म	३२	३	बा	१९	३३	4	24	26	११	सिंह
२७.२३	१२	गुरु	२३	५३	उ.फा.	५१	५५	ऐन्द्र	३२	५०	तै	२३	५३	5	25	27	१२	कं. २/१८
२७.१८	१३	शुक्र	२९	३	हस्त	५८	३८	वैधृ	३४	१३	व	२९	३	6	26	28	१३	कन्या
२७.१३	१४	शनि	३४	४८	चित्रा	६०	००	विष्क	३६	००	वि	१	५६	7	27	29	१४	तु. ३२/०५
२७.१०	३०	रवि	४०	५८	चित्रा	५	४५	प्रीति	३८	८	चतु	७	५३	8	28	30	१५	तुला

तिथि	व्रत/पर्व	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
१	कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२	**पुण्य कार्तिक संक्रां. दोप. 12/55 तक** (देखें पृ. 89), आकाश दीपदान(A)	६	००	००	१०	6	36	17	50
३	भ. १५/०० से ४०/३० तक, स. सि. यो.	६	००	५९	४५	6	36	17	49
४	**व्रत करवा-चौथ** (करक-चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु देखें पृ. 14-17, 88, श्रीगणेश (B)	६	०१	५९	२१	6	37	17	48
५		६	०२	५८	५७	6	38	17	47
६	भ. २०/०० से ४८/१० तक, **बुध तुला में १९/१३**, स्कन्द षष्ठी	६	०३	५८	३९	6	38	17	46
७	**अहोई अष्टमी व्रत (चं. उ. व्यापिनी)**,दम्पत्य अष्टमी, सूर्य सायन(C)	६	०४	५८	२३	6	39	17	45
८	सूर्य स्वा. में ४२/०३, राधाष्टमी, कालाष्टमी, शक कार्तिक प्रारम्भ (D)	६	०५	५८	०९	6	40	17	44
९	भ. ४५/२८ से प्रा., गण्डमूल विचार	६	०६	५७	५५	6	41	17	43
१०	भ. १६/२० तक, बुध स्वा. में १६/०८, गण्डमूल 23/03 तक	६	०७	५७	४४	6	41	17	42
११	**रमा एकादशी व्रत, गोवत्स द्वादशी**, कौमुदि महोत्सव प्रारम्भ	६	०८	५७	३७	6	42	17	41
१२	धन त्रयोदशी पर्व शुरु, मंगल उ.षा. में २६/५५, शुक्र ज्ये. में ८/२३,(E)	६	०९	५७	३१	6	43	17	40
१३	भ. २९/०३ से, प्रदोष व्रत (देखें पृ. 88), **धन त्रयोदशी, श्रीहनुमान जयन्ती**, (F)	६	१०	५७	२५	6	44	17	39
१४	भ. १/५६ तक, **नरक चौदश**, रूप चौदश, यमाय तर्पण व दीपदान, (G)	६	११	५७	२४	6	45	17	38
३०	**कार्तिक अमावस, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन** (देखें पृ. 92),(H)	६	१२	५७	२५	6	45	17	37

(A) प्रा., बुध चित्रा में २६/३३, **(B)** चतुर्थी व्रत, दशरथ चतुर्थी, **(C)** वृश्चिक में ५६/३३, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ **(D)** स.सि.यो. **(E)** यमाय दीपदानं **(F)** मासशिवरात्रि व्रत, श्रीधनवन्तरी जयंती, यमायं प्रीत्यर्थं दीपदानं **(G)** शनि ज्ये. (२) में ४/३३, गुरु हस्त (३) में ४९/२३, श्रीहनुमान पूजनार्चनाय च **(H)** कुबेर पूजा, सायं देवालये दीपदानं, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), काली पूजा, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 23 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	३	८	६	५	७	७	४	१०
०५	०८	२३	०२	१५	११	१९	१५	१५
५५	२२	२७	४६	१४	३६	२३	५०	५०
१४	१७	३५	१९	३६	२२	४५	३६	३६
59	785	42	101	12	72	5	3	3
46	6	36	11	32	31	47	11	11
चित्रा ४	पुष्य २	पूषा ४	चित्रा ३	हस्त २	अनु ३	ज्ये. १	पूभा १	शत ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

८ श. शु. | ६ गु. | ९ मं. | ७ सू. बु. | ५ रा. | १० | ४ चं. | ११ के. | १ | ३ | १२ | २

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 30 अक्तू.

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	६	८	६	५	७	७	४	१०
१२	०४	२८	१४	१६	२०	२०	१५	१५
५४	५४	२७	२३	४१	०३	०५	२८	२८
१८	५७	४७	३०	३२	१९	२२	२१	२१
60	712	43	97	12	72	6	3	3
00	18	15	33	16	18	8	11	11
स्वा २	चित्रा ४	उषा १	स्वा ३	हस्त ३	ज्ये. २	ज्ये. २	पूभा १	शत ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

८ श. शु. | ६ गु. | ९ मं. | ७ सू. चं. बु. | ५ रा. | १० | ४ | ११ के. | १ | ३ | १२ | २

कार्तिक कृष्ण पक्षफल–

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी (19 अक्तू.) को पतिव्रता स्त्रियां अपने पति के मंगल-हेतु एवं आयु-वृद्धि की कामना से '**करवा-चौथ**' का व्रत रखती हैं। वे निराहार रहकर सायंकाल को श्रीगणेश पूजन, करवा-दान, शिव-पार्वती पूजन एवं चन्द्रमा को अर्घ्य प्रदान कर, पति की प्रतिष्ठा करने के उपरान्त ही स्वयं भोजन करती हैं। **अहोई अष्टमी** (22 अक्तू.) का व्रत, पूजन भी प्रदोष-व्यापिनी अष्टमी के दिन सन्तान व पति के कल्याण हेतु किया जाता है। **रमा एकादशी** (26 अक्तू.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से अनेक पापों का क्षय तथा चिरस्थायी धन-सम्पदा प्राप्त होती है। **धन त्रयोदशी** (28 अक्तू.) को सायं नवीन बर्तन का क्रय करना, सायंकाले श्रीलक्ष्मी नारायण का पूजन करने के बाद अनाज, वस्त्र, औषधियां एवं यमार्थ दीपदान करने से अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता। ता. 28 अक्तू. को अर्द्धरात्रि चतुर्दशी रुद्रावतार श्रीहनुमान जयन्ती का पर्व उत्तरी भारत में मनाया जाएगा। 29 अक्तू. को नरक-चौदश के दिन बिजली, अग्नि, उल्का आदि से मृतकों की शान्ति के लिए चार मुख वाले दीपक को प्रज्वलित करके यथाशक्ति दान करें। सायंकाल दक्षिण दिशा की ओर मुख करके जल, तिल और कुश लेकर तर्पण करें। ता. 30 अक्तू. रविवार **कार्तिक अमावस्या (दीपावली)** को प्रदोषकाल में दीपदान करके अपने गृह के पूजा-स्थान में मन्त्रपूर्वक दीप प्रज्वलित करके महालक्ष्मी की यथाविधि पूजा करनी चाहिए। (**देखें पृ. 92**)। **संक्रां. राशिफल**–मिथुन, कर्क, तुला, धनु एवं मकर राशि वालों के लिए कार्तिक सं. लाभदायक रहेगी। **आकाश लक्षण**–पक्ष के पूर्वार्द्ध में आकाश निर्मल रहे, उत्तरार्द्ध में उत्तर-पश्चिमी विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं। कार्तिक अमावस रविवार को होने से पृथ्वी पर विभिन्न देशों के मध्य युद्धमय माहौल रहेगा। भारी जन-हानि हो–रविर्युद्धाय-भूभुजाम्॥

वि. संवत् २०७३, कार्तिक शुक्ल पक्ष शाकः १९३८ तारीखें चंद्र राशि ... से 14 नवं. तक) हिजरी सन् 1438 भा.स्टैं.टा. जालन्धर

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन–प्रातः गुरु पूर्व–क्षितिज के पास दृश्य होगा। सायं शनि पश्चिम में, उससे ऊपर शुक्र तथा मंगल पश्चिम–कपाल में होगा। बुध अभी अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२७.०५	१	चंद्र	४७	१५	स्वा	१३	८	आयु	४०	१८	किं	१४	७	9	29	31	१६	तुला	**गोवर्धन पूजा**, अन्नकूट पूजा, गोक्रीड़ा, बलि व मार्गपाली पूजा (A)	६	१३	५७	२८	6	46	17	36
२७.००	२	मंग	५३	३०	विशा	२०	३३	सौभा	४२	२८	बा	२०	२३	10	30	नवं	१७	वृ. ३/४०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **भ्रातृ (भाई)-दूज**, यम–द्वितीया, **मंगल मकर** (B)	६	१४	५७	३३	6	47	17	35
२६.५५	३	बुध	५९	३३	अनु	२७	५३	शोभ	४४	३०	तै	२६	३२	11	सफ	2	१८	वृश्चिक	बुध विशा. में २५/०३, सफर (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल (C)	६	१५	५७	३५	6	48	17	34
२६.५३	४	गुरु	६०	००	ज्ये	३४	५३	अति	४६	१५	व	३२	२१	12	2	3	१९	ध. ३४/५३	भ. ३२/२१ से, दूर्वा गणपति व्रत, नाग व्रत,	६	१६	५७	४४	6	49	17	34
२६.५०	४	शुक्र	५	८	मूल	४१	२०	सुक	४७	२८	वि	५	८	13	3	4	२०	धनु	भ. ५/०८ तक, गण्डमूल 23/21 तक,	६	१७	५७	५३	6	49	17	33
२६.४५	५	शनि	९	५५	पू.षा.	४६	४८	धृति	४७	५५	बा	९	५५	14	4	5	२१	धनु	जया-पंचमी, ज्ञान–पंचमी	६	१८	५८	०५	6	50	17	32
२६.४०	६	रवि	१३	३५	उ.षा.	५१	००	शूल	४७	२०	तै	१३	३५	15	5	6	२२	म. २/५५	सूर्य विशा. में ४/१०, **सूर्य षष्ठी (छट) पर्व (बिहार)**, स्कन्द षष्ठी(D)	६	१९	५८	१६	6	51	17	31
२६.३८	७	चंद्र	१५	४५	श्रव	५३	३५	गंड	४५	३०	व	१५	४५	16	6	7	२३	मकर	भ. १५/४५ से ४५/५८ तक, **शुक्र धनु में १२/४३**, स.सि.यो.	६	२०	५८	३०	6	52	17	31
२६.३३	८	मंग	१६	१०	धनि	५४	२०	वृद्धि	४२	१५	बव	१६	१०	17	7	8	२४	कुं. २४/१०	**पंचक प्रारम्भ २४/१०, बुध वृश्चिक में ४४/२५, गोपाष्टमी**	६	२१	५८	४६	6	53	17	30
२६.२८	९	बुध	१४	४०	शत	५३	८	ध्रुव	३७	२३	कौ	१४	४०	18	8	9	२५	कुम्भ	**अक्षय-नवमी**, कूष्माण्ड (धात्री)-नवमी, आरोग्य व्रत	६	२२	५९	०१	6	54	17	29
२६.२५	१०	गुरु	११	१०	पू.भा.	५०	५	व्या	३१	००	गर	११	१०	19	9	10	२६	मी. ३६/००	भ. ३८/२८ से, बुध अनु. में ५३/०३, **भीष्मपंचक प्रारम्भ** (E)	६	२३	५९	१८	6	54	17	28
२६.२३	११	शुक्र	५	४५	उ.भा.	४५	१३	हर्ष	२३	८	वि	५	४५	20	10	11	२७	मीन	भ. ५/४५ तक, **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वै.)**, चातुर्मास्य व्रत,(F)	६	२४	५९	३८	6	55	17	28
००.००	१२	शुक्र	५८	४३	००	००	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	द्वादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२६.१८	१३	शनि	५०	१५	रेव	३८	५५	वज्र	१३	५८	कौ	२४	२९	21	11	12	२८	मे. ३८/५५	**पंचक समाप्त ३८/५५, शनि प्रदोष व्रत**, गण्डमूल विचार	६	२६	००	००	6	56	17	27
२६.१५	१४	रवि	४०	५३	अश्वि	३१	३८	सिद्धि व्य.	३ ५२	४५ ५५	गर	१५	३४	22	12	13	२९	मेष	भ. ४०/५३ से, **वैकुण्ठ चतुर्दशी**, गण्डमूल 19/36 तक, स.सि.यो.	६	२७	००	२१	6	57	17	27
२६.१०	१५	चंद्र	३१	००	भर	२३	४३	वरी	४१	४५	वि	५	५७	23	13	14	३०	वृ. ३६/४३	भ. ५/५७ से, **कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयन्ती, भीष्मपंचक**(G)	६	२७	५९	४८	6	58	17	26

(A) विश्वकर्मा दिवस (पंजाब), (B) में ४/३५, यमुना-स्नान, विश्वकर्मा-पूजन, कलम-दवात-पूजन, नवम्बर मास प्रारम्भ (C) 17/57 से, (D) वह्निमहोत्सव, (E) हरिप्रबोधिनी एका. व्रत (स्मार्त) (F) नियमादि समाप्त, तुलसी विवाह, हरिप्रबोधोत्सव, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी (G) समाप्त, कार्तिक स्नान समाप्त, मंगल श्रव. में ४४/३८, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मेला पुष्करतीर्थ (राज.), त्रिपुरोत्सव, पद्मक योग 16/27 से 19/22 तक, महाकार्तिकी

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 8 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	९	९	६	५	८	७	४	१०
२१	२३	०४	२८	१८	००	२१	१४	१४
५५	५९	५९	४५	३०	५२	०२	५९	५९
२१	१६	५७	१२	०७	३६	०९	४४	४४
60	790	43	93	11	71	6	3	3
15	32	55	43	47	54	30	11	11
विशा	धनि	उषा	विशा	हस्त	मूल	ज्ये.	पूफा	उफा
१	१	३	३	३	१	२	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

८ श. | ६ गु. | ९ शु. | ७ सू. बु. | ५ रा. | १० चं. मं. | ४ | ११ के. | १ | ३ | १२ | २

चन्द्रे पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 14 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
६	०	९	७	५	८	७	४	१०
२७	१९	०९	०८	१९	०८	२१	१४	१४
५७	३९	२४	०२	३९	०३	४१	४०	४०
१३	२२	२७	४०	५८	१८	४२	४०	४०
60	922	44	91	11	71	6	3	3
24	10	17	51	26	35	42	11	11
विशा	कृ	उषा	अनु	हस्त	मूल	ज्ये.	पूफा	उफा
३	२	४	२	३	३	२	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

८ श. बु. | ६ गु. | ९ शु. | ७ सू. | ५ रा. | १० मं. | ४ | ११ के. | १ चं. | ३ | १२ | २

कार्तिक शुक्ल पक्षफल–

कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा (31 अक्तू.) को श्रीकृष्ण भगवान् की प्रसन्नता के लिए **अन्नकूट पर्व** के उपलक्ष्य में छप्पन (56) भोग (अर्थात् अनेक प्रकार) के पकवान् बनाकर गोवर्धन व श्रीकृष्ण की पूजा की जाती है। **द्वितीया** (1 नवं.) को **भाई-दूज** के दिन स्नान उपरान्त शिव-पार्वती एवं यम पूजनोपरान्त बहन अपने भाई की मंगल-कामना हेतु उसे तिलक लगाती है। भाई अपनी बहन को श्रद्धानुसार वस्त्राभूषण आदि का उपहार देता है। **अक्षय नवमी** (9 नवं.) को किया हुआ पूजा-पाठ और दिया हुआ दान-पुण्य अक्षय होता है। **भीष्मपंचक** पंचदिनात्मक होने से 10 से 14 नवं. तक रहेंगे। उत्तर-भारत में कुछ विद्वान् परम्परानुसार भीष्म पंचकों में विवाहादि शुभ कार्यों को करना शुभ नहीं मानते, जबकि उ.प्र., राज., महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में यह परम्परा शास्त्र-विहित न होने के कारण **भीष्मपंचक** सम्बन्धी दोष अविचारणीय माने जाते हैं। 11 नवं. द्वादशी में कुछ प्रदेशों में हरिप्रबोध उत्सव भी मनाया जाता है। **तुलसी विवाह** द्वादशी तिथि (11 नवं.) को विवाह-नक्षत्र (उ.भा.) कालीन में ही करना शास्त्रसम्मत होगा। **वैकुण्ठ चतुर्दशी** (13 नवं.) को स्नान-ध्यानादि के बाद भगवान् विष्णु एवं शिव दोनों की कमल-पुष्पों सहित पूजार्चन एवं स्तोत्र पाठ किया जाता है। ता. 14 नवं. को **कार्तिक पूर्णिमा** (कृतिका नक्षत्र युक्त) (पद्मक योग-देखें पृ. 88) के दिन कार्तिक स्नान-दानादि का विशेष माहात्म्य होगा। इसीदिन श्रीसत्यनारायण का व्रत रखकर अनाज, गर्मवस्त्रों एवं फलों आदि का दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। कार्तिक मास में पाँच रविवार तथा पाँच सोमवार होने से देश में कहीं अनाज की कमी, अत्यधिक महँगाई, प्राकृतिक प्रकोपों से जन, धन व कृषि की हानि, उपद्रव, छत्रभंग (सत्ता-परिवर्तन) आदि आकस्मिक घटनाएं घटित हों। **आकाश लक्षण**–उत्तर-पूर्वी एवं पर्वतीय क्षेत्रों में खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**–का. शु. १२ की रात्रि को आकाश निर्मल रहे, तो सुभिक्ष हो।

वि. संवत् २०७३, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाक: १९३८ | **सन् 2016 ई. (ता. 15 से 29 नवंबर तक)** हिजरी सन् 1438 | भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:

ग्रह दर्शन–प्रातः गुरु पूर्व में होगा। सायं शु.-श. पश्चिम में होंगे, 23 नवं. से शनि पश्चिम में ही लुप्त हो जाएगा। मं. पश्चिम-कपाल में तथा 19 नवं. से बु. भी पश्चिम में दिखेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	कार्ति. शक	सफर मु.	नवंबर	मार्ग. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.०५	१	मंग	२१	१०	कृति	१५	४५	परि	३०	४०	कौ	२१	१०	24	14	15	मा	वृष	सूर्य वृश्चिक में ५८/१५, मार्गशीर्ष संक्रान्ति, मु. ४५, पुण्यकाल(A)	६	२९	०१	१७	6	59	17	25
२६.०३	२	बुध	११	४८	रोहि	८	१५	शिव	२०	३	गर	११	४८	25	15	16	२	मि. ३४/५०	भद्रा ३७/३७ से प्रा., सौभाग्य सुन्दरी व्रत, स. सि. यो.	७	००	०१	४५	7	00	17	25
२५.५८	३	गुरु	३	२५	मृग. आर्द्रा	१ ५६	४० ३०	सिद्ध	१०	१८	वि	३	२५	26	16	17	३	मिथुन	भद्रा ३/२५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14)	७	०१	०२	१५	7	01	17	24
००.००	४	गुरु	५६	२८	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.५८	५	शुक्र	५१	२०	पुन	५३	१०	साध्य शुभ	१ ५४	४८ ४५	कौ	२३	४९	27	17	18	४	क. ३८/४८	शुक्र पू.षा. में २२/०५, स. सि. यो.	७	०२	०२	४६	7	01	17	24
२५.५३	६	शनि	४८	१०	पुष्य	५१	४५	शुक्ल	४९	१८	गर	१९	४५	28	18	19	५	कर्क	भ. ४८/१० से, सूर्य अनु. में १६/३०, बुध ज्ये. में ३६/३५, बुध (B)	७	०३	०३	२१	7	02	17	23
२५.५०	७	रवि	४७	१३	अश्ले	५२	२८	ब्रह्म	४५	३३	वि	१७	४२	29	19	20	६	सिं. ५२/२८	भ. १७/४२ तक, गण्डमूल विचार, नैपच्यून मार्गी 8 घं.-01 मिं.	७	०४	०३	५६	7	03	17	23
२४.४८	८	चंद्र	४८	१८	मघा	५५	१३	ऐन्द्र	४३	२५	बा	१७	४६	30	20	21	७	सिंह	**कालभैरवाष्टमी**, सूर्य सायन धनु में ४९/३५, गण्डमूल 29/09 तक,	७	०५	०४	३१	7	04	17	23
२५.४३	९	मंग	५१	२०	पू.फा.	५९	४३	वैधृ	४२	४५	तै	१९	४९	मा	21	22	८	सिंह	शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ	७	०६	०५	०९	7	05	17	22
२५.४०	१०	बुध	५६	१५	उ.फा.	६०	००	विष्क	४३	१५	व	२३	४८	2	22	23	९	कं. १६/०८	भ. २३/४८ से ५६/१५ तक, **शनि पश्चिम में अस्त 23 घं.-50 मिं.**	७	०७	०५	५०	7	06	17	22
२५.३८	११	गुरु	६०	००	उ.फा.	५	३५	प्रीति	४४	३८	बव	२८	४९	3	23	24	१०	कन्या		७	०८	०६	३१	7	07	17	22
२५.३३	११	शुक्र	१	२३	हस्त	१२	२५	आयु	४६	३३	बा	१	२३	4	24	25	११	तु. ४६/०५	**उत्पन्ना एकादशी व्रत**	७	०९	०७	१५	7	08	17	21
२५.३२	१२	शनि	७	३८	चित्रा	१९	५०	सौभा	४८	४५	तै	७	३८	5	25	26	१२	तुला	**शनि प्रदोष व्रत,**	७	१०	०८	०२	7	08	17	21
२५.३०	१३	रवि	१४	५	स्वा	२७	२०	शोभ	५०	५८	व	१४	५	6	26	27	१३	तुला	भ. १४/०५ से ४७/१७ तक, मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबालाजी जयन्ती	७	११	०८	४९	7	09	17	21
२५.२८	१४	चंद्र	२०	२८	विशा	३४	४५	अति	५२	५८	शकु	२०	२८	7	27	28	१४	वृ. १७/५५	**बुध मूल (१) धनु में ३७/३८,** शनि ज्ये. (३) में १५/०३, देविका(C)	७	१२	०९	३८	7	10	17	21
२५.२५	३०	मंग	२६	३३	अनु	४१	५३	सुक	५४	४५	ना	२६	३३	8	28	29	१५	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष (भौमवती) अमावस,** शुक्र उ.षा. में ३८/१५, गण्डमूल 23/56 से	७	१३	१०	२५	7	11	17	21

(A) सं. अगले दिन दोपहर 12/41 तक, गुरु हस्त (४) में ४१/४५, आकाशदीप दान समाप्ति, मृगछोड़ी स्नान प्रा. **(B)** पश्चिम में उदय ३४/४८, **(C)** स्नान (का.), मेला पुरमण्डल (जम्मू)

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	९	७	५	८	७	४	१०
०५	००	१४	१८	२०	१६	२२	१४	१४
००	४७	३५	३९	५८	२३	२९	१८	१८
३७	३४	२७	३५	२९	०५	११	२४	२४
60	763	44	89	10	71	6	3	3
36	44	36	47	54	7	52	10	10
अनु	मघा	श्रव	ज्ये	हस्त	पूषा	ज्ये.	पूफा	शत
१	१	२	१	४	१	२	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

१ (लग्न) – ; २ – ; ३ – ; ४ – ; ५ – चं. रा. ; ६ – गु. ; ७ – ; ८ – सू. बु. श. ; ९ – शु. ; १० – मं. ; ११ – के. ; १२ –

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	९	८	५	८	७	४	१०
१३	०७	२०	००	२२	२५	२३	१३	१३
०६	३०	३३	२६	२३	५०	२४	५२	५२
११	५८	३६	१७	३४	०६	४७	५८	५८
60	715	44	85	10	70	7	3	3
48	54	57	48	15	31	2	11	11
अनु	अनु	श्रव	मूल	हस्त	पूषा	ज्ये.	पूफा	शत
३	२	४	१	४	४	३	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

१ (लग्न) – ; २ – ; ३ – ; ४ – ; ५ – रा. ; ६ – गु. ; ७ – ; ८ – सू. चं. श. ; ९ – शु. बु. ; १० – मं. ; ११ – के. ; १२ –

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की अष्टमी तिथि (21 नवं.) को भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप महाकाल भैरव की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। इसदिन '**जागरं चोपवासं च कृत्वा कालाष्टमीदिने। प्रयतः पापनिर्मुक्तः शैवो भवति शोभनः।**' के अनुसार उपवास करके रात्रि में जागरण करने से पाप क्षीण होते हैं और व्रती कल्याण प्राप्त करता है। **उत्पन्ना एकादशी** (25 नवं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्वप्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। त्रयोदशी से अमावस्या (27 से 29 नवं.) तक जम्मू के निकट मेला पुरमण्डल तथा देविका स्नान कुरुक्षेत्र में पुण्य पर्व मनाया जाता है। **मार्गशीर्ष संक्रान्ति** 15, नवम्बर, मंगलवार, ४५ मुहूर्त्ति, ता. 16 नवं. की प्रातः 6 बजकर 17 मिनट पर तुला लग्न में प्रवेश करेगी। इस सं. के स्नानदानादि, जपादि का पुण्यकाल आगामी दिन 16 नवं. को दोप. 12 घं.-41 मिं. तक रहेगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. व्यापारियों तथा ब्राह्मणों, लेखकों के लिए लाभप्रद होगी। **लोक-भविष्य**–ता. 16 नवं. से सूर्य-शनि योग रहने से केन्द्रीय नेतृत्व के लिए किसी कठिन चुनौती का सामना होगा। परन्तु गुरु की मकर राशि (भारत की प्रभावराशि) पर दृष्टि रहने से कठिन समस्या को सफलतापूर्वक सुलझा पाएंगे। मार्गशीर्ष मास में पाँच मंगलवारों का समावेश होने से राजनेताओं में विग्रह, छत्रभंग एवं महंगाई, उपद्रव, दंगे-फिसाद आदि के कारण प्रजा में असन्तोष पैदा हो। किसी प्रमुख राजनेता की मृत्यु या अपदस्थ होने के योग हैं। मार्गशीर्ष सं. भी मंगलवार को तथा 29 नवं. भौमवती अमावस होने से तिल, तेल, गुड़, शक्कर, ईंधन, वनस्पति एवं सब प्रकार की मान पंसारी के भाव तेज होंगे। कुछ राज्यों में शासन परिवर्तन, अग्निकाण्ड, युद्धादि का भय होगा। ता. 23 नवं. से शनि वृश्चिक राशि में अस्त होने से प्रजा एवं

वि. संवत् २०७३, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाक: १९३८ तारीखें चंद्र राशि ... 13 दिसंबर तक) हिजरी सन् 1438 भा.स्टैं.टा. जालन्धर

वि. संवत् २०७३, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शक: १९३८ तारीखें सन् 2016 ई. (30 नवम्बर से 13 दिसंबर तक) हिजरी सन् 1438

हेमन्त ऋतु: **जालन्धर**

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	मा. ग्रा.	सफर मु.	नवम्बर	मार्ग. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु पूर्व में होगा। सायं बुध पश्चिम क्षितिज में, शुक्र उससे कुछ ऊपर तथा मंगल पश्चिमकपाल में होगा। शनि अभी अस्त है।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२५.२०	१	बुध	३२	१३	ज्ये.	४८	३३	धृति	५६	१०	बव	३२	१३	9	29	30	१६	ध. ४८/३३	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	७	१४	११	१५	7	12	17	20
२५.१८	२	गुरु	३७	२३	मूल	५४	४०	शूल	५७	८	बा	४	४८	10	30	दिसं	१७	धनु	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, दिसम्बर मास प्रारम्भ, गण्डमूल 29/05 तक	७	१५	१२	०८	7	13	17	20
२५.१८	३	शुक्र	४१	५०	पू.षा.	६०	००	गंड	५७	३५	तै	९	३७	11	रबि	2	१८	धनु	सूर्य ज्ये. में २६/३८, मंगल धनि. में ३७/३५, **शुक्र मकर में (A)**	७	१६	१३	००	7	13	17	20
२५.१५	४	शनि	४५	२८	पू.षा.	०	८	वृद्धि	५७	२०	व	१३	३९	12	2	3	१९	म. १६/२०	भद्रा १३/३९ से ४५/२८ तक,	७	१७	१३	५२	7	14	17	20
२५.१३	५	रवि	४७	५८	उ.षा.	४	४०	ध्रुव	५६	१५	बव	१६	४३	13	3	4	२०	मकर	नागपंचमी, श्रीपञ्चमी, श्रीराम विवाहोत्सव, गुरु चित्रा (१) में ३३/२८,	७	१८	१४	४८	7	15	17	20
२५.१०	६	चंद्र	४९	१३	श्रव	८	१०	व्या.	५४	८	कौ	१८	३६	14	4	5	२१	कुं. ३९/२८	**पंचक प्रा. ३९/२८, स्कन्द षष्ठी,** गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी, स.सि.यो.	७	१९	१५	४१	7	16	17	20
२५.०८	७	मंग	४८	५५	धनि	१०	२०	हर्ष	५०	५०	गर	१९	४	15	5	6	२२	कुम्भ	भद्रा ४८/५५ से प्रा., मित्र (विष्णु) सप्तमी	७	२०	१६	३७	7	17	17	20
२५.०८	८	बुध	४७	००	शत	११	००	वज्र	४६	१५	वि	१७	५८	16	6	7	२३	मी. ५५/२५	भ. १७/५८ तक, श्रीदुर्गाष्टमी	७	२१	१७	३५	7	17	17	20
२५.०५	९	गुरु	४३	१८	पू.भा.	९	५८	सिद्धि	४०	१८	बा	१५	९	17	7	8	२४	मीन	नन्दा नवमी, बुध पू.षा. में ३४/२८	७	२२	१८	३३	7	18	17	20
२५.०५	१०	शुक्र	३७	५५	उ.भा.	७	१३	व्य.	३२	५८	तै	१०	३७	18	8	9	२५	मीन	राहु मघा (४) केतु शत. (2) में १७/३५, गंडमूल 10/12 से प्रा.	७	२३	१९	३३	7	19	17	21
२५.०३	११	शनि	३१	३	रेव/अश्वि	२/५७	५३/१५	वरी	२४	२५	व	४	२९	19	9	10	२६	मे. २/५३	भ. ४/२९ से ३१/०३ तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयन्ती(B)**	७	२४	२०	३३	7	20	17	21
२५.०३	१२	रवि	२३	००	भर	५०	३५	परि	१४	५३	बा	२३	००	20	10	11	२७	मेष	प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, **मंगल कुम्भ में २८/५३ (18 घं.-53 मिं.) (C)**	७	२५	२१	३२	7	20	17	21
२५.०१	१३	चंद्र	१४	५	कृति	४३	१५	शिव/सिद्धि	४/५३	३५/५५	तै	१४	५	21	11	12	२८	वृ. ३/४५	पिशाचमोचन श्राद्ध, **शिव चतुर्दशी व्रत**	७	२६	२२	१३	7	21	17	21
२४.५९	१४	मंग	४	४८	रोहि	३५	४८	साध्य	४३	१३	व	४	४८	22	12	13	२९	वृष	भ. ४/४८ से ३०/१२ तक, **मार्गशीर्ष पूर्णिमा** (प्रात: 9/17 बाद), **(D)**	७	२७	२३	३२	7	22	17	21
००.००	१५	मंग	५५	३५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**पूर्णिमा तिथि का क्षय** ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

(A) 18 घं.-42 मिं., रबि-उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ (B) पंचक समाप्त 8 घं.-29 मिं., गण्डमूल विचार (C) शुक्र श्रव. में ४/४३, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत, गण्डमूल 6/14 तक (D) श्रीदत्तात्रेय जयन्ती, त्रिपुरभैरव जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 7 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	९	८	५	९	७	४	१०
२१	१६	२६	११	२३	०५	२४	१३	१३
१३	३४	३४	१९	४२	११	२१	२७	२७
०६	१९	००	५४	४८	२५	१४	३२	३२
60	807	45	73	9	69	7	3	3
56	43	9	54	27	40	6	11	11
ज्ये. २	श्रव ३	धनि १	मूल ४	चित्रा १	उषा ३	ज्ये. ३	पूफा १	शत ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

भाव	ग्रह
८	सू. श.
९	बु.
१०	मं. शु.
११	चं. के.
१२	
१	
२	
३	
४	
५	रा.
६	गु.
७	

भौमे चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 13 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	१०	८	५	९	७	४	१०
२७	१३	०१	१७	२४	१२	२५	१३	१३
१८	०४	०५	५२	३७	०७	०३	०८	०८
५०	४८	१२	५६	५३	२४	४६	२७	२७
61	911	45	49	8	68	7	3	3
00	48	15	52	47	50	6	11	11
ज्ये. ४	रोहि १	धनि ३	पूषा २	चित्रा १	श्रव. १	ज्ये. ३	मघा ४	शत २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रात: 5:30

भाव	ग्रह
८	सू. श.
९	बु.
१०	शु.
११	मं. के.
१२	
१	
२	चं.
३	
४	
५	रा.
६	गु.
७	

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की पंचमी को श्रीराम-विवाहोत्सव मनाया जाता है। इसी दिन श्रीपंचमी को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी या ताम्र अथवा चाँदी की मूर्ति को सुवर्णादि के कलश पर स्थापित कर गणपति मातृका एवं पंचादि उपचारों से पूजन एवं श्रीसूक्त लक्ष्मी-सूक्त का पाठ, ब्राह्मण भोजन, दानादि करने से सौभाग्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। ता. 10 दिसं. को **मोक्षदा एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसीदिन श्रीगीता जयन्ती के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा-स्तुति करके श्रीमद्भगवद्गीता का सुगन्धित फूलों द्वारा पूजा, स्वाध्याय, मनन व चिन्तन करना चाहिए। इसीदिन भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। 13 दिसं. मार्गशीर्ष पूर्णिमा को ब्रह्मा, विष्णु महेश के अंशावतार श्रीदत्तात्रेय की बालरूप में पूजा की जाती है। **ग्रह गोचर**–2 दिसं. को शुक्र मकर राशि में आने तथा उस पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टियाँ होने से गेहूँ, जौं, चने, बाजरा, चावल आदि धान्यों के मूल्यों में वृद्धि होगी। प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी फसलों को हानि पहुँचेगी।– **मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्यविनाशकृत्। जायतेऽत्र समर्घाणि नाऽत्र कार्या विचारणा।** पक्ष में सूर्य-शनि योग तथा मंग.-गुरु (ता. 11 दिसं. से) मध्य षडाष्टक सम्बन्ध रहने से खण्ड वर्षा, प्राकृतिक प्रकोप रहेंगे। राजनीतिक षड्यन्त्र, कुछ राज्यों में शासन-परिवर्तन तथा पश्चिम-मुस्लिम देशों में आतंकी घटनाएं व युद्धमय वातावरण बनेगा। ता. 11 दिसं. से मंगल कुम्भ राशि में आने से चावल आदि सभी प्रकार के अन्न महंगे होंगे–**भूसुते कुंभराशिस्थे सर्वधान्यमहर्घता।।** ***आकाश लक्षण***–देश के उत्तर-पश्चिमी भागों में खण्ड वर्षा व तेज शीत वायु चलने के योग हैं। मार्ग. पूर्णिमा का क्षय होने से कहीं छत्रभंग, प्रजा को पीड़ा व अनाजादि महँगा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७३, मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष शाक: १९३८															तारीखें				चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	सन् 2016 ई. (ता. 15 से 29 नवंबर तक) हिजरी सन् 1438 सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु:					भा.स्टैं.टा. जालन्धर			
दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मि.	योग	समाप्ति काल घं.	मि.	करण	समाप्ति काल घं.	मि.	कार्ति. शु.	मार्ग. सं.	नवंबर	मार्ग. प्र.		ग्रह दर्शन–प्रातः गुरु पूर्व में होगा। सायं शु.-श. पश्चिम में होंगे, 23 नवं. से शनि पश्चिम में ही लुप्त हो जाएगा। मं. पश्चिम-कपाल में तथा 19 नवं. से बु. भी पश्चिम में दिखेगा।	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२६.०५	१	मंग	२१	१०	कृति	१५	४५	परि	३०	४०	कौ	२१	१०	24	14	15	मा	वृष	सूर्य वृश्चिक में ५८/१५, मार्गशीर्ष संक्रान्ति, मु. ४५, पुण्यकाल(A)	६	२९	०१	१७	6	59	17	25
२६.०३	२	बुध	११	४८	रोहि	८	१५	शिव	२०	३	गर	११	४८	25	15	16	२	मि. ३४/५०	भद्रा ३७/३७ से प्रा., सौभाग्य सुन्दरी व्रत, स. सि. यो.	७	००	०१	४५	7	00	17	25
२५.५८	३	गुरु	३	२५	मृग आर्द्रा	१ ५६	४० ३०	सिद्ध	१०	१८	वि	३	२५	26	16	17	३	मिथुन	भद्रा ३/२५ तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 14)**	७	०१	०२	१५	7	01	17	24
००.००	४	गुरु	५६	२८	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.५८	५	शुक्र	५१	२०	पुन	५३	१०	साध्य शुभ	१ ५४	४८ ४५	कौ	२३	४९	27	17	18	४	क. ३८/४८	शुक्र पू.षा. में २२/०५, स. सि. यो.	७	०२	०२	४६	7	01	17	24
२५.५३	६	शनि	४८	१०	पुष्य	५१	४५	शुक्ल	४९	१८	गर	१९	४५	28	18	19	५	कर्क	भ. ४८/१० से, सूर्य अनु. में १६/३०, बुध ज्ये. में ३६/३५, बुध (B)	७	०३	०३	२१	7	02	17	23
२५.५०	७	रवि	४७	१३	अश्ले	५२	२८	ब्रह्म	४५	३३	वि	१७	४२	29	19	20	६	सिं. ५२/२८	भ. १७/४२ तक, गण्डमूल विचार, नैपच्यून मार्गी 8घं.-01मि.	७	०४	०३	५६	7	03	17	23
२४.४८	८	चंद्र	४८	१८	मघा	५५	१३	ऐन्द्र	४३	२५	बा	१७	४६	30	20	21	७	सिंह	**कालभैरवाष्टमी**, सूर्य सायन धनु में ४९/३५, गण्डमूल 29/09 तक,	७	०५	०४	३१	7	04	17	23
२५.४३	९	मंग	५१	२०	पू.फा.	५९	४३	वैधृ	४२	४५	तै	१९	४९	मा	21	22	८	सिंह	शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ	७	०६	०५	०९	7	05	17	22
२५.४०	१०	बुध	५६	१५	उ.फा.	६०	००	विष्क	४३	१५	व	२३	४८	2	22	23	९	कं. १६/०८	भ. २३/४८ से ५६/१५ तक, **शनि पश्चिम में अस्त 23घं.-50मिं.**	७	०७	०५	५०	7	06	17	22
२५.३८	११	गुरु	६०	००	उ.फा.	५	३५	प्रीति	४४	३८	बव	२८	४९	3	23	24	१०	कन्या		७	०८	०६	३१	7	07	17	22
२५.३३	११	शुक्र	१	२३	हस्त	१२	२५	आयु	४६	३३	बा	१	२३	4	24	25	११	तु. ४६/०५	**उत्पन्ना एकादशी व्रत**	७	०९	०७	१५	7	08	17	21
२५.३२	१२	शनि	७	३८	चित्रा	१९	५०	सौभा	४८	४५	तै	७	३८	5	25	26	१२	तुला	**शनि प्रदोष व्रत,**	७	१०	०८	०२	7	08	17	21
२५.३०	१३	रवि	१४	५	स्वा	२७	२०	शोभ	५०	५८	व	१४	५	6	26	27	१३	तुला	भ. १४/०५ से ४७/१७ तक, मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबालाजी जयन्ती	७	११	०८	४९	7	09	17	21
२५.२८	१४	चंद्र	२०	२८	विशा	३४	४५	अति	५२	५८	शकु	२०	२८	7	27	28	१४	वृ. १७/५५	**बुध मूल (१) धनु में ३७/३८**, शनि ज्ये. (३) में १५/०३, देविका(C)	७	१२	०९	३८	7	10	17	21
२५.२५	३०	मंग	२६	३३	अनु	४१	५३	सुक	५४	४५	ना	२६	३३	8	28	29	१५	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष (भौमवती) अमावस,** शुक्र उ.षा. में ३८/१५, गण्डमूल 23/56 से	७	१३	१०	२५	7	11	17	21

(A) सं. अगले दिन दोपहर 12/41 तक, गुरु हस्त (४) में ४१/४५, आकाशदीप दान समाप्ति, मृगछोड़ी स्नान प्रा. **(B)** पश्चिम में उदय ३४/४८, **(C)** स्नान (का.), मेला पुरमण्डल (जम्मू)

चन्द्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 21 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	४	९	७	५	८	७	४	१०
०५	००	१४	१८	२०	१६	२२	१४	१४
००	४७	३५	३९	५८	२३	२९	१८	१८
३७	३४	२७	३५	२९	०५	११	२४	२४
60 36	763 44	44 36	89 47	10 54	71 7	6 52	3 10	3 10
अनु १	मघा १	श्रव २	ज्ये १	हस्त ४	पू.षा १	ज्ये. २	पू.फा १	शत ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

९ शु. | ८ सू. बु. श. | ७ | ६ गु. | ५ चं. रा. | ४ | ३ | २ | १ | १२ | ११ के. | १० मं.

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 29 नवम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	७	९	८	५	८	७	४	१०
१३	०७	२०	००	२२	२५	२३	१३	१३
०६	३०	३३	२६	२३	५०	२४	५२	५२
११	५८	३६	१७	३४	०६	४७	५८	५८
60 48	715 54	44 57	85 48	10 15	70 31	7 2	3 11	3 11
अनु ३	अनु २	श्रव ४	मूल १	हस्त ४	पू.षा ४	ज्ये. ३	पू.फा १	शत ३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

९ शु. बु. | ८ सू. चं. श. | ७ | ६ गु. | ५ रा. | ४ | ३ | २ | १ | १२ | ११ के. | १० मं.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष की अष्टमी तिथि (21 नवं.) को भगवान् शिव के प्रतीकात्मक एवं चमत्कारी स्वरूप महाकाल भैरव की पूजा, जप व संकीर्तन करने का विशेष माहात्म्य कहा गया है। इसदिन **'जागरं चोपवासं च कृत्वा कालाष्टमीदिने। प्रयत: पापनिर्मुक्त: शैवो भवति शोभन:।'** के अनुसार उपवास करके रात्रि में जागरण करने से पाप क्षीण होते हैं और व्रती कल्याण प्राप्त करता है। **उत्पन्ना एकादशी** (25 नवं.) का विधिपूर्वक व्रत रखने से सर्वप्रकार के अभीष्टों की सिद्धि होती है। त्रयोदशी से अमावस्या (27 से 29 नवं.) तक जम्मू के निकट मेला पुरमण्डल तथा देविका स्नान कुरुक्षेत्र में पुण्य पर्व मनाया जाता है। **मार्गशीर्ष संक्रान्ति** 15, नवम्बर, मंगलवार, ४५ मुहूर्त्ति, ता. 16 नवं. की प्रात: 6 बजकर 17 मिनट पर तुला लग्न में प्रवेश करेगी। इस सं. के स्नानदानादि, जपादि का पुण्यकाल आगामी दिन 16 नवं. को दोप. 12घं.-41मि. तक रहेगा। वारानुसार महोदरी तथा नक्षत्रानुसार नन्दा नामक यह सं. व्यापारियों तथा ब्राह्मणों, लेखकों के लिए लाभप्रद होगी। **लोक-भविष्य**–ता. 16 नवं. से सूर्य-शनि योग रहने से केन्द्रीय नेतृत्व के लिए किसी कठिन चुनौती का सामना होगा। परन्तु गुरु की मकर राशि (भारत की प्रभावराशि) पर दृष्टि रहने से कठिन समस्या को सफलतापूर्वक सुलझा पाएंगे। मार्गशीर्ष मास में पाँच मंगलवारों का समावेश होने से राजनेताओं में विग्रह, छत्रभंग एवं महंगाई, उपद्रव, दंगे-फिसाद आदि के कारण प्रजा में असन्तोष पैदा हो। किसी प्रमुख राजनेता की मृत्यु या अपदस्थ होने के योग हैं। मार्गशीर्ष सं. भी मंगलवार को तथा 29 नवं. भौमवती अमावस होने से तिल, तेल, गुड़, शक्कर, ईख, वनस्पति एवं सब प्रकार की माल पंसारी के भाव तेज होंगे। कुछ राज्यों में शासन-परिवर्तन, अग्निकाण्ड, युद्धादि का भय होगा। ता. 23 नवं. से शनि वृश्चिक राशि में अस्त होने से प्रजा एवं राजा को पीड़ा, कृषि-फसलों को टिड्डी-दल से हानि होगी। ता. 29 नवं. भौमवती अमावस होने से श्रीगङ्गा आदि तीर्थों पर स्नानदान, जप, देवपूजन एवं पितृतर्पणादि कृत्यों का विशेष माहात्म्य होगा।

वि. संवत् २०७३, मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष शाके : १९३८ — सन् 2016 ई. (30 नवम्बर से 13 दिसंबर तक) हिजरी सन् 1438

सूर्य दक्षिणायन, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु पूर्व में होगा। सायं बुध पश्चिम क्षितिज में, शुक्र उससे कुछ ऊपर तथा मंगल पश्चिमकपाल में होगा। शनि अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	तारीखें रा. शक	तारीखें सफर मु.	तारीखें नवंबर	तारीखें मा. प्र.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विशेष	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५.२०	१	बुध	३२	१३	ज्ये.	४८	३३	धृति	५६	१०	बव	३२	१३	9	29	30	१६	ध. ४८/३३	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	७	१४	११	१५	7	12	17	20
२५.१८	२	गुरु	३७	२३	मूल	५४	४०	शूल	५७	८	बा	४	४८	10	30	दिसं	१७	धनु	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, दिसम्बर मास प्रारम्भ, गण्डमूल 29/05 तक	७	१५	१२	०८	7	13	17	20
२५.१८	३	शुक्र	४१	५०	पू.षा.	६०	००	गंड	५७	३५	तै	९	३७	11	रबि	2	१८	धनु	सूर्य ज्ये. में २६/३८, मंगल धनि. में ३७/३५, **शुक्र मकर में (A)**	७	१६	१३	००	7	13	17	20
२५.१५	४	शनि	४५	२८	पू.षा.	०	८	वृद्धि	५७	२०	व	१३	३९	12	2	3	१९	म. १६/२०	भद्रा १३/३९ से ४५/२८ तक,	७	१७	१३	५२	7	14	17	20
२५.१३	५	रवि	४७	५८	उ.षा.	४	४०	ध्रुव	५६	१५	बव	१६	४३	13	3	4	२०	मकर	नागपंचमी, श्रीपञ्चमी, श्रीराम विवाहोत्सव, गुरु चित्रा (१) में ३३/२८,	७	१८	१४	४८	7	15	17	20
२५.१०	६	चंद्र	४९	१३	श्रव	८	१०	व्या.	५४	८	कौ	१८	३६	14	4	5	२१	कुं. ३९/२८	**पंचक प्रा. ३९/२८, स्कन्द षष्ठी,** गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी, स.सि.यो.	७	१९	१५	४१	7	16	17	20
२५.०८	७	मंग	४८	५५	धनि	१०	२०	हर्ष	५०	५०	गर	१९	४	15	5	6	२२	कुम्भ	भद्रा ४८/५५ से प्रा., मित्र (विष्णु) सप्तमी	७	२०	१६	३७	7	17	17	20
२५.०८	८	बुध	४७	००	शत	११	००	वज्र	४६	१५	वि	१७	५८	16	6	7	२३	मी. ५५/२५	भ. १७/५८ तक, श्रीदुर्गाष्टमी	७	२१	१७	३५	7	17	17	20
२५.०५	९	गुरु	४३	१८	पू.भा.	९	५८	सिद्धि	४०	१८	बा	१५	९	17	7	8	२४	मीन	नन्दा नवमी, बुध पू.षा. में ३४/२८	७	२२	१८	३३	7	18	17	20
२५.०५	१०	शुक्र	३७	५५	उ.भा.	७	१३	व्य.	३२	५८	तै	१०	३७	18	8	9	२५	मीन	राहु मघा (४) केतु शत. (2) में १७/३५, गंडमूल 10/12 से प्रा.	७	२३	१९	३३	7	19	17	21
२५.०३	११	शनि	३१	३	रेव अश्वि	२ ५७	५३ ३५	वरी	२४	२५	व	४	२९	19	9	10	२६	मे. २/५३	भ. ४/२९ से ३१/०३ तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीता जयन्ती(B)**	७	२४	२०	३३	7	20	17	21
२५.०३	१२	रवि	२३	००	भर	५०	३५	परि	१४	५३	बा	२३	००	20	10	11	२७	मेष	प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, **मंगल कुम्भ में २८/५३ (18घं.-53मिं.) (C)**	७	२५	२१	३२	7	20	17	21
२५.०१	१३	चंद्र	१४	५	कृति	४३	१५	शिव सिद्ध	४ ५३	३५ ५५	तै	१४	५	21	11	12	२८	वृ. ३/४५	पिशाचमोचन श्राद्ध, **शिव चतुर्दशी व्रत**	७	२६	२२	१३	7	21	17	21
२४.५९	१४	मंग	४	४८	रोहि	३५	४८	साध्य	४३	१३	व	४	४८	22	12	13	२९	वृष	भ. ४/४८ से ३०/१२ तक, **मार्गशीर्ष पूर्णिमा** (प्रातः 9/17 बाद), **(D)**	७	२७	२३	३२	7	22	17	21
००.००	१५	मंग	५५	३५	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**पूर्णिमा तिथि का क्षय** ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

(A) $18^{घं.}$-$42^{मिं.}$, रबि-उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ (B) पंचक समाप्त $8^{घं.}$-$29^{मिं.}$, गण्डमूल विचार (C) शुक्र श्रव. में ४/४३, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत, गण्डमूल 6/14 तक (D) श्रीदत्तात्रेय जयन्ती, त्रिपुरभैरव जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 7 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१०	९	८	५	९	७	४	१०
२१	१६	२६	११	२३	०५	२४	१३	१३
१३	३४	३४	१९	४२	११	२१	२७	२७
०६	१९	००	५४	४८	२५	१४	३२	३२
60	807	45	73	9	69	7	3	3
56	43	9	54	27	40	6	11	11
ज्ये.	शत.	धनि.	मूल	चित्रा	उ.षा.	ज्ये.	पू.फा.	शत.
२	३	१	४	१	३	३	१	३
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

भौमे चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 13 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
७	१	१०	८	५	९	७	४	१०
२७	१३	०१	१७	२४	१२	२५	१३	१३
१८	०४	०५	५२	३७	०७	०३	०८	०८
५०	४८	१२	५६	५३	२४	४६	२७	२७
61	911	45	49	8	68	7	3	3
00	48	15	52	47	50	6	11	11
ज्ये.	रोहि.	धनि.	पू.षा.	चित्रा	श्रव.	ज्ये.	मघा	शत.
४	१	३	२	१	१	३	४	२
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5:30

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष की पंचमी को श्रीराम-विवाहोत्सव मनाया जाता है। इसी दिन श्रीपंचमी को कमलासन पर विराजित एवं कमलपुष्प लिए श्रीलक्ष्मी की सुवर्णमयी या ताम्र अथवा चाँदी की मूर्ति को सुवर्णादि के कलश पर स्थापित कर गणपति मातृका एवं पंचादि उपचारों से पूजन एवं श्रीसूक्त लक्ष्मी-सूक्त का पाठ, ब्राह्मण भोजन, दानादि करने से सौभाग्य व लक्ष्मी की प्राप्ति होती है। ता. 10 दिसं. को **मोक्षदा एकादशी** का व्रत विधिपूर्वक रखने तथा भगवान् विष्णु की पूजा, यथाशक्ति दानादि करने से अनेक मानसिक व कायिक पापों की निवृत्ति तथा पुण्यों की प्राप्ति होती है। इसीदिन श्रीगीता जयन्ती के उपलक्ष्य में भगवान् कृष्ण की पूजा-स्तुति करके श्रीमद्भगवद्गीता का सुगन्धित फूलों द्वारा पूजा, स्वाध्याय, मनन व चिन्तन करना चाहिए। इसीदिन भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। 13 दिसं. मार्गशीर्ष पूर्णिमा को ब्रह्मा, विष्णु महेश के अंशावतार श्रीदत्तात्रेय की बालरूप में पूजा की जाती है। **ग्रह गोचर**—2 दिसं. को शुक्र मकर राशि में आने तथा उस पर शनि एवं गुरु की संयुक्त दृष्टियां होने से गेहूँ, जौं, चने, बाजरा, चावल आदि धान्यों के मूल्यों में वृद्धि होगी। प्राकृतिक प्रकोपों से खड़ी फसलों को हानि पहुँचेगी।— **मकरे च यदा शुक्रः सर्वसस्यविनाशकृत्। जायतेऽत्र समर्घाणि नाऽत्र कार्या विचारणा।** पक्ष में सूर्य-शनि योग तथा मंग.-गुरु (ता. 11 दिसं. से) मध्य षडाष्टक सम्बन्ध रहने से खण्ड वर्षा, प्राकृतिक प्रकोप रहेंगे। राजनीतिक षड्यन्त्र, कुछ राज्यों में शासन-परिवर्तन तथा पश्चिम-मुस्लिम देशों में आतंकी घटनाएं व युद्धमय वातावरण बनेगा। ता. 11 दिसं. से मंगल कुम्भ राशि में आने से चावल आदि सभी प्रकार के अन्न महंगे होंगे—**भूसुते कुंभराशिस्थे सर्वधान्यमहर्घता।।** ***आकाश लक्षण***—देश के उत्तर-पश्चिमी भागों में खण्ड वर्षा व तेज शीत वायु चलने के योग हैं। मार्ग. पूर्णिमा का क्षय होने से कहीं छत्रभंग, प्रजा को पीड़ा व अनाजादि महँगा होने के योग हैं।

वि. संवत् २०७३, पौष कृष्ण पक्ष शाक: १९३८

सन् 2016 ई. (ता. 14 दिसं. से 29 दिसं. तक) हिजरी सन् 1438

सूर्य दक्षिण-उत्तरायण, दक्षिण गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु:

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

प्रातः गुरु पूर्वकपाल में होगा। सायं मंग.-शुक्र पश्चिम में, बुध भी पश्चिमी क्षितिज में दृश्य होगा। ता. 23 दिसं. से बुध पश्चिम में ही अस्त होगा। ता. 28 दिसं. से शनि सूर्योदय से पूर्व प्रातः दृश्य होगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	प.	योग	समाप्ति काल घ.	प.	करण	समाप्ति काल घ.	प.	मार्ग. शक.	रबि. मु.	दिसंबर	मार्ग. प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२४.५९	१	बुध	४६	५५	मृग	२८	४५	शुभ	३२	५३	बा	२१	१५	23	13	14	३०	मि. २/१०	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, स. सि. यो.	७	२८	२४	३४	7	22	17	22
२४.५८	२	गुरु	३९	१५	आर्द्रा	२२	३०	शुक्ल	२३	१३	तै	१३	५	24	14	15	पौ.	मिथुन	**सूर्य मूल (१) धनु में ३३/४८, पौष संक्रान्ति,** मु. ४५, पुण्यकाल **(A)**	७	२९	२५	३७	7	23	17	22
२४.५५	३	शुक्र	३३	००	पुन	१७	३३	ब्रह्म	१४	३८	व	६	८	25	15	16	२	क. ३/३८	भ. ६/०८ से ३३/०० तक,	८	००	२६	३९	7	24	17	22
२४.५८	४	शनि	२८	४०	पुष्य	१४	२३	ऐन्द्र	७	३०	बव	०	५०	26	16	17	३	कर्क	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17), गण्डमूल 13/09 से प्रा.	८	०१	२७	४३	7	24	17	23
२४.५५	५	रवि	२६	२०	अश्ले	१३	८	वैधृ विष्क	१ ५८	५३ ३	तै	२६	२०	27	17	18	४	सिं. १३/०८	गण्डमूल विचार	८	०२	२८	४५	7	25	17	23
२४.५५	६	चंद्र	२६	१३	मघा	१४	३	प्रीति	५५	५०	व	२६	१३	28	18	19	५	सिंह	भ. २६/१३ से ५७/१४ तक, **बुध वक्री २२/१८** (16/21), गण्डमूल 13/03 तक	८	०३	२९	५२	7	26	17	24
२४.५६	७	मंग	२८	१५	पू.फा.	१७	३	आयु	५५	१०	बव	२८	१५	29	19	20	६	कं. ३३/०५	मंगल शत. में १८/५३,	८	०४	३०	५९	7	26	17	25
२४.५५	८	बुध	३२	८	उ.फा.	२१	५३	सौभा	५५	४५	बा	०	१२	30	20	21	७	कन्या	रुक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध, सूर्य सायन मकर में २१/५८, **(B)**	८	०५	३२	०४	7	27	17	25
२४.५५	९	गुरु	३७	२५	हस्त	२८	८	शोभ	५७	१८	तै	४	४७	पौ	21	22	८	कन्या	शुक्र धनि. में ४७/४८, शक पौष प्रारम्भ,	८	०६	३३	१३	7	27	17	25
२४.५५	१०	शुक्र	४३	३८	चित्रा	३५	१८	अति	५९	२०	व	१०	२९	2	22	23	९	तु. १/३५	भ. १०/२९ से ४३/३८ तक, वक्री बुध पश्चिम में अस्त १/३०, पार्श्वनाथ जयंती	८	०७	३४	२०	7	28	17	26
२४.५६	११	शनि	५०	१०	स्वा	४२	५३	सुक	६०	००	बव	१६	५४	3	23	24	१०	तुला	**सफला एकादशी व्रत,** स. सि. यो.	८	०८	३५	२८	7	28	17	26
२४.५६	१२	रवि	५६	३५	विशा	५०	२०	सुक	१	३३	कौ	२३	२३	4	24	25	११	वृ. ३०/५८	क्रिसमिस डे (क्रिश्चियन)	८	०९	३६	३६	7	29	17	27
२४.५७	१३	चंद्र	६०	००	अनु	५७	२५	धृति	३	४०	गर	२९	३४	5	25	26	१२	वृश्चिक	**सोम प्रदोष व्रत,** शनि ज्ये. (४) में ३५/५५, स. सि. यो.	८	१०	३७	४७	7	29	17	27
२४.५८	१३	मंग	२	३३	ज्ये	६०	००	शूल	५	२०	व	२	३३	6	26	27	१३	वृश्चिक	भ. २/३३ से ३५/११ तक, **शनि पूर्व से उदय ४/२०,** मासशिवरात्रि**(C)**	८	११	३८	५६	7	29	17	28
२४.५८	१४	बुध	७	४८	ज्ये	३	५०	गंड	६	३३	शकु	७	४८	7	27	28	१४	ध. ३/५०	**अमावस (पितृकार्येषु),** सूर्य पू.षा. में ३९/००, वक्री बुध मूल **(D)**	८	१२	४०	०९	7	30	17	28
२४.५९	३०	गुरु	१२	१३	मूल	९	२८	वृद्धि	७	८	ना	१२	१३	8	28	29	१५	धनु	**पौष अमावस** (स्नानदानादि), गण्डमूल 11/17 तक, यूरेनस मार्गी 14घं.-12मिं.	८	१३	४१	१९	7	30	17	29

(A) मध्याह्न बाद **(B)** सायन उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ **(C)** व्रत, गण्डमूल 6/27 से प्रा. **(D)** (४) में ४४/०५, गुरु चित्रा (२) में २४/१५, शुक्र कुम्भ में ४८/१०, गण्डमूल विचार

बुधे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 दिसम्बर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	५	१०	८	५	९	७	४	१०
०५	०४	०७	२०	२५	२१	२६	१२	१२
२७	३२	०७	४८	४४	१३	००	४३	४३
१०	५७	२४	५९	५१	२९	१८	०१	०१
61	730	45	23	7	67	7	3	3
6	42	19	21	48	29	1	11	11
मूल २	उफा ३	शत १	पूषा ३	चित्रा १	श्रव ४	ज्ये. ३	मघा ४	शत २
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

भाव	राशि / ग्रह
१	१०
२	११ शु.
३	११ मं.के.
४	१२
५	१
६	२
७	३
८	४
९	५ रा.
१०	६ चं. गु.
११	७
१२	८ श.

(लग्न ९: सू. बु.)

गुरौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 29 दिसंबर

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	८	१०	८	५	१०	७	४	१०
१३	१०	१३	१३	२६	००	२६	१२	१२
३६	२३	०९	०५	४३	०७	५६	१७	१७
१७	०६	५९	०६	३२	३१	०४	३५	३५
61	738	45	81	6	65	6	3	3
10	1	18	39	41	44	53	11	11
पूषा १	मूल ४	शत २	मूल ४	चित्रा २	धनि ३	ज्ये. ४	मघा ४	शत २
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

कुण्डली: ९ — सू. चं. बु.; १० ; ११ — मं.शु.के.; १२ ; १ ; २ ; ३ ; ४ ; ५ — रा.; ६ — गु.; ७ ; ८ — श.

पौष कृष्ण पक्षफल–

पौष मास में गेहूँ, धान्यादि अनाज, कम्बलादि गर्मवस्त्र, ईंधन सामग्री, मौसमी फल, मिष्ठान्न दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **पौष संक्रान्ति** को अनाज से पूरित ताम्र-पात्र (कलश-गड़वा आदि) का गुड़ सहित दान करने से क्लिष्ट रोग की शान्ति होती है। ता. 21 दिसं., **रुक्मिणी अष्टमी** को कृष्ण, रुक्मिणी और प्रद्युम्न की मूर्तियों का गन्धयुक्त पूजनकर उत्तम पदार्थ अर्पण करें और सामर्थ्यानुसार सौभाग्यवती आठ स्त्रियों को भोजन करवाकर दक्षिणा दे तो रुक्मिणी जी की प्रसन्नता प्राप्त होती है। 24 दिसं. को सफला एकादशी का व्रत विधिपूर्वक करने से सर्वप्रकार के पापों का क्षय होता है।

पौष संक्रान्ति–15 दिसं., गुरुवार को रात्रि 8 बजकर 53 मिनट पर कर्क लग्न में प्रवेश करेगी। ४५ मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल मध्याह्न बाद से शुरु होगा। वारानुसार नन्दा तथा नक्षत्रानुसार महोदरी नामक यह सं. चोरों, बेईमान तथा ब्राह्मणों, धर्म-कर्म का कार्य करने वालों को लाभप्रद रहेगी। **सं. राशिफल**–मेष, वृष, कर्क, कन्या, तुला, मकर, मीन राशि वालों के लिए शुभ रहेगी। **लोक भविष्य**–पौष मास में पाँच बुधवार तथा पाँच बृहस्पतिवार होने से मिश्रित प्रभाव रहेंगे। बुधवार होने से गेहूँ, धान्य, चावल, गुड़, उड़दादि सर्वप्रकार की दालें तीन महीने के भीतर बहुत तेज होंगी। लोगों के दुःखों व कष्टों में वृद्धि होगी। पाँच गुरुवार होने से पश्चिमी व मुस्लिम देशों जैसे-ईराक, सूडान, इज़रायल-फिलीस्तीन आदि देशों में राजनीतिक व आतंकवादी टकराव तथा युद्ध जन्य हालात बनेंगे। **यत्रमासे पञ्चवाराः जायन्ते च बृहस्पतेः। विग्रहः पश्चिमी देशे खड्गयुद्धं च जायते।।** गुरुवार को पौष अमावस होने से अनुकूल वर्षा (वृष्टि) तथा पर्याप्त उत्पादन होगा। अनुकूल वर्षा से प्रजा में आरोग्य एवं रोगनाश होगा।–**सदावृष्टिः सुभिक्षं च कल्याणं दुःखनाशनम्। आरोग्यं च प्रजा. स्वस्थागुरुवारे समादिशेत।।**

वि. संवद् २०७३, पौष शुक्ल पक्ष शाके : १९३८ तारीख

सन् 2016-17 ई. (ता. 30 दिस. 2016 ई. से 12 जन. 2017 ई. तक) हिजरी सन् 1438 — भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः

ग्रह दर्शन–प्रातः गुरु पूर्वकपाल में, शनि पूर्व में तथा 3 जन. से बुध भी पूर्व क्षितिज में दृश्य होगा। सायंकाल मंगल–शुक्र पश्चिम कपाल में होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	पौष शाके	रबिउल. मु.	दिसंबर	पौष प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२४.५९	१	शुक्र	१५	४५	पू.षा.	१४	१८	ध्रुव	७	००	बव	१५	४८	9	29	30	१६	म. ३०/२०	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. ४५	८	१४	४२	२९	7	30	17	30
२५.००	२	शनि	१८	२३	उ.षा.	१८	१३	व्या	६	१५	कौ	१८	२३	10	रबि	31	१७	मकर	आरोग्य व्रत, रबि-उल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	८	१५	४३	४२	7	31	17	31
२५.०१	३	रवि	२०	८	श्रव	२१	१५	हर्ष	४	४८	गर	२०	८	11	2	जन	१८	कुं. ५२/२५	भ. ५०/२९ से, **पंचक प्रारम्भ ५२/२५**, जनवरी-सन् 2017 ई. प्रा.,**(A)**	८	१६	४४	५२	7	31	17	31
२५.०३	४	चंद्र	२०	५०	धनि	२३	२३	वज्र सिद्धि	२ ५९	३८ ३५	वि	२०	५०	12	3	2	१९	कुम्भ	भद्रा २०/५० तक, श्रीविनायक चतुर्थी	८	१७	४६	०५	7	31	17	32
२५.०५	५	मंग	२०	३०	शत	२४	२५	व्य.	५५	४३	बा	२०	३०	13	4	3	२०	कुम्भ	वक्री बुध पूर्व से उदय ८/४०, शुक्र शत. में ५६/५३,	८	१८	४७	१६	7	31	17	33
२५.०५	६	बुध	१९	००	पू.भा.	२४	२०	वरी	५०	५३	तै	१९	००	14	5	4	२१	मी. ९/२८		८	१९	४८	२५	7	31	17	33
२५.०५	७	गुरु	१६	१३	उ.भा.	२३	३	परि	४५	५	व	१६	१३	15	6	5	२२	मीन	भ. १६/१३ से ४४/१४ तक, मार्तण्ड-सप्तमी, गण्डमूल 16/45 से, **(B)**	८	२०	४९	३५	7	32	17	34
२५.०८	८	शुक्र	१२	१५	रेव	२०	३३	शिव	३८	१८	बव	१२	१५	16	7	6	२३	मे. २०/३३	**पंचक समाप्त २०/३३**, श्रीदुर्गाष्टमी, मंगल पू.भा. में ५८/००, **(C)**	८	२१	५०	४४	7	32	17	35
२५.१०	९	शनि	७	५	अश्वि	१६	५५	सिद्ध	३०	३८	कौ	७	५	17	8	7	२४	मेष	गण्डमूल 14/18 तक,	८	२२	५१	५३	7	32	17	36
२५.१३	१०	रवि	०	५३	भर	१२	१८	साध्य	२२	१०	गर	०	५३	18	9	8	२५	वृ. २६/००	भ. २७/२२ से ५३/५० तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत** (स्मार्त), **बुध मार्गी १९/०३**	८	२३	५३	०१	7	32	17	37
००.००	११	रवि	५३	५०	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२५.१३	१२	चंद्र	४६	१३	कृति	६	५३	शुभ	१३	८	बव	२०	२	19	10	9	२६	वृष	**पुत्रदा एकादशी व्रत (वैष्णव)**, सुजन्म द्वादशी	८	२४	५४	०९	7	32	17	37
२५.१५	१३	मंग	३८	२५	रोहि मृग	१ ५५	०० ३	शुक्ल ब्रह्म	३ ५४	४५ २०	कौ	१२	१९	20	11	10	२७	मि. २८/००	**भौम प्रदोष व्रत**, सूर्य उ.षा. में ४३/५३,	८	२५	५५	१७	7	32	17	38
२५.१८	१४	बुध	३०	५०	आर्द्रा	४९	२३	ऐन्द्र	४५	८	गर	४	३८	21	12	11	२८	मिथुन	भ. ३०/५० से ५७/२० तक, **श्रीसत्यनारायण व्रत** (देखें पृ. 88), ईशान व्रत	८	२६	५६	२३	7	32	17	39
२५.२०	१५	गुरु	२३	५०	पुन	४४	३०	वैधृ	३६	३३	बव	२३	५०	22	13	12	२९	क. ३०/३८	**पौष पूर्णिमा** (स्नानदानादि), **माघस्नान प्रारम्भ**, शाकम्भरी जयन्ती**(D)**	८	२७	५७	३०	7	32	17	40

(A) गौरी पूजन, **(B)** श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती **(C)** गण्डमूल विचार, महारुद्र व्रत **(D)** **स्वा. विवेकानन्द जयन्ती**, स.सि.यो.

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 6 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	११	१०	८	५	१०	७	४	१०
२१	२४	१९	०५	२७	०८	२७	११	११
४५	०१	१२	१२	३२	४५	५०	५२	५२
३६	२६	२५	१३	५६	४६	२८	०९	०९
61 9	844 30	45 16	17 54	5 30	63 25	6 40	3 10	3 10
पूषा ३	रेव ३	शत ४	मूल २	चित्रा २	शत १	ज्ये. ४	मघा ४	शत २
०	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

११ मं.शु.के. | १० | ९ सू. बु. | ८ श. | ७ | १२ चं. | ६ गु. | १ | ३ | ५ रा. | २ | ४

गुरौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
८	२	१०	८	५	१०	७	४	१०
२७	२१	२३	०५	२८	१५	२८	११	११
५२	२०	४३	३७	०३	००	३०	३३	३३
२२	५९	४५	१६	२६	५४	००	०५	०५
61 6	868 56	45 10	30 33	4 31	61 11	6 28	3 11	3 11
उषा १	पुन १	पूभा २	मूल २	चित्रा २	शत ३	ज्ये. ४	मघा ४	शत २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

११ मं.के.श. | १० | ९ सू. बु. | ८ श. | ७ | १२ | ६ गु. | १ | ३ चं. | ५ रा. | २ | ४

पौष शुक्ल पक्षफल–

इस पक्ष की द्वितीया को गायों के सींगों को धोकर लिए जल सहित स्नान करके श्वेत वस्त्र धारण करके बालेन्दु (द्वितीया) के चन्द्रमा का गन्धादि से पूजन करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित विविध भोजन करवाकर सन्तुष्ट करना चाहिए। स्वयं भूमि पर शयन करें। इससे रोगों की निवृत्ति और आरोग्य की प्राप्ति होती है। सप्तमी (**मार्तण्ड सप्तमी-5 जन.**) को भगवान् सूर्य का व्रत, पूजन करके गोदान करनी चाहिए। इसप्रकार प्रत्येक पक्ष की सप्तमी को व्रत, पूजन करने से आरोग्य व तेज की वृद्धि होती है। इसीदिन श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती समस्त भारत में बड़ी श्रद्धा से मनाई जाती है। ता. 8 जन. को स्मार्तों एवं 9 जन. को वैष्णवों को **पुत्रदा एकादशी** का विधिवत् व्रत रखकर जप, हवन, ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दान करने से दम्पति को मनोवांछित पुत्र सन्तान की प्राप्ति होती है। **पौष पूर्णिमा** (12 जन.) से हरिद्वार, प्रयाग, कुरुक्षेत्र आदि तीर्थों पर (अथवा गृह में ही गंगाजल सहित) शुद्ध जल से स्नान, जप, ध्यान, दानादि का विशेष माहात्म्य होता है। **ग्रह-गोचर**–पक्ष में मंग.-शुक्र-केतु योग तथा मंग.-गुरु के मध्य षडाष्टक योग कहीं अनावृष्टि के योग बनाएंगे। प्रतिकूल वर्षा तथा ओलावृष्टि से खड़ी फसलों को हानि होगी–**शुक्रस्य यदि भौमेन योगो वा समसप्तकम्। वृष्टिर्मासे तदाकाले।।** जनोपयोगी एवं आवश्यक वस्तुओं, सब्जियों, दालों के भावों में विशेष तेजी बनेगी। 8 जन. को बुध मार्गी होने से चावल, चाँदी, रुई, गेहूँ, चना आदि सभी अनाजों में तेजी तथा रेशम, तेल, अलसी, एरण्ड, गुड़, बिनौला, मूँगफली, कपूर, चन्दन आदि सुगन्धित वस्तुओं में तेजी बनेगी। **आकाश लक्षण**–पक्ष के पूर्वार्द्ध भाग में उत्तर-पश्चिमी एवं पहाड़ी क्षेत्रों में अच्छी वर्षा, बर्फबारी तथा शीत लहर चलेगी। **शकुन**–पौ. शु. १३ को मंगलवार होने से आगे अच्छी वर्षा नहीं होगी, गेहूँ, अनाजादि का संग्रह करना लाभप्रद होगा–**पौष शुक्ल त्रयोदश्यां वारः सौरिः कुजस्तथा। घनैः न मुच्यते तोयं गोधूमाद्यस्यसंग्रहः।।**

वि. संवत् २०७३, माघ कृष्ण पक्ष शाकः १९३८ | **सन् 2017 ई. (ता. 13 से 27 जनवरी तक)** हिजरी सन् 1438 | भा.स्टैं.टा.

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः | **जालन्धर**

ग्रह दर्शन–प्रातः गुरु याम्योत्तर–वृत्तासन्न, बुध–शनि पूर्व में दृश्य होंगे। सायं मंग.–शुक्र पश्चिमी आकाश में होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मि.	योग	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मि.	करण	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मि.	पौष शक	पौष्य प्र.	जनवरी	पौष प्रवि	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२५.२३	१	शुक्र	१७	५०	पुष्य	४०	४५	विष्क	२८	५०	कौ	१७	५०	23	14	13	३०	कर्क	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **लोहड़ी पर्व**, गण्डमूल 23/50 से प्रा.	८	२८	५८	३६	7	32	17	41
२५.२५	२	शनि	१३	१५	अश्ले	३८	२८	प्रीति	२२	१५	गर	१३	१५	24	15	14	मा	सिं. ३८/२८	भ. ४१/४८ से, **सूर्य मकर में ०/१५, माघ (मकर) संक्रान्ति, (A)**	८	२९	५९	३९	7	32	17	42
२५.२५	३	रवि	१०	२०	मघा	३८	००	आयु	१७	५	वि	१०	२०	25	16	15	२	सिंह	भ. १०/२० तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17), **(B)**	९	०१	००	४५	7	32	17	42
२५.३०	४	चंद्र	९	२३	पू.फा.	३९	२८	सौभा	१३	२८	बा	९	२३	26	17	16	३	कं. ५५/०५	शुक्र पू.भा. में ५२/२३,	९	०२	०१	५०	7	31	17	43
२५.३३	५	मंग	१०	२३	उ.फा.	४२	४५	शोभ	११	२०	तै	१०	२३	27	18	17	४	कन्या	स. सि. योग **(B)**सौभाग्य सुन्दरी व्रत, गौरी चतुर्थी, वक्रतुण्डचतुर्थी, गण्डमूल	९	०३	०२	५५	7	31	17	44
२५.३५	६	बुध	१३	१५	हस्त	४७	४८	अति	१०	३८	व	१३	१५	28	19	18	५	कन्या	भ. १३/१५ से ४५/३२ तक, शीतला षष्ठी, स. सि. योग	९	०४	०३	५७	7	31	17	45
२५.३८	७	गुरु	१७	४८	चित्रा	५४	१०	सुक	११	१०	बव	१७	४८	29	20	19	६	तु. २०/५०	स्वा. विवेकानन्द जयन्ती (मतान्तरे), सूर्य सायन कुम्भ में ४८/३०	९	०५	०५	०१	7	31	17	46
२५.४३	८	शुक्र	२३	३३	स्वा	६०	००	धृति	१२	४३	कौ	२३	३३	30	21	20	७	तुला	**मंगल मीन में १५/४३** (13घं.-47मिं.)	९	०६	०६	०५	7	30	17	47
२५.४५	९	शनि	२९	५३	स्वा	१	२५	शूल	१४	४३	गर	२९	५३	मा	22	21	८	वृ. ५२/००	बुध पू.षा. में १४/००, शक माघ प्रारम्भ, स. सि. यो.	९	०७	०७	०९	7	30	17	48
२५.४८	१०	रवि	३६	१५	विशा	८	५३	गंड	१६	५०	व	३	४	2	23	22	९	वृश्चिक	भ. ३/०४ से ३६/१५ तक,	९	०८	०८	०९	7	30	17	49
२५.५३	११	चंद्र	४२	१३	अनु	१६	८	वृद्धि	१८	४८	बव	९	१४	3	24	23	१०	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत**, सूर्य श्रव. में ४९/५३, नेताजी सुभाषचन्द्रबोस**(C)**	९	०९	०९	१२	7	29	17	50
२५.५५	१२	मंग	४७	१५	ज्ये	२२	४०	ध्रुव	२०	८	कौ	१४	४४	4	25	24	११	ध. २२/४०	**तिल द्वादशी**, मंगल उ.भा. में ४२/४३, गण्डमूल विचार	९	१०	१०	१५	7	29	17	51
२६.००	१३	बुध	५१	१३	मूल	२८	१८	व्या	२०	४५	गर	१९	१४	5	26	25	१२	धनु	भ. ५१/१३ से, **प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 18/47 तक,	९	११	११	१५	7	28	17	52
२६.०३	१४	गुरु	५३	५५	पू.षा.	३२	४०	हर्ष	२०	२८	वि	३२	३४	6	27	26	१३	म. ४८/३५	भ. ३२/३४ तक, **शनि मूल (१) धनु में ३०/००** (19घं.-28मिं.),**(D)**	९	१२	१२	१६	7	28	17	53
२६.०७	३०	शुक्र	५५	२५	उ.षा.	३५	५८	वज्र	१९	१५	चतु	२४	४०	7	28	27	१४	मकर	**माघ (मौनी) अमावस, शुक्र मीन में ३२/०८, मेला हरिद्वार**, प्रयागराज आदि	९	१३	१३	१६	7	27	17	54

(A) मु. १५, पुण्यकाल सं. दोप. 14/02 तक, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, गण्डमूल विचार **(C)** जयन्ती, गण्डमूल 13/56 से, स. सि. यो. **(D)** **भारत गणतन्त्र दिवस** (68वाँ), मासशिवरात्रि व्रत

शुक्रे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 20 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	६	१०	८	५	१०	७	४	१०
०६	०६	२९	११	२८	२२	२९	११	११
०१	४९	४४	५५	३४	५७	२०	०७	०७
०३	४९	२८	२८	४४	४३	३५	३९	३९
61	714	45	63	3	57	6	3	3
4	30	00	36	8	23	7	11	11
उ.षा 3	स्वा 1	पू.भा 3	मूल 4	चित्रा 2	पू.भा 1	ज्ये 4	मघा 4	शत 2
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

१० सू. | ११ के. शु. मं. | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ रा. | ६ गु. | ७ चं. | ८ श. | ९ बु.

शुक्रे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 27 जनवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	९	११	८	५	१०	८	४	१०
१३	०१	०४	२०	२८	२९	००	१०	१०
०८	२२	५९	०६	५२	२७	०२	४५	४५
१९	०३	०१	१०	४९	१४	२६	२३	२३
61	763	44	77	1	53	5	3	3
00	55	51	10	51	6	46	10	10
श्रव 1	उ.षा 2	उ.भा 1	पू.षा 3	चित्रा 2	पू.भा 3	मूल 1	मघा 4	शत 2
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

१० सू. चं. | ११ के. शु. | १२ मं. | १ | २ | ३ | ४ | ५ रा. | ६ गु. | ७ | ८ | ९ श. बु.

माघ कृष्ण पक्षफल–

इस पक्ष के आरम्भ में संक्रान्ति से पूर्व **लोहड़ी पर्व** (13 जन.) अग्नि की पूजा के रूप में उत्तरी भारत में विशेषकर पं., हि.प्र., हरियाणा, दिल्ली, ज.का. आदि प्रदेशों में लकड़ियां, समिधा, रेवड़ियां, तिल सहित अग्नि प्रदीप्त करके बड़े उत्साह से मनाया जाता है। **मकर संक्रान्ति** (14 जन.) को स्नानादि उपरान्त तिलों से हवन, तिल युक्त वस्तुओं का दान व भगवान् विष्णु सहित पंचदेव पूजन, पुरुष सूक्त, सूर्याष्टक स्तोत्र, सूर्य द्वादश नाम, सूर्यार्घ्य, पितृ-तर्पण करके ब्राह्मणों को क्षीर सहित भोजन, वस्त्र, फल, धार्मिक पुस्तक आदि का दक्षिणा सहित दान करने का विशेष माहात्म्य होता है। **मकर संक्रान्ति** ता. 14 जन., शनिवार को प्रातः 7 घं. 38 मिं. मकर लग्न में प्रवेश करेगी। १५ मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल प्रातः सूर्योदय से दोप. 14घं.-02मिं. तक रहेगा। राक्षसी नामक यह सं. नीच एवं दुष्टजनों, कपटी, भ्रष्ट लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। चतुर्थी (15 जन.) को श्रीगणेश संकट चौथ के व्रत का संकल्प **"गणपति प्रीतये संकष्ट चतुर्थी व्रतं करिष्ये"** पढ़कर व्रत करके **'ॐ गं गणपतये नमः'** मन्त्र जप व स्तोत्र का पाठ करें। रात्रि को श्रीगणेश एवं चन्द्र की लड्डुओं सहित पूजा करके चन्द्रोदय होने पर **'ॐ सोम् सोमाय नमः'** द्वारा अर्घ्य देने से कष्टों का निवारण हो जाता है। **षट्तिला एकादशी** (23 जन.) को तिल मिश्रित जल से स्नान करके तिलों द्वारा श्रीविष्णु पूजा एवं हवन करें। श्रीकृष्ण के **'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः'** का 108 बार पाठ करें, फिर तिलयुक्त सामग्री द्वारा हवन करें एवं भोग लगाकर स्वयं ग्रहण करने से पापों का नाश होता है। ता. 27 जन. माघ (मौनी) अमावस होने से इसदिन तीर्थस्नान, वस्त्र, चावलादि अन्न-दान, फल, आँवला, तिल निर्मित रेवड़ियाँ, गच्चकादि मिष्ठान्न, पितृ-तर्पण, ब्राह्मण भोजन दक्षिणा सहित देने का विशेष एवं अक्षय फल होगा।

ग्रहगोचर–ता. 14 से सूर्य पर गुरु–शनि की संयुक्त दृष्टियां रहने से केन्द्रीय मोदी सरकार का विपक्षी पार्टियों द्वारा विरोध तथा नीतिगत फैसलों में अड़चनें उत्पन्न की जाएंगी। ता. 26 जन. से शनि धनु राशि में आकर

वि. संवत् २०७३, माघ शुक्ल पक्ष शक: १९३८ (28 जनवरी से 10 फर. तक) हिजरी सन् 1438

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतुः — भा.स्टैं.टा. जालन्धर

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु याम्योत्तरवृत्त में, बुध-शनि पूर्व में दिखाई देंगे। सायं मंग.-शुक्र पश्चिम में दिखाई देंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	तारीख माघ शक	जमादिउल्	जनवरी	माघ प्र.	चन्द्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	विवरण	दे. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मि.	सूर्यास्त घं.	मि.
२६.०८	१	शनि	५५	४३	श्रव	३८	००	सिद्धि	१७	५	किं	२५	३४	8	29	28	१५	मकर	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, स. सि. यो. 22/39 तक	९	१४	१४	१३	7	27	17	54
२६.१३	२	रवि	५५	००	धनि	३९	३	व्य.	१४	३	बा	२५	२२	9	30	29	१६	कुं. ८/४०	चन्द्रदर्शन, मु. ३०, **पंचक प्रा. ८/४०, बाबा श्रीलालदयाल जयन्ती**	९	१५	१५	१२	7	26	17	55
२६.१५	३	चंद्र	५३	१५	शत	३९	५	वरी	१०	१३	तै	२४	८	10	जमा	30	१७	कुम्भ	**गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत,** जमादि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	९	१६	१६	०८	7	26	17	56
२६.२०	४	मंग	५०	४०	पू.भा.	३८	२०	परि	५	४०	व	२१	५८	11	2	31	१८	मी. २३/३५	भ. २१/५८ से ५०/४० तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश तिल चतुर्थी, (A)**	९	१७	१७	०४	7	25	17	57
२६.२३	५	बुध	४७	१८	उ.भा.	३६	४५	शिव सिद्ध	० ५४	२५ ३५	बव	१८	५९	12	3	फर	१९	मीन	**वसन्त (श्री) पंचमी, सरस्वती पूजन,** वागेश्वरी जयन्ती, फरवरी **(B)**	९	१८	१७	५७	7	25	17	58
२६.२८	६	गुरु	४३	१८	रेव	३४	३०	साध्य	४८	१५	कौ	१५	१८	13	4	2	२०	मे. ३४/३०	**पंचक समाप्त ३४/३०** (21/12), गण्डमूल विचार, स. सि. यो.	९	१९	१८	५१	7	24	17	59
२६.३३	७	शुक्र	३८	३८	अश्वि	३१	३८	शुभ	४१	२५	गर	१०	५८	14	5	3	२१	मेष	भ. ३८/३८ से, **बुध मकर में १४/४५,** रथ-आरोग्य सप्तमी, **(C)**	९	२०	१९	४२	7	23	18	00
२६.३५	८	शनि	३३	२५	भर	२८	१०	शुक्ल	३४	१०	वि	६	२	15	6	4	२२	वृ. ४२/१५	भद्रा ६/०२ तक, **भीष्माष्टमी**	९	२१	२०	३३	7	23	18	01
२६.४०	९	रवि	२७	५०	कृति	२४	२३	ब्रह्म	२६	३८	बा	०	३८	16	7	5	२३	वृष	सूर्य धनि. में ५७/५३,	९	२२	२१	२०	7	22	18	02
२६.४५	१०	चंद्र	२२	३	रोहि	२०	२०	ऐन्द्र	१८	५३	गर	२२	३	17	8	6	२४	मि. ४८/१५	भ. ४९/०७ से, **गुरु वक्री १२/२० (12घं.-17मिं.),** स.सि.यो.	९	२३	२२	०७	7	21	18	03
२६.४८	११	मंग	१६	१०	मृग	१६	१३	वैधृ	१०	५८	वि	१६	१०	18	9	7	२५	मिथुन	भ. १६/१० तक, **जया एकादशी व्रत, भीष्म-द्वादशी** (देखें पृ. 88)	९	२४	२२	५१	7	20	18	03
२६.५०	१२	बुध	१०	२५	आर्द्रा	१२	१५	विष्क प्रीति	३ ५५	२० ५५	बा	१०	२५	19	10	8	२६	क. ५४/३०	प्रदोष व्रत, **तिल द्वादशी,** मेला जैसलमेर (राजस्थान) प्रारम्भ-3 दिन	९	२५	२३	३३	7	20	18	04
२६.५५	१३	गुरु	५	८	पुन	८	४३	आयु	४९	३	तै	५	८	20	11	9	२७	कर्क	**गुरुपुष्य योग 10/48 से प्रा.,** स. सि. यो.	९	२६	२४	१३	7	19	18	05
२७.००	१४	शुक्र	०	३३	पुष्य	५	५५	सौभा	४२	५८	व	०	३३	21	12	10	२८	कर्क	भ. ०/३३ से २८/४३ तक, **माघ पूर्णिमा** (प्रात: 7/31 बाद), बुध **(D)**	९	२७	२४	५६	7	18	18	06
००.००	१५	शुक्र	५६	५३	००	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	**पूर्णिमा तिथि का क्षय** ०० ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०

(A) बुध उ.षा. में ५१/४०, शुक्र उ.भा. में २४/५३, वरद् (कुन्द) चतुर्थी **(B)** सन् 2017 ई. प्रारम्भ, गण्डमूल 22/07 से **(C) पुत्र सप्तमी व्रत,** अचला-भानु सप्तमी, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, गण्डमूल 20/02 तक **(D)** श्रव. में ३/१०, माघस्नान समाप्त, **श्रीगुरु रविदास जयन्ती,** राहु मघा (३) केतु शत. (१) में ११/५०, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीललिता जयंती, गण्डमूल 9/40 बाद

शनौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 4 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	०	११	९	५	११	८	४	१०
२१	१८	१०	००	२९	०६	००	१०	१०
१५	५४	५६	५७	०२	१०	४६	१९	१९
४६	१३	५९	३७	१७	२४	५८	५७	५७
60	851	44	86	0	46	5	3	3
50	31	37	12	20	31	18	11	11
श्रव ४	भर २	उभा ३	उषा २	चित्रा २	उभा १	मूल १	मघा ४	शत २
०	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

१० सू. बु. | ११ के. | १२ मं. शु. | १ चं. | २ | ३ | ४ | ५ रा. | ६ गु. | ७ | ८ | ९ श.

शुक्रे चतुर्दश्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 10 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
९	३	११	९	५	११	८	४	१०
२७	१४	१५	०९	२९	१०	०१	१०	१०
२०	१५	२४	४८	०१	३३	१७	००	००
२४	३४	०७	१८	२७	५६	४५	५२	५२
60	828	44	91	0	39	4	3	3
41	16	24	30	48	59	54	11	11
धनि २	पुष्य ४	उभा ४	उषा ४	चित्रा २	उभा ३	मूल १	मघा ४	शत २
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. चतुर्दशी, प्रातः 5:30

१० सू. बु. | ११ के. | १२ मं. शु. | १ | २ | ३ | ४ चं. | ५ रा. | ६ गु. | ७ | ८ | ९ श.

माघ शुक्ल पक्षफल—

इस पक्ष में **गौरी तृतीया** (30 जन.) को उमा (पार्वती) का पूजन करके गुड़, अदरख, लवण, पालक और खीर–इनसे बलि देकर ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिए। अङ्गारकी श्रीगणेश **तिल चतुर्थी** (31 जन.) को श्रीगणेश जी का व्रत एवं पूजन तिल, फल व गुड़, लड्डुओं सहित करने का विधान है। **वसन्त-पंचमी** (1 फर.) को भगवान् श्रीविष्णु, सरस्वती व श्रीकृष्ण-राधा की पूजा पीले पुष्पों, गुलाल, अर्घ्य, धूप, दीप, नैवेद्य आदि द्वारा करके फिर पीले एवं मीठे चावलों एवं पीले हलुवा का भोग लगाकर स्वयं सेवन करने की परम्परा है। **रथ-सप्तमी** (3 फर.) को भगवान् सूर्यनारायण ने मन्वन्तर के आदि में इसी दिन जगत् को अपने प्रकाश से आलोकित किया था। विधि अनुसार व्रत रखने से पुत्र-सन्तति, आरोग्य, धनादि की प्राप्ति होती है। **जया-एकादशी** (7 फर.) का व्रत, पाठादि करने से पिशाचादि योनियों से छुटकारा मिलता है। **माघ पूर्णिमा** (10 फर.) को तीर्थजल से स्नान करके देव-पितृ तर्पण करने के बाद तिल, गुड़, अनाज, घी, फल, वस्त्रों आदि का दान करने से विशेष पुण्य प्राप्त होता है।

लोक-भविष्य–माघ मास में पाँच शुक्रवार आने से आगामी महीनों में सुभिक्ष अर्थात् अच्छी फसल होने के संकेत हैं। प्रजा में सुख-साधनों की तथा जनसंख्या में विशेष वृद्धि होने के योग हैं। समाज में स्त्रियों का प्रभाव बढ़ेगा। ता. 6 फर. को कन्या राशिस्थ **गुरु वक्री** होने से अनाजादि के उत्पादन में वृद्धि होगी, सुभिक्ष हो। विशेषवर्ग को सुख-साधन विशेष रूप से प्राप्त रहें। गौ, दूध, घी आदि रसादिक सुलभ अर्थात् सस्ते होंगे। समाज में पुण्य के प्रभाव से सुशासन एवं लोग सुमार्ग पर चलेंगे–**'कन्याराशिगतोजीवो विकारं कुरुतेयदा। सूक्ष्मश्चैवभवेल्लाभो-पुण्य कर्मवशात्पुनः ।।'** परन्तु गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग होने से उ.प्र., म.प्र., पं. बंगाल आदि पूर्वी प्रदेशों में हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएं घटित होंगी। **आकाश लक्षण**–उत्तर-पश्चिमी भारत में शीत-प्रकोप, बर्फबारी एवं कहीं खण्ड-वर्षा के योग हैं।

वि. संवत् २०७३, फाल्गुन कृष्ण पक्ष शाक: १९३८ | तारीखें | चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल

सन् 2017 ई. (11 फर. से 26 फरवरी तक) हिजरी सन् 1438

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, शिशिर–वसन्त ऋतु:

भा.स्टैं.टा. **जालन्धर**

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु पश्चिमकपाल में होगा, बुध पूर्वक्षितिज में तथा शनि पूर्व कपाल में होगा। 17 फर. से बुध पूर्व में ही अदृश्य हो जाएगा। सायं मंग.–शुक्र पश्चिम में होंगे।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	पल	योग	समाप्ति काल घटी	पल	करण	समाप्ति काल घटी	पल	माघ शक	जमादि.	फरवरी	माघ प्रवि.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल	ग्रह दर्शन	दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	मिं.	सूर्यास्त घं.	मिं.
२७.०५	१	शनि	५४	३०	अश्ले	४	५	शोभ	३७	४५	बा	२५	४२	22	13	11	२९	सिं. ४/०५	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल रेव. में ३८/०८, गण्डमूल विचार	९	२८	२५	३४	7	17	18	07
२७.०८	२	रवि	५३	३३	मघा	३	२८	अति	३३	४०	तै	२४	२	23	14	12	फा.	सिंह	**सूर्य कुम्भ में ३३/२३, फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. ३०, पुण्यकाल **(A)**	९	२९	२६	११	7	17	18	08
२७.१३	३	चंद्र	५४	१३	पू.फा.	४	१८	सुक	३०	४८	व	२३	५३	24	15	13	२	कं. १९/४५	भद्रा २३/५३ से ५४/१३ तक, **(A)** सं. मध्याह्न बाद, गण्डमूल 8/40 तक	१०	००	२६	४८	7	16	18	09
२७.१८	४	मंग	५६	३३	उ.फा.	६	४५	धृति	२९	१३	बव	२५	२३	25	16	14	३	कन्या	**अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17), स.सि.यो. 9/57 तक	१०	०१	२७	२३	7	15	18	10
२७.२०	५	बुध	६०	००	हस्त	१०	४५	शूल	२८	५०	कौ	२८	३१	26	17	15	४	तु. ४३/१८	स. सि. यो. (11/32 तक)	१०	०२	२७	५६	7	14	18	10
२७.२५	५	गुरु	०	२८	चित्रा	१६	१०	गंड	२९	३३	तै	०	२८	27	18	16	५	तुला	**(B)** वसन्त ऋतु प्रारम्भ,	१०	०३	२८	२९	7	13	18	11
२७.३०	६	शुक्र	५	३५	स्वा	२२	४५	वृद्धि	३१	५	व	५	३५	28	19	17	६	तुला	भ. ५/३५ से ३८/३४ तक, **बुध पूर्व में अस्त ५६/४८**	१०	०४	२९	००	7	12	18	12
२७.३५	७	शनि	११	३३	विशा	२९	५८	ध्रुव	३३	५	बव	११	३३	29	20	18	७	वृ. १३/०८	श्रीनाथ-उत्सव, बुध धनि. में २९/४३, सूर्य सायन मीन में २४/३८, **(B)**	१०	०५	२९	३०	7	11	18	13
२७.४०	८	रवि	१७	५०	अनु	३७	२३	व्या	३५	१३	कौ	१७	५०	30	21	19	८	वृश्चिक	सूर्य शत. में ९/५३, जानकी व्रत, गण्डमूल 22/07 से प्रारम्भ	१०	०६	२९	५८	7	10	18	14
२७.४३	९	चंद्र	२३	५३	ज्ये	४४	२०	हर्ष	३७	००	गर	२३	५३	फा.	22	20	९	ध. ४४/२०	भ. ५६/२९ से, शक फाल्गुन प्रारम्भ, रामदास नवमी, गण्डमूल विचार	१०	०७	३०	२६	7	09	18	14
२७.४८	१०	मंग	२९	५	मूल	५०	२३	वज्र	३८	१०	वि	२९	५	2	23	21	१०	धनु	भ. २९/०५ तक, शुक्र रेव में ३/२०, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती, **(C)**	१०	०८	३०	५२	7	08	18	15
२७.५३	११	बुध	३३	३	पू.षा.	५५	१०	सिद्धि	३८	२०	बव	१	४	3	24	22	११	धनु	**विजया एकादशी व्रत, बुध कुम्भ में २९/००** (18घं.–43मिं.)	१०	०९	३१	१६	7	07	18	16
२७.५८	१२	गुरु	३५	३३	उ.षा.	५८	३०	व्य.	३७	२३	कौ	४	१८	4	25	23	१२	म. ११/१०	**(C)** गण्डमूल 27/17 तक,	१०	१०	३१	३९	7	06	18	17
२८.०३	१३	शुक्र	३६	२५	श्रव	६०	००	वरी	३५	१०	गर	५	५९	5	26	24	१३	मकर	भ. ३६/२५ से, प्रदोष व्रत, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत** (देखें पृ. 88)	१०	११	३२	०१	7	05	18	18
२८.०५	१४	शनि	३५	४३	श्रव	०	१८	परि	३१	४५	वि	६	४	6	27	25	१४	कुं. ३०/३५	भद्रा ६/०४ तक, **पंचक प्रारम्भ ३०/३५** (19घं.–18मिं.)	१०	१२	३२	२१	7	04	18	18
२८.१०	३०	रवि	३३	३३	धनि शत.	० ५९	३३ ३०	शिव	२७	१३	चतु	४	३८	7	28	26	१५	कुम्भ	**फाल्गुन अमावस**, बुध शत. में १९/४५	१०	१३	३२	४०	7	03	18	19

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 19 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	७	११	९	५	११	८	४	१०
०६	०८	२२	२४	२८	१५	०१	०९	०९
२५	२६	०२	०२	४७	४४	५९	३२	३२
४९	४७	२३	४८	२९	५३	१४	१५	१५
60	713	44	99	2	26	4	3	3
30	34	5	22	29	59	14	11	11
धनि	अनु	रेव	धनि	चित्रा	उ.भा	मूल	मघा	शत
४	२	२	१	२	४	१	३	१
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रात: 5:30

१२ शु. मं. | ११ सू. के. | १० बु. | ९ श. | ८ चं. | ७ | ६ गु. | ५ रा. | ४ | ३ | २ | १

रवौ अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रात: ५/३० बजे, 26 फरवरी

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१०	११	१०	५	११	८	४	१०
१३	०५	२७	०५	२८	१८	०२	०९	०९
२८	४०	१०	५८	२६	१५	२७	०९	०९
४९	४९	०९	१२	१६	१४	१२	५९	५९
60	813	43	106	3	13	3	3	3
19	52	50	6	44	34	40	10	10
शत	धनि	रेव	धनि	चित्रा	रेव	मूल	मघा	शत
३	४	४	४	२	१	१	३	१
०	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व
०	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रात: 5:30

१२ शु. मं. | ११ सू.चं.बु. के. | १० | ९ श. | ८ | ७ | ६ गु. | ५ रा. | ४ | ३ | २ | १

फाल्गुन कृष्ण पक्षफल—

इस पक्ष की अङ्गारकी गणेश चतुर्थी को (14 फर.) का व्रत रखकर सायंकाल पुन: स्नान करके लाल वस्त्र धारण कर गन्ध-पुष्पादि से गणेश जी का लड्डुओं सहित पूजन कर चन्द्रोदय होने पर मंत्रपूर्वक अर्घ्य देकर नमस्कार करें, फिर भोग लगाकर स्वयं परिवार सहित भोजन करने से सुख-सौभाग्य एवं सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। विजया एकादशी (22 फर.) को विधिवत् व्रत रखने से हर प्रकार के वाद-विवाद में सफलता प्राप्त होती है। **ता. 24 फर., शुक्रवार को** श्रीमहाशिवरात्रि का सर्वकल्याणकर व्रत रखने से अश्वमेध यज्ञ तुल्य फल प्राप्त होता है। इसदिन काले तिलों सहित स्नानकर व्रत पालन कर रात्रि में भगवान् शिव-शंकर की विधिवत् पूजा करनी चाहिए। पूजन के समय शिव-कथा, शिवसहस्रनाम तथा शिवस्तोत्रादि का पाठ करना चाहिए। दूसरे दिन ब्राह्मण को भोजन एवं दानादि के पश्चात् स्वयं भोजन करना चाहिए। **फाल्गुन संक्रान्ति—ता. 12 फर.**, रविवार, रात्रि 8 बजकर 38 मिनट पर कन्या लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्त्ति इस सं. का स्नानदानादि का पुण्यकाल मध्याह्न बाद रहेगा। घोरा नामक यह संक्रां. नीच एवं दुष्ट प्रवृत्ति के लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। कुम्भस्थ सूर्य-केतु पर शनि की दृष्टि तथा गुरु-शुक्र के मध्य समसप्तक योग होने से राजनीतिक वातावरण बड़ा असमंजसपूर्ण तथा आरोप-प्रत्यारोप भरा रहेगा। काश्मीर, असम, पं. बंगाल आदि प्रदेशों में कहीं उपद्रव, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाएँ अधिक घटित होंगी। चान्द्र फाल्गुन मास में पाँच शनिवार होने से सीमावर्ती प्रदेशों में फौजी झड़पें एवं मुस्लिम देशों में युद्ध के समाचार मिलेंगे। कुछ प्रदेशों में जातीय एवं साम्प्रदायिक उपद्रव, दंगे-फिसाद, अग्निकाण्ड आदि हिंसक घटनाएँ होने के संकेत हैं। कहीं विचित्र प्रकार के रोगों की उत्पत्ति व विशिष्ट लोगों की [illegible]

वि. संवत् २०७३, फाल्गुन शुक्ल पक्ष शाकः १९३८ | तारीखें | सन् 2017 ई. (27 फरवरी से 12 मार्च तक) हिजरी सन् 1438 | भा.स्टें.टा. जालन्धर

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण गोल, वसन्त ऋतुः

ग्रह दर्शन—प्रातः गुरु पश्चिम में, शनि पूर्वकपाल में होगा। सायंकाल शुक्र पश्चिम में परम–आसन्न तथा मंगल उससे ऊपर होगा। बुध अभी अस्त है।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	नक्षत्र	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	योग	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	करण	समाप्ति काल घटी	समाप्ति काल पल	फाल्गुन	जमादि	फरवरी	फाल्गु.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२८.१५	१	चंद्र	३०	१०	पू.भा.	५७	१८	सिद्ध	२१	४०	किं	१	५२	8	29	27	१६	मी. ४२/५५	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,	१०	१४	३२	५६	7	02	18	20
२८.२०	२	मंग	२५	५०	उ.भा.	५४	१८	साध्य	१५	१८	कौ	२५	५०	9	30	28	१७	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. ४५, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, स. सि. यो.	१०	१५	३३	१२	7	00	18	21
२८.३०	३	बुध	२०	५०	रेव	५०	४५	शुभ	८	२५	गर	२०	५०	10	जमा	मा.	१८	मे. ५०/४५	भ. ४८/०४ से, **पंचक समाप्त ५०/४५, मंगल अश्वि (१) मेष में(A)**	१०	१६	३३	२२	6	59	18	22
२८.३५	४	गुरु	१५	१८	अश्वि	४६	५०	शुक्ल/ब्रह्म	१/५३	००/२०	वि	१५	१८	11	2	2	१९	मेष	भ. १५/१८ तक, अविघ्नकर व्रत, गण्डमूल 25/41 तक, स. सि. यो.	१०	१७	३३	३३	6	58	18	23
२८.४०	५	शुक्र	९	३०	भर	४२	५०	ऐन्द्र	४५	४०	बा	९	३०	12	3	3	२०	वृ. ५६/५०	याज्ञवल्क्य जयन्ती	१०	१८	३३	४३	6	56	18	24
२८.४३	६	शनि	३	४३	कृति	३८	५५	वैधृ	३८	५	तै	३	४३	13	4	4	२१	वृष	भ. ५८/०३ से, सूर्य पू.भा. में २६/०३, **शुक्र वक्री १९/१८**	१०	१९	३३	५०	6	55	18	24
००.००	७	शनि	५८	३	०	०	०	००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	००	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	०	०	०	०	०	०	०	०
२८.४८	८	रवि	५२	४५	रोहि	३५	१८	विष्क	३०	४३	वि	२५	२४	14	5	5	२२	वृष	भ. २५/२४ तक, बुध पू.भा. में ३७/४३, **होलाष्टक प्रारम्भ, (B)**	१०	२०	३३	५६	6	54	18	25
२८.५३	९	चंद्र	४७	५३	मृग	३२	३	प्रीति	२३	४०	बा	२०	१९	15	6	6	२३	मि. ३/३८	स. सि. यो. — **होलाष्टक**	१०	२१	३३	५७	6	53	18	26
२८.५८	१०	मंग	४३	३८	आर्द्रा	२९	२५	आयु	१७	८	तै	१५	४६	16	7	7	२४	मिथुन	**5 से 12 मार्च तक**	१०	२२	३३	५७	6	51	18	26
२९.०३	११	बुध	४०	००	पुन	२७	२०	सौभा	११	००	व	११	४९	17	8	8	२५	क. १२/४८	भ. ११/४९ से ४०/०० तक, **आमलकी एकादशी व्रत**	१०	२३	३३	५६	6	50	18	27
२९.०८	१२	गुरु	३७	८	पुष्य	२५	५८	शोभ	५	२५	बव	८	३४	18	9	9	२६	कर्क	**गोविन्द द्वादशी**, गण्डमूल 17/12 से, **गुरुपुष्य योग**	१०	२४	३३	५३	6	49	18	28
२९.१३	१३	शुक्र	३५	५	अश्ले	२५	२८	अति/सुक	०/५६	३०/१५	कौ	६	७	19	10	10	२७	सिं. २५/२८	प्रदोष व्रत, **बुध मीन में ४९/३०** (26घं.-36मिं.), गण्डमूल विचार	१०	२५	३३	४८	6	48	18	29
२९.१८	१४	शनि	३४	३	मघा	२५	५०	धृति	५२	५३	गर	४	३४	20	11	11	२८	सिंह	भ. ३४/०३ से, महेश्वर व्रत, गण्डमूल 17/07 तक, वृषदान व्रत	१०	२६	३३	४०	6	47	18	29
२९.२३	१५	रवि	३४	८	पू.फा.	२७	२०	शूल	५०	२३	वि	४	६	21	12	12	२९	कं. ४२/५३	भ. ४/०६ तक, **फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन** (प्रदोषे), बुध उ.भा. में(C)	१०	२७	३३	२८	6	45	18	30

(A) ४९/०८, जमादि उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ, मार्च–सन् 2017 ई. प्रारम्भ, गण्डमूल विचार **(B)** अन्नपूर्णा अष्टमी, लक्ष्मी–सीताष्टमी **(C)** ३१/२८, होलाष्टक समाप्त, **होली पर्व (पं.)**, श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती

रवौ अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 5 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	१	०	१०	५	११	८	४	१०
२०	१४	०२	१८	२७	१९	०२	०८	०८
३०	०९	१६	४२	५६	०२	५१	४७	४७
२६	४६	०५	१५	३६	३९	०३	४४	४४
60	850	43	113	4	2	3	3	3
6	21	32	9	52	46	4	11	11
पूभा १	रोहि २	अश्वि १	शत ४	चित्रा २	रेव १	मूल १	मघा ३	शत १
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

- ११ — सू. बु. के.
- १२ — शु.
- १ — मं.
- २ — चं.
- ३
- ४
- ५ — रा.
- ६ — गु.
- ७
- ८
- ९ — श.
- १०

रवौ पूर्णिमायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 12 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
१०	४	०	११	५	११	८	४	१०
२७	२०	०७	०२	२७	१७	०३	०८	०८
३०	०५	१९	११	१९	५०	१०	२५	२५
२१	०७	५३	५५	२२	२६	३२	२९	२९
59	774	43	118	5	20	2	3	3
51	45	15	11	52	13	25	11	11
पूभा ३	पूफा ३	अश्वि ३	पूभा ४	चित्रा २	रेव. १	मूल १	मघा ३	शत १
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. पूर्णिमा, प्रातः 5:30

- ११ — सू. के.
- १२ — शु. बु.
- १ — मं.
- २
- ३
- ४
- ५ — चं. रा.
- ६ — गु.
- ७
- ८
- ९ — श.
- १०

फाल्गुन शुक्ल पक्षफल–

फाल्गुन शुक्लाष्टमी (5 मार्च) से होलाष्टक प्रारम्भ होंगे। उत्तर भारत के दिल्ली, पंजाब, हिमाचल, हरियाणा आदि प्रदेशों में होलाष्टकों में मंगल–शुभ कार्यों का आरम्भ वर्जित माना जाता है। अन्य प्रदेशों में विशेष विचार नहीं किया जाता है। **आमलकी एकादशी** (8 मार्च) के दिन आँवले के वृक्ष के नीचे बैठकर भगवान् विष्णु की भक्ति करनी चाहिए तथा आँवले की टहनी को कलश में स्थापन कर पूजन करना चाहिए। पूजनोपरान्त इस दिन आँवलों सहित भोजन का दान एवं सेवन करना उत्तमोत्तम होता है। **ता. 12 मार्च को** पूर्णिमा के **प्रदोषकाल** में **होलिका दहन** करने का विधान है। **ता. 12 मार्च, फाल्गुन पूर्णिमा** (उदय व्या.), रविवार को पंजाब, जम्मू, हि.प्र. आदि कुछ राज्यों में होलिका दहन से पूर्व ही उदय व्या पूर्णिमा में होली पर्व मनाया जाएगा, जबकि उ.प्र., हरियाणा, दिल्ली आदि प्रदेशों में ता. 12 मार्च को होलिका दहन के बाद ही अगले दिन ता. 13 मार्च, सोमवार को होली का पर्व बड़ी श्रद्धा एवं उत्साह से मनाया जाएगा। ता. 12 को फाल्गु. पूर्णिमा के दिन पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र होने से सुपूजित शय्या विद्वान् ब्राह्मण को दान करने से आज्ञाकारिणी व सुन्दर स्त्री/पति की प्राप्ति होती है। **ग्रह-गोचर**–ता. 1 मार्च को मंगल मेष (स्व.) राशि में आकर गुरु के साथ षडाष्टक योग बनाएगा। गेहूँ, चावल, जौं, चना आदि सभी धान्यों के भाव गिर जाएंगे। मूँगा, आदि रत्न, गुड़, सरसों में तेजी तथा राजा (प्रशासक) मनमाना आचरण एवं एकतरफा निर्णय लेंगे–**भूमिपुत्रोयदा मेषे सुभिक्षं सर्वधान्यकम्। प्रवालानि महर्घाणि क्रोधवांस्तु भवेत् नृपः।।** ता. 4 मार्च को शुक्र मीन राशि में वक्री होने से गेहूँ, धान्य, घी, तैल, रूई, अलसी व सोना, चाँदी में तेजी होगी–**यदादैत्यगुरुश्चेव राशिवक्रं चरिष्यति। धान्यार्घं च क्षयं कुर्याद् घृत तैल महर्घता।।**

आकाश लक्षण–इस पक्ष में भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में तेज़ आँधियाँ तथा खण्ड वर्षा के योग हैं। **शकुन**–फा. शु. ८ या १३ ति. को वृष्टि होना सुभिक्ष एवं आरोग्यता के संकेत होंगे।

वि. संवत् २०७३, चैत्र कृष्ण पक्ष शाकः १९३८–३९

सन् 2017 ई. (13 मार्च से 28 मार्च तक) हिजरी सन् 1438

सूर्य उत्तरायण, दक्षिण–उत्तर गोल, वसन्त ऋतुः

भा.स्टैं.टा. जालन्धर

प्रातः गुरु पश्चिम में तथा शनि पूर्वाकाश में याम्योत्तरवृत्त के पास दिखेगा। सायं मंग.–शुक्र पश्चिम क्षितिजासन्न होंगे। 20 मार्च से बुध भी पश्चिमी–क्षितिज में दिखेगा। 21 मार्च को शुक्र पश्चिम में अस्त होकर ता. 26 से प्रातः पूर्व से दिखाई देने लगेगा।

दिनमान घटी/पल	तिथि	वार	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	नक्षत्र	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	योग	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	करण	समाप्ति काल घ.	समाप्ति काल प.	तारीखें फाल्गु.	तारीखें जमादि.	तारीखें मार्च	तारीखें फाल्गु.	चंद्र राशि प्रवेश घड़ी-पल		दै. रा.	सू. अ.	स्प. क.	ष्ट. वि.	सूर्योदय घं.	सूर्योदय मिं.	सूर्यास्त घं.	सूर्यास्त मिं.
२९.२८	१	चंद्र	३५	२०	उ.फा.	२९	५५	गंड	४८	४८	बा	४	४४	22	13	13	३०	कन्या	वसन्तोत्सव, होला-मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब), **(A)**	१०	२८	३३	१७	6	44	18	31
२९.३०	२	मंग	३७	४८	हस्त	३३	४३	वृद्धि	४८	१०	तै	६	३४	23	14	14	चैत्र	कन्या	**सूर्य मीन में २७/०५, चैत्र संक्रान्ति,** मु. ३०, पुण्यकाल सं. 11/09**(B)**	१०	२९	३३	०२	6	43	18	31
२९.३५	३	बुध	४१	३०	चित्रा	३८	४३	ध्रुव	४८	२८	व	९	३९	24	15	15	२	तु. ६/०५	भ. ९/३९ से ४१/३० तक, वक्री शुक्र उ.भा. (४) में ३/३३	११	००	३२	४४	6	42	18	32
२९.४३	४	गुरु	४६	२०	स्वा	४४	४८	व्या	४९	३८	बव	१३	५५	25	16	16	३	तुला	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17), श्रीभगवान्नारायण जयन्ती	११	०१	३२	२८	6	40	18	33
२९.४५	५	शुक्र	५२	००	विशा	५१	४०	हर्ष	५१	२३	कौ	१९	१०	26	17	17	४	वृ. ३४/५३	सूर्य उ.भा. में ४८/०८, श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रा. **(C)**	११	०२	३२	०८	6	39	18	33
२९.५०	६	शनि	५८	८	अनु	५९	००	वज्र	५३	३३	गर	२५	४	27	18	18	५	वृश्चिक	भ. ५८/०८ से, वक्री गुरु चित्रा (१) में १८/१३, एकनाथ षष्ठी	११	०३	३१	४५	6	38	18	34
२९.५५	७	रवि	६०	००	ज्ये	६०	००	सिद्धि	५५	४३	वि	३१	१४	28	19	19	६	वृश्चिक	भ. ३१/१४ तक, बुध रेव. में २०/३०, शीतला सप्तमी, गण्डमूल 6/14 से	११	०४	३१	२२	6	37	18	35
३०.००	७	चंद्र	४	२०	ज्ये	६	२५	व्य.	५७	३३	बव	४	२०	29	20	20	७	ध. ६/२५	शीतला पूजन, मंगल भर. में १८/५३, सूर्य सायन मेष में २३/३०, **(D)**	११	०५	३०	५६	6	35	18	35
३०.०५	८	मंग	९	५५	मूल	१३	१३	वरी	५८	३८	कौ	९	५५	30	21	21	८	धनु	**व. शुक्र पश्चिम में अस्त** ४०/५०, गण्डमूल 11/51 तक, शीतलाष्टमी	११	०६	३०	३२	6	34	18	36
३०.१०	९	बुध	१४	२३	पू.षा.	१८	५५	परि	५८	३५	गर	१४	२३	चैत्र	22	22	९	म. ३५/०८	भ. ४५/५२ से, शक चैत्र एवं सन् 1939 प्रारम्भ (शुक्र अस्त–21 मार्च)	११	०७	३०	०५	6	33	18	37
३०.१३	१०	गुरु	१७	२०	उ.षा.	२३	८	शिव	५७	१३	वि	१७	२०	2	23	23	१०	मकर	भ. १७/२० तक, (शुक्र उदय–25 मार्च)	११	०८	२९	३३	6	32	18	37
३०.२०	११	शुक्र	१८	३०	श्रव	२५	३८	सिद्ध	५४	२५	बा	१८	३०	3	24	24	११	कुं. ५६/०८	**पंचक प्रारम्भ ५६/०८, पापमोचनी एकादशी व्रत,** स. सि. यो.	११	०९	२९	०१	6	30	18	38
३०.२५	१२	शनि	१७	४३	धनि	२६	१३	साध्य	५०	५	तै	१७	४३	4	25	25	१२	कुम्भ	शनि प्रदोष व्रत, व. **शुक्र पूर्व से उदय** ५६/५५, **महावारुणी योग 16/58 से**	११	१०	२८	२७	6	29	18	39
३०.२८	१३	रवि	१५	३	शत	२५	००	शुभ	४४	२०	व	१५	३	5	26	26	१३	कुम्भ	भ. १५/०३ से ४२/५४ तक, **वारुणी योग सूर्योदय** से 12/29 तक,**(E)**	११	११	२७	५३	6	28	18	39
३०.३३	१४	चंद्र	१०	४५	पू.भा.	२२	१३	शुक्ल	३७	२३	शकु	१०	४५	6	27	27	१४	मी. ८/०३	**अमावस** (पितृकार्येषु), **बुध** अश्वि (१) **मेष में २/५८, (F)**	११	१२	२७	१५	6	27	18	40
३०.४०	३०	मंग	५	५	उ.भा.	१८	१०	ब्रह्म	२९	३०	ना	५	५	7	28	28	१५	मीन	**चैत्र अमावस** (स्नानदानादि प्रातः 8/27 तक), **वि. संवत् 2073 पूर्ण(G)**	११	१३	२६	३७	6	25	18	41

(A) होली पर्व (उ.प्र., दिल्ली, हरि. आदि), ध्वजारोहण, धुलण्डी, होलिका विभूति धारण, धूलिवन्दन, आम्रकुसुम प्राशन **(B)** बाद से, सन्त तुकाराम जयन्ती **(C)** मेला गुरु रामराय (देहरादून) **(D)** उत्तर गोल प्रारम्भ, बुध पश्चिम से उदय ४०/५३, महाविषुव दिवस **(E)** मासशिवरात्रि व्रत **(F)** मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा) **(G)** वि. संवत् 2074 व चैत्र नवरात्रे प्रारम्भ (देखें पृ. 88), घटस्थापन (अभिजित मुहूर्त्त में), श्रीदुर्गा पूजा, गण्डमूल

भौमे अष्टम्यां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 21 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	८	०	११	५	११	८	४	१०
०६	१०	१३	१९	२६	१३	०३	०७	०७
२७	०९	४७	४२	२२	३५	२८	५६	५६
५३	००	२७	२१	१५	३३	५४	५२	५२
60	727	42	110	6	36	1	3	3
35	00	51	3	53	1	34	11	11
उ.भा. १	मूल ४	भर. १	रेव. १	चित्रा १	उ.भा. ४	मूल २	मघा ३	शत १
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अष्टमी, प्रातः 5:30

१ मं. | १२ सू. बु. शु. | ११ के. | १० | ९ चं. श. | ८ | ७ | ६ गु. | ५ रा. | ४ | ३ | २

भौमे अमावस्यायां ग्रह स्पष्ट प्रातः ५/३० बजे, 28 मार्च

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	रा.	के.
११	११	०	०	५	११	८	४	१०
१३	११	१८	०१	२५	०९	०३	०७	०७
२४	४५	४६	१९	३२	१५	३७	३४	३४
१९	३१	३२	११	१९	१८	४४	३६	३६
59	869	42	81	7	36	0	3	3
22	45	34	37	25	24	52	10	10
उ.भा. ४	उ.भा. ३	भर. २	अश्वि. १	चित्रा १	उ.भा. २	मूल २	मघा ३	शत १
०	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
०	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ

कुं. अमावस, प्रातः 5:30

१ बु. मं. | १२ सू. चं. शु. | ११ के. | १० | ९ श. | ८ | ७ | ६ गु. | ५ रा. | ४ | ३ | २

चैत्र कृष्ण पक्षफल–

प्रतिपदा (13 मार्च) को होला मेला, धुलैण्डी व वसन्त-उत्सव पंजाब, हरि., हि.प्र. आदि अनेक प्रदेशों में मनाया जाता है। उ.प्र. विशेषकर मथुरा-वृन्दावन में होली पर्व बड़े श्रद्धाभाव से मनाया जाएगा। ता. 16 मार्च को **श्रीगणेश चतुर्थी** का व्रत रखकर श्रीगणेश पूजन, मन्त्र-जप (**ॐ गं गणपत्ये नमः**) करने से विघ्न दूर होते हैं तथा पुत्र-पौत्रादि की प्राप्ति होती है। **पापमोचिनी एकादशी** (24 मार्च) का व्रत विधि अनुसार रखने से ज्ञातज्ञात अनिष्ट पापों से निवृत्ति होती है। ता. 25 मार्च को सायं 16घं.–58मिं. से शनिवार एवं शतभिषा नक्षत्र का योग होने से महावारुणी योग बना है। इस दिन एवं 26 मार्च को वारुणी योग 12/29 तक होने से तीर्थादि स्थल पर स्नान, दानादि का विशेष महत्त्व होता है। इसका माहात्म्य ग्रहणतुल्य होता है। चतुर्दशी को पिहोवा (कुरुक्षेत्र) पर मेला पृथूदक बड़ी श्रद्धापूर्वक मनाया जाता है। **चैत्र संक्रान्ति–ता. 14 मार्च,** मंगलवार को सायं 5 बजकर 33 मिनट पर सिंह लग्न में प्रवेश करेगी। ३० मुहूर्त्ति इस सं. का पुण्यकाल प्रातः 11/09 से शुरु होगा। महोदरी तथा ध्वांक्षी नामक यह सं. व्यापारियों, चोरों तथा बेईमान लोगों के लिए लाभप्रद रहेगी। मंगलवारी संक्रान्ति होने से तिल, तैल, घी, गुड़, शक्कर, ईख, वनस्पति, रसादि एवं सर्वप्रकार की मालपंसारी के भाव तेज होंगे। प्रजा में असन्तोष व दुःख –पीड़ा बढ़ेगी। राजनीतिक संकट, उपद्रव, कहीं छत्रभंग (शासन-परिवर्तन), अग्निकाण्ड एवं युद्धादि का भय रहेगा। इस पक्ष में मीन राशि में शुक्र अस्त एवं उदय होने से आगामी मास में वर्षा पर्याप्त हो तथा प्रजा में रोग नाश तथा सुख की व्याप्ति हो।–**मीनेमेघमहोदयः। रोगनाशः प्रजासौख्यं पृथिव्यां बहुमंगलम्।।**

वि. संवत् 2072-73, अप्रैल महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	अप्रैल	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वसन्त-ग्रीष्म ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
चैत्र कृष्ण पक्ष	1	८	शुक्र	8	54	पू.षा.	14	17	परि	12	3	म. 20/23	अप्रैल 2016 ई. प्रारम्भ, शीतलाष्टमी व्रत, राहु पू.फा. (4) केतु पू.भा.(A)	1	6/24	18/45	6/16	18/35	6/16	18/37	6/36	18/49
	2	९	शनि	8	34	उ.षा.	14	26	शिव	10	36	मकर	भद्रा 20/01 से, बुध अश्विनी (1) मेष में 27/44,	2	6/23	18/45	6/15	18/35	6/15	18/38	6/35	18/49
	3	१०	रवि	7	28	श्रव.	13	50	सिद्ध / साध्य	8 / 29	33 / 55	कुं. 25/15	भ. 7/28 तक, पंचक प्रारम्भ 25/15, पापमोचनी एकादशी व्रत (B)	3	6/21	18/46	6/13	18/36	6/14	18/38	6/34	18/49
	०	११	रवि	29	38	00	00	00	00	00	00	00	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	4	१२	चंद्र	27	7	धनि	12	31	शुभ	26	45	कुम्भ	पापमोचनी एकादशी व्रत (वैष्णव), वारुणी योग 27/07 से	4	6/19	18/47	6/12	18/37	6/12	18/39	6/34	18/49
	5	१३	मंग	24	4	शत.	10	35	शुक्ल	23	7	मी. 26/47	भ. 24/04 से, भौम प्रदोष व्रत, बुध पश्चिम में उदय 19/53, वारुणी(C)	5	6/18	18/48	6/11	18/38	6/11	18/40	6/33	18/49
	6	१४	बुध	20	37	पू.भा. / उ.भा.	8 / 29	8 / 20	ब्रह्म	19	8	मीन	भ. 10/21 तक, मेला पृथूदक-पिहोवातीर्थ (हरियाणा)	6	6/17	18/49	6/10	18/38	6/10	18/40	6/32	18/49
	7	३०	गुरु	16	54	रेव	26	22	ऐन्द्र	14	57	मे. 26/22	चैत्र अमावस, पंचक समाप्त 26/22, वि. संवत् 2072 पूर्ण	7	6/16	18/50	6/09	18/39	6/09	18/41	6/31	18/49
चैत्र शुक्ल पक्ष	8	१	शुक्र	13	6	अश्वि	23	23	वैधृ	10	44	मेष	'सौम्य' नाम वि. संवत् 2073 प्रारम्भ, चैत्र (वासन्त) नवरात्रे शुरु (D)	8	6/15	18/51	6/08	18/39	6/08	18/42	6/30	18/50
	9	२	शनि	9	23	भर.	20	34	विष्क / प्रीति	6 / 26	27 / 26	वृ. 25/55	गणगौरी तृतीया, श्रीमत्स्य जयन्ती, रज्जब (मुस्लि.) मास प्रारम्भ	9	6/14	18/52	6/07	18/40	6/06	18/42	6/30	18/50
	०	३	शनि	29	56	00	00	00	00	00	00	00	तृतीया तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	10	४	रवि	26	54	कृति	18	8	आयु	22	45	वृष	भ. 16/25 से 26/54 तक, बुध भर. में 8/24, दमनक चतुर्थी	10	6/12	18/52	6/06	18/40	6/05	18/43	6/29	18/50
	11	५	चंद्र	24	27	रोहि.	16	12	सौभा	19	31	मि. 27/28	श्री (लक्ष्मी) पंचमी, नाग-पंचमी, स. सि. यो.	11	6/11	18/53	6/04	18/41	6/04	18/44	6/29	18/51
	12	६	मंग	22	41	मृग.	14	54	शोभ	16	49	मिथुन	स्कन्द षष्ठी व्रत	12	6/10	18/54	6/03	18/41	6/03	18/45	6/28	18/51
	13	७	बुध	21	41	आर्द्रा	14	22	अति	14	44	मिथुन	भ. 21/41 से, सूर्य अश्वि (1) मेष में 19/47, वैशाख संक्रान्ति (E)	13	6/08	18/54	6/02	18/42	6/02	18/45	6/27	18/51
	14	८	गुरु	21	29	पुन.	14	36	सुक	13	17	क. 8/28	भ. 9/35 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, शुक्र रेव. में 15/19 (F)	14	6/07	18/55	6/01	18/43	6/01	18/46	6/26	18/51
	15	९	शुक्र	22	3	पुष्य	15	36	धृति	12	27	कर्क	श्रीरामनवमी, नवरात्रे समाप्त, गण्डमूल 15/36 से प्रा.,	15	6/06	18/56	6/00	18/43	5/59	18/46	6/25	18/52
	16	१०	शनि	23	18	आश्ले	17	17	शूल	12	11	सिं. 17/17	वक्री गुरु पू.फा. (2) में 8/54, नवरात्र-पारणा, गण्डमूल विचार	16	6/04	18/56	5/59	18/44	5/58	18/47	6/24	18/52
	17	११	रवि	25	7	मघा	19	33	गंड	12	23	सिंह	भ. 12/13 से 25/07 तक, कामदा एकादशी व्रत, मंगल वक्री 17/41(G)	17	6/03	18/57	5/58	18/44	5/57	18/47	6/23	18/52
	18	१२	चंद्र	27	19	पू.फा.	22	13	वृद्धि	12	57	कं. 28/57	श्रीविष्णु दमनोत्सव,	18	6/02	18/58	5/57	18/45	5/56	18/48	6/23	18/53
	19	१३	मंग	29	47	उ.फा.	25	10	ध्रुव	13	47	कन्या	भौम प्रदोष व्रत, श्रीमहावीर जयन्ती (जैन), अनङ्ग त्रयोदशी व्रत, (H)	19	6/01	18/58	5/56	18/45	5/55	18/49	6/22	18/53
	20	१४	बुध	–	–	हस्त	28	14	व्या.	14	45	कन्या	श्रीशिव-दमनोत्सव, बुध कृति. में 28/54, अगस्त्यास्त, स. सि. यो.	20	6/00	18/59	5/55	18/46	5/54	18/49	6/21	18/53
	21	१४	गुरु	8	21	चित्रा	–	–	हर्ष	15	47	तु. 17/47	भ. 8/21 से 21/38 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत, शक वैशाख प्रारम्भ	21	5/59	19/00	5/54	18/46	5/53	18/50	6/21	18/53
	22	१५	शुक्र	10	54	चित्रा	7	19	वज्र	16	46	तुला	चैत्र पूर्णिमा (स्नानदानादि), श्रीहनुमान जयन्ती (दक्षिण-भारत), (I)	22	5/58	19/00	5/53	18/47	5/52	18/51	6/20	18/54
वैशाख कृष्ण पक्ष	23	१	शनि	13	20	स्वा.	10	18	सिद्धि	17	40	तुला	वैशाख कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, स. सि. यो. 10/18 तक	23	5/57	19/01	5/52	18/48	5/51	18/52	6/19	18/54
	24	२	रवि	15	35	विशा	13	6	व्य.	18	24	वृ. 6/25	भद्रा 28/35 से,	24	5/55	19/02	5/51	18/48	5/50	18/52	6/19	18/54
	25	३	चंद्र	17	34	अनु.	15	40	वरी	18	56	वृश्चिक	भ. 17/34 तक, श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 14-17), शुक्र अश्वि (1)(J)	25	5/54	19/02	5/50	18/49	5/49	18/53	6/18	18/54
	26	४	मंग	19	11	ज्ये.	17	54	परि	19	12	ध. 17/54	सती अनुसूया जयन्ती, गण्डमूल विचार — शुक्र अस्त	26	5/53	19/03	5/49	18/49	5/48	18/54	6/17	18/55
	27	५	बुध	20	24	मूल	19	43	शिव	19	8	धनु	सूर्य भर. में 11/43, गण्डमूल 19/43 तक, — 28 अप्रैल	27	5/52	19/04	5/48	18/50	5/47	18/54	6/17	18/55
	28	६	गुरु	21	5	पू.षा.	21	3	सिद्ध	18	41	म. 27/17	भ. 21/05 से, शुक्र पूर्व में अस्त 27/50, बुध वक्री 22/46	28	5/51	19/05	5/47	18/50	5/46	18/55	6/16	18/56
	29	७	शुक्र	21	10	उ.षा.	21	48	साध्य	17	47	मकर	भद्रा 9/08 तक,	29	5/50	19/06	5/47	18/51	5/45	18/55	6/16	18/56
	30	८	शनि	20	37	श्रव.	21	55	शुभ	16	22	मकर	स. सि. यो. 21/55 तक	30	5/49	19/07	5/46	18/52	5/44	18/56	6/15	18/56

(A) (2) में 22/58 **(B)** (स्मार्त), शुक्र उ.भा. में 20/08, **(C)** योग 10/35 तक, मासशिवरात्रि व्रत **(D)** घटस्थापन (10/44 बाद), संवत्सर एवं वर्षफल श्रवण, चन्द्रदर्शन, मु. 30, ध्वजारोहण, तैलाभ्यङ्ग, गण्डमूल 23/23 तक, स.स.यो. **(E)** मु. 45, पुण्यकाल दोपहर 13/23 बाद से, **वैशाखी (पं.), *अर्द्धकुम्भी पर्व-पुण्य स्नान (हरिद्वार)*** (देखें पृ. 18) **(F)** अशोकाष्टमी, मेला बाहूफोर्ट (जम्मू), मेला काँगड़ादेवी, नैनादेवी (हि.प्र.), स.सि.यो. **(G)** दोलोत्सव, गण्डमूल 19/33 तक **(H)** सूर्य सायन वृष में 21/00, ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ, स. सि. यो. **(I)** वैशाखस्नान प्रारम्भ, चैत्री पूर्णिमा (चित्रा नक्षत्र युता)
(J) मेष में 10/50, शुक्र वार्धक्य प्रारम्भ 27/50, गण्डमूल 15/40 बाद से

वि. संवत् 2073, मई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	मई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] — ग्रीष्म ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
वैशाख कृष्ण पक्ष	1	९	रवि	19:23	धनि	21:22	शुक्ल	14:24	कुं. 9/43	मई मास प्रारम्भ, **पंचक प्रारम्भ 9/43,** वक्री बुध पश्चिम में अस्त 12/17	1	5/48	19/08	5/45	18/52	5/43	18/57	6/15	18/56
	2	१०	चंद्र	17:29	शत.	20:9	ब्रह्म	11:55	कुम्भ	भ. 6/26 से 17/29 तक	2	5/47	19/08	5/44	18/53	5/42	18/58	6/14	18/56
	3	११	मंग	14:58	पू.भा.	18:20	ऐन्द्र / वैधृ	8:54 / 29:26	मी. 12/50	**वरूथिनी एकादशी व्रत,** श्रीवल्लभाचार्य जयन्ती	3	5/46	19/09	5/43	18/54	5/41	18/58	6/14	18/57
	4	१२	बुध	11:56	उ.भा.	16:1	विष्क	25:36	मीन	प्रदोष व्रत, गण्डमूल 16/01 से,	4	5/45	19/09	5/42	18/54	5/40	18/59	6/13	18/57
	5	१३	गुरु	8:29	रेव	13:18	प्रीति	21:30	मे. 13/18	भ. 8/29 से 18/38 तक, **पंचक समाप्त 13/18,** मासशिवरात्रि व्रत, **(A)**	5	5/44	19/10	5/41	18/55	5/40	18/59	6/13	18/58
	0	१४	गुरु	28:47	00	00:00	00	00:00	00	चतुर्दशी तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	6	अमा	शुक्र	25:0	अश्वि	10:23	आयु	17:16	मेष	**वैशाख अमावस** (स्नानदानादि), शुक्र भर. में 6/37, गण्डमूल 10/23 तक	6	5/43	19/11	5/40	18/55	5/39	19/00	6/12	18/58
वैशाख शुक्ल पक्ष	7	१	शनि	21:17	भर. / कृति	7:25 / 28:36	सौभा	13:4	वृ. 12/41	वैशाख शुक्ल पक्षारम्भ, वक्री बुध भर. (4) में 14/38, श्रीटैगोर जयन्ती	7	5/43	19/11	5/40	18/56	5/38	19/01	6/12	18/58
	8	२	रवि	17:51	रोहि.	26:7	शोभ / अति	9:2 / 29:18	वृष	चन्द्रदर्शन, मु. 45, **भगवान् श्रीपरशुराम जयन्ती,** श्री शिवाजी जयन्ती	8	5/42	19/12	5/39	18/56	5/37	19/01	6/12	18/59
	9	३	चंद्र	14:53	मृग	24:9	सुक	26:2	मि. 13/03	भ. 25/42 से, **अक्षय तृतीया,** गुरु मार्गी 17/39, शव्वान (मुस्लि.) **(B)**	9	5/41	19/13	5/38	18/57	5/36	19/02	6/11	18/59
	10	४	मंग	12:30	आर्द्रा	22:53	धृति	23:20	मिथुन	भ. 12/30 तक,	10	5/41	19/14	5/38	18/57	5/36	19/03	6/11	18/59
	11	५	बुध	10:53	पुन.	22:23	शूल	21:16	क. 16/26	सूर्य कृति. में 05/49, **आद्यगुरु श्रीशंकराचार्य जयन्ती**	11	5/40	19/15	5/37	18/58	5/35	19/03	6/10	19/01
	12	६	गुरु	10:6	पुष्य	22:45	गंड	19:54	कर्क	श्रीरामानुजाचार्य जयन्ती, **श्रीगङ्गा-जयन्ती** (मध्याह्न व्या.) (देखें पृ. 84), **(C)**	12	5/39	19/16	5/36	18/59	5/34	19/04	6/10	19/01
	13	७	शुक्र	10:11	आश्ले	23:56	वृद्धि	19:13	सिं. 23/56	भ. 10/11 से 22/38 तक, गण्डमूल विचार	13	5/39	19/17	5/36	18/59	5/34	19/05	6/09	19/01
	14	८	शनि	11:5	मघा	25:53	ध्रुव	19:8	सिंह	**सूर्य वृष में 16/41, ज्येष्ठ संक्रान्ति,** मु. 30, पुण्यकाल सं. प्रातः **(D)**	14	5/38	19/17	5/35	19/00	5/33	19/05	6/09	19/02
	15	९	रवि	12:42	पू.फा.	28:24	व्या.	19:34	सिंह		15	5/37	19/18	5/34	19/00	5/32	19/06	6/09	19/02
	16	१०	चंद्र	14:50	उ.फा.	–:–	हर्ष	20:22	कं. 11/06	भ. 28/04 से, शुक्र कृति. में 26/41	16	5/36	19/18	5/34	19/01	5/32	19/07	6/09	19/02
	17	११	मंग	17:18	उ.फा.	7:19	वज्र	21:22	कन्या	भ. 17/18 तक, **मोहिनी एकादशी व्रत,** वक्री बुध पूर्व में उदय 22/19	17	5/36	19/19	5/33	19/02	5/31	19/07	6/09	19/03
	18	१२	बुध	19:52	हस्त	10:25	सिद्धि	22:27	तु. 23/59	स. सि. यो. 10/25 तक	18	5/35	19/20	5/33	19/02	5/30	19/08	6/08	19/03
	19	१३	गुरु	22:23	चित्रा	13:31	व्य.	23:28	तुला	प्रदोष व्रत, **शुक्र वृष में 19/45**	19	5/35	19/21	5/32	19/03	5/30	19/08	6/08	19/03
	20	१४	शुक्र	24:42	स्वा.	16:28	वरी	24:20	तुला	भ. 24/42 से, **श्रीनृसिंह जयन्ती,** सूर्य सायन मिथुन में **(E)**	20	5/34	19/21	5/32	19/03	5/29	19/09	6/07	19/04
	21	१५	शनि	26:44	विशा	19:10	परि	25:0	वृ. 12/31	भ. 13/43 तक, **वैशाख पूर्णिमा, श्रीबुद्ध-जयन्ती, कुम्भ महापर्व (F)**	21	5/33	19/22	5/31	19/04	5/29	19/10	6/07	19/04
ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष	22	१	रवि	28:27	अनु.	21:34	शिव	25:24	वृश्चिक	ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शक ज्येष्ठ प्रारम्भ, बुध मार्गी 18/48	22	5/33	19/23	5/31	19/05	5/28	19/11	6/07	19/04
	23	२	चंद्र	–:–	ज्ये.	23:37	सिद्ध	25:32	ध. 23/37	श्रीनारद जयन्ती, वीणादान, गण्डमूल	23	5/32	19/24	5/30	19/05	5/28	19/11	6/06	19/05
	24	२	मंग	5:48	मूल	25:19	साध्य	25:22	धनु	भद्रा 18/17 से, सूर्य रोहिणी में 26/07, गण्डमूल 25/19 तक	24	5/31	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	25	३	बुध	6:46	पू.षा.	26:38	शुभ	24:55	धनु	भ. 6/46 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17)	25	5/30	19/25	5/30	19/06	5/27	19/12	6/06	19/05
	26	४	गुरु	7:20	उ.षा.	27:32	शुक्ल	24:7	म. 8/54		26	5/30	19/25	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
	27	५	शुक्र	7:28	श्रव.	27:59	ब्रह्म	22:58	मकर	शुक्र रोहि. में 23/00, स. सि. योग	27	5/30	19/26	5/29	19/07	5/26	19/13	6/06	19/06
	28	६	शनि	7:9	धनि	27:56	ऐन्द्र	21:26	कुं. 16/01	भ. 7/09 से 18/44 तक, **पंचक प्रारम्भ 16/01**	28	5/29	19/26	5/29	19/08	5/26	19/14	6/05	19/07
	29	७	रवि	6:19	शत	27:22	वैधृ	19:28	कुम्भ		29	5/29	19/27	5/28	19/08	5/25	19/15	6/05	19/07
	0	८	रवि	28:57	00	00:00	00	00:00	00	अष्टमी तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	30	९	चंद्र	27:4	पू.भा.	26:17	विष्क	17:4	मी. 20/36		30	5/29	19/28	5/28	19/09	5/25	19/15	6/05	19/08
	31	१०	मंग	24:40	उ.भा.	24:41	प्रीति	14:15	मीन	भ. 13/52 से 24/40 तक, गण्डमूल 24/41 से, स. सि. यो.	31	5/29	19/28	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08

(A) गण्डमूल विचार **(B)** मास प्रारम्भ, केदार-बदरी यात्रा प्रारम्भ, टैगोर जयं. (मतान्तरे), मातंगी जयन्ती, स. सि. यो. **(C)** गण्डमूल, **गुरु-पुष्य योग (D)** 10/17 बाद, **जानकी (सीता) नवमी** (देखें पृ. 84), श्रीदुर्गाष्टमी, श्रीबगलामुखी जयन्ती, गण्डमूल 25/53 तक **(E)** 20/07 **(F)** [illegible] (देखें पृ. 18), [illegible] (देखें पृ. 14), वैशाख स्नान समाप्त, वक्री शनि ज्ये. (1) में 05/42

वि. संवत् 2073, जून महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	ता.	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मि.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मि.	योग	समाप्ति काल घं. मि.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मि.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश (सूर्य उत्तर-दक्षिणायन, घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.], ग्रीष्म-वर्षा ऋतुः)	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मि.	जम्मू सूर्यास्त घं.मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मि.	मुम्बई सूर्योदय घं.मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मि.
ज्येष्ठ कृष्ण	1	११	बुध	21:50	रेव	22:39	आयु	11:3	मे.22/39	जून मास प्रारम्भ, पंचक समाप्त 22/39, अपरा एकादशी व्रत, भद्रकाली एकादशी (पं.)	1	5/28	19/29	5/28	19/10	5/25	19/16	6/05	19/08
	2	१२	गुरु	18:40	अश्वि	20:16	सौभा शोभ	7:31 27:44	मेष	प्रदोष व्रत, गुरु पू.फा. (3) में 9/53, गण्डमूल 20/16 तक, स. सि. योग	2	5/28	19/29	5/28	19/10	5/24	19/16	6/05	19/09
	3	१३	शुक्र	15:17	भर.	17:42	अति	23:51	वृ.23/02	भ. 15/17 से 25/34 तक, राहु पू.फा. (3), केतु पू.भा. (1) में 21/00(A)	3	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	4	१४	शनि	11:50	कृति	15:5	सुक	19:57	वृष	शनैश्चर जयन्ती, अमावस (पितृकार्येषु), वटसावित्री व्रत (अमा. पक्ष),(B)	4	5/28	19/30	5/27	19/11	5/24	19/17	6/05	19/09
	5	३०	रवि	8:30	रोहि	12:36	धृति	16:13	मि.23/28	ज्येष्ठ अमावस (स्नानदानादि), भावुका अमावस व करिदिन, श्रीगङ्गा (C)	5	5/28	19/31	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष	0	१	रवि	29:26	00	00:00	00	00:00	00	ज्येष्ठ शुक्ल प्रतिपदा तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	6	२	चंद्र	26:50	मृग	10:26	शूल	12:46	मिथुन	चन्द्रदर्शन, मु. 15, स. सि. यो. 10/26 तक	6	5/28	19/32	5/27	19/12	5/24	19/18	6/05	19/10
	7	३	मंग	24:50	आर्द्रा	8:46	गंड	9:44	क.25/56	रम्भा तृतीया व्रत, सूर्य मृग. में 23/56, शुक्र मृग. में 19/22, महाराणा (D)	7	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/10
	8	४	बुध	23:36	पुन	7:45	वृद्धि ध्रुव	7:15 29:23	कर्क	भ. 12/13 से 23/36 तक, उमा-अवतार, **बुध वृष में 9/47**	8	5/27	19/32	5/27	19/13	5/23	19/19	6/05	19/11
	9	५	गुरु	23:10	पुष्य	7:30	व्या.	28:12	कर्क	गण्डमूल 7/30 से प्रा., गुरु-पुष्य योग 7/30 तक, स. सि. यो.	9	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	10	६	शुक्र	23:36	आश्ले	8:5	हर्ष	27:41	सिं. 8/05	विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य षष्ठी, गण्डमूल विचार	10	5/27	19/33	5/27	19/14	5/23	19/20	6/05	19/11
	11	७	शनि	24:48	मघा	9:29	वज्र	27:45	सिंह	भ. 24/48 से, गण्डमूल 9/29 तक,	11	5/26	19/34	5/27	19/14	5/23	19/21	6/05	19/11
	12	८	रवि	26:40	पू.फा.	11:36	सिद्धि	28:19	कं.18/14	भ. 13/44 तक, श्रीदुर्गाष्टमी, धूमावती जयन्ती, मेला क्षीर भवानी (E)	12	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
	13	९	चंद्र	28:57	उ.फा.	14:16	व्य.	29:12	कन्या	**शुक्र मिथुन में 5/36**, उमा ब्राहाणी व्रत, नैपच्यून वक्री 21/15	13	5/26	19/34	5/27	19/15	5/23	19/21	6/05	19/12
	14	१०	मंग	–	हस्त	17:15	वरी	–	कन्या	**सूर्य मिथुन में 23/19, आषाढ़ संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल मध्याह्न (F)	14	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	15	१०	बुध	7:27	चित्रा	20:20	वरी	6:14	तु. 6/48	भ. 20/41 से, बुध रोहि. में 25/17	15	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/12
	16	११	गुरु	9:55	स्वा.	23:17	परि	7:16	तुला	भ. 9/55 तक, **निर्जला एकादशी व्रत**	16	5/26	19/35	5/27	19/16	5/23	19/22	6/05	19/13
	17	१२	शुक्र	12:10	विशा	25:57	शिव	8:8	वृ.19/19	प्रदोष व्रत, **वक्री मंगल तुला में 23/52**, वटसावित्री व्रतारम्भ, चम्पक द्वादशी	17	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	18	१३	शनि	14:3	अनु.	28:14	सिद्ध	8:45	वृश्चिक	शुक्र आर्द्रा में 15/50	18	5/27	19/36	5/27	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	19	१४	रवि	15:31	ज्ये.	–	साध्य	9:3	वृश्चिक	भ. 15/31 से 28/02 तक, **वटसावित्री व्रत** (देखें पृ. 85), श्रीसत्यनारायण व्रत	19	5/27	19/36	5/28	19/17	5/24	19/23	6/06	19/13
	20	१५	चंद्र	16:32	ज्ये.	6:05	शुभ	8:59	ध. 6/05	**ज्येष्ठ पूर्णिमा (ज्येष्ठी योग), सन्त कबीर जयन्ती**, सूर्य सायन कर्क (G)	20	5/27	19/37	5/28	19/17	5/24	19/24	6/06	19/14
आषाढ़ कृष्ण पक्ष	21	१	मंग	17:7	मूल	7:31	शुक्ल	8:36	धनु	आषाढ़ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **सूर्य आर्द्रा में 22/59**, गण्डमूल 7/31 तक	21	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/06	19/14
	22	२	बुध	17:18	पू.षा.	8:31	ब्रह्म	7:52	म.14/43	भ. 29/12 से, शक आषाढ़ प्रारम्भ	22	5/28	19/37	5/28	19/18	5/24	19/24	6/07	19/14
	23	३	गुरु	17:5	उ.षा.	9:9	ऐन्द्र	6:50	मकर	भ. 17/05 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17), बुध मृग. में 22/02	23	5/28	19/37	5/28	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	24	४	शुक्र	16:31	श्रव.	9:25	वैधृ विष्क	5:30 27:54	कुं.21/26	**पंचक प्रारम्भ 21/26**, स. सि. यो. 9/25 तक	24	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/24	6/07	19/14
	25	५	शनि	15:37	धनि	9:21	प्रीति	26:1	कुम्भ	बुध पूर्व में अस्त 28/19	25	5/29	19/37	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
	26	६	रवि	14:21	शत.	8:56	आयु	23:51	मी.26/24	भ. 14/21 से 25/33 तक,	26	5/29	19/38	5/29	19/18	5/25	19/25	6/07	19/15
	27	७	चंद्र	12:45	पू.भा.	8:10	सौभा	21:24	मीन	**बुध मिथुन में 8/06**, यूरेनस अश्वि (1) मेष में 16/52	27	5/30	19/38	5/29	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	28	८	मंग	10:48	उ.भा.	7:4	शोभ	18:40	मीन	गण्डमूल 7/04 से,	28	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/07	19/15
	29	९	बुध	8:32	रेव अश्वि	5:38 27:56	अति	15:42	मे. 5/38	भ. 19/16 से, **पंचक समाप्त 5/38**, शुक्र पुन. में 12/18, **मंगल (H)**	29	5/30	19/38	5/30	19/19	5/26	19/25	6/08	19/16
	30	१०	गुरु	5:59	भर.	26:0	सुक	12:30	मेष	भ. 5/59 तक, **योगिनी एकादशी व्रत** (स्मार्त), बुध आर्द्रा में 13/26	30	5/31	19/38	5/30	19/19	5/27	19/25	6/08	19/16
	0	११	गुरु	27:14	00	00:00	00	00:00	00	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000

(A) मासशिवरात्रि व्रत, वटसावित्री व्रतारम्भ **(B)** वक्री मंगल विशा. (4) में 12/03, बुध कृति. में 26/57 **(C)** स्नान प्रारम्भ, करवीर व्रत **(D)** प्रताप जयन्ती, रमज़ान (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(E)** (काश्मीर), स. सि. यो. **(F)** बाद से अगले दिन प्रातः 05/43 तक, **गंगा-दशहरा पर्व (हरिद्वार)** (देखें पृ. 84) **(G)** में 28/05, सायन दक्षिणायन प्रारम्भ, वर्षा ऋतु प्रारम्भ, गण्डमूल **(H) मार्गी 29/09,**

वि. संवत् 2073, जुलाई महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	जुलाई	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	समाप्ति काल मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वर्षा ऋतुः
आषा. कृ.	1	१२	शुक्र	24	23	कृति	23	58	धृति	9	10	वृ. 7/30	योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), जुलाई मास प्रारम्भ
	2	१३	शनि	21	34	रोहि	21	57	शूल गंड	5 20	47 26	वृष	भ. 21/34 से, शनि प्रदोष व्रत, मासशिवरात्रि व्रत, स. सि. यो.
	3	१४	रवि	18	53	मृग	20	6	वृद्धि	23	14	मि. 8/59	भ. 8/14 तक, गुरु पू.फा. (4) में 17/44,
	4	३०	चंद्र	16	31	आर्द्रा	18	33	ध्रुव	20	19	मिथुन	आषाढ़ी अमावस, सोमवती अमावस (मेला हरिद्वार, प्रयागराजादि)
आषाढ़ शुक्ल पक्ष	5	१	मंग	14	36	पुन	17	28	व्या.	17	48	क. 11/41	आषाढ़ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, सूर्य पुन. में 22/33, गुप्त नवरात्रे प्रारम्भ
	6	२	बुध	13	16	पुष्य	16	59	हर्ष	15	46	कर्क	चन्द्रदर्शन, मु. 30, रथयात्रा (श्रीजगन्नाथपुरी), बुध पुन. में 17/47, (A)
	7	३	गुरु	12	38	आश्ले	17	12	वज्र	14	18	सिं.17/12	भ. 24/42 से, शुक्र कर्क में 15/36, शव्वाल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, गं.मू.
	8	४	शुक्र	12	45	मघा	18	10	सिद्धि	13	26	सिंह	भ. 12/45 तक, वक्री शनि अनु. (4) में 24/32, गण्डमूल 18/10 तक,
	9	५	शनि	13	37	पू.फा.	19	51	व्य.	13	10	कं.26/22	स्कन्द-षष्ठी, कुमार षष्ठी (पञ्चमी-विद्धा) (देखें पृ. 85), शुक्र (B)
	10	६	रवि	15	9	उ.फा.	22	10	वरी	13	25	कन्या	शुक्र पुष्य में 8/41, पद्मक योग — शुक्र उदय 9 जुला.
	11	७	चंद्र	17	12	हस्त	25	0	परि	14	4	कन्या	भ. 17/12 से, बुध कर्क में 9/48, विवस्वत् सप्तमी
	12	८	मंग	19	34	चित्रा	27	54	शिव	14	59	तु.14/24	भ. 6/23 तक, मंगल वृश्चिक में 14/02, बुध पुष्य में 24/08, (Z)
	13	९	बुध	22	0	स्वा.	–	–	सिद्ध	15	59	तुला	भढली नवमी, गुप्त नवरात्रे समाप्त, मेला शरीक भवानी (काश्मीर)
	14	१०	गुरु	24	15	स्वा.	6	52	साध्य	16	53	वृ.26/57	
	15	११	शुक्र	26	8	विशा	9	36	शुभ	17	33	वृश्चिक	भ. 13/12 से 26/08 तक, देवशयनी एकादशी व्रत, चातुर्मास्य व्रत, (C)
	16	१२	शनि	27	32	अनु	11	56	शुक्ल	17	51	वृश्चिक	सूर्य कर्क में 10/15, श्रावण संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं.सायं (D)
	17	१३	रवि	28	23	ज्ये.	13	46	ब्रह्म	17	45	ध.13/46	प्रदोष व्रत, गण्डमूल विचार
	18	१४	चंद्र	28	40	मूल	15	3	ऐन्द्र	17	12	धनु	भ. 28/40 से, बुध पश्चिम में उदय 29/13, अम्बिका व्रत, (E)
	19	१५	मंग	28	27	पू.षा.	15	48	वैधृ	16	14	म.21/54	भ. 16/34 तक, आषाढ़ी पूर्णिमा, गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, सूर्य (F)
श्रावण कृष्ण पक्ष	20	१	बुध	27	45	उ.षा.	16	4	विष्क	14	52	मकर	चान्द्र श्रावण कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, शुक्र आश्ले. में 29/04
	21	२	गुरु	26	41	श्रव.	15	55	प्रीति	13	9	कुं.27/42	पंचक प्रारम्भ 27/42, अशून्यशयन व्रत
	22	३	शुक्र	25	17	धनि	15	25	आयु	11	9	कुम्भ	भ. 13/59 से 25/17 तक, सूर्य सायन सिंह में 15/00
	23	४	शनि	23	38	शत	14	38	सौभा	8	55	कुम्भ	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 14-17), शक श्रावण प्रारम्भ
	24	५	रवि	21	47	पू.भा.	13	37	शोभ अति	6 27	29 54	मी. 7/53	नागपंचमी (राज. व बंगाल), गुरु उ.फा. (1) में 20/33,
	25	६	चंद्र	19	46	उ.भा.	12	26	सुक	25	11	मीन	भ. 19/46 से, गण्डमूल 12/26 से,
	26	७	मंग	17	36	रेव	11	6	धृति	22	22	मे.11/06	भ. 6/41 तक, पंचक समाप्त 11/06, मंगल अनु. में 11/35, (G)
	27	८	बुध	15	22	अश्वि	9	41	शूल	19	28	मेष	बुध मघा (1) सिंह में 7/11, गण्डमूल 9/41 तक
	28	९	गुरु	13	4	भर	8	11	गंड	16	33	वृ.13/48	भ. 23/56 से प्रा.,
	29	१०	शुक्र	10	47	कृति रोहि	6 29	41 14	वृद्धि	13	38	वृष	भ. 10/47 तक, यूरेनस वक्री 22/09
	30	११	शनि	8	34	मृग	27	56	ध्रुव	10	48	मि.16/34	कामिका एकादशी व्रत,
	31	१२	रवि	6	31	आर्द्रा	26	52	व्या. हर्ष	8 29	6 36	मिथुन	भ. 28/42 से प्रा., प्रदोष व्रत, शुक्र मघा (1) सिंह में 25/28,
	0	१३	रवि	28	42	00	00	00	00	00	00	00	त्र्योदशी तिथि का क्षय °° °°

तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मि.	जम्मू सूर्यास्त घं.मि.	दिल्ली सूर्योदय घं.मि.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मि.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मि.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मि.	मुम्बई सूर्योदय घं.मि.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मि.
1	5/31	19/38	5/31	19/19	5/27	19/25	6/09	19/16
2	5/31	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/09	19/16
3	5/32	19/38	5/31	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
4	5/32	19/38	5/32	19/19	5/28	19/25	6/10	19/16
5	5/32	19/38	5/32	19/19	5/29	19/25	6/10	19/16
6	5/33	19/38	5/33	19/18	5/29	19/25	6/11	19/16
7	5/33	19/38	5/33	19/18	5/30	19/24	6/11	19/16
8	5/34	19/38	5/34	19/18	5/30	19/24	6/12	19/16
9	5/34	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
10	5/35	19/37	5/34	19/18	5/31	19/24	6/12	19/16
11	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
12	5/36	19/37	5/35	19/18	5/32	19/23	6/13	19/16
13	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/13	19/16
14	5/37	19/36	5/36	19/17	5/33	19/23	6/14	19/16
15	5/38	19/36	5/37	19/17	5/34	19/22	6/14	19/16
16	5/38	19/36	5/37	19/16	5/34	19/22	6/14	19/16
17	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/22	6/14	19/15
18	5/39	19/35	5/38	19/16	5/35	19/21	6/15	19/15
19	5/40	19/35	5/39	19/15	5/36	19/21	6/15	19/15
20	5/40	19/35	5/40	19/15	5/37	19/21	6/15	19/14
21	5/41	19/34	5/40	19/14	5/37	19/20	6/16	19/14
22	5/42	19/34	5/41	19/14	5/38	19/20	6/16	19/14
23	5/42	19/33	5/41	19/13	5/38	19/19	6/16	19/13
24	5/43	19/32	5/42	19/13	5/39	19/19	6/17	19/13
25	5/44	19/32	5/42	19/12	5/40	19/18	6/17	19/13
26	5/45	19/31	5/43	19/12	5/40	19/17	6/17	19/12
27	5/45	19/30	5/43	19/11	5/41	19/17	6/18	19/12
28	5/46	19/30	5/44	19/11	5/41	19/16	6/18	19/12
29	5/47	19/29	5/44	19/10	5/42	19/15	6/18	19/11
30	5/47	19/27	5/45	19/10	5/43	19/15	6/19	19/11
31	5/48	19/27	5/46	19/09	5/43	19/14	6/19	19/10
0	000	000	000	000	000	000	000	000

(A) गण्डमूल 16/59 से, (B) पश्चिम में उदय 05/40 (Z) श्रीदुर्गाष्टमी, शुक्र बाल्यत्व समाप्त 05/40 (C) नियमादि प्रारम्भ, श्रीविष्णु-शयनोत्सव, स. सि. यो. (D) 16/39 तक, निरयण दक्षिणायन प्रारम्भ, गण्डमूल 11/56 से, (E) मेला ज्वालामुखी (काश्मीर), गण्डमूल 15/03 तक, (F) पुष्य में 22/06, बुध आश्लेषा में 18/05, श्रीसत्यनारायण व्रत, कोकिला व्रत, शिवशयनोत्सव, वायु परीक्षा (G) शीतला सप्तमी, मङ्गलागौरी व्रत प्रारम्भ, स. सि. योग

वि. संवत् 2073, अगस्त महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2016 ई.

मास पक्ष	अगस्त	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — वर्षा-शरद् ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
श्रा. कृ.	1	१४	चंद्र	27	15	पुन.	26	9	वज्र	27	23	क.20/17	भ. 15/59 तक, अगस्त मास प्रारम्भ, मासशिवरात्रि व्रत, (A)	1	5/48	19/25	5/46	19/08	5/44	19/13	6/20	19/10
	2	३०	मंग	26	15	पुष्य	25	52	सिद्धि	25	33	कर्क	हरियाली (भौमवती) अमावस, सूर्य आश्ले. में 21/01	2	5/49	19/25	5/47	19/08	5/44	19/12	6/20	19/09
श्रावण शुक्ल पक्ष	3	१	बुध	25	47	अश्ले	26	7	व्य.	24	8	सिं.26/07	श्रावण शुक्ल पक्षारम्भ, मेला छिन्नमस्तिका (चिन्तपूर्णी) प्रा., गण्डमूल विचार	3	5/49	19/24	5/47	19/07	5/45	19/11	6/20	19/09
	4	२	गुरु	25	55	मघा	26	58	वरी	23	12	सिंह	चन्द्रदर्शन, मु. 30, बुध पू.फा. में 24/49, गण्डमूल 26/58 तक,	4	5/50	19/23	5/48	19/06	5/46	19/11	6/21	19/08
	5	३	शुक्र	26	42	पू.फा.	28	26	परि	22	46	सिंह	मधुस्रवा-हरियाली-सिंघारा तीज, राहु पू.फा. (2), केतु शत. (4) में(B)	5	5/51	19/23	5/48	19/05	5/46	19/10	6/21	19/08
	6	४	शनि	28	5	उ.फा.	–	–	शिव	22	48	कं.10/54	भ. 15/24 से 28/05 तक, दूर्वा गणपति व्रत, वरद् चतुर्थी	6	5/52	19/22	5/49	19/05	5/47	19/09	6/21	19/07
	7	५	रवि	–	–	उ.फा.	6	29	सिद्ध	23	16	कन्या	नाग-पंचमी	7	5/52	19/21	5/49	19/04	5/47	19/08	6/22	19/07
	8	५	चंद्र	5	59	हस्त	9	1	साध्य	24	2	तु.22/25	श्रीकल्कि जयन्ती (सायाह्न-व्यापिनी)	8	5/53	19/20	5/50	19/03	5/48	19/07	6/22	19/06
	9	६	मंग	8	14	चित्रा	11	53	शुभ	24	58	तुला		9	5/53	19/19	5/51	19/02	5/49	19/06	6/22	19/05
	10	७	बुध	10	39	स्वा.	14	52	शुक्ल	25	55	तुला	भ. 10/39 से 23/50 तक, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती	10	5/54	19/18	5/51	19/01	5/49	19/05	6/22	19/05
	11	८	गुरु	13	0	विशा	17	44	ब्रह्म	26	42	वृ.11/02	श्रीदुर्गाष्टमी, गुरु उ.फा. 2 कन्या में 21/25, शुक्र पू.फा. में 21/55,(C)	11	5/55	19/17	5/52	19/01	5/50	19/04	6/22	19/04
	12	९	शुक्र	15	2	अनु	20	17	ऐन्द्र	27	11	वृश्चिक	गण्डमूल 20/17 से,	12	5/56	19/16	5/52	19/00	5/51	19/03	6/23	19/03
	13	१०	शनि	16	35	ज्ये.	22	20	वैधृ	27	13	ध.22/20	भ. 21/04 से, शनि मार्गी 15/10, गण्डमूल विचार,	13	5/57	19/15	5/53	18/59	5/51	19/02	6/23	19/03
	14	११	रवि	17	32	मूल	23	46	विष्क	26	47	धनु	भ. 17/32 तक, पवित्रा एकादशी व्रत, गण्डमूल 23/46 तक, स. सि. यो.	14	5/57	19/13	5/53	18/58	5/52	19/02	6/23	19/02
	15	१२	चंद्र	17	49	पू.षा.	24	34	प्रीति	25	48	धनु	सोम प्रदोष व्रत, बुध उ.फा. में 25/31, भारत स्वतन्त्रता दिवस	15	5/58	19/12	5/54	18/57	5/52	19/01	6/23	19/02
	16	१३	मंग	17	26	उ.षा.	24	43	आयु	24	18	म. 6/39	सूर्य मघा (1) सिंह में 18/39, भाद्रपद संक्रान्ति, मु. 45, (D)	16	5/59	19/11	5/54	18/56	5/53	19/00	6/24	19/01
	17	१४	बुध	16	27	श्रव.	24	17	सौभा	22	21	मकर	भ. 16/27 से 27/42 तक, ऋग्वेदि उपाकर्म, श्रीसत्यनारायण व्रत	17	5/59	19/10	5/55	18/55	5/54	18/59	6/24	19/01
	18	१५	गुरु	14	57	धनि	23	22	शोभ	19	58	कुं.11/53	श्रावण पूर्णिमा, रक्षा-बन्धन (राखी), पंचक प्रारम्भ 11/53 (E)	18	6/00	19/09	5/55	18/54	5/54	18/58	6/24	19/00
भाद्रपद कृष्ण पक्ष	19	१	शुक्र	13	1	शत	22	4	अति	17	16	कुम्भ	भाद्रपद कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, बुध कन्या में 17/24, गायत्री जपम्	19	6/00	19/08	5/56	18/53	5/55	18/56	6/24	19/00
	20	२	शनि	10	45	पू.भा.	20	30	सुक	14	20	मी.14/54	भ. 21/32 से, कजली-तृतीया (चं. उ. व्या.)	20	6/01	19/06	5/56	18/52	5/55	18/55	6/24	19/00
	21	३	रवि	8	18	उ.भा.	18	46	धृति	11	14	मीन	भ. 8/18 तक, श्रीगणेश बहुला चतुर्थी (देखें पृ. 14-17), गण्डमूल (F)	21	6/01	19/05	5/57	18/51	5/56	18/54	6/25	18/59
	0	४	रवि	29	44	00	00	00	00	00	00	00	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	22	५	चंद्र	27	9	रेव	16	58	शूल गंड	8 28	4 53	मे.16/58	पंचक समाप्त 16/58, शुक्र उ.फा. में 18/39, सूर्य सायन कन्या में 22/09(Z)	22	6/02	19/04	5/58	18/50	5/56	18/53	6/25	18/58
	23	६	मंग	24	39	अश्वि	15	13	वृद्धि	25	46	मेष	भ. 24/39 से, चन्दन षष्ठी व्रत, चन्द्रोदय 22/38(जालन्धर),हल-षष्ठी (G)	23	6/02	19/03	5/58	18/49	5/57	18/52	6/25	18/57
	24	७	बुध	22	17	भर.	13	34	ध्रुव	22	47	वृ.19/11	भ. 11/28 तक, शीतला-सप्तमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी व्रत (स्मार्त) (देखें पृ. 85)	24	6/03	19/02	5/59	18/48	5/58	18/51	6/25	18/56
	25	८	गुरु	20	8	कृति	12	6	व्या.	19	57	वृष	श्रीकृष्ण-जन्माष्टमी व्रत (वैष्णव)(देखें पृ. 85), शुक्र कन्या में 11/53 (H)	25	6/04	19/01	5/59	18/47	5/58	18/50	6/26	18/55
	26	९	शुक्र	18	14	रोहि	10	52	हर्ष	17	20	मि.22/21	भ. 29/26 से, श्रीगुग्गा नवमी, मंगल ज्ये. में 8/59	26	6/04	19/00	6/00	18/46	5/59	18/49	6/26	18/54
	27	१०	शनि	16	38	मृग	9	55	वज्र	14	57	मिथुन	भ. 16/38 तक,	27	6/05	18/59	6/00	18/45	5/59	18/47	6/26	18/53
	28	११	रवि	15	22	आर्द्रा	9	18	सिद्धि	12	51	क.27/05	अजा एकादशी व्रत, गुरु उ.फा. (3) में 10/47	28	6/06	18/57	6/01	18/44	6/00	18/46	6/27	18/52
	29	१२	चंद्र	14	30	पुन.	9	3	व्य.	11	3	कर्क	वत्स द्वादशी (पूजा), सोम प्रदोष व्रत, स. सि. यो. 9/03 बाद	29	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
	30	१३	मंग	14	3	पुष्य	9	13	वरी	9	35	कर्क	भ. 14/03 से 26/04 तक, सूर्य पू.फा. में 14/39, मासशिवरात्रिव्रत, (I)	30	6/07	18/54	6/02	18/42	6/01	18/44	6/28	18/50
	31	१४	बुध	14	4	अश्ले	9	49	परि	8	29	सिं. 9/49	गण्डमूल विचार, वक्री यूरेनस मीन में 17/59	31	6/08	18/53	6/02	18/41	6/02	18/43	6/28	18/49

(A) लोकमान्य तिलक स्मरणोत्सव **(B)** 18/51, जिल्काद (मु.) मास प्रारम्भ, स. सि. यो. **(C)** मेला चिन्तपूर्णी (हि.प्र.) समाप्त **(D)** पुण्यकाल सं. दोप. 12/15 बाद, **(E)** यजुर्वेदि-अथर्ववेदि उपाकर्म, दर्शन-श्रीअमरनाथ गुफा, ऋषि तर्पण, श्रावणी उपाकर्म, संस्कृत दिवस, हयग्रीव जयन्ती, गायत्री जयन्ती, कोकिला व्रत समाप्त **(F)** 18/46 से, **(Z)** शरद् ऋतु प्रारम्भ **(G)** शक भाद्रपद प्रारम्भ, गण्डमूल 15/13 तक **(H)** गोकुलाष्टमी, नन्दोत्सव, दूर्वाष्टमी व्रत (देखें पृ. 87) **(I)** बुध वक्री 18/31, कैलाश यात्रा प्रारम्भ, अघोरा-डाकिनी चतुर्दशी, गंडमूल 9/13 बाद

वि. संवत् 2073, सितम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	सितंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद् ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
	1	३०	गुरु	14	33	मघा	10	53	शिव	7	45	सिंह	भाद्रपद अमावस, कुशाग्रहणी-पिठोरी अमावस, 'ॐ हुँ फट् स्वाहा'(A)	1	6/08	18/52	6/03	18/39	6/02	18/42	6/29	18/48
भाद्रपद शुक्ल पक्ष	2	१	शुक्र	15	33	पू.फा.	12	26	सिद्ध	7	24	कं.18/54	भाद्रपद शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, शुक्र हस्त में 15/40, स. सि. यो. 12/26 तक,	2	6/09	18/51	6/03	18/38	6/03	18/41	6/29	18/47
	3	२	शनि	17	1	उ.फा.	14	27	साध्य	7	25	कन्या	चन्द्रदर्शन, मु. 30, अगस्त्योदय	3	6/10	18/50	6/04	18/36	6/03	18/40	6/29	18/46
	4	३	रवि	18	55	हस्त	16	54	शुभ	7	48	कन्या	**हरितालिका तृतीया,** गौरी तृतीया, श्रीवराह जयन्ती, सामवेदि उपाकर्म (B)	4	6/11	18/49	6/04	18/35	6/04	18/38	6/29	18/45
	5	४	चंद्र	21	10	चित्रा	19	40	शुक्ल	8	28	तु. 6/15	भ. 8/03 से 21/10 तक, **सिद्धि विनायक व्रत, कलंक-चतुर्थी (C)**	5	6/11	18748	6/05	18/34	6/05	18/37	6/29	18/44
	6	५	मंग	23	36	स्वा.	22	38	ब्रह्म	9	20	तुला	**ऋषि-पंचमी पर्व,** सम्वत्सरी महापर्व (जैन),वक्री बुध पश्चिम में अस्त 21/24	6	6/12	18/47	6/05	18/33	6/05	18/35	6/29	18/44
	7	६	बुध	26	3	विशा	25	38	ऐन्द्र	10	18	वृ.18/53	सूर्य षष्ठी व्रत — गुरु अस्त 9 सितं.	7	6/12	18/45	6/06	18/32	6/06	18/34	6/30	18/43
	8	७	गुरु	28	19	अनु.	28	26	वैधृ	11	12	वृश्चिक	भ. 28/19 से, मुक्ताभरण-सन्तान सप्तमी व्रत,	8	6/13	18/43	6/06	18/31	6/06	18/33	6/30	18/43
	9	८	शुक्र	30	11	ज्ये.	–	–	विष्क	11	55	वृश्चिक	भ. 17/15 तक, **वक्री बुध सिंह में 17/47,** श्रीराधाष्टमी, दधीची जयं.(D)	9	6/14	18/42	6/07	18/29	6/07	18/32	6/30	18/42
	10	९	शनि	–	–	ज्ये.	6	52	प्रीति	12	17	ध. 6/52	श्रीचन्द्र नवमी (उदासीन-सम्प्रदाय), श्रीभागवत् सप्ताह पाठारम्भ, गण्डमूल विचार	10	6/14	18/40	6/07	18/28	6/07	18/30	6/30	18/41
	11	९	रवि	7	29	मूल	8	44	आयु	12	10	धनु	गण्डमूल 8/44 तक, स. सि. यो.	11	6/15	18/38	6/07	18/27	6/08	18/29	6/30	18/40
	12	१०	चंद्र	8	6	पू.षा.	9	56	सौभा	11	31	म.16/07	भ. 20/02 से, वक्री बुध पू.फा. (4) में 26/00, गुरु उ.फा. (4) में 29/35	12	6/16	18/37	6/08	18/26	6/08	18/28	6/30	18/40
	13	११	मंग	7	57	उ.षा.	10	24	शोभ	10	16	मकर	भ. 7/57 तक, **पद्मा एकादशी व्रत, वामन जयन्ती** (द्वादशी), **(E)**	13	6/16	18/37	6/08	18/25	6/09	18/27	6/30	18/39
	14	१२	बुध	7	3	श्रव.	10	8	अति / सुक	8 / 30	25 / 1	कुं.21/44	**पंचक प्रारम्भ 21/44,** प्रदोष व्रत,	14	6/17	18/36	6/09	18/23	6/10	18/25	6/30	18/38
	0	१३	बुध	29	27	00	00	00	00	00	00	00	त्र्योदशी तिथि का क्षय ○○ ○○	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	15	१४	गुरु	27	16	धनि	9	10	धृति	27	7	कुम्भ	भ. 27/16 से, **अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला सोढल (जालन्धर),** कदली व्रत	15	6/17	18/35	6/09	18/22	6/10	18/24	6/30	18/37
	16	१५	शुक्र	24	35	शत. / पू.भा.	7 / 29	38 / 39	शूल	23	50	मी.24/11	भ. 13/56 तक, **भाद्रपद पूर्णिमा,** प्रोष्ठपदी-पूर्णिमा का श्राद्ध, सूर्य **(F)**	16	6/18	18/33	6/10	18/21	6/11	18/23	6/31	18/36
आश्विन कृष्ण पक्ष	17	१	शनि	21	34	उ.भा.	27	22	गंड	20	16	मीन	आश्विन कृष्ण पक्ष प्रा., **महालय श्राद्ध** (पितृपक्ष) **प्रारम्भ,** प्रतिपदा का श्राद्ध **(G)**	17	6/18	18/31	6/10	18/20	6/11	18/22	6/31	18/35
	18	२	रवि	18	22	रेव	24	55	वृद्धि	16	31	मे.24/55	भ. 28/45 से, **पंचक समाप्त 24/55,** मंगल मूल(1) धनु में 7/42, शुक्र **(H)**	18	6/19	18/30	6/11	18/19	6/12	18/20	6/31	18/34
	19	३	चंद्र	15	7	अश्वि	22	29	ध्रुव	12	44	मेष	भ. 15/07 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17), वक्री बुध पूर्व में उदय(I)	19	6/20	18/28	6/11	18/17	6/12	18/19	6/31	18/34
	20	४	मंग	11	58	भर.	20	11	व्या. / हर्ष	9 / 29	1 / 28	वृ.25/39	भरणी श्राद्ध, पंचमी का श्राद्ध	20	6/21	18/27	6/12	18/16	6/13	18/18	6/31	18/33
	21	५	बुध	9	2	कृति	18	10	वज्र	26	11	वृष	चन्द्र षष्ठी व्रत, षष्ठी का श्राद्ध	21	6/22	18/26	6/12	18/15	6/14	18/16	6/32	18/32
	22	६	गुरु	6	28	रोहि	16	32	सिद्धि	23	15	मि.27/53	भ. 6/28 से 17/24 तक, **बुध मार्गी 10/58,** सप्तमी का श्राद्ध, **(J)**	22	6/22	18/25	6/13	18/14	6/14	18/15	6/32	18/31
	0	७	गुरु	28	19	00	00	00	00	00	00	00	सप्तमी तिथि का क्षय ○○ ○○	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	23	८	शुक्र	26	41	मृग	15	22	व्य.	20	42	मिथुन	श्रीमहालक्ष्मी व्रत सम्पन्न (सू.उ. व्यापिनी), **जीवित्पुत्रिका व्रत, (K)**	23	6/23	18/24	6/13	18/13	6/15	18/14	6/32	18/30
	24	९	शनि	25	36	आर्द्रा	14	43	वरी	18	36	मिथुन	सौभाग्यवतीनां श्राद्ध, नवमी का श्राद्ध, शुक्र स्वा. में 11/12, मातृ-नवमी	24	6/24	18/23	6/14	18/12	6/15	18/13	6/32	18/29
	25	१०	रवि	25	3	पुन.	14	37	परि	16	56	क. 8/36	भ. 13/20 से 25/03 तक, दशमी का श्राद्ध	25	6/24	18/21	6/14	18/10	6/16	18/11	6/33	18/28
	26	११	चंद्र	25	3	पुष्य	15	4	शिव	15	41	कर्क	**इन्दिरा एकादशी व्रत,** सूर्य हस्त में 24/00, एकादशी श्राद्ध, गण्डमूल 15/04 से(L)	26	6/25	18/20	6/15	18/09	6/16	18/10	6/33	18/27
	27	१२	मंग	25	34	आश्ले	16	0	सिद्ध	14	52	सिं.16/00	संन्यासीनां श्राद्ध, द्वादशी का श्राद्ध, गजच्छाया योग 25/34 से, स. सि. यो.	27	6/25	18/18	6/15	18/08	6/17	18/09	6/33	18/26
	28	१३	बुध	26	32	मघा	17	25	साध्य	14	24	सिंह	भ. 26/32 से, प्रदोष व्रत, मघा श्राद्ध, गजच्छाया योग 17/25 तक, (M)	28	6/26	18/16	6/16	18/07	6/18	18/08	6/33	18/25
	29	१४	गुरु	27	56	पू.फा.	19	15	शुभ	14	17	कं.25/46	भ. 15/14 तक, शस्त्र-विष-दुर्घटनादि से मृतों का श्राद्ध, मासशिवरात्रि व्रत	29	6/26	18/15	6/16	18/06	6/18	18/06	6/33	18/24
	30	३०	शुक्र	29	42	उ.फा.	21	27	शुक्ल	14	28	कन्या	**आश्विन (महालय) अमावस, सर्वपितृ श्राद्ध,** चतुर्दशी/अमावस तिथि(N)	30	6/27	18/14	6/17	18/04	6/19	18/05	6/33	18/23

(A) इह मंत्रेण कुशोत्पाटनम्, लोहार्गल यात्रा (स्नान), सितंबर मास प्रा., रानी सती मेला (झुंझुनूं) (राज.), गण्डमूल 10/53 तक **(B)** जिल्हिजा (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, स. सि. यो.
(C) (चन्द्रदर्शन-निषेध) चन्द्रास्त 21/08 (जालन्धर) पत्थर चौथ **(D)** श्रीमहालक्ष्मी व्रत प्रारम्भ, **गुरु पश्चिम में अस्त 20/08,** गंडमूल **(E)** सूर्य उ.फा. में 8/26, शुक्र चित्रा में 13/07, श्रवण द्वादशी
(F) सूर्य कन्या में 18/35, आश्विन संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. दोप. 12/11 बाद, श्रीसत्यनारायण व्रत, **(G)** विश्वकर्मा पूजन, शनि ज्ये. में 17/00 **(H) तुला में 24/05, द्वितीया का श्राद्ध,** गण्डमूल
(I) 25/28, तृतीया एवं चतुर्थी का श्राद्ध (देखें पृ. 87), गण्डमूल **(J)** सूर्य सायन तुला में 19/51, दक्षिण गोल प्रारम्भ **(K)** अष्टमी का श्राद्ध, शक आश्विन प्रारम्भ, **(L)** प्लूटो मार्गी 17/42 **(M)** गुरु हस्त (1)

वि. संवत् 2073, अक्तूबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	अक्टूबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शरद्-हेमन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
आश्विन शुक्ल पक्ष	1	१	शनि	–	–	हस्त	23	58	ब्रह्म	14	54	कन्या	आश्विन-शरद् नवरात्रे प्रारम्भ, घटस्थापन, महाराजा अग्रसेन जयन्ती (A)	1	6/28	18/12	6/18	18/03	6/20	18/04	6/34	18/23
	2	१	रवि	7	46	चित्रा	26	44	ऐन्द्र	15	34	तु.13/19	चन्द्रदर्शनम्, मु. 30, **महात्मा गाँधी जयन्ती,**	2	6/28	18/10	6/18	18/02	6/20	18/03	6/34	18/22
	3	२	चंद्र	10	5	स्वा.	29	41	वैधृ	16	24	तुला	**बुध कन्या में 17/48,** मुहर्रम (मु.), सं. 1438 हिजरी प्रारम्भ	3	6/29	18/09	6/19	18/00	6/21	18/01	6/34	18/21
	4	३	मंग	12	34	विशा	–	–	विष्क	17	19	वृ.25/57	भ. 25/50 से प्रा., (गुरु उदय 7 अक्तू.)	4	6/30	18/08	6/19	17/59	6/22	18/00	6/34	18/21
	5	४	बुध	15	6	विशा	8	43	प्रीति	18	16	वृश्चिक	भ. 15/06 तक, शुक्र विशा. में 9/54, स. सि. यो. 8/43 से	5	6/30	18/07	6/20	17/58	6/22	17/59	6/34	18/20
	6	५	गुरु	17	32	अनु.	11	41	आयु	19	7	वृश्चिक	उपाङ्ग ललिता व्रत, गण्डमूल 11/41 से,	6	6/31	18/06	6/20	17/57	6/23	17/58	6/35	18/19
	7	६	शुक्र	19	42	ज्ये.	14	26	सौभा	19	46	ध.14/26	राहु पू.फा. (1), केतु शत. (3) में 16/39, **गुरु पूर्व में उदय 22/37,(B)**	7	6/31	18/05	6/21	17/56	6/23	17/56	6/35	18/19
	8	७	शनि	21	25	मूल	16	47	शोभ	20	4	धनु	भ. 21/25 से, मंगल पू.षा. में 16/16, भद्रकाली अवतार, गण्डमूल 16/47 तक	8	6/32	18/04	6/22	17/55	6/24	17/55	6/35	18/18
	9	८	रवि	22	31	पू.षा.	18	34	अति	19	54	म.24/55	भ. 9/58 तक, **श्रीदुर्गाष्टमी,** महाष्टमी, सरस्वती पूजन पू.षाभे, बुध (C)	9	6/33	18/03	6/22	17/54	6/25	17/54	6/35	18/17
	10	९	चंद्र	22	54	उ.षा.	19	40	सुक	19	11	मकर	सूर्य चित्रा में 12/54, महानवमी, **नवरात्रे समाप्त,** सरस्वती बलिदान उ.षाभे(D)	10	6/33	18/01	6/23	17/52	6/25	17/53	6/35	18/16
	11	१०	मंग	22	28	श्रव	20	0	धृति	17	51	मकर	**विजयादशमी (दशहरा),** अपराजिता पूजन, सरस्वती विसर्जन, (E)	11	6/34	18/00	6/23	17/51	6/26	17/52	6/36	18/15
	12	११	बुध	21	15	धनि	19	32	शूल	15	53	कुं. 7/52	भ. 9/52 से 21/15 तक, **पंचक प्रारम्भ 7/52, पापांकुशा एकादशी (F)**	12	6/35	17/59	6/24	17/50	6/27	17/51	6/36	18/14
	13	१२	गुरु	19	15	शत	18	19	गंड	13	17	कुम्भ	**प्रदोष व्रत** (देखें पृ. 87) **शुक्र वृश्चिक में 15/27,** पद्मनाभ द्वादशी, गुरु हस्त (G)	13	6/36	17/57	6/24	17/49	6/28	17/49	6/36	18/14
	14	१३	शुक्र	16	36	पू.भा.	16	26	वृद्धि / ध्रुव	10 / 30	7 / 29	मी.10/57	(F) व्रत, भरतमिलाप, (G) (2) में 28/35	14	6/37	17/55	6/25	17/48	6/29	17/48	6/37	18/13
	15	१४	शनि	13	26	उ.भा.	14	1	व्या.	26	30	मीन	भ. 13/26 से 23/40 तक, **शरद् पूर्णिमा व्रत,** कोजागर व्रत, (H)	15	6/38	17/54	6/26	17/47	6/29	17/47	6/37	18/12
	16	१५	रवि	9	53	रेव	11	14	हर्ष	22	18	मे.11/14	**आश्विन पूर्णिमा** (स्नानदानादि), सूर्य तुला 30/31, **कार्तिक संक्रान्ति, (I)**	16	6/38	17/53	6/26	17/46	6/30	17/46	6/37	18/11
कार्तिक कृष्ण पक्ष	0	१	रवि	30	9	00	00	00	00	00	00	00	कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा का क्षय (देखें पृ. 89) ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	17	२	चंद्र	26	24	अश्वि / भर.	8 / 29	16 / 19	वज्र	18	2	मेष	**पुण्य कार्तिक संक्रान्ति 12/55 तक,** बुध चित्रा में 17/13, गण्डमूल (J)	17	6/39	17/52	6/27	17/45	6/31	17/45	6/38	18/10
	18	३	मंग	22	48	कृति	26	32	सिद्धि	13	50	वृ.10/36	भ. 12/36 से 22/48 तक, स. सि. यो.	18	6/40	17/51	6/27	17/44	6/31	17/44	6/38	18/09
	19	४	बुध	19	33	रोहि	24	8	व्य. / वरी	9 / 30	51 / 13	वृष	**व्रत करवा-चौथ** (करक-चतुर्थी) चन्द्रोदय हेतु देखें पृ. 14 व 88, श्रीगणेश (K)	19	6/41	17/50	6/28	17/43	6/32	17/43	6/38	18/08
	20	५	गुरु	16	47	मृग	22	15	परि	27	2	मि.11/07		20	6/41	17/49	6/29	17/42	6/32	17/42	6/39	18/07
	21	६	शुक्र	14	38	आर्द्रा	21	0	शिव	24	23	मिथुन	भ. 14/38 से 25/55 तक, **बुध तुला में 14/19,** स्कन्द षष्ठी	21	6/42	17/48	6/29	17/41	6/33	17/41	6/39	18/06
	22	७	शनि	13	11	पुन	20	27	सिद्ध	22	19	क.14/31	**अहोई अष्टमी व्रत** (चं.उ. व्यापिनी),दम्पत्य अष्टमी, सूर्य सायन वृश्चिक (L)	22	6/43	17/47	6/30	17/40	6/34	17/40	6/39	18/06
	23	८	रवि	12	29	पुष्य	20	39	साध्य	20	51	कर्क	सूर्य स्वा. में 23/29, **राधाष्टमी,** कालाष्टमी, शक कार्तिक प्रारम्भ, (M)	23	6/43	17/46	6/31	17/39	6/34	17/39	6/40	18/05
	24	९	चंद्र	12	31	अश्ले	21	32	शुभ	19	56	सिं.21/32	भ. 24/52 से, गण्डमूल विचार	24	6/44	17/45	6/31	17/38	6/35	17/38	6/40	18/05
	25	१०	मंग	13	13	मघा	23	3	शुक्ल	19	31	सिंह	भ. 13/13 तक, बुध स्वा. में 13/08, गण्डमूल 23/03 तक,	25	6/45	17/44	6/32	17/37	6/36	17/37	6/40	18/04
	26	११	बुध	14	31	पू.फा.	25	4	ब्रह्म	19	31	सिंह	**रमा एकादशी व्रत,** गोवत्स द्वादशी	26	6/46	17/43	6/33	17/37	6/37	17/36	6/41	18/04
	27	१२	गुरु	16	16	उ.फा.	27	29	ऐन्द्र	19	51	कं. 7/38	मंगल उ.षा. में 17/29, शुक्र ज्ये. में 10/04, धन त्रयोदशी पर्व प्रारम्भ (N)	27	6/47	17/42	6/33	17/36	6/37	17/35	6/41	18/04
	28	१३	शुक्र	18	21	हस्त	30	11	वैधृ	20	25	कन्या	भ. 18/21 से, प्रदोष व्रत (देखें पृ. 88), **धन त्रयोदशी, श्रीहनुमान जयंती,(O)**	28	6/48	17/41	6/34	17/35	6/38	17/34	6/41	18/03
	29	१४	शनि	20	40	चित्रा	–	–	विष्क	21	9	तु.19/35	भ. 7/31 तक, **नरक चौदश,** रूप चौदश, यमाय तर्पण एवं दीपदानं, (P)	29	6/49	17/39	6/35	17/34	6/39	17/33	6/42	18/03
	30	३०	रवि	23	8	चित्रा	9	3	प्रीति	22	0	तुला	**कार्तिक अमावस, दीपावली, श्रीमहालक्ष्मी पूजन** (देखें पृ. 92), (Q)	30	6/50	17/38	6/36	17/34	6/40	17/32	6/42	18/03
	31	१	चंद्र	25	40	स्वा.	12	1	आयु	22	53	तुला	**गोवर्धन पूजा,** अन्नकूट पूजा, गोक्रीड़ा, बलि व मार्गपाली पूजा, (R)	31	6/51	17/38	6/36	17/33	6/40	17/31	6/43	18/02

(A) दुर्गा पूजा, मातामह (नाना) का श्राद्ध, बुध उ.फा. में 6/32 **(B)** सरस्वती आवाहन (मूलभे), गण्डमूल **(C)** हस्त में 24/09, बुध पूर्व में अस्त 17/36 **(D)** गुरु बाल्यत्व समाप्त 22/37 **(E)** आयुध (शस्त्रादि) पूजा, शमी पूजा, नवरात्रे पारणा **(H)** श्रीसत्यनारायण व्रत, गं.मू. **(I)** मु. ३०, पुण्यकाल संक्रान्ति अगले दिन दोप. 12/55 तक **पंचक समाप्त** 11/14, शुक्र अनु. में 9/26, महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, कार्तिक स्नान प्रारम्भ **(J)** आकाश दीपदान प्रारम्भ, **(K)** चतुर्थी व्रत, दशरथ चतुर्थी, **(L)** में 29/16, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ **(M)** गण्डमूल 20/39 से, **(N)** यमाय दीपदानं, **(O)** मासशिवरात्रि व्रत, श्रीधनवन्तरी जयन्ती, यमाय प्रीत्यर्थ दीपदान **(P)** श्रीहनुमान पूजनार्चनाय च, शनि ज्ये. (2) में 8/34, गुरु हस्त (3) में 26/30 **(Q)** कुबेर पूजा, सायं देवालये दीपदानं, श्रीमहावीर निर्वाण (जैन), काली पूजन, कौमुदि महोत्सव सम्पन्न **(R)** विश्वकर्मा दिवस (पंजाब)

वि. संवत् 2073, नवंबर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	नवंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिणायन — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — हेमन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
कार्तिक शुक्ल पक्ष	1	२	मंग.	28:11	विशा	15:0	सौभा	23:46	वृ. 8/15	चन्द्रदर्शन, मु. 30, **भ्रातृ (भाई)-दूज**, यम द्वितीया, **मंगल मकर में (A)**	1	6/51	17/35	6/37	17/32	6/41	17/30	6/43	18/02
	2	३	बुध	30:37	अनु.	17:57	शोभ	24:36	वृश्चिक	बुध विशा. में 16/49, सफर (मु.) मास प्रारम्भ, गण्डमूल 17/57 से, स.सि.यो.	2	6/52	17/34	6/37	17/34	6/41	17/30	6/44	18/01
	3	४	गुरु	–:–	ज्ये.	20:46	अति	25:19	ध.20/46	भ. 19/45 से प्रा., दूर्वा गणपति व्रत, नाग व्रत, गण्डमूल विचार	3	6/53	17/33	6/38	17/33	6/42	17/29	6/44	18/01
	4	४	शुक्र	8:52	मूल	23:21	सुक	25:48	धनु	भ. 8/52 तक, गण्डमूल 23/21 तक,	4	6/54	17/32	6/39	17/32	6/43	17/28	6/45	18/00
	5	५	शनि	10:48	पू.षा.	25:33	धृति	26:0	धनु	जया पंचमी, ज्ञान पंचमी,	5	6/54	17/31	6/39	17/31	6/44	17/27	6/45	18/00
	6	६	रवि	12:17	उ.षा.	27:15	शूल	25:47	म. 8/01	सूर्य विशा. में 7/31, **सूर्य षष्ठी पर्व (बिहार)**, स्कन्द षष्ठी, वह्निमहोत्सव, स.सि.यो.	6	6/55	17/30	6/40	17/30	6/45	17/26	6/45	17/59
	7	७	चंद्र	13:10	श्रव.	28:18	गंड	25:4	मकर	भ. 13/10 से 25/16 तक, **शुक्र धनु में 11/57**, स. सि. यो.	7	6/56	17/30	6/41	17/30	6/46	17/26	6/46	17/59
	8	८	मंग	13:21	धनि	28:37	वृद्धि	23:47	कुं.16/33	**पंचक प्रारम्भ 16/33, बुध वृश्चिक में 24/39, गोपाष्टमी**	8	6/57	17/29	6/42	17/29	6/46	17/25	6/46	17/58
	9	९	बुध	12:46	शत.	28:9	ध्रुव	21:51	कुम्भ	अक्षय-नवमी, कूष्माण्ड (धात्री)-नवमी, आरोग्य-व्रत	9	6/58	17/28	6/43	17/28	6/47	17/24	6/47	17/58
	10	१०	गुरु	11:22	पू.भा.	26:56	व्या.	19:18	मी.21/18	भ. 22/18 से, बुध अनु. में 28/07, **भीष्मपंचक प्रारम्भ**, हरिप्रबोधिनी एका. (स्मा.)	10	6/59	17/28	6/43	17/28	6/48	17/24	6/47	17/58
	11	११	शुक्र	9:13	उ.भा.	25:0	हर्ष	16:10	मीन	भ. 9/13 तक, **हरिप्रबोधिनी एकादशी व्रत (वैष्ण.)**, चातुर्मास्य व्रत, नियमादि (B)	11	7/00	17/27	6/44	17/27	6/49	17/23	6/48	17/57
	0	१२	शुक्र	30:24	00	00:00	00	00:00	00	द्वादशी तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	12	१३	शनि	27:2	रेव	22:30	वज्र	12:31	मे.22/30	**पंचक समाप्त 22/30**, शनि प्रदोष व्रत, गण्डमूल विचार,	12	7/01	17/26	6/45	17/26	6/50	17/22	6/49	17/57
	13	१४	रवि	23:18	अश्वि	19:36	सिद्धि व्य.	8:27 28:7	मेष	भ. 23/18 से, **वैकुण्ठ चतुर्दशी**, गण्डमूल 19/36 तक, स. सि. यो.	13	7/02	17/26	6/46	17/26	6/51	17/22	6/49	17/57
	14	१५	चंद्र	19:22	भर.	16:27	वरी	23:40	वृ.21/39	भ. 9/20 तक, **कार्तिक पूर्णिमा, श्रीगुरुनानक जयन्ती, भीष्मपंचक (C)**	14	7/03	17/26	6/46	17/25	6/51	17/21	6/50	17/56
मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष	15	१	मंग	15:27	कृति	13:17	परि	19:15	वृष	मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष प्रा., **सूर्य वृश्चिक में 30/17, मार्गशीर्ष संक्रान्ति(D)**	15	7/04	17/25	6/47	17/25	6/52	17/21	6/50	17/56
	16	२	बुध	11:43	रोहि	10:18	शिव	15:1	मि.20/56	भ. 22/03 से, सौभाग्य सुन्दरी व्रत, स. सि. यो.	16	7/05	17/25	6/48	17/24	6/53	17/20	6/51	17/56
	17	३	गुरु	8:23	मृग आर्द्रा	7:41 29:37	सिद्ध	11:8	मिथुन	भ. 8/23 तक, **श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17),	17	7/06	17/24	6/49	17/24	6/54	17/20	6/51	17/55
	0	४	गुरु	29:36	00	00:00	00	00:00	00	चतुर्थी तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	18	५	शुक्र	27:33	पुन.	28:17	साध्य शुभ	7:44 28:55	क.22/32	शुक्र पू.षा. में 15/51, स. सि. यो.	18	7/07	17/23	6/50	17/23	6/55	17/19	6/52	17/55
	19	६	शनि	26:18	पुष्य	27:44	शुक्ल	26:45	कर्क	भ. 26/18 से, सूर्य अनु. में 13/38, बुध ज्ये. में 21/40, बुध पश्चिम (E)	19	7/08	17/23	6/50	17/23	6/56	17/19	6/52	17/55
	20	७	रवि	25:56	अश्ले	28:2	ब्रह्म	25:16	सिं.28/02	भ. 14/07 तक, गण्डमूल विचार, नैपच्यून मार्गी 8/01	20	7/09	17/23	6/51	17/22	6/57	17/19	6/53	17/55
	21	८	चंद्र	26:23	मघा	29:9	ऐन्द्र	24:26	सिंह	**कालभैरवाष्टमी**, सूर्य सायन धनु में 26/53, गण्डमूल 29/09 तक	21	7/10	17/22	6/52	17/22	6/57	17/18	6/54	17/55
	22	९	मंग	27:37	पू.फा.	30:58	वैधृ	24:11	सिंह	शक मार्गशीर्ष प्रारम्भ	22	7/11	17/22	6/53	17/22	6/58	17/18	6/54	17/55
	23	१०	बुध	29:26	उ.फा.	–:–	विष्क	24:24	कं.13/31	भ. 16/32 से 29/26 तक, **शनि पश्चिम में अस्त 23/50**	23	7/12	17/22	6/54	17/21	6/59	17/18	6/55	17/55
	24	११	गुरु	–:–	उ.फा.	9:21	प्रीति	24:58	कन्या		24	7/13	17/21	6/54	17/21	7/00	17/18	6/55	17/55
	25	११	शुक्र	7:41	हस्त	12:6	आयु	25:45	तु.25/34	**उत्पन्ना एकादशी व्रत**	25	7/14	17/21	6/55	17/21	7/01	17/17	6/56	17/55
	26	१२	शनि	10:11	चित्रा	15:4	सौभा	26:38	तुला	शनि प्रदोष व्रत,	26	7/15	17/21	6/56	17/20	7/02	17/17	6/56	17/55
	27	१३	रवि	12:47	स्वा.	18:5	शोभ	27:32	तुला	भ. 12/47 से 26/04 तक, मासशिवरात्रि व्रत, श्रीबालाजी जयन्ती	27	7/16	17/20	6/57	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	28	१४	चंद्र	15:21	विशा	21:4	अति	28:21	वृ.14/20	**बुध मूल (1) धनु में 22/13**, शनि ज्ये. (3) में 13/11, देविका (F)	28	7/16	17/20	6/58	17/20	7/03	17/17	6/57	17/55
	29	३०	मंग	17:48	अनु	23:56	सुक	29:5	वृश्चिक	**मार्गशीर्ष (भौमवती) अमावस**, शुक्र उ.षा. में 22/29, गण्डमूल 23/56 से,	29	7/17	17/20	6/58	17/20	7/04	17/17	6/58	17/55
	30	१	बुध	20:5	ज्ये	26:37	धृति	29:40	ध.26/37	मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, गण्डमूल विचार	30	7/18	17/20	6/59	17/20	7/05	17/17	6/59	17/55

(A) 8/37, यमुना-स्नान, **विश्वकर्मा पूजन**, कलम-दवात पूजन, नवम्बर मास प्रारम्भ **(B)** समाप्त, **तुलसी विवाह**, हरिप्रबोधोत्सव, त्रिस्पर्शा महाद्वादशी **(C) समाप्त**, कार्तिक स्नान समाप्त, मंगल श्रव. में 24/45, श्रीसत्यनारायण व्रत, मेला रामतीर्थ (अमृतसर), मेला पुष्करतीर्थ (राज.), त्रिपुरोत्सव, **पद्मक योग** 16/27 से 19/22 तक (देखें पृ. 88), महाकार्तिकी **(D)** मु. 45, पुण्यकाल सं. अगले दिन दोपहर 12/41 तक, गुरु हस्त (4) में 23/41, आकाशदीपदान समाप्ति, [illegible] स्नान प्रा. **(E)** में उदय [illegible] **(F)** [illegible] (जम्मू)

वि. संवत् 2073, दिसम्बर महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (आ. स्टैं. टा.), सन् 2016 ई.

मास पक्ष	दिसंबर	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य दक्षिण/उत्तरायणे घण्टा-मिन्टों में [आ. स्टैं. टा.] हेमन्त/शिशिर ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष	1	२	गुरु	22	10	मूल	29	5	शूल	30	4	धनु	चन्द्रदर्शन, मु. 30, दिसम्बर मास प्रारम्भ, गण्डमूल 29/05 तक	1	7/19	17/20	7/00	17/20	7/06	17/16	6/59	17/56
	2	३	शुक्र	23	57	पू.षा.	–	–	गंड	30	15	धनु	सूर्य ज्ये. में 17/52, मंगल धनि. में 22/15, **शुक्र मकर में 18/42 (A)**	2	7/19	17/20	7/01	17/20	7/07	17/16	7/00	17/56
	3	४	शनि	25	25	पू.षा.	7	17	वृद्धि	30	10	म.13/46	भ. 12/41 से 25/25 तक,	3	7/20	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	4	५	रवि	26	26	उ.षा.	9	7	ध्रुव	29	45	मकर	नागपंचमी, श्रीपञ्चमी, श्रीराम विवाहोत्सव, गुरु चित्रा (1) में 20/38, स.सि.यो.	4	7/21	17/20	7/02	17/20	7/08	17/16	7/01	17/56
	5	६	चंद्र	26	57	श्रव	10	32	व्या.	28	55	कुं.23/03	**पंचक प्रारम्भ 23/03**, स्कन्द षष्ठी, गुह षष्ठी, चम्पा षष्ठी, स.सि.यो.	5	7/22	17/20	7/03	17/20	7/09	17/16	7/02	17/57
	6	७	मंग	26	51	धनि	11	25	हर्ष	27	37	कुम्भ	भ. 26/51 से, मित्र (विष्णु) सप्तमी	6	7/23	17/20	7/04	17/20	7/10	17/16	7/03	17/57
	7	८	बुध	26	5	शत	11	41	वज्र	25	47	मी.29/27	भ. 14/28 तक, श्रीदुर्गाष्टमी	7	7/23	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/03	17/57
	8	९	गुरु	24	37	पू.भा.	11	17	सिद्धि	23	25	मीन	नन्दा नवमी, बुध पू.षा. में 21/05	8	7/24	17/20	7/05	17/20	7/11	17/17	7/04	17/57
	9	१०	शुक्र	22	29	उ.भा.	10	12	व्य.	20	30	मीन	राहु मघा (4), केतु शत. (2) में 14/21, गण्डमूल 10/12 से,	9	7/25	17/20	7/06	17/21	7/12	17/17	7/05	17/58
	10	११	शनि	19	45	रेव अश्वि	8 30	29 14	वरी	17	6	मे. 8/29	भ. 9/07 से 19/45 तक, **मोक्षदा एकादशी व्रत, श्रीगीताजयन्ती, (B)**	10	7/26	17/21	7/07	17/21	7/13	17/17	7/05	17/58
	11	१२	रवि	16	32	भर.	27	34	परि	13	17	मेष	प्रदोष व्रत, अखण्ड द्वादशी, अनङ्ग त्रयोदशी व्रत, **मंगल कुम्भ में 18/53(C)**	11	7/27	17/21	7/07	17/21	7/14	17/17	7/06	17/58
	12	१३	चंद्र	12	59	कृति	24	39	शिव सिद्ध	9 28	11 55	वृ. 8/51	पिशाचमोचन श्राद्ध, शिव चतुर्दशी व्रत,	12	7/28	17/21	7/08	17/21	7/14	17/17	7/07	17/59
	13	१४	मंग	9	17	रोहि	21	41	साध्य	24	39	वृष	भ. 9/17 से 19/27 तक, **मार्गशीर्ष पूर्णिमा** (प्रात: 9/17 बाद), **(D)**	13	7/28	17/21	7/09	17/21	7/15	17/18	7/07	17/59
	0	१५	मंग	29	36	00	00	00	00	00	00	00	पूर्णिमा तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
पौष कृष्ण पक्ष	14	१	बुध	26	8	मृग	18	52	शुभ	20	31	मि. 8/14	पौष कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, स. सि. योग	14	7/29	17/22	7/09	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	15	२	गुरु	23	5	आर्द्रा	16	23	शुक्ल	16	40	मिथुन	**सूर्य मूल (1) धनु में 20/54, पौष संक्रान्ति**, मु. 45, पुण्यकाल **(E)**	15	7/30	17/22	7/10	17/22	7/16	17/18	7/08	17/59
	16	३	शुक्र	20	36	पुन	14	25	ब्रह्म	13	15	क. 8/51	भ. 9/51 से 20/36 तक,	16	7/30	17/22	7/11	17/22	7/17	17/19	7/09	18/00
	17	४	शनि	18	52	पुष्य	13	9	ऐन्द्र	10	24	कर्क	**श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 14-17)**, गण्डमूल 13/09 से,	17	7/31	17/23	7/11	17/23	7/18	17/19	7/09	18/00
	18	५	रवि	17	57	अश्ले	12	40	वैधृ विष्क	8 30	10 38	सिं.12/40	गण्डमूल विचार,	18	7/31	17/23	7/12	17/23	7/18	17/20	7/10	18/01
	19	६	चंद्र	17	55	मघा	13	3	प्रीति	29	46	सिंह	भ. 17/55 से 30/20 तक, **बुध वक्री 16/21**, गण्डमूल 13/03 तक	19	7/32	17/23	7/12	17/23	7/19	17/20	7/10	18/01
	20	७	मंग	18	44	पू.फा.	14	15	आयु	29	30	कं.20/40	मंगल शत. में 14/59,	20	7/32	17/23	7/13	17/24	7/19	17/20	7/11	18/02
	21	८	बुध	20	18	उ.फा.	16	12	सौभा	29	45	कन्या	सूर्य सायन मकर में 16/14, रुक्मिणी अष्टमी, अष्टका श्राद्ध, सायन **(F)**	21	7/33	17/24	7/14	17/24	7/20	17/21	7/11	18/02
	22	९	गुरु	22	25	हस्त	18	42	शोभ	30	22	कन्या	शुक्र धनि. में 26/34, शक पौष प्रारम्भ	22	7/33	17/24	7/14	17/25	7/20	17/21	7/12	18/03
	23	१०	शुक्र	24	55	चित्रा	21	35	अति	31	12	तु. 8/06	भ. 11/40 से 24/55 तक, वक्री बुध पश्चिम में अस्त 8/04	23	7/34	17/25	7/15	17/26	7/21	17/22	7/12	18/03
	24	११	शनि	27	32	स्वा.	24	37	सुक	–	–	तुला	**सफला एकादशी व्रत**, स. सि. यो.	24	7/34	17/26	7/15	17/26	7/21	17/23	7/13	18/04
	25	१२	रवि	30	07	विशा	27	37	सुक	8	6	वृ.20/52	**क्रिसमिस डे** (क्रिश्चियन)	25	7/35	17/26	7/15	17/27	7/22	17/23	7/13	18/04
	26	१३	चंद्र	–	–	अनु	30	27	धृति	8	57	वृश्चिक	**सोम प्रदोष व्रत**, शनि ज्ये. (4) में 21/51, स. सि. यो.	26	7/35	17/27	7/16	17/27	7/22	17/24	7/14	18/05
	27	१३	मंग	8	30	ज्ये.	–	–	शूल	9	38	वृश्चिक	भ. 8/30 से 21/34 तक, शनि पूर्व से उदय 9/13, मासशिवरात्रि व्रत, **(G)**	27	7/36	17/27	7/16	17/28	7/23	17/24	7/14	18/05
	28	१४	बुध	10	37	ज्ये.	9	2	गंड	10	7	ध. 9/02	अमावस (पितृकार्येषु), सूर्य पू.षा. में 23/06, वक्री बुध मूल (4) **(H)**	28	7/36	17/28	7/17	17/29	7/23	17/25	7/14	18/06
	29	३०	गुरु	12	23	मूल	11	17	वृद्धि	10	21	धनु	**पौष अमावस** (स्नानदानादि), यूरेनस मार्गी 14/12, गण्डमूल 11/17 तक	29	7/36	17/29	7/17	17/29	7/23	17/26	7/15	18/06
पौष शु.	30	१	शुक्र	13	49	पू.षा.	13	13	ध्रुव	10	19	म.19/38	पौष शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, चन्द्रदर्शन, मु. 45	30	7/37	17/30	7/17	17/30	7/24	17/26	7/15	18/07
	31	२	शनि	14	52	उ.षा.	14	48	व्या.	10	1	मकर	रबि-उल्सानी (मुस्लि.) मास प्रारम्भ, आरोग्य व्रत	31	7/37	17/31	7/18	17/31	7/24	17/27	7/15	18/07

(A) रबि-उल्लावल (मुस्लि.) मास प्रारम्भ **(B)** पंचक समाप्त 8/29, गण्डमूल विचार **(C)** शुक्र श्रव. में 9/13, गण्डमूल 06/14 तक **(D)** श्रीदत्तात्रेय जयंती, त्रिपुरभैरव जयन्ती, श्रीसत्यनारायण व्रत
(E) सं. मध्याह्न बाद **(F)** उत्तरायण प्रारम्भ, शिशिर ऋतु प्रारम्भ **(G)** गण्डमूल 06/27 से प्रा., **(H)** में 25/08, गुरु चित्रा (2) में 17/12, **शुक्र कुम्भ में 26/46**, गण्डमूल विचार

वि. संवत् 2073, जनवरी महीने का तिथ्यादि पंचाङ्ग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) सन् 2017 ई.

भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्य उत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शिशिर ऋतुः

मास पक्ष	जनवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं. मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं. मिं.	योग	समाप्ति काल घं. मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
पौष शुक्ल पक्ष	1	३	रवि	15:34	श्रव.	16:1	हर्ष	9:26	कुं.28/29	भ. 27/43 से, **पंचक प्रारम्भ 28/29**, जनवरी-सन् 2017 ई. प्रारम्भ, गौरी पूजन	1	7/37	17/29	7/18	17/31	7/24	17/28	7/16	18/08
	2	४	चंद्र	15:51	धनि.	16:52	वज्र सिद्धि	8:34 31:21	कुम्भ	भ. 15/51 तक, श्रीविनायक चतुर्थी	2	7/37	17/30	7/18	17/32	7/25	17/28	7/16	18/09
	3	५	मंग	15:43	शत.	17:17	व्य.	29:48	कुम्भ	वक्री बुध पूर्व से उदय 10/59, शुक्र शत. में 30/16,	3	7/37	17/31	7/19	17/32	7/25	17/29	7/16	18/10
	4	६	बुध	15:7	पू.भा.	17:15	वरी	27:53	मी.11/18		4	7/38	17/32	7/19	17/33	7/25	17/30	7/17	18/10
	5	७	गुरु	14:1	उ.भा.	16:45	परि	25:34	मीन	भ. 14/01 से 25/14 तक, मार्तण्ड सप्तमी, गण्डमूल 16/45 से, **(A)**	5	7/38	17/32	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	6	८	शुक्र	12:26	रेव	15:45	शिव	22:51	मे.15/45	**पंचक समाप्त 15/45**, श्रीदुर्गाष्टमी, मंगल पू.भा. में 30/44, गण्डमूल विचार	6	7/38	17/33	7/19	17/34	7/25	17/31	7/17	18/11
	7	९	शनि	10:22	अश्वि	14:18	सिद्ध	19:47	मेष	गण्डमूल 14/18 तक,	7	7/38	17/34	7/19	17/35	7/25	17/32	7/17	18/12
	8	१०	रवि	7:53	भर.	12:27	साध्य	16:24	वृ.17/56	भ. 18/29 से 29/04 तक, **पुत्रदा एकादशी व्रत** (स्मार्त), **बुध मार्गी 15/09**	8	7/38	17/36	7/19	17/36	7/25	17/33	7/17	18/12
	0	११	रवि	29:4	00	00:00	00	00:00	00	एकादशी तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	9	१२	चंद्र	26:1	कृति	10:17	शुभ	12:47	वृष	**पुत्रदा एकादशी व्रत** (वैष्णव), सुजन्म द्वादशी	9	7/39	17/37	7/19	17/37	7/25	17/34	7/17	18/13
	10	१३	मंग	22:54	रोहि मृग	7:56 29:33	शुक्ल ब्रह्म	9:2 29:16	मि.18/44	**भौम प्रदोष व्रत**, सूर्य उ.षा. में 25/05,	10	7/39	17/38	7/19	17/38	7/25	17/35	7/18	18/14
	11	१४	बुध	19:52	आर्द्रा	27:17	ऐन्द्र	25:35	मिथुन	भ. 19/52 से 30/28 तक, श्रीसत्यनारायण व्रत (देखें पृ.14 व 88), ईशान-व्रत	11	7/39	17/38	7/20	17/38	7/25	17/36	7/18	18/14
	12	१५	गुरु	17:4	पुन.	25:20	वैधृ	22:9	क.19/47	**पौष पूर्णिमा** (स्नानदानादि), माघस्नान प्रारम्भ, शाकम्भरी जयन्ती, **(B)**	12	7/38	17/39	7/20	17/39	7/25	17/36	7/18	18/15
माघ कृष्ण पक्ष	13	१	शुक्र	14:40	पुष्य	23:50	विष्क	19:4	कर्क	माघ कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, **लोहड़ी पर्व**, गण्डमूल 23/50 से,	13	7/38	17/39	7/19	17/40	7/25	17/37	7/19	18/16
	14	२	शनि	12:50	आश्ले	22:55	प्रीति	16:26	सिं.22/55	भ. 24/15 से, **सूर्य मकर में 7/38, माघ (मकर) संक्रान्ति, (C)**	14	7/38	17/40	7/19	17/41	7/25	17/38	7/19	18/17
	15	३	रवि	11:40	मघा	22:44	आयु	14:22	सिंह	भ. 11/40 तक, **श्रीगणेश संकष्ट चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17), सौभाग्य **(D)**	15	7/38	17/42	7/19	17/42	7/25	17/39	7/19	18/17
	16	४	चंद्र	11:16	पू.फा.	23:18	सौभा	12:54	कं.29/33	शुक्र पू.भा. में 28/28,	16	7/37	17/43	7/19	17/42	7/25	17/40	7/19	18/18
	17	५	मंग	11:40	उ.फा.	24:37	शोभ	12:3	कन्या	स. सि. योग	17	7/37	17/43	7/19	17/43	7/24	17/41	7/19	18/18
	18	६	बुध	12:49	हस्त	26:38	अति	11:46	कन्या	भ. 12/49 से 25/44 तक, शीतला षष्ठी, स. सि. योग	18	7/37	17/44	7/19	17/44	7/24	17/42	7/19	18/19
	19	७	गुरु	14:38	चित्रा	29:11	सुक	11:59	तु.15/51	स्वामी विवेकानन्द जयन्ती (मतान्तरे), सूर्य सायन कुम्भ में 26/54	19	7/36	17/45	7/18	17/45	7/24	17/43	7/19	18/20
	20	८	शुक्र	16:55	स्वा.	–:–	धृति	12:35	तुला	**मंगल मीन में 13/47**, सूर्य अभिजित नक्षत्र में प्रवेश 20/48	20	7/36	17/46	7/18	17/46	7/24	17/43	7/19	18/20
	21	९	शनि	19:27	स्वा.	8:4	शूल	13:23	वृ.28/18	बुध पू.षा. में 13/06, शक माघ प्रारम्भ, स. सि. योग	21	7/36	17/47	7/18	17/47	7/24	17/44	7/19	18/21
	22	१०	रवि	22:0	विशा	11:3	गंड	14:14	वृश्चिक	भ. 8/44 से 22/00 तक,	22	7/35	17/48	7/18	17/47	7/23	17/45	7/19	18/22
	23	११	चंद्र	24:22	अनु	13:56	वृद्धि	15:0	वृश्चिक	**षट्तिला एकादशी व्रत**, सूर्य श्रव. में 27/26, नेताजी सुभाषचन्द्रबोस **(E)**	23	7/35	17/49	7/17	17/48	7/23	17/46	7/19	18/22
	24	१२	मंग	26:23	ज्ये.	16:33	ध्रुव	15:32	ध.16/33	**तिल द्वादशी**, मंगल उ.भा. में 24/34, सूर्य अभिजित् नक्षत्र से निवृत्त 24/26	24	7/35	17/50	7/17	17/49	7/23	17/47	7/19	18/23
	25	१३	बुध	27:57	मूल	18:47	व्या.	15:46	धनु	भ. 27/57 से, **प्रदोष व्रत**, गण्डमूल 18/47 तक,	25	7/35	17/51	7/17	17/50	7/22	17/48	7/19	18/23
	26	१४	गुरु	29:2	पू.षा.	20:32	हर्ष	15:39	म.26/54	भ. 16/30 तक, **शनि मूल (1) धनु में 19/28, भारत गणतन्त्र दिवस(F)**	26	7/34	17/52	7/16	17/51	7/22	17/49	7/18	18/24
	27	३०	शुक्र	29:37	उ.षा.	21:50	वज्र	15:9	मकर	**माघ (मौनी) अमावस, शुक्र मीन में 20/18**, मेला हरिद्वार, प्रयागराज आदि	27	7/33	17/53	7/16	17/52	7/21	17/50	7/18	18/24
माघ शुक्ल	28	१	शनि	29:44	श्रव.	22:39	सिद्धि	14:17	मकर	माघ शुक्ल पक्ष प्रारम्भ, स. सि. योग 22/39 तक	28	7/32	17/54	7/16	17/52	7/21	17/51	7/18	18/25
	29	२	रवि	29:26	धनि	23:3	व्य.	13:3	कुं.10/54	चन्द्रदर्शन, मु. 30, **पंचक प्रारम्भ 10/54**, बाबा श्रीलालदयाल जयन्ती	29	7/32	17/55	7/15	17/53	7/20	17/52	7/18	18/25
	30	३	चंद्र	28:44	शत.	23:4	वरी	11:31	कुम्भ	**गौरी तृतीया (गोंतरी) व्रत**, जमादि-उल्लावल (मु.) मास प्रारम्भ	30	7/31	17/56	7/15	17/54	7/20	17/53	7/18	18/26
	31	४	मंग	27:41	पू.भा.	22:45	परि	9:41	मी.16/51	भ. 16/13 से 27/41 तक, **अङ्गारकी श्रीगणेश तिल चतुर्थी**, वरद (कुन्द) **(G)**	31	7/31	17/57	7/14	17/55	7/19	17/54	7/18	18/27

(A) श्रीगुरु गोबिन्द सिंह जयन्ती, **(B)** स्वा. विवेकानन्द जयन्ती, स. सि. यो. **(C)** मु. 15, पुण्यकाल सं. दोपहर 14/02 तक, निरयण उत्तरायण प्रारम्भ, गण्डमूल विचार **(D)** सुन्दरी व्रत, गौरी चतुर्थी, वक्रतुण्डचतुर्थी, गण्डमूल 22/44 तक. **(E)** जयन्ती [illegible]

वि. संवत् 2073, फरवरी महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2017 ई.

मास पक्ष	फरवरी	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश — सूर्योत्तरायण — घण्टा-मिन्टों में [भा. स्टैं. टा.] — शिशिर-वसन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
माघ शुक्ल पक्ष	1	५	बुध	26	20	उ.भा.	22	7	शिव सिद्ध	7 29	35 15	मीन	फरवरी, सं. 2017 ई. प्रारम्भ, **वसन्त (श्री) पंचमी**, सरस्वती पूजन, **(A)**	1	7/30	17/57	7/14	17/56	7/19	17/54	7/17	18/28
	2	६	गुरु	24	43	रेव	21	12	साध्य	26	42	मे.21/12	**पंचक समाप्त 21/12**, गण्डमूल विचार, स. सि. यो.	2	7/29	17/58	7/13	17/57	7/18	17/55	7/17	18/28
	3	७	शुक्र	22	50	अश्वि	20	2	शुभ	23	57	मेष	भ. 22/50 से, रथ-आरोग्य सप्तमी, पुत्र सप्तमी व्रत, **बुध मकर (B)**	3	7/29	17/58	7/12	17/57	7/17	17/56	7/17	18/29
	4	८	शनि	20	45	भर.	18	39	शुक्ल	21	3	वृ.24/17	भ. 9/48 तक, **भीष्माष्टमी**,	4	7/28	17/59	7/12	17/58	7/17	17/57	7/16	18/29
	5	९	रवि	18	30	कृति	17	7	ब्रह्म	18	1	वृष	सूर्य धनि. में 30/31,	5	7/28	18/00	7/11	17/59	7/16	17/58	7/16	18/30
	6	१०	चंद्र	16	10	रोहि	15	29	ऐन्द्र	14	54	मि.26/39	भ. 26/59 से, **गुरु वक्री 12/17**, स. सि. योग	6	7/27	18/02	7/11	18/00	7/15	17/59	7/16	18/30
	7	११	मंग	13	48	मृग	13	49	वैधृ	11	45	मिथुन	भ. 13/48 तक, **जया एकादशी व्रत**, भीष्म-द्वादशी (देखें पृ. 88)	7	7/26	18/03	7/10	18/01	7/15	17/59	7/15	18/31
	8	१२	बुध	11	30	आर्द्रा	12	14	विष्क प्रीति	8 29	40 42	क.29/08	प्रदोष व्रत, तिल द्वादशी	8	7/25	18/04	7/09	18/01	7/14	18/00	7/15	18/31
	9	१३	गुरु	9	22	पुन.	10	48	आयु	26	56	कर्क	**गुरुपुष्य योग 10/48 से**, स. सि. यो.	9	7/24	18/05	7/09	18/02	7/13	18/01	7/14	18/32
	10	१४	शुक्र	7	31	पुष्य	9	40	सौभा	24	29	कर्क	भ. 7/31 से 18/47 तक, **माघ पूर्णिमा** (प्रातः 7/31 बाद), बुध श्रव. **(C)**	10	7/23	18/06	7/08	18/03	7/12	18/02	7/14	18/32
	0	१५	शुक्र	30	3	00	00	00	00	00	00	00	पूर्णिमा तिथि का क्षय °° °°	0	000	000	000	000	000	000	000	000
फाल्गुन कृष्ण पक्ष	11	१	शनि	29	5	अश्ले	8	55	शोभ	22	23	सिं. 8/55	फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रारम्भ, मंगल रेव. में 22/32, गण्डमूल विचार	11	7/23	18/07	7/07	18/04	7/11	18/03	7/13	18/33
	12	२	रवि	28	42	मघा	8	40	अति	20	45	सिंह	**सूर्य कुम्भ में 20/38, फाल्गुन संक्रान्ति**, मु. 30, पुण्यकाल सं. **(D)**	12	7/22	18/07	7/06	18/05	7/11	18/04	7/13	18/33
	13	३	चंद्र	28	57	पू.फा.	8	59	सुक	19	35	कं.15/10	भ. 16/50 से 28/57 तक,	13	7/21	18/08	7/05	18/05	7/10	18/04	7/12	18/34
	14	४	मंग	29	52	उ.फा.	9	57	धृति	18	56	कन्या	**अङ्गारकी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत** (देखें पृ. 14-17), स. सि. यो. 9/57 तक	14	7/20	18/09	7/05	18/06	7/09	18/05	7/12	18/34
	15	५	बुध	-	-	हस्त	11	32	शूल	18	46	तु.24/33	स. सि. यो. 11/32 तक	15	7/19	18/09	7/04	18/07	7/08	18/06	7/11	18/35
	16	५	गुरु	7	24	चित्रा	13	41	गंड	19	2	तुला		16	7/18	18/10	7/03	18/08	7/07	18/07	7/11	18/35
	17	६	शुक्र	9	26	स्वा.	16	18	वृद्धि	19	38	तुला	भ. 9/26 से 22/37 तक, बुध पूर्व में अस्त 29/55,	17	7/17	18/11	7/02	18/08	7/06	18/08	7/10	18/36
	18	७	शनि	11	48	विशा	19	10	ध्रुव	20	25	वृ.12/26	श्रीनाथ-उत्सव, बुध धनि. में 19/04, सूर्य सायन मीन में 17/02, **(E)**	18	7/16	18/12	7/01	18/09	7/05	18/09	7/09	18/36
	19	८	रवि	14	18	अनु	22	7	व्या.	21	15	वृश्चिक	सूर्य शत. में 11/07, जानकी व्रत, गण्डमूल 22/07 से,	19	7/15	18/13	7/00	18/10	7/04	18/09	7/09	18/37
	20	९	चंद्र	16	42	ज्ये.	24	53	हर्ष	21	57	ध.24/53	भ. 29/44 से, शक फाल्गुन प्रारम्भ, रामदास नवमी, गण्डमूल विचार	20	7/14	18/14	6/59	18/11	7/03	18/10	7/08	18/37
	21	१०	मंग	18	46	मूल	27	17	वज्र	22	24	धनु	भ. 18/46 तक, शुक्र रेव. में 8/28, स्वामी दयानन्द सरस्वती जयन्ती, **(F)**	21	7/13	18/15	6/59	18/11	7/02	18/11	7/08	18/37
	22	११	बुध	20	20	पू.षा.	29	11	सिद्धि	22	27	धनु	**विजया एकादशी व्रत, बुध कुम्भ में 18/43**,	22	7/12	18/16	6/58	18/12	7/01	18/12	7/07	18/38
	23	१२	गुरु	21	19	उ.षा.	30	30	व्य.	22	3	म.11/34		23	7/11	18/17	6/57	18/13	7/00	18/13	7/06	18/38
	24	१३	शुक्र	21	39	श्रव.	-	-	वरी	21	9	मकर	भ. 21/39 से, प्रदोष व्रत, **श्रीमहाशिवरात्रि व्रत** (देखें पृ. 88), स. सि. यो.	24	7/10	18/17	6/56	18/13	6/59	18/14	7/06	18/38
	25	१४	शनि	21	21	श्रव.	7	11	परि	19	46	कुं.19/18	भ. 9/30 तक, **पंचक प्रारम्भ 19/18**,	25	7/09	18/18	6/55	18/14	6/58	18/15	7/05	18/39
	26	३०	रवि	20	28	धनि. शत.	7 30	16 50	शिव	17	56	कुम्भ	**फाल्गुन अमावस**, बुध शत. में 14/57	26	7/07	18/19	6/54	18/15	6/57	18/15	7/04	18/39
फा.शु.	27	१	चंद्र	19	6	पू.भा.	29	57	सिद्ध	15	42	मी.24/12	फाल्गुन शुक्ल पक्ष प्रारम्भ,	27	7/06	18/20	6/53	18/15	6/56	18/16	7/03	18/39
	28	२	मंग	17	21	उ.भा.	28	44	साध्य	13	8	मीन	चन्द्रदर्शन, मु. 45, श्रीरामकृष्ण परमहंस जयन्ती, स. सि. यो.	28	7/05	18/20	6/52	18/16	6/55	18/16	7/03	18/39

(A) वागेश्वरी जयन्ती, गण्डमूल 22/07 से प्रा., **(B)** में 13/17, अचला-भानु सप्तमी, श्रीमाधवाचार्य जयन्ती, गण्डमूल 20/02 तक **(C)** में 8/34, माघस्नान समाप्त, **श्रीगुरु रविदास जयन्ती**, श्रीसत्यनारायण व्रत, श्रीललिता जयन्ती, राहु मघा (3), केतु शत. (1) में 12/02, गण्डमूल 9/40 बाद **(D)** मध्याह्न बाद, गण्डमूल 8/40 तक **(E)** वसन्त ऋतु प्रारम्भ, **(F)** गण्डमूल 27/17 तक,

वि. संवत् 2073, मार्च महीने का तिथ्यादि पंचांग घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.), सन् 2017 ई.

मास पक्ष	मार्च	तिथि	वार	समाप्ति काल घं.	मिं.	नक्षत्र	समाप्ति काल घं.	मिं.	योग	समाप्ति काल घं.	मिं.	चंद्र-राशि प्रवेश घं. मिं.	भद्रा, पंचक, सूर्यादि ग्रहों का राशि-नक्षत्र प्रवेश घण्टा-मिनटों में [भा. स्टैं. टा.] सूर्योत्तरायण वसन्त ऋतुः	तारीख	जम्मू सूर्योदय घं.मिं.	जम्मू सूर्यास्त घं.मिं.	दिल्ली सूर्योदय घं.मिं.	दिल्ली सूर्यास्त घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्योदय घं.मिं.	चण्डीगढ़ सूर्यास्त घं.मिं.	मुम्बई सूर्योदय घं.मिं.	मुम्बई सूर्यास्त घं.मिं.
फाल्गुन शुक्ल पक्ष	1	३	बुध	15	18	रेव	27	16	शुभ	10	20	मे.27/16	भ. 26/11 से, पंचक समाप्त 27/16, मंगल अश्वि (1) मेष में (A)	1	7/03	18/22	6/50	18/17	6/53	18/17	7/02	18/40
	2	४	गुरु	13	4	अश्वि	25	41	शुक्ल ब्रह्म	7 28	21 17	मेष	भ. 13/04 तक, अविघ्नकर व्रत, गण्डमूल 25/41 तक, स. सि. यो.	2	7/02	18/23	6/49	18/18	6/52	18/17	7/01	18/40
	3	५	शुक्र	10	44	भर.	24	4	वैधृ	25	12	वृ.29/40	याज्ञवल्क्य जयन्ती,	3	7/01	18/24	6/48	18/18	6/51	18/18	7/01	18/41
	4	६	शनि	8	24	कृति	22	29	ऐन्द्र	22	9	वृष	भद्रा 30/08 से, सूर्य पू.भा. में 17/20, शुक्र वक्री 14/38,	4	7/00	18/25	6/47	18/19	6/50	18/19	7/00	18/41
	0	७	शनि	30	8	00	00	00	00	00	00	00	सप्तमी तिथि का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000
	5	८	रवि	28	0	रोहि	21	1	विष्क	19	11	वृष	भ. 17/04 तक, बुध पू.भा. में 21/59, होलाष्टक प्रारम्भ, अन्नपूर्णा-अष्टमी	5	6/58	18/26	6/46	18/19	6/49	18/20	7/00	18/42
	6	९	चंद्र	26	2	मृग	19	42	प्रीति	16	21	मि. 8/20	स. सि. यो.	6	6/57	18/27	6/45	18/20	6/48	18/20	6/59	18/42
	7	१०	मंग	24	18	आर्द्रा	18	37	आयु	13	42	मिथुन	होलाष्टक–5 से 12 मार्च	7	6/55	18/28	6/44	18/21	6/46	18/21	6/58	18/42
	8	११	बुध	22	50	पुन	17	46	सौभा	11	14	क.11/57	भद्रा 11/34 से 22/50 तक, आमलकी एकादशी व्रत,	8	6/54	18/29	6/43	18/21	6/45	18/22	6/57	18/43
	9	१२	गुरु	21	40	पुष्य	17	12	शोभ	8	59	कर्क	गोविन्द द्वादशी, गण्डमूल 17/12 से, गुरुपुष्य योग	9	6/53	18/30	6/42	18/22	6/44	18/22	6/56	18/43
	10	१३	शुक्र	20	50	अश्ले	16	59	अति सुक	7 29	00 18	सिं.16/59	प्रदोष व्रत, बुध मीन में 26/36, गण्डमूल विचार	10	6/52	18/31	6/41	18/23	6/43	18/23	6/55	18/44
	11	१४	शनि	20	24	मघा	17	7	धृति	27	56	सिंह	भ. 20/24 से, महेश्वर व्रत, गण्डमूल 17/07 तक, वृषदान व्रत	11	6/50	18/32	6/40	18/23	6/42	18/24	6/54	18/44
	12	१५	रवि	20	24	पू.फा.	17	41	शूल	26	54	कं.23/54	भ. 8/24 तक, फाल्गुन पूर्णिमा, होलिका दहन (प्रदोषे), बुध उ.भा. (B)	12	6/49	18/32	6/38	18/24	6/40	18/24	6/53	18/44
चैत्र कृष्ण पक्ष	13	१	चंद्र	20	52	उ.फा.	18	42	गंड	26	15	कन्या	वसन्तोत्सव, होला-मेला (श्रीआनन्दपुर व पांओटा साहिब), होली पर्व (C)	13	6/48	18/33	6/37	18/24	6/39	18/25	6/53	18/44
	14	२	मंग	21	50	हस्त	20	12	वृद्धि	25	59	कन्या	सूर्य मीन में 17/33, चैत्र संक्रान्ति, मु. 30, पुण्यकाल सं. 11/09 (D)	14	6/47	18/33	6/36	18/25	6/38	18/26	6/52	18/44
	15	३	बुध	23	18	चित्रा	22	11	ध्रुव	26	5	तु. 9/08	भ. 10/34 से 23/18 तक, वक्री शुक्र उ.भा. (4) में 8/07	15	6/45	18/33	6/35	18/25	6/37	18/26	6/51	18/44
	16	४	गुरु	25	12	स्वा.	24	35	व्या.	26	31	तुला	श्रीगणेश चतुर्थी व्रत (देखें पृ. 14-17), श्रीभगवान्नारायण जयन्ती	16	6/44	18/34	6/34	18/26	6/36	18/26	6/51	18/44
	17	५	शुक्र	27	27	विशा	27	19	हर्ष	27	12	वृ.20/36	सूर्य उ.भा. में 25/54, श्रीरंग-पंचमी, मेला नवचण्डी (मेरठ) प्रारम्भ, (E)	17	6/43	18/34	6/33	18/26	6/35	18/27	6/50	18/44
	18	६	शनि	29	53	अनु	30	14	वज्र	28	3	वृश्चिक	भद्रा 29/53 से, वक्री गुरु चित्रा (1) में 13/55, एकनाथ षष्ठी	18	6/42	18/35	6/32	18/27	6/34	18/27	6/49	18/45
	19	७	रवि	–	–	ज्ये.	–	–	सिद्धि	28	54	वृश्चिक	भ. 19/06 तक, बुध रेव. में 14/49, शीतला सप्तमी, गण्डमूल 06/14 से प्रा.,	19	6/41	18/36	6/31	18/28	6/32	18/28	6/48	18/45
	20	७	चंद्र	8	19	ज्ये.	9	9	व्य.	29	36	ध. 9/09	शीतला पूजन, मंगल भर. में 14/08, सूर्य सायन मेष में 15/59, (F)	20	6/40	18/36	6/29	18/28	6/31	18/29	6/47	18/45
	21	८	मंग	10	32	मूल	11	51	वरी	30	1	धनु	वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त 22/54, शीतलाष्टमी, गण्डमूल 11/51 तक,	21	6/39	18/37	6/28	18/29	6/30	18/30	6/46	18/45
	22	९	बुध	12	18	पू.षा.	14	7	परि	29	59	म.20/36	भद्रा 24/53 से, शक चैत्र एवं सन् 1938 प्रारम्भ,	22	6/38	18/38	6/27	18/29	6/29	18/30	6/45	18/46
	23	१०	गुरु	13	28	उ.षा.	15	47	शिव	29	25	मकर	भद्रा 13/28 तक,	23	6/36	18/38	6/26	18/30	6/27	18/31	6/45	18/46
	24	११	शुक्र	13	54	श्रव.	16	45	सिद्ध	28	16	कुं.28/57	पंचक प्रारम्भ 28/57, पापमोचनी एकादशी व्रत, स. सि. यो.	24	6/35	18/39	6/25	18/30	6/26	18/32	6/44	18/46
	25	१२	शनि	13	34	धनि	16	58	साध्य	26	31	कुम्भ	शनि प्रदोष व्रत, व. शुक्र पूर्व से उदय 29/15, महावारुणी योग 16/58 से,	25	6/34	18/40	6/24	18/31	6/25	18/32	6/44	18/47
	26	१३	रवि	12	29	शत	16	28	शुभ	24	12	कुम्भ	भ. 12/29 से 23/37 तक, वारुणी योग सूर्योदय से 12/29 तक, मासशिवरात्रि व्रत	26	6/33	18/41	6/22	18/31	6/24	18/33	6/43	18/47
	27	१४	चंद्र	10	45	पू.भा.	15	20	शुक्ल	21	24	मी. 9/40	अमावस (पितृकार्येषु), बुध अश्वि (1) मेष में 7/38, मेला पृथूदक-(G)	27	6/32	18/41	6/22	18/32	6/22	18/34	6/42	18/47
	28	३०	मंग.	8	27	उ.भा.	13	41	ब्रह्म	18	13	मीन	चैत्र अमावस (स्नानदानादि-प्रात: 8/27 तक), वि. संवत् 2073 पूर्ण, (H)	28	6/30	18/42	6/20	18/32	6/20	18/35	6/41	18/48
	0	१	मंग.	29	45	00	00	00	00	00	00	00	चैत्र शुक्ल प्रतिपदा का क्षय ०० ००	0	000	000	000	000	000	000	000	000

(A) 26/38, जमादि-उल्सानी (मु.) मास प्रारम्भ, मार्च-सं. 2017 ई. प्रारम्भ, गण्डमूल विचार (B) में 19/20, होलाष्टक समाप्त, होली पर्व (पं.), श्रीचैतन्य महाप्रभु जयन्ती (C) (उ.प्र.-दिल्ली आदे), ध्वजारोहण, धुलण्डी, होलिका विभूति धारण (D) बाद से, सन्त तुकाराम जयन्ती (E) मेला गुरु रामराय (देहरादून) (F) उत्तर गोल प्रारम्भ, बुध पश्चिम से उदय 22/56, महाविषुव दिवस, गण्डमूल विचार (G) पिहोवातीर्थ (हरि.) (H) वि. संवत 2074 प्रारम्भ

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल घण्टा-मिनटों में (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् २०७३ (सन् 2016-17 ई.)

(चन्द्रमा के नक्षत्र चरणों के अनुसार बच्चों (शिशुओं) का नामकरण करें।)

आगे लिखे चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का समय घण्टे मिनटों में भा. स्टैं. टा. अनुसार दिया जा रहा है। रात्रि बारह (12) बजे के बाद के समय को आगामी तारीख के रूप में दर्शाया गया है। आगामी पृष्ठों पर दिया गया चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश का प्रारम्भ काल है, न कि समाप्तिकाल। इस सारिणी के प्रयोग से किसी जातक के जन्म समय (घण्टा-मिनटों में) के आधार पर शीघ्र ही जातक का जन्म नक्षत्र एवं उसका चरण आदि सुगमता से जान सकते हैं। प्राचीन परिपाटी के अनुसार घड़ी-पलों या भयात्-भभोग की गणित प्रक्रिया से नक्षत्र-चरण निकालने का झंझट नहीं होगा।

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अप्रै. 2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 अप्रै.	उ.षा.	14	17	20	23	2	22	8	24
2/3 अप्रै.	श्रवण	14	26	20	17	2	08	7	59
3/4 अप्रै.	धनि.	13	50	19	30	1	15	6	51
4/5 अप्रै.	शत.	12	31	18	02	23	33	5	04
5/6 अप्रै.	पू.भा.	10	35	15	58	21	21	2	47
6/7 अप्रै.	उ.भा.	8	08	13	26	18	44	0	02
7 अप्रै.	रेवती	5	20	10	35	15	51	21	06
8 अप्रै.	अश्वि	2	22	7	37	12	53	18	08
8/9 अप्रै.	भरणी	23	23	4	26	9	48	15	11
9/10 अप्रै.	कृति	20	34	1	55	7	21	12	44
10/11 अप्रै.	रोहि.	18	08	23	39	5	10	10	41
11/12 अप्रै.	मृग.	16	12	21	52	3	28	9	13
12/13 अप्रै.	आर्द्रा	14	54	20	46	2	38	8	30
13/14 अप्रै.	पुर्न	14	22	20	25	2	29	8	28
14/15 अप्रै.	पुष्य	14	36	20	51	3	06	9	21
15/16 अप्रै.	अश्ले.	15	36	22	01	4	27	10	52
16/17 अप्रै.	मघा	17	17	23	51	6	25	12	59
17/18 अप्रै.	पू.फा.	19	33	2	13	8	53	15	33
18/19 अप्रै.	उ.फा.	22	13	4	57	11	42	18	26
20 अप्रै.	हस्त	1	10	7	56	14	42	21	28
21/22 अप्रै.	चित्रा	4	14	11	00	17	47	0	33
22/23 अप्रै.	स्वा.	7	19	14	04	20	48	3	33
23/24 अप्रै.	विशा	10	18	17	00	23	42	6	25
24/25 अप्रै.	अनु.	13	06	19	44	2	23	9	01
25/26 अप्रै.	ज्ये.	15	40	22	13	4	47	11	21
26/27 अप्रै.	मूल	17	54	0	21	6	49	13	16
27/28 अप्रै.	पू.षा.	19	43	2	03	8	23	14	43
28/29 अप्रै.	उ.षा.	21	03	3	17	9	26	15	37
29/30 अप्रै.	श्रवण	21	48	3	50	9	51	15	53

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मई 2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
30/1 मई	धनि	21	55	3	47	9	43	15	30
1/2 मई	शत	21	22	3	04	8	45	14	27
2/3 मई	पू.भा.	20	09	1	42	7	14	12	50
3/4 मई	उ.भा.	18	20	23	45	5	11	10	36
4/5 मई	रेवती	16	01	21	20	2	40	7	59
5/6 मई	अश्वि	13	18	18	34	23	51	5	07
6/7 मई	भरणी	10	23	15	38	20	54	2	09
7 मई	कृति	7	25	12	41	18	00	23	18
8 मई	रोहि	4	36	9	59	15	21	20	44
9 मई	मृग	2	07	7	37	13	03	18	38
10 मई	आर्द्रा	0	09	5	50	11	31	17	12
10/11 मई	पुर्न	22	53	4	45	10	38	16	26
11/12 मई	पुष्य	22	23	4	28	10	34	16	39
12/13 मई	अश्ले	22	45	5	03	11	20	17	38
13/14 मई	मघा	23	56	6	25	12	55	19	24
15 मई	पू.फा.	1	53	8	31	15	08	21	46
16/17 मई	उ.फा.	4	24	11	06	17	51	0	35
17/18 मई	हस्त	7	19	14	05	20	52	3	38
18/19 मई	चित्रा	10	25	17	11	23	59	6	44
19/20 मई	स्वा.	13	31	20	15	3	00	9	44
20/21 मई	विशा	16	28	23	08	5	49	12	31
21/22 मई	अनु.	19	10	1	46	8	22	14	58
22/23 मई	ज्ये.	21	34	4	05	10	35	17	06
23/24 मई	मूल	23	37	6	02	12	28	18	53
25 मई	पू.षा.	1	19	7	39	13	58	20	18
26 मई	उ.षा.	2	38	8	54	15	05	21	18
27 मई	श्रवण	3	32	9	39	15	45	21	52
28 मई	धनि	3	59	9	58	16	01	21	57
29 मई	शत.	3	56	9	47	15	39	21	30

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मई 2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
30 मई	पू.भा.	3	22	9	06	14	49	20	36
31 मई	उ.भा.	2	17	7	53	13	29	19	05
1 जून	रेवती	0	41	6	10	11	40	17	09
1/2 जून	अश्वि	22	39	4	03	9	28	14	52
2/3 जून	भरणी	20	16	1	37	6	59	12	20
3/4 जून	कृति	17	42	23	02	4	23	9	44
4/5 जून	रोहि	15	05	20	28	1	50	7	13
5/6 जून	मृग	12	36	18	02	23	28	4	57
6/7 जून	आर्द्रा	10	26	16	01	21	36	3	11
7/8 जून	पुर्न	8	46	14	31	20	15	1	56
8/9 जून	पुष्य	7	45	13	41	19	38	1	34
9/10 जून	अश्ले	7	30	13	39	19	47	1	56
10/11 जून	मघा	8	05	14	26	20	47	3	08
11/12 जून	पू.फा.	9	29	16	01	22	32	5	04
12/13 जून	उ.फा.	11	36	18	14	0	56	7	36
13/14 जून	हस्त	14	16	21	01	3	45	10	30
14/15 जून	चित्रा	17	15	0	01	6	48	13	34
15/16 जून	स्वा.	20	20	3	04	9	49	16	33
16/17 जून	विशा	23	17	5	57	12	38	19	19
18 जून	अनु	1	57	8	31	15	06	21	40
19 जून	ज्ये.	4	14	10	42	17	09	23	37
20/21 जून	मूल	6	05	12	26	18	48	1	09
21/22 जून	पू.षा.	7	31	13	46	20	01	2	16
22/23 जून	उ.षा.	8	31	14	43	20	52	2	59
23/24 जून	श्रवण	9	09	15	13	21	17	3	21
24/25 जून	धनि.	9	25	15	25	21	26	3	24
25/26 जून	शत.	9	21	15	15	21	08	3	02
26/27 जून	पू.भा.	8	56	14	44	20	33	2	24
27/28 जून	उ.भा.	8	10	13	53	19	37	1	20

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
जून 2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
28 जून	रेव.	7	04	12	42	18	21	23	59
29 जून	अश्वि	5	38	11	12	16	47	22	21
30 जून	भरणी	3	56	9	27	14	58	20	29
1 जुला.	कृति	2	00	7	30	12	59	18	28
1/2 जुला.	रोहि	23	58	5	28	10	57	16	27
2/3 जुला.	मृग	21	57	3	29	8	59	14	34
3/4 जुला.	आर्द्रा	20	06	1	43	7	19	12	56
4/5 जुला.	पुर्न.	18	33	0	17	6	00	11	41
5/6 जुला.	पुष्य	17	28	23	21	5	13	11	06
6/7 जुला.	अश्ले	16	59	23	02	5	06	11	09
7/8 जुला.	मघा	17	12	23	26	5	41	11	55
8/9 जुला.	पू.फा.	18	10	0	35	7	01	13	26
9/10 जुला.	उ.फा.	19	51	2	22	8	58	15	35
10/11 जुला	हस्त	22	10	4	52	11	35	18	17
12 जुला	चित्रा	1	00	7	42	14	24	21	09
13/14 जुला	स्वा	3	54	10	38	17	23	0	07
14/15 जुला	विशा	6	52	13	33	20	14	2	57
15/16 जुला	अनु.	9	36	16	11	22	46	5	21
16/17 जुला	ज्ये.	11	56	18	23	0	51	7	18
17/18 जुला	मूल	13	46	20	05	2	25	8	44
18/19 जुला	पू.षा.	15	03	21	14	3	26	9	37
19/20 जुला	उ.षा.	18	48	21	54	3	56	10	00
20/21 जुला	श्रवण	16	04	22	02	3	59	9	57
21/22 जुला	धनि.	15	55	21	47	3	42	9	32
22/23 जुला	शत.	15	25	21	13	3	02	8	50
23/24 जुला	पू.भा.	14	38	20	23	2	07	7	53
24/25 जुला	उ.भा.	13	37	19	19	1	02	6	44
25/26 जुला	रेवती	12	26	18	06	23	46	5	26
26/27 जुला	अश्वि	11	06	16	45	22	23	4	02
27/28 जुला	भरणी	9	41	15	18	20	56	2	33
28/29 जुला	कृति	8	11	13	49	19	26	1	03
29 जुला	रोहि	6	41	12	19	17	58	23	36
30 जुला	मृग	5	14	10	54	16	34	22	15
31 जुला	आर्द्रा	3	56	9	40	15	24	21	08
1 अग.	पुर्न	2	52	8	41	14	30	20	17
2 अग.	पुष्य	2	09	8	05	14	00	[illegible]	[illegible]

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अग. 2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
3 अग.	अश्ले	1	52	7	56	13	59	20	03
4 अग.	मघा	2	07	8	20	14	32	20	45
5 अग.	पू.फा.	2	58	9	20	15	42	22	04
6 अग.	उ.फा.	4	26	10	54	17	27	23	58
7/8 अग.	हस्त	6	29	13	07	19	45	2	23
8/9 अग.	चित्रा	9	01	15	44	22	25	5	9
9/10 अग.	स्वा.	11	53	18	38	1	22	8	07
10/11 अग.	विशा	14	52	21	35	4	18	11	02
11/12 अग.	अनु.	17	44	0	22	7	01	13	39
12/13 अग.	ज्ये.	20	17	2	48	9	18	15	49
13/14 अग.	मूल	22	20	4	41	11	03	17	24
14/15 अग.	पू.षा.	23	46	5	58	12	10	18	22
16 अग.	उ.षा.	0	34	6	39	12	41	18	42
17 अग.	श्रवण	0	43	6	36	12	30	18	23
18 अग.	धनि.	0	17	6	04	11	53	17	37
18/19 अग.	शत.	23	22	5	02	10	43	16	23
19/20 अग.	पू.भा.	22	04	3	40	9	17	14	54
20/21 अग.	उ.भा.	20	30	2	04	7	38	13	12
21/22 अग.	रेवती	18	46	0	19	5	52	11	25
22/23 अग.	अश्वि	16	58	22	32	4	05	9	39
23/24 अग.	भरणी	15	13	20	48	2	24	7	59
24/25 अग.	कृति	13	34	19	11	0	50	6	28
25/26 अग.	रोहि	12	06	17	47	23	29	5	10
26/27 अग.	मृग	10	52	16	38	22	21	4	09
27/28 अग.	आर्द्रा	9	55	15	46	21	36	3	27
28/29 अग.	पुर्न	9	18	15	14	21	11	3	05
29/30 अग.	पुष्य	9	03	15	05	21	08	3	10
30/31 अग.	अश्ले	9	13	15	22	21	31	3	40
31/1 सितं.	मघा	9	49	16	05	22	21	4	37
1/2 सितं.	पू.फा.	10	53	17	16	23	40	6	03
2/3 सितं.	उ.फा.	12	26	18	54	1	27	7	57
3/4 सितं.	हस्त	14	27	21	04	3	40	10	17
4/5 सितं.	चित्रा	16	54	23	35	6	15	12	58
5/6 सितं.	स्वा.	19	40	2	24	9	09	15	53
6/7 सितं.	विशा	22	38	5	23	12	08	18	53

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
सितं. 2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
9/10 सितं.	ज्ये.	4	26	11	02	17	39	0	15
10/11 सितं.	मूल	6	52	13	20	19	48	2	16
11/12 सितं.	पू.षा.	8	44	15	02	21	20	3	38
12/13 सितं.	उ.षा.	9	56	16	07	22	12	4	19
13/14 सितं.	श्रवण	10	24	16	20	22	16	4	12
14/15 सितं.	धनि	10	08	15	55	21	44	3	26
15/16 सितं.	शत	9	10	14	47	20	24	2	01
16/17 सितं.	पू.भा.	7	38	13	08	18	39	0	11
17 सितं.	उ.भा.	5	39	11	05	16	30	21	56
18 सितं.	रेवती	3	22	8	45	14	09	19	32
19 सितं.	अश्वि	0	55	6	18	11	42	17	05
19/20 सितं.	भरणी	22	29	3	54	9	20	14	45
20/21 सितं.	कृति	20	11	1	39	7	10	12	40
21/22 सितं.	रोहि	18	10	23	45	5	21	10	56
22/23 सितं.	मृग	16	32	22	14	3	53	9	37
23/24 सितं.	आर्द्रा	15	22	21	12	3	03	8	53
24/25 सितं.	पुर्न	14	43	20	41	2	40	8	36
25/26 सितं.	पुष्य	14	37	20	44	2	50	8	57
26/27 सितं.	अश्ले	15	04	21	18	3	32	9	46
27/28 सितं.	मघा	16	00	22	21	4	43	11	04
28/29 सितं.	पू.फा.	17	25	23	52	6	20	12	47
29/30 सितं.	उ.फा.	19	15	1	46	8	21	14	54
30/1 अक्तू.	हस्त	21	27	4	05	10	42	17	20
1/2 अक्तू.	चित्रा	23	58	6	39	13	19	20	02
3 अक्तू.	स्वा.	2	44	9	28	16	13	22	57
4/5 अक्तू.	विशा	5	41	12	26	19	12	1	57
5/6 अक्तू.	अनु	8	43	15	27	22	12	4	56
6/7 अक्तू.	ज्ये.	11	41	18	22	1	04	7	45
7/8 अक्तू.	मूल	14	26	21	01	3	37	10	12
8/9 अक्तू.	पू.षा.	16	47	23	14	5	40	12	07
9/10 अक्तू.	उ.षा.	18	34	0	55	7	07	13	23
10/11 अक्तू.	श्रवण	19	40	1	45	7	50	13	55
11/12 अक्तू.	धनि.	20	00	1	55	7	52	13	41
12/13 अक्तू.	शत.	19	32	1	14	6	55	12	37
13/14 अक्तू.	पू.भा.	18	19	23	51	5	22	10	57

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
अक्तू.2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
15/16 अक्तू.	रेवती	14	01	19	19	0	38	5	56
16/17 अक्तू.	अश्वि	11	14	16	29	21	45	3	00
17 अक्तू.	भरणी	8	16	13	32	18	47	0	03
18 अक्तू.	कृति	5	19	10	36	15	56	21	14
19 अक्तू.	रोहि.	2	32	7	56	13	20	18	44
20 अक्तू.	मृग.	0	08	5	38	11	07	16	43
20/21 अक्तू.	आर्द्रा	22	15	3	56	9	38	15	19
21/22 अक्तू.	पुर्न	21	00	2	52	8	42	14	31
22/23 अक्तू.	पुष्य	20	27	2	30	8	33	14	36
23/24 अक्तू.	अश्ले	20	39	2	52	9	06	15	19
24/25 अक्तू.	मघा	21	32	3	55	10	17	16	40
25/26 अक्तू.	पू.फा.	23	03	5	33	12	04	18	34
27 अक्तू.	उ.फा.	1	04	7	38	14	16	20	53
28 अक्तू.	हस्त	3	29	10	09	16	50	23	30
29/30 अक्तू.	चित्रा	6	11	12	54	19	35	2	20
30/31 अक्तू.	स्वा.	9	03	15	47	22	32	5	16
31/1 नवं.	विशा.	12	01	18	46	1	30	8	15
1/2 नवं.	अनु.	15	00	21	44	4	29	11	13
2/3 नवं.	ज्ये.	17	57	0	39	7	22	14	04
3/4 नवं.	मूल	20	46	3	25	10	03	16	42
4/5 नवं.	पू.षा.	23	21	5	54	12	27	19	00
6 नवं.	उ.षा.	1	33	8	01	14	24	20	49
7 नवं.	श्रव.	3	15	9	31	15	46	22	02
8 नवं.	धनि.	4	18	10	25	16	33	22	34
9 नवं.	शत.	4	37	10	30	16	23	22	16
10 नवं.	पू.भा.	4	09	9	51	15	34	21	18
11 नवं.	उ.भा.	2	56	8	27	13	58	19	29
12 नवं.	रेवती	1	00	6	22	11	45	17	07
12/13 नवं.	अश्वि	22	30	3	47	9	03	14	20
13/14 नवं.	भरणी	19	36	0	49	6	01	11	14
14/15 नवं.	कृति.	16	27	21	39	2	52	8	04
15/16 नवं.	रोहि	13	17	18	32	23	48	5	03
16/17 नवं.	मृग.	10	18	15	38	20	56	2	20
17/18 नवं.	आर्द्रा	7	41	13	10	18	39	0	08
18 नवं.	पुर्न	5	37	11	17	16	55	22	32
19 नवं.	पुष्य	4	17	10	09	16	00	21	52

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
नवं. 2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
20 नवं.	अश्ले	3	44	9	48	15	53	21	57
21 नवं.	मघा	4	02	10	19	16	35	22	52
22/23 नवं.	पू.फा.	5	09	11	36	18	04	0	31
23/24 नवं.	उ.फा.	6	58	13	31	20	09	2	45
24/25 नवं.	हस्त	9	21	16	02	22	44	5	25
25/26 नवं.	चित्रा	12	06	18	50	1	34	8	19
26/27 नवं.	स्वा.	15	04	21	49	4	35	11	20
27/28 नवं.	विशा.	18	05	0	50	7	34	14	20
28/29 नवं.	अनु.	21	04	3	47	10	30	17	13
29/30 नवं.	ज्ये.	23	56	6	36	13	17	19	57
1 दिसं.	मूल	2	37	9	14	15	51	22	28
2/3 दिसं.	पू.षा.	5	05	11	38	18	11	0	44
3/4 दिसं.	उ.षा.	7	17	13	46	20	13	2	39
4/5 दिसं.	श्रवण	9	07	15	28	21	50	4	11
5/6 दिसं.	धनि	10	32	16	46	23	03	5	13
6/7 दिसं.	शत.	11	25	17	29	23	33	5	37
7/8 दिसं.	पू.भा.	11	41	17	36	23	31	5	27
8/9 दिसं.	उ.भा.	11	17	17	01	22	44	4	28
9/10 दिसं.	रेवती	10	12	15	46	21	21	2	55
10/11 दिसं.	अश्वि.	8	29	13	55	19	22	0	48
11 दिसं.	भरणी	6	14	11	34	16	54	22	14
12 दिसं.	कृतिका	3	34	8	51	14	07	19	23
13 दिसं.	रोहि.	0	39	5	54	11	10	16	25
13/14 दिसं.	मृग.	21	41	2	59	8	14	13	34
14/15 दिसं.	आर्द्रा	18	52	0	15	5	37	11	00
15/16 दिसं.	पुर्न	16	23	21	53	3	24	8	51
16/17 दिसं.	पुष्य	14	25	20	06	1	47	7	28
17/18 दिसं.	अश्ले	13	09	19	02	0	54	6	47
18/19 दिसं.	मघा	12	40	18	46	0	51	6	57
19/20 दिसं.	पू.फा.	13	03	19	21	1	39	7	57
20/21 दिसं.	उ.फा.	14	15	20	40	3	12	9	43
21/22 दिसं.	हस्त	16	12	22	49	5	27	12	04
22/23 दिसं.	चित्रा	18	42	1	25	8	06	14	50
23/24 दिसं.	स्वा.	21	35	4	20	11	06	17	51
25 दिसं.	विशा	0	37	7	22	14	07	20	52
26 दिसं.	अनु.	3	37	10	19	17	02	23	44

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
दिसं. 2016	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
27/28 दिसं.	ज्ये.	6	27	13	06	19	44	2	23
28/29 दिसं.	मूल	9	02	15	36	22	09	4	43
29/30 दिसं.	पू.षा.	11	17	17	46	0	15	6	44
30/31 दिसं.	उ.षा.	13	13	19	38	2	00	8	24
31/1 जन.17	श्रवण	14	48	21	06	3	25	9	43
1/2 जन.	धनि.	16	01	22	14	4	29	10	39
2/3 जन.	शत.	16	52	22	58	5	05	11	11
3/4 जन.	पू.भा.	17	17	23	16	5	16	11	18
4/5 जन.	उ.भा.	17	15	23	07	5	00	10	52
5/6 जन.	रेवती	16	45	22	30	4	15	10	00
6/7 जन.	अश्वि	15	45	21	23	3	02	8	40
7/8 जन.	भरणी	14	18	19	50	1	23	6	55
8/9 जन.	कृति.	12	27	17	56	23	22	4	49
9/10 जन.	रोहि.	10	17	15	42	21	06	2	31
10/11 जन.	मृग	7	56	13	20	18	44	0	09
11 जन.	आर्द्रा	5	33	10	59	16	25	21	51
12 जन.	पुर्न.	3	17	8	48	14	18	19	47
13 जन.	पुष्य	1	20	6	57	12	35	18	12
13/14 जन.	अश्ले.	23	50	5	36	11	23	17	09
14/15 जन.	मघा	22	55	4	52	10	50	16	47
15/16 जन.	पू.फा.	22	44	4	52	11	01	17	09
16/17 जन.	उ.फा.	23	18	5	33	11	55	18	16
18 जन.	हस्त	0	37	7	07	13	38	20	08
19 जन.	चित्रा	2	38	9	16	15	51	22	31
20/21 जन.	स्वा.	5	11	11	54	18	38	1	21
21/22 जन.	विशा	8	04	14	49	21	33	4	18
22/23 जन.	अनु.	11	03	17	46	0	30	7	13
23/24 जन.	ज्ये.	13	56	20	35	3	15	9	54
24/25 जन.	मूल	16	33	23	06	5	40	12	13
25/26 जन.	पू.षा.	18	47	1	13	7	40	14	06
26/27 जन.	उ.षा.	20	32	2	54	9	13	15	30
27/28 जन.	श्रवण	21	50	4	02	10	15	16	27
28/29 जन.	धनि.	22	39	4	45	10	54	16	58
29/30 जन.	शत.	23	03	5	03	11	03	17	04
30/31 जन.	पू.भा.	23	04	4	59	10	55	16	51
31/1 फर.	उ.भा.	22	45	4	35	10	26	16	16

चन्द्रमा का नक्षत्र-चरणों में प्रवेश काल (भा. स्टैं. टा.)

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
फर. 2017	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
1/2 फर.	रेवती	22	07	3	53	9	40	15	26
2/3 फर.	अश्वि	21	12	2	54	8	37	14	19
3/4 फर.	भरणी	20	02	1	41	7	21	13	00
4/5 फर.	कृति	18	39	0	17	5	53	11	30
5/6 फर.	रोहि.	17	07	22	42	4	18	9	53
6/7 फर.	मृग	15	29	21	04	2	39	8	14
7/8 फर.	आर्द्रा	13	49	19	25	1	02	6	38
8/9 फर.	पुर्न	12	14	17	52	23	31	5	08
9/10 फर.	पुष्य	10	48	16	31	22	14	3	57
10/11 फर.	अश्ले	9	40	15	29	21	17	3	06
11/12 फर.	मघा	8	55	14	51	20	48	2	44
12/13 फर.	पू.फा.	8	40	14	45	20	49	2	54
13/14 फर.	उ.फा.	8	59	15	10	21	27	3	42
14/15 फर.	हस्त	9	57	16	21	22	44	5	08
15/16 फर.	चित्रा	11	32	18	02	0	33	7	07
16/17 फर.	स्वा.	13	41	20	20	3	00	9	39
17/18 फर.	विशा.	16	18	23	01	5	44	12	26
18/19 फर.	अनु.	19	10	1	54	8	39	15	23
19/20 फर.	ज्ये.	22	07	4	48	11	30	18	11
21 फर.	मूल	0	53	7	29	14	05	20	41
22 फर.	पू.षा.	03	17	9	45	16	14	22	42
23/24 फर.	उ.षा.	5	11	11	34	17	50	0	10
24/25 फर.	श्रवण	6	30	12	40	18	51	1	01
25/26 फर.	धनि.	7	11	13	12	19	18	1	16
26/27 फर.	शत.	7	16	13	09	19	03	0	56
27/28 फर.	पू.भा.	6	50	12	37	18	23	0	12
28 फर.	उ.भा.	5	57	11	38	17	19	23	00
1 मार्च	रेवती	4	41	10	20	15	58	21	37
2 मार्च	अश्वि	3	16	8	52	14	29	20	05
3 मार्च	भरणी	1	41	7	17	12	52	18	28
4 मार्च	कृति	0	04	5	40	11	17	16	53
4/5 मार्च	रोहि.	22	29	4	07	9	45	15	23
5/6 मार्च	मृग.	21	01	2	41	8	20	14	02
6/7 मार्च	आर्द्रा	19	42	1	26	7	09	12	53
7/8 मार्च	पुर्न	18	37	0	24	6	12	11	57
8/9 मार्च	पुष्य	17	46	23	37	5	29	[illegible]	[illegible]

चन्द्र नक्षत्र चरण ↘		1		2		3		4	
मार्च 2017	नक्षत्र	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.	घं.	मिं.
9/10 मार्च	आश्ले.	17	12	23	09	5	05	11	02
10/11 मार्च	मघा	16	59	23	01	5	03	11	05
11/12 मार्च	पू.फा.	17	07	23	15	5	24	11	32
12/13 मार्च	उ.फा.	17	41	23	54	6	12	12	27
13/14 मार्च	हस्त	18	42	1	04	7	27	13	49
14/15 मार्च	चित्रा	20	12	2	42	9	08	15	41
15/16 मार्च	स्वा.	22	11	4	47	11	23	17	59
17 मार्च	विशा.	0	35	7	16	13	57	20	36
18 मार्च	अनु.	3	19	10	03	16	46	23	30
19/20 मार्च	ज्ये.	6	14	12	58	19	41	2	25
20/21 मार्च	मूल	9	09	15	49	22	30	5	10
21/22 मार्च	पू.षा.	11	51	18	25	0	59	7	33
22/23 मार्च	उ.षा.	14	07	20	36	2	57	9	22
23/24 मार्च	श्रवण	15	47	22	01	4	16	10	30
24/25 मार्च	धनि.	16	45	22	49	4	57	10	56
25/26 मार्च	शत.	16	58	22	50	4	43	10	35
26/27 मार्च	पू.भा.	16	28	22	12	3	56	9	40
27/28 मार्च	उ.भा.	15	20	20	55	2	31	8	06

"त्रिबल शुद्धि-चक्र"

त्रिग्रह बल→	सूर्यबल	चन्द्रबल	गुरूबल
शुभ एवं ग्राह्य	३, ६, १०, ११	१, ३, ६, ७, १०, ११	२, ५, ७, ९, ११
अल्प-शुभ एवं पूज्य	१, २, ५, ७, ९	२, ५, ९, १२	१, ३, ६, १०
निन्द्य एवं त्याज्य	४, ८, १२	४, ८	४, ८, १२

वर तथा कन्या दोनों की राशि से विवाह मुहूर्त्त समय की राशि (गोचर चन्द्र) १, ३, ६, ७, १० या ११वें हो, तो वह चन्द्र शुभ होता है एवं २, ५, ९ या १२वें चन्द्र हो, तो कुछ अशुभ एवं पूज्य होता है तथा ४ या ८वें चन्द्र हो, तो अशुभ एवं निन्द्य माना जाता है। (मु. पारिजात) ऊपर दिए गए **त्रिबल-शुद्धि** चक्र से वर-कन्या के शुभ विवाह मुहूर्त्त का निर्णय करने में [illegible]

मध्याह्न, अपराह्न, सायाह्न आदि काल

दो घटी अर्थात् अड़तालीस (48) मिनट का एक मुहूर्त्त होता है। पन्द्रह मुहूर्त्त का एक दिन और पन्द्रह मुहूर्त्त की एक रात होती है। सूर्योदय से तीन मुहूर्त्त का 'प्रातःकाल', फिर तीन मुहूर्त्त का 'संगवकाल', फिर तीन मुहूर्त्त का 'मध्याह्नकाल', फिर तीन मुहूर्त्त का 'अपराह्नकाल' और उसके बाद तीन मुहूर्त्त का 'सायानह्न काल' होता है।

मनुष्य को चाहिए कि वह स्नान आदि से शुद्ध होकर पूर्वाह्न में देवता सम्बन्धी कार्य (दानादि), मध्याह्न में मनुष्य सम्बन्धी कार्य और अपराह्न में पितर सम्बन्धी कार्य करें। असमय में किया हुआ दान राक्षसों का भाग माना गया है।

अभिजित मुहूर्त्त

पुराणानुसार अभिजित मुहूर्त्त काल में क्रियमाण सभी कर्म प्रायः सफल होते हैं। भगवान् विष्णु के सुदर्शन चक्र की भान्ति अभिजित् मुहूर्त्त सब दोषों को नाश कर देता है– **दिनमध्यगते सूर्ये मुहूर्त्ते हि अभिजित् प्रभुः। चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान्दोषान्निकृन्तति॥**

दिनमान के अर्ध भाग में स्थानीय सूर्योदय जमा कर देने से अभिजित् मुहूर्त्त का मध्य भाग निकल आता है। **'नारद पुराण'** के अनुसार **अभिजित्** के मध्याह्न काल से १ घटी अर्थात् २४ मिनट पूर्व और मध्याह्न से २४ मिनट पश्चात् तक के समय को **अभिजित् काल** कहा जाता है।

उदाहरण–मान लो, आपने २८ नवम्बर को अभिजित मुहूर्त्त का समय जानना है, तो उस दिन के दिनमान (२५/३० घटी पल) का अर्धभाग १२ घड़ी, ४५ पल होंगे। इस अर्ध भाग के ५ घंटे, ६ मिनट बनते हैं। इनके उस दिन में जालन्धर के सूर्योदय ७/१० घं. मिं. में जमा कर देने से दुपै. १२ बजकर १६ मिनट पर अभिजित मुहूर्त्त का मध्यकाल होगा। इससे २४ मिनट पूर्व अर्थात् ११/५२ घं. मिं. से अभिजित का प्रारम्भ काल तथा (१२/१६ + ००/२४ मिनट = १२ घं. ४० मिनट पर [illegible]

प्रातः साढ़े पाँच (5/30 घं. मिं.) से अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना.

यदि आपको प्रातः साढ़े पाँच बजे के ग्रहस्पष्ट के अतिरिक्त किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों, तो नीचे लिखी तालिका (Table) का प्रयोग करके अभीष्ट समय के ग्रहस्पष्ट प्राप्त कर सकते हैं–मान लीजिए, आपको **5 अप्रैल, 2016 ई.** की दोपहर एक (1) बजे का सूर्य स्पष्ट करना है। आगामी पृष्ठों में **5 अप्रैल** के सामने सूर्य स्पष्ट (11-21°-33′-18″) राशि-अंशादि लिखे गए हैं, जो कि प्रातः साढ़े पाँच बजे के हैं। हमें दोपहर 1 अर्थात् 13/00 बजे के सूर्य स्पष्ट चाहिए। तेरह (13) से साढ़े पाँच का अन्तर 7 घंटे 30 मिंट हुआ। अब 7 घण्टे 30 मिंट की गति को 5 अप्रैल में जोड़ दें, तो हमें दोपहर 1 बजे का स्पष्ट मिल जाएगा। (6) अप्रै. में से 5 अप्रै. का सूर्य स्पष्ट घटा देने से हमें सूर्य की दैनिक गति (59′/05″) प्राप्त हुई। इस दै. गति द्वारा नीचे लिखी तालिका में 7 घंटे की गति (17-12) कला तथा 30 मिनट की गति (1.14) कला प्राप्त हुई। जमा करने पर साढ़े सात घण्टे की गति (18′.26) हुई, इसको **5 अप्रैल प्रातः 5/30 के सूर्यस्पष्ट** में जमा कर देने पर हमें 5 अप्रैल की दुपै. एक बजे का सूर्यस्पष्ट (11-21°-51′-44″) प्राप्त हो जाएगा॥ ग्रहस्पष्ट करने की अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारी पुस्तक ज्योतिष तत्त्व (गणित खण्ड) का अध्ययन करें॥

ग्रहों की दैनिक गति के अनुसार प्रति घण्टा मिनटादि की तालिका

दै. गति (24 घं.)	गति (30 मिंट)	गति 1 घण्टे	गति 2 घण्टे	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति (8 घं.)	गति (9 घं.)
कला	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
3'	0.04	0.07	0.15	0.22	0.30	0.37	0.45	0.52	1.00	1.07
5'	0.06	0.12	0.25	0.37	0.50	1.02	1.11	1.27	1.40	1.52
7'	0.09	0.17	0.35	0.52	1.10	1.27	1.45	2.02	2.20	2.37
9'	0.11	0.22	0.45	1.07	1.30	1.52	2.15	2.37	3.00	3.22
11'	0.14	0.27	0.55	1.22	1.50	2.17	2.45	3.12	3.40	4.07
13'	0.16	0.32	1.05	1.37	2.10	2.42	3.15	3.47	4.20	4.52
15'	0.19	0.37	1.15	1.52	2.30	3.07	3.45	4.22	5.00	5.37
17'	0.21	0.42	1.25	2.07	2.50	3.32	4.15	4.57	5.40	6.22
19'	0.24	0.47	1.35	2.22	3.10	3.57	4.45	5.32	6.20	7.07
21'	0.26	0.52	1.45	2.37	3.30	4.22	5.15	6.07	7.00	7.52
23'	0.29	0.57	1.55	2.52	3.50	4.47	5.45	6.42	7.40	8.37
25'	0.31	1.02	2.05	3.07	4.10	5.12	6.15	7.17	8.20	9.22
27'	0.34	1.07	2.15	3.22	4.30	5.37	6.45	7.52	9.00	10.07
29'	0.36	1.12	2.25	3.37	4.50	6.02	7.15	8.27	9.40	10.52
31'	0.39	1.17	2.35	3.52	5.10	6.27	7.45	9.02	10.20	11.37
33'	0.41	1.22	2.45	4.07	5.30	6.52	8.15	9.37	11.00	12.22
35'	0.44	1.27	2.55	4.22	5.50	7.17	8.45	10.12	11.40	13.07
37'	0.46	1.32	3.05	4.37	6.10	7.42	9.15	10.47	12.20	13.52
39'	0.49	1.37	3.15	4.52	6.30	8.07	9.45	11.22	13.00	14.37
41'	0.51	1.42	3.25	5.07	6.50	8.32	10.15	11.57	13.40	15.22
43'	0.54	1.47	3.35	5.22	7.10	8.57	10.45	12.32	14.20	16.07
45'	0.56	1.52	3.45	5.37	7.30	9.22	11.15	13.07	15.00	16.52
47'	0.59	1.57	3.55	5.52	7.50	9.47	11.45	13.42	15.40	17.37
49'	1.01	2.02	4.05	6.07	8.10	10.12	12.15	14.17	16.20	18.22
51'	1.04	2.07	4.15	6.22	8.30	10.37	12.45	14.52	17.00	19.07
53'	1.06	2.12	4.25	6.37	8.50	11.02	13.15	15.27	17.40	19.52
55'	1.09	2.17	4.35	6.52	9.10	11.27	13.45	16.02	18.20	20.37
57'	1.11	2.22	4.45	7.07	9.30	11.52	14.15	16.37	19.00	21.22
58'	1.12	2.25	4.50	7.15	9.40	12.05	14.30	16.55	19.20	21.45
59'	1.14	2.27	4.55	7.27	9.50	12.17	14.45	17.12	19.40	22.07
60'	1.15	2.30	5.00	7.30	10.00	12.30	15.00	17.30	20.00	22.30

दै.गति (24 घं.)	गति (30 मि.)	गति (1 घं.)	गति (2 घं.)	गति (3 घं.)	गति (4 घं.)	गति (5 घं.)	गति (6 घं.)	गति (7 घं.)	गति 8 घण्टे	गति 9 घण्टे
कला	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.	क.वि.
61'	1.16	2.32	5.05	7.37	10.10	12.42	15.15	17.47	20.20	22.52
63'	1.19	2.37	5.15	7.52	10.30	13.07	15.45	18.22	21.00	23.37
65'	1.21	2.42	5.25	8.07	10.50	13.32	16.15	18.57	21.40	24.22
67'	1.24	2.47	5.35	8.22	11.10	13.57	16.45	19.25	22.20	25.07
69'	1.26	2.52	5.45	8.37	11.30	14.22	17.15	20.07	23.00	25.52
71'	1.29	2.57	5.55	8.52	11.50	14.57	17.45	20.42	23.40	26.37
73'	1.31	3.02	6.05	9.07	12.10	15.12	18.15	21.17	24.20	27.22
75'	1.34	3.07	6.15	9.22	12.30	15.37	18.45	21.52	25.00	28.07
77'	1.36	3.12	6.25	9.37	12.50	16.02	19.15	22.27	25.40	28.52
79'	1.39	3.17	6.35	9.52	13.10	16.27	19.45	23.02	26.20	29.37
81'	1.41	3.22	6.45	10.07	13.30	16.52	20.15	23.37	27.00	30.22
83'	1.44	3.27	6.55	10.22	13.50	17.17	20.45	24.12	27.40	31.07
85'	1.46	3.32	7.05	10.37	14.10	17.42	21.15	24.47	28.20	31.52
87'	1.49	3.37	7.15	10.52	14.30	18.07	21.45	25.22	29.00	32.37
89'	1.51	3.42	7.25	11.07	14.50	18.32	22.15	25.57	29.40	33.22
90'	1.52	3.45	7.30	11.15	15.00	18.45	22.30	26.15	30.00	33.45
92'	1.55	3.50	7.40	11.30	15.20	19.10	23.00	26.50	30.40	34.30
94'	1.57	3.55	7.50	11.45	15.40	19.35	23.30	27.25	31.20	35.15
96'	2.00	4.00	8.00	12.00	16.00	20.00	24.00	28.00	32.00	36.00
98'	2.02	4.05	8.10	12.15	16.20	20.25	24.30	28.35	32.40	36.45
99'	2.04	4.07	8.15	12.22	16.30	20.37	24.45	28.52	33.00	37.07
100'	2.05	4.10	8.20	12.30	16.40	20.50	25.00	29.10	33.20	37.30
102'	2.07	4.15	8.30	12.45	17.00	21.15	25.30	29.45	34.00	38.15
104'	2.10	4.20	8.40	13.00	17.20	21.30	26.00	30.20	34.40	39.00
106'	2.12	4.25	8.50	13.15	17.40	22.05	26.30	30.55	35.20	39.45
108'	2.15	4.30	9.00	13.30	18.00	22.30	27.00	31.30	36.00	40.30
110'	2.17	4.35	9.10	13.45	18.20	22.55	27.30	32.05	36.40	41.15
112'	2.20	4.40	9.20	14.00	18.40	23.20	28.00	32.40	37.20	42.00
114'	2.22	4.45	9.30	14.15	19.00	23.45	28.30	33.15	38.00	42.45
116'	2.25	4.50	9.40	14.30	19.20	24.10	29.00	33.50	38.40	43.30
118'	2.27	4.55	9.50	14.45	19.40	24.35	29.30	34.25	39.20	44.15

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट प्रातः 5 घंटे 30 मिंट बजे (भा. स्टैं. टा.) वि. संवत् 2073 (सन् 2016-17 ई.)

नोट–अपने अभीष्टकाल के अनुसार ग्रह स्पष्ट करने के लिए गत पृष्ठ पर दी गई सारिणी देखें। *(1 अप्रै. से 4 मई तक)* 1 अप्रैल, 2016 ई० को अयनांश = 24°/05′/00″

ता. अप्रै.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	तारीख
1	12 39 08	11 17 36 40	8 21 55 12	7 13 15 50	11 26 7 19	4 21 20 41	11 0 6 31	7 22 17 10	4 26 42 19	4 27 31 57	+04 37	-17 43	1
2	12 43 5	11 18 35 52	9 5 1 16	7 13 26 25	11 28 8 36	4 21 14 23	11 1 20 40	7 22 16 28	4 26 39 8	4 27 32 36	5 1	-16 14	2
3	12 47 2	11 19 35 03	9 18 32 20	7 13 36 25	0 0 8 47	4 21 8 12	11 2 34 48	7 22 15 40	4 26 35 58	4 27 33 49	5 24	-13 50	3
4	12 50 58	11 20 34 11	10 2 30 4	7 13 45 49	0 2 7 29	4 21 2 8	11 3 48 56	7 22 14 46	4 26 32 47	4 27 35 10	5 46	-10 33	4
5	12 54 55	11 21 33 18	10 16 54 9	7 13 54 37	0 4 4 22	4 20 56 13	11 5 3 3	7 22 13 46	4 26 29 36	4 27 36 9	6 9	-6 32	5
6	12 58 51	11 22 32 23	11 1 41 31	7 14 2 47	0 5 59 2	4 20 50 25	11 6 17 10	7 22 12 41	4 26 26 25	4 27 36 19	6 32	-2 01	6
7	13 2 48	11 23 31 26	11 16 46 16	7 14 10 19	0 7 51 6	4 20 44 45	11 7 31 16	7 22 11 29	4 26 23 15	4 27 35 18	6 55	+2 42	7
8	13 6 44	11 24 30 27	0 1 59 49	7 14 17 13	0 9 40 13	4 20 39 14	11 8 45 23	7 22 10 12	4 26 20 4	4 27 33 3	7 17	7 18	8
9	13 10 41	11 25 29 25	0 17 12 12	7 14 23 28	0 11 26 2	4 20 33 52	11 9 59 28	7 22 8 49	4 26 16 53	4 27 29 44	7 39	11 25	9
10	13 14 38	11 26 28 22	1 2 13 26	7 14 29 3	0 13 8 11	4 20 28 39	11 11 13 33	7 22 7 21	4 26 13 42	4 27 25 47	8 2	14 43	10
11	13 18 34	11 27 27 17	1 16 55 11	7 14 33 58	0 14 46 23	4 20 23 34	11 12 27 37	7 22 5 46	4 26 10 32	4 27 21 50	8 24	17 0	11
12	13 22 31	11 28 26 9	2 1 11 52	7 14 38 13	0 16 20 20	4 20 18 39	11 13 41 41	7 22 4 7	4 26 7 21	4 27 18 29	8 46	18 9	12
13	13 26 27	11 29 24 59	2 15 1 2	7 14 41 45	0 17 49 46	4 20 13 53	11 14 55 43	7 22 2 21	4 26 4 10	4 27 16 13	9 8	18 10	13
14	13 30 24	0 0 23 47	2 28 22 55	7 14 44 37	0 19 14 30	4 20 9 17	11 16 9 45	7 22 0 30	4 26 1 0	4 27 15 19	9 29	17 9	14
15	13 34 20	0 1 22 32	3 11 19 53	7 14 46 46	0 20 34 17	4 20 4 50	11 17 23 47	7 21 58 34	4 25 57 49	4 27 15 43	9 51	15 16	15
16	13 38 17	0 2 21 15	3 23 55 34	7 14 48 13	0 21 48 59	4 20 0 34	11 18 37 48	7 21 56 33	4 25 54 38	4 27 17 3	10 12	12 42	16
17	13 42 13	0 3 19 56	4 6 14 10	7 14 48 56	0 22 58 25	4 19 56 27	11 19 51 49	7 21 54 26	4 25 51 28	4 27 18 44	10 33	9 36	17
18	13 46 10	0 4 18 35	4 18 19 55	7 14 48 56	0 24 2 28	4 19 52 30	11 21 5 49	7 21 52 14	4 25 48 17	4 27 20 4	10 54	6 9	18
19	13 50 7	0 5 17 12	5 0 16 49	7 14 48 13	0 25 1 1	4 19 48 43	11 22 19 48	7 21 49 57	4 25 45 6	4 27 20 23	11 15	+2 29	19
20	13 54 3	0 6 15 46	5 12 8 20	7 14 46 45	0 25 53 56	4 19 45 6	11 23 33 47	7 21 47 35	4 25 41 56	4 27 19 7	11 36	-1 15	20
21	13 58 0	0 7 14 19	5 23 57 26	7 14 44 33	0 26 41 10	4 19 41 40	11 24 47 45	7 21 45 9	4 25 38 45	4 27 15 58	11 56	-4 55	21
22	14 1 56	0 8 12 49	6 5 46 33	7 14 41 36	0 27 22 40	4 19 38 24	11 26 1 43	7 21 42 37	4 25 35 34	4 27 10 52	12 16	-8 24	22
23	14 5 53	0 9 11 18	6 17 37 42	7 14 37 53	0 27 58 22	4 19 35 19	11 27 15 41	7 21 40 0	4 25 32 24	4 27 4 5	12 36	-11 33	23
24	14 9 49	0 10 9 44	6 29 32 39	7 14 33 24	0 28 28 15	4 19 32 24	11 28 29 38	7 21 37 19	4 25 29 13	4 26 56 9	12 56	-14 15	24
25	14 13 46	0 11 8 10	7 11 33 4	7 14 28 10	0 28 52 15	4 19 29 39	11 29 43 33	7 21 34 31	4 25 26 2	4 26 47 8	13 16	-16 21	25
26	14 17 42	0 12 6 33	7 23 40 50	7 14 22 10	0 29 10 28	4 19 27 6	0 0 57 29	7 21 31 41	4 25 22 52	4 26 39 51	13 35	-17 46	26
27	14 21 39	0 13 4 54	8 5 58 2	7 14 15 25	0 29 22 55	4 19 24 43	0 2 11 25	7 21 28 45	4 25 19 41	4 26 33 4	13 54	-18 22	27
28	14 25 36	0 14 3 14	8 18 27 13	7 14 7 54	0 29 29 40	4 19 22 31	0 3 25 21	7 21 25 46	4 25 16 30	4 26 28 5	14 13	-18 6	28
29	14 29 32	0 15 1 33	9 1 11 17	7 13 59 37	0 29 30 53	4 19 20 29	0 4 39 16	7 21 22 42	4 25 13 20	4 26 25 9	14 32	-16 55	29
30	14 33 29	0 15 59 50	9 14 13 21	7 13 50 34	0 29 26 43	4 19 18 39	0 5 53 11	7 21 19 32	4 25 10 9	4 26 24 9	14 50	-14 51	30
मई	14 37 25	0 16 58 5	9 27 36 31	7 13 40 46	0 29 17 24	4 19 16 59	0 7 7 5	7 21 16 20	4 25 6 58	4 26 24 35	15 08	-11 55	मई
2	14 41 22	0 17 56 19	10 11 23 15	7 13 30 12	0 29 3 12	4 19 15 30	0 8 20 59	7 21 13 2	4 25 3 47	4 26 25 32	15 26	-8 16	2
3	14 45 18	0 18 54 31	10 25 34 45	7 13 18 54	0 28 44 30	4 19 14 12	0 9 34 53	7 21 9 41	4 25 0 37	4 26 26 2	15 44	-4 01	3
4	14 49 15	0 19 52 42	11 10 10 6	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	4

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (5 मई से 10 जून 2016 ई. तक)

1 मई, 2016 ई० को अयनांश = 24°/05'/02''   1 जून 2016 ई. को अयनांश 24°/05'/06''

ता. मई	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	ता.
5	14 53 11	0 20 50 52	11 25 5 37	7 12 54 7	0 27 55 6	4 19 12 9	0 12 2 39	7 21 2 47	4 24 54 15	4 26 22 7	+16 19	+5 14	5
6	14 57 8	0 21 49 0	0 10 14 32	7 12 40 41	0 27 25 23	4 19 11 25	0 13 16 32	7 20 59 15	4 24 51 4	4 26 16 52	16 36	9 37	6
7	15 1 5	0 22 47 6	0 25 27 35	7 12 26 33	0 26 53 4	4 19 10 51	0 14 30 25	7 20 55 39	4 24 47 54	4 26 9 40	+16 52	13 24	7
8	15 5 1	0 23 45 11	1 10 34 13	7 12 11 46	0 26 18 44	4 19 10 29	0 15 44 17	7 20 52 0	4 24 44 43	4 26 1 14	17 9	16 14	8
9	15 8 58	0 24 43 14	1 25 24 30	7 11 56 21	0 25 43 0	4 19 10 18	0 16 58 8	7 20 48 17	4 24 41 32	4 25 52 34	17 25	17 57	9
10	15 12 54	0 25 41 15	2 9 50 46	7 11 40 19	0 25 6 31	4 19 10 17	0 18 11 59	7 20 44 30	4 24 38 22	4 25 44 45	17 41	18 27	10
11	15 16 51	0 26 39 14	2 23 48 35	7 11 23 43	0 24 29 56	4 19 10 27	0 19 25 49	7 20 40 41	4 24 35 11	4 25 38 36	17 56	17 47	11
12	15 20 47	0 27 37 12	3 7 16 52	7 11 6 33	0 23 53 54	4 19 10 49	0 20 39 39	7 20 36 49	4 24 32 0	4 25 34 35	18 11	16 08	12
13	15 24 44	0 28 35 8	3 20 17 20	7 10 48 53	0 23 19 1	4 19 11 22	0 21 53 29	7 20 32 54	4 24 28 49	4 25 32 40	18 26	13 42	13
14	15 28 40	0 29 33 2	4 2 53 37	7 10 30 42	0 22 45 53	4 19 12 6	0 23 7 17	7 20 28 56	4 24 25 39	4 25 32 23	18 41	10 40	14
15	15 32 37	1 0 30 54	4 15 10 28	7 10 12 5	0 22 15 2	4 19 13 0	0 24 21 6	7 20 24 55	4 24 22 28	4 25 32 55	18 55	7 15	15
16	15 36 34	1 1 28 44	4 27 13 3	7 9 53 2	0 21 46 56	4 19 14 6	0 25 34 54	7 20 20 52	4 24 19 17	4 25 33 12	19 9	+3 35	16
17	15 40 30	1 2 26 33	5 9 5 25	7 9 33 37	0 21 22 2	4 19 15 22	0 26 48 41	7 20 16 47	4 24 16 6	4 25 32 14	19 22	-0 10	17
18	15 44 27	1 3 24 20	5 20 55 10	7 9 13 51	0 21 0 40	4 19 16 49	0 28 2 28	7 20 12 39	4 24 12 56	4 25 29 14	19 36	-3 54	18
19	15 48 23	1 4 22 5	6 2 43 16	7 8 53 46	0 20 43 9	4 19 18 25	0 29 16 13	7 20 8 28	4 24 9 45	4 25 23 40	19 49	-7 28	19
20	15 52 20	1 5 19 49	6 14 33 57	7 8 33 25	0 20 29 45	4 19 20 14	1 0 29 59	7 20 4 16	4 24 6 34	4 25 15 27	20 1	-10 45	20
21	15 56 16	1 6 17 32	6 26 29 40	7 8 12 51	0 20 20 36	4 19 22 12	1 1 43 45	7 20 0 2	4 24 3 23	4 25 4 53	20 14	-13 38	21
22	16 0 13	1 7 15 13	7 8 32 12	7 7 52 5	0 20 15 53	4 19 24 21	1 2 57 31	7 19 55 47	4 23 0 13	4 24 52 38	20 25	-15 57	22
23	16 4 9	1 8 12 52	7 20 42 46	7 7 31 11	0 20 15 38	4 19 26 41	1 4 11 16	7 19 51 30	4 23 57 2	4 24 39 42	20 37	-17 35	23
24	16 8 6	1 9 10 31	8 3 2 17	7 7 10 11	0 20 19 54	4 19 29 11	1 5 25 1	7 19 47 11	4 23 53 51	4 24 27 14	20 48	-18 26	24
25	16 12 3	1 10 8 8	8 15 31 35	7 6 49 7	0 20 28 41	4 19 31 50	1 6 38 45	7 19 42 50	4 23 50 40	4 24 16 17	20 59	-18 25	25
26	16 15 59	1 11 5 45	8 28 11 44	7 6 28 3	0 20 42 1	4 19 34 41	1 7 52 30	7 19 38 29	4 23 47 30	4 24 7 43	21 9	-17 28	26
27	16 19 56	1 12 3 20	9 11 4 5	7 6 7 0	0 20 59 47	4 19 37 41	1 9 6 15	7 19 34 7	4 23 44 19	4 24 1 58	21 20	-15 38	27
28	16 23 52	1 13 0 54	9 24 10 29	7 5 46 2	0 21 21 56	4 19 40 53	1 10 19 59	7 19 29 43	4 23 41 8	4 23 58 55	21 29	-12 58	28
29	16 27 49	1 13 58 28	10 7 33 0	7 5 25 11	0 21 48 22	4 19 44 14	1 11 33 44	7 19 25 19	4 23 37 57	4 23 57 58	21 39	-09 33	29
30	16 31 45	1 14 56 1	10 21 13 44	7 5 4 30	0 22 19 3	4 19 47 44	1 12 47 29	7 19 20 53	4 23 34 47	4 23 58 1	21 48	-05 34	30
31	16 35 42	1 15 53 32	11 5 14 8	7 4 44 1	0 22 53 48	4 19 51 25	1 14 1 13	7 19 16 27	4 23 31 36	4 23 57 47	21 56	-01 11	31
जून	16 39 38	1 16 51 4	11 19 34 22	7 4 23 48	0 23 32 35	4 19 55 15	1 15 14 57	7 19 12 1	4 23 28 25	4 23 56 4	22 5	+03 22	जून
2	16 43 35	1 17 48 34	0 4 12 30	7 4 3 53	0 24 15 48	4 19 59 14	1 16 28 41	7 19 7 33	4 23 25 14	4 23 51 59	22 13	07 49	2
3	16 47 32	1 18 46 4	0 19 4 2	7 3 44 18	0 25 1 44	4 20 3 24	1 17 42 26	7 19 3 6	4 23 22 4	4 23 45 14	22 20	11 50	3
4	16 51 28	1 19 43 32	1 4 1 53	7 3 25 7	0 25 51 55	4 20 7 43	1 18 56 10	7 18 58 40	4 23 18 53	4 23 36 5	22 27	15 08	4
5	16 55 25	1 20 41 0	1 18 57 13	7 3 6 22	0 26 45 44	4 20 12 13	1 20 9 54	7 18 54 13	4 23 15 42	4 23 25 22	22 34	17 24	5
6	16 59 21	1 21 38 27	2 3 40 45	7 2 48 6	0 27 43 4	4 20 16 51	1 21 23 38	7 18 49 46	4 23 12 31	4 23 14 14	22 40	18 29	6
7	17 3 18	1 22 35 53	2 18 4 30	7 2 30 20	0 28 43 48	4 20 21 38	1 22 37 30	7 18 45 19	4 23 9 21	4 23 3 55	22 46	18 21	7
8	17 7 14	1 23 33 18	3 2 2 58	7 2 13 7	0 29 47 57	4 20 26 35	1 23 51 7	7 18 40 53	4 23 6 10	4 22 55 27	22 52	17 05	8
9	17 11 11	1 24 30 42	3 15 33 42	7 1 56 30	1 0 55 23	4 20 31 42	1 25 4 51	7 18 36 28	4 23 2 59	4 22 49 24	22 57	14 53	9
10	17 15 7	1 25 28 5	3 28 37 10	7 1 40 29	1 2 6 3	4 20 36 57	1 26 18 34	7 18 32 4	4 22 59 48	4 22 45 51	23 01	11 59	10

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(11 जून से 17 जुला. 2016 ई. तक)*

1 जुला. 2016 ई. को अयनांश 24°/05′/11″

ता. जून	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	ता.
11	17 19 4	1 26 25 27	4 11 16 8	7 1 25 8	1 3 19 55	4 20 42 21	1 27 32 17	7 18 27 41	4 22 56 38	4 22 44 20	+23 6	+08 37	11
12	17 23 1	1 27 22 47	4 23 34 52	7 1 10 26	1 4 36 55	4 20 47 55	1 28 46 0	7 18 23 18	4 22 53 27	4 22 44 1	+23 10	04 57	12
13	17 26 57	1 28 20 7	5 5 38 32	7 0 56 27	1 5 57 1	4 20 53 36	1 29 59 43	7 18 18 56	4 22 50 16	4 22 43 48	23 13	+01 09	13
14	17 30 54	1 29 17 26	5 17 32 30	7 0 43 10	1 7 20 12	4 20 59 26	2 1 13 26	7 18 14 36	4 22 47 5	4 22 42 40	23 16	-02 38	14
15	17 34 50	2 0 14 44	5 29 21 58	7 0 30 38	1 8 46 26	4 21 5 25	2 2 27 8	7 18 10 18	4 22 43 55	4 22 39 41	23 19	-06 18	15
16	17 38 47	2 1 12 1	6 11 11 45	7 0 18 51	1 10 15 41	4 21 11 33	2 3 40 51	7 18 6 1	4 22 40 44	4 22 34 16	23 21	-09 43	16
17	17 42 43	2 2 9 18	6 23 5 53	7 0 7 51	1 11 47 56	4 21 17 49	2 4 54 33	7 18 1 46	4 22 37 33	4 22 26 15	23 23	-12 45	17
18	17 46 40	2 3 6 33	7 5 7 35	6 29 57 37	1 13 23 9	4 21 24 13	2 6 8 16	7 17 57 33	4 22 34 22	4 22 15 52	23 24	-15 18	18
19	17 50 36	2 4 3 48	7 17 19 8	6 29 48 10	1 15 1 19	4 21 30 46	2 7 21 58	7 17 53 22	4 22 31 12	4 22 3 47	23 25	-17 12	19
20	17 54 33	2 5 1 3	7 29 41 54	6 29 39 32	1 16 42 22	4 21 37 25	2 8 35 40	7 17 49 12	4 22 28 1	4 21 50 55	23 26	-18 20	20
21	17 58 30	2 5 58 17	8 12 16 30	6 29 31 42	1 18 26 20	4 21 44 14	2 9 49 22	7 17 45 5	4 22 24 50	4 21 38 27	23 26	-18 35	21
22	18 2 26	2 6 55 30	8 25 2 55	6 29 24 41	1 20 13 7	4 21 51 10	2 11 3 5	7 17 41 1	4 22 21 39	4 21 27 26	23 26	-17 55	22
23	18 6 23	2 7 52 43	9 8 0 52	6 29 18 30	1 22 2 40	4 21 58 14	2 12 16 47	7 17 36 59	4 22 18 28	4 21 18 46	23 25	-16 19	23
24	18 10 19	2 8 49 56	9 21 10 6	6 29 13 7	1 23 54 55	4 22 5 26	2 13 30 30	7 17 32 59	4 22 15 18	4 21 12 55	23 24	-13 50	24
25	18 14 16	2 9 47 9	10 4 30 41	6 29 8 35	1 25 49 45	4 22 12 44	2 14 44 12	7 17 29 1	4 22 12 7	4 21 9 49	23 23	-10 36	25
26	18 18 12	2 10 44 21	10 18 2 57	6 29 4 52	1 27 47 5	4 22 20 11	2 15 57 55	7 17 25 6	4 22 8 56	4 21 8 54	23 21	-06 45	26
27	18 22 9	2 11 41 34	11 1 47 33	6 29 1 59	1 29 46 46	4 22 27 45	2 17 11 38	7 17 21 15	4 22 5 45	4 21 9 12	23 19	-02 30	27
28	18 26 5	2 12 38 47	11 15 44 59	6 28 59 55	2 1 48 37	4 22 35 27	2 18 25 21	7 17 17 26	4 22 2 35	4 21 9 25	23 16	+01 57	28
29	18 30 2	2 13 36 0	11 29 55 12	6 28 58 42	2 3 52 26	4 22 43 16	2 19 39 5	7 17 13 41	4 21 59 24	4 21 8 27	23 13	06 21	29
30	18 33 59	2 14 33 13	0 14 16 58	6 28 58 18	2 5 58 00	4 22 51 12	2 20 52 48	7 17 9 59	4 21 56 13	4 21 5 27	23 9	10 27	30
जुला	18 37 55	2 15 30 26	0 28 47 23	6 28 58 43	2 8 5 4	4 22 59 15	2 22 6 33	7 17 6 20	4 21 53 2	4 21 0 2	23 5	13 57	जुला
2	18 41 52	2 16 27 39	1 13 21 44	6 28 59 58	2 10 13 22	4 23 7 25	2 23 20 17	7 17 2 44	4 21 49 52	4 20 52 26	23 1	16 36	2
3	18 45 48	2 17 24 52	1 27 53 54	6 29 2 2	2 12 22 37	4 23 15 42	2 24 34 1	7 16 59 12	4 21 46 41	4 20 43 22	22 56	18 11	3
4	18 49 45	2 18 22 5	2 12 17 3	6 29 4 55	2 14 32 33	4 23 24 6	2 25 47 45	7 16 55 44	4 21 43 30	4 20 33 50	22 51	18 35	4
5	18 53 41	2 19 19 19	2 26 24 47	6 29 8 37	2 16 42 52	4 23 32 37	2 27 1 30	7 16 52 19	4 21 40 20	4 20 24 57	22 46	17 49	5
6	18 57 38	2 20 16 32	3 10 12 14	6 29 13 7	2 18 53 16	4 23 41 14	2 28 15 15	7 16 48 59	4 21 37 9	4 20 17 40	22 40	16 00	6
7	19 1 34	2 21 13 45	3 23 36 32	6 29 18 24	2 21 3 27	4 23 49 57	2 29 28 59	7 16 45 41	4 21 33 58	4 20 12 32	22 33	13 21	7
8	19 5 31	2 22 10 59	4 6 37 14	6 29 24 29	2 23 13 13	4 23 58 48	3 0 42 44	7 16 42 29	4 21 30 47	4 20 9 40	22 27	10 06	8
9	19 9 27	2 23 8 12	4 19 15 50	6 29 31 21	2 25 22 17	4 24 7 45	3 1 56 29	7 16 39 21	4 21 27 37	4 20 8 45	22 20	06 28	9
10	19 13 24	2 24 5 25	5 1 35 36	6 29 38 58	2 27 30 28	4 24 16 48	3 3 10 14	7 16 36 16	4 21 24 26	4 20 9 10	22 12	+02 39	10
11	19 17 21	2 25 2 38	5 13 40 48	6 29 47 21	2 29 37 34	4 24 25 57	3 4 23 59	7 16 33 16	4 21 21 15	4 20 9 59	22 4	-01 12	11
12	19 21 17	2 25 59 50	5 25 36 26	6 29 56 28	3 1 43 25	4 24 35 12	3 5 37 43	7 16 30 20	4 21 18 4	4 20 10 21	21 56	-04 57	12
13	19 25 14	2 26 57 3	6 7 27 38	7 0 6 20	3 3 47 53	4 24 44 33	3 6 51 28	7 16 27 29	4 21 14 54	4 20 9 30	21 47	-08 28	13
14	19 29 10	2 27 54 16	6 19 19 30	7 0 16 54	3 5 50 52	4 24 54 0	3 8 5 12	7 16 24 43	4 21 11 43	4 20 6 57	21 38	-11 39	14
15	19 33 7	2 28 51 29	7 1 16 43	7 0 28 11	3 7 52 16	4 25 3 32	3 9 18 56	7 16 22 1	4 21 8 32	4 20 2 27	21 29	-14 23	15
16	19 37 3	2 29 48 42	7 13 23 16	7 0 40 9	3 9 52 0	4 25 13 10	3 10 32 40	7 16 19 23	4 21 5 21	4 19 56 9	21 19	-16 32	16
17	19 41 0	3 0 45 55	7 25 42 19	7 [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट

(18 जुला. से 23 अग. 2016 ई. तक)

1 अगस्त, 2016 ई. को अयनांश 24°/05'/16"

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	जुलाई
जुला	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
18	19 44 57	3 1 43 9	8 8 16 0	7 1 6 7	3 13 46 21	4 25 32 43	3 13 0 8	7 16 14 25	4 20 59 0	4 19 40 8	+20 59	-18 34	18
19	19 48 53	3 2 40 22	8 21 5 17	7 1 20 6	3 15 40 54	4 25 42 38	3 14 13 52	7 16 12 2	4 20 55 49	4 19 31 57	20 48	-18 14	19
20	19 52 50	3 3 37 36	9 4 10 4	7 1 34 43	3 17 33 41	4 25 52 38	3 15 27 36	7 16 9 45	4 20 52 38	4 19 24 44	20 37	-16 56	20
21	19 56 46	3 4 34 51	9 17 29 21	7 1 49 57	3 19 24 39	4 26 2 43	3 16 41 19	7 16 7 31	4 20 49 28	4 19 19 11	20 25	-14 42	21
22	20 0 43	3 5 32 6	10 1 1 31	7 2 5 48	3 21 13 50	4 26 12 53	3 17 55 3	7 16 5 23	4 20 46 17	4 19 15 40	20 14	-11 37	22
23	20 4 39	3 6 29 22	10 14 44 37	7 2 22 17	3 23 1 14	4 26 23 9	3 19 8 47	7 16 3 21	4 20 43 6	4 19 14 12	20 1	-07 53	23
24	20 8 36	3 7 26 39	10 28 36 48	7 2 39 21	3 24 46 52	4 26 33 29	3 20 22 31	7 16 1 24	4 20 39 55	4 19 14 23	19 49	-03 40	24
25	20 12 32	3 8 23 56	11 12 36 22	7 2 57 0	3 26 30 42	4 26 43 54	3 21 36 15	7 15 59 31	4 20 36 45	4 19 15 30	19 36	+00 46	25
26	20 16 29	3 9 21 15	11 26 41 54	7 3 15 13	3 28 12 47	4 26 54 24	3 22 49 59	7 15 57 44	4 20 33 34	4 19 16 44	19 23	05 11	26
27	20 20 26	3 10 18 34	0 10 51 55	7 3 34 0	3 29 53 5	4 27 4 59	3 24 3 43	7 15 56 3	4 20 30 23	4 19 17 15	19 9	09 20	27
28	20 24 22	3 11 15 55	0 25 4 47	7 3 53 21	4 1 31 38	4 27 15 38	3 25 17 27	7 15 54 27	4 20 27 12	4 19 16 25	18 56	12 57	28
29	20 28 19	3 12 13 16	1 9 18 16	7 4 13 14	4 3 8 25	4 27 26 22	3 26 31 11	7 15 52 56	4 20 24 2	4 19 14 2	18 42	15 49	29
30	20 32 15	3 13 10 39	1 23 29 32	7 4 33 39	4 4 43 27	4 27 37 10	3 27 44 55	7 15 51 30	4 20 20 51	4 19 10 12	18 27	17 42	30
31	20 36 12	3 14 8 2	2 7 35 5	7 4 54 37	4 6 16 44	4 27 48 4	3 28 58 39	7 15 50 10	4 20 17 40	4 19 5 22	18 12	18 30	31
अग.	20 40 8	3 15 5 27	2 21 31 11	7 5 16 6	4 7 48 16	4 27 59 1	4 0 12 23	7 15 48 56	4 20 14 29	4 19 0 11	17 57	18 10	अग
2	20 44 5	3 16 2 52	3 5 14 12	7 5 38 6	4 9 18 1	4 28 10 3	4 1 26 8	7 15 47 47	4 20 11 19	4 18 55 23	17 42	16 46	2
3	20 48 1	3 17 0 19	3 18 41 8	7 6 0 35	4 10 45 59	4 28 21 9	4 2 39 52	7 15 46 44	4 20 8 8	4 18 51 34	17 26	14 28	3
4	20 51 58	3 17 57 46	4 1 50 6	7 6 23 34	4 12 12 8	4 28 32 18	4 3 53 35	7 15 45 46	4 20 4 57	4 18 49 6	17 11	11 26	4
5	20 55 54	3 18 55 15	4 14 40 31	7 6 47 2	4 13 36 27	4 28 43 32	4 5 7 19	7 15 44 54	4 20 1 46	4 18 48 6	16 54	07 56	5
6	20 59 51	3 19 52 44	4 27 13 11	7 7 10 59	4 14 58 55	4 28 54 50	4 6 21 3	7 15 44 8	4 19 58 36	4 18 48 24	16 38	04 09	6
7	21 3 48	3 20 50 14	5 9 30 12	7 7 35 25	4 16 19 30	4 29 6 12	4 7 34 46	7 15 43 28	4 19 55 25	4 18 49 34	16 21	+00 17	7
8	21 7 44	3 21 47 45	5 21 34 43	7 8 0 17	4 17 38 8	4 29 17 38	4 8 48 29	7 15 42 54	4 19 52 14	4 18 51 11	16 4	-03 33	8
9	21 11 41	3 22 45 16	6 3 30 40	7 8 25 36	4 18 54 48	4 29 29 7	4 10 2 11	7 15 42 25	4 19 49 3	4 18 52 42	15 47	-07 10	9
10	21 15 37	3 23 42 49	6 15 22 33	7 8 51 22	4 20 9 25	4 29 40 40	4 11 15 54	7 15 42 2	4 19 45 53	4 18 53 42	15 30	-10 29	10
11	21 19 34	3 24 40 22	6 27 15 8	7 9 17 32	4 21 21 55	4 29 52 16	4 12 29 35	7 15 41 45	4 19 42 42	4 18 53 52	15 12	-13 23	11
12	21 23 30	3 25 37 57	7 9 13 13	7 9 44 8	4 22 32 16	5 0 3 56	4 13 43 17	7 15 41 34	4 19 39 31	4 18 53 2	14 54	-15 44	12
13	21 27 27	3 26 35 32	7 21 21 22	7 10 11 8	4 23 40 20	5 0 15 40	4 14 56 58	7 15 41 29	4 19 36 20	4 18 51 19	14 36	-17 26	13
14	21 31 24	3 27 33 8	8 3 43 36	7 10 38 32	4 24 46 4	5 0 27 26	4 16 10 38	7 15 41 29	4 19 33 10	4 18 48 51	14 17	-18 21	14
15	21 35 20	3 28 30 45	8 16 23 9	7 11 6 18	4 25 49 21	5 0 39 15	4 17 24 17	7 15 41 35	4 19 29 59	4 18 46 0	13 59	-18 23	15
16	21 39 17	3 29 28 23	8 29 22 6	7 11 34 28	4 26 50 5	5 0 51 7	4 18 37 56	7 15 41 47	4 19 26 48	4 18 43 9	13 40	-17 28	16
17	21 43 13	4 0 26 2	9 12 41 11	7 12 3 1	4 27 48 8	5 1 3 3	4 19 51 35	7 15 42 5	4 19 23 37	4 18 40 41	13 21	-15 35	17
18	21 47 10	4 1 23 43	9 26 19 37	7 12 31 55	4 28 43 22	5 1 15 2	4 21 5 13	7 15 42 28	4 19 20 27	4 18 38 54	13 1	-12 47	18
19	21 51 6	4 2 21 25	10 10 15 12	7 13 1 10	4 29 35 38	5 1 27 3	4 22 18 51	7 15 42 58	4 19 17 16	4 18 37 58	12 42	-09 12	19
20	21 55 3	4 3 19 8	10 24 24 30	7 13 30 46	5 0 24 47	5 1 39 8	4 23 32 28	7 15 43 33	4 19 14 5	4 18 37 51	12 22	-05 02	20
21	21 58 59	4 4 16 52	11 8 43 16	7 14 0 43	5 1 10 37	5 1 51 15	4 24 46 5	7 15 44 14	4 19 10 54	4 18 38 24	12 02	-00 33	21
22	22 2 56	4 5 14 39	11 23 6 58	7 14 30 59	5 1 52 58	5 2 3 24	4 25 59 41	7 15 45 1	4 19 7 43	4 18 39 16	11 42	+ 3 59	22
23	22 6 53	4 6 12 27	0 7 31 14	7 15 1 36	5 2 31 37	5 2 15 37	4 27 13 17	7 15 45 53	4 19 4 33	4 18 40 11	+11 22	+ 8 18	23

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(24 अग. से 29 सितं. 2016 ई. तक)*

1 सितम्बर, 2016 ई. को अयनांश 24°/05′/20″

ता. अग.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	अगस्त
24	22 10 49	4 7 10 16	0 21 52 11	7 15 32 32	5 3 6 20	5 2 27 52	4 28 26 52	7 15 46 52	4 19 1 22	4 18 40 50	+11 1	+12 06	24
25	22 14 46	4 8 8 8	1 6 6 46	7 16 3 47	5 3 36 54	5 2 40 9	4 29 40 27	7 15 47 56	4 18 58 11	4 18 41 3	10 41	15 09	25
26	22 18 42	4 9 6 1	1 20 12 32	7 16 35 20	5 4 3 3	5 2 52 28	5 0 54 1	7 15 49 5	4 18 55 0	4 18 40 49	10 20	17 16	26
27	22 22 39	4 10 3 56	2 4 7 41	7 17 7 12	5 4 24 33	5 3 4 51	5 2 7 35	7 15 50 21	4 18 51 50	4 18 40 11	9 59	18 20	27
28	22 26 35	4 11 1 53	2 17 50 56	7 17 39 23	5 4 41 9	5 3 17 15	5 3 21 9	7 15 51 43	4 18 48 39	4 18 39 22	9 38	18 18	28
29	22 30 32	4 11 59 52	3 1 21 20	7 18 11 52	5 4 52 32	5 3 29 42	5 4 34 43	7 15 53 11	4 18 45 28	4 18 38 33	9 17	17 14	29
30	22 34 28	4 12 57 52	3 14 38 10	7 18 44 38	5 4 58 29	5 3 42 11	5 5 48 16	7 15 54 43	4 18 42 17	4 18 37 52	8 55	15 13	30
31	22 38 25	4 13 55 54	3 27 41 0	7 19 17 42	5 4 58 44	5 3 54 43	5 7 1 48	7 15 56 22	4 18 39 6	4 18 37 26	8 34	12 27	31
सितं	22 42 21	4 14 53 58	4 10 29 43	7 19 51 4	5 4 53 3	5 4 7 16	5 8 15 20	7 15 58 6	4 18 35 56	4 18 37 16	8 12	09 08	सितं
2	22 46 18	4 15 52 4	4 23 4 38	7 20 24 42	5 4 41 15	5 4 19 50	5 9 28 52	7 15 59 56	4 18 32 45	4 18 37 19	7 50	05 27	2
3	22 50 15	4 16 50 11	5 5 26 34	7 20 58 36	5 4 23 13	5 4 32 27	5 10 42 22	7 16 1 52	4 18 29 34	4 18 37 27	7 28	+01 36	3
4	22 54 11	4 17 48 20	5 17 36 59	7 21 32 48	5 3 58 54	5 4 45 6	5 11 55 52	7 16 3 53	4 18 26 23	4 18 37 35	7 06	-02 16	4
5	22 58 8	4 18 46 30	5 29 38 1	7 22 7 14	5 3 28 19	5 4 57 46	5 13 9 21	7 16 6 0	4 18 23 12	4 18 37 37	6 44	-05 58	5
6	23 2 4	4 19 44 42	6 11 32 24	7 22 41 55	5 2 51 38	5 5 10 26	5 14 22 49	7 16 8 11	4 18 20 2	4 18 37 30	6 21	-09 25	6
7	23 6 1	4 20 42 55	6 23 23 33	7 23 16 52	5 2 9 10	5 5 23 10	5 15 36 17	7 16 10 29	4 18 16 51	4 18 37 15	5 59	-12 27	7
8	23 9 57	4 21 41 10	7 5 15 23	7 23 52 5	5 1 21 22	5 5 35 54	5 16 49 43	7 16 12 53	4 18 13 40	4 18 36 59	5 37	-14 59	8
9	23 13 54	4 22 39 27	7 17 12 13	7 24 27 31	5 0 28 52	5 5 48 40	5 18 3 9	7 16 15 22	4 18 10 29	4 18 36 46	5 14	-16 54	9
10	23 17 51	4 23 37 45	7 29 18 34	7 25 3 22	4 29 32 30	5 6 1 28	5 19 16 34	7 16 17 57	4 18 7 18	4 18 36 42	4 51	-18 05	10
11	23 21 47	4 24 36 6	8 11 38 59	7 25 39 7	4 28 33 17	5 6 14 16	5 20 29 58	7 16 20 36	4 18 4 8	4 18 36 54	4 28	-18 27	11
12	23 25 44	4 25 34 27	8 24 17 39	7 26 15 15	4 27 32 23	5 6 27 6	5 21 43 21	7 16 23 22	4 18 0 57	4 18 37 23	4 6	-17 55	12
13	23 29 40	4 26 32 49	9 7 18 0	7 26 51 37	4 26 31 6	5 6 39 57	5 22 56 43	7 16 26 12	4 17 57 46	4 18 38 5	3 43	-16 26	13
14	23 33 37	4 27 31 14	9 20 42 20	7 27 28 11	4 25 30 51	5 6 52 48	5 24 10 4	7 16 29 8	4 17 54 35	4 18 38 53	3 20	-14 01	14
15	23 37 33	4 28 29 40	10 4 31 12	7 28 4 57	4 24 33 3	5 7 5 40	5 25 23 23	7 16 32 9	4 17 51 25	4 18 39 34	2 57	-10 45	15
16	23 41 30	4 29 28 7	10 18 43 9	7 28 41 57	4 23 39 11	5 7 18 33	5 26 36 42	7 16 35 15	4 17 48 14	4 18 39 55	2 33	-06 45	16
17	23 45 26	5 0 26 37	11 3 14 25	7 29 19 8	4 22 50 38	5 7 31 27	5 27 50 0	7 16 38 26	4 17 45 3	4 18 39 42	2 10	-02 17	17
18	23 49 23	5 1 25 8	11 17 59 13	7 29 56 32	4 22 8 35	5 7 44 22	5 29 3 16	7 16 41 42	4 17 41 52	4 18 38 53	1 47	+02 23	18
19	23 53 20	5 2 23 42	0 2 50 16	8 0 34 6	4 21 34 8	5 7 57 17	6 0 16 32	7 16 45 3	4 17 38 42	4 18 37 30	1 24	+06 56	19
20	23 57 16	5 3 22 17	0 17 39 50	8 1 11 53	4 21 8 12	5 8 10 14	6 1 29 46	7 16 48 30	4 17 35 31	4 18 35 46	1 01	11 03	20
21	0 1 13	5 4 20 55	1 2 20 51	8 1 49 51	4 20 51 25	5 8 23 10	6 2 43 0	7 16 52 1	4 17 32 20	4 18 34 0	0 37	14 26	21
22	0 5 9	5 5 19 35	1 16 47 44	8 2 28 0	4 20 44 15	5 8 36 8	6 3 56 13	7 16 55 37	4 17 29 9	4 18 32 34	+0 14	16 52	22
23	0 9 6	5 6 18 18	2 0 56 51	8 3 6 20	4 20 46 56	5 8 49 5	6 5 9 25	7 16 59 19	4 17 25 59	4 18 31 48	–0 9	18 12	23
24	0 13 2	5 7 17 2	2 14 46 37	8 3 44 51	4 20 59 32	5 9 2 3	6 6 22 37	7 17 3 5	4 17 22 48	4 18 31 52	–0 33	18 25	24
25	0 16 59	5 8 15 49	2 28 17 2	8 4 23 32	4 21 21 52	5 9 15 2	6 7 35 47	7 17 6 56	4 17 19 37	4 18 32 43	–0 56	17 35	25
26	0 20 55	5 9 14 38	3 11 29 18	8 5 2 24	4 21 53 41	5 9 28 0	6 8 48 57	7 17 10 51	4 17 16 26	4 18 34 8	–1 19	15 47	26
27	0 24 52	5 10 13 29	3 24 25 11	8 5 41 26	4 22 34 30	5 9 40 57	6 10 2 5	7 17 14 51	4 17 13 16	4 18 35 43	–1 19	13 13	27
28	0 28 48	5 11 12 23	4 7 6 49	8 6 20 39	4 23 23 52	5 9 53 56	6 11 15 12	7 17 18 56	4 17 10 5	4 18 36 58	–2 6	10 04	28
29	0 32 45	5 12 11 19	4 19 36 0	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (30 सितं. से 5 नवं. 2016 ई. तक) 1 अक्तू., 2016 ई. को अयनांश 24°/05′/22″ 1 नवं., 2016 ई. को अयनांश 24°/05′/24″

ता. सितं	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	तिथि
30	0 36 42	5 13 10 16	5 1 54 35	8 7 39 35	4 25 25 38	5 10 19 53	6 13 41 25	7 17 27 20	4 17 3 43	4 18 36 40	–2 53	+02 42	30
अक्तू	0 40 38	5 14 9 16	5 14 4 9	8 8 19 18	4 26 36 41	5 10 32 51	6 14 54 30	7 17 31 39	4 17 0 33	4 18 34 36	–3 16	-01 10	अक्तू
2	0 44 35	5 15 8 18	5 26 6 14	8 8 59 10	4 27 53 35	5 10 45 49	6 16 7 33	7 17 36 2	4 16 57 22	4 18 31 11	–3 39	-04 56	2
3	0 48 31	5 16 7 22	6 8 2 27	8 9 39 12	4 29 15 37	5 10 58 46	6 17 20 36	7 17 40 30	4 16 54 11	4 18 26 41	–4 3	-08 29	3
4	0 52 28	5 17 6 28	6 19 54 39	8 10 19 23	5 0 42 8	5 11 11 43	6 18 33 37	7 17 45 2	4 16 51 0	4 18 21 31	–4 26	-11 40	4
5	0 56 24	5 18 5 36	7 1 45 4	8 10 59 43	5 2 12 30	5 11 24 40	6 19 46 38	7 17 49 38	4 16 47 50	4 18 16 14	–4 49	-14 22	5
6	1 0 21	5 19 4 45	7 13 36 29	8 11 40 12	5 3 46 6	5 11 37 36	6 20 59 37	7 17 54 19	4 16 44 39	4 18 11 24	–5 12	-16 28	6
7	1 4 18	5 20 3 57	7 25 32 12	8 12 20 50	5 5 22 22	5 11 50 31	6 22 12 34	7 17 59 4	4 16 41 28	4 18 7 32	–5 35	-17 53	7
8	1 8 14	5 21 3 10	8 7 36 5	8 13 1 36	5 7 0 51	5 12 3 26	6 23 25 31	7 18 3 53	4 16 38 17	4 18 5 0	–5 58	-18 31	8
9	1 12 11	5 22 2 25	8 19 52 25	8 13 42 30	5 8 41 5	5 12 16 19	6 24 38 26	7 18 8 46	4 16 35 7	4 18 3 58	–6 21	-18 18	9
10	1 16 7	5 23 1 42	9 2 25 42	8 14 23 32	5 10 22 42	5 12 29 12	6 25 51 19	7 18 13 44	4 16 31 56	4 18 4 19	–6 43	-17 11	10
11	1 20 4	5 24 1 0	9 15 20 19	8 15 4 40	5 12 5 19	5 12 42 3	6 27 4 10	7 18 18 44	4 16 28 45	4 18 5 34	–7 6	-15 10	11
12	1 24 0	5 25 0 21	9 28 39 59	8 15 45 58	5 13 48 42	5 12 54 53	6 28 17 0	7 18 23 49	4 16 25 34	4 18 7 7	–7 29	-12 17	12
13	1 27 57	5 25 59 43	10 12 27 9	8 16 27 22	5 15 32 35	5 13 7 42	6 29 29 49	7 18 28 58	4 16 22 24	4 18 8 10	–7 51	-08 38	13
14	1 31 53	5 26 59 7	10 26 42 10	8 17 8 54	5 17 16 44	5 13 20 30	7 0 42 36	7 18 34 11	4 16 19 13	4 18 8 0	–8 13	-04 22	14
15	1 35 50	5 27 58 33	11 11 22 36	8 17 50 32	5 19 1 1	5 13 33 17	7 1 55 21	7 18 39 27	4 16 16 2	4 18 6 7	–8 36	+00 17	15
16	1 39 47	5 28 58 0	11 26 22 54	8 18 32 18	5 20 45 15	5 13 46 2	7 3 8 4	7 18 44 47	4 16 12 51	4 18 2 22	–8 58	+05 01	16
17	1 43 43	5 29 57 30	0 11 34 33	8 19 14 10	5 22 29 19	5 13 58 46	7 4 20 46	7 18 50 10	4 16 9 41	4 17 56 59	–9 20	09 29	17
18	1 47 40	6 0 57 2	0 26 47 17	8 19 56 8	5 24 13 9	5 14 11 29	7 5 33 26	7 18 55 38	4 16 6 30	4 17 50 35	–9 41	13 20	18
19	1 51 36	6 1 56 36	1 11 50 46	8 20 38 13	5 25 56 39	5 14 24 10	7 6 46 5	7 19 1 9	4 16 3 19	4 17 44 2	–10 3	16 15	19
20	1 55 33	6 2 56 12	1 26 36 16	8 21 20 24	5 27 39 46	5 14 36 49	7 7 58 42	7 19 6 43	4 16 0 8	4 17 38 16	–10 25	18 02	20
21	1 59 29	6 3 55 51	2 10 57 58	8 22 2 42	5 29 22 26	5 14 49 27	7 9 11 17	7 19 12 20	4 15 56 58	4 17 34 1	–10 46	18 37	21
22	2 3 26	6 4 55 31	2 24 53 13	8 22 45 5	6 1 4 37	5 15 2 2	7 10 23 50	7 19 18 11	4 15 53 47	4 17 31 40	–11 7	18 02	22
23	2 7 22	6 5 55 14	3 8 22 17	8 23 27 35	6 2 46 19	5 15 14 36	7 11 36 22	7 19 23 45	4 15 50 36	4 17 31 9	–11 28	16 26	23
24	2 11 19	6 6 55 0	3 21 27 23	8 24 10 11	6 4 27 30	5 15 27 8	7 12 48 53	7 19 29 32	4 15 47 25	4 17 32 0	–11 49	14 00	24
25	2 15 16	6 7 54 47	4 4 11 59	8 24 52 52	6 6 8 9	5 15 39 37	7 14 1 22	7 19 35 23	4 15 44 15	4 17 33 19	–12 10	10 57	25
26	2 19 12	6 8 54 37	4 16 39 57	8 25 35 40	6 7 48 17	5 15 52 5	7 15 13 49	7 19 41 17	4 15 41 4	4 17 34 6	–12 31	07 27	26
27	2 23 9	6 9 54 29	4 28 55 9	8 26 18 33	6 9 27 52	5 16 4 30	7 16 26 14	7 19 47 14	4 15 37 53	4 17 33 23	–12 51	+03 42	27
28	2 27 5	6 10 54 23	5 11 0 56	8 27 1 32	6 11 6 55	5 16 16 54	7 17 38 38	7 19 53 13	4 15 34 42	4 17 30 28	–13 11	-00 09	28
29	2 31 2	6 11 54 19	5 23 0 6	8 27 44 37	6 12 45 28	5 16 29 14	7 18 50 59	7 19 59 16	4 15 31 32	4 17 24 58	–13 31	-03 58	29
30	2 34 58	6 12 54 18	6 4 54 57	8 28 27 47	6 14 23 30	5 16 41 32	7 20 3 19	7 20 5 22	4 15 28 21	4 17 16 54	–13 51	-07 36	30
31	2 38 55	6 13 54 18	6 16 47 15	8 29 11 2	6 16 1 3	5 16 53 48	7 21 15 37	7 20 11 30	4 15 25 10	4 17 6 42	–14 10	-10 55	31
नवं.	2 42 51	6 14 54 20	6 28 38 30	8 29 54 22	6 17 38 6	5 17 6 1	7 22 27 53	7 20 17 41	4 15 21 59	4 16 55 9	–14 30	-13 48	नवं
2	2 46 48	6 15 54 23	7 10 30 11	9 0 37 48	6 19 14 41	5 17 18 11	7 23 40 7	7 20 23 55	4 15 18 49	4 16 43 12	–14 49	-16 06	2
3	2 50 45	6 16 54 29	7 22 23 59	9 1 21 17	6 20 50 48	5 17 30 17	7 24 52 17	7 20 30 10	4 15 15 38	4 16 31 55	–15 7	-17 44	3
4	2 54 41	6 17 54 36	8 4 22 1	9 2 4 52	6 22 26 30	5 17 42 21	7 26 4 26	7 20 36 29	4 15 12 27	4 16 22 17	–15 26	-18 37	4
5	2 58 38	6 18 54 45	8 16 26 57	9 2 48 32	6 24 1 46	5 17 54 23	7 27 16 33	7 20 42 51	4 15 9 16	4 16 14 58	–15 44	-18 39	5

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(6 नवं. से 12 दिसं. 2016 ई. तक)*

1 दिसंबर 2016 ई. को अयनांश 24°/05′/29″

ता. नवं.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य रा. अं. क. वि.	चन्द्र रा. अं. क. वि.	मंगल रा. अं. क. वि.	बुध रा. अं. क. वि.	गुरु रा. अं. क. वि.	शुक्र रा. अं. क. वि.	शनि रा. अं. क. वि.	मध्यम राहु रा. अं. क. वि.	स्पष्ट राहु रा. अं. क. वि.	सूर्य क्रांति अं. क.	चंद्र क्रांति अं. क.	ता.
6	3 2 34	6 19 54 56	8 28 42 7	9 3 32 16	6 25 36 38	5 18 6 21	7 28 28 37	7 20 49 15	4 15 6 6	4 16 10 19	−16 2	-17 49	6
7	3 6 31	6 20 55 8	9 11 11 28	9 4 16 4	6 27 11 6	5 18 18 15	7 29 40 38	7 20 55 41	4 15 2 55	4 16 8 8	−16 20	-16 07	7
8	3 10 27	6 21 55 21	9 23 59 16	9 4 59 57	6 28 45 12	5 18 30 7	8 0 52 36	7 21 2 9	4 14 59 44	4 16 7 47	−16 38	-13 35	8
9	3 14 24	6 22 55 36	10 7 9 48	9 5 43 52	7 0 18 55	5 18 41 54	8 2 4 30	7 21 8 39	4 14 56 33	4 16 8 18	−16 55	-10 17	9
10	3 18 20	6 23 55 53	10 20 46 43	9 6 27 52	7 1 52 18	5 18 53 38	8 3 16 23	7 21 15 11	4 14 53 23	4 16 8 23	−17 12	-06 20	10
11	3 22 17	6 24 56 11	11 4 52 9	9 7 11 56	7 3 25 22	5 19 5 19	8 4 28 11	7 21 21 36	4 14 50 12	4 16 6 53	−17 28	-01 55	11
12	3 26 13	6 25 56 30	11 19 25 47	9 7 56 3	7 4 58 6	5 19 16 56	8 5 39 57	7 21 28 23	4 14 47 1	4 16 3 1	−17 45	+02 46	12
13	3 30 10	6 26 56 51	0 4 23 58	9 8 40 13	7 6 30 32	5 19 28 29	8 6 51 39	7 21 35 1	4 14 43 50	4 15 56 26	−18 1	07 24	13
14	3 34 7	6 27 57 13	0 19 39 22	9 9 24 27	7 8 2 40	5 19 39 58	8 8 3 18	7 21 41 42	4 14 40 40	4 15 47 24	−18 17	11 39	14
15	3 38 3	6 28 57 37	1 5 1 32	9 10 8 44	7 9 34 31	5 19 51 24	8 9 14 53	7 21 48 24	4 14 37 29	4 15 36 47	−18 32	15 08	15
16	3 42 0	6 29 58 3	1 20 18 37	9 10 53 4	7 11 6 4	5 20 2 45	8 10 26 24	7 21 55 8	4 14 34 18	4 15 25 46	−18 47	17 33	16
17	3 45 56	7 0 58 30	2 5 19 29	9 11 37 26	7 12 37 20	5 20 14 2	8 11 37 51	7 22 1 53	4 14 31 7	4 15 15 37	−19 2	18 43	17
18	3 49 53	7 1 58 59	2 19 55 43	9 12 21 52	7 14 8 20	5 20 25 15	8 12 49 15	7 22 8 40	4 14 27 57	4 15 7 28	−19 16	18 35	18
19	3 53 49	7 2 59 30	3 4 2 40	9 13 6 21	7 15 39 3	5 20 36 24	8 14 0 36	7 22 15 29	4 14 24 46	4 15 1 52	−19 30	17 17	19
20	3 57 46	7 4 0 2	3 17 39 19	9 13 50 53	7 17 9 28	5 20 47 29	8 15 11 52	7 22 22 19	4 14 21 35	4 14 58 54	−19 44	15 02	20
21	4 1 43	7 5 0 37	4 0 47 34	9 14 35 27	7 18 39 35	5 20 58 29	8 16 23 5	7 22 29 11	4 14 18 24	4 14 57 57	−19 57	12 03	21
22	4 5 39	7 6 1 13	4 13 31 18	9 15 20 3	7 20 9 22	5 21 9 23	8 17 34 12	7 22 36 3	4 14 15 14	4 14 58 2	−20 10	08 36	22
23	4 9 36	7 7 1 51	4 25 55 17	9 16 4 44	7 21 38 50	5 21 20 14	8 18 45 16	7 22 42 57	4 14 12 3	4 14 57 50	−20 23	04 50	23
24	4 13 32	7 8 2 30	5 8 4 31	9 16 49 27	7 23 7 55	5 21 31 0	8 19 56 16	7 22 49 53	4 14 8 52	4 14 56 10	−20 35	+00 57	24
25	4 17 29	7 9 3 11	5 20 3 43	9 17 34 12	7 24 36 36	5 21 41 41	8 21 7 11	7 22 56 50	4 14 5 41	4 14 52 3	−20 47	-02 54	25
26	4 21 25	7 10 3 54	6 1 56 59	9 18 18 59	7 26 4 51	5 21 52 17	8 22 18 2	7 23 3 48	4 14 2 30	4 14 44 54	−20 58	- 6 37	26
27	4 25 22	7 11 4 38	6 13 47 40	9 19 13 49	7 27 32 35	5 22 2 48	8 23 28 49	7 23 10 46	4 13 59 20	4 14 34 42	−21 9	-10 04	27
28	4 29 18	7 12 5 24	6 25 38 22	9 19 48 42	7 28 59 45	5 22 13 14	8 24 39 30	7 23 17 46	4 13 56 9	4 14 21 52	−21 20	-13 06	28
29	4 33 15	7 13 6 11	7 7 30 58	9 20 33 36	8 0 26 17	5 22 23 34	8 25 50 6	7 23 24 47	4 13 52 58	4 14 7 17	−21 30	-15 37	29
30	4 37 12	7 14 6 59	7 19 26 52	9 21 18 33	8 1 52 5	5 22 33 49	8 27 0 37	7 23 31 49	4 13 49 47	4 13 52 5	−21 40	-17 30	30
दिसं	4 41 8	7 15 7 49	8 1 27 8	9 22 3 31	8 3 17 0	5 22 43 57	8 28 11 2	7 23 38 50	4 13 46 36	4 13 37 31	−21 50	-18 37	दिसं
2	4 45 5	7 16 8 39	8 13 32 55	9 22 48 32	8 4 40 58	5 22 54 1	8 29 21 22	7 23 45 53	4 13 43 26	4 13 24 48	−21 59	-18 54	2
3	4 49 1	7 17 9 313	8 25 45 40	9 23 33 35	8 6 3 49	5 23 3 59	9 0 31 36	7 23 52 57	4 13 40 15	4 13 14 49	−22 7	-18 19	3
4	4 52 58	7 18 10 24	9 8 7 20	9 24 18 39	8 7 25 22	5 23 13 51	9 1 41 43	7 24 0 1	4 13 37 4	4 13 8 0	−22 16	-16 51	4
5	4 56 54	7 19 11 17	9 20 40 28	9 25 3 45	8 8 45 23	5 23 23 36	9 2 51 45	7 24 7 5	4 13 33 53	4 13 4 15	−22 23	-14 34	5
6	5 0 51	7 20 12 11	10 3 28 17	9 25 48 51	8 10 3 39	5 23 33 14	9 4 1 38	7 24 14 9	4 13 30 42	4 13 2 54	−22 31	-11 32	6
7	5 4 47	7 21 13 6	10 16 34 19	9 26 34 0	8 11 19 54	5 23 42 48	9 5 11 25	7 24 21 14	4 13 27 32	4 13 2 53	−22 38	-07 51	7
8	5 8 44	7 22 14 2	11 0 2 2	9 27 19 9	8 12 33 48	5 23 52 15	9 6 21 5	7 24 28 20	4 13 24 21	4 13 2 49	−22 44	-03 41	8
9	5 12 41	7 23 14 59	11 13 54 9	9 28 4 20	8 13 44 58	5 24 1 36	9 7 30 38	7 24 35 25	4 13 21 10	4 13 1 26	−22 50	+00 47	9
10	5 16 37	7 24 15 56	11 28 11 41	9 28 49 32	8 14 52 59	5 24 10 50	9 8 40 2	7 24 42 31	4 13 17 59	4 12 57 43	−22 55	05 21	10
11	5 20 34	7 25 16 53	0 12 53 3	9 29 34 45	8 15 57 22	5 24 19 58	9 9 49 18	7 24 49 36	4 13 14 48	4 12 51 15	−23 1	09 43	11
12	5 24 30	7 26 17 51	0 27 53 28	10 [illegible]	8 16 57 33	5 24 28 59	9 10 58 26	7 24 56 42	4 13 11 38	4 12 42 14	−23 5	13 34	12

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (13 दिसं. 2016 से 18 जनवरी. 2017 ई. तक)

1 जनवरी, 2017 ई. को अयनांश 24°/05′/34″

ता. दिसं	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	दिसं.
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
13	5 28 27	7 27 18 50	1 13 4 48	10 1 5 12	8 17 52 56	5 24 37 53	9 12 7 24	7 25 3 46	4 13 8 27	4 12 31 26	-23 09	+16 33	13
14	5 32 23	7 28 19 50	1 28 16 36	10 1 50 27	8 18 42 48	5 24 46 40	9 13 16 14	7 25 10 52	4 13 5 16	4 12 20 3	-23 13	18 24	14
15	5 36 20	7 29 20 50	2 13 17 55	10 2 35 43	8 19 26 25	5 24 55 21	9 14 24 55	7 25 17 57	4 13 2 5	4 12 9 26	-23 16	18 56	15
16	5 40 16	8 0 21 52	2 27 59 14	10 3 20 59	8 20 2 57	5 25 3 54	9 15 33 26	7 25 25 2	4 12 58 55	4 12 0 40	-23 19	18 10	16
17	5 44 13	8 1 22 54	3 12 14 3	10 4 6 14	8 20 31 30	5 25 12 20	9 16 41 47	7 25 32 5	4 12 55 44	4 11 54 30	-23 21	16 16	17
18	5 48 10	8 2 23 56	3 25 59 23	10 4 51 31	8 20 51 14	5 25 20 39	9 17 49 58	7 25 39 9	4 12 52 33	4 11 51 2	-23 23	13 28	18
19	5 52 6	8 3 25 0	4 9 15 33	10 5 36 49	8 21 1 14	5 25 28 50	9 18 57 59	7 25 46 13	4 12 49 22	4 11 49 51	-23 25	10 04	19
20	5 56 3	8 4 26 5	4 22 5 16	10 6 22 6	8 21 0 42	5 25 36 54	9 20 5 50	7 25 53 16	4 12 46 12	4 11 50 3	-23 26	06 17	20
21	5 59 59	8 5 27 10	5 4 32 57	10 7 7 24	8 20 48 59	5 25 44 51	9 21 13 29	7 26 0 18	4 12 43 1	4 11 50 31	-23 26	+02 21	21
22	6 3 56	8 6 28 16	5 16 43 39	10 7 52 43	8 20 25 38	5 25 52 39	9 22 20 58	7 26 7 19	4 12 39 50	4 11 50 1	-23 26	- 1 36	22
23	6 7 52	8 7 29 23	5 28 42 38	10 8 38 2	8 19 50 32	5 26 0 20	9 23 28 14	7 26 14 20	4 12 36 39	4 11 47 40	-23 26	- 5 25	23
24	6 11 49	8 8 30 31	6 10 34 54	10 9 23 21	8 19 3 59	5 26 7 53	9 24 35 20	7 26 21 20	4 12 33 29	4 11 42 53	-23 25	- 8 59	24
25	6 15 45	8 9 31 39	6 22 24 52	10 10 8 40	8 18 6 45	5 26 15 16	9 25 42 11	7 26 28 18	4 12 30 18	4 11 35 29	-23 23	-12 11	25
26	6 19 42	8 10 32 48	7 4 16 12	10 10 53 59	8 17 0 10	5 26 22 33	9 26 48 51	7 26 35 16	4 12 27 7	4 11 25 48	-23 21	-14 54	26
27	6 23 39	8 11 33 57	7 16 11 45	10 11 39 19	8 15 46 8	5 26 29 41	9 27 55 18	7 26 42 14	4 12 23 56	4 11 14 28	-23 19	-17 00	27
28	6 27 35	8 12 35 7	7 28 13 36	10 12 24 39	8 14 26 54	5 26 36 40	9 29 1 32	7 26 49 10	4 12 20 46	4 11 2 27	-23 16	-18 23	28
29	6 31 32	8 13 36 17	8 10 23 6	10 13 9 59	8 13 5 6	5 26 43 32	10 0 7 31	7 26 56 4	4 12 17 35	4 10 50 51	-23 13	-18 57	29
30	6 35 28	8 14 37 27	8 22 41 7	10 13 55 17	8 11 43 27	5 26 50 13	10 1 13 15	7 27 2 57	4 12 14 24	4 10 40 40	-23 9	-18 38	30
31	6 39 25	8 15 38 37	9 5 8 16	10 14 40 37	8 10 24 38	5 26 56 47	10 2 18 44	7 27 9 49	4 12 11 13	4 10 32 43	-23 5	-17 25	31
जन. 2017	6 43 21	8 16 39 47	9 17 45 12	10 15 25 56	8 9 11 0	5 27 3 11	10 3 23 58	7 27 16 40	4 12 8 3	4 10 27 26	-23 00	-15 20	जन. 2017
2	6 47 18	8 17 40 57	10 0 32 51	10 16 11 15	8 8 4 30	5 27 9 27	10 4 28 55	7 27 23 29	4 12 4 52	4 10 24 49	-22 55	-15 29	2
3	6 51 14	8 18 42 8	10 13 32 31	10 16 56 34	8 7 6 38	5 27 15 34	10 5 33 36	7 27 30 16	4 12 1 41	4 10 24 23	-22 49	-08 58	3
4	6 55 11	8 19 43 17	10 26 45 58	10 17 41 51	8 6 18 20	5 27 21 30	10 6 37 56	7 27 37 1	4 11 58 30	4 10 25 19	-22 43	-04 57	4
5	6 59 8	8 20 44 27	11 10 15 3	10 18 27 8	8 5 40 9	5 27 27 18	10 7 42 1	7 27 43 45	4 11 55 20	4 10 26 30	-22 37	-00 38	5
6	7 3 4	8 21 45 36	11 24 1 26	10 19 12 25	8 5 12 13	5 27 32 56	10 8 45 46	7 27 50 28	4 11 52 9	4 10 26 53	-22 30	+03 49	6
7	7 7 1	8 22 46 45	0 8 5 59	10 19 57 41	8 4 54 19	5 27 38 26	10 9 49 11	7 27 57 8	4 11 48 59	4 10 25 38	-22 22	+08 09	7
8	7 10 57	8 23 47 53	0 22 27 47	10 20 42 56	8 4 46 4	5 27 43 45	10 10 52 16	7 28 3 47	4 11 45 48	4 10 22 23	-22 14	12 05	8
9	7 14 54	8 24 49 1	1 7 4 14	10 21 28 10	8 4 46 53	5 27 48 55	10 11 55 0	7 28 10 23	4 11 42 37	4 10 17 11	-22 06	15 22	9
10	7 18 50	8 25 50 9	1 21 50 8	10 22 13 23	8 4 56 9	5 27 53 56	10 12 57 22	7 28 16 58	4 11 39 26	4 10 10 35	-21 57	17 41	10
11	7 22 47	8 26 51 15	2 6 38 26	10 22 58 34	8 5 13 10	5 27 58 45	10 13 59 19	7 28 23 29	4 11 36 16	4 10 3 26	-21 48	18 50	11
12	7 26 43	8 27 52 22	2 21 20 59	10 23 43 45	8 5 37 16	5 28 3 26	10 15 0 54	7 28 30 0	4 11 33 5	4 9 56 41	-21 39	18 42	12
13	7 30 40	8 28 53 28	3 5 49 55	10 24 28 55	8 6 7 49	5 28 7 57	10 16 2 5	7 28 36 28	4 11 29 54	4 9 51 12	-21 29	17 20	13
14	7 34 37	8 29 54 34	3 19 58 53	10 25 14 3	8 6 44 11	5 28 12 18	10 17 2 50	7 28 42 54	4 11 26 43	4 9 47 31	-21 18	14 55	14
15	7 38 33	9 0 55 40	4 3 43 52	10 25 59 10	8 7 25 44	5 28 16 27	10 18 3 9	7 28 49 16	4 11 23 33	4 9 45 50	-21 7	11 43	15
16	7 42 30	9 1 56 45	4 17 3 25	10 26 44 16	8 8 12 3	5 28 20 28	10 19 3 1	7 28 55 37	4 11 20 22	4 9 45 53	-20 56	08 00	16
17	7 46 26	9 2 57 50	4 29 58 28	10 27 29 21	8 9 2 34	5 28 24 18	10 20 2 25	7 29 1 55	4 11 17 11	4 9 47 8	-20 45	+04 00	17
18	7 50 23	9 3 58 55	5 12 31 45	10 28 14 25	8 9 56 53	5 28 27 57	10 21 1 21	7 29 8 11	4 11 14 0	4 9 48 50	-20 33	-00 02	18

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट *(19 जन. से 24 फर. 2017 ई. तक)* 1 फरवरी, 2017 ई. को अयनांश 24°/05′/39″

ता.	सम्पातिक काल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता.
जन.	0-00 Hr. GMT	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
19	7 54 19	9 4 59 59	5 24 47 17	10 28 59 27	8 10 54 37	5 28 31 26	10 21 59 47	7 29 14 24	4 11 10 50	4 9 50 16	–20 20	-03 59	19
20	7 58 16	9 6 1 3	6 6 49 49	10 29 44 28	8 11 55 28	5 28 34 44	10 22 57 43	7 29 20 35	4 11 7 39	4 9 50 47	–20 7	-07 42	20
21	8 2 12	9 7 2 7	6 18 44 19	11 0 29 28	8 12 59 4	5 28 37 52	10 23 55 6	7 29 26 42	4 11 4 28	4 9 49 58	–19 54	-11 03	21
22	8 6 9	9 8 3 10	7 0 35 42	11 1 14 27	8 14 5 10	5 28 40 49	10 24 51 57	7 29 32 47	4 11 1 17	4 9 47 41	–19 41	-13 57	22
23	8 10 6	9 9 4 13	7 12 28 30	11 1 59 25	8 15 13 34	5 28 43 35	10 25 48 14	7 29 38 49	4 10 58 7	4 9 44 2	–19 27	-16 17	23
24	8 14 2	9 10 5 16	7 24 26 41	11 2 44 20	8 16 24 1	5 28 46 9	10 26 43 55	7 29 44 47	4 10 54 56	4 9 39 22	–19 13	-17 55	24
25	8 17 59	9 11 6 18	8 6 33 33	11 3 29 15	8 17 36 23	5 28 48 34	10 27 38 59	7 29 50 43	4 10 51 45	4 9 34 12	–18 58	-18 47	25
26	8 21 55	9 12 7 19	8 18 51 29	11 4 14 9	8 18 50 28	5 28 50 47	10 28 33 26	7 29 56 36	4 10 48 34	4 9 29 6	–18 43	-18 47	26
27	8 25 52	9 13 8 19	9 1 22 3	11 4 59 1	8 20 6 10	5 28 52 49	10 29 27 14	8 0 2 26	4 10 45 23	4 9 24 40	–18 28	-17 53	27
28	8 29 48	9 14 9 19	9 14 5 58	11 5 43 52	8 21 23 20	5 28 54 40	11 0 20 20	8 0 8 12	4 10 42 13	4 9 21 20	–18 12	-16 03	28
29	8 33 45	9 15 10 18	9 27 3 19	11 6 28 41	8 22 41 53	5 28 56 19	11 1 12 44	8 0 13 55	4 10 39 2	4 9 19 22	–17 56	-13 23	29
30	8 37 41	9 16 11 16	10 10 13 39	11 7 13 27	8 24 1 41	5 28 57 47	11 2 4 21	8 0 19 34	4 10 35 51	4 9 18 47	–17 40	-10 00	30
31	8 41 38	9 17 12 12	10 23 36 17	11 7 58 13	8 25 22 42	5 28 59 4	11 2 55 14	8 0 25 10	4 10 32 40	4 9 19 21	–17 23	-06 03	31
फर.	8 45 35	9 18 13 8	11 7 10 26	11 8 42 57	8 26 44 52	5 29 0 9	11 3 45 18	8 0 30 43	4 10 29 29	4 9 20 38	–17 6	-01 45	फर
2	8 49 31	9 19 14 2	11 20 55 22	11 9 27 40	8 28 8 6	5 29 1 3	11 4 34 33	8 0 36 12	4 10 26 19	4 9 22 8	–16 49	+02 41	2
3	8 53 28	9 20 14 55	0 4 50 16	11 10 12 20	8 29 32 22	5 29 1 45	11 5 22 55	8 0 41 37	4 10 23 8	4 9 23 19	–16 32	+07 02	3
4	8 57 24	9 21 15 46	0 18 54 13	11 10 56 59	9 0 57 37	5 29 2 17	11 6 10 24	8 0 46 58	4 10 19 57	4 9 23 50	–16 14	+11 02	4
5	9 1 21	9 22 16 36	1 3 5 44	11 11 41 36	9 2 23 49	5 29 2 37	11 6 56 55	8 0 52 16	4 10 16 46	4 9 23 28	–15 56	14 26	5
6	9 5 17	9 23 17 25	1 17 22 44	11 12 26 10	9 3 50 57	5 29 2 46	11 7 42 27	8 0 57 30	4 10 13 35	4 9 22 19	–15 37	16 59	6
7	9 9 14	9 24 18 12	2 1 42 16	11 13 10 43	9 5 18 59	5 29 2 44	11 8 26 58	8 1 2 40	4 10 10 25	4 9 20 35	–15 19	18 30	7
8	9 13 10	9 25 18 57	2 16 0 31	11 13 55 13	9 6 47 53	5 29 2 29	11 9 10 24	8 1 7 45	4 10 7 14	4 9 18 39	–15 00	18 50	8
9	9 17 7	9 26 19 41	3 0 13 7	11 14 39 41	9 8 17 40	5 29 2 4	11 9 52 44	8 1 12 47	4 10 4 3	4 9 16 50	–14 41	17 59	9
10	9 21 4	9 27 20 24	3 14 15 34	11 15 24 7	9 9 48 18	5 29 1 27	11 10 33 56	8 1 17 45	4 10 0 52	4 9 15 29	–14 21	16 01	10
11	9 25 0	9 28 21 5	3 28 3 50	11 16 8 31	9 11 19 48	5 29 0 39	11 11 13 55	8 1 22 39	4 9 57 41	4 9 14 44	–14 2	13 09	11
12	9 28 57	9 29 21 45	4 11 34 49	11 16 52 53	9 12 52 10	5 28 59 40	11 11 52 40	8 1 27 29	4 9 54 31	4 9 14 37	–13 42	09 38	12
13	9 32 53	10 0 22 24	4 24 46 43	11 17 37 12	9 14 25 22	5 28 58 29	11 12 30 7	8 1 32 14	4 9 51 20	4 9 15 2	–13 22	05 42	13
14	9 36 50	10 1 23 1	5 7 39 12	11 18 21 30	9 15 59 26	5 28 57 7	11 13 6 14	8 1 36 55	4 9 48 9	4 9 15 45	–13 2	+01 37	14
15	9 40 46	10 2 23 37	5 20 13 19	11 19 5 45	9 17 34 21	5 28 55 34	11 13 40 58	8 1 41 32	4 9 44 58	4 9 16 34	–12 41	-02 27	15
16	9 44 43	10 3 24 12	6 2 31 28	11 19 49 58	9 19 10 8	5 28 53 50	11 14 14 15	8 1 46 4	4 9 41 47	4 9 17 19	–12 20	-06 18	16
17	9 48 39	10 4 24 46	6 14 36 58	11 20 34 9	9 20 46 48	5 28 51 54	11 14 46 3	8 1 50 32	4 9 38 37	4 9 17 52	–11 59	-09 51	17
18	9 52 36	10 5 25 18	6 26 33 54	11 21 18 17	9 22 24 21	5 28 49 46	11 15 16 15	8 1 54 55	4 9 35 26	4 9 18 10	–11 38	-12 56	18
19	9 56 33	10 6 25 49	7 8 26 47	11 22 2 23	9 24 2 48	5 28 47 29	11 15 44 53	8 1 59 14	4 9 32 15	4 9 18 15	–11 17	-15 29	19
20	10 0 29	10 7 26 19	7 20 20 21	11 22 46 28	9 25 42 10	5 28 45 0	11 16 11 52	8 2 3 28	4 9 29 4	4 9 18 12	–10 56	-17 22	20
21	10 4 26	10 8 26 48	8 2 19 15	11 23 30 31	9 27 22 27	5 28 42 20	11 16 37 6	8 2 7 38	4 9 25 53	4 9 18 7	–10 34	-18 31	21
22	10 8 22	10 9 27 15	8 14 27 50	11 24 14 31	9 29 3 40	5 28 39 29	11 17 0 33	8 2 11 42	4 9 22 43	4 9 18 5	–10 12	-18 50	22
23	10 12 19	10 10 27 41	8 26 49 54	11 24 58 29	10 0 45 51	5 28 36 26	11 17 22 10	8 2 15 42	4 9 19 32	4 9 18 11	–9 50	-18 16	23
24	10 16 15	10 11 28 5	9 9 28 21	[illegible]	[illegible]	5 28 33 14	11 17 41 51	8 2 19 37	4 9 16 21	4 9 18 23	–9 28	-16 47	24

दैनिक निरयण ग्रह स्पष्ट (25 फर. से 31 मार्च 2017 ई. तक)

1 मार्च, 2017 ई. को अयनांश 24°/05′/42″

ता. फर.	सम्पातिक काल 0-00 Hr. GMT	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	मध्यम राहु	स्पष्ट राहु	सूर्य क्रांति	चंद्र क्रांति	ता. फर.
		रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अं. क.	अं. क.	
25	10 20 12	10 12 28 28	9 22 25 8	11 26 26 19	10 4 13 6	5 28 29 51	11 17 59 35	8 2 23 28	4 9 13 10	4 9 18 37	−9 6	-14 25	25
26	10 24 8	10 13 28 49	10 5 40 49	11 27 10 9	10 5 58 12	5 28 26 16	11 18 15 14	8 2 27 12	4 9 9 59	4 9 18 46	−8 44	-11 14	26
27	10 28 5	10 14 29 8	10 19 14 41	11 27 53 59	10 7 44 18	5 28 22 32	11 18 28 48	8 2 30 52	4 9 6 49	4 9 18 44	−8 21	-07 24	27
28	10 32 2	10 15 29 26	11 3 4 40	11 28 37 46	10 9 31 25	5 28 18 37	11 18 40 12	8 2 34 27	4 9 3 38	4 9 18 24	−7 58	-03 05	28
मार्च	10 35 58	10 16 29 42	11 17 7 34	11 29 21 30	10 11 19 33	5 28 14 33	11 18 49 23	8 2 37 56	4 9 0 27	4 9 17 45	−7 36	+01 27	मार्च
2	10 39 55	10 17 29 56	0 1 19 31	0 0 5 12	10 13 8 43	5 28 10 18	11 18 56 16	8 2 41 21	4 8 57 16	4 9 16 50	−7 13	+05 57	2
3	10 43 51	10 18 30 8	0 15 36 24	0 0 48 52	10 14 58 53	5 28 5 54	11 19 0 48	8 2 44 40	4 8 54 5	4 9 15 49	−6 50	10 08	3
4	10 47 48	10 19 30 18	0 29 54 17	0 1 32 30	10 16 50 4	5 28 1 20	11 19 2 57	8 2 47 55	4 8 50 55	4 9 14 55	−6 27	13 43	4
5	10 51 44	10 20 30 26	1 14 9 46	0 2 16 5	10 18 42 15	5 27 56 36	11 19 2 39	8 2 51 3	4 8 47 44	4 9 14 20	−6 4	16 29	5
6	10 55 41	10 21 30 32	1 28 20 7	0 2 59 37	10 20 35 24	5 27 51 44	11 18 59 53	8 2 54 7	4 8 44 33	4 9 14 17	−5 41	18 14	6
7	10 59 37	10 22 30 35	2 12 23 17	0 3 43 7	10 22 29 29	5 27 46 42	11 18 54 36	8 2 57 5	4 8 41 22	4 9 14 48	−5 17	18 52	7
8	11 3 34	10 23 30 36	2 26 17 42	0 4 26 34	10 24 24 29	5 27 41 31	11 18 46 47	8 2 59 58	4 8 38 12	4 9 15 44	−4 54	18 20	8
9	11 7 31	10 24 30 36	3 10 2 8	0 5 9 56	10 26 20 17	5 27 36 11	11 18 36 27	8 3 2 43	4 8 35 1	4 9 16 52	−4 30	16 43	9
10	11 11 27	10 25 30 33	3 23 35 30	0 5 53 18	10 28 16 53	5 27 30 43	11 18 23 35	8 3 5 25	4 8 31 50	4 9 17 51	−4 7	14 10	10
11	11 15 24	10 26 30 28	4 6 56 48	0 6 36 37	11 0 14 7	5 27 25 7	11 18 8 14	8 3 8 1	4 8 28 39	4 9 18 18	−3 43	10 54	11
12	11 19 20	10 27 30 21	4 20 5 7	0 7 19 53	11 2 11 55	5 27 19 22	11 17 50 26	8 3 10 32	4 8 25 29	4 9 17 54	−3 20	07 08	12
13	11 23 17	10 28 30 12	5 2 59 52	0 8 3 8	11 4 10 6	5 27 13 30	11 17 30 13	8 3 12 57	4 8 22 18	4 9 16 32	−2 56	+03 06	13
14	11 27 13	10 29 30 0	5 15 40 47	0 8 46 19	11 6 8 31	5 27 7 30	11 17 7 42	8 3 15 17	4 8 19 7	4 9 14 11	−2 33	-01 00	14
15	11 31 10	11 0 29 47	5 28 8 15	0 9 29 28	11 8 6 58	5 27 1 23	11 16 42 57	8 3 17 31	4 8 15 56	4 9 11 1	−2 9	-04 59	15
16	11 35 6	11 1 29 33	6 10 23 24	0 10 12 34	11 10 5 11	5 26 55 8	11 16 16 4	8 3 19 39	4 8 12 45	4 9 7 23	−1 45	-08 41	16
17	11 39 3	11 2 29 16	6 22 28 10	0 10 55 37	11 12 2 56	5 26 48 46	11 15 47 15	8 3 21 41	4 8 9 35	4 9 3 44	−1 22	-11 58	17
18	11 43 0	11 3 28 58	7 4 25 20	0 11 38 38	11 13 59 52	5 26 42 18	11 15 16 36	8 3 23 38	4 8 6 24	4 9 0 30	−0 58	-14 44	18
19	11 46 56	11 4 28 38	7 16 18 21	0 12 21 37	11 15 55 40	5 26 35 43	11 14 44 18	8 3 25 29	4 8 3 13	4 8 58 4	−0 34	-16 52	19
20	11 50 53	11 5 28 17	7 28 11 23	0 13 4 33	11 17 49 58	5 26 29 2	11 14 10 33	8 3 27 15	4 8 0 2	4 8 56 42	−0 10	-18 17	20
21	11 54 49	11 6 27 53	8 10 9 00	0 13 47 27	11 19 42 21	5 26 22 15	11 13 35 33	8 3 28 54	4 7 56 52	4 8 56 30	+0 13	-18 53	21
22	11 58 46	11 7 27 28	8 22 16 00	0 14 30 18	11 21 32 24	5 26 15 22	11 12 59 32	8 3 30 28	4 7 53 41	4 8 57 21	+0 37	-18 39	22
23	12 2 42	11 8 27 1	9 4 37 7	0 15 13 6	11 23 19 40	5 26 8 23	11 12 22 42	8 3 31 55	4 7 50 30	4 8 58 50	+1 01	-17 31	23
24	12 6 39	11 9 26 32	9 17 16 41	0 15 55 52	11 25 3 44	5 26 1 19	11 11 45 19	8 3 33 17	4 7 47 19	4 9 00 29	1 24	-15 30	24
25	12 10 35	11 10 26 2	10 0 18 11	0 16 38 36	11 26 44 8	5 25 54 11	11 11 7 38	8 3 34 32	4 7 44 9	4 9 1 41	1 48	-12 38	25
26	12 14 32	11 11 25 30	10 13 43 43	0 17 21 17	11 28 20 27	5 25 46 58	11 10 29 54	8 3 35 42	4 7 40 58	4 9 1 51	2 12	-09 02	26
27	12 18 29	11 12 24 55	10 27 33 31	0 18 3 56	11 29 52 16	5 25 39 40	11 9 52 23	8 3 36 46	4 7 37 47	4 9 0 31	+2 35	-04 50	27
28	12 22 25	11 13 24 19	11 11 45 31	0 18 46 32	0 1 19 11	5 25 32 19	11 9 15 18	8 3 37 44	4 7 34 36	4 8 57 37	2 59	-00 16	28
29	12 26 22	11 14 23 41	11 26 15 16	0 19 29 6	0 2 40 48	5 25 24 54	11 8 38 54	8 3 38 36	4 7 31 26	4 8 53 15	3 22	+04 25	29
30	12 30 18	11 15 23 1	0 10 56 24	0 20 11 38	0 3 56 51	5 25 17 26	11 8 3 25	8 3 39 22	4 7 28 15	4 8 47 56	3 45	+08 53	30
31	12 34 15	11 16 22 18	0 25 41 22	0 20 54 6	0 5 7 01	5 25 9 55	11 7 29 3	8 3 40 2	4 7 25 4	4 8 42 23	+4 9	+12 49	31

यूरेनस, नैपच्यून एवं प्लूटो के निरयण ग्रह स्पष्ट प्रात: 5/30 बजे (भा. स्टै. टा.) वि. २०७३ (2016-17 ई.)

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अप्रै.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
1	11 25 51 33	10 16 35	8 23 20
4	11 26 01 51	10 16 41	8 23 21
7	11 26 12 03	10 16 47	8 23 22
10	11 26 22 21	10 16 52	8 23 23
13	11 26 32 39	10 16 58	8 23 24
16	11 26 42 57	10 17 03	8 23 24
19	11 26 53 08	10 17 08	8 23 24
22	11 27 03 21	10 17 13	8 23 24
25	11 27 13 27	10 17 18	8 23 23
28	11 27 23 27	10 17 22	8 23 22
मई	11 27 33 21	10 17 26	8 23 21
4	11 27 43 09	10 17 30	8 23 20
7	11 27 52 51	10 17 34	8 23 18
10	11 28 02 15	10 17 38	8 23 16
13	11 28 11 33	10 17 41	8 23 14
16	11 28 20 39	10 17 44	8 23 12
19	11 28 29 33	10 17 46	8 23 10
22	11 28 38 14	10 17 49	8 23 07
25	11 28 46 39	10 17 51	8 23 04
28	11 28 54 45	10 17 53	8 23 01
31	11 29 02 39	10 17 54	8 22 58
जून	11 29 05 15	10 17 55	8 22 56
4	11 29 12 45	10 17 56	8 22 53
7	11 29 20 01	10 17 56	8 22 49
10	11 29 26 54	10 17 57	8 22 45
13	11 29 33 27	10 17 57	8 22 41
16	11 29 39 39	10 17 57	8 22 37
19	11 29 45 30	10 17 57	8 22 33
22	11 29 50 59	10 17 56	8 22 29
25	11 29 56 05	10 17 55	8 22 25
28	00 00 00 48	10 17 54	8 22 20

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
जुला.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
जुला	00 00 05 08	10 17 53	8 22 16
4	00 00 09 03	10 17 51	8 22 11
7	00 00 12 34	10 17 49	8 22 07
10	00 00 15 39	10 17 47	8 22 03
13	00 00 18 15	10 17 44	8 21 58
16	00 00 20 33	10 17 41	8 21 54
19	00 00 22 21	10 17 38	8 21 49
22	00 00 23 39	10 17 35	8 21 45
25	00 00 24 33	10 17 31	8 21 41
28	00 00 25 04	10 17 28	8 21 37
31	00 00 25 09	10 17 24	8 21 33
अग.	00 00 25 03	10 17 23	8 21 31
4	00 00 24 27	10 17 19	8 21 27
7	00 00 23 34	10 17 14	8 21 24
10	00 00 22 03	10 17 10	8 21 20
13	00 00 20 15	10 17 06	8 21 16
16	00 00 17 57	10 17 01	8 21 13
19	00 00 15 21	10 16 56	8 21 10
22	00 00 12 16	10 16 51	8 21 07
25	00 00 08 45	10 16 47	8 21 04
28	00 00 04 59	10 16 42	8 21 02
31	00 00 00 46	10 16 37	8 21 00
सितं.	11 29 59 17	10 16 35	8 20 59
4	11 26 54 36	10 16 30	8 20 57
7	11 29 49 35	10 16 25	8 20 55
10	11 29 44 09	10 16 20	8 20 54
13	11 29 38 33	10 16 15	8 20 53
16	11 29 32 39	10 16 11	8 20 52
19	11 29 26 34	10 16 06	8 20 51
22	11 29 20 09	10 16 01	8 20 50
25	11 29 13 33	10 15 57	8 20 50
28	11 29 06 45	10 15 52	8 20 50

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
अक्तू	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
अक्तू	11 28 59 51	10 15 48	8 20 51
4	11 28 52 45	10 15 44	8 20 51
7	11 28 45 33	10 15 40	8 20 52
10	11 28 38 15	10 15 36	8 20 53
13	11 28 30 58	10 15 32	8 20 55
16	11 28 23 39	10 15 29	8 20 56
19	11 28 16 21	10 15 26	8 20 58
22	11 28 09 03	10 15 23	8 21 01
25	11 28 01 45	10 15 20	8 21 03
28	11 27 54 39	10 15 18	8 21 06
31	11 27 47 33	10 15 16	8 21 09
नवं.	11 27 45 15	10 15 15	8 21 10
4	11 27 38 27	10 15 13	8 21 13
7	11 27 31 51	10 15 12	8 21 17
10	11 27 25 21	10 15 11	8 21 21
13	11 27 19 09	10 15 10	8 21 25
16	11 27 13 15	10 15 09	8 21 29
19	11 27 07 33	10 15 09	8 21 33
22	11 27 02 10	10 15 09	8 21 38
25	11 26 57 09	10 15 09	8 21 43
28	11 26 52 27	10 15 10	8 21 48
दिसं	11 26 48 09	10 15 11	8 21 53
4	11 26 44 09	10 15 12	8 21 58
7	11 26 40 41	10 15 14	8 22 04
10	11 26 37 27	10 15 16	8 22 09
13	11 26 34 45	10 15 18	8 22 15
16	11 26 32 33	10 15 20	8 22 21
19	11 26 30 39	10 15 23	8 22 27
22	11 26 29 15	10 15 26	8 22 33
25	11 26 28 21	10 15 30	8 22 39
28	11 26 27 51	10 15 33	8 22 45
31	11 26 27 51	10 15 37	8 22 51

ता.	यूरेनस	नैपच्यून	प्लूटो
2017	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क.	रा. अं. क.
जन.	11 26 27 58	10 15 38	8 22 53
4	11 26 28 39	10 15 43	8 22 59
7	11 26 29 45	10 15 47	8 23 05
10	11 26 31 22	10 15 52	8 23 11
13	11 26 33 23	10 15 57	8 23 18
16	11 26 35 53	10 16 02	8 23 24
19	11 26 38 50	10 16 07	8 23 30
22	11 26 42 15	10 16 13	8 23 36
25	11 26 46 03	10 16 19	8 23 42
28	11 26 50 21	10 16 25	8 23 48
31	11 26 55 03	10 16 31	8 23 53
फर.	11 26 56 45	10 16 33	8 23 55
4	11 27 01 57	10 16 39	8 24 01
7	11 27 07 46	10 16 45	8 24 07
10	11 27 13 39	10 16 52	8 24 12
13	11 27 20 03	10 16 58	8 24 17
16	11 27 26 51	10 17 05	8 24 22
19	11 27 33 57	10 17 12	8 24 27
22	11 27 41 21	10 17 18	8 24 32
25	11 27 49 09	10 17 25	8 24 36
28	11 27 57 09	10 17 32	8 24 41
मार्च	11 27 59 51	10 17 34	8 24 42
4	11 28 08 21	10 17 41	8 24 46
7	11 28 16 57	10 17 48	8 24 50
10	11 28 25 51	10 17 55	8 24 54
13	11 28 34 57	10 18 01	8 24 57
16	11 28 44 21	10 18 08	8 25 00
19	11 28 53 51	10 18 15	8 25 03
22	11 29 03 27	10 18 21	8 25 06
25	11 29 13 15	10 18 28	8 25 08
28	11 29 23 15	10 18 34	8 25 10
31	11 29 33 16	10 18 41	8 25 12

जालन्धर में दैनिक चन्द्रोदय–चन्द्रास्त (भा. स्टैं. टा.) (सन् 2016-17 ई.)

तारीख	जनवरी 2016		फरवरी 2016		मार्च 2016		अप्रैल 2016		मई 2016		जून 2016		जुलाई 2016		अगस्त 2016		तारीख
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	— —	11 49	0 41	12 05	0 18	11 19	1 36	12 27	1 50	13 11	2 33	15 14	2 40	16 18	4 08	18 04	1
2	0 15	12 22	1 34	12 42	1 10	12 03	2 25	13 24	2 33	14 14	3 15	16 20	3 30	17 22	5 07	18 53	2
3	1 07	12 54	2 28	13 24	2 03	12 50	3 11	14 25	3 14	15 19	4 01	17 28	4 24	18 24	6 05	19 37	3
4	1 59	13 30	3 21	14 11	2 54	13 43	3 56	15 29	3 56	16 25	4 48	18 35	5 21	19 21	7 06	20 17	4
5	2 51	14 07	4 15	15 02	3 45	14 40	4 40	16 35	4 39	17 33	5 42	19 40	6 21	20 14	8 03	20 54	5
6	3 46	14 47	5 07	15 59	4 33	15 41	5 22	17 43	5 24	18 41	6 39	20 40	7 21	21 01	8 59	21 28	6
7	4 40	15 33	5 59	16 59	5 21	16 46	6 07	18 51	6 12	19 51	7 38	21 35	8 21	21 43	9 53	22 03	7
8	5 35	16 23	6 48	18 02	6 07	17 52	6 50	20 00	7 03	20 56	8 38	22 24	9 19	22 21	10 45	22 35	8
9	6 29	17 17	7 33	19 08	6 51	18 59	7 38	21 08	7 59	21 59	9 38	23 07	10 15	22 56	11 38	23 10	9
10	7 20	18 15	8 18	20 13	7 34	20 07	8 27	22 16	8 56	22 55	10 36	23 47	11 09	23 30	12 30	23 47	10
11	8 11	19 16	9 00	21 19	8 18	21 15	9 19	23 16	9 55	23 46	11 32	— —	12 02	— —	13 23	— —	11
12	8 57	20 20	9 42	22 25	9 02	22 21	10 14	— —	10 53	— —	12 27	0 24	12 54	0 03	14 15	0 24	12
13	9 40	21 23	10 24	23 30	9 48	23 26	11 10	0 14	11 51	0 31	13 19	0 57	13 47	0 36	15 07	1 06	13
14	10 23	22 27	11 08	— —	10 37	— —	12 07	1 06	12 47	1 11	14 11	1 30	14 39	1 12	15 59	1 53	14
15	11 02	23 30	11 53	0 34	11 29	0 28	13 03	1 53	13 41	1 49	15 03	2 04	15 32	1 49	16 49	2 43	15
16	11 43	— —	12 41	1 35	12 23	1 26	13 59	2 35	14 34	2 23	15 55	2 37	16 25	2 29	17 38	3 37	16
17	12 24	0 34	13 33	2 35	13 17	2 21	14 53	3 13	15 25	2 56	16 48	3 13	17 17	3 13	18 25	4 35	17
18	13 07	1 37	14 26	3 31	14 13	3 09	15 47	3 49	16 18	3 29	17 41	3 51	18 09	4 02	19 08	5 36	18
19	13 54	2 40	15 21	4 23	15 08	3 54	16 38	4 23	17 09	4 02	18 34	4 33	18 59	4 54	19 52	6 39	19
20	14 43	3 41	16 18	5 11	16 04	4 34	17 30	4 56	18 02	4 37	19 26	5 19	19 47	5 50	20 32	7 43	20
21	15 36	4 40	17 13	5 55	16 57	5 12	18 23	5 28	18 55	5 13	20 16	6 09	20 31	6 48	21 13	8 47	21
22	16 32	5 36	18 09	6 34	17 51	5 48	19 14	6 03	19 48	5 53	21 04	7 02	21 13	7 50	21 55	9 53	22
23	17 29	6 28	19 03	7 12	18 43	6 21	20 06	6 38	20 39	6 36	21 50	7 59	21 55	8 51	22 38	10 57	23
24	18 26	7 15	19 57	7 46	19 35	6 54	20 59	7 15	21 30	7 24	22 32	8 57	22 34	9 55	23 24	12 02	24
25	19 23	7 59	20 49	8 20	20 27	7 27	21 52	7 57	22 19	8 14	23 13	9 58	23 13	10 57	— —	13 05	25
26	20 18	8 37	21 41	8 54	21 19	8 02	22 42	8 41	23 05	9 08	23 53	10 58	23 55	12 01	0 13	14 06	26
27	21 12	9 13	22 33	9 27	22 12	8 38	23 32	9 29	23 50	10 04	— —	12 01	— —	13 04	1 05	15 04	27
28	22 05	9 47	23 25	10 02	23 03	9 16	— —	10 20	— —	11 03	0 32	13 03	0 39	14 08	2 01	15 58	28
29	22 57	10 21	— —	10 38	23 55	9 58	0 20	11 15	0 31	12 04	1 12	14 08	1 25	15 11	2 58	16 48	29
30	23 50	10 53	— —	— —	— —	10 44	1 06	12 12	1 12	13 05	1 55	15 12	2 16	16 12	3 57	17 33	30
31	— —	11 28	— —	— —	0 46	11 33	— —	— —	1 52	14 09	— —	— —	3 10	17 10	4 55	18 14	31

जालन्धर में दैनिक चन्द्रोदय—चन्द्रास्त (भा. स्टैं. टा.) (सन् 2016-17 ई.)

तारीख	सितम्बर 2016		अक्तूबर 2016		नवम्बर 2016		दिसम्बर 2016		जनवरी 2017		फरवरी 2017		मार्च 2017		अप्रैल 2017		तारीख
	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	
	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	
1	5 53	18 51	6 29	18 35	7 55	18 56	8 25	19 05	9 29	20 34	10 06	22 27	8 44	21 21	9 36	23 28	1
2	6 48	19 27	7 22	19 08	8 46	19 38	9 13	19 55	10 09	21 32	10 45	23 29	9 24	22 25	10 29	— —	2
3	7 43	20 01	8 15	19 43	9 37	20 22	10 01	20 47	10 48	22 31	11 25	— —	10 07	23 29	11 25	0 30	3
4	8 36	20 35	9 06	20 19	10 27	21 08	10 45	21 42	11 26	23 31	12 08	0 31	10 51	— —	12 24	1 27	4
5	9 29	21 08	9 59	20 58	11 15	22 01	11 28	22 39	12 05	— —	12 53	1 35	11 41	0 33	13 23	2 20	5
6	10 21	21 44	10 50	21 40	12 02	22 52	12 08	23 37	12 43	0 32	13 44	2 39	12 33	1 35	14 23	3 07	6
7	11 14	22 21	11 41	22 25	12 46	23 48	12 47	— —	13 24	1 35	14 38	3 41	13 30	2 34	15 22	3 50	7
8	12 06	23 01	12 31	23 14	13 28	— —	13 25	0 37	14 09	2 39	15 38	4 41	14 29	3 30	16 20	4 29	8
9	12 57	23 45	13 19	— —	14 09	0 47	14 05	1 39	14 58	3 46	16 39	5 37	15 29	4 22	17 16	5 05	9
10	13 49	— —	14 06	0 07	14 48	1 48	14 45	2 43	15 53	4 51	17 41	6 28	16 30	5 08	18 12	5 40	10
11	14 39	0 32	14 50	1 02	15 29	2 51	15 30	3 49	16 51	5 55	18 43	7 14	17 30	5 50	19 06	6 15	11
12	15 27	1 24	15 33	2 02	16 11	3 57	16 19	4 57	17 54	6 55	19 43	7 56	18 28	6 30	20 00	6 48	12
13	16 15	2 19	16 16	3 03	16 56	5 04	17 12	6 06	18 57	7 50	20 41	8 34	19 25	7 05	20 53	7 24	13
14	16 59	3 18	16 57	4 08	17 43	6 13	18 11	7 12	20 00	8 39	21 37	9 09	20 20	7 41	21 46	8 01	14
15	17 43	4 21	17 40	5 13	18 35	7 23	19 12	8 15	21 01	9 22	22 32	9 44	21 15	8 15	22 38	8 40	15
16	18 26	5 24	18 23	6 22	19 32	8 30	20 16	9 13	21 59	10 03	23 25	10 18	22 08	8 50	23 28	9 23	16
17	19 07	6 30	19 10	7 30	20 32	9 35	21 17	10 04	22 55	10 38	— —	10 53	23 01	9 27	— —	10 08	17
18	19 49	7 36	19 59	8 39	21 33	10 33	22 19	10 49	23 50	11 13	0 18	11 29	23 54	10 04	0 17	10 56	18
19	20 34	8 43	20 52	9 46	22 34	11 26	23 16	11 29	— —	11 46	1 11	12 08	— —	10 44	1 03	11 48	19
20	21 20	9 50	21 49	10 50	23 33	12 13	— —	12 07	0 43	12 21	2 03	12 50	0 45	11 28	1 48	12 42	20
21	22 09	10 56	22 46	11 49	— —	12 53	0 13	12 40	1 35	12 56	2 53	13 36	1 35	12 15	2 30	13 39	21
22	23 01	12 00	23 46	12 43	0 31	13 31	1 06	13 14	2 28	13 33	3 43	14 25	2 23	13 05	3 10	14 38	22
23	23 57	12 59	— —	13 30	1 26	14 05	2 00	13 47	3 20	14 13	4 32	15 17	3 09	13 59	3 51	15 40	23
24	— —	13 55	0 43	14 14	2 20	14 39	2 51	14 21	4 12	14 56	5 18	16 13	3 54	14 55	4 29	16 43	24
25	0 53	14 46	1 41	14 53	3 12	15 12	3 43	14 56	5 03	15 44	6 3	17 11	4 36	15 56	5 10	17 49	25
26	1 51	15 32	2 36	15 29	4 06	15 45	4 36	15 35	5 53	16 37	6 44	18 13	5 17	16 56	5 52	18 56	26
27	2 48	16 13	3 31	16 03	4 57	16 20	5 28	16 17	6 40	17 29	7 25	19 14	5 58	18 00	6 37	20 05	27
28	3 46	16 51	4 24	16 36	5 50	16 56	6 20	17 02	7 25	18 26	8 4	20 17	6 38	19 04	7 25	21 12	28
29	4 41	17 27	5 16	17 10	6 42	17 36	7 10	17 51	8 09	19 25	— —	— —	7 19	20 10	8 18	22 19	29
30	5 36	18 01	6 10	17 44	7 34	18 19	7 59	18 43	8 49	20 25	— —	— —	8 02	21 20	9 15	23 20	30
31	— —	— —	7 01	18 20	— —	— —	8 45	19 38	9 38	21 26	— —	— —	8 47	22 23	— —	— —	31

शुद्ध एवं शुभ विवाह मुहूर्त्त-सं. २०७३ वि. (सन् 2016-17 ई.)

समय शुद्धि विचार••••••

✡ **शुक्र-अस्त**–शुक्र इस वर्ष **28 अप्रैल, 2016 ई.** को पूर्व में अस्त होकर **9 जुलाई, 2016 ई.** को पश्चिम में उदित होगा। ता. 25 अप्रैल से 27 अप्रै. तक शुक्र वार्धक्य दोष तथा 10 जुला., 2016 ई. से 12 जुला., 2016 ई. तक शुक्र बाल्यत्व दोष व्याप्त रहेगा।

✡ **गुरु अस्त**–गुरु इस वर्ष 9 सितम्बर, 2016 ई. को पश्चिम में अस्त होकर 7 अक्तू., 2016 ई. को पूर्व में उदित होगा। तदनुसार ता. 6 सितं. से 8 सितं. तक गुरुवार्धक्य दोष तथा 10 अक्तू., 2016 ई. तक बाल्यत्व दोष रहेगा।

✡ **श्राद्ध दिन**–17 सितम्बर से 30 सितम्बर तक श्राद्ध दिन रहेंगे।

✡ **कार्तिक मास**–16 अक्तू. से 14 नवम्बर तक कार्तिक मास रहेगा। इस अवधि में केवल पर्वतीय प्रदेशों में विवाहादि शुभ कार्य सम्पादित किए जाते हैं।

✡ **भीष्म-पंचक**–(10 नवं. से 14 नवं.)–पंजाब, हरि., हिमाचलादि कुछ प्रदेशों में विवाह, मुण्डनादि शुभ कार्यों का सम्पादन शुभ नहीं माना जाता है, जबकि भारत के अधिकांश अन्य प्रदेशों में जैसे–उत्तरप्रदेश, राज., दिल्ली, गुजरात, महा. आदि में विवाहादि शुभ कृत्यों का परम्परया निषेध नहीं माना जाता।

✡ **चातुर्मास्यादि में विवाह मुहूर्त्त**–पंजाब, हि. प्र., दिल्ली, हरियाणा, जम्मू–कश्मीर आदि प्रदेशों में चातुर्मास (आषाढ़ शुक्ल एका. से कार्तिक शुक्ल एका. तक) में सैंकड़ों वर्षों से परम्परावश विवाहादि शुभ मुहूर्त्त मान्य माने गए हैं। मुहूर्त्त-चिन्तामणि पीयूषधारा में भी इसकी पुष्टि की गई है।

✡ **पुनः शुक्रास्तेदय**–ता. 21 मार्च, 2017 ई. को वक्री शुक्र पश्चिम में अस्त होकर 25 मार्च, 2017 ई. को वक्री अवस्था में ही पूर्व में उदय होगा।

✡ **होलाष्टक**–5 मार्च से 12 मार्च, 2017 ई. तक होलाष्टक रहेंगे। इस अवधि में भी विवाहादि शुभ कृत्य वर्जित रहेंगे, विशेषकर पंजाब, हि.प्र., जम्मू-का., हरियाणा आदि राज्यों में। जबकि कुछ राज्यों/क्षेत्रों में होलाष्टक में मंगल कार्यों का सम्पादन शुभ माना जाता है।

नीचे लिखे विवाह मुहूर्त्तों में लता (१), पात (२), युति (३), वेध (४), जामित्र (५), मृत्युबाण (६), एकार्गल (७), उपग्रह (८), क्रान्तिसाम्य (९), दग्धा तिथि (१०)–इस क्रमानुसार दस गुण दोषों की गणना की गई हैं। सीधी रेखा (।) **दोषाभाव अर्थात् गुण की सूचक** है जबकि आड़ी रेखा **(ऽ) दोष की सूचक है। मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह की युति, वेध, मृत्युबाण, क्रान्तिसाम्य**, भद्रादि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। **परन्तु जहाँ पर इन दोषों के शास्त्र सम्मत परिहार मिल जाते हैं, वहाँ सम्बद्ध ग्रह की पूजा, दानादि के पश्चात् विवाह मुहूर्त्त को शुभ एवं ग्राह्य मान लिया गया है। मुहूर्त्तों में सूक्ष्म क्रान्ति-साम्य गणित प्रक्रिया का आश्रय लिया गया है।**

विवाह मुहूर्त्तों में प्रयुक्त सांकेतिक शब्दों का स्पष्टीकरण–**विवाह मुहूर्त्तों में लग्न विवरण में १ को मेष**, २ को वृष, **३ को मिथुन**, ४ **को कर्क**, ५ को सिंह, ६ **को कन्या**, **७ को तुला**, **८ को बृश्चिक**, ९ **को धनु**, **१० को मकर**, **११ को कुम्भ** तथा **१२ की संख्या** को **मीन लग्न जानें॥ दि. ल. = दिन का लग्न ; रा. ल. = रात्रि का लग्न–**

आवश्यक नोट–जिस मुहूर्त्त में गुरु की केन्द्र–त्रिकोण में स्थिति अथवा गुरु की शुभ दृष्टिवश परिहार हो जाता है, उस मुहूर्त्त, लग्न को शुभ मुहूर्त्तों में शामिल कर लिया गया है।

वैशाख मास (अप्रैल–मई) सन् 2016 ईसवी

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
चैत्र शुक्ल १०, शनि	16 अप्रै.	४ वैशा.	मघा	मेष	सिंह	। ऽ । । । ऽ अ । ऽ । ।	रात्रि 26/37 तक क्रान्तिसाम्य दोष, रा. ल. १२ (गु.रा.दा.) शुक्र केन्द्रगते लग्नेश गुरु षष्ठस्थ-–परिहार–अत्यावश्यके
चैत्र शुक्ल ११, रवि	17 अप्रै.	५ वैशा.	मघा	मेष	सिंह	। ऽ । । । । । ऽ । ।	दि. ल. ३ (चं. श. दा.), ४ (12/13 तक, चं. गु. रा. के. दा.) 12/13 से भद्रा दोष
चैत्र शुक्ल १२, चंद्र	18 अप्रै.	६ वैशा.	उ.फा.	मेष	सिं/कं.	ऽ सू. । । ऽ शु ऽ के. ऽ नृ । । । ।	रा. ल. ९ (सू. शु. गु. के. दान), १२ (सू. चं. गु. के. दा.) (**शुक्र केन्द्रगते षष्ठस्थ गुरु परिहार**), मीन लग्न आवश्यके (**शुक्र पादवेधऽभावः**)
चैत्र शुक्ल १३, मंग	19 अप्रै.	७ वैशा.	उ.फा.	मेष	कन्या	ऽ सू. । । ऽ शु. ऽ के. । । । । ।	दि. ल. ३ (सू. शु. के. दा.) (11/41 से 18/25 तक शुक्र पादवेध) (13/47 से 17/23 तक –व्याघात दोष), रा. ल. ९ (25/10 तक) (सू. शु. के. दान)
चैत्र शुक्ल १३, मंग	19 अप्रै.	७ वैशा.	हस्त	मेष	कन्या	। । । । । ऽ चौ. ऽ । । ।	रा. ल. १० (गु. शु. पूजा व दान) (अष्टमस्थ गुरु परिहार), १२ (चं. गु. रा. पूजा व दान) (**शुक्र केन्द्रगते षष्ठस्थ गुरु परिहार**)

शुभ विवाह मुहूर्त्त—वैशाख मास (अप्रैल-मई)—सन् 2016 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
चैत्र शुक्ल १४, बुध	20 अप्रै.	८ वैशा.	हस्त	मेष	कन्या	। । । । । ऽ चौ. ऽ । । ।	दि. ल. ३ (गु. रा. के. दा.), ४ (रा. के. दा.), रा. ल. ९ (मं. गु. श. दा.), १० (गु. रा. दा.), १२(गु. दा.) (मीन लग्ने षष्ठस्थ गुरु परिहार)
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	22 अप्रै.	१० वैशा.	स्वा.	मेष	तुला	। । । । ऽ सू. ऽ रो. ऽ ऽ । ।	दि. ल. ३ (गु. रा. दा.), ४ (चं. गु. रा. दा.), रा. ल. ९ (सू. गु. दा.), १० (सू. गु. रा. दा.), १२ (षष्ठस्थ गुरु परिहार) मीन लग्न-आवश्यके
वैशा. कृष्ण १, शनि	23 अप्रै.	११ वैशा.	स्वा.	मेष	तुला	। । । । ऽ सू. । । ऽ । ।	दि. ल. ३ (10/18 तक) (सू. चं. दान)
वैशा. कृष्ण २, रवि	24 अप्रै.	१२ वैशा.	अनु	मेष	वृश्चिक	। ऽ ऽ मं. । ऽ बु. । ऽ व्य. । । ।	रा. ल. ९ (गु. श. पूजा व दान), १० (गु. रा. दा.), १२ (गु. पुज्य) (दोप. 13/50 तक मृत्युबाण दोष) (18/24 तक व्यतिपात) भौम युति परिहार (आवश्यके)
वैशा. कृष्ण ३, चंद्र	25 अप्रै.	१३ वैशा.	अनु	मेष	वृश्चिक	। ऽ ऽ मं. । ऽ बु. ऽ अ. । । । ।	दि. ल. ३ (चं. मं. गु. दा.) (षष्ठस्थ चन्द्र परिहार), ४ (चं. के. दा.) भौमयुति परिहार-आवश्यके

✲ आषाढ़ मास (जून—जुलाई) ✲ सन् 2016 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आषा. शुक्ल ९, बुध	13 जुला	३० आषा	स्वा.	मिथुन	तुला	। । । । । । । । । ।	दि. ल. ४ (बु. शु. के. दा.), ६ (चं. गु. रा. दा.), गोधूलि, रात्रौ लग्नऽभावः
आषा. शुक्ल१०, गुरु	14 जुला	३१ आषा	स्वा.	मिथुन	तुला	। । । । । । । । । ।	दि. ल. ४ (6/52 तक) (गु. रा. के. दा.) बु.शु. केन्द्रगते नक्षत्रान्त का परिहार

✲ श्रावण मास (जुलाई—अगस्त) ✲ सन् 2016 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आषाढ़ पूर्णिमा, मंग.	19 जुला	४ श्राव.	उ.षा.	कर्क	ध./मक.	। ऽ । । ऽ सू. ऽ अ ऽ ऽ । ।	दि. ल. ९ (17/26 बाद) (लग्नस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभदा व अष्टमस्थ शुक्र परिहार) (सू. चं. शु. दा. व पूजा), रा. ल. १२ (षष्ठस्थ गुरु परिहार, बु. शु. त्रिकोणस्थे शुभदाः) (चं. गु. पूजा व दान) (मीन लग्न-आवश्यके)
श्राव. कृष्ण १, बुध	20 जुला	५ श्राव.	उ.षा.	कर्क	मकर	। । । । । ऽ नृ. ऽ ऽ । ।	दि. ल. ६ (सू. गु. के दान), ७ (सू. शु. दान)
श्राव. कृष्ण १, बुध	20 जुला	५ श्राव.	श्रवण	कर्क	मकर	। । । । ऽ सू. शु. ऽ नृ. । ऽ । ।	सायं ल. ९ (सू. बु. शु. दान) (गुरु त्रिकोणस्थ अष्टमस्थ शुक्र परिहार), रा. ल. १२ (गु. दान व पूजा) (बुध-शुक्र त्रिकोणस्थ षष्ठस्थ गुरु परिहार)
श्राव. कृष्ण २, गुरु	21 जुला	६ श्राव.	श्रवण	कर्क	मकर	। । । । ऽ सू. ऽ नृ. । ऽ । ।	दि. ल. ६ (गु. रा. दान), ७ (सू. गु. दान)
श्राव. कृष्ण २, गुरु	21 जुला	६ श्राव.	धनि	कर्क	म./कुंभ	। । । ऽ बु. शु.ऽबु. शु. । । । । ।	सायं ल. ९ (सू. बु. शु. दान) (अष्टमस्थ शुक्र परिहार), रा. ल. १२ (षष्ठस्थ गुरु परिहार, शुक्र त्रिकोणस्थे शुभदा (27/42 से बुध पादवेध)
श्राव. कृष्ण ५, रवि	24 जुला	९ श्राव.	उ.भा.	कर्क	मीन	। । । । ऽ गु. ऽ रो.। ऽ । ।	दि. ल. ७ (13/37 बाद) (चं. गु. पूज्य व दान), बुध-शुक्र केन्द्रस्थ होने से षष्ठस्थ चन्द्र परिहार सायं ल. ९ (शु. दा.) (अष्टमस्थ शुक्र परिहार), रा. ल. १२ (मं. गु. दा.) (षष्ठस्थ गुरु परिहार), ३ (श. दा.) रात्रि 21/47 से दग्धातिथि दोष (परिहार) (मीन व मिथुन लग्न अत्यावश्यके)
श्राव. कृष्ण ६, चन्द्र	25 जुला	१० श्राव.	उ.भा.	कर्क	मीन	। । । । ऽ गु. ऽ रो. । ऽ । ।	दि. ल. ६ (सप्तमस्थ चन्द्र पूज्य), ७ (12/26 तक) (षष्ठस्थ चंद्र परिहार), दग्धा तिथि दोष परिहार
श्राव. कृष्ण ६, चन्द्र	25 जुला	१० श्राव.	रेव	कर्क	मीन	। । । ऽ गु. । । । । । । (ऽ)	दि. ल. ७ (12/26 बाद), सायं ल. ९ (अष्टमस्थ शुक्र परिहार) लग्नोऽपरि गुरु दृष्टि होने से दग्धातिथिदोष परिहार, 19/46 से भद्रा विचार (भूलोके)

शुभ विवाह मुहूर्त—श्रावण मास (जुलाई-अगस्त)—सन् 2016 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
श्राव.कृ.१०/११, शुक्र	29 जुला	१४ श्राव.	रोहि	कर्क	वृष	ऽ बु. । । ।ऽ मं श.ऽ नृ ।ऽ । ।	दि. ल. ६ (बु. पूज्य व दान), भद्रा परिहार (स्वर्गे), सायं ल. ९ (सू. शु. दान, अष्टमस्थ शुक्र परिहार), रा. ल. १२ (शुक्र त्रिकोणस्थ होने से षष्ठस्थ गुरु परिहार) (गु. दा.), ३ (चं. दा.)
श्राव. शुक्ल १, बुध	3 अग.	१९ श्राव.	मघा	कर्क	सिंह	। ।ऽ शु. । । । । । । ।	रा. ल. ३ (क्षीण चंद्र-चं. शु. पूज्य व दान)
श्राव. शुक्ल २, गुरु	4 अग.	२० श्राव.	मघा	कर्क	सिंह	। ।ऽ शु. । । । । । । ।	दि. ल. ६ (चं. गु. रा. दान), ७ (के. दान), ९ (सू. दा.), (23/12 से 27/12 तक परिघ दोष) (रात्रौ लग्नऽभाव:)
श्राव. शुक्ल ४, शनि	6 अग.	२२ श्राव.	उ.फा.	कर्क	सिं./कं.	। ।ऽ गु. । ।ऽ अ. । । । ।	दि. ल. ६ (10/54 तक, चं. दा.), ७ (चं. के. दान), ९ (सू. दान), गोधूलि, रा. ल. ३ (शु. दा.)
श्राव. शुक्ल ५, रवि	7 अग.	२३ श्राव.	हस्त	कर्क	कन्या	। । । । । । ।ऽ । ।	दि. ल. ७ (चं. के. दान), ९ (सू. दा.), गोधूलि, रा. ल. ३ (शु. दान)
श्राव. शु. ५/६, चंद्र	8 अग.	२४ श्राव.	चित्रा	कर्क	कं./तुला	।ऽ । । ।ऽ नृ. । । ।ऽ	दि. ल. ७ (बु. गु. शु. एकादशस्थ शुभदा), ९ (गु. शु. त्रिकोणस्थ शुभदा), रा. ल. ३ (शु. दा.) दग्धा तिथि परिहार
श्राव. शु. ६/७, मंग.	9 अग.	२५ श्राव.	चित्रा	कर्क	तुला	।ऽ । । ।ऽ नृ. । । । ।	दि. ल. ६ (बु. रा. दान), ७ (लग्नस्थ चन्द्र परिहार) (चं. दान) (11/53 तक)
श्राव. शुक्ल ११, रवि	14 अग.	३० श्राव.	मूल	कर्क	धनु	ऽ मं. रा. ऽ । । । ।ऽ । । ।	दि. ल. ६ (चं. रा. दान), ७ (के. दान), ९ (16/37 तक) 16/37 से मृत्युबाण दोष प्रा.)

☀ भाद्रपद मास (अगस्त–सितम्बर) ☀ सन् 2016 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
श्रावण पूर्णिमा, गुरु	18 अग.	३ भाद्र.	धनि	सिंह	मक/कुंभ	। । । । । ।ऽ अ ऽ । ।	दि. ल. ६ (बु. दा.) (मृत्युबाण दोष प्रात: 8/06 तक), ७ (के. दान), ९ (श. दा.), रा. ल. १० (सू. बु. शु. दा.), 19/58 से 22/22 तक अतिगण्ड दोष
भाद्र. कृ. २/३, शनि	20 अग.	५ भाद्र.	उ.भा.	सिंह	मीन	। । । ।ऽ बु. गु. ऽ नृ. । । । ।	रा. ल. १२ (20/30 से 21/32 तक) (चं. बु. गु. दान) (लग्नस्थ चन्द्र परिहार), तदुपरान्त भद्रा (भूलोके)
भाद्र. कृ. ३/४, रवि	21 अग.	६ भाद्र.	उ.भा.	सिंह	मीन	। । । ।ऽ बु. गु. ऽ नृ. । । । ।	दि. ल. ६ (चं. बु. पूज्य व दान) (8/18 बाद), ९ (श. दान), १० (18/46 तक, शु. दान) (अष्टमस्थ शुक्र परिहार)
भाद्र. कृष्ण ८, गुरु	25 अग.	१० भाद्र.	रोहिणी	सिंह	वृष	। । । ।ऽ मं. श. ऽ रो ऽ ऽ । ।	दि. ल. ७ (12/06 बाद) (चं. दा.) (अष्टमस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभदा), ९ (षष्ठस्थ चन्द्र परिहार) (श. दा.), सायं ल. १० (शु. दान), गोधूलि च., रा. ल. ३ (चं. मं. दान), ४ (शु. के. दान)
भाद्र. कृष्ण ९, शुक्र	26 अग.	११ भाद्र.	रोहि.	सिंह	वृष	। । । ।ऽ मं. श. । ।ऽ । ।	दि. ल. ६ (मं. शु. श. दान), ७ (10/52 तक) (चं. मं. दान) अष्टमस्थ चंद्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभदा
भाद्र. कृ.९/१०, शुक्र	26 अग.	११ भाद्र.	मृग	सिंह	वृ./मिथु	ऽ के. ऽ । ।ऽ मं. । ।ऽ ।ऽ	दि. ल. ७ (अष्टमस्थ चन्द्र परिहार) (शु. दा.), ९ (षष्ठस्थ चन्द्र परिहार) (चं. दा.), १० (17/20 तक) (मं. के. दान), 17/20 से 20/56 तक वज्र योग दोष, 18/14 से -दग्धातिथि विचार, 27/52 से मृत्युबाण दोष)
भाद्र. शुक्ल १, शुक्र	2 सितं	१८ भाद्र.	उ.फा.	सिंह	सिं./कं.	।ऽ ऽ बु. गु. । । । । । । ।	दि. ल. ९ (चं. बु. गु. दा.), १० (सू. बु. गु. दा.), दिवस लग्ने क्षीण चन्द्र (आवश्यके) रा. ल. १२ (चं., बु. गु. दा.), ३ (बु. गु. दान), ४ (बु. गु. शु. दान)
भाद्र. शुक्ल २, शनि	3 सितं	१९ भाद्र.	उ.फा.	सिंह	कन्या	।ऽ ऽ बु. गु. । ।ऽ रो. । । । ।	दि. ल. ६ (चं. बु. गु. शु. दान, लग्नस्थ चन्द्र पूज्य), ७ (सू. चं. गु. शु. दान), ९ (14/27 तक)
भाद्र. शु. २/३, शनि	3 सितं	१९ भाद्र.	हस्त	सिंह	कन्या	। ।ऽ शु. । ।ऽ रो. । । । ।	दि. ल. ९ (14/27 बाद) (शु. दा.), १० (सू. शु. रा. दान), रा. ल. १२ (चं. बु. गु. दा.), ३-(शु. दा.), ४ (शु. दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त्त—आश्विन मास (सितं.-अक्तू.)—सन् 2016 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
भाद्र. शुक्ल ३, रवि	4 सितं	२० भाद्र.	हस्त	सिंह	कन्या	।।ऽशु. ।।।।।।।	दि. ल. ६ (लग्नस्थ चन्द्र परिहार, चं. शु. दान व पूज्य), ७ (चं. शु. दान), ९ (शु. दा.), १० (16/54 तक)
भाद्र. शु. ३/४, रवि	4 सितं	२० भाद्र.	चित्रा	सिंह	कन्या	।।।।।।।।।।	दि. ल. १० (16/54 बाद), रा. ल. १२ (चं. बु. गु. शु. दा.), ३, ४ (शु. दान)

❊ आश्विन मास (सितम्बर—अक्तूबर) ❊ सन् 2016 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
आश्विन शु. ९, चंद्र	10 अक्तू	२५ आश्वि	श्रवण	कन्या	मकर	ऽमं. ।।।।ऽचौ ।।।।	रा. ल. ४ (चं. दान व पूजा)
आश्विन शु. १०, मंग.	11 अक्तू	२६ आश्वि	श्रवण	कन्या	मकर	ऽमं. ।।।।ऽचौ ऽ।।।	दि. ल. ७ (मं. के. दान), १० (लग्नस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभदाः) (चं. दा.), सायं ल. १ (शु. रा. दा.)
आश्विन शु. १३, शुक्र	14 अक्तू	२९ आश्वि	उ.भा.	कन्या	मीन	।।।ऽबु. गु. ।।।।।।	गोधूलि, सायं ल. १२ (सू. दा.) (अत्यावश्यकता में), मेष लग्ने अष्टमस्थ शुक्र का परिहार नहीं है। रात्रौ-लग्नऽभावः (21/50 से 27/13 तक बुध पादवेध, 27/13 से गुरु पादवेध)

❊ कार्तिक मास (अक्तूबर—नवम्बर) (पर्वतीय प्रदेशों के लिए) ❊ सन् 2016 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
कार्ति. कृष्ण ४, बुध	19 अक्तू	४ कार्ति	रोहि.	तुला	वृष	।ऽ।।ऽशु. ऽअऽऽ।।	दि. ल. १० (सू. शु. रा. दान), १२ (बु. गु. दान व पूजा) (व्यतिपात प्रातः 9/51 तक), रा. ल. ४ (24/08 तक, शु. दान)
कार्ति. कृ. ४/५, बुध	19 अक्तू	४ कार्ति	मृग.	तुला	वृष	ऽके. ।।।ऽश. ।।ऽ।।	रा. ल. ४ (24/08 बाद) (शु. दान), ६ (शु. श. दान)
कार्ति. कृष्ण ५, गुरु	20 अक्तू	५ कार्ति	मृग.	तुला	वृ/मिथु	ऽके. ।।।ऽश. ।।ऽ।।	दि. ल. १० (चं. दा., षष्ठस्थ चन्द्र परिहार), १२ (बु. गु. पूज्य व दान)
कार्ति.कृ.१०/११,मंग	25 अक्तू	१० कार्ति	मघा	तुला	सिंह	।।।।।ऽरो. ।ऽ।।	दि. ल. १२ (गुरु केन्द्रगत होने से षष्ठस्थ चन्द्र परिहार, चं. दा. व पू.), गोधूलि, रात्रौ लग्नऽभाव
कार्ति.कृ.११/१२,बुध	26 अक्तू	११ कार्ति	उ.फा.	तुला	सिंह	।।।।।।।।ऽ।ऽ	रा. ल. ४ (25/04 बाद), रा. ल. ६ (शु. दा.), दग्धा तिथि परिहार
कार्ति. शुक्ल २, मंग	1 नवं.	१७ कार्ति	अनु.	तुला	वृश्चिक	।।।।।ऽचौ. ।।।।	दि. ल. १२ (सू. गु. दान व पूजा), गोधूलि, रा. ल. ३ (अष्टमस्थ मंगल ऊपर गुरु दृष्टि शुभदा, मं. दान), ६ (शु. दा.)
कार्ति. शुक्ल ३, बुध	2 नवं.	१८ कार्ति	अनु.	तुला	वृश्चिक	।।।।।।।।।।	दि. ल. ९ (चं. दा.), १२ (सू. गु. पूज्य व दान), गोधूलि च
कार्ति. शुक्ल ४, गुरु	3 नवं.	१९ कार्ति	मूल	तुला	धनु	ऽरा. ।।।।ऽरो. ऽऽ।।	रा. ल. ६ (शु. दा.) भद्रा परिहार (पाताले)
कार्ति. शु. ४/५, शुक्र	4 नवं.	२० कार्ति	मूल	तुला	धनु	ऽरा. ।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (गुरु केन्द्रस्थ होने से लग्नस्थ चन्द्र परिहार), १२ (गु. दा.), गोधूलि, भद्रा-परिहार
कार्ति. शुक्ल ७, चंद्र	7 नवं.	२३ कार्ति	श्रवण	तुला	मकर	।ऽ।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (शु. दा.), १२ (गु. पूज्य व दान), गोधूलि, रा. ल. ६ (28/18 तक, गु. दा.)
कार्ति. शु. ७/८, चंद्र	7 नवं.	२३ कार्ति	धनि.	तुला	मकर	ऽमं. ।।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ६ (28/18 बाद) (गु. दा.)
कार्ति. शु. ८/९, मंग.	8 नवं.	२४ कार्ति	धनि.	तुला	म./कुंभ	ऽमं. ।।।।ऽनृ. ।ऽ।।	दि. ल. ९ (शुक्र पूज्य व दान), १२ (मं. गु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ६ (28/37 तक, मं. गु. दा.)
कार्ति.शु.११/१२,शुक्र	11 नवं.	२७ कार्ति	उ.भा.	तुला	मीन	।ऽ।ऽगु. ।।।।।ऽ	दि. ल. ९ (गु. शु. दा.), १२ (लग्नस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभदाः, शुक्र केन्द्रस्थ शुभदा), -दग्धा तिथि परिहार
कार्ति.शु.११/१२,शुक्र	11 नवं.	२७ कार्ति	रेव.	तुला	मीन	ऽसू. ।।।ऽगु. ।ऽ।।ऽ	रा. ल. ६ (चं. गु. दा व पूजा) दग्धा तिथि परिहार
कार्ति. शुक्ल १३, शनि	12 नवं.	२८ कार्ति	रेव.	तुला	मीन	ऽसू. ।।।ऽगु. ऽरो. ऽ।।।	दि. ल. ९ (सू. गु. शु. दा.), १२ (लग्नस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभदा) (गु. शु. दा.)

शुभ विवाह मुहूर्त–मार्गशीर्ष मास (नवं.-दिसं.) सन् 2016 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्राशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
✲ मार्गशीर्ष मास (नवम्बर–दिसम्बर) ✲ सन् 2016 ई.							
मार्ग. कृ. २/३, बुध	16 नवं.	२ मार्ग.	मृग	वृश्चि.	वृ./मिथु	ऽ के. ।।।ऽ श. ।।।।।	रा. ल. ६ (सू. गु. दा.), ७ (रा. दा.) भद्रा परिहार (स्वर्गगते) 18/17 तक क्षीण सूर्यांश
मार्ग. कृष्ण १०, बुध	23 नवं.	९ मार्ग.	उ.फा.	वृश्चि.	सिं./कं.	ऽ बु. ।।।।।।ऽ।ऽ	दि. ल. ९ (गु. शु. रा. दा.), १२ (चं. गु. पूज्य व दा.) १ (चं. गु. दा.) (षष्ठस्थ चंद्र परि.), गोधूलि, रा. ल. ६ (लग्नस्थ चन्द्र परिहार, चं. गु. दा.), ७ (चं. शु. दा.) भद्रा परिहार
मार्ग. कृष्ण ११, गुरु	24 नवं.	१० मार्ग.	उ.फा.	वृश्चि.	कन्या	ऽ बु. ।।।।ऽ रो. ।ऽ।।	दि. ल. ९ (प्रात: 9/21 तक) (शु. दा.)
मार्ग. कृष्ण ११, गुरु	24 नवं.	१० मार्ग.	हस्त	वृश्चि.	कन्या	।।ऽ गु. ।।ऽ रो. ।ऽ।।	दि. ल. ९ (9/21 बाद, शु. दा.), १२ (चं. गु. पू. व दान), १ (चं. दा., षष्ठस्थ चन्द्र परिहार) रा. ल. ६ (चं. गु. दा.) (लग्नस्थ चन्द्र परिहार), ७ (चं. गु. दा.)
मार्ग. कृ.११/१२,शुक्र	25 नवं.	११ मार्ग.	हस्त	वृश्चि.	कन्या	।।ऽ गु. ।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (शु. दा.)
मार्ग. कृ.११/१२,शुक्र	25 नवं.	११ मार्ग.	चित्रा	वृश्चि.	कं./तुला	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. १२ (चं. गु. दान व पूज्य), १ (सू. बु. गु. श. दा.), (षष्ठस्थ चंद्र परिहार), रा. ल. ६ (गु. दा.) (27/57 से मृत्युबाण शुरु)
मार्ग. शुक्ल १, बुध	30 नवं.	१६ मार्ग.	मूल	वृश्चि.	धनु	ऽ रा. ।ऽ बु. ।।ऽ चौ. ऽ।।।	रा. ल. ६ (26/37 बाद, चं. गु. दा.), ७ (शु. दा., 29/40 तक) तदुपरान्त शूल योग विचारणीय
मार्ग. शुक्ल २, गुरु	1 दिसं.	१७ मार्ग.	मूल	वृश्चि.	धनु	ऽ रा. ।ऽ बु. ।।ऽ चौ. ऽ।।।	दि. ल. ९ (चं. बु. शु. दान, लग्नस्थ चन्द्र परिहार) (शूल दोष 7/40 तक), १२ (गु. दा.), १ (गु. दा.), रा. ल. ६ (गु. दा.), (15/51 से 22/28 तक बुध पादवेध विचार्य), ७ (शु. दा.)
मार्ग. शुक्ल ४, शनि	3 दिसं.	१९ मार्ग.	उ.षा.	वृश्चि.	ध./मक	।।ऽ शु. ।।ऽ रो. ।।।।	दि. ल. ९ (चन्द्र लग्नस्थ परिहार, पूज्य च, बुध-गु. केन्द्रस्थ), १२ (गु. दा.), १ (गु. दा.), रा. ल. ६ (गु. दा.), ७ (के. दान), भद्रा परिहार (पाताले)
मार्ग. शुक्ल ५, रवि	4 दिसं.	२० मार्ग.	उ.षा.	वृश्चि.	मकर	।।ऽ शु. ।।।।।।।	दि. ल. ९ (9/07 तक) (बु. दा.)
मार्ग. शुक्ल ५, रवि	4 दिसं.	२० मार्ग.	श्रव.	वृश्चि.	मकर	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (9/07 बाद) (बु. दा.), १२ (गु. दा. व पूज्य), १ (गु. दा.) 25/04 से मृत्युबाण दोष प्रा.
मार्ग. शुक्ल ९, गुरु	8 दिसं.	२४ मार्ग.	उ.भा.	वृश्चि.	मीन	।।।।।ऽ नृ. ।।।।(ऽ)	दि. ल. १२ (चं. गु. दान व पूज्य) (लग्नस्थ चन्द्र परिहार), १ (चं. गु. दा.), गोधूलि, रात्रौ लग्नऽभाव: (23/25 से व्यतिपात दोष तथा 24/37 से दग्धा तिथि विचार)
मार्ग. शुक्ल १०, शुक्र	9 दिसं.	२५ मार्ग.	रेव.	वृश्चि.	मीन	।ऽ।।।ऽ चौ. ऽऽ।।(ऽ)	रा. ल. ६ (चं. गु. दान व पूजा), ७ (चं. गु. दा.) (20/30 तक व्यतिपात) दग्धा तिथि परिहार
मार्ग. शुक्ल ११. शनि	10 दिसं.	२६ मार्ग.	रेव.	वृश्चि.	मीन	।ऽ।।।ऽ चौ. ।ऽ।।	दि. ल. ९ (प्रात: 8/29 तक) (बु. दा.)
मार्ग. शु.११/१२,शनि	10 दिसं.	२६ मार्ग.	अश्विनी	वृश्चि.	मेष	।।।।ऽ गु. ऽ चौ. ।।।।	दि. ल. ९ (8/29 बाद, बु. दा.), १२ (गु. दा.), १ (चं. दा., लग्नस्थ चन्द्र परिहार), गोधूलि, रा. ल. ६ (चन्द्र अष्टमस्थ परिहार) (चं. गु. दा.), ७ (चं. के. दा.) भद्रा परिहार
मार्ग. शुक्ल १३, चन्द्र	12 दिसं.	२८ मार्ग.	रोहि.	वृश्चि.	वृष	।।।।।।।ऽ।।	रा. ल. ६, ७ (अष्टमस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभदा:) (चं. दान व पूज्य)
मार्ग. शु.१४/१५,मंग.	13 दिसं.	२९ मार्ग.	रोहि.	वृश्चि.	वृष	।।।।।।।ऽ।।	दि. ल. ९ (षष्ठस्थ चन्द्रोऽपरि गुरु दृष्टि शुभदा:) (चं. दा.), १०, १२ (गु. दा.), १ (गु. दा.) भद्रा परिहार
✲ माघ मास (जनवरी–फरवरी) ✲ सन् 2017 ई.							
माघ कृ. ३/४, रवि	15 जन.	२ माघ	मघा	मकर	सिंह	।।ऽ रा. ।।ऽ मृ. ।।।।	रा. ल. ६ (22/44 तक) (षष्ठस्थ शुक्र परिहार) मृत्युबाण दोष 7/12 से 19/00 तक, राहु युति परिहार
माघ कृ. ४/५, चन्द्र	16 जन.	३ माघ	उ.फा.	मकर	सिं./कं.	।।।।ऽ मं. ऽ अ ।ऽ।।	रा. ल. ६ (23/18 बाद), (षष्ठस्थ शुक्र परिहार), ७ (चं. दा.), ९ (सू. बु. शु. दा.)
माघ कृष्ण ५, मंग.	17 जन.	४ माघ	उ.फा.	मकर	कन्या	।।।।ऽ मं. ।।ऽ।।	दि. ल. १२ (चं. गु. दान व पूज्य), १ (छटे चंद्र परिहार) (12/03 तक) (चं. गु. दा.), ३, गोधूलि च., रा. ल. ६ (षष्ठस्थ शुक्र परिहार)

शुभ विवाह मुहूर्त्त—माघ मास (जनवरी—फरवरी, सन् 2017 ई.)

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण (भा. स्टैं. टा. घंटा मिंट में)
माघ कृ. ५/६, मंग.	17 जन.	४ माघ	हस्त	मकर	कन्या	ऽ बु. । । । । । ऽ । । ।	रा. ल. ७ (चं. गु. दा.), ९ (बु. शु. दा.)
माघ कृष्ण ६, बुध	18 जन.	५ माघ	हस्त	मकर	कन्या	ऽ बु. । । । । ऽ नृ. ऽ । । ।	दि. ल. १२ (चं. गु. दान व पूज्य), १-छटे चन्द्र परिहार (चं. गु. दा.), ३ (सू. बु. दा.), गोधूलि, रा. ल. ६ (चं. गु. शु. दा.) (षष्ठस्थ शुक्र परिहार), ७ (चं. गु. दा.) (तुला लग्न 26/38 तक) भद्रा परिहार
माघ कृष्ण १०, रवि	22 जन.	९ माघ	अनु.	मकर	वृश्चिक	। ऽ । । । ऽ रो. ऽ ऽ । ।	दि. ल. १ (चं. गु. दा.) (अष्टमस्थ चन्द्र परिहार), ३ (चं. दा.), गोधूलि, रा. ल. ६ (शु. दा.), ७ (चं. गु. दा.), (भद्रा परिहार)
माघ कृष्ण ११, चन्द्र	23 जन.	१० माघ	अनु.	मकर	वृश्चिक	। ऽ । । । । । । ऽ । ।	दि. ल. १ (चं. दा.) अष्टमस्थ चन्द्र परिहार,
माघ कृष्ण १२, मंग.	24 जन.	११ माघ	मूल	मकर	धनु	ऽ गु. । । । । । ऽ व्या. ऽ । ऽ	रा. ल. ६ (षष्ठस्थ शुक्र परिहार), ७ (गु. दा.) (15/32 से 19/08 तक व्याघात वि.) मृत्युबाण 15/15 तक
माघ शुक्ल २, रवि	29 जन.	१६ माघ	धनि	मकर	म./कुंभ	। ऽ । । । ऽ चौ. । । । ।	दि. ल. २ (13/03 बाद, 13/03 तक व्यतिपात)
माघ शुक्ल ५, बुध	1 फर.	१९ माघ	रेव	मकर	मीन	। । । । । ऽ मृ. । । । ।	रा. ल. ७ (23/58 तक) 23/59 से मृत्युबाण दोष प्रा.
माघ शुक्ल ६, गुरु	2 फर.	२० माघ	रेव	मकर	मीन	। । । । । । । । । ।	दि. ल. १ (गु. दा.), २ (रा. दा.), गोधूलि (प्रातः 11/47 तक मृत्युबाण दोष)
माघ शुक्ल ६, गुरु	2 फर.	२० माघ	अश्वि.	मकर	मेष	ऽ मं. ऽ । । ऽ गु. । । ऽ । ।	रा. ल. ८ (चं. के. दान) (षष्ठस्थ चन्द्र परिहार)
माघ शुक्ल ७, शुक्र	3 फर.	२१ माघ	अश्वि	मकर	मेष	ऽ मं. ऽ । । ऽ गु. ऽ अ । ऽ । ।	दि. ल. १ (बुध त्रिकोणस्थ होने से लग्नस्थ चन्द्र परिहार, चं. दा.), २ (चं. रा. दान)
माघ शुक्ल ९, रवि	5 फर.	२३ माघ	रोहि	मकर	वृष	। । । । । ऽ नृ. । ऽ । ।	रा. ल. ८ (चं. के. दान) (21/28 तक क्रान्तिसाम्य दोष)
माघ शुक्ल १०, चन्द्र	6 फर.	२४ माघ	रोहि	मकर	वृष	। । । । । । ऽ । । ।	दि. ल. १ (गु. रा. दा.), २ (चं. दा.) (वृष लग्ने लग्नस्थ चन्द्र परिहार)
माघ शुक्ल ११, मंग.	7 फर.	२५ माघ	मृग	मकर	मिथुन	ऽ के. ऽ । ऽ बु. । ऽ चौ. । ऽ । ।	दि. ल. २ (12/57 बाद, रा. दा.)

✲ फाल्गुन मास (फरवरी—मार्च) ✲ सन् 2017 ई.

पक्ष तिथि वार	ता. अंग्रे.	प्रविष्टे	वि. नक्षत्र	सूर्यराशि	चंद्रराशि	लतादि दश गुण-दोष रेखाएँ	शुभ विवाह लग्न, परिहार में ग्रह की पूजा दानादि का विवरण
फाल्गु. कृष्ण४, मंग.	14 फर.	३ फागु.	हस्त	कुम्भ	कन्या	। । । ऽ शु. ऽ शु. । । ऽ । ऽ	दि. ल. १ (चं. मं. गु. दा.) (षष्ठस्थ चन्द्र परिहार), २ (रा. दा.), ४ (सप्तमस्थ बुध पूज्य, परिहार च) (15/00 से 16/21 तक शुक्र पादवेध) (18/56 से 20/56 तक शूल दोष), रा. ल. ८ (के. दा.), १० (शु. रा. दा.) (दग्धा तिथि परिहार)
फाल्गु. कृ. ५, बुध	15 फर.	४ फागु.	हस्त	कुम्भ	कन्या	। । । ऽ शु. ऽ शु. ऽ अ. । ऽ । ।	दि. ल. १ (चं. गु. दा.) षष्ठस्थ चन्द्र परिहार
फाल्गु. कृ. ७, शनि	18 फर.	७ फागु.	अनु.	कुम्भ	वृश्चिक	ऽ बु. । । । । ऽ चौ. । ऽ । ।	रा. ल. ८ (लग्नस्थ चन्द्र परिहार), १० (शु. दा.) (20/25 से 24/01 तक व्याघात विचार)
फाल्गु. कृ. ८, रवि	19 फर.	८ फागु.	अनु.	कुम्भ	वृश्चिक	ऽ बु. । । । । ऽ चौ. ऽ व्या. ऽ । ।	दि. ल. १ (अष्टमस्थ चन्द्र परिहार, चं. दान व पूज्य), २ (चं. ग. दा.), ४ (सप्तमस्थ बुध परिहार)
फाल्गु. शुक्ल१, चंद्र	27 फर.	१६ फागु.	उ.भा.	कुम्भ	मीन	ऽ श. ऽ । । । ऽ चौ. । । । ।	रा. ल. १० (29/57 बाद) (चं. शु. दा.)
फाल्गु शुक्ल २, मंग.	28 फर.	१७ फागु.	उ.भा.	कुम्भ	मीन	ऽ श. ऽ । । । । । । । ।	दि. ल. १ (चं. गु. दा.), २ (रा. दा.), ४ (सू. बु. दा.) रा. ल. ८ (के. दा.), १० (शु. दा., मकर लग्न 28/44 तक)
फा. शु. ६/७, शनि	4 मार्च	२१ फागु.	रोहि.	कुम्भ	वृष	। । । । । ऽ अ. ऽ वि. ऽ । ।	रा. ल. ८ (लग्नेश मं. षष्ठस्थ परिहार) (चं. मं. दा.), १० (शु. दा.)

आगामी वर्ष में सम्भावित समय शुद्धि— (1) गुरु लगभग 11 अक्तूबर, 2017 ई० को पश्चिम में अस्त होकर लगभग 6 नवम्बर, 2017 ई० को पूर्व में उदय होगा।
(2) शुक्र लगभग 15 दिसम्बर 2017 ई० को पूर्व में अस्त होकर 1 फरवरी, 2018 ई० को पश्चिम में उदय होगा।

दोषयुक्त एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्त-संवत् २०७३ वि. (सन् 2016-17 ई.)

नीचे वि. संवत् २०७३ में उन विशेष दोषपूर्ण एवं अशुद्ध विवाह मुहूर्तों का विवरण दिया जा रहा है, जिनके अन्तर्गत विवाह नक्षत्र होते हुए भी उनको शुद्ध विवाह मुहूर्तों में सम्मिलित नहीं किया गया। जिज्ञासु पाठकों की शंका समाधान के लिए आगे कुछ अशुद्ध एवं त्याज्य विवाह मुहूर्तों का विवरण लिख रहें हैं जिनका प्रत्यक्षत: कोई शास्त्रीय परिहार नहीं मिलता है। गत पृष्ठों में जिन मुहूर्तों में किसी क्रूर ग्रह की युति का परिहार मिल गया है, उन्हें शुद्ध मुहूर्तों में शामिल कर लिया गया है।

निवेदक—पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी, गणितकर्त्ता

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
20 अप्रै.	बुध	चित्रा	केतुवेध
21 अप्रै.	गुरु	चित्रा	केतुवेध
22 अप्रै.	शुक्र	चित्रा	केतुवेध
(25 अप्रै. से शुक्र वार्धक्यदोष प्रारम्भ)			
28 अप्रै. से 9 जुलाई तक शुक्र अस्त			
9 जुलाई से 12 जुला. तक शुक्र बाल्यत्वदोष			
12 जुला.	मंग.	चित्रा	केतुवेध, दग्धातिथि
12 जुला.	मंग.	स्वा.	लग्नाभाव
15 जुला.	शुक्र	अनु	मासान्त
16 जुला.	शनि	अनु	संक्रान्ति
17 जुला.	रवि	मूल	सूर्यवेध, मृत्युबाण
18 जुला.	चन्द्र	मूल	सूर्यवेध
22 जुला.	शुक्र	धनि.	9/31 तक बुधपादवेध 9/31 से 15/25 तक शुक्र पादवेध, भद्रा
26 जुला.	मंग.	रेव	गुरुपादवेध (प्रात: 5/06 से 11/06 तक)
26 जुला.	मंग.	अश्वि	राहुवेध, मृत्युबाण दोष
27 जुला.	बुध	अश्वि	राहुवेध, मृत्युबाण दोष
29 जुला.	शुक्र	मृग.	लग्नाभाव:
30 जुला.	शनि	मृग.	9/19 से 26/38 तक क्रान्तिसाम्य दोष
5 अग.	शुक्र	उ.फा.	लग्नऽभाव
7 अग.	रवि	उ.फा.	लग्नऽभाव, नक्षत्रान्त
8 अग.	चन्द्र	हस्त	लग्नऽभाव, दग्धा-तिथि
9 अग.	मंग.	स्वा.	केतुवेध
10 अग.	बुध	स्वा.	केतुवेध
11 अग.	गुरु	अनु	मंग.-शनि युति, 26/19 तक क्रान्तिसाम्य
12 अग.	शुक्र	अनु	मंग.-शनि युति अपरिहार्य

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
13 अग.	शनि	मूल	27/13 तक वैधृति, 28/25 तक विष्कम्भ दोष, लग्नऽभाव
15 अग.	चन्द्र	उ.षा.	मासान्त
16 अग.	मंग.	उ.षा.	संक्रान्ति
17 अग.	बुध	श्रवण	सूर्य-वेध, 19/33 से मृत्युबाण दोष
17 अग.	बुध	धनि	मृत्युबाण
21 अग.	रवि	रेव.	भुजंगपात
22 अग.	चन्द्र	रेव.	भुजंगपात
22 अग.	चन्द्र	अश्वि	राहु वेध
23 अग.	मंग.	अश्वि	राहु वेध
27 अग.	शनि	मृग	मृत्युबाण, दग्धतिथि
5 सितं.	चन्द्र	चित्रा	क्रान्तिसाम्य, मृत्युबाण
5 सितं.	चन्द्र	स्वा.	मृत्युबाण, केतुवेध
6 सितं.	मंग.	स्वा.	केतुवेध
(6 सितं.-(20घं 08मि) से गुरु वार्धक्यदोष शुरु)			
(9 सितं. से 7 अक्तू. तक गुरु अस्त)			
10 अक्तू.-22/37 तक गुरु बाल्यत्वदोष)			
11 अक्तू.	मंग.	धनि.	भुजंगपात
12 अक्तू.	बुध	धनि.	भद्रा, भुजंगपात
15 अक्तू.	शनि	उ.भा.	मृत्युबाण, भद्रा
15 अक्तू.	शनि	रेव.	भद्रा, मृत्युबाण, मासान्त दोष
16 अक्तू.	रवि	रेव.	संक्रान्ति
17 अक्तू.	चन्द्र	अश्वि.	क्षीण सूर्य
18 अक्तू.	मंग.	रोहि	व्यतिपात
24 अक्तू.	चन्द्र	मघा	क्रान्तिसाम्य दोष 24/50 तक, 24/52 से भद्रा विचार (भूलोके)

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
27 अक्तू.	गुरु	उ.फा.	मृत्युबाण, दग्धातिथि
27 अक्तू.	गुरु	हस्त	कृष्ण त्रयोदशी
31 अक्तू.	चन्द्र	स्वा.	सूर्य-बुध युति, केतुवेध
5 नवं.	शनि	उ.षा.	मृत्युबाण, भौम-युति
6 नवं.	रवि	उ.षा.	भुजंगपात, भौम-युति
6 नवं.	रवि.	श्रवण	क्रान्तिसाम्य दोष
10 नवं.	गुरु	उ.भा.	भद्रा (भूलोके)
12 नवं.	शनि	अश्वि	राहु-वेध
13 नवं.	रवि	अश्वि	राहुवेध, व्यतिपात
15 नवं.	मंग.	रोहि	संक्रान्ति
16 नवं.	बुध	रोहि.	क्षीण-सूर्य, संक्रां. दोष
17 नवं.	गुरु	मृग.	मृत्युबाण दोष
20 नवं.	रवि	मघा	भौमवेध
21 नवं.	चन्द्र	मघा	भौमवेध, वैधृति
26 नवं.	शनि	चित्रा	मृत्युबाण, कृष्ण १३
26 नवं.	शनि	स्वा.	कृष्ण त्रयोदशी
5 दिसं.	चन्द्र	श्रवण	मृत्युबाण 12/52 तक
5 दिसं.	चन्द्र	धनि	मृत्युबाण, भौमयुति- -अपरिहार्य
6 दिसं.	मंग.	धनि.	भौमयुति अपरिहार्य
9 दिसं.	शुक्र	उ.भा.	व्यतिपात
13 दिसं.	मंग.	मृग.	मृत्युबाण (21/42 से)
14 दिसं.	बुध	मृग.	मासान्त दोष
(सन् 2017 ईसवी)			
14 जन.	शनि	मघा	संक्रान्ति
18 जन.	बुध	चित्रा	मंग.-शुक्र वेध
19 जन.	गुरु	चित्रा	मंग.-शुक्र वेध
19 जन.	गुरु	स्वा.	केतुवेध
20 जन.	शुक्र	स्वा.	केतु-वेध

ता. मास	वार	नक्षत्र	दोष विवरण
21 जन.	शनि	स्वा.	केतुवेध, नक्षत्रान्त
25 जन.	बुध	मूल	कृष्ण त्रयोदशी
28 जन.	शनि	श्रवण	सूर्ययुति, राहुवेध
28 जन.	शनि	धनि.	व्यतिपात
31 जन.	मंग.	उ.भा.	मंग.-शुक्र युति, भद्रा (भूलोके)
1 फर.	बुध	उ.भा.	मंग.-शुक्र युति अपरिहार्य
6 फर.	चन्द्र	मृग	वैधृति (14/54 से)
11 फर.	शनि	मघा	राहुयुति, मासान्त
12 फर.	रवि	मघा	संक्रान्ति
13 फर.	चन्द्र	उ.फा.	भौमवेध, मृत्युबाण
14 फर.	मंग.	उ.फा.	भौमवेध
15 फर.	बुध	चित्रा	भुजंगपात
16 फर.	गुरु	चित्रा	भुजंगपात
16 फर.	गुरु	स्वा.	केतु वेध
17 फर.	शुक्र	स्वा.	केतु वेध
20 फर.	चन्द्र	मूल	शनि-युति अपरिहार्य
21 फर.	मंग.	मूल	शनि-युति अपरिहार्य
22 फर.	बुध	उ.षा.	मृत्युबाण, व्यतिपात
23 फर.	गुरु	उ.षा.	व्यतिपात, कृष्ण १३
24 फर.	शुक्र	श्रवण	राहु-वेध, कृष्ण १३
28 फर.	मंग.	रेवती	मंग-शुक्र युति (अपरिहार्य)
1 मार्च	बुध	रेवती	मंग-शुक्र युति (अपरिहार्य)
1 मार्च	बुध	अश्वि	भौम-युति अपरिहार्य
2 मार्च	गुरु	अश्वि	भौम-युति अपरिहार्य
(5 मार्च से 12 मार्च तक होलाष्टक)			
13 मार्च	चन्द्र	उ.फा.	मासान्त
14 मार्च	मंग.	हस्त	चैत्र संक्रान्ति

त्रिबल शुद्धि पर आधारित-वर-कन्या की राशि अनुसार शुभ विवाह-मुहूर्त्त-संवत् २०७३ वि. (सन् 2016-17 ई.)

नीचे वर-कन्या की जन्म अथवा नाम राशि के अनुसार (**त्रिबल शुद्धि-सूर्य, चन्द्र एवं गुरु पर आधारित**) विवाह मुहूर्त दिए जा रहे हैं। वर-कन्या की कुण्डली मिलान के पश्चात् उनकी राशियों में जो-जो तारीखें समान होंगी, उन तारीखों में वर-कन्या का विवाह शुभ एवं ग्राह्य होगा। **विवाह लग्न** का निर्णय करने के लिए गत पृष्ठों पर दिए गए शुद्ध मुहूर्त्तों में से किसी विद्वान पण्डित जी के परामर्श अनुसार चयन करना चाहिए। **उदाहरण**—मेष राशि का लड़का और सिंह राशि की लड़की का विवाह मुहूर्त्त **अप्रैल** (वैशाख), 2016 ई. में देखना हो तो, दोनों की राशियों में 16, 17, 18, 19, 20, 22, 23 अप्रैल की तारीखों एवं मुहूर्त्तों में समानता पाई गई है, इनमें से कोई भी तारीख अपनी सुविधानुसार ग्रहण कर सकते हैं। **कार्तिक मास के मुहूर्त्त यद्यपि पर्वतीय** (पहाड़ी) क्षेत्रों में ही ग्राह्य माने जाते हैं। परन्तु वर्तमान परिस्थितियों वश, अन्य प्रदेशों के वासी भी कार्तिक मास में विवाह ग्रहण करने लगे हैं। **ध्यान रहे**, विवाह के मास का निर्धारण मुख्यत: लड़के (वर) की राश्यनुसार किया जाता है। **कन्या** की राशि से गुरु बल तथा दोनों में चन्द्र बल विचारणीय होता है। वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों में जबकि कन्याओं का विवाह बालिग होने पर ही करते हैं, अत: गुरु शुद्धि को गम्भीरतापूर्वक न लेते हुए एवं ४, ८, १२वें गुरु को वर्ज्य न समझते पूज्य के रूप में ग्रहण किया गया है।

ध्यान रहे, लड़के की जन्म (अथवा नाम) राशि से ३, ६, १०, ११वें सूर्य शुभ; १, २, ५, ७, ९ वें सूर्य पूज्य तथा ४, ८, १२वें सूर्य त्याज्य होता है। कन्या को १, ३, ६ व १०वें गुरु साधारण पूज्य एवं उन्हें ४, ८, १२वें गुरु विशेष रूपेण पूज्य होगा। विवाह समय में अशुभ ग्रहों का यथाशक्ति दान व पूजा करवा लेनी चाहिए। सूर्य एवं गुरु स्वराशि या मित्रक्षेत्री हों तो उन्हें पूज्य न मानकर शुभ एवं ग्राह्य मान लिया जाता है।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
मेष राशि—अप्रै. की १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३, **जुला. की** १३, १४, **अग. की** १८, २०-२१ (चं. दा.), २५, २६, **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११, १४ (चं. दा.) [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, २५, २६, **नवं. की** ३, ४, ७, ८, ११-१२ (चं. दा.] **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २४, २९, **फर. की** १-२-३ (चं. दा.), ५, ६, ७, १४, १५, २७-२८ (चं. दा.), **मार्च की** ४ तारीखें शुभ रहेंगी।	मेष राशि के वर को आषा., आश्विन, माघ, फाल्गुन-शुभ, वैशाख, ज्येष्ठ व कार्तिक मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या को 11 अग. तक गुरु शुभ तदुपरान्त साधारण रुपेण पूज्य रहेगा।	**मेष राशि—अप्रै. की** १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३, **जुला. की** १३, १४, १९, २०, २१, २४-२५ (चं. दा.), २९, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८, ९, १४, १८, २०, २१, २५, २६, **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, २५ २६, **नवं. की** ३, ४, ७, ८, ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६, २३, २४, २५, ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, ८-९-१० (चं. दा.), १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २४, २९, **फर. की** १, २, ३, ५, ६, ७, १४, १५, २७, २८, **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।
वृष राशि—जुला. की १३, १४, १९ (21/54 बाद), २०, २१, २४, २५, २९, **अग. की** ६ (10/54 बाद), ७, ८, ९, **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९-२० (चं. दा.), **नवं. की** १, २, ७, ८, ११, १२] मार्गशीर्ष में **नवं. की** १६, २३ (13/31 बाद), २४, २५, **दिसं. की** ३ (13/46 बाद), ४, ८, ९, १०, १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १६ (29/33 बाद), १७, १८, २२, २३, २९, **फर. की** १, २, ३, ५-६ (चं. दा.), ७, १४, १५, १८, १९, २७, २८, **मार्च की** ४ (चं. दा.) तारीखें शुभ रहेंगी।	वृष राशि के वर को श्रावण, कार्तिक, फाल्गुन मास-शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, मार्ग., माघ मासों में सूर्य पूज्य तथा वैशाख, भाद्र. मास अशुभ एवं त्याज्य रहेंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 11 अग. तक विशेष रुपेण पूज्य, तदुपरान्त संवतान्त तक शुभ रहेगा।	**वृष राशि—अप्रै. की** १८ (28/57 बाद), १९, २०, २२, २३, २४, २५. **जुला. की** १३, १४, १९ (21/54 बाद), २०, २१, २४, २५, २९, **अग. की** ६ (10/54 बाद), ७, ८, ९, १८, २०, २१, २५ (चं. दा.), २६, **सितं. की** २ (18/54 बाद), ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, **नवं. की** १, २, ७, ८, ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६, २३ (13/31 बाद), २४, २५, **दिसं. की** ३ (13/46 बाद), ४, ८, ९, १०, १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १६ (29/33 बाद), १७, १८, २२, २३, २९, **फर. की** १, २, ३, ५-६-७, १४, १५, १८, १९, २७, २८, **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।
मिथुन राशि—अप्रै. की १६, १७, १८ (28/57 तक), २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, १९ (21/54 तक), २४, २५, २९ (चं. दा.), **अग. की** ३, ४, ६ (10/54 तक), ८ (22/25 बाद), ९, १४, १८ (11/53 बाद), २०, २१, २५-२६ (चं. दा.), **सितं. की** २ (18/54 तक) [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९-२० (चं. दा.), २५, २६, **नवं. की** १, २, ३, ४, ८ (16/33 बाद), ११, १२] मार्गशीर्ष में **नवं. की** १६ (चं. दा.), २३ (13/31 तक), २५ (25/34 बाद), ३०, **दिसं. की** १, ३ (13/46 तक), ८, ९, १०, १२-१३ (चं. दा.), **सन् 2017 ई. में फर. की** १८, १९, २७, २८, **मार्च की** ४ (चं. दा.) तारीखें शुभ होंगी।	मिथुन के वर को वैशाख, भाद्रपद, मार्गशीर्ष मास विवाह के लिए शुभ, आषाढ़, श्रावण, कार्तिक व फाल्गुन मासों में सूर्य पूज्य तथा ज्येष्ठ, आश्विन, माघ मास त्याज्य रहेंगे। इस राशि की वधू को गुरु 11 अग. तक साधारण रुपेण तदुपरान्त विशेष रुपेण पूज्य रहेगा।	**मिथुन राशि—अप्रै. की** १६, १७, १८ (28/57 तक), २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, १९ (21/54 तक), २४, २५, २९, **अग. की** ३, ४, ६ (10/54 तक), ८ (22/25 बाद), ९, १४, १८ (11/53 बाद), २०, २१, २५, २६, **सितं. की** २ (18/54 तक), **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, २५, २६, **नवं. की** १, २, ३, ४, ८ (16/33 बाद), ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६, २३ (13/31 तक), २५ (25/34 बाद), ३०, **दिसं. की** १, ३ (13/46 तक), ८, ९, १०, १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६ (29/33 तक), २२, २३, २४, २९ (10/54 बाद), **फर. की** १, २, ३, ५-६-७ (चं. दा.), १८, १९, २७, २८, **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या की शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
कर्क राशि–अप्रै. की १६, १७, १८, १९, २०, २४, २५, **जुला. की** १९, २०, २१ (27/42 तक), २४, २५, २९, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८ (22/25 तक), १४, १८ (11/53 तक), २०, २१, २५, २६, **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११, १४, **नवं. की** १६, २३, २४, २५ (25/34 तक), ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, ८, ९, १०, १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २२, २३, २४, २९ (10/54 तक), **फर. की** १, २, ३, ५, ६, ७ (चं. दा.) तारीखें शुभ होंगी।	कर्क के वर को विवाहादि के लिए वैशाख, ज्येष्ठ, आश्विन मास-शुभ, श्रावण, भाद्र., मार्ग. व माघ मासों में सूर्य की पूजा-दान तथा आषाढ़, कार्तिक व फागुन मास त्याज्य रहेंगे। कर्क राशि की वधू को गुरु 11 अग. तक शुभ, तदुपरान्त संवतान्त तक साधारण रुपेण पूज्य रहेगा।	**कर्क राशि–अप्रै. की** १६, १७, १८, १९, २०, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, १९, २०, २१ (27/42 तक), २४, २५, २९, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८ (22/25 तक), १४, १८ (11/53 तक), २०, २१, २५, २६, **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** की १९, २०, २५, २६, **नवं. की** १, २, ३, ४, ७, ८ (16/33 तक), ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६, २३, २४, २५, ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, ८, ९, १०, १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २२, २३, २४, २९ (10/54 तक), **फर. की** १, २, ३, ५, ६, ७, १४, १५, १८, १९, २७, २८, **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।
सिंह राशि–अप्रै. की १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३, **जुला. की** १३, १४, **अग. की** १८, २५, २६, **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, २५-२६ (चं. दा.), **नवं. की** ३, ४, ६, ७, ८] **सन् 2017 ई. में जन. की** १५-१६ (चं. दा.), १७, १८, २४, २९, **फर. की** २ (21/12 बाद), ३, ५, ६, ७, १४, १५, **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।	सिंह राशि के वर को आश्विन, फाल्गुन मासों में सूर्य पूज्य, ज्येष्ठ, आषाढ़, कार्तिक एवं माघ मास शुभ तथा चैत्र, श्रावण और मार्ग. मास त्याज्य होंगे। सिंह राशि की वधू को गुरु 11 अग. तक साधारण रुपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ होगा।	**सिंह राशि–अप्रै. की** १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३, **जुला. की** १३, १४, १९, २०, २१, २९, **अग. की** ३-४-६ (चं. दा.), ७, ८, ९, १४, १८, २५, २६, **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, २५-२६ (चं. दा.), **नवं. की** ३, ४, ७, ८] मार्ग. में **नवं. की** १६, २३, २४, २५, ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, १० (8/29 बाद), १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २४, २९, **फर. की** २ (21/12 बाद), ३, ५, ६, ७, १४, १५, **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।
कन्या राशि–जुला. की १३, १४, १९ (21/54 बाद), २०, २१, २४, २५, २९, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८, ९, **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, २५-२६ (चं. दा.), **नवं. की** १, २, ७, ८, ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६, २३-२४-२५ (चं. दा.), **दिसं. की** ३ (13/46 बाद), ४, ८, ९, १० (8/29 तक), १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५-१६-१७-१८ (चं. दा.), २२, २३, २९, **फर. की** १, २ (21/12 तक), ५, ६, ७, १४, १५, १८, १९, २७, २८, **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।	कन्या राशि के वर को आषाढ़, श्रावण, मार्गशीर्ष व फाल्गुन मास शुभ, ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व माघ मासों में सूर्य की पूजा/दानादि होगा। वैशाख, भाद्रपद मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 11 अग. तक विशेष रुपेण तदुपरान्त साधारण पूज्य रहेगा।	**कन्या राशि–अप्रै. की** १६-१७-१८-१९-२० (चं. दा.), २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, १९ (21/54 बाद), २०, २१, २४, २५, २९, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८, ९, १८, २०, २१, २५, २६, **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, २५, २६, **नवं. की** १, २, ७, ८, ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६, २३, २४, २५, **दिसं. की** ३ (13/46 बाद), ४, ८, ९, १० (8/29 तक), १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २२, २३, २९, **फर. की** १, २ (21/12 तक), ५, ६, ७, १४, १५, १८, १९, २७, २८, **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।
तुला राशि–अप्रै. की १६, १७, १८, १९-२० (चं. दा.), २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, १९ (21/54 तक), २४, २५, **अग. की** ३, ४, ६-७-८ (चं. दा.), ९, १४, १८ (11/53 बाद), २०, २१, २६ (22/21 बाद), **सितं. की** २-३-४ (चं. दा.) [कार्तिक मासे **अक्तू. की** २० (11/07 बाद), २५, २६, **नवं. की** १, २, ३, ४, ८ (16/33 बाद), ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६ (20/56 बाद), २३, २४, २५, ३०, **दिसं. की** १, ३ (13/46 तक), ८, ९, १०, **सन् 2017 ई. में फर. की** १४-१५ (चं. दा.), १८, १९, २७, २८ शुभ होंगी।	तुला के वर को श्रावण, भाद्रपद-शुभ, वैशाख, आषाढ़, कार्तिक, मार्ग. व फागुन मासों में सूर्य की पूजा/दान होगा। ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 11 अग. तक शुभ तदुपरान्त विशेष रुपेण पूज्य रहेगा।	**तुला राशि–अप्रै. की** १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, १९ (21/54 तक), २४, २५, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८, ९, १४, १८ (11/53 बाद), २०, २१, २६ (22/21 बाद), **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** २० (11/07 बाद), २५, २६, **नवं. की** १, २, ३, ४, ८ (16/33 बाद), ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६ (20/56 बाद), २३, २४, २५, ३०, **दिसं. की** १, ३ (13/46 तक), ८, ९, १०, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६-१७-१८ (चं. दा.), २२, २३, २४, २९ (10/54 बाद), **फर. की** १, २, ३, ७, १४, १५, १८, १९, २७, २८ तारीखें शुभ होंगी।

❑ वर (लड़का) ❑	वर कन्या को शुभ, पूज्य मासादि	❑ कन्या (लड़की) ❑
वृश्चिक राशि–**अप्रै. की** १६, १७, १८, १९, २०, २२–२३ (चं. दा.), २४, २५, **जुला. की** १९, २०, २१ (27/42 तक), २४, २५, २९, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८–९ (चं. दा.), १४, १८ (11/53 तक), २०, २१, २५, २६ (22/21 तक), **सितं. की** २, ३, ४ **अक्तू. की** १०, ११, १४ **नवं. की** १६ (20/56 तक), २३, २४, २५, ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, ८, ९, १०, १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २२, २३, २४, २९ (10/54 तक), **फर. की** १, २, ३, ५, ६ तारीखें शुभ होंगी।	वृश्चिक राशि के वर को वैशाख, भाद्रपद, आश्विन एवं माघ मास शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण और मार्ग. मासों में सूर्य पूजा/दानादि तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। इस राशि की वधू को गुरु 11 अग. तक साधारण रुपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**वृश्चिक राशि**–**अप्रै. की** १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३–१४ (चं. दा.), १९, २०, २१ (27/42 तक), २४, २५, २९, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८, ९, १४, १८ (11/53 तक), २०, २१, २५, २६ (22/21 तक), **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २० (11/07 तक), २५, २६, **नवं. की** १,-२, ३, ४, ७, ८ (16/33 तक), ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६ (20/56 तक), २३, २४, २५, ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, ८, ९, १०, १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २२, २३, २४, २९ (10/54 तक), **फर. की** १, २, ३, ५, ६, १४, १५, १८, १९, २७, २८, **मार्च की** ४ शुभ होंगी।
धनु राशि–**अप्रै. की** १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, **अग. की** १८, २५, २६, **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, २५, २६, **नवं. की** १, २, ३, ४, ६, ७, ८] **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २२–२३, २४, २९, **फर. की** २ (21/12 बाद), ३, ५, ६, ७, १४, १५, १८–१९ (चं. दा.), **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।	धनु राशि के वर को ज्येष्ठ, आश्विन, कार्तिक व फागुन मास शुभ, वैशाख, आषाढ़, भाद्रपद मासों में सूर्य पूज्य तथा श्रावण, मार्गशीर्ष मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 11 अग. तक शुभ तदुपरान्त साधारण रुपेण पूज्य रहेगा।	**धनु राशि**–**अप्रै. की** १६, १७, १८, १९, २०, २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, १९, २०, २१, २९, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८, ९ १४, १८, २५, २६, **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, २५, २६, **नवं. की** १, २, ३, ४, ७, ८] मार्ग. में **नवं. की** १६, २३, २४, २५, ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, १० (8/29 बाद), १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २२, २३, २४, २९, **फर. की** २ (21/12 बाद), ३, ५, ६, ७, १४, १५, १८, १९, **मार्च की** ४ शुभ होंगी।
मकर राशि–**जुला. की** १३, १४, १९, २०, २१, २४, २५, २९, **अग. की** ६ (10/54 बाद), ७, ८, ९, १४ (चं. दा.), **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, **नवं. की** १, २, ३–४ (चं. दा.), ७, ८, ११, १२] मार्गशीर्ष में **नवं. की** १६, २३ (13/31 बाद), २४, २५, ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, ८, ९, १० (8/29 तक), १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १६ (29/33 बाद), १७, १८, २२, २३, २४ (चं. दा.), २९, **फर. की** १, २ (21/12 तक), ५, ६, ७, १४, १५, १८, १९, २७, २८, **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।	मकर के वर को आषाढ़, कार्तिक, मार्ग., मास शुभ, ज्येष्ठ, श्रावण व आश्विन मासों में सूर्य की पूजा तथा वैशाख, भाद्रपद और पौष मास त्याज्य होंगे। इस राशि की कन्या को गुरु 11 अग. तक विशेष रुपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**मकर राशि**–**अप्रै. की** १८ (28/57 बाद), १९, २०, २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, १९, २०, २१, २४, २५, २९, **अग. की** ६ (10/54 बाद), ७, ८, ९, १४, १८, २०, २१, २५, २६, **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २०, **नवं. की** १, २, ३, ४, ७, ८, ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६, २३ (13/31 बाद), २४, २५, ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, ८, ९, १० (8/29 तक), १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १६ (29/33 बाद), १७, १८, २२, २३, २४ (चं. दा.), २९, **फर. की** १, २ (21/12 तक), ५, ६, ७, १४, १५, १८, १९, २७, २८, **मार्च की** ४ तारीखें शुभ होंगी।
कुम्भ राशि–**अप्रै. की** १६, १७, १८ (28/57 तक), २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, १९–२०–२१ (चं. दा.), २४, २५, **अग. की** ३, ४, ६ (10/54 तक), ८ (22/25 बाद), ९, १४, १८ (चं. दा.), २०, २१, २६ (22/21 बाद), **सितं. की** २ (18/54 तक) [कार्तिक मासे **अक्तू. की** २० (11/07 बाद), २५, २६ **नवं. की** १, २, ३, ४, ७–८ (चं. दा.), ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६ (20/56 बाद), २३ (13/31 तक), २५ (25/34 बाद), ३०, **दिसं. की** १, ३–४ (चं. दा.), ८, ९, १०, **सन् 2017 ई. में फर. की** १८, १९, २७, २८ तारीखें शुभ होंगी।	कुम्भ राशि के वर को वैशाख, मार्गशीर्ष, श्रावण मास–शुभ, आषाढ़, भाद्रपद व कार्तिक मास में सूर्य की पूजा, ज्येष्ठ, आश्विन व माघ मास त्याज्य रहेंगे। कुम्भ राशि की कन्या को 11 अग. तक गुरु शुभ, तदुपरान्त विशेष रुपेण पूज्य रहेगा।	**कुम्भ राशि**–**अप्रै. की** १६, १७, १८ (28/57 तक) २२, २३, २४, २५, **जुला. की** १३, १४, १९, २०, २१, २४, २५, **अग. की** ३, ४, ६ (10/54 तक), ८ (22/25 बाद), ९, १४, १८, २०, २१, २६ (22/21 बाद), **सितं. की** २ (18/54 तक), **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** २० (11/07 बाद), २५, २६, **नवं. की** १, २, ३, ४, ७, ८, ११, १२] **मार्ग. में नवं. की** १६ (20/56 बाद), २३ (13/31 तक), २५ (25/34 बाद), ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, ८, ९, १०, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६ (29/33 तक), २२, २३, २४, २९, **फर. की** १, २, ३, ७, १८, १९, २७, २८ शुभ होंगी।
मीन राशि–**अप्रै. की** १६, १७, १८, १९, २०, २४, २५, **जुला. की** १९, २०, २१, २४, २५, २९, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८ (22/25 तक), १४, १८ (चं. दा.), २०, २१, २५, २६ (22/21 तक), **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११, १४, **नवं. की** १६ (20/56 तक), २३, २४, २५ (25/34 तक), ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, ८, ९, १०, १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २२, २३, २४, २९ (चं. दा.), **फर. की** १, २, ३, ५, ६ तारीखें शुभ होंगी।	मीन राशि के वर को ज्येष्ठ, भाद्र. व माघ मास शुभ, वैशाख, श्रावण, आश्विन व मार्ग. मासों में सूर्य पूज्य तथा आषाढ़, कार्तिक व फाल्गुन मास त्याज्य होंगे। मीन राशि की वधू को गुरु 11 अग. तक साधारण रुपेण पूज्य, तदुपरान्त शुभ रहेगा।	**मीन राशि**–**अप्रै. की** १६, १७, १८, १९, २०, २४, २५, **जुला. की** १९, २०, २१, २४, २५, २९, **अग. की** ३, ४, ६, ७, ८ (22/25 तक), १४, १८, २०, २१, २५, २६ (22/21 तक), **सितं. की** २, ३, ४, **अक्तू. की** १०, ११, १४ [कार्तिक मासे **अक्तू. की** १९, २० (11/07 तक), २५, २६, **नवं. की** १, २, ३, ४, ७, ८ (चं. दा.), ११, १२] मार्ग. में **नवं. की** १६ (20/56 तक), २३, २४, २५ (25/34 तक), ३०, **दिसं. की** १, ३, ४, ८, ९, १०, १२, १३, **सन् 2017 ई. में जन. की** १५, १६, १७, १८, २२, २३, २४, २९, **फर. की** [illegible]

मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, विपणि, उपनयन, सर्वदेव प्रतिष्ठा आदि मुहूर्त्त-संवत् २०७३

प्राचीन भारतीय ज्योतिषाचार्यों द्वारा शुद्धता की दृष्टि से विवाह, मुण्डनादि मुहूर्त्तों के निर्धारण में मुख्यतः इक्कीस दोषों का उल्लेख किया गया है। इनमें पंचाँगशुद्धि, क्रूर ग्रह का नक्षत्र–वेध, पापग्रह की युति, क्रान्तिसाम्य दोष, मृत्युबाण, षष्ठाष्टम चन्द्र एवं शुक्र विचार, व्यतीपात– वैधृति आदि दुष्ट योगों की युति, गुरु शुक्रास्त का विचार, दग्धा तिथि विचार आदि दोषों का विशेष रूप से विचार किया जाता है। राजमार्त्तण्ड–वशिष्ठ आदि शास्त्रकारों एवं आचार्यों ने भी विवाह के अतिरिक्त चूड़ाकरण, गृहारम्भ, व्रत, प्रतिष्ठा, पुंसवन, कर्णवेध आदि मुहूर्त्तों में भी क्रूर ग्रहों के वेध, युति, व्यतीपात, वैधृति आदि अशुभ योगों एवं दोषों का विचार करने का निर्देश दिया है—विवाहेऽर्ध प्रतिष्ठायां व्रते पुंसवनं तथा कर्णवेधादि चूडायां विद्धऋक्षं विवर्जयेत्॥ ध्यान रहे, शास्त्र नियमानुसार बुधवार के दिन अभिजित मुहूर्त भी ग्राह्य नहीं होता। 'पंचांग दिवाकर' में लगाए जाने वाले सभी मुहूर्त्तों में सर्वत्र शास्त्र विहित नियमों का यथा सम्भव पालन किया जाता है।

—निवेदक: पं. विवेक शर्मा

मुण्डन मुहूर्त्त–२०७३ वि.

✡ बालक के मुण्डन जन्म या गर्भाधान काल से १, ३, ५ इत्यादि विषम वर्षों में करने का विधान है। कुछ विद्वान् बालक के जन्म मास एवं जन्म नक्षत्र और विरूद्ध चन्द्र (४,८,१२वें) में चूड़ाकरण करने का निषेध मानते हैं–(चूड़ामणि) ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास तथा ज्येष्ठा नक्षत्र में करने का निषेध माना गया है। कुल परम्परानुसार नवरात्रों में सिद्ध शक्तिपीठ या तीर्थ स्थलों पर बिना निर्धारित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि शुभ कार्य सम्पादित कराते हैं।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल १,शुक्र	8 अप्रै.	अश्वि	मु. 11/56 बाद, ल. ३, ५ स्वयं सिद्ध मुहू. (आवश्यके)
चैत्र शुक्ल ८,गुरु	14 अप्रै.	पुन/पुष्य	ल. ३, ५ (मु. 9/35 बाद), अभिजित्
चैत्र शुक्ल ९,शुक्र	15 अप्रै.	पुष्य	ल. २,३, अभि. (मु. 12/27 तक)
चैत्र शु.१४/१५,गुरु	21 अप्रै.	चित्रा	मु. 8/21 बाद, ल. २, ३, भद्रा परिहार, केतु वेध (आव.)
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	22 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ३, ५, अभि. (मु. प्रात: 7/19 बाद)
वैशा. कृ. १, शनि	23 अप्रै.	स्वा.	मु. प्रात: 10/18 तक, ल. २, ३ (वैश्यों के लिए शुभ)
(सन् 2017 ई० में)			
माघ कृ. ६, बुध	18 जन.	हस्त	ल. १२, २ (बु. दा.) भद्रा परि.
माघ कृ. १२, मंग.	24 जन.	ज्ये.	ल. १२, अभिजित (ज्येष्ठ लड़के को छोड़कर)
माघ शुक्ल२, रवि	29 जन.	धनि.	मु. 13/03 बाद, ल. २ (बु. श. दा.) (विप्राणां)
माघ शु. ३, चंद्र	30 जन.	शत.	ल. १२, १, अभिजित
माघ शु. ६, गुरु	2 फर.	रेव.	ल. १२, १, अभिजित
माघ शु. ७, शुक्र	3 फर.	अश्वि	ल. १२, १ (चं. दा.), २ (श. दा.)
माघ शु. १२, बुध	8 फर.	पुन.	मु. दोप. 12/14 बाद, ल. २ (श. दा.)
माघ शु. १३, गुरु	9 फर.	पुन	मु. प्रात: 9/22 तक, ल. १२
फाल्गु. कृ. ५,बुध	15 फर.	ह./चि.	ल. १२, १, २ (श. दा.)
फा. कृ. ५/६,गुरु	16 फर.	चित्रा	ल. १, २, अभि. मु. 13/41 तक
फा. शु. ३, बुध	1 मार्च	रेव.	ल. १२, १, ३ (15/18 तक)
फा. शु. ४/५,गुरु	2 मार्च	अश्वि	मु. 13/04 बाद, ल. ३

अत्यावश्यक परिस्थितियों में शारदीय नवरात्रों में मुण्डन मुहूर्त्त

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
आश्वि शु. १, शनि	1 अक्तू	हस्त	ल. ६, ७, अभि. (वैश्यों के लिए)
आ. शु.१/२, रवि	2 अक्तू	चित्रा	ल. ६, ७ (विप्रों के लिए शुभ)
आश्वि शु. ५, गुरु	6 अक्तू	ज्ये.	(दोप. 11/41 बाद), अभि.
आश्वि शु. ६, शुक्र	7 अक्तू	ज्ये.	मु. 14/26 तक, ल. ७, ९, अभि.
आश्वि शु.१०, मंग.	11 अक्तू	श्रव.	७, ९, अभि., क्षत्रियों के लिए शुभ

नींव/गृहारम्भ मुहूर्त–२०७३ (खनन एवं भूमि पूजन)

नींव (शिलान्यास) एवं गृह निर्माण आदि के मुहूर्त्तों में गृहस्वामी की राशि अनुकूलता देखकर निम्न शुभ मुहूर्त्तों में वास्तु पूजन, नवग्रह शान्ति, होम यज्ञादि करके, शिलान्यास, नींव भरण, गृहारम्भ (निर्माण) प्रारम्भ करना चाहिए। **गृहारम्भ में** ५, ७, ९, १५, २१, २४ प्रविष्टों में **भूमि-शयन** (सुप्त भूमि) का भी विचार किया जाता है। सूर्य नक्षत्र से 5, 7, 9, 12, 19 एवं 26वें चन्द्र नक्षत्र पर भी भूमि-शयन का विचार किया जाता है। अधिक सूक्ष्मता के लिए आगामी पृष्ठों पर दिए गए '**सूर्यभात् वृष चक्र**' का भी प्रयोग कर सकते हैं। लैंटर (छत) डालना, **इलैक्ट्रिक** वायरिंग और स्तम्भ आरोहणादि काल में पंचक नक्षत्रों व **अग्निबाण** का भी अवश्य विचार कर लेना उपयुक्त होगा। स्थिर एवं द्विस्वभाव लग्न विशेष प्रशस्त होते हैं। **–पं. विवेक शर्मा**

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
*चैत्र शु. ८, गुरु	14 अप्रै.	पुन.	मु. 9/35 बाद से, ल. ३, ५, अभिजित्
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	22 अप्रै.	स्वा.	प्रात: 7/19 बाद, ल. २, ३, ५, अभिजित्
वैशा. कृ. १, शनि	23 अप्रै.	स्वा.	मु. प्रात: 10/18 तक, ल. २, ३
वैशा. कृ. ३, चंद्र	25 अप्रै.	अनु.	ल. २, ३, ५ (चं. दा.), भद्रा परि. (14/31 तक अग्निबाण) लग्नबल से अग्निबाण परिहार
आषा.शु. १०, गुरु	14 जुला	स्वा.	मु. प्रात: 6/52 तक
श्रावण कृ.२, गुरु	21 जुला	श्रव.	ल. ५, ६, अभिजित
*श्राव. कृ. ६, चंद्र	25 जुला	उभा/रे	ल. ५, ६, अभि.
*श्रा. कृ.१०, शुक्र	29 जुला	रोहि.	प्रात: 6/41 बाद, ल. ५, ६, अभि.
श्राव. पूर्णिमा, गुरु	18 अग.	धनि.	ल. ६, ७, (चं. दा.) अभि.
भाद्र कृ. १, शुक्र	19 अग.	शत.	(मुहू. 9/03 बाद) 9/3 तक अग्निबाण, ल. ६, ७, ८, अभि.
*भाद्र.कृ. ८, गुरु	25 अग.	रोहि.	मु. 12/06 बाद, अभिजित्
*भा. कृ.१०, शनि	27 अग.	मृग.	मु. प्रात: 9/55 तक, ल. ६

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
*भा. कृ.१२, चंद्र	29 अग.	पुष्य	मु. 11/03 बाद से 14/30 तक, ल. ७, अभि., ८
*भा. शु. १, शुक्र	2 सितं	उ.फा.	मु. 12/26 बाद
*भा. शु. २, शनि	3 सितं	उ.फा.	ल. ६, ७, ८, अभि.
*का. कृ.१२,गुरु	27 अक्तू	उ.फा.	ल. ८, ९, १०, अभि.
*का. शु. ३, बुध	2 नवं.	अनु.	ल. ९, १०
कार्ति. शु. ७, चंद्र	7 नवं.	श्रव.	ल. ९, अभिजित
का.शु. १२, शुक्र	11 नवं.	उ.भा.	मु. प्रातः 9/13 बाद, ल. ९, १०
का.शु. १३, शनि	12 नवं.	रेव.	ल. ९, अभिजित्
मार्ग. कृ. ३, गुरु	17 नवं.	मृग.	मु. प्रातः 7/41 तक
*मार्ग.कृ. ५,शुक्र	18 नवं.	पुन.	ल. ९, १०, अभि. (प्रातः 5/54 से अग्निबाण)
*मार्ग. कृ.११,गुरु	24 नवं.	उ/ह.	ल. ९, १०, अभिजित
*मा.कृ.११/१२,शुक्र	25 नवं.	हस्त	ल. ९, १०
*मा. कृ.१२,शनि	26 नवं.	चित्रा	मु. प्रातः 10/11 तक, ल. ९ (चं. दा.)
मार्ग. शु. ११,शनि	10 दिसं.	रे./अ	ल. ९, १२, अभिजित
(सन् 2017 ई० में)			
*माघ कृ. ७, गुरु	19 जन.	चित्रा	ल. १२, १ (चं. दा.), अभि. (आवश्यके) मं.-शु. वेध
*माघ कृ.११,चंद्र	23 जन.	अनु.	ल. १२, अभिजित
*माघ शु. ३, चंद्र	30 जन.	शत.	ल.१२, १ (मु. 11/31 तक)
*माघ शु. ५, बुध	1 फर.	उ.भा.	ल.१२, १ (स्वयंसिद्ध मुहूर्त्त) (मं.-शु. युति) (आवश्यके)
*माघ शु. ६, गुरु	2 फर.	रेव.	ल. १२, १, अभिजित
माघ शु. १३, गुरु	9 फर.	पुन.	मु. प्रातः 9/22 तक
फाल्गु कृ. ५, बुध	15 फर.	ह/चि	मु. प्रातः 8/00 बाद, ल. १२, १ (प्रातः 8/00 तक अग्निबाण)
*फा. कृ. ६,शुक्र	17 फर.	स्वा.	ल. १२, १, अभि. (आवश्यके)
*फा. शु. ३, बुध	1 मार्च	रेव.	ल. १२, १ (चं. दा.) मं. युति दोष (आवश्यके)
*फा.शु. ४/५,गुरु	2 मार्च	अश्वि	मु. 13/04 बाद, ल. ३, मं. युति दोष (आवश्यके)

*तारांकित मुहूर्त्तों में केवल वृष वास्तुचक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश मुहूर्त्त (संवत् २०७३)

नूतन (नवीन) गृह प्रवेश में अपने पण्डित जी द्वारा निकाले गए मुहूर्त्त पर नव-गृह में वास्तु-पूजा शान्ति, नवग्रह पूजन-शान्ति, स्वस्तिवाचन एवं पंचदेव, गोपूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों एवं आश्रितजनों को भोजन-दानादि एवं कन्या पूजन, जलपूर्ण कलश तथा ब्राह्मणों को आगे करके शंख ध्वनि एवं सुहागिनों द्वारा मंगल गान सहित नव गृह में प्रवेश करना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
*चैत्र शु. ८, गुरु	14 अप्रै.	पुन/पु.	मु. 9/35 बाद, ल. ३, अभि., ५
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	22 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ३, ५ (मु. प्रातः 7/19 बाद)
वैशा. कृ.१, शनि	23 अप्रै.	स्वा.	मु. प्रातः 10/18 तक, ल. २, ३
वैशा. कृ. ३, चंद्र	25 अप्रै.	अनु.	ल. २, ३, ५ (15/40 तक)
आषा. शु. १०,गुरु	14 जुला	स्वा.	प्रातः 6/52 तक
आषा. शु.११,शनि	15 जुला	अनु.	मु. 9/36 से 10/14 तक
कार्ति. कृ. ५,गुरु	20 अक्तू	मृग.	प्रातः 9/13 बाद, ल. ८ (के. दा.), ९, १२, अभि.
कार्ति. कृ. ७,शनि	22 अक्तू	पुन.	ल. ८ (के. दा.), ९, अभि.
*का.कृ. १२,गुरु	27 अक्तू	उ.फा.	ल. ८, ९, अभिजित
कार्ति. शु. १, चंद्र	31 अक्तू	स्वा.	मु. दुपै. 12/01 तक, ल. ८ (चं. दा./पूज्य)
*कार्ति शु. ३,बुध	2 नवं.	अनु.	ल. ८ (के. दा.), ९, ११
कार्ति. शु. ७, चंद्र	7 नवं.	श्रव.	ल. ९, अभि., ११
का. शु. १०, बुध	9 नवं.	शत.	मु. दोप. 12/46 बाद, ल. ११ (केतु दान)
का. शु. १२,शुक्र	11 नवं.	उ.भा.	मु. 9/13 बाद, ल. ९, ११ (के. दान)
का. शु. १३,शनि	12 नवं.	रेव.	ल. ९, अभि., ११ (के.दा.)
मार्ग. कृ. ३, गुरु	17 नवं.	मृग.	मु. प्रातः 7/41 तक
*मार्ग.कृ. ५,शुक्र	18 नवं.	पुर्न	ल. ९, ११ (के. दा.), अभि.
मार्ग. शु. ६, शनि	19 नवं.	पुष्य	ल. ९, ११, अभि.
मार्ग. कृ. १०,बुध	23 नवं.	उ.फा.	ल. ९, ११ (के. दा.)
*मार्ग. कृ.११,गुरु	24 नवं.	उ/ह	ल. ९, ११ (के. दा.), अभि.
*मा.कृ.११/१२,शुक्र	25 नवं.	ह/चि	ल. ९, ११ (के. दा.), अभि.

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
*मा.कृ. १२,शनि	26 नवं.	चित्रा	मु. प्रातः 10/11 तक, ल. ९
*मा. शु. ६, चंद्र	5 दिसं.	श्रव.	मु. प्रातः 9/21 से 10/32 तक
मार्ग. शु. ११,शनि	10 दिसं.	रे/अ	ल. ९, १२, अभिजित
(सन् 2017 ई० में)			
माघ कृ. ६, बुध	18 जन.	हस्त	ल.११ (के.दा.), १२, २ (रा.दा.)
माघ कृ. ११, चंद्र	23 जन.	अनु.	मु. 13/56 तक, ल. ११ (के. दा.), १२, अभि., २
*माघ शु. ३, चंद्र	30 जन.	शत.	मु. 11/31 तक, ल. ११ (के. दा.), १२
*माघ शु. ५, बुध	1 फर.	उ.भा.	१२, २ (स्वयंसिद्ध मुहू.), आवश. (भौम युति)
*माघ शु. ६, गुरु	2 फर.	रेव.	ल. १२, २, अभिजित
माघ शु. ७, शुक्र	3 फर.	अश्वि	ल. १२, २, अभिजित
माघ शु. १०, चंद्र	6 फर.	रोहि.	मु. 14/54 तक, ल. १२, २, अभिजित
माघ शु. १२, बुध	8 फर.	पुन.	मु. 12/14 बाद, ल. २, ३
माघ शु. १३, गुरु	9 फर.	पुर्न	मु. 9/22 तक, ल. ११ (के.दा.)
फा. कृ. ३, चंद्र	13 फर.	उ.फा.	मु. 8/59 बाद, ल. १२, २, (आवश्यके)
फा. कृ. ५, बुध	15 फर.	ह/चि	ल. १२, २ (रा. दा.)
फा.कृ.५/६, गुरु	16 फर.	चित्रा	ल. १२, २ (रा. दा.), अभि.
*फा. शु. ३, बुध	1 मार्च	रेव.	ल. १२, २ (चं. दा.) (भौम-युति-आवश्यके)

तारांकित मुहूर्त्तों में केवल वृषवास्तु चक्र शुद्धि नहीं है। शेष सभी मुहूर्त्त दोषों से मुक्त (शुद्ध) हैं।

पुराने गृह में प्रवेश मुहूर्त्त-सं. २०७३ वि.

अस्थायी तौर पर किराये आदि के मकान में प्रवेश अथवा पुराने गृह में प्रवेश के मूहूर्त्त के लिए ऊपर दिए गए नवीन गृह प्रवेश मुहूर्त्तों के अतिरिक्त निम्नलिखित मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे। ध्यान रहे, पुराने निजी या किराये के मकान में प्रवेश के समय भी कलश पूजन, देव पूजन, नवग्रह शान्ति दान, दक्षिणा सहित ब्राह्मण भोजन आदि करवाना शुभ होता है।

चैत्र शु. १, शुक्र	8 अप्रै.	अश्वि	मु. 11/56 बाद, अभि. (स्वयं सिद्ध मुहू.)
चैत्र शु. ८, गुरु	14 अप्रै.	पुन.	मु. 9/35 बाद, ल. ३, ५

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	22 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ३, ५, अभि. (मु. प्रात: 7/19 बाद)
वैशा. कृ. १, शनि	23 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ३, ५, अभि.
वैशा. कृ. ३, चंद्र	25 अप्रै.	अनु.	ल. २, ३, ५, अभि.
(ता. 28 अप्रै. से 9 जुलाई तक शुक्र अस्त रहेगा)			
वैशा. शु. ३, चंद्र	9 मई	मृग	ल. २, ३, ५, अभि. (अत्यावश्यकता में) शुक्रास्त (शुक्र दान/पूज्य)
आषा. शु. ७, चंद्र	11 जुला	हस्त	ल. ५, ६, अभिजित
आषा. शु.१०,गुरु	14 जुला	स्वा.	मु. प्रात: 6/52 तक
आषा. शु.११,शनि	15 जुला	अनु.	मु. 9/36 से 10/14 तक
श्राव. कृ. १, बुध	20 जुला	उ.षा.	ल. ५ (मं. श. दा.), ६
श्राव. कृ. २, गुरु	21 जुला	श्रव.	ल. ५ (मं. श. दा.), ६, अभि.
श्राव. कृ. ३,शुक्र	22 जुला	धनि.	ल. ५, ६, मु. 13/59 तक
श्राव. कृ. ६, चंद्र	25 जुला	उभा/रे.	ल. ५, ६, अभिजित
श्रा.कृ.१०/११, शुक्र	29 जुला	रोहि	मु. 6/41 बाद, ल. ५, ६
श्रा.शु. ५/६, चंद्र	8 अग.	ह/चि	ल. ५, ६, ८, अभिजित
श्राव. पूर्णिमा,गुरु	18 अग.	धनि.	ल. ६, अभिजित
भाद्र. कृ. १, शुक्र	19 अग.	शत.	ल. ६, अभिजित
भाद्र. कृ. ५, चंद्र	22 अग.	रेव.	ल. ६, अभिजित
भाद्र. कृ.१०,शनि	27 अग.	मृग.	मु. 9/55 तक, ल. ६
भाद्र.कृ. १२, चंद्र	29 अग.	पुष्य	11/03 बाद, ल. ८ (मं. श. के. दा.)
भाद्र. शु. १, शुक्र	2 सितं	उ.फा.	दोप. 12/26 बाद, ल. ८ (मं. श. दा.), ९
भाद्र. शु. २, शनि	3 सितं	उफा/ह	ल. ६, ८, ९
भाद्र. शु. ७, गुरु	8 सितं	अनु.	ल. ६ (गु. दा.) (मु. 12/24 बाद) गुरु वार्धक्य
कार्ति. कृ. ५,गुरु	20 अक्तू	मृग.	ल. ८ (मं. श. दा.), ९, अभि.
कार्ति. कृ. ७,शनि	22 अक्तू	पुन.	ल. ८, ९, अभिजित
कार्ति. कृ.१२,गुरु	27 अक्तू	उ.फा.	ल. ८, ९
कार्ति. शु. ३, बुध	2 नवं.	अनु.	ल. ८, ९
कार्ति. शु. ७, चंद्र	7 नवं.	श्रव.	ल. ८, ९, अभिजित
कार्ति. शु.११,शुक्र	11 नवं.	उ.भा.	मु. 9/13 बाद, ल. ८, ९, अभिजित

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
कार्ति.शु. १३,शनि	12 नवं.	रेव.	ल. ८, ९, अभिजित
मार्ग. कृ. ३, गुरु	17 नवं.	मृग.	मु. प्रात: 7/41 तक, भद्रा परि
मार्ग. कृ. ५, शुक्र	18 नवं.	पुन.	ल. ९, ११ (के. दा.)
मार्ग. कृ. ६, शनि	19 नवं.	पुष्य	ल. ९, ११ (के. दा.)
मार्ग. कृ. १०,बुध	23 नवं.	उ.फा.	ल. ९, १२
मार्ग. कृ. ११,गुरु	24 नवं.	उफा/ह	ल. ९, १२, अभिजित
मा. कृ.११/१२, शुक्र	25 नवं.	ह/चि	ल. ९, १२, अभिजित
मार्ग. कृ. १२,शनि	26 नवं.	चि/स्वा	ल. ९, १२, अभिजित
मार्ग. शु. ६, चंद्र	5 दिसं	श्र/ध	मु. 9/21 से 10/32 तक, ल.९
मार्ग. शु. ११,शनि	10 दिसं.	रे/अ	ल. ९, १२, अभिजित
(सन् 2017 ई० में)			
माघ कृ. ६, बुध	18 जन.	हस्त	ल. ११ (के. दा.), १२, २ (रा. दा.)
माघ कृ. ११, चंद्र	23 जन.	अनु	ल. ११ (के. दा.), १२, अभि., २ (13/56 तक)
माघ शु. ३, चंद्र	30 जन.	शत.	मु. 11/31 तक, ल. ११ (के. दा.), १२
माघ शु. ५, बुध	1 फर.	उ.भा.	ल. ११ (के. दा.), १२, २ (स्वयं सिद्ध मुहू.) मं.-युतिदोष (आवश्यके)
माघ शु. ६, गुरु	2 फर.	रेव.	ल. १२, २, अभिजित
माघ शु. ७, शुक्र	3 फर.	अश्वि	ल. १२, २, अभिजित
माघ शु. १०, चंद्र	6 फर.	रोहि	मु. 14/54 तक, ल. १२, २, अभि.
माघ शु. १२, बुध	8 फर.	पुन.	मु. 12/14 बाद, ल. २, ३
माघ शु. १३, गुरु	9 फर.	पुन.	मु. 9/22 तक, ल. ११ (के.दा.)
फाल्गु. कृ. ५,बुध	15 फर.	ह/चि	ल. १२, २ (रा. दा.)
फा.कृ.५/६, गुरु	16 फर.	चित्रा	ल. १२, २ (रा. दा.), अभि. (मु. 13/41 तक)
फाल्गु. शु. ३,बुध	1 मार्च	रेव.	ल. १२, २ (चं. दा.) (भौम-युति) (आवश्यके)
फा. शु. ११, बुध	8 मार्च	पुन.	मु. 11/57 तक, ल. १२, २
फा. शु. १२, गुरु	9 मार्च	पुष्य	ल. १२, २ (वृष ल. 11/23 बाद), अभिजित

दुकान या व्यवसाय शुरू करने के मुहूर्त्त-वि. २०७३ (2016-17 ई.)-विपणि

व्यवसाय में दुकान, कार्यालय, फैक्ट्री आदि शुरु करने के मुहूर्त्त के समय किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा सर्वदेव, नवग्रह पूजन के पश्चात् दृढ़ कलश-स्थापन एवं कन्या-पूजन आदि के पश्चात् ब्राह्मणों, आश्रित एवं सहयोगीजनों को यथाशक्ति भोजन आदि करवाना चाहिए। विपणि मुहूर्त्त में कुम्भ लग्न त्याज्य होता है। विशाल-पैमाने पर व्यापार करने के लिए केवल बु.गु. एवं शुक्र वारों को ही ग्रहण करना चाहिए। कर्त्ता की दशाऽन्तर्दशा भी उत्तम होनी चाहिए।

नोट–मुहूर्त्त वाले दिन अपनी राशि से चन्द्र 4, 8, 12वें हो, तो वह दिन त्याग दें। वार-स्वामी भी उदित होना चाहिए। वार स्वामी वक्री, अस्तादि हो, तो उसका दानादि करके कार्यारम्भ करना चाहिए।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल१,शुक्र	8 अप्रै.	अश्वि	ल. २, ३, अभि. (स्वयं सिद्ध मु.)
चैत्र शुक्ल ८,गुरु	14 अप्रै.	पुन.	मु. 9/35 बाद, ल. २, ३, अभिजित
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	22 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ३, अभि. (मु. 7/19 बाद)
वैशा. कृ. १, शनि	23 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ३ (ल. 10/18 तक)
वैशा. कृ. ३, चंद्र	25 अप्रै.	अनु.	ल. २, ३, ४, अभिजित
आषा. शु. १०,गुरु	14 जुला	स्वा.	प्रात: 6/52 तक
आषा.शु.११,शनि	15 जुला	अनु.	मु. 9/36 से 10/14 तक
श्राव. कृ. १, बुध	20 जुला	उ.षा.	ल. ५, ६
श्राव. कृ. २, गुरु	21 जुला	श्र/ध	ल. ५, ६, ७ (चं. दा.)
श्राव. कृ. ३,शुक्र	22 जुला	धनि.	मु. 9/31 से 13/59 तक, ल. ५, ६, अभि. (प्रात: 9/31 तक बुध पादवेध)
श्राव. कृ. ५, रवि	24 जुला	उ.भा.	मु. 13/37 बाद, ल. ७
श्राव. कृ. ६, चंद्र	25 जुला	उ/रे.	ल. ५, ६, ७, अभिजित
श्राव. कृ.१०,शुक्र	29 जुला	रोहि.	मु. 6/41 बाद, ल. ५, ६
श्राव. शु. ५, रवि	7 अग.	उ/ह	ल. ५, ६ (बु. दा.), अभि., ७
श्राव. शु. ५, चंद्र	8 अग.	ह/चि	ल. ५, ६ (चं. दा.), ७, अभि.

विपणि मुहूर्त्त—वि. संवत् २०७३

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
श्राव. शु.११, रवि	14 अग.	मूल	ल. ५, ६, ७, अभि.
श्राव. पूर्णिमा, गुरु	18 अग.	धनि.	ल. ६, ७, अभिजित
भाद्र. कृ. ५, चंद्र	22 अग.	रेव.	ल. ६, ७, अभिजित् (मु. 8/04 बाद)
भाद्र. कृ.१०, शनि	27 अग.	मृग.	मु. 9/55 तक, ल. ६
भाद्र. कृ. ११, रवि	28 अग.	पुन.	मु. 9/18 से 12/51 तक ल. ६ (बु. दा.), ७
भाद्र. कृ.१२, चंद्र	29 अग.	पुष्य	मु. 11/03 से 14/30 तक, ल. ७, अभिजित
भाद्र. शु. १, शुक्र	2 सितं.	उ.फा.	मु. 12/26 बाद, ल.९(चं.दा.)
भाद्र. शु. २, शनि	3 सितं.	उ.फा.	ल. ६ (चं. बु. दा.), ७, अभि.
भाद्र शु. ३, रवि	4 सितं.	ह/चि	ल. ६, (चं. बु. दा.), ७, अभि.
अश्वि शु.११, बुध	12 अक्टू.	धनि.	मु. 9/52 तक, ल. ७(शु.दा.)
कार्ति. कृ. ५, गुरु	20 अक्टू.	मृग.	मु. प्रातः 9/13 बाद, ल. ९, १२, अभिजित
कार्ति. कृ. ७, शनि	22 अक्टू.	पुन.	मु. 13/11 तक, ल. ८ (चं. दा.), ९ , अभिजित
कार्ति. कृ. १२, गुरु	27 अक्टू.	उ.फा	ल. ८, ९ (मं. दा.)
कार्ति. शु. ३, बुध	2 नवं.	अनु.	ल. ९, १०
का.शु. ४/५, शुक्र	4 नवं.	मूल	मु. 8/52 बाद, ल. ९, १०
कार्ति. शु. ७, चंद्र	7 नवं.	श्रव.	ल. ९ (शु. दा.), १०, अभि.
का.शु.११/१२, शुक्र	11 नवं.	उ.भा.	ल. ९, १०, अभिजित
का. शु. १३, शनि	12 नवं.	रेव.	ल. ९, १०, अभिजित
मार्ग. कृ. ३, गुरु	17 नवं.	मृग.	प्रातः 7/41 तक
मार्ग. कृ. ५, शुक्र	18 नवं.	पुन.	ल. ९, १० (मं. दा.), अभि.
मार्ग. कृ. ६, शनि	19 नवं.	पुष्य	ल. ९, १०, अभिजित
मार्ग. कृ.१०, बुध	23 नवं.	उ.फा.	ल. ९, १० (मं. दा.)
मार्ग. कृ. ११, गुरु	24 नवं.	उफा/ह	ल. ९, १० (मं. दा.), अभि.
मार्ग. कृ.११, शुक्र	25 नवं.	ह/चि	ल. ९, १० (मं. दा.), अभि.
मार्ग. कृ.१२, शनि	26 नवं.	चित्रा	मु. प्रातः 10/11 तक, ल.९
मार्ग. शु. २, गुरु	1 दिसं.	मूल	प्रातः 7/40 बाद, (शूल यो. ५ घटी व्यक्त्वा) ल. ९, १० (मं. बु. दा.)

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
मार्ग. शु. ५, रवि	4 दिसं.	उषा/श्र	ल. ९ (बु. दा.), १० (मं. दा.), अभिजित
मार्ग. शु. ६, चंद्र	5 दिसं.	श्रव.	मु. 9/21 से 10/32 तक, ल. ९
मार्ग. शु. ११, शनि	10 दिसं.	रे/अ	ल. ९ (बु.दा.), १० (मं.दा.), अभिजित
(सन् 2017 ई० में)			
माघ कृष्ण ६, बुध	18 जन.	हस्त	ल. १२, १ (शं. दा.)
माघ कृ. १०, रवि	22 जन.	अनु.	मु. 11/03 बाद, ल. १२, १, २ (चं. दा.), अभिजित
माघ कृ. ११, चंद्र	23 जन.	अनु.	मु. 13/56 तक, ल.१२,१, अभि.
माघ शु. २, रवि	29 जन.	धनि.	मु. 13/03 बाद, ल. २, ३ (चं. दा.)
माघ शु. ५, बुध	1 फर.	उ.भा.	ल. १२ (स्वयं सिद्ध मुहू.) आवश्यके (मंग.-युति)
माघ शु. ६, गुरु	2 फर.	रेव.	ल. १२, १, अभिजित
माघ शु. ७, शुक्र	3 फर.	अश्वि	ल. १२, १, अभिजित
माघ शु. १०, चंद्र	6 फर.	रोहि	मु. 14/54 तक, ल. १२, अभि.
माघ शु. १२, बुध	8 फर.	पुन.	मु. 12/14 बाद, ल. २, ३
माघ शु. १३, गुरु	9 फर.	पुन.	मु. प्रातः 9/22 तक, ल. १०, १२
फाल्गु. कृ. ५, बुध	15 फर.	ह/चि	ल. १२, १ (शूल योग परिहार)
फा.कृ. ५/६, गुरु	16 फर.	चित्रा	ल. १२, १, अभि. (मु. 13/41 तक)
फा. कृ. ८, रवि	19 फर.	अनु.	ल. १२, १, २, अभि.

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १२, चंद्र	18 अप्रै.	पू.फा.	ल. २, ३, अभिजित
वैशा. कृ. ३, चंद्र	25 अप्रै.	अनु.	ल. २, ३, अभिजित
आषा. शु. १०, गुरु	14 जुला	स्वा.	मु. 6/52 तक
(सन् 2017 ई० में)			
मा.कृ.४/५, चंद्र	16 जन.	पू.फा.	मु. 11/16 बाद, ल. १२, अभि
माघ शु. २, रवि	29 जन.	धनि.	मु. 13/03 बाद, ल. २ (शु. दा.), अपराह्न पूर्वे
माघ शु. ३, चंद्र	30 जन.	शत.	ल. १२, अभि., १
माघ शु. ५, बुध	1 फर.	उ.भा.	ल. १२ (स्वयं सिद्ध मु.)
माघ शु. ६, गुरु	2 फर.	रेव.	ल. १२, १
माघ शु. ७, शुक्र	3 फर.	अश्वि	ल. १२, १, अभिजित्
माघ शु. १०, चंद्र	6 फर.	रोहि.	ल. १२, १ (मु. 14/54 तक)
माघ शु. १२, बुध	8 फर.	आर्द्रा	मु. 11/30 तक, ल. १२, १
फाल्गु. कृ. ३, चंद्र	13 फर.	पू.फा.	ल. १२ (मु. 8/59 तक)
फाल्गु. कृ. ५, बुध	15 फर.	ह/चि	ल. १२, १
फाल्गु. कृ. ५, गुरु	16 फर.	चित्रा	मु. प्रातः 7/24 तक
फाल्गु. शु. १, चंद्र	27 फर.	पू.भा.	ल. १२, १, अभिजित
फाल्गु. शु. ३, बुध	1 मार्च	रेव.	ल. १२, १ (मं. दा.) आवश्यके
चैत्र कृ. ३, बुध	15 मार्च	चित्रा	ल. १, २
चैत्र कृ. ५, शुक्र	17 मार्च	विशा	ल. १, २

उपनयन (यज्ञोपवीत) मुहूर्त्त-सं. २०७३

शास्त्रमत अनुसार ज्येष्ठ (बड़े) पुत्र का यज्ञोपवीत ज्येष्ठ मास में नहीं करना चाहिए। पुनर्वसु नक्षत्र में ब्राह्मण का उपनयन न करें। बुध अस्त हो या पापाक्रान्त हो, तो बुधवार को उपनयन न करें। मुहूर्त्त के दिन चन्द्रमा बालक की राशि से ४, ८ या १२वें स्थान नहीं होना चाहिए। आगामी वर्ष के कुछ मुख्य उपनयन मुहूर्त्त दिए जाते हैं—

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण
चैत्र शु. १, शुक्र	8 अप्रै.	अश्वि	मु. 10/44 बाद, ल. ३
चैत्र शु. ५, चंद्र	11 अप्रै.	रोहि.	ल. २, ३, अभिजित

मुहूर्त्त मुकलावा (द्विरागमन)-2016-17 ई.

विवाह के दिन से १६ दिन के भीतर ही द्विरागमन हो, तो निर्धारित मुहूर्त्तों के बिना भी वधू प्रवेश या द्विरागमन करवाना शुभ होता है। इसके अतिरिक्त, नवविवाहिता स्त्री को विवाह के बाद द्विरागमन अथवा यात्रा में सम्मुख शुक्र एवं दक्षिण शुक्र का भी विचार किया जाता है—आजकल कुछ ज्योतिषी परिस्थितिवश एवं लोकाचार स्वरूप रवि एवं शनिवार भी ग्रहण करने लगे हैं। द्विरागमन में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त होता है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. ८, गुरु	14 अप्रै.	पुन.	मु. 9/35 बाद, ल. ३, ५
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	22 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ३, अभिजित
वैशा. कृ. १, शनि	23 अप्रै.	स्वा.	मु. 10/18 तक, ल. २, [illegible]

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. २, रवि	24 अप्रै.	अनु.	मु. 13/06 बाद, ल. ५, ६
वैशा. कृ. ३, चंद्र	25 अप्रै.	अनु.	ल. २, ३
मार्ग. कृ. ३, गुरु	17 नवं.	मृग	मु. प्रातः 7/41 तक
मार्ग. कृ. ५, शुक्र	18 नवं.	पुन.	ल. ९, १०, अभिजित
मार्ग. कृ. ६, शनि	19 नवं.	पुष्य	ल. ९, १०, अभिजित
मार्ग. कृ. १०, बुध	23 नवं.	उ.फा.	ल. ९, १०
मार्ग. कृ. ११, गुरु	24 नवं.	उ/ह	ल. ९, १०, अभिजित
मार्ग. कृ. ११, शुक्र	25 नवं.	ह/चि	ल. ९, १०, १२, अभिजित
मार्ग. कृ. १२, शनि	26 नवं.	चित्रा	मु. 10/11 तक
मार्ग. शु. २, गुरु	1 दिसं.	मूल	ल. ९, १०, १२, अभिजित
मार्ग. शु. ५, रवि	4 दिसं.	उषा/श्र	ल. ९, १०, १२, अभिजित
मार्ग. शु. ६, चंद्र	5 दिसं.	श्रव	मु. 9/21 से 10/32 तक ल. ९
मार्ग. शु. ११, शनि	10 दिसं.	रे/अ.	ल. ९, १०, १२, अभिजित
(सन् 2017 ई० में)			
फाल्गु. कृ. ५, बुध	15 फर.	ह/चि	ल. १२, १, २
फा.कृ. ५/६, गुरु	16 फर.	चित्रा	ल. १२, १, २, अभि. (मु. 13/41 तक)
फाल्गु. शु. ३, बुध	1 मार्च	रेव.	ल.१२,१,२(श.दा.)आवश्यके

सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-सं. २०७३

आगे लिखे मुहूर्त्त प्रायः सभी देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना, **जलाशय, तालाब, बावड़ी, कूआं आदि के निर्माण हेतु भी ग्रहणीय होंगे।** सात्त्विक देवी-देवताओं की मूर्त्ति स्थापना में उत्तरायण मास तथा देवी/देवता का जयंती दिन विशेष प्रशस्त माने जाते हैं।

श्री विष्णु, राम की मूर्त्ति स्थापना में वैशाख आदि उत्तरायण मासों के अतिरिक्त अक्षया तृतीया, रामनवमी, विजयादशमी, दीपावली आदि विशेष शुभ हैं। श्री विष्णु प्रतिमा में माघ मास वर्जित होता है। भैरव आदि तामस देवों के लिए मार्गशीर्ष मास विशेष ग्राह्य हैं। श्रीकृष्ण की प्रतिमा के लिए उत्तरायण मास, भाद्र. कृष्णाष्टमी तथा मार्गशीर्ष मास शुभ माने जाते हैं।

श्री शिव मूर्त्ति, एवं शिवलिंग की प्रतिष्ठा में श्रावण एवं फाल्गुण मास की चतुर्दशी (शिवरात्रि) विशेषतया प्रशस्त है।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल १, शुक्र	8 अप्रै.	अश्वि	मु. 10/44 बाद, ल. ३ (स्वयंसिद्ध)
चैत्र शुक्ल ८, गुरु	14 अप्रै.	पुन.	मु. 9/35 बाद, ल. ३, अभि.

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल ९, शुक्र	15 अप्रै.	पुष्य	ल. २, ५ (श्रीराम)
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	22 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ३ (मु. 7/19 बाद)
वैशा. कृ. १, शनि	23 अप्रै.	स्वा.	प्रातः 10/18 तक, ल. २, ३
वैशा. कृ. ३, चंद्र	25 अप्रै.	अनु.	ल. २, ३, अभिजित
आषा. शु.१०, गुरु	14 जुला	स्वा.	मु. प्रातः 6/52 तक
(सन् 2017 ई० में)			
माघ कृ. ६, बुध	18 जन.	हस्त	ल. १२
माघ कृ. १०, रवि	22 जन.	अनु.	मु. 11/03 बाद
माघ कृ. ११, चंद्र	23 जन.	अनु.	ल. १२, १ (मं. दा.)
माघ शु. ३, चंद्र	30 जन.	शत.	ल. १२, मु. 11/31 तक
माघ शु. ६, गुरु	2 फर.	रेव.	ल. १२, अभिजित
माघ शु. ७, शुक्र	3 फर.	अश्वि	ल. १२, १ (मं. दा.)
माघ शु. १०, चंद्र	6 फर.	रोहि.	ल. १२, १ (मं. दा.)
माघ शु. १३, गुरु	9 फर.	पुन.	मु. 9/22 तक, ल. १२
फाल्गु. कृ. ५, बुध	15 फर.	ह/चि.	ल. १२, १ (मं. दा.), २
फा. कृ.५/६, गुरु	16 फर.	चित्रा	ल. १२, १, २
फाल्गु. कृ.८, रवि	19 फर.	अनु.	ल. १२, १
चैत्र कृ. ३, बुध	15 मार्च	चित्रा	ल. १, २ (अत्यावश्यकता में)
चैत्र कृ. ६, शनि	18 मार्च	अनु.	ल. १, २ (अत्यावश्यक)

श्रीगणेश प्रतिमा प्रतिष्ठा मुहूर्त्त-२०७३

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
वैशा. कृ. ४, मंग.	26 अप्रै.	ज्ये.	ल. २ (शु.दा.) (आवश्यके) (शुक्र वार्धक्य विचार)
श्राव. कृ. ४, शनि	23 जुला	शत.	ल. ५, ६
भाद्र.कृ.३/४, रवि	21 अग.	उ.भा.	मु. 8/18 से 11/14 तक, ल.६
कार्ति. कृ.४, बुध	19 अक्तू	रोहि.	ल. ८, ९ (मु. 9/51 बाद)
मार्ग कृ.३/४, गुरु	17 नवं	मृ./आ.	ल. ९
(सन् 2017 ई० में)			
माघ कृ. ४, चंद्र	16 जन.	पू.फा.	ल. १२ (मु. 11/16 तक)
फाल्गु. कृ.४, मंग.	14 फर.	उ.फा.	ल. १२

श्रीदुर्गा देवी प्रतिष्ठा मुहूर्त्त २०७३

(आगे लिखे मुहूर्त्त समस्त देवियों की प्रतिष्ठा के लिए शुभ होंगे। परन्तु श्रीगौरी की प्रतिष्ठा के मुहूर्त्त के लिए शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथियां विशेष रूप से शुभ एवं प्रशस्त होंगी।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. १, शुक्र	8 अप्रै.	अश्वि.	मु. 10/44 बाद, ल. ३
चैत्र शु. ८, गुरु	14 अप्रै.	पुन.	ल. २, ३ (मु. 9/35 बाद)
चैत्र शु. ९, शुक्र	15 अप्रै.	पुष्य	ल. २, ३ (मु. 12/27 तक)
वैशा. कृ. १, शनि	23 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ३
वैशा. कृ. ३, चंद्र	25 अप्रै.	अनु.	ल. २, ३
आषा. शु. ९, बुध	13 जुला	स्वा.	ल. ५
आषा.शु.१०, गुरु	14 जुला	स्वा.	मु. प्रातः 6/52 तक
आषा.शु. १३, रवि	17 जुला	ज्ये.	ल. ५, ६
श्राव. कृ. १, बुध	20 जुला	उ.षा.	ल. ५, ६
श्राव. कृ. २, गुरु	21 जुला	श्रव.	ल. ५, ६
श्राव. कृ. ९, गुरु	28 जुला	कृति	मु. 8/11 बाद, ल. ५, ६
श्राव. कृ.१०, शुक्र	29 जुला	कृ./रो.	ल. ५, ६
श्राव.कृ.११, शनि	30 जुला	मृग	मु. 9/19 तक
श्राव. शु. ५, रवि	7 अग.	उ/ह	ल. ५, ६
श्रा.शु.५/६, चंद्र	8 अग.	ह/चि	ल. ५, ६
श्राव. शु.११, रवि	14 अग.	मूल	ल. ५, ६
भाद्र. कृ. ५, चंद्र	22 अग.	रेव.	ल. ६
भाद्र. कृ. ८, गुरु	25 अग.	कृति.	ल. ६
भाद्र कृ. ९, शुक्र	26 अग.	रो/मृ	ल. ६
भाद्र शु. ३, रवि	4 सितं.	हस्त	ल. ६
आश्वि शु. ९, रवि	10 अक्तू	उ.षा.	ल. ८ (गुरु बाल्यत्व) गु. दा.
कार्ति. कृ. ५, गुरु	20 अक्तू	मृग	मु. 9/13 बाद, ल. ८, ९
कार्ति. कृ. ७, शनि	22 अक्तू	पुन.	ल. ८, ९
कार्ति कृ. ८, रवि	23 अक्तू	पुष्य	ल. ८, ९
कार्ति. कृ.१२, बुध	27 अक्तू	उ.फा.	ल. ८, ९
कार्ति शु. ३, बुध	2 नवं.	अनु.	ल. ८, ९
का.शु.४/५, शुक्र	4 नवं.	मूल	मु. 8/52 बाद, ल. ८, ९
कार्ति. शु. ७, चंद्र	7 नवं.	श्रव.	ल. ८, ९, १०, भद्रा परिहार
कार्ति. शु. ९, बुध	9 नवं.	शत.	ल. ८, ९, १०
मार्ग. कृ. ३, गुरु	17 नवं.	मृग	मु. 7/41 तक

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
मार्ग. कृ. ५, शुक्र	18 नवं.	पुन.	ल. ९, १०, अभि.
मार्ग. कृ. ६, शनि	19 नवं.	पुष्य	ल. ९
मार्ग. कृ. १२, शनि	26 नवं.	चित्रा	मु. 10/11 तक, ल. ९
मार्ग. शु. २, गुरु	1 दिसं.	मूल	ल. ९ (मु. 7/40 बाद)
मार्ग. शु. ५, रवि	4 दिसं.	उषा/श्र	ल. ९, १०
मार्ग. शु. ६, चंद्र	5 दिसं.	श्रव.	मु. 9/21 से 10/32 तक
मार्ग. शु. ९, शुक्र	8 दिसं.	पूभा/उ.	ल. ९
(सन् 2017 ई० में)			
माघ कृ. १०, रवि	22 जन.	अनु.	मु. 11/03 बाद
माघ कृ. ११, चंद्र	23 जन.	अनु.	ल. १२
माघ शु. ३, चंद्र	30 जन.	शत.	ल. १२, मु. 11/31 तक
माघ शु. ६, गुरु	2 फर.	रेव.	ल. १२, १ (मं. दा.)
माघ शु. ७, शुक्र	3 फर.	अश्वि	ल. १२, १
माघ शु. ९, रवि	5 फर.	कृति	ल. १२, १
माघ शु. १०, चंद्र	6 फर.	रोहि.	ल. १२, १
माघ शु. १३, गुरु	9 फर.	पुन/पु	मु. 9/22 तक
फाल्गु.कृ. ५, बुध	15 फर.	ह./चि.	ल. १२, १
फाल्गु. कृ. ५, गुरु	16 फर.	चित्रा	ल. १२, १
फाल्गु.कृ. ८, रवि	19 फर.	अनु.	ल. १२, १
फाल्गु. शु.५, शुक्र	3 मार्च	भर.	ल. १२, १ (काली)

भगवान् शिव प्रतिष्ठा मुहूर्त्त सं. २०७३

गत कालमों में दिए गए सर्वदेव प्रतिष्ठा मुहूर्त्तों के अतिरिक्त आगे भगवान् शिव प्रतिमा व शिवलिङ्ग स्थापन हेतु मुख्य मुहूर्त्त दिए जा रहे हैं, जो विशेषत: शुभ एवं ग्राह्य होंगे। शिव प्रतिमा/शिवलिङ्ग प्रतिष्ठा हेतु निम्न मुहूर्त्तों में आगामी पृष्ठ पर दिए गए '**शिववास चक्र**' का भी प्रयोग करें तो विशेष शुभ होगा। **शिव प्रतिष्ठा हेतु उत्तरायण मास तथा मिथुन लग्न विशेष प्रशस्त होते हैं।**

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शुक्ल १, शुक्र	8 अप्रै.	अश्वि	मु. 10/44 बाद, ल. ३
चैत्र शु. ५, चंद्र	11 अप्रै.	रोहि.	ल. २, ३
चैत्र शु. ८, गुरु	14 अप्रै.	पुन.	ल. २, ३ (मु. 9/35 बाद)
चैत्र शु. १२, चंद्र	18 अप्रै.	पू.फा.	ल. २, ३
चैत्र शु. १४, बुध	20 अप्रै.	हस्त	ल. २, ३
वैशा. कृ. १, शनि	23 अप्रै.	स्वा.	ल. २, ३
वैशा. कृ. ३, चंद्र	25 अप्रै.	अनु.	ल. २, ३
आषा. शु. १०, गुरु	14 जुला	स्वा.	ल. ५, ६
आषा. शु. १३, रवि	17 जुला.	ज्ये.	ल. ५, ६
श्राव. कृ. २, गुरु	21 जुला	श्रव.	ल. ५, ६
श्राव. कृ. ३, शुक्र	22 जुला	धनि.	ल.५,६ (बुध व शुक्र पादवेध विचार्य)
श्राव. कृ. ७, मंग.	26 जुला	रेव.	मु. 6/41 से 11/06 तक ल.५,६ (गुरु पादवेध विचार्य)
श्राव. कृ.१०, शुक्र	29 जुला	रोहि.	मु. 6/41 से 10/47 तक
श्रा. कृ. १२/१३, रवि	31 जुला	आर्द्रा	ल. ५, ६
श्राव. कृ.१४, चंद्र	1 अग.	पुन	ल. ५, ६ (भद्रा परिहार)
श्राव. शु. २, गुरु	4 अग.	मघा	ल. ५, ६
श्राव. शु. ३, शुक्र	5 अग.	पू.फा.	ल. ५, ६
श्राव. शु. ५, रवि	7 अग.	हस्त	6/29 बाद, ल. ५, ६
श्रा.शु.५/६, चंद्र	8 अग.	हस्त	मु. प्रात: 9/01 तक, ल. ५
श्राव. शु.११, रवि	14 अग.	मूल	ल. ५, ६
मार्ग. कृ. ३, गुरु	17 नवं.	मृ/आ	ल. ९ (प्रात: 8/23 तक विशेष शुभ)
मार्ग. कृ. ५, शुक्र	18 नवं.	पुन.	ल. ९, ११, अभि.
मार्ग. कृ. ६, शनि	19 नवं.	पुष्य	ल. ९, ११, अभि.
मार्ग. कृ. १३, रवि	27 नवं.	स्वा.	ल. ९, ११, अभि.
मार्ग. शु. २, गुरु	1 दिसं	मूल	मु. 7/40 बाद
मार्ग. शु. ६, चंद्र	5 दिसं	श्रव.	ल. ९, ११, अभि.
मार्ग. शु. ८, बुध	7 दिसं	शत.	मु. 11/41 तक
मार्ग. शु. १४, मंग	13 दिसं	रोहि	मु. 9/17 तक
(सन् 2017 ई० में)			
माघ कृ. ६, बुध	18 जन.	हस्त	ल. १२
माघ कृ. ८, शुक्र	20 जन.	स्वा.	ल. १२
माघ कृ. १२, मंग.	24 जन.	ज्ये.	ल. १२
माघ कृ. १३, बुध	25 जन.	मूल	ल. ११, १२
माघ शु. १, शनि	28 जन.	श्रव.	ल. १२
माघ शु. ३, चंद्र	30 जन.	शत.	मु. 11/31 तक, ल. ११
माघ शु. ६, गुरु	2 फर.	रेव.	ल. ११, १२
माघ शु. ७, शुक्र	3 फर.	अश्वि	ल. १२
माघ शु. १०, चंद्र	6 फर.	रोहि.	ल. १२, मु. 14/54 पूर्व
माघ शु. १२, बुध	8 फर.	आर्द्रा	ल. १२
मा. शु. १३/१४, गुरु	9 फर.	पुन/पु	ल. १२
फाल्गु. कृ. ३, चंद्र	13 फर.	पू.फा.	मु. 8/59 तक
फाल्गु कृ. ५, बुध	15 फर.	हस्त	ल. १२
फाल्गु. कृ. ८, रवि	19 फर.	अनु.	ल. १२, २, अभि.
फा. कृ. १४, शनि	25 फर.	श्र/ध	ल. १२, २, अभि.

श्री मद्भागवत, हरिवंशपुराण, रामायणादि प्रारम्भ मुहूर्त्त-वि. संवत् २०७३

वैसे तो भगवान् श्री हरि की कथा किसी भी स्थिति या समय में गाई जा सकती है, परन्तु श्री मद्भागवत, श्रीहरिवंश पुराण, रामायण, शिव महापुराण आदि पूज्य ग्रन्थों के पाठ का प्रारम्भ शास्त्र निर्धारित तिथि, नक्षत्र, वार, मास आदि के अनुसार किया जाए, तो विशेष अधिक पुण्यफल प्रद होता है। सुनिश्चित मुहूर्त्तों में भी कृष्ण पक्ष की अपेक्षा शुक्ल पक्ष श्रेष्ठतर माना गया है। श्री शिवपुराण पाठारम्भ में श्रावण, माघ व फागुन मास विशेष प्रशस्त माने जाते हैं। श्रीदेवीभागवत् वाचन हेतु श्री दुर्गा प्रतिष्ठा में लिखे मुहूर्त्त भी ग्राह्य होंगे।

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
चैत्र शु. ८, गुरु	14 अप्रै.	पुन.	ल. ३ (मु. 9/35 बाद)
चैत्र शु. १२, चंद्र	18 अप्रै.	पू.फा.	ल. २, ३
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	22 अप्रै.	स्वा.	मु. 7/19 बाद, ल. २, ३
आषा. शु. १०, गुरु	14 जुला	स्वा.	मु. प्रात: 6/52 तक
श्राव. कृ. २, गुरु	21 जुला	श्रव.	ल. ५, ६
श्राव. कृ. ३, शुक्र	22 जुला	धनि.	ल. ५, ६
श्राव. कृ. ५, रवि	24 जुला	पू.भा.	ल. ५, ६
श्राव. कृ. ६, चंद्र	25 जुला	उ.भा.	ल. ५, ६
श्राव. कृ. ८, बुध	27 जुला	अश्वि	मु. प्रात: 9/41 तक, ल. ५
श्राव.कृ. १०, शुक्र	29 जुला	रोहि	प्रात: 6/41 बाद
श्राव. शु. ३, शुक्र	5 अग.	पू.फा.	ल. ५, ६
श्राव. शु. ५, रवि	7 अग.	उफा/ह	ल. ५, ६

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
श्रीमद्भागवत्, रामायणादि प्रा. मुहूर्त्त			
श्रा.शु. ५/६, चंद्र	8 अग.	ह/चि	ल. ५, ६
श्राव. शु. ७, बुध	10 अग.	स्वा.	मु. 10/39 तक
श्राव पूर्णिमा, गुरु	18 अग.	धनि.	ल. ६, अभिजित
भाद्र. कृ. ५, चंद्र	22 अग.	रेव	ल. ६, ७, अभिजित
भाद्र. कृ. ११,रवि	28 अग.	पुन	मु. 9/18 से 12/51 तक
भाद्र शु. ३, रवि	4 सितं	हस्त	ल. ६, अभिजित
कार्ति. कृ. ५,गुरु	20 अक्तू	मृग	ल. ८, ९, अभिजित
कार्ति. कृ. ८,रवि	23 अक्तू	पुष्य	ल. ८, ९, अभिजित
कार्ति. कृ.११,बुध	26 अक्तू	पू.फा.	ल. ८, ९
कार्ति. कृ.१२,गुरु	27 अक्तू	उ.फा.	ल. ८, ९, अभिजित
कार्ति. शु. ३, बुध	2 नवं.	अनु.	ल. ८, ९
कार्ति. शु. ७, चंद्र	7 नवं.	श्रव.	ल. ८, ९, अभिजित
मार्ग. कृ. ५, शुक्र	18 नवं.	पुन	ल. ९, अभिजित
मार्ग. शु. १०,बुध	23 नवं.	उ.फा.	ल. ९,
मार्ग. कृ.११, गुरु	24 नवं.	उफा/ह	ल. ९, अभिजित
मार्ग.कृ. ११,शुक्र	25 नवं.	हस्त	ल. ९, अभिजित
मार्ग. कृ.१२,शनि	26 नवं.	चित्रा	ल. ९, अभिजित
मार्ग. शु. ३, शुक्र	2 दिसं	पू.षा.	ल. ९, अभिजित
मार्ग. शु. ५, रवि	4 दिसं	उ/श्र	ल. ९, अभिजित
(सन् 2017 ई० में)			
मा. कृ.४/५, चंद्र	16 जन.	पू.फा.	मु. 11/40 बाद, अभिजित
माघ कृ. ६, बुध	18 जन.	हस्त	ल. ११, १२
माघ कृ. १०, रवि	22 जन.	अनु.	ल. 11/03 बाद, अभि.
माघ कृ. ११, चंद्र	23 जन.	अनु.	ल. ११, १२, अभिजित
माघ शु. ३, चंद्र	30 जन.	शत	ल. ११, १२, अभिजित
माघ शु. ७, शुक्र	3 फर.	अश्वि	ल. ११, १२, अभिजित
माघ शु. १०, चंद्र	6 फर.	रोहि	ल. १२, अभिजित
माघ शु. १३, गुरु	9 फर.	पुन/पु	ल. १२, मु. 9/22 तक
फाल्गु. कृ. ५,बुध	15 फर.	ह/चि	ल. १२, १, २
फाल्गु. कृ. ५,गुरु	16 फर.	चित्रा	ल. १२, १, २
फाल्गु. कृ. ८,रवि	19 फर.	अनु.	ल. १२, १, २
फाल्गु.कृ.११,बुध	22 फर.	पू.षा.	ल. १२, १
फाल्गु. शु.१, चंद्र	27 फर.	पूभा	ल. १२, १, २
फाल्गु. शु. ३,बुध	1 मार्च	रेव	ल. १२, १, २

वाहन आदि क्रय मुहूर्त्त-सन् 2016 ई.

आगे लिखे मुहूर्त्त कार, स्कूटर, साईकल, ट्रक आदि का क्रय करने के अतिरिक्त कम्पयूटर, रेफ्रिजरेटर, जनरेटर, टैलीविजन, ज़मीन-जायदाद, बहुमूल्य आभूषण, वस्त्रादि की खरीद करने में समान रूप में उपयोगी होंगे। शनिवार वाला दिन तभी ग्रहण करें, यदि कुण्डली में शनि शुभ या योगकारक हो। वाहनादि से पूर्ण लाभ प्राप्ति एवं सुरक्षा हेतु अपने पण्डित या पुरोहित जी द्वारा वाहन पर मन्त्रपूर्वक स्वास्तिक चिन्ह रचना, श्री गणेश अम्बिका पूजन एवं हनुमान पूजा एवं कवच व स्तोत्र पाठ करवाना शुभ होगा। पूजनोपरान्त पण्डित जी को यथाशक्ति दान-दक्षिणा देकर उनसे शुभाशीष ग्रहण करना चाहिए। वाहन क्रय करने वाले व्यक्ति का चंद्रमा भी चतुर्थ, अष्टम या बारहवें नहीं होना चाहिए। —निवेदक पं. विवेक शर्मा ज्यो.

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
पौष शु.११, बुध	20 जन.	रोहि	ल. ११, १
पौष पूर्णिमा, शनि	23 जन.	पुन	मु. 7/31 से 14/03 तक, ल. ११, १
माघ कृ. १, रवि	24 जन.	पुष्य	ल. ११, १, अभिजित
माघ कृ. ३, बुध	27 जन.	पू.फा.	मु. प्रातः 9/56 तक
माघ कृ. ५, शुक्र	29 जन.	हस्त	ल. ११, १, अभिजित
माघ शु. २, बुध	10 फर.	शत	ल. १२, १
माघ शु. ३, गुरु	11 फर.	पू/उ	ल. १२, १, मु. 12/03 तक
माघ शु. १०, बुध	17 फर.	मृग.	ल. १२, १ (मु. 7/39 बाद)
माघ शु. १२,शुक्र	19 फर.	पुन	ल. १२, १, अभि., २
माघ पूर्णिमा, चंद्र	22 फर.	मघा	ल. २, अभि. मु. 11/12 बाद
फाल्गु. कृ.२, बुध	24 फर.	पूफा/उ.	ल. १२, १
फाल्गु. कृ.३, गुरु	25 फर.	उ/ह	ल. १२, १, अभिजित
फा. कृ.११, शनि	5 मार्च	उ.षा.	ल. १२, १, २, अभिजित
फाल्गु.कृ.१२,रवि	6 मार्च	श्रव.	ल. १२, १, २
चैत्र शु. १, शुक्र	8 अप्रै.	अश्वि	मु. 10/44 बाद, ल. २, ३
चैत्र शु. ८, गुरु	14 अप्रै.	पुन.	मु. 9/35 बाद, ल. ३, ५, अभि.
चैत्र शु.१०, शनि	16 अप्रै.	आश्ले	ल. २, ३
चैत्र शु. ११, रवि	17 अप्रै.	मघा	ल. २, ३
चैत्र शु. १२, चंद्र	18 अप्रै.	पू.फा.	ल. २, ३
चैत्र पूर्णिमा, शुक्र	22 अप्रै.	स्वा.	मु. 7/19 बाद, ल. २, ३
वैशा. कृ. १,शनि	23 अप्रै.	स्वा.	मु. 10/18 तक
वैशा. कृ. ३, चंद्र	25 अप्रै.	अनु.	ल. २, ३, अभिजित

पक्ष तिथि वार	तारीख	नक्षत्र	मुहूर्त्त विवरण (घं. मिं.)
श्राव. कृ. १, बुध	20 जुला	उ.षा.	ल. ५, ६, ७
श्राव. कृ. २, गुरु	21 जुला	श्रव.	ल. ५, ६, ७
श्राव. कृ. ५, रवि	24 जुला	पू.भा.	ल. ५, ६, ७
श्राव. कृ. ६, चंद्र	25 जुला	उ.भा.	ल. ५, ६, ७
श्रा.कृ.११/१२, शनि	30 जुला	मृग	मु. प्रातः 9/19 तक
श्राव. शु. २, गुरु	4 अग.	मघा	ल. ५, ६, अभिजित
श्राव. शु. ३, शुक्र	5 अग.	पू.फा.	ल. ५, ६, अभिजित
श्राव. शु. ५, रवि	7 अग.	उ/ह	ल. ५, ६, अभिजित
श्रा.शु.५/६, चंद्र	8 अग.	ह/चि	ल. ५, ६, अभिजित
श्राव. शु.११, रवि	14 अग.	मूल	ल. ५, ६, ७, अभिजित
श्राव. पूर्णिमा, गुरु	18 अग.	धनि.	ल. ६, ७, अभिजित
भाद्र. कृ. १, शुक्र	19 अग.	शत.	ल. ६, ७, अभिजित
भाद्र. कृ. २, शनि	20 अग.	पू.भा.	ल. ६, ७, अभिजित
भाद्र. कृ.१०,शनि	27 अग.	मृग.	मु. 9/55 तक
भाद्र. शु. १, शुक्र	2 सितं	पू.फा.	ल. ६, ७, अभिजित
भाद्र. शु. ३, रवि	4 सितं	हस्त	ल. ६, ७, अभिजित
आश्वि शु.१२, गुरु	13 अक्तू	शत.	ल. ७, ९, अभिजित
आश्वि शु.१३,शुक्र	14 अक्तू	पू.भा.	ल. ७, ९, अभिजित
कार्ति. कृ. ५, गुरु	20 अक्तू	मृग.	मु. 9/49 बाद, ल. ९, १०, अभिजित
कार्ति. कृ. ७,शनि	22 अक्तू	पुन.	ल. ९, १०, अभिजित
कार्ति. कृ.११,बुध	26 अक्तू	पू.फा.	ल. ८, ९, १०
कार्ति. कृ.१२,गुरु	27 अक्तू	उ.फा.	ल. ८, ९, १०, अभिजित
कार्ति. शु. ३, बुध	2 नवं.	अनु.	ल. ९, १०
कार्ति. शु. ५,शुक्र	4 नवं.	मूल	ल. ९, १०, अभिजित
कार्ति. शु. ५,शनि	5 नवं.	पू.षा.	ल. ९, १०, अभिजित
कार्ति. शु. ७, चंद्र	7 नवं.	श्रव.	ल. ९, १०, अभिजित
मार्ग. कृ. ५, शुक्र	18 नवं.	पुन.	ल. ९, १०, अभिजित
मार्ग. कृ. ६, शनि	19 नवं.	पुष्य	ल. ९, १०, अभिजित
मार्ग. कृ. १०,बुध	23 नवं.	उ.फा.	ल. ९, १०
मार्ग. कृ. ११,गुरु	24 नवं.	उफा/ह	ल. ९, १०, अभिजित
मार्ग. कृ. १२,शुक्र	25 नवं.	हस्त	ल. ९, १०, अभिजित
मार्ग. कृ. १२,शनि	26 नवं.	चित्रा	ल. ९ (मु. 10/11 तक)
मार्ग.शु. ५, रवि	4 दिसं.	उषा/श्र.	ल. ९, १०
मार्ग.शु. ११,शनि	10 दिसं.	रेव/अ.	ल. ९, १२, अभि.

श्रावण मास में

शिवभक्ति का प्रतीक काँवड़ी जलाभिषेक मुहूर्त्त-2016 ई.

गोमुख, श्रीकेदारनाथ, श्रीअमरनाथ, श्री हरिद्वार, नीलकण्ठ एवं गंगादि तीर्थों से श्री गंगाजल के कलश भरकर भगवान श्री शिव की प्रसन्नता हेतु **आषाढ़ पूर्णिमा से लेकर सम्पूर्ण श्रावण मास पर्यन्त भगवान श्री शिव के प्रतिष्ठित मन्दिरों, विग्रहों, स्वरूपों एवं ज्योतिर्लिङ्गों तथा क्षेत्रीय मन्दिरों** में शिवभक्त काँवड़ियों द्वारा श्रद्धारूपी श्रीगङ्गाजल अभिषेक किया जाता है।

स्कन्दपुराणानुसार श्रावण मास में नियमपूर्वक नक्त व्रत करें और महीने भर प्रतिदिन रूद्राभिषेक करें। **कुर्यात् नक्त व्रतं योगिन् श्रावणे नियतो नरः। रूद्राभिषेकं कुर्वीत मासमात्रं दिने दिने।।**

कुछ लोगों का भ्रम है कि श्रावण-भादों मास में नदियां रजस्वलारूप हो जाने से उनका जल पवित्र नहीं होता। परन्तु स्कन्दपुराण में स्पष्ट लिखा है कि सिन्धु, सूती, चन्द्रभागा, गंगा, सरयू, नर्मदा, यमुना, प्लक्षजाला, सरस्वती-ये सभी नंदसंज्ञा वाली नदियाँ-ये रजोदोष से युक्त नहीं होती हैं।-ये सभी अवस्थाओं में निर्मल रहती हैं।

श्री गंगादि तीर्थों से जल लाने एवं भगवान् शिवपूजन एवं शिवलिङ्ग को जलांजली अभिषेक करने की शुभ एवं पुण्य तारीखें-

पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	तारीखें	पक्ष तिथि	वार	नक्षत्र	तारीखें
आषा. शु. १४,	चंद्र	मूल	18 जुलाई	श्रावण शु. ५	रवि	उफा/ह	07 अग.
श्रावण कृ. ०६,	चंद्र	उ.भा.	25 जुलाई	श्रावण शु. ५/६	चन्द्र	हस्त/चि.	08 अग.
श्रावण कृ. १३,	रवि	आर्द्रा	31 जुलाई	श्रावण शु. १२	चन्द्र	पू.षा.	15 अग.
श्रावण कृ. १४,	**चंद्र**	पुन	**01 अग.** (भद्रा परिहार)	श्रावण पूर्णिमा	गुरु	धनि.	18 अग.

विशेष-यद्यपि उपरोक्त मुहूर्त्तों में से कांवड़ जलाभिषेक हेतु जल लाने एवं जलांजली अभिषेक हेतु कोई भी मुहूर्त्त ग्रहण कर सकते हैं। शिवलिङ्ग पर जलाभिषेक के लिए प्रातःकाल ही श्रेष्ठ समय होता है परन्तु कुछ विद्वान् प्रदोषकाल में भी पूजनोपरान्त जल-अभिषेक करते हैं। **मुख्य मुहूर्त्त 1 अग., सोमवार का ही है। यद्यपि सायं 15/59 तक भद्रा है, परन्तु भद्रा मिथुन राशिगत (स्वर्गगते) होने से भद्रा का परिहार है।**

अभिषेक हेतु जलामृत लिवाने की यात्रा में शुभ दिन विचार

काँवडियां शुभयात्रा हेतु जाने से पूर्व चन्द्रमा का सम्मुख व दाएँ आदि दिशा वास जानकर शुभ यात्रा आरम्भ करें तो कल्याणकारी होगा। **उदाहरणार्थ**-जिस दिशा की ओर जाना हो उस राशि से सम्बन्धित दिशा सम्मुख अर्थात् कल्याणकारी कहलाएगी। उससे दाहिनी ओर की दिशा में पड़ने वाली चन्द्र राशि एवं उसकी दिशा भी शुभ एवं लाभकारी होगी। जबकि बाईं ओर पड़ने वाली एवं दिशा कष्टकारी एवं अशुभ होगी।

चन्द्रराशि अनुसार यात्रा में दिशा की शुभाशुभ विचार

दिशा	पूर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिण
द्वादश राशियां	मेष, सिंह, धनु	मिथुन, तुला, कुम्भ	कर्क, वृश्चिक, मीन	वृष, कन्या, मकर।

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना में उपयोगी

-शिववास चक्र-

शिवलिङ्ग एवं शिव मूर्त्ति स्थापना एवं प्रतिष्ठार्थ

ऊपर लिखे शास्त्रविहित मुहूर्त्तों में से विशेष मुहूर्त्त के चयन हेतु कुछ विद्वान् शिववास चक्र का भी प्रयोग करते हैं। पाठकों के लाभ हेतु शिववास चक्र दिया जा रहा हैं। इस चक्र की प्रयोग विधि इस प्रकार से है-उपरोक्त लिखी गई तिथियों में से अभीष्ट (Required) तिथि की संख्या को दोगुणा करके उसमें, पाँच जोड़ देवें, फिर कुल मान को सात से भाग कर देवें, जो शेष संख्या बचे, उसके अनुसार शिव का वास जानना। उदाहरण-मान लो हमने पंचमी तिथि के सम्बन्ध में शिववास जानना है, तो पाँच संख्या को दोगुणा करने पर दस संख्या मिली, इसमें 5 जमा करके 15 संख्या हुई, इसको 7 द्वारा भाग देने पर शेष 1 बचा, इसका फल लाभ/सुख अच्छा लिखा है। कुछ विद्वान् महामृत्युमुञ्जय आदि शैव मन्त्रानुष्ठान के पश्चात् करणीय होमादि में भी इस शिववास चक्र का विचार करते हैं।

शिववास चक्र

शेष	शिववास	फल
१	कैलाश पर	शुभ/लाभ, सुख
२	गौरी संग	शुभ-लाभ
३	बैल पर	कार्य सिद्धि
४	सभा में	कष्टकारी
५	भोजन	दुख प्रदायक
६	रमण	कष्टप्रद
(शून्य)	श्मशान	नेष्ट फल

गृहारम्भ के मुहूर्त्त शोधन में

-वृष वास्तु-चक्र विचार-

बैल के अंग	शिर	अगले पाद (पांव)	पृष्ठपाद (पिछले पांव)	पृष्ठ (पीठ)	दक्ष कुक्षि (दाईं कोख)	पुच्छ (पूँछ)	वाम कुक्षि (बाईं कोख)	मुख
नक्षत्र	३	४	४	३	४	३	४	३
फल	अग्नि-भय	शून्य (०)	स्थिरता शान्तिप्रद	श्रीलक्ष्मी प्राप्ति	लाभ-प्रद	स्वामी कष्टकारी	दारिद्रय	सदा पीड़ा व कष्ट

गत पृष्ठों में दिए गए गृहारम्भ के मुहूर्त्तों में से मास शुद्धि, ग्रह-बलादि देखने के बाद, कल्पित वृष (बैल) के अंगों पर अभिजित् सहित अट्ठाईस नक्षत्रों को प्रत्यारोप (स्थापित) करें। सूर्याधिष्ठित नक्षत्र से मुहूर्त्त के दिन तक गणना करने पर मुहूर्त्त वाला दिन दोषपूर्ण आता हो, तो उस स्थिति में मुहूर्त्त का दिन बदल लेना चाहिए।

उदाहरण-जैसे सूर्य के नक्षत्र से लेकर प्रथम तीन नक्षत्रों तक गिनने पर **मुहूर्त्त दिन** पड़ता हो, तो गृह में **अग्निदाह** का भय रहेगा। आगे 4, 5, 6 एवं 7वें नक्षत्र पर मु. नक्षत्र आवे तो शून्य यानि-कुछ भी शुभाशुभ फल न हो। अर्थात् अपने कर्मों के अनुसार ही फल मिले। आगामी चार (8, 9, 10, 11)वें नक्षत्रों के मध्यपात हो तो भाग्य में स्थिरता एवं शान्ति रहेगी। चतुर्थ भाग उससे आगे के तीन नक्षत्रों के मध्य मुहूर्त्त आ जावे तो लक्ष्मी प्राप्ति अर्थात् धन प्राप्ति के योग होंगे। इसी क्रमानुसार फल जानें।

निष्कर्षतः-गृह निर्माण का आरम्भ करने के लिए सूर्य के नक्षत्र से प्रथम सात नक्षत्र अशुभ। आठवें नक्षत्र से अठारहवें तक शुभ तथा शेष अंतिम दश नक्षत्र पुनः अशुभ होंगे।

विवाहादि शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि विचार

विवाह, मुण्डन, गृहारम्भादि शुभ कार्यो में मास, तिथि, नक्षत्र, योगादि की शुद्धि के साथ विवाह लग्न की शुद्धि को विशेष महत्त्व एवं प्रधानता दी गई है। **तिथि** को शरीर, **चन्द्रमा** को मन, **योग–नक्षत्रों** आदि को शरीर के अंग तथा **लग्न** को **आत्मा** माना गया है। यथा–

तिथिः शरीरं मन इन्दुवीर्यं विलग्नमात्माऽवयवास्तु-भाद्याः –ज्योर्तिनिबंध

लग्न बल के बिना जो कुछ भी शुभ कार्य किया जाता है, उसका फल वैसे ही व्यर्थ हो जाता है, जैसे ग्रीष्मकाल में बिना जल के नदी।

लग्नवीर्यं विना यत्र यत्कर्म क्रियते बुधैः।
तत्फलं विलयं याति ग्रीष्मे कुसरिता यथा॥ –ज्योति. विदरणे

सभी शुभ कार्यों में लग्न शुद्धि का विशेष महत्त्व है।

विवाह लग्न का निश्चय करना हो, तो त्रिविक्रम–संहितानुसार, **लग्न** स्थान में चन्द्र तथा सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु आदि क्रूर ग्रह न हों, लग्न से छठे स्थान में शुक्र, चन्द्र, व लग्नेश न हो तथा आठवें स्थान में चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र व लग्नेश नहीं होने चाहिएं तथा सप्तम स्थान में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। **सातवें चन्द्र** और गुरु समफल करते हैं। अर्थात् चन्द्र, गुरु का दानादि करने से शान्ति हो जाती है।

विवाह लग्न में अशुभ एवं पूज्य ग्रह

''त्याज्या लग्नेऽब्दयो मंदः षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे-चन्द्रादयः पंच, सर्वेऽब्जगुरु समौ॥''

परिहारस्वरूप १२वें शनि, तीसरे शुक्र, चतुर्थ में राहु, दशम भाव में मंगल का दोष यथोचित दानादि करने से शान्ति हो जाती है। **'पंचांगदिवाकर'** में लगाए गए लग्न मुहूर्त्तों में इन तीनों भावों में शनि, शुक्र व मंगल ग्रहों की स्थिति हो वहां उचित दानादि करवा लें।

आगे षष्ठाष्टम एवं द्वादश चन्द्र, शुक्र, अष्टम भौम, लग्नस्थ एवं सप्तमस्थ चन्द्र गुरु आदि के अपवाद (परिहार) लिखे गए हैं।

विवाह में ग्राह्य शुभ लग्न–मुहूर्त्त ग्रन्थों के अनुसार विवाह लग्न काल में ३, ६, ८, ११वें सूर्य तथा इन्हीं स्थानों (३, ६, ११) में राहु, केतु और शनि भी शुभ होते हैं। ३, ६ और ११वें **मंगल**, २, ३, ११वें **चंद्रमा**, ३, ६, ७ शुभ और ८वें स्थानों को छोड़कर अन्य भावों में स्थित **शुक्र** शुभ होता है। ग्यारहवें भाव में सूर्य तथा केन्द्र त्रिकोण में गुरु लग्नगत अनेक दोषों का परिहार करते हैं–

लग्ने वर्गोत्तमे चेन्दौ द्यूनाथे लाभगेऽथवा।
केन्द्र कोणे गुरौ दोषा नश्यन्ति सकलाऽपि॥ मु. गणपति॥

विवाह लग्न सम्बन्धी परिहार वाक्य

जन्म राशि से अष्टमस्थ लग्न–वर कन्या की जन्म राशि या लग्न से चतुर्थ, अष्टम तथा बारहवी राशिस्थ लग्न अशुभ कहे गए हैं। यथोक्तम्–

सुखघ्नं तुर्यमुद्वाहे द्वादश वित्तनाश कृत्।जन्म भात् जन्म लग्नाच्च मृत्युदंलग्नमष्टमम्॥

परन्तु परिहार स्वरूप जन्म राशि या लग्न राशि का स्वामी तथा विवाह लग्न का **स्वामी ग्रह समान** हो, अथवा **मित्र क्षेत्री** हो, अथवा अष्टमस्थ लग्न राशि का स्वामी, केन्द्र स्थित हो अथवा गुर्वादि शुभ ग्रह से वीक्षित हो तो अष्टम लग्न का दोष दूर होता है।

कर्तृरि दोष–लग्न में पापी ग्रह मार्गी होकर १२ भाव में तथा क्रूर (पापी) ग्रह वक्री गत होकर दूसरे भाव में हो, तो कर्तृरि **दोष** होता है। यह योग दारिद्रय, शोक व मृत्युतुल्य कष्टकारी होता है।

परिहार–कर्तृरि दोष कारक ग्रह **नीच**, शत्रु क्षेत्री, अथवा अस्तगत हो, तो इस दोष का परिहार हो जाता है। इसके अतिरिक्त गुरु, शुक्र, बुध इनमें से कोई शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में अथवा २रे या १२वें भावस्थ गुरु हो तो भी कृर्तरि दोष निवार्य हो जाता है।

अष्टम भौम का परिहार–मंगल अस्तंगत, नीच राशि का (कर्क) या शत्रु राशि (मिथुन एवं कन्या) का होकर अष्टम स्थान में हो, तो दोषकारक नहीं, परन्तु लग्नेश होकर अष्टमगत नहीं होना चाहिए। **अस्तगे नीचगे भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा।**
कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते॥ कश्यप॥

छठे, बारहवें चन्द्र का परिहार–नीच राशि, शत्रु राशि या नीच–राशिगत चन्द्रमा ६ या १२वें स्थानस्थ होना दोषपूर्ण नहीं माना गया। जैसे–वृश्चिक, मिथुन, कन्या राशि ३, ६

नीचराशिगते चन्द्रे नीचांशगतेऽपि वा, चन्द्रे षष्ठारि–रिः फस्थे दोषो नास्ति न संशयः।

परन्तु लग्नेश होकर चन्द्र षष्ठाष्टम नहीं होना चाहिए।

लग्नस्थ चन्द्रमा यद्यपि त्याज्य माना गया है, परन्तु यदि लग्नगत चन्द्र पर गुरु की दृष्टि हो अथवा वह गुरु से युक्त हो, तो अशुभ चन्द्रमा भी शुभ हो जाता है–

''अशुभोऽपि शुभचन्द्रो, गुरुणा लोकितो युतः॥'' (पीयूषधारा)

लग्नस्थ चन्द्र का परिहार–''कर्किगोस्थः पूर्णो विधुस्तनौ''

व्रतबन्धोक्त अनुसार वृष, कर्क एवं पूर्ण चन्द्रमा या शुभग्रह से दृष्ट हो लग्न में दोषकारक नहीं होता। मु. मार्त्तण्ड

षष्ठाष्टमस्थ शुक्रापवाद–नीच एवं शत्रु राशिगत शुक्र छठे, आठवें हो तो दोषकारक नहीं परन्तु लग्नेश होकर इन भावों में न हो। जैसे–

नीच राशिगते शुक्रे शत्रु क्षेत्रगतेऽपि वा।
भृगु षट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः॥ मुहूर्त चिं. पीयूषंधारा

सप्तम भावस्थ चन्द्र–गुरु–सप्तम भाव में यद्यपि सभी ग्रह वर्जित कहे हैं, परन्तु चन्द्र गुरु का परिहार है। **''चन्द्र चान्द्री शुक्रजीवा यामित्रे शुभकारकाः।''**

'मुहूर्त्तगणपति' अनुसार विवाहादि शुभ कार्य के लग्न में, केन्द्र–त्रिकोण में **गुरु, शुक्र** एवं बुध एवं ग्यारहवें भाव में चन्द्र या सूर्य अथवा सप्तमेश हो, तो अनेक दोषों का नाश हो जाता है।

वेध दोष परिहार–पंचशलाका चक्रानुसार विवाह नक्षत्र का क्रूर ग्रह द्वारा वेध हो जाने

पर विवाहित नक्षत्र सर्वथा त्याज्य माना जाता है। परन्तु गुरु, बुध आदि सौम्य ग्रहों का चरण वेध (१ एवं ४थे चरण के मध्य तथा २ रे व ३ रे चरण ही अशुभ माना है। —ज्योतिर्निबन्ध

युतिदोष परिहार—पाप एवं क्रूर ग्रह की युति त्याज्य मानी जाती है। परन्तु यदि चन्द्रमा उच्चस्थ, स्वक्षेत्री या मित्रक्षेत्री (वृष, कर्क, मिथुन, सिंह एवं कन्या) राशि का हो तो युतिदोष अविचारणीय होता है। **यथा—**

स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो व मित्रक्षेत्रगतो विधुः।
युति दोषाय न भवेत् दम्पत्योः श्रेयसेतदा॥ (नारदः)

(१०) दग्धा तिथि परिहार—विवाह लग्न समय केन्द्र–त्रिकोण गत गुरु हो एवं एकादश (११वां) भाव शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो, तो दग्धातिथि का दोष नहीं रहता।—**मु० गणपति**

पंचांगदिवाकर में शुभ विवाह मुहूर्त्तों में जहाँ कहीं अशुभ योग का स्पर्श हुआ है, वहां विशेष दोषपूर्ण घड़ियों को विचार करके ही वि. मुहूर्त्त लगाए गए हैं।

कश्यप ऋषि अनुसार लग्न से केन्द्र, त्रिकोण में गुरू, शुक्र या बुधादि सौम्य ग्रह हो, तो समस्त दोषों का ऐसे परिहार हो जाता है, जैसे भगवान् विष्णु को मात्र स्मरण करने से पापों का नाश हो जाता है

काव्यो गुरू र्वा सौम्यो वा यदा केन्द्र त्रिकोणगाः।
नाशयन्ति अखिलान् दोषान् पापानि व हरिस्मृतिः॥ (कश्यप)

भद्रा का शुभाशुभ विचार

भद्राकाल में विवाह, मुण्डन, गृहारम्भ, गृहप्रवेश, रक्षा बन्धन आदि मांगलिक कृत्यों का निषेध माना जाता है, परन्तु भद्रा काल में शत्रु का उच्चाटन करना, स्त्री प्रसंग में, यज्ञ करना, स्नान करना, अस्त्र–शस्त्र का प्रयोग, आप्रेशन करना, मुकद्दमा करना, अग्नि लगाना, किसी वस्तु को काटना, भैंस, घोड़ा, ऊँट सम्बन्धी कर्म प्रशस्त माने जाते हैं।

भद्रा परिहार विचार—सामान्य परिस्थितियों में विवाह आदि शुभ मुहूर्तों में भद्रा का त्याग ही करना चाहिए, परन्तु आवश्यक परिस्थितिवश **भूलोक की भद्रा**, तथा **भद्रा मुख** छोड़कर भद्रा पुच्छ में शुभ कृत्य किए जा सकते हैं।

कार्येत्वाश्यके विष्टेर्मुख, कण्ठहृदि मात्रं परित्येत्।

एक अन्य मतानुसार अत्यावश्यक स्थिति में रात्रि में तिथि के पूर्वार्द्ध की भद्रा, दिन में परार्ध की भद्रा ग्रहण कर सकते हैं।

तिथेः पूर्वार्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्धजा। भद्रा दोषो न तत्र स्यात् कार्येऽत्यावश्यके सति॥

भद्रा परिहार

कुछ आवश्यक स्थितियों में भद्रा दोष का परिहार हो जाता है। यथा—

तिथि पूर्वार्धजा भद्रा दिवा भद्रा प्रकीर्तिता। तिथिरुत्तरजा भद्रा रात्रिभद्रेति कथ्यते॥
दिवा भद्रा रात्रौ रात्रिभद्रा यदा दिवा। तदाविष्टिकृतो–दोषो न, भवेत्सर्व सौख्यदः॥

अर्थात् तिथि के पूर्वार्द्ध भाग में प्रारम्भ भद्रा अर्थात् तिथि दिवस के पूर्वार्ध भाग में प्रारम्भ भद्रायादि तिथ्यन्त में रात्रिव्यापिनी हो जाए, तो दोषकारक न होकर सुखदायिनी हो जाती है।

(ii) पीयूषधारानुसार—दिन की भद्रा रात्रि को और रात्रि की भद्रा दिन को आ जाए, तो भद्रा दोषरहित हो जाती है।

रात्रिभद्रा यदह्नि स्याद् दिवा भद्रा यदा निशि। न तत्र भद्रादोषः, सा भद्रा–भद्र दायिनी॥

(iii) **"दिवा परार्द्धजा विष्टिः, पूर्वार्द्धोत्था निशि। तदा विष्टिः शुभायेति कमलासनभाषितम्॥"**

उत्तरार्ध की भद्रा दिन में, तथा पूर्वार्द्ध की रात्रि में शुभ होती है।

भद्रा लोक वास

मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिक का चन्द्रमा होने से भद्रा **स्वर्ग लोक** में, कन्या, तुला, धनु, मकर का चन्द्रमा होने से **पाताल** में, कर्क, सिंह, कुम्भ व मीन राशि के चन्द्रमा में **भद्रा मर्त्यलोक (भू लोक)** में—अर्थात् **सम्मुख रहती है।** जब भद्रा **भू–लोक में (सम्मुख)** रहती है, **अशुभफल दायिनी** एवं वर्जित मानी जाती है, अन्य लोकों में हो, तो शुभ है—

स्थिताभूर्लोस्था भद्रा सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा —(मु. मार्त्तण्ड)

लोकवास	स्वर्ग	पाताल	भू–लोक
चन्द्रराशि	१, २, ३, ८	६, ७, ९, १०	४, ५, ११, १२
भद्रा–मुख	ऊर्ध्वमुखी	अधोमुख	सम्मुख

स्वर्गे भद्रा धनं धान्यं पाताले च धनागमः। मृत्युलोके यदा भद्रा कार्य सिद्धिस्तदानहि॥

(iv) शुक्ल पक्ष की भद्रा का नाम **वृश्चिकी** है। कृष्ण पक्ष की भद्रा का नाम **सर्पिणी** है। **मतान्तर से,** दिन की **भद्रा सर्पिणी,** रात्रि की भद्रा **वृश्चिकी** है। बिच्छू का विष डंक में तथा सर्प का विष मुख में होने के कारण **वृश्चिकी** भद्रा की पुच्छ और **सर्पिणी** भद्रा का मुख विशेषतः त्याज्य है।

(v) भद्रा दोष, मंगल–शनिवार जनित दोष, व्यतीपात, अष्टम भावस्थ एवं जन्म नक्षत्र दोष, मध्याह्न के पश्चात् शुभकारक मानी जाती है।

गोधूलि काल

विवाह मुहूर्त्तों में क्रूर ग्रह युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि उपरान्त यदि अभिवांछित मुहूर्त्त में शुद्ध विवाह–लग्न न निकलता हो, तो मुहूर्त्त ग्रन्थाचार्यों ने गोधूलि का लग्न ग्रहण करने की सम्मति प्रदान की है।

गोधूलि काल—जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) और गाय आदि चौपाय अपने–अपने गृहों को लौटते हुए अपने खुरों से पथ की धूलि को आकाश में उड़ाकर जाने लगें, तो उस काल को मुहूर्त्तकारों ने **गोधूलि काल** का नाम प्रदान करते हुए, इसे विवाहादि सब मांगलिक कार्यों में प्रशस्त कहा है। यह लग्न, मुहूर्त्त, पात, अष्टम भाव, जामित्रादि दोषों को नष्ट प्राय कर देता है।

नो वा योगो न मृतिभवनं नैव जामित्र दोषो,
गोधूलिः सा मुनिभिरुदिता सर्वकार्येषु शस्ता॥ —मुहूर्त चिन्तामणि

जब कोई अन्य शुभ लग्न न बनता हो, और कन्या विवाह योग्य हो गई हो तो गोधूलि में विवाह शुभ होता है। ज्योतिर्निबन्धानुसार–

लग्न शुद्धिर्यदा न स्याद् यौवने समुपास्थिते, तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥

गोधूलि लग्न काल के सम्बन्ध में विद्वानों ने मतान्तर पाए जाते हैं–

(i) पीयूषधारा के मतानुसार सूर्य के अर्ध–अस्त होने के अनन्तर २ घड़ी (४८ मिनट) का समय गोधूलि काल है।

(ii) मुहूर्त्त गणपति के अनुसार सूर्यार्ध बिम्ब के अस्त हो जाने के पूर्व एवं पश्चात् १५–१५ पल अर्थात् १२ मिनट का मध्यान्तर गोधूलि संज्ञक है।

(iii) आचार्य नारदानुसार सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न काल होता है।

चतुर्थमभिजित लग्नमुदयार्क्षातु सप्तमम् ॥ –नारद

(iv) कुछ विद्वानों के अनुसार लग्न, सप्तम तथा अष्टम भाव में मंगल को भी वर्ज्य माना गया है। शेष भावों में अन्य किसी ग्रह का विचार गोधूलि लग्न में नहीं किया जाता।

(v) गुरुवार को सूर्यास्त के बाद तथा शनिवार को सूर्यास्त होने से पूर्व (पहले) की ही आधी घड़ी (12 मिनट) को गोधूलिकाल माना गया है, अन्यथा नहीं. (मुहूर्त्त चिन्तामणि)

––क्षौरकर्म (हजामत) के लिए शुभाशुभ दिन––

गर्गादि आचार्यों के अनुसार रविवार, मंगलवार एवं शनिवार को क्षौर (हजामत) कर्म करवाने से आयु का क्षय होता है। **सोमवार, बुधवार, गुरुवार** और **शुक्रवार** को क्षौर कर्म (हजामत) करवाना शुभ होता है। मतान्तर से एक पुत्र सन्तान वाले गृहस्थी को सोमवार के दिन, तथा विद्या एवं धनाकांक्षी गृहस्थी को गुरुवार के दिन क्षौर नहीं करवाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त पर्व वाले दिन, जन्मदिन, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी (१४) आदि रिक्ता तिथियों में, व्रत के दिन, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति, श्राद्ध के दिन, भद्रा और व्यातिपात योग में तथा भोजन करने के बाद, देश-प्रदेश जाने के समय में शुभाकांक्षी क्षौर कर्म न करावें।

––तैलाभ्यंग–अर्थात् तैल मालिश करना––

रविवार, मंगलवार, गुरुवार तथा शुक्रवार को तैल लगाना शुभ नहीं माना जाता है। **निर्णय सिन्धु** के अनुसार रविवार तैल लगाने से ताप, मंगलवार को आयु क्षीणता, गुरुवार से धन-हानि, शुक्रवार को तैल लगाने से दुःख होता है। सोमवार, बुधवार तथा शनिवारों को तैल लगाना शुभ होता है। प्रतिदिन तेल लगाने वालों को भी दोष नहीं लगता–(**–अभ्यङ्गके चैव वासिते नैव दूषणम् ॥**)

चतुर्कोणों दिशाशूल विचार

आग्नेय (पूर्व-दक्षिण) में सोम व गुरुवार, **नैऋत्य** (दक्षिण-पश्चिम) दिशा में रविवार व शुक्रवार, **वायव्य** (उत्तर-पश्चिम) में मंगलवार तथा **ईशान** (पूर्व-उत्तर) में बुध एवं शनिवार के दिन **दिशाशूल** होता है (मुहूर्त्त गणपति)

दिशापति के वार अनुसार उसी दिशा की यात्रा शुभदायिनी तथा उससे पीछे (सामनेवाली) दिशा की यात्रा अनिष्टप्रदा होती है–

दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठा हे मरणं ध्रुवम् (ज्योतिस्तत्व)

परन्तु बुधवार उत्तर दिशा का स्वामी होते हुए, बुध की उत्तर में निषिद्ध माना गया है (गर्ग)

विशेष–यदि एक जगह से रवाना होकर, उसी दिन गन्तव्य स्थान पर पहुँच जाना निश्चित हो, तो ऐसी यात्रा में तिथि-वार-नक्षत्र, दिशा-शूल, प्रतिशुक, योगिनी आदि जनित दोषों का विचार नहीं करना चाहिए–यथा **''एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद् गमनं प्रवेशश्च।**
प्रतिशुक्रवार शूलं न चिन्तयेत् योगिनी पूर्वम् ॥।''–(पीयूषधारा)

यात्रादि मुहूर्त्त विचार

किसी कार्य के उद्देश्य से देशान्तर गमन को यात्रा कहते हैं। कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा और २, ३, ५, ७, १०, ११, १३–इन तिथियों में, अश्वि., मृग. पुर्न, पुष्य, अनु, हस्त, श्रव., धनि, रेव.–इन नक्षत्रों में तथा चौर, बाण, भद्रा, वैधृति, व्यतियात और मासांत दिनादि दोष रहित समय में यात्रा करें। यात्रा करने से पूर्व क्रोध और मैथुन कर्म का त्याग करना चाहिए।

दिशाशूल

सोमवार, शनिवार को पूर्व, रविवार और शुक्रवार को पश्चिम, मंगलवार, बुधवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण दिशा का दिशाशूल होता है, अत: उक्त वारों को उस दिशा की यात्रा नहीं करनी चाहिए। अत्यावश्यक होने पर रविवार को दलिया एवं घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगलवार को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को दही खाकर, शुक्रवार को जौं खाकर दूध पीकर और शनिवार को अदरक या उड़द खाकर प्रस्थान किया जा सकता है।

यात्रा में सदैव चल रही नासिका के श्वास की ओर का पाँव आगे उठाकर चले, इसी तरह सवारी पर चढ़े, यात्रा सफल होगी।

चन्द्रवास ज्ञान चक्र

पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
मेष	वृष	मिथुन	कर्क
सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
धनु	मकर	कुम्भ	मीन

चन्द्रवास विचार

जाने वाली दिशा में चन्द्रमा का वास सम्मुख और दाहिनी ओर को हो तो धन का लाभ और सुख होता है। यदि पीठ की ओर अथवा बाईं तरफ चन्द्रवास हो तो कष्ट और धन की हानि होती है।

सम्मुख चन्द्रमा का विशेष फल

करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रान्ति दोष, अशुभतिथिदोष, कुलिक दोष, प्रहार्द्ध वारवेला दोष, मंगल, शनि, रवि, राहु-केतु के दोष को सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है।

'यात्रा के समय शुभ शकुन'

यात्रा के समय श्वेत पुष्पों का दर्शन श्रेष्ठ माना गया है। भरे हुए घड़े का दिखाई देना तो बहुत ही उत्तम है। दूर का कोलाहल, अकेला वृद्ध पुरुष, पशुओं में बकरे, गौ, घोड़े तथा हाथी, देवप्रतिमा, प्रज्वलित अग्नि, दूर्वा, ताज़ा गोबर, सोना, चांदी, रत्न, बच, सरसों आदि औषधियां, मूँग, छाता, पीढ़ा, राजचिह्न, जिसके पास कोई रोता न हो ऐसा शव, फल, घी, दही, दूध, अक्षत, दर्पण, मधु, शंख, ईख, शुभ सूचक वचन, भक्त पुरुषों का गाना-बजाना, मेघ की गम्भीर गर्जना, बिजली की चमक तथा मन का सन्तोष–ये सब शुभ शकुन हैं। 'चले आओ'–यह शब्द यदि सामने की ओर से सुनाई पड़े तो उत्तम है। 'जाओ'–यह शब्द यदि पीछे की ओर से हो तो उत्तम है।

विवाहादि शुभ कार्यों में शास्त्रीय विचार

विवाह में जन्म मास, नक्षत्रादि का विचार–

आद्य गर्भ, अर्थात् बड़े लड़के या बड़ी लड़की का विवाह जन्म मास, जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म लग्न में न करें। **"आद्य गर्भ सुत कन्ययो र्द्वयो जन्म मास भतिथौ कर ग्रहः। नोचितोऽथ विबुधैः प्रशस्यते चेद् द्वितीय जनुषोः सुतप्रदः॥ मु. चिंतामणि॥"**

परन्तु ज्येष्ठ पुत्र के बाद उत्पन्न पुत्र या कन्या का विवाह जन्म मास, नक्षत्रादि में करना प्रशस्त है। ज्येष्ठ पुत्र-कन्या के अतिरिक्त अन्य स्थितियों में जन्म-मास, जन्म राशि, नक्षत्र एवं जन्म लग्न विशेष शुभ माना है।

जन्ममासे च पुत्राढया धनाढया च धनोदये। जन्म मे जन्मराशौ च कन्या हि ध्रुव सन्तति॥

आचार्य भृगु जी के अनुसार जन्म मास, जन्म नक्षत्र एवं जन्म लग्न में विवाह होने पर दम्पत्ति के सुख एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा वह धन सम्पत्ति तथा सन्तान सुख से सौभाग्यशालिनी होती है।

जन्ममासेऽथ जन्मर्क्षे जन्मलग्नेऽथ जन्मनि। उद्वाहेषु च नारीणां प्रतिष्ठा महती भवेत्। भृगुः

जन्ममासेऽथ पुत्राढ्या धनादया जन्मभोदये। जन्मभे वा भवेदूढा वृद्धा संतति वर्धिनी॥ (यवनाचार्य)

ज्येष्ठ मास में विवाह का विचार

ज्येष्ठ मास, ज्येष्ठ पुत्र और ज्येष्ठ कन्या यह तीन ज्येष्ठ विवाह संस्कार में विशेषतया वर्जित माने जाते हैं। परन्तु यदि दो ज्येष्ठ वर्तमान हों अर्थात् लड़का-लड़की दोनों ज्येष्ठ (बड़े) हों, परन्तु महीना ज्येष्ठ के अतिरिक्त हो अथवा लड़का-लड़की में से एक ज्येष्ठ हो और दूसरा अनुज हो, तो ज्येष्ठ मास में भी विवाह करना सामान्य एवं मध्यम फल होता है–

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तत्रवेक ज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठ त्रयं न कर्वीत् विवाहे सर्वसम्मतम् —वाराहमिहिर॥

तथापि आवश्यक परिस्थितिवश ज्येष्ठ मास में कृतिका से सूर्य निकल जाने पर सूर्य दानादि करके विवाह करने में कोई हानि नहीं। **मुनि भारद्वाज** के मतानुसार ज्येष्ठ के महीने की भान्ति मार्गशीर्ष मास में भी अग्रज लड़का-लड़की एवं मार्ग मास-तीनों का यथासम्भव त्याग करें।

(३) सगे भाई-बहन के विवाह छः मास के भीतर नहीं करने चाहिएं। यदि इस बीच संवत् परिवर्तन हो जाए, तो कोई दोष नहीं **(मु. मार्तण्ड)**। पुत्र के विवाह के उपरान्त अपनी कन्या का विवाह ६ महीने तक न करें। इसी तरह विवाह के बाद ६ महीने तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि शुभ कार्य न करें। **(नारद)**, परन्तु कन्या-विवाह के पश्चात् पुत्र विवाह ६ मास के भीतर शुभ है। दो सगे भाईयों का विवाह दो सगी बहनों से न करें अथवा एक वर के साथ दो सगी बहनों का विवाह न करें **(वसिष्ठ)** तथा जिस वर को अपनी कन्या देवें, उसकी बहन के साथ अपने लड़के का विवाह न करे **(नारदः)**।

दो सगे भाईयों या दो सगी बहनों का एक संस्कार ६ महीने के भीतर करना सम्भव है **(वृन्द्धमनुः)**। दो सहोदर (भाई-बहन) के संस्कार आवश्यक स्थिति उत्पन्न होने पर नदी, पर्वत, स्थान एवं पुरोहित भेद (भिन्न) से एक ही दिन अथवा ६ महीने के भीतर शुभ होंगे **(शार्गधर)** जुड़वें भाई-बहन के मांगलिक कार्य एक ही मण्डप में भी शुभ हैं। विवाहादि मंगल कार्य से ६ मास तक लघु मंगल कार्य न करें। यह ६ महीने का निषेध केवल तीन पीढ़ि तक के मनुष्यों के लिए कहा है।

मङ्गल संस्कार से ६ महीने तक पितृकर्म, श्राद्धादि न करे। वाग्दान अर्थात् विवाह सम्बन्ध का निश्चय हो जाने के बाद वर-कन्या के कुल में माता-पिता, भाई आदि निकटस्थ बन्धु की दुःखद मृत्यु हो जाने पर एक वर्ष के पश्चात् विवाह आदि शुभ कार्य करना चाहिए (निर्णयसिंधु) परन्तु **अपवाद स्वरूप** संकट काल में अथवा अत्यावश्यक परिस्थितिवश एक मास के बाद अथवा सूतक निवृत्ति के बाद जप, पाठ, होम शान्ति एवं यथाशक्ति द्रव्य, वस्त्र, गोदानादि के बाद शुभ कार्य ग्राह्य होंगे–

प्रतिकू–लेऽपि कर्त्तव्यो विवाहो मासमन्तरात्।
शान्तिं विधाय गां दत्त्वा वाग्दानादि चरेत् पुनः॥ (ज्योति. प्रकाश)

जन्म नक्षत्र विचार

जातक का जन्म नक्षत्र अन्न प्राशन, उपनयन, मुंडन (चूड़ाकरण), राज्याभिषेक, जन्मदिनादि कृत्यों में प्रशस्त माना गया है, परन्तु यात्रा, सीमान्तोन्नयन तथा विवाहादि कार्यों में जन्म नक्षत्र अनिष्टकर होता है–

बालान्नभुक्तौ व्रतबन्धनेऽपि राज्याभिषेके खलुजन्मधिण्यम्।
शुभं तु अनिष्टं सततं विवाह सीमन्त यात्रादिषु मंगलेषु॥ —वसिष्ठ

मतान्तर से ज्योतिर्निबन्ध एवं मुहूर्त्त दीपिकानुसार केवल चूड़ाकरण (मुण्डन), औषध सेवन, विवाद, यात्रा और कर्णवेध में ही **जन्म-नक्षत्र** का निषेध कहते है, अन्य सभी कार्यों में जन्म नक्षत्र शुभ कहा है–

जन्म नक्षत्रगश्चन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु।
क्षौर भैषजविवादध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्॥ (मुहूर्त्त दीपिका)

परन्तु जन्म नक्षत्र से २५वां तथा २७वां नक्षत्र शुभ कार्यों में त्याज्य माना जाता है।

जन्म मास अग्रज (बड़े) लड़के या लड़की का विवाह **जन्म नक्षत्र** एवं **जन्म मास** में करने का निर्विवादेन निषेध माना गया है–

न जन्ममासे जन्मर्क्षे न जन्मदिवसेऽपि वा। आद्य गर्भ सुतस्याथ दुहितुर्वा करग्रहः॥ —नारद

परन्तु अनुज लड़के या लड़की का विवाह **जन्म मास** में ग्रहणीय माना गया है–

विबुधैः प्रशस्यते चेत् द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः —मुहूर्त्त चिंतामणि

विवाह में सम–विषम वर्षों का विचार

सम वर्षों (१८, २०, २२, २४ आदि) में कन्या का विवाह और **विषम वर्षों** (१९, २१, २३, २५ आदि) में लड़के (पुत्र) का विवाह शुभ माना गया है। –अर्थात् इन वर्षों में कन्या या पुत्र का विवाह करना, उनके वैवाहिक जीवन में सुख, सौहार्द आदि की दृष्टि से कल्याणकारी होता है। इसके विपरीत वर्षों (अर्थात् कन्या का विषम वर्षों में तथा लड़के का सम वर्षों) में करना दुःख, रोग एवं कष्टप्रद होता है– (ज्योतिष तत्त्व प्रकाश)

वर–वरण एवं सगाई मुहूर्त्त

वर-कन्या की जन्मपत्रियों में परस्पर सम्यक् मिलान हो जाने के पश्चात् दोनों के माता-पिता विवाह के संकल्प (वाग्दान) को सम्पुष्ट करने के लिए वर-कन्या का वरण (सगाई) करते हैं। इसके लिए निम्नलिखित शुभ मुहूर्त्त में कन्या का भाई, कुल पुरोहित (ब्राह्मण) एवं परिवार के सन्निकट सगे सम्बन्धियों के साथ यज्ञोपवीत, नारियल, साबित सुपारी, हल्दी, अक्षत, छुहारे, गुड़, वस्त्र, अँगूठी, मिष्टान्न, फल, फूलादि अर्पण करके वर कर शास्त्र प्रशस्त मांगलिक मन्त्रों के साथ वरण करें। (पूर्ण विधि जानने के लिए हमारी नवीन प्रकाशित '**विवाह पद्धति**' का अवलोकन करें।

विवाह में प्रतिपादित शुभ मासों **वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मासों** में रिक्ता (४, ९, १४) तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में (विशेषकर शुक्ल पक्ष प्रशस्त है), चन्द्र, बुध, गुरु एवं शुक्रवारों में तथा कृतिका, रोहिणी, तीनों पूर्वा, मृग, हस्त, श्रवण, चित्रा नक्षत्रों में शुभ लग्न कालीन वर का वरण करें।

आवश्यक मुहूर्त्त विचार

नोट–सभी मुहूर्त्तों में अधिक मास, पितृ पक्ष, रिक्ता तिथि (४, ९, १४), वैधृति आदि दुष्ट योगों एवं गुरु/शुक्रास्तादि का भी विचार कर लेना उचित होगा।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार, मास	शुभ नक्षत्र
बच्चे का नाम रखना	१ (कृष्ण), तथा दोनों पक्ष की २, ३, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) तिथियाँ॥ व पूर्णिमा	सूतकान्त (सप्ताह के बाद) १०, १२, १३, १६ आदि दिनों में तथा चंद्र, बुध, गुरु एवं शुक्र वारों में॥	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत और रेवती।
बच्चे को स्कूल डालना (विद्यारम्भ)	२,३,५,७,१०,११,१२, १३ (शु.), १४, बुध एवं पूर्णिमा तिथि	उत्तरायण मासों में (14 जन. से 15 जुला. आषाढ़ तक) ५वें या ७वें वर्ष, रवि, चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र वार।	अश्वि, मृग, रोह, पुन, पुष्य, श्ले, पूर्वा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, श्रव, धनि, शत, उत्तरा–तीनों।
मुंडन संस्कार	१ (कृष्ण), २,३,५,६,७, १०, ११, १३ (शुक्ल १५ शुभ तिथियाँ।	जन्म से १, ३, ५ इत्यादि वर्षों में, वैशा, ज्ये., आषा. (मास तक), माघ, फागु. (उत्तरायणे), चं. बु. गु. शु.।	अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., श्रव, धनि, शत, रेव एवं जन्म नक्षत्र ग्राह्य॥
दुकान/बही खाता शुरु करना	१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १० १२, १३(शुक्ल),१५ तिथियां।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, शनि। वैशा, ज्ये, आषा, श्रा, भा., मार्ग, माघ, फा।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, हस्त, चित्रा, अनु, मूल, श्रव, धनि, पूभा, रेवती।
नौकरी आरम्भ करना	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, उत्तरायण महीने प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, अनु, ज्ये, श्रव-रेव।
स्कूटर, कारादि गाड़ी खरीदना	१ (कृ.), २,३,५,६,७,१० ११, १२, १३ (शु.), १५।	चंद्र, बुध, गुरु व शुक्रवारों में। तथा द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में।	अश्वि, उत्तरा-३, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-३, पूर्वा-३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु. धनि, रेवती।
गृहारम्भ (मकान बनाना)	१ (कृ), २,३,५,६,७,१०, ११, १२, १३ (शु.) १५।	चन्द्र, बुध, गुरू, शुक्र, शनि, वैशा, ज्ये, श्रव, भाद्र., मार्ग., माघ, फागु. प्रशस्त हैं।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, उत्तरा (३), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, धनि, शत, रेव।
शिलान्यास (नींव खोदना)	गृहारम्भ वाली तिथियां ग्राह्य।	गृहारम्भ वाले वार एवं मास ग्राह्य। सुप्त भूमि के प्रविष्टे (५,७,९,१५,२१,२४ त्याज्य)	उपरोक्त नक्षत्रों के अतिरिक्त अश्विनी व श्रवण नक्षत्र सुप्त भूमि के प्रविष्टे।
नए घर में प्रवेश करना	१(कृ), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	वैशा, ज्ये, कार्ति., मार्ग, माघ एवं फाल्गु.॥ पुराने गृह में श्राव, भाद्र भी ग्राह्य, वार-चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र व शनि।	अश्वि, रोह, मृग, उत्तरा, ३, हस्त, चित्रा, स्वा, पुष्य, अनु, धनि, रेव।

नाम मुहूर्त्त	शुभ ग्राह्य तिथियां	शुभ वार, मास	शुभ नक्षत्र
सगाई मुहूर्त्त	१ (कृ), २,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३ (शु.), १५ शुभ तिथियां॥	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा, ज्ये, आषाढ़, श्रावण, भाद्र. आश्वि, मार्ग, माघ और फागु.।	अश्वि, रोह, मृग, मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु, मूल, श्रव, धनि, रेवती।
विवाह मुहूर्त्त	१(कृ.),२,३,५,७,८,९,१० ११, १२, १३ (शुक्ल), १५।	वै., ज्ये, आषा, श्रा., भा, अश्वि, मार्ग, माघ, फागु. तथा कार्तिक (पर्वतीये केवल)। रवि, चंद्र बुध, गुरु, शुक्र प्रशस्त। मं. श. (मध्यम)।	रोह, मृग, मघा, उत्तरा ३ (तीनों), हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रवण, धनि., रेव।
मुहूर्त्त मुकलावा	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११ १२, १३ (शुक्ल) १५ तिथियां।	चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र, वैशा., मार्ग, फाल्गुन मास।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु., मूल, श्रव, धनि, रेव।
बीज बोना (हल चलाना)	१ (कृ) २, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.) १५ तिथियां।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र एवं शनिवार।	अश्वि, रोह, मृग, पुर्न, पुष्य, मघा, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, विशा, अनु, मूल, धनि., रेवती।
अनाज संग्रह (भरने का मुहूर्त्त)	२, ३, ५, ७, ८, ११, १२, १३, (शुक्ल), १५।	चन्द्र, बुध, गुरु व शुक्र।	अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, मूल, श्रव, धनि, शत, रेवती।
आप्रेशन कराने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ६, ७, १०, १२, १३	रवि, मंगल, गुरु, शनि	अश्वि, रोहि, मृग, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभि, श्रव
मन्त्र सिद्ध करने का मुहूर्त्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५ तिथि।	रवि, चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वारों में।	अश्वि, मृग, उफा, हस्त, श्रवण, विशाखा।
भूमि खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृष्ण) तथा ५, ६, १०, ११, १५।	मंगल, गुरु, शुक्र।	मृग, पुन, श्ले, मघा, विशाखा, अनु, पूर्वा ३, मूल, रेवती।
मुकद्दमा दायर करना	३, ५, ८,१०,१३ (शुक्ल) १५, चंद्र व मंग. दोनों बलान्वित होने चाहिएं।	रवि, मंग, बुध, गुरु, वार प्रशस्त हैं।	भर, आर्द्रा, श्ले, मघा, पूर्वा-३, ज्ये., मूल, नक्षत्र।
पशु खरीदने का मुहूर्त्त	१(कृ)२,३,५,६,७,८,१०, ११,१२,१३(शुक्ल) १५।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु शनि।	अश्वि, पुन, पुष्य, हस्त, विशा, ज्ये, धनि, शत, रेवती।
औषधि सेवन का मुहूर्त्त	१, (कृ),२, ३, ५, ७, १० ११, १२, १३ (शु.)।	रवि, चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र, जन्म नक्षत्र त्याज्य हैं।	अश्वि, मृग, पुष्य, चित्रा, पुर्न, हस्त, अनु, स्वा, अभि, श्रवण, धनिष्ठा हैं।

आपको किस दिन क्या कार्य करना शुभ है ?

नाम वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	वीरवार	शुक्रवार	शनिवार
यात्रा में शुभ ग्राह्य-दिशाएँ	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षिण पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण वायव्य (उत्तर-पश्चिम)	दक्षिण-पूर्व आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)	दक्षिण, पूर्व नैर्ऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)	पूर्व, उत्तर ईशान (उत्तर-पूर्व)	पश्चिम, दक्षिण नैर्ऋत्य (दक्षिण-पश्चिम)
यात्रा में त्याज्य (दिशाशूले)	पश्चिम, नैर्ऋत्य (दक्षि.-पश्चि. कोण)	पूर्व, उत्तर आग्नेय (दक्षि.-पूर्व)	उत्तर, पश्चिम वायव्य (उत्तर पश्चि.)	उत्तर, पश्चिम ईशान (पूर्व-उत्तर)	दक्षिण, पूर्व नैर्ऋत्य (दक्षि. पश्चि.)	पश्चिम, दक्षिण नैर्ऋत्य कोण (द. पश्चि.)	पूर्व, उत्तर ईशान (पूर्व-उत्तर)
विद्या एवं शिक्षा सम्बन्धी	विज्ञान, इंजीनियरिंग, सेना, उद्योग, बिजली, मैडिकल, एवं प्रशासनिक शिक्षा सम्बन्धी।	लेखनादि कार्य, मैडीकल शिक्षा, सौंदर्य प्रसाधन, औषधि निर्माण व योजना सम्बन्धी।	बिजली (इलैक्ट्रानिक), सर्जरी की शिक्षा, शस्त्र विद्या सीखना, अग्नि, स्पोर्टस, भूगर्भ विज्ञान, दंत चिकित्सा आदि।	गणित, लेखनादि, बौद्धिक कार्य, बैंक वकालत, तकनीकि हुनर, ज्योतिष, विज्ञान, वाहनादि चलाना सीखना।	दर्शन-शास्त्र, धर्म मंत्र ज्योतिष, वकालत, उच्च पद प्रशासनिक शिक्षा वैद्यक आदि।	नृत्य, वाद्य, गायन, कला, संगीत, ऐक्टिंग, गीत-काव्य, रचना, स्त्रियों एवं सौंदर्य सम्बन्धी शिक्षा।	तकनीकी शिल्प, कला, मशीनरी सम्बन्धी ज्ञान (Engineering) अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी का ज्ञान शुरु करना।
व्यापार सम्बन्धी कार्य	राज्य प्रशासनिक कार्य सेनाधिकारी, ज्यूलर्ज, औषधि, शस्त्र, अग्नि, अनाज, सोना, तांबा, चाँदी, गाय, बैलादि का क्रय-विक्रय, मैडीकल, इलैक्ट्रीकल, मंत्रानुष्ठान यज्ञादि।	कृषि, गाय, भैंस, दूध, घी डेयरी, फार्म, औषधि, सोडादि तरल पदार्थ, शंख, मोती, स्त्री, धन सम्पदा, सौंदर्य प्रसाधन, सुगन्धि (Perfumes) सम्बन्धी वस्तुओं का क्रय-विक्रय, विदेशी पत्राचार आदि।	शक्ति, अग्नि एवं बिजली से सम्बिन्धत कार्य, बेकरी electronics, स्पोटर्स Goods, सोना, तांबा, मूंगा, पीतलादि का क्रय भूमि, सर्जरी एवं रक्षा सामग्री, सन्धि विच्छेद आदि कार्य।	कृषि एवं व्यापारिक वस्तुओं का क्रय-विक्रय, शेयरों का क्रय, पुस्तक, लेखन प्रशासन, लेखाकार्य (Accounts) शिक्षण, वकालत, शिल्प, एवं सम्पादन कार्य, वाहन क्रय-विक्रय।	धार्मिक अनुष्ठान, उच्च प्रशासनिक कार्य, उच्च शिक्षा के कार्य, आभूषण, औषधि, लकड़ी, भूमि, वाहनादि का लेन-देन, विदेश गमनादि कार्य।	संगीत, सिनेमा, विदेश बारे, टैलीविजन, स्त्रियों, एवं श्रृंगारिक वस्तुओं से संबन्धित कार्य, रूई, कपड़ा बैंकिंग, चाँदी, जवाहरात, रसायन, शराब, सोडा, सुगन्धित द्रव्य, वाहनादि क्रय-विक्रय, खुशबूदार वस्तु।	मशीनरी, लोहा, लकड़ी चमड़ा, सीमेंट, तेल, पैट्रोल, पत्थर, भूमि, ठेकेदारी, शस्त्रों का क्रय-विक्रय, अन्वेषण एवं आप्रेशण कार्य, अधीनस्थ कर्मचारी, वाहनादि प्रयोग विदेश-यात्रादि कार्य।

नाम वार	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि
नवीन वस्त्र धारण करना	शुभ है	मध्यम	अशुभ	शुभ	शुभ	अति शुभ	अशुभ
नवीन आभूषण धारण	शुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ
तेल लगाना	अशुभ	शुभ	अशुभ	विशेष शुभ	अशुभ	शुभ	विशेष शुभ
हजामत करना	मध्यम	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम
नया जूता पहनना	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	मध्यम	शुभ	मध्यम
मुकद्दमा करना	अशुभ	अशुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	मध्यम	शुभ

अनुष्ठान आरम्भ करने का मुहूर्त

मास—वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन।

तिथि (शुक्ला)—२, ३, ५, ७, १०, ११, १३।

वार—सू. गु. शु. (सोम मध्यम)।

नक्षत्र—अश्वि., रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा.-तीनों, ह. स्वा. वि. अनु. ज्ये. श्र. धनि, शत, रेव.।

लग्न—शिव की आराधना १, ४, ७, १० लग्नों में एवं विष्णु की २, ५, ८, ११ लग्नों में तथा देवी की ३, ६, ९, १२ लग्नों में कर्त्तव्य है।

अन्य देवताओं के अनुष्ठान में वह राशि लग्न ग्रहण करें, जब ३, ६, ११वें क्रूर ग्रह १, २, ४, ५, ७, ९, १०वें सौम्य ग्रह तथा ८, १२वें ग्रहाभाव।

विशेष—आराध्य देवताओं के मास, तिथि, वार, नक्षत्र विशेष शुभ है। पुनश्च, गुरु-शुक्रास्त, बलहीन चन्द्र तथा कुयोग परित्याज्य हैं।

मेलापक में मंगलीक योग एवं परिहार

विवाह योग्य लड़के-लड़की की जन्म कुण्डली में वर्ण, वश्य, तारा, ग्रहमैत्री, नाड़ी आदि अष्टकूट सम्बन्धी गुण मिलान के पश्चात् कुण्डली में मंगल एवं **मंगलीक दोष** पर विशेष रूप से विचार किया जाता है। मंगलीक दोष का आधार सामान्यत: निम्न श्लोक माना जाता है।

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे। कन्या भर्तृविनाशाय भर्त्ता कन्या विनाशदः।

–मु. संग्रहदर्पण

अर्थात् जिस कन्या की कुण्डली में १, ४, ७, ८ या १२वें स्थान में मंगल हो, तो वह कन्या वर (पति) के लिए हानिकारक तथा इसी भान्ति जिस लड़के की कुण्डली में इन्हीं स्थानों में मंगल हो वह कन्या को हानिकारक होता है। इसी भांति लग्न, चन्द्र और कभी-कभी शुक्र की राशि से भी मंगल की उपर्युक्त स्थितियों का विचार किया जाता है।

अपवाद–(१) मंगल दोष वाली कन्या का विवाह मंगलीक दोष वाले वर के साथ करने से मंगल का अनिष्ट दोष नहीं होता तथा वर-वधू के मध्य दाम्पत्य सुख बढ़ता है–

कुज दोष वती देया कुजदोषवते किल। नास्ति दोषो न चानिष्टं दम्पत्योः सुखवर्धनम्॥

मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक के परिहारस्वरूप मुहूर्त्त ग्रन्थों में अनेकत्र परिहार वाक्य मिलते हैं। यथा–

(२) यदि लड़की की कुण्डली में जिस स्थान पर मंगल स्थित (मंगलीक कारक) हो, और लड़के की कुण्डली में उसी स्थान पर शनि, मंगल, सूर्य, राहु आदि कोई पाप ग्रह स्थित हों, तो भौमदोष भंग हो जाता है। इसी प्रकार लड़के की कुण्डली में भौम दोष होने पर कन्या की कुण्डली में उसी भाव में कोई पाप ग्रह होने से भी भौमदोष नहीं रहता–

शनिः भौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।

तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोष विनाश कृत्॥–फलित संग्रह **अन्येऽपि–**

भौमेन सदृशो भौमः पापो व तादृशो भवेत्। विवाहः शुभदः प्रोक्तश्चिरायुः पुत्रपौत्रदः॥

अर्थात् एक की कुण्डली में मंगल दोष हो, तो दूसरे की कुण्डली में भी उन्हीं स्थानों में शनि आदि पाप ग्रह होने से मंगलीक दोष का प्रभाव क्षीण होकर विवाह में शुभ होता है।

यामित्रे च यदा सौरि लग्ने वा हिबुके तथा। अष्टमे द्वादशे चैव भौमदोषो न विद्यते॥

यह श्लोक भी लगभग इसी आशय का है।

(३) मेष राशि का मंगल लग्न में, वृश्चिक राशि का चौथे भाव में, मकर का सातवें, कर्क राशि का आठवें, एवं धनु राशि का मंगल १२वें हो, तो मंगल दोष नहीं होता। यथोक्तम्–

अजे लग्ने व्यये चापे पाताले वृश्चिके कुजे।

द्यूने मृगे कर्किचाष्टौ भौमदोषो न विद्यते॥ **–मुहूर्त्त पारिजात**

प्रकारान्तर से, मीन का मंगल ७वें भाव तथा कुम्भ राशि का मंगल अष्टम में हो, तो भौम दोष नहीं होता। **''द्यूने मीने घटे चाष्टौ भौम दोषो न विद्यते''** **–मुहूर्त्त चिंतामणि**

(४) यदि द्वितीय भाव में चन्द्र-शुक्र का योग हो, या मंगल गुरु द्वारा दृष्ट हो, केन्द्र भावस्थ राहु हो, अथवा केन्द्र में राहु-मंगल का योग हो, तो मंगल दोष नहीं रहता–

न मंगली चन्द्र भृगु द्वितीये, न मंगली पश्यति यस्य जीवा।

न मंगली केन्द्रगते च राहुः, न मंगली मंगल-राहु योगे॥ **–मुहूर्त्त दीपक**

(५) बलान्वित गुरु या शुक्र लग्न में हो, तो वक्री, नीचस्थ, अस्तंगत अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल उपरोक्त दुष्ट स्थानों में होने पर भी भौम दोष नहीं होता–

सबले गुरौ भृगौ वा लग्ने द्यूनेऽथवाभौमे।

वक्रे नीचारि गृहस्थे वाऽस्तेऽपि न कुजदोषः॥ **–मुहूर्त्त दीपक**

(६) इसी भांति केन्द्र व त्रिकोण में यदि शुभ ग्रह हों, तथा ३, ६, ११वें भावों में पाप-ग्रह हों तथा सप्तमेश ग्रह सप्तम में ही हो, तो मंगल दोष नहीं होता–

''केन्द्र कोणे शुभादये च त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहाः।

तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा॥'' **–मुहूर्त्त चिंतामणि**

(७) यद्यपि १, २, ४, ७, ८, ११ और १२वें भावों में स्थित मंगल वर-वधू के वैवाहिक जीवन में विघटन उत्पन्न करता है, परन्तु यदि मंगल अपने घर (१, ८) का हो, **उच्चस्थ** (मकर) का **किंवा मित्र क्षेत्री** मंगल दोष कारक नहीं होता–

तनु धन सुख मदनायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।

विघट्यति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा॥ **–मु. चिंतामणि**

(८) यदि वर-कन्या की कुण्डलियों में परस्पर राशिमैत्री हो, गणैक्य हो, २७ गुण या अधिक मिलान होता हो, तो भी भौम दोष अविचारणीय है। **'मुहूर्त्त दीपक'** नामक ग्रन्थानुसार–

राशिमैत्रं यदा याति गणैक्यं वा यदा भवेत्। अथवा गुण बाहुल्ये भौम दोषो न विद्यते॥

विवेचन–उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि मुहूर्त्त संग्रह दर्पण में दिए गए मंगलीक सम्बन्धी उपरोक्त श्लोक (''लग्ने व्यये पाताले–'') के परिहारस्वरूप कुछ अर्वाचीन ग्रन्थों में उपलब्ध होते हैं, जिनमें परस्पर विरोध वाक्यता भी मिलती है।

उल्लेखनीय है कि प्राचीन सैद्धान्तिक एवं प्रतिष्ठित मुहूर्त्त ग्रंथों जैसे–विवाह वृन्दावन, मुहूर्त्त मार्तण्ड, सारावली, मु. चिन्तामणि (प्राचीन संस्करण), ज्योतिर्निबन्ध आदि) में मंगलीक सम्बन्धी उपर्युक्त श्लोक एवं तत्सम्बन्ध विभिन्न परिहार वाक्यों का स्पष्ट उल्लेख नहीं मिलता।

वर-कन्या की कुण्डली में मंगलीक दोष एवं उसके परिहार का निर्णय अत्यन्त सावधानीपूर्वक करना चाहिए। केवल १, ४, ७, ८ आदि भावों में मंगल को देखकर दाम्पत्य जीवन के सुख-दुःख का निर्णय कर देना उपयुक्त नहीं। मंगलीक वाले स्थानों (भावों) में मंगल के अतिरिक्त कोई अन्य क्रूर ग्रह भी १, २, ७ एवं १२वें स्थानों में हो, तो वह भी परिवारिक एवं वैवाहिक जीवन के लिए अनिष्टकारी होता है। यथा–

लग्ने क्रूरा व्यये क्रूरा धने क्रूराः कुजस्तथा।

सप्तमे भवने क्रूराः परिवार क्षयंकराः॥ **–मु. संग्रह दर्पण**

मंगल अथवा मंगलीक दोष का निर्णय कुण्डली विशेष में सभी ग्रहों के पारस्परिक अनुशीलन के पश्चात् ही करना चाहिए। मिलान करते समय केवल मंगल या मंगलीक पर ही अत्यधिक बल न देते हुए मेलापक सम्बन्धी अन्य तत्त्वों का भी सर्वाङ्ग रूप से विवेचन करना चाहिए। जैसे–चलित भाव कुण्डली, सप्तमेश की उच्च-नीच स्थिति, सप्तम भाव पर गुरु, शुक्र की दृष्टि आदि तत्त्वों का सम्यक विचार किसी विद्वान ज्योतिषी जी से करवाना चाहिए।

वर-कन्या मिलान में वर्णादि अष्टकूटों का महत्त्व

विवाह गृहस्थाश्रम की आधारशिला है और उसी के मध्यम से मनुष्य, देव, ऋषि एवं पितृ आदि ऋण त्रय से उद्धृण होकर परम कल्याण को प्राप्त कर सकता है। तद् हेतु उत्तम लक्षणों जैसे-सुन्दर, सुशीला, मधुरभाषिणी एवं पतिव्रता कन्या तथा कर्त्तव्यनिष्ठ, स्वस्थ, शिक्षित, सदाचारी एवं सुसंस्कृत लड़के के साथ विवाह सम्बन्ध शुभ होता है। विवाह सम्बन्ध करने से पूर्व लड़के-लड़की का कुल-गोत्र, सनाथता, विद्या, धन, स्वास्थ्य (शरीर) और आयु-इन सात गुणों की परीक्षा करने के पश्चात् ही कुण्डलियों में परस्पर **मंगलीक आदि अरिष्ट** योगों तथा वर्ग, **स्त्रीदूर, कर्तरि एवं वर्णादि अष्टकूटों** का विचार करना चाहिए।

मेलापक प्रक्रिया में **मंगलीक और अष्टकूट** तत्त्वों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि वर-कन्या के दाम्पत्य जीवन को अधिकाधिक सुखी एवं मंगलमय बनाने के लिए उनके जन्म नक्षत्रों एवं जन्म कुण्डलियों के अनुसार मिलान करना अत्यन्त आवश्यक है। उपयुक्त मिलान न होने की स्थिति में पति-पत्नी के वैवाहिक जीवन में-विचार वैमनस्य, सन्तान कष्ट, वैधव्य, वैधुर्यादि दोष अथवा पारिवारिक कष्ट होने की सम्भावनाएं हो जाती है। **मंगलीक दोष** का विशेष विवरण इसी पंचाँग के गत पृष्ठ पर दिया गया है। यहाँ पर नक्षत्र मिलान के मुख्य तत्त्व अष्टकूट का विवेचन किया जा रहा है। ध्यान रहे, अष्ट (आठ) कुंटों का निर्णय वर-कन्या के जन्म नक्षत्रों से ही किया जाता है। अष्टकूटों के आठ कूट (अंग) निम्नलिखित हैं :-

(१) वर्ण (२) वश्य (३) तारा (४) योनि (५) ग्रहमैत्री (६) गणमैत्री (७) भकूट तथा **(८) नाड़ी** -ये आठ कूट हैं।

प्रत्येक कूट की क्रम संख्या अपने श्रेष्ठ गुणों की सूचक है। वर्णादि अष्टकूटों में **गुणों का योग ३६** होता है। इसमें क्रमानुसार वर्ण का १ गुण, वश्य के २, तारा के ३, योनि के ४, ग्रहमैत्री के ५, गण-मैत्री के ६, भकूट के ७ एवं नाड़ी के ८ (आठ) गुण जानने चाहिएं।

वर्णादि कुल ३६ गुणों के योग में से १ से १७ तक गुण मिलान तुच्छ एवं निन्दनीय (त्याज्य) माने जाते हैं, १८ से २१ तक मध्यम एवं ग्राह्य और २२ से २८ तक उत्तम तथा २९ से ३६ तक गुण सर्वोत्कृष्ट मिलान माना जाता है।

एकैकवृद्धितो ज्ञेया वर्णादीनां गुणाः क्रमात्।
विवाहः शुभदस्तेषां गुणे त्वष्टादशाधिके॥ —मु० गणपति

वर्णादि अष्टकूट

(१) वर्ण विचार-४, ८, १२ राशियों का **ब्राह्मण**, १, ५, ९ का **क्षत्रिय**, २, ६, १० **वैश्य** तथा ३, ७, ११ राशियों का **शूद्रवर्ण** होता है। वर का वर्ण कन्या के वर्ण से उच्च स्तरीय अथवा समान वर्ण होने पर **एक गुण** प्राप्त होता है। अन्यथा शून्य गुण होगा।

परिहार-यदि वर की राशि का वर्ण कन्या के राशि-वर्ण से हीन हो, परन्तु राशिपति उत्तम वर्ण हो, तो वर्ण मिलान शुभ हो जाता है।

(२) वश्य विचार-सिंह राशि के अतिरिक्त सभी राशियाँ नर (मनुष्य) राशि के वश में हैं। जल राशियाँ (४।१० उ.।१२) नर राशियों (३।६।७।९ पू.।११) का भक्ष्य है। वृश्चिक को छोड़कर शेष राशियाँ सिंह राशि के वश्य हैं। समान वश्य होने पर २ गुण, एक वश्य और दूसरा शत्रु होने पर एक गुण, एक वश्य और एक भक्ष्य होने पर आधा गुण तथा एक शत्रु और एक भक्ष्य होना शून्य अर्थात् गुणाभाव होगा।

(३) तारा विचार-कन्या के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर दोनों संख्याओं को अलग-अलग ९ द्वारा भाग देने पर यदि शेष ३, ५, ७ बचे तो अशुभ तारा होती है।

दोनों (वर-कन्या) ताराओं में अशुभ तारा हो तो शून्य गुण, एक में तारा शुभ और दूसरे में अशुभ हो तो डेढ़ गुण तथा दोनों में तारा शुभ हो तो ३ गुण होते हैं।

(४) योनि विचार-अश्विनी आदि नक्षत्रों के अनुसार जातक की योनि ज्ञात की जाती है। वर और कन्या की योनियों का आपसी वैर त्याज्य है। जैसे-गौ और व्याघ्र में, सिंह और गज, न्यौला और सर्प में, अश्व और महिष में, श्वान और हरिण में, वानर और मेष में, मूषक और मार्जार में, परस्पर महावैर है।

[**नोट**-योनि व महावैर योनि को तालिका चक्र गत पृष्ठों में दिया गया है।]

गुण-वर-कन्या की एक ही योनि होना शुभ है। योनियों में परस्पर अतिमित्र हो तो ४ गुण, मित्र हो तो ३, सहज प्रकृति समान हो तो २, सामान्य वैर हो तो १ गुण तथा योनियों में अतिशत्रुता हो तो शून्य-अर्थात् गुणाभाव होगा।

(५) ग्रह मैत्री-ग्रह मैत्री कूट के सन्दर्भ में वर-कन्या के राशि स्वामियों का एक्य अथवा मैत्री भावादि अभिप्रेत्य है। (राशि स्वामी का विवरण गत पृष्ठों में नक्षत्र, राशि, वर्णादि तालिका चक्र में दिया गया है।)

गुण विचार-वर-कन्या की राशियों में परस्पर अधि-मित्रता या राश्यैक होने पर ५ गुण, एक सम और दूसरा मित्र हो, तो ४ गुण, एक-दूसरे के सम हो, तो ३ गुण, एक मित्र दूसरा शत्रु हो, तो १ गुण, एक सम दूसरा शत्रु हो, तो आधा गुण, दोनों की राशियां परस्पर शत्रु हों, तो शून्य अर्थात् गुणाभाव होता है।

अष्टकूटों में राशि स्वामी की मैत्री को विशेष महत्त्व दिया गया है। मिलान में वर्ण, योनि, गण और षडाष्टक दोष होने पर भी यदि परस्पर राशि मैत्री पाई जाती हो तो अन्य किंचिद् दोषों का निवारण हो जाता है। यथा-

गणदोषो योनि दोषो वर्णदोषः षडाष्टकम्।
चत्वारि नैव दुष्यन्ति राशिमैत्री यदा भवेत्॥ —बृहज्जयोतिः सार

अपवाद-वर-कन्या के राशिपतियों में परस्पर वैर होने पर भी राशि नवांशपति परस्पर मित्र हो, तो विवाह शुभ माना जाता है। यथा-

राशिनाथे विरुद्धेऽपि सबल नवांशकाधिपौ।
तन्मैत्रेऽपि च कर्त्तव्य, दम्पज्योः शुभमिच्छता॥

(६) गण विचार-अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, स्वा., अनु., श्रव., रेवती नक्षत्रों का **देवता गण**, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भर० और आर्द्रा इन नक्षत्रों का **मनुष्यगण**, कृति., अश्ले, मघा, चित्रा, विशा., ज्ये., मूल, धनि. और शत. का **राक्षसगण**।

वर-कन्या का **एक ही गण** होने पर विवाह **उत्तम**, देव-मनुष्य हो तो शुभ, किसी एक का राक्षसगण और दूसरा मनुष्यगण हो अथवा किसी एक का देवगण और दूसरा राक्षस गण हो तो अशुभ एवं त्याज्य होता है।

गुण विभाजन—वर-कन्या का एक ही गुण हो, तो ६ गुण, वर का देवगण एवं कन्या का मनुष्यगण हो तो भी ६ गुण, पर कन्या देवगण एवं वर का मनुष्य हो तो ५ गुण, एक का देवगण तथा दूसरा राक्षसगण अथवा एक का मनुष्यगण दूसरे का राक्षसगण हो, तो शून्य गुण होता है इत्यादि।

मनुष्यादि गणों का गुण बोधक चक्र

कन्या	गुण	देव	मनुष्य	राक्षस
	देव	६	५	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	०	०	६

गण दोष परिहार—

(क) राशिपतियों में परस्पर मित्रता या राशिनवांशपति में मित्रता हो, तो गणदोष नहीं रहता।

ग्रहमैत्री च राशिश्च विद्यते नियतं यदि। न गणभाव जनितं दूषणंस्याद विरोधदम्॥

गर्ग—मु. चिन्तामणि च

(ख) ग्रहमैत्री तथा वर-कन्या के नक्षत्रों की नाड़ियों में भिन्नता हो, तो गणदोष होने पर भी दोष नहीं होता। —पीयूषधारा

(ग) इसी भान्ति तारा, वश्य, योनि ग्रहमैत्री तथा भकूट की शुद्धि होने पर कोई दोषपत्ति नहीं होती। —मुहूर्त्त मार्त्तण्ड

(७) भकूट विचार—इसे राशिकूट भी कहते हैं। वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर छठे एवं आठवें हो, तो **षडाष्टक दोष** होता है। यदि वर-कन्या की जन्म राशि परस्पर पांचवीं-नौवीं हो, तो **नव पंचम दोष**, यदि दोनों की राशियाँ परस्पर दूसरी और बारहवीं हो, तो **द्विद्वादश दोष** कहलाता है। **षडाष्टक दोष** (विशेषकर शत्रु-षडाष्टक) होने की स्थिति में वर-कन्या, इनके माता-पिता अथवा उनके किसी निकटस्थ बन्धु को मृत्यु-तुल्य कष्ट होने की सम्भावना होती है। **नवपंचम दोष** की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति को संतान सम्बन्धी दुःख होने का भय होता है तथा **द्विद्वादश दोष** (शत्रुकूट) होने पर वर कन्या को धन हानि एवं आर्थिक परेशानियों का सामना रहता है।

षडाष्टक परिहार—(i) मेष-वृश्चिक, वृष-तुला, मिथुन-मकर, कर्क-धनु, सिंह-मीन तथा कन्या-कुम्भ आदि मित्र राशियों का षडाष्टक शुभ होता है, जबकि वैर-षडाष्टक ही विशेषतया त्याज्य होता है। यथा-१-६, २-९, ३-८, ४-११, ५-१०, ७-१२ राशियों का शत्रुगत षडाष्टक होने से त्याज्य माना जाता है।

(ii) परन्तु परिहारस्वरूप **तारा-शुद्धि, राशीश-मैत्री, राशिवश्यैक्य**, अथवा राशि स्वामी ग्रह **समान** होने पर षडाष्टक दोष भी ग्राह्य होता है। यथा-

न वर्गवर्णौ न गणोः न योनिर्द्विद्वादशे चैव षडाष्टके वा।
तारा विरुद्धे नव पंचमे वा मैत्री यदा स्यात्शुभदो विवाहः॥ —बृ. ज्योतिस्सार

नव पंचम परिहार—

(i) वर की राशि से कन्या की राशि पांचवीं हो और कन्या की राशि से वर की राशि ९वीं हो, तो यह नव-पंचम शुभ होता है-

वरस्य पंचमे कन्या, कन्यायां नवमेवरः। एतत् त्रिकोणकं ग्राह्यां पुत्रपौत्र सुखावहम्॥

—बृहज्योतिषः सारः

(ii) मीन-कर्क, वृश्चिक-कर्क, मिथुन-कुम्भ और कन्या-मकर-ये चार नवपंचक विशेषतया त्याज्य माने जाते हैं।

मीनालिम्यां युते कीटे कुम्भे मिथुन संगते। मकरे कन्यकायुक्ते न कुर्यान्नवजचमे॥ —शार्गंधर

(iii) वर-कन्या दोनों के चन्द्र राशि अधिपति अथवा राशि नवांशपति परस्पर मित्रक्षेत्री हों, तो नवपंचम अविचारणीय है।

द्वि-द्वादश दोष का परिहार—

(i) लड़के की राशि से कन्या की राशि दूसरी हो तो कन्या धन हानिकारक और १२वीं हो तो वह धनवती और पतिप्रिया होती है।

(ii) १-२, ३-४, ५-६, ७-८, ९-१० एवं ११-१२ राशियों का द्वि-द्वादश शत्रु-द्विद्वादश एवं च अनिष्टकर मानते हैं।

(iii) मतान्तर में **सिंह और कन्या** द्वि-द्वादश ग्राह्य है। —मुहूर्त्तमार्त्तण्ड

इसके अतिरिक्त कुछ परिस्थितियों में वर-कन्या की परस्पर राशि-स्थिति विशेष शुभकारी होती है। जैसे-वर-कन्या, दोनों की एक ही राशि १०वें का होना, दोनों की राशियों का परस्पर ३-११वें (त्रिरेकादश) होना, दोनों की राशियों का आपस में ४-१०वें होना एवं च दोनों की राशियों का परस्पर सप्तम (**समसप्तक**) होना वर-कन्या के वैवाहिक जीवन के लिए शुभफल प्रद होता है। परन्तु **अपवाद** रूप में, कर्क-मकर का तथा सिंह-कुम्भ राशियों का समसप्तक योग वर-कन्या के विवाह में शुभ नहीं माना गया- **मकरे कर्कटे चैव कुम्भे सिंहे तथैव च।**
परस्परं सप्तमे च वैधव्यं तु विनिर्दिशेत्॥ —ज्योतिनिबन्ध

(८) नाड़ी दोष विचार—अष्टकूट निर्धारक तत्त्वों में नाड़ी का विशेष महत्त्व है। वर-कन्या की एक ही नाड़ी होना विवाह में अशुभ माना गया है। 36 गुणों में से इसके 8 गुण होते हैं। भिन्न नाड़ी के आठ गुण तथा नाड़ी समान होने पर गुणाभाव अर्थात् शून्य गुण होता है।

अश्वन्यादि २७ जन्म नक्षत्रों को तीन नाड़ियों (पंक्तियों) में विभाजित किया गया है-आदि, मध्य और अन्त्य। इनका विवरण निम्न चक्र में दिया गया है।

नाड़ी चक्र

आदि नाड़ी	अश्वि	आर्द्रा	पुन	उ.फा.	हस्त	ज्ये.	मूल	शत	पू.भा.
मध्य नाड़ी	भर	मृग	पुष्य	पू.फा.	चित्रा	अनु.	पूपा	धनि	उ.भा.
अन्त्य नाड़ी	कृति	रोह	श्ले.	मघा	स्वा	विशा	उ.पा.	श्रव	रेव

वर-कन्या का जन्म नक्षत्र एक ही नाड़ी में पड़ना विवाह में अशुभ माना जाता है। दोनों की आदि (**प्रथम**) नाड़ी हो, तो विवाह के पश्चात् उनका परस्पर वियोग आदि, **मध्य** नाड़ी हो, तो दोनों की हानि तथा **अन्त्य** नाड़ी हो तो वैधव्य या अतिशय दुःख होता है। —बृहज्योतिषसार

वर-कन्या के नक्षत्र एक ही नाड़ी वाले हों, तो नाड़ी दोष माना जाता है। एक समान नाड़ी वाले वर-कन्या को ज्योतिषाचार्यों ने बहुत अशुभ माना है।

विवाह में नाड़ी दोष का आचार्यों द्वारा विशेष महत्त्व दिया गया है। नारद ऋषि अनुसार–

एक नाडी विवाहश्च गुणैः सर्वे समन्वितः।
वर्जनीयः प्रयत्नेन दम्पत्योः निधनं यतः॥ (नारद)

अर्थात् विवाह मिलान में चाहे सब गुण मिल रहे हों, परन्तु वर-कन्या की एक ही नाड़ी का प्रयत्नपूर्वक त्याग करना चाहिए। यह दोष दम्पत्ति के लिए अनिष्टकर/घातक माना जाता है। नाड़ी दोष में एक ही नक्षत्र और समान नक्षत्र चरण होने पर भी सभी आचार्यों ने एकमत से अनिष्टकारी कहा है।

नाड़ी दोषापवाद एवं परिहार–

(i) वर-कन्या की एक ही राशि हो, परन्तु नक्षत्र अलग-अलग हों।

(ii) वर-कन्या दोनों का जन्म नक्षत्र एक हो, परन्तु राशियाँ भिन्न-भिन्न हों, तो नाड़ी दोष अविचारणीय है। (विवाह वृन्दावन)

(iii) वर-कन्या, दोनों का नक्षत्र एक हो, परन्तु चरण भिन्न-भिन्न हों।

(iv) नाड़ी दोष ब्राह्मणों के लिए, वर्णदोष क्षत्रियों के लिए, गण दोष वैश्यों के लिए तथा योनि दोष शूद्रों के लिए विशेष रूप से विचारणीय होता है–

नाड़ी दोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये। गणदोषश्च वैश्येषु योनि दोषस्तु पादजान्॥

ध्यान रहे, ब्राह्मणेतर वर्ण जातियों के लिए नाड़ी दोष नित्तान्तः उपेक्षनीय नहीं होता॥

हमारे मतानुसार नाड़ी दोष का विचार सभी जाति के वर-कन्यओं के मिलान के सम्बन्ध में समान रूप से करना चाहिए। विशेष रूप से कर्क, वृश्चिक तथा मीन (४, ८, १२) राशियों के सन्दर्भ में।

(v) यदि वर-कन्या दोनों की एक राशि हो, परन्तु नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा यदि दोनों का नक्षत्र एक हो और राशि अलग-अलग हो, एवं च नक्षत्र चरण भिन्न (पाद भेद) हो, तो ऐसी स्थिति में नाड़ी एवं गण दोष नहीं होता–अर्थात् शुभ होता है।

राश्यैक्ये चेद् भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ी दोषों नो गणानां च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभंस्यात्॥ **–मुहूर्त संग्रह दर्पण**

यद्यपि वर-कन्या का एक ही नक्षत्र अथवा एक ही राशि का होने से नाड़ी दोष का परिहार माना गया है, परन्तु यदि दोनों के नक्षत्र चरणों में समानता हो अथवा नक्षत्रों में पाद वेध* हो, तो विवाह सर्वदा त्याज्य एवं वर्जित होगा। यथा–

एक नक्षत्र जातानां नाड़ी दोषो न विद्यते। अन्यर्क्षनाड़ीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा॥
–ज्योतिष तत्त्व प्रकाश

अन्यत्र भी कहा गया है– **दम्पत्योरेक नक्षत्र भिन्नपादे शुभावहम्।**
दम्पत्योरेकपादे तु वर्षान्ते मरणं ध्रुवम्॥ (का. नि.)

पराशरानुसार भी यही अभिमत है–

पराशरः प्राह नवांशभेदाद एकनक्षत्र राशयोरपि सौमनस्यम॥

***नोट–** ध्यान रहे, किसी नक्षत्र के प्रथम पाद और चतुर्थ पाद तथा **दूसरे एवं तीसरे पाद** में परस्पर वेध होना भी पाद-वेध कहलाता है।

(vi) 'नरपतिजचर्या' अनुसार वर कन्या के नक्षत्र चरणों के I & IV, II & III तथा IV & I, III & II चरणों के मध्य ही पादवेध चरणों का विचार करना अनिवार्य होता है। इसके अतिरिक्त अन्य नक्षत्र चरणों के वेध जैसे I & III, II & IV नक्षत्र चरणों में वेधाभाव होने के कारण स्वल्पदोष रह जाता है।

आद्यांशेन चतुर्थांश चतुर्थांशेन यादिमम्। द्वितीयेन तृतीयं तु तृतीयेन द्वितीयकम्॥
ययो भांशव्यधश्चैवं जायते वर कन्ययोः। तयो मृत्युर्न सन्देहः शेषांशाः स्वल्प दोषदाः॥

(vii) 'ज्योतिष चिन्तामणि' अनुसार रोहिणी, मृगशिर, आर्द्रा, ज्येष्ठा, कृतिका, पुष्य, श्रवण, रेवती एवं उत्तराभाद्रपद–इन नक्षत्रों में उत्पन्न वर-कन्या को नाड़ी दोष नहीं लगता।

रोहिण्यार्द्रा मृगेन्द्राग्नी पुष्यश्रवणपौष्णभम्।
अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाड़ी दोषो न विद्यते॥ **–ज्यो० चिन्तामणि**

नाड़ी आदि दोषों का परिहार होने की स्थिति में उनसे सम्बन्धित आधे गुणों को जोड़ (जमा कर) देने का विधान है।

उपयुक्त उपायों से परिहार–

हमारे मतानुसार गण, योनि, षडाष्टक, द्विद्वादश, नाड़ी आदि अष्टकूटों में परिहार वाक्य उपलब्ध हो जाने पर भी अपनी शक्ति एवं सामर्थ्यानुसार यथोचित संख्या में जप, पाठ, दानादि करवा लेना चाहिए।

'बृहस्पति संहिता' के अनुसार नाड़ी दोष की शान्ति के लिए **श्रीमृत्युञ्जय मन्त्र** का जाप (यथोचित संख्या में) करके ब्राह्मणों को गौ, वस्त्र, अनाज, घृतादि सहित भोजन एवं सुवर्ण, चांदी, रत्नों की दक्षिणा आदि से सन्तुष्ट करने से नाड़ी दोष का परिहार हो जाता है–

अन्यत्र भी लिखा है–श्री महामृत्युञ्जय के जप-पाठ के उपरान्त–

षडाष्टके गोमिथुनं प्रदेयं, कास्यं सरूप्यं नवपंचमेच।
नाड्यां सुवर्णान्नमथो सुधेनुं द्विद्वादशे ब्राह्मणतपर्णं च॥

अर्थात् शत्रु षडाष्टक दोष होने पर गोमिथुन (एक गाय, एक बैल), **नवपंचम** में चांदी-कांसे का बर्तन, **नाड़ी दोष** में गाय, अन्न, सुवर्ण-वस्त्र का दान तथा **द्विद्वादश** में ब्राह्मणों एवं सुपात्र जनों को यथाशक्ति भोजन, दान-दक्षिणादि द्वारा सन्तुष्ट करने से मिलान सम्बन्धी **अष्टकूट दोषों** की शान्ति हो जाती है।

वर-कन्या की कुण्डली में नाड़ी-देष हो, परन्तु अत्यन्त आवश्यक परिस्थितिवश विवाह करना आवश्यक हो, तो उस स्थिति में वर/कन्या का अर्क/कुम्भ विवाह, महामृत्युजंय जप, सुवर्ण, रत्न, चांदी, अनाजादि के दान, ब्राह्मण भोजन आदि के पश्चात् ही विवाह कार्य करना प्रशस्त होगा–

हेमाज्यरत्नगोदानं मृत्युञ्जयजपस्तथा।
कुर्यादवश्यमुद्वाहे नाडीदोषाऽपनुत्तये॥ (मुहूर्त गणपति)

शुद्ध वर-कन्या मेलापक सारिणी (भाग-१)

वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	अश्वि 1 से 4	भर. 1 से 4	कृति 1	कृति 2,3,4	रोह 1 से 4	मृग 1,2	मृग 3,4	आर्द्रा 1 से 4	पुर्न 1,2,3	पुर्न 4	पुष्य 1 से 4	श्ले 1 से 4	मघा 1 से 4	पू.फा. 1 से 4	उ.फा. 1	उ.फा. 2,3,4	हस्त 1 से 4	चित्रा 1,2
मेष अश्वि 1 से 4	२८ 8	३३ 4	२८ 3,6	१८॥ 1236	२१॥ 1,2,3	२२॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	१७ 1,5,8	१९ 1358	२३॥ 3,8	३१॥ 3	२८ 6	२१ 6,9,व	२५ 9,व	१५ 389व	११ 3578	९ 14578	१३॥ 14567
भर 1 से 4	३४ 4	२८ 8	२९ 6	१९ 1,2,6	२३ 1,2,3	१४॥ 1238	१८ 1358	२६॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	३१॥ 3	२३॥ 3,8	२५ 3,6	२० 6,9,व	१८॥ 8,9व	२६ 9,व	२१॥ 1,5,7	२० 1357	५ 13578
कृति 1 चरण	२७॥ 3,6	२९ 6	२८ 8	१८ 1,2,8	१० 1268	१६॥ 1236	२० 1356	२०॥ 1356	२१ 1356	२५॥ 3,6	२६॥ 3,6	२३॥ 3,8	१७ 389व	२० 6,9व	२० 6,9व	१५॥ 1567	१६ 1567	१८ 1357
वृष कृति 2,3,4	१९ 2,3,6	२० 2,6	१९ 2,8	२८ 8	२० 6,8	२६॥ 3,6	१७॥ 2,3,6	१७॥ 2,3,6	१८॥ 2,3,6	२२ 3,5,6	२३ 3,5,6	२० 3,5,8	१९ 358व	२२ 5,6व	२२ 5,6व	२१ 6,9	२१ 6,9	२३॥ 3,9
रोह 1 से 4	२४ 2,3	२३॥ 2,3	११ 2,6,8	२० 6,8	२८ 8	३६	२७ 1,2	२४ 1,2,3	२३ 1234	२६ 3,4,5	२७ 3,5	१२॥ 3468	१०॥ 3568	२४॥ 3,5व	२७ 5,व	२६ 4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9
मृग 1-2	२३॥ 2,3	१५ 2,3,8	१९ 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१९॥ 1,2,8	२४॥ 1,2,4	२३ 1234	२६ 3,4,5	१९ 3,5,8	२१ 3,5,6	१९॥ 456व	१५ 3458	२४॥ 3,5व	२४ 3,9	२६ 4,9	१३ 6,8,9
मिथुन मृग 3-4	२७ 3,5	१८ 3,5,8	२२ 3,5,6	२० 2,3,6	२७॥ 2,व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	३१॥ 3,4	१९॥ 2,4,5	१२ 2358	१४॥ 2356	२४ 3,4,6	२० 348व	२८॥ 3,व	३१॥ 3	३४ 4	२१ 4,6,8
आर्द्रा 1 से 4	१९॥ 3,5,8	२७॥ 3,5	२१॥ 3,5,6	१९ 2,3,6	२५ 2,3,4	२६ 2,4	३४ -	२८ 8	२५ 4,8	१३ 24568	२०॥ 235व	१३ 2356	२४ 3,6,व	२९॥ 3,4व	२१॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,8	२५ 3,4,8	२७॥ 4,6
पुन. 1,2,3	२० 3,5,8	२७ 3,5	२३॥ 3,5,6	२०॥ 2,3,6	२३ 2,3,4	२४ 2,3,4	३१॥ 3,4	२४ 4,8	२८ 8	१६ 258व	२३ 2,5,व	१७ 235व	२३ 346व	२७ 3,4व	२२ 3,8व	२५ 3,8	२६ 3,8	२७॥ 3,6
कर्क पुन. 4	२३ 1,3,8	२९॥ 1,3	२५॥ 1,3,6	२२ 1356	२४ 1345	२५ 1345	१८ 1245	१० 12568	१५ 1258	२८ 8	३५ -	२९॥ 3,6	१६॥ 1246	२०॥ 1234	१५॥ 1238	१८ 1358	१९॥ 1358	२१ 1356
पुष्य 1 से 4	३०॥ 1,3	२१॥ 1,3,8	२७ 1,3,6	२३ 1356	२५ 1,3,5	१८ 1358	११॥ 12358	१८॥ 1235	२२ 125व	३५ -	२८ 8	३० 6	२० 1236	१५॥ 1238	२३॥ 1,2,3	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	१२॥ 14568
श्ले. 1 से 4	२६ 1,6	२५ 1,3,6	२३ 1,3,8	१९ 1358	११॥ 14568	१९ 1456	१३ 12456	१२ 12456	१५॥ 1256	२८ 3,6	२९ 6	२८ 8	१५ 1248	१५॥ 1246	१८॥ 1236	२१॥ 1356	२१ 1356	२६ 1,3,5
सिंह मघा 1 से 4	२० 6,9,व	२० 6,9,व	१६॥ 8,9,व	१७॥ 158व	९॥ 1568व	१७॥ 156व	२१॥ 146व	२२॥ 136व	२१ 1346व	१६॥ 2,4,6	२० 2,3,6	१६॥ 2,4,8	२८ 8	३० 6	२७ 3,6	१६ 1236	१६॥ 1236	२१॥ 123व
पू.फा. 1 से 4	२६ 9,व	१८॥ 8,9,व	२० 6,9,व	२१ 156व	२३॥ 145व	१५॥ 1458	२० 148व	२८॥ 1,3,व	२६ 1,4,व	२२॥ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	१६॥ 2346	३० 6	२८ 8	३५	२४ 1,2व	२३ 123व	७॥ 1268
उ.फा. 1	१७ 8,9,व	२६ 9,व	२१ 6,9,व	२१ 156व	२६ 1,5,व	२५ 135व	२८॥ 1,3व	२१ 1,3,8	२१॥ 1,3,8	१७॥ 2,3,8	२५॥ 2,3	२० 2,3,6	२७॥ 3,6	३५ -	२८ 8	१७ 128व	१६॥ 128व	१३॥ 1236
कन्या उ.फा. 2,3,4	१३ 3578	२२॥ 5,7	१६ 5,6,7	२१ 6,9	२६ 4,9	२४॥ 3,9	३१॥ 1,3	२३॥ 1,3,8	२४॥ 1,3,8	२० 3,5,8	२८ 3,5	२२॥ 3,5,6	१८ 2,6,व	२५ 2,व	१८ 2,8व	२८ 8	२७॥ 8	२५ 3,4,6
हस्त 1 से 4	१० 34578	२० 3,5,7	१७॥ 5,6,7	२२ 6,9	२५ 9	२६ 9	३३ 1,4	२२॥ 1,3,8	२४ 1,3,8	२० 358व	२८ 3,5व	२३ 3,5,6	१८॥ 236व	२२॥ 2,3व	१६ 2,8व	२६ 8	२८ 8	२८ 4,6
चित्रा 1,2	१३ 3567	४॥ 45678	१९ 3,5,7	२४ 3,4,9	२० 6,9	१२॥ 6,8,9	१९ 1,6,8	२६ 1,4,6	२५॥ 1,3,6	२१॥ 356व	१२॥ 3568व	२७ 35,व	२२॥ 2,3,व	८॥ 2368व	१४॥ 2346व	२४॥ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8

नोट—गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-२)

कन्या राशि	वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	मेष अश्वि 1 से 4	मेष भर. 1 से 4	मेष कृति 1	वृष कृति 2,3,4	वृष रोह 1 से 4	वृष मृग 1,2	मिथुन मृग 3,4	मिथुन आर्द्रा 1 से 4	मिथुन पुर्न 1,2,3	कर्क पुर्न 4	कर्क पुष्य 1 से 4	कर्क श्ले 1 से 4	सिंह मघा 1 से 4	सिंह पू.फा. 1 से 4	सिंह उ.फा. 1	कन्या उ.फा. 2,3,4	कन्या हस्त 1 से 4	कन्या चित्रा 1,2
तुला	चित्रा 3,4	२२॥ 3,4,6	१४ 3468	२८॥ 3,4	२४ 3,7	२०॥ 4,6,7	१२ 6,7,8	१३ 6,8,9	२१ 4,6,9	१९॥ 3,6,9	२०॥ 3,5,6	११ 3568	२६॥ 3,5,व	२५॥ 3,5,व	११॥ 3568	१७॥ 456व	१७॥ 2346	२० 2,4,6	२१ 2,6
तुला	स्वा. 1 से 4	२७॥ 3,4	२९॥ 3	१७॥ 3,6,8	१३ 3678	१५॥ 3,7,8	२६ 4,7	२७ 9	२६॥ 4,9	२८ 9	२९ 5,व	२७ 3,5	१४ 3568	१३ 3568	२५॥ 3,5व	२५॥ 3,5व	२६ 2,3	२७॥ 2,3	२१ 2,4,6
तुला	विशा 1,2,3	२२॥ 3,4,6	२३ 3,4,6	२०॥ 3,4,8	१५॥ 3478	१०॥ 3678	१८॥ 3,6,7	२० 3,6,9	२० 4,6,9	२१ 4,6,9	२२ 56,व	२१॥ 4,5,6	१८॥ 3,5,8	१७॥ 358,व	१९॥ 356व	१७॥ 2346	१७॥ 2346	१९ 2346	२७॥ 2,3
वृश्चिक	विशा 4	१७ 1467	१७ 1467	१४॥ 1478	१९॥ 1,4,8	१४॥ 1368	२२॥ 1,3,6	१२॥ 1567	१३ 1567	१३॥ 1567	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	१५॥ 3,8,9	२२ 1,3,8	२३॥ 136व	२१॥ 146व	१७॥ 1456	१८ 1456	२७ 135व
वृश्चिक	अनु. 1 से 4	२५ 1,3,7	१५॥ 1378	२० 1367	२४॥ 1,3,6	२७॥ 1,3,4	२०॥ 1,3,8	१० 13578	१५ 13457	२०॥ 1,5,7	२६॥ 9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	२५ 1,3,6	२१ 138व	२९॥ 1,3व	२५ 135व	२६ 135व	११॥ 1358
वृश्चिक	ज्ये. 1 से 4	१२ 1678	१८॥ 1367	२५ 1,3,7	२९॥ 1,3	२२॥ 1,3,6	२२॥ 1,3,6	१३ 13567	३ 134578	५॥ 135678	१०॥ 3689	२० 6,9	२६ 9	३१ 1,4,व	२४ 136व	१७ 1368	१३ 13568	१३ 1568व	२४॥ 1345
धनु	मूल 1 से 4	१२ 4689	२१ 6,9	२५ 3,9	१९॥ 1,5,7	१३ 1567	१३॥ 1567	२१ 1356	१५ 1568	१२ 14568	७॥ 4678	१७॥ 3,6,7	२४ 4,7	२५ 9,व	२० 6,9व	९॥ 689व	१३ 1568	१३ 1568	२६ 1,4,5
धनु	पू.षा. 1 से 4	२६ 9	१८॥ 8,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 14567	१८॥ 1457	११ 14578	१८॥ 1458	२७ 1,3,5	२७ 1,3,5	२३॥ 37,व	१३ 3478	१७॥ 3,6,7	१९ 6,9,व	१७॥ 8,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२७ 1,3,5	१३॥ 13568
धनु	उ.षा. 1	२५ 3,9	२६ 4,9	१२ 4689	६ 15678	१० 14578	१७ 1457	२५ 1,4,5	२७ 1,3,5	२७॥ 1,3,5	२३॥ 37,व	२३॥ 3,7,व	८॥ 678व	८॥ 4689	२४ 4,9व	२५ 9,व	२८॥ 1,5	२८॥ 1,5	२१ 1,5,6
मकर	उ.षा. 2,3,4	२७ 3,4,5	२८॥ 4,5	१४॥ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२३ 3,4,9	२१ 1347	२२ 1,3,7	२२॥ 1,3,7	२८ 3,5	२८ 3,5	१४ 3568	४॥ 45678	२० 4,5,7	२१ 4,5,7	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७॥ 4,6,9
मकर	श्रव 1234	२७ 3,4,5	२६॥ 3,4,5	१४ 4568	१२ 4689	१६ 4,8,9	२६ 4,9	२३ 147व	२१ 1,3,7	२२ 1,4,7	२८ 4,5	२६ 4,5	१५ 4568	६॥ 5678	१८॥ 4,5,7	२० 4,57	२४ 4,9व	२४॥ 4,9व	११॥ 4,6,9
मकर	धनि 1,2	२० 3456	११॥ 34568	२६ 3,4,5	२४ 3,4,9	२०॥ 4,6,9	१२ 4689	९ 1678	१६ 1467	१६ 1467	२२ 4,5,6	१३ 4568	२८ 4,5	१९॥ 4,5,7	५॥ 5678	१२॥ 4567	१६ 469व	१८ 469व	१५ 489व
कुम्भ	धनि 3,4	२० 4,5,6	१०॥ 4568	२६ 3,4,5	३०॥ 3,4	२७ 4,6	१९॥ 4,6,8	१२ 4689	१९ 4,6,9	१८॥ 3469	१३ 4567	४॥ 45678	१९॥ 357व	२५॥ 3,5,व	११ 568व	१८॥ 456व	१८ 4,6,7	१९ 4,6,7	१७ 4,7,8
कुम्भ	शत 1 से 4	१५ 3568	२१ 3,5,6	२८ 3,5	३२॥ 3	२५॥ 3,4,6	२७ 4,6	२० 4,6,9	१२ 4698	१३ 6,9,8	८ 5678व	१४ 567व	२१ 5,7,व	२६॥ 3,5,व	२०॥ 356व	१२॥ 568व	११॥ 3678	९ 4678	२५ 4,7
कुम्भ	पू.भा. 1,2,3	१८ 4,5,8	२५ 3,4,5	२० 4,5,6	२५ 3,4,6	३१॥ 3,4	३१॥ 3,4	२५ 3,4,9	१७॥ 4,8,9	१८॥ 4,8,9	१३॥ 4578व	२० 457व	१३ 3567व	११॥ 5,6,व	२५॥ 4,5व	१६॥ 458व	१५॥ 4,7,8	१५॥ 3478	१७॥ 3467
मीन	पू.भा. 4	१४॥ 1248	२२ 1234	१६॥ 1246	११ 1456	२६ 1345	२६ 1345	२६ 145व	१८॥ 1458	११ 1458	१८ 4,8,9	२५ 4,9	११ 4,6,9	१८ 1467	२३॥ 1347	१४॥ 1478	१६ 1458व	१७ 1458	१८॥ 1456
मीन	उ.भा. 1 से 4	२५ 1,2,3	१७ 1238	१९ 1236	२१ 1356	२६ 1345	१८ 1358	१७॥ 1358	२५ 135व	२८ 1,5,व	२७॥ 9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	१९ 1367	१७ 1378	२६ 1,3,7	२७॥ 135व	२७ 135व	१० 14568
मीन	रेव 1 से 4	२५ 1,2,4	२४॥ 1,2,3	११ 1268	१४ 1568	१७॥ 1358	२६ 1,3,5	२५ 135व	२४॥ 135व	२६ 1,3,5	२६ 3,9	२७॥ 9	१४ 6,8,9	१३ 1687	२३॥ 1,3,7	२४ 1,3,7	२६ 135व	२७ 135व	११॥ 1456

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1,2,3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-३)

वर/नक्षत्र → कन्या नक्षत्र ↓	तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
	चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
अश्वि 1 से 4	२२॥ 1346	२६॥ 1,3,4	२२॥ 1346	१८॥ 3467	२५॥ 3,7	१४॥ 6,7,8	१३ 6,8,9	२५ 4,9	२३॥ 1,3,9	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	२० 1456	२०॥ 1456	१५ 1358	१६ 1358	१५ 2348	२५ 2,3	२६ 2,4
भर 1 से 4	१३॥ 1368	२९ 1,3	२१॥ 1,3,6	१७॥ 3467	१७॥ 378	२० 3,6,7	२० 6,9	१८॥ 8,9	२६ 4,9	२७॥ 1,5	२६ 1,3,5	१० 14568	९॥ 14568	२० 1356	२४ 1345	२३ 2,3,4	१७॥ 2,3,8	२७ 2,3
कृति 1 चरण	२७॥ 1,3,4	१५ 1368	१९॥ 1348	१५॥ 3478	१९॥ 3,6,7	२५॥ 3,7	२५ 3,9	१८॥ 4,6,9	१२॥ 6,8,9	१३॥ 1568	१२ 14568	२५ 1,3,5	२५॥ 1,3,5	२७ 1,3,5	१९॥ 1356	१७॥ 2346	१९॥ 2,3,6	१२ 2366
कृति 2,3,4	२३ 1347	११ 13678	१४॥ 1378	२०॥ 3,4,8	२४॥ 3,6	३०॥ 3	२० 3,5,7	१४ 4567	७ 5678	१२ 6,9,8	१०॥ 4689	२४ 3,4,9	२९॥ 1,3,4	३१॥ 1,3	२३॥ 1346	२० 3456	२२ 3,5,6	१४ 3568
रोह 1 से 4	१९॥ 1,6,7	१५॥ 1378	९॥ 1678	१५ 1368	२९॥ 3,4	२४ 3,6	१४॥ 3567	१९॥ 3,5,7	११॥ 4578	१६ 4,8,9	१७॥ 4,8,9	२०॥ 4,6,9	२६ 1,4,6	२५ 1,3,6	३१ 1,3,4	२७ 3,4,5	२७ 3,4,5	१९ 3,5,8
मृग 1-2	१२ 1678	२५॥ 1,7	१९ 1367	२५ 3,6	२१॥ 3,5,8	२४॥ 3,6	१५ 3567	१०॥ 3578	१७॥ 3457	२२ 3,4,9	२५॥ 4,9	१३ 4689	१९॥ 1468	२७ 1,4,6	२९॥ 1,3,4	२६ 3,5	१८ 3,5,8	२७ 3,5
मृग 3-4	१४ 6,8,9	२७ 4,9	२१ 3,6,9	१४ 3567	११ 3578	१४ 3567	२३ 3,5,6	१८॥ 3458	२५ 3,4,5	२०॥ 347व	२४ 4,7,व	११ 678व	१३ 6,8,9	२१॥ 6,9	२४ 3,9	२५॥ 3,5,व	१७॥ 3,5,8	२६॥ 3,5,व
आर्द्रा 1 से 4	२१ 4,6,9	२७ 9	२०॥ 4,6,9	१३ 4567	१७॥ 3457	३ 345678	१६ 3568	२८ 3,5	२८ 3,5	२३॥ 3,7व	२३॥ 3,7,व	१८ 467व	१९॥ 4,6,7	१२॥ 689	१७॥ 4,8,9	१९ 5,8,व	२६॥ 3,5व	२७ 3,5,व
पुन. 1,2,3	२१ 3,6,9	२८ 9	२२ 6,9	१५ 5,7व	२२ 5,7व	७ 35678	१४ 34568	२७ 3,5	२७ 3,5	२२॥ 3,7व	२३॥ 3,7,व	१७॥ 3467	१९ 3469	१४ 6,8,9	१६ 4689	१८॥ 4,8,9	२८ 5,व	२७॥ 3,5,व
पुन. 4	२१ 1356	२८ 1,5व	२२ 156व	२० 6,9	२६ 9	१२ 3689	८॥ 14678	२१ 147व	२१॥ 147व	२६ 1,3,5	२७ 1,3,5	२१ 1456	१२ 14567	८॥ 1567	१०॥ 14578	१६॥ 4,8,9	२६॥ 9	२६ 3,9
पुष्य 1 से 4	११ 14568	२६॥ 1,3,5	२१॥ 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 8,9	२१ 6,9	१७॥ 1367	११॥ 1478	२१॥ 1347	२६ 1,3,5	२५ 1345	१३ 13568	४॥ 145678	१४ 13567	१८॥ 1457	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७ 9
श्ले. 1 से 4	२५॥ 1,3,5	१२ 1568	१७॥ 1,5,8	१५ 3,8,9	२०॥ 6,9	२६ 9	२३ 1,4,7	१६ 1367	७॥ 3678	१३ 4568	१३ 4568	२६ 1,4,5	१७॥ 1457	२० 1357	११ 14567	१८ 4,6,9	२१ 6,9	१३ 6,8,9
मघा 1 से 4	२४॥ 1,3,5	११॥ 13568	१६॥ 1358व	२२॥ 3,8व	२६ 3,6व	३३ व	२५ 9,व	१९॥ 6,9व	८॥ 689व	३॥ 15678	४॥ 15678	१८॥ 1,5,7	२४॥ 1,5,व	२५॥ 1,5,व	१८॥ 156व	१९ 3,6,7	२० 3,6,7	१३॥ 6,7,8
पू.फा. 1 से 4	१०॥ 1568	२५॥ 135व	१८॥ 156व	२४ 3,6व	२३॥ 3,8व	२५॥ 3,6व	२० 6,9व	१७॥ 8,9,व	२४ 4,9व	१९ 1,5,7	१८॥ 1,5,7	४॥ 15678	११ 1568	१९॥ 156व	२४॥ 135व	२५ 3,7	१७॥ 3,7,8	२६ 3,7
उ.फा. 1	१७ 13456	२५॥ 1,3,5	१६॥ 13456	२२॥ 3,4,6	३१॥ 3,व	१७॥ 3,6,8	९॥ 3689	२५ 9,व	२५॥ 9,व	२० 1,5,7	२० 1,5,7	११॥ 1567	१७॥ 1356	११ 3568	१५॥ 358व	१६ 3478	२६॥ 3,7	२६ 3,7
उ.फा. 2,3,4	१६॥ 1246	२५॥ 1,2,3	१७ 1246	१८ 456व	२७॥ 3,5व	१३॥ 568व	१४ 3568	२९॥ 5	२९॥ 5	२४॥ 9,व	२५ 9,व	१७ 3,6,9	१६॥ 1367	१०॥ 3678	१४॥ 1378	१७॥ 3,5,8	२८ 3,5व	२७॥ 3,5,व
हस्त 1 से 4	२० 1246	२६॥ 1,2,3	१८॥ 1236	२० 3456	२६ 3,5व	१३॥ 3568	१५ 3568	२७ 3,5	२८॥ 5	२४ 9,व	२४ 9,व	१९ 4,6,9	१९ 1467	८॥ 34678	१३॥ 1378	१६॥ 3458	२६॥ 3,5व	२७॥ 3,5,व
चित्रा 1,2	२० 1,2,8	१९ 1246	२६॥ 1,2,3	२८॥ 3,5व	११ 3568	२५ 345व	२७ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	१७॥ 3,6,9	१९ 6,9,व	१५॥ 4,8,9	१६ 1478	२४ 1,4,7	१६॥ 1467	१९॥ 3456	१० 34568	१९॥ 3456

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

वर-कन्या मेलापक सारिणी – (भाग-४)

कन्या नक्षत्र ↓ / वर/नक्षत्र →		तुला			बृश्चिक			धनु			मकर			कुम्भ			मीन		
		चित्रा 3,4	स्वा. 1 से 4	विशा 1,2,3	विशा 4	अनु 1 से 4	ज्ये 1 से 4	मूल 1 से 4	पू.षा. 1 से 4	उ.षा. 1 चरण	उ.षा. 2,3,4	श्रव 1 से 4	धनि 1,2	धनि 3,4	शत 1 से 4	पू.भा. 1,2,3	पू.भा. 4	उ.भा. 1 से 4	रेव 1 से 4
तुला	चित्रा 3,4	२८ 8	२७ 4,6	३४ 3	२३॥ 2,3व	६ 2348व	२१ 234व	२७॥ 3,4,5	१४ 3568	२२ 3,5,6	२५ 3,6,व	२७ 6,व	२३॥ 4,8,व	१८॥ 4,8,9	२६ 4,9	१९ 3469	१२ 4567	३ 345678	१२ 34567
	स्वा. 1 से 4	२८ 4,6	२८ 8	२० 4,6,8	१० 248व	२१॥ 2,3व	१६॥ 236व	२३ 3,5,6	२७ 3,5	१९ 3,5,8	२२ 3,8,व	२३ 3,8,व	२७ 4,6	२१ 4,6,9	२० 4,6,9	२५ 4,9	१९ 457,व	१९॥ 357,व	१२ 3578
	विशा 1,2,3	३४॥ 3	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8व	१६ 246व	२१॥ 234व	२७॥ 3,4,5	२२ 3,5,6	१४ 3568	१७ 368व	१७॥ 368व	३०॥ 3,4,व	२५ 3,4,9	२६ 4,9	२० 4,6,9	१४ 4567	१३॥ 4567	४ 45678
बृश्चिक	विशा 4	२३ 123व	७ 12468व	१६॥ 128व	२८ 8	२७॥ 4,6	३१॥ 3,4	२२ 1234	१७॥ 1362व	९ 12368	१२॥ 13568	१२॥ 13568	२५ 1345	२४ 1345	२६ 145,व	२० 1456	१९॥ 4,6,9	१८॥ 4,6,9	९॥ 4689
	अनु. 1 से 4	६॥ 12व68	२२ 123व	१६ 1246	२८ 4,6	२८ 8	३१ 6	१५ 12346	१३॥ 1238व	२२ 123व	२५ 1,3,5	२६ 1,3,5	१२ 13568	११ 1358	२१ 1356	२४॥ 145व	२४ 4,9	१८॥ 8,9	२७॥ 9
	ज्ये. 1 से 4	१९॥ 1234	१५ 126व	१९॥ 1234	३१॥ 3,4	३० 6	२८ 8	१४॥ 1248	१७॥ 1236	१७॥ 1व236	२० 1356	२० 1356	२५ 1,3,5	२४ 1345व	१८ 1358	१० 13568	९॥ 3689	२१॥ 6,9	२१ 6,9
धनु	मूल 1 से 4	२६ 1,4,5	२१ 1356	२६ 1,4,5	२३ 124व	१५॥ 1246	१५ 1248	२८ 8	२८ 4,6	२६॥ 3,6	१५॥ 1236	१५॥ 1236	२०॥ 1234	२८॥ 1,3,4	२१॥ 1,3,8	१४॥ 1468	१६॥ 3468	२५ 6,व	२७ 6,व
	पू.षा. 1 से 4	१३ 1568	२७ 1,3,5	२१ 1356	१८ 246व	१५॥ 238व	१८ 246व	२८ 4,6	२८ 8	३४ -	२३ 124व	२३॥ 1,2,व	५॥ 1268	१४॥ 1468	२३॥ 1,4,6	२८॥ 1,4	३०॥ 4,व	२३॥ 8,व	३१ 3,व
	उ.षा. 1	२१ 1,5,6	१९ 1,5,8	१३ 1568	९॥ 268व	२४ 2,3व	१८॥ 2,3,6	२६॥ 3,4,6	३४ -	२८ 8	१६॥ 128व	१५ 1248व	१५॥ 1236व	२३॥ 1,3,6	२३॥ 1,3,6	२९॥ 1,3,4	३१ 3,व	३१ 3,व	२३ 3,8,व
मकर	उ.षा. 2,3,4	२४ 1,3,6	२२॥ 1,3,8	१५॥ 1368	१३ 4568	२७ 4,5	२१ 4,5,6	१६ 246व	२४ 2,4व	१७॥ 2,8व	२८ 8	२६ 4,8	२६॥ 4,6	१७॥ 126व	१७॥ 126व	२३॥ 1234	३०॥ 3,4	३१ 3,4	२२॥ 3,4,8
	श्रव 1234	२७ 146व	२२॥ 148व	१७॥ 1468	१४ 3568	२७ 3,4,5	२२ 3456	१७॥ 246व	२३॥ 2,3व	१५ 248व	२५ 4,8	२८ 8	२८ 4,6	१९ 1246	१८ 1246	२१॥ 124व	२८॥ 3,4	२९॥ 3,4	२२॥ 3,4,8
	धनि 1,2	२३ 148व	२४॥ 146व	२९ 1,4व	२६ 3,4,5	१२ 4568	२६ 3,4,5	२१ 234व	७॥ 2468व	१६ 2346	२७ 3,4,6	२७॥ 4,6	२८ 8	१८॥ 128व	२४ 124व	२० 126व	२६॥ 3,6	१५॥ 4,6,8	२२॥ 3,4,6
कुम्भ	धनि 3,4	१८॥ 4,8,9	२० 4,6,9	२५ 3,4,9	२५ 4,5व	११ 4568	२५ 4,5व	२९॥ 3,4	१५॥ 3468	२४॥ 3,6	१८ 236व	१९ 246व	२० 2,8,व	२८ 8	३३ 4	२८॥ 3,6	१८ 236व	७ 2468व	१४॥ 2468व
	शत 1 से 4	२६ 4,9	१९॥ 4,6,9	२६ 4,9	२६॥ 4,5व	२१ 356व	१९ 358व	२२॥ 3,4,8	२४॥ 3,4,6	२४॥ 3,4,6	१८॥ 236व	१८॥ 236व	२५ 2,4,व	३३ 4	२८ 8	१९॥ 4,6,8	८॥ 2468व	१७॥ 236व	१६ 236व
	पू.भा. 1,2,3	१९ 3469	२६ 4,9	२० 4,6,9	२०॥ 456व	२६॥ 4,5व	११ 4568व	१५ 3468	२९॥ 3,4	३०॥ 3,4	२४॥ 234व	२३॥ 234व	२०॥ 236व	२९ 3,6	१९ 4,6,8	२८ 8	१७॥ 2,8,व	२२॥ 2,4,व	२०॥ 234व
मीन	पू.भा. 4	१२ 14567	१९॥ 1457	१३॥ 14567	१९॥ 4,6,9	२५ 4,9	९ 4689	१५॥ 1468	२९ 134व	३० 1,3व	२९॥ 1,3,4	२८॥ 1,3,4	२५॥ 1,3,6	१७ 1236व	८ 12468	१७ 128व	२८ 8	३३ 4	३०॥ 3,4
	उ.भा. 1 से 4	३ 145678	१९॥ 1357	१२॥ 14567	१८॥ 4,6,9	१९॥ 8,9	२१॥ 6,9	२४॥ 136व	२२॥ 1,8व	३० 134व	२९॥ 1,3,4	२९॥ 1,3,4	१४॥ 1468	५॥ 12468	१६॥ 1236व	२२ 124व	३३ 4	२८ 8	३५ -
	रेव 1 से 4	१३ 14567	११ 1578व	४॥ 145678	१०॥ 4689	२७॥ 9	२२॥ 6,9	२७ 146व	२९॥ 1,3व	२१॥ 138व	२१ 1348	२१॥ 1348	२३ 1346	१४॥ 1246व	१६॥ 1236व	१८॥ 124व	३० 3,4	३४ -	२८ 8

नोट–गुणों वाली संख्या (२, ३, ५) के नीचे उसी कोष्टक में दोष (1, 2, 3) की Figures में लिखे गए हैं। वर्ण दोष की जगह 1, द्विद्वादश दोष की जगह (2), तारादोष की जगह 3, योनिवैर की जगह 4, राशि मैत्री दोष की जगह 5, गणदोष की जगह 6, षडाष्टक की जगह 7, नाड़ी दोष की जगह 8, नवपंचम की जगह 9 और वश्य दोष को 'व' से अंकित किया गया है।

तिथि, नक्षत्रादि गण्डान्त नक्षत्रों का विचार

अश्विनी नक्षत्र–मेष राशि एवं केतु के इस नक्षत्र में उत्पन्न हुए बच्चे का जीवन प्रायः संघर्षशील होता है। इस नक्षत्र में **प्रथम चरण** में जन्म होने से पिता के लिए कष्टकारी, **दूसरे चरण** में फिजूलखर्ची, **तीसरे चरण** में भ्रमणशील तथा **चतुर्थ नक्षत्र** में कृश शरीर (अपने शरीर के लिए) कष्ट रहता है।

आश्लेषा नक्षत्र–कर्क राशि एवं बुध के नक्षत्र के जातक प्रायः चंचल एवं चतुर बुद्धि वाले तथा परिवर्तनशील प्रकृति के होते हैं। **प्रथम चरण** में जन्म हो तो विशेष दोष नहीं, **दूसरे चरण** में पैतृक धन की हानि, **तीसरे चरण** में माता-पिता के लिए गण्डान्त शूल तथा **चतुर्थ चरण** में पिता के लिए अनिष्टकारी है–

आश्लेषाद्ये न गण्डं स्यातंधनगण्डं द्वितीयके। तृतीये मातृगण्डं तु पितृगण्डं चतुर्थके॥

मघा नक्षत्र–सूर्य राशि और केतु के नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्पष्टवादी, शीघ्र क्रुद्ध होने वाले, उद्यमी और धनवान होते हैं। **प्रथम चरण** में उत्पन्न हो तो माता-पिता को कष्ट या मातृ पक्ष की हानि, **दूसरे चरण** में पिता को परेशानी, **तीसरे चरण** में जन्म हो तो शुभ फलदायक, **चतुर्थ चरण** में जन्म हो तो विद्या, धनादि के लिए शुभ होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र–मंगल की राशि (वृश्चिक) एवं बुध के नक्षत्र में उत्पन्न जातक सरल हृदय, तीक्ष्ण बुद्धि, धर्म परायण तथा उन्नति के कार्यों में अनेक बाधाओं से युक्त होते हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के **प्रथम पाद** (चरण) में उत्पन्न बच्चा ज्येष्ठ (बड़े) को अरिष्टकर, **दूसरे चरण** में पैदा हो तो छोटे भाई को नेष्ट, **तीसरे चरण** में पिता के लिए अरिष्टकर तथा यदि **चतुर्थ चरण** में उत्पन्न हो जातक स्वयं अपने एवं पिता के लिए अनिष्टकारी होता है।

ज्येष्ठाद्यपादेऽवज्रमाशुं हन्याद् द्वितीयपादे यदि तत्कानिष्ठम्।
तृतीयपादे पितरं निहन्ति चतुर्थे मृतमेति जातः॥

ज्येष्ठा नक्षत्र और मंगलवार के योग में उत्पन्न कन्या बड़े भाई के लिए अरिष्टकारक होती है।

अभुक्त मूल नक्षत्र–ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्तिम २ घटियाँ तथा मूल नक्षत्र के आरम्भ की २ घटियाँ–कुल चार घड़ियाँ **अभुक्त मूल** गण्ड नक्षत्र कहलाते हैं। इनमें उत्पन्न कन्या, पुत्र, पशु और नौकर कुल के लिए अनिष्टकारी होते हैं। इनमें उत्पन्न बच्चे को बिना शान्ति कराये न देखें।

अभुक्त मूं गठिका चतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलादि भवं हि नारदः।
जातं शिशुं तत्र परित्यजेत् वा मुखं पिताऽस्याष्ट समा न पश्येत्॥

अभुक्त मूल–नक्षत्रों की आद्यान्त घटियों के बारे में विद्वानाचार्यों में मतान्तर पाया जाता है। यथा-नारद के अनुसार ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र की चार घटियाँ, वशिष्ठ के अनुसार २ घड़ियाँ तथा बृहस्पति के मतानुसार केवल १-१ अभुक्त-मूल संज्ञक है। अभुक्तमूलोत्पन्न बालक यदि जीवित रहे, तो अपने वंश की वृद्धि करने वाला, धनवान् एवं सम्पत्तिवान होता है।

मूल नक्षत्र–केतु के नक्षत्र और गुरु की राशि (धनु) में उत्पन्न जातक धार्मिक रुचि वाला, उदार हृदय, मिलनसार, परोपकारी, धन-वाहनादि सुखों से युक्त होता है। चरण भेदानुसार मूल के **प्रथम चरण** में उत्पन्न जातक पिता की हानि करता है। **दूसरे चरण** में माता की हानि, **तीसरे चरण** में धन का नाश तथा **चौथा चरण** शुभ होता है। नक्षत्र की विधिपूर्वक शान्ति करवा लेने से अनिष्ट का भय नहीं रहता।

मूलाद्यपादे पितरं निहन्याद् द्वितीयके मातरमाशु हन्ति।
तृतीयजो वित्तविनाशकः स्यात् चतुर्थपादे समुपैति सौख्यम्॥

मूल नक्षत्र और रविवार दोनों के योग में उत्पन्न कन्या श्वसुर के लिए अनिष्टकारी होती है–

भौमवासरे योगेन ज्येष्ठाजा ज्येष्ठ सोदरम्॥ भानुवासरयोगेन मूलजा श्वसुरं हरेत्॥

मूल नक्षत्र फल का अन्य प्रकार

मूल नक्षत्र की सम्पूर्ण घटियों को १५ द्वारा भाग देकर १५ खण्ड बना लें। प्रत्येक खण्ड का फल इस प्रकार से होगा। **प्रथम भाग** हो तो पिता के लिए अनिष्टकर, **दूसरे में** चाचा की हानि, **तीसरे में** बहनोई की हानि, **चौथे में** पितामह (दादा) की हानि, **आठवें में** चाची के लिए अनिष्टकर, **नवमे में** सबके लिए अनिष्टकर, **दसवें अंश में** पशु का नाश, **ग्यारहवें में** नौकर का नाश होता है। **बारहवें अंश में** स्वयं जातक का नाश होता है। **तेरहवें अंश में** हो तो उसके ज्येष्ठ भाई का नाश, **चौदहवें अंश में** जातक की बहिन का अनिष्ट होता है। अगर **पन्द्रहवें में** हो तो नाना का नाश (अनिष्ट) होता है।

उदाहरणार्थ यदि मूल का सर्वर्क्ष योग ६४ घड़ी १८ पल है, तो इसमें १५ द्वारा भाग देने से लब्ध प्रथम भाग में ४ घड़ी, १७ पल हुए। मान लो कि जन्मकालीन भयात् २८।४५ है। ४।१७ घट्यादि को ९ से गुणा करने पर पता चला कि ३८।३३ पर नौवां खण्ड (भाग) समाप्त होकर ३८।४५ पर दसवां भाग पड़ता है। तदनुसार फल चौपाय आदि पशु के लिए अनिष्ट रहेगा।

रेवती नक्षत्र–बुध के नक्षत्र और गुरु की राशि (मीन) में उत्पन्न जातक सर्वप्रिय, विद्यावान, सुन्दर आकृति, तर्कशील एवं धनवान् होता है। रेवती के **प्रथम चरण** में जन्म हो तो राजा के समान वैभवशाली, **दूसरे में** मन्त्री के समान सुख साधनों से युक्त, **तीसरे में** जन्म होने से धनवान तथा **चतुर्थ में** जन्म होने से माता-पिता के लिए अरिष्टकारी होता है।

दिवाजातस्तु पितरं रात्रिजो जननी तथा। आत्मानं संध्यायोहन्ति नास्ति गण्डे विपर्ययः॥

मातृ-पितृ-भक्ति एवं श्राद्ध-तर्पण का महत्त्व

हमारी हिन्दू-संस्कृति में पुत्र के लिए अपने माता-पिता की सेवा एवं उनकी आज्ञा का पालन करना महत्त्वपूर्ण एवं सर्वश्रेष्ठ धर्म माना गया है। भगवती श्रुतिका कथन है-

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव। (तैति०१।२२।२)

'माता को देवता मानने वाला बने, पिता को देवता मानो, आचार्य को देवता समझो।'

किन्तु आजकल अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे एवं पाश्चात्य सभ्यता में पले हुए हमारे देशवासी इस महत्त्व को धीरे-धीरे गौण करते जा रहे हैं। पद्मपुराण के भूमिखण्ड में तो यहाँ तक लिखा है-

'जो पापात्मा पुत्र किसी अंग से हीन, दीन, वृद्ध, दुःखी तथा महान् रोग से पीड़ित माता-पिता को त्याग देता है, वह कीड़ों से भरे हुए दारुण नरक में पड़ता है। जो पुत्र कटु वचनों द्वारा माता-पिता की निन्दा करता है, वह पापी बाघ की योनि में जन्म लेता है तथा और भी बहुत दुःख उठाता है। जो पापात्मा पुत्र माता-पिता को प्रणाम नहीं करता, वह सहस्र युगों तक कुम्भीपाक नामक नरक में निवास करता है।'

दूसरी ओर माता-पिता की आज्ञा पालन एवं उनकी सेवा करने वालों की सद्‌गति एवं सुख प्राप्त करने के भी सहस्त्रों प्रमाण हमारे शास्त्रों से भरे पड़े हैं- **पिता धर्मः पिता स्वर्गः पिता ही परमं तपः।**

पितरि प्रीतिमापन्ने प्रीयन्ते सर्वदेवताः।।

पिता ही धर्म है, पिता ही स्वर्ग है और पिता निश्चय सर्वोकृष्ट तपस्या भी है। पिता के प्रसन्न हो जाने पर सम्पूर्ण देवता ही प्रसन्न हो जाते हैं। जिसकी सेवा और सद्‌गुणों से माता-पिता संतुष्ट रहते हैं, उस पुत्र को प्रतिदिन गंगा-स्नान का फल प्राप्त होता है। माता सर्वतीर्थमयी है और पिता सम्पूर्ण देवताओं का स्वरूप है, इसलिये सब प्रकार से यत्नपूर्वक माता-पिता की सेवा-पूजा करनी चाहिए।'

संत गोस्वामी तुलसीदास जी ने इस विषय में भगवान् शंकर की वाणी इस प्रकार अभिव्यक्त की है-

मातु पिता गुर प्रभु के बाणी। बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी।

माता-पिता की सेवा तो जीवन पर्यन्त करनी ही चाहिए, परन्तु उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके निमित्त श्राद्ध एवं तर्पण करना भी नितान्त आवश्यक परमधर्म है। आज के नवयुवक तो श्राद्ध-तर्पण को बिल्कुल ढकोसला समझने लगे हैं। कुछ लोग तो जानते हुए भी समयाभाव एवं विभिन्न परिस्थितियों के बहाने बनाकर श्राद्ध-तर्पण की अवहेलना करते हैं। ऐसे मनुष्य सचमुच बड़ी भूल कर रहे हैं।

पितरों के निमित्त किया हुआ तर्पण एवं श्राद्ध निश्चित रूप से उन्हें मिलता है, इसमें किसी तरह की भी शंका नहीं करनी चाहिए।

नाम-गोत्रों के सहारे विश्वदेव एवं अग्निष्वात आदि दिव्य पितर पितरों को हव्य-काव्य प्राप्ति करा देते हैं। श्रद्धा-भक्तिपूर्वक किए हुए श्राद्ध को पितर अवश्य ग्रहण करते हैं। मार्कण्डेय पुराण में पितरों की स्तुति करते हुए रुचि ने कहा है-

येषा हुतेऽग्नौ हविषा च तुप्ति-र्ये भँजते विप्रशरीरसंस्थाः।
ये पिण्डदानेन मुदं प्रयान्ति तुप्यन्तु तेऽस्मिन् पितरौऽन्नतोयैः।।
ये देवपूर्वाण्यतितुप्तिहेतो-रश्नन्ति कव्यानि शुभाहुतानि।
तृप्ताश्च ये भूतिसृजो भवन्ति तृप्यन्तु तेऽस्मिन् प्रणतोऽस्मि तेभ्यः।।

'जिन पितरों की तृप्ति अग्नि में हविष्य का हवन करने से होती है, जो ब्राह्मण के शरीर में स्थित होकर भोजन करते हैं और जो पिण्ड दान से प्रसन्न होते हैं, वे पितृगण इस (श्राद्ध) में (मेरे द्वारा दिए गए) अन्न-जल से तृप्त हों। जो पितर परम तृप्ति प्राप्ति के लिए अग्नि में हवन किए गए देवान्नस्वरूप शुभ कव्य का भोजन करते हैं और जो तृप्त होकर ऐश्वर्य प्रदान करते हैं, वे सभी इस (श्राद्ध) में तृप्त हों। मैं उन्हें नमस्कार करता हूँ।

हमारे ग्रन्थों में इस तरह के अधिकतर प्रमाण मिलते हैं। आजकल के युग में भी इन बातों को प्रमाणित करने की प्रत्यक्ष घटनाएँ प्रायः घटित होती रहती हैं।

श्रद्धापूर्वक किए जाने के कारण ही इसका नाम 'श्राद्ध' है। श्राद्ध में संस्कृत व्यंजनादि पकवानों दूध, दही, घी, खीर आदि के साथ श्रद्धापूर्वक देने के कारण ही इसका नाम 'श्राद्ध' पड़ा है। श्रद्धापूर्वक श्राद्ध करने वाले के कुल में क्लेश नहीं आता। श्राद्ध न करने से होने वाली हानि के विषय में हमारे ग्रन्थ कहते हैं-

न सन्ति पितरश्चेति कृत्वा मनसि वर्तते। श्राद्धं न कुरुते यस्तु तस्य रक्तं पिवन्ति ते।।

जो यह समझ कर कि 'पितर हैं ही कहाँ'-श्राद्ध नहीं करता, पितर लोग लाचार होकर उसका रक्त पान करते हैं।

श्राद्ध-तर्पण करने की महत्ता एवं आवश्यकता की विवेचना कूर्मपुराण में भी मिलती है-

जलेनापि च न श्राद्धः शाकेनापि करोति यः। अमायां पितरस्तस्य शापं दत्त्वा प्रयान्ति च।।

'जो उचित तिथि पर जल से अथवा शाक से भी श्राद्ध नहीं करता, उसके पितर अमावस्या के दिन उसे शाप देकर वापिस लौट जाते हैं।'

श्राद्धात् परतरं नास्ति श्रेयस्करमुदाहृतम्। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन श्राद्धं कुर्याद् विचक्षणः।।

'श्राद्ध से बढ़कर और कोई कल्याण कर वस्तु है ही नहीं, इसलिए चतुर मनुष्य को सम्पूर्ण प्रयत्न पूर्वक श्राद्ध का अनुष्ठान करना चाहिए। महर्षि याज्ञवल्क्य भी कहते हैं-

आयु प्रज्ञां धनं विद्यां स्वर्गं मोक्षं सुखानि च। प्रयच्छन्ति तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः।।

मनुष्यों के पितर लोग श्राद्ध से तृप्त होकर आयु, प्रज्ञा, धन, विद्या, स्वर्ग, मोक्ष, राज्य एवं अन्य सभी सुख भी देते हैं।

मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्री राम ने वनवास-काल में भी अपने पिता दशरथ जी के लिए श्राद्ध एवं तर्पण किया था। वन में उनके पास फल-फूल के अतिरिक्त कुछ नहीं था। अतः उन्होंने पिता जी से उन्हें फल-फूल देते हुए प्रार्थना की कि 'आप इन फल-फूलों से ही संतुष्ट होवें।' मार्कण्डेयपुराण में लिखा है-

तस्माच्छ्राद्धं नरो भक्तया शाकैरपि यथाविधि। कुर्वीत कुर्वतः श्राद्धं कुले कश्चिन्न सीदति।।

मनुष्य के पास यदि कुछ भी न हो तो केवल शाक से ही विधिपूर्वक श्राद्ध करने वाले के कुल में कोई क्लेश नहीं पाता। विष्णुपुराण में यहाँ तक आदेश है-

न मेऽस्ति वित्तं न धनं च नान्यच्छ्राद्धोपयोग्यं स्वपितॄन् नतोऽस्मि।
तृप्यन्तु भक्तया पितरो मयैतौ कृतौ भुजौ वर्त्मनि मारुतस्य।।

'श्रद्धालु को सभी वस्तुओं के अभाव में वन में जाकर अपनी दोनों भुजाओं को ऊपर उठाकर कह देना चाहिए कि मेरे पास श्राद्ध के योग्य न धन है और न दूसरी वस्तु, अतः मैं अपने पितरों को प्रणाम करता हूँ। वे मेरी भक्ति से ही तृप्ति लाभ करें।'

त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः। त्रीणि चात्र प्रशंसन्ति सत्यमक्रोधमार्जवम्।।

अर्थात् श्राद्ध में दौहित्र (लड़की का पुत्र-नाती), कुतप वेला (मध्याह्नकाल) में लगभग १२-३० से १ बजे का समय) तथा तिल-ये तीन अत्यन्त पवित्र है। इसी प्रकार श्राद्धकर्ता आदि को भी चाहिए कि वे सत्य, अक्रोध एवं सरलता (छलछद्म का अभाव) का अवश्य पालन करें। इन्हीं सबसे पितरों की संतुष्टि एवं अक्षय तृप्ति होती है और श्रद्धाकर्ता को भी पूरा फल मिलता है।

श्राद्ध में ब्राह्मण-भोजन के समय पाठ किये जाने वाले सूक्त

रक्षोघ्न सूक्त

कृणुष्व पाजः प्रसितिं न पृथ्वीं याहि राजेवामवाँ२ इभेन।
तृष्वीमनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्ताऽसि विध्य रक्षसस्तपिष्ठैः।।
तव भ्रमास आशुया पतन्त्यनुस्पृश धृषता शोशुचानः।
तपूँ ष्यग्ने जुह्वा पतङ्गानसन्दितो वि सृज विष्वगुल्काः।।
प्रति स्पशो वि सृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्धः।
यो नो दूरे अघशँ सो यो अन्त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरा दधर्षीत्।।
उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ२ ओषतात्तिग्महेते।
यो नो अरातिँ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम्।।
ऊर्ध्वो भव प्रति विध्याध्यस्मदाविष्कृणुष्व दैव्यान्यग्ने।
अव स्थिरा तनुहि यातुजूनां जामिमजामिं प्र मृणीहि शत्रून्।।
अग्नेष्ट्वा तेजसा सादयामि।। (शु. यजु. १३।९-१३)

पितृसूक्त

उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुरवृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु।।
अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः।
तेषां वयँ सुमतौ यज्ञियानामपि भद्रे सौमनसे स्याम।।
ये नः पूर्वे पितरः सोम्यासोऽनूहिरे सोमपीथं वसिष्ठाः।
तेभिर्यमः सँ रराणो हवीँ ष्युशन्नुशद्भिः प्रतिकाममत्तु।।
त्वँ सोम प्र चिकितो मनीषा त्वँ रजिष्ठमनु नेषि पन्थाम्।
तव प्रणीती पितरो न इन्दो देवेषु रत्नमभजन्त धीराः।।
त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः।
वन्वन्नवातः परिधीँ२ रपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः।।
त्वँ सोम पितृभिः संविदानोऽनु द्यावापृथिवी आ ततन्थ।
तस्मै त इन्दो हविषा विधेम वयँ स्याम पतयो रयीणाम्।।
बर्हिषदः पितर ऊत्यर्वागिमा वो हव्या चकृमा जुषध्वम्।
त आ गतावसा शन्तमेनाथा नः शं योररपो दधात।।
आऽहं पितॄन्त्सुविदत्राँ२ अवित्सि नपातं च विक्रमणं च विष्णोः।
बर्हिषदो ये स्वधया सुतस्य भजन्त पित्वस्त इहागमिष्ठाः।।
उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु।
त आ गमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।
आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः।
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान्।
अग्निष्वात्ताः पितर एह गच्छत सदः सदः सदत सुप्रणीतयः।
अत्ता हवीँ षि प्रयतानि बर्हिष्यथा रयिँ सर्ववीरं दधातन।।
ये अग्निष्वात्ता ये अनग्निष्वात्ता मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते।
तेभ्यः स्वराडसुनीतिमेतां यथावशं तन्वं कल्पयाति।।
अग्निष्वात्तानृतुमतो हवामहे नाराशँ से सोमपीथं य आशुः।
ते नो विप्रासः सुहवा भवन्तु वयँ स्याम पतयो रयीणाम्।।

पितृस्तोत्र

अर्चितानाममूर्त्तानां पितृणां दीप्ततेजसाम्।
नमस्यामि सदा तेषां ध्यानिनां दिव्यचक्षुषाम्।।
इन्द्रादीनां च नेतारो दक्षमारीचयोस्तथा।
सप्तर्षीणां तथान्येषां तान् नमस्यामि कामदान्।।
मन्वादीनां मुनीन्द्राणां सूर्याचन्द्रमसोस्तथा।
तान् नमस्याम्यहं सर्वान् पितॄनप्सूदधावपि।।
नक्षत्राणां ग्रहाणां च वाय्वग्न्योर्नभसस्तथा।
द्यावापृथिव्योश्च तथा नमस्यामि कृताञ्जलिः।।
देवर्षीणां जनितॄंश्च सर्वलोकनमस्कृतान्।
अक्षय्यस्य सदा दातॄन् नमस्येऽहं कृताञ्जलिः।।
प्रजापतेः कश्यपाय सोमाय वरुणाय च।
योगेश्वरेभ्यश्च सदा नमस्यामि कृताञ्जलिः।।
नमो गणेभ्यः सप्तभ्यस्तथा लोकेषु सप्तसु।
स्वयम्भुवे नमस्यामि ब्रह्मणे योगचक्षुषे।।
सोमाधारान् पितृगणान् योगमूर्त्तिधरांस्तथा।
नमस्यामि तथा सोमं पितरं जगतामहम्।।
अग्निरूपांस्तथैवान्यान् नमस्यामि पितॄनहम्।
अग्नीषोममयं विश्वं यत एतदशेषतः।।
ये तु तेजसि ये चैते सोमसूर्याग्निमूर्तयः।
जगत्स्वरूपिणश्चैव तथा ब्रह्मस्वरूपिणः।।
तेभ्योऽखिलेभ्यो योगिभ्यः पितृभ्यो यतमानसः।
नमो नमो नमस्ते मे प्रसीदन्तु स्वधाभुजः।।

हिन्दी रूपान्तर—रुचि बोले—जो सबके द्वारा पूजित, अमूर्त, अत्यन्त तेजस्वी, ध्यानी तथा दिव्यदृष्टिसम्पन्न हैं, उन पितरों को मैं सदा नमस्कार करता हूँ। जो इन्द्र आदि देवताओं, दक्ष, मारीच, सप्तर्षियों तथा दूसरों के भी नेता हैं, कामना की पूर्ति करने वाले उन पितरों को मैं प्रणाम करता हूँ। जो मनु आदि राजर्षियों, मुनीश्वरों तथा सूर्य और चन्द्रमा के भी नायक हैं, उन समस्त पितरों को मैं जल और समुद्र में भी नमस्कार करता हूँ। नक्षत्रों, ग्रहों, वायु, अग्नि, आकाश और द्युलोक तथा पृथ्वी के भी जो नेता हैं, उन पितरों को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। जो देवर्षियों के जन्मदाता, समस्त लोकों द्वारा वन्दित तथा सदा अक्षय फलके दाता हैं, उन पितरों को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। प्रजापति, कश्यप, सोम, वरुण तथा योगेश्वरों के रूप में स्थित पितरों को सदा हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ। सातों लोकों में स्थित सात पितृगणों को नमस्कार है। मैं योगदृष्टिसम्पन्न स्वयम्भू ब्रह्माजी को प्रणाम करता हूँ। चन्द्रमा के आधार पर प्रतिष्ठित तथा योगमूर्तिधारी पितृगणों को मैं प्रणाम करता हूँ। साथ ही सम्पूर्ण जगत् के पिता सोम को नमस्कार करता हूँ तथा अग्निस्वरूप अन्य पितरों को भी प्रणाम करता हूँ, क्योंकि यह सम्पूर्ण जगत् अग्नि और सोममय है। जो पितर तेज में स्थित हैं, जो ये चन्द्रमा, सूर्य और अग्नि के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं तथा जो जगत्स्वरूप एवं ब्रह्मस्वरूप हैं, उन सम्पूर्ण योगी पितरों को मैं एकाग्रचित होकर प्रणाम करता हूँ। उन्हें बारंबार नमस्कार है। वे स्वधाभोजी पितर मुझ पर प्रसन्न हों।

पितरों ने कहा—'वत्स! जो मनुष्य इस स्तोत्र से भक्तिपूर्वक हमारी स्तुति करेगा, उसके ऊपर सन्तुष्ट होकर हम लोग उसे मनोवांछित भोग तथा उत्तम आत्मज्ञान प्रदान करेंगे। जो नीरोग शरीर, धन और पुत्र-पौत्र आदि की इच्छा करता हो, वह सदा इस स्तोत्र से हम लोगों की स्तुति करें। यह स्तोत्र हम लोगों की प्रसन्नता बढ़ाने वाला है। जो श्राद्ध में भोजन करने वाले श्रेष्ठ ब्राह्मणों के सामने खड़ा हो भक्तिपूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करेगा, उसके यहाँ स्तोत्रश्रवण के प्रेम से हम निश्चय ही उपस्थित होंगे और हमारे लिए किया हुआ श्राद्ध निःसंदेह अक्षय होगा।

श्राद्ध कर्म (पितृकर्म) सम्बन्धी विशेष नियम

(1) श्राद्ध के द्वारा प्रसन्न हुए पितृगण मनुष्यों को पुत्र, धन, विद्या, आयु, आरोग्य, लौकिक सुख, मोक्ष तथा स्वर्ग आदि प्रदान करते हैं।

(भक्त्या तुष्यन्ति पितरस्तुष्टाः कामान्दिशन्ति ते। पुत्रं पौत्रं धनं धान्यं कामान्यान्मनसेच्छति।। भक्त्याचाराधितो दद्यान्नृणां प्रीतः पितामह।) (पद्मपुराण)

(2) शुक्ल पक्ष की अपेक्षा कृष्ण पक्ष और पूर्वाह्न की अपेक्षा अपराह्न श्राद्ध के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।

यथा चैवापरः पक्षः पूर्वपक्षाद्विशिष्यते। तथा श्राद्धस्य पूर्वाह्णादपराह्णो विशिष्यते।। (मनुस्मृति)

(3) पूर्वाह्न में, शुक्ल पक्ष में, रात्रि में, अपने जन्मदिन में और युग्म दिनों में श्राद्ध नहीं करना चाहिये।

पूर्वाह्णे शुक्लपक्षे च रात्रौ जन्मदिनेषु वा। युग्मेष्वहस्सु च श्राद्धं न च कुर्वीत पण्डितः।। (महाभारत)

(4) सायंकाल में श्राद्ध नहीं करना चाहिये। सायंकाल का समय राक्षसी बेला नाम से प्रसिद्ध है, जो सभी कार्यों में निन्दित है। **(मत्स्यपुराण; स्कन्दपुराण)**

सायाह्नस्त्रिमुहूर्त्तः स्याच्छ्राद्धं तत्र न कारयेत्। राक्षसी नाम सा वेला गर्हिता सर्वकर्मसु।।

(5) रात्रि में श्राद्ध नहीं करना चाहिये, उसे राक्षसी कहा गया है। दोनों सन्ध्याओं में तथा पूर्वाह्नकाल में भी श्राद्ध नहीं करना चाहिये।

रात्रौ श्राद्धं न कुर्वीत राक्षसी कीर्तिता हि सा। सन्ध्योरुभयोश्चैव सूर्ये चैवाचिरोदिते।। (मनुस्मृति)

(6) चतुर्दशी को श्राद्ध करने से कुप्रजा (निन्दित सन्तान) पैदा होती है। परन्तु जिसके पितर युद्ध में शस्त्र से मारे गये हों, वे चतुर्दशी को श्राद्ध करने से प्रसन्न होते हैं।

प्रतिपत्प्रभृतिष्वेतान् वर्जयित्वा चतुर्दशीम्। शस्त्रेण तु हता ये वै तेभ्यस्तत्र प्रदीयते।। (याज्ञवल्क्यस्मृति)

(7) चतुर्दशी को श्राद्ध नहीं करना चाहिये। जो चतुर्दशी को श्राद्ध करता है, उसके घर में नवयुवकों की मृत्यु होती है तथा श्राद्ध करने वाला स्वयं भी युद्ध का भागी होता है। (जिनकी मृत्यु शस्त्र से न होकर स्वाभाविक ही चतुर्दशी को हुई हो, उनका श्राद्ध दूसरे दिन (अमावस्या को) करना चाहिए) **(याज्ञवल्क्यसंहिता)**

(8) दिन के आठवें भाग (मुहूर्त्त)-में जब सूर्य का ताप घटने लगता है, उस समय का नाम 'कुतप' है। उसमें पितरों के लिए दिया हुआ दान अक्षय होता है।

दिवसस्याष्टमे भागे मन्दी भवति भास्करः। स कालः कुतपो ज्ञेयः पितॄणां दत्तमक्षयम्।। (वसिष्ठस्मृति)।

(9) मध्याह्नकाल, खड्गपात्र, नेपालकम्बल, चाँदी, कुश, तिल, गौ और दौहित्र-ये आठों भी 'कुतप' नाम से प्रसिद्ध हैं।

मध्याह्नखड्गपात्रं च तथा नेपालकम्बलः। रूप्यं दर्भास्तिला गावो दौहित्रश्चाष्टमः स्मृतः।। (मत्स्यपुराण)

(10) श्राद्ध में तीन वस्तुएँ अत्यन्त पवित्र हैं-दुहितापुत्र, कुतपकाल तथा तिल। श्राद्ध में तीन वस्तुएँ अत्यन्त प्रशंसनीय हैं-बाहर-भीतर की शुद्धि, क्रोध न करना तथा जल्दबाजी न करना।

त्रीणि श्राद्धे पवित्राणि दौहित्रः कुतपस्तिलाः। त्रीणि चात्र प्रशंसन्ति शौचमक्रोधमत्वराम्।। (मनुस्मृति)

(11) श्राद्ध एकान्त में, गुप्त रूप से करना चाहिये। पिण्डदान पर साधारण, नीच मनुष्यों की दृष्टि पड़ने पर पितरों को नहीं पहुँचता।

एकान्ते तु गृहे गुप्ते पितॄणां श्राद्धमिष्यते। नीचदृष्टया हतं तच्च पितॄन्नैवोपतिष्ठति।। तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्राद्धं गुप्तं च कारयेत्। पितॄणां तृप्तिदं प्रोक्तं स्वयमेव स्वयम्भुवा।। (पद्मपुराण)

(12) दूसरे की भूमि पर श्राद्ध नहीं करना चाहिए। जंगल, पर्वत, पुण्यतीर्थ और देवमन्दिर-ये दूसरे की भूमि में नहीं आते ; क्योंकि इन पर किसी का स्वामित्व नहीं होता।

पारक्ये भूमिभागे तु पितॄणां नैव निर्वपेत्। स्वामिभिस्तद् विहन्येत मोहाद्यत् क्रियते नरैः।। अटव्यः पर्वताः पुण्यास्तीर्थान्यायतनानि च। सर्वाण्यस्वामिकान्याहुर्न हि तेषु परिग्रहः।। (कूर्मपुराण)

(13) मनुष्य देवकार्य में तो ब्राह्मण की परीक्षा न करे, पर पितृकार्य में तो प्रयत्नपूर्वक ब्राह्मण की परीक्षा करे।

न ब्राह्मणं परीक्षेत दैवे कर्माणि धर्मवित्। पित्र्ये कर्मणि तुम्प्राप्ते परीक्षेत प्रयत्नतः।। (मनुस्मृति)

(14) श्राद्ध में पितरों की तृप्ति ब्राह्मणों के द्वारा ही होती है।

श्राद्धार्हान्ब्राह्मणांस्तेन सृजता पद्मयोनिना। (स्कन्दपुराण)

(15) श्राद्ध के अवसर पर ब्राह्मण को निमन्त्रित करना आवश्यक है। जो बिना ब्राह्मण के श्राद्ध करता है, उसके घर पितर भोजन नहीं करते तथा शाप देकर लौट जाते हैं। ब्राह्मणहीन श्राद्ध करने से मनुष्य महापापी होता है।

तस्माद्विप्रः प्रकर्तव्यो दाने श्राद्धे च पर्वसु। आदौ परीक्षयेद्विप्रं श्राद्धे दाने प्रकारयेत्। (पद्मपुराण)

(16) श्राद्ध के भोजन स्त्री को नहीं कराना चाहिये।

न भोजयेत् स्त्रियं श्राद्धे यद्यपि व्रतचारिणीम्। (बृहत्पराशरस्मृति)

(17) यदि श्राद्ध-भोजन करने वाले एक हजार ब्राह्मणों के सम्मुख एक भी योगी हो तो वह यजमान के सहित उन सबका उद्धार कर देता है।

सहस्रस्यापि विप्राणां योगी चेत्पुरतः स्थितः। सर्वान्भोक्तृंस्तारयति यजमानं तथा नृप।। (विष्णुपुराण)

(18) जिस श्राद्ध में दस लाख बिना पढ़े हुए ब्राह्मण भोजन करते हैं, वहाँ यदि वेदों का ज्ञाता एक ही ब्राह्मण भोजन करके सन्तुष्ट हो जाये तो उन दस लाख ब्राह्मणों के बराबर फल को देता है।

सहस्रं हि सहस्राणामनृचां यत्र भुञ्जते। एकस्ता-मन्त्रवित्प्रीतः सर्वानर्हति धर्मतः।। (मनुस्मृति)

(19) देवकार्य में दो और पितृकार्य में तीन अथवा दोनों में एक-एक ब्राह्मण भोजन कराना चाहिये। अत्यन्त धनी होने पर भी श्राद्ध कर्म में अधिक विस्तार नहीं करना चाहिये।

द्वौ दैवे.....श्राद्धे कुर्यान्न विस्तरम्। (श्रीमद्भागवत)

(20) नाना, मामा, भानजा, गुरु, श्वशुर, दौहित्र [illegible] इन दसों को श्राद्ध में भोजन कराना चाहिये।

मातामहं मातुलं च स्वस्रीयं श्वशुरं गुरुम्। दौहित्रं विट्पतिं बन्धुमृत्विग्याज्यौ च भोजयेत्।। (मनुस्मृति)

(21) जो श्राद्धकाल आने पर भी काम, क्रोध अथवा भय से, पाँच कोस के भीतर रहने वाले दामाद, भानजे तथा बहन को नहीं बुलाता और सदा दूसरों को ही भोजन कराता है, उसके श्राद्ध में पितर और देवता अन्न ग्रहण नहीं करते।

सम्प्राप्ते श्राद्धकालेऽपि पञ्चक्रोशान्तरे स्थितम्। जामातरं परित्यज्य....तस्य पितृघातसमं कृतम्।। (पद्मपुराण)

(22) अपना भानजा तथा भाई-बन्धु यदि मूर्ख भी हों तो भी श्राद्ध में उनका त्याग नहीं करना चाहिये। दौहित्रं योजयेच्छ्राद्धे पितृणां परितुष्टये।। (स्कन्दपुराण)

(23)श्राद्ध के निमन्त्रित ब्राह्मणों के बैठ जाने पर भोजन के निमित्त उपस्थित हुए भिक्षुक या ब्रह्मचारी को भी उनके इच्छानुसार भोजन कराना चाहिये। जिसके श्राद्ध में अतिथि भोजन नहीं करता, उसका श्राद्ध प्रशंसनीय नहीं होता। (कूर्मपुराण)

(24) श्राद्धकाल में आये हुए अतिथि का अवश्य सत्कार करे। उस समय अतिथि का सत्कार न करने से वह श्राद्ध कर्म के सम्पूर्ण फल को नष्ट कर देता है।

तस्मादभ्यर्चयेत्प्राप्तं श्राद्धकालेऽतिथिं बुधः।....नरेन्द्रापूजितोऽतिथिः।। (वराहपुराण)

(25) जिस श्राद्ध में तिलकी मात्रा अधिक रहती है, वह श्राद्ध अक्षय होता है।

वर्धमानतिलं श्राद्धमक्षयं मनुरब्रवीत। (महाभारत)

(26) जो सफेद तिलों से पितरों का तर्पण करता है, उसका किया हुआ तर्पण व्यर्थ होता है।

अकृष्णैर्यत्तिलैर्मोहात्तर्पयेत्पितृसञ्चयम्। भम्यां.....दानं नोपतिष्ठति कस्यचित्।। (पद्मपुराण)

(27) श्राद्ध में पहले अग्नि को ही भाग अर्पित किया जाता है। अग्नि में हवन करने के बाद जो पितरों के निमित पिण्डदान किया जाता है, उसे ब्रह्म राक्षस दूषित नहीं करते।

एतस्मात् कारणाच्चाग्नेः प्राक् तावद् दीयते नृप।।....धर्षयन्त्युत।। (महाभारत)

(28) सोने, चाँदी और ताँबे के पात्र पितरों के पात्र कहे जाते हैं। श्राद्ध में चाँदी की चर्चा और दर्शन भी पुण्यदायक है। चाँदी का समीप होना, दर्शन अथवा दान राक्षसों का विनाश करने वाला, यशोदायक तथा पितरों को तारने वाला होता है।

सौवर्णं राजतं ताम्रं पितृणां पात्रमुच्यते।। रजतस्य तथा किञ्चिद्दर्शनं पुण्यदायकम्।।(स्कन्दपुराण)

(29) पितरों के लिये चाँदी के पात्र से श्रद्धापूर्वक जलमात्र भी दिया जाये तो वह अक्षय तृप्तिकारक होता है। पितरों के लिये अर्घ्य, पिण्ड और भोजन के पात्र भी चाँदी के ही श्रेष्ठ माने गये हैं।

राजतैर्भाजनैरेषामथो वा राजतान्वितैः। वार्यपि श्रद्धया दत्तमक्षयायोपकल्पते।। (मनुस्मृति)

(30) [illegible] की अँगूठी धारण करके पितरों को तर्पण करता है, उसका सब तर्पण लाख गुना अधिक फल देने वाला होता है। यदि वह अनामिका अँगुली में सोने की अँगूठी पहनाकर तर्पण करे तो वह करोड़गुना अधिक फल देने वाला होता है।

रौप्यांगुलीयं तर्जन्यां धृत्वा यत्तर्पयेत्पितृन्। सर्वं च शतसाहस्रगुणं भवति नान्यथा। (पद्मपुराण)

(31) जो मनुष्य मैथुन तथा क्षौरकर्म करके देवताओं और पितरों को तर्पण करता है, वह जल रक्त के समान होता है तथा दाता नरकों में जाता है।

कृत्वा तु मैथुनं क्षौरं यो देवांस्तर्पयेत् पितॄन्। रुधिरं तद्भवेत्तोयं दाता च नरकं व्रजेत्।।(ब्रह्मवैवर्तपुराण)

(32) जो ब्राह्मणों के हाथ में नमक या व्यंजन परोसता है अथवा लोहे के पात्र से परोसता है, उस भोजन को राक्षस खाते हैं, पितर ग्रहण नहीं करते।

न दद्यात् तत्र हस्तेन प्रत्यक्षलवणं तथा। न चायसेन पात्रेण न चैवाश्रद्धया पुनः।।(ब्रह्मवैवर्तपुराण)

(33) एक हाथ से लाया गया जो अन्न (अन्नपात्र) ब्राह्मणों के आगे परोसा जाता है, उस अन्न को राक्षस छीन लेते हैं। ब्राह्मणों को दोनों हाथों से अन्न परोसा जाना चाहिए।

उभयोर्हस्तयोर्मुक्तं यदन्नमुपनीयते। तद्विप्रलुम्पन्त्यसुराः सहसा दुष्टचेतसः।। (मनुस्मृति)

(34) गोबर आदि से लिपे-पुते पवित्र तथा एकान्त स्थान में, जिसमें दक्षिण दिशा की ओर भूमि कुछ नीची हो और जहाँ पापी मनुष्यों की दृष्टि न पड़े, श्राद्ध करना चाहिये।

पराश्रते शुचौ देशे दक्षिणाप्रवणं तथा। (नारदपुराण)

(35) जो मनुष्य श्राद्ध के समय ब्राह्मणों को मिट्टी के पात्र में भोजन कराता है, वह मनुष्य तथा ब्राह्मण-दोनों घोर नरक में जाते हैं।

पात्रे तु मुण्मये यो वै श्राद्धे भोजयते पितृन्। स याति नरकं घोरं भोक्ता चैव पुरोधसः।।(औशनसस्मृति)

(36) सिर ढककर (पगड़ी आदि बाँधकर), दक्षिण की तरफ मुख करके और जूता पहनकर भोजन करने से वह अन्न राक्षसों को मिलता है, पितरों को नहीं।

यद्वेष्टितशिरा भुङ्क्ते यद् भुङ्क्ते दक्षिणामुखः। सोपानत्कश्च यद् भुङ्क्ते तद्वै रक्षांसि भुञ्जते।।(मनुस्मृति)

(37) जो अज्ञानी मनुष्य अपने घर श्राद्ध करके फिर दूसरे घर भोजन करता है, वह पाप का भागी होता है और उसे श्राद्ध का फल नहीं मिलता। (स्कन्दपुराण)

श्राद्धं कृत्वा परश्राद्धे योऽश्नीयाज्ञानवर्जितः।। दातुः श्राद्धफलं नास्ति भोक्ता किल्बिषभुग्भवेत्।

(38) ब्राह्मणों को श्रद्धापूर्वक गरम-गरम अन्न भोजन कराना चाहिये। परन्तु फल, फूल और पेय पदार्थों को ठण्डा ही देना चाहिये।

उष्णमन्नं द्विजातिभ्यः श्रद्धया विनिवेशयेत्।। अन्यत्र फलपुष्पेभ्यः पानकेभ्यश्च पण्डितः।(स्कन्दपुराण)

(39) जब तक अन्न गरम रहता है, जब तक ब्राह्मण मौन होकर भोजन करते हैं और जब तक वे भोज्य पदार्थों के गुणों का वर्णन नहीं करते, तब तक पितर लोग भोजन करते हैं।

यावदुष्णं भवत्यन्नं यावदश्नन्ति वाग्यताः। पितरस्तावदश्नन्ति यावन्नोक्ता हविर्गुणाः।।(मनुस्मृति)

पितृतर्पण एवं श्राद्धादि संक्षिप्त विधि

—पं. विवेक शर्मा

अपने दिवंगत पूर्वजों अर्थात् पितरों के निमित्त पुण्य-पर्व तिथि पर तिल, गंगाजल, जल, पुष्प से गोत्रोच्चारण सहित तिलों सहित जलांजली एवं तर्पण तथा ब्राह्मण द्वारा संकल्पपूर्वक पूजन करवाकर अन्न, वस्त्र, फलादि द्रव्यों एवं दक्षिणा सहित यथाशक्ति श्रद्धा के साथ दान देना ही श्राद्ध कहलाता है। **श्रद्धया दीयते तत् श्राद्धं प्रकीर्तितम्।। ब्रह्मपुराण** के अनुसार देश काल और पात्र में श्रद्धा एवं विधिपूर्वक पितरों के उद्देश्य से जो अन्न/वस्त्रादि द्रव्य ब्राह्मणों को दिए जाते हैं ; उसे श्राद्ध कहते हैं–

देशकाले च पात्रे च श्रद्धया विधिना च यत्। पितृनुदि्दश्य विप्रेभ्यो श्राद्धमुदाहतम्।।

वैसे तो देवर्षि-पितृतर्पण एवं श्राद्धकर्म किसी सुयोग्य कर्मकाण्डी पण्डित के द्वारा ही करवाने का विधान है, परन्तु पाठकों की सुविधा हेतु

संक्षिप्त पितृतर्पण एवं श्राद्ध विधि–

अपने दिवंगत माता/पिता या दादा/दादी का श्राद्ध पितृपक्ष (आश्विन कृष्ण पक्ष) में उनकी मृत्यु-तिथ्यनुसार करना चाहिए। पितृपक्ष में अपने मृत आत्मीय, प्राणी के सम्बन्ध में किए जाने वाले श्राद्ध **पार्वण श्राद्ध** कहलाते हैं। श्राद्ध-कर्ता को अपने दाएँ हाथ में कुशानिर्मित [A]पवित्री (उसके अभाव में सोने या चाँदी की अगूँठी) धारण कर लेनी चाहिए। तथा पण्डित जी से मंत्रपूर्वक (चन्दन का) तिलक भी लगवा लेना चाहिए। [B]श्राद्धकर्त्ता श्राद्धतिथि वाले दिन स्नान, संध्यादि नित्यकर्म से निवृत्त होकर पहले शुद्ध जल द्वारा **ॐ केशवाय नमः** आदि तीन मंत्रों सहित आचमन करके पवित्रीकरण आदि मंत्र पढ़कर कुशासन व अन्य द्रव्यों पर गंगाजल मिश्रित जल के छींटे देवें। तदनन्तर कुशासन पर दक्षिणोन्मुखी मुख करके मौन होकर बैठें और यज्ञोपवीत अपसव्य (दाएँ कंधे) रखें तथा दक्षिण दिशा में ओर श्रद्धाभाव से कुशा स्थापित करें।

स्थापित कुशा पर किसी अन्य **कुशा मूल**[C] द्वारा शुद्ध जल, काले तिल मिश्रित व गंगाजलयुक्त शुद्ध जल के छींटे देकर अपने दिवंगत पितर का ध्यान करते हुए दोनों हाथ जोड़कर आगे लिखा आवाहन मंत्र पढ़ें–

आवाहन मंत्र– **आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिः देवयानैः।**
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्तु अस्मान्।। (यजु.)

–संकल्प-विधि–

हरिः ॐतत्सत् ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भारत खण्डे आर्यावर्तैक देशे पुण्यक्षेत्रे सूर्येदक्षिणायने मासोत्तमे मासे आश्विने मासे कृष्णपक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोत्पन्नः (गोत्रका नाम) अमुक नामऽहं (अपना नाम लेवें) श्रुति स्मृति पुराणोक्त फलावाप्तिकामः पितृशान्ति हेतवे ब्राह्मण भोजनं च दक्षिणा दान सहितं च करिष्ये। तथा दिवगंत पिता/आदि का गोत्र, नाम आदि को पढ़ते हुए पितृतीर्थ (अंगूठे और तर्जनी के मध्यभाग) या अर्घ्य द्वारा अपने पितरों के लिए (जल, गंगाजल व तिल सहित) अंजली दक्षिण दिशा में स्थापित कुशा पर प्रोक्षित कर मन्त्र पढ़ें–

(1) पिता के लिए तर्पण—**अमुकगोत्रः अस्मत् पिता अमुक शर्मा (पिता का नाम) वसुरूपः तृप्यताम् इदं सतिलं जलं** (गंगाजलं वा) **तस्मै स्वधा नमः।।** (३)-ऐसे तीन बार तिल सहित जलांजली देवें।

(2) दादा के लिए तर्पण—**अमुक गोत्रः अस्मत् पितामहः (दादा का नाम) अमुक शर्मा रूद्ररूपः तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गंगाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।।** ३ (तीन बार जल अंजली देवें।।)

(3) परदादा (प्रपितामह) के लिए तर्पण—**अमुक गोत्रः अस्मत् प्रपितामहः (परदादा का नाम) अमुक शर्मा आदित्यरूपः तृप्यताम् इदं सतिलं जलं (गङ्गाजलं वा) तस्मै स्वधा नमः।। (३) (तीन बार)**

नोट–(1) माता के लिए तर्पण हेतु **''अमुकगोत्रा अमुकी देवी** (माता का नाम) **वसुरूपा तृप्यताम्** इदं सतिलं **जलं तस्यै स्वधा नमः।।** (तीन बार तिलांजली देवें)

(2) **दादी के लिए,** (2) नंबर पर लिखा **रुद्ररूपः** के स्थान पर **रूद्ररूपा** शब्द पढ़ें। शेष तर्पण वाक्य मातृ सदृश ही होगा।

इसके बाद पुनः अपसव्य होकर जनेऊ को दाहिने कन्धे पर रखकर दक्षिणाभिमुख हों। तथा नीचे लिखे श्लोकों को पढ़कर पितृतीर्थ से जल-तिलांजली गिराएँ–

नरकेषु समस्तेषु यातनासु च ये स्थिताः। तेषामपि आयनायैतद्दीयते सलिलं मया।।
येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्य जन्मानि बान्धवाः।
ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभि वाञ्छति। (पद्मपुराण)
ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदार विवर्जिताः तेषां हि दत्तमक्षय्यमिदमस्तु तिलोकदम्।।
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षि पितृमानवाः। तृप्यन्तु पितरः सर्वे मातृमातामहादयः।।

फिर मन्त्रपूर्वक ताम्रपात्र में पुष्पाक्षत डालकर **सूर्यदेव** को अर्घ्य देवें–

एहि सूर्य ! सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते। अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर।।

सूर्यार्घ्य देकर प्रदक्षिणा करें तथा फिर दशों दिशाओं एवं उनके अधिष्ठातृ देवों को पुष्पाक्षत प्रोक्षित कर वन्दन करें–

(१) ॐ प्राच्यै नमः, ॐ इन्द्राय नमः। (२) ॐ आग्नेय्यै नमः, ॐ अग्नये नमः। (३) ॐ दक्षिणायै नमः; ॐ यमाय नमः। (४)-ॐ नैर्ऋत्यै नमः, ॐ निर्ऋतये नमः।'' (५) ॐ प्रतीच्यै नमः, ॐ वरूणाय नमः। (६)-ॐ वायव्यै नमः, ॐ वायवे नमः। (७)-ॐ उदीच्यै नमः, ॐ कुबेराय नमः, (८)-ॐ ऐशान्यै नमः, ॐ ईशानाय नमः। (९)-ॐ ऊर्ध्वायै नमः, ॐ ब्रह्मणे नमः। (10)-ॐ अधरायै नमः, ॐ अनन्ताय नमः।।

तदनन्तर बैठकर नीचे लिखे मंत्र पढ़कर एक-एक जलांजली दे।

ॐ ब्रह्मणे नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ ओषधिभ्यो नमः। ॐ वाचे

A. दो कुशों से बनाई हुई पवित्री दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली तथा तीन कुशों से बनाई गई पवित्री बाई अनामिका अंगुली में ''ॐ भूर्भुवः स्वः'' मंत्र पढ़कर धारण करें। पवित्रीधारण देव एवं पितृकार्यों में आवश्यक मानी जाती है।
B. देवकार्य या पितृ कार्यहेतु किसी कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा विधिवत् करवाना श्रेयस्कर होगा। C. कुशा–कुशा के अग्रभाग से देवताओं का, मध्य भाग से मनुष्यों का और मूल से पितरों का तर्पण करना चाहिए।

नमः। ॐ वाचस्पतये नमः। ॐ महद्भ्यो नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्भ्यो नमः। ॐ अपाम्पतये नमः। ॐ वरुणाय नमः।।

समर्पण–*निम्न वाक्य/वचन पढ़कर तर्पण कर्म श्रीभगवान् को समर्पित करें*–

अनेन यथाशक्ति कृतेन देवर्षि मनुष्य पितृ तर्पणाख्येन कर्मणा भगवान् **मम** पितृस्वरूपी जनार्दन वासुदेवः प्रीयतां न मम। ॐ तत्सद्-ब्रह्मार्पणमस्तु।। ॐ विष्णवे नमः।

क्षमा मंत्र– मंत्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर
यत्पूजितं तर्पितं च मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।

तत्पश्चात् अग्नि, गाय, कुक्कुर, काक, पिपीलिकादि हेतु मन्त्रपूर्वक बलि देने का विधान है–

अग्नि–हेतु आहुति देते समय निम्न मन्त्र पढ़ें–

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजं होतारं रत्नधातमम्॥ ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम। ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम॥ पुनः ॐ अग्नये। स्विष्टकृते स्वाहा इदमग्नये स्विष्टकृते न मम॥ ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम। ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा॥

(1) गोबलि–निम्न मंत्र जनेऊ सव्य (प्राकृत) भाव से गौओं के लिए बलि अर्पण करें–

ॐ सौर भेय्यः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः। प्रतिगृह्णन्तु मे ग्रासं गावः त्रैलोक्यमातरः। इदं गोभ्यो न मम॥

(2) श्वानबलि (कुत्ते के लिए) (संक्षेप में)–इदं श्वभ्यां न मम।

(3) कौओं के लिए–इदमन्नं वायसेभ्यो न मम।

(4) देवता आदि को–इदं अन्नं देवादिभ्यो न मम।

(5) चींटियों आदि के लिए–इदमन्नं पिपीलिकादिभ्यो, न मम।

इसके बाद पितरों के निमित्त **पितर गायत्री** मन्त्र का जप कम से कम 3 बार करना चाहिए–

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।
नमः स्वाहायै स्वधायै च नित्यमेव नमो नमः॥

पितृतर्पणादि के पश्चात् पूर्वोक्त विधिना संकल्पपूर्वक ब्राह्मण को पवित्र आसन पर **दक्षिणमुख बिठाकर** मौन भाव से अपने गृह की रसोई में तैयार किया गया **मिष्ठान्न सहित सात्विक भोजन आदर सहित खिलाना चाहिए।** भोजनोपरान्त पण्डित जी को वस्त्र, फल एवं दक्षिणा सहित विदा करना चाहिए। तत्पश्चात् परिवार के सदस्यों को भोजन ग्रहण करना चाहिए। श्राद्धकर्ता श्राद्ध वाले दिन गतपृष्ठों में दिए गए **पितर गायत्री मंत्र** का जप एवं **पितृस्तोत्र** का पाठ दक्षिणमुखी होकर करे तो विशेष कल्याणकारी होता है। यदि किसी कारण स्वयं न पढ़ सके, तो उसके निमित्त पण्डित जी से पढ़वा लेवें। उस दिन श्राद्धकर्ता, श्रीमद्भगवतगीता, रामायण, श्रीमद्भागवत आदि पूज्य एवं पौराणिक ग्रंथों का भी स्वाध्याय/पाठ करें। सारा दिन मनोरंजन आदि कृत्यों से परहेज़ करते हुए शुद्धाचरण रखें।

१२ राशियों का घाती चक्र

द्वादश राशि के प्रत्येक मनुष्य को घाती चक्र में दिए अनुसार प्रत्येक तिथि, वार नक्षत्र, लग्न, चंद्रमास घातक होते हैं। अतः मनुष्य को चाहिये कि वे अपना कोई भी इष्ट और शुभ कार्य घातक समय वा मुहूर्त्त पर आरम्भ न करें। नीचे दिया हुआ घात चक्र युद्ध, विवाद (शास्त्रार्थ) राज सेवा, वाहन, यात्रा, रोगादि कार्यों में देखना चाहिए। अर्थात् इन राशि वालों के लिए इन कार्यों में घात चन्द्र, वारादि शुभ नहीं और तीर्थ यात्रा, विवाहादि में घात चन्द्रादि का विचार न करें। विशेष फलादेश जानने के लिये पत्र व्यवहार करें।

राशयः	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घातमास	कार्तिक	मार्ग	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
घात तिथि	१-६-११	५-१०-१५	२-७-१२	२-७-१२	३-८-१३	५-१०-१५	४-९-१४	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	३-८-१३	५-१०-१५
घात वार	रवि	शनि	चन्द्र	बुध	शनि	शनि	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल	गुरु	शुक्र
घात नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शत.	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
घात योग	विष्कुम्भ	सुकर्मा	परिघ	धृति	प्रीति	सुकर्मा	अतिगंड	ब्रह्म	वैधृति	गंड	व्याघात	वज्र
घात करण	बव	शकुनि	कौलव	नाग	बालव	कौलव	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पाद
घात लग्न	१	२	४	७	१०	१२	६	८	९	११	३	५
घात प्रहर	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	प्रथम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	तृतीय	चतुर्थ
पु. घा. चंद्र	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृष	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
स्त्री घा. चंद्र	मेष	धनु	धनु	मिथुन	वृश्चिक	वृश्चिक	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	मेष

ग्रहों का नैसर्गिक मैत्री चक्र

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
मित्र	चंद्र मंगल गुरु	सूर्य बुध	सूर्य चंद्र गुरु	सूर्य शुक्र	सूर्य चंद्र मंगल	बुध शनि	बुध शुक्र	शुक्र बुध शनि	बुध गुरु
सम	बुध	मंगल गुरु शुक्र शनि	शुक्र शनि	मंगल गुरु शनि	शनि	मंगल गुरु	गुरु	गुरु केतु	मंग. राहु शुक्र
शत्रु	शुक्र शनि	०० ००	बुध राहु	चंद्र	बुध शुक्र	सूर्य चंद्र	सूर्य मंगल चंद्र	सूर्य चंद्र मंगल	सूर्य चंद्र शनि
उच्चांश	मेष १०	वृषे ३	म. २८	कं. १५	कर्क ५	मी. २७	तु. २०	वृ. १५	
नीचांश	तु. १०	वृश्चि ३	क. २८	मी १५	म. ५	कं. २७	मे. २०°	वृ. १५°	

नक्षत्र, राशि, वर्ण, योनि आदि ज्ञान चक्र

नक्षत्र	चरणाक्षर	राशि	वश्य	योनि	महावैर योनि	राशि स्वामी	गण	नाड़ी	तत्त्व हंसका	नाम (संज्ञा)	नक्षत्र देवता	कितने तारे	पंचशला का वेध
अश्विनी	चू. चे. चो. ला.	मेष	चतुष्पद	अश्व	महिष	मंगल	देव	आदि	अग्नि	क्षिप्र	अश्वि कु.	३	पू. फा.
भरणी	ली. लू. ले. लो.	मेष	चतुष्पद	गज	सिंह	मंगल	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	यम	३	अनु
कृत्तिका	अ. इ. उ. ए.	मे.१ वृष ३	चतुष्द	मेढ़ा	वानर	मं.१ शु.३	राक्षस	अन्त्य	अ.१ पृ.३	मिश्र	अग्नि	६	विशा
रोहिणी	ओ. वा. वी. वू.	वृष	चतुष्पद	सर्प	न्योला	शुक्र	मनुष्य	अन्त्य	पृथ्वी	ध्रुव	ब्रह्मा	५	अभि
मृगशिर	वे. वो. का. की.	वृ.२ मि.२	च.२ नर२	सर्प	न्योला	शु.२ बु.२	देव	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	चन्द्रमा	५	उ.षा.
आर्द्रा	कु. घ. ङ छ.	मिथुन	नर(मनुष्य)	श्वान	मृग	बुध	मनुष्य	आदि	वायु	तीक्ष्ण	शिव	१	पू.षा.
पुनर्वसु	के. को. हा. ही.	मि.३ क.१	न.३ ज.१	मार्जार	मूषक	बु.३ चं.१	देव	आदि	वा.३ ज.१	चर	अदिति	४	मूल
पुष्य	हू. हे. हो. डा.	कर्क	जलचर	मेढ़ा	वानर	चंद्र	देव	मध्य	जल	क्षिप्र	गुरु	३	ज्ये.
आश्लेषा	डी. डू. डे. डो.	कर्क	जलचर	मार्जा.	मूषक	चंद्र	राक्षस	अन्त्य	जल	तीक्ष्ण	सर्प	५	धनि
मघा	मा. मी. मू. मे.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	राक्षस	अन्त्य	अग्नि	उग्र	पितर	५	श्रव
पू.फा.	मो. टा.टी. टू.	सिंह	चतुष्पद	मूषक	बिडाल	सूर्य	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	भग, सूर्य	२	अश्वि
उ.फा.	टे. टो. पा. पी.	सिं.१ कं.३	चं.१ न.३	गौ	व्याघ्र	सू.१ बु.३	मनुष्य	आदि	अ.१ पृ.३	ध्रुव	अर्यमा	२	रेव
हस्त	पू. ष. ण. ठ.	कन्या	नर	महिष	अश्व	बुध	देव	आदि	पृथ्वी	क्षिप्र	सूर्य	५	उ.भा.
चित्रा	पे. पो. रा. री.	के.२ तु.२	नर	व्याघ्र	गौ	बु.२ शु.२	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	मृदु	विश्व	१	पू.भा.
स्वाती	रू. रे. रो. ता.	तुला	नर	महिष	अश्व	शुक्र	देव	अन्त्य	वायु	चर	वायु	१	शत
विशाखा	ती. तू. ते. तो.	तु.३ वृ.१	न.३ की.१	व्याघ्र	गौ	शु.३ मं.१	राक्षस	अन्त्य	वा.३ ज.१	मिश्र	इंद्राग्नि	४	कृति
अनुराधा	ना. नी. नू. ने.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	देव	मध्य	जल	मृदु	मिश्र	४	भर
ज्येष्ठा	नो. या. यी. यू.	वृश्चिक	कीट	मृग	श्वान	मंगल	राक्षस	आदि	जल	तीक्ष्ण	इन्द्र	३	पुष्य
मूल	ये. यो. भा. भी.	धनु	नर	श्वान	मृग	गुरु	राक्षस	आदि	अग्नि	तीक्ष्ण	राक्षस	११	पुन
पूर्वाषाढ़ा	भू. ध. फ. ढ.	धनु	न॥ चतु ३	वानर	मेंढ़ा	गुरु	मनुष्य	मध्य	अग्नि	उग्र	जल	२	आर्द्रा
उत्तराषाढ़ा	भे. भो. जा. जी.	ध.१ मं.३	चतुष्पद	नकुल	सर्प	गु.१ शं.३	मनुष्य	अन्त्य	अ.१ पृ.३	ध्रुव	विश्वे	२	मृग
अभिजित	जु. जे. जो. ख.	मकर	—	नकुल	सर्प	शनि	—	—	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	रोह
श्रवण	खी. खू. खे. खो.	मकर	चतु.१ ॥जर	वानर	मेढ़ा	शनि	देव	अन्त्य	पृथ्वी	क्षिप्र	विष्णु	३	कृति
धनिष्ठा	गा. गी. गू. गे.	म.२ कुं.२	ज.२ न.२	सिंह	गज	शनि	राक्षस	मध्य	पृ.२ वा.२	चर	वसु	४	विशा
शतभिषा	गो. सा. सी. सू.	कुम्भ	नर	अश्व	महिष	शनि	राक्षस	आदि	वायु	चर	वरुण	१००	स्वा
पूर्वाभाद्रपद	से. सो. दा. दी.	कुं.३ मी.१	न.३ ज.१	सिंह	गज	श.३ गु.१	मनुष्य	आदि	वा.३ ज.१	उग्र	रूद्र	२	चित्रा
उ. भाद्रपद	दू. थ. झ. त्र.	मीन	जलचर	गौ	व्याघ्र	गुरु	मनुष्य	मध्य	जल	ध्रुव	अहिबु	२	हस्त
रेवती	दे. दो. चा. ची.	मीन	जलचर	गज	सिंह	गुरु	देव	अन्त्य	जल	मृदु	पूषा	३२	उ.फा.

नामाक्षरों से वर्ग देखने का चक्र (अपने से चतुर्थ वर्ग को मित्र क्षेत्री समझना चाहिए)

अ ई उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	बिडाल	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	हरिण	मेढ़ा

वर्ण ज्ञान चक्र

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	१२/४/८	१/५/९	२/६/१०	३/७/११

ग्रह मैत्री चक्र

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्राणि	चं मं गु	सू बु	सू चं गुरु	सू शु	सू चं मं.	बु श	शु बु
समाः	बुधः	मं गु शु श	शु श	मं गु श	श	मं गु	गु
शत्रव	शु श	० ०	बुध	चं	बु शु	सू चं	सू चं मं
उच्चांश	मे १०	वृष ३	म २८	क १५	कर्क ५	मी २७	तु २०
नीचांश	तु १०	बृ ३	क २८	मी १५	म ५	क २७	मे २०

मित्र नवपंचम चक्र								शत्रु नवपंचम चक्र			
१	२	३	५	७	८	९	१०	१२	११	६	४
५	६	७	९	११	१२	१	२	४	३	१०	८

मित्रषडाष्टक चक्र						शत्रुषडाष्टक चक्र					
१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११
८	१०	१२	२	४	६	६	८	१०	१२	२	४

मित्रद्विर्द्वादश चक्र						शत्रुद्विर्द्वादश चक्र					
१२	२	४	६	८	१०	१	३	५	७	९	११
१	३	५	७	९	११	२	४	६	८	१०	१२

नवपंचम दोष–कन्या से वर अथवा वर से कन्या की राशि पांचवीं, नौवीं हो, तो दम्पत्ति को संतान हानि की संभावना होती है। परन्तु मीन-कर्क, कर्क-बृश्चिक, कुम्भ-मिथुन, कन्या-मकर विशेषतः त्याज्य माने जाते हैं। राशि मैत्री होने की स्थिति में नव-पंचम दोष अचिन्तनीय है।

षडाष्टक दोष–लड़के और लड़की की राशियां परस्पर छठे-आठवें हों तो षडाष्टक यथा-सम्भव त्याज्य है। शत्रु षडाष्टक दोष विशेषतः त्याज्य माना जाता है।

विस्तृत विवेचन के लिए देखें गत पृष्ठ 175

भारतीय संस्कृति में संस्कारों का महत्त्व
(मुख्य-मुख्य मुहूर्त्तों का निर्णय स्वंय करें)

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में संस्कारों का विशेष महत्त्व है। प्राचीन ऋषियों ने गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि कर्म तक **षोडश-संस्कारों** के महत्त्व को एकमत से स्वीकार किया है। मनुष्य जन्म से अबोध होता है, परन्तु संस्कारों से मनुष्य के आन्तरिक एवं बाह्य व्यक्तित्व का निखार व परिष्कार होता है। जैसे, शास्त्र में कहा गया है–

जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।
वेद पाठात् भवेद् विप्रः, ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः॥

अतएव सुख, समृद्धि एवं कल्याण चाहने वाले प्रत्येक वर्ण के गृहस्थी मनुष्य को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का अनुगमन करते हुए गर्भाधान, पुंसवन, नामकरणादि संस्कारों को धारण करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुसार बच्चे के संस्कार करने से बालक/कन्या मेधावी, धनी, यशस्वी एवं दीर्घायु होता है॥

षोडश संस्कार इस प्रकार से हैं–

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन (४) जातकर्म (५) नामकरण (६) निष्क्रमण (७) अन्न प्राशन (८) चूडाकरण (मुण्डन), (९) यज्ञोपवीत (१०) से (१३) तक चतुर्वेदीय व्रत, (१४) समानवर्त्तन (१५) विवाह (१६) अन्त्येष्टि।

☞ (१) गर्भाधान संस्कार–यह प्रथम संस्कार है, जो स्त्री के ऋतु (रजस्वला)स्नान के पश्चात् किया जाता है। भार्या के स्त्री धर्म (रजोदर्शन) में होने के १६ दिन तक वह गर्भ-धारण के योग्य रहती है। **रजोदर्शन** के दिन ६, ८, १०, १२, १४, १६वें दिनों में क्रियमाण गर्भाधान पुत्रदायक तथा विषम दिनों (५, ७, ९, ११, १३, १५) में कन्या-प्रद होता है। उपरोक्त दिनों में भी शुद्ध मुहूर्त्त दिनों का विचार किया जाता है।

(१) गर्भाधान संस्कार का मुहूर्त्त

शुभतिथियां–१ (कृष्ण) २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ (शुक्ल)

शुभ वार–सोम, बुध गुरु एवं शुक्रवार

शुभ नक्षत्र–रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, पुन, पुष्य, स्वा, अनु, श्रव, धनिष्ठा व शतभिषा।

शुभ लग्न–लग्न, केन्द्र-त्रिकोण में शुभ ग्रह हों एवं लग्न को सूर्य, मंगल, और गुरु देखते हों, तो गर्भाधान से पुत्रोत्पत्ति की संभावना होती है। इसके अतिरिक्त **पुत्रार्थी** विषम लग्न राशि एवं विषम नवांशगत लग्न में तथा कन्याकांक्षी सम लग्न राशि में स्त्री संग करें।

गर्भ-धारण के दिन स्त्री-पुरुष दोनों का चन्द्र-बल प्राप्त होना शुभ होता है।

गर्भाधान के लिए त्याज्य काल–रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि को छोड़कर, रिक्ता तिथि, जन्म नक्षत्र, मघा-अश्ले आदि तीनों गण्डांत, मूला, भरणी, अश्विनी, रेवती नक्षत्र, ग्रहण का दिन, माता-पिता के श्राद्ध का दिन, वैधृति, परिघ का पूर्वार्ध, संक्रान्ति, व्यतीपात, ग्रहण, सन्ध्या, दिन का समय, जन्म राशि से अष्टम लग्न, दीवाली, दशहरा, नवरात्र आदि पर्व दिनों को स्त्री संसर्ग में त्याग करना चाहिए।

गर्भ मासों के अधिपति

गर्भाधान से लेकर नव एवं दस मास तक भिन्न-भिन्न ग्रह अधिपति होते हैं। अरिष्टभय की स्थिति में उसी मास से सम्बन्धित ग्रह की पूजा-दानादि करना चाहिए।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
स्वामी	शुक्र	मंगल	गुरु	सूर्य	चंद्र	शनि	बुध	आधानकालिक लग्नेश	चंद्र	सूर्य

☞ (२) पुंसवन संस्कार मुहूर्त्त–यह संस्कार गर्भधारण से तीसरे मास में किया जाता है। इस मास का स्वामी गुरु है। इस दिन श्री विष्णु पूजा करना शुभ होता है। इस संस्कार के शुभ मुहूर्त्त इस प्रकार से हैं।

शुभवार–रवि, चंद्र, मंग, बुध, गुरु व शुक्र। **मंगल** व बुध वारों में मं. बु. उदित होने चाहिएं।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शुक्ल)।

शुभ नक्षत्र–रोहणी, मृग, पुन. पुष्य, हस्त, तीनों उत्तरा, श्रवण, अनु एवं रेवती नक्षत्र। विद्ध नक्षत्र त्याज्य हैं।

☞ (३) सीमन्त संस्कार–यह तृतीय संस्कार है, जो गर्भ धारण से ६, ८ वें मास, जब मास-स्वामी बली हो। **शुभवार**–रवि, मंगल, एवं गुरु।

शुभ तिथियां–२, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शुक्ला)।

नक्षत्र–मृग, पुन, पुष्य, हस्त, मूल, श्रवणः

लग्न–१, ३, ५, ७, ९ आदि विषम लग्न, केन्द्र त्रिकोण में शुभग्रह हों॥

(३) (क) श्री विष्णु पूजा मुहूर्त्त–यह पूजा गर्भाधान से आठवें मास गर्भरक्षा के उद्देश्य से की जाती है। इसमें शंख चक्र-गदा-पद्मधारी भगवान विष्णु की यथाशक्ति, सुवर्णमयी प्रतिमा बनवाकर षोडशोपचार से पूजा करके परिधान सहित, प्रतिमा को ब्राह्मण को दान करें।

शुभ तिथियां–२, ७, १२

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरू, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–रोहिणी, पुष्य और श्रवण।

☞ (४) जातकर्म संस्कार–कुछ शास्त्रकार प्रसव के समय नालछेदन के पूर्व ही इस संस्कार को कार्यान्वित करने की आज्ञा दी है। परन्तु आजकल नरघटी अथवा १६ घटी तक कर लेना चाहिए।

कुछ लोग परम्परानुसार ११वें अथवा १२वें दिन कर लेते हैं।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, १२, १३ (शु.)

शुभ वार = चं., बु,, गु., शु.

नक्षत्र–अश्वि. रोह, मृग, पुन, पुष्य, उत्तरा-तीनों, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रव., धनि, शत, रेव।

☞ मेधा-जनन संस्कार–जात कर्म के साथ ही इस कृत्य का निष्पादन करना चाहिए। बालक/बालिका मेधावी, कीर्तिमान एवं सौभाग्यशाली हो, इसके लिए दाएं हाथ की अनामिका अंगुली से शहद एवं गोधृत चार बार बच्चे को चटाएँ। चारों बार क्रमशः "ॐ भूस्त्वपि धधामि।" ॐ भुस्त्वपि दधामि।" तथा **ॐ भूर्भुवस्वः सर्वत्वपि दधामि। मंत्रों का उच्चारण करें।** इसके साथ ही कुछ घृत-मिश्रित गुड़ भी बालक के तालु में लगा देना शुभ होता है। जिससे बच्चे को स्तनपान के पूर्व ही कुछ चूसने की आदत हो जाए। (अंगुली के अतिरिक्त सुवर्ण या चांदी के चम्मच का भी प्रयोग कर सकते हैं।

☞ स्तनपान का मुहूर्त्त–जन्मान्तार ५वें या ७वें किसी दिन नीचे लिखे भद्रा, व्यति, वैधृति, व्याघात आदि योगों को छोड़कर निम्न शुभ मुहूर्त्त माता संतान को प्रथम बार स्तनपान कराए।

शुभ तिथि–१ (कृ.), २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.), १५,

शुभ नक्षत्र–रोह., मृग. ,पुन, पुष्य, उत्तरा ३ हस्त, चित्रा, अनु, श्रव. धनि, व रेवती॥

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु व शुक्र।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ राशि लग्न।

सूतिका पथ्य में भी उपरोक्त मुहूर्त्त ग्राह्य है।

☞ षष्ठी पूजन–जन्म से पांचवें दिन, जीवन्ती देवी का पूजन करना चाहिए। **इसी प्रकार छेठे दिन रात्रि में षष्ठी पूजन,**

कात्यायनी देवी' का आनन्द मंगल व गीत वाद्य के साथ पूजन करना चाहिए। जीवन्ती एवं षष्ठी पूजा में सूतक की दोष आपत्ति नहीं होती। देशाचारानुसार कोई २१वें या ३१वें दिन की षष्ठी पूजन करते हैं।

☞ प्रसूता स्नान मुहूर्त्त–सूतिका स्नान बच्चे के जन्मदिन से एक सप्ताह के बाद करना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ.) २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ (शु.) १५।

शुभ वार–रवि, मंगल, गुरू, शुभ हैं। सोम एवं शुक्रवार मध्यम हैं।

शुभ नक्षत्र–आश्वि, रोह, मृग, तीनों उत्तरा, हस्त, स्वा., अनु, रेव।

शुभ लग्न–२, ३, ४, ६, ७, ९, १२ सौम्य ग्रह से युत या दृष्ट।

☞ नामकरण संस्कार–यद्यपि प्रत्येक मनुष्य के बाह्य एवं आन्तरिक व्यक्तित्व पर उसके परिवेश एवं परिस्थितियों का विशेष प्रभाव होता है। परन्तु ज्योतिष आचार्यों के अनुसार मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास में उसके प्रसिद्ध नाम का भी विशेष महत्त्व होता है–

"नामाखिलस्य व्यवहार हेतुः, शुभावहं कर्मसु भाग्य हेतुः।
नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्ततः प्रशस्तं खलु नाम कर्म॥"

गृहारम्भ–प्रवेश, युद्ध व्यापार, व्यावहारिक कार्य, दान, मन्त्र-सिद्धि, भाग्य, पुनर्विवाह, रोगोत्पत्ति तथा स्वामी-सेवक के पारस्परिक कृत्यों में नाम राशि वांछनीय है।

☞ नामकरण–सूतक-समाप्ति पर देशानुसार १०, ११, १२, १३, १६, १९, २२वें दिन संस्कार करना चाहिए। एक अन्य मतानुसार ब्राह्मण को १० या १२वें दिन, क्षत्रिय को ११ या १२ वें दिन वैश्य को १६ या २०वें दिन नामकरण संस्कार करना चाहिए। नामकरण पिता-पितामह या कुल के वृद्ध व्यक्ति के द्वारा स्वास्ती वाचन मन्त्रों सहित (विद्वान ज्योतिषी से कुण्डली परामर्श के बाद) उच्चारित करवाना चाहिए।

शुभ तिथियाँ–१ (कृष्ण), २,३,७,१०,११,१२,१३ (शुक्ल)।

शुभ वार–चंद्र, बुध, गुरु, शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, श्रव, धनि, शत, रेवती।

शुभ लग्न–१,४,६,७,९,१२ लग्न शुभ ग्रह युत या दृष्ट हों। भद्रा, ग्रहण, श्राद्ध दिन, दुष्ट योग, संक्रान्ति आदि रहित काल में, सुयोग्य ज्योतिषी से प्रथम नामाक्षर पूछ कर कानों को मधुर लगने वाले अक्षर, महापुरुषों के नाम सदृश अथवा शुभ सार्थक शब्दों वाला नाम रखना कल्याणकारी रहता है।

बालक के दाँत निकलने का फल

यदि पहले मास में बालक के दाँत निकल आएं तो स्वयं अपनी आयु के लिए अरिष्टकारक, दूसरे मास में भाई को, तीसरे मास में बहिन को, चौथे मास में माता को, पाँचवें मास में बड़े भाई के लिए विशेष कष्टकारी होता है, **छटे मास में दाँत निकलें** तो अत्यन्त सुख, सातवें मास में पिता से सुख, आठवें मास में देह की पुष्टता, नवें मास में लक्ष्मी की प्राप्ति, दसवें मास में सौख्य प्राप्ति, ११वें निकलें तो **अति सौख्य**, १२वें मांस में निकलें तो विपुल धन-प्राप्ति होती है। यदि गर्भ से ही दाँतों सहित उत्पन्न हुआ हो वह माता-पिता के सुख से विहीन अथवा ऊपर की पंक्ति के दाँत पहलें निकले तो भी माता-पिता तथा नानके पक्ष के लिए हानिकारक माना जाता है। यदि उपरोक्त अशुभ मासों में बालक को दन्तोत्पत्ति की संभावना हो तो मृत्युज्जय का जाप, ग्रह शान्ति एवं उचित दान आदि करने से अशुभत्व का निवारण तथा अरिष्ट की शान्ति हो जाती है।

मास	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
फल	स्वयं को अरिष्ट	भ्रातृ कष्ट	बहिन को कष्ट	मातृ कष्ट	ज्येष्ठ भ्रातृ कष्ट	सुख	पिता से सुख	देह सुख	धन प्राप्ति	सौख्य प्राप्ति	अति सौख्य	विपुल धन

☞ झूला आरोहन मुहूर्त्त–बालक के जन्मदिन से १०, १२, १६, २२ एवं ३२वें दिन बालक को आराम देह झूले में सुलाना चाहिए। झूले में डालने से पूर्व शुभ तिथि, वार, नक्षत्र, योगादि का विचार कर लेना चाहिए। झूले में माता या दादा, दादी के द्वारा, भगवान् विष्णु का ध्यान करते हुए बच्चे का सिर पूर्व की ओर रखकर शिशु को सुलाना चाहिए।

शुभ तिथियां–१ (कृ), २,३,५,७,१०,११,१३ (शुक्ल) व पूर्णिमा।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार।

ग्राह्य नक्षत्र–अश्वि, रोहिणी, मृग, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा तथा अनुराधा।

☞ निष्क्रमण मुहूर्त्त–जन्म से ३,४ मासों में निम्नलिखित शुभ योगों में बालक को प्रथम बार घर से बाहर निकालना हितकर होता है। शीघ्रता में आवश्यक हो तो जन्म से १२वें दिन भी निष्क्रमण लिखा गया है।

शुभ तिथियां–१ (कृ) २,३,४,७,१०,११,१२ (शु.) एवं १५।

शुभ वार–सोम, बुध, गुरु तथा शुक्र।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, मृग, पुन, पुष्य, हस्त, अनु, श्रव, धनि।

शुभ लग्न–२,३,४,५,६,७,९,१०,११ राशि लग्न।

माता, दादी आदि आत्मीयजन बालक को स्नानादि करवा कर वस्त्रादि से अलंकृत करें तथा पुण्याहवाचन, शंख और मंगल मंत्रों एवं गीत-वाद्य सहित ध्वनि के साथ उसे प्रथम देवालय (मन्दिर) में ले जावें। वहाँ देव पूजा व अर्चना करके आत्मीयजन शुभाशीष दें तथा मन्दिर की परिक्रमा करके स्वगृह लौट कर बच्चे को ननिहाल या मौसी के घर ले जावे। पुन: गृहागमन के समय दीर्घायु संज्ञक आशीर्वचनों से बालक का अभिनन्दन करें। पुनश्च, निष्क्रमण तृतीय मास में हो, तो बालक को सूर्य-दर्शन तथा चतुर्थ मास में हो तो चन्द्र-दर्शन करवाना चाहिए।

☞ भूम्युपवेशन-मुहूर्त्त–जन्म से पंचम मास में मंगल के बलान्वित होने पर बालक को प्रथम बार भूमि पर विराजमान (बिठाने) के लिए विचारणीय मुहूर्त्त–

शुभ तिथियां–१ (कृ) 2,३,४,७,१०,११,१३ (शु.) तथा पूर्णिमा।

शुभ वार–चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्रवार।

शुभ नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उतरा, हस्त, अनु, ज्ये, अभिजित।

शुभ लग्न–२,५,८,११ राशि लग्न।

☞ जीविका परीक्षा–'भूम्युपवशन' के अवसर पर बालक के सामने हानि रहित अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, लेखनी (Pen-Pencil), वस्त्र, सोना, चाँदी, ताँबा, लोहादि धातुएँ, मशीनें मोटर, पंखा-रेडियों, टी. वी. आदि खिलौने, विज्ञान, हिन्दी, अंग्रेज़ी, संस्कृतादि साहित्य आदि वस्तुएँ रखें। इन वस्तुओं में से जिस वस्तु को बालक सहज रूप में सर्वप्रथम स्पर्श करें, वही उसकी भावी आजीविका होगी। ऐसा अनुमान लगाना चाहिए। कुल परम्परा अनुसार, कहीं-कहीं यह क्रिया अन्नप्राशन के साथ भी कर लेते हैं।

☞ अन्न-प्राशन का मुहूर्त्त–जन्म से सौर मास ६, ८, १० या १२वें मास में पुत्र को तथा ५,७,९ या ११वें मास पुत्री को उसकी पाचन शक्ति उपयुक्त होने पर प्रथम बार बच्चे को अन्न प्राशन कराना **अन्न प्राशन** में शुक्ल पक्ष विशेष प्रशस्त माना गया है। यद्यपि कृष्ण पक्ष की १,३,५,७,१० तिथियाँ भी ग्राह्य हैं। सोमवार, बुध, गुरु, एवं शुक्रवार शुभ हैं।

नक्षत्र–अश्वि, रोह, मृग, पुन, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा, अनु, अभिजित श्रव, धनि, रेवती तथा जन्म-नक्षत्र 'सप्तश्लाका चक्र' द्वारा क्रूर ग्रह विद्ध नक्षत्र त्याज्य होगा। जन्म राशि से ६, ८वें लग्न को छोड़कर २,३,४,५,६,७,९,१०,११ की राशि का लग्न जबकि लग्न से १,४,७वें शुभ ग्रह हों तथा लग्न शुभ ग्रहों द्वार दृष्ट हो।

विशेष–अन्न प्राशन दिन के पूर्वार्द्ध भाग में बालक की राशि का चन्द्रबल देखकर भद्रा रहित काल एवं उपरोक्त शुभ दिन को

सूर्य, ब्रह्म, विष्णु, महेश तथा दिक्पतियों की पूजा करके माता स्वलंकृत बालक को अपनी गोद में बिठाकर ईश्वर-स्मरण करते हुए उसे मधु, घृत, दही, खीर का भोजन सर्व प्रथम कराएँ।

कर्ण वेध का मुहूर्त्त–बालक के जन्म से १२, १६वें दिन, या ६,७,८वें मास में अथवा ३,५वें वर्ष बालक का कर्ण छेदन प्रशस्त माना जाता है।

ग्राह्य मास–चैत्र, (का. शु. ११ के बाद), पौष तथा फाल्गुन।

तिथियां–४,९,१४ (रिक्ता तिथियां छोड़कर)।

वार–चं, बु., गु., शु, वारों में अश्वि, मृग, आ. पुन, पुष्य हस्त, चित्रा, अनु, अभि, श्रव, धनि, रेव। विद्ध तथा जन्म नक्षत्र भी त्याज्य।

शुभ लग्न–२,३,४,६,७,९,१२।

विशेष–बोलक को पूर्वाभिमुख बिठाकर हाथ में कुछ मिष्ठान्न दें तथा पुत्र के बाएं कान को तथा पुत्री के दाएं कान को सुवर्ण या चाँदी की श्लाका से सौभाग्यवती स्त्री या कुशल स्वर्णकार से कर्ण विधवाना चाहिए।

कन्या की नासिका छेदन–हेतु उपरोक्त कर्ण वेध मुहूर्त्त के मासों में ही कन्या का नामक विंधवाया जाता है। शुक्ल पक्ष की तिथियाँ शुभ होती हैं–२, ३ ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५।

जन्म दिन कृत्य

सामान्यत: लोग अंग्रेज़ी तारीख अनुसार ही जन्मदिन कृत्य कर लेते हैं। परन्तु इसमें कई बार भूल होने की सम्भावना रहती है। सिद्धान्त: एक सौर वर्ष उपरान्त जिस दिन जन्मेष्ट एवं जन्मदिन के समान ही स्पष्ट सूर्य के राशि, अंश, कलादि की जब पुनरावृत्ति आ जाए, उसी दिन को जन्मदिन का नववर्ष प्रवेश माना जाएगा। यदि इतनी सूक्ष्मता का पता न चल पाए तो देशी प्रविष्टों के अनुसार जन्म दिन के वर्ष का निर्धारण किया जाए तो शुद्धता के अधिक पास रहेंगे। यदि किसी सुयोग्य ज्योतिषी द्वारा वार्षिक जन्मदिन का निर्णय (गणितानुसार) करवा लें तो और अधिक उचित होगा।

जन्मदिन के शुभ अवसर पर प्रात: उठकर गंगा जल सहित शुद्ध पवित्र जल से बालकको स्नानादि के पश्चात् सुन्दर वस्त्र धारण करवा कर पूर्वाभिमुख होकर माता पिता उसे गोदी में बिठाकर किसी सुयोग्य पण्डित जी द्वारा पंचदेव पूजन, नवग्रह पूजन एवं संकल्पपूर्वक छाया दान सहित जन्मदिन पूजन करवाना चाहिए। पूजनोपरांत भगवान् सूर्यदेव को अर्घ्य तथा ब्राह्मण भोजन एवं यथाशक्ति दानादि करें।

विशेषकर वर्षफल में स्थित अशुभ ग्रहों के दान, जपादि करवाने से बच्चों को आरोग्यता एवं माता-पिता को सुख-शान्ति बनी रहती है। जन्मदिन पर तिल स्नान, तिलों चावल, दूध, चीनी आदि से बनी क्षीर तथा वस्त्र अनाजादि का दान एवं स्वयं भी क्षीर सेवन शुभ होता है।

मुण्डन (चूड़ाकर्म) संस्कार मुहूर्त्त

जन्म या गर्भाधान में १, ३, ४, ७ इत्यादि विषम वर्षों के कुलाचार के अनुसार उत्तरायणगत सूर्य में बालक का चौलकर्म (मुण्डन) संस्कार पूर्वान्ह काल में करना चाहिए।

चैत्र मास को छोड़कर अन्य उत्तरायण के मासों में –वैशा, ज्ये. आषा. (२० जून तक), माघ, फाल्गुन, २, ३, ४, ५, ६, ७, १०, ११, १३ (शु०) १५ तिथियों में, संक्रान्ति आदि पर्व दिनों को छोड़कर, चन्द्र, स्वा, ज्ये. श्रव, अभि., धनि. और शतभिषा नक्षत्रों में मुण्डन कार्य शुभ है। लोकाचार अनुसार कुछ लोग नवरात्रों में, अक्षयातीज आदि शुभ दिनों में बिना सुनिश्चित मुहूर्त्तों के भी मुण्डन आदि कार्य कर सकते हैं।

बालक का जन्म मास त्याज्य है। परन्तु जन्म नक्षत्र या जन्म राशि शुभ है। तथा जन्म राशि या जन्म लग्न से अष्टम लग्न न हो। बालक की माता रजस्वला या गर्भवती हो, तो मुण्डन कार्य न करावें परन्तु यदि गर्भ ५ मास से अधिक का हो तो या बालक की आयु ५ बर्ष से अधिक हो, तो दोष नहीं। ज्येष्ठ (बड़े) लड़के का मुण्डन ज्येष्ठ मास में शुभ नहीं।

क्षौर (हज़ामत) कर्म मुहूर्त्त–मुण्डन के लिए जो तिथियां, नक्षत्र और वार शुभ बतलाए गए हैं, वे ही क्षौर (हज़ामत) के लिए शुभ हैं। मंगल, शनि, व रवि वारों में क्षौर से पुन: ९वां दिन, रिक्ता तिथियों और विशेष ग्राम (नगर) में जाने के दिन, स्नान करने के बाद, शरीर में उबटन लगाने के बाद और भोजन कर लेने के बाद अपना कल्याण चाहने वाले वाले क्षौर कर्म (हजामत) न करावें॥

विशेष–यज्ञ में, विवाह, मृतक कर्म में, कारागार (जेल) से छूटने पर, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म निषेध दिनों में भी करा लेना शुभप्रद होता है।

विवाह में तैलादि चढ़ाने का मुहूर्त्त

वर कन्या जिसको विवाह से पूर्व तैल चढ़ाना हो, उसका चन्द्र बल देख लेना चाहिए। तैलादि मंगल कार्य हेतु, मेषादि राशि वालों के लिए चक्र में निर्दिष्ट संख्या दिन पूर्व करना चाहिए। उदाहरणार्थ मिथुन राशि वाले वर-कन्या को विवाह से ५ दिन पूर्व तेल चढ़ाना चाहिए। इनमें विवाह का दिन गिनती में न करें।

राशि	मेष	वृष	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
दिन	७	१०	५	.१०	५	७	७	५	५	५	५	७

वास्तु भूमि का शुभाशुभ विचार

(क) गृहादि निर्माण हेतु जिस भूमि की शुभाशुभ परीक्षा करनी हो, तो शाम के समय वहाँ पर भूमि पूजन करवाने के पश्चात् वहाँ अपने एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ गहरा गढ़ा खोद कर उसे जल भर दें। प्रात:काल आकर उसे देखने पर, यदि वह गढ़ा पानी से भरा हुआ दिखे तो, भूमि शुभ जानें। यदि पानी न हो, तो मध्यम जानें, और यदि गड्ढा में पानी न हो और उसके आस-पास की मिट्टी फटी हुई हो, तो भूमि को अशुभ समझें।

(ख) वास्तुभूमि में परीक्षा के लिए भूमि में लगभग डेढ़ फुट गहरा उतना ही चौड़ा गढ़ा खोदें। खुदाई के समय यदि पत्थर, ईंट, ताम्बा, पात्र, धनादि द्रव्य मिलें, तो यह परिवार की आयु, धन, संतति आदि में वृद्धि होने के संकेत हैं। इसे शुभ शकुन मानना चाहिए। यदि भूमि खोदने पर कपाल, हड्डी, कोयला, केश, राख, गुठली, रुई, सीप खोपड़ी, लोहादि मिलें तो इसे अशुभ शकुन समझना चाहिए।

(ग) विश्वकर्मा के अनुसार एक अन्य परीक्षा भूमि में उत्तर दिशा की ओर एक लगभग टेढ़ फुट गहरा और डेढ़ फुट चौड़ा गढ़ा खोदें। गड्ढे में से सारी मिट्टी निकाल लें। तथा निकाली हुई मिट्टी को दुबारा उसे गड्ढे में भर देवें। यदि गड्ढा भर देने के बाद भी मिट्टी शेष बच जाती है, तो समझ लें कि भूमि उत्तम है। यदि फिर भरने के बाद मिट्टी शेष नहीं बचती और गढ़ा पूरा भर जाता है, तो इससे यह समझना चाहिए कि भूमि मध्यम स्तरीय होगी। यदि निकाली गई सारी मिट्टी गड्ढे में भरने पर भी, गड्ढा पूरी तरह नहीं भरता है, तो समझें कि ज़मीन निकृष्ट प्रकार की है।

(घ) फटी हुई, शूल (कांटों), दीमक आदि से युक्त ऊँची-नीची भूमि अशुभ होती है।

(ङ) **शुभ-भूमि**–चिकनी, गीली, उपजाऊ मिट्टी अथवा घास, पुष्प, लताओं, फूलों आदि से सुगन्धित एवं समतल भूमि गृह स्वामी एवं उसके परिवार के लिए सुख-सम्पत्ति में वृद्धिकारक होती है।

(च) मकान की नींव को गहरा खोदते समय यदि काली ईंटें देखने को मिलें, तो भूमि शुभ जानें। हड्डी, केश, (बाल), कोयला राखादि निकलें तो वहां मकान बनवाने वाले को रोगादि से कष्ट रहे॥

सुप्त भूमि (भू-शयन) का विचार

प्रत्येक सूर्य संक्रान्ति से ५, ७, ९, १५, २१, एवं २४वें प्रविष्टे को पृथ्वी सोई रहती है, अतएव सुप्त भूमि के दिवसों में यथासम्भव कृषि, होम, गृह निर्माण, वापी, कुआं, तालाब के लिए भूमि का खनन न करें।

एक अन्य मतानुसार, **सूर्य-नक्षत्र** से ५, ७, ९, १२, १९, तथा २६ वे नक्षत्रों में भी भूमि का शयन होता है।

भू-रजस्वला–सूर्य संक्रान्ति के दिन से १, ५, १०, ११, १६, १८, १९ वें दिन भूमि रजस्वला रहती है। अत: इन दिनों भी यज्ञ, हवन, कृषि,तालाब, गृह निर्माणारम्भ आदि कार्यों का आरम्भ न करें।

अथ अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है–(१) जनना शौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भास्त्रावादि अशौच-व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवें, छटे मास में 'गर्भपात' और इसके उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर, किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पितादि सपिण्डों को ३ दिन का 'सूतक' होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने २ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है, जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हों, तो, २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से एक मास तक धर्मकार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

मृतोत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाये तो माता को १० दिन तक सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये तो पितादि सपिण्डों का पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं होता।

मृताशौच-व्यवस्था

नामकरण अर्थात् १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दाँत आने से पहिले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थात् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक, अर्थात् मुंडन संस्कार न हुए बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है और ३ वर्ष में मुण्डन संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या शौच-व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाए व प्रसूता हो तो माता-पिता सहोदर, भाईयों को तीन दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है।

मातामह-मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास-ससुर तथा जामातृ पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जाये तो जामित्र पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जामाई के मरने पर १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय-विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी की मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो तीन दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १ दिन का पातक होता है। और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का।

राहु कालम्

शुभ कार्यों में विशेषतया त्याज्य

दक्षिण भारत में राहु-कालम का विशेष प्रचलन है। विशेष वार प्रतिदिन डेढ़ घण्टे के लिए यह अनिष्ट समय होता है। जिसे शुभ कार्यारम्भ में यथासम्भव टाल देना चाहिए। दक्षिणी भारत में **राहु कालम** का विशेष विचार किया जाता है।

सोमवार–प्रात: ७/३० से प्रात: ९ बजे तक
मंगलवार–अपराह्न ३/०० से ४/३० बजे तक
बुधवार–दोपहर १२/०० से १/३० बजे तक
बृहस्पतिवार–दोपहर १/३० से ३/०० बजे तक
शुक्रवार–प्रात: १०/३० से दुपै. १२ बजे तक
शनिवार–प्रात: ९/०० से प्रात: १०/३० बजे तक
रविवार–सायं ४/३० से सायं ६/०० बजे तक

नोट–यह समयावधि दिनमान के अनुसार परिवर्तित होती रहती है।

नींव खोदने के लिए विशेष ज्ञातव्य

(i) सूर्य वृष, मिथुन या कर्क (ज्येष्ठ, आषाढ़ या श्रावण) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम) कोण में करें।

(ii) सूर्य सिंह, कन्या या तुला (भाद्र., आश्वि. या तुला) में हो, तो नींव की खुदाई का प्रारम्भ आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण) से करें।

(iii) सूर्य वृश्चिक, धनु या मकर (मार्ग., पौष या माघ) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) से करें।

(iv) सूर्य मेष, कुम्भ या मीन (वैशाख, फाल्गु. या चैत्र) में हो, तो नींव की खुदाई का आरम्भ वायव्य कोण (उत्तर-पश्चिम) से करें।

नींव में रखने योग्य पदार्थ

शिलान्यास हेतु आवश्यक सामग्री–

- तांबे की गड़वी में चावल भरकर तथा सरसों, हल्दी भरें तथा गड़वी को मौली तथा आम्र पत्तों से बांध लें।
- ५ नई ईंट
- ५ पंचरत्नी तथा गीता आदि धार्मिक ग्रन्थ
- १ जोड़ी सर्प, सर्वोषधि, श्रीफल एक, लाल वस्त्र, जनेऊ-जोड़ा
- **(विशेष)** –भाद्रपद, आश्विनी और कार्तिक मास में भवन निर्माण हो तो सर्प का मुख पूर्व में होना चाहिए।
- फाल्गुन, चैत्र, वैशाख मासों में निर्माण हो तो सर्प का मुख पश्चिम दिशा की ओर हो।
- ज्येष्ठ, आषाढ़ श्रावण मासों में सर्प का मुख उत्तर दिशा की ओर हो।
- मार्गशीर्ष, पौष, माघ मासों में सर्प का मुख दक्षिण दिशा में होना चाहिए।
- ५ कौड़ीयां, सिंधूर, ५ सुपारी साबुत
- दरिया या तालाब के किनारे की घास तथा १ पाव कच्चा दूध। (यदि सम्भव हो तो गंगाजल एवं गंगादि तीर्थ से लाई हुई रेत या मिट्टी भी रख दी जाए तो अधिक अच्छा है।
- नारियल

अथ प्रसूति लग्नादि का विचार

मेष—बालक के जन्म समय मेष लग्न हो तो घर के पूर्व की ओर प्रसूतिका की शय्या, दो उपसूतिकाएँ अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य में जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिका की संख्या जानें, मुख की कांति लाल वर्ण की, माता का मुख पूर्व की ओर, बालक की प्रकृति पित्तकारक, चंचल एवं साहसी होगी। माता के वस्त्र लाल वर्ण के तथा उसने पहले मीठा भोजन किया हो। जन्म के बाद बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। मकान पुराना होगा। आयु के २, ४, ११, १६, २९वें साल विशेष कष्ट रहे।

वृष—बालक के जन्म समय वृष लग्न हो, तो बालक गौरपूर्ण सुन्दर रूप, द्वार एवं माता का शिर दक्षिण की ओर, रक्त-पित्त प्रकृति, माता ने श्वेत वस्त्र और चाँदी के आभूषण पहने हों, पहले शाकादि का भोजन किया हो। पाँव से प्रसवोत्पन्न, ३ या ४ उपसूतिकाएँ हों। आयु के १, १३, १८, ३३, ४३, ५८वें वर्ष में विशेष कष्ट हो।

मिथुन—बालक का चंचल स्वभाव, वात-श्लेष्म (वायु बलगम) प्रकृति, उपसूतिकाएँ (स्त्रियाँ) ३ या ५, माता का मुख पश्चिम की ओर, स्तनों में दूध कम उतरा हो, माता ने पहले नमकीन विचित्र (मिश्रित) भोजन किया हो, वस्त्र हरा पुराना, गृह का द्वार पश्चिम की ओर हो, शिराभिमुख प्रसव हुआ हो, बालक ने दीर्घ स्वर में रूदन किया हो। आयु के २, ४, १०, १३, ३८, ४८वें साल कष्ट रहे।

कर्क—गौर वर्ण, कोमल पर पुष्ट शरीर, चंचल नेत्र, वात-श्लेष्म प्रकृति, कद लम्बा व गोल, सुन्दर मुख, माता का मुख उत्तर की ओर, प्रसव से पूर्व माता ने मीठा-शीतल थोड़ा भोजन किया हो, तथा पुराने वस्त्र पहिने हो, माता के दाहिने अंग पर लहसन का निशान हो, प्रसव से पूर्व माता ने श्वेत व गुलाबी वस्त्र व चाँदी के आभूषण पहिने हों। प्रसवोपरान्त बालक कुछ देर से रोया हो। वह जलीय (liquids) का शौकीन हो। आयु के १, ५, २५, ३९, ४८, ६२वें वर्ष कष्ट।

सिंह—जन्म समय सिंह लग्न हो, तो माता का मुख पूर्व किन्तु गृहद्वार दक्षिण की ओर, उसने रक्त वस्त्र एवं सुवर्ण आभूषण पहने हों, प्रसव पूर्व उसने खट्टा व कसैला भोजन किया हो। जन्म समय ३ या ५ स्त्रियाँ, नया मकान, बालक की पीठ पर चिन्ह हो और वह दीर्घ स्वर में रोया हो। आयु के ३, ५, १२, २८, ३६, ४९वें वर्ष कष्ट रहे।

कन्या—इस लग्न का स्वामी बुध है। जन्म समय बालक के सुन्दर नेत्र, गौर वर्ण, अल्प बाल, गोल चेहरा, सौम्य पांव, चंचल वृत्ति, कण्ठ व जंघा में चिह्न हो। माता का मुख दक्षिण की ओर, स्त्रियां ४ या ५, माता लाल एवं प्राचीन वस्त्र, कसैला सहित भोजन, पिता घर से बाहर, बालक अल्प शब्द से रोया हो। आयु के २, ४, १५, २३, २५, ३५, ४५, ५६वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

तुला—गौरवर्ण, कुछ लम्बा चेहरा, काले नेत्र, बड़ी नाक, थोड़े बाल, चंचल, तीक्ष्ण बुद्धि, दुबला कृश शरीर, माता का मुख पश्चिम की ओर, कषाय भोजन किया हो तथा पुराने वस्त्र धारण किए हों, बालक-बालिका दीर्घ शब्द में रोए। आयु के ३, ६, ८, १५, २७, ३१वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

वृश्चिक—ऊँचा मस्तक, सौम्य प्रकृति, पुष्ट शरीर, ताम्रवर्ण भूरे नेत्र, शीर्षोदय, तेज़ स्वभाव, केश लम्बे, स्त्रियाँ २ या ३, गृह का द्वार उत्तर की ओर, बालक की पीठ पर चिन्ह, माता ने लाल वस्त्र पहनें हों, बालक देर से रोया हो। आयु के २,६,११,२७,५८वें वर्ष विशेष कष्ट हो।

धनु—रंग गोरा, ऊँचा मस्तक, बड़े नेत्र, माता का मुख पूर्व की ओर, पीले वस्त्र सहित चित्रित वस्त्र एवं पकवान भोजन किया हो, बालक की छाती पर चिन्ह, माता का मुख उत्तर-पूर्व की ओर होगा तथा जन्म समय १ या ५ स्त्रियां, बालक दीर्घ शब्द से रोया हो। वर्ष के १, ३, १०, १८, २१, ३७, ४२वें वर्ष विशेष कष्टकारी होंगे।

मकर—जन्म समय कृश शरीर, पिंगल वर्ण, बहुत केश, ऊँचा मस्तक एवं ऊँची नाक, वात-विकार, माता का सिर दक्षिण की ओर, पुराना काला, नीला वस्त्र धारण किया हो, कसैला भोजन व शीतल जल पिया हो, स्त्रियां ३ या ४ हों, सूतिका गृह प्राचीन एवं गृह द्वार उत्तर की ओर, जन्म के बाद बालक ने थोड़ा रोया हो। आयु के ३, ५, १३, २७, ३३, ५७वें वर्ष में विशेष कष्ट रहें। जातक पर शनि का विशेष प्रभाव रहे।

कुम्भ—जन्म समय कुम्भ लग्न हो, तो बालक-बालिका का चौड़ा मस्तक, कुछ मोटे होंठ, वात-पित्त प्रकृति, श्वेत-श्याम वर्ण, धूम्रवर्ण वस्त्र, मध्यम केश, माता का मुख पश्चिम की ओर, ३ या ५ स्त्रियाँ, शाकादि का भोजन किया हो, माता को शरीर कष्ट, पिता घर में न हो तथा बालक-बालिका ने थोड़ा रूदन किया हो। आयु के २, ४, १३, २८, ३३, ४२, ४८, ५४वें वर्ष विशेष कष्ट हो। बालक पर शनि ग्रह का विशेष प्रभाव रहेगा।

मीन—बालक जन्म समय सुन्दर सौम्य एवं पीत (पिंगल) वर्ण, वात-श्लेष्म कफ प्रकृति, माता पीले वर्ण सहित मिश्रित वर्ण के वस्त्र धारण किए हुए मिष्ठान्न सहित अल्प भोजन किए, उस का मुख उत्तर की ओर, जन्म समय २ या ३ स्त्रियां हों, बालक जन्म से कुछ देरी के बाद रोया हो। आयु के १, ७, १०, १३, १६, २६, २९, ३८, ४१वें वर्ष विशेष कष्ट रहे।

एक ही नक्षत्र में जन्म का फल

यदि एक ही परिवार में, एक ही माता-पिता और उनकी सन्तानों में से किन्हीं दो का जन्म एक ही नक्षत्र में हुआ हो, तो वह अत्यन्त अनिष्टकारी होता है। यह अनिष्ट दोनों में से किसी एक को होता है। यदि भाई-भाई, भाई-बहन, पिता-पुत्र या माता-पुत्र या माता-पुत्री अथवा पिता-पुत्री का जन्म एक ही नक्षत्र में हो, तो वह मृत्यु-तुल्य कष्टदायक होता है। इसकी शान्ति अवश्य करनी चाहिए।

पिगोश्च जन्मनक्षत्रे जातस्तु पितृमातृहा।
जन्मक्षाँशे च तल्लग्ने जातः सद्योमृतिप्रदः।(वसिष्ठ)

एक नक्षत्र जनन की शान्ति संक्षिप्त रूप से इस प्रकार से वर्णित की गई है–अग्नि (हवनकुण्ड) के ईशानकोण में कलश के ऊपर जिस नक्षत्र का जन्म हो, उस नक्षत्र के देवता के स्वरूप की नक्षत्र प्रतिमा बनवाकर स्थापित करें। उस नक्षत्र के मन्त्र से कलश के ऊपर उस नक्षत्र की पूजा करनी चाहिए। कलश को दो लाल रंग के वस्त्रों से लपेट देना चाहिए। फिर वैदिक पद्धति के अनुसार समिधा द्वारा होम आदि विधान करना चाहिए। प्रत्येक समिधा को घी में डुबोकर हवन करना चाहिए।

इस प्रकार प्रायश्चित होम करने के बाद जातक और उसके माता-पिता का अभिषेक भी आचार्य को करना चाहिए। कर्म समाप्ति के बाद यजमान (पूजा कराने वाला जातक) आचार्य पण्डित जी को भोजन, गोदान, वस्त्र दक्षिणा आदि से सम्मानित करें।

–त्रिखल जन्म फल एवं शान्ति–

तीन कन्याओं के पश्चात् लड़का उत्पन्न होना तथा तीन लड़कों के पश्चात् कन्या की उत्पत्ति त्रिखल दोषकारक मानी जाती है। इसके कारण लड़का पिता, नानके पक्ष को हानि तथा कन्या माता के लिए कष्टप्रद होते हैं। त्रिखल शान्ति करवा लेने से गृह में सुख शान्ति रहती है। शान्ति हेतु सूतकादि के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में पत्नी सहित शुद्ध आसन पर पूर्वाभिमुख होकर संकल्पपूर्वक श्रीगणपति-पूजन व नवग्रहादि पूजनोपरान्त कलश स्थापन करते हुए उसके ऊपर ताम्र पात्र रखकर उसमें श्री विष्णु भगवान् की स्वर्णमयी मूर्त्ति (उसके अभाव में ताम्र की) पूजा करके रखें। फिर विधिपूर्वक त्रिखलशान्ति कर्म किसी सुयोग्य ब्राह्मण द्वारा करवा लेनी चाहिए। यदि किसी कारणवश आप पूजा न कर पाए हों तो फिर बच्चे के जन्मदिन के आसपास किसी मुहूर्त्त में त्रिखल पूजा करवा लेनी कल्याणकारी होगी। दान में तीन अन्न, तीन वस्त्र, तीन धातु (सोना, चाँदी, ताँबा) तथा साथ में गुड़, एक लाल परना व नारियल दक्षिणा सहित संकल्पपूर्वक बच्चे व उसकी माता का हाथ लगवाकर मन्दिर में या ब्राह्मण को दान करें।

पंचाँग-परिवर्तन करना

'पंचांगदिवाकर' में जहाँ तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल तथा ग्रहों की वक्री-मार्गी तथा राशि चार्ट भा. स्टै. टा. में दिए गए हैं, उन (समयों) में भारत के किसी अन्य स्थल के लिए कोई संस्कार करने की आवश्यकता नहीं है तथा विश्व के किसी अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्रादि का समाप्ति काल जानने हेतु भा. स्टै. टा. से उस देश का स्टै. अन्तर जमा या घटा कर प्राप्त कर सकते हैं। परन्तु **पंचांगदिवाकर** में तिथ्यादि के समाप्ति काल घड़ी पलों में दिए हुए हैं, क्योंकि यह घड़ी पल जालन्धर के स्पष्ट सूर्योदय काल से हैं, इसलिए अन्य नगर के लिए तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र राशि प्रवेश आदि हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। यह ध्यान रहे कि भारतीय ज्योतिष में वार (रविवार, सोमवार) का प्रारम्भ तथा तिथि, नक्षत्र आदि का घड़ी पलों में समाप्तिकाल सूर्योदय के समय से ही माना जाता है।

भारत के किसी भी अन्य नगर का पंचांग अर्थात् तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र-सूर्यादि संचार घटी पलों में प्राप्त करना हो तो आप इसी पंचांग में आगामी पृष्ठों से अपने अभीष्ट नगर का अक्षांश, रेखांशादि ज्ञात करके मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से सू. उ. ज्ञात कर लें। आपके अभीष्ट नगर के सू. उ. का जालन्धर के सूर्योदय से जितना अन्तर होगा, उसके घड़ी पल बनाकर $2\frac{1}{2}$ गुणा करके) ऋण (घटावे) या जमा (धन) करे। यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पूर्व अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर से पूर्व (पहले) होगा, वहाँ सूर्योदय अन्तर (कालान्तर) के घड़ी पल बनाकर पंचांगदिवाकर में तिथ्यादि के घड़ी-पलों में जमा करें तथा यदि अभीष्ट नगर जालन्धर से पश्चिम में स्थित होगा अर्थात् जहाँ का सूर्योदय जालन्धर के सू. उ. से बाद होगा, वहाँ कालान्तर के घड़ी पल बनाकर तिथ्यादि के घड़ी-पल में से घटावें।

उदाहरण—मान लीजिए 11 अप्रै., 2016 ई. को दिल्ली का पंचांग बनाना है, तो दिल्ली का अक्षांश, स्टै. अन्तर प्राप्त कर मध्यम सूर्योदय सारिणी से 6/04 सू.उ. प्राप्त ('तिथ्यादि पंचांग के घण्टे मिनटों वाले' पृष्ठों से दिल्ली का तैयार दैनिक सू. उ. देख सकते हैं) हुआ जोकि जालन्धर के सू. उ. (6/08) से 5 मिनट पूर्व (पहले) है। अत: घड़ी पलों में तिथि, नक्षत्रादि दिल्ली के प्राप्त करने के लिए हमें जालन्धर के तिथि, नक्षत्र आदि में 4 मिनट के घटी पल 10 पल जमा करने होंगे। (ढाई गुणा करके)। **ध्यान रहे**, सूर्योदय अन्तर नगरों में सदैव एक समान नहीं रहता। इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि भारतीय ज्योतिष अनुसार जन्मपत्री निर्माण के समय जन्मपत्री में उसी तिथि, नक्षत्रादि के घड़ी पल लिखे जाते हैं जो जातक के जन्म वार के दिन स्थानीय सू. उ. के समय वर्तमान हो। चाहे वह तिथि, नक्षत्र जातक के जन्म से पूर्व ही समाप्त क्यों न हो जाए। कई बार पंचांग परिवर्तन करते हुए तिथियों/नक्षत्रों के क्षय या वृद्धि में भी अन्तर पड़ सकता है।

11 अप्रैल, 2016 ई. को जालन्धर का पंचांग—11 अप्रैल, 2016 ई. को दिल्ली का पंचांग

	घटी पल		घटी पल
तिथि	– ४५/४८ (समाप्ति काल)	**तिथि**	– ४५/५८ (समाप्ति काल)
नक्षत्र	– २५/१०	**नक्षत्र**	– २५/२०
योग	– ३३/२८	**योग**	– ३३/३८

जालन्धर से अतिरिक्त नगर की जन्मपत्री निर्माण हेतु पंचांग परिवर्तन आवश्यक है। इस प्रक्रिया द्वारा आप भारत के किसी भी नगर का सू. उ. ज्ञात करके जालन्धर के सू.उ. से अन्तर जानकर पंचांग परिवर्तन कर सकते हैं। जबकि जहाँ तिथ्यादि, ग्रहों के वक्री-मार्गी का समय भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं है। घण्टा मिनट वाले पृष्ठों पर सर्वत्र समय (तिथि, नक्षत्र, योग, चन्द्र संचार आदि का) भा. स्टै. टा. में दिया गया है, वहाँ पंचांग परिवर्तन करने की कोई आवश्यकता नहीं।

लग्न सारिणी द्वारा लग्न स्पष्ट करने की विधि

आगामी पृष्ठों पर विभिन्न अक्षांशों पर आधारित, निर्मित लग्न सारिणियां दी गई हैं। जिस नगर का लग्न स्पष्ट करना हो, सर्वप्रथम अपने अभीष्ट काल का सूर्योदयात् इष्टकाल घट्यादि में बना ले। इसके लिए उस स्थान का सही सूर्योदय का ज्ञान होना आवश्यक है। अपने नगर की शुद्ध एवं सूक्ष्म **सूर्योदय काल** जानने के लिए पंचांगदिवाकर के आगामी पृष्ठों में दी गई **अक्षांश सारिणियों** का प्रयोग करना चाहिए। स्थानीय इष्टकाल बना लेने के पश्चात् अपने अभीष्ट काल का सूर्य स्पष्ट ग्रहण करें। सूर्यस्पष्ट जिस राशि के जितने अंश पर हो, लग्न सारिणी में उसी राशि के सामने तथा सूर्य स्पष्ट के अंशों के कोष्ठक के नीचे जितने घड़ी पल हो, उनमें अपने इष्ट के घड़ी पल जोड़ (जमा) देने से लग्न स्पष्ट जानने के लिए घड़ी पल होंगे। यह घड़ी पल लग्नसारिणी में जिस राशि के सामने और जितने अंश के नीचे होगा, वही राश्यादि पर लग्नस्पष्ट होगा।

उदाहरण—मान लीजिए, विक्रमी संवत् २०७३ मध्ये कांगड़ा (हि. प्र.) में चैत्र शुक्ल पंचमी प्रविष्टे २९ चैत्र, तदनुसार 11 अप्रै., 2016 ई. को दोपहर 2 बजकर 24 मिनट पर उत्पन्न बालक का लग्न स्पष्ट करना है। इसका सूर्योदयात् ईष्ट २० घड़ी ४० पल बनेगा तथा ईष्टकालिक सूर्यस्पष्ट ११/२७°/४८'/४७" होगा। कांगड़ा का अक्षांश ३२/०५ होने के कारण आगामी पृष्ठों पर दी गई ३२° अक्षांश की लग्न सारिणी प्रयोग में लाई जाएगी। लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट की राशि अर्थात् मीन राशि के सामने और २८° अंश के नीचे कोष्ठक में अनुपातिक विधि द्वारा हमें २/२५ घट्यादि प्राप्त हुए। इनको जन्म इष्ट के घटयादि २०/४० में जमा कर देने से कुल जोड़ २३/०५ घट्यादि बनेगा। इस जोड़ को पुन: लग्न सारिणी में निकटवर्ती संख्या २३/०० सिंह (४) राशि के सामने और १ अंश के नीचे प्राप्त हुई। यह संख्या हमारे कुल जोड़ २३/०५ से केवल ५ पल कम है। अब अनुपातिक विधि द्वारा ५ पलों के कलादि निकाल लेने से हमें इष्टकालिक लग्न स्पष्ट पता चल जाएगा। **जैसे** यदि १२ पल के पीछे १ अंश अर्थात् ६० कला का अन्तर पड़ता है तो ५ पल के पीछे २५ कला का अन्तर पड़ेगा। इस प्रकार उपरोक्त इष्टकाल पर (२०/४० घट्यादि) ४ गत राशि अर्थात् सिंह लग्न, १ अंश, २५ कला पर लग्न स्पष्ट होगा। (लग्न स्पष्ट ४/०१°/२५'/००")। अधिक सूक्ष्मता के लिए हमारे कार्यालय से प्रकाशित पुस्तक **'ज्योतिष तत्त्व'** का अध्ययन करें।

उपरोक्त लंदन सारिणी विदेशी नगरों जैसे–लंदन, बर्मिंघम, साऊथ हैम्पटन, आक्सफोर्ड, स्लोह तथा लंदन के आसपास नगरों के लग्न निकालने के लिए विशेष उपयोगी सिद्ध होगी। ध्यान रहें, लग्न स्पष्ट करने के लिए लंदनादि नगरों का ही सूर्योदय एवं सूर्य स्पष्ट करना चाहिए।

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४
	प.	४६	५०	५५	५९	४	९	१४	१९	२४	२९	३५	४०	४६	५२	५८	३	९	१५	२१	२७	३२	३८	४४	५०	५७	२	८	१२	१८	२४
१ वृष	घ.	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८
	प.	३०	३५	४१	४७	५३	५९	५	११	२०	३०	३९	४८	५७	६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०७	१५	२३	३२	४१	५०	५९	८	१७	२६
२ मिथुन	घ.	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४
	प.	३५	४४	५३	०२	११	२०	३१	४२	५३	०२	१५	२८	४१	५४	०७	२०	३३	४६	५९	१२	२४	३७	५०	०३	१६	२९	४२	५५	०७	१९
३ कर्क	घ.	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१
	प.	२९	४२	५५	०८	२०	३३	४६	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५२	०७	२१	३५	५०	०४	१८	३२	४६	००	१३	२७	४१	५५	०९
४ सिंह	घ.	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८
	प.	२३	३७	५२	०६	२०	३४	४८	०३	१७	३१	४५	५९	१३	२७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	१८	१८	३२	४६	००	१४	२८	४२	५६	१०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२८	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३५
	प.	२४	३८	५२	०७	२१	३५	५०	०२	१६	३०	४५	५९	१३	२७	४२	५६	१०	२३	३७	५१	५	१९	३३	४७	०१	१५	२९	४३	५७	११
६ तुला	घ.	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२
	प.	२५	३९	५३	०७	२२	३७	५१	०५	२०	३४	४८	०२	१६	३१	४५	००	१३	२७	४१	५५	९	२३	३७	४१	५५	०९	२३	३७	५१	०५
७ वृश्चिक	घ.	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८
	प.	३०	४४	५८	१२	२६	४१	५६	१०	२३	३५	४७	५८	१२	२६	३८	५०	०२	१६	२८	४२	५४	०६	१९	३१	४४	५६	०८	२०	३२	४४
८ धनु	घ.	४८	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३
	प.	५९	११	२४	३७	४९	०२	१५	२७	३८	४७	५५	०४	१३	२२	३१	४०	४९	५८	०६	१५	२४	३३	४२	५१	००	०८	१७	२६	३५	४४
९ मकर	घ.	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७
	प.	५२	०१	१०	१९	२८	३७	४६	५५	००	०६	१२	१७	२३	२९	३४	४०	४६	५२	५८	०४	१०	१६	२२	२८	३४	३९	४५	५१	५७	०३
१० कुम्भ	घ.	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९
	प.	०८	१३	१९	२५	३०	३५	४१	४७	५२	५७	०१	०५	०९	१४	१९	२३	२८	३३	३७	४१	४५	५०	५५	००	०४	०८	१३	१७	२२	२७
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	प.	३१	३५	३९	४४	४८	५२	५७	०२	७	११	१५	२०	२४	२८	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५८	०३	०८	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२

अक्षांश १९°

पलभा ४।७।५५

मुम्बई, कल्याण, पूना, औरंगाबाद, अहमदनगर, बस्तर, खण्डाला, भुवनेश्वर, पुरी, दादरा आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
	६	१४	२१	२९	३७	४५	५३	१	१०	१९	२८	३६	४५	५४	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१६	२५
१ वृष	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२
	२५	३४	४३	५१	०	९	१८	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	५०	००	१०	२०	३०	४१	५२	२	१२	२३	३३	४३	५४	४	१४	२५
२ मिथुन	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	२४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
	२५	३५	४५	५६	६	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४८	५८	१०	२१	३२	४३	५५
३ कर्क	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
	५५	६	१७	२८	३९	५१	२	१३	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७
४ सिंह	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	२७	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५३	३	१४	२४	३५	४६	५६	६	१७	२८	३९	५०
५ कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
	५०	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४६	५७	८	१८	२९	४०	५०	१	१२	२२	३३	४३	५४	५	१५	२६	३७	४७	५८	०९
६ तुला	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
	९	१९	३०	४०	५१	०२	१२	२३	३४	४५	४६	७	१८	२९	४०	५१	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७
७ वृश्चिक	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
	३७	४९	००	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२९	४०	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२२	३२	४२	५४	५	१६	२७	३९	५०	१	१३
८ धनु	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
	१३	२४	३५	४६	४७	९	२०	३१	४१	५२	२	१२	२३	३३	४२	५४	४	१४	२५	३५	४५	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	८	१८	२९
९ मकर	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
	२९	३९	४९	००	१०	२०	३१	४१	५०	५९	८	१६	२५	३४	४३	५२	१	१०	१८	२७	३६	४५	५४	३	१२	२१	२९	३८	४७	५६	५
१० कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	५	१४	२३	३१	४०	४९	५८	७	१५	२३	३१	३९	४६	५४	२	१०	१८	२९	३४	४२	५०	५८	५	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९
११ मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३
	९	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६

अक्षांश २३°

पलभा ५।५।३८

कलकत्ता, अहमदाबाद, इटारसी, इन्दौर, उज्जैन, कटनी, कच्छ, जबलपुर, भोपाल, राँची, हौशंगाबाद आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	५९	६	१४	२१	२९	३७	४४	५२	०	९	१८	२६	३५	४४	५२	१	१०	१८	२७	३५	४४	५३	१	१०	१९	२७	३६	४४	५३	२	१०
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२
वृष	१०	१९	२८	३६	४५	५४	२	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२८	३३	४३	५३	४	१४	२४	३५	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	७
२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	७	१७	२७	३७	४८	५८	९	१९	३०	४१	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	४	१५	२७	३८
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	३८	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५४	५	१७
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१४	२५	३६	४७
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	४७	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५८	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२०	३२	४३	५४	६	१७	२८	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	००	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	२०	३०	४०	५०	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१३	२३	३३	४३	५४	४	१४	२४	३५	४५
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	४२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	४५	५५	५	१६	२६	३६	४६	५७	५	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६	१४	२३	३२	४०	४९	५८	६	१५	२४	३२	४१	४९	५८	७	१५
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	४८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	१५	२४	३३	४१	५०	५९	७	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५	२	१०	१७	२५	३३	४१	४७	५५	३	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	११	१८	२६	३३	४१	४९	५६	४	११	१९	२७	३४	४२	४९	५७	५	१२	२०	२७	३५	४३	५०	५८	५	१३	२१	२८	३६	४३	५१	५९

अक्षांश २७°

पलभा ६।६।५०

जयपुर, आगरा, अयोध्या, लखनऊ, कानपुर, कन्नौज, गोंडा, गोरखपुर, मथुरा, अजमेर, अलवर, जोधपुर, अलीगढ़, हरदोई, कन्नौज, इटावा, उन्नाव, देवरिया, फैजाबाद, फर्रूखाबाद, भरतपुर, ग्वालियर आदि नगरों के लिए

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३१	३९	४७	५६	४	१२	२१	२९	३७	४६	५४	२	११	१९	२७	३६	४४	५२
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३	४३
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	१७	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२९	४०	५२	३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४
५	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	००	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१२	२४
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	२४	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६	५८	०९
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५६	०८	१९	३१	४२	५४
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५४	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४५	५५	५	१५	२५	३६	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	०६
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	४३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	६	१६	२६	३६	४६	५६	०७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४८	५७	५	१३	२२	३०	३८	४७	५५	३	१२	२०	२८
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२८	३७	४५	५३	२	१०	१८	२७	३४	४१	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५९	६	१३
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२०	२७	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	५९	७	१४	२१	२८	३६	४३	४०

लग्न सारिणी (अक्षांश–२८°)

(अलीगढ़, बरेली, बुलन्दशहर, वृन्दावन, चुरू, नारनौल, झुंझुनू, बीकानेर, रामगढ़, फरीदाबाद नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
	प.	४८	५६	०३	१०	१७	२४	३१	३९	४७	५५	०३	१२	२०	२८	३६	४४	५३	०१	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	०७	१६	२४	३३	४०
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	प.	४९	५७	०५	१४	२२	३०	३८	४७	५५	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०८	१८	२८	३८	४८	५८	०८	१८	२८
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
	प.	३८	४८	५८	०८	१८	२८	३९	४९	०	१२	२३	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०३	१५	२६	३८	४९	०१
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
	प.	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	०६	१८	२९	४१	५३	०४	१६	२८	३९	५१	०३	१४	२६	३८	४९
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	०१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४५	५७	०८	१९	३१	४२	५४	०५	१६	२८	३९	५०	०२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४४	५५	०७	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२६	३८	४९	०	१२	२३	३५	४६	५७	०९	२०	३१	४३	५४	०५	२०	२८	४०	५१	०२	१४
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	२५	३६	४८	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	५०	०१
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४८	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१३	२५	३६	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	०९	२०	३२	४३	५५	०६	१८	२९	४१	५२	०४	१५	२७	३८	५०	०१	१२	२४	३५	४७
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
	प.	५८	१०	२१	३३	४४	५६	०७	१८	२९	३९	४९	५९	०९	१९	२९	३९	४९	५९	०	११	२९	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	२९	३७	४५	५४	०२	१०	१८	२७	३५	४३	५२	०	०८	१६	२५	३३	४१	४९	५८	०६	१४	२२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३१	३९	४७	५६	०४	१२	२०	२९	३६	४३	५०	५८	०४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५५	०२	०९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	०	०६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१३	२१	२८	३५	४२	४९	५६	०४	११	१८	२५	३२	३९	४७	५४	०१	०८	१५	२२	३०	३७	४४	५१	५८	०५	१३	२०	२७	३४	४१

लग्न सारणी अक्षांश २९°

उत्तर पलभा (६ ।३९ ।०५)

दिल्ली, अमरोहा, रोहतक, जीन्द, मेरठ, हिसार, गुड़गांव, मुरादाबाद, नैनीताल, गाज़ियाबाद आदि के लिए उपयोगी

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
	प.	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	११	१९	२७	३५	४४	५२	०	९	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८
१ वृष	घ.	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
	प.	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
	प.	३७	४७	५७	७	१७	२७	३८	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
	प.	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०
४ सिंह	घ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२५	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३२	४४
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
	प.	४४	५५	७	१८	२९	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३५	४६	५८	९	२०	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१४	२६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१६	२७	३९	५१	२	१४
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९
८ धनु	घ.	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२२	३०	३८	४६	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१४
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४१	४८

लग्न सारणी अक्षांश (३०°) पलभा ६/५५/४३

अम्बाला, चण्डीगढ़, कालका, कुराली, खन्ना, देहरादून, नाभा, नाहन, पटियाला, भटिण्डा, रोपड़, फाज़िल्का, सहारनपुर, फरीदकोट इत्यादि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१
१ वृष	घ.	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४८	००	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०
३ कर्क	घ.	१७	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	५४	६	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२१	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
	प.	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	४९	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३६	४७	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
	प.	२२	३४	४५	५७	९	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	००	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५	१३	२१	२९
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१५	२२	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३७

लग्न सारणी अक्षांश ३१।२० उत्तर पलभा (७।१७।२१)

जालन्धर, लुधियाना, चण्डीगढ़, रोपड़, फगवाड़ा, कपूरथला, होशियारपुर, फिरोज़पुर, शिमला, मण्डी, हमीरपुर, ऊना आदि के लिए

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	४१	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१४	२२	३०	३८	४६	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	३४	४२	५०	५८	६	१४	२३	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	प.	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५३	५	१६	२७	३८	५०	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५८	०९	२१	३२	४४
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	५५	०७	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४०	५२	४	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५१	०३	१५	२७	३८
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	५०	२	१४	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४३	५५	७	१८	३०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४२	५३	०५	१७	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३८	५०	०२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५८	०९	२१
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३३	४४	५६	०८	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४२	५४	०६	१७	२९	४१	५३	०५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	०५	१६
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	२८	४०	५२	०४	१६	२८	४०	५१	०३	१५	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	०८	२०	३२	४४	५५	०७
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
	प.	१८	३०	४२	५३	०५	१६	२८	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	२९	३९	४९	५९	९	१८	२८	३८	४७	५५	०३	११	१९	२७	३४	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३५
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	७	१४	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	८	१५	२१	२८	३५	४१	४८	५५	०२	९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३६	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३१	३८	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२७	३४

लग्न सारिणी (अक्षांश–३२°)

(अमृतसर, कठुआ, कुल्लू, गुरदासपुर, जोगिन्द्रनगर (हि.प्र.), दीनानगर, धर्मशाला, सुन्दरनगर, कांगड़ा, सरकाघाट आदि नगरों के लिए)

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
० मेष	घ.	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६
	प.	४०	४७	५३	०	०७	१४	२१	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	०७	१५	२३
१ वृष	घ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११
	प.	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७	१७	२७	३७	४७	५७	०७
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६
	प.	१७	२७	३७	४७	५७	०६	१६	२६	३८	५०	०१	१३	२४	३६	४७	५९	११	२२	३४	४५	५७	०८	२०	३१	४३	५५	०६	१८	२९	४१
३ कर्क	घ.	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	५२	०४	१६	२७	३९	५०	०३	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०१	१३	२५	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६
४ सिंह	घ.	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
	प.	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५७	०९	२०	३२	४४	५६	०७	१९	३१	४३	५५	०६	१८	३०
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
	प.	४१	५३	०५	१६	२८	४०	५२	०३	१५	२७	३९	५०	०२	१४	२६	३७	४९	०१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३५	४६	५८	१०	२२
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
	प.	३३	४५	५७	०८	२०	३२	४४	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४३	५५	०७	१९	३१	४२	५४	०६	१८	३०	४२	५४	०६	१८
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
	प.	३०	४२	५४	०६	१८	३०	४१	५३	०५	१७	२८	४०	५१	०३	१४	२६	३८	४९	०१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	०८
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
	प.	१९	३१	४३	५४	०६	१७	२९	४१	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३०	४०	५०	०	१०	१९	२९	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५	४३	५१	०	०७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	०३	११	१९	२७	३५
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
	प.	४३	५१	५९	०७	१५	२३	३१	३९	४६	५३	००	०७	१३	२०	२७	३४	४१	४७	५४	०१	०८	१५	२१	२८	३५	४२	४९	५५	०२	०९
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	२९	३७	४३	५०	५७	०३	१०	१७	२४	३१	३७	४४	५१	५८	०५	११	१८	२५	३२	३९	४५	५२	०	६	१२	१९	२६	३३

लग्न सारणी (अक्षांश ३३°)

पलभा ७।४८।३०

अखनूर, जम्मू, श्रीनगर, ऊधमपुर, रावलपिंडी, कठुआ, अनन्तनाग, किश्तवाड़, डोडा, रामबन, डल्हौज़ी आदि

अंश		०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	घ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
	प.	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१८	२६
१ वृष	घ.	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
	प.	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	००	१०
२ मिथुन	घ.	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
	प.	१०	२०	३०	४०	५०	५९	९	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	००	११	२३	३५	४६
३ कर्क	घ.	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
	प.	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४३	५५	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४
४ सिंह	घ.	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
	प.	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	२०	३२	४४	५६	८	१९	३०	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२९	४१
५ कन्या	घ.	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४
	प.	४१	५२	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२७	३९	५१	३	१४	२६	३८	५०	२	१४	२५	३७	४९	१	१३	२५	३६	४८	०	१२	२४	३६
६ तुला	घ.	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
	प.	३६	४७	५९	११	२३	३५	४७	५८	१०	२२	३४	४६	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५
७ वृश्चिक	घ.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६
	प.	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	५	१७	२८	४०	५१	३	१५	२६
८ धनु	घ.	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१
	प.	२६	३८	४९	१	१३	२४	३६	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६
९ मकर	घ.	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५
	प.	३६	४६	५६	६	१६	२५	३५	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	००	८	१५	२३	३१	३९	४७
१० कुम्भ	घ.	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९	५९
	प.	४७	५५	३	११	१९	२७	३४	४२	४९	५६	२	९	१६	२३	२९	३६	४३	४९	५६	३	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५६	३	१०	१६
११ मीन	घ.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
	प.	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५०	५७	४	१०	१७	२४	३०	३७	४४	५१	५७	४	११	१७	२४	३१	३७

दशमलग्न सारणी

(सर्वत्र उपयोगी)   लंकोदय २७८ । २९९ । ३२३

अंश	००	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५
० मेष	१८ ३३	१८ ४२	१८ ५२	१९ १	१९ १०	१९ १९	१९ २८	१९ ३८	१९ ४८	१९ ५८	२० ८	२० १८	२० २८	२० ३८	२० ४८	२० ५८
१ वृष	२३ २७	२३ ३७	२३ ४७	२३ ५७	२४ ७	२४ १७	२४ २७	२४ ३७	२४ ४८	२४ ५८	२५ ९	२५ २०	२५ ३१	२५ ४२	२५ ५२	२६ ३
२ मिथुन	२८ ४५	२८ ५५	२९ ०६	२९ १७	२९ २८	२९ ३८	२९ ४९	३० ०	३० ११	३० २२	३० ३२	३० ४३	३० ५४	३१ ५	३१ १५	३१ २६
३ कर्क	३४ ८	३४ १८	३४ २९	३४ ४०	३४ ५१	३५ १	३५ १२	३५ २३	३५ ३३	३५ ४३	३५ ५३	३६ ३	३६ १३	३६ २३	३६ ३३	३६ ४३
४ सिंह	३९ १२	३९ २२	३९ ३२	३९ ४२	३९ ५२	४० २	४० १२	४० २२	४० ३१	४० ४१	४० ५०	४० ५९	४१ ८	४१ १८	४१ २७	४१ ३६
५ कन्या	४३ ५५	४४ ४	४४ १४	४४ २३	४४ ३२	४४ ४१	४४ ५१	४५ ००	४५ १०	४५ १९	४५ २८	४५ ३७	४५ ४६	४५ ५६	४६ ५	४६ १४
६ तुला	४८ ३३	४८ ४२	४८ ५२	४९ १	४९ १०	४९ १९	४९ २९	४९ ३८	४९ ४८	४९ ५८	५० ८	५० १८	५० २८	५० ३८	५० ४८	५० ५८
७ वृश्चिक	५३ २७	५३ ३७	५३ ४७	५३ ५७	५४ ७	५४ १७	५४ २७	५४ ३७	५४ ४७	५४ ५८	५५ ९	५५ २०	५५ ३१	५५ ४२	५५ ५२	५६ ३
८ धनु	५८ ४५	५८ ५५	५९ ६	५९ १७	५९ २८	५९ ३८	५९ ४९	० ०	० ११	० २२	० ३२	० ४३	० ५४	१ ५	१ १५	१ २६
९ मकर	४ ८	४ १८	४ २९	४ ४०	४ ५१	५ १	५ १२	५ २३	५ ३३	५ ४३	५ ५३	६ ३	६ १३	६ २३	६ ३३	६ ४३
१० कुम्भ	९ १२	९ २२	९ ३२	९ ४२	९ ५२	१० २	१० १२	१० २२	१० ३१	१० ४१	१० ५०	१० ५९	११ ८	११ १८	११ २७	११ ३६
११ मीन	१३ ५५	१४ ४	१४ १३	१४ २३	१४ ३२	१४ ४१	१४ ५१	१५ ०	१५ ९	१५ १९	१५ २८	१५ ३७	१५ ४६	१५ ५६	१६ ५	१६ १४

अंश	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२१ ८	२१ १८	२१ २८	२१ ३८	२१ ४८	२१ ५८	२२ ८	२२ १७	२२ २७	२२ ३७	२२ ४७	२२ ५७	२३ ७	२३ १७	२३ २७
१ वृष	२६ १४	२६ २५	२६ ३५	२६ ४६	२६ ५७	२७ ८	२७ १८	२७ २९	२७ ४०	२७ ५१	२८ २	२८ १२	२८ २३	२८ ३४	२८ ४५
२ मिथुन	३१ ३७	३१ ४८	३१ ५८	३२ ९	३२ १९	३२ ३०	३२ ४१	३२ ५२	३३ ३	३३ १४	३३ २५	३३ ३५	३३ ४३	३३ ५७	३४ ८
३ कर्क	३६ ५३	३७ ३	३७ १३	३७ २३	३७ ३३	३७ ४३	३७ ५३	३८ २	३८ १२	३८ २२	३८ ३२	३८ ४२	३८ ५२	३९ २	३९ १२
४ सिंह	४१ ४५	४१ ५५	४२ ४	४२ १३	४२ २२	४२ ३२	४२ ४१	४२ ५०	४२ ५९	४३ ९	४३ १८	४३ २७	४३ ३७	४३ ४६	४३ ५५
५ कन्या	४६ २३	४६ ३३	४६ ४२	४६ ५१	४७ ०	४७ १०	४७ १९	४७ २८	४७ ३८	४७ ४७	४७ ५६	४८ ५	४८ १५	४८ २४	४८ ३३
६ तुला	५१ ८	५१ १८	५१ २८	५१ ३८	५१ ४८	५१ ५८	५२ ७	५२ १७	५२ २७	५२ ३७	५२ ४७	५२ ५७	५३ ७	५३ १७	५३ २७
७ वृश्चिक	५६ १४	५६ २५	५६ ३४	५६ ४६	५६ ५७	५७ ८	५७ १८	५७ २९	५७ ४०	५७ ५१	५८ २	५८ १२	५८ २३	५८ ३४	५८ ४५
८ धनु	१ ३७	१ ४८	१ ५८	२ ९	२ २०	२ ३१	२ ४१	२ ५२	३ ३	३ १४	३ २५	३ ३५	३ ४६	३ ५७	४ ८
९ मकर	६ ५३	७ ३	७ १३	७ २३	७ ३३	७ ४३	७ ५३	८ २	८ १२	८ २२	८ ३२	८ ४२	८ ५२	९ २	९ १२
१० कुम्भ	११ ४५	११ ५५	१२ ४	१२ १३	१२ २२	१२ ३२	१२ ४१	१३ ५०	१३ ०	१३ ९	१३ १८	१३ २७	१३ ३७	१३ ४६	१३ ५५
११ मीन	१६ २३	१६ ३३	१६ ४२	१६ ५१	१७ ०	१७ १०	१७ १९	१७ २८	१७ ३८	१७ ४७	१७ ५६	१८ ५	१८ १५	१८ २४	१८ ३३

ग्रहों के छः प्रकार के बल

स्थान बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृक् बल, यह छः प्रकार के बल हैं। फलित ज्ञान के लिए इन बलों को जान लेना आवश्यक है। **स्थान बल**—जो ग्रह उच्च, मित्रगृही, मूल त्रिकोणस्थ, स्वनवांशस्थ अथवा द्रेष्काणस्थ होता है, वह स्थान बली कहलाता है। **दिग्बल**—बुध और गुरु लग्न में रहने से, शुक्र और चन्द्रमा चतुर्थ में रहने से, शनि सप्तम में रहने से, सूर्य और मंगल दशम स्थान में रहने से दिग्बली होते हैं। **कालबल**—रात में जन्म होने पर चन्द्र, शनि और मंगल तथा दिन में जन्म होने पर सूर्य, बुध और शुक्र कालबली होते हैं। मतान्तर से बध को सर्वदा काल बली माना जाता है। **नैसर्गिक बल**—शनि, मंगल, बुध, शुक्र, चन्द्र और सूर्य उत्तरोत्तर बली होते हैं। **चेष्टाबल**—मकर से मिथुन पर्यन्त किसी राशि में रहने से सूर्य और चन्द्रमा तथा मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि चन्द्रमा के साथ रहने से चेष्टाबली होते हैं। **दृक् बल**—शुभ ग्रहों से दृष्ट ग्रह दृक् बली होते हैं। बलवान् ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस भाव में रहता है, उस भाव का फल देता है। ग्रहों की राशि स्वभाव और ग्रहस्वभाव दोनों का समन्वय कर फल अवगत करना चाहिये।

दशम स्पष्ट तथा भावस्पष्ट

इष्ट कालिक द्वादश भावों की वास्तविक स्थिति जानने के लिए भाव-स्पष्ट किया जाता है। भाव स्पष्ट के लिए दशम् लग्न सारिणी का प्रयोग किया जाता है॥ **विधि इस प्रकार है।—लग्न स्पष्ट** करने के लिए लग्न सारिणी में सूर्य स्पष्ट के राश्यंशों से प्राप्त घटी-पलों को इष्टकाल के घटी पलों में जमा करने पर जो **योगफल** मिले उसको **दशम लग्न सारिणी** के निकटस्थ कोष्ठकों में देखने पर जो राशि अंशादि प्राप्त होंगे वही **दशम लग्न स्पष्ट** होगा।

भाव स्पष्ट का उदाहरण—मान लो किसी जातक का जन्मोष्टकाल २०।४५ घट्यादि है तथा **जालंधर लग्न सा० से** सूर्य स्पष्ट (०।१२।७) द्वारा प्राप्तांक ४।९ है, और लग्न स्पष्ट ४।१०।३५ है। इष्ट और सू. स्प. से प्राप्तांकों को जमा करने से हमें २४।५४ घट्यादि प्राप्त हुए। इन प्राप्त योगाकों को **दशम् लग्न सारिणी** में देखने पर हमें **दशम् भाव स्पष्ट** १।८।३६ प्राप्त हुआ। **दशभाव** स्प. में ६ राशि जोड़ने से **चतुर्थ भाव** तथा ४ थे भाव में से लग्न भाव स्पष्ट घटा कर शेष को ६ द्वारा भाग देने पर जो अंश-कलादि प्राप्त हों, वह **षष्ठांश** कहलाता है। **षष्ठांश** को लग्न भाव में जोड़ने से लग्न की सन्धि तथा इस सन्धि में षष्ठांश को पुनः जोड़ने से द्वितीय भाव स्प. होगा। **द्वितीय भाव में षष्ठांश** जोड़ने से दूसरे भाव की सन्धि, इस सन्धि में षष्ठांश जमा करने से **तृतीय भाव** होगा। तृतीय भाव में षष्ठांश जमा करते से **३रे भाव की सन्धि**, और इस सन्धि में **षष्ठांश** जोड़ने से **चतुर्थ भाव** प्राप्त हो जाता है। अब उसी षष्ठांश को एक राशि में से घटाकर शेष को ४थें भाव में जोड़ने से चतुर्थ भाव की सन्धि, फिर इस सन्धि में उसी शेष को जोड़ने से **पंचम भाव** होगा। लग्न भाव स्पष्ट में ६ राशि जोड़ने से सप्तम भाव तथा प्रथम लग्नभाव की सन्धि में ६ राशि युक्त करने से सप्तम भाव की सन्धि होगी। इसी प्रकार २रें, ३रें भावों में प्रत्येक में क्रम से ६-६ राशि जोड़ने से **अष्टम, नवम, दशम, एकादश आदि भाव एवं सन्धियाँ प्राप्त** हो जाती हैं। —पं० विवेक शर्मा ज्यो.

षड्वर्ग सारणी चक्रम्

राशि	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
	अंशादि	२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
	रा. षट्	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
०	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	सं	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रि	१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
१	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	सं	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
२	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	सं	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रि	१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
३	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	सं	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
४	हो	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	सं	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रि	१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
५	हो	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	सं	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५
	त्रि	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

राशि	भाग	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४२	०	०	०	५१	०	०	०
६		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
		७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
		७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
तु.		७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
		१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
		२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
वृ.		८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
		९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
		९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
		१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
ध.		९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
		१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
		४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
		१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
म.		१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१०		५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
		११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
		११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
		७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
कुं		११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
		१	१	१	११	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११		४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
		१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
		६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
		४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
मी.		१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११
		२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैं. अन्तर

नोट—जिस शहर के आगे (–) का चिन्ह लगाया गया है, वह नगर 82½ रेखांश से उतने मिनट पश्चिम में है और जिस स्थान पर (+) का चिन्ह लगा है, वह स्थान उतने मिनट पूर्व में है। सूर्योदयास्त जानने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त जाने के लिए जिन नगरों का स्टै. अन्तर (–) है, उन्हें मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी में (–) की बजाए (+) करना होगा तथा '+' चिन्ह वाले नगरों को मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से प्राप्त सू. उ. – सू. अ. में (–) ऋण करें। स्पष्टीकरण = (पं.) = पंजाब ; (आं. प्र.) = आंध्रप्रदेश ; (अरु) = अरुणांचल प्रदेश ; (आसा) = आसाम ; (उत्तरा.) = उत्तराखण्ड ; (उ.प्र.) = उत्तप्रदेश ; (छ. ग.) = छत्तीसगढ़ ; (गुज.) = गुजरात ; (राज.) = राजस्थान ; (हरि.) = हरियाणा ; (बिहा.) = बिहार ; (हि. प्र.) = हिमाचल प्रदेश ; (महा.) = महाराष्ट्र ; (म. प्र.) = मध्यप्रदेश ; (ज. का.) = जम्मू–काश्मीर।

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
अण्डेमान एवं निकोबार			
पोर्टब्लेअर	11 40	92 45	+41 00
अरुणांचल प्रदेश			
ईटानगर	27 08	93 37	+44 28
तवांग	27 33	91 48	+37 12
आंध्रा प्रदेश			
अनन्तपुर	14 41	77 36	–19 36
Cuddapah	14 28	78 49	–14 44
Guntur	16 18	80 27	–08 12
Kurnool	15 50	78 03	–17 48
Vizianagaram	18 07	83 25	+03 40
विजयवाड़ा	16 31	80 39	–07 24
विशाखापट्टनम्	17 42	83 18	+03 12
गोलकुण्डा(आं. प्र.)	17 24	78 23	–16 28
तिरुपति(आंध्र.)	13 40	79 24	–12 24
आसाम			
उ.लखीमपुर	27 14	94 07	+46 28
गुवाहाटी	26 11	91 44	+36 56
जोरहाट	26 45	94 13	+46 52
तेजपुर	26 38	92 49	+41 16
डिब्रूगढ़	27 29	94 54	+49 36
डिगबोई	27 23	95 38	+52 32
लखीमपुर	27 14	94 15	+47 00

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
उड़ीसा			
कटक	20 30	85 50	+13 20
बालासोर	21 30	86 56	+17 44
बहरामपुर	19 21	84 51	+09 24
भुवनेश्वर	20 14	85 50	+13 20
उत्तरप्रदेश			
अलीगढ़	27 53	78 05	–17 40
अमरोहा	28 55	78 28	–16 08
अमेठी	26 08	81 50	–02 40
अयोध्या	26 48	82 14	–01 04
अकबरपुर	26 25	82 33	+00 12
अगोरी	24 34	82 56	+01 44
अच्छनेरा	27 11	77 46	–18 56
अम्बाह	26 44	78 15	–17 00
अतरौली	28 00	78 16	–16 48
अफज़लगढ़	29 23	78 41	–15 16
अल्लापुर	27 52	79 19	–12 44
अलीगंज	27 30	79 11	–13 16
आगरा	27 11	78 01	–17 56
इलाहाबाद	25 28	81 54	–02 24
इटावा	26 46	79 02	–13 52
इटवा	27 20	82 42	+00 48
ईसानगर	27 54	81 14	–05 04
उझानी	28 00	79 02	–13 52
उतरौला	27 19	82 25	–00 20

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
उन्नाव	26 33	80 31	–07 56
उरई	25 58	79 27	–12 12
उस्का	27 08	83 12	+02 48
एटा	27 38	78 40	–15 20
ऐत	25 56	79 12	–13 12
औरैया	26 26	79 32	–11 52
औरंगाबाद	24 44	84 22	+07 28
कटारनियां घाट	28 22	81 10	–05 20
कदौरा	26 00	79 50	–10 40
कन्नौज	27 03	79 58	–10 08
कमसिन	25 32	80 56	–06 16
करहल	27 02	78 58	–14 08
कर्वी	25 12	80 54	–06 24
कसिया	26 44	83 56	+05 44
कानपुर	26 28	80 22	–08 32
कांठ	29 01	78 38	–15 28
कादीपुर	26 11	82 24	–00 24
कान्धला	29 20	77 15	–21 00
काम्पिल	27 36	79 16	–12 56
काल्पी	26 06	79 44	–11 04
कासगंज	27 50	78 40	–15 20
कुञ्छा	28 06	84 21	+07 24
कुण्डा	25 43	81 30	–04 00
कुराओं	25 00	82 05	–01 40
कुरौली	27 25	79 00	–14 00
कुलपहाड़	25 20	79 40	–11 20
कुंच	26 00	79 08	–13 28

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मि. सैं.
कैसरगंज	27 20	81 34	–03 44
कैप्टनगंज	26 56	83 43	+04 52
कैमगंज	27 35	79 20	–12 40
कोरा	26 06	80 27	–08 12
कोरियालाघाट	28 20	81 04	–05 44
कोसी	27 50	77 26	–20 16
कौपागंज	26 00	83 34	+04 16
खतौली	29 18	77 43	–19 08
खागा	25 48	81 07	–05 32
खिलचीपुर	24 00	76 34	–23 44
खुर्जा	28 15	77 50	–18 40
खेड़ी	27 55	80 49	–06 44
खैर	27 57	77 50	–18 40
खैरागढ़	26 58	77 53	–18 28
खैराबाद	27 31	80 45	–07 00
गंगोह (सहार.)	29 45	77 16	–20 56
गढ़मुक्तेश्वर	28 49	77 05	–17 40
गरौठा	25 35	79 19	–12 44
गाज़ियाबाद	28 40	77 26	–20 16
गाजीपुर	25 34	83 35	+04 20
गुरसराए	25 38	79 12	–13 12
गुन्नौर	28 15	78 27	–16 12
गुलावठी	28 37	77 48	–18 48
गोण्डा	27 08	82 01	–01 56
गोरखपुर	26 45	83 24	+03 36
गोलागोकर्णनाथ	28 06	80 30	–08 00
गोवर्धन	27 32	77 28	–20 08

भारत के प्रसिद्ध [illegible] स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.	उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चकला	25 02	83 12	+02 48	डेरापुर	26 28	79 48	−10 48	फरीदनगर	28 46	77 37	−19 32	भरथाना	26 45	79 14	−13 04
चकिया	26 26	85 02	+10 08	ताजपुर	29 08	78 30	−16 00	फरीदपुर	28 13	79 33	−11 48	भाण्डेर	25 44	78 45	−15 00
चन्दौसी	28 28	78 48	−14 48	दानापुर	25 40	85 02	+10 08	फर्रूखाबाद	27 24	79 34	−11 44	भोनगांव	27 15	79 11	−13 16
चरखाड़ी	25 25	79 46	−10 56	दालमऊ	26 02	81 02	−05 52	फिरोज़ाबाद	27 09	78 25	−16 20	भोवाली	29 23	79 31	−11 56
चित्रकूटधाम	25 12	80 52	−06 32	दूधी	24 13	83 15	+03 00	फैज़ाबाद	26 47	82 08	−01 28	**मन्दावर**	29 30	78 08	−17 28
चिरगांव	25 36	78 50	−14 40	देवगांव	25 24	83 01	+02 04	बक्सर	25 35	83 59	+05 56	मऊ	25 17	81 23	−04 28
चुनार	25 10	82 56	+01 44	देवबन्द	29 42	77 41	−19 16	बगहा	27 06	84 05	+06 20	मऊ-ऐम्मा	25 42	81 55	−02 20
चोपां	24 30	83 00	+02 00	देवरिया	26 32	83 45	+05 00	बदायूँ	28 02	79 07	−13 32	मऊनाथभंजन	25 57	83 33	+04 12
छतरपुर	24 56	79 38	−11 28	देहरी	24 52	84 11	+06 44	बनारस (वाराणसी)	25 20	83 00	+02 00	मऊरानीपुर	25 15	79 08	−13 28
छपरा	24 39	76 48	−22 48	धामपुर	29 19	78 31	−15 56	बबीना	25 15	78 28	−16 08	मखदूमनगर	26 28	82 46	+01 04
छाटा	27 45	77 30	−20 00	नगीना	29 27	78 27	−16 12	बहराइच	27 35	81 36	−03 36	मछलीशहर	25 41	82 25	−00 20
छितौनी	27 10	83 58	+05 52	नजीबाबाद	29 38	78 20	−16 40	बहेड़ी	28 47	79 30	−12 00	मथुरा	27 30	77 41	−19 16
जगदीशपुर	25 30	84 26	+07 44	नरैनी	25 11	80 29	−08 04	बरवासागर	25 23	78 44	−15 04	मवाना	29 06	77 55	−18 20
जपिया	24 34	84 00	+06 00	नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28	बलिया	25 45	84 10	+06 40	मलीहाबाद	26 55	80 43	−07 08
जलालाबाद	27 44	79 40	−11 20	नवाबगंज	26 52	82 08	−01 28	बरेली	28 21	79 25	−12 20	महमूदाबाद	27 18	81 07	−05 32
जलेसर	27 29	78 20	−16 36	नानपाड़ा	27 52	81 30	−04 00	बलरामपुर	27 26	82 11	−01 16	महरौली	24 35	78 43	−15 08
जसरा	25 17	81 48	−02 48	निहतौर	29 20	78 23	−16 28	बस्ती	26 48	82 43	+00 52	महाराजगंज	26 07	84 29	+07 56
जसराना	27 15	78 42	−15 12	**नोएडा**	28 35	77 20	−20 40	बागपत	28 57	77 13	−21 08	महाराजगंज	27 09	83 34	+04 16
जसवन्तनगर	26 52	78 56	−14 16	पट्टी	25 55	82 12	−01 12	बाड़ी	26 39	77 36	−19 36	महोबा	25 17	79 52	−10 32
जहांगीराबाद	28 26	78 06	−17 36	पदरौना	26 55	83 59	+05 56	बान्दा	25 29	80 20	−08 40	मिर्ज़ापुर	25 09	82 35	+00 20
जहानाबाद	25 12	84 58	+09 52	पयागपुर	27 25	81 48	02 48	बाराबंकी	26 55	81 12	−05 12	मिसरिख	27 27	80 31	−07 56
जाईस	26 16	81 30	−04 00	पवायां	28 04	80 06	−09 36	बांसी	27 11	82 56	+01 44	मुंगराबादशाहपुर	25 40	82 11	−00 16
जानसठ (मु.)	29 20	77 52	−18 32	पिलखुआं	28 43	77 39	−19 24	बाह	26 53	78 36	−15 36	मुज़फ्फरनगर	29 28	77 41	−19 16
जालौन	26 10	79 20	−12 40	पिहानी	27 38	80 12	−09 12	बिजनौर	29 22	78 08	−17 28	मुगलसराय	25 18	83 07	+02 28
जिगनी	25 46	79 26	−12 16	पीलीभीत	28 38	79 48	−10 48	बिलग्राम	27 11	80 02	−09 52	मुबारकपुर	26 05	83 18	+03 12
जौनपुर	25 45	82 40	+00 40	पुखरायां	26 14	79 51	−10 36	बिलसी	28 08	78 55	−14 20	मुरादाबाद	28 51	78 49	−14 44
झाँसी	25 27	78 37	−15 32	पुरवा	26 28	80 50	−06 40	बिलारी	28 38	78 48	−14 48	मुरादनगर (गा.)	28 47	77 30	−20 00
टप्पल	28 04	77 36	−19 36	पूरनपुर	28 31	80 09	−09 24	बिलासपुर	28 53	79 16	−12 56	मुस्किरा	25 40	79 48	−10 48
टाण्डा	28 56	78 59	−14 04	प्रतापगढ़	25 50	81 59	− 2 04	बीसलपुर	28 18	79 48	−10 48	मुहम्मदी	27 57	80 13	−09 08
टूण्डला	27 10	78 15	−17 00	फतेहपुर	25 56	80 48	−06 48	बुलन्दशहर	28 24	77 51	−18 36	मेरठ	28 59	77 42	−19 12
ठाकुरद्वारा	29 10	78 50	−14 40	फतेहपुरसीकरी	27 06	77 40	−19 20	बुढ़ाना	29 17	77 28	−20 08	मेहनगर	25 53	83 07	+02 28
डिबाई	28 12	78 16	−16 56	फतेहाबाद	27 01	78 19	−16 44	भदोही	25 25	82 34	+00 16	मेहन्दाबाल	26 59	83 07	+02 28

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

उत्तर प्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मैनपुरी	27 14	79 01	−13 56
मैलानी	28 17	80 21	−08 36
रसरा	25 51	83 51	+05 24
राजाखेड़ा	26 55	78 11	−17 16
राबर्ट्सगंज	24 42	83 04	+02 16
रामनगर	25 17	83 02	+02 08
रायबरेली	26 13	81 14	−05 04
रूदौली	26 45	81 45	−03 00
लखनऊ	26 51	80 55	−06 20
लखीमपुर	27 57	80 46	−06 56
ललितपुर	24 41	78 25	−16 20
शाहजहाँपुर	27 53	79 55	−10 20
शिकोहाबाद	27 06	78 36	−15 36
सम्भल	28 35	78 33	−15 48
सरधना	29 09	77 37	−19 32
सहसवां	28 05	78 45	−15 00
सहारनपुर	29 58	77 33	−19 48
सहानीकलां	28 41	77 25	−20 20
सहानीखुर्द	28 42	77 25	−20 20
सिंगरामऊ	25 57	82 23	−00 28
सिधौली	27 17	80 50	−06 40
सिरसागंज	27 03	78 42	−15 12
सीतापुर	27 34	80 41	−07 16
सुल्तानपुर	26 16	82 04	−01 44
सेमरिया	24 16	79 54	−10 24
सैदपुर	25 33	83 11	+02 44
सोनवां	27 40	81 45	−03 00
हमीरपुर	25 57	80 09	−09 24
हरदोई	27 25	80 07	−09 32
हैरया	26 47	82 36	+00 24
हलिया	24 48	82 20	−00 40
[illegible]	28 43	78 17	−16 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
हाजीपुर	25 41	85 13	+10 52
हाथरस	27 36	78 03	−17 48
हापुड़	28 43	77 47	−18 52
नवाबगंज	28 33	79 38	−11 28
नवाबगंज	26 52	82 08	−01 28
उत्तराखण्ड			
अल्मोड़ा	29 37	79 40	−11 20
आमपाटा	30 17	78 37	−15 32
आदिब्रदी	30 10	79 12	−13 12
उत्तरकाशी	30 44	78 27	−16 12
उरवीमठ	30 31	79 07	−13 32
ऋषिकेश	30 07	78 18	−15 12
कर्णप्रयाग	30 15	79 16	−12 56
कपकोट	29 58	79 54	−10 54
काठगोदाम	29 16	79 32	−11 52
काशीपुर	29 13	78 57	−14 12
काण्डी	29 56	78 25	−16 20
केदारनाथ	30 44	79 04	−13 44
केनूर	30 03	79 01	−13 56
कोटद्वार	29 45	78 32	−15 52
खानपुर	29 36	78 07	−17 32
खाती	30 08	79 54	−10 54
गरजिया	29 29	79 06	−13 36
गंगनाणी	30 55	78 42	−15 12
गंगोत्तरी	30 39	79 02	−13 52
गंगापुर	26 30	76 44	−23 04
गिरगांव	30 02	80 07	−09 32
घरमघर	29 52	80 01	−09 56
घनस्याली	30 27	78 13	−17 08
चकराता (देह.)	30 42	77 51	−18 36
चम्बा	[illegible]	[illegible]	[illegible]

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चमौली	30 24	79 21	−12 36
चन्दौसी	28 27	78 46	−14 56
चम्पावत	29 20	80 06	−09 36
चुरानी	29 47	78 55	−14 20
जमनोत्री	31 01	78 27	−16 12
जोशीमठ	30 34	79 34	−11 44
टनकपुर	29 02	80 08	−09 28
टिहरी	30 32	78 31	−15 56
डांगचौरा	30 17	78 19	−15 32
डाण्डा	29 10	79 55	−10 20
डीडीहाट	29 48	80 12	−09 12
डोईवाला	30 12	78 06	−17 36
तेजम	29 56	80 10	−09 20
देहरादून	30 19	78 02	−17 52
धनोलटी	30 25	78 19	−16 44
नरेन्द्रनगर	30 10	78 18	−16 48
नन्द्रप्रयाग	30 19	79 24	−12 24
नैनीताल	29 23	79 27	−12 12
पिन्सवार	30 38	78 42	−15 12
पिथौरगढ़	29 35	80 13	−09 08
पीपलकोटी	30 26	79 27	−12 12
पौड़ीगढ़वाल	30 09	78 47	−14 52
बद्रीनाथ	30 44	79 29	−12 04
भगवानपुर	29 59	77 56	−18 16
भटवाड़ी	30 49	78 36	−15 36
मंगलौर	29 48	77 52	−18 32
मनेरी	30 41	78 30	−16 00
मंसूरी	30 27	78 05	−17 40
मोलनेऊँ	30 22	78 36	−15 36
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

उत्तराखण्ड के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
रानीखेत	29 39	79 25	−12 20
राजगढ़ी	30 52	78 49	−14 44
रामनगर	29 24	79 07	−13 32
राजपुर	30 25	78 06	−17 36
रामपुर	28 49	79 02	−13 52
रायपुर	30 19	78 06	−17 36
रूद्रपुर	30 26	77 59	−18 04
रूद्रप्रयाग	30 16	78 59	−14 04
रूड़की	29 52	77 53	−18 28
लक्सर	29 49	78 02	−17 52
लम्बगाँव	30 29	78 31	−15 56
लालकुआं	29 06	79 32	−11 52
लालढाग	29 50	78 19	−16 44
लिसकोट	29 46	79 01	−13 56
लैंसडाऊन	29 50	78 41	−15 16
विकासनगर	30 29	77 50	−18 40
श्रीनगर (गढ़वा)	30 13	78 47	−14 52
सहसपुर (देह.)	30 24	77 58	−18 08
हरिद्वार	29 58	78 10	−17 20
हरकीदून	30 58	78 24	−16 24
हल्द्वानी	29 13	79 31	−11 56
कर्नाटक			
बैंगलुरु	12 59	77 35	−19 40
गुलबर्गा	17 20	76 50	−22 40
मैसूर	12 18	76 39	−23 24
हुबली	15 20	75 14	−29 04
केरला			
कोचीन	09 58	76 14	−25 04
त्रिवन्तपुरम्	12 40	76 55	−22 20
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
गुजरात			
अंकलेश्वर	21 36	73 00	−38 00
अंजार	23 08	70 01	−49 56
अमरापुर	21 45	70 02	−49 52
अमरेली	21 37	71 14	−45 04
अमोद	21 59	72 54	−38 24
अहमदाबाद	23 02	72 40	−39 20
आनन्द	22 34	72 56	−38 16
आनन्दपुर	22 10	71 08	−45 28
ईदर	23 50	73 00	−38 00
उपलेटा	21 44	70 17	−48 52
ओलपाड़	21 20	72 49	−38 44
कच्छ (भुज)	22 50	70 25	−48 20
कटाना	22 18	72 49	−38 44
कलोल(महेसाणा)	23 15	72 29	−40 04
कांडला	23 03	70 11	−49 16
कुटियाना	21 39	71 04	−45 44
कोरल	21 53	73 10	−37 20
खम्भात	22 20	72 38	−39 28
खम्भालिया	22 12	69 39	−51 24
खावड़ा	23 51	69 43	−51 08
गोधरा	22 45	73 38	−35 28
जखाऊ	23 13	68 43	−55 08
जसदान	22 02	71 12	−45 12
जाफराबाद	20 52	71 22	−44 32
जामनगर	22 28	70 04	−49 44
जारोद	22 26	73 20	−36 40
जूनागढ़	21 31	70 28	−48 08
जेतपुर	21 44	70 37	−47 32
जोड़िया	22 42	70 18	−48 48

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
झिंझुवाड़ा	23 30	71 38	−43 28
डीसा	24 15	72 10	−41 20
ढोला	20 51	71 48	−42 48
तनखला	21 57	72 50	−38 40
तालाला(जूना.)	21 02	70 32	−47 48
तालाजा	21 21	72 03	−41 48
थराड़	24 24	71 38	−43 28
दभोई	22 11	73 26	−36 16
दासदा	23 19	71 50	−42 40
देहज	21 42	72 35	−39 40
देवदार	24 07	71 50	−42 40
दोहाद	22 47	74 18	−32 48
द्वारिका	22 14	68 58	−54 08
धर्मपुर	20 32	73 11	−37 16
धारी	21 20	71 01	−45 56
धुले	20 54	74 47	−30 52
धोराजी	21 44	70 27	−48 12
नडियाद	22 41	72 55	−38 20
नवसारी	20 51	72 55	−38 20
नारा	23 39	69 10	−53 20
नालिया	23 18	68 50	−54 40
पड़ाना	22 21	69 52	−50 16
पाटन	23 50	72 07	−41 16
पाटरी	23 08	71 10	−45 20
पालनपुर	24 10	72 26	−40 16
पोरबन्दर	21 38	69 36	−51 36
बगासरा	20 58	70 56	−46 16
बचाऊ	23 20	70 18	−48 48
बजाना	23 04	71 45	−43 00

गुजरात के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बड़ोदा	22 18	73 12	−37 12
बरूच	21 38	72 56	−38 16
बुलसार	20 38	72 56	−38 16
बोताड़	22 10	71 40	−43 20
भंगोर	22 02	69 55	−50 20
भरूच	21 40	72 58	−38 08
भावनगर	21 46	72 09	−41 24
भुज	23 16	69 40	−51 20
महेसाणा	23 37	72 28	−40 08
महुआ	21 05	71 48	−42 48
माधवपुर	21 18	70 01	−49 56
मालसार	22 00	73 22	−36 32
रतनपुर	21 44	73 16	−36 56
राजकोट	22 18	70 47	−46 52
रापार	23 34	70 38	−47 28
लखपत	23 49	68 47	−54 52
लूनावाड़ा	23 08	73 37	−35 32
वड़ोदरा	22 18	73 12	−37 12
वलसाड़	20 40	72 55	−38 20
वादनगर	23 47	72 38	−39 28
वीजापुर	23 34	72 45	−39 00
सन्तालपुर	23 45	71 10	−45 20
सुरेन्द्रनगर	22 42	71 41	−43 16
सूरत	21 10	72 50	−38 40
सिहोर	21 42	71 58	−42 08
सोनगढ़	20 59	70 29	−48 04
सोमनाथ	21 00	70 30	−48 00
हडोल	23 55	73 13	−37 08
हिम्मतनगर	23 36	72 57	−38 12

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
गोवा			
पंजिम	15 29	73 50	−34 40
मडगांव	15 18	73 57	−34 12
जम्मू-कश्मीर			
अनन्तनाग	33 43	75 12	−29 12
अखनूर	32 54	74 45	−31 00
अवन्तीपूरा	33 56	75 03	−29 48
अमरनाथगुफा	34 13	75 33	−27 48
उड़ी	34 04	74 02	−33 52
ऊधमपुर	32 56	75 08	−29 28
कठुआ	32 22	75 31	−27 56
कटरा	33 01	74 58	−30 08
कारगिल	34 30	76 13	−25 08
किश्तवाड़	33 19	75 48	−26 48
कुलगाम	33 42	75 02	−29 52
केरन	34 40	73 59	−34 04
कोटली	33 30	73 53	−34 12
खयालू	35 10	76 20	−24 40
गिलगित	35 55	74 22	−32 32
गुलमर्ग	34 05	74 25	−32 20
गुरयास	34 38	74 56	−30 16
चिनेनी	33 01	75 20	−28 40
चिलास	35 27	74 06	−33 36
चुशूल	33 35	78 39	−15 24
छम्ब	32 51	74 23	−32 28
जम्मू	32 43	74 54	−30 24
जंगला	33 40	77 00	−22 00
जास्कार	33 20	77 00	−22 00
द्रास	34 22	75 50	−26 40

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

जम्मू-कश्मीर के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
नवांशहर	32 30	74 46	−30 56
नागिर	36 17	74 45	−31 00
नौशेहरा	33 11	74 17	−32 52
पहलगांव	34 01	75 24	−28 24
परिपंजाल	33 36	74 22	−22 32
पुंछ	33 51	74 08	−33 28
बनिहाल	**33 32**	**75 19**	**−28 44**
बटोटी	33 06	75 19	−28 44
बटोत	33 06	75 19	−28 44
बड़गाम	34 00	74 44	−31 04
बसौली	32 30	75 49	−26 24
बारामूला	34 10	74 20	−32 40
मनावर	32 50	74 25	−32 20
मार्तण्ड	33 48	75 18	−28 48
मुज़फ्फराबाद	34 22	73 31	−35 56
रामनगर	32 50	75 22	−28 32
राजौरी	**33 23**	**74 18**	**−32 48**
रामबन	**33 14**	**75 15**	**−29 00**
रियासी	33 04	74 53	−30 28
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
वैष्णोदेवी	33 03	74 56	−30 16
शेरकिला	36 05	74 04	−33 44
श्रीनगर	34 06	74 51	−30 36
सोपूर	34 19	74 30	−32 00
सोनामर्ग	34 19	75 20	−28 40
सोन्दर	33 29	75 57	−26 12
लद्दाख (रेंज)	32 00	80 00	−10 00
झारखण्ड			
जमशेदपुर	22 50	86 10	+14 40
राँची	23 23	85 23	+11 32

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
तामिलनाडू			
चेन्नई	13 05	80 17	−08 52
रामेश्वरम्	09 17	79 22	−12 32
तेलंगाना			
करनूल	15 50	78 03	−17 48
हैदराबाद	17 24	78 30	−16 00
त्रिपुरा			
अगरतला	23 49	91 18	+35 12
दादर-नगर-हवेली			
सिल्वासा	20 17	73 00	−38 00
डमन एण्ड डियू			
डामन	20 25	72 51	−38 36
डियू (Diu)	20 42	70 59	−46 04
दिल्ली			
पु. दिल्ली	28 39	77 12	−21 12
शाहदरा	28 40	77 19	−20 44
न्यू दिल्ली	28 40	77 13	−21 08
नागालैण्ड			
कोहिमा	25 41	94 07	+46 28
प. बंगाल			
आसनसोल	23 42	87 01	+18 04
कोलकाता	22 34	88 24	+23 36
दार्जिलिंग	27 03	88 18	+23 12
पुरुलिया	23 20	86 24	+15 36
दुर्गापुर	23 30	87 20	+19 20
सिलीगुड़ी	26 42	88 26	+23 44
हावड़ा	22 25	88 20	+23 20

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पंजाब			
अमृतसर	31 37	74 55	−30 20
अजनाला	31 51	74 48	−30 48
अटारी	31 37	74 36	−31 36
अमलोह	30 37	76 15	−25 00
अहमदगढ़	30 41	75 51	−26 36
अबोहर	30 08	74 12	−33 12
अकालगढ़	29 50	75 54	−26 24
अमरगढ़	30 28	76 01	−25 56
अलावलपुर	31 26	75 39	−27 24
आनन्दपुर सा.	31 15	76 32	−23 52
आदमपुर	31 25	75 43	−27 08
उरमर-टाण्डा	31 40	75 41	−27 16
कपूरथला	31 23	75 25	−28 20
करतारपुर	31 27	75 30	−28 00
कादियां	31 49	75 23	−28 28
कीतरपुर साहिब	31 11	76 34	−23 44
कुराली	30 50	76 35	−23 40
कोटकपूरा	30 34	74 52	−30 32
खन्ना	30 42	76 13	−25 08
खरड़	30 45	76 39	−23 24
खेमकरण	31 08	74 35	−31 40
गड़दीवाल	31 44	75 45	−27 00
गढ़शंकर	31 13	76 08	−25 28
गुरदासपुर	32 03	75 27	−28 12
गुरुहरसहाय	30 40	74 32	−31 42
गोईन्दवाल सा.	31 22	75 08	−29 28
गोराया	31 06	75 47	−26 52
गोविन्दगढ़ मण्डी	30 41	76 18	−24 28
घनौर	30 21	76 37	−23 32

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
चमकौर साहि.	30 55	76 24	−24 24
छहरटा	31 16	74 53	−30 28
जगरांव	30 48	75 30	−28 00
जलालाबाद	30 37	74 15	−33 00
जण्डियालागुरु	31 34	75 01	−29 56
जाखल	29 48	75 41	−26 36
जालन्धर	31 19	75 34	−27 44
जालन्धर कैंट	31 20	75 26	−28 16
जीरा	30 57	74 59	−30 04
जैतों	30 28	74 53	−30 28
जैजों	31 21	76 09	−25 24
डबवाली मण्डी	29 59	74 42	−31 12
ढिलवां	31 25	75 19	−28 44
तपा मण्डी	30 19	75 21	−28 36
तरनतारन	31 28	74 58	−30 08
तलवाड़ा	32 05	75 38	−27 38
तलवंडी साबो	29 59	74 59	−30 04
दतारपुर	31 53	75 45	−27 00
दसूहा	31 49	75 38	−27 28
दमदमा साहिब	30 50	76 04	−25 44
दीनानगर	32 08	75 30	−28 00
दोराहा मण्डी	30 49	76 01	−25 56
दौलतपुर	31 58	75 38	−27 28
धर्मकोट	30 53	75 14	−29 04
धारीवाल	31 57	75 19	−28 44
धूरी	30 22	75 52	−26 32
नकोदर	31 07	75 29	−28 04
नवांशहर	31 07	76 08	−25 28
नंगल	31 23	76 23	−24 28
नाभा	30 25	76 09	−25 24
नूरमहल	31 01	75 22	−28 32
नूरपुर बेदी	31 09	76 29	−24 04

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
पटियाला	30 20	76 25	−24 20
पट्टी	31 17	74 51	−30 36
पठानकोट	32 17	75 42	−27 12
फरीदकोट	30 40	74 57	−30 12
फगवाड़ा	31 13	75 47	−26 52
फतेहगढ़ सा.	30 39	76 22	−24 32
फतेहगढ़	31 03	75 03	−29 48
फाज़िल्का	30 24	74 04	−33 44
फिल्लौर	31 01	75 48	−26 48
फिरोजपुर	30 55	74 40	−31 20
बरनाला	30 23	75 33	−27 48
बस्सी	30 35	76 50	−22 40
बसी-पठाना	30 40	76 23	−24 28
बटाला	31 48	75 12	−29 12
बंगा	31 11	75 59	−26 04
बलाचौर	31 03	76 19	−24 44
बिलगा	31 02	75 26	−28 16
बुढलाडा	29 56	75 34	−27 44
बेला	30 56	76 24	−24 24
ब्यास	31 32	75 18	−28 48
भटिण्डा	30 11	75 00	−30 00
भवानीगढ़	30 16	76 01	−25 56
भुलत्थ	31 32	75 32	−27 32
भुच्चो (मण्डी)	30 13	75 06	−29 36
भोगपुर	31 33	75 38	−27 28
मजीठा	31 46	74 57	−30 12
मलोट	30 13	74 29	−32 04
मलेरकोटला	30 31	75 59	−26 04
मलकाणा	29 56	75 03	−29 48
मुकेरिया	31 57	75 37	−27 32
मुबारिकपुर	30 37	76 51	−22 36

पंजाब के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुक्तसर	30 29	74 31	−31 56
मोगा	30 48	75 10	−29 20
मोरांवली)	31 18	76 01	−25 56
मोरिण्डा	30 48	76 30	−24 00
मोहाली	30 43	76 42	−23 12
राजपुरा	30 29	76 34	−23 44
रामपुरा फूल	30 17	75 14	−29 04
रायकोट	30 41	75 36	−27 36
राहों	31 03	76 07	−25 32
रोपड़ (रूपनगर)	30 57	76 32	−23 52
लुधियाना	30 55	75 54	−26 24
लोहियांखास	31 08	75 28	−28 04
शाहकोट	31 03	75 19	−28 44
शाहपुर	32 17	75 46	−26 56
संगरूर	30 12	75 53	−26 28
सरहिन्द	30 38	76 23	−24 28
समराला	30 51	76 11	−25 16
सनौर	30 18	76 30	−24 00
समाना	30 09	76 12	−25 12
सुजानपुर	32 19	75 26	−28 16
सुल्तानपुर लोधी	31 13	75 11	−29 16
सुनाम	30 08	75 48	−26 48
सोहाणां	30 42	76 42	−23 12
हमीरा	31 27	75 19	−28 44
हरयाणा	31 36	75 48	−26 48
हरीके पत्तन	31 30	74 57	−30 12
हाजीपुर टा.	31 57	75 37	−27 32
होशियारपुर	31 32	75 57	−26 12
पाण्डिचेरी			
पांडिचेरी	11 56	79 53	−10 28
महे (Mahe)	11 42	75 32	−27 52

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिहार			
गया	24 49	85 01	+10 04
छपरा	25 47	84 45	+09 00
सीतामढ़ी	26 35	85 32	+12 08
सीवां	26 12	84 23	+07 32
पटना	25 37	85 13	+10 52
झरिया	23 50	86 24	+15 36
समस्तीपुर	25 55	85 50	+13 20
धनबाद	23 47	86 30	+16 00
बांकीपुर	25 40	85 12	+10 48
बेगुसराय	25 25	86 08	+14 32
भागलपुर	25 15	87 00	+18 00
मधुबनी	26 22	86 05	+14 20
मणिपुर			
इम्फाल	24 46	93 58	+45 52
मध्यप्रदेश			
अगर	23 42	76 01	−25 56
अजयगढ़	24 53	80 13	−09 08
अंजद	22 02	75 03	−29 48
अमरकंटक	22 40	81 45	−03 00
अमला	21 56	78 07	−17 32
अम्बाह (म. प्र.)	26 43	78 14	−17 04
अन्नूपुर	22 40	81 48	−05 18
अलिराजपुर	22 19	74 21	−32 36
अशोकनगर	24 34	77 43	−19 08
इच्छापुर	21 05	76 09	−25 24
इच्छावर	23 01	77 01	−21 56
इटारसी	22 37	77 45	−19 00
इटावा	24 05	78 12	−17 12
इन्दौर	22 43	75 50	−26 40
इन्द्रगढ़	25 56	78 35	−15 40
उज्जैन	23 11	75 46	−26 56
उमरी	26 33	79 00	−14 00

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
उमरिया	23 32	80 50	−06 40
उमरिया (बा.गढ़)	23 48	80 56	−06 16
ओरछा	25 21	78 39	−15 24
औबेदुल्लागंज	22 59	77 36	−19 36
कटंगी	21 44	79 48	−10 48
कटनी	23 51	80 24	−08 24
कुकशी	22 12	74 45	−31 00
कोठी	24 45	80 45	−07 00
कोरवई	24 08	78 03	−17 48
क्षिप्रा	22 54	78 00	−26 00
खजुराहो	24 50	79 58	−10 08
खण्डवा	21 50	76 20	−24 40
खरगोन	21 49	75 36	−27 36
खेतिया	21 40	74 35	−31 40
खुरई	24 03	78 19	−16 44
गादरवाड़ा	22 55	78 47	−14 52
गुना	24 39	77 19	−20 44
गोहद	26 26	78 27	−16 12
ग्वालियर	26 13	78 10	−17 20
चन्दला	25 05	80 12	−09 12
चन्देरी	24 43	78 08	−17 28
चाचोरा	24 10	76 59	−22 04
चापरा	22 44	76 20	−24 40
छतरपुर	24 55	79 36	−11 36
छिन्दवाड़ा	22 04	78 56	−14 16
छोटा छिन्दवाड़ा	23 03	79 29	−12 04
जबलपुर	23 10	79 57	−10 12
जऔरा	28 38	75 08	−29 28
जावद	24 38	74 52	−30 32
झाबुआ	22 46	74 36	−31 36
टीकमगढ़	24 46	78 53	−14 28
तिरोदी	21 41	79 42	−11 12
दतिया	25 40	78 28	−16 08
दमोह	23 50	79 27	−12 12

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
दिन्दोरी	22 57	81 05	—05 40
धार	22 36	75 18	—28 48
नयागाँव	25 54	77 10	—21 20
नरसिंहपुर	22 57	79 12	—13 12
नीमच	24 28	74 52	—30 32
नैनपुर	22 26	80 07	—09 32
पंचमढ़ी	22 30	78 26	—16 16
पठारिया	23 54	79 12	—13 12
पन्ना	24 43	80 12	—09 12
पाटन	23 18	79 42	—11 12
पांधुरना	21 36	78 31	—15 56
पिचोर	25 11	78 11	—17 16
पिछोर (ग्वा.)	25 58	78 24	—16 24
पिपारिया	22 45	78 21	—16 36
प्रतापगढ़	24 02	74 47	—30 52
बन्दा	24 03	78 57	—14 12
बरनगर	23 03	75 22	—28 32
बरवाह	22 16	76 03	—25 48
बालाघाट	21 48	80 11	—09 16
बासोदा	23 51	77 56	—18 16
बान्धवगढ़	23 53	79 05	—13 40
बिच्छिया	22 27	80 42	—07 12
बिजावर	24 38	79 30	—12 00
बीना (इटावा)	24 11	78 11	—17 16
बुरहानपुर	21 18	76 14	—25 04
बैतूल	21 55	77 54	—18 24
भिण्ड	26 34	78 48	—14 48
भोपाल	23 16	77 24	—20 24
मऊगंज	24 41	81 53	—02 28
मकराई	22 04	77 06	—21 36
मण्डला	22 36	80 23	—08 28
मनावर	22 14	75 05	—29 40

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मन्दसौर	24 04	75 04	—29 44
महाराजपुर	25 01	79 44	—11 04
महेश्वर	22 11	75 35	—27 40
मानपुर	23 46	81 08	—05 28
मुरैना	26 30	78 09	—17 24
मुलतई	21 46	78 15	—17 00
मैहर	24 16	80 45	—07 00
रतलाम	23 19	75 04	—29 44
राजगढ़	23 56	76 58	—22 08
राजपुर	25 23	81 09	—05 24
रामनगर	22 13	80 47	—06 52
रामपुरा	24 28	75 26	—28 16
रायसेन	23 20	77 48	—18 48
राहतगढ़	23 47	78 22	—16 32
रीवा	24 32	81 18	—04 48
रेहली	23 38	79 05	—13 40
लखनादोन	22 36	79 36	—11 36
लखेड़ी	25 40	76 10	—25 20
लामटा	22 08	80 07	—09 32
विदिशा	23 32	77 49	—18 44
वैधन	24 04	82 20	—00 40
शहडोल	23 20	81 21	—04 36
शाजापुर	23 26	76 16	—24 56
शाहपुरा	23 11	80 42	—07 12
शिवपुरी	25 26	77 39	—19 24
श्योपुर	25 40	76 42	—23 12
सतना	24 35	80 50	—06 40
सनावद	22 11	76 04	—25 44
सबलगढ़	26 15	77 24	—20 24
सरदारपुर	22 39	74 59	—30 04
सागर	23 50	78 43	—15 08
सांची	23 29	77 44	—19 04
सारंगपुर	23 34	76 28	—24 08

मध्यप्रदेश के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
सिरोंज	24 06	77 42	—19 12
सिहोरा	23 29	80 07	—09 32
सिहोर	23 12	77 05	—21 40
सीधी	24 25	81 53	—02 28
सेओनी	22 05	79 32	—11 52
सेओनीमालवा	22 27	77 28	—20 08
सेंधवा	21 41	75 06	—29 36
सोहागपुर	22 42	78 12	—17 12
हट्टा	24 07	79 36	—11 36
हरदा	22 20	77 06	—21 36
होशंगाबाद	22 45	77 43	—19 08
छत्तीसगढ़			
अम्बिकापुर	23 07	83 12	+02 48
आरंग	21 12	81 58	—02 08
कवर्धा	22 00	81 15	—05 00
कांकेर	20 17	81 29	—04 04
काठघोरा	22 30	82 33	+00 12
कुतरू	19 05	80 48	—06 48
कुरसेकोडी	20 12	80 48	—06 48
कोईसारी	23 57	81 45	—03 00
कोंगूर	19 53	81 27	—04 12
कोण्डागांव	19 36	81 40	—03 20
कोरबा	22 21	82 41	+00 44
जगदलपुर	19 04	82 02	—01 52
जशपुरनगर	22 54	84 09	+06 36
दन्तेवाड़ा	18 54	81 21	—04 36
दुर्ग	21 11	81 17	—04 52
धमतरी	20 41	81 34	—03 44
धर्मजयगढ़	22 28	83 13	+02 52
धर्मावरम	18 16	80 55	—06 20
नवापाड़ा	20 58	81 53	—02 28
पण्डारिया	22 14	81 25	—04 20

३६गढ़ के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
परतापुर	23 29	83 13	+02 52
बलोदाबाज़ार	21 40	82 10	—01 20
बस्तर	19 12	81 57	—02 12
बिलासपुर	22 05	82 09	—01 24
बैकुण्ठपुर	23 15	82 33	+00 12
भरतपुर	23 44	81 45	—03 00
भाटपाड़ा	21 44	81 56	—02 16
भिलई	21 13	81 26	—04 16
महासमुन्द	21 06	82 06	—01 36
राजनान्दगांव	21 06	81 02	—05 52
रामानुजगंज	23 48	83 42	+04 48
रायगढ़	21 55	83 26	+03 44
रायपुर	21 14	81 38	—03 28
सक्ति	22 02	82 58	+01 52
सारनगढ़	21 36	83 05	+02 20
सेओरी नारायण	21 44	82 35	+00 20
महाराष्ट्र			
अकलकोट	17 32	76 13	—25 08
अकोला (मुम्ब.)	20 44	77 00	—22 00
अकोट	21 11	77 04	—21 44
अचलपुर	21 16	77 31	—19 56
अमरावती	20 56	77 45	—19 00
अम्बजोगई	18 44	76 23	—24 28
अरमोरी	20 28	79 59	—10 04
अरवी	20 59	78 14	—17 04
अलीपुर	20 34	78 41	—15 16
अलीबाग	18 39	72 54	—38 24
अहमदनगर	19 05	74 44	—31 04
इगतपुरी	19 42	73 33	—35 48
उमरेड़	20 51	79 20	—12 40
उल्हासनगर	19 13	73 07	—37 32
एलोरा	20 01	75 10	—29 20

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
ओस्मानाबाद	18 10	76 02	—25 52
औरंगाबाद	19 53	75 20	—28 40
कतोल	21 16	78 35	—15 40
कराड़	17 17	74 12	—33 12
कल्याण	19 15	73 09	—37 24
कामथी	21 14	79 12	—13 12
किरकी	18 34	73 52	—34 32
कुरदुवाड़ी	18 05	75 26	—28 16
कोपारगांव	19 53	74 29	—32 04
कोल्हापुर	16 42	74 13	—33 08
खमगांव	20 41	76 34	—23 44
खेड़ (रत्नागिरी)	17 43	73 23	—36 28
गंगापुर	19 41	75 01	—29 56
गोंडिया (मुम्बई)	21 27	80 12	—09 12
घाटकोपर (मुम्बई)	19 05	72 54	—38 24
चन्द्रापुर	19 57	79 18	—12 48
चालिसगांव	20 28	75 01	—29 56
चिखली	20 21	76 15	—25 00
चिपलून	17 32	73 31	—35 56
चोपड़ा	21 15	75 18	—28 48
जलगांव	21 01	75 34	—27 44
जलगांव (अकोला)	21 03	76 32	—23 52
जालना	19 50	75 53	—26 28
जुन्नार	19 12	73 53	—34 28
तालोडा	21 34	74 13	—33 08
तासगांव	17 02	74 36	—31 36
तुमसार	21 23	79 44	—11 04
थाने	19 12	72 58	—38 08
दरवाहा	20 19	77 46	—18 56
दिगरस	20 06	77 43	—19 08
दिगलूर	18 33	77 36	—19 36
देयूलगावराजा	20 01	76 02	—25 52
देवलाली	19 57	73 50	—34 40

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
धुलिया	20 54	74 47	—30 52
नन्दगांव	20 19	74 39	—31 24
नागपुर	21 09	79 06	—13 36
नान्देड़	19 09	77 20	—20 40
नासिक	19 59	73 48	—34 48
पंढरपुर	17 40	75 20	—28 40
पनवेल	18 59	73 06	—37 36
पाचोरा	20 40	75 21	—28 36
पाटन (महेसाणा)	23 50	72 07	—41 32
पातुर	20 27	76 56	—22 16
पुणे	18 32	73 52	—34 44
पुसाद	19 54	77 35	—19 40
पुलगांव	20 44	78 20	—16 40
बडनेरा	20 52	77 44	—19 04
बारसी	18 14	75 42	—27 12
बारामती	18 09	74 35	—21 40
बालापुर	20 40	76 46	—22 56
बासमत	19 19	77 10	—21 20
बीड़	18 59	75 46	—26 56
भण्डारा	21 10	79 39	—11 24
भिवंडी	19 18	73 04	—37 44
भुसावल	21 03	75 46	—26 56
भोकरदान	20 16	75 46	—26 56
मंगलवेढ़ा	17 31	75 28	—28 08
मनमाड़	20 15	74 27	—32 12
मनवात	19 18	76 30	—24 00
मल्कापुर (बुल्डाना)	20 53	76 12	—25 12
महाद	18 05	73 25	—36 20
महाबलेश्वर	17 55	73 40	—35 20
मालवान	16 04	73 28	—36 08
मालेगांव (ना.)	20 33	74 32	—31 52
मिराज	16 50	74 38	—31 28
मुम्बई	18 58	72 50	—38 40

महाराष्ट्र के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मुम्ब्रा (थाना)	19 10	73 03	—37 48
मुरुद	18 19	72 58	—38 08
मुर्तजापुर	20 44	77 23	—20 28
मुल	20 04	79 40	—11 20
मेहेकर	20 09	76 34	—23 44
यवतमाल	20 24	78 08	—17 28
रत्नागिरि	16 59	73 18	—36 48
रहिमतपुर	17 36	74 12	—33 12
रामटेक	21 24	79 20	—12 40
रावेर	21 15	76 02	—25 52
वर्धा	20 45	78 37	—15 32
वसाई	19 21	72 48	—38 48
वाशिम	20 06	77 09	—21 24
वाशी	19 13	73 10	—37 20
वाई	17 56	73 54	—34 24
वैजापुर	19 55	74 44	—31 12
शहादा	21 28	74 18	—32 48
शिरपुर	21 21	74 53	—30 28
शेगांव	20 47	76 41	—23 16
शोलापुर	17 41	75 55	—26 20
श्रीवर्धन	18 02	73 01	—37 56
सकोली	21 05	79 59	—10 04
संगोला	17 26	75 12	—29 12
सतना	20 35	74 12	—33 12
सतारा	17 41	73 59	—34 04
सांगली	16 52	74 34	—31 44
सावन्तवाड़ी	15 54	73 49	—34 44
सिन्नार	19 51	74 00	—34 00
हरनाई	17 48	73 06	—37 36
हिंगनघाट	20 34	78 52	—14 32
हिंगोली	19 43	77 09	—21 24
मिज़ोरम			
ऐज़वाल	23 43	92 44	+40 56

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
मेघालय			
शिलांग	25 34	91 56	+37 44
राजस्थान			
अजमेर	26 27	74 42	—31 12
अनूपगढ़	29 07	73 06	—37 36
अलवर	27 34	76 38	—23 28
असोप	26 48	73 44	—35 04
अलीगढ़	25 58	76 07	—25 30
आमेट	25 20	73 59	—34 04
आबू	24 40	72 45	—39 00
आमेर	26 59	75 52	—26 32
उदयपुर	24 35	73 41	—35 16
एकलिंगजी	24 44	73 46	—34 56
करौली	26 30	77 01	—21 56
कांकरोली	25 02	73 54	—34 24
किशनगढ़	26 33	74 52	—30 32
केकड़ी	25 55	75 10	—29 20
कोटा	25 10	75 52	—26 32
खण्डेला	27 37	75 32	—27 52
गोगुण्डा	24 46	73 34	—35 44
घोटारू	27 18	70 04	—49 44
चात्सू	26 36	75 59	—26 04
चित्तौड़गढ़	24 54	74 42	—31 12
चूरू	28 19	75 01	—29 56
चोमू	27 08	75 47	—26 52
चोटां	25 28	71 06	—45 36
छाबरा	24 40	76 54	—22 24
छोटीसदड़ी	24 24	74 36	—31 36
जयपुर	26 55	75 52	—26 32
जसवंतपुरा	24 48	72 30	—40 00
जालौर	25 22	72 38	—39 28
जैसलमेर	26 55	70 54	—46 24

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
जोधपुर	26 18	73 04	−37 44
जोधासर	28 07	73 50	−34 40
झालावाड़	24 36	76 09	−25 24
झुंझुनू	28 06	75 25	−28 20
टोडारायसिंह	26 00	75 29	−28 04
टोंक	26 11	75 50	−26 40
डीडवाना	27 17	74 25	−32 20
डूँगरपुर	23 50	73 43	−35 08
तिजारा	27 55	76 50	−22 40
थानागाजी	27 25	76 19	−24 44
देओरा	26 30	70 42	−47 12
देचू	26 47	72 20	−40 40
देओरा	26 30	70 42	−47 12
दौसा	26 51	76 21	−24 36
धौलपुर	26 42	77 53	−18 28
नवलगढ़	27 51	75 18	−28 48
नसीराबाद	26 18	74 46	−30 56
नागौर	27 11	73 40	−35 20
नाचना	27 29	71 45	−43 00
नाथद्वारा	24 56	73 50	−34 40
नीम का थाना	27 44	75 48	−26 48
नोखा	27 35	73 29	−36 04
नौहर	29 11	74 46	−30 56
पचपदरा	25 55	72 21	−40 36
परबतसर	26 53	74 47	−30 52
पल्लू	28 56	74 13	−33 08
पाली	25 46	73 25	−36 20
पिलानी	28 23	75 35	−27 40
पुष्कर	26 30	74 34	−31 44
पोकरन	26 56	71 55	−42 20
फतेहपुर	28 00	75 00	−30 00
फलौदी	27 09	72 22	−40 32

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
फुलेरा	26 52	75 16	−28 56
बड़ी सादड़ी	24 25	74 28	−32 08
बयाना	26 55	77 17	−20 52
बाड़मेर	25 46	71 25	−44 20
बांदीकुई	27 02	76 34	−23 44
बाप	27 24	72 22	−40 32
बाराँ	25 07	76 30	−24 00
बांसवाड़ा	23 30	74 24	−32 24
बालोतरा	25 50	72 14	−41 04
बिलाड़ा	26 11	73 42	−35 12
बीकानेर	28 01	73 22	−36 32
बून्दी	25 27	75 40	−27 20
भरतपुर	27 05	77 30	−20 00
भादरा	29 15	75 20	−28 40
भीलवाड़ा	25 21	74 40	−31 20
भीनमाल	25 01	72 19	−40 44
मकराना	27 04	74 43	−31 08
महाजन	28 49	73 56	−34 16
मांगरोल	25 21	76 30	−24 00
मावली	24 48	73 58	−34 08
मुकन्दवाड़ा	24 49	76 01	−25 56
मुनाबाओ	25 43	70 15	−49 00
मेड़ता सिटी	26 40	74 06	−33 36
मेड़ता रोड़	26 44	73 55	−34 20
मोहनगढ़	27 17	71 18	−44 48
रतनगढ़	28 05	74 39	−31 24
रानीवाड़ा	24 46	72 13	−41 08
रायसिंहनगर	29 32	73 27	−36 12
रीगस	27 21	75 34	−27 44
रूपनगर	26 47	74 54	−30 24
लछमनगढ़	27 45	75 04	−29 44
लाटी	27 03	71 30	−44 00

राजस्थान के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
शाहगढ़	27 08	69 58	−50 08
श्रीगंगानगर	29 49	73 50	−34 40
श्रीमाधोपुर	27 25	75 32	−27 52
श्रीमोहनगढ़	27 17	71 12	−45 12
समदड़ी	25 49	72 35	−39 40
सरदारशहर	28 27	74 30	−32 00
सरूपसर	29 22	73 37	−35 32
सवाईमाधोपुर	25 59	76 30	−24 00
सांगानेर	26 49	75 52	−26 32
सांचोर	24 41	71 50	−42 40
साम्भर	26 55	75 10	−29 20
सादूलपुर	28 39	75 24	−28 24
सिरोही	24 54	72 55	−38 20
सिवाना	25 37	72 27	−40 12
सिरोही	24 53	72 54	−38 24
सीकर	27 36	75 09	−29 24
सुजानगढ़	27 42	74 30	−32 00
सूरतगढ़	29 19	73 57	−34 12
हनुमानगढ़	29 35	74 21	−32 36
रामगढ़ (जयपुर)	27 14	75 10	−29 20
रामगढ़ (जैसलमेर)	27 23	70 30	−48 00
शाहपुरा (जयपुर)	27 22	75 58	−26 08
शाहपुरा (भीलवाड़ा)	25 40	74 50	−30 40
शेरगढ़ (जोधपुर)	26 24	72 21	−40 36
शेरगढ़ (झालावाड़)	24 41	76 32	−23 52
	सिक्किम		
गंगटोक	27 22	88 36	+24 24
	हरियाणा		
अम्बाला	30 21	76 52	−22 32
अलीपुर	29 10	75 52	−26 36
अगरोहा	29 20	75 38	−27 88

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
करनाल	29 42	77 02	−21 52
कलानौर	28 52	76 23	−24 28
कालका	30 49	76 57	−22 12
कुरुक्षेत्र	29 59	76 48	−22 48
केसरी	30 15	76 53	−26 28
कैथल	29 48	76 26	−24 16
खतौली	30 37	76 58	−22 08
गुड़गांव	28 29	77 04	−21 44
गोहाना	29 09	76 41	−23 16
घरौण्डा	29 34	76 58	−22 08
चरखी-दादरी	28 36	76 16	−24 56
जगाधरी	30 10	77 16	−20 56
जाखल	29 49	75 49	−26 44
जीन्द	29 19	76 21	−24 36
झज्जर	28 38	76 39	−23 24
टोहाना	29 43	75 53	−26 28
थानेसर	29 58	76 56	−22 16
दादरी	28 33	77 32	−19 52
नरवाणा	29 36	76 08	−25 28
नारनौल	28 02	76 14	−25 04
नारायणगढ़	30 30	77 09	−21 24
नाहर	28 23	76 23	−24 28
नीलोखेड़ी	29 52	76 54	−22 24
पंचकूला	30 45	76 53	−22 28
पटौदी	28 19	76 48	−22 48
पलवर	28 10	77 19	−20 44
पानीपत	29 23	77 01	−21 56
पिंजौर	30 49	76 55	−22 20
पिपली	29 59	76 52	−22 32
पिहोवा	29 56	76 36	−23 36
फतेहाबाद	29 31	75 30	−28 00
फरीदाबाद	28 25	77 22	−20 32
बल्लभगढ़	28 21	77 19	−20 44

भारत के प्रसिद्ध नगरों के अक्षांश, रेखांश और स्टैंडर्ड अन्तर

हरियाणा के नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बहादुरगढ़	28 42	76 55	−22 20
बरवाला	29 23	75 55	−26 20
बालसमन्द	29 05	75 29	−28 04
भादसों	29 56	76 56	−22 16
भिवानी	28 47	76 08	−25 48
मनसादेवी	30 44	76 52	−22 32
मनीमाजरा	30 42	76 52	−22 32
महेन्द्रगढ़	28 18	76 09	−25 24
मोहाना	29 04	76 50	−22 40
यमुनानगर	30 08	77 16	−20 56
रादौर	30 02	77 06	−21 36
रिवाड़ी	28 12	76 40	−23 20
रैना	29 28	74 54	−30 24
रोडी	29 44	75 15	−29 00
रोहतक	28 54	76 38	−23 28
लाडवा	29 59	77 05	−21 40
शाहाबाद	30 10	76 55	−22 20
सिरसा	29 32	75 06	−29 56
सिवानी	28 55	75 37	−27 32
सोनीपत	28 59	77 01	−21 56
हसनपुर	27 59	77 29	−20 04
हांसी	29 06	76 00	−26 00
हिसार	29 10	75 46	−26 56
हिमाचल-प्रदेश			
अम्ब	31 43	76 06	−25 36
अर्की	31 09	76 59	−22 04
आनी	31 28	77 20	−20 40
आलमपुर	31 54	76 30	−24 00
इन्दौरा	32 06	75 41	−27 16
ऊना	31 32	76 18	−24 48
करसोग	31 23	77 14	−21 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
कसौली	30 55	76 57	−22 12
कथला	31 59	76 47	−22 52
कल्पा	31 34	78 16	−16 56
कण्डाघाट	30 57	77 08	−21 28
काला अम्ब	30 29	77 13	−21 08
काँगड़ा	**32 05**	**76 18**	**−24 48**
किन्नौर	31 32	78 20	−16 40
कुफरी	31 07	77 12	−21 12
कुम्हारहट्टी	30 52	77 03	−21 48
कुल्लू	31 58	77 10	−21 20
कुमारसेन	31 18	77 37	−19 32
कुनिहार	30 58	77 10	−21 20
केलांग	32 37	77 05	−21 40
कोटखाई	31 08	77 36	−19 36
कोटगढ़	31 19	77 29	−20 04
कोटला	32 17	76 02	−25 52
खजियार	32 31	76 03	−25 40
गर्ली(परागपुर)	31 48	76 18	−24 48
गगरेट	31 41	76 04	−25 44
गोहर	31 32	77 02	−21 52
घुमारवीं	31 28	76 42	−23 12
चम्बा	**32 34**	**76 08**	**−25 28**
चच्योट	31 36	77 04	−21 44
चामुण्डा देवी	32 08	76 22	−24 32
चायल	31 03	77 14	−21 04
चिन्तपूर्णी	31 47	76 04	−25 44
जस्सूर	32 17	75 55	−26 20
जतोग	31 06	77 07	−21 32
जोगिन्द्रनगर	31 58	76 45	−23 00
ज्वाली	32 06	76 01	−25 56
ज्वालामुखी	31 53	76 20	−24 40
ठयोग	31 08	77 33	−19 48
डमटाल	32 13	75 41	−27 16
डगशाई	30 53	77 06	−21 36

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
डल्हौज़ी	32 31	76 00	−26 00
ढलियारा	31 52	76 11	−25 16
तारादेवी	31 04	77 10	−21 20
तत्तापानी	31 14	77 10	−21 20
त्रिलोकनाथ	32 43	76 39	−23 24
त्रिलोकपुर	30 34	77 09	−21 24
देहरा गोपीपुर	31 55	76 14	−25 04
दौलतपुर	31 46	75 58	−26 08
धनेटा	31 38	76 29	−24 04
धर्मशाला	32 16	76 23	−24 48
धर्मपुर	30 54	77 04	−21 44
धौलाकुआं	30 30	77 29	−20 04
नगर	32 07	77 10	−21 20
नगरोटा बगवां	32 06	76 22	−24 32
नगरोटा	32 07	76 23	−24 28
नादौन	31 47	76 22	−24 32
नाहन	30 33	77 21	−20 36
नालागढ़	30 57	76 22	−24 32
नारकण्डा	31 15	77 28	−20 08
निरमण्ड	31 28	77 34	−19 44
नूरपुर	32 18	75 56	−26 16
नैनादेवी	31 19	76 31	−23 56
पच्छाद	31 47	77 08	−21 28
पण्डोह	31 41	77 07	−21 32
पपरोला	32 04	76 34	−23 44
परवाणू	30 52	77 05	−21 40
पाओंटा साहिब	30 28	77 38	−19 28
पालमपुर	32 07	76 33	−23 48
बरसर (भोटा)	31 34	76 28	−24 08
बसौली	31 34	76 23	−24 28
बंगाना तै.	31 33	76 27	−24 16
बड़ागांव	31 20	77 15	−21 00
बंजार	31 40	77 20	−20 40
बनीखेत	32 32	75 58	−26 08
बकलोह	32 27	75 59	−26 04

नगर	अक्षांश (उत्तर) अं. क.	रेखांश (पूर्व) अं. क.	स्टैण्डर्ड अन्तर मिं. सैं.
बिलासपुर	31 19	76 45	−23 00
बैजनाथ	32 03	76 36	−23 36
भरवाईं	31 47	76 07	−25 36
भरमौर	32 27	76 32	−23 52
भाखड़ा	31 20	76 30	−24 00
भुन्तर	31 54	77 09	−21 24
मण्डी	**31 43**	**76 58**	**−22 08**
मनाली	32 17	77 10	−21 20
मनीकरण	32 01	77 20	−20 40
मशोबरा	31 07	77 14	−21 04
मंगवाल	32 03	76 05	−25 40
महासू	31 05	77 13	−21 08
राजगढ़	30 52	77 22	−20 32
रायसन	32 05	77 07	−21 32
रोहड़ू	31 12	77 44	−19 04
लाहौल स्पीति	31 28	77 39	−19 24
शाहपुर	32 13	76 11	−25 16
शिमला	**31 06**	**77 10**	**−21 20**
शेरपुर	32 34	75 59	−26 04
सपाटू	30 59	76 59	−22 04
सरकाघाट	31 43	76 22	−24 32
सन्धोल	31 59	76 45	−22 56
संतोखगढ़	31 21	76 20	−24 40
सिरमौर	30 45	77 30	−20 00
सुन्दरनगर	**31 32**	**76 53**	**−22 28**
सोलन	30 55	77 09	−21 24
हमीरपुर	31 42	76 30	−24 00
हड़सर	32 21	76 33	−23 48
हरिपुर	32 39	76 11	−25 16
हरिपुरधार	30 53	77 28	−20 08
हाटकोटी	31 09	77 44	−19 04
अन्य केन्द्रीय प्रदेश			
चण्डीगढ़	30 44	76 53	−22 28

विदेशी नगरों के अक्षांश-रेखांश एवं स्टैं. अन्तर

आगे लिखे गए विदेशी नगरों के सामने स्थानीय समय का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए अन्तिम कालम में (–) चिन्ह वाले नगरों का समय भा. स्टै. टा. से पहले घटित होगा जबकि (+) चिन्ह वाले नगरों के आगे निर्दिष्ट समय, उतने घण्टे मिनट बाद में घटित होगा। जैसे इंगलैंड (लंदन) के आगे +5/30 घं. मिं. लिखे हैं, इसका भाव यह हुआ कि यदि इंगलैंड में प्रातः के 6/30 बजे हैं तो भारत में दोपहर के 12 बजे होंगे। इसी भान्ति न्यूयार्क (अमेरिका) के आगे +10/30 घं. मिं. होने से इसका यह तात्पर्य होगा कि वहां साढ़े दस घण्टे पीछे अर्थात् गत दिवस के डेढ़ (1/30) बजे होंगे। **ज्ञातव्य** रहे, अमेरिका, कैनेडा, मैक्सीको आदि देशों में एक ही समय अलग–अलग स्टैण्डर्ड टाईम का निर्धारण किया जाता है। **जैसे–एटलांटिक टाईम (A.T.), ईस्टर्न टाईम (Eastern Time), सैंटर्ल टाईम (Central Time), माऊंटेन टाईम, पैसेफिक टाईम इत्यादि।** यह सब स्टै. टाईम अलग–अलग रेखांशों पर आधारित होते हैं। जिसे स्टैण्डर्ड मेरिडियन कहते हैं। उदाहरणतया ईस्टर्न टाईम 75° रेखांश, सैंट्रल टाईम 90° रेखांश पर, माऊंटेन टाईम 105° पश्चिम रेखांश अनुसार निर्धारित होता है। अमरीका या कैनेडा में किसी नगर का भा. स्टै. टा. से अन्तर जानने के लिए वहां स्टैण्डर्ड मेरिडियन निर्धारक रेखांश का ज्ञान आवश्यक है। दूसरे, विदेशी समयांतर में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि अमरीका, कैनेडा, ब्रिटेन आदि कुछ देशों में ग्रीष्मकालीन समय (Day Saving Time) या Summer Time का भी विचार किया जाता है। जोकि प्रायः अप्रैल के अन्तिम रविवार से अक्तूबर के अन्तिम रविवार तक होता है। (अमरीका, कैनेडा में)। इन दिनों देश की घड़ियां एक घण्टा आगे कर दी जाती है।

इसी प्रकार Australia (आस्ट्रेलिया) (दक्षिणी ध्रुवीय देशों) में अक्तूबर के अन्तिम रविवार से मार्च के अन्तिम रविवार तक ग्रीष्मकालीन समय (D.S.T.) प्रयोग में लाया जाता है। ध्यान रहे, Western Australia तथा Queensland आदि कुछ क्षेत्रों में D.S.T. प्रयोग में नहीं लाया जाता। इसी प्रकार न्यूज़ीलैण्ड (New-Zealand) में अक्तू. के प्रथम सप्ताह के रविवार से मार्च के तृतीय सप्ताह के रविवार तक ग्रीष्मकालीन (D.S.T.) समय प्रयोग में लाया जाता है।

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(1) AMERICA [यह देश पाँच कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
[UNITED-STATES]					
Abilen, Texas	30 27 उ.	99 44 प.	–38 56	90 00 प.	+11 30
Albany, N.Y.	42 39 उ.	73 45 प.	+05 00	75 00 प.	+10 30
Abotsford	49 00 उ.	122 30 प.	–10 00	120 00 प.	+13 30
Anderson, Indiana	40 06 उ.	85 41 प.	–42 44	75 00 प.	+10 30
Athens, Georgia	33 57 उ.	83 23 प.	–33 32	75 00 प.	+10 30
Atlanta, Georgia	33 45 उ.	84 23 प.	–37 32	75 00 प.	+10 30
Atlantic City, N.J.	39 22 उ.	74 25 प.	+02 20	75 00 प.	+10 30
Auburn, N.Y.	42 56 उ.	76 34 प.	–06 16	75 00 प.	+10 30
Austin, Taxas	30 16 उ.	97 45 प.	–31 00	90 00 प.	+11 30
Asbury Park (N.J.)	40 13 उ.	74 01 प.	+03 56	75 00 प.	+10 30
Bakersfield, Califo.	35 22 उ.	119 01 प.	+03 56	120 00 प.	+13 30
Bay City, Michigan	43 36 उ.	83 53 प.	–35 32	75 00 प.	+10 30
Bay Town, Texas	29 44 उ.	94 59 प.	–19 56	90 00 प.	+11 30
Boston, Massa.	42 21 उ.	71 04 प.	+15 44	75 00 प.	+10 30
Buffalo, N. York	42 53 उ.	78 53 प.	–15 32	75 00 प.	+10 30
Cambridge, Massa.	42 22 उ.	71 06 प.	+15 36	75 00 प.	+10 30
Chicago, Illinois	41 51 उ.	87 39 प.	+09 24	90 00 प.	+11 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Cincinnati, Ohio	39 10 उ.	84 27 प.	–37 48	75 00 प.	+10 30
Californiacity (Cal.)	35 08 उ.	117 59 प.	+08 04	120 00 प.	+13 30
Columbia, Missouri	38 57 उ.	92 20 प.	–09 20	90 00 प.	+11 30
Columbus, Georgia	32 28 उ.	84 59 प.	–39 56	75 00 प.	+10 30
Dales, Texas	29 56 उ.	97 34 प.	–30 16	90 00 प.	+11 30
Detriot, Michi.	42 20 उ.	83 03 प.	–32 12	75 00 प.	+10 30
Edison, N. Jersey	41 04 उ.	74 34 प.	+01 44	75 00 प.	+10 30
Essex, Maryland	39 19 उ.	76 29 प.	– 05 56	75 00 प.	+10 30
Florida City, FL	25 27 उ.	80 29 प.	–21 56	75 00 प.	+10 30
Frederick (D.M.)	39 38 उ.	78 31 प.	–14 04	75 00 प.	+10 30
Frankfort, Kentucky	38 12 उ.	84 52 प.	–39 28	75 00 प.	+10 30
Greenville, Missi	33 25 उ.	91 04 प.	–04 16	90 00 प.	+11 30
Hamilton, Ohio	39 24 उ.	84 34 प.	–38 16	75 00 प.	+10 30
Houston, Texas	29 46 उ.	95 22 प.	–21 28	90 00 प.	+11 30
Irving, Texas	32 49 उ.	96 57 प.	–27 48	90 00 प.	+11 30
Jersey City, N.J.	40 44 उ.	74 05 प.	+03 20	75 00 प.	+10 30
Johnson City, Tenne.	36 19 उ.	82 21 प.	+30 36	90 00 प.	+11 30
Kingston, N.Y.	41 56 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
Lockport, N.Y.	43 10 उ.	78 41 प.	–14 44	75 00 प.	+10 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Los Angeles, Calif.	34 03 उ.	118 15 प.	+07 00	120 00 प.	+13 30
Manchester, N. Hamp.	43 00 उ.	71 27 प.	+14 54	75 00 प.	+10 30
Meridian, Missi	32 22 उ.	88 42 प.	+05 12	90 00 प.	+11 30
Michigan City, Indiana	41 42 उ.	86 54 प.	–47 36	75 00 प.	+10 30
Midland, Texas	32 00 उ.	102 05 प.	–48 20	90 00 प.	+11 30
Milwankee, Wiscon.	43 02 उ.	87 54 प.	+08 24	90 00 प.	+11 30
Montgomery, Alabama	32 22 उ.	86 18 प.	+14 48	90 00 प.	+11 30
New Bedford, Massa	41 38 उ.	70 56 प.	+ 16 16	75 00 प.	+10 30
New Castle, P.A.	40 44 उ.	76 13 प.	–04 52	75 00 प.	+10 30
Newton, Massa	42 20 उ.	71 13 प.	+15 10	75 00 प.	+10 30
New York, N.Y.	40 43 उ.	74 00 प.	+04 00	75 00 प.	+10 30
Ontario, Calif	34 04 उ.	117 39 प.	+11 24	120 00 प.	+13 30
Oxford, Alabama	33 37 उ.	85 50 प.	+16 40	90 00 प.	+11 30
Redlands, California	34 04 उ.	117 11 प.	+11 16	120 00 प.	+13 30
Richfield, Minnesota	44 53 उ.	93 17 प.	–13 08	90 00 प.	+11 30
Richmond, Calif	37 56 उ.	122 21 प.	–09 24	120 00 प.	+13 30
Sacramento, Calif	38 35 उ.	121 30 प.	–06 00	120 00 प.	+13 30
St. Louis Park, Minne	44 57 उ.	93 21 प.	–13 24	90 00 प.	+11 30
San Francisco, Calif	37 47 उ.	122 25 प.	–09 40	120 00 प.	+13 30
Santa Rosa, Calif	38 27 उ.	122 43 प.	–10 52	120 00 प.	+13 30
Seattle, Washington	47 36 उ.	122 20 प.	–09 20	120 00 प.	+13 30
Texas City, Texa	29 23 उ.	94 54 प.	–19 36	90 00 प.	+11 30
Washington, D.C.	38 55 उ.	77 02 प.	–08 08	75 00 प.	+10 30
Yuba City, Calif	39 08 उ.	121 37 प.	–06 28	120 00 प.	+13 30
(2) AFGANISTAN (Standard Meridian—67-30 पू.)					
Daulatabad	36 25 उ.	64 55 पू.	–10 20	67 30 पू.	+01 00
Kabul	34 31 उ.	69 12 पू.	+06 48	67 30 पू.	+01 00
Kandhar	31 32 उ.	65 30 पू.	–08 00	67 30 पू.	+01 00
(3) ARGENTINA [यह देश दो कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।] (St. Meridian-45-00 प.)					
Rofaela	31 16 द.	61 29 प.	–05 56	60 00 प.	+08 30
San Francisco	31 26 द.	62 05 प.	–08 20	60 00 प.	+08 30
(4) AUSTRALIA [यह देश तीन कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Adelaide	34 55 द.	138 35 पू.	–15 40	142 30 पू.	–04 00
Brisbane	27 28 द.	153 02 पू.	+12 08	150 00 पू.	–04 30
Canberra	35 17 द.	149 08 पू.	–03 28	150 00 पू.	–04 30
Hobart	42 53 द.	147 19 पू.	–10 44	150 00 पू.	–04 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Liverpool	33 54 द.	150 56 पू.	+03 44	150 00 पू.	–04 30
Melbourne	37 50 द.	144 58 पू.	–20 08	150 00 पू.	–04 30
Perth	31 56 द.	115 50 पू.	–16 40	120 00 पू.	–02 30
Sydney	33 52 द.	151 12 पू.	+04 48	150 00 पू.	–04 30
(5) Bangladesh					
Chittagong	22 20 उ.	91 50 पू.	+07 20	90 00 पू.	–00 30
Dhaka	22 43 उ.	90 25 पू.	+01 40	90 00 पू.	–00 30
(6) Bhutan					
Thimbu	27 28 उ.	89 39 पू.	–01 24	90 00 पू.	–00 30
(7) BRAZIL [कुछ क्षेत्रों में ही ग्रीष्मकालीन समय प्रयोग में लाया जाता है।] [चार कालक्षेत्र में आवंटित है।]					
Brasilia	15 47 द.	47 55 प.	–11 40	45 00 प.	+08 30
Maringa	23 25 द.	51 55 प.	–27 40	45 00 प.	+08 30
Rio Branco	9 58 द.	67 48 प.	+28 48	75 00 प.	+10 30
Rio Claro	22 24 द.	47 33 प.	–10 12	45 00 प.	+08 30
Rio de Janeiro	22 54 द.	43 14 प.	+07 04	45 00 प.	+08 30
(8) BURMA (MYANMAR)					
Rangoon	16 47 उ.	96 10 पू.	–05 20	97 30 पू.	–01 00
(9) CANADA [इस देश में भी छः कालक्षेत्र प्रचलित हैं।]					
Brampton, Ontario	43 41 उ.	79 46 प.	–19 04	75 00 प.	+10 30
Calgary, Alberta	51 03 उ.	114 05 प.	–36 20	105 00 प.	+12 30
Edmonton, Alberta	53 33 उ.	113 30 प.	–34 00	105 00 प.	+12 30
Kingston, Ontario	44 14 उ.	76 30 प.	–06 00	75 00 प.	+10 30
Mississauga, Ontario	43 35 उ.	79 37 प.	–18 28	75 00 प.	+10 30
Montreal, Quebec	45 31 उ.	73 34 प.	+05 44	75 00 प.	+10 30
Niagara Falls, Ontario	43 06 उ.	79 04 प.	–16 16	75 00 प.	+10 30
North York, Ontario	43 46 उ.	79 25 प.	–17 40	75 00 प.	+10 30
Ottawa, Ontario	45 25 उ.	75 42 प.	–02 48	75 00 प.	+10 30
Prince George, B.C.	53 55 उ.	122 46 प.	–11 04	120 00 प.	+13 30
Prince Rupert, British Columbia	54 19 उ.	130 19 प.	–41 16	120 00 प.	+13 30
Quebec, Quebec	46 49 उ.	71 14 प.	+15 04	75 00 प.	+10 30
Richmond, British Col.	49 10 उ.	123 10 प.	–12 40	120 00 प.	+13 30
Saint John's- -New Foundland	47 33 उ.	52 40 प.	–00 40	52 30 प.	+09 00
Toronto, Ontario	43 39 उ.	79 23 प.	–17 32	75 00 प.	+10 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
Vancouver- (British Columbia)	49 16 उ.	123 07 प.	–12 28	120 00 प.	+13 30
Victoria-B.C.	48 25 उ.	123 21 प.	–13 24	120 00 प.	+13 30
Winnipeg, Manitoba	49 53 उ.	97 09 प.	–28 36	90 00 प.	+11 30
Windsor, Ontario	42 18 उ.	83 01 प.	–32 04	75 00 प.	+10 30
(10) CHINA	**(ZHONGGUO)**				
Beijing (Peking)	39 55 उ.	116 25 पू.	–14 20	120 00 पू.	–02 30
Fushun	29 11 उ.	105 00 पू.	–60 00	120 00 पू.	–02 30
Huainan	32 40 उ.	117 00 पू.	–12 00	120 00 पू.	–02 30
Ji'an	41 06 उ.	126 08 पू.	+24 32	120 00 पू.	–02 30
Shanghai	31 14 उ.	121 28 पू.	+05 52	120 00 पू.	–02 30
(11) ENGLAND (UNITED-KINGDOM) U.K.					
Adenberg	55 52 उ.	03 12 प.	–12 48	00 00	+05 30
Bedford	52 08 उ.	00 29 प.	–01 56	00 00	+05 30
Birmingham	52 28 उ.	01 54 प.	–07 36	00 00	+05 30
Bradford	53 48 उ.	01 45 प.	–07 00	00 00	+05 30
Bristol	51 27 उ.	02 35 प.	–10 20	00 00	+05 30
Cambridge	52 13 उ.	00 08 पू.	+00 32	00 00	+05 30
Coventry	52 25 उ.	01 30 प.	–06 00	00 00	+05 30
Derby	52 55 उ.	01 29 प.	–05 56	00 00	+05 30
Glasgow, Scotla	55 53 उ.	04 15 प.	–17 00	00 00	+05 30
Hamilton, Scotla	55 47 उ.	04 03 प.	–16 12	00 00	+05 30
Kingswood	51 27 उ.	02 31 प.	–10 04	00 00	+05 30
Leeds	53 50 उ.	01 35 प.	–06 20	00 00	+05 30
Leicester	52 38 उ.	01 05 प.	–04 20	00 00	+05 30
Liverpool	53 25 उ.	02 58 प.	–11 52	00 00	+05 30
London	51 32 उ.	00 05 प.	–00 20	00 00	+05 30
Manchester	53 30 उ.	02 13 प.	–08 52	00 00	+05 30
New-Castle	52 26 उ.	03 06 प.	–12 24	00 00	+05 30
Northampton	52 14 उ.	00 54 प.	–03 36	00 00	+05 30
Nottingham	52 58 उ.	01 10 प.	–04 40	00 00	+05 30
Slough	51 31 उ.	00 36 प.	–02 24	00 00	+05 30
Southampton	50 55 उ.	01 25 प.	–05 40	00 00	+05 30
Walsall	52 35 उ.	01 58 प.	–07 52	00 00	+05 30
Wolverhampton	52 36 उ.	02 08 प.	–08 32	[illegible]	[illegible]

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टैं. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(12) FIJI [ग्रीष्मकालीन समय ग्रहण किया जाता है।] (नवम्बर के प्रथम सप्ताह के रविवार से फरवरी के अन्तिम रविवार तक)					
Kandavu Island	19 03 द.	178 13 पू.	–05 58	180 00 पू.	–06 30
Lau Group	18 20 द.	178 30 पू.	–06 00	180 00 पू.	–06 30
ONO-I-LAU	20 39 द.	178 42 पू.	–05 12	180 00 पू.	–06 30
Rotuma Island	12 30 द.	177 05 पू.	–11 40	180 00 पू.	–06 30
Taveuni	16 51 द.	179 58 प.	–00 08	180 00 पू.	–06 30
Vanua Levu	16 33 द.	179 15 पू.	–03 00	180 00 पू.	–06 30
Vitina	16 19 द.	179 43 पू.	–01 08	180 00 पू.	–06 30
(13) FRANCE					
Lyon	45 45 उ.	04 51 पू.	–40 36	15 00 पू.	+04 30
Paris	48 52 उ.	02 20 पू.	–50 40	15 00 पू.	+04 30
(14) Germany					
Berlin	52 32 उ.	13 25 पू.	–06 20	15 00पू.	+04 30
Bonn	50 44 उ.	07 05 पू.	–31 40	15 00पू.	+04 30
(15) GREECE					
Piraievs (Piraeus)	37 57 उ.	23 38 पू.	–25 28	30 00पू.	+03 30
(16) HONGKONG (CHINA का भाग)					
Kwun Tong	22 19 उ.	114 12 पू.	–23 12	120 00 पू.	–02 30
Tai Tong	22 25 उ.	114 01 पू.	–23 56	120 00 पू.	–02 30
(17) Indonesia [यह देश तीन कालक्षेत्रों में विभाजित है] [105°-00 पू., 120°-00 पू., 135°-00 पू.,]					
Jambi	01 42 द.	103 34 पू.	–05 44	105 00 पू.	–01 30
Jakarta	06 10 द.	106 48 पू.	+07 12	105 00 पू.	–01 30
(18) IRAN					
Tehran	35 40 उ.	51 26 पू.	–04 16	52 30 पू.	+02 00
(19) IRAQ					
Baghdad	33 21 उ.	44 25 पू.	–02 20	45 00 पू.	+02 30
(20) IRELAND					
Dublin	53 20 उ.	06 15 प.	–25 00	00 00	+05 30
(21) ITALY					
Brescia	45 33 उ.	10 15 पू.	–19 00	15 00 पू.	+04 30
Monza	45 35 उ.	09 16 पू.	–22 56	15 00 पू.	+04 30
Lucca	43 50 उ.	10 29 पू.	–18 04	15 00 पू.	+04 30
Milano (Milan)	45 28 उ.	09 12 पू.	–23 12	15 00 पू.	+04 30
Rho	45 32 उ.	09 02 पू.	–23 52	15 00 पू.	+04 30
Rome	41 54 उ.	12 29 पू.	–10 04	15 00 पू.	+04 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(22) JAPAN					
Tokyo	35 42 उ.	139 46 पू.	+19 04	135 00 पू.	–03 30
(23) KENYA					
Mombasa	04 03 द.	39 40 पू.	–21 20	45 00 पू.	+02 30
Nairobi	01 17 द.	36 49 पू.	–32 44	45 00 पू.	+02 30
(24) KOREA (South)					
Seoul	37 33 उ.	126 58 पू.	–32 08	135 00 पू.	–03 30
(25) KUWAIT					
AL-Kuwayt	29 20 उ.	47 59 पू.	+11 56	45 00 पू.	+02 30
AL-Jahrah	29 20 उ.	47 40 पू.	+10 40	45 00 पू.	+02 30
(26) MALAYSIA					
Kualalumpur	03 10 उ.	101 42 पू.	–73 12	120 00 पू.	–02 30
(27) MAURITIUS					
Port Louis	20 10 द.	57 30 पू.	–10 00	60 00 पू.	+01 30
(28) NEPAL					
Kathmandu	27 43 उ.	85 19 पू.	–03 44	86 15 पू.	–00 15
(29) NETHERLANDS (HOLLAND)					
Amsterdam	52 22 उ.	04 54 पू.	–40 24	15 00 पू.	+04 30
(30) NEW-ZEALAND					
Auckland	36 52 द.	174 46 पू.	–20 56	180 00 पू.	–06 30
Christchurch	43 32 द.	172 38 पू.	–29 28	180 00 पू.	–06 30
Hamilton	37 47 द.	175 17 पू.	–18 52	180 00 पू.	–06 30
Napier	39 29 द.	176 55 पू.	–12 20	180 00 पू.	–06 30
Wellington	41 18 द.	174 47 पू.	–20 52	180 00 पू.	–06 30
(31) NORWAY					
Drammen	59 44 उ.	10 15 पू.	–19 00	15 00 पू.	+04 30
Oslo	59 55 उ.	10 45 पू.	–18 00	15 00 पू.	+04 30
(32) OMAN					
Muscat	23 37 उ.	58 35 पू.	–05 40	60 00 पू.	+01 30
(33) PAKISTAN					
Islamabad	33 42 उ.	73 10 पू.	–07 20	75 00 पू.	+00 30
Karachi	24 52 उ.	67 03 पू.	–31 48	75 00 पू.	+00 30
Lahore	31 35 उ.	74 18 पू.	–02 48	75 00 पू.	+00 30
Multan	30 11 उ.	71 29 पू.	–14 04	75 00 पू.	+00 30
Sialkot	32 30 उ.	74 31 पू.	–01 56	75 00 पू.	+00 30
(34) PHILIPPINES					
Manila	14 35 उ.	121 00 पू.	+04 00	120 00 पू.	–02 30
Olongapo	14 50 उ.	120 16 पू.	+01 04	120 00 पू.	–02 30

नगर	अक्षांश उ.=North द.=South अं. क.	रेखांश पू.=East प..=West अं. क.	स्टै. अन्तर (स्थानीय स्टै. टा. से स्टै. मेरि. का अन्तर) मिं. सै.	स्टैण्डर्ड मेरिडियन (मानक रेखांश) अं. क.	भा. स्टै. टा. से अन्तर घं. मिं.
(35) PORTUGAL [Standard Meridian—G.M.T.—0°-00′]					
Lisbon	38 43 उ.	09 08 प.	–36 32	00 00 पू.	+05 30
(36) QATAR					
Doha	25 17 उ.	51 32 पू.	+26 08	45 00 पू.	+02 30
(37) RUSSIA [यह देश भी अलग-अलग कालक्षेत्रों में बंटा हुआ है।]					
Moscow	55 45 उ.	37 35 पू.	–29 40	45 00 पू.	+02 30
(38) SAUDI-ARABIA					
Al-Mubarraz	22 17 उ.	46 44 पू.	+06 56	45 00 पू.	+02 30
Riyadh	24 38 उ.	46 43 पू.	+06 52	45 00 पू.	+02 30
Jiddah	21 30 उ.	39 12 पू.	–23 12	45 00 पू.	+02 30
(39) SINGAPORE					
Singapore	01 17 उ.	103 51 पू.	–64 36	120 00 पू.	–02 30
(40 SOUTH-AFRICA					
Cape Town	33 55 द.	18 22 पू.	–46 32	30 00 पू.	+03 30
Durban	29 55 द.	30 56 पू.	+03 44	30 00 पू.	+03 30
East London	33 00 द.	27 55 पू.	–08 20	30 00 पू.	+03 30
Johannesburg	26 15 द.	28 00 पू.	–08 00	30 00 पू.	+03 30
Port-Elizabeth	33 58 द.	25 40 पू.	–17 20	30 00 पू.	+03 30
(41) SPAIN					
Barcelona	41 23 उ.	02 11 पू.	–51 16	15 00 पू.	+04 30
Madrid	40 24 उ.	03 41 प.	–74 44	15 00 पू.	+04 30
Manresa	41 44 उ.	01 50 प.	–67 20	15 00 पू.	+04 30
Salamanca	40 58 उ.	05 39 प.	–82 26	15 00 पू.	+04 30
San Fernando	36 28 उ.	06 12 प.	–84 48	15 00 पू.	+04 30
(42) SRI-LANKA					
Colombo	06 56 उ.	79 51 पू.	–40 36	90 00 पू.	–00 30
Jaffna	09 40 उ.	80 00 पू.	–40 00	90 00 पू.	–00 00
Kandy	07 18 उ.	80 38 पू.	–37 28	90 00 पू.	–00 00
(43) Switzerland					
Berne	46 57 उ.	07 26 पू.	–30 16	15 00 पू.	+04 30
Geneva	46 12 उ.	06 09 पू.	–35 24	15 00 पू.	+04 30
(44) UNITED-ARAB-EMIRATES					
Abudhabi	24 28 उ.	54 22 पू.	–22 32	60 00 पू.	+01 30
Sharjah	25 22 उ.	55 23 पू.	–18 28	60 00 पू.	+01 30
Dubai	25 18 उ.	55 18 पू.	–18 48	60 00 पू.	+01 30
(45) ZIMBABWE					
Harare	17 50 द.	31 03 पू.	+04 08	30 00 पू.	+03 30

मध्यम सूर्योदयास्त सारिणी से विश्व के किसी भी नगर का सूर्योदयास्त निकालें

ज्योतिष शास्त्र में सूर्योदयास्त की उपयोगिता सर्वविदित है। पृथ्वी पर सभी स्थानों पर सूर्योदयास्त एवं दिनमान एक समान नहीं होता। पृथ्वी की दैनिक गति एवं परिक्रमण गति के कारण प्रत्येक स्थान पर प्रतिदिन सूर्योदय एवं अस्त काल में अन्तर पड़ता है। सूर्योदयास्तादि तथा विभिन्न स्थानों की पारस्परिक अंशात्मक दूरी जानने के लिए अभीष्ट स्थान का अक्षांश, रेखांश एवं स्टैण्डर्ड अन्तर की आवश्यकता पड़ती है। किसी नगर के स्टैण्डर्ड अन्तर की जानकारी के लिए तत्सम्बन्धी देश के मानक समय (Standard Time) के माध्यमिक मध्यान्ह (Stand. Meridian) रेखा ज्ञान होना चाहिए। भारतीय मानक समय का निर्धारण रेखांश ८२/३० पूर्व (ग्रीनविच से) एवं अक्षांश २३/११ उत्तर रेखाओं के मध्य बिन्दु पर आधारित है। इसी मध्यवर्ती रेखांश बिन्दु ८२/३० के आधार पर भारत में स्थित अन्य नगरों की अंशात्मक दूरी (Standard difference) ४ मिंट प्रति एक अंश के अनुपात से ऋण (−) अथवा जमा (+) किया जाता है। जो भारतीय नगर ८२°/३० रेखांश से पश्चिम में पड़ेंगे, वहां का देशान्तर (स्टै० अन्तर) ऋण (−) लिखा जाता है तथा जो भा० नगर ८२°/३०' के पूर्व में पड़ेंगे, वहां का स्टै० अन्तर जमा (+) में अंकित किया जाता है।

गत पृष्ठों पर लिखे गए प्रायः सभी नगर ८२°/३०' पू० **रेखांश से पश्चिम** में स्थित होने के कारण, **उनका रेखांतर** (स्टैण्डर्ड अन्तर) ऋण (−) लिखा गया है, जबकि अपने नगर का सूर्योदय-अस्त जानने के लिए नगर के आगे लिखे हुए स्टै० अन्तर को स्थानीय मध्यम सूर्योदयास्त अक्षांश सारणी में प्राप्त सूर्योदयास्त में जमा (+) करके अभीष्ट नगर का सूर्योदयास्त पता चलेगा।

यदि आपके नगर के अक्षांश (अंश कला में) मध्यम अक्षांश सारिणी में दिए सूर्योदयादि से कम या अधिक हो तो आप अभीष्ट तिथि से सूर्योदय-अस्त में अनुपातिक विधि से मिंट/सैकिंडज़ का संस्कार करके अभीष्ट तिथि का सूर्योदयास्त निकाल सकते हैं। **इस दृश्यमान सूर्योदयास्त में अपने अक्षांश भेद के अनुसार लगभग ३ मिंट जमा करने (किरणवक्री भवन संस्कार) से शुद्ध शास्त्रीय मान (इष्टकालिक) का सूर्योदयास्त प्राप्त हो जायेगा।**

उदाहरण—मान लो, आपको 2 फर. को सोनीपत का सूर्योदय ज्ञात करना है। सर्वप्रथम सोनीपत के अक्षांश, रेखांश ज्ञात करेंगे। गत पृष्ठों में देखने से हमें सोनीपत का अक्षांश २८/५८, रेखांश ७६/५९ तथा स्टैं. अन्तर −२२/०४ मिं. सै. प्राप्त हुआ है। सारिणी में अक्षांश २५ से ३० के मध्य अनुपातिक विधि से देखने पर हमें सू. उ. ६/४९ प्राप्त हुआ। इसमें स्टैं. अन्तर (−२२/०४) अर्थात् २२ मिनट जमा करने (क्योंकि स्टैं. अन्तर ऋण है अथवा यूं कहिए सोनीपत ८२°/३० रेखांश के पश्चिम में है) से सूर्योदय ७/११ प्राप्त हुए। इसमें ३ मिनट शास्त्रीय समय भी जमा करने से शुद्ध इष्टकालिक सूर्योदय प्राप्त होगा। अर्थात् ७/१४

आगे लिखे अक्षांशों में भारत के अतिरिक्त विदेशों के भी जैसे-इंगलैण्ड, कैनेडा, अमरीका आदि नगरों के सूर्योदयास्त सुगमता से ज्ञात किए जा सकते हैं।

ध्यान रहे, **भारत के अधिकांश नगरों के अक्षांश १०° से ३५° अक्षांश तक ही पड़ते हैं, शेष अक्षांश विदेशी नगरों के हैं।**

—शुभचिन्तक पं. विवेक शर्मा गणितकर्त्ता

नीचे उत्तरी अक्षांशों के अनुसार स्वदेशीय (लोकल) मध्यम सूर्योदयास्त लिख रहे हैं इनमें अपने अभीष्ट अक्षांश का स्टै. अन्तर + या − करने से स्टै. टा. में सू. उ. व सू. अ. निकल आएगा।

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1 जन	6 17	17 49	6 35	17 31	6 45	17 21	6 56	17 10	7 08	16 58	7 22	16 44	7 39	16 28	7 59	16 08	8 08	15 58	8 19	15 47
3 ,,	6 18	17 51	6 36	17 33	6 46	17 24	6 56	17 13	7 08	17 00	7 22	16 46	7 39	16 31	7 59	16 11	8 08	16 01	8 19	15 50
5 ,,	6 18	17 52	6 36	17 34	6 46	17 25	6 57	17 14	7 09	17 02	7 22	16 49	7 38	16 33	7 59	16 13	8 08	16 04	8 19	15 53
7 ,,	6 19	17 53	6 37	17 35	6 47	17 27	6 57	17 16	7 09	17 04	7 22	16 51	7 38	16 35	7 58	16 16	8 07	16 07	8 18	15 56
9 ,,	6 20	17 54	6 37	17 36	6 47	17 28	6 57	17 17	7 09	17 05	7 22	16 53	7 38	16 37	7 58	16 18	8 06	16 09	8 17	15 59
11 ,,	6 20	17 55	6 38	17 38	6 47	17 29	6 57	17 18	7 09	17 07	7 22	16 55	7 37	16 40	7 57	16 21	8 05	16 11	8 15	16 02
13 ,,	6 21	17 56	6 38	17 39	6 47	17 30	6 57	17 20	7 08	17 09	7 21	16 57	7 37	16 42	7 56	16 23	8 04	16 14	8 14	16 04
15 ,,	6 22	17 58	6 38	17 40	6 47	17 31	6 57	17 22	7 08	17 11	7 21	16 59	7 36	16 44	7 55	16 26	8 03	16 17	8 12	16 08
17 ,,	6 22	17 59	6 38	17 41	6 47	17 33	6 57	17 24	7 08	17 13	7 20	17 01	7 35	16 47	7 54	16 29	8 01	16 21	8 10	16 12
19 ,,	6 23	18 00	6 38	17 42	6 47	17 34	6 56	17 25	7 07	17 15	7 19	17 03	7 33	16 50	7 52	16 32	7 59	16 24	8 08	16 15
21 ,,	6 23	18 01	6 38	17 43	6 47	17 35	6 56	17 27	7 06	17 17	7 18	17 06	7 32	16 52	7 50	16 35	7 57	16 27	8 06	16 19
23 ,,	6 23	18 02	6 38	17 44	6 46	17 38	6 55	17 29	7 05	17 19	7 17	17 08	7 30	16 55	7 48	16 39	7 54	16 30	8 04	16 23
25 ,,	6 23	18 03	6 37	17 46	6 46	17 40	6 55	17 31	7 04	17 21	7 16	17 10	7 29	16 58	7 45	16 42	7 52	16 34	8 00	16 27
27 ,,	6 23	18 04	6 37	17 48	6 45	17 42	6 54	17 33	7 03	17 23	7 14	17 13	7 27	16 01	7 42	16 45	7 49	16 38	7 57	16 31
29 ,,	6 23	18 05	6 37	17 49	6 45	17 43	6 53	17 34	7 02	17 25	7 13	17 15	7 25	16 04	7 40	16 48	7 47	16 42	7 54	16 35
31 ,,	6 23	18 05	6 37	17 51	6 44	17 44	6 52	17 36	7 01	17 27	7 11	17 18	7 23	16 07	7 37	16 52	7 44	16 46	7 51	16 39

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
फरवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
2 फर	6 23	18 06	6 36	17 52	6 43	17 45	6 50	17 37	6 59	17 29	7 09	17 20	7 21	17 09	7 34	16 56	7 41	16 50	7 48	16 43
4 ,,	6 22	18 06	6 35	17 53	6 41	17 47	6 49	17 39	6 58	17 31	7 07	17 23	7 18	17 12	7 32	17 00	7 38	16 54	7 44	16 47
6 ,,	6 22	18 07	6 34	17 54	6 40	17 49	6 48	17 41	6 56	17 33	7 05	17 25	7 16	17 15	7 28	17 03	7 34	16 57	7 41	16 51
8 ,,	6 22	18 07	6 34	17 55	6 39	17 50	6 47	17 42	6 54	17 35	7 03	17 27	7 13	17 17	7 25	17 07	7 31	17 01	7 37	16 55
10 ,,	6 21	18 08	6 33	17 56	6 38	17 50	6 45	17 44	6 52	17 37	7 01	17 30	7 10	17 20	7 22	17 10	7 27	17 05	7 33	16 59
12 ,,	6 21	18 08	6 32	17 57	6 36	17 52	6 44	17 46	6 50	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 18	17 13	7 24	17 08	7 29	17 03
14 ,,	6 20	18 08	6 31	17 58	6 36	17 53	6 42	17 47	6 48	17 41	6 56	17 34	7 05	17 26	7 15	17 16	7 20	17 12	7 25	17 07
16 ,,	6 20	18 09	6 30	17 59	6 34	17 55	6 40	17 49	6 46	17 43	6 53	17 36	7 02	17 29	7 11	17 20	7 16	17 15	7 21	17 11
18 ,,	6 19	18 09	6 28	18 00	6 33	17 56	6 38	17 50	6 43	17 45	6 51	17 39	6 58	17 32	7 08	17 23	7 12	17 19	7 17	17 15
20 ,,	6 19	18 09	6 27	18 01	6 31	17 57	6 36	17 52	6 41	17 47	6 48	17 42	6 55	17 35	7 04	17 26	7 08	17 23	7 12	17 19
22 ,,	6 18	18 10	6 26	18 02	6 30	17 58	6 35	17 53	6 39	17 49	6 45	17 44	6 52	17 38	7 00	17 29	7 04	17 27	7 08	17 23
24 ,,	6 17	18 10	6 24	18 03	6 27	17 59	6 33	17 55	6 36	17 51	6 43	17 46	6 49	17 41	6 56	17 33	7 00	17 30	7 03	17 27
26 ,,	6 16	18 10	6 23	18 03	6 26	18 00	6 30	17 56	6 34	17 53	6 40	17 48	6 46	17 43	6 52	17 36	6 55	17 33	6 59	17 31
28 ,,	6 15	18 10	6 22	18 04	6 24	18 01	6 28	17 58	6 32	17 54	6 38	17 50	6 42	17 45	6 48	17 39	6 51	17 36	6 54	17 34
1 मार्च	6 15	18 10	6 20	18 05	6 23	18 02	6 26	17 59	6 30	17 55	6 34	17 52	6 39	17 47	6 44	17 42	6 47	17 39	6 50	17 38
3 ,,	6 14	18 11	6 19	18 05	6 22	18 03	6 24	18 00	6 28	17 57	6 31	17 54	6 35	17 49	6 40	17 45	6 42	17 43	6 45	17 41
5 ,,	6 13	18 11	6 17	18 06	6 20	18 04	6 22	18 02	6 24	17 59	6 28	17 56	6 32	17 52	6 36	17 48	6 38	17 47	6 40	17 44
7 ,,	6 12	18 11	6 15	18 07	6 18	18 05	6 20	18 03	6 22	18 01	6 25	17 58	6 28	17 55	6 32	17 51	6 33	17 50	6 35	17 48
9 ,,	6 11	18 11	6 14	18 08	6 16	18 06	6 18	18 04	6 20	18 02	6 22	18 00	6 26	17 58	6 28	17 55	6 29	17 54	6 30	17 52
11 ,,	6 10	18 11	6 12	18 08	6 14	18 07	6 15	18 05	6 17	18 04	6 19	18 03	6 21	18 00	6 23	17 58	6 24	17 57	6 26	17 56
13 ,,	6 08	18 11	6 11	18 09	6 12	18 08	6 13	18 07	6 14	18 06	6 16	18 05	6 17	18 03	6 19	18 01	6 20	18 01	6 21	18 00
15 ,,	6 07	18 11	6 09	18 10	6 10	18 09	6 10	18 08	6 11	18 07	6 12	18 08	6 13	18 07	6 15	18 05	6 15	18 04	6 16	18 03
17 ,,	6 06	18 11	6 08	18 10	6 08	18 10	6 08	18 09	6 09	18 09	6 09	18 09	6 10	18 08	6 10	18 08	6 11	18 08	6 12	18 07
19 ,,	6 05	18 11	6 05	18 11	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 10	6 06	18 11	6 06	18 11	6 06	18 11
21 ,,	6 04	18 11	6 04	18 11	6 04	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 02	18 13	6 02	18 13	6 02	18 14	6 01	18 15	6 01	18 15
23 ,,	6 03	18 11	6 03	18 12	6 02	18 12	6 01	18 13	5 59	18 14	5 59	18 15	5 58	18 16	5 57	18 17	5 57	18 18	5 56	18 19
25 ,,	6 02	18 11	6 02	18 12	6 00	18 13	5 58	18 14	5 56	18 15	5 56	18 17	5 55	18 19	5 53	18 21	5 52	18 21	5 51	18 22
27 ,,	6 00	18 11	6 00	18 12	5 57	18 14	5 56	18 15	5 53	18 16	5 53	18 19	5 51	18 21	5 48	18 24	5 47	18 24	5 46	18 26
29 ,,	5 59	18 11	5 57	18 13	5 55	18 15	5 53	18 17	5 50	18 18	5 50	18 21	5 47	18 24	5 44	18 27	5 43	18 28	5 41	18 30
31 ,,	5 58	18 10	5 55	18 13	5 53	18 16	5 51	18 18	5 46	18 20	5 46	18 23	5 43	18 26	5 42	18 30	5 39	18 31	5 34	18 33
2 अप्रै	5 57	18 10	5 53	18 14	5 51	18 17	5 49	18 19	5 45	18 22	5 43	18 25	5 40	18 29	5 40	18 33	5 34	18 31	5 31	18 37
4 ,,	5 56	19 10	5 51	18 14	5 49	18 17	5 46	18 20	5 43	18 23	5 40	18 27	5 36	18 31	5 36	18 36	5 29	18 38	5 26	18 41
6 ,,	5 55	18 10	5 50	18 15	5 47	18 18	5 44	18 21	5 41	18 25	5 37	18 29	5 32	18 34	5 32	18 39	5 26	18 42	5 22	18 45
8 ,,	5 54	18 10	5 48	18 16	5 45	18 19	5 42	18 22	5 38	18 26	5 34	18 31	5 29	18 36	5 29	18 42	5 19	18 45	5 17	18 48
10 ,,	5 52	18 10	5 46	18 17	5 43	18 20	5 40	18 24	5 35	18 28	5 31	18 33	5 25	18 39	5 25	18 46	5 14	18 49	5 12	18 52
12 ,,	5 51	18 10	5 45	18 17	5 41	18 21	5 38	18 25	5 33	18 29	5 28	18 35	5 21	18 41	5 21	18 49	5 11	18 52	5 07	18 56
14 ,,	5 50	18 10	5 43	18 18	5 39	18 22	5 35	18 26	5 30	18 31	5 24	18 37	5 18	18 44	5 18	18 52	5 06	18 56	5 02	19 00
16 ,,	5 49	18 10	5 41	18 18	5 37	18 23	5 33	18 27	5 27	18 32	5 21	18 39	5 14	18 46	5 14	18 55	5 02	18 59	4 58	19 04
18 ,,	5 48	18 10	5 40	18 19	5 36	18 24	5 30	18 29	5 25	18 34	5 18	18 41	5 12	18 49	5 12	18 58	4 58	19 02	4 53	19 07
20 ,,	5 47	18 11	5 39	18 19	5 34	18 24	5 28	18 30	5 22	18 36	5 16	18 43	5 08	18 51	5 08	19 01	4 53	19 04	4 48	19 11
22 ,,	5 46	18 11	5 37	18 20	5 32	18 25	5 26	18 31	5 20	18 38	5 13	18 45	5 04	18 54	5 04	19 04	4 49	19 09	4 44	19 15
24 ,,	5 45	18 11	5 36	18 20	5 31	18 26	5 24	18 32	5 17	18 39	5 10	18 47	5 01	18 56	5 01	19 07	4 45	19 13	4 39	19 18

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अप्रैल	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
26 अप्रै	5 45	18 11	5 34	18 21	5 29	18 27	5 22	18 34	5 15	18 41	5 08	18 49	4 58	18 59	4 58	19 11	4 41	19 16	4 35	19 22
28 ,,	5 44	18 11	5 33	18 22	5 27	18 28	5 20	18 35	5 13	18 43	5 04	18 51	4 54	19 01	4 54	19 14	4 37	19 19	4 31	19 25
30 ,,	5 43	18 11	5 32	18 23	5 26	18 29	5 18	18 36	5 11	18 44	5 02	18 53	4 51	19 04	4 51	19 17	4 33	19 23	4 26	19 29
2 मई	5 42	18 12	5 30	18 23	5 24	18 30	5 16	18 38	5 09	18 46	4 59	18 55	4 48	19 06	4 35	19 20	4 29	19 26	4 22	19 33
4 ,,	5 42	18 12	5 29	18 24	5 23	18 31	5 15	18 39	5 07	18 47	4 57	18 57	4 45	19 09	4 32	19 23	4 25	19 29	4 18	19 37
6 ,,	5 41	18 12	5 28	18 25	5 21	18 32	5 13	18 40	5 05	18 49	4 54	18 59	4 43	19 11	4 28	19 26	4 22	19 32	4 14	19 40
8 ,,	5 40	18 12	5 27	18 26	5 20	18 33	5 12	18 41	5 03	18 51	4 52	19 01	4 40	19 14	4 25	19 29	4 18	19 36	4 10	19 44
10 ,,	5 40	18 13	5 26	18 26	5 19	18 34	5 11	18 42	5 01	18 53	4 50	19 03	4 37	19 16	4 20	19 32	4 15	19 39	4 06	19 47
12 ,,	5 40	18 13	5 25	18 27	5 18	18 35	5 09	18 44	4 59	18 54	4 48	19 05	4 35	19 19	4 17	19 35	4 11	19 42	4 03	19 51
14 ,,	5 39	18 14	5 24	18 28	5 17	18 36	5 07	18 46	4 57	18 56	4 46	19 07	4 32	19 21	4 14	19 37	4 08	19 45	3 59	19 54
16 ,,	5 39	18 14	5 24	18 29	5 16	18 37	5 06	18 47	4 56	18 57	4 44	19 09	4 30	19 24	4 12	19 40	4 05	19 49	3 56	19 58
18 ,,	5 38	18 14	5 23	18 30	5 15	18 38	5 05	18 48	4 54	18 59	4 42	19 11	4 28	19 26	4 09	19 43	4 02	19 52	3 53	20 01
20 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 14	18 39	5 04	18 49	4 53	19 00	4 41	19 13	4 26	19 28	4 07	19 46	3 59	19 55	3 50	20 04
22 ,,	5 38	18 15	5 22	18 31	5 13	18 40	5 03	18 50	4 52	19 02	4 39	19 15	4 24	19 30	4 04	19 48	3 57	19 58	3 47	20 07
24 ,,	5 38	18 16	5 21	18 32	5 12	18 41	5 02	18 51	4 51	19 03	4 38	19 16	4 22	19 32	4 02	19 51	3 54	20 00	3 44	20 10
26 ,,	5 38	18 16	5 21	18 33	5 11	18 42	5 01	18 52	4 50	19 05	4 36	19 18	4 21	19 34	4 01	19 53	3 52	20 03	3 42	20 13
28 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 43	5 00	18 54	4 49	19 06	4 35	19 19	4 19	19 36	3 59	19 56	3 50	20 05	3 39	20 16
30 ,,	5 38	18 17	5 20	18 34	5 11	18 44	5 00	18 55	4 48	19 07	4 34	19 20	4 18	19 38	3 58	19 58	3 48	20 08	3 37	20 18
1 जून	5 38	18 18	5 20	18 35	5 10	18 45	4 59	18 56	4 47	19 08	4 33	19 22	4 17	19 39	3 56	20 00	3 46	20 10	3 35	20 21
3 ,,	5 38	18 18	5 20	18 36	5 10	18 46	4 59	18 57	4 47	19 09	4 32	19 24	4 16	19 41	3 55	20 02	3 45	20 12	3 33	20 23
5 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 47	4 58	18 58	4 46	19 10	4 32	19 25	4 15	19 42	3 53	20 04	3 43	20 14	3 32	20 26
7 ,,	5 38	18 19	5 20	18 37	5 10	18 48	4 58	18 59	4 46	19 11	4 31	19 27	4 14	19 44	3 52	20 06	3 42	20 16	3 30	20 28
9 ,,	5 39	18 20	5 20	18 38	5 10	18 49	4 58	19 00	4 46	19 12	4 31	19 28	4 14	19 45	3 52	20 07	3 41	20 18	3 29	20 30
11 ,,	5 39	18 20	5 20	18 39	5 10	18 50	4 58	19 01	4 45	19 13	4 30	19 29	4 13	19 46	3 51	20 08	3 41	20 20	3 28	20 31
13 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 58	19 01	4 45	19 14	4 30	19 30	4 12	19 48	3 50	20 10	3 40	20 22	3 27	20 34
15 ,,	5 39	18 21	5 20	18 40	5 10	18 51	4 59	19 02	4 46	19 15	4 30	19 31	4 12	19 49	3 50	20 11	3 39	20 22	3 27	20 35
17 ,,	5 39	18 22	5 21	18 41	5 10	18 51	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 31	4 13	19 49	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
19 ,,	5 40	18 22	5 21	18 41	5 11	18 52	4 59	19 03	4 46	19 16	4 31	19 32	4 13	19 50	3 50	20 12	3 39	20 23	3 27	20 36
21 ,,	5 40	18 23	5 22	18 42	5 11	18 52	5 00	19 04	4 47	19 17	4 31	19 32	4 13	19 50	3 51	20 13	3 40	20 23	3 27	20 36
23 ,,	5 41	18 23	5 22	18 42	5 12	18 53	5 00	19 04	4 47	19 17	4 33	19 33	4 14	19 51	3 52	20 13	3 41	20 24	3 28	20 36
25 ,,	5 41	18 24	5 23	18 43	5 12	18 53	5 01	19 05	4 48	19 17	4 33	19 33	4 15	19 51	3 53	20 13	3 41	20 24	3 29	20 36
27 ,,	5 42	18 24	5 23	18 43	5 13	18 53	5 01	19 05	4 48	19 18	4 34	19 33	4 16	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 29	20 36
29 ,,	5 42	18 24	5 24	18 43	5 13	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 33	4 17	19 51	3 54	20 13	3 43	20 24	3 32	20 36
1 जुला	5 42	18 24	5 24	18 43	5 14	18 53	5 02	19 05	4 49	19 18	4 34	19 32	4 17	19 50	3 54	20 12	3 44	20 23	3 32	20 35
3 ,,	5 43	18 25	5 24	18 43	5 15	18 54	5 03	19 05	4 50	19 17	4 35	19 32	4 18	19 50	3 56	20 12	3 45	20 22	3 33	20 34
5 ,,	5 44	18 25	5 25	18 43	5 15	18 53	5 04	19 05	4 51	19 17	4 37	19 31	4 19	19 49	3 58	20 11	3 47	20 21	3 35	20 33
7 ,,	5 44	18 25	5 26	18 43	5 16	18 53	5 05	19 04	4 52	19 17	4 38	19 31	4 20	19 49	4 00	20 10	3 49	20 20	3 37	20 32
9 ,,	5 45	10 25	5 27	18 43	5 17	18 53	5 06	19 04	4 53	19 16	4 39	19 31	4 22	19 48	4 02	20 09	3 51	20 14	3 40	20 30
11 ,,	5 45	18 25	5 27	18 43	5 18	18 53	5 07	19 04	4 54	19 16	4 40	19 30	4 24	19 47	4 04	20 07	3 53	20 17	3 42	20 28
13 ,,	5 46	18 25	5 28	18 43	5 19	18 53	5 08	19 03	4 56	19 15	4 42	19 29	4 25	19 45	4 06	20 05	3 55	20 16	3 44	20 26
15 ,,	5 46	18 25	5 29	18 43	5 20	18 52	5 09	19 02	4 57	19 14	4 43	19 28	4 27	19 44	4 08	20 04	3 57	20 14	3 47	20 24
17 ,,	5 47	18 25	5 29	18 42	5 21	18 52	5 10	19 01	4 58	19 13	4 45	19 27	4 29	19 42	4 10	20 02	4 00	20 12	3 50	20 22

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
19 जुला	5 47	18 25	5 30	18 42	5 22	18 51	5 11	19 01	4 59	19 12	4 46	19 25	4 31	19 41	4 12	20 00	4 03	20 09	3 52	20 19
21 ,,	5 47	18 25	5 31	18 41	5 22	18 50	5 12	19 00	5 01	19 11	4 48	19 24	4 33	19 39	4 14	19 57	4 06	20 07	3 55	20 17
23 ,,	5 47	18 25	5 32	18 41	5 23	18 49	5 13	18 59	5 02	19 10	4 50	19 22	4 35	19 37	4 16	19 55	4 08	20 04	3 58	20 14
25 ,,	5 48	18 24	5 32	18 40	5 24	18 48	5 14	18 58	5 04	19 08	4 51	19 21	4 37	19 35	4 19	19 53	4 11	20 01	4 01	20 11
27 ,,	5 48	18 24	5 33	18 39	5 25	18 47	5 15	18 57	5 05	19 07	4 53	19 19	4 39	19 33	4 22	19 50	4 14	19 58	4 04	20 07
29 ,,	5 49	18 23	5 34	18 38	5 26	18 46	5 17	18 55	5 07	19 05	4 55	19 17	4 41	19 31	4 24	19 47	4 17	19 55	4 07	20 04
31 ,,	5 49	18 23	5 35	18 37	5 27	18 45	5 17	18 54	5 08	19 04	4 57	19 15	4 44	19 28	4 27	19 44	4 20	19 52	4 11	20 01
2 अग	5 50	18 22	5 35	18 36	5 28	18 44	5 19	18 52	5 09	19 02	4 59	19 13	4 46	19 25	4 30	19 41	4 23	19 48	4 14	19 57
4 ,,	5 50	18 22	5 36	18 35	5 29	18 43	5 20	18 51	5 11	19 00	5 00	19 11	4 48	19 23	4 33	19 38	4 26	19 45	4 18	19 53
6 ,,	5 50	18 21	5 36	18 34	5 30	18 42	5 22	18 50	5 12	18 58	5 02	19 08	4 50	19 20	4 36	19 34	4 28	19 42	4 21	19 49
8 ,,	5 50	18 21	5 37	18 33	5 31	18 40	5 23	18 48	5 14	18 56	5 04	19 06	4 53	19 18	4 39	19 31	4 32	19 38	4 25	19 45
10 ,,	5 50	18 20	5 38	18 32	5 32	18 39	5 25	18 46	5 16	18 54	5 06	19 03	4 55	19 15	4 42	19 28	4 35	19 34	4 28	19 45
12 ,,	5 51	18 19	5 39	18 31	5 33	18 37	5 26	18 44	5 17	18 52	5 08	19 01	4 57	19 12	4 45	19 24	4 38	19 30	4 32	19 37
14 ,,	5 51	18 18	5 39	18 30	5 33	18 35	5 27	18 42	5 19	18 49	5 10	18 58	5 00	19 08	4 47	19 21	4 42	19 26	4 35	19 32
16 ,,	5 51	18 17	5 40	18 28	5 34	18 34	5 28	18 40	5 20	18 47	5 12	18 56	5 02	19 05	4 51	19 17	4 45	19 22	4 39	19 28
18 ,,	5 51	18 16	5 41	18 26	5 35	18 32	5 29	18 38	5 22	18 45	5 14	18 23	5 04	19 02	4 53	19 13	4 48	19 18	4 42	19 23
20 ,,	5 51	18 15	5 41	18 25	5 36	18 30	5 30	18 36	5 23	18 43	5 16	18 50	5 07	18 59	4 57	19 09	4 51	19 14	4 46	19 19
22 ,,	5 51	18 14	5 42	18 23	5 37	18 28	5 32	18 34	5 25	18 40	5 18	18 47	5 09	18 56	4 59	19 05	4 55	10 10	4 49	19 15
24 ,,	5 51	18 13	4 42	18 22	5 38	18 27	5 33	18 32	5 26	18 37	5 19	18 44	5 12	18 52	5 02	19 01	4 58	19 06	4 53	19 10
26 ,,	5 51	18 12	5 43	18 20	5 39	18 25	5 34	18 29	5 28	18 34	5 21	18 41	5 14	18 49	5 05	18 57	5 01	19 02	4 57	19 05
28 ,,	5 51	18 11	5 43	18 19	5 39	18 23	5 35	18 27	5 29	18 32	5 23	18 38	5 16	18 45	5 08	18 53	5 04	18 57	5 00	19 01
30 ,,	5 51	18 10	5 44	18 17	5 40	18 21	5 36	18 25	5 31	18 29	5 25	18 35	5 19	18 41	5 11	18 49	5 08	18 53	5 04	18 56
1 सितं	5 51	19 09	5 44	18 15	5 41	18 19	5 37	18 23	5 32	18 27	5 27	18 32	5 22	18 38	5 14	18 45	5 11	18 48	5 08	18 51
3 ,,	5 51	18 08	5 45	18 13	5 42	18 17	5 38	18 20	5 34	18 24	5 29	18 29	5 24	18 34	5 16	18 41	5 14	18 43	5 11	18 47
5 ,,	5 51	18 07	5 46	18 12	5 42	18 15	5 39	18 18	5 35	18 21	5 31	18 26	5 26	18 30	5 20	18 36	5 17	18 39	5 15	18 42
7 ,,	5 50	18 06	5 46	18 10	5 43	18 12	5 40	18 15	5 37	18 18	5 33	18 23	5 28	18 27	5 23	18 31	5 21	18 34	5 18	18 37
9 ,,	5 50	18 04	5 46	18 08	5 44	18 10	5 41	18 13	5 38	18 16	5 35	18 11	5 31	18 23	5 26	18 27	5 24	18 29	5 22	18 32
11 ,,	5 50	18 03	5 46	18 07	5 44	18 08	5 42	18 10	5 39	18 13	5 37	18 16	5 33	18 19	5 29	18 23	5 27	18 24	5 25	18 27
13 ,,	5 50	18 02	5 47	18 05	5 45	18 06	5 43	18 08	5 41	18 10	5 39	18 13	5 36	18 15	5 32	18 19	5 30	18 20	5 29	18 22
15 ,,	5 50	18 00	5 47	18 03	5 46	18 04	5 44	18 05	5 42	18 07	5 40	18 10	5 38	18 11	5 34	18 14	5 34	18 16	5 32	18 17
17 ,,	5 50	17 59	5 48	18 01	5 47	18 02	5 45	18 03	5 44	18 04	5 42	18 06	5 41	18 08	5 38	18 10	5 37	18 11	5 36	18 12
19 ,,	5 49	17 58	5 48	17 59	5 47	18 00	5 46	18 01	5 45	18 02	5 44	18 03	5 43	18 04	5 41	18 06	5 41	18 06	5 40	18 07
21 ,,	5 49	17 57	5 48	17 57	5 48	17 58	5 47	17 58	5 47	17 59	5 46	17 59	5 45	18 00	5 44	18 01	5 44	18 01	5 43	18 02
23 ,,	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 55	5 49	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 48	17 56	5 47	17 56	5 47	17 56	5 47	17 57
25 ,,	5 49	17 54	5 49	17 54	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 53	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52	5 50	17 52
27 ,,	5 49	17 53	5 50	17 52	5 51	17 51	5 51	17 50	5 51	17 50	5 52	17 50	5 52	17 48	5 53	17 48	5 53	17 48	5 54	17 47
29 ,,	5 49	17 52	5 51	17 50	5 51	17 49	5 52	17 48	5 53	17 47	5 54	17 46	5 55	17 45	5 56	17 43	5 57	17 43	5 58	17 42
1 अक्टू	5 49	17 51	5 51	17 48	5 52	17 47	5 53	17 46	5 54	17 44	5 56	17 43	5 57	17 41	5 59	17 38	6 00	17 39	6 01	17 37
3 ,,	5 49	17 49	5 51	17 46	5 53	17 45	5 54	17 43	5 56	17 41	5 58	17 40	6 00	17 37	6 03	17 35	6 03	17 34	6 05	17 32
5 ,,	5 48	17 48	5 52	17 44	5 54	17 43	5 55	17 40	5 57	17 38	6 00	17 37	6 02	17 33	6 06	17 30	6 07	17 29	6 08	17 27
7 ,,	5 48	17 47	5 52	17 43	5 55	17 41	5 57	17 38	5 59	17 36	6 02	17 33	6 05	17 30	6 09	17 26	6 10	17 24	6 12	17 22
9 ,,	5 48	17 46	5 53	17 42	5 55	17 39	5 58	17 36	6 01	17 33	6 04	17 30	6 07	17 27	6 12	17 22	6 14	17 19	6 16	17 17

अक्षांश	अक्षांश १०° उ.		अक्षांश २०° उ.		अक्षांश २५° उ.		अक्षांश ३०° उ.		अक्षांश ३५° उ.		अक्षांश ४०° उ.		अक्षांश ४५° उ.		अक्षांश ५०° उ.		अक्षांश ५२° उ.		अक्षांश ५४° उ.	
तारीख	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.	सू. उ.	सू. अ.
अक्तूबर	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
11 अक्तू	5 48	17 45	5 53	17 40	5 56	17 37	5 59	17 34	6 02	17 31	6 06	17 27	6 10	17 23	6 15	17 18	6 17	17 15	6 20	17 13
13 ,,	5 48	17 44	5 54	17 38	5 57	17 35	6 00	17 31	6 04	17 28	6 08	17 24	6 12	17 20	6 18	17 14	6 21	17 11	6 23	17 08
15 ,,	5 49	17 43	5 55	17 37	5 58	17 33	6 02	17 29	6 06	17 25	6 10	17 21	6 15	17 16	6 21	17 10	6 24	17 07	6 27	17 03
17 ,,	5 49	17 42	5 55	17 35	5 59	17 31	6 03	17 27	6 07	17 23	6 12	17 18	6 18	17 12	6 24	17 06	6 28	17 02	6 31	16 59
19 ,,	5 49	17 41	5 56	17 34	6 00	17 30	6 05	17 25	6 09	17 20	6 14	17 15	6 20	17 09	6 28	17 02	6 31	16 58	6 35	16 54
21 ,,	5 49	17 40	5 57	17 32	6 01	17 28	6 06	17 23	6 11	17 18	6 16	17 13	6 23	17 05	6 31	16 58	6 35	16 54	6 39	16 49
23 ,,	5 49	17 39	5 58	17 31	6 02	17 26	6 07	17 21	6 12	17 15	6 18	17 10	6 26	17 02	6 34	16 54	6 38	16 50	6 43	16 45
25 ,,	5 49	17 39	5 58	17 29	6 03	17 24	6 08	17 19	6 14	17 13	6 20	17 03	6 28	16 59	6 38	16 50	6 42	16 46	6 46	16 41
27 ,,	5 50	17 38	5 59	17 28	6 05	17 23	6 10	17 17	6 16	17 11	6 22	17 04	6 31	16 56	6 41	16 46	6 46	16 42	6 50	16 37
29 ,,	5 50	17 38	6 00	17 27	6 06	17 21	6 12	17 15	6 18	17 09	6 24	17 02	6 34	16 53	6 45	16 42	6 49	16 38	6 54	16 32
31 ,,	5 50	17 37	6 00	17 26	6 07	17 20	6 13	17 14	6 20	17 07	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	6 52	16 34	6 58	18 28
2 नवं.	5 51	17 37	6 02	17 24	6 08	17 11	6 14	17 12	6 22	17 05	6 30	16 56	6 39	16 47	6 51	16 35	6 56	16 30	7 02	16 24
4 ,,	5 51	17 36	6 03	17 23	6 09	17 18	6 16	17 11	6 23	17 03	6 32	16 54	6 42	16 45	6 54	16 32	7 00	16 27	7 06	16 21
6 ,,	5 52	17 36	6 04	17 23	6 10	17 17	6 18	17 09	6 25	17 01	6 34	16 52	6 45	16 42	6 57	16 29	7 03	16 23	7 10	16 17
8 ,,	5 52	17 35	6 05	17 22	6 12	17 16	6 19	17 08	6 27	16 59	6 37	16 50	6 48	16 39	7 01	16 26	7 07	16 20	7 14	16 13
10 ,,	5 53	17 35	6 06	17 22	6 13	17 15	6 21	17 06	6 29	16 57	6 39	16 48	6 50	16 37	7 04	16 23	7 10	16 17	7 17	16 09
12 ,,	5 54	17 35	6 07	17 21	6 15	17 14	6 22	17 05	6 31	16 56	6 41	16 47	6 53	16 35	7 07	16 20	7 14	16 14	7 21	16 06
14 ,,	5 54	17 35	6 08	17 21	6 16	17 13	6 24	17 04	6 33	16 55	6 44	16 45	6 56	16 33	7 11	16 17	7 18	16 11	7 25	16 03
16 ,,	5 55	17 34	6 09	17 20	6 17	17 12	6 26	17 03	6 35	16 54	6 46	16 43	6 59	16 31	7 14	16 15	7 21	16 08	7 29	16 00
18 ,,	5 56	17 34	6 11	17 20	6 18	17 12	6 27	17 03	6 37	16 53	6 48	16 41	7 01	16 29	7 17	16 12	7 25	16 05	7 33	15 57
20 ,,	5 57	17 35	6 12	17 19	6 20	17 11	6 29	17 02	6 39	16 52	6 51	16 40	7 04	16 27	7 20	16 10	7 28	16 03	7 36	15 54
22 ,,	5 58	17 35	6 13	17 19	6 21	17 11	6 31	17 01	6 41	16 51	6 53	16 39	7 07	16 25	7 23	16 08	7 31	16 00	7 40	15 51
24 ,,	5 58	17 35	6 14	17 19	6 23	17 10	6 32	17 01	6 43	16 50	6 55	16 38	7 09	16 24	7 26	16 06	7 35	15 58	7 44	15 49
26 ,,	5 59	17 35	6 15	17 19	6 24	17 10	6 34	17 00	6 45	16 50	6 57	16 37	7 12	16 22	7 29	16 04	7 38	15 56	7 47	15 47
28 ,,	6 00	17 36	6 17	17 19	6 26	17 10	6 36	17 00	6 47	16 49	6 59	16 36	7 14	16 21	7 32	16 03	7 41	15 55	7 50	15 45
30 ,,	6 01	17 36	6 18	17 19	6 28	17 10	6 37	17 00	6 49	16 49	7 01	16 36	7 17	16 21	7 35	16 02	7 44	15 53	7 54	15 43
2 दिसं.	6 02	17 37	6 19	17 19	6 29	17 10	6 39	17 00	6 51	16 58	7 03	16 35	7 19	16 20	7 38	16 01	7 47	15 52	7 57	15 42
4 ,,	6 03	17 37	6 21	17 20	6 30	17 10	6 41	17 00	6 52	16 48	7 05	16 35	7 21	16 20	7 40	16 00	7 49	15 51	8 01	15 41
6 ,,	6 04	17 38	6 22	17 20	6 32	17 10	6 42	17 00	6 54	16 48	7 07	16 35	7 23	16 19	7 43	15 59	7 52	15 50	8 04	15 39
8 ,,	6 05	17 38	6 23	17 20	6 33	17 10	6 44	17 00	6 55	16 48	7 09	16 35	7 25	16 19	7 45	15 59	7 54	15 50	8 06	15 39
10 ,,	6 06	17 39	6 24	17 21	6 34	17 11	6 45	17 00	6 57	16 48	7 11	16 35	7 27	16 18	7 47	15 58	7 57	15 49	8 09	15 38
12 ,,	6 07	17 40	6 25	17 22	6 35	17 11	6 46	17 01	6 58	16 48	7 13	16 35	7 29	16 17	7 49	15 58	7 59	15 48	8 11	15 37
14 ,,	6 08	17 41	6 27	17 23	6 37	17 12	6 48	17 01	7 0	16 49	7 14	16 35	7 31	16 19	7 51	15 58	8 1	15 48	8 13	15 37
16 ,,	6 09	17 42	6 28	17 23	6 38	17 13	6 49	17 02	7 1	16 49	7 15	16 36	7 32	16 19	7 53	15 59	8 3	15 48	8 14	15 38
18 ,,	6 10	17 43	6 29	17 24	6 39	17 14	6 50	17 03	7 2	16 50	7 17	16 36	7 33	16 20	7 54	15 59	8 4	15 49	8 16	15 38
20 ,,	6 11	17 44	6 30	17 25	6 40	17 15	6 51	17 04	7 4	16 51	7 18	16 37	7 35	16 21	7 55	16 00	8 5	15 50	8 17	15 39
22 ,,	6 12	17 45	6 31	17 26	6 41	17 16	6 52	17 05	7 5	16 52	7 19	16 38	7 36	16 21	7 56	16 00	8 6	15 51	8 18	15 39
24 ,,	6 13	17 46	6 32	17 27	6 42	17 17	6 53	17 06	7 6	16 54	7 20	16 39	7 37	16 23	7 57	16 02	8 7	15 52	8 19	15 41
26 ,,	6 14	17 47	6 33	17 28	6 43	17 18	6 54	17 07	7 6	16 55	7 21	16 41	7 37	16 24	7 58	16 03	8 8	15 53	8 19	15 42
28 ,,	6 15	17 48	6 34	17 29	6 44	17 20	6 55	17 09	7 7	16 56	7 21	16 42	7 38	16 25	7 58	16 05	8 8	15 55	8 19	15 44
30 ,,	6 16	17 49	6 34	17 30	6 45	17 21	6 56	17 10	7 8	16 57	7 22	16 44	7 38	16 26	7 59	16 07	8 8	15 57	8 19	15 46
31 ,,	6 17	17 50	6 34	17 31	6 45	[illegible]	6 56	17 10	7 8	16 58	7 22	16 44	7 38	16 27	7 59	16 08	8 8	15 58	8 19	15 47

हिमाचल प्रदेश के प्रमुख शहरों के सूर्योदयास्त की सारणी भा. स्टै. टाईम

नीचे हिमाचल प्रदेश के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग 2/3 मिनट घटाने तथा अस्त में 2/3 मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

पाठकों की सुविधा हेतु आगे प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त से पूर्व हिमाचल प्रदेश के विभिन्न नगरों के सूर्योदयास्त में परिवर्तन संस्कार लिख रहे हैं जिससे आप किसी भी अभीष्ट नगर का सू. उदय सुगमता पूर्वक ज्ञात कर सकते हैं।

उदाहरण—मान लीजिए करसोग में 11 अप्रैल को सूर्योदय व सूर्यास्त जानना है तो हमें ज़िला मण्डी के स्तम्भ (Column) में देखने से सूर्योदय 6 घण्टे 1 मिनट तथा सूर्यास्त 18 घण्टे 44 मिनट प्राप्त हुए। इन दोनों सू. उ. व सू. अ. में नीचे दी गई संस्कार तालिका में करसोग का संस्कार–1 घण्टे 04 मिनट घटाने से हमें 5 घण्टे 59 मिनट 56 सैकेण्ड और 18 घण्टे 42 मिनट 26 सैकेण्ड में प्राप्त हुए। ये करसोग के शुद्ध शास्त्रीय (जन्मपत्री निर्माण हेतु) सूर्योदय एवं सूर्यास्त होंगे।

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जनवरी	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 28	17 29	7 27	17 28	7 27	17 29	7 23	17 28	7 24	17 26	7 27	17 29	7 22	17 27	7 23	17 27	7 27	17 29	7 22	17 25	7 22	17 26
4	7 28	17 32	7 28	17 31	7 28	17 32	7 24	17 31	7 25	17 29	7 27	17 31	7 23	17 30	7 24	17 29	7 28	17 31	7 23	17 29	7 22	17 28
7	7 29	17 34	7 28	17 33	7 28	17 33	7 24	17 32	7 25	17 31	7 27	17 33	7 24	17 32	7 24	17 31	7 28	17 34	7 23	17 30	7 22	17 29
10	7 29	17 37	7 29	17 36	7 29	17 36	7 24	17 34	7 25	17 33	7 28	17 35	7 24	17 34	7 24	17 33	7 28	17 36	7 23	17 32	7 22	17 31
13	7 28	17 39	7 28	17 38	7 28	17 39	7 23	17 36	7 25	17 36	7 27	17 38	7 23	17 36	7 24	17 35	7 28	17 39	7 23	17 35	7 22	17 34
16	7 28	17 42	7 27	17 41	7 28	17 42	7 23	17 39	7 25	17 39	7 26	17 41	7 23	17 39	7 23	17 38	7 27	17 42	7 22	17 37	7 21	17 37
19	7 27	17 44	7 26	17 43	7 27	17 43	7 23	17 42	7 24	17 43	7 25	17 43	7 22	17 41	7 22	17 42	7 26	17 46	7 21	17 41	7 21	17 41
22	7 26	17 47	7 25	17 46	7 26	17 46	7 22	17 44	7 23	17 45	7 25	17 45	7 21	17 43	7 21	17 43	7 25	17 48	7 20	17 43	7 20	17 43
25	7 25	17 50	7 25	17 49	7 25	17 49	7 21	17 47	7 22	17 48	7 24	17 48	7 20	17 46	7 20	17 46	7 24	17 50	7 19	17 46	7 19	17 46
28	7 23	17 52	7 23	17 51	7 24	17 52	7 19	17 50	7 20	17 50	7 23	17 51	7 18	17 49	7 19	17 49	7 23	17 53	7 17	17 48	7 17	17 48
31	7 21	17 55	7 21	17 54	7 21	17 54	7 17	17 53	7 18	17 54	7 22	17 55	7 16	17 52	7 18	17 52	7 22	17 56	7 15	17 51	7 15	17 51
3 फर.	7 20	17 58	7 19	17 57	7 19	17 57	7 16	17 56	7 17	17 57	7 19	17 57	7 15	17 55	7 16	17 54	7 20	17 58	7 14	17 54	7 13	17 54
6	7 18	18 00	7 17	17 59	7 18	18 00	7 14	17 58	7 15	17 59	7 17	17 59	7 13	17 57	7 14	17 57	7 18	18 01	7 12	17 56	7 12	17 56
9	7 15	18 03	7 14	18 03	7 15	18 02	7 12	18 02	7 12	18 02	7 14	18 01	7 10	18 01	7 11	18 00	7 15	18 04	7 09	18 00	7 09	18 00
12	7 12	18 06	7 12	18 06	7 12	18 06	7 08	18 04	7 09	18 04	7 12	18 04	7 07	18 03	7 09	18 02	7 13	18 06	7 06	18 02	7 06	18 02
15	7 10	18 08	7 09	18 08	7 10	18 08	7 06	18 06	7 06	18 06	7 09	18 07	7 05	18 05	7 06	18 05	7 10	18 09	7 05	18 04	7 04	18 04
18	7 07	18 10	7 06	18 10	7 07	18 10	7 03	18 08	7 03	18 08	7 06	18 09	7 02	18 07	7 03	18 07	7 07	18 12	7 02	18 07	7 02	18 07
21	7 04	18 13	7 03	18 13	7 04	18 13	7 00	18 11	7 00	18 11	7 03	18 12	6 59	18 10	7 00	18 10	7 04	18 14	6 59	18 09	6 58	18 10
24	7 01	18 15	7 00	18 14	7 01	18 15	6 57	18 13	6 57	18 13	7 01	18 15	6 56	18 12	6 57	18 12	7 01	18 16	6 56	18 11	6 55	18 12
27	6 58	18 18	6 57	18 17	6 58	18 18	6 54	18 16	6 54	18 16	6 56	18 17	6 53	18 15	6 54	18 15	6 57	18 19	6 52	18 14	6 53	18 14
2 मार्च	6 54	18 20	6 53	18 20	6 53	18 19	6 50	18 18	6 50	18 19	6 53	18 20	6 49	18 17	6 50	18 17	6 53	18 20	6 48	18 16	6 49	18 16
5	6 51	18 22	6 50	18 21	6 51	18 22	6 47	18 20	6 47	18 20	6 50	18 22	6 46	18 19	6 47	18 19	6 51	18 23	6 46	18 18	6 46	18 18
8	6 46	18 24	6 46	18 23	6 46	18 24	6 43	18 22	6 43	18 23	6 46	18 24	6 41	18 21	6 43	18 21	6 47	18 25	6 42	18 21	6 40	18 20
11	6 43	18 27	6 42	18 26	6 43	18 26	6 39	18 24	6 40	18 24	6 43	18 26	6 38	18 24	6 40	18 23	6 44	18 17	6 39	18 22	6 37	18 23
14	6 40	18 28	6 39	18 27	6 39	18 27	6 36	18 25	6 36	18 25	6 39	18 27	6 36	18 25	6 37	18 24	6 40	18 28	6 35	18 24	6 35	18 24
17	6 36	18 30	6 35	18 29	6 35	18 29	6 32	18 27	6 32	18 27	6 35	18 29	6 31	18 27	6 32	18 26	6 36	18 30	6 31	18 25	6 30	18 26
20	6 31	18 32	6 30	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 31	6 31	18 31	6 26	18 29	6 28	18 27	6 32	18 32	6 27	18 26	6 25	18 28

नगर	कॉंगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
23	6 28	18 34	6 27	18 33	6 28	18 33	6 24	18 30	6 25	18 31	6 28	18 33	6 23	18 31	6 25	18 30	6 29	18 34	6 24	18 28	6 22	18 30
26	6 24	18 36	6 23	18 35	6 24	18 35	6 21	18 33	6 21	18 33	6 24	18 35	6 20	18 33	6 21	18 33	6 25	18 36	6 20	18 31	6 19	18 32
29	6 21	18 38	6 20	18 37	6 20	18 37	6 18	18 34	6 18	18 34	6 20	18 37	6 16	18 35	6 17	18 35	6 21	18 38	6 16	18 33	6 15	18 34
2 अप्रै.	6 15	18 40	6 14	18 39	6 15	18 40	6 12	18 37	6 13	18 38	6 15	18 40	6 11	18 37	6 12	18 37	6 16	18 41	6 11	18 36	6 10	18 36
5	6 12	18 43	6 10	18 42	6 12	18 42	6 08	18 39	6 09	18 39	6 12	18 42	6 07	18 39	6 09	18 39	6 13	18 43	6 08	18 37	6 06	18 38
8	6 09	18 45	6 08	18 44	6 08	18 43	6 05	18 42	6 06	18 42	6 08	18 43	6 04	18 41	6 05	18 41	6 09	18 44	6 04	18 39	6 03	18 40
11	6 04	18 47	6 03	18 46	6 04	18 46	6 01	18 44	6 01	18 44	6 04	18 46	6 00	18 43	6 01	18 43	6 05	18 47	6 00	18 41	5 59	18 42
14	6 01	18 50	6 00	18 49	6 01	18 49	5 58	18 47	5 58	18 47	6 01	18 49	5 57	18 46	5 58	18 46	6 02	18 49	5 57	18 44	5 56	18 45
17	5 57	18 51	5 56	18 50	5 57	18 51	5 54	18 49	5 54	18 49	5 57	18 50	5 53	18 47	5 54	18 48	5 58	18 51	5 53	18 46	5 52	18 46
20	5 54	18 54	5 53	18 53	5 54	18 53	5 51	18 51	5 51	18 51	5 54	18 53	5 50	18 50	5 51	18 51	5 55	18 54	5 50	18 49	5 49	18 49
23	5 50	18 56	5 50	18 56	5 50	18 55	5 47	18 53	5 47	18 53	5 50	18 55	5 46	18 52	5 48	18 52	5 51	18 56	5 47	18 51	5 45	18 51
26	5 48	18 58	5 47	18 58	5 48	18 57	5 45	18 55	5 45	18 55	5 48	18 57	5 44	18 54	5 45	18 54	5 49	18 58	5 44	18 52	5 43	18 53
29	5 46	19 01	5 45	19 00	5 45	19 00	5 42	18 58	5 42	18 58	5 45	19 00	5 42	18 57	5 42	18 57	5 46	19 01	5 41	18 55	5 41	18 56
2 मई	5 44	19 02	5 43	19 01	5 43	19 01	5 40	18 59	5 40	18 59	5 43	19 01	5 39	18 58	5 40	18 58	5 44	19 02	5 39	18 56	5 38	18 57
4	5 41	19 03	5 39	19 02	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	18 59	5 40	19 02	5 37	18 59	5 37	19 00	5 41	19 03	5 36	18 58	5 36	18 58
7	5 38	19 05	5 37	19 04	5 37	19 04	5 34	19 00	5 34	19 00	5 37	19 04	5 34	19 01	5 34	19 01	5 38	19 05	5 33	19 00	5 33	19 00
10	5 35	19 07	5 34	19 06	5 35	19 06	5 32	19 03	5 33	19 04	5 35	19 06	5 32	19 03	5 32	19 03	5 36	19 07	5 31	19 03	5 31	19 02
13	5 34	19 09	5 32	19 08	5 33	19 09	5 30	19 06	5 30	19 06	5 33	19 09	5 30	19 05	5 30	19 05	5 34	19 10	5 29	19 05	5 29	19 04
16	5 32	19 11	5 30	19 11	5 31	19 11	5 28	19 07	5 29	19 07	5 31	19 11	5 28	19 07	5 28	19 07	5 32	19 12	5 27	19 06	5 27	19 06
19	5 30	19 13	5 28	19 12	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 09	5 29	19 13	5 26	19 09	5 26	19 10	5 30	19 14	5 25	19 08	5 25	19 08
22	5 28	19 14	5 26	19 13	5 27	19 14	5 24	19 11	5 24	19 11	5 27	19 14	5 24	19 11	5 25	19 11	5 28	19 15	5 23	19 10	5 24	19 10
25	5 27	19 16	5 25	19 15	5 26	19 16	5 23	19 14	5 24	19 14	5 26	19 16	5 23	19 13	5 24	19 14	5 27	19 17	5 22	19 12	5 23	19 12
28	5 25	19 18	5 24	19 17	5 25	19 18	5 22	19 16	5 22	19 16	5 25	19 18	5 21	19 15	5 21	19 15	5 26	19 19	5 21	19 14	5 21	19 14
31	5 24	19 20	5 22	19 21	5 24	19 20	5 21	19 17	5 21	19 17	5 24	19 20	5 20	19 17	5 20	19 17	5 25	19 21	5 20	19 16	5 20	19 16
3 जून	5 23	19 23	5 22	19 22	5 23	19 22	5 20	19 19	5 20	19 19	5 23	19 22	5 20	19 20	5 20	19 19	5 24	19 23	5 19	19 18	5 19	19 19
6	5 23	19 24	5 21	19 23	5 22	19 24	5 20	19 21	5 20	19 21	5 22	19 24	5 19	19 21	5 20	19 21	5 23	19 25	5 19	19 20	5 18	19 20
9	5 22	19 25	5 21	19 25	5 22	19 25	5 19	19 22	5 19	19 22	5 22	19 25	5 19	19 22	5 20	19 22	5 23	19 26	5 19	19 21	5 19	19 21
12	5 22	19 27	5 21	19 26	5 22	19 27	5 18	19 23	5 18	19 23	5 22	19 27	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 28	5 19	19 22	5 18	19 22
15	5 22	19 28	5 21	19 27	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 22	19 28	5 18	19 23	5 19	19 23	5 23	19 29	5 18	19 23	5 18	19 22
18	5 21	19 30	5 21	19 29	5 21	19 30	5 18	19 24	5 19	19 25	5 21	19 29	5 17	19 24	5 19	19 24	5 23	19 30	5 18	19 24	5 17	19 23
21	5 22	19 31	5 22	19 30	5 22	19 31	5 19	19 25	5 20	19 26	5 22	19 31	5 18	19 25	5 20	19 25	5 23	19 31	5 19	19 24	5 18	19 24
24	5 23	19 32	5 22	19 31	5 23	19 32	5 21	19 25	5 22	19 26	5 23	19 32	5 19	19 25	5 21	19 25	5 24	19 32	5 20	19 24	5 18	19 24
27	5 25	19 33	5 23	19 32	5 25	19 32	5 22	19 27	5 22	19 27	5 25	19 32	5 21	19 26	5 22	19 26	5 26	19 33	5 21	19 25	5 20	19 25
30	5 25	19 33	5 24	19 33	5 25	19 33	5 23	19 27	5 23	19 27	5 25	19 33	5 22	19 26	5 23	19 27	5 26	19 32	5 22	19 25	5 22	19 25
3 जुला	5 26	19 32	5 25	19 32	5 26	19 32	5 24	19 28	5 25	19 28	5 27	19 32	5 23	19 27	5 24	19 28	5 28	19 32	5 23	19 25	5 23	19 26
6	5 28	19 32	5 27	19 31	5 28	19 32	5 26	19 27	5 26	19 28	5 28	19 31	5 25	19 28	5 25	19 28	5 29	19 32	5 24	19 25	5 25	19 27
9	5 30	19 30	5 29	19 29	5 30	19 31	5 27	19 27	5 28	19 27	5 30	19 30	5 27	19 27	5 27	19 27	5 31	19 31	5 26	19 24	5 27	19 26
12	5 32	19 29	5 31	19 28	5 31	19 29	5 29	19 26	5 29	19 26	5 31	19 29	5 29	19 26	5 28	19 25	5 32	19 30	5 27	19 23	5 28	19 25

नगर	कांगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
जुलाई	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	5 33	19 28	5 33	19 27	5 33	19 28	5 30	19 26	5 31	19 25	5 33	19 28	5 30	19 25	5 30	19 24	5 34	19 29	5 29	19 22	5 30	19 24
18	5 34	19 27	5 33	19 26	5 34	19 27	5 32	19 24	5 32	19 24	5 34	19 27	5 31	19 23	5 32	19 22	5 35	19 28	5 31	19 21	5 31	19 22
21	5 36	19 25	5 35	19 25	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 22	5 36	19 25	5 33	19 21	5 33	19 21	5 37	19 26	5 32	19 20	5 33	19 20
24	5 38	19 23	5 37	19 22	5 38	19 23	5 35	19 19	5 36	19 20	5 38	19 23	5 35	19 19	5 35	19 19	5 39	19 24	5 34	19 18	5 35	19 18
27	5 40	19 22	5 39	19 21	5 40	19 22	5 37	19 17	5 38	19 18	5 40	19 22	5 37	19 18	5 37	19 18	5 41	19 23	5 36	19 16	5 37	19 16
30	5 42	19 19	5 41	19 19	5 42	19 19	5 39	19 15	5 40	19 16	5 42	19 19	5 39	19 16	5 39	19 15	5 43	19 20	5 38	19 14	5 38	19 14
2 अग.	5 44	19 18	5 43	19 17	5 44	19 18	5 41	19 14	5 42	19 15	5 44	19 18	5 41	19 14	5 41	19 13	5 45	19 19	5 40	19 12	5 40	19 13
5	5 46	19 16	5 45	19 15	5 46	19 16	5 43	19 12	5 44	19 13	5 46	19 16	5 43	19 13	5 43	19 11	5 47	19 17	5 42	19 10	5 43	19 12
8	5 48	19 13	5 47	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 46	19 12	5 48	19 13	5 45	19 11	5 45	19 09	5 49	19 14	5 44	19 07	5 45	19 10
11	5 50	19 11	5 49	19 10	5 50	19 11	5 47	19 08	5 48	19 09	5 50	19 11	5 47	19 08	5 57	19 06	5 51	19 12	5 46	19 04	5 47	19 07
14	5 51	19 09	5 50	19 08	5 51	19 09	5 48	19 06	5 49	19 07	5 51	19 09	5 48	19 05	5 48	19 02	5 52	19 10	5 47	19 00	5 48	19 05
17	5 53	19 04	5 52	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 51	19 03	5 53	19 04	5 50	19 01	5 50	18 59	5 54	19 05	5 49	18 57	5 50	19 00
20	5 55	19 01	5 55	19 01	5 55	19 01	5 52	18 59	5 53	19 00	5 55	19 01	5 52	18 59	5 52	18 57	5 56	19 02	5 51	18 55	5 52	18 58
23	5 57	18 58	5 57	18 58	5 57	18 58	5 54	18 55	5 55	18 55	5 57	18 58	5 54	18 55	5 54	18 54	5 58	18 59	5 53	18 53	5 53	18 54
26	5 59	18 54	5 59	18 53	5 59	18 53	5 56	18 50	5 57	18 51	5 58	18 54	5 56	18 50	5 56	18 51	5 59	18 55	5 55	18 48	5 55	18 49
29	6 01	18 50	6 00	18 49	6 00	18 50	5 58	18 46	5 59	18 47	5 59	18 50	5 58	18 46	5 58	18 46	6 02	18 50	5 57	18 45	5 57	18 45
1 सितं.	6 02	18 46	6 02	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 45	6 02	18 46	5 59	18 44	6 00	18 43	6 04	18 46	5 59	18 41	5 58	18 43
4	6 04	18 43	6 03	18 41	6 04	18 42	6 02	18 40	6 03	18 41	6 04	18 42	6 01	18 39	6 02	18 39	6 06	18 42	6 01	18 39	6 00	18 38
7	6 06	18 40	6 06	18 39	6 06	18 40	6 04	18 37	6 04	18 37	6 05	18 39	6 03	18 37	6 04	18 36	6 07	18 39	6 03	18 37	6 02	18 35
10	6 09	18 35	6 09	18 34	6 09	18 34	6 06	18 32	6 06	18 32	6 08	18 33	6 06	18 32	6 05	18 32	6 09	18 35	6 05	18 31	6 05	18 31
13	6 11	18 31	6 11	18 30	6 11	18 30	6 07	18 28	6 08	18 29	6 10	18 29	6 07	18 28	6 07	18 28	6 11	18 31	6 06	18 27	6 07	18 27
16	6 12	18 27	6 12	18 26	6 12	18 27	6 09	18 24	6 10	18 25	6 12	18 27	6 09	18 24	6 09	18 24	6 13	18 28	6 08	18 24	6 09	18 23
19	6 14	18 23	6 14	18 23	6 13	18 23	6 10	18 20	6 11	18 21	6 14	18 23	6 10	18 20	6 10	18 20	6 14	18 23	6 09	18 18	6 10	18 19
22	6 16	18 18	6 16	18 18	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 16	18 18	6 12	18 15	6 13	18 16	6 17	18 18	6 12	18 13	6 12	18 14
25	6 17	18 15	6 17	18 15	6 17	18 15	6 14	18 12	6 15	18 13	6 17	18 15	6 14	18 12	6 14	18 12	6 18	18 15	6 13	18 10	6 14	18 11
28	6 19	18 11	6 19	18 11	6 19	18 11	6 16	18 08	6 17	18 09	6 19	18 11	6 15	18 08	6 16	18 08	6 19	18 12	6 15	18 07	6 15	18 07
1 अक्टू	6 22	18 07	6 21	18 07	6 22	18 07	6 18	18 04	6 18	18 04	6 21	18 07	6 17	18 04	6 18	18 03	6 22	18 07	6 17	18 02	6 16	18 03
4	6 23	18 04	6 23	18 03	6 23	18 04	6 19	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	18 00	6 19	18 00	6 23	18 04	6 18	17 59	6 18	17 59
7	6 25	18 01	6 24	18 00	6 24	18 00	6 21	17 57	6 21	17 57	6 24	18 00	6 20	17 57	6 21	17 56	6 25	18 00	6 20	17 56	6 20	17 56
10	6 27	17 57	6 26	17 56	6 26	17 56	6 23	17 54	6 24	17 55	6 26	17 56	6 22	17 53	6 23	17 53	6 27	17 56	6 23	17 52	6 23	17 52
13	6 29	17 53	6 28	17 52	6 29	17 52	6 26	17 50	6 26	17 50	6 29	17 52	6 24	17 49	6 26	17 49	6 30	17 53	6 25	17 49	6 25	17 48
16	6 31	17 50	6 30	17 49	6 31	17 49	6 28	17 47	6 28	17 47	6 31	17 49	6 26	17 46	6 28	17 45	6 32	17 49	6 27	17 45	6 26	17 45
19	6 33	17 46	6 32	17 45	6 33	17 45	6 30	17 43	6 30	17 43	6 33	17 45	6 29	17 42	6 30	17 42	6 34	17 46	6 29	17 41	6 29	17 41
22	6 36	17 43	6 35	17 43	6 35	17 42	6 32	17 40	6 32	17 40	6 35	17 42	6 31	17 39	6 32	17 40	6 36	17 43	6 31	17 38	6 30	17 38
25	6 38	17 40	6 38	17 40	6 37	17 40	6 34	17 37	6 34	17 36	6 37	17 40	6 33	17 36	6 34	17 36	6 38	17 40	6 33	17 35	6 32	17 35
28	6 40	17 37	6 40	17 37	6 39	17 37	6 36	17 34	6 36	17 33	6 39	17 37	6 35	17 33	6 36	17 34	6 40	17 37	6 35	17 32	6 35	17 32
31	6 43	17 34	6 43	17 34	6 42	17 33	6 39	17 31	6 39	17 31	6 42	17 34	6 38	17 30	6 39	17 31	6 43	17 34	6 38	17 29	6 38	17 29
3 नवं.	6 45	17 30	6 45	17 31	6 44	17 30	6 41	17 28	6 41	17 28	6 44	17 31	6 40	17 27	6 41	17 28	6 45	17 32	6 40	17 27	6 40	17 26

नगर	काँगड़ा-धर्म.		हमीरपुर		ऊना		बिलासपुर		मंडी-कुल्लू		सरकाघाट		शिमला		सोलन		चम्बा		नाहन		रामपुर बुशै.	
तारीख	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त	उदय	अस्त
नवंबर	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
6	6 48	17 29	6 47	17 28	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 26	6 47	17 28	6 43	17 26	6 43	17 25	6 47	17 29	6 42	17 24	6 42	17 25
9	6 50	17 27	6 49	17 26	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 24	6 49	17 26	6 45	17 24	6 45	17 23	6 50	17 27	6 44	17 22	6 44	17 23
12	6 52	17 25	6 51	17 24	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 23	6 51	17 24	6 47	17 22	6 47	17 21	6 52	17 25	6 46	17 20	6 46	17 21
15	6 54	17 23	6 53	17 23	6 54	17 23	6 51	17 20	6 51	17 20	6 54	17 23	6 49	17 20	6 51	17 20	6 55	17 24	6 49	17 19	6 48	17 19
18	6 57	17 21	6 56	17 21	6 57	17 21	6 54	17 19	6 54	17 18	6 57	17 21	6 52	17 18	6 54	17 18	6 58	17 22	6 53	17 17	6 51	17 17
21	7 00	17 20	6 59	17 19	6 59	17 20	6 56	17 18	6 56	17 17	6 59	17 20	6 55	17 17	6 56	17 17	7 00	17 21	6 55	17 16	6 54	17 16
24	7 02	17 19	7 01	17 18	7 02	17 19	6 59	17 17	6 59	17 18	7 03	17 19	6 58	17 16	6 59	17 16	7 04	17 20	6 58	17 15	6 57	17 15
27	7 04	17 19	7 04	17 18	7 04	17 18	7 01	17 17	7 01	17 17	7 04	17 18	7 00	17 16	7 02	17 15	7 05	17 19	7 01	17 14	6 59	17 15
30	7 07	17 18	7 06	17 18	7 07	17 18	7 04	17 16	7 04	17 16	7 06	17 18	7 03	17 15	7 04	17 15	7 07	17 19	7 03	17 14	7 02	17 14
3 दिसं	7 09	17 18	7 08	17 18	7 09	17 18	7 06	17 16	7 06	17 16	7 09	17 18	7 05	17 15	7 06	17 15	7 10	17 19	7 05	17 14	7 04	17 14
6	7 12	17 18	7 11	17 17	7 12	17 18	7 09	17 15	7 09	17 15	7 12	17 18	7 08	17 15	7 09	17 15	7 13	17 19	7 08	17 14	7 07	17 14
9	7 14	17 18	7 13	17 18	7 14	17 18	7 11	17 15	7 11	17 15	7 14	17 18	7 10	17 15	7 11	17 15	7 15	17 19	7 10	17 14	7 09	17 14
12	7 16	17 19	7 15	17 18	7 16	17 19	7 14	17 16	7 14	17 16	7 16	17 19	7 12	17 16	7 14	17 16	7 17	17 20	7 13	17 15	7 11	17 15
15	7 18	17 21	7 17	17 20	7 18	17 21	7 16	17 18	7 16	17 17	7 18	17 21	7 14	17 18	7 16	17 17	7 19	17 22	7 15	17 16	7 13	17 16
18	7 20	17 22	7 19	17 21	7 20	17 21	7 17	17 19	7 17	17 18	7 20	17 22	7 16	17 18	7 17	17 18	7 21	17 23	7 16	17 17	7 15	17 17
21	7 22	17 23	7 21	17 22	7 22	17 23	7 19	17 21	7 19	17 20	7 22	17 23	7 18	17 20	7 19	17 19	7 23	17 24	7 18	17 18	7 17	17 18
24	7 23	17 24	7 22	17 23	7 23	17 24	7 20	17 22	7 21	17 22	7 23	17 24	7 19	17 21	7 20	17 21	7 24	17 25	7 19	17 20	7 18	17 19
27	7 25	17 26	7 24	17 25	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 23	7 25	17 26	7 21	17 23	7 21	17 22	7 26	17 27	7 20	17 21	7 20	17 21
30	7 26	17 28	7 25	17 27	7 26	17 28	7 22	17 24	7 22	17 24	7 26	17 27	7 22	17 24	7 22	17 24	7 27	17 28	7 21	17 23	7 21	17 14

हिमाचल प्रदेश के अन्य नगरों के लिए संस्कार सारिणी

धर्मशाला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
काँगड़ा	+ ० २०
नूरपुर	+ १ २८
नगरोटा	+ ० ०४
खजियार	+ १ १२
ज्वालामुखी	+ ० १२
सरकाघाट	+ ० ०४
पालमपुर	− ० ४०
भुन्तर	− ३ ०४
[illegible]	[illegible]

हमीरपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
नादौन	+ ० ३२
सुजानपुरटिहरी	+ ० ०४

ऊना

नगर	संस्कार मिं. सैं.
गगरेट	+ १ ००
अम्ब	+ ० ४८
दौलतपुर	+ १ २०
चिन्तपूर्णी	[illegible]

बिलासपुर

नगर	संस्कार मिं. सैं.
घुमारवीं	+ ० ३६
भाखड़ा	+ १ २०
नैना देवी	+ १ १६

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
जोगिन्द्रनगर	+ ० ५२
सुन्दरनगर	+ ० २०
करसोग	− १ ०४
[illegible]	[illegible]

मण्डी

नगर	संस्कार मिं. सैं.
मनाली	− १ २४
बंजार	− १ २८
अनी	− ० ५६
निरमण्ड	− २ २४

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
तारादेवी	+ ० १२
नारकण्डा	− १ ००
कुमारसेन	− १ ३६

शिमला

नगर	संस्कार मिं. सैं.
कोटरवाई	− १ ३२
रोहड़ू	− २ ०४

सोलन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
सपाटू	+ ० ३२
परवाणु	+ ० १६
कसौली	+ ० २८
अर्की	+ ० ४०
नालागढ़	+ [illegible] ०८

चम्बा

नगर	संस्कार मिं. सैं.
बनीखेत	+ ० ४८
डलहौज़ी	− ० ४०
लाहौल स्पीति	− ३ २४
त्रिलोकनाथ	−३ ३४

नाहन

नगर	संस्कार मिं. सैं.
पौंटा साहिब	+ १ ०८
राजगढ़	− ० १२

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

वैशाख (अप्रैल-मई)

अप्रैल	वैशाख प्रवि.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	७ ३५	९ २९	११ ४३	१४ ०६	१६ २५	१८ ४३	२१ ५	२३ २५	१ ३०	३ ११	४ ३६	५ ५८
14	२	७ ३१	९ २५	११ ३९	१४ ०२	१६ २१	१८ ३९	२१ ०१	२३ २१	१ २६	३ ०७	४ ३२	५ ५४
15	३	७ २७	९ २१	११ ३६	१३ ५८	१६ १७	१८ ३५	२० ५७	२३ १७	१ २२	३ ०३	४ २८	५ ५०
16	४	७ २३	९ १७	११ ३२	१३ ५४	१६ १३	१८ ३१	२० ५३	२३ १३	१ १८	२ ५९	४ २४	५ ४६
17	५	७ १९	९ १३	११ २८	१३ ५१	१६ १०	१८ २७	२० ४९	२३ ०९	१ १४	२ ५५	४ २०	५ ४२
18	६	७ १५	९ १०	११ २४	१३ ४७	१६ ०६	१८ २४	२० ४५	२३ ०५	१ १०	२ ५१	४ १६	५ ३८
19	७	७ ११	९ ०६	११ २०	१३ ४३	१६ ०२	१८ २०	२० ४१	२३ ०१	१ ०६	२ ४७	४ १२	५ ३४
20	८	७ ०७	९ ०२	११ १६	१३ ३९	१५ ५८	१८ १६	२० ३७	२२ ५७	१ ०२	२ ४३	४ ०८	५ ३०
21	९	७ ०३	८ ५८	११ १२	१३ ३५	१५ ५४	१८ १२	२० ३३	२२ ५४	० ५८	२ ३९	४ ०४	५ २६
22	१०	६ ५९	८ ५४	११ ०९	१३ ३२	१५ ५०	१८ ०८	२० २९	२२ ५०	० ५४	२ ३५	४ ००	५ २२
23	११	६ ५५	८ ५०	११ ०५	१३ २७	१५ ४६	१८ ०४	२० २६	२२ ४६	० ५०	२ ३१	३ ५६	५ १८
24	१२	६ ५१	८ ४६	११ ०१	१३ २३	१५ ४३	१८ ००	२० २२	२२ ४२	० ४६	२ २७	३ ५२	५ १५
25	१३	६ ४७	८ ४२	१० ५७	१३ १९	१५ ३९	१७ ५६	२० १८	२२ ३८	० ४२	२ २३	३ ४८	५ ११
26	१४	६ ४३	८ ३८	१० ५३	१३ १५	१५ ३५	१७ ५२	२० १४	२२ ३४	० ३८	२ २०	३ ४४	५ ०७
27	१५	६ ४०	८ ३४	१० ४९	१३ ११	१५ ३१	१७ ४८	२० १०	२२ ३०	० ३४	२ १६	३ ४०	५ ०३
28	१६	६ ३६	८ ३०	१० ४५	१३ ०८	१५ २८	१७ ४४	२० ०६	२२ २६	० ३०	२ १२	३ ३६	४ ५९
29	१७	६ ३२	८ २६	१० ४१	१३ ०४	१५ २४	१७ ४०	२० ०२	२२ २२	० २६	२ ०८	३ ३२	४ ५५
30	१८	६ २८	८ २२	१० ३७	१३ ००	१५ २०	१७ ३७	१९ ५८	२२ १८	० २२	२ ०४	३ २८	४ ५१
मई	१९	६ २४	८ १८	१० ३३	१२ ५६	१५ १६	१७ ३३	१९ ५४	२२ १४	० १८	२ ००	३ २५	४ ४७
2	२०	६ २०	८ १४	१० २९	१२ ५२	१५ १२	१७ २९	१९ ५०	२२ १०	० १४	१ ५६	३ २१	४ ४४
3	२१	६ १६	८ १०	१० २५	१२ ४८	१५ ०८	१७ २५	१९ ४६	२२ ०६	० ११	१ ५२	३ १७	४ ४०
4	२२	६ १२	८ ०६	१० २१	१२ ४४	१५ ०४	१७ २१	१९ ४२	२२ ०२	० ०७	१ ४८	३ १३	४ ३६
5	२३	६ ०८	८ ०२	१० १७	१२ ४०	१५ ००	१७ १७	१९ ३८	२१ ५८	० ०३	१ ४४	३ ०९	४ ३२
6	२४	६ ०४	७ ५८	१० १३	१२ ३६	१४ ५६	१७ १३	१९ ३४	२१ ५४	२३ ५९	१ ४०	३ ०५	४ २८
7	२५	६ ००	७ ५४	१० ०९	१२ ३२	१४ ५२	१७ ०९	१९ ३०	२१ ५०	२३ ५५	१ ३६	३ ०१	४ २४
8	२६	५ ५६	७ ५०	१० ०५	१२ २८	१४ ४८	१७ ०५	१९ २६	२१ ४६	२३ ५१	१ ३२	२ ५७	४ २०
9	२७	५ ५२	७ ४६	१० ०१	१२ २४	१४ ४४	१७ ०१	१९ २२	२१ ४२	२३ ४७	१ २८	२ ५३	४ १६
10	२८	५ ४८	७ ४२	९ ५७	१२ २०	१४ ४०	१६ ५७	१९ १८	२१ ३८	२३ ४३	१ २४	२ ४९	४ १२
11	२९	५ ४४	७ ३९	९ ५३	१२ १६	१४ ३६	१६ ५३	१९ १४	२१ ३४	२३ ३९	१ २०	२ ४५	४ ०८
12	३०	५ ४०	७ ३५	९ ४९	१२ १२	१४ ३२	१६ ४९	१९ १०	२१ ३०	२३ ३५	१ १६	२ ४१	४ ०४
13	३१	५ ३६	७ ३१	९ ४५	१२ ०९	१४ २८	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३१	१ १२	२ ३७	४ ००
14	ज्ये	५ ३३	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

ज्येष्ठ (मई-जून)

मई	ज्येष्ठ प्रवि.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ २७	९ ४२	१२ ०५	१४ २४	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २७	१ ०८	२ ३३	३ ५६	५ २९
15	२	७ २३	९ ३८	१२ ०१	१४ २०	१६ ३८	१८ ५९	२१ १९	२३ २३	१ ०४	२ २९	३ ५२	५ २५
16	३	७ १९	९ ३४	११ ५७	१४ १६	१६ ३४	१८ ५५	२१ १५	२३ १९	१ ००	२ २५	३ ४८	५ २१
17	४	७ १६	९ ३०	११ ५३	१४ १२	१६ ३०	१८ ५१	२१ ११	२३ १५	० ५६	२ २१	३ ४४	५ १७
18	५	७ १२	९ २६	११ ४९	१४ ०८	१६ २६	१८ ४७	२१ ०७	२३ ११	० ५२	२ १७	३ ४०	५ १३
19	६	७ ०८	९ २२	११ ४५	१४ ०४	१६ २२	१८ ४३	२१ ०३	२३ ०८	० ४९	२ १३	३ ३६	५ ०९
20	७	७ ०४	९ १८	११ ४१	१४ ००	१६ १८	१८ ३९	२० ५९	२३ ०४	० ४५	२ १०	३ ३२	५ ०५
21	८	७ ००	९ १४	११ ३७	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	० ४१	२ ०६	३ २८	५ ०१
22	९	६ ५६	९ १०	११ ३३	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	० ३७	२ ०२	३ २४	४ ५७
23	१०	६ ५३	९ ०७	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ २८	२० ४८	२२ ५३	० ३४	१ ५८	३ २१	४ ५४
24	११	६ ४९	९ ०३	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ २४	२० ४४	२२ ४९	० ३०	१ ५५	३ १७	४ ५०
25	१२	६ ४५	८ ५९	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ २०	२० ४०	२२ ४५	० २६	१ ५१	३ १३	४ ४६
26	१३	६ ४१	८ ५५	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१८ १६	२० ३६	२२ ४१	० २२	१ ४७	३ ०९	४ ४२
27	१४	६ ३७	८ ५१	११ १४	१३ ३३	१५ ५१	१८ १२	२० ३२	२२ ३७	० १८	१ ४३	३ ०५	४ ३८
28	१५	६ ३३	८ ४७	११ १०	१३ २९	१५ ४७	१८ ०८	२० २८	२२ ३३	० १४	१ ३९	३ ०१	४ ३४
29	१६	६ २९	८ ४३	११ ०६	१३ २५	१५ ४३	१८ ०४	२० २४	२२ २९	० १०	१ ३५	२ ५७	४ ३०
30	१७	६ २५	८ ३९	११ ०२	१३ २१	१५ ३९	१८ ००	२० २०	२२ २५	० ०६	१ ३१	२ ५३	४ २६
31	१८	६ २१	८ ३५	१० ५८	१३ १७	१५ ३५	१७ ५६	२० १६	२२ २१	० ०२	१ २७	२ ४९	४ २२
जून	१९	६ १७	८ ३१	१० ५४	१३ १३	१५ ३१	१७ ५२	२० १२	२२ १७	२३ ५८	१ २३	२ ४५	४ १८
2	२०	६ १३	८ २७	१० ५०	१३ ०९	१५ २७	१७ ४८	२० ०८	२२ १३	२३ ५४	१ १९	२ ४१	४ १४
3	२१	६ ०९	८ २३	१० ४६	१३ ०५	१५ २३	१७ ४४	२० ०४	२२ ०९	२३ ५०	१ १५	२ ३६	४ १०
4	२२	६ ०५	८ १९	१० ४२	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ ११	२ ३३	४ ०६
5	२३	६ ०१	८ १५	१० ३८	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०७	२ २९	४ ०२
6	२४	५ ५७	८ ११	१० ३४	१२ ५४	१५ ११	१७ ३३	१९ ५३	२१ ५८	२३ ३९	१ ०३	२ २६	३ ५८
7	२५	५ ५३	८ ०८	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ २९	१९ ४९	२१ ५४	२३ ३५	० ५९	२ २२	३ ५५
8	२६	५ ४९	८ ०४	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ २५	१९ ४५	२१ ५०	२३ ३१	० ५५	२ १८	३ ५१
9	२७	५ ४५	८ ००	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ २१	१९ ४१	२१ ४६	२३ २७	० ५१	२ १४	३ ४७
10	२८	५ ४१	७ ५६	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ १७	१९ ३७	२१ ४२	२३ २३	० ४७	२ १०	३ ४३
11	२९	५ ३७	७ ५२	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१७ १३	१९ ३३	२१ ३८	२३ १९	० ४३	२ ०६	३ ३९
12	३०	५ ३३	७ ४८	१० ११	१२ ३०	१४ ४८	१७ ०९	१९ २९	२१ ३४	२३ १५	० ३९	२ ०२	३ ३५
13	३१	५ २९	७ ४४	१० ०७	१२ २६	१४ ४४	१७ ०५	१९ २५	२१ ३०	२३ ११	० ३५	१ ५८	३ ३१
14	आ.	५ २५	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

आषाढ़ (जून-जुलाई)

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ४०	१० ०३	१२ २२	१४ ४०	१७ १	१९ २१	२१ २६	२३ ७	० ३१	१ ५४	३ २७	५ २१
15	२	७ ३६	९ ५९	१२ १८	१४ ३६	१६ ५७	१९ १७	२१ २२	२३ ०३	० २८	१ ५०	३ २३	५ १८
16	३	७ ३२	९ ५५	१२ १४	१४ ३२	१६ ५३	१९ १३	२१ १८	२२ ५९	० २४	१ ४६	३ १९	५ १४
17	४	७ २८	९ ५१	१२ १०	१४ २८	१६ ४९	१९ ०९	२१ १४	२२ ५५	० २०	१ ४२	३ १५	५ १०
18	५	७ २४	९ ४७	१२ ०६	१४ २४	१६ ४५	१९ ०५	२१ १०	२२ ५१	० १६	१ ३८	३ ११	५ ०६
19	६	७ २०	९ ४३	१२ ०२	१४ २०	१६ ४१	१९ ०१	२१ ०६	२२ ४७	० १२	१ ३४	३ ०७	५ ०२
20	७	७ १६	९ ३९	११ ५८	१४ १६	१६ ३७	१८ ५७	२१ ०२	२२ ४३	० ०८	१ ३०	३ ०३	४ ५८
21	८	७ १२	९ ३५	११ ५४	१४ १२	१६ ३३	१८ ५३	२० ५८	२२ ३९	० ०४	१ २६	२ ५९	४ ५४
22	९	७ ०९	९ ३१	११ ५०	१४ ०८	१६ २९	१८ ४९	२० ५४	२२ ३५	० ००	१ २२	२ ५५	४ ५०
23	१०	७ ०५	९ २७	११ ४६	१४ ०४	१६ २५	१८ ४५	२० ५०	२२ ३१	२३ ५६	१ १८	२ ५१	४ ४६
24	११	७ ०१	९ २३	११ ४२	१४ ००	१६ २१	१८ ४१	२० ४६	२२ २७	२३ ५२	१ १४	२ ४७	४ ४२
25	१२	६ ५७	९ १९	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ १०	२ ४३	४ ३८
26	१३	६ ५३	९ १५	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०६	२ ३९	४ ३४
27	१४	६ ४९	९ १२	११ ३१	१३ ४९	१६ १०	१८ ३०	२० ३५	२२ १६	२३ ४१	१ ०३	२ ३६	४ ३१
28	१५	६ ४५	९ ०८	११ २८	१३ ४५	१६ ०६	१८ २६	२० ३१	२२ १२	२३ ३७	० ५९	२ ३२	४ २७
29	१६	६ ४१	९ ०४	११ २३	१३ ४१	१६ ०२	१८ २२	२० २७	२२ ०८	२३ ३३	० ५५	२ २८	४ २३
30	१७	६ ३७	९ ००	११ १९	१३ ३७	१५ ५८	१८ १८	२० २३	२२ ०४	२३ २९	० ५१	२ २४	४ १९
जुला	१८	६ ३३	८ ५६	११ १५	१३ ३३	१५ ५४	१८ १४	२० १९	२२ ००	२३ २५	० ४७	२ २०	४ १५
2	१९	६ २९	८ ५२	११ ११	१३ २९	१५ ५०	१८ १०	२० १५	२१ ५६	२३ २१	० ४३	२ १६	४ ११
3	२०	६ २५	८ ४८	११ ०७	१३ २५	१५ ४६	१८ ०६	२० ११	२१ ५२	२३ १७	० ३९	२ १२	४ ०७
4	२१	६ २१	८ ४४	११ ०३	१३ २१	१५ ४२	१८ ०२	२० ०७	२१ ४८	२३ १३	० ३५	२ ०८	४ ०३
5	२२	६ १७	८ ४०	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	० ३२	२ ०५	३ ५९
6	२३	६ १३	८ ३६	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	० २८	२ ०१	३ ५५
7	२४	६ १०	८ ३३	१० ५२	१३ १०	१५ ३१	१७ ५१	१९ ५६	२१ ३७	२३ ०२	० २५	१ ५८	३ ५२
8	२५	६ ०६	८ २९	१० ४८	१३ ०६	१५ २७	१७ ४७	१९ ५२	२१ ३३	२२ ५८	० २१	१ ५४	३ ४८
9	२६	६ ०२	८ २५	१० ४४	१३ ०२	१५ २३	१७ ४३	१९ ४८	२१ २९	२२ ५४	० १७	१ ५०	३ ४४
10	२७	५ ५८	८ २१	१० ४०	१२ ५८	१५ १९	१७ ३९	१९ ४४	२१ २५	२२ ५०	० १३	१ ४६	३ ४०
11	२८	५ ५४	८ १७	१० ३६	१२ ५४	१५ १५	१७ ३५	१९ ४०	२१ २१	२२ ४६	० ०९	१ ४२	३ ३६
12	२९	५ ५०	८ १३	१० ३२	१२ ५०	१५ ११	१७ ३१	१९ ३६	२१ १७	२२ ४२	० ०५	१ ३८	३ ३२
13	३०	५ ४६	८ ०९	१० २८	१२ ४६	१५ ०७	१७ २७	१९ ३२	२१ १३	२२ ३८	० ०१	१ ३४	३ २८
14	३१	५ ४२	८ ०५	१० २४	१२ ४२	१५ ०३	१७ २३	१९ २८	२१ ०९	२२ ३४	२३ ५७	१ ३०	३ २४
15	३२	५ ३८	८ ०१	१० २०	१२ ३८	१४ ५९	१७ १९	१९ २४	२१ ०५	२२ ३०	२३ ५३	१ २६	३ २०
16	श्रा.	५ ३४	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

श्रावण (जुलाई-अगस्त)

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	७ ५७	१० १६	१२ ३४	१४ ५५	१७ १५	१९ २०	२१ ०१	२२ २६	२३ ४९	१ २२	३ १६	५ ३०
17	२	७ ५३	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५७	२२ २२	२३ ४५	१ १८	३ १२	५ २६
18	३	७ ४९	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५३	२२ १८	२३ ४१	१ १४	३ ०८	५ २२
19	४	७ ४६	१० ०५	१२ २३	१४ ४४	१७ ०४	१९ ०९	२० ४९	२२ १५	२३ ३८	१ ११	३ ०४	५ १८
20	५	७ ४२	१० ०१	१२ १९	१४ ४०	१७ ००	१९ ०५	२० ४५	२२ ११	२३ ३४	१ ०७	३ ००	५ १४
21	६	७ ३८	९ ५७	१२ १५	१४ ३६	१६ ५६	१९ ०१	२० ४१	२२ ०७	२३ ३०	१ ०३	२ ५६	५ १०
22	७	७ ३४	९ ५३	१२ ११	१४ ३२	१६ ५२	१८ ५७	२० ३७	२२ ०३	२३ २६	० ५९	२ ५२	५ ०६
23	८	७ ३०	९ ४९	१२ ०७	१४ २८	१६ ४८	१८ ५३	२० ३३	२१ ५९	२३ २२	० ५५	२ ४८	५ ०२
24	९	७ २६	९ ४५	१२ ०३	१४ २४	१६ ४४	१८ ४९	२० २९	२१ ५५	२३ १८	० ५१	२ ४४	४ ५८
25	१०	७ २२	९ ४१	११ ५९	१४ २०	१६ ४०	१८ ४५	२० २५	२१ ५१	२३ १४	० ४७	२ ४०	४ ५४
26	११	७ १८	९ ३७	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ४१	२० २२	२१ ४७	२३ १०	० ४३	२ ३६	४ ५०
27	१२	७ १४	९ ३३	११ ५१	१४ १३	१६ ३३	१८ ३७	२० १८	२१ ४३	२३ ०६	० ३९	२ ३२	४ ४६
28	१३	७ १०	९ २९	११ ४८	१४ ०९	१६ २९	१८ ३३	२० १४	२१ ३९	२३ ०२	० ३५	२ २८	४ ४३
29	१४	७ ०६	९ २५	११ ४४	१४ ०५	१६ २५	१८ २९	२० १०	२१ ३५	२२ ५८	० ३१	२ २४	४ ३९
30	१५	७ ०२	९ २१	११ ४०	१४ ०१	१६ २१	१८ २५	२० ०६	२१ ३१	२२ ५४	० २७	२ २१	४ ३५
31	१६	६ ५८	९ १७	११ ३६	१३ ५७	१६ १८	१८ २१	२० ०२	२१ २७	२२ ५०	० २३	२ १७	४ ३१
अग	१७	६ ५४	९ १३	११ ३२	१३ ५३	१६ १४	१८ १७	१९ ५८	२१ २३	२२ ४६	० १९	२ १३	४ २७
2	१८	६ ५०	९ ०९	११ २८	१३ ४९	१६ १०	१८ १३	१९ ५४	२१ १९	२२ ४२	० १५	२ ०९	४ २३
3	१९	६ ४६	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ०६	१८ ०९	१९ ५०	२१ १५	२२ ३८	० ११	२ ०५	४ १९
4	२०	६ ४२	९ ०२	११ २०	१३ ४१	१६ ०२	१८ ०५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३५	० ०७	२ ०१	४ १५
5	२१	६ ३८	८ ५८	११ १७	१३ ३८	१५ ५८	१८ ०२	१९ ४३	२१ ०७	२२ ३२	० ०४	१ ५८	४ ११
6	२२	६ ३४	८ ५४	११ १३	१३ ३४	१५ ५४	१७ ५८	१९ ३९	२१ ०४	२२ २८	० ००	१ ५४	४ ०८
7	२३	६ ३१	८ ५०	११ ०९	१३ ३०	१५ ५०	१७ ५४	१९ ३५	२१ ००	२२ २४	२३ ५६	१ ५०	४ ०४
8	२४	६ २७	८ ४६	११ ०५	१३ २६	१५ ४७	१७ ५०	१९ ३२	२० ५६	२२ २०	२३ ५२	१ ४६	४ ००
9	२५	६ २३	८ ४२	११ ०१	१३ २२	१५ ४३	१७ ४६	१९ २८	२० ५२	२२ १६	२३ ४८	१ ४२	३ ५६
10	२६	६ १९	८ ३८	१० ५७	१३ १८	१५ ३९	१७ ४२	१९ २४	२० ४८	२२ १२	२३ ४४	१ ३८	३ ५२
11	२७	६ १५	८ ३४	१० ५३	१३ १४	१५ ३५	१७ ३८	१९ २०	२० ४४	२२ ०८	२३ ४०	१ ३४	३ ४८
12	२८	६ ११	८ ३०	१० ४९	१३ १०	१५ ३१	१७ ३४	१९ १६	२० ४१	२२ ०४	२३ ३६	१ ३१	३ ४४
13	२९	६ ०७	८ २६	१० ४५	१३ ०६	१५ २७	१७ ३०	१९ १२	२० ३७	२२ ००	२३ ३२	१ २७	३ ४१
14	३०	६ ०३	८ २२	१० ४२	१३ ०२	१५ २३	१७ २६	१९ ०८	२० ३३	२१ ५६	२३ २८	१ २३	३ ३७
15	३१	५ ५९	८ १८	१० ३७	१२ ५८	१५ १९	१७ २२	१९ ०४	२० २९	२१ ५२	२३ २४	१ १९	३ ३३
16	भाद्र	५ ५५	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

भाद्रपद (अगस्त-सितम्बर)

अगस्त	भाद्रपद	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.
16	१	८ १४	१० ३३	१२ ५४	१५ १५	१७ २८	१९ ००	२० २५	२१ ४८	२३ २०	१ १५	३ २९	५ ५१
17	२	८ १०	१० २९	१२ ५०	१५ ११	१७ १४	१८ ५६	२० २१	२१ ४४	२३ १६	१ ११	३ २५	५ ४७
18	३	८ ०६	१० २६	१२ ४६	१५ ०७	१७ १०	१८ ५२	२० १७	२१ ४०	२३ १२	१ ०७	३ २१	५ ४३
19	४	८ ०२	१० २२	१२ ४२	१५ ०३	१७ ०६	१८ ४८	२० १३	२१ ३६	२३ ०८	१ ०३	३ १७	५ ३९
20	५	७ ५९	१० १८	१२ ३९	१४ ५९	१७ ०२	१८ ४४	२० ०९	२१ ३२	२३ ०४	० ५९	३ १३	५ ३५
21	६	७ ५५	१० १४	१२ ३५	१४ ५५	१६ ५९	१८ ४०	२० ०५	२१ २८	२३ ०१	० ५५	३ ०९	५ ३१
22	७	७ ५१	१० १०	१२ ३१	१४ ५१	१६ ५५	१८ ३७	२० ०१	२१ २४	२२ ५७	० ५१	३ ०५	५ २७
23	८	७ ४७	१० ०६	१२ २७	१४ ४७	१६ ५१	१८ ३३	१९ ५७	२१ २०	२२ ५३	० ४७	३ ०१	५ २३
24	९	७ ४३	१० ०२	१२ २३	१४ ४३	१६ ४७	१८ २९	१९ ५४	२१ १६	२२ ४९	० ४४	२ ५७	५ १९
25	१०	७ ३९	९ ५८	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २५	१९ ५०	२१ १३	२२ ४५	० ४०	२ ५४	५ १६
26	११	७ ३५	९ ५४	१२ १६	१४ ३६	१६ ३९	१८ २२	१९ ४६	२१ ०९	२२ ४१	० ३६	२ ५०	५ १२
27	१२	७ ३१	९ ५०	१२ १२	१४ ३२	१६ ३६	१८ १७	१९ ४२	२१ ०५	२२ ३७	० ३२	२ ४६	५ ०८
28	१३	७ २७	९ ४६	१२ ०८	१४ २८	१६ ३२	१८ १३	१९ ३८	२१ ०१	२२ ३३	० २८	२ ४२	५ ०४
29	१४	७ २३	९ ४२	१२ ०४	१४ २४	१६ २८	१८ ०९	१९ ३४	२० ५७	२२ २९	० २४	२ ३८	५ ००
30	१५	७ १९	९ ३८	१२ ००	१४ २०	१६ २४	१८ ०५	१९ ३०	२० ५३	२२ २५	० २०	२ ३४	४ ५६
31	१६	७ १५	९ ३४	११ ५६	१४ १६	१६ २०	१८ ०१	१९ २६	२० ४९	२२ २१	० १६	२ ३०	४ ५२
सितं	१७	७ ११	९ ३०	११ ५२	१४ १२	१६ १६	१७ ५७	१९ २२	२० ४५	२२ १७	० १२	२ २६	४ ४८
2	१८	७ ०७	९ २७	११ ४८	१४ ०८	१६ १२	१७ ५३	१९ १८	२० ४१	२२ १३	० ०८	२ २२	४ ४४
3	१९	७ ०३	९ २३	११ ४४	१४ ०४	१६ ०८	१७ ४९	१९ १४	२० ३७	२२ १०	० ०४	२ १८	४ ४०
4	२०	६ ५९	९ १९	११ ४०	१४ ००	१६ ०४	१७ ४५	१९ १०	२० ३३	२२ ०६	० ००	२ १४	४ ३६
5	२१	६ ५५	९ १५	११ ३६	१३ ५६	१६ ००	१७ ४१	१९ ०६	२० २९	२२ ०२	२३ ५६	२ १०	४ ३२
6	२२	६ ५२	९ ११	११ ३२	१३ ५२	१५ ५६	१७ ३७	१९ ०२	२० २५	२१ ५८	२३ ५२	२ ०६	४ २८
7	२३	६ ४८	९ ०७	११ २८	१३ ४८	१५ ५२	१७ ३३	१८ ५८	२० २१	२१ ५४	२३ ४८	२ ०२	४ २४
8	२४	६ ४४	९ ०३	११ २४	१३ ४४	१५ ४८	१७ २९	१८ ५४	२० १७	२१ ५०	२३ ४४	१ ५८	४ २०
9	२५	६ ४०	८ ५९	११ २०	१३ ४०	१५ ४४	१७ २५	१८ ५०	२० १३	२१ ४६	२३ ४०	१ ५४	४ १६
10	२६	६ ३६	८ ५५	११ १६	१३ ३६	१५ ४०	१७ २१	१८ ४६	२० ०९	२१ ४२	२३ ३६	१ ५०	४ १२
11	२७	६ ३२	८ ५१	११ १२	१३ ३२	१५ ३६	१७ १७	१८ ४२	२० ०५	२१ ३८	२३ ३२	१ ४६	४ ०८
12	२८	६ २८	८ ४७	११ ०८	१३ २८	१५ ३२	१७ १३	१८ ३८	२० ०१	२१ ३४	२३ २८	१ ४२	४ ०४
13	२९	६ २४	८ ४३	११ ०४	१३ २४	१५ २८	१७ ०९	१८ ३४	१९ ५७	२१ ३०	२३ २४	१ ३८	४ ००
14	३०	६ २०	८ ३९	११ ००	१३ २०	१५ २४	१७ ०५	१८ ३०	१९ ५३	२१ २६	२३ २०	१ ३४	३ ५६
15	३१	६ १६	८ ३५	१० ५६	१३ १६	१५ २०	१७ ०१	१८ २६	१९ ४९	२१ २२	२३ १६	१ ३०	३ ५२
16	आ.	६ १२	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

आश्विन (सितम्बर-अक्तूबर)

सितंबर	आश्विन प्र.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.
16	१	८ ३१	१० ५२	१३ १२	१५ १६	१६ ५७	१८ २२	१९ ४५	२१ १८	२३ १२	१ २६	३ ४८	६ ०९
17	२	८ २७	१० ४८	१३ ०८	१५ १२	१६ ५३	१८ १८	१९ ४१	२१ १४	२३ ०८	१ २२	३ ४५	६ ०५
18	३	८ २३	१० ४४	१३ ०४	१५ ०८	१६ ४९	१८ १४	१९ ३७	२१ १०	२३ ०४	१ १८	३ ४१	६ ०१
19	४	८ १९	१० ४०	१३ ००	१५ ०४	१६ ४५	१८ १०	१९ ३३	२१ ०६	२३ ००	१ १४	३ ३७	५ ५७
20	५	८ १५	१० ३६	१२ ५६	१५ ००	१६ ४१	१८ ०६	१९ २९	२१ ०२	२२ ५६	१ १०	३ ३३	५ ५३
21	६	८ ११	१० ३२	१२ ५२	१४ ५६	१६ ३७	१८ ०२	१९ २५	२० ५८	२२ ५२	१ ०६	३ २९	५ ४९
22	७	८ ०७	१० २८	१२ ४८	१४ ५२	१६ ३३	१७ ५८	१९ २१	२० ५४	२२ ४८	१ ०२	३ २५	५ ४५
23	८	८ ०३	१० २४	१२ ४४	१४ ४८	१६ २९	१७ ५४	१९ १७	२० ५०	२२ ४४	० ५८	३ २१	५ ४१
24	९	७ ५९	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १३	२० ४६	२२ ४०	० ५४	३ १७	५ ३७
25	१०	७ ५५	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ०९	२० ४२	२२ ३६	० ५१	३ १३	५ ३३
26	११	७ ५१	१० १३	१२ ३३	१४ ३७	१६ १८	१७ ४३	१९ ०६	२० ३८	२२ ३२	० ४७	३ ०९	५ २९
27	१२	७ ४७	१० ०९	१२ २९	१४ ३३	१६ १४	१७ ३९	१९ ०२	२० ३४	२२ २९	० ४३	३ ०५	५ २५
28	१३	७ ४३	१० ०५	१२ २५	१४ २९	१६ १०	१७ ३५	१८ ५८	२० ३०	२२ २५	० ३९	३ ०१	५ २१
29	१४	७ ३९	१० ०१	१२ २१	१४ २५	१६ ०६	१७ ३१	१८ ५४	२० २६	२२ २१	० ३५	२ ५७	५ १७
30	१५	७ ३५	९ ५७	१२ १७	१४ २१	१६ ०२	१७ २७	१८ ५०	२० २२	२२ १७	० ३१	२ ५३	५ १३
अक्तू	१६	७ ३१	९ ५३	१२ १३	१४ १७	१५ ५८	१७ २३	१८ ४६	२० १८	२२ १३	० २७	२ ४९	५ ०९
2	१७	७ २७	९ ४९	१२ ०९	१४ १३	१५ ५४	१७ १९	१८ ४२	२० १५	२२ ०९	० २३	२ ४५	५ ०५
3	१८	७ २३	९ ४५	१२ ०५	१४ ०९	१५ ५०	१७ १५	१८ ३८	२० ११	२२ ०५	० १९	२ ४२	५ ०१
4	१९	७ १९	९ ४१	१२ ०१	१४ ०५	१५ ४६	१७ ११	१८ ३४	२० ०७	२२ ०१	० १५	२ ३८	४ ५७
5	२०	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ ०१	१५ ४२	१७ ०७	१८ ३०	२० ०३	२१ ५७	० ११	२ ३४	४ ५४
6	२१	७ ११	९ ३३	११ ५३	१३ ५७	१५ ३८	१७ ०३	१८ २६	१९ ५९	२१ ५३	० ०७	२ ३०	४ ५०
7	२२	७ ०७	९ २९	११ ४९	१३ ५३	१५ ३४	१६ ५९	१८ २२	१९ ५५	२१ ४९	० ०३	२ २७	४ ४६
8	२३	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १८	१९ ५१	२१ ४५	२३ ५९	२ २३	४ ४२
9	२४	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १४	१९ ४७	२१ ४१	२३ ५५	२ १९	४ ३८
10	२५	६ ५६	९ १८	११ ३८	१३ ४२	१५ २३	१६ ४८	१८ ११	१९ ४३	२१ ३७	२३ ५२	२ १५	४ ३५
11	२६	६ ५२	९ १४	११ ३४	१३ ३८	१५ १९	१६ ४४	१८ ०७	१९ ३९	२१ ३४	२३ ४८	२ ११	४ ३१
12	२७	६ ४८	९ १०	११ ३०	१३ ३४	१५ १५	१६ ४०	१८ ०३	१९ ३५	२१ ३०	२३ ४४	२ ०७	४ २७
13	२८	६ ४४	९ ०६	११ २६	१३ ३०	१५ ११	१६ ३६	१७ ५९	१९ ३१	२१ २६	२३ ४०	२ ०३	४ २३
14	२९	६ ४०	९ ०२	११ २२	१३ २६	१५ ०७	१६ ३२	१७ ५५	१९ २७	२१ २२	२३ ३६	१ ५९	४ १९
15	३०	६ ३६	८ ५८	११ १८	१३ २२	१५ ०३	१६ २८	१७ ५१	१९ २३	२१ १८	२३ ३२	१ ५५	४ १५
16	३१	६ ३२	८ ५४	११ १४	१३ १८	१४ ५९	१६ २४	१७ ४७	१९ १९	२१ १४	२३ २८	१ ५१	४ ११
17	का.	६ २८	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

कार्तिक (अक्तूबर-नवम्बर)

अक्टू.	कार्तिक	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.
17	१	८ ५०	११ १०	१३ १४	१४ ५५	१६ २०	१७ ४३	१९ १५	२१ १०	२३ २४	१ ४७	४ ०६	६ २४
18	२	८ ४६	११ ०६	१३ १०	१४ ५१	१६ १६	१७ ३९	१९ ११	२१ ०६	२३ २०	१ ४३	४ ०३	६ २०
19	३	८ ४२	११ ०२	१३ ०६	१४ ४७	१६ १२	१७ ३५	१९ ०७	२१ ०२	२३ १६	१ ३९	३ ५८	६ १६
20	४	८ ३८	१० ५८	१३ ०२	१४ ४३	१६ ०८	१७ ३१	१९ ०३	२० ५८	२३ १२	१ ३५	३ ५४	६ १२
21	५	८ ३४	१० ५४	१२ ५८	१४ ३९	१६ ०४	१७ २७	१८ ५९	२० ५४	२३ ०८	१ ३१	३ ५०	६ ०८
22	६	८ ३०	१० ५०	१२ ५४	१४ ३५	१६ ००	१७ २३	१८ ५५	२० ५०	२३ ०४	१ २७	३ ४६	६ ०४
23	७	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३१	१५ ५६	१७ १९	१८ ५१	२० ४६	२३ ०१	१ २३	३ ४३	६ ००
24	८	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १५	१८ ४७	२० ४२	२२ ५७	१ १९	३ ३९	५ ५७
25	९	८ १९	१० ३९	१२ ४३	१४ २३	१५ ४८	१७ १२	१८ ४४	२० ३८	२२ ५३	१ १६	३ ३५	५ ५३
26	१०	८ १५	१० ३५	१२ ३९	१४ २०	१५ ४५	१७ ०८	१८ ४०	२० ३५	२२ ४९	१ १२	३ ३२	५ ४९
27	११	८ ११	१० ३१	१२ ३५	१४ १६	१५ ४१	१७ ०४	१८ ३६	२० ३१	२२ ४५	१ ०८	३ २८	५ ४५
28	१२	८ ०७	१० २७	१२ ३१	१४ १२	१५ ३७	१७ ००	१८ ३२	२० २७	२२ ४१	१ ०४	३ २४	५ ४१
29	१३	८ ०३	१० २३	१२ २७	१४ ०८	१५ ३३	१६ ५६	१८ २८	२० २३	२२ ३७	१ ००	३ २०	५ ३७
30	१४	७ ५९	१० १९	१२ २३	१४ ०४	१५ २९	१६ ५२	१८ २४	२० १९	२२ ३३	० ५६	३ १६	५ ३४
31	१५	७ ५५	१० १५	१२ १९	१४ ००	१५ २५	१६ ४८	१८ २०	२० १५	२२ २९	० ५२	३ १२	५ ३०
नवं.	१६	७ ५१	१० ११	१२ १५	१३ ५६	१५ २१	१६ ४४	१८ १६	२० ११	२२ २५	० ४८	३ ०८	५ २६
2	१७	७ ४७	१० ०७	१२ ११	१३ ५२	१५ १७	१६ ४०	१८ १२	२० ०७	२२ २१	० ४४	३ ०४	५ २२
3	१८	७ ४३	१० ०३	१२ ०७	१३ ४८	१५ १३	१६ ३६	१८ ०९	२० ०३	२२ १७	० ४०	३ ००	५ १८
4	१९	७ ३९	९ ५९	१२ ०३	१३ ४४	१५ ०९	१६ ३२	१८ ०५	१९ ५९	२२ १३	० ३६	२ ५६	५ १४
5	२०	७ ३५	९ ५५	११ ५९	१३ ४०	१५ ०५	१६ २८	१८ ०१	१९ ५५	२२ ०९	० ३२	२ ५२	५ १०
6	२१	७ ३१	९ ५१	११ ५५	१३ ३६	१५ ०१	१६ २४	१७ ५७	१९ ५१	२२ ०५	० २८	२ ४८	५ ०६
7	२२	७ २८	९ ४७	११ ५१	१३ ३२	१४ ५७	१६ २०	१७ ५३	१९ ४७	२२ ०१	० २४	२ ४४	५ ०२
8	२३	७ २४	९ ४३	११ ४७	१३ २८	१४ ५३	१६ १६	१७ ४९	१९ ४३	२१ ५७	० २०	२ ४०	४ ५८
9	२४	७ २०	९ ३१	११ ४३	१३ २४	१४ ४९	१६ १२	१७ ४५	१९ ३९	२१ ५३	० १६	२ ३६	४ ५४
10	२५	७ १६	९ ३५	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०८	१७ ४१	१९ ३५	२१ ५०	० १२	२ ३२	४ ५०
11	२६	७ १२	९ ३१	११ ३५	१३ १७	१४ ४२	१६ ०५	१७ ३७	१९ ३२	२१ ४६	० ०८	२ २८	४ ४६
12	२७	७ ०८	९ २७	११ ३२	१३ १३	१४ ३८	१६ ०१	१७ ३३	१९ २८	२१ ४२	० ०५	२ २४	४ ४२
13	२८	७ ०४	९ २४	११ २८	१३ ०९	१४ ३४	१५ ५७	१७ २९	१९ २४	२१ ३८	० ०१	२ २०	४ ३८
14	२९	७ ००	९ २०	११ २४	१३ ०५	१४ ३०	१५ ५३	१७ २५	१९ २०	२१ ३४	२३ ५७	२ १६	४ ३४
15	मा.	६ ५६	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

मार्गशीर्ष (नवम्बर-दिसम्बर)

नवम्बर	मार्गशीर्ष	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.
15	१	९ १६	११ २०	१३ १	१४ २६	१५ ४९	१७ २१	१९ १६	२१ ३०	२३ ५३	२ १२	४ ३०	६ ५२
16	२	९ १२	११ १६	१२ ५७	१४ २२	१५ ४५	१७ १७	१९ १२	२१ २६	२३ ४९	२ ०८	४ २६	६ ४८
17	३	९ ०८	११ १२	१२ ५३	१४ १८	१५ ४१	१७ १३	१९ ०८	२१ २२	२३ ४५	२ ०४	४ २२	६ ४४
18	४	९ ०४	११ ०८	१२ ४९	१४ १४	१५ ३७	१७ ०९	१९ ०४	२१ १८	२३ ४१	२ ००	४ १८	६ ४०
19	५	९ ००	११ ०४	१२ ४५	१४ १०	१५ ३३	१७ ०५	१९ ००	२१ १४	२३ ३७	१ ५६	४ १४	६ ३६
20	६	८ ५६	११ ००	१२ ४१	१४ ०६	१५ २९	१७ ०१	१८ ५६	२१ १०	२३ ३३	१ ५२	४ १०	६ ३२
21	७	८ ५२	१० ५६	१२ ३७	१४ ०२	१५ २५	१६ ५७	१८ ५२	२१ ०६	२३ २९	१ ४८	४ ०६	६ २८
22	८	८ ४८	१० ५२	१२ ३३	१३ ५८	१५ २१	१६ ५४	१८ ४९	२१ ०३	२३ २५	१ ४५	४ ०३	६ २५
23	९	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १७	१६ ५०	१८ ४५	२० ५९	२३ २१	१ ४१	३ ५९	६ २१
24	१०	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १३	१६ ४६	१८ ४१	२० ५५	२३ १७	१ ३७	३ ५५	६ १७
25	११	८ ३७	१० ४१	१२ २२	१३ ४७	१५ १०	१६ ४२	१८ ३७	२० ५१	२३ १३	१ ३३	३ ५१	६ १३
26	१२	८ ३३	१० ३७	१२ १८	१३ ४३	१५ ०६	१६ ३८	१८ ३३	२० ४७	२३ १०	१ २९	३ ४७	६ ०९
27	१३	८ २९	१० ३३	१२ १४	१३ ३९	१५ ०२	१६ ३४	१८ २९	२० ४३	२३ ०६	१ २५	३ ४३	६ ०५
28	१४	८ २५	१० २९	१२ १०	१३ ३५	१४ ५८	१६ ३०	१८ २५	२० ३९	२३ ०२	१ २१	३ ३९	६ ०१
29	१५	८ २१	१० २५	१२ ०६	१३ ३१	१४ ५४	१६ २७	१८ २१	२० ३५	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ५७
30	१६	८ १७	१० २१	१२ ०२	१३ २७	१४ ५०	१६ २३	१८ १७	२० ३१	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ५३
दिसं.	१७	८ १३	१० १७	११ ५८	१३ २३	१४ ४६	१६ १९	१८ १३	२० २७	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ४९
2	१८	८ ०९	१० १३	११ ५४	१३ १९	१४ ४२	१६ १५	१८ ०९	२० २३	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ ४५
3	१९	८ ०५	१० ०९	११ ५०	१३ १५	१४ ३८	१६ ११	१८ ०५	२० १९	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ ४१
4	२०	८ ०१	१० ०५	११ ४६	१३ ११	१४ ३४	१६ ०७	१८ ०१	२० १५	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ ३७
5	२१	७ ५७	१० ०१	११ ४२	१३ ०७	१४ ३०	१६ ०३	१७ ५७	२० ११	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ ३३
6	२२	७ ५३	९ ५७	११ ३८	१३ ०३	१४ २६	१५ ५९	१७ ५३	२० ०७	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ २९
7	२३	७ ४९	९ ५३	११ ३४	१२ ५९	१४ २२	१५ ५५	१७ ४९	२० ०३	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ २५
8	२४	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १८	१५ ५१	१७ ४५	१९ ५९	२२ २३	० ४२	३ ००	५ २१
9	२५	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १४	१५ ४७	१७ ४१	१९ ५५	२२ १९	० ३८	२ ५६	५ १७
10	२६	७ ३८	९ ४२	११ २३	१२ ४८	१४ ११	१५ ४४	१७ ३८	१९ ५२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ १४
11	२७	७ ३४	९ ३८	११ १९	१२ ४४	१४ ०७	१५ ४०	१७ ३४	१९ ४८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ १०
12	२८	७ ३०	९ ३४	११ १५	१२ ४०	१४ ०३	१५ ३६	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०६
13	२९	७ २६	९ ३०	११ ११	१२ ३६	१३ ५९	१५ ३२	१७ २६	१९ ४०	२२ ०४	० २३	२ ४१	५ ०३
14	३०	७ २२	९ २६	११ ०७	१२ ३२	१३ ५५	१५ २८	१७ २२	१९ ३६	२२ ००	० १९	२ ३७	४ ५९
15	पौ.	७ १८	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी-शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

पौष (दिसम्बर-जनवरी)

दिसंबर	पौष प्रवि	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	पौ.	९ २२	११ ३	१२ २८	१३ ५१	१५ २४	१७ १८	१९ ३२	२१ ५६	० १५	२ ३३	४ ५५	७ १४
16	२	९ १८	१० ५९	१२ २४	१३ ४७	१५ २०	१७ १४	१९ २८	२१ ५२	० ११	२ २९	४ ५०	७ १०
17	३	९ १४	१० ५५	१२ २१	१३ ४३	१५ १६	१७ १०	१९ २४	२१ ४८	० ०७	२ २५	४ ४६	७ ०६
18	४	९ १०	१० ५२	१२ १७	१३ ३९	१५ १२	१७ ०६	१९ २०	२१ ४४	० ०३	२ २१	४ ४२	७ ०२
19	५	९ ०६	१० ४८	१२ १३	१३ ३५	१५ ०८	१७ ०२	१९ १६	२१ ४०	२३ ५९	२ १७	४ ३८	६ ५८
20	६	९ ०२	१० ४४	१२ ०९	१३ ३१	१५ ०४	१६ ५८	१९ १२	२१ ३६	२३ ५५	२ १३	४ ३४	६ ५४
21	७	८ ५८	१० ४०	१२ ०५	१३ २७	१५ ००	१६ ५४	१९ ०८	२१ ३२	२३ ५१	२ १०	४ ३०	६ ५०
22	८	८ ५४	१० ३६	१२ ०१	१३ २३	१४ ५६	१६ ५०	१९ ०५	२१ २८	२३ ४७	२ ०६	४ २६	६ ४६
23	९	८ ५०	१० ३२	११ ५७	१३ १९	१४ ५२	१६ ४६	१९ ०१	२१ २४	२३ ४३	२ ०२	४ २२	६ ४२
24	१०	८ ४७	१० २८	११ ५३	१३ १५	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ २०	२३ ३९	१ ५८	४ १८	६ ३८
25	११	८ ४३	१० २४	११ ४९	१३ ११	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १६	२३ ३५	१ ५४	४ १४	६ ३५
26	१२	८ ३९	१० २०	११ ४५	१३ ०८	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ १२	२३ ३१	१ ५०	४ १०	६ ३१
27	१३	८ ३५	१० १६	११ ४१	१३ ०४	१४ ३७	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०८	२३ २७	१ ४६	४ ०७	६ २७
28	१४	८ ३१	१० १२	११ ३७	१३ ००	१४ ३३	१६ २७	१८ ४१	२१ ०४	२३ २३	१ ४२	४ ०३	६ २३
29	१५	८ २७	१० ०८	११ ३३	१२ ५६	१४ २९	१६ २३	१८ ३७	२१ ००	२३ १९	१ ३८	३ ५९	६ १९
30	१६	८ २३	१० ०४	११ २९	१२ ५२	१४ २५	१६ १९	१८ ३३	२० ५६	२३ १५	१ ३४	३ ५५	६ १५
31	१७	८ १९	१० ००	११ २५	१२ ४८	१४ २१	१६ १५	१८ २९	२० ५२	२३ ११	१ ३०	३ ५१	६ ११
जन.	१८	८ १५	९ ५६	११ २१	१२ ४४	१४ १७	१६ ११	१८ २५	२० ४८	२३ ०७	१ २६	३ ४७	६ ७
2	१९	८ ११	९ ५२	११ १७	१२ ४०	१४ १३	१६ ०७	१८ २१	२० ४४	२३ ०३	१ २२	३ ४३	६ ३
3	२०	८ ०७	९ ४८	११ १३	१२ ३६	१४ ०९	१६ ०३	१८ १७	२० ४०	२२ ५९	१ १८	३ ३९	५ ५९
4	२१	८ ०३	९ ४४	११ ०९	१२ ३२	१४ ०५	१५ ५९	१८ १३	२० ३६	२२ ५५	१ १४	३ ३५	५ ५५
5	२२	७ ५९	९ ४०	११ ०५	१२ २८	१४ ०१	१५ ५५	१८ ०९	२० ३२	२२ ५१	१ १०	३ ३१	५ ५१
6	२३	७ ५५	९ ३६	११ ०१	१२ २४	१३ ५७	१५ ५१	१८ ०५	२० २८	२२ ४७	१ ०६	३ २७	५ ४७
7	२४	७ ५१	९ ३२	१० ५७	१२ २०	१३ ५३	१५ ४७	१८ ०१	२० २४	२२ ४३	१ ०२	३ २३	५ ४३
8	२५	७ ४७	९ २८	१० ५३	१२ १६	१३ ४९	१५ ४३	१७ ५७	२० २०	२२ ३९	० ५८	३ १९	५ ३९
9	२६	७ ४३	९ २४	१० ४९	१२ १२	१३ ४५	१५ ३९	१७ ५३	२० १६	२२ ३५	० ५४	३ १५	५ ३५
10	२७	७ ३९	९ २०	१० ४५	१२ ०८	१३ ४१	१५ ३५	१७ ४९	२० १२	२२ ३१	० ५०	३ ११	५ ३१
11	२८	७ ३५	९ १६	१० ४१	१२ ०४	१३ ३७	१५ ३१	१७ ४५	२० ०८	२२ २७	० ४६	३ ०७	५ २७
12	२९	७ ३१	९ १२	१० ३७	१२ ००	१३ ३३	१५ २७	१७ ४१	२० ०४	२२ २३	० ४२	३ ०३	५ २३
13	३०	७ २७	९ ०८	१० ३३	११ ५६	१३ २९	१५ २३	१७ ३७	२० ००	२२ १९	० ३८	२ ५९	५ १९
14	मा.	७ २३	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

माघ (जनवरी-फरवरी)

जनवरी	माघ प्रवि	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ०४	१० २९	११ ५२	१३ २५	१५ १९	१७ ३३	१९ ५६	२२ १५	० ३४	२ ५५	५ १५	७ १९
15	२	९ ००	१० २५	११ ४८	१३ २१	१५ १५	१७ २९	१९ ५२	२२ ११	० ३०	२ ५१	५ ११	७ १५
16	३	८ ५७	१० २२	११ ४५	१३ १८	१५ १२	१७ २५	१९ ४९	२२ ८	० २७	२ ४७	५ ७	७ ११
17	४	८ ५३	१० १८	११ ४१	१३ १४	१५ ८	१७ २१	१९ ४५	२२ ४	० २३	२ ४३	५ ३	७ ७
18	५	८ ४९	१० १४	११ ३७	१३ १०	१५ ४	१७ १८	१९ ४१	२२ ०	० १९	२ ३९	४ ५९	७ ३
19	६	८ ४५	१० १०	११ ३३	१३ ६	१५ ००	१७ १४	१९ ३७	२१ ५६	० १५	२ ३५	४ ५६	६ ५९
20	७	८ ४१	१० ०६	११ २९	१३ २	१४ ५६	१७ १०	१९ ३३	२१ ५२	० ११	२ ३१	४ ५२	६ ५५
21	८	८ ३७	१० २	११ २५	१२ ५८	१४ ५२	१७ ९	१९ २९	२१ ४८	० ७	२ २७	४ ५७	६ ५२
22	९	८ ३३	९ ५८	११ २१	१२ ५४	१४ ४८	१७ २	१९ २५	२१ ४४	० ३	२ २३	४ ४४	६ ४८
23	१०	८ २९	९ ५४	११ १७	१२ ५०	१४ ४४	१६ ५८	१९ २१	२१ ४०	२३ ५९	२ १९	४ ४०	६ ४४
24	११	८ २५	९ ५०	११ १३	१२ ४६	१४ ४०	१६ ५४	१९ १८	२१ ३६	२३ ५५	२ १६	४ ३६	६ ४०
25	१२	८ २१	९ ४६	११ ९	१२ ४२	१४ ३६	१६ ५०	१९ १४	२१ ३२	२३ ५१	२ १२	४ ३२	६ ३६
26	१३	८ १८	९ ४३	११ ६	१२ ३९	१४ ३३	१६ ४७	१९ १०	२१ २९	२३ ४८	२ ८	४ २८	६ ३२
27	१४	८ १४	९ ३९	११ २	१२ ३५	१४ २९	१६ ४३	१९ ६	२१ २५	२३ ४४	२ ४	४ २४	६ २८
28	१५	८ १०	९ ३५	१० ५८	१२ ३१	१४ २५	१६ ३९	१९ २	२१ २१	२३ ४०	२ ०	४ २०	६ २४
29	१६	८ ०६	९ ३१	१० ५४	१२ २७	१४ २१	१६ ३५	१८ ५८	२१ १७	२३ ३६	१ ५६	४ १६	६ २०
30	१७	८ २	९ २७	१० ५०	१२ २३	१४ १७	१६ ३१	१८ ५४	२१ १३	२३ ३२	१ ५२	४ १३	६ १७
31	१८	७ ५८	९ २३	१० ४६	१२ १९	१४ १३	१६ २७	१८ ५०	२१ ९	२३ २८	१ ४८	४ ९	६ १३
फर	१९	७ ५४	९ १९	१० ४२	१२ १५	१४ ९	१६ २३	१८ ४६	२१ ५	२३ २४	१ ४४	४ ५	६ ९
2	२०	७ ५०	९ १५	१० ३८	१२ ११	१४ ५	१६ १९	१८ ४२	२१ १	२३ २०	१ ४०	४ १	६ ५
3	२१	७ ४६	९ ११	१० ३४	१२ ७	१४ १	१६ १५	१८ ३८	२० ५७	२३ १६	१ ३६	३ ५७	६ १
4	२२	७ ४२	९ ७	१० ३०	१२ ३	१३ ५७	१६ ११	१८ ३४	२० ५३	२३ १२	१ ३२	३ ५३	५ ५७
5	२३	७ ३८	९ ३	१० २६	११ ५९	१३ ५३	१६ ७	१८ ३०	२० ५०	२३ ८	१ २८	३ ४९	५ ५३
6	२४	७ ३४	८ ५९	१० २२	११ ५५	१३ ४९	१६ ३	१८ २६	२० ४६	२३ ४	१ २५	३ ४५	५ ४९
7	२५	७ ३०	८ ५५	१० १८	११ ५१	१३ ४५	१५ ५९	१८ २२	२० ४२	२३ ०	१ २१	३ ४१	५ ४५
8	२६	७ २६	८ ५१	१० १४	११ ४७	१३ ४१	१५ ५५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १७	३ ३७	५ ४१
9	२७	७ २२	८ ४७	१० १०	११ ४३	१३ ३७	१५ ५१	१८ १५	२० ३४	२२ ५२	१ १३	३ ३३	५ ३७
10	२८	७ १८	८ ४३	१० ६	११ ३९	१३ ३३	१५ ४७	१८ ११	२० ३०	२२ ४८	१ ९	३ २९	५ ३३
11	२९	७ १४	८ ३९	१० २	११ ३५	१३ २९	१५ ४३	१८ ७	२० २६	२२ ४४	१ ५	३ २५	५ २९
12	फा.	७ १०	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -	- -

दैनिक लग्नसारणी–शिमला (हि.प्र.) में लग्न समाप्तिकाल (भा. स्टैं. टा.)

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
12	१	८ ३५	९ ५८	११ ३१	१३ २५	१५ ३९	१८ ३	२० २२	२२ ४०	१ १	३ २१	५ २५	७ ७
13	२	८ ३१	९ ५४	११ २७	१३ २१	१५ ३५	१७ ५९	२० १८	२२ ३६	० ५७	३ १७	५ २१	७ ३
14	३	८ २७	९ ५०	११ २३	१३ १७	१५ ३१	१७ ५५	२० १४	२२ ३२	० ५३	३ १३	५ १७	६ ५९
15	४	८ २३	९ ४६	११ १९	१३ १३	१५ २७	१७ ५१	२० १०	२२ २८	० ४९	३ ९	५ १३	६ ५५
16	५	८ १९	९ ४२	११ १५	१३ ९	१५ २३	१७ ४७	२० ६	२२ २४	० ४५	३ ५	५ ९	६ ५१
17	६	८ १५	९ ३८	११ ११	१३ ५	१५ १९	१७ ४३	२० २	२२ २०	० ४१	३ १	५ ६	६ ४७
18	७	८ ११	९ ३४	११ ७	१३ १	१५ १५	१७ ३९	१९ ५८	२२ १६	० ३७	२ ५७	५ २	६ ४३
19	८	८ ७	९ ३०	११ ३	१२ ५७	१५ ११	१७ ३५	१९ ५४	२२ १२	० ३३	२ ५३	४ ५८	६ ३९
20	९	८ ४	९ २७	११ ०	१२ ५३	१५ ७	१७ ३१	१९ ५०	२२ ८	० २९	२ ४९	४ ५४	६ ३५
21	१०	८ ०	९ २३	१० ५६	१२ ५०	१५ ४	१७ २७	१९ ४६	२२ ४	० २५	२ ४६	४ ५०	६ ३१
22	११	७ ५६	९ १९	१० ५२	१२ ४६	१५ ०	१७ २३	१९ ४२	२२ ०	० २१	२ ४२	४ ४६	६ २७
23	१२	७ ५२	९ १४	१० ४८	१२ ४२	१४ ५६	१७ १९	१९ ३८	२१ ५६	० १८	२ ३८	४ ४२	६ २३
24	१३	७ ४८	९ १०	१० ४४	१२ ३८	१४ ५२	१७ १५	१९ ३४	२१ ५२	० १४	२ ३४	४ ३८	६ १९
25	१४	७ ४४	९ ७	१० ४०	१२ ३४	१४ ४८	१७ ११	१९ ३०	२१ ४८	० १०	२ ३०	४ ३४	६ १५
26	१५	७ ४०	९ ३	१० ३६	१२ ३०	१४ ४४	१७ ७	१९ २६	२१ ४४	० ६	२ २६	४ ३०	६ ११
27	१६	७ ३६	८ ५९	१० ३२	१२ २६	१४ ४०	१७ ३	१९ २२	२१ ४०	० २	२ २२	४ २६	६ ७
28	१७	७ ३२	८ ५५	१० २८	१२ २२	१४ ३६	१६ ५९	१९ १८	२१ ३६	२३ ५८	२ १८	४ २२	६ ४
मार्च	१८	७ २८	८ ५१	१० २४	१२ १८	१४ ३२	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ५४	२ १४	४ १८	६ ०
2	१९	७ २४	८ ४७	१० २०	१२ १४	१४ २८	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ५०	२ १०	४ १४	५ ५६
3	२०	७ २१	८ ४४	१० १७	१२ ११	१४ २५	१६ ४७	१९ ६	२१ २४	२३ ४६	२ ६	४ १०	५ ५२
4	२१	७ १७	८ ४०	१० १३	१२ ७	१४ २१	१६ ४३	१९ २	२१ २०	२३ ४२	२ २	४ ६	५ ४८
5	२२	७ १३	८ ३६	१० ९	१२ ३	१४ १७	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ ३९	१ ५८	४ ३	५ ४४
6	२३	७ ९	८ ३२	१० ५	११ ५९	१४ १३	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ ३५	१ ५४	३ ५९	५ ४०
7	२४	७ ५	८ २८	१० १	११ ५५	१४ ९	१६ ३१	१८ ५०	२१ ९	२३ ३१	१ ५०	३ ५५	५ ३६
8	२५	७ १	८ २४	९ ५७	११ ५१	१४ ५	१६ २७	१८ ४६	२१ ५	२३ २७	१ ४६	३ ५१	५ ३२
9	२६	६ ५७	८ २०	९ ५३	११ ४७	१४ १	१६ २४	१८ ४३	२१ १	२३ २३	१ ४३	३ ४७	५ २८
10	२७	६ ५३	८ १६	९ ४९	११ ४३	१३ ५७	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १९	१ ३९	३ ४३	५ २४
11	२८	६ ४९	८ १२	९ ४५	११ ३९	१३ ५३	१६ १७	१८ ३५	२० ५३	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
12	२९	६ ४५	८ ८	९ ४१	११ ३५	१३ ४९	१६ १३	१८ ३२	२० ४९	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १७
13	३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्च	चैत्र प्रवि.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.
14	१	८ ००	९ ३३	११ २७	१३ ४१	१६ ५	१८ २४	२० ४१	२३ ७	१ २४	३ २८	५ ९	६ ३३
15	२	७ ५६	९ २९	११ २३	१३ ३७	१६ १	१८ २०	२० ३७	२३ ०	१ २०	३ २४	५ ५	६ २९
16	३	७ ५२	९ २५	११ १९	१३ ३३	१५ ५७	१८ १६	२० ३३	२२ ५६	१ १६	३ २०	५ १	६ २५
17	४	७ ४८	९ २१	११ १५	१३ २९	१५ ५३	१८ १२	२० २९	२२ ५२	१ १२	३ १६	४ ५७	६ २१
18	५	७ ४४	९ १७	११ ११	१३ २५	१५ ४९	१८ ८	२० २५	२२ ४८	१ ८	३ १२	४ ५३	६ १७
19	६	७ ४०	९ १३	११ ७	१३ २१	१५ ४५	१८ ४	२० २१	२२ ४४	१ ४	३ ८	४ ४९	६ १३
20	७	७ ३६	९ ९	११ ३	१३ १८	१५ ४१	१८ ०	२० १७	२२ ४०	१ ०	३ ४	४ ४५	६ ९
21	८	७ ३२	९ ५	१० ५९	१३ १४	१५ ३७	१७ ५६	२० १३	२२ ३६	० ५६	३ ००	४ ४१	६ ५
22	९	७ २८	९ १	१० ५५	१३ १०	१५ ३३	१७ ५२	२० ९	२२ ३२	० ५२	२ ५६	४ ३७	६ १
23	१०	७ २५	८ ५७	१० ५२	१३ ६	१५ २९	१७ ४८	२० ५	२२ २८	० ४८	२ ५२	४ ३३	५ ५७
24	११	७ २१	८ ५३	१० ४८	१३ २	१५ २५	१७ ४४	२० १	२२ २४	० ४४	२ ४८	४ ३०	५ ५३
25	१२	७ १७	८ ४९	१० ४४	१२ ५८	१५ २१	१७ ४०	१९ ५७	२२ २०	० ४०	२ ४४	४ २६	५ ४९
26	१३	७ १३	८ ४५	१० ४०	१२ ५४	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ १६	० ३६	२ ४०	४ २२	५ ४५
27	१४	७ ९	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १३	१७ ३२	१९ ५०	२२ १२	० ३२	२ ३६	४ १८	५ ४१
28	१५	७ ५	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ९	१७ २८	१९ ४६	२२ ८	० २८	२ ३३	४ १४	५ ३७
29	१६	७ १	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ५	१७ २४	१९ ४२	२२ ४	० २४	२ २९	४ १०	५ ३४
30	१७	६ ५७	८ ३०	१० २४	१२ ३९	१५ १	१७ २०	१९ ३८	२२ ०	० २०	२ २५	४ ६	५ ३०
31	१८	६ ५३	८ २६	१० २०	१२ ३५	१४ ५७	१७ १६	१९ ३४	२१ ५६	० १६	२ २१	४ २	५ २६
अप्रै	१९	६ ४९	८ २२	१० १६	१२ ३१	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ५२	० १२	२ १७	३ ५८	५ २२
2	२०	६ ४५	८ १८	१० १२	१२ २७	१४ ४९	१७ ८	१९ २६	२१ ४८	० ८	२ १३	३ ५४	५ १८
3	२१	६ ४१	८ १४	१० ८	१२ २३	१४ ४५	१७ ४	१९ २२	२१ ४४	० ४	२ ९	३ ५०	५ १४
4	२२	६ ३७	८ १०	१० ४	१२ १९	१४ ४१	१७ ०	१९ १९	२१ ४०	२४ ००	२ ५	३ ४६	५ १०
5	२३	६ ३३	८ ०६	१० ०	१२ १५	१४ ३७	१६ ५६	१९ १५	२१ ३७	२३ ५७	२ १	३ ४२	५ ६
6	२४	६ ३०	८ ३	९ ५६	१२ ११	१४ ३३	१६ ५२	१९ ११	२१ ३३	२३ ५३	१ ५७	३ ३८	५ २
7	२५	६ २६	७ ५९	९ ५३	१२ ७	१४ २९	१६ ४९	१९ ७	२१ २९	२३ ४९	१ ५३	३ ३४	४ ५८
8	२६	६ २२	७ ५५	९ ४९	१२ ३	१४ २५	१६ ४५	१९ ३	२१ २५	२३ ४५	१ ४९	३ ३०	४ ५४
9	२७	६ १८	७ ५१	९ ४५	११ ५९	१४ २१	१६ ४१	१८ ५९	२१ २१	२३ ४१	१ ४५	३ २६	४ ५१
10	२८	६ १४	७ ४७	९ ४१	११ ५५	१४ १७	१६ ३७	१८ ५५	२१ १७	२३ ३७	१ ४१	३ २२	४ ४७
11	२९	६ १०	७ ४३	९ ३७	११ ५१	१४ १४	१६ ३३	१८ ५१	२१ १३	२३ ३३	१ ३७	३ १८	४ ४३
12	३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

भारत के प्रमुख नगरों के दैनिक सूर्योदय-सूर्यास्त (भा. स्टैं. टा.)

नीचे भारत के कुछ प्रमुख नगरों के सूर्योदयास्त दिए गए हैं जो किरण-वक्री भवन संस्कार रहित है। जो सूर्योदयादि इष्ट, ज्योतिष शास्त्रीय एवं धार्मिक अनुष्ठानादि कृत्यों के लिए समान रूप से उपयोगी होते हैं। किसी नगर के सूर्योदय में लगभग ३/४ मिनट घटाने तथा अस्त में ३/४ मिनट जोड़ने से किरण वक्री संस्कार सहित (Upper Limb) अर्थात् दृश्यमान सूर्योदय-सूर्यास्त होंगे।

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जन.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जन.
1	7 34	17 34	7 28	17 30	7 23	17 29	7 21	17 32	6 59	17 20	7 20	17 40	7 32	17 47	7 17	17 24	7 05	17 43	6 20	16 59	6 48	17 15	1
2	35	34	29	31	23	30	21	33	6 59	21	20	41	32	48	17	25	05	44	21	17 00	48	16	2
3	35	35	29	32	23	31	21	34	7 00	21	21	43	33	49	17	25	06	44	21	00	48	17	3
4	35	36	29	33	24	32	22	35	00	22	21	43	33	50	18	26	06	45	21	01	48	17	4
5	35	36	29	34	24	32	22	35	00	23	21	43	33	51	18	27	06	45	22	02	49	18	5
6	35	37	29	35	24	33	22	36	00	24	21	44	33	51	18	28	06	46	22	02	49	19	6
7	35	38	29	36	24	34	22	37	00	24	22	45	33	52	18	28	07	47	22	03	49	20	7
8	35	39	29	36	24	35	22	38	00	25	22	46	33	52	18	29	07	47	22	04	49	20	8
9	35	40	29	37	24	36	22	39	01	26	22	46	33	53	18	30	07	48	22	04	49	21	9
10	35	40	29	38	24	37	22	39	01	26	22	47	33	54	18	31	07	49	22	05	49	22	10
11	35	41	29	39	24	38	22	40	01	27	22	48	33	55	18	32	07	49	23	06	49	23	11
12	35	42	29	39	24	39	22	41	01	28	22	49	33	56	18	32	07	50	23	06	49	23	12
13	35	43	29	40	24	40	22	42	01	29	22	50	33	57	18	33	07	51	23	07	49	24	13
14	35	44	29	41	24	40	22	43	01	30	21	50	33	58	18	34	07	51	23	08	49	25	14
15	35	45	29	42	24	41	22	44	01	30	21	51	33	17 59	18	35	07	52	23	09	49	26	15
16	35	46	29	43	24	42	22	45	01	31	21	52	33	18 00	18	36	07	53	23	09	49	26	16
17	34	47	29	44	24	42	21	46	01	32	21	53	33	01	18	37	07	53	23	10	49	27	17
18	34	47	28	46	23	43	21	46	00	33	21	53	32	01	17	38	07	54	23	11	49	28	18
19	34	48	28	47	23	44	21	47	00	34	21	54	32	02	17	39	07	55	23	11	49	29	19
20	34	49	28	46	23	45	21	48	00	34	21	55	32	02	17	40	07	56	23	12	49	29	20
21	33	50	27	47	23	46	20	48	00	35	20	56	32	03	17	41	06	56	23	13	49	30	21
22	33	51	27	48	22	47	20	49	7 00	36	21	56	32	04	16	42	06	57	22	13	49	31	22
23	33	52	27	49	22	48	20	50	6 59	37	20	57	31	05	16	43	06	58	22	14	48	32	23
24	32	53	27	50	21	49	20	51	59	37	20	58	31	06	16	43	06	59	22	15	48	32	24
25	32	54	26	51	21	49	19	52	59	38	19	17 59	31	08	15	44	06	17 59	22	16	48	33	25
26	31	55	26	52	21	50	19	53	59	39	19	18 00	30	08	15	44	05	18 00	22	16	47	34	26
27	31	56	25	53	20	51	19	54	59	41	18	01	30	09	14	46	05	01	21	18	47	35	27
28	30	57	25	54	20	52	18	55	58	41	18	01	30	09	14	46	05	01	21	18	47	35	28
29	30	58	24	55	19	53	18	56	57	41	18	02	30	10	13	47	05	02	21	18	46	36	29
30	29	17 58	23	56	19	54	17	56	57	42	17	03	29	11	13	48	05	02	21	19	46	37	30
31	7 29	18 00	7 23	17 57	7 18	17 55	7 17	17 57	6 57	17 43	7 17	18 03	7 29	18 12	7 12	17 49	7 04	18 03	6 20	17 20	6 46	17 38	31
फर.	28	18 00	7 22	17 57	7 18	17 56	7 16	17 58	6 56	17 44	7 16	18 04	7 28	18 13	7 12	17 50	7 04	18 04	6 20	17 20	6 45	17 38	फर.
2	27	01	22	58	17	56	15	59	56	44	16	05	28	14	11	50	03	05	20	21	45	39	2
3	27	02	21	17 59	17	57	15	17 59	55	45	15	06	27	15	11	51	03	06	19	22	44	40	3
4	26	03	21	18 00	16	58	14	18 00	55	46	15	06	26	15	10	52	03	06	19	22	44	41	4
5	25	04	20	01	15	17 59	14	01	54	47	14	07	26	16	09	53	02	07	18	23	43	41	5
6	25	05	21	02	15	18 00	13	02	53	47	14	08	25	17	09	54	02	08	18	23	43	42	6
7	24	06	19	02	14	01	13	03	53	48	14	08	25	18	08	55	01	08	17	24	42	43	7
8	7 23	18 07	7 18	18 03	7 13	18 02	7 12	18 04	6 52	17 49	7 13	18 09	7 24	18 18	7 07	17 56	7 00	18 09	6 17	17 25	6 41	17 43	8

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
फर.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	फर.
9	7 22	18 08	7 17	18 04	7 12	18 03	7 11	18 05	6 52	17 50	7 12	18 10	7 23	18 19	7 07	17 56	7 00	18 09	6 16	17 25	6 41	17 44	9
10	21	08	16	05	11	04	10	06	51	50	11	11	23	19	06	57	6 59	10	16	26	40	45	10
11	20	09	15	06	11	05	09	06	50	51	10	12	22	20	05	58	59	11	15	26	39	45	11
12	20	10	14	07	10	06	09	07	50	52	10	12	21	21	04	17 59	58	11	15	27	39	46	12
13	19	11	13	08	09	06	08	08	49	53	09	13	20	22	03	18 00	58	12	14	28	38	47	13
14	17	12	12	09	08	07	07	09	48	53	08	14	19	23	03	00	57	12	14	28	37	47	14
15	18	13	11	10	07	08	06	09	47	54	07	14	18	23	02	01	57	13	13	29	37	48	15
16	16	14	10	11	06	09	06	10	47	55	06	15	18	24	01	02	56	13	12	29	36	49	16
17	15	14	10	11	05	09	05	11	46	55	06	16	17	25	7 00	03	55	14	12	30	35	49	17
18	13	15	09	12	04	10	04	12	45	56	05	16	16	26	6 59	04	55	14	11	30	34	50	18
19	14	16	08	13	03	11	03	13	44	57	04	17	15	26	58	04	54	15	10	31	34	50	19
20	12	17	07	13	02	11	02	13	43	57	03	18	14	27	57	05	53	15	10	31	33	51	20
21	11	18	06	14	01	12	01	14	42	58	02	18	13	28	56	06	52	16	09	32	32	52	21
22	10	18	05	15	7 00	13	7 00	14	42	59	01	19	12	28	55	07	51	17	08	32	31	52	22
23	09	19	04	16	6 59	13	6 59	15	41	17 59	7 00	20	11	29	54	07	50	17	07	33	30	53	23
24	08	20	03	17	58	14	58	15	40	18 00	6 59	20	10	29	53	08	50	17	07	33	29	53	24
25	07	21	02	18	57	15	57	16	39	01	59	21	09	30	52	09	49	18	06	34	29	54	25
26	06	22	01	19	56	15	56	16	38	01	58	21	08	31	51	09	48	18	05	34	28	55	26
27	05	22	7 00	20	55	16	55	17	37	02	57	23	07	31	50	10	47	18	04	35	27	55	27
28	7 03	18 23	6 58	18 20	6 54	18 17	6 54	18 18	6 36	18 02	6 55	18 23	7 06	18 32	6 49	18 11	6 47	18 19	6 03	17 35	6 26	17 56	28
मार्च	7 02	18 24	6 57	18 20	6 53	18 18	6 53	18 19	6 34	18 03	6 55	18 23	7 05	18 33	6 47	18 12	6 46	18 20	6 01	17 37	6 25	17 56	मार्च
2	01	25	56	21	52	19	52	19	33	04	54	24	04	33	46	13	45	20	6 00	38	24	57	2
3	7 00	26	55	22	51	19	51	20	32	05	53	24	03	34	45	14	44	21	5 59	38	23	57	3
4	6 58	26	54	23	50	20	50	21	30	05	52	25	02	34	44	14	43	21	58	38	22	58	4
5	57	27	53	23	49	20	49	22	29	06	51	26	01	35	43	15	42	22	57	39	21	58	5
6	56	28	51	24	48	21	48	22	28	06	50	26	7 00	35	41	16	42	22	56	39	20	59	6
7	55	29	50	25	47	21	47	23	27	07	49	27	6 59	36	40	18	41	23	56	40	19	17 59	7
8	54	29	49	25	45	22	45	23	26	07	48	27	58	36	39	17	40	23	55	40	18	18 00	8
9	53	30	48	26	44	23	44	24	25	08	46	28	57	37	38	18	39	23	54	40	17	00	9
10	51	31	46	27	43	23	43	24	24	08	45	28	56	38	37	18	38	24	53	41	16	01	10
11	50	31	45	27	42	24	42	25	23	09	44	29	55	39	36	19	37	24	52	41	15	01	11
12	49	32	44	28	41	25	41	26	22	09	43	30	54	39	35	20	36	25	51	42	14	02	12
13	48	33	43	29	40	26	40	27	21	10	42	31	53	40	33	20	35	25	50	42	13	02	13
14	46	34	42	29	39	27	38	27	20	11	41	31	52	40	32	21	34	26	49	42	12	03	14
15	45	34	40	29	38	27	37	28	19	11	40	32	50	41	31	21	33	26	48	43	11	03	15
16	44	35	39	30	36	28	36	28	18	12	39	32	49	41	30	22	32	26	47	43	10	03	16
17	43	36	38	31	35	28	35	29	17	12	38	33	48	42	29	23	31	27	46	44	09	04	17
18	41	36	36	31	34	29	34	29	16	13	37	33	47	42	27	23	31	27	45	44	08	04	18
19	40	37	35	32	33	30	33	30	15	13	36	34	46	43	26	24	30	27	45	44	07	05	19
20	39	38	34	33	31	31	31	30	14	14	35	34	45	43	25	25	29	27	44	45	06	05	20
21	38	38	33	34	30	31	30	31	13	14	33	35	44	44	24	25	28	28	43	45	05	06	21
22	36	39	32	34	29	32	29	31	12	15	32	35	43	44	23	26	27	28	42	45	04	07	22
23	35	40	31	34	28	32	28	32	11	15	31	36	41	45	21	26	26	28	41	46	03	07	23
24	34	40	30	35	26	33	26	32	10	16	30	36	40	45	20	27	25	29	40	46	02	07	24
25	32	41	28	36	25	33	25	33	09	16	29	37	39	46	19	28	24	29	39	46	01	08	25
26	31	42	27	37	24	34	24	33	08	17	28	37	38	46	18	28	23	29	38	47	6 00	08	26
27	6 30	18 42	6 25	18 37	6 23	18 34	6 23	18 34	6 07	18 17	6 27	18 38	6 37	18 47	6 17	18 29	6 22	18 30	5 37	17 47	5 59	18 09	27

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मार्च	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	मार्च
28	6 29	18 43	6 24	18 38	6 21	18 35	6 22	18 35	6 05	18 18	6 26	18 38	6 36	18 47	6 15	18 29	6 21	18 30	5 36	17 47	5 57	18 09	28
29	27	44	23	39	20	35	21	36	04	18	25	38	35	48	14	30	20	31	35	48	57	09	29
30	26	44	22	39	19	36	20	36	03	19	24	39	34	18 49	13	31	19	32	34	48	56	10	30
31	6 25	18 45	6 21	18 40	6 18	18 37	6 19	18 37	6 02	18 19	6 23	18 39	6 32	19 49	6 12	18 31	6 18	18 32	5 33	17 48	5 55	18 10	31
अप्रै.	6 23	18 46	6 19	18 41	6 16	18 38	6 17	18 37	6 01	18 20	6 22	18 40	6 31	19 50	6 10	18 32	6 17	18 32	5 33	17 48	5 54	18 11	अप्रै.
2	22	46	18	42	15	38	16	38	6 00	20	21	40	30	51	09	32	16	32	32	48	53	11	2
3	21	47	17	42	14	39	15	38	5 59	21	20	41	29	51	08	33	15	33	31	49	52	11	3
4	20	48	16	43	13	40	14	39	58	21	19	41	28	52	07	34	15	33	30	49	51	12	4
5	19	48	15	43	12	40	13	39	57	22	18	42	27	52	06	34	14	33	29	49	50	12	5
6	17	49	13	44	11	41	12	40	56	22	16	42	26	53	05	35	13	34	28	50	49	13	6
7	16	50	12	44	10	41	11	40	55	23	15	43	24	53	03	35	12	34	28	50	48	13	7
8	15	50	11	45	09	82	09	41	54	23	14	43	23	54	02	36	11	34	24	50	47	14	8
9.	14	51	10	46	08	42	08	42	53	24	13	44	22	54	01	37	10	35	26	51	46	14	9
10	16	52	09	47	06	43	07	43	52	24	12	44	21	55	6 00	37	09	35	25	51	45	15	10
11	11	52	07	47	05	43	06	43	50	25	11	45	20	55	5 59	38	08	35	24	51	44	15	11
12	10	53	06	48	03	44	05	44	49	25	10	45	19	56	58	39	07	36	23	52	43	15	12
13	09	54	05	48	02	44	04	44	48	26	09	46	18	56	57	39	06	36	22	52	42	16	13
14	08	54	04	49	01	45	03	45	47	26	08	46	17	57	55	40	05	37	21	53	41	16	14
15	07	55	03	50	6 00	45	02	45	47	26	08	46	16	57	55	40	05	37	21	53	41	16	15
16	05	56	01	50	5 59	46	01	46	45	27	06	47	15	58	52	42	02	38	20	53	39	17	16
17	04	56	6 00	51	48	47	6 00	46	44	28	05	48	14	58	52	42	02	38	19	54	38	18	17
18	03	57	5 59	52	57	48	5 59	47	43	28	04	48	13	59	51	42	01	38	18	54	37	18	18
19	02	58	57	53	56	48	58	47	43	28	03	49	12	59	51	42	6 01	38	18	54	37	19	19
20	01	58	56	54	55	49	57	48	42	29	02	49	11	00	49	43	5 59	39	17	55	35	19	20
21	6 00	18 59	55	55	54	50	56	49	41	29	01	50	10	00	49	44	59	40	16	55	34	20	21
22	5 59	19 00	54	55	54	50	56	49	41	29	6 01	50	10	00	49	45	59	40	15	55	33	20	22
23	58	00	53	56	52	51	54	50	40	30	5 59	51	08	01	47	45	57	41	14	56	23	21	23
24	57	01	52	57	51	51	53	51	39	31	59	52	07	02	46	46	56	41	14	56	32	21	24
25	56	02	51	57	50	52	52	51	38	31	58	52	06	03	45	46	55	41	13	57	31	21	25
26	55	02	50	57	49	53	51	52	37	32	57	53	05	04	44	47	55	42	12	57	30	22	26
27	54	03	49	58	48	53	50	52	36	32	56	53	04	04	43	47	54	42	11	57	29	22	27
28	53	04	48	58	47	54	49	53	35	33	55	54	03	05	42	48	53	43	11	58	28	23	28
29	52	04	47	18 59	46	55	48	53	34	34	54	54	03	05	41	49	53	43	10	58	27	23	29
30	5 51	19 05	5 46	19 00	5 45	18 55	5 47	18 54	5 33	18 34	5 53	18 55	6 02	19 06	5 40	18 49	5 52	18 43	5 09	17 59	5 26	18 24	30
मई	5 50	19 06	5 45	19 01	5 44	18 56	5 46	18 54	5 32	18 35	5 53	18 55	6 01	19 07	5 34	18 50	5 51	18 44	5 09	17 59	5 25	18 24	मई
2	49	06	45	02	43	57	45	55	37	35	52	56	6 00	07	38	51	50	44	08	17 59	29	25	2
3	48	07	43	03	43	57	44	56	31	36	51	56	5 59	08	37	51	50	44	07	18 00	24	25	3
4	47	08	43	03	42	58	44	57	30	36	50	57	58	08	36	52	49	45	07	00	23	26	4
5	46	09	42	04	42	59	43	57	30	37	50	57	57	09	36	53	49	45	06	01	23	26	5
6	45	09	41	05	41	18 59	43	58	29	37	49	58	56	09	35	53	48	46	05	01	22	27	6
7	44	10	40	05	40	19 00	42	58	28	38	48	59	55	10	34	54	48	46	05	02	21	27	7
8	44	11	40	05	39	00	41	18 59	27	38	47	18 59	55	11	33	55	47	47	04	02	21	28	8
9	43	11	39	07	38	01	41	19 00	27	39	47	19 00	54	11	32	55	47	47	04	03	19	29	9
10	42	07	38	07	38	02	40	01	26	40	46	00	54	12	32	56	46	48	03	03	19	29	10
11	41	13	37	07	37	02	39	01	25	40	46	01	53	12	31	56	46	48	03	03	19	29	11
12	5 41	19 13	5 37	19 08	5 36	19 03	5 39	19 02	5 25	18 41	5 45	19 01	5 53	19 13	5 30	18 57	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 30	12

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
मई	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.	मई
13	5 40	19 14	36	19 09	5 36	19 04	5 38	19 02	5 24	18 41	5 44	19 02	5 52	19 13	5 30	18 58	5 45	18 49	5 02	18 04	5 18	18 31	13
14	39	15	35	10	35	04	38	03	24	42	44	02	51	14	29	58	44	50	01	05	17	31	14
15	38	15	34	11	34	05	37	03	23	42	43	03	50	14	28	18 59	44	50	01	05	17	32	15
16	38	16	34	11	33	06	36	04	23	43	43	04	50	15	28	19 00	43	51	00	06	16	32	16
17	37	17	33	12	33	06	36	04	22	44	42	04	50	15	27	00	43	51	5 00	06	16	33	17
18	37	17	33	12	32	07	35	05	22	44	42	05	49	16	26	01	42	52	4 59	07	15	33	18
19	36	18	32	13	32	08	34	06	21	45	41	05	49	17	26	02	42	52	59	07	15	34	19
20	35	19	32	13	31	08	34	07	21	45	41	06	48	18	25	02	41	53	59	08	15	34	20
21	35	20	31	14	31	09	33	07	20	46	40	06	48	18	25	03	41	53	58	08	14	35	21
22	34	20	31	15	30	09	33	08	20	46	40	07	47	19	24	03	40	53	58	09	14	35	22
23	34	21	30	15	30	10	32	08	19	47	40	07	47	19	24	04	40	54	58	09	14	36	23
24	33	22	30	16	29	10	32	09	19	47	39	08	47	20	23	05	40	54	57	09	13	36	24
25	33	22	29	16	29	11	31	09	19	48	39	08	46	20	23	05	39	55	57	10	13	37	25
26	33	23	29	17	29	11	31	10	18	48	39	09	46	21	23	06	39	55	57	10	13	37	26
27	32	24	28	18	28	12	30	10	18	49	38	10	46	21	22	06	39	56	57	11	12	38	27
28	32	24	28	18	27	13	30	11	18	49	38	10	45	22	22	07	39	56	56	11	12	38	28
29	31	25	27	19	27	14	30	11	17	50	38	11	45	22	22	08	38	57	56	12	12	39	29
30	31	26	27	19	27	14	29	12	17	50	37	11	45	23	21	08	38	57	56	12	12	39	30
31	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 12	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 12	18 40	31
जून	5 31	19 26	5 27	19 20	5 27	19 15	5 29	19 13	5 17	18 51	5 37	19 12	5 44	19 24	5 21	19 09	5 38	18 58	4 56	18 13	5 11	18 40	जून
2	30	27	26	21	26	16	28	13	17	52	37	12	44	24	21	10	38	59	55	13	11	40	2
3	30	27	26	22	26	16	28	14	16	52	37	13	44	25	20	10	38	59	55	14	11	41	3
4	30	28	26	23	26	17	28	14	16	53	37	13	44	25	20	11	38	18 59	55	14	11	41	4
5	30	28	27	23	26	17	28	15	16	53	36	14	44	26	20	11	38	19 00	55	15	11	42	5
6	30	29	26	23	26	18	28	15	16	54	36	14	44	26	20	12	38	00	55	15	11	42	6
7	29	29	26	24	26	18	28	16	16	54	36	15	44	27	20	12	38	00	55	15	11	43	7
8	29	30	26	24	25	19	28	16	16	54	36	15	44	27	20	13	38	00	55	16	11	43	8
9	29	30	26	24	25	19	28	17	16	55	36	15	44	28	20	13	38	01	55	16	11	43	9
10	29	30	26	25	25	19	28	17	16	55	36	16	44	28	20	13	38	01	55	16	11	44	10
11	29	31	26	25	25	20	28	18	16	56	36	16	44	29	19	14	38	02	55	17	11	44	11
12	29	31	26	26	25	20	28	18	16	56	36	16	44	29	19	14	38	02	55	17	11	44	12
13	29	32	26	26	25	20	28	19	16	57	36	17	43	29	20	15	38	03	55	18	11	45	13
14	29	32	26	26	25	21	28	19	16	57	36	17	43	30	20	15	38	03	55	18	11	45	14
15	29	32	26	27	25	21	28	19	16	57	36	17	43	30	20	15	38	03	56	18	11	45	15
16	29	33	26	27	25	21	28	19	16	58	37	18	43	30	20	15	38	03	56	18	11	45	16
17	30	33	26	27	25	22	28	20	16	58	37	18	43	30	20	15	38	04	56	19	12	46	17
18	30	33	26	27	25	22	28	20	16	58	37	18	44	31	20	16	38	04	56	19	12	46	18
19	30	34	26	27	25	22	29	20	17	58	37	19	44	31	20	16	39	04	56	19	12	46	19
20	30	34	26	28	26	23	29	21	17	59	37	19	44	32	20	17	39	05	57	19	12	47	20
21	30	34	27	28	26	23	29	21	17	59	37	19	44	32	20	17	39	05	57	20	12	47	21
22	30	34	27	28	26	23	30	21	17	59	37	20	44	32	20	17	39	05	57	20	12	47	22
23	31	34	27	28	26	23	30	22	17	59	38	20	44	32	20	17	39	05	57	20	13	47	23
24	31	35	27	29	27	23	30	22	18	18 59	38	20	44	32	21	18	40	05	57	20	13	47	24
25	31	35	28	29	27	23	30	22	18	19 00	39	20	45	32	21	18	40	05	57	20	13	48	25
26	31	35	28	29	27	23	31	22	18	00	39	20	45	32	22	18	40	05	58	21	13	48	26
27	31	35	28	29	27	24	31	22	19	00	39	20	46	32	22	18	41	06	58	21	14	48	27
28	5 32	19 35	5 28	19 29	5 27	19 24	5 31	19 22	5 19	19 00	5 39	19 20	5 46	19 32	5 22	19 18	5 41	19 06	4 58	18 21	5 14	18 48	28

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
जून	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	जून
29	5 32	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 41	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	29
30	5 33	19 35	5 29	19 29	5 28	19 24	5 32	19 22	5 19	19 00	5 40	19 20	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	30
जुला	5 33	19 35	5 30	19 29	5 29	19 24	5 32	19 22	5 20	19 00	5 41	19 21	5 47	19 33	5 23	19 18	5 42	19 06	4 59	18 21	5 15	18 48	जुला
2	34	35	29	29	30	24	32	22	20	00	41	21	48	33	24	18	42	06	5 00	21	16	48	2
3	34	35	30	29	30	24	33	22	20	00	41	21	48	33	24	18	43	06	00	21	16	48	3
4	34	35	30	29	31	24	34	22	21	00	41	21	49	33	25	18	43	06	00	21	16	48	4
5	35	35	31	29	31	24	34	22	21	00	42	21	49	33	25	18	43	06	01	21	17	48	5
6	35	35	31	29	31	23	34	22	22	00	43	20	50	33	26	18	44	06	01	21	18	48	6
7	36	35	33	29	32	23	32	22	22	00	42	21	50	33	25	18	44	06	01	21	17	48	7
8	36	34	33	29	32	23	35	21	23	00	43	20	51	33	26	18	44	06	02	21	18	48	8
9	37	34	33	29	3	23	35	21	23	19 00	43	20	51	33	27	17	44	06	02	21	18	48	9
10	37	34	34	2	33	22	36	21	23	18 59	44	20	52	32	27	17	45	06	02	21	19	48	10
11	38	34	3	28	34	22	36	21	24	59	44	20	52	32	28	17	45	05	03	21	19	48	11
12	38	33	35	28	34	22	37	20	24	59	45	20	52	32	28	17	45	05	03	21	20	48	12
13	39	33	36	27	35	22	38	20	25	59	45	19	53	32	29	17	46	05	04	20	21	47	13
14	39	33	36	27	35	21	38	20	25	59	46	19	53	32	29	16	46	05	04	20	21	47	14
15	40	32	37	27	36	21	39	20	26	58	46	19	54	31	30	16	47	05	05	20	21	47	15
16	41	32	37	26	36	21	39	19	26	58	47	18	54	31	30	16	47	04	05	20	22	47	16
17	41	32	37	26	37	21	40	19	27	58	47	18	55	30	31	15	48	04	05	20	22	46	17
18	42	31	38	26	38	20	40	19	27	57	48	18	55	30	32	15	48	04	06	19	23	46	18
19	42	31	39	25	38	20	41	18	28	57	48	17	56	29	32	14	49	04	06	19	23	46	19
20	43	30	39	25	39	20	41	18	28	57	49	17	56	29	33	14	49	03	07	19	23	45	20
21	44	30	39	24	39	19	42	17	29	56	49	17	57	29	33	13	50	03	07	19	24	45	21
22	44	29	40	24	40	19	42	17	29	56	50	16	57	29	34	13	50	03	07	18	24	45	22
23	45	29	41	23	40	18	43	16	30	55	50	16	58	28	34	12	51	02	08	18	25	44	23
24	45	29	41	23	41	18	43	16	30	55	51	15	58	27	35	12	51	02	08	17	25	44	24
25	46	28	42	22	42	17	44	15	31	54	51	15	59	27	36	11	52	02	09	17	26	43	25
26	47	27	43	22	42	17	44	15	31	54	52	14	5 59	26	36	11	52	01	09	17	26	43	26
27	47	26	44	21	42	16	45	14	32	53	32	14	6 00	25	37	10	53	01	10	16	26	43	27
28	48	26	44	21	43	16	45	14	32	53	53	13	01	25	37	10	53	01	10	16	27	42	28
29	48	25	44	20	44	15	46	13	33	52	53	13	01	24	38	09	54	00	10	15	27	41	29
30	49	24	45	19	45	14	46	13	33	52	54	12	01	24	39	08	54	19 00	11	15	28	41	30
31	5 50	19 23	5 46	19 18	5 45	19 13	5 47	19 12	5 34	59	5 54	19 12	6 02	19 23	5 39	19 08	5 54	18 59	5 11	18 14	5 28	18 40	31
अग.	5 50	19 23	5 46	19 18	5 46	19 13	5 47	19 12	5 34	18 51	5 55	19 11	6 02	19 22	5 40	19 07	5 55	18 59	5 12	18 14	5 29	18 40	अग.
2	51	22	47	17	46	12	48	11	35	50	55	10	03	22	40	06	55	58	12	13	29	40	2
3	52	21	48	16	47	11	49	10	35	49	56	10	03	21	41	05	55	57	12	13	30	38	3
4	52	20	49	15	47	10	50	09	36	· 49	56	09	04	20	42	05	56	56	13	11	31	37	4
5	53	20	49	15	48	10	50	09	37	48	57	08	04	19	42	04	56	56	13	11	31	37	5
6	54	19	49	13	49	09	51	08	37	47	57	08	05	18	43	03	57	55	14	11	31	36	6
7	54	18	50	12	49	08	51	07	38	46	58	07	06	18	43	02	57	55	14	10	32	36	7
8	55	17	51	11	50	07	52	06	38	46	58	06	07	17	44	01	58	54	14	10	32	36	8
9	55	16	51	11	51	06	52	05	39	45	59	05	07	16	45	00	58	54	15	09	32	34	9
10	56	15	52	05	51	05	53	04	39	44	5 59	04	08	15	45	19 00	58	53	15	08	33	34	10
11	57	14	53	09	52	04	53	03	40	43	6 00	04	08	14	46	18 59	59	52	16	08	33	33	11
12	57	14	54	08	52	03	54	02	40	42	00	03	09	14	46	58	59	51	16	07	34	32	12
13	58	12	54	07	53	92	54	01	41	42	01	02	09	13	47	57	5 59	51	16	06	34	31	13
14	5 59	19 11	5 55	19 06	5 54	19 01	5 55	19 00	5 41	18 41	6 01	19 01	6 10	19 12	5 48	18 56	6 00	18 59	5 17	18 05	5 35	18 30	14

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अग.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अग.
15	5 59	19 10	5 56	19 04	5 55	18 59	5 57	18 58	5 52	18 39	6 02	18 59	6 11	19 10	5 49	18 54	6 01	18 48	5 18	18 04	5 36	18 29	15
16	6 00	09	56	04	55	59	57	58	42	39	02	59	11	10	49	54	01	48	18	04	36	29	16
17	01	08	56	03	55	58	57	57	43	38	03	58	11	9	49	53	01	47	18	03	36	28	17
18	01	07	56	02	56	57	58	56	43	37	04	58	12	8	50	52	02	46	18	02	36	27	18
19	02	06	57	19 01	56	56	58	55	43	36	04	57	12	7	50	51	02	45	19	02	36	27	19
20	02	05	59	18 59	57	55	59	54	44	35	05	56	13	06	51	50	03	45	19	02	36	26	20
21	03	04	59	59	58	54	5 59	53	44	34	05	55	13	5	52	49	03	44	19	18 00	37	24	21
22	04	03	5 59	58	58	53	6 00	52	45	33	05	54	14	4	52	48	03	43	20	17 59	38	24	22
23	04	02	6 00	57	59	52	00	51	45	32	06	53	14	3	53	47	04	42	20	58	38	23	23
24	05	19 00	01	55	5 59	51	01	50	56	31	07	52	15	02	53	46	04	41	20	57	39	22	24
25	06	18 59	01	55	6 00	50	01	49	46	30	07	51	15	1	54	54	04	40	21	51	39	22	25
26	06	58	02	54	00	49	02	48	47	29	07	50	16	19 00	54	43	05	39	21	56	39	21	26
27	07	57	03	52	01	47	02	47	47	28	08	49	16	18 59	55	42	05	38	21	55	40	20	27
28	07	54	04	50	01	46	48	27	48	27	08	47	17	57	56	40	06	38	22	55	40	18 19	28
29	08	54	04	49	02	45	03	45	48	26	08	47	17	57	56	40	06	37	22	53	41	18	29
30	09	53	04	49	03	44	04	44	49	25	09	46	18	56	57	39	06	36	22	52	41	17	30
31	6 09	18 52	6 05	18 48	6 04	18 43	6 04	18 42	5 49	18 24	6 09	18 46	6 18	18 56	5 57	18 39	6 06	18 36	5 22	17 52	5 41	18 17	31
सितं.	6 10	18 51	6 06	18 46	6 04	18 42	6 05	18 41	5 49	18 23	6 10	18 44	6 19	18 58	5 55	18 36	6 06	18 34	5 22	17 51	5 42	18 14	सितं.
2	10	50	06	46	05	41	05	40	50	22	10	42	19	53	58	35	07	33	22	50	42	13	2
3	11	48	06	45	05	40	06	39	50	21	11	41	20	52	59	34	07	32	22	49	43	12	3
4	12	47	07	43	06	39	06	33	51	20	11	40	20	50	5 59	33	07	31	23	48	43	11	4
5	12	46	09	41	06	37	07	37	51	19	11	39	21	49	6 00	32	07	30	23	47	44	10	5
6	13	45	08	41	07	36	07	36	52	18	12	38	21	48	00	30	08	29	23	46	44	09	5
7	13	43	09	40	07	35	08	34	52	17	12	37	22	46	01	29	08	28	24	45	44	07	7
8	14	42	10	38	08	34	08	32	52	15	13	36	23	45	02	28	08	27	24	44	45	06	8
9	15	41	11	36	08	32	09	31	53	15	13	35	23	44	02	27	07	26	24	43	45	05	9
10	15	39	11	35	09	31	09	30	53	13	14	34	23	43	03	26	09	25	25	42	46	04	10
11	16	38	12	18 34	09	29	10	29	54	12	14	33	23	42	03	24	09	24	25	41	46	03	11
12	16	37	12	17 33	10	28	10	28	54	11	14	31	23	41	04	23	10	23	25	40	46	02	12
13	17	36	13	18 31	10	27	11	27	55	10	15	30	24	40	04	22	10	22	25	39	47	01	13
14	17	34	13	31	11	26	11	26	55	09	15	29	24	38	05	21	10	21	26	38	47	18 00	14
15	18	33	13	30	11	24	12	25	55	08	16	28	25	37	05	19	10	20	26	38	47	17 59	15
16	19	32	14	28	12	23	12	24	56	06	16	27	25	36	06	18	10	19	26	37	48	58	16
17	19	30	15	25	12	22	13	22	56	05	17	26	26	35	06	17	11	18	26	36	48	57	17
18	20	29	15	25	13	21	13	21	57	04	17	25	26	34	07	16	11	17	27	35	49	56	18
19	20	28	16	24	13	19	14	20	57	03	17	23	27	32	07	14	11	16	27	33	49	55	19
20	21	26	17	22	14	18	14	19	58	02	18	22	27	31	08	13	11	15	27	32	49	53	20
21	22	25	18	20	14	17	15	18	58	01	18	21	28	30	09	12	12	14	27	31	50	52	21
22	22	24	18	19	15	16	15	17	58	18 00	19	20	28	29	09	11	12	13	28	30	50	51	22
23	23	23	18	19	16	14	16	16	59	17 58	19	19	29	28	10	09	13	12	28	29	50	50	23
24	23	21	19	18	16	13	16	14	5 59	57	20	18	29	27	10	08	13	11	28	28	51	49	24
25	24	20	20	15	17	12	17	13	6 00	56	20	17	30	26	11	07	14	10	29	28	51	48	25
26	25	19	20	14	17	11	17	12	00	55	20	15	30	24	11	06	14	09	29	27	52	47	26
27	25	17	21	13	18	09	18	11	01	54	21	14	31	23	12	04	14	08	29	26	52	46	27
28	26	16	21	12	18	08	18	09	01	53	21	13	31	22	12	03	14	07	29	25	53	45	28
29	27	15	22	10	19	07	19	08	02	52	22	12	32	21	13	02	15	06	30	24	53	43	29
30	6 27	18 13	6 23	18 10	6 19	18 06	6 19	18 07	6 02	17 51	6 23	18 11	6 32	18 20	6 13	18 01	6 15	18 05	5 30	17 23	5 53	17 43	30

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
अक्टू	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	अक्टू
अक्टू	6 28	18 12	6 23	18 08	6 20	18 04	6 20	18 06	6 02	17 49	6 23	18 10	6 33	18 19	6 14	17 59	6 15	18 04	5 32	17 21	5 54	17 42	अक्टू
2	28	11	24	07	21	03	20	05	03	48	23	09	33	18	15	58	15	03	32	20	54	40	2
3	29	10	25	05	21	02	21	03	6 03	47	24	08	34	16	15	47	16	02	32	19	54	39	3
4	30	08	25	04	22	01	21	18 01	6 04	46	24	06	34	15	16	56	16	01	33	18	55	38	4
5	30	07	25	02	22	18 00	22	17 00	04	45	25	05	35	14	16	55	17	18 00	33	17	55	37	5
6	31	06	26	02	23	17 58	23	59	05	44	25	04	35	13	17	53	17	17 59	33	16	55	36	6
7	32	05	27	00	23	57	24	58	05	43	26	03	36	12	18	52	18	58	34	15	56	35	7
8	32	03	27	18 00	24	56	24	57	06	42	26	02	36	11	18	51	18	57	34	14	57	34	8
9	33	02	27	17 59	25	55	25	56	06	42	27	01	37	10	19	50	18	56	34	13	57	33	9
10	34	01	29	57	25	54	25	55	6 07	40	27	18 00	37	09	19	49	18	56	35	12	57	32	10
11	34	18 00	30	55	26	53	26	54	6 07	39	28	17 59	38	08	20	48	19	55	35	11	58	31	11
12	35	17 59	30	55	27	51	26	53	08	38	28	58	38	07	21	46	19	54	36	10	58	30	12
13	36	57	31	54	27	50	27	52	08	37	29	57	39	06	21	45	19	53	36	09	59	29	13
14	36	56	32	52	28	49	27	51	09	36	29	56	40	05	22	44	20	52	36	09	5 59	28	14
15	37	55	33	51	29	48	28	50	09	35	30	55	41	04	23	43	20	51	37	08	6 00	27	15
16	38	54	33	50	29	47	28	49	10	34	30	54	41	03	23	42	20	50	37	07	00	27	16
17	39	53	33	49	30	46	29	48	10	33	31	53	42	02	24	41	21	49	38	06	01	26	17
18	39	52	34	48	30	45	30	47	11	32	31	52	42	01	24	40	21	49	38	05	01	25	18
19	40	50	35	48	31	44	31	46	12	31	32	51	43	18 00	25	39	22	48	38	05	01	24	19
20	41	49	35	46	32	43	31	45	12	30	33	50	43	17 59	26	38	22	48	39	04	02	23	20
21	42	48	36	45	32	42	32	44	13	29	33	49	44	58	26	37	23	47	39	03	03	22	21
22	42	47	37	44	33	41	33	43	13	28	34	48	45	57	27	36	23	46	40	02	03	21	22
23	43	46	38	42	34	40	34	42	14	27	34	47	46	56	28	35	24	45	40	01	04	20	23
24	44	45	39	42	35	39	34	41	15	26	35	47	46	55	29	34	24	44	41	01	05	20	24
25	45	44	40	41	35	38	35	40	15	25	36	45	47	54	29	33	25	43	41	17 00	05	19	25
26	45	43	40	39	36	37	35	39	16	25	36	45	47	53	30	32	25	42	42	16 59	06	18	26
27	46	42	41	38	37	36	36	38	16	24	37	44	48	52	31	31	26	42	43	59	06	17	27
28	47	41	42	37	37	35	36	37	17	23	37	43	48	51	31	31	26	41	43	58	07	16	28
29	48	40	42	37	38	34	37	36	18	22	37	42	49	51	31	30	27	41	43	57	07	16	29
30	49	39	43	36	39	35	38	35	19	21	39	42	50	50	33	28	27	40	44	57	08	15	30
31	6 49	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 10	17 14	31
नवं.	6 50	17 38	6 45	17 33	6 40	17 32	6 39	17 34	6 20	17 20	6 40	17 40	6 51	17 48	6 34	17 27	6 28	17 39	5 45	16 55	6 09	17 14	नवं.
2	51	37	45	33	41	31	40	34	20	19	41	39	52	48	34	26	29	38	45	55	10	13	2
3	52	36	47	32	42	31	41	33	21	18	41	39	53	47	36	25	30	38	46	54	11	12	3
4	53	35	48	31	43	30	42	32	22	18	42	38	54	46	37	24	31	37	46	54	11	12	4
5	53	34	48	31	43	30	42	32	22	18	42	38	54	46	37	24	31	37	46	54	11	11	5
6	54	33	48	30	44	29	43	31	23	17	44	37	56	45	38	23	32	36	47	53	12	10	6
7	55	33	50	30	45	28	44	30	24	16	44	36	56	45	39	22	32	36	48	52	13	10	7
8	56	32	51	29	46	27	45	29	24	15	45	36	57	44	40	21	33	35	48	52	14	09	8
9	57	31	52	28	47	27	45	29	25	15	46	35	57	44	41	21	33	35	49	51	15	09	9
10	58	31	52	27	47	26	46	28	26	14	46	35	58	43	41	20	34	34	50	51	15	08	10
11	6 59	30	53	27	48	25	47	28	26	14	47	34	6 59	42	42	20	34	34	50	50	16	08	11
12	7 00	29	54	26	49	24	48	27	27	13	48	33	7 00	41	43	19	35	33	51	50	17	07	12
13	00	29	54	26	50	23	48	27	28	13	49	33	01	41	44	18	35	33	55	50	17	07	13
14	01	28	55	26	51	23	49	26	29	12	49	33	01	40	45	18	36	33	52	49	18	06	14
15	02	28	56	25	52	22	50	26	29	12	50	32	02	40	46	17	37	32	53	49	19	06	15
16	7 03	17 27	6 58	17 24	6 53	17 22	6 51	17 25	6 30	17 12	6 51	17 32	7 03	17 39	6 46	17 17	6 38	17 32	5 53	16 49	6 19	17 06	16

तारीख	अमृतसर		लुधियाना		अम्बाला		रोहतक		लखनऊ		जयपुर		बीकानेर		हरिद्वार		भोपाल		कोलकाता		वाराणसी		तारीख
	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	सूर्योदय	सूर्यास्त	
नवं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	नवं.
17	7 04	17 26	6 58	17 24	6 53	17 21	6 52	17 24	6 31	17 11	6 52	17 31	7 03	17 39	6 47	17 16	6 38	17 32	5 54	16 48	6 20	17 05	17
18	05	26	6 59	23	54	21	53	24	32	11	52	31	05	39	48	16	39	31	55	48	21	05	18
19	06	26	7 00	23	55	21	54	23	32	10	53	31	05	39	49	16	40	31	55	48	21	05	19
20	07	25	01	22	56	21	55	23	33	10	54	30	06	38	50	15	41	31	56	48	22	04	20
21	07	25	01	22	57	20	55	23	34	10	55	30	06	38	51	15	41	31	57	48	23	04	21
22	08	24	02	22	57	20	56	22	35	10	55	30	07	38	51	15	42	30	57	47	23	04	22
23	09	24	04	22	58	20	57	22	35	09	56	30	08	38	52	14	42	30	58	47	24	04	23
24	10	24	05	21	6 59	20	58	22	36	09	57	29	09	37	53	14	43	30	59	47	25	04	24
25	11	23	06	21	7 00	19	6 59	22	37	09	58	29	09	37	54	14	43	30	5 59	47	26	03	25
26	12	23	06	21	01	19	7 00	22	38	09	58	29	10	37	55	14	44	30	6 00	47	26	03	26
27	13	23	07	21	02	19	01	22	38	09	6 59	29	11	37	55	13	45	30	01	47	27	03	27
28	14	23	08	20	03	19	02	22	39	09	7 00	29	12	37	56	13	46	30	01	47	28	03	28
29	14	23	08	20	03	19	02	21	40	09	01	29	13	37	57	13	46	30	02	47	29	03	29
30	7 15	17 23	7 09	17 20	7 04	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 58	17 13	6 47	17 30	6 02	16 47	6 29	17 03	30
दिसं.	7 16	17 22	7 10	17 20	7 05	17 19	7 03	17 21	6 41	17 09	7 02	17 29	7 14	17 37	6 59	17 13	6 48	17 30	6 03	16 47	6 30	17 03	दिसं.
2	17	22	11	20	06	19	04	21	42	09	03	29	15	36	6 59	13	49	30	04	47	31	03	2
3	18	22	11	20	06	19	04	21	43	09	04	29	16	36	7 00	13	49	31	05	47	31	03	3
4	19	22	12	20	07	19	05	21	44	09	05	29	17	36	01	13	50	31	05	47	32	03	4
5	19	22	13	20	08	19	06	21	44	09	06	29	17	36	02	13	51	31	06	48	33	03	5
6	20	22	14	20	09	19	07	21	45	49	07	29	18	37	03	13	52	31	07	48	34	04	6
7	21	22	14	20	09	19	07	21	46	09	07	29	19	37	03	13	52	31	07	48	35	04	7
8	22	23	15	20	10	19	08	22	46	09	08	30	20	37	04	13	53	32	08	48	35	04	8
9	22	23	16	20	11	19	09	22	47	09	09	30	20	37	05	13	53	32	09	48	36	04	9
10	23	23	17	20	12	19	10	22	48	10	09	30	21	37	06	14	54	32	09	49	37	05	10
11	24	23	18	20	12	19	10	22	49	10	09	30	22	37	06	14	54	33	10	49	37	05	11
12	25	23	19	21	13	20	11	23	49	10	10	30	23	38	07	14	55	33	11	49	38	05	12
13	25	24	19	21	14	20	12	23	50	10	11	31	23	38	08	14	56	33	11	50	38	05	13
14	26	24	20	21	14	20	13	23	50	11	11	31	24	39	08	15	57	33	12	50	39	06	14
15	27	24	21	22	15	21	13	24	51	11	12	31	24	39	09	15	57	34	12	50	40	06	15
16	27	25	22	22	16	21	14	24	52	12	13	32	25	39	10	15	58	34	13	51	41	06	16
17	28	25	22	22	16	21	14	24	52	12	13	32	25	39	10	16	58	34	14	51	41	07	17
18	28	25	23	23	17	22	15	25	53	12	14	32	26	40	11	16	59	35	14	51	41	07	18
19	29	26	23	23	17	22	15	25	53	13	14	33	26	40	11	17	6 59	35	15	52	42	08	19
20	30	26	24	23	18	23	16	26	54	13	14	33	27	41	12	17	7 00	36	15	52	42	08	20
21	30	27	24	24	18	23	16	26	55	14	15	34	27	41	12	17	01	36	15	53	43	09	21
22	13	27	25	25	19	14	17	27	55	14	16	34	28	42	13	18	01	37	16	53	44	09	22
23	31	28	25	25	19	24	17	27	55	15	16	35	28	42	13	18	02	37	17	54	44	10	23
24	32	28	25	26	20	25	18	28	56	15	17	35	29	43	14	19	02	38	17	54	45	10	24
25	32	29	25	26	20	26	18	28	56	16	17	36	29	43	14	20	03	38	18	55	45	11	25
26	32	29	26	27	21	26	19	29	57	16	18	37	30	44	15	20	03	39	18	55	45	11	26
27	33	30	26	27	21	27	19	29	57	17	18	37	30	44	15	21	03	39	19	56	45	21	27
28	33	31	27	28	21	27	20	30	58	17	18	38	30	45	15	21	04	40	19	57	46	12	28
29	33	31	27	28	22	28	20	30	58	18	19	38	30	45	16	22	04	40	19	57	46	13	29
30	34	32	28	29	22	28	21	31	58	19	19	39	31	47	16	23	04	41	20	58	47	14	30
31	7 34	17 33	7 28	17 30	7 22	17 28	7 21	17 31	6 59	17 19	7 20	17 40	7 31	17 47	7 16	17 23	7 05	17 41	6 20	16 58	6 47	17 14	31

चन्द्रमा-स्पष्ट द्वारा विंशोतरी दशा का भोग्य काल जानना

नीचे चन्द्रमा के अंश-कला की तालिका के सामने चन्द्र संचार की मेषादि बारह राशियों की तालिका तथा उनके द्वारा केतु, सूर्य, भौमादि ग्रहों द्वारा भोग्य दशा वर्षों की सारिणी लिख रहे हैं। **ध्यान रहे,** आपके द्वारा किया गया चन्द्र स्पष्ट नितान्त शुद्ध होना चाहिए। चन्द्र स्पष्ट निकालने की सरल विधि हमारे कार्यालय से प्रकाशित ज्योतिष तत्त्व का अवलोकन करे॥

उदाहरण–यदि आपका चन्द्र स्पष्ट ५।१°।५२′ है तो इसका तात्पर्य हुआ कि **चन्द्रमा कन्या राशि** के १° अंश ५२′ कला पर संचार कर रहा है। अब **सारिणी नं. I (क)** में चन्द्र-स्पष्ट के नीचे व १° अंश ५० कला के सामने और **चन्द्र राशि कन्या** के नीचे तालिका में देखने पर **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ८ मास और ३ दिन** प्राप्त हुई। अब शेष २ कलाओं हेतु आगामी पृष्ठों पर **सारिणी नं. II (ख)** में सूर्य की २ कलाओं का भोग्यकाल देखने से ५ दिन प्राप्त हुए क्योंकि जैसे-जैसे चन्द्रमा के अंश बढ़ते हैं, दशा का भोग्यकाल कम होता जाता है। अत: ५ दिन घटा देने से हमें **सूर्य की भोग्य दशा ३ वर्ष, ७ मास, २८ दिन** प्राप्त हुई। शुद्ध चन्द्र स्पष्ट की गणित प्रक्रिया जानने के लिए **पं. पन्ना लाल ज्योतिषी** कृत **'ज्योतिष तत्त्व'** पुस्तक पढ़ें।

सारिणी नं० I (क)

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
००	००	केतु	७	०	०	सूर्य	४	६	०	मंग	३	६	०	गुरु	४	०	०
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२८		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२५		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	०	२२		३	०	०
१	००		६	५	२१		४	०	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	४	२०		३	११	२१		२	१०	१९		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१६		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	०		२	७	१५		२	०	०
१	५०		६	०	१४	*	३	८	३		२	६	१३		१	९	१८
२	००		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	१०		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	७		१	०	०
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		०	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	०	४		०	७	६
३	००		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		०	४	२४
३	१०		५	४	२		३	०	२७		१	१०	१		०	२	१२
३	२०		५	३	००		३	०	०		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२८		१८	९	४
३	४०		५	०	२७		२	१०	६		१	६	२७		१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२५		१८	३	१३
४	००	केतु	४	१०	२४	सूर्य	२	८	१२	मंग	१	४	२४	शनि	१८	०	१८

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
४	१०	केतु	४	९	२३	सूर्य	२	७	१५	मंग	१	३	२२	शनि	१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	१९		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	०	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		०	११	१६		१६	१०	१०
५	००		४	४	१५		२	३	०		०	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		०	९	१३		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		०	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	०	९		०	७	१०		१५	१०	२८
५	४०		४	०	९		१	११	१२		०	६	०९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	१५		०	५	७		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		०	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		०	३	४		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		०	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		०	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	०		१	६	०	राहु	१८	०	०		१४	३	०
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	०	४
७	००		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	०	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	०	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		०	११	२१		१६	५	३		१२	७	१
८	००		२	९	१८		०	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०	केतु	२	८	१७	सूर्य	०	९	२७	राहु	१५	११	२१	शनि	१२	१	१०

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि				चन्द्र राशि				चन्द्र राशि				चन्द्र राशि			
		मेष-सिंह-धनु				वृष-कन्या-मकर				मिथुन-तुला-कुम्भ				कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
८	२०	केतु	२	७	१५	सूर्य	०	९	०	राहु	१५	९	०	शनि	११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		०	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		०	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		०	६	९		१५	०	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		०	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		०	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७
९	२०		२	१	६		०	३	१८		१४	४	२४		१०	५	१२
९	३०		२	०	५		०	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		०	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		०	०	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	०	चंद्र	१०	०	०		१३	६	०		९	६	०
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	०		१३	०	१८		९	०	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	०		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	००		१	२	२१		९	३	०		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	०	१८		९	०	०		११	८	१२		७	७	६
११	३०		०	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		०	१०	१५		८	९	०		११	३	०		७	१	१५
११	५०		०	९	१४		८	७	१५		११	०	९		६	१०	१९
१२	००		०	८	१२		८	६	०		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		०	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		०	६	९		८	३	०		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		०	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		०	४	६		८	०	०		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		०	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		०	२	३		७	९	०		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		०	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	०	०		७	६	०		९	०	०		४	९	०
१३	३०		१९	९	०		७	४	१५		८	९	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	०		७	३	०		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	०		७	१	१५		८	३	२७		४	०	१३
१४	००		१९	०	०		७	०	०		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	०		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	०		६	९	०		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०	शुक्र	१८	३	०	चंद्र	६	७	१५	राहु	७	५	३	शनि	३	१	१

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि				चन्द्र राशि				चन्द्र राशि				चन्द्र राशि			
		मेष-सिंह-धनु				वृष-कन्या-मकर				मिथुन-तुला-कुम्भ				कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
१४	४०	शुक्र	१८	०	०	चंद्र	६	६	०	राहु	७	२	१२	शनि	२	१०	६
१४	५०		१७	९	०		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	०		६	३	०		६	९	०		२	४	१५
१५	१०		१७	३	०		६	१	१५		६	६	९		२	१	१९
१५	२०		१७	०	०		६	०	०		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	०		५	१०	१५		६	०	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	०		५	९	०		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	०		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	०	०		५	६	०		५	४	२४		०	११	१२
१६	१०		१५	९	०		५	४	१५		५	२	३		०	८	१६
१६	२०		१५	६	०		५	३	०		४	११	१२		०	५	२१
१६	३०		१५	३	०		५	१	१५		४	८	२१		०	२	२६
१६	४०		१५	०	०		५	०	०		४	६	०	बुध	१७	०	०
१६	५०		१४	९	०		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	०		४	९	०		४	०	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	०		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	०	०		४	६	०		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	०		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	०		४	३	०		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	०		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	०	०		४	०	०		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	०		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	०		३	९	०		२	३	०		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	०		३	७	१५		२	०	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	०	०		३	६	०		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	०		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	०		३	३	०		१	४	६		१४	०	९
१९	१०		११	३	००		३	१	१५		१	१	१५		१३	९	२२
१९	२०		११	०	०		३	०	०		०	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	०		२	१०	१५		०	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	०		२	९	०		०	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	०		२	७	१५		०	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	०	०		२	६	०	गुरु	१६	०	०		१२	९	०
२०	१०		९	९	०		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	०		२	३	०		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	०		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	०	०		२	०	०		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०	शुक्र	८	९	०	चंद्र	१	१०	१५	गुरु	१५	०	०	बुध	११	८	७

चंद्र स्पष्ट		चन्द्र राशि मेष-सिंह-धनु				चन्द्र राशि वृष-कन्या-मकर				चन्द्र राशि मिथुन-तुला-कुम्भ				चन्द्र राशि कर्क-वृश्चिक-मीन			
अंश	कला	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन	भोग्य	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	०	चंद्र	१	९	०	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	०		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	०	०		१	६	०		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	०		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	०		१	३	०		१४	०	०		१०	७	१५
२१	५०		७	३	०		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	०	०		१	०	०		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	०		०	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	०		०	९	०		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	०		०	७	१५		१३	०	०		९	६	२२
२२	४०		६	०	०		०	६	०		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	०		०	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	०		०	३	०		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	०		०	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	०	०	मंग	७	०	०		१२	०	०		८	६	०
२३	३०		४	९	०		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	०		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	०		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	०	०		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	०		६	६	२३		११	०	०		७	५	०७
२४	२०		३	६	०		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	०		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	०	०		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	०		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	०		६	१	१५		१०	०	०		६	४	१५
२५	१०		२	३	०		६	०	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	०	०		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	०		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	०		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	०		५	८	८		९	०	०		५	३	२२
२६	०		१	०	०		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		०	९	०		५	६	५		८	७	६		४	१०	१९
२६	२०		०	६	०		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		०	३	०		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	०	०		५	३	०		८	०	०		४	३	०
२६	५०		५	११	३		५	१	२९		७	९	१८		४	०	१३
२७	००		५	१०	६		५	०	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०	सूर्य	५	९	९	मंग	४	११	२६	गुरु	७	४	२४	बुध	३	७	१०
२७	२०	सूर्य	५	८	१२	मंग	४	१०	२४	गुरु	७	२	१२	बुध	३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	०	०		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	०		४	४	१५		६	०	०		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	०	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	०	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	०	०		१	०	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		०	१०	०६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		०	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		०	५	०३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		०	२	१७
३०	०		४	६	०		३	६	०		४	०	०		०	०	०

सारिणी नं० II (ख)

अनुपातिक चन्द्र कलाओं के अनुसार शेष भोग्य दशा

कला	केतु		शुक्र		सूर्य		चन्द्र		मंगल		राहु		गुरु		शनि		बुध		कला
	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	मा.	दि.	
१	०	०३	०	०९	०	०३	०	०५	०	०३	०	०८	०	०७	०	०९	०	०८	१
२	०	०६	०	१८	०	०५	०	०९	०	०६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५	२
३	०	०९	०	२७	०	०८	०	१४	०	०९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३	३
४	०	१३	१	०६	०	११	०	१८	०	१३	१	०२	०	२९	१	०४	१	०१	४
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	०६	१	१३	१	०८	५
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६	६
७	०	२२	२	०३	०	१९	१	०२	०	२२	१	२७	१	२०	२	००	१	२४	७
८	०	२५	२	१२	०	२२	१	०६	०	२५	२	०५	१	२८	२	०८	२	०१	८
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	०५	२	१७	२	०९	९
१०	१	०१	३	००	०	२७	१	१५	१	०१	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७	१०

ग्रहों की दशाऽन्तर्दशा का ज्ञान

नीचे लिखे चक्रों में अपने जन्म नक्षत्र को देखें। जिस ग्रह के नीचे जन्म नक्षत्र होगा उसी ग्रह की दशा जन्म समय में होगी और प्रत्येक ग्रह की दशा के वर्ष भी चक्र में लिखे हुए हैं।

दशा का भुक्त भोग्य ज्ञान–जन्म समय जो नक्षत्र हो उसका भयात (जन्म समय तक जितना नक्षत्र व्यतीत हो गया हो) और भभोग (कुल नक्षत्र) बनाओ फिर उसके पलादि बनाकर भयात के पलों को जन्म दशा के वर्षों से गुणा दो और भभोग के पलों से भाग दो, लब्ध व्यतीत दशा के वर्ष आवेंगे। शेष को 12 से गुणा कर भभोग से भाग दो लब्ध मास निकलेंगे, शेष को 30 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध दिन आवेंगे, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध घड़ी आवेंगी, शेष को 60 से गुणा कर भभोग से भाग दो, लब्ध पल इत्यादि आवेंगे। यह भुक्त दशा के वर्ष मासादि आवेंगे, जन्म समय की दशा के कुल वर्षों में से घटा दो, लब्ध भोग्य दशा आवेगी, इसमें आगामी ग्रहों की दशा के वर्षों को जोड़ते जाने से दशा चक्र हो जाएगा। अधिक सूक्ष्म रूप से दशाऽन्तरदशा का ज्ञान करने के लिए हमारे कार्यालय से दैवज्ञ पं. पन्ना लाल ज्योतिषी कृत **'ज्योतिष तत्त्व'** पुस्तक मंगवाकर पढ़ें। मूल्य 125/- रु.

सूर्यदशावर्ष ६				चन्द्रदशावर्ष १०				भौमदशावर्ष ७			
कृति उ.फा. उ.षा.				रोहि. हस्त श्रवण				मृग. चित्रा. धनि.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
सू.	०	३	१८	चं.	०	१०	०	मं.	०	४	२७
चं.	०	६	०	मं.	०	७	०	रा.	१	०	१८
मं.	०	४	६	रा.	१	६	०	बृ.	०	११	६
रा.	०	१०	२४	बृ.	१	४	०	श.	१	१	९
गु.	०	९	१८	श.	१	७	०	बु.	०	११	२७
श.	०	११	१२	बु.	१	५	०	के.	०	४	२७
बु.	०	१०	६	के.	०	७	०	शु.	१	२	०
के.	०	४	६	शु.	१	८	०	सू.	०	४	६
शु.	१	०	०	सू.	०	६	०	चं.	०	७	०

राहुदशावर्ष १८				गुरुदशावर्ष १६				शनिदशावर्ष १९			
आर्द्रा. स्वा. शत.				पुन. विशा. पू.भा.				पुष्य. अनु. उ. भा.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
रा.	२	८	१२	गु.	२	१	१८	श.	३	०	३
बृ.	२	४	२४	श.	२	६	१२	बु.	२	८	९
श.	२	१०	६	बु.	२	३	६	के.	१	१	९
बु.	२	६	१८	के.	०	११	६	शु.	३	२	०
के.	१	०	१८	शु.	२	८	०	सू.	०	११	१२
शु.	३	०	०	सू.	०	९	१८	चं.	१	७	०
सू.	०	१०	२४	चं.	१	४	०	मं.	१	१	९
चं.	१	६	०	मं.	०	११	६	रा.	२	१०	६
मं.	१	०	१८	रा.	२	४	२४	बृ.	२	६	१२

बुधदशावर्ष १७				केतुदशावर्ष ७				शुक्रदशावर्ष २०			
श्ले. ज्ये. रेवती				मघा. मूल. अश्वि				पू. फा. पू. षा. भर.			
ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.	ग्रह	वर्ष	मा.	दि.
बु.	२	४	२७	के.	०	४	२७	शु.	३	४	०
के.	०	११	२७	शु.	१	२	०	सू.	१	०	०
शु.	२	१०	०	सू.	०	४	६	चं.	१	८	०
सू.	०	१०	६	चं.	०	७	०	मं.	१	२	०
चं.	१	५	०	मं.	०	४	२७	रा.	३	०	०
मं.	०	११	२७	रा.	१	०	१८	बृ.	२	८	०
रा.	२	६	१८	बृ.	०	११	६	श.	३	२	०
बृ.	२	३	६	श.	१	१	९	बु.	२	१०	०
श.	२	८	९	बु.	०	११	२७	के.	१	२	०

योगिनीदशाऽन्तर्दशाज्ञान के लिए चक्र

मंगला १			पिंगला २			धान्या ३			भ्रामरी ४			भद्रिका ५			उल्का ६			सिद्धा ७			संकटा ८		
मा.	१२	चं.	मा.	२४	सू.	मा.	३६	बृ.	मा.	४८	मं.	मा.	६०	बु.	मा.	७२	श.	मा.	८४	शु.	मा.	९६	के.
मं.	०	१०	पिं.	१	१०	धा.	३	०	भ्रा.	५	१०	भ.	८	१०	उ.	१२	०	सि.	१६	१०	सं.	२१	१०
पिं.	०	२०	धा.	२	०	भ्रा.	४	०	भ.	६	२०	उ.	१०	०	सि.	१४	०	सं.	१८	२०	मं.	२	२०
धा.	१	०	भ्रा.	२	२०	भ.	५	०	उ.	८	०	सि.	११	२०	सं.	१६	०	मं.	२	१०	पिं.	५	१०
भ्रा.	१	१०	भ.	३	१०	उ.	६	०	सि.	९	१०	सं.	१३	१०	मं.	२	०	पिं.	४	२०	धा.	८	०
भ.	१	२०	उ.	४	०	सि.	७	०	सं.	१०	२०	मं.	१	२०	पि.	४	०	धा.	७	०	भ्रा.	१०	२०
उ.	२	०	सि.	४	२०	सं.	८	०	मं.	१	१०	पि.	३	१०	धा.	६	०	भ्रा.	९	१०	भ.	१३	१०
सि.	२	१०	सं.	५	१०	मं.	१	०	पि.	२	२०	धा.	५	०	भ्रा.	८	०	भ.	११	२०	उ.	१६	०
सं.	२	२०	मं.	०	२०	पिं.	२	०	धा.	४	०	भ्रा.	६	२०	भ.	१०	०	उ.	१४	०	सि.	१८	२०
श्रवण, आर्द्रा चित्रा			पुन. स्वा. धनि.			पुष्य, विशा शत.			श्ले. अनु. पू.भा. अश्वि			मघा. ज्ये. उ.भा. भर.			पू.फा. मूल रेव, कृति			उ.फा. पू.षा. रोह			हस्त उ.षा. मृग		

योगिनी दशा विचार–योगिनी दशा कुल ३६ वर्ष की होती है। प्रत्येक ३६ वर्षों के पश्चात् पुनः उसी दशा की पुनरावृत्ति होती है। योगनी दशाओं में क्रमशः मंगला, पिंगला, धान्या, भ्रामरी, भद्रिका, उल्का, सिद्धा और संकटा–ये आठ नाम हैं। इनकी वर्ष संख्या भी क्रमानुसार 1+2+3+4+5+6+7+8=36 वर्ष होते हैं। मंगला, पिंगला आदि योगिनी दशाएँ अपने नामानुसार ही शुभाशुभ फल प्रदान करती हैं।

योगिनी दशा की विधि–अश्विनी नक्षत्र से आरम्भ करके अपने जन्म नक्षत्र तक की संख्या में ३ जोड़कर ८ द्वारा भाग देने पर शेष १ बचे तो मंगला, २ बचें तो पिंगला, ३ बचे तो धान्या एवं च शेष ८ या ० बचे तो संकटा की दशा होगी। उदाहरणार्थ–यदि जन्म नक्षत्र अनुराधा हो, तो अश्विनी से अनुराधा तक गिनने पर १७ की संख्या हुई। इनमें ३ जमा करने पर कुल योग २० मिला। इसको ८ द्वारा भाग देने पर २ लब्धि तथा शेष ४ बचे। पूर्वोक्त क्रमानुसार मंगला से गिनने पर चौथी दशा–अर्थात् भ्रामरी की दशा (जन्मकाल से) प्रारम्भ होगी। योगिनी की भुक्त–भोग्य दशा अन्तरदशा जानने के लिए ज्योतिष तत्त्व पढ़ें।

अन्तर्दशामासादि शुभ दशा–मंगला, धा. भ. सि., **नेष्टदशा**–पिंगला, भ्रामरी, उल्का, संकटा।

अन्तर्दशा निकालने की विधि–जब किसी ग्रह की अन्तरदशा निकालनी हो तो उस ग्रह के वर्षों को पृथक २ हर एक ग्रह की दशा के वर्षों से गुणा कर महादशा के वर्षों से भाग दें (विंशोत्तरी १२०) (अष्टोत्तरी १०८) (योगिनी ३६) भाग देने से जो अंक आवे अन्तरदशा के वर्ष, मासादि आवेंगे।

ग्रहों की अन्तरदशा से प्रत्यन्तर दशा ज्ञात करना

भारतीय ज्योतिष में फलित कथन के लिए विभिन्न प्रकार की दशाओं का वर्णन मिलता है। परन्तु वर्तमान काल में केवल तीन प्रकार की दशाओं का प्रचलन मिलता है। **विंशोत्तरी दशा, योगिनी दशा** और **अष्टोतरी** दशा। अष्टोत्तरी दशा की अवधि 108 वर्ष की होती है। योगिनी दशा की एक आवृत्ति 36 वर्ष की ओर विंशोत्तरी दशा का कुल मान **120 वर्षों** का होता है। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत, महाराष्ट्र आदि में, **योगिनी दशाओं** का प्रचलन उत्तर भारत–विशेष रूप से हिमाचल प्रदेश में अधिक पाया जाता है, जबकि **विंशोतरी दशा** पद्धति का प्रचलन समस्त भारत वर्ष में पाया जाता है। प्रस्तुत चक्रों में विंशोत्तरी में प्रत्येक ग्रह की अन्तर–दशा में प्रत्यन्तर दशाएँ निकालने की प्रक्रिया बतलाई गई है। किसी ग्रह की प्रत्यन्तर दशा निकल आने से फलादेश में और अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। दशाऽन्तरदशाओं के फलादेश का वर्णन आप हमारी पुस्तक **ज्योतिष तत्त्व फलित खण्ड भाग (दो)** में पढ़ सकते हैं। विंशोतरी दशा पद्धति के अन्तर्गत ग्रहों की महादशा एवं अन्तर्दशाओं के चक्र गत पृष्ठों में लिख चुके हैं। यहाँ पर पुनरावलोकन कर सकते हैं–

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मंग.	राहु	गुरू	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	6	10	7	18	16	19	17	7	20

सूर्यान्तर दशा चक्र–6 वर्ष

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	0	0	0	0	0	0	0	0	1
मास	3	6	4	10	9	11	10	4	0
दिन	18	0	6	24	18	12	6	6	0

सूर्य मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	5	9	6	16	14	17	15	6	18
घंटे	9	0	7	4	9	2	7	7	00
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	00

सूर्य मध्ये चन्द्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	0	0	0	0	0	1	0
दिन	15	10	27	24	28	25	10	0	9
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

सूर्य मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	18	16	19	17	7	21	6	10
घंटे	8	21	19	22	20	8	0	7	12
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

सूर्य मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	1	0	0	0
दिन	18	13	21	15	18	24	16	27	18
घंटे	14	4	7	21	21	0	4	0	21
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

सूर्य मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	8	15	10	16	18	14	24	16	13
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

सूर्य मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	1	1	0	1	0	0	0	1	1
दिन	24	18	19	27	17	28	19	21	15
घंटे	3	10	22	0	2	12	22	7	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

सूर्य मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	13	17	21	15	25	17	15	10	18
घंटे	8	20	0	7	12	20	21	19	10
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

सूर्य मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	7	21	6	10	7	18	16	19	17
घंटे	8	0	7	12	8	21	19	22	20
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

सूर्य मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	1	1	1	1	0
दिन	0	18	0	21	24	18	27	21	21
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र की अन्तर्दशाएँ (10 वर्ष)

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चंद्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	1	1	1	0	1	0
दिन	25	17	15	10	17	12	17	20	15
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	0	1	0	0	1	0	0
दिन	12	1	28	3	29	12	5	10	17
घंटे	6	12	0	6	18	6	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	2	2	2	2	1	3	0	1	1
दिन	21	12	25	16	1	0	27	15	1
घंटे	0	0	12	12	12	0	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	2	2	2	0	2	0	1	0	2
दिन	4	16	8	28	20	24	10	28	12
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	3	2	1	3	0	1	1	2	2
दिन	0	20	3	5	28	17	3	25	16
घंटे	6	18	6	0	12	12	6	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	2	0	2	0	1	0	2	2	2
दिन	12	29	25	25	12	29	16	8	20
घंटे	6	18	0	12	12	18	12	0	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	0	1	0
दिन	12	5	10	17	12	1	28	3	29
घंटे	6	0	12	12	6	12	0	6	18
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	3	1	1	1	3	2	3	2	1
दिन	10	0	20	5	0	20	5	25	5
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

चंद्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	1
दिन	9	15	10	27	24	28	25	10	0
घंटे	0	0	12	0	0	12	12	12	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

मंगल मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	36	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

मंगल मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

मंगल मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

मंगल मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	26	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	00	48	0	36	24	48

मंगल मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	1	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	00	48	12	24	36

मंगल मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	00	24	0	48	12	24	36	48

मंगल मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

मंगल मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	19	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

मंगल मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु की अन्तर्दशाएँ (१८ वर्ष)

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	25	9	3	17	26	12	18	21	26
घंटे	19	14	21	16	16	0	14	0	16
मिन्ट	12	24	36	48	48	0	24	0	48

राहु मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	4	1	4	1	2	1	4
दिन	25	16	2	20	24	13	12	20	9
घंटे	4	19	9	9	0	4	0	9	14
मिन्ट	48	12	36	36	0	48	0	36	24

राहु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	5	4
दिन	12	25	29	21	21	25	29	3	16
घंटे	10	8	20	0	7	12	20	21	19
मिन्ट	48	24	24	0	12	0	24	36	12

राहु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	4
दिन	10	23	3	15	16	23	17	2	25
घंटे	1	13	0	21	12	13	16	9	8
मिन्ट	12	12	0	36	0	12	48	36	24

राहु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	1	1
दिन	22	3	18	1	22	26	20	29	23
घंटे	1	0	21	12	1	16	9	20	13
मिन्ट	12	0	36	00	12	48	36	24	12

राहु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	4	5	5	2
दिन	0	24	0	3	12	24	21	3	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	16	27	18	18	13	21	15	18	24
घंटे	4	0	21	14	4	7	21	21	0
मिन्ट	48	0	36	24	48	12	36	36	0

राहु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	2	2	1	3	0
दिन	15	1	21	12	25	16	1	0	27
घंटे	0	12	0	0	12	12	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

राहु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	2	0	1
दिन	22	26	20	29	23	22	3	18	1
घंटे	1	16	9	20	13	1	0	21	12
मिन्ट	12	48	36	24	12	12	0	36	0

गुरू की अन्तर्दशाएँ (16 वर्ष)

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	2	2	2	0	2	0	1	0	2
मास	1	6	3	11	8	9	4	11	4
दिन	18	12	6	6	0	18	0	6	24

गुरू मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	3
दिन	12	1	18	14	8	8	4	14	25
घंटे	9	14	19	19	0	9	0	19	4
मिन्ट	36	24	12	12	0	36	0	12	48

गुरू मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	4	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	24	9	23	2	15	16	23	16	1
घंटे	9	4	4	0	14	0	4	19	14
मिन्ट	36	48	48	0	24	0	48	12	24

गुरू मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	3	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	25	17	16	10	8	17	2	18	9
घंटे	14	14	0	19	0	14	9	19	4
मिन्ट	24	24	0	12	0	24	36	12	48

गुरू मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	1	1
दिन	19	26	16	28	19	20	14	23	17
घंटे	14	0	19	0	14	9	19	4	14
मिन्ट	24	0	12	0	24	36	12	48	24

गुरू मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	4	4	5	4	1
दिन	10	18	20	26	24	8	2	16	26
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	14	24	16	13	8	15	10	16	18
घंटे	9	0	19	4	9	14	19	19	0
मिन्ट	36	0	12	48	36	24	12	12	0

गुरू मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	10	28	12	4	16	8	28	20	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

गुरू मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	16	20	14	23	17	19	26	16	28
घंटे	14	9	19	4	14	14	0	19	0
मिन्ट	24	36	12	48	24	24	0	12	0

गुरू मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	3	4	4	1	4	1	2	1
दिन	9	25	16	2	20	24	13	12	20
घंटे	14	4	19	9	9	0	4	0	9
मिन्ट	24	48	12	36	36	0	48	0	36

शनि की अन्तर्दशाएँ (19 वर्ष)

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	5	2	6	1	3	2	5	4
दिन	21	3	3	0	24	0	3	12	24
घंटे	11	10	4	12	3	6	4	10	9
मिन्ट	24	12	12	0	36	0	12	48	36

शनि मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	4	4	5
दिन	17	26	11	18	20	26	25	9	3
घंटे	6	12	12	10	18	12	8	4	10
मिन्ट	36	36	0	48	0	36	24	48	12

शनि मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	1	1	2	1
दिन	23	6	19	3	23	29	23	3	26
घंटे	6	12	22	6	6	20	4	4	12
मिन्ट	36	0	48	0	36	24	48	12	36

शनि मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	1	3	2	5	5	6	5	2
दिन	10	27	5	6	21	2	0	11	6
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	17	28	19	21	15	24	18	19	27
घंटे	2	12	22	7	14	3	10	22	0
मिन्ट	24	0	48	12	24	36	48	48	0

शनि मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	2	2	3	2	1	3	0
दिन	17	3	25	16	0	20	3	5	28
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शनि मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	2	1	0	2	0	1
दिन	23	29	23	3	26	23	6	19	3
घंटे	6	20	4	4	12	6	12	22	6
मिन्ट	36	24	48	12	36	36	0	48	0

शनि मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	4	1	5	1	2	1
दिन	3	16	12	25	29	21	21	25	29
घंटे	21	19	10	8	20	0	7	12	20
मिन्ट	36	12	48	24	24	0	12	0	24

शनि मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	4	4	1	5	1	2	1	4
दिन	1	24	9	23	2	15	16	23	16
घंटे	14	9	4	4	0	14	0	4	19
मिन्ट	24	36	48	48	0	24	0	48	12

बुध की अन्तर्दशाएँ (17 वर्ष)

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	4	1	2	1	4	3	4
दिन	2	20	24	13	12	20	10	25	17
घंटे	19	13	12	8	6	13	1	14	6
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

बुध मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	1	0	0	0	1	1	5	1
दिन	20	29	17	29	20	23	17	26	20
घंटे	19	12	20	18	19	13	14	12	13
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

बुध मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	5	1	2	1	5	4	5	4	1
दिन	20	21	25	29	3	16	11	24	29
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	1	1	1	1	0	1
दिन	15	25	17	15	10	18	13	17	21
घंटे	7	12	20	21	19	10	8	20	0
मिन्ट	12	0	24	36	12	48	24	24	0

बुध मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	0	2	2	2	2	0	2	0
दिन	12	29	16	8	20	12	29	25	25
घंटे	12	18	12	0	18	6	18	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

बुध मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	1	1	1	1	0	1	0	0
दिन	20	23	17	26	20	20	29	17	29
घंटे	19	13	14	12	13	19	12	20	18
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

बुध मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	4	4	4	4	1	5	1	2	1
दिन	17	2	25	10	23	3	15	16	23
घंटे	16	9	8	01	13	0	21	12	13
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

बुध मध्ये गुरू का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	3	4	3	1	4	1	2	1	4
दिन	18	9	25	17	16	10	8	17	2
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

बुध मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	5	4	1	5	1	2	1	4	4
दिन	3	17	26	11	18	20	26	25	9
घंटे	10	6	12	12	10	18	12	8	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	24	36	48

केतु की अन्तर्दशाएँ (7 वर्ष)

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
वर्ष	0	1	0	0	0	1	0	1	0
मास	4	2	4	7	4	0	11	1	11
दिन	27	0	6	0	27	18	6	9	27

केतु मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	24	7	12	8	22	19	23	20
घंटे	13	12	8	6	13	1	14	6	19
मिन्ट	48	0	24	0	48	12	24	36	48

केतु मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	2	0	1	0	2	1	2	1	0
दिन	10	21	5	24	3	26	6	29	24
घंटे	0	0	0	12	0	0	12	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	6	10	7	18	16	19	17	7	21
घंटे	7	12	8	21	48	22	20	8	0
मिन्ट	12	0	24	36	0	48	24	24	0

केतु मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	0	0	1	0	1	0	0	1	0
दिन	17	12	1	28	3	29	12	5	10
घंटे	12	6	12	0	6	18	6	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

केतु मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	0	0	0	0	0	0	0	0
दिन	8	22	19	23	20	8	24	7	12
घंटे	13	1	14	6	19	13	12	8	6
मिन्ट	48	12	24	36	48	48	0	24	0

केतु मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	1	1	1	1	0	2	0	1	0
दिन	26	20	29	23	22	3	18	1	22
घंटे	16	9	20	13	1	0	21	12	1
मिन्ट	48	36	24	12	12	0	36	0	12

केतु मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	1	1	1	0	1	0	0	0	1
दिन	14	23	17	19	26	16	28	19	20
घंटे	19	4	14	14	0	19	0	14	9
मिन्ट	12	48	24	24	0	12	0	24	36

केतु मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	2	1	0	2	0	1	0	1	1
दिन	3	6	23	6	19	3	23	29	23
घंटे	4	12	6	12	22	6	6	20	4
मिन्ट	12	36	36	0	48	0	36	24	48

केतु मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	1	0	1	0	0	0	1	1	1
दिन	20	20	29	17	29	20	23	17	26
घंटे	13	19	12	20	18	19	13	14	12
मिन्ट	48	48	0	24	0	48	12	24	36

शुक्र की अन्तर्दशाएँ (20 वर्ष)

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र मध्ये शुक्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.
मास	6	2	3	2	6	5	6	5	2
दिन	20	0	10	10	0	10	10	20	10
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये सूर्य का प्रत्यन्तर

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.
मास	0	1	0	1	1	1	1	0	2
दिन	18	0	21	24	18	27	21	21	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये चंद्र का प्रत्यन्तर

ग्रह	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	1	1	3	2	3	2	1	3	1
दिन	20	5	0	20	5	25	5	10	0
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये मंगल का प्रत्यन्तर

ग्रह	मं.	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	0	2	1	2	1	0	2	0	1
दिन	24	3	26	6	29	24	10	21	5
घंटे	12	0	0	12	12	12	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये राहु का प्रत्यन्तर

ग्रह	रा.	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	5	4	5	5	2	6	1	3	2
दिन	12	24	21	3	3	0	24	0	3
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये गुरु का प्रत्यन्तर

ग्रह	गु.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	4	5	4	1	5	1	2	1	4
दिन	8	2	16	26	10	18	20	26	24
घंटे	0	0	0	0	0	0	0	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये शनि का प्रत्यन्तर

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.
मास	6	5	2	6	1	3	2	5	5
दिन	0	11	6	10	27	5	6	21	2
घंटे	12	12	12	0	0	0	12	0	0
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये बुध का प्रत्यन्तर

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.
मास	4	1	5	1	2	1	5	4	5
दिन	24	29	20	21	25	29	3	16	11
घंटे	12	12	0	0	0	12	0	0	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

शुक्र मध्ये केतु का प्रत्यन्तर

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	गु.	श.	बु.
मास	0	2	0	1	0	2	1	2	1
दिन	24	10	21	5	24	3	26	6	29
घंटे	12	0	0	0	12	0	0	12	12
मिन्ट	0	0	0	0	0	0	0	0	0

स्वप्न-शकुन का शुभाशुभ फल विचार

दैनिक जीवन में मनुष्य की जो वासनाएँ अतृप्त अथवा अपूर्ण रहती हैं, वही स्वप्न रूप में येन-केन प्रकारेण पूर्ति का आभास कराती हैं। सूर्योदय के कुछ पूर्व अथवा ब्रह्म मुहूर्त्त में देखे गए स्वप्न का फल दस दिनों में, रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष के पश्चात्, रात्रि के दूसरे प्रहर में देखे गए का फल छ: मास में, तृतीय प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल तीन मास के बाद, रात्रि के अन्तिम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक मास में प्रकट होता है, जबकि दिन में देखे गए स्वप्न विश्वसनीय नहीं होते। शुभ सांकेतिक स्वप्न देखने के पश्चात् सोना नहीं चाहिए, शेष रात्रि भजन, चिंतन में बितानी चाहिए तथा किसी को अपना स्वप्न बताना भी नहीं चाहिए। इसके विपरीत अशुभ स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाएं तथा प्रात:काल यदि उस अशुभ स्वप्न की स्मृति ताजी रहे तो गुरुजनों को उसे बतला दें। अशुभ निवारण के लिए गायत्री पाठ, स्नानदानादि, अनुष्ठानादि कार्यों का सम्पादन करें। अधिक जानकारी हेतु हमारे कार्यालय से स्वप्न ज्योतिष विज्ञान सम्बन्धी पुस्तक मंगवाएँ।

स्वप्न	फल
अंगूठी पहनना	धन लाभ व प्रसन्नता
आम का वृक्ष देखना	सन्तान सुख
अतिथि देखना	आकस्मिक विपत्ति
आकाश से गिरना	मान हानि, चिन्ता
अर्थी देखना	रोग मुक्त
अग्नि देखना	पित्त सम्बन्धी रोग
अपने को मृत देखना	आयु वृद्धि
आग जलाकर पकड़ना	व्यर्थ व्यय हो
आत्महत्या करना	दीर्घायु
आपरेशन देखना	रोग के चिन्ह
अस्त्र-शस्त्र देखना	दु:खों से निपटारा हो
इन्द्रिय देखना	सन्तान सुख
इम्तहान में फेल होना	शुभ फल प्राप्ति
ईमारत बनाना	धन लाभ, तरक्की
ईंजन देखना	योजनाएं असफल
ईमली खाना	पुत्र प्राप्ति
इन्द्रधनुष देखना	जीवन में परिवर्तन
उल्लू देखना	रोग अथवा शोक हो
उल्टा लटके देखना	अपमान मिले
ऊँट देखना	अंग घात
ऊँचाई पर चढ़ना	तरक्की व मान
ऐनक देखना (काली)	निराशा
कैंची चलाना	व्यर्थ विवाद
कौआ बोलते देखना	बुरा समाचार मिले
कंघी करना	इच्छा पूर्ण हो
काला नाग	राज्य सम्मान
किला देखना	तरक्की पाना
कोढ़ी देखना	रोग सूचक
कन्या देखना	तीर्थ यात्रा
कोयला देखना	व्यर्थ का झगड़ा
कीचड़ में फंसना	कष्ट हो, व्यय हो
कटा सिर देखना	चिन्ता परेशानी

स्वप्न	फल
कुत्ता देखना	उत्तम मित्र प्राप्त हो
कढ़ाई करते देखना	प्रेम या व्यापार में सफलता
कबाब खाना	अपयश/विवाद
कब्रिस्तान देखना	प्रतिष्ठा वृद्धि
खून करना	संकट आना
खिलौना देखना	सुख शान्ति
खेत देखना	संकट पूर्ण
खरगोश देखना	स्त्री से मिलाप
गुरु देखना	कार्य सफलता
गोबर देखना	पशु लाभ हो
गंगा देखना	शेष जीवन सुखी
ग्रहण देखना	रोग व चिन्ता
गोली चलते देखना	विपत्ति निवारण
गुलाब देखना	मनोकामना पूर्ण हो
गरीबी देखना	सुख समृद्धि
गर्भपात	गम्भीर रोग
घोड़े से गिरना	परेशानी, चिन्ता
घाट पर नहाना	तीर्थ यात्रा
घायल देखना	संकट से मुक्त होना
घर बनाना	प्रसिद्धि प्राप्त हो
घड़ी देखना	यात्रा का संकेत
घोड़े पर बैठना	सफलता का सूचक
चोट लगना	स्वास्थ्य लाभ
चावल खाना	शुभ समाचार
चोर देखना	धन प्राप्ति
चांदी के जेवर	सम्बन्ध विच्छेद
चौकीदार देखना	धनागमन का संकेत
चीखें मारना	परेशानी व कष्ट
चुनरी देखना	सौभाग्य प्रतीक
छुरी मारना	परिवार से वाद विवाद
छिपकली देखना	[illegible]
छींकना	[illegible]

स्वप्न	फल
छाता देखना	चिन्ताओं से छुटकारा
छंटनी देखना	पदोन्नति
जख्म देखना	परेशानियां
जादूगर देखना	अशुभ लक्षण
जहाज देखना	परेशानी दूर हो
जिन्दा जलना	धन की प्राप्ति
जल देखना	मान सम्मान
ज्वर पीड़ित	स्वास्थ्य ठीक
जुआ खेलना	धन हानि
जेब काटना	धन हानि
जनाजा दखना	धन लाभ/तरक्की
झगड़ा देखना	प्रसन्नता मिले
झाड़ू देखना	नुकसान हो
झण्डा देखना	सुयश/धन लाभ
झांकी देखना	अशुभ
झोंपड़ी देखना	सुरक्षा सूचक
झरना देखना	दु:ख दूर हो
टाट देखना	सम्मानजनक स्थिति
टेलीफोन करना	शुभ समाचार
टापू देखना	संकट लक्षण
टोपी देखना	प्रगति हो
ठग मिलना	धन हानि
ठिठुरना	उज्ज्वल भविष्य
डॉक्टर देखना	रोग उत्पत्ति
डूबते देखना	कठिनाईयों का सामना
डोली देखना	कोई परेशानी हो
डाकिया देखना	समाचार प्राप्त हो
डाकू देखना	धन हानि
ढोलक बजाना	किसी व्यक्ति से भेंट
तलवार चलाना	शत्रु पर विजय
तपस्वी देखना	आत्म उन्नति
[illegible]	[illegible]

स्वप्न	फल
तर्पण करते देखना	मृत्यु की सूचना
तारे देखना	मनोरथ सिद्धि
तूफान देखना	परेशानी बढ़े
तीर्थ देखना	धार्मिक खींच
तोता देखना	धन लाभ
तलाक होते देखना	दाम्पत्य सुख में बाधा
तरक्की होते देखना	योजनाओं में सफलता
तराजू देखना	व्यापार लाभ
ताश खेलना	व्यापार लाभ
ताला बन्द देखना	कार्यों में रुकावट
तरबूज देखना	परेशानी
थूक देना	परेशानी बढ़े
थप्पड़ मारना	कलह क्लेश
थप्पड़ खाना	शुभ
दूध पीना	खुशी प्राप्ति
दरवाजा बन्द देखना	परेशानियां हो
दान करना	शुभ
दर्जी देखना	काम बिगड़ना
दांत गिरते देखना	दु:ख एवं झंझट
दलदल देखना	व्यर्थ चिन्ता बढ़े
दवाई पीना	रोग नाश
दुकान (भरी) देखना	धन लाभ
दुकान (खाली) देखना	धन हानि
देवी देवता देखना	खुशी प्राप्ति
दरिया में नहाना	रोग नाश
दीवार गिरना	धन हानि
दाह संस्कार देखना	दीर्घायु
धन देखना	धन की प्राप्ति
धूल देखना	यात्रा पड़े
धमकी देना	शत्रु पर विजय
धार्मिक कार्य करना	पारिवारिक सुख
[illegible]	सफलता हो

स्वप्न	फल
धुआं देखना	कार्य में विघ्न
धूप देखना	पदोन्नति, लाभ हो
नदी में गिरना	फिक्र, चिन्ता
नंगा देखना	कष्ट प्राप्ति
नदी का पानी पीना	राज्य से लाभ
न्यायालय देखना	झगड़े में सफलता
नदी देखना	आकांक्षा पूर्ति
नवयौवना देखना	प्रेम सम्बन्ध
नाखून काटना	रोग से मुक्ति
नाव में बैठना	झूठा आरोप लगे
नाग देखना	सुख प्राप्ति
नृत्य देखना	धन प्राप्ति
प्यासा होना	कार्य बाधा
पुल देखना	शुभ यात्रा हो
परछाई देखना	अशुभ होना
पशु देखना	व्यापार में लाभ
पहाड़ देखना	उन्नति का सूचक
पान खाना	प्रिय से मिलाप
परीक्षा देते देखना	असफलता
पहलवान देखना	स्वास्थ्य लाभ
पपीता देखना	धन लाभ
पुजारी देखना	उन्नति का संकेत
पूर्वज देखना	शुभ फल प्राप्ति
पखाना करना	कष्ट मिले
पानी बरसते देखना	शुभ कारक
पिंजरे में पक्षी देखना	सुख प्राप्ति
पगड़ी देखना	प्रतिष्ठा प्राप्ति
प्रणय सबन्ध देखना	दाम्पत्य सुख प्रतीक
प्रेत देखना	सौभाग्य वर्द्धक
फुलवाड़ी देखना	खुशी मिले
फव्वारा देखना	चिन्ता दूर हो
फेल होना	सफलता का सूचक

स्वप्न	फल
फकीर देखना	शुभ फलदायक
बहन देखना	सौभाग्य वृद्धि
बकरी देखना	शुभ यात्रा लाभ
बूढ़ी स्त्री देखना	दुःख प्राप्ति
बाग देखना	सुख मिले
बाढ़ देखना	धन की हानि
बिच्छू देखना	चिन्ताकारक
बारिश देखना	रोग व कलह
बन्दूक देखना	संकट आवे
बिल्ली देखना	लड़ाई के चिन्ह
बाजार देखना	दरिद्रता दूर हो
बर्फ देखना	प्रिया से मिलाप
बारात देखना	चिन्ता व परेशानी
भूकम्प देखना	सन्तान कष्ट
भाषण देना/सुनना	वाद विवाद
भूखा देखना (स्वयं को)	यात्रा लाभ
भिखारी देखना	यात्रा पड़े
मिठाई खाना	मान व तरक्की
मुर्दे के साथ खाना	दुःख दूर हो
मुर्दे से बात करना	मुराद पुरी हो
मछली देखना	धन व स्त्री प्राप्ति
मोर देखना	खुशी प्राप्ति
महल देखना	कष्ट से छुटकारा
माली देखना	खुशी मिले
मुर्दे हंसते देखना	फिक्र व चिन्ता
मृत्यु देखना	भाग्योदय
मुण्डन कराना	सुखी गृहस्थी
मन्दिर देखना	इच्छा पूर्ण हो
मंगनी देखना	विवाह में देरी
महात्मा देखना	धन प्राप्ति
यात्रा करना	यात्रा द्वारा धन लाभ
यज्ञ देखना	सौभाग्यसूचक
युद्ध देखना	सफलता के संकेत
यम देखना	आयु वृद्धि
रोटी खाना	इच्छा पूर्ण हो
रोते हुए देखना	प्रसन्नता का प्रतीक
रोगी देखना	दुःख निवृत्ति
रसोईघर देखना	धन धान्य का प्रतीक
रेल देखना	कष्टकारी यात्रा

स्वप्न	फल
राख देखना	सफलता की प्राप्ति
रेत पर चलना	शत्रु से हानि
रिश्वत लेना	अपमान हो
राक्षस देखना	कष्ट से छुटकारा
रखैल देखना	सन्तान कष्ट
लकड़ी उठाना/देखना	अकारण वाद-विवाद
लोहा देखना	स्वास्थ्य हानि
लाटरी का टिकट	सौभाग्य पद
लंगर देखना	धन सम्पदा वृद्धि
विष खाना	परेशानी बढ़े
वृक्ष काटना	धन हानि
विदाई देखना	धन वृद्धि
वध दिखाई देना	आकस्मिक विपत्ति
विवाह देखना	दुर्भाग्य सूचक
विधवा देखना	हानि
विदेश यात्रा देखना	परिवारिक विवाद
वर्षगांठ मनाना	आयु में कमी
वर्षा देखना	मान-सम्मान
विमान देखना	सौभाग्य सूचक
शेर देखना	शत्रु नाश
शीशा देखना	रोग नाश
शत्रु देखना	सफलता हो
शव देखना	शुभ फल
श्राद्ध करना	पितरों की प्रसन्नता
शिकार करना	पारिवारिक कष्ट
शिशु देखना	सुखी दाम्पत्य जीवन
शोक समूह देखना	आनन्द का प्रतीक
शमशान घाट	दीर्घायु
शराब पीना	वाद विवाद
साँप देखना/पकड़ना	शत्रु पर विजय
सागर देखना	धन वृद्धि
सुन्दरी देखना	धन लाभ
स्टेशन देखना	यात्रा शुभ होगी
सेहरा देखना	गृह क्लेश
सुन्दर वस्त्र देखना	बीमार होना
स्नान करते देखना	व्यवसाय में लाभ
हवालात देखना	मान सम्मान
हंसते हुए देखना	खुशी का प्रतीक
हड्डियाँ देखना	डूबे धन की प्राप्ति
हत्या देखना	परेशानी
हरी फुलवारी देखना	धन-जन वृद्धि
हाथी देखना	व्यवसाय वृद्धि

अंगों पर छिपकली गिरने का फल

अंग फल पल्ली (किरली) पतन पर आवश्यक कर्त्तव्य

शरीर पर छिपकली गिरते समय, उस समय जो भी वस्त्र पहने हों, उन्हें पहिने हुए ही स्नान करना चाहिए। तत्पश्चात् तिल, उड़द, घृत में छाया-पात्र का दान एवं यथाशक्ति धन का दान करके "महामृत्युञ्जय मन्त्र" का पाठ करना चाहिए।

अंग	फल
मस्तक (सिर)	राज्य लाभ
कपाल	ऐश्वर्य प्राप्ति
नाक	सौभाग्य वृद्धि
दाहिना कान	आयु वृद्धि
बायां कान	भूषण लाभ
दाई भुजा	मान-सम्मान
बाईं भुजा	धन-हानि, राज भय
कण्ठ	शत्रु नाश
पीठ के मध्य	क्लह-क्लेश
बाईं पीठ	रोग भय
दायीं पीठ	सुख लाभ
दायें कन्धे	विजय, सफलता
बायें कन्धे	दुश्मनों से भय
कमर	रोग भय
दाईं जाँघ	धन हानि
बाईं जाँघ	पुत्र से लाभ
दायें हाथ	धन लाभ

अंग	फल
बायें हाथ	धन हानि
नाभि	पुत्र प्राप्ति
हृदय	सुख-यश प्राप्ति
गुदा	रोग भय
गुप्तांग	मित्र से भेंट
दायें पाँव	यात्रा (भ्रमण)
बायें पाँव	रोग-क्लेश
पावों की उंगलियों	यात्रा
गर्दन	यश, लाभ

अंगस्फुरण फल

अंग	फल
सिर	पृथ्वी लाभ
माथा	स्थान लाभ
वामभुज	प्रिय प्राप्ति
नेत्र	प्रियदर्शन
भृकुटियां	लक्ष्मी दर्शन
कपाल	स्त्री सुख
नासा	गन्ध सुख
ऊपर का होंठ	स्त्री चुम्बन
कण्ठ	भूषण प्राप्ति
ग्रीवा	शत्रु भय
पीठ	पराजय
कन्धा	मित्र समागम
बाहुप्रदेश	प्रिय प्राप्ति

अंग	फल
बाहुमध्य	धनागमः
कर (हाथ)	धन प्राप्ति
छाती	विजय
पार्श्व	उत्तम प्रीति
नाभि	यात्रा से लाभ
उदर पेट	कोष प्राप्तिः
वृष्ण	पुत्र लाभ
जानु (घुटना)	रिपु (शत्रु) सन्धि
जंघा	हानिप्रद
चरण के ऊपर	स्थान प्राप्ति
चरण के नीचे	लाभप्रदः
दक्षिण कर्ण	दीर्घायु
कण्ठे	शत्रुनाश

शरीर में तिल और उनके शुभाशुभ फल

अंग	फल
माथे पर तिल	धनवान होवे
माथे के दाहिने ओर	मान प्रतिष्ठा में वृद्धि
दोनों भौंह के मध्य में	यात्रा कारक है
बायीं आंख पर	औरत से कलह
दाहिनी आँख पर	औरत से विशेष प्यार रहे
ठोडी पर तिल हो	औरत से प्यार कम हो
बायें गाल पर	धन का अपव्यय
दाहिने गाल पर	धन की बढ़ोतरी हो
ऊपर के होंठ पर	विषयवासना में रत रहे
नीचे के होंठ पर	धन की कमी रहे
कान पर तिल हो	आयु मध्यम रहे
गर्दन पर तिल हो	आराम प्राप्त हो
दाहिनी भुजा पर हो	मान-प्रतिष्ठा प्राप्त हो
नाक पर तिल हो	यात्रा कारक है
बायीं भुजा पर हो	झगड़ा होवे
बायीं छाती पर हो	औरत से झगड़ा हो
दाहिनी छाती पर हो	औरत से प्यार रहे
दोनों छातियों के मध्य	जीवन सुखमय रहे
हृदय पर हो	बुद्धिमान हो
पसली पर तिल हो	डरपोक स्वभाव हो
पीठ पर तिल हो	यात्रा में रहा करे
पेट पर तिल हो	श्रेष्ठ भोजन की इच्छा रहे
बगल में तिल हो	दूसरों को हानि पहुंचावे
कमर पर तिल हो	मन अशान्त रहे
बायें हाथ की पीठ पर	व्यय अधिक हो
दाहिनी हथेली पर	धनवान् हो
बायीं हथेली पर	व्यय कारक है
दाहिने पैर में तिल हो	यात्रा कारक है
बायें पैर पर	अपव्यय कारक
पाँव के तलुवे में	यात्रा अधिक

॥ अथ नक्षत्रकष्टावली ॥

नक्षत्र चरण	चरण १	चरण २	चरण ३	चरण ४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
अश्विनी १	रोग दिन संख्या ०९	११	१०	२०	अर्ध गात्र पीड़ा वातज्वर निद्राभंग	अश्विनी देवता	घृत कुंभ सुवर्ण ब्राह्मण भोजन	५ हजार	ॐ अश्विनौ तेजसाचक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्य्यम् वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यो नमः।	कुमकुम, श्वेत चंदन, चम्पक पुष्प तंदुल मोदक नैवैद्य गुड़, क्षीर, कमल पुष्प, धूप तिल दीपः
भरणी २	दि ००	दि ८०	दि ४०	दि ११	छर्दरोग तीव्रज्वर तंद्रा अनेक रोग	यम देवता	शर्करा घृत अजा गौ महिषी, छायापात्र	१० हजार	ॐ यमायत्वा मखायत्वा सूर्य्यस्यत्वा तपसे देवस्यत्वा सवितामध्वा नक्तु पृथिव्या स Ω स्पृशस्पाहिअर्चिरसि शोचिरसि तपोसि ॥२॥	अगर गन्ध करवीरपुष्प गुग्गुल धूप गुड़ोदन नैवैद्य धूप दीप क्षेत्रपाल पूजा
कृतिका ३	दि ००	दि ११	दि १६	दि २८	रक्तनेत्र उरु शूल नेत्र पीड़ा अतिदाह	अग्नि देवता	सुवर्ण गौदान ग्रह शांति	१० हजार	ॐ अयमग्नि सहस्त्रिणो वाजस्य शांति Ω वनस्पतिः मूर्द्धा कबोरयीणाम् ॥ ३ ॥ अग्नये नमः॥	चन्दन गंध पुष्प नैवेद्य गुग्गुलधूपघृत दीप तिलमाष गुड़ोदन पायस नैवेद्य, दशांग
रोहिणी ४	दि ०७	दि ०९	दि १८	दि ३०	शिर दर्द ज्वर पीड़ा कुक्षिशूल प्रलाप	प्रजापति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्ण गौदुग्धखड	५ हजार	ॐ ब्रह्मजज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सूरुचोवेन आवः सबुध्न्या उपमा अस्यविष्टाः सतश्चयोनिमसतश्चविधः ॥४॥ ॐ ब्रह्मणे नमः॥	चन्दन गन्ध पुष्प नैवेद्य अष्टगन्ध दूध मोदक धूप घृत क्षीर नैवेद्य, दीप, दशांग
मृगशिर ५	दि ०९	दि ०५	दि ०७	दि १०	अर्ध शरीर पीड़ा महाघोर कष्ट	सोम देवता	दधितडुलगोवत्सा दान ब्राह्मण भोजन	१० हजार	ॐ सोमोधनु Ω सोमाअवन्तुमाशु Ω सोमोवीरः कर्मणयन्ददाति यदत्यविदध्य Ω सभेयम्पितृ श्रवणयोम ॐ चन्द्रमसे नमः ॥५॥	चन्दन गंध सौरभ पुष्प गुग्गुल धूप पायस नैवेद्य मधु घृतदुग्धदध्योदन बलि, दशांग
आर्द्रा ६	दि ००	दि १८	दि ००	दि ००	ज्वर सर्वांगपीड़ा निद्रानाश त्रिदोष	रुद्र देवता	कृष्ण वृषभादि दान कृष्ण वस्त्रादि	१० हजार	ॐ नमस्ते रुद्र मन्यवऽउतोत इषवे नमः बाहुभ्यां मुतते नमः॥६॥ ॐ रुद्राय नमः॥	हरिद्रा कुमकुम गन्ध सवन्तिका पुष्प अष्ट गंधतिलपिष्ट धूप नैवेद्य घृत मिष्ठान्न दशांग
पुनर्वसु ७	दि ०७	दि १४	दि ०२	दि २१	अर्ध शरीर पीड़ा शिर पीड़ा ज्वर	अदिति देवता	सुवर्ण कमलदान ५ कन्याभोजनवस्त्र	१० हजार	ॐ अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदिति र्माताः स पिता स पुत्रः विश्वेदेवा अदितिः पंचजना अदितिजातम अदितिरर्जनित्वम् ॥७॥ ॐ आदित्याय नमः॥	कुंमकुम गंध वारिज पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य मोदक गुड़बलि पीत वर्णान्न
पुष्य ८	दि ०७	दि ०७	दि १०	दि २१	ज्वर पीड़ा शूल अतिकठिन रोग	बृहस्पति देवता	पीत वस्त्र सुवर्ण गौदान पक्कान्नदान	१० हजार	ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यदी दयच्छ वसऋतप्रजातदस्मासुद्रविणं धेहि चित्रम् ॥ ॐ गुरवे नमः ॥	कुमकुम अगर गंध अगस्त पुष्पघृतगुग्गुल धूपक्षीर नैवेद्यदध्योदन, शक्कर बलिदानम्
आश्लेषा ९	दि ००	दि ००	दि ११	दि ००	सर्व गात्र पीड़ा मृत्युतुल्य कष्ट	सर्प देवता	कुलमातृ योगिनी पूजा गोशय्यादान	१० हजार	ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्योये के च पृथिवीमनुः। ये अन्तरिक्षे यो दिवितेभ्यः सर्पेभ्यो नमः ॥९॥ ॐ सर्पेभ्यो नमः	चन्दन गन्धचम्पक पुष्प गुग्गुल घृतधूप क्षीर मिष्टान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि कुंकुम,
मघा १०	दि १५	दि ०७	दि १७	दि २०	अर्धगात्र पीड़ा शीत जन्यरोगभय शिर पीड़ा	पितर देवता	तिल तंडुलमाष वस्त्रदान	१० हजार	ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वाधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः। प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्न पितरोऽमीमदन्तः पितरोतितृपन्त पितरःशुन्धध्वम् ॥१०॥ ॐ पितरेभ्ये नमः॥	चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प गुग्गुल धूप घृत मिष्ठान्नहविनैवेद्य तिल घृत दुग्धबलि, दीप, नैवेद्य, दीपादि
पूर्वाफाल गुणी ११	दि ००	दि १५	दि ००	दि ३०	सर्वगात्रे पीड़ा ज्वर अर्धशिररोग	भग देवता	पित्तल पात्र यव माष गोस्वर्णदान	१० हजार	ॐ भगप्रणेतर्भगसत्यराधो भगे मां धियमुदवाददन्नः। भगप्रजननाय गोभिरश्वैर्भगप्रणेतृभिर्नुवन्तः स्यामः ॥११॥ ॐ भगाय नमः॥	चन्दन गंध चम्पक पुष्पगुग्गुलघृतधूप शर्करामोदक पूपोदन घृत पायसनैवेद्य बिल्व
उत्तरा फाल्गु. १२	दि ००	दि १४	दि ०७	दि ६०	शिर रोग महाज्वर कुक्षिशूलरोग	अर्यमा देवता	सुवर्णरजत अन्न गो वस्त्र दान	५ हजार	ॐ दैव्या वद्धर्व्यू च आगत Ω रथेन सूर्य्यत्वचा। मध्वायज्ञ Ω समञ्जायेतं प्रत्नया यं वेनश्चित्रं देवानाम् ॥१२॥ ॐ अर्यमणे नमः॥	कपूरकुंकुमगंध अर्कपुष्पघृत गुग्गुल धूप घृतपायसनैवेद्य घृतान्नहोम केशर गंध
हस्त १३	दि १५	दि १७	दि १५	दि ००	सर्वाङ्ग पीड़ा उदर शूल प्रस्वेद अफारा	सविता देवता	गोदानछाया पात्र रक्तवस्त्र सुवर्ण	५ हजार	ॐ विभ्राडवृहन्पिवतु सोम्यं मध्वार्य्युदधज्ञ पत्त व विहुतम् वातजूतोयो अभि रक्षतित्मना प्रजा पुपोषः पुरुधाविराजति ॥ ॐ सावित्रे नमः॥	कुकुमरक्तचन्दन गंध कमल पुष्पसुगन्ध गुग्गुलधूपः घृत पायसनैवेद्य दीप, केशर
चित्रा १४	दि ११	दि ०९	दि ०९	दि १६	विविधरोग भय महादारुण कष्ट	त्वष्टा देवता	विचित्रवृषभ गुड़ [illegible]	५ हजार	ॐ त्वष्टातुरीयो अद्भुत इन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदापदायाः छन्द इन्द्रियमुक्षा [illegible] ॥१४॥ [illegible] ॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥	कुंकुम दीप अगरगन्ध विचित्र पुष्पगुग्गुल धूपमोदक घृत विचित्रान्नहविनैवेद्य, केशर

नक्षत्र चरण	चरण १	२	३	४	कष्ट लक्षणानि	देवता	दानद्रव्याणि	जप संख्या	जपार्थ नक्षत्र मन्त्राणि	बलिदान
	रोग दिन संख्या									
स्वाती १५	६०	१७	३०	००	अनेक तरह के रोग ज्वर, कष्ट	वायु देवता	लाल गो सुवर्ण पक्कात्र दान	५ हजार	ॐ वायरन्नरदि बुधः सुमेध श्वेतः सिषीक्तिनो युतामभि श्री तं वायवे सुमनसा वितस्थुर्विश्वेनरः स्वपत्थ्या निचक्रुः ॥१५॥ ॐ वायवे नमः॥	चन्दनगंध कमल पुष्प अगर गुग्गुल धूप, दीप पायस शर्करा घृत नैवेद्य।
विशाखा १६	दि १५	दि ००	दि ०४	दि १३	कुक्षिशूल रोग सर्व गात्र पीड़ा	इन्द्राग्नी देवता	रक्त पीत वस्त्र कृष्णवृषभ दान	१० हजार	ॐ इन्द्राग्नी आगत Ω सुतं गार्भिर्नमो वरेण्यम्। अस्य पातं धियोषिता ॥१६॥ ॐ इन्द्राग्नीभ्याँ नमः॥	श्री खण्ड चन्दन गंध कमल पुष्प देवदारु धूपधृत पायस नैवेद्य, दीपक केशर।
अनुराधा १७	दि ६०	दि १२	दि ३६	दि ३०	तीव्र ज्वर महारोग शिर पीड़ा	मित्र देवता	अन्न सुवर्ण गो दान छायापात्र	१० हजार	ॐ नमो मित्रस्यवरुणस्य चक्षसे महो देवाय तदृत Ω सपर्यत दूरंदृशे देव जाताय केतवे दिवस्पुत्राय सूर्योयश Ω सत ॥१८॥ ॐ मित्राय नमः॥	कुंकुमगंध कमल पुष्प चन्दन धूपः पायस घृत पुष्प मोदक नैवेद्य, केशर, गंध।
ज्येष्ठा १८	दि ५९	दि ०९	दि ०६	दि ०४	पित्तरोग शरीर कांपना व्याकुलता	इन्द्र देवता	सुवर्ण नील वस्त्र तैल छायापात्रदान	५ हजार	ॐ त्रातारभिंद्रमबितारमिंद्र Ω हवे हवेसुहव Ω शूरमिंद्रम् वहयामि शक्रं पुरुहूतभिंद्र Ω स्वास्ति नो मधवा धात्विन्द्रः। ॐ इन्द्राय नमः॥	चन्दन गंध सुगंध पुष्प कपूर धूप विचित्रान्न नैवेद्य, चम्पा पुष्प पायस, नारियल।
मूला १९	दि ००	दि ०९	दि १५	दि ०६	ज्वरशूलसन्निपात महाकठिन रोग	निर्ऋति देवता	सप्तधान्य सुवर्ण कृष्णगोछायापात्र	५ हजार	ॐ मातेवपुत्रं पृथिवी पुरीष्यमग्नि Ω स्वयोनावभारुषा तां विश्वेदैवऋतुभिः संविदानः प्रजापति विश्वकर्मा विमुञ्चत। ॐ निऋतये नमः॥	कृष्ण अगर गंध नील पद्म पुष्प कृष्ण अगर धूप मिष्ठान्नहवि माष नैवेद्य।
पूर्वाषाढ़ा २०	दि ००	दि १५	दि २४	दि १०	शरीरपीड़ा कंपरोग शिररोग महाकष्ट	जल देवता	श्वेतवस्त्रतंडुलसु-वर्णजलकुंभ	५ हजार	ॐअपाघ मम कील्वषम पकृल्यामपोरपः अपामार्गत्वमस्मद यदुः स्वपन्य-सुवः ॥२०॥ ॐ अद्भ्यो नमः॥	चन्दनगन्ध पद्म पुष्प गुग्गुल धूप घृत पायस नैवेद्य।
उत्तराषाढ़ा २१	दि ३०	दि २४	दि २६	दि १६	कटिपीड़ा प्रलाप उदर शूलरोग युक्त	विश्वेदेवा देवता	ब्राह्मण भोजन अन्न सुवर्ण दान	१० हजार	ॐ विश्वे अद्य मरुत विश्वऽउतो विश्वे भवत्यग्नयः समिद्धाः विश्वेनोदेवा अवसागमन्तु विश्वेमस्तु द्रविणं बाजो अस्मै॥२१॥	चन्दन गंध मालती गुग्गुल पुष्प पायस नैवेद्य।
श्रवण २२	दि ६०	दि २४	दि ०६	दि ०९	वातापित्तकफरोग अतिसारसर्वगात्रपी	गोविन्द देवता	सुवर्गगेदानब्राह्म णभोजनछायापात्र	१० हजार	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो श्नपत्रेस्थो विष्णो स्युरसिविष्णो ध्रुवोसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा ॥२२॥ ॐ विष्णवे नमः॥	चन्दन गंध मालतीपुष्प कपूर गुग्गुल धूप ओदन पायस षडरम नैवेद्य।
धनिष्ठा २३	दि १५	दि २	दि २०	दि २१	मूत्रकृच्छ ज्वर रक्त अतिसार कंपरोग	वसु देवता	छत्री जूता सुवर्ण गोछायापात्रदान	१० हजार	ॐ वसोःपवित्र मसि शतधारंवसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वासविता पुनातुवसोः पवित्रेणशतधारेण सुप्वाकामधुक्षः। ॐ वसुभ्यो नमः॥	अगर गंध कमल पुष्प अगर धूप घृत पायस नैवेद्य, दीपक, ताम्र बर्तन।
शतभिषा २४	दि ००	दि ४५	दि ०३	दि २२	वायु रोग से भय सन्निपातज्वरपीड़ा	वरुण देवता	तिलसुवर्ण घृत तैल अजागोदान	१० हजार	ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसिवरुणस्यस्कुं मसर्जनी स्थोवरुणस्य ऋत सदन्य सि वरुण स्यऋतमदन ससि वरुणस्यऋतसदनमसि। ॐ वरूणाय नमः॥	कुकम अगर गन्ध कमल पुष्प अगर धूप घृत धूप नैवेद्य।
पूर्वाभाद्र--पद २५	दि ००	दि १२	दि २१	दि १९	सर्वगात्रपीड़ाछर्दी चिन्ताव्याकुलता	ऽजेकपाद देवता	सुवर्ण रजतश्वेत वस्त्र धृत दुग्ध	५ हजार	ॐ उतनाऽहिर्वुध्न्यः श्रृणोत्वज एकपापृथिवी समुद्रःविश्वे देवा ऋता वृधो हुवाना स्तुतामंत्राः कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	कंकुम चन्दनगन्धश्वेतार्क पुष्प सर्वोषधी मिश्र धूप दधि पायस नैवेद्य।
उत्तराभा--द्रपद २६	दि १०	दि २०	दि ०९	दि १५	कामलारोगअतिसा ज्वरवायुशूलभ्रम	अहिर्बुध्न देवता	रजत कृष्ण वस्त्र तिल सुवर्ण दान	१ हजार	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तो पिता नमस्तेऽस्तुमामाहि Ω सो निवर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाधाय प्रजननायर रायम्पोषाय (सुप्रजास्वाय ॥२६॥) ॐ अहिबुर्धाय नमः॥	कपूरचन्दनगन्ध पद्म पुष्प विल्व गुग्गुल धूप दधि पायस नैवेद्य।
रेवती २७	दि १८	दि १०	दि ०९	दि २०	वातपित्तज्वर भ्रम उरू शूलपीड़ा	पूषा देवता	पित्तल पात्र रक्त वृषभवस्त्रछायापात्र	१०॰ हजार	ॐ पूषनु तव व्रते वय नरिष्येभ कदाचन। स्तोतारस्तेइहस्मसि ॥२७॥ ॐ पूष्णेनमः॥	रक्त चन्दन गन्ध चम्पक पुष्प घृत गुग्गल धूप घृत पायस नैवेद्य।

रोग-त्रिनाड़ी चक्र

आर्द्रा	पू.फा.	उ.फा.	अनु	ज्ये०	धनि	शत०	भरणी	कृत्ति
पुर्न	मघा	हस्त	विशा	मूल	श्रव०	पू.भा.	अश्वि.	रोहि
पुष्य	आश्ले.	चित्रा	स्वाती	पू.षा.	उ.षा.	उ.भा.	रेवती	मृग.

मंगलवार १।६।११ तिथि कृत्तिका नक्षत्र। बुधवार २।७।१२ तिथि आश्लेषा नक्षत्र। गुरुवार ३।८।१३ तिथि मघाहस्तनक्षत्र। शुक्रवार ४।९।१४ तिथि-आर्द्रा धनिष्टा नक्षत्र। शनिवार ५।१०।१५ तिथि-भरणीनक्षत्र। इन तीन योगों में रोग का प्रारम्भ हो तो मृत्यु या मृत्युतुल्य कष्ट जानना। (रोग के दिन नक्षत्र से नाम का नक्षत्र ५।१४।२३ संख्या पर काल का मुंह होता है और १०, १८वें नक्षत्र काल की दंष्ट्र (दाढ़) होती हैं, मुख वा दंष्ट्रा में जिस दिन नक्षत्र प्राप्त हो उस दिन अत्यंत रोगग्रसित पुरुष की मृत्यु तुल्य कष्ट जानना। सूर्य जिस नक्षत्र में हो, वह नक्षत्र, चन्द्र नक्षत्र और नाम का नक्षत्र जिस दिन एक नाड़ी में हो उसी दिन असाध्य रोगी की मृत्यु जानना।

॥ अथ बालकष्टावली पूतना विधान ॥

मंत्र को २१ बार पढ़कर सात बार रूग्ण बालक के सिर पर घुमाकर चौरस्ते (चौराहे) पर मौन होकर रख आवे॥

जन्म से			पूतना नाम	ग्रसित लक्षण	मूर्तिद्रव्य	बलि द्रव्य तथा समय	धूप	मन्त्र
दि ०१	मा १	व ०१	१ योगिनी २ मातृका ३ नंदिनी	ज्वर गात्रशोष अनाहार वमन मूर्छा कांपना हीन ज्वर उदर पीड़ा	नदी का मिट्टी का पुतला ३ दिन विधान	उबले चावल सफेद चंदन का लेप सफेदफूल ध्वजा ५ चिलिड़ियां (पूड़े) ५ दीपक ५ प्रात: समय पूर्व दिशा में तीन दिन बलि देवे।	सरसों बालछड़ आक बिल्वपत्र तिल्ली और मनुष्य के केश नीम घी का धूप	ॐ नमो भक्तवत्सले मोचिनी स्वाहा
दि ०२	मा ०२	व ०२	१ सुनंदिनी २ योगिनी ३ स्तनदा	ज्वर हाथ पांव संकोचदांतो का पीसना आँखें मीचना ज्वरादि रोदन आँखें दुखना	सेर चावल की पीठी का पुतला ३ दिन दिन विधान	उबले चावल सेर पर आटे के पूड़े मच्छी और बकरे का मांस ध्वजा १३ दीपक १३ पश्चिम दिशा में सन्ध्या समय ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत् सब वस्तुओं का धूप देना	ॐ नमो भगवती स्वाहा
दि ०३	मा ०३	व ०३	१ पूतना	ज्वर कम्प न प्रलाप अरुचि आँखें मीचना वमन रोमांच	पूर्ववत मूर्ति	लाल चावल लाल ध्वजा लाल चन्दन लालफूल सायंकाल उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और सांप को कांचली का धूप देना	ॐनमो भगवती स्वाहा
दि ०४	मा ०४	व ०४	१ मुखमंडिका २ आकाशयोगिनी	ज्वर गात्र भग आंखमीचना शिर झुकाना श्वास श्याम ता अरुचि नींद न आना	चावल के चूर्ण का पुतला विल्ब के कांटे से रेखा	सफेद चंदन का लेप सफेद फूल सफेद ध्वजा सेर भर आटे के पूड़े तीनों सन्ध्या समय पश्चिम दिशा में बलि ३ दिन देवें।	लहसन नीम के पत्ते मनुष्य के और बिल्ली के बाल गो घृत धूप देना।	ॐ नमो पूतने मातवीर्लि भक्ष सुशोभने बालंकमुचंसुयोगेन बलिदाने नहर्षयेत्
दि ०५	मा ०५	व ०५	विडालिका	ज्वर हिक्का श्वास शूल गात्र संकोच अरुचि उदर पीड़ा	सेर भरचावलों की पीठी का पुतला	उबले चावल ध्वजा ५ दीपक ५ सफेद चन्दन सफेद फूल अपरान्ह के समय वृक्ष के मूल में पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ सुभगे सुभलेदेवि सर्व शत्रु निवारिणी। कुरु शांति शिशो: स्वस्थं जीव दानेन राक्षसि
दि ०६	मा ०६	व ०६	शकुनी	ज्वर गात्र संकोच अरुचि श्वास लेने में कठिनाई उदर पीड़ा	सेर चावलों की पीठी का पुतला बनाना	कृष्णोदन ध्वजा ५ दीपक ५ काले फूल मच्छी का मांस बकरे का मांस पायस दूध आधसेर आटे को पूड़े अपरान्ह पश्चिमदिशा में तीन दिन बलि देवे	कूठ गुग्गुल सफेद चन्दन सरसों हाथी का दांत गो घृत धूप देना।	ॐ राक्षसि त्व महाभागे बालमुंच शुभानने। क्षेम कुरु जगत्य स्मिन् शोभावान वरं कुरु
दि ०७	मा ०७	व ०७	शुष्करेवती	ज्वर देह संकोच अरुचि कांपना रोदन करना	पूर्ववत मूर्ति	सफेद ध्वजा ७ दीपक ७ सफेद फूल सफेद चंदन सायंकाल पश्चिम दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग और लहसन से पूर्ववत धूप देना।	ॐ नमो पद्मपत्राक्षि विशालाक्षि बन शिव। सगृहाँ बलि माषञ्च बाले मुँच सुशोभने।
दि ०८	मा ०८	व ०८	विडालिका	ज्वर गात्र संकोच आँखें मीचना रोना जिव्हाशोष शिर पीड़ा अरुचि	पूर्ववत मूर्ति	पायस (खीर) दूध घी लाजा मध्यान्ह व पूर्व संध्या समय दक्षिण दिशा में ३ दिन बलि देवे	गुग्गुल में घृत मिलाकर उपरोक्त धूप देना।	ॐ नमो सर्व भूतेशि शोभने त्वं पिशाचिनी। बलिचैवा सुरी कृत्य त्वरितं मुंच बालकम्
दि ०९	मा ०९	व ०९	मनोन्मत्ता	ज्वर वमन तृष्णा श्वास अफारा देह संकोच उदर शूल	पूर्ववत मूर्ति	उबले चावल मच्छी का मांस पापड़ गन्ना संध्या समय उत्तर दिशा में ३ दिन बलि देवे।	गोश्रृङ्ग को घृत में घिसकर पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय हुं फट स्वाहा।
दि १०	मा १०	व १०	रेवती	ज्वर वमनाकास श्वास पीड़ा	पूर्ववत मूर्ति	गुड़ उबले चावल घी ध्वजा २५ पूड़े २५ लालफूल २५ सफेद फूल ४४ संध्यासमय दक्षिण में ३ दिन बलिदेवे	गोश्रृङ्ग लहसन को घृत में मिलाकर धूप देना।	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय फट स्वाहा।
दि ११	मा ११	व ११	सुदर्शना	ज्वर अरुचि मुखशोष गात्र पीड़ा रोदन	माष उड़द की पीठी	उबले चावल सफेद चंदन लेपन सफेद फूल ध्वजा २५ दीपक २५ पूड़े २५ बलि संध्या समय दक्षिण दिशा में बलि देवे।	पूर्ववत धूप देना	ॐ नमो भगवते रावणाय चंद्रहास वज्रहस्ताय ॐ हुं फट स्वाहा।
दि १२	मा १२	व १२	अद्भुता	ज्वर रोदन पसीना आँखें दुखना सन्ताप रोमांच शरीर पीड़ा	सेर चावल की पीठी का पुतला	ध्वजा १३ पूड़े मच्छी का मांस बकरे का मांस पापड़ संध्या समय दक्षिण में ३ दिन बलि देवे	गोश्रृङ्ग को घृत में घिस कर पूर्ववत धूप देना।	ॐनमो नारायणाय प्रज्वल २ ताप हर २ शोषय २ मर्दय २ हन दुष्टान हुं फट स्वाहा

वर्षफल बनाने की सारिणी (सूर्य सिद्धान्तीय)

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वार	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
वार	०४	०५	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	४३	५९	१४	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६
पल	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१३	४३	१५
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
वार	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	००	०१	०२	०४	०५	०६	००	०२	०३
घड़ी	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४
पल	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०

वर्ष	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	००	०१	०२	०३	०५	०६	००	०१	०३	०४	०५	०६
घड़ी	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	४३	१७	३२	४८	०३	१९	३४	५०	०५	२१	३६	५२
पल	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	३०	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस संवत् या वर्ष का वर्ष लग्न निकालना हो, उस संवत् में से जातक के जन्म का सम्वत् घटाने से जो वर्ष शेष बचेंगे वह **गतवर्ष** होंगे फिर वर्षफल सारणी में गत वर्षों के नीचे लिखे वार, घड़ी पलादि के ध्रुवांक को जातक के जन्म, वार, घड़ी, पलादि में जमा कर लेने पर आगामी वर्ष का वार एवं वर्षेष्ट काल निकल आएगा। अब इस वर्षेष्ट को स्थानिक लग्न सारणी की सहायता से जन्म लग्न की भान्ति ही वर्ष लग्न ज्ञात कर सकते हैं। फिर वर्ष प्रवेश के वर्षेष्ट अनुसार ही ग्रहस्थापना कर लेंवे। उदाहरण सहित इसका स्पष्टीकरण हमारी प्रकाशित **वर्षफल चन्द्रिका** में पढ़ें।

मुन्था—जन्म लग्न राशि की संख्या में से गतवर्ष की संख्या को जोड़कर जो योगफल आए, उसे १२ से भाग देकर जो संख्या शेष रहे, उसी राशि अंक पर मुंथा स्थापित करनी चाहिए। **मुन्था जन्म** लग्न से प्रति वर्ष एक राशि आगे चलती है।

त्रिपताकी चक्र—त्रिपताकी का **चन्द्रमा** निकालने के लिए वर्ष प्रवेश की संख्या को ९ द्वारा भाग दें। जो शेष बचे जन्मकुण्डली में जिस राशि में चन्द्रमा स्थित है, उससे आगे उतने भाव गिनकर प्राप्त राशि अंक पर चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए वर्ष प्रवेश संख्या में ४ द्वारा भाग दें। शेष को जन्मस्थान के ग्रहों से जहां वे स्थित हैं, उतना आगे गिनकर चक्र में लिखें।

मुद्दा दशा निकालना—गत वर्ष में जन्म नक्षत्र जोड़कर उसमें से दो घटावें, ९ द्वारा भाग देने से जो शेष बचे तदनुसार दशा जाननी चाहिए। यदि १ बचे तो **सूर्य** की, २ बचें तो **चन्द्रमा**, ३ बचें तो **मंगल**, ४ से राहु, ५ बचें तो गुरु, ६ बचें तो **शनि**, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ अथवा ० बचे तो **शुक्र** की दशा जाननी चाहिएं।

मुद्दा दशा के दिनादि—**सूर्य** के १८ दिन, **चन्द्रमा** के ३०, **मंगल** के २१ दिन, **राहु** के ५४ दिन, **गुरु** के ४८ दिन, **शनि** के ५७ दिन, **बुध** के ५१ दिन, **केतु** के २१ दिन तथा **शुक्र** के ६० दिन **मुद्दा दशा में होते हैं।**

स्थानबल—सूर्य वर्ष लग्न से ९वें, चन्द्रमा ३रे, मंगल ६ठे, बुध १, गुरु ११वें, शुक्र ५, शनि १२वें स्थान में हो तो ५ हर्ष बल देते हैं।

स्वभोच्चबल—सूर्य १।५, चन्द्रमा २।४, मंगल १।८।१०, बुध ३।६, बृहस्पति १२।४, शुक्र २।७।१२, शनि १०।११।७—इन राशियों में ५ बल देते हैं।

पुरुष-स्त्री ग्रहः—स्त्री ग्रह लग्न से १।२।३।७।८।९, घरों में ५ बल देते हैं और पुरुषग्रह लग्न से ४।५।६।१०।११।१२ घरों में ५ बल देते हैं। दिन के समय पुरुष ग्रह तथा रात्रि के इष्ट में स्त्री ग्रह ५ बल देते हैं।

त्रिराशिपति चक्र

मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	राशि
सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.	दिनपति
बृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.	रात्रिपति

वर्ष लग्न की जो राशि हो उसकी ऊपर की पंक्ति में राशि के सामने देखो और उसके नीचे यदि इष्ट दिन का हो तो दिनपति के सामने रात्रि का हो तो रात्रिपति के सामने और वर्ष लग्न की राशि के नीचे जो ग्रह हैं वही त्रिराशिपति होगा।

वर्ष कुण्डली में दृष्टि चक्र

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
प्रत्यक्ष मित्र	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९	५—९
गुप्त मित्र	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११	३—११
प्रत्यक्ष शत्रु	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७	१—७
गुप्त शत्रु	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०	४—१०

वर्ष कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में पड़ा हो वह उस भाव से पांचवें और ९वें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से देखता है। तीसरे ग्यारहवें गुप्तमित्र दृष्टि से, पहले सातवें प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से और ४-१० गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

(१) प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि शुभ और बलवान् होती है। (२) गुप्त मित्र दृष्टि सम है। (३) गुप्त शत्रु दृष्टि अशुभ है। (४) शत्रु दृष्टि अशुभ है।

दृष्टि फल

प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि—इस का फल कार्य में शीघ्र सफलता, सम्बन्धियों से सुख-प्रेम और लाभ इत्यादि इस से जिन मनुष्यों के साथ पहिले शत्रुता होती है उन से प्रेम उत्पन्न होता है तथा नए सम्बन्ध स्थापित होते हैं।

गुप्त शत्रु दृष्टि—यह प्रत्यक्ष दृष्टि से कुछ कम फलदायक है। अर्थात् कार्य बड़ी कठिनता से सफलता को प्राप्त होता है, यह प्रत्यक्ष रूप में सहायता करने वाली होती है, परन्तु गुप्त रूप से शत्रुता करने वाली होती है।

गुप्त मित्र दृष्टि—इसका फल प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि से कम होता है। यह भी कार्य में सफलता व लाभदायक है, परन्तु प्रत्यक्ष भाव से नहीं, गुप्त भाव से सफलता व कार्य सिद्ध होता है।

प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि—इसका फल शत्रुता उत्पन्न करना, बनता कार्य बिगाड़ना, मित्र से वैर, धन हानि, मानसिक परेशानी, निकट बंधुओं से मन-मुटाव इत्यादि हैं।

वेध-सिद्ध नवीन मतानुसार वर्ष प्रवेश सारिणी

एक सौर वर्ष में सूर्य द्वारा उसी राशि, अंश, कला, विकला पर घूमकर पुन: जितना समय लगता है, उसकी अवधि (Duration) के सम्बन्ध भिन्न-भिन्न मत पाए जाते रहे हैं। "सूर्य सिद्धान्तानुसार" उक्त समय ३६५ दिन, १५ घड़ी, ३१ पल ३० विपल है, जबकि आधुनिक वेधशालाओं द्वारा प्रमाणित यह समयावधि ३६५ दिन, १५ घड़ी २२ पल और साढ़े ५३ विपल होते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग ८।३० पल अथवा ३ मिन्ट २७ सेकिण्ड का अन्तर पाया जाता है। प्रत्येक शताब्दि (वर्ष) यह अन्तर बढ़ता जाता है। फलस्वरूप वर्ष प्रवेश इष्ट एवं कभी-कभी एक-दो लग्नों का भी अन्तर पड़ जाता है। गत पृष्ठों में हमने सूर्य सिद्धान्तानुसार वर्ष सारिणी पहिले की भान्ति ही दी हुई है। अब आजकल कुछ विद्वान नवीन वेधसिद्ध वर्ष सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। इससे फलादेश में भी अधिक सूक्ष्मता आ जाती है। अधिक जानकारी हेतु हमारे ज्योतिष कार्यालय से **'वर्षफल चन्द्रिका'** लेखक पण्डित पन्ना लाल गणितकर्त्ता (संशोधित संस्करण) मंगवा कर पढ़ें। यद्यपि परम्परानुगामी सूर्य-सिद्धान्तीय वर्ष सारिणी का ही प्रयोग कर रहे हैं।

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२५	४८	११	३४	५७	२०	४३	६	२९	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५४	१७	४०	३	२६
विपल	५३	४६	३९	३२	२५	१८	११	०४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	०१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

गताब्द	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	५	२१	३६	५२	७	२२
पल	४९	१२	३५	५८	२०	४३	६	२९	५२	१५	३८	१	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३
विपल	२३	१६	९	२	५५	४८	४१	३४	२७	२०	१३	६	५९	५२	४५	३८	३१	२४	१७	१०	०३	५६	४९	४२	३५	२८	२१	१४	७	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	२	३	४	५	६	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२५	४१	५६	१२	२७	४२	५८	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४५	०१	१६	३२	४७	०२	१८	३३	४८	०४
पल	१५	३८	१	२४	४७	१०	३३	५६	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६	५९	२२	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४७	१०	३३	५६	१९
विपल	५३	५६	३९	३२	२५	१८	११	४	५७	५०	४३	३६	२९	२२	१५	८	१	५४	४७	४०	३३	२६	१९	१२	०५	५८	५१	४४	३७	३०

वर्ष कुण्डली में मुंथा का महत्त्व

वर्ष कुण्डली में नवग्रहों के समान मुंथा की भी स्थापना की जाती है। मुंथा यद्यपि कोई ग्रह नहीं है, तो भी इसका फल ग्रह के समान ही महत्त्वपूर्ण है। मुंथा जन्म लग्न से प्रति वर्ष एक-एक राशि आगे चलती है। वर्ष कुण्डली में ४, ६, ७, ८ एवं १२वें भाव में स्थित मुंथा अशुभ फलदायक होती है। यदि ४, ६, ७, ८, १२वें भाव में शुभ ग्रह युक्त हो तो इतनी अधिक अनिष्टकारी नहीं होती। लग्नादि द्वादश भावों में मुंथा का फल इस प्रकार होगा—(१) **लग्न भाव में मुंथा** स्थित हो तो उस वर्ष शत्रुओं का नाश, भाग्य में वृद्धि, सवारी का सुख, यदि चर राशि में हो तो स्थान परिवर्तन के भी योग बनते हैं। (२) **द्वितीय भावस्थ मुंथा** हो तो कठिन परिश्रम द्वारा धन लाभ एवं धन प्राप्ति के साधन बनते हैं। मनोरंजन एवं सुख साधनों पर व्यय भी बढ़ता है। (३) **तृतीय भावस्थ मुंथा** होने से शत्रुओं का नाश, भाइयों, मित्रों या उच्च पद प्राप्त महानुभावों का सहयोग प्राप्त होता है। (४) **चतुर्थ भावस्थ मुंथा** शरीर कष्ट, वायु विकार, अपने-परायों से विरोध, गुप्त चिन्ताएँ, नौकरी और व्यवसाय में अनेक प्रकार के विघ्न, स्थान परिवर्तन आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (५) **पंचमस्थ मुंथा** अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। सर्विस अथवा व्यापार में लाभ, धन, पुत्र एवं विद्या का लाभ, नए उद्योग से सफलता मिले। (६) **षष्ठस्थ मुंथा** हो तो शरीर कष्ट, शत्रुओं का भय, चित्त में अशान्ति, नानके पक्ष को हानि, स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहता है। (७) **सप्तमस्थ मुंथा** अशुभ रहती है। स्त्री अथवा निकट बन्धुओं की ओर से कलह-क्लेश, परिवारिक सदस्यों को कष्ट, बने बनाए कार्य बिगड़ना आदि अशुभ फल घटित होते हैं। (८) **अष्टमस्थ मुंथा** होने से आशाओं में निराशा, पेट तथा अन्य गुप्त रोगों का भय, स्थान परिवर्तन, अनावश्यक यात्राओं तथा स्वास्थ्य पर भी अपव्यय होता है। (९) **नवमस्थ मुंथा** उत्तम फल देती है। नौकरी में पदोन्नति अथवा व्यवसाय में लाभ-वृद्धि, परिवारिक सुख एवं भाग्योन्नति होती है। (१०) **दशमस्थ मुंथा** होने से आर्थिक लाभ, सरकारी क्षेत्र में यदि कोई कार्य रुका होगा तो पूरा होगा (अर्थात् लाभ होगा) तथा सोचे हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। (११) **ग्यारवें भाव में मुंथा** होने से धन लाभ सुख-प्राप्ति, व्यापार और क्रय-विक्रय के कार्यों से लाभ होगा। (१२) **द्वादशस्थ मुंथा** आने से नया व्यापार तथा यात्रा करने से हानि, स्थान परिवर्तन के योग बनेंगे। (विस्तृत फलादेश के लिए देखें हमारी पुस्तक **'वर्षफल चंद्रिका'**) मूल्य 110/- रु. मात्र

वेध सिद्ध शुद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी (घण्टा-मिनटों में)

सूर्य सिद्धान्तानुसार 365 दिन, 15 घटी, 31 पल, 30 विपलों में-**अर्थात्** 365 दिन, 6 घण्टे, 12 मिनट एवं 36 सैकिंडों में सूर्य पुनः उसी स्थान या बिन्दु पर आ जाता है। जबकि नवीन एवं आधुनिक अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि सूर्य (पृथ्वी) को पुनः उसी बिन्दु पर आने में 365 दिन, 6 घण्टे, 9 मिनट एवं 9 सैकिंड लगते हैं। इस प्रकार दोनों मतों में लगभग साढ़े तीन मिनटों अर्थात् 3 मिनट 27 सैकिंड (प्रतिवर्ष) का अन्तर पड़ता है तथा वर्षमान सारिणी में यह अन्तर प्रतिवर्ष बढ़ता जाता है। 40 वर्षों के अंतराल में यह अन्तर 2 घण्टे 18 मिनट का हो जाएगा। जिससे प्राचीन सूर्य सिद्धान्तीय सारणी से एक/दो लग्नों का अतर हो जाना स्वाभाविक है।

आजकल अधिकांश ज्योतिषी वेध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी का प्रयोग करने लगे हैं। आधुनिक कम्प्यूटर प्रणाली द्वारा भी नवीन वर्ष प्रवेश सरिणी का ही अनुमोदन किया जाता है। गत वर्षों से पंचांग दिवाकर में नवीन सूक्ष्म वर्ष प्रवेश सारिणी घड़ी/पलात्मक में दे चुके हैं। आगे वेद्ध सिद्ध सूक्ष्म वर्ष-प्रवेश सारिणी घण्टा/मिनटों में दे रहे हैं। **वर्ष-लग्न** निकालने के लिए इसका प्रयोग **और भी अधिक सरल है।**

	वार	घंटे	मिनट
जन्म वार समयादि	4	5	30
सारिणी से प्राप्त संख्या	+ 3	18	25
	7	23	55
अर्थात् (शनिवार)	7 वार	23	55

प्रस्तुत सारिणी की प्रयोग विधि–आपको जिस साल का वर्ष प्रवेश ज्ञात करना हो, उस वर्ष में से जन्म वर्ष निकाल देने से हम गताब्द अर्थात् गतवर्ष मिलेंगे। गतवर्ष के सामने के वार एवं घंटा/मिंट को अपने जन्म वार एवं जन्म समय (स्टैं. टा.) में जमा कर देने से हमें नववर्ष प्रवेश कालीन वार एवं घण्टा-मिनट भा. स्टैं. टाईम में मिल जाएगा। नववर्ष प्रवेश स्टैं. घंटा/मिंट को दैनिक लग्न में देखने से हमें लग्न ज्ञात हो जाएगा। **ध्यान रहे**, सारिणी में जमा करने से जोड़ यदि 24 घं. से अधिक आ जाए, तो उसमें से 24 घटा दें, तथा 1 वार जमा कर लेवें। वार की गणना रविवार से की जाती है।

उदाहरण–मान लो किसी जातक का जन्म 2 अक्तूबर, 1974 ई० में, बुधवार की प्रातः साढ़े पाँच (5/30) बजे हुआ। यदि हमने उस जातक का सन् 2016 ई. की वर्ष कुण्डली तैयार करनी है, तो 2016 ई. में से जन्म वर्ष घटा देने पर हमें 42 गतवर्ष प्राप्त हुए। आगे दी गई वर्ष प्रवेश सारिणी में गतवर्ष 42 के सामने हमें 3 वार, 18 घण्टे एवं 25 मिनट मिले। इनको जातक के जन्मवार एवं जन्म समय (5/30) में जमा कर देने से हमें 7 वार, 23 घण्टे, 55 मिनट प्राप्त हुए। हमें 7 वार अर्थात् शनिवार की रात्रि 23 बजकर, 55 मिनट प्राप्त हुए। जन्त्री/पंचाँग में दी गई दै. लग्न सारिणी से देखने पर 1 अक्तू., शनिवार की रात्रि 23 बजकर 55 मिनट पर हमें **मिथुन वर्ष लग्न** प्राप्त हुआ। वर्ष लग्न मिथुन में सं. २०७३ की पंचांग से 1 अक्तू. 2016 ई. रात्रि 23/55 स्टै. टा. के ग्रह स्थापन करके हमें नववर्ष प्रवेश की कुण्डली प्राप्त होगी। मुंथा लगाने के लिए जातक के जन्म लग्न राशि में गतवर्ष जमा करके प्राप्त संख्या को 12 से भाग देने जो संख्या शेष बचे उसी राशि पर **मुंथा** स्थापित की जाती है।

वर्ष लग्न के अंश, कला, विकला जानने के लिए हमें वर्षेष्ट, सूर्य स्पष्ट तथा (जातक द्वारा वर्तमान में स्थायी तौर पर रह रहे) नगर की लग्न सारिणी का प्रयोग करना होगा। अधिक जानकारी एवं फलादेश के लिए हमारी प्रकाशित **'वर्षफल चन्द्रिका'** पुस्तक का अध्ययन करें। मूल्य केवल 110 रु.।

गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट	गत वर्ष	वार	घंटे	मिंट
1	1	6	9	26	4	15	58	51	1	01	47	76	4	11	36
2	2	12	18	27	5	22	07	52	2	07	57	77	5	17	46
3	3	18	27	28	0	04	17	53	3	14	06	78	6	23	55
4	5	00	37	29	1	10	26	54	4	20	15	79	1	06	04
5	6	6	46	30	2	16	35	55	6	02	24	80	2	12	13
6	0	12	55	31	3	22	44	56	0	08	33	81	3	18	22
7	1	19	04	32	5	04	53	57	1	14	42	82	5	00	31
8	3	01	13	33	6	11	02	58	2	20	51	83	6	06	41
9	4	07	23	34	0	17	32	59	4	03	01	84	0	12	50
10	5	13	32	35	1	23	21	60	5	09	10	85	1	18	59
11	6	19	41	36	3	05	30	61	6	15	19	86	3	01	08
12	1	01	50	37	4	11	39	62	0	21	28	87	4	07	17
13	2	07	59	38	5	17	48	63	2	03	37	88	5	13	26
14	3	14	08	39	6	23	57	64	3	06	43	89	6	19	36
15	4	20	17	40	1	06	07	65	4	15	56	90	1	01	45
16	6	02	27	41	2	12	16	66	5	22	05	91	2	07	54
17	0	08	36	42	3	18	25	67	0	04	14	92	3	14	03
18	1	14	45	43	5	00	34	68	1	10	23	93	4	20	12
19	2	20	54	44	6	06	43	69	2	16	32	94	6	02	21
20	4	03	03	45	0	12	42	70	3	22	41	95	0	08	30
21	5	9	12	46	1	19	02	71	5	04	51	96	1	14	40
22	6	15	22	47	3	01	11	72	6	11	00	97	2	20	49
23	0	21	31	48	4	07	20	73	0	17	09	98	4	20	58
24	2	03	40	49	5	13	29	74	1	23	18	99	5	09	07
25	3	09	49	50	6	19	38	75	3	05	27	100	6	15	16

कालसर्पयोग-अरिष्ट निवारक कुछ उपाय

जन्म कुण्डली में यदि राहु और केतु के बीच एक ही तरफ में सभी सातों ग्रह (सू., चं., मं., बु., गु., शु., श.) पड़ जाएँ, तो कालसर्प नामक योग बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक (पुरुष अथवा स्त्री) को व्यवसाय, धन, परिवार एवं सन्तानादि के कारण विविध परेशानियों एवं दुःखों से पीड़ित रहना पड़ता है-

अग्रे वा चेत् पृष्ठतोऽप्येकपार्श्वे भानांषट्के राहुकेत्वो न खेटः।
योगः प्रोक्तः कालसर्पश्च तस्मिन्जातो जाता वाऽर्थपुत्रर्त्तिमीयात्॥

कालसर्प योग से पीड़ित कुछ उल्लेखनीय महत्त्वपूर्ण कुण्डलियाँ इस प्रकार से हैं-स्वतन्त्र **भारतवर्ष एवं पाकिस्तान की जन्म कुण्डली, पं० जवाहर लाल नेहरू**, पाकिस्तान के भूतपूर्व शासक **जुल्फकार भुट्टो, हिटलर (जर्मनी), सुश्री लतामंगेशकर** इत्यादि। इनकी कुण्डलियों का विश्लेषात्मक अध्ययन ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) में पढ़ें।

वास्तव में राहु-केतु छाया ग्रह हैं। राहु का देवता 'काल' है। केतु का देवता सर्प हैं। कालसर्प योग के प्रभाव के कारण प्रत्येक कार्य में विघ्न-बाधाएँ तथा आर्थिक उन्नति में बाधाएं रहती हैं। परन्तु यह आवश्यक नहीं है कि कुण्डली में केवल कालसर्प योग ही प्रभावित कर रहा हो। कुंडली में बैठे अन्य शुभ योग जातक को आश्चर्यजनक सफलताएं दिला सकता है। कालसर्प योग अत्यन्त समृद्ध साधन सम्पन्न अमीर व्यक्ति की कुंडली में भी हो सकता है अथवा दीन, अभावग्रस्त गरीब व्यक्ति की कुण्डली में भी हो सकता है। मुख्यतः इस योग के प्रभावस्वरूप मनुष्य अपनी अन्तर्मन की शक्तियों का पूर्णतया उपयोग नहीं कर पाता अथवा सब सुख-साधन सम्पन्न होते हुए भी मानसिक तनाव एवं असन्तोष बना रहता है तथा अज्ञातभय एवं असुरक्षा की भावना व्याप्त रहती है।

लक्षण-इस योग के कारण जातक को स्वप्नों में सर्प दिखाई देते हैं, पानी दिखना, अपने-आप को उड़ते हुए देखना, परिवार के किसी सदस्य पर विपत्ति आना, पितृशिव देखना, सर्प और नेवेले की लड़ाई दिखे तो निश्चय ही गृह-कलह हो सकता है। कालसर्प योग का उपाय कर लें। ये सब लक्षण है कि आपकी कुण्डली में कालसर्प या आंशिक कालसर्प योग है। आप अपनी कुण्डली किसी विद्वान् ज्योतिषी को दिखाकर उपाय करें।

कालसर्प दोष केवल ग्रह-जनित पीड़ा है, इसलिए इसकी शान्ति मुख्य रूप से-(१) द्वादश ज्योर्तिलिंगों में से किसी एक ज्योर्तिलिंग के निकट (२) क्योंकि इस योग के अधिष्ठाता श्री महाकाल ही हैं। अतएव यदि प्रसिद्ध महाकालेश्वर ज्योतिलग एवं सिद्ध शक्ति पीठ, कलिया नाग के निवास स्थल पुण्य सलिला क्षिप्रा गंगा के तट पर उज्जैन नगर में है। (३) प्रयागराज (४) नासिक में (५) अथवा यदि सम्भव न हो तो शिव मन्दिर में द्वादश ज्योतिलग का ध्यान करते हुए करें।

—कालसर्प दोष शान्ति के लिए उपाय—

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए मुख्य रूप से (१) ग्रह शान्ति (२) सर्प दोष (३) पितृ दोष शान्ति एवं नागबलि एवं शिव पूजन वैदिक पुराणोक्त विधि से किसी योग्य ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। (४) विधिपूर्वक महामृत्युञ्जय का जप भी करें।

यदि कुण्डली में **काल सर्पयोग** पड़ा हो, तो निम्नलिखित किंचित् उपाय करने **शुभ एवं कल्याणकारी** होंगे-(1) **कालसर्प** की अरिष्ट शान्ति के लिए शिव मन्दिर में सवा लाख **ॐ नमः शिवाय** मन्त्र का पाठ करना तथा पाठोपरान्त रूद्राभिषेक करवाने का विशेष महत्त्व है। साथ ही शिवलिंग पर चांदी का **सर्प युगल-नाग स्तोत्र** एवं नाग पूजनादि करके चढ़ाना शुभ होगा।

नाग गायत्री मन्त्र-ॐ नव कुलाय विद्महे विषदंताय धीमहि तन्नो सर्पः प्रचोदयात्॥

(2) प्रत्येक शनिवार एक नारियल को तैल एवं काले तिलों का तिलक लगाकर, मौली लपेटकर अपने शिर से तीन बार घुमा कर **ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः** मन्त्र कम-से-कम तीन बार पढ़कर चलते पानी में बहा देवें-ऐसे कम-से-कम **पाँच शनिवार करें।**

(3) प्रत्येक **शनिवार** कुत्तों को दूध और चपाती डालनी तथा गौओं, कौओं को तैल के छींटें देकर रसोई की प्रथम चपातियां डालना शुभ है।

(4) **कालसर्प** योग के कारण यदि वैवाहिक जीवन में बाधा आती हो, तो जातक पत्नी के साथ दोबारा विवाह करें एवं घर के चौखट द्वार पर चांदी का स्वस्तिक चिन्ह बनवा कर लगवाएं।

(5) घर में **मयूर पंख** का पंखा पवित्र स्थान पर रखें तथा भगवान् शिव का ध्यान करते हुए प्रातः उठते ही तथा सोने से पूर्व मयूर पंखे द्वारा हवा करें।

(6) प्रत्येक संक्रान्ति को गंगा जल सहित गोमूत्र का छिड़काव घर के सभी कमरों में करें।

(7) कालसर्प योग शान्ति के लिए नवनाग देवताओं के नाम का उच्चारण करना चाहिए-

अनंतं वासुकिं शेष पद्मानाभम् च कंबलम्।
शंखपालं कर्कोटकं कालियं तक्षकं तथा॥
एतानि संस्मरेन्नित्यं आयुः कामार्थ सिद्धये।
सर्पदोष क्षयार्थं च पुत्रपौत्रान् समृद्धये॥
तस्मै विषभयं नास्ति सर्वत्र विजयी भवेत्॥

(8) महाकुम्भ पर्व के अवसर पर प्रमुख स्नान करें और कुम्भ में स्थित शिव मन्दिर में जाकर विधिपूर्वक पूजन करें। चाँदी के बने नाग-नागिन के कम-से-कम ११ जोड़ों को प्रतिदिन शिवलिंग में चढ़ाएँ तथा महादेव से इस कुयोग से मुक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करें।

(9) सोना-७ रत्ती, चाँदी-१२ रत्ती, तांबा-१६ रत्ती-ये तीनों मिलाकर सर्पाकार अंगूठी अनामिका अंगुली में धारण करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। जिस दिन धारण करें, उस दिन राहु की सामग्री का आंशिक दान भी करना चाहिए।

(10) नागपंचमी का व्रत करें तथा नवनाग स्तोत्र का पाठ करें। 'अनन्त चतुर्दशी' का व्रत भी विधिपूर्वक रखें।

(11) प्रत्येक बुधवार को काले वस्त्र में उड़द या मूंग एक मुट्ठी डालकर, राहु का मन्त्र जाप कर किसी भिखारी को दे देवें। यदि दान लेने वाला कोई नहीं मिले तो बहते पानी में उस अन्न को छोड़ देना चाहिए। इस प्रकार 72 बुधवार करते रहने से अवश्य लाभ होता है।

(12) यदि किसी स्त्री की कुंडली इस योग से दूषित है तथा संतति का अभाव है, पूजन-विधि नहीं करवा सकती तो किसी अश्वत्थ (बट) के वृक्ष से नित्य १०८ प्रदक्षिणा (घेरे) लगाने चाहिए। तीन सौ दिन में जब २८००० प्रदक्षिणा पूरी होगी तो दोष दूर होकर स्वतः ही संतति की प्राप्ति होगी।

(13) इसके अतिरिक्त महाकाल रुद्र स्तोत्र, मनसादेवी नाग स्तोत्र, महामृत्युञ्जय आदि स्तोत्रों का विधि-विधान से पूजन, हवन करने से कालसर्प दोष की शान्ति हो जाती है।

कालसर्प दोष की शान्ति के लिए हमारी पुस्तक की प्रतीक्षा कीजिए।

दैनिक लग्न सारणी जनवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.
1	8 10	9 53	11 21	12 45	14 21	16 16	18 30	20 50	23 09	1 25	3 43	6 02
2	8 06	9 49	11 17	12 41	14 17	16 12	18 26	20 47	23 05	1 21	3 39	5 58
3	8 02	9 45	11 13	12 37	14 13	16 08	18 22	20 43	23 01	1 17	3 35	5 54
4	7 58	9 41	11 09	12 33	14 09	16 04	18 18	20 39	22 57	1 13	3 31	5 50
5	7 54	9 37	11 05	12 29	14 05	16 00	18 14	20 35	22 53	1 09	3 27	5 46
6	7 50	9 33	11 01	12 25	14 01	15 56	18 10	20 31	22 49	1 05	3 23	5 42
7	7 46	9 29	10 57	12 21	13 57	15 52	18 06	20 27	22 45	1 01	3 19	5 38
8	7 42	9 25	10 53	12 17	13 53	15 48	18 02	20 23	22 41	0 57	3 15	5 34
9	7 38	9 21	10 49	12 13	13 49	15 44	17 58	20 18	22 37	0 53	3 11	5 30
10	7 34	9 17	10 45	12 09	13 45	15 40	17 54	20 15	22 33	0 49	3 07	5 26
11	7 30	9 13	10 41	12 05	13 41	15 36	17 50	20 11	22 29	0 45	3 03	5 22
12	7 26	9 09	10 37	12 01	13 37	15 32	17 46	20 07	22 25	0 41	2 59	5 18
13	7 22	9 05	10 33	11 57	13 33	15 28	17 42	20 04	22 22	0 37	2 55	5 14
14	7 18	9 01	10 29	11 53	13 29	15 24	17 38	20 00	22 18	0 33	2 51	5 10
15	7 14	8 57	10 25	11 49	13 25	15 20	17 34	19 56	22 14	0 29	2 47	5 6
16	7 10	8 54	10 22	11 46	13 22	15 17	17 31	19 52	22 10	0 26	2 43	5 2
17	7 06	8 50	10 18	11 42	13 18	15 13	17 27	19 48	22 06	0 22	2 39	4 58
18	7 02	8 46	10 14	11 38	13 14	15 09	17 23	19 44	22 02	0 18	2 35	4 54
19	6 58	8 42	10 10	11 34	13 10	15 05	17 19	19 40	21 58	0 14	2 31	4 51
20	6 54	8 38	10 06	11 30	13 06	15 01	17 15	19 36	21 54	0 10	2 27	4 47
21	6 50	8 34	10 02	11 26	13 02	14 57	17 11	19 32	21 50	0 6	2 23	4 43
22	6 47	8 30	9 58	11 22	12 58	14 53	17 07	19 28	21 46	0 2	2 19	4 39
23	6 43	8 26	9 54	11 18	12 54	14 49	17 03	19 24	21 42	23 58	2 15	4 35
24	6 39	8 22	9 50	11 14	12 50	14 45	16 59	19 20	21 38	23 54	2 12	4 31
25	6 35	8 18	9 46	11 10	12 46	14 41	16 55	19 16	21 34	23 50	2 08	4 27
26	6 31	8 15	9 43	11 07	12 43	14 38	16 52	19 13	21 31	23 47	2 04	4 23
27	6 27	8 11	9 39	11 03	12 39	14 34	16 48	19 09	21 27	23 43	2 00	4 19
28	6 23	8 07	9 35	10 59	12 35	14 30	16 44	19 05	21 23	23 39	1 56	4 16
29	6 19	8 03	9 31	10 55	12 31	14 26	16 40	19 01	21 19	23 35	1 52	4 12
30	6 15	7 59	9 27	10 51	12 27	14 22	16 36	18 57	21 15	23 31	1 48	4 08
31	6 12	7 55	9 23	10 47	12 23	14 18	16 32	18 53	21 11	23 27	1 44	4 04
फर	6 08	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी फरवरी भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं. मि.	घं.मि.	घं. मि.
1	7 51	9 19	10 43	12 19	14 14	16 28	18 49	21 07	23 23	1 40	4 00	6 04
2	7 47	9 15	10 39	12 15	14 10	16 24	18 45	21 03	23 19	1 36	3 56	6 00
3	7 43	9 11	10 35	12 11	14 06	16 20	18 41	20 59	23 15	1 32	3 52	5 56
4	7 39	9 07	10 31	12 07	14 02	16 16	18 37	20 55	23 11	1 28	3 48	5 52
5	7 35	9 03	10 27	12 03	13 58	16 12	18 33	20 52	23 07	1 24	3 44	5 48
6	7 31	8 59	10 23	11 59	13 54	16 08	18 29	20 48	23 03	1 21	3 40	5 44
7	7 27	8 55	10 19	11 55	13 50	16 04	18 25	20 44	22 59	1 17	3 36	5 40
8	7 23	8 51	10 15	11 51	13 46	16 00	18 21	20 40	22 55	1 13	3 32	5 36
9	7 19	8 47	10 11	11 47	13 42	15 56	18 18	20 36	22 51	1 09	3 28	5 32
10	7 15	8 43	10 07	11 43	13 38	15 52	18 14	20 32	22 47	1 05	3 24	5 28
11	7 11	8 39	10 03	11 39	13 34	15 48	18 10	20 28	22 43	1 01	3 20	5 24
12	7 07	8 35	9 59	11 35	13 30	15 44	18 06	20 24	22 39	24 57	3 16	5 20
13	7 04	8 31	9 55	11 31	13 26	15 40	18 02	20 20	22 35	24 53	3 12	5 16
14	7 00	8 27	9 51	11 27	13 22	15 36	17 58	20 16	22 31	24 49	3 08	5 12
15	6 56	8 23	9 47	11 23	13 18	15 32	17 54	20 12	22 27	24 45	3 04	5 08
16	6 52	8 19	9 43	11 19	13 14	15 28	17 50	20 08	22 23	24 41	3 00	5 04
17	6 48	8 15	9 39	11 15	13 10	15 24	17 46	20 04	22 19	24 37	2 56	5 01
18	6 44	8 11	9 35	11 11	13 06	15 20	17 42	20 00	22 15	24 33	2 52	4 57
19	6 40	8 07	9 31	11 07	13 02	15 16	17 38	19 56	22 11	24 29	2 48	4 53
20	6 36	8 04	9 28	11 04	12 58	15 13	17 34	19 52	22 07	24 25	2 44	4 49
21	6 32	8 00	9 24	11 00	12 55	15 09	17 30	19 48	22 03	24 21	2 41	4 45
22	6 28	7 56	9 20	10 56	12 51	15 05	17 26	19 44	21 59	24 17	2 37	4 41
23	6 24	7 52	9 16	10 52	12 47	15 01	17 22	19 40	21 55	24 14	2 33	4 37
24	6 21	7 49	9 13	10 49	12 44	14 58	17 19	19 37	21 52	24 11	2 30	4 34
25	6 18	7 46	9 10	10 46	12 41	14 55	17 16	19 34	21 49	24 08	2 27	4 31
26	6 14	7 42	9 06	10 42	12 37	14 51	17 12	19 30	21 45	24 04	2 23	4 27
27	6 11	7 39	9 03	10 39	12 34	14 48	17 09	19 27	21 42	24 01	2 20	4 24
28	6 08	7 36	9 00	10 36	12 31	14 45	17 06	19 24	21 39	23 58	2 17	4 21
29	6 04	7 32	8 56	10 32	12 27	14 41	17 02	19 20	21 35	23 54	2 13	4 17
मार्च	6 00	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

मार्च — दैनिक लग्न सारणी मार्च भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.
1	7 28	8 53	10 28	12 23	14 37	16 58	19 16	21 31	23 50	2 09	4 13	5 57
2	7 24	8 49	10 24	12 19	14 33	16 54	19 12	21 27	23 46	2 05	4 09	5 53
3	7 21	8 45	10 21	12 16	14 30	16 50	19 08	21 23	23 42	2 01	4 05	5 49
4	7 17	8 41	10 17	12 12	14 26	16 46	19 04	21 19	23 38	1 57	4 01	5 45
5	7 13	8 37	10 13	12 08	14 22	16 42	19 00	21 15	23 35	1 53	3 58	5 41
6	7 09	8 33	10 09	12 04	14 18	16 38	18 56	21 11	23 31	1 49	3 54	5 37
7	7 05	8 29	10 05	12 00	14 14	16 34	18 52	21 08	23 27	1 45	3 50	5 33
8	7 01	8 25	10 01	11 56	14 10	16 30	18 48	21 04	23 23	1 41	3 46	5 29
9	6 57	8 21	9 57	11 52	14 06	16 27	18 45	21 00	23 19	1 38	3 42	5 25
10	6 53	8 17	9 53	11 48	14 02	16 23	18 41	20 56	23 15	1 34	3 38	5 21
11	6 49	8 13	9 49	11 44	13 58	16 19	18 37	20 52	23 11	1 30	3 34	5 17
12	6 45	8 09	9 45	11 40	13 54	16 15	18 33	20 48	23 08	1 26	3 30	5 14
13	6 41	8 05	9 41	11 36	13 50	16 11	18 29	20 44	23 04	1 23	3 27	5 10
14	6 37	8 01	9 37	11 32	13 46	16 07	18 25	20 40	23 00	1 19	3 23	5 06
15	6 33	7 57	9 33	11 28	13 42	16 03	18 21	20 36	22 56	1 15	3 19	5 02
16	6 29	7 53	9 29	11 24	13 38	15 59	18 17	20 32	22 52	1 11	3 15	4 58
17	6 25	7 49	9 25	11 20	13 34	15 55	18 13	20 28	22 48	1 07	3 11	4 54
18	6 21	7 45	9 21	11 16	13 30	15 51	18 09	20 24	22 44	1 03	3 07	4 50
19	6 17	7 41	9 17	11 12	13 26	15 47	18 05	20 20	22 40	0 59	3 03	4 46
20	6 13	7 37	9 13	11 08	13 23	15 43	18 01	20 16	22 36	0 55	2 59	4 42
21	6 09	7 33	9 09	11 04	13 19	15 39	17 57	20 12	22 32	0 51	2 55	4 38
22	6 05	7 29	9 05	11 00	13 15	15 35	17 53	20 08	22 28	0 47	2 51	4 34
23	6 01	7 26	9 01	10 56	13 11	15 31	17 49	20 04	22 24	0 43	2 47	4 30
24	5 57	7 22	8 57	10 53	13 07	15 27	17 45	20 00	22 20	0 39	2 43	4 27
25	5 53	7 18	8 53	10 49	13 03	15 23	17 41	19 56	22 16	0 35	2 39	4 23
26	5 49	7 14	8 49	10 45	12 59	15 19	17 37	19 53	22 12	0 31	2 35	4 19
27	5 45	7 10	8 46	10 41	12 55	15 15	17 33	19 49	22 08	0 27	2 31	4 15
28	5 41	7 06	8 42	10 37	12 51	15 11	17 29	19 45	22 04	0 23	2 28	4 11
29	5 37	7 02	8 38	10 33	12 47	15 07	17 25	19 41	22 00	0 19	2 24	4 07
30	5 34	6 58	8 34	10 29	12 44	15 03	17 21	19 37	21 56	0 15	2 20	4 03
31	5 30	6 54	8 30	10 25	12 40	14 59	17 17	19 33	21 52	0 11	2 16	3 59
अप्रै	5 26											

अप्रैल — दैनिक लग्न सारणी अप्रैल भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.
1	6 50	8 26	10 21	12 36	14 55	17 13	19 29	21 48	0 07	2 12	3 55	5 22
2	6 46	8 22	10 17	12 32	14 51	17 09	19 25	21 44	0 03	2 08	3 51	5 18
3	6 42	8-18	10 13	12 28	14 47	17 05	19 21	21 40	23 59	2 04	3 47	5 14
4	6 38	8 14	10 09	12 24	14 43	17 01	19 18	21 36	23 55	2 00	3 43	5 10
5	6 34	8 10	10 05	12 20	14 39	16 57	19 14	21 33	23 52	1 56	3 39	5 06
6	6 31	8 07	10 01	12 16	14 35	16 53	19 10	21 29	23 48	1 52	3 35	5 02
7	6 27	8 03	9 58	12 12	14 31	16 49	19 06	21 25	23 44	1 48	3 31	4 58
8	6 23	7 59	9 54	12 08	14 27	16 46	19 02	21 21	23 40	1 44	3 27	4 54
9	6 19	7 55	9 50	12 04	14 23	16 42	18 58	21 17	23 36	1 40	3 23	4 51
10	6 15	7 51	9 46	12 00	14 20	16 38	18 54	21 13	23 32	1 36	3 19	4 47
11	6 11	7 47	9 42	11 56	14 16	16 34	18 50	21 09	23 28	1 32	3 15	4 43
12	6 07	7 43	9 38	11 52	14 12	16 30	18 46	21 05	23 24	1 28	3 11	4 39
13	6 03	7 39	9 34	11 48	14 08	16 26	18 42	21 01	23 20	1 24	3 07	4 35
14	5 59	7 35	9 30	11 44	14 04	16 22	18 38	20 57	23 16	1 20	3 03	4 31
15	5 55	7 31	9 26	11 41	14 00	16 18	18 34	20 53	23 12	1 16	2 59	4 27
16	5 51	7 27	9 22	11 37	13 56	16 14	18 30	20 49	23 08	1 12	2 55	4 23
17	5 47	7 23	9 18	11 33	13 52	16 10	18 26	20 45	23 04	1 08	2 51	4 19
18	5 43	7 19	9 15	11 29	13 49	16 06	18 23	20 41	23 00	1 04	2 47	4 15
19	5 39	7 15	9 11	11 25	13 45	16 02	18 19	20 37	22 56	1 00	2 43	4 11
20	5 35	7 11	9 07	11 21	13 41	15 58	18 15	20 33	22 52	00 56	2 39	4 07
21	5 31	7 07	9 03	11 17	13 37	15 54	18 11	20 29	22 49	00 52	2 35	4 03
22	5 27	7 03	8 59	11 13	13 33	15 50	18 07	20 25	22 45	00 48	2 31	3 59
23	5 23	6 59	8 55	11 09	13 29	15 46	18 03	20 22	22 41	00 44	2 27	3 55
24	5 19	6 55	8 51	11 05	13 25	15 42	17 59	20 18	22 37	00 40	2 23	3 51
25	5 15	6 51	8 47	11 01	13 21	15 38	17 55	20 14	22 33	00 36	2 19	3 47
26	5 11	6 47	8 43	10 57	13 17	15 34	17 51	20 10	22 29	00 32	2 15	3 43
27	5 07	6 44	8 39	10 53	13 13	15 30	17 47	20 06	22 25	00 28	2 11	3 39
28	5 03	6 40	8 35	10 49	13 10	15 26	17 43	20 02	22 21	00 24	2 07	3 35
29	4 59	6 36	8 31	10 45	13 06	15 22	17 39	19 58	22 17	00 20	2 03	3 31
30	4 55	6 32	8 27	10 41	13 02	15 19	17 35	19 54	22 13	00 17	1 59	3 27
मई	4 51											

दैनिक लग्न सारणी मई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

तिथि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 28	8 23	10 37	12 58	15 15	17 31	19 50	22 09	00 13	1 56	3 23	4 47
2	6 24	8 19	10 33	12 54	15 11	17 27	19 46	22 05	00 09	1 52	3 19	4 44
3	6 20	8 15	10 29	12 50	15 7	17 24	19 42	22 01	00 05	1 48	3 16	4 40
4	6 16	8 11	10 25	12 46	15 3	17 20	19 38	21 57	00 01	1 44	3 12	4 36
5	6 12	8 07	10 21	12 42	14 59	17 16	19 34	21 53	23 57	1 40	3 08	4 32
6	6 08	8 03	10 17	12 38	14 55	17 12	19 30	21 49	23 53	1 36	3 04	4 28
7	6 04	7 59	10 13	12 34	14 51	17 08	19 26	21 45	23 49	1 32	3 00	4 24
8	6 00	7 55	10 09	12 30	14 47	17 04	19 22	21 41	23 45	1 28	2 56	4 20
9	5 56	7 51	10 05	12 26	14 43	17 00	19 18	21 37	23 41	1 24	2 52	4 16
10	5 52	7 47	10 01	12 22	14 39	16 56	19 14	21 33	23 37	1 20	2 48	4 12
11	5 48	7 44	9 57	12 18	14 35	16 52	19 10	21 29	23 33	1 16	2 44	4 08
12	5 44	7 40	9 53	12 14	14 31	16 48	19 06	21 25	23 29	1 12	2 40	4 04
13	5 40	7 36	9 49	12 10	14 28	16 44	19 02	21 21	23 25	1 08	2 36	4 00
14	5 36	7 32	9 45	12 06	14 24	16 40	18 58	21 17	23 21	1 04	2 32	3 56
15	5 32	7 28	9 41	12 02	14 20	16 36	18 54	21 13	23 17	1 00	2 28	3 52
16	5 28	7 24	9 37	11 58	14 16	16 32	18 50	21 09	23 13	24 56	2 24	3 48
17	5 24	7 20	9 33	11 54	14 12	16 28	18 46	21 05	23 09	24 52	2 20	3 44
18	5 20	7 16	9 29	11 50	14 08	16 24	18 42	21 01	23 05	24 48	2 16	3 40
19	5 16	7 12	9 25	11 46	14 04	16 20	18 38	20 57	23 01	24 44	2 12	3 36
20	5 12	7 08	9 21	11 42	14 00	16 16	18 34	20 53	22 57	24 40	2 09	3 32
21	5 08	7 04	9 17	11 38	13 56	16 12	18 30	20 49	22 53	24 36	2 05	3 28
22	5 04	7 00	9 13	11 34	13 52	16 08	18 26	20 45	22 49	24 32	2 01	3 24
23	5 00	6 56	9 09	11 30	13 48	16 04	18 22	20 41	22 45	24 28	1 57	3 20
24	4 56	6 52	9 05	11 26	13 44	16 01	18 19	20 38	22 42	24 25	1 53	3 16
25	4 52	6 48	9 01	11 22	13 40	15 57	18 15	20 34	22 38	24 21	1 49	3 12
26	4 48	6 44	8 58	11 18	13 36	15 53	18 11	20 30	22 34	24 17	1 45	3 08
27	4 44	6 40	8 54	11 14	13 32	15 49	18 07	20 26	22 30	24 13	1 41	3 04
28	4 40	6 36	8 50	11 10	13 28	15 45	18 03	20 22	22 26	24 09	1 37	3 01
29	4 36	6 32	8 46	11 06	13 24	15 41	17 59	20 18	22 22	24 05	1 33	2 57
30	4 33	6 28	8 42	11 02	13 20	15 37	17 55	20 14	22 18	24 01	1 29	2 53
31	4 29	6 24	8 38	10 58	13 16	15 33	17 51	20 10	22 14	23 57	1 25	2 49
जून	4 25	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दैनिक लग्न सारणी जून भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

तिथि	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं.मिं.	घं. मिं.
1	6 20	8 35	10 54	13 12	15 29	17 47	20 06	22 10	23 53	1 21	2 45	4 21
2	6 16	8 31	10 50	13 08	15 25	17 43	20 02	22 06	23 49	1 17	2 41	4 17
3	6 12	8 27	10 46	13 04	15 21	17 39	19 58	22 02	23 45	1 13	2 37	4 13
4	6 08	8 23	10 42	13 00	15 17	17 35	19 54	21 58	23 41	1 09	2 33	4 09
5	6 04	8 19	10 38	12 56	15 13	17 31	19 50	21 54	23 37	1 05	2 29	4 05
6	6 00	8 15	10 34	12 52	15 09	17 27	19 46	21 50	23 33	1 01	2 25	4 01
7	5 57	8 11	10 31	12 48	15 05	17 23	19 42	21 46	23 29	24 57	2 21	3 58
8	5 53	8 07	10 27	12 44	15 01	17 19	19 39	21 43	23 26	24 53	2 17	3 54
9	5 49	8 03	10 23	12 40	14 58	17 16	19 35	21 39	23 22	24 49	2 13	3 50
10	5 45	7 59	10 19	12 37	14 54	17 12	19 31	21 35	23 18	24 46	2 09	3 46
11	5 41	7 55	10 15	12 33	14 50	17 08	19 27	21 31	23 14	24 42	2 05	3 42
12	5 37	7 51	10 11	12 29	14 46	17 04	19 23	21 27	23 10	24 38	2 02	3 38
13	5 33	7 47	10 07	12 25	14 42	17 00	19 19	21 23	23 06	24 34	1 58	3 34
14	5 29	7 43	10 03	12 21	14 38	16 56	19 15	21 19	23 02	24 30	1 54	3 30
15	5 25	7 39	9 59	12 17	14 34	16 52	19 11	21 15	22 58	24 26	1 50	3 26
16	5 21	7 35	9 55	12 13	14 30	16 48	19 07	21 11	22 54	24 22	1 46	3 22
17	5 17	7 31	9 51	12 09	14 26	16 44	19 03	21 07	22 50	24 18	1 42	3 18
18	5 13	7 27	9 47	12 05	14 22	16 40	18 59	21 03	22 46	24 14	1 38	3 14
19	5 09	7 23	9 43	12 02	14 18	16 36	18 55	20 59	22 42	24 10	1 34	3 10
20	5 05	7 19	9 39	11 58	14 14	16 32	18 51	20 55	22 38	24 06	1 30	3 06
21	5 01	7 15	9 36	11 54	14 10	16 28	18 47	20 51	22 34	24 02	1 26	3 02
22	4 57	7 11	9 32	11 50	14 06	16 24	18 43	20 47	22 30	23 58	1 22	2 58
23	4 53	7 07	9 28	11 46	14 02	16 20	18 39	20 43	22 26	23 54	1 18	2 54
24	4 49	7 03	9 24	11 42	13 58	16 16	18 36	20 39	22 22	23 51	1 15	2 50
25	4 46	6 59	9 20	11 38	13 54	16 13	18 32	20 35	22 18	23 47	1 11	2 46
26	4 42	6 55	9 16	1 134	13 50	16 09	18 28	20 31	22 14	23 43	1 07	2 43
27	4 38	6 51	9 12	11 30	13 46	16 05	18 24	20 27	22 10	23 39	1 03	2 39
28	4 34	6 47	9 09	11 26	13 43	16 01	18 20	20 23	22 06	23 35	24 59	2 35
29	4 30	6 43	9 05	11 23	13 39	15 57	18 16	20 20	22 02	23 31	24 55	2 31
30	4 26	6 39	9 01	11 19	13 35	15 54	18 13	20 16	21 59	23 28	24 52	2 28
जुला	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

जुलाई — दैनिक लग्न सारणी जुलाई भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	मिथुन घं. मिं.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.
1	6 35	8 57	11 15	13 31	15 50	18 09	20 13	21 56	23 24	24 48	2 24	4 18
2	6 31	8 53	11 11	13 27	15 46	18 05	20 9	21 52	23 20	24 44	2 20	4 14
3	6 27	8 49	11 07	13 23	15 42	18 01	20 5	21 48	23 16	24 40	2 16	4 10
4	6 24	8 46	11 04	13 19	15 38	17 57	20 01	21 44	23 12	24 36	2 12	4 06
5	6 20	8 42	11 00	13 15	15 34	17 53	19 57	21 40	23 08	24 32	2 08	4 02
6	6 16	8 38	10 56	13 11	15 30	17 49	19 53	21 36	23 04	24 28	2 04	3 58
7	6 12	8 34	10 52	13 07	15 26	17 46	19 49	21 32	23 00	24 24	2 00	3 55
8	6 09	8 30	10 48	13 04	15 22	17 42	19 46	21 28	22 56	24 21	1 56	3 51
9	6 05	8 26	10 44	13 00	15 18	17 38	19 42	21 24	22 53	24 17	1 53	3 47
10	6 01	8 22	10 40	12 56	15 15	17 34	19 38	21 21	22 49	24 13	1 49	3 43
11	5 57	8 18	10 36	12 52	15 11	17 30	19 34	21 17	22 45	24 09	1 45	3 39
12	5 53	8 14	10 32	12 48	15 07	17 26	19 30	21 13	22 41	24 05	1 41	3 36
13	5 49	8 10	10 28	12 45	15 03	17 22	19 26	21 09	22 37	24 01	1 37	3 32
14	5 45	8 06	10 25	12 41	14 59	17 18	19 22	21 05	22 34	23 57	1 33	3 28
15	5 41	8 03	10 21	12 37	14 55	17 14	19 19	21 02	22 30	23 54	1 30	3 24
16	5 37	7 59	10 17	12 33	14 51	17 10	19 15	20 58	22 26	23 50	1 26	3 20
17	5 34	7 55	10 13	12 29	14 47	17 06	19 11	20 54	22 22	23 46	1 22	3 16
18	5 30	7 51	10 09	12 25	14 43	17 02	19 07	20 50	22 18	23 42	1 18	3 12
19	5 26	7 47	10 05	12 21	14 40	16 58	19 03	20 46	22 14	23 38	1 14	3 08
20	5 22	7 43	10 02	12 17	14 36	16 54	18 59	20 42	22 10	23 34	1 10	3 04
21	5 18	7 39	9 58	12 13	14 32	16 51	18 55	20 38	22 06	23 30	1 06	3 00
22	5 15	7 35	9 54	12 09	14 28	16 47	18 51	20 34	22 02	23 26	1 02	2 56
23	5 11	7 32	9 50	12 05	14 24	16 43	18 47	20 30	21 58	23 22	24 58	2 53
24	5 07	7 28	9 46	12 01	14 20	16 39	18 43	20 26	21 55	23 18	24 54	2 49
25	5 03	7 24	9 42	11 58	14 16	16 35	18 40	20 23	21 51	23 14	24 50	2 45
26	5 00	7 20	9 38	11 54	14 12	16 31	18 36	20 19	21 47	23 10	24 46	2 41
27	4 56	7 16	9 34	11 50	14 08	16 27	18 32	20 15	21 43	23 06	24 42	2 37
28	4 52	7 12	9 30	11 46	14 04	16 23	18 28	20 11	21 39	23 02	24 38	2 34
29	4 48	7 08	9 27	11 42	14 00	16 19	18 24	20 07	21 35	22 58	24 35	2 30
30	4 44	7 04	9 23	11 38	13 56	16 15	18 20	20 03	21 31	22 54	24 31	2 26
31	4 40	7 00	9 19	11 34	13 53	16 12	18 16	19 59	21 27	22 50	24 27	2 22
अग	4 36	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अगस्त — दैनिक लग्न सारणी अगस्त भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कर्क घं. मिं.	सिंह घं. मिं.	कन्या घं. मिं.	तुला घं. मिं.	वृश्चिक घं. मिं.	धनु घं. मिं.	मकर घं. मिं.	कुम्भ घं. मिं.	मीन घं. मिं.	मेष घं. मिं.	वृष घं. मिं.	मिथुन घं. मिं.
1	6 56	9 15	11 31	13 49	16 08	18 12	19 55	21 23	22 47	24 23	2 18	4 32
2	6 52	9 11	11 27	13 45	16 05	18 09	19 51	21 19	22 43	24 19	2 14	4 28
3	6 48	9 07	11 23	13 42	16 01	18 05	19 47	21 15	22 39	24 15	2 10	4 24
4	6 44	9 03	11 19	13 38	15 57	18 01	19 44	21 11	22 35	24 11	2 06	4 20
5	6 40	9 00	11 15	13 34	15 53	17 57	19 40	21 08	22 31	24 08	2 02	4 16
6	6 36	8 56	11 12	13 30	15 49	17 53	19 36	21 04	22 28	24 04	1 58	4 13
7	6 32	8 52	11 08	13 26	15 45	17 49	19 32	21 00	22 24	24 00	1 54	4 09
8	6 29	8 48	11 04	13 22	15 41	17 45	19 28	20 56	22 20	23 56	1 50	4 05
9	6 25	8 44	11 00	13 18	15 37	17 42	19 24	20 52	22 16	23 52	1 46	4 01
10	6 21	8 41	10 56	13 14	15 33	17 38	19 21	20 48	22 12	23 48	1 43	3 57
11	6 17	8 37	10 53	13 10	15 29	17 34	19 17	20 44	22 08	23 44	1 39	3 54
12	6 13	8 33	10 49	13 06	15 25	17 30	19 13	20 40	22 04	23 40	1 35	3 50
13	6 09	8 29	10 45	13 02	15 21	17 26	19 09	20 36	22 00	23 36	1 32	3 46
14	6 05	8 25	10 41	12 59	15 17	17 22	19 05	20 33	21 56	23 32	1 28	3 42
15	6 01	8 21	10 37	12 55	15 14	17 18	19 01	20 29	21 53	23 29	1 24	3 38
16	5 57	8 17	10 33	12 51	15 10	17 14	18 57	20 25	21 49	23 25	1 20	3 34
17	5 54	8 13	10 29	12 47	15 06	17 10	18 53	20 21	21 45	23 21	1 16	3 30
18	5 50	8 09	10 25	12 43	15 02	17 06	18 49	20 17	21 41	23 17	1 12	3 26
19	5 46	8 05	10 21	12 39	14 58	17 02	18 45	2013	21 37	23 13	1 08	3 22
20	5 42	8 02	10 17	12 35	14 54	16 58	18 41	20 09	21 33	23 09	1 04	3 18
21	5 39	7 58	10 13	12 31	14 50	16 54	18 37	20 05	21 29	23 05	1 00	3 14
22	5 35	7 54	10 09	12 27	14 46	16 50	18 33	20 01	21 25	23 01	0 56	3 10
23	5 31	7 50	10 05	12 23	14 42	16 46	18 21	19 57	21 21	22 57	0 52	3 06
24	5 27	7 46	10 02	12 19	14 38	16 42	18 25	19 53	21 17	22 53	0 48	3 02
25	5 23	7 42	9 58	12 15	14 34	16 38	18 21	19 49	21 13	22 49	0 44	2 58
26	5 19	7 38	9 45	12 11	14 30	16 34	18 17	19 45	21 09	22 45	0 41	2 54
27	5 15	7 34	9 50	12 08	14 27	16 31	18 14	19 42	21 06	22 42	0 37	2 50
28	5 11	7 30	9 46	12 04	14 23	16 27	18 10	19 38	21 02	22 38	0 33	2 46
29	5 07	7 26	9 42	12 00	14 19	16 23	18 06	19 34	20 58	22 34	0 29	2 42
30	5 03	7 22	9 38	11 56	14 15	16 19	18 02	19 30	20 54	22 30	0 25	2 38
31	4 59	7 18	9 34	11 52	14 11	16 15	17 58	19 26	20 50	22 26	0 21	2 34
सितं	4 55	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

सितंबर — दैनिक लग्न सारणी सितंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	सिंह घं. मि.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.
1	7 14	9 30	11 48	14 07	16 11	17 54	19 22	20 46	22 22	0 17	2 31	4 52
2	7 10	9 26	11 44	14 03	16 07	17 50	19 18	20 42	22 18	0 13	2 27	4 48
3	7 06	9 22	11 40	13 59	16 03	17 46	19 14	20 38	22 14	0 09	2 23	4 44
4	7 02	9 18	11 36	13 55	15 59	17 42	19 10	20 34	22 10	0 05	2 19	4 40
5	6 58	9 14	11 32	13 51	15 55	17 38	19 06	20 30	22 06	0 01	2 15	4 36
6	6 54	9 10	11 28	13 47	15 51	17 34	19 02	20 26	22 02	23 57	2 11	4 32
7	6 50	9 06	11 24	13 43	15 47	17 30	18 58	20 22	21 58	23 53	2 07	4 28
8	6 46	9 02	11 20	13 39	15 43	17 26	18 54	20 18	21 54	23 49	2 03	4 24
9	6 42	8 58	11 16	13 35	15 39	17 22	18 50	20 14	21 50	23 45	1 59	4 20
10	6 38	8 54	11 12	13 31	15 35	17 18	18 46	20 10	21 46	23 41	1 55	4 16
11	6 34	8 50	11 08	13 27	15 31	17 14	18 42	20 06	21 42	23 37	1 51	4 12
12	6 30	8 46	11 04	13 23	15 27	17 10	18 38	20 02	21 38	23 33	1 47	4 08
13	6 26	8 42	11 00	13 19	15 23	17 06	18 34	19 58	21 34	23 29	1 43	4 04
14	6 22	8 38	10 56	13 15	15 19	17 02	18 30	19 54	21 30	23 25	1 39	4 00
15	6 18	8 34	10 52	13 11	15 15	16 58	18 26	19 50	21 26	23 21	1 35	3 56
16	6 14	8 30	10 48	13 07	15 11	16 54	18 22	19 46	21 22	23 17	1 31	3 52
17	6 10	8 26	10 44	13 03	15 07	16 50	18 18	19 42	21 18	23 13	1 27	3 48
18	6 06	8 22	10 40	12 59	15 03	16 46	18 14	19 38	21 14	23 09	1 23	3 44
19	6 02	8 18	10 36	12 55	14 59	16 42	18 10	19 34	21 10	23 05	1 19	3 40
20	5 58	8 14	10 32	12 51	14 55	16 38	18 06	19 30	21 06	23 01	1 15	3 36
21	5 54	8 10	10 28	12 47	14 51	16 34	18 02	19 26	21 02	22 57	1 11	3 32
22	5 50	8 06	10 24	12 43	14 47	16 30	17 58	19 22	20 58	22 53	1 07	3 28
23	5 46	8 02	10 20	12 39	14 43	16 26	17 54	19 18	20 54	22 49	1 03	3 24
24	5 42	7 58	10 16	12 35	14 39	16 22	17 50	19 14	20 50	22 45	0 59	3 20
25	5 38	7 54	10 12	12 31	14 35	16 18	17 46	19 10	20 46	22 41	0 55	3 16
26	5 34	7 50	10 08	12 27	14 31	16 14	17 42	19 06	20 42	22 37	0 51	3 12
27	5 30	7 46	10 04	12 23	14 27	16 10	17 38	19 02	20 38	22 33	0 47	3 08
28	5 26	7 42	10 00	12 19	14 23	16 06	17 34	18 58	20 34	22 29	0 43	3 04
29	5 22	7 38	9 56	12 15	14 19	16 02	17 30	18 54	20 30	22 25	0 39	3 00
30	5 18	7 34	9 53	12 12	14 16	15 59	17 27	18 51	20 27	22 22	0 36	2 57
अक्टू	5 15	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अक्टूबर — दैनिक लग्न सारणी अक्तूबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

ता.	कन्या घं. मि.	तुला घं. मि.	वृश्चिक घं. मि.	धनु घं. मि.	मकर घं. मि.	कुम्भ घं. मि.	मीन घं. मि.	मेष घं. मि.	वृष घं. मि.	मिथुन घं. मि.	कर्क घं. मि.	सिंह घं. मि.
1	7 30	9 49	12 08	14 12	15 55	17 23	18 47	20 23	22 18	0 32	2 53	5 11
2	7 26	9 45	12 04	14 08	15 51	17 19	18 43	20 19	22 14	0 28	2 49	5 07
3	7 23	9 42	12 00	14 04	15 47	17 15	18 39	20 15	22 10	0 24	2 45	5 03
4	7 19	9 38	11 56	14 00	15 43	17 11	18 35	20 11	22 06	0 20	2 41	4 59
5	7 15	9 34	11 52	13 56	15 39	17 07	18 31	20 07	22 02	0 16	2 37	4 55
6	7 11	9 30	11 48	13 52	15 35	17 03	18 27	20 03	21 58	0 12	2 33	4 51
7	7 07	9 26	11 44	13 48	15 31	16 59	18 23	19 59	21 54	0 08	2 29	4 47
8	7 03	9 22	11 40	13 44	15 27	16 55	18 19	19 55	21 50	0 04	2 25	4 43
9	6 59	9 18	11 36	13 40	15 23	16 51	18 15	19 51	21 46	24 00	2 21	4 39
10	6 55	9 14	11 32	13 36	15 19	16 47	18 11	19 47	21 42	23 56	2 17	4 35
11	6 51	9 10	11 28	13 32	15 15	16 43	18 07	19 43	21 38	23 52	2 13	4 31
12	6 47	9 06	11 24	13 28	15 11	16 39	18 03	19 39	21 34	23 48	2 09	4 27
13	6 43	9 02	11 20	13 24	15 07	16 35	17 59	19 35	21 30	23 44	2 05	4 23
14	6 39	8 58	11 16	13 20	15 03	16 31	17 55	19 31	21 26	23 40	2 01	4 19
15	6 35	8 54	11 12	13 16	14 59	16 27	17 51	19 27	21 22	23 36	1 57	4 15
16	6 31	8 50	11 08	13 12	14 55	16 23	17 47	19 23	21 18	23 32	1 53	4 11
17	6 27	8 46	11 04	13 08	14 51	16 19	17 43	19 19	21 14	23 28	1 49	4 07
18	6 23	8 42	11 00	13 04	14 47	16 15	17 39	19 15	21 10	23 24	1 45	4 03
19	6 19	8 38	10 56	13 00	14 43	16 11	17 35	19 11	21 06	23 20	1 41	3 59
20	6 15	8 34	10 52	12 56	14 39	16 07	17 31	19 07	21 02	23 16	1 37	3 55
21	6 11	8 30	10 48	12 52	14 35	16 03	17 27	19 03	20 58	23 12	1 33	3 51
22	6 07	8 26	10 44	12 48	14 31	15 59	17 23	18 59	20 54	23 08	1 29	3 47
23	6 03	8 22	10 40	12 44	14 27	15 55	17 19	18 55	20 50	23 04	1 25	3 43
24	5 59	8 18	10 36	12 40	14 23	15 51	17 15	18 51	20 46	23 00	1 21	3 39
25	5 56	8 15	10 33	12 37	14 20	15 48	17 12	18 48	20 43	22 57	1 17	3 36
26	5 52	8 11	10 29	12 33	14 16	15 44	17 08	18 44	20 39	22 53	1 13	3 32
27	5 48	8 07	10 25	12 29	14 12	15 40	17 04	18 40	20 35	22 49	1 09	3 28
28	5 44	8 03	10 21	12 25	14 08	15 36	17 00	18 36	20 31	22 45	1 06	3 24
29	5 40	7 59	10 17	12 21	14 04	15 32	16 56	18 32	20 27	22 41	1 02	3 20
30	5 36	7 55	10 13	12 17	14 00	15 28	16 52	18 28	20 23	22 37	24 58	3 16
31	5 33	7 51	10 09	12 13	13 56	15 24	16 48	18 24	20 19	22 33	24 54	3 12
नवं.	5 29	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

नवंबर — दैनिक लग्न सारणी नवंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

नवंबर	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	7 47	10 6	12 10	13 53	15 21	16 44	18 20	20 15	22 29	0 50	3 08	5 25
2	7 43	10 2	12 06	13 49	15 17	16 40	18 16	20 11	22 25	0 46	3 04	5 21
3	7 39	9 58	12 02	13 45	15 13	16 37	18 13	20 08	22 22	0 43	3 00	5 17
4	7 35	9 54	11 58	13 41	15 09	16 33	18 09	20 04	22 18	0 39	2 56	5 13
5	7 31	9 50	11 54	13 37	15 05	16 29	18 05	20 00	22 15	0 35	2 52	5 09
6	7 27	9 46	11 50	13 33	15 01	16 25	18 01	19 56	22 10	0 31	2 48	5 05
7	7 24	9 42	11 46	13 29	14 57	16 21	17 57	19 52	22 06	0 27	2 45	5 01
8	7 20	9 38	11 42	13 25	14 53	16 17	17 53	19 48	22 02	0 23	2 41	4 57
9	7 16	9 34	11 38	13 21	14 49	16 13	17 49	19 44	21 58	0 19	2 37	4 53
10	7 12	9 30	11 34	13 17	14 45	16 09	17 45	19 40	21 54	0 15	2 33	4 49
11	7 08	9 26	11 30	13 13	14 41	16 05	17 41	19 36	21 50	0 11	2 29	4 45
12	7 04	9 22	11 26	13 09	14 37	16 01	17 37	19 32	21 46	0 07	2 25	4 41
13	7 00	9 18	11 22	13 05	14 33	15 57	17 33	19 28	21 42	0 03	2 21	4 37
14	6 56	9 14	11 28	13 01	14 29	15 53	17 29	19 24	21 38	23 59	2 17	4 33
15	6 52	9 10	11 14	12 57	14 25	15 49	17 25	19 20	21 34	23 55	2 13	4 29
16	6 48	9 06	11 10	12 53	14 21	15 45	17 21	19 16	21 30	23 51	2 09	4 25
17	6 43	9 02	11 06	12 49	14 17	15 41	17 17	19 12	21 26	23 47	2 05	4 21
18	6 39	8 58	11 02	12 45	14 13	15 37	17 23	19 08	21 22	23 43	2 01	4 17
19	6 35	8 54	10 58	12 41	14 09	15 33	17 09	19 04	21 18	23 39	1 57	4 13
20	6 31	8 50	10 54	12 37	14 05	15 29	17 05	19 00	21 14	23 35	1 53	4 09
21	6 27	8 46	10 50	12 33	14 01	15 25	17 01	18 56	21 10	23 31	1 49	4 05
22	6 23	8 43	10 47	12 30	13 58	15 22	16 58	18 53	21 07	23 28	1 46	4 02
23	6 20	8 39	10 43	12 26	13 54	15 18	16 54	18 49	21 03	23 24	1 42	3 58
24	6 16	8 35	10 39	12 22	13 50	15 14	16 50	18 45	20 59	23 20	1 38	3 54
25	6 12	8 31	10 35	12 18	13 46	15 10	16 46	18 41	20 55	23 16	1 34	3 50
26	6 08	8 28	10 31	12 14	13 42	15 06	16 42	18 37	20 51	23 12	1 30	3 46
27	6 04	8 23	10 27	12 10	13 38	15 02	16 38	18 33	20 47	23 08	1 26	3 42
28	6 00	8 19	10 23	12 06	13 34	14 58	16 34	18 29	20 43	23 04	1 22	3 38
29	5 56	8 16	10 20	12 03	13 31	14 55	16 31	18 26	20 40	23 01	1 19	3 35
30	5 53	8 12	10 16	11 59	13 27	14 51	16 27	18 22	20 36	22 57	1 15	3 31
दिसं	5 49	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

दिसंबर — दैनिक लग्न सारणी दिसंबर भा. स्टै. टा. समाप्ति काल दिल्ली DELHI

दिसंबर	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
ता.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
1	8 08	10 12	11 55	13 23	14 47	16 23	18 18	20 32	22 53	1 11	3 27	5 45
2	8 04	10 08	11 51	13 19	14 43	16 19	18 14	20 28	22 49	1 07	3 23	5 41
3	8 00	10 04	11 47	13 15	14 39	16 15	18 10	20 24	22 45	1 03	3 19	5 37
4	7 56	10 00	11 43	13 11	14 35	16 11	18 06	20 20	22 41	0 59	3 15	5 33
5	7 52	9 56	11 39	13 07	14 31	16 07	18 02	20 16	22 37	0 55	3 11	5 29
6	7 48	9 52	11 35	13 03	14 27	16 03	17 58	20 12	22 33	0 51	3 07	5 25
7	7 44	9 48	11 31	12 59	14 23	15 59	17 54	20 08	22 29	0 47	3 03	5 21
8	7 40	9 44	11 27	12 55	14 19	15 55	17 50	20 04	22 25	0 43	2 59	5 17
9	7 36	9 40	11 23	12 51	14 15	15 51	17 46	20 00	22 21	0 39	2 55	5 13
10	7 33	9 37	11 20	12 48	14 12	15 48	17 43	19 57	22 18	0 36	2 52	5 10
11	7 29	9 33	11 16	12 44	14 08	15 44	17 39	19 53	22 14	0 32	2 48	5 06
12	7 25	9 29	11 12	12 40	14 04	15 40	17 35	19 49	22 10	0 28	2 44	5 02
13	7 21	9 25	11 08	12 36	14 01	15 36	17 31	19 45	22 06	0 24	2 40	4 58
14	7 17	9 21	11 04	12 32	13 56	15 32	17 27	19 41	22 02	0 20	2 36	4 54
15	7 13	9 17	11 00	12 28	13 52	15 28	17 23	19 37	21 58	0 16	2 32	4 50
16	7 09	9 13	10 56	12 24	13 48	15 24	17 19	19 33	21 54	0 12	2 28	4 46
17	7 05	9 09	10 52	12 21	13 44	15 20	17 15	19 29	21 50	0 08	2 24	4 42
18	7 11	9 05	10 49	12 17	13 41	15 16	17 11	19 25	21 46	0 04	2 20	4 38
19	6 58	9 01	10 45	12 13	13 36	15 12	17 07	19 21	21 42	0 00	2 16	4 34
20	6 53	8 57	10 41	12 09	13 32	15 08	17 03	19 17	21 38	23 56	2 12	4 30
21	6 49	8 53	10 37	12 05	13 28	15 04	16 59	19 13	21 34	23 52	2 09	4 26
22	6 45	8 49	10 33	12 01	13 24	15 00	16 55	19 10	21 30	23 49	2 05	4 22
23	6 41	8 45	10 29	11 57	13 20	14 56	16 51	19 06	21 26	23 45	2 01	4 18
24	6 37	8 42	10 25	11 53	13 16	14 52	16 48	19 02	21 23	23 41	1 57	4 14
25	6 33	8 38	10 21	11 49	13 12	14 48	16 44	18 58	21 19	23 37	1 53	4 10
26	6 30	8 34	10 17	11 45	13 09	14 44	16 40	18 54	21 15	23 33	1 49	4 06
27	6 26	8 30	10 13	11 41	13 05	14 41	16 36	18 50	21 11	23 29	1 45	4 03
28	6 22	8 26	10 09	11 37	13 01	14 37	16 32	18 46	21 07	23 25	1 41	3 59
29	6 18	8 22	10 05	11 33	12 57	14 33	16 28	18 42	21 03	23 21	1 37	3 55
30	6 14	8 18	10 01	11 29	12 53	14 29	16 24	18 38	20 59	23 17	1 33	3 51
31	6 10	8 14	9 57	11 25	12 49	14 25	16 20	18 34	20 55	23 13	1 29	3 47
जन.	6 06	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—	—

अनुकूल कार्य सिद्धि के लिए होरा ज्ञान चक्र (मुहूर्त्त) और फल ज्ञान

सर्वकार्य सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त श्रेयस्कर है। होरा मुहूर्त के अनुसार कार्यारम्भ करके प्रत्येक मनुष्य अशुभ समय में से होरा के अनुसार अपना कार्य सिद्ध कर सकता है। सात ग्रहों के सात होरे हैं। **सूर्य की होरा**-टेंडर देने व नौकरी व राजकार्य के चार्ज लेने-देने के लिए अच्छी होती है। **चंद्रमा की होरा**–सब कार्यों के लिए अच्छी होती है। **मंगल की होरा**-युद्ध, यात्रा, कर्ज देने, सभा-सोसाईटी में आना-जाना और मुकदमा के कार्यों में अच्छी होती है। **बुध की होरा**–में विद्यारम्भ, कोष संग्रह करना, नवीन व्यापार, नवीन लेख, पुस्तक प्रकाशन, प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने के लिए अच्छी होती है। **गुरु की होरा**–विवाह सम्बन्धी कार्यक्रम, बड़ों से मिलना, कोषसंग्रह, नवीन काव्य लेखन आदि के लिए शुभ है। **शुक्र की होरा**–यात्रा, भूषण, नवीन वस्त्र धारण, प्रवास, सौभाग्यवर्धक कार्य के लिए शुभ है। **शनि की होरा**–भूमि, मकान की नींव, नूतन गृहारम्भ, मशीनरी, मिल्स कार्यारम्भ समस्त स्थिर कार्य शुभ होते हैं।

प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो 'वार' होता है, उस वार के आरम्भ (अर्थात् सूर्योदय के समय) से १ घण्टा तक उसी वार को होरा रहता है। इसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार से छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरे बीतने पर अगले वार के सूर्योदय समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा उपयुक्त लिखी है, उसके अनुसार ही उस होरा में (१ घण्टे) में वह कार्य करेंगे तो अवश्य सफलता मिलेगी। ऋषियों ने होरा को 'क्षणवार' कहा है। वार से भी क्षण वार में प्रधानता मानी गई है। इसलिए यदि वार और 'क्षणवार' दोनों अनुकूल हों, तभी किसी कार्य को करना चाहिए। आवश्यकता में, यदि वार अनुकूल नहीं हो तो 'क्षणवार' अर्थात् होरा की अनुकूलता के अनुसार कार्य करना चाहिए। जैसे–पश्चिम की यात्रा रविवार में करने की आवश्यकता हो तो वार के अनुसार दिक्शूल पड़ेगा। इसलिए जिस समय सोम की होरा (क्षणवार) हो उस समय रविवार में पश्चिम की यात्रा की जा सकती है। नीचे चक्र के अनुसार रविवार को सोम की होरा सूर्योदय समय से ४, ११, १८ घण्टे बाद के एक-एक घण्टे तक आप सोम की होरा में जा सकते हैं। इसी प्रकार अन्य दिनों के होराओं के विषय में भी समझ लें।

वार	होरा १	होरा २	होरा ३	होरा ४	होरा ५	होरा ६	होरा ७	होरा ८	होरा ९	होरा १०	होरा ११	होरा १२
रवि.	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
सोम.	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
मंगल	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
बुध	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल
गुरु	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
शुक्र	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
शनि	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र

वार	होरा १३	होरा १४	होरा १५	होरा १६	होरा १७	होरा १८	होरा १९	होरा २०	होरा २१	होरा २२	होरा २३	होरा २४
रवि.	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध
सोम.	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु
मंगल	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र
बुध	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि
गुरु	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि
शुक्र	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम
शनि	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल	रवि	शुक्र	बुध	सोम	शनि	गुरु	मंगल

॥ चौघड़ियां मुहूर्त्त ॥

दिन की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	६.००
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	७.३०
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	९.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१०.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	१२.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१३.३०
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	१५.००
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	१६.३०

॥ चौघड़ियां मुहूर्त्त ॥

रात्रि की चौघड़ियां

रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	बृह	शुक्र	शनि	समय
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	१८.००
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	१९.३०
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	२१.००
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	२२.३०
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	२४.००
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	२५.३०
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	२७.००
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	२८.३०

शीघ्रता में कोई मुहूर्त्त न मिलता हो तो, तथा अचानक यात्रा करनी पड़ी तो, उस समय चौघड़ियां मुहूर्त्त का उपयोग करना श्रेयस्कर रहता है। दिन और रात्रि के आठ-आठ बराबर भाग करने से एक-एक चौघड़ियां मुहूर्त होता है। जब दिन और रात्रि बराबर अर्थात् १२ घण्टे का दिन तथा १२ घण्टे की रात्रि हो, तब एक चौघड़ियां मुहूर्त १½ घण्टे अर्थात् पौने चार घटी का होगा। इसलिए इसका नाम चौघड़ियां मुहूर्त पड़ा। रविवार, चंद्रवार आदि वार सूर्योदय से प्रारम्भ होकर अगले दिन सूर्योदय तक रहता है। प्रत्येक वार के सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय उस वार का दिनमान तथा सूर्यास्त से अग्रिम सूर्योदय तक का समय 'रात्रिमान' होता है। दिनमान और रात्रिमान में सू. उ. तथा सू. अ. के अन्तर आने के कारण घटते-बढ़ते रहते हैं। परन्तु 'वार सदैव' २४ घण्टा अर्थात् ६० घटी का होता है। रात्रिमान जानने के लिए पंचांगदिवाकर में दिए गए दिनमान को ६० घटी में घटा दें। जिस दिन यात्रा करनी हो उस दिन के दिनमान के अष्टमांश घटी पल का घण्टा मिन्ट बनाकर उस दिन के सूर्योदय समय में जोड़ते जाएँ तो क्रमशः उस दिन की आठों चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा। इसी प्रकार जिस दिन रात्रि में यात्रा करनी हो तो उस दिन के रात्रिमान के अष्टमांश घटी-पल का घण्टा मिन्ट बनाकर सूर्यास्त समय में जोड़ते जाने से क्रमाशः रात्रि की प्रत्येक चौघड़ियों का समय ज्ञात हो जाएगा तथा शुभाशुभ जानने के लिए प्रत्येक वार के नीचे तथा चौघड़ियां के सामने तालिका में देखें। **टिप्पणी**--सदैव चर, लाभ, अमृत एवं शुभ चौघड़ियों में ही शुभ कार्य का आरम्भ करना श्रेष्ठ रहता है।

किसी ग्रह के अंश कलादि स्पष्ट के द्वारा नक्षत्र-पाद (चरण) आरम्भ ज्ञात करना (प्रारम्भ काल)

सूर्य चन्द्रादि ग्रह अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों के क्रांतिवृत्त (Zodiac = 360°) को पूरा परिभ्रमण करने में अलग-अलग समय लेते हैं। ३६० अंश को२७ द्वारा भाग देने से प्रति नक्षत्र का मध्यम मान १३ अंश २० कला बनता है तथा एक नक्षत्र के चार चरण (पाद) होने से प्रत्येक नक्षत्र पाद को भोग्य मान ३°-२०' (अंश कला) होगा (१३°-२०') ÷ 4 = 3°-20' शून्य से प्रारम्भ होकर प्रत्येक ग्रह इसी भान्ति क्रमानुसार नक्षत्र चरण राशि आदि परिवर्तन करता है। अधिक व्याख्या हेतु देखें ज्योतिष तत्त्व।

रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि	रा. अं. क.	नक्षत्रपाद राशि
०-००-००	अश्विनी (१) मेषे	४-००-००	मघा (१) सिंहे	८-००-००	मूल (१) धनु
०-०३-२०	.. (२) ..	४-०३-२०	.. (२) ..	८-०३-२०	.. (२) ..
०-०६-४०	.. (३) ..	४-०६-४०	.. (३) ..	८-०६-४०	.. (३) ..
०-१०-००	.. (४) ..	४-१०-००	.. (४) ..	८-१०-००	.. (४) ..
०-१३-२०	भरणी (१) ..	४-१३-२०	पू.फा. (१) ..	८-१३-२०	पू.षा. (१) ..
०-१६-४०	.. (२) ..	४-१६-४०	.. (२) ..	८-१६-४०	.. (२) ..
०-२०-००	.. (३) ..	४-२०-००	.. (३) ..	८-२०-००	.. (३) ..
०-२३-२०	.. (४) ..	४-२३-२०	.. (४) ..	८-२३-२०	.. (४) ..
०-२६-४०	कृतिका (१) मेषे	४-२६-४०	उ.फा. (१) ..	८-२६-४०	उ.षा. (१) ..
१-००-००	.. (२) वृषे	५-००-००	.. (२) कन्या	९-००-००	उषा (२) मक
१-०३-२०	.. (३) ..	५-०३-२०	.. (३) ..	९-०३-२०	.. (३) ..
१-०६-४०	.. (४) ..	५-०६-४०	.. (४) ..	९-०६-४०	.. (४) ..
१-१०-००	रोहिणी (१) ..	५-१०-००	हस्ते (१) ..	९-१०-००	श्रव (१) ..
१-१३-२०	.. (२) ..	५-१३-२०	.. (२) ..	९-१३-२०	.. (२) ..
१-१६-४०	.. (३) ..	५-१६-४०	.. (३) ..	९-१६-४०	.. (३) ..
१-२०-००	.. (४) ..	५-२०-००	.. (४) ..	९-२०-००	.. (४) ..
१-२३-२०	मृगशिर (१) ..	५-२३-२०	चित्रा (१) ..	९-२३-२०	धनि (१) ..
१-२६-४०	.. (२) ..	५-२६-४०	.. (२) ..	९-२६-४०	.. (२) ..
२-००-००	.. (३) मिथुन	६-००-००	चित्रा (३) तुला	१०-००-००	.. (३) कुंभे
२-०३-२०	.. (४) ..	६-०३-२०	.. (४) ..	१०-०३-२०	.. (४) ..
२-०६-४०	आर्द्रा (१) ..	६-०६-४०	स्वाती (१) ..	१०-०६-४०	शतभिषा (१)..
२-१०-००	.. (२) ..	६-१०-००	.. (२) ..	१०-१०-००	.. (२) ..
२-१३-२०	.. (३) ..	६-१३-२०	.. (३) ..	१०-१३-२०	.. (३) ..
२-१६-४०	.. (४) ..	६-१६-४०	.. (४) ..	१०-१६-४०	.. (४) ..
२-२०-००	पुनर्वसु (१) ..	६-२०-००	विशाखा (१) ..	१०-२०-००	पूभा (१) ..
२-२३-२०	.. (२) ..	६-२३-२०	.. (२) ..	१०-२३-२०	.. (२) ..
२-२६-४०	.. (३) ..	६-२६-४०	.. (३) ..	१०-२६-४०	.. (३) ..
३-००-००	पुनर्वसु (४) कर्क	७-००-००	.. (४) वृश्चिके	११-००-००	पूभा (४) मीने
३-०३-२०	पुष्ये (१) ..	७-०३-२०	अनुराधा (१) ..	११-०३-२०	उ.भा. (१) ..
३-०६-४०	.. (२) ..	७-०६-४०	.. (२) ..	११-०६-४०	.. (२) ..
३-१०-००	.. (३) ..	७-१०-००	.. (३) ..	११-१०-००	.. (३) ..
३-१३-२०	.. (४) ..	७-१३-२०	.. (४) ..	११-१३-२०	उ.भा. (४) ..
३-१६-४०	आश्ले (१) ..	७-१६-४०	ज्ये. (१) ..	११-१६-४०	रेवती (१) ..
३-२०-००	.. (२) ..	७-२०-००	.. (२) ..	११-२०-००	.. (२) ..
३-२३-२०	.. (३) ..	७-२३-२०	.. (३) ..	११-२३-२०	.. (३) ..
३-२६-४०	.. (४) ..	७-२६-४०	.. (४) ..	११-२६-४०	रेवती (४) ..
				००-००-००	अश्वि (१) मेषे

दैनिक लग्न सारणी में वार्षिक संस्कार

आगामी पृष्ठों में दी गई दैनिक लग्न सारणी 31°-19′ अक्षांश जालन्धर, एवं 24°-00′ अयनांश पर आधारित है। इसमें प्रत्येक लग्न का समाप्तिकाल अंग्रेज़ी तारीखों के मुताबक, भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में लिखा गया है। सूर्योदयास्त एवं लग्नों के प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल का आधार मुख्यत: अंग्रेज़ी तारीखें ली गई हैं। चूंकि पृथ्वी की अयनगति में प्रतिवर्ष परिवर्तन होता है, इसके अतिरिक्त तीन वर्षों के पश्चात् हर चौथे वर्ष **लीप वर्ष** (अर्थात् **फरवरी मास** के दिन 28 की अपेक्षा 29 होते हैं) होने के कारण लग्नों के मान में प्रति वर्ष कुछ स्थूलता आ जाती है। इसको सूक्ष्म बनाने के लिए वार्षिक संस्कार सारणी दी जा रही है। यह वार्षिक संस्कार (+ या –) करने से अभीष्ट सन् एवं तारीख (Desired date and Year) का सूक्ष्मतम लग्न समाप्तिकाल प्राप्त होगा। वार्षिक संस्कार सारणी में लीप वर्ष (Leap Year) दो बार लिखा गया है। जिस सन् ईसवी के साथ (A) का निशान दिया गया है, उस संस्कार तालिका को जनवरी की 1 तारीख से 28 फरवरी तक के लिए जाने तथा जिस सन् के साथ (B) का निशान है, उस संस्कार तालिका का प्रयोग **1 मार्च से 31 दिसंबर** तक की अवधि के लिए करें।

29 फरवरी के लग्न मान के लिए 28 फरवरी के प्रत्येक लग्न (कुम्भ से मकर तक) समा. काल में से २/२ मिनट हीन (कम) कर देवे। लीप रहित जिस सन् के आगे कोई निशान नहीं दिया गया उस **संस्कार** तालिका का प्रयोग **१ जनवरी** से ३१ दिसंबर तक के महीनों के लिए करें। **उदाहरणार्थ**–ता. 16 अप्रैल, 2016 को मेष लग्न समाप्ति देखना है तो सारिणी में ता. 16 अप्रैल को 7/29 पर मेष लग्न समाप्त हुआ। अब इसमें वार्षिक संस्कार तालिका से हमें –1 मिनट प्राप्त हुए। अत: सन् 2016 में **मेष लग्न** 7/28 पर समाप्त होगा।

दैनिक लग्न सारिणी में वार्षिक संस्कार तालिका

सन् ई.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
१९९९	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०००A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०००B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००२	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००३	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००४A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००४B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२००६	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२००७	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२००८A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२००८B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२००९	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०	+०
२०१०	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०११	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१२A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१२B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	+०	–१	–१
२०१३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२०१४	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१	+१
२०१५	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२	+२
२०१६A	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३	+३
२०१६B	–१	–१	०	०	०	०	०	०	०	–१	–१	–१
२०१७	+०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

दैनिक लग्न सारणी अप्रैल-मई (वैशाख) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अप्रैल	वैशाख	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
13	१	७ ४१	९ ३५	११ ४९	१४ १२	१६ ३२	१८ ५०	२१ १२	२३ ३२	१ ३७	३ १८	४ ४३	६ ०४
14	२	७ ३७	९ ३१	११ ४५	१४ ०८	१६ २८	१८ ४६	२१ ०८	२३ २८	१ ३३	३ १४	४ ३९	६ ००
15	३	७ ३३	९ २७	११ ४२	१४ ०४	१६ २४	१८ ४२	२१ ०४	२३ २४	१ २९	३ १०	४ ३५	५ ५६
16	४	७ २९	९ २३	११ ३८	१४ ००	१६ २०	१८ ३८	२१ ००	२३ २०	१ २५	३ ०६	४ ३१	५ ५२
17	५	७ २५	९ १९	११ ३४	१३ ५७	१६ १७	१८ ३४	२० ५६	२३ १६	१ २१	३ ०२	४ २७	५ ४८
18	६	७ २१	९ १६	११ ३०	१३ ५३	१६ १३	१८ ३१	२० ५२	२३ १२	१ १७	२ ५८	४ २३	५ ४४
19	७	७ १७	९ १२	११ २६	१३ ४९	१६ ०९	१८ २७	२० ४८	२३ ०८	१ १३	२ ५४	४ १९	५ ४०
20	८	७ १३	९ ०८	११ २२	१३ ४५	१६ ०५	१८ २३	२० ४४	२३ ०४	१ ०९	२ ५०	४ १५	५ ३६
21	९	७ ०९	९ ०४	११ १८	१३ ४१	१६ ०१	१८ १९	२० ४०	२३ ०१	१ ०५	२ ४६	४ ११	५ ३२
22	१०	७ ०५	९ ००	११ १५	१३ ३७	१५ ५७	१८ १५	२० ३६	२२ ५७	१ ०१	२ ४२	४ ०७	५ २८
23	११	७ ०१	८ ५६	११ ११	१३ ३३	१५ ५३	१८ ११	२० ३३	२२ ५३	०० ५७	२ ३८	४ ०३	५ २४
24	१२	६ ५७	८ ५२	११ ०७	१३ २९	१५ ५०	१८ ०७	२० २९	२२ ४९	०० ५३	२ ३४	३ ५९	५ २१
25	१३	६ ५३	८ ४८	११ ०३	१३ २५	१५ ४६	१८ ०३	२० २५	२२ ४५	०० ४९	२ ३०	३ ५५	५ १७
26	१४	६ ४९	८ ४४	१० ५९	१३ २१	१५ ४२	१७ ५९	२० २१	२२ ४१	०० ४५	२ २७	३ ५१	५ १३
27	१५	६ ४६	८ ४०	१० ५५	१३ १७	१५ ३८	१७ ५५	२० १७	२२ ३७	०० ४१	२ २३	३ ४७	५ ०९
28	१६	६ ४२	८ ३६	१० ५१	१३ १४	१५ ३५	१७ ५१	२० १३	२२ ३३	०० ३७	२ १९	३ ४३	५ ०५
29	१७	६ ३८	८ ३२	१० ४७	१३ १०	१५ ३१	१७ ४७	२० ०९	२२ २९	०० ३३	२ १५	३ ३९	५ ०१
30	१८	६ ३४	८ २८	१० ४३	१३ ०६	१५ २७	१७ ४४	२० ०५	२२ २५	०० २९	२ ११	३ ३५	४ ५७
मई	१९	६ ३०	८ २४	१० ३९	१३ ०२	१५ २३	१७ ४०	२० ०१	२२ २१	०० २५	२ ०७	३ ३२	४ ५३
2	२०	६ २६	८ २०	१० ३५	१२ ५८	१५ १९	१७ ३६	१९ ५७	२२ १७	०० २१	२ ०३	३ २८	४ ५०
3	२१	६ २२	८ १६	१० ३१	१२ ५४	१५ १५	१७ ३२	१९ ५३	२२ १३	०० १८	१ ५९	३ २४	४ ४६
4	२२	६ १८	८ १२	१० २७	१२ ५०	१५ ११	१७ २८	१९ ४९	२२ ०९	०० १४	१ ५५	३ २०	४ ४२
5	२३	६ १४	८ ०८	१० २३	१२ ४६	१५ ०७	१७ २४	१९ ४५	२२ ०५	०० १०	१ ५१	३ १६	४ ३८
6	२४	६ १०	८ ०४	१० १९	१२ ४२	१५ ०३	१७ २०	१९ ४१	२२ ०१	०० ०६	१ ४७	३ १२	४ ३४
7	२५	६ ६	८ ००	१० १५	१२ ३८	१४ ५९	१७ १६	१९ ३७	२१ ५७	०० ०२	१ ४३	३ ०८	४ ३०
8	२६	६ २	७ ५६	१० ११	१२ ३४	१४ ५५	१७ १२	१९ ३३	२१ ५३	२३ ५८	१ ३९	३ ०४	४ २६
9	२७	५ ५८	७ ५२	१० ०७	१२ ३०	१४ ५१	१७ ०८	१९ २९	२१ ४९	२३ ५४	१ ३५	३ ००	४ २२
10	२८	५ ५४	७ ४८	१० ०३	१२ २६	१४ ४७	१७ ०४	१९ २५	२१ ४५	२३ ५०	१ ३१	२ ५६	४ १८
11	२९	५ ५०	७ ४५	९ ५९	१२ २२	१४ ४३	१७ ००	१९ २१	२१ ४१	२३ ४६	१ २७	२ ५२	४ १४
12	३०	५ ४६	७ ४१	९ ५५	१२ १८	१४ ३९	१६ ५६	१९ १७	२१ ३७	२३ ४२	१ २३	२ ४८	४ १०
13	३१	५ ४२	७ ३७	९ ५१	१२ १४	१४ ३५	१६ ५२	१९ १३	२१ ३३	२३ ३८	१ १९	२ ४४	४ ०६
14	ज्ये.	५ ३९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मई-जून (ज्येष्ठ) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मई	ज्येष्ठ	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	७ ३३	९ ४७	१२ ११	१४ ३१	१६ ४८	१९ ०९	२१ २९	२३ ३४	०१ १५	२ ४०	४ ०२	५ ३५
15	२	७ २९	९ ४४	१२ ०७	१४ २७	१६ ४५	१९ ०६	२१ २६	२३ ३०	०१ ११	२ ३६	३ ५८	५ ३१
16	३	७ २५	९ ४०	१२ ०३	१४ २३	१६ ४१	१९ ०२	२१ २२	२३ २६	०१ ०७	२ ३२	३ ५४	५ २७
17	४	७ २२	९ ३६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५८	२१ १८	२३ २२	०१ ०३	२ २८	३ ५०	५ २३
18	५	७ १८	९ ३२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ५४	२१ १४	२३ १८	०० ५९	२ २४	३ ४६	५ १९
19	६	७ १४	९ २८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ५०	२१ १०	२३ १५	०० ५६	२ २०	३ ४२	५ १५
20	७	७ १०	९ २४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४६	२१ ०६	२३ ११	०० ५२	२ १७	३ ३८	५ ११
21	८	७ ०६	९ २०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ४२	२१ ०२	२३ ०७	०० ४८	२ १३	३ ३४	५ ०७
22	९	७ ०२	९ १६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३८	२० ५८	२३ ०३	०० ४४	२ ०९	३ ३०	५ ०३
23	१०	६ ५९	९ १३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३५	२० ५५	२३ ००	०० ४१	२ ०५	३ २७	५ ००
24	११	६ ५५	९ ०९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ ३१	२० ५१	२२ ५६	०० ३७	२ ०२	३ २३	४ ५६
25	१२	६ ५१	९ ०५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २७	२० ४७	२२ ५२	०० ३३	१ ५८	३ १९	४ ५२
26	१३	६ ४७	९ ०१	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ २३	२० ४३	२२ ४८	०० २९	१ ५४	३ १५	४ ४८
27	१४	६ ४३	८ ५७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १९	२० ३९	२२ ४४	०० २५	१ ५०	३ ११	४ ४४
28	१५	६ ३९	८ ५३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १५	२० ३५	२२ ४०	०० २१	१ ४६	३ ०७	४ ४०
29	१६	६ ३५	८ ४९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ११	२० ३१	२२ ३६	०० १७	१ ४२	३ ०३	४ ३६
30	१७	६ ३१	८ ४५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०७	२० २७	२२ ३२	०० १३	१ ३८	२ ५९	४ ३२
31	१८	६ २७	८ ४१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१८ ०३	२० २३	२२ २८	०० ०९	१ ३४	२ ५५	४ २८
जून	१९	६ २३	८ ३७	११ ००	१३ २०	१५ ३८	१७ ५९	२० १९	२२ २४	०० ०५	१ ३०	२ ५१	४ २४
2	२०	६ १९	८ ३३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५५	२० १५	२२ २०	०० ०१	१ २६	२ ४७	४ २०
3	२१	६ १५	८ २९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ५१	२० ११	२२ १६	२३ ५७	१ २२	२ ४३	४ १६
4	२२	६ ११	८ २५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४७	२० ०७	२२ १२	२३ ५३	१ १८	२ ३९	४ १२
5	२३	६ ०७	८ २१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ४३	२० ०३	२२ ०८	२३ ४९	१ १४	२ ३५	४ ०८
6	२४	६ ०३	८ १८	१० ४१	१३ ०१	१५ १९	१७ ४०	२० ००	२२ ०५	२३ ४६	१ १०	२ ३२	४ ०४
7	२५	५ ५९	८ १४	१० ३७	१२ ५७	१५ १५	१७ ३६	१९ ५६	२२ ०१	२३ ४२	१ ०६	२ २८	४ ०१
8	२६	५ ५५	८ १०	१० ३३	१२ ५३	१५ ११	१७ ३२	१९ ५२	२१ ५७	२३ ३८	१ ०२	२ २४	३ ५७
9	२७	५ ५१	८ ०६	१० २९	१२ ४९	१५ ०७	१७ २८	१९ ४८	२१ ५३	२३ ३४	०० ५८	२ २०	३ ५३
10	२८	५ ४७	८ ०२	१० २५	१२ ४५	१५ ०३	१७ २४	१९ ४४	२१ ४९	२३ ३०	०० ५४	२ १६	३ ४९
11	२९	५ ४३	७ ५८	१० २१	१२ ४१	१४ ५९	१७ २०	१९ ४०	२१ ४५	२३ २६	०० ५०	२ १२	३ ४५
12	३०	५ ३९	७ ५४	१० १७	१२ ३७	१४ ५५	१७ १६	१९ ३६	२१ ४१	२३ २२	०० ४६	२ ०८	३ ४१
13	३१	५ ३५	७ ५०	१० १३	१२ ३३	१४ ५१	१७ १२	१९ ३२	२१ ३७	२३ १८	०० ४२	२ ०४	३ ३७
14	आ.	५ ३१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जून-जुलाई (आषाढ़) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जून	आषाढ़	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	७ ४६	१० ०९	१२ २९	१४ ४७	१७ ०८	१९ २८	२१ ३३	२३ १४	०० ३८	२ ००	३ ३३	५ २८
15	२	७ ४२	१० ०५	१२ २५	१४ ४३	१७ ०४	१९ २४	२१ २९	२३ १०	०० ३५	१ ५६	३ २९	५ २४
16	३	७ ३८	१० ०१	१२ २१	१४ ३९	१७ ००	१९ २०	२१ २५	२३ ०६	०० ३१	१ ५२	३ २५	५ २०
17	४	७ ३४	९ ५७	१२ १७	१४ ३५	१६ ५६	१९ १६	२१ २१	२३ ०२	००२७	१ ४८	३ २१	५ १६
18	५	७ ३०	९ ५३	१२ १३	१४ ३१	१६ ५२	१९ १२	२१ १७	२२ ५८	०० २३	१ ४४	३ १७	५ १२
19	६	७ २६	९ ४९	१२ ०९	१४ २७	१६ ४८	१९ ०८	२१ १३	२२ ५४	०० १९	१ ४०	३ १३	५ ०८
20	७	७ २२	९ ४५	१२ ०५	१४ २३	१६ ४४	१९ ०४	२१ ०९	२२ ५०	०० १५	१ ३६	३ ०९	५ ०४
21	८	७ १८	९ ४१	१२ ०१	१४ १९	१६ ४०	१९ ००	२१ ०५	२२ ४६	०० ११	१ ३२	३ ०५	५ ००
22	९	७ १५	९ ३७	११ ५७	१४ १५	१६ ३६	१८ ५६	२१ ०१	२२ ४२	०० ०७	१ २८	३ ०१	४ ५६
23	१०	७ ११	९ ३३	११ ५३	१४ ११	१६ ३२	१८ ५२	२० ५७	२२ ३८	०० ०३	१ २४	२ ५७	४ ५२
24	११	७ ०७	९ २९	११ ४९	१४ ०७	१६ २८	१८ ४८	२० ५३	२२ ३४	२३ ५९	१ २०	२ ५३	४ ४८
25	१२	७ ०३	९ २५	११ ४५	१४ ०३	१६ २४	१८ ४४	२० ४९	२२ ३०	२३ ५५	१ १६	२ ४९	४ ४४
26	१३	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ५९	१६ २०	१८ ४०	२० ४५	२२ २६	२३ ५१	१ १२	२ ४५	४ ४०
27	१४	६ ५५	९ १८	११ ३८	१३ ५६	१६ १७	१८ ३७	२० ४२	२२ २३	२३ ४८	१ ०९	२ ४२	४ ३७
28	१५	६ ५१	९ १४	११ ३४	१३ ५२	१६ १३	१८ ३३	२० ३८	२२ १९	२३ ४४	१ ०५	२ ३८	४ ३३
29	१६	६ ४७	९ १०	११ ३०	१३ ४८	१६ ०९	१८ २९	२० ३४	२२ १५	२३ ४०	१ ०१	२ ३४	४ २९
30	१७	६ ४३	९ ०६	११ २६	१३ ४४	१६ ०५	१८ २५	२० ३०	२२ ११	२३ ३६	०० ५७	२ ३०	४ २५
जुला.	१८	६ ३९	९ ०२	११ २२	१३ ४०	१६ ०१	१८ २१	२० २६	२२ ०७	२३ ३२	०० ५३	२ २६	४ २१
2	१९	६ ३५	८ ५८	११ १८	१३ ३६	१५ ५७	१८ १७	२० २२	२२ ०३	२३ २८	०० ४९	२ २२	४ १७
3	२०	६ ३१	८ ५४	११ १४	१३ ३२	१५ ५३	१८ १३	२० १८	२१ ५९	२३ २४	०० ४५	२ १८	४ १३
4	२१	६ २७	८ ५०	११ १०	१३ २८	१५ ४९	१८ ०९	२० १४	२१ ५५	२३ २०	०० ४१	२ १४	४ ०९
5	२२	६ २३	८ ४६	११ ०६	१३ २४	१५ ४५	१८०५	२० १०	२१ ५१	२३ १६	०० ३८	२ ११	४ ०५
6	२३	६ १९	८ ४२	११ ०२	१३ २०	१५ ४१	१८ ०१	२० ०६	२१ ४७	२३ १२	०० ३४	२ ०७	४ ०१
7	२४	६ १६	८ ३९	१० ५९	१३ १७	१५ ३८	१७ ५८	२० ०३	२१ ४४	२३ ०९	०० ३१	२ ०४	३ ५८
8	२५	६ १२	८ ३५	१० ५५	१३ १३	१५ ३४	१७ ५४	१९ ५९	२१ ४०	२३ ०५	०० २७	२ ००	३ ५४
9	२६	६ ०८	८ ३१	१० ५१	१३ ०९	१५ ३०	१७ ५०	१९ ५५	२१ ३६	२३ ०१	०० २३	१ ५६	३ ५०
10	२७	६ ०४	८ २७	१० ४७	१३ ०५	१५ २६	१७ ४६	१९ ५१	२१ ३२	२२ ५७	०० १९	१ ५२	३ ४६
11	२८	६ ००	८ २३	१० ४३	१३ ०१	१५ २२	१७ ४२	१९ ४७	२१ २८	२२ ५३	०० १५	१ ४८	३ ४२
12	२९	५ ५६	८ १९	१० ३९	१२ ५७	१५ १८	१७ ३८	१९ ४३	२१ २४	२२ ४९	०० ११	१ ४४	३ ३८
13	३०	५ ५२	८ १५	१० ३५	१२ ५३	१५ १४	१७ ३४	१९ ३९	२१ २०	२२ ४५	०० ०७	१ ४०	३ ३४
14	३१	५ ४८	८ ११	१० ३१	१२ ४९	१५ १०	१७ ३०	१९ ३५	२१ १६	२२ ४१	०० ०३	१ ३६	३ ३०
15	३२	५ ४४	८ ०७	१० २७	१२ ४५	१५ ०६	१७ २६	१९ ३१	२१ १२	२२ ३७	२३ ५९	१ ३२	३ २६
16	श्रा.	५ ४०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी जुला.-अग. (श्रावण) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

जुलाई	श्रावण	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ०३	१० २३	१२ ४१	१५ ०२	१७ २२	१९ २७	२१ ०८	२२ ३३	२३ ५५	१ २८	३ २२	५ ३६
17	२	७ ५९	१० १९	१२ ३७	१४ ५८	१७ १८	१९ २३	२१ ०४	२२ २९	२३ ५१	१ २४	३ १८	५ ३२
18	३	७ ५५	१० १५	१२ ३३	१४ ५४	१७ १४	१९ १९	२१ ००	२२ २५	२३ ४७	१ २०	३ १४	५ २८
19	४	७ ५२	१० १२	१२ ३०	१४ ५१	१७ ११	१९ १६	२० ५६	२२ २१	२३ ४३	१ १७	३ १०	५ २४
20	५	७ ४८	१० ०८	१२ २६	१४ ४७	१७ ०७	१९ १२	२० ५२	२२ १८	२३ ४०	१ १३	३ ६	५ २०
21	६	७ ४४	१० ०४	१२ २२	१४ ४३	१७ ०३	१९ ८	२० ४८	२२ १४	२३ ३६	१ ०९	३ ०२	५ १६
22	७	७ ४०	१० ००	१२ १८	१४ ३९	१६ ५९	१९ ०४	२० ४४	२२ १०	२३ ३२	१ ०५	२ ५८	५ १२
23	८	७ ३६	९ ५६	१२ १४	१४ ३५	१६ ५५	१९ ००	२० ४०	२२ ०६	२३ २८	१ ०१	२ ५४	५ ०८
24	९	७ ३२	९ ५२	१२ १०	१४ ३१	१६ ५१	१८ ५६	२० ३६	२२ ०२	२३ २४	० ५७	२ ५०	५ ०४
25	१०	७ २८	९ ४८	१२ ६	१४ २७	१६ ४७	१८ ५२	२० ३२	२१ ५८	२३ २०	० ५३	२ ४६	५ ००
26	११	७ २४	९ ४४	१२ ०२	१४ २४	१६ ४४	१८ ४८	२० २९	२१ ५४	२३ १६	० ४९	२ ४२	४ ५६
27	१२	७ २०	९ ४०	११ ५८	१४ २०	१६ ४०	१८ ४४	२० २५	२१ ५०	२३ १२	० ४५	२ ३८	४ ५२
28	१३	७ १६	९ ३६	११ ५५	१४ १६	१६ ३६	१८ ४०	२० २१	२१ ४६	२३ ०८	० ४१	२ ३४	४ ४९
29	१४	७ १२	९ ३२	११ ५१	१४ १२	१६ ३२	१८ ३६	२० १७	२१ ४२	२३ ०४	० ३७	२ ३०	४ ४५
30	१५	७ ०८	९ २८	११ ४७	१४ ८	१६ २८	१८ ३२	२० १३	२१ ३८	२३ ००	० ३३	२ २७	४ ४१
31	१६	७ ०४	९ २४	११ ४३	१४ ०४	१६ २५	१८ २८	२० ९	२१ ३४	२२ ५६	० २९	२ २३	४ ३७
अग.	१७	७ ००	९ २०	११ ३९	१४ ००	१६ २१	१८ २४	२० ०५	२१ ३०	२२ ५२	० २५	२ १९	४ ३३
2	१८	६ ५६	९ १६	११ ३५	१३ ५६	१६ १७	१८ २०	२० ०१	२१ २६	२२ ४८	० २१	२ १५	४ २९
3	१९	६ ५२	९ १२	११ ३१	१३ ५२	१६ १३	१८ १६	१९ ५७	२१ २२	२२ ४४	० १७	२ ११	४ २५
4	२०	६ ४८	९ ०९	११ २७	१३ ४८	१६ ९	१८ १२	१९ ५३	२१ १८	२२ ४१	० १३	२ ०७	४ २१
5	२१	६ ४४	९ ०५	११ २४	१३ ४५	१६ ५	१८ ९	१९ ५०	२१ १४	२२ ३८	० १०	२ ०४	४ १७
6	२२	६ ४०	९ ०१	११ २०	१३ ४१	१६ ०१	१८ ५	१९ ४६	२१ ११	२२ ३४	० ०६	२ ००	४ १४
7	२३	६ ३७	८ ५७	११ १६	१३ ३७	१५ ५७	१८ ०१	१९ ४२	२१ ७	२२ ३०	० ०२	१ ५६	४ १०
8	२४	६ ३३	८ ५३	११ १२	१३ ३३	१५ ५४	१७ ५७	१९ ३९	२१ ०३	२२ २६	२३ ५८	१ ५२	४ ०६
9	२५	६ २९	८ ४९	११ ८	१३ २९	१५ ५०	१७ ५३	१९ ३५	२० ५९	२२ २२	२३ ५४	१ ४८	४ ०२
10	२६	६ २५	८ ४५	११ ४	१३ २५	१५ ४६	१७ ४९	१९ ३१	२० ५५	२२ १८	२३ ५०	१ ४४	३ ५८
11	२७	६ २१	८ ४१	११ ००	१३ २१	१५ ४२	१७ ४५	१९ २७	२० ५१	२२ १४	२३ ४६	१ ४०	३ ५४
12	२८	६ १७	८ ३७	१० ५६	१३ १७	१५ ३८	१७ ४१	१९ २३	२० ४८	२२ १०	२३ ४२	१ ३७	३ ५०
13	२९	६ १३	८ ३३	१० ५२	१३ १३	१५ ३४	१७ ३७	१९ १९	२० ४४	२२ ०६	२३ ३८	१ ३३	३ ४७
14	३०	६ ०९	८ २९	१० ४८	१३ ०९	१५ ३०	१७ ३३	१९ १५	२० ४०	२२ ०२	२३ ३४	१ २९	३ ४३
15	३१	६ ०५	८ २५	१० ४४	१३ ०५	१५ २६	१७ २९	१९ ११	२० ३६	२१ ५८	२३ ३०	१ २५	३ ३९
16	भाद्र	६ ०१	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अग.-सितं. (भाद्रपद) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अगस्त	भाद्रपद	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ २१	१० ४०	१३ ०१	१५ २२	१७ २५	१९ ०७	२० ३२	२१ ५४	२३ २६	१ २१	३ ३५	५ ५७
17	२	८ १७	१० ३६	१२ ५७	१५ १८	१७ २१	१९ ०३	२० २८	२१ ५०	२३ २२	१ १७	३ ३१	५ ५३
18	३	८ १३	१० ३३	१२ ५३	१५ १४	१७ १७	१८ ५९	२० २४	२१ ४६	२३ १८	१ १३	३ २७	५ ४९
19	४	८ ९	१० २९	१२ ४९	१५ १०	१७ १३	१८ ५५	२० २०	२१ ४२	२३ १४	१ ०९	३ २३	५ ४५
20	५	८ ६	१० २५	१२ ४६	१५ ०६	१७ ०९	१८ ५१	२० १६	२१ ३८	२३ १०	१ ०५	३ १९	५ ४१
21	६	८ ०२	१० २१	१२ ४२	१५ ०२	१७ ०६	१८ ४७	२० १२	२१ ३४	२३ ०७	१ ०१	३ १५	५ ३७
22	७	७ ५८	१० १७	१२ ३८	१४ ५८	१७ ०२	१८ ४४	२० ८	२१ ३०	२३ ०३	० ५७	३ ११	५ ३३
23	८	७ ५४	१० १३	१२ ३४	१४ ५४	१६ ५८	१८ ४०	२० ४	२१ २६	२२ ५९	० ५३	३ ०७	५ २९
24	९	७ ५०	१० ०९	१२ ३०	१४ ५०	१६ ५४	१८ ३६	२० ०१	२१ २२	२२ ५५	० ५०	३ ०३	५ २५
25	१०	७ ४६	१० ५	१२ २६	१४ ४६	१६ ५०	१८ ३२	१९ ५७	२१ १९	२२ ५१	० ४६	३ ००	५ २२
26	११	७ ४२	१० ०१	१२ २३	१४ ४३	१६ ४६	१८ २८	१९ ५३	२१ १५	२२ ४७	० ४२	२ ५६	५ १८
27	१२	७ ३८	९ ५७	१२ १९	१४ ३९	१६ ४३	१८ २४	१९ ४९	२१ ११	२२ ४३	० ३८	२ ५२	५ १४
28	१३	७ ३४	९ ५३	१२ १५	१४ ३५	१६ ३९	१८ २०	१९ ४५	२१ ७	२२ ३९	० ३४	२ ४८	५ १०
29	१४	७ ३०	९ ४९	१२ ११	१४ ३१	१६ ३५	१८ १६	१९ ४१	२१ ०३	२२ ३५	० ३०	२ ४४	५ ६
30	१५	७ २६	९ ४५	१२ ०७	१४ २७	१६ ३१	१८ १२	१९ ३७	२० ५९	२२ ३१	० २६	२ ४०	५ ०२
31	१६	७ २२	९ ४१	१२ ०३	१४ २३	१६ २७	१८ ०८	१९ ३३	२० ५५	२२ २७	० २२	२ ३६	४ ५८
सितं.	१७	७ १८	९ ३७	११ ५९	१४ १९	१६ २३	१८ ०४	१९ २९	२० ५१	२२ २३	० १८	२ ३२	४ ५४
2	१८	७ १४	९ ३४	११ ५५	१४ १५	१६ १९	१८ ००	१९ २५	२० ४७	२२ १९	० १४	२ २८	४ ५०
3	१९	७ १०	९ ३०	११ ५१	१४ ११	१६ १५	१७ ५६	१९ २१	२० ४३	२२ १६	० १०	२ २४	४ ४६
4	२०	७ ०६	९ २६	११ ४७	१४ ०७	१६ ११	१७ ५२	१९ १७	२० ३९	२२ १२	० ६	२ २०	४ ४२
5	२१	७ ०२	९ २२	११ ४३	१४ ०३	१६ ०७	१७ ४८	१९ १३	२० ३५	२२ ८	० ०२	२ १६	४ ३८
6	२२	६ ५९	९ १८	११ ३९	१३ ५९	१६ ०३	१७ ४४	१९ ९	२० ३१	२२ ०४	२३ ५८	२ १२	४ ३४
7	२३	६ ५५	९ १४	११ ३५	१३ ५५	१५ ५९	१७ ४०	१९ ५	२० २७	२२ ००	२३ ५४	२ ०८	४ ३०
8	२४	६ ५१	९ १०	११ ३१	१३ ५१	१५ ५५	१७ ३६	१९ ०१	२० २३	२१ ५६	२३ ५०	२ ०४	४ २६
9	२५	६ ४७	९ ०६	११ २७	१३ ४७	१५ ५१	१७ ३२	१८ ५७	२० १९	२१ ५२	२३ ४६	२ ००	४ २२
10	२६	६ ४३	९ ०२	११ २३	१३ ४३	१५ ४७	१७ २८	१८ ५३	२० १५	२१ ४८	२३ ४२	१ ५६	४ १८
11	२७	६ ३९	८ ५८	११ १९	१३ ३९	१५ ४३	१७ २४	१८ ४९	२० ११	२१ ४४	२३ ३८	१ ५२	४ १४
12	२८	६ ३५	८ ५४	११ १५	१३ ३५	१५ ३९	१७ २०	१८ ४५	२० ७	२१ ४०	२३ ३४	१ ४८	४ १०
13	२९	६ ३१	८ ५०	११ ११	१३ ३१	१५ ३५	१७ १६	१८ ४१	२० ०३	२१ ३६	२३ ३०	१ ४४	४ ६
14	३०	६ २७	८ ४६	११ ७	१३ २७	१५ ३१	१७ १२	१८ ३७	१९ ५९	२१ ३२	२३ २६	१ ४०	४ ०२
15	३१	६ २३	८ ४२	११ ०३	१३ २३	१५ २७	१७ ०८	१८ ३३	१९ ५५	२१ २८	२३ २२	१ ३६	३ ५८
16	आ.	६ १५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी सितं.-अक्तू. (आश्विन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

सितंबर	आश्विन	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	८ ३८	१० ५९	१३ १९	१५ २३	१७ ०४	१८ २९	१९ ५१	२१ २४	२३ १८	१ ३२	३ ५४	६ १५
17	२	८ ३४	१० ५५	१३ १५	१५ १९	१७ ००	१८ २५	१९ ४७	२१ २०	२३ १४	१ २८	३ ५१	६ ११
18	३	८ ३०	१० ५१	१३ ११	१५ १५	१६ ५६	१८ २१	१९ ४३	२१ १६	२३ १०	१ २४	३ ४७	६ ०७
19	४	८ २६	१० ४७	१३ ०७	१५ ११	१६ ५२	१८ १७	१९ ३९	२१ १२	२३ ०६	१ २०	३ ४३	६ ०३
20	५	८ २२	१० ४३	१३ ०३	१५ ०७	१६ ४८	१८ १३	१९ ३५	२१ ०८	२३ ०२	१ १६	३ ३९	५ ५९
21	६	८ १८	१० ३९	१२ ५९	१५ ०३	१६ ४४	१८ ०९	१९ ३१	२१ ०४	२२ ५८	१ १२	३ ३५	५ ५५
22	७	८ १४	१० ३५	१२ ५५	१४ ५९	१६ ४०	१८ ०५	१९ २७	२१ ००	२२ ५४	१ ०८	३ ३१	५ ५१
23	८	८ १०	१० ३१	१२ ५१	१४ ५५	१६ ३६	१८ ०१	१९ २३	२० ५६	२२ ५०	१ ०४	३ २७	५ ४७
24	९	८ ६	१० २७	१२ ४७	१४ ५१	१६ ३२	१७ ५७	१९ १९	२० ५२	२२ ४६	१ ००	३ २३	५ ४३
25	१०	८ ०२	१० २३	१२ ४३	१४ ४७	१६ २८	१७ ५३	१९ १५	२० ४८	२२ ४२	०० ५७	३ १९	५ ३९
26	११	७ ५८	१० २०	१२ ४०	१४ ४४	१६ २५	१७ ५०	१९ १२	२० ४४	२२ ३८	०० ५३	३ १५	५ ३५
27	१२	७ ५४	१० १६	१२ ३६	१४ ४०	१६ २१	१७ ४६	१९ ८	२० ४०	२२ ३५	०० ४९	३ ११	५ ३१
28	१३	७ ५०	१० १२	१२ ३२	१४ ३६	१६ १७	१७ ४२	१९ ०४	२० ३६	२२ ३१	०० ४५	३ ०७	५ २७
29	१४	७ ४६	१० ०८	१२ २८	१४ ३२	१६ १३	१७ ३८	१९ ००	२० ३२	२२ २७	०० ४१	३ ०३	५ २३
30	१५	७ ४२	१० ०४	१२ २४	१४ २८	१६ ०९	१७ ३४	१८ ५६	२० २८	२२ २३	०० ३७	२ ५९	५ १९
अक्तू.	१६	७ ३८	१० ०	१२ २०	१४ २४	१६ ०५	१७ ३०	१८ ५२	२० २४	२२ १९	०० ३३	२ ५५	५ १५
2	१७	७ ३४	९ ५६	१२ १६	१४ २०	१६ ०१	१७ २६	१८ ४८	२० २१	२२ १५	०० २९	२ ५२	५ ११
3	१८	७ ३०	९ ५२	१२ १२	१४ १६	१५ ५७	१७ २२	१८ ४४	२० १७	२२ ११	०० २५	२ ४८	५ ०७
4	१९	७ २६	९ ४८	१२ ०८	१४ १२	१५ ५३	१७ १८	१८ ४०	२० १३	२२ ०७	०० २१	२ ४४	५ ०३
5	२०	७ २२	९ ४४	१२ ०४	१४ ८	१५ ४९	१७ १४	१८ ३६	२० ०९	२२ ०३	०० १७	२ ४०	५ ००
6	२१	७ १८	९ ४०	१२ ००	१४ ४	१५ ४५	१७ १०	१८ ३२	२० ०५	२१ ५९	०० १३	२ ३६	४ ५६
7	२२	७ १४	९ ३६	११ ५६	१४ ००	१५ ४१	१७ ०६	१८ २८	२० ०१	२१ ५५	०० ०९	२ ३३	४ ५२
8	२३	७ १०	९ ३२	११ ५२	१३ ५६	१५ ३७	१७ ०२	१८ २४	१९ ५७	२१ ५१	०० ०५	२ २९	४ ४८
9	२४	७ ०६	९ २८	११ ४८	१३ ५२	१५ ३३	१६ ५८	१८ २०	१९ ५३	२१ ४७	०० ०१	२ २५	४ ४४
10	२५	७ ०३	९ २५	११ ४५	१३ ४९	१५ ३०	१६ ५५	१८ १७	१९ ४९	२१ ४४	२३ ५८	२ २१	४ ४१
11	२६	६ ५९	९ २१	११ ४१	१३ ४५	१५ २६	१६ ५१	१८ १३	१९ ४५	२१ ४०	२३ ५४	२ १७	४ ३७
12	२७	६ ५५	९ १७	११ ३७	१३ ४१	१५ २२	१६ ४७	१८ ९	१९ ४१	२१ ३६	२३ ५०	२ १३	४ ३३
13	२८	६ ५१	९ १३	११ ३३	१३ ३७	१५ १८	१६ ४३	१८ ०५	१९ ३७	२१ ३२	२३ ४६	२ ०९	४ २९
14	२९	६ ४७	९ ०९	११ २९	१३ ३३	१५ १४	१६ ३९	१८ ०१	१९ ३३	२१ २८	२३ ४२	२ ०५	४ २५
15	३०	६ ४३	९ ०५	११ २५	१३ २९	१५ १०	१६ ३५	१७ ५७	१९ २९	२१ २४	२३ ३८	२ ०१	४ २१
16	का.	६ ३९	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी अक्तू.-नवं. (कार्तिक) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

अक्तूबर	कार्तिक	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
16	१	९ ०१	११ २१	१३ २५	१५ ०६	१६ ३१	१७ ५३	१९ २५	२१ २०	२३ ३४	१ ५७	४ १७	६ ३५
17	२	८ ५७	११ १७	१३ २१	१५ ०२	१६ २७	१७ ४९	१९ २१	२१ १६	२३ ३०	१ ५३	४ १३	६ ३१
18	३	८ ५३	११ १३	१३ १७	१४ ५८	१६ २३	१७ ४५	१९ १७	२१ १२	२३ २६	१ ४९	४ ०९	६ २७
19	४	८ ४९	११ ०९	१३ १३	१४ ५४	१६ १९	१७ ४१	१९ १३	२१ ०८	२३ २२	१ ४५	४ ०५	६ २३
20	५	८ ४५	११ ०५	१३ ०९	१४ ५०	१६ १५	१७ ३७	१९ ०९	२१ ०४	२३ १८	१ ४१	४ ०१	६ १९
21	६	८ ४१	११ ०१	१३ ०५	१४ ४६	१६ ११	१७ ३३	१९ ०५	२१ ००	२३ १४	१ ३७	३ ५७	६ १५
22	७	८ ३७	१० ५७	१३ ०१	१४ ४२	१६ ०७	१७ २९	१९ ०१	२० ५६	२३ १०	१ ३३	३ ५३	६ ११
23	८	८ ३३	१० ५३	१२ ५७	१४ ३८	१६ ०३	१७ २५	१८ ५७	२० ५२	२३ ०७	१ २९	३ ५०	६ ७
24	९	८ २९	१० ४९	१२ ५३	१४ ३४	१५ ५९	१७ २१	१८ ५३	२० ४८	२३ ०३	१ २५	३ ४६	६ ४
25	१०	८ २६	१० ४६	१२ ५०	१४ ३०	१५ ५५	१७ १८	१८ ५०	२० ४४	२२ ५९	१ २२	३ ४२	६ ००
26	११	८ २२	१० ४२	१२ ४६	१४ २७	१५ ५२	१७ १४	१८ ४६	२० ४१	२२ ५५	१ १८	३ ३९	५ ५६
27	१२	८ १८	१० ३८	१२ ४२	१४ २३	१५ ४८	१७ १०	१८ ४२	२० ३७	२२ ५१	१ १४	३ ३५	५ ५२
28	१३	८ १४	१० ३४	१२ ३८	१४ १९	१५ ४४	१७ ०६	१८ ३८	२० ३३	२२ ४७	१ १०	३ ३१	५ ४८
29	१४	८ १०	१० ३०	१२ ३४	१४ १५	१५ ४०	१७ ०२	१८ ३४	२० २९	२२ ४३	१ ०६	३ २७	५ ४४
30	१५	८ ०६	१० २६	१२ ३०	१४ ११	१५ ३६	१६ ५८	१८ ३०	२० २५	२२ ३९	१ ०२	३ २३	५ ४१
31	१६	८ ०२	१० २२	१२ २६	१४ ०७	१५ ३२	१६ ५४	१८ २६	२० २१	२२ ३५	० ५८	३ १९	५ ३७
नवं.	१७	७ ५८	१० १८	१२ २२	१४ ०३	१५ २८	१६ ५०	१८ २२	२० १७	२२ ३१	० ५४	३ १५	५ ३३
2	१८	७ ५४	१० १४	१२ १८	१३ ५९	१५ २४	१६ ४६	१८ १८	२० १३	२२ २७	० ५०	३ ११	५ २९
3	१९	७ ५०	१० १०	१२ १४	१३ ५५	१५ २०	१६ ४२	१८ १५	२० ०९	२२ २३	० ४६	३ ०७	५ २५
4	२०	७ ४६	१० ०६	१२ १०	१३ ५१	१५ १६	१६ ३८	१८ ११	२० ०५	२२ १९	० ४२	३ ०३	५ २१
5	२१	७ ४२	१० ०२	१२ ०६	१३ ४७	१५ १२	१६ ३४	१८ ०७	२० ०१	२२ १५	० ३८	२ ५९	५ १७
6	२२	७ ३८	९ ५८	१२ ०२	१३ ४३	१५ ०८	१६ ३०	१८ ०३	१९ ५७	२२ ११	० ३४	२ ५५	५ १३
7	२३	७ ३५	९ ५४	११ ५८	१३ ३९	१५ ०४	१६ २६	१७ ५९	१९ ५३	२२ ०७	० ३०	२ ५१	५ ९
8	२४	७ ३१	९ ५०	११ ५४	१३ ३५	१५ ००	१६ २२	१७ ५५	१९ ४९	२२ ०३	० २६	२ ४७	५ ५
9	२५	७ २७	९ ४६	११ ५०	१३ ३१	१४ ५६	१६ १८	१७ ५१	१९ ४५	२१ ५९	० २२	२ ४३	५ ०१
10	२६	७ २३	९ ४२	११ ४६	१३ २७	१४ ५२	१६ १४	१७ ४७	१९ ४२	२१ ५६	० १८	२ ३९	४ ५७
11	२७	७ १९	९ ३८	११ ४२	१३ २४	१४ ४९	१६ ११	१७ ४३	१९ ३८	२१ ५२	० १४	२ ३५	४ ५३
12	२८	७ १५	९ ३४	११ ३९	१३ २०	१४ ४५	१६ ०७	१७ ३९	१९ ३४	२१ ४८	० ११	२ ३१	४ ४९
13	२९	७ ११	९ ३१	११ ३५	१३ १६	१४ ४१	१६ ०३	१७ ३५	१९ ३०	२१ ४४	० ०७	२ २७	४ ४५
14	३०	७ ०७	९ २७	११ ३१	१३ १२	१४ ३७	१५ ५९	१७ ३१	१९ २६	२१ ४०	० ०३	२ २३	४ ४१
15	मा.	६ ०३	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी नवं.-दिसं. (मार्गशीर्ष) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

नवम्बर	मार्ग.	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	९ २३	११ २७	१३ ०८	१४ ३३	१५ ५५	१७ २७	१९ २२	२१ ३६	२३ ५९	२ १९	४ ३७	६ ५९
16	२	९ १९	११ २३	१३ ०४	१४ २९	१५ ५१	१७ २३	१९ १८	२१ ३२	२३ ५५	२ १५	४ ३३	६ ५५
17	३	९ १५	११ १९	१३ ००	१४ २५	१५ ४७	१७ १९	१९ १४	२१ २८	२३ ५१	२ ११	४ २९	६ ५१
18	४	९ ११	११ १५	१२ ५६	१४ २१	१५ ४३	१७ १५	१९ १०	२१ २४	२३ ४७	२ ०७	४ २५	६ ४७
19	५	९ ०७	११ ११	१२ ५२	१४ १७	१५ ३९	१७ ११	१९ ०६	२१ २०	२३ ४३	२ ०३	४ २१	६ ४३
20	६	९ ०३	११ ०७	१२ ४८	१४ १३	१५ ३५	१७ ०७	१९ ०२	२१ १६	२३ ३९	१ ५९	४ १७	६ ३९
21	७	८ ५९	११ ०३	१२ ४४	१४ ०९	१५ ३१	१७ ०३	१८ ५८	२१ १२	२३ ३५	१ ५५	४ १३	६ ३५
22	८	८ ५५	१० ५९	१२ ४०	१४ ०५	१५ २७	१७ ००	१८ ५५	२१ ०९	२३ ३१	१ ५२	४ १०	६ ३२
23	९	८ ५१	१० ५५	१२ ३६	१४ ०१	१५ २३	१६ ५६	१८ ५१	२१ ०५	२३ २७	१ ४८	४ ६	६ २८
24	१०	८ ४७	१० ५१	१२ ३२	१३ ५७	१५ १९	१६ ५२	१८ ४७	२१ ०१	२३ २३	१ ४४	४ ०२	६ २४
25	११	८ ४४	१० ४८	१२ २९	१३ ५४	१५ १६	१६ ४८	१८ ४३	२० ५७	२३ १९	१ ४०	३ ५८	६ २०
26	१२	८ ४०	१० ४४	१२ २५	१३ ५०	१५ १२	१६ ४४	१८ ३९	२० ५३	२३ १६	१ ३६	३ ५४	६ १६
27	१३	८ ३६	१० ४०	१२ २१	१३ ४६	१५ ०८	१६ ४०	१८ ३५	२० ४९	२३ १२	१ ३२	३ ५०	६ १२
28	१४	८ ३२	१० ३६	१२ १७	१३ ४२	१५ ०४	१६ ३६	१८ ३१	२० ४५	२३ ०८	१ २८	३ ४६	६ ०८
29	१५	८ २८	१० ३२	१२ १३	१३ ३८	१५ ००	१६ ३३	१८ २७	२० ४१	२३ ०५	१ २५	३ ४३	६ ०४
30	१६	८ २४	१० २८	१२ ०९	१३ ३४	१४ ५६	१६ २९	१८ २३	२० ३७	२३ ०१	१ २१	३ ३९	६ ००
दिसं	१७	८ २०	१० २४	१२ ०५	१३ ३०	१४ ५२	१६ २५	१८ १९	२० ३३	२२ ५७	१ १७	३ ३५	५ ५६
2	१८	८ १६	१० २०	१२ ०१	१३ २६	१४ ४८	१६ २१	१८ १५	२० २९	२२ ५३	१ १३	३ ३१	५ ५२
3	१९	८ १२	१० १६	११ ५७	१३ २२	१४ ४४	१६ १७	१८ ११	२० २५	२२ ४९	१ ०९	३ २७	५ ४८
4	२०	८ ०८	१० १२	११ ५३	१३ १८	१४ ४०	१६ १३	१८ ०७	२० २१	२२ ४५	१ ०५	३ २३	५ ४४
5	२१	८ ०४	१० ०८	११ ४९	१३ १४	१४ ३६	१६ ०९	१८ ०३	२० १७	२२ ४१	१ ०१	३ १९	५ ४०
6	२२	८ ००	१० ०४	११ ४५	१३ १०	१४ ३२	१६ ०५	१७ ५९	२० १३	२२ ३७	०० ५७	३ १५	५ ३६
7	२३	७ ५६	१० ००	११ ४१	१३ ०६	१४ २८	१६ ०१	१७ ५५	२० ०९	२२ ३३	०० ५३	३ ११	५ ३२
8	२४	७ ५२	९ ५६	११ ३७	१३ ०२	१४ २४	१५ ५७	१७ ५१	२० ०५	२२ २९	०० ४९	३	७५ २८
9	२५	७ ४८	९ ५२	११ ३३	१२ ५८	१४ २०	१५ ५३	१७ ४७	२० ०१	२२ २५	०० ४५	३ ०३	५ २४
10	२६	७ ४५	९ ४९	११ ३०	१२ ५५	१४ १७	१५ ५०	१७ ४४	१९ ५८	२२ २२	०० ४२	३ ००	५ २१
11	२७	७ ४१	९ ४५	११ २६	१२ ५१	१४ १३	१५ ४६	१७ ४०	१९ ५४	२२ १८	०० ३८	२ ५६	५ १७
12	२८	७ ३७	९ ४१	११ २२	१२ ४७	१४ ०९	१५ ४२	१७ ३६	१९ ५०	२२ १४	०० ३४	२ ५२	५ १३
13	२९	७ ३३	९ ३७	११ १८	१२ ४३	१४ ०५	१५ ३८	१७ ३२	१९ ४६	२२ १०	०० ३०	२ ४८	५ ९
14	३०	७ २९	९ ३३	११ १४	१२ ३९	१४ ०१	१५ ३४	१७ २८	१९ ४२	२२ ०६	०० २६	२ ४४	५ ०५
15	पौ.	७ २५	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी — दिसं.-जन. (पौष) — भा.स्टैं.टा. समापित काल जालन्धर

दिसम्बर	पौष	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
15	१	९ २९	११ १०	१२ ३५	१३ ५७	१५ ३०	१७ २४	१९ ३८	२२ ०२	०० २२	२ ४०	५ ०१	७ २१
16	२	९ २५	११ ०६	१२ ३१	१३ ५३	१५ २६	१७ २०	१९ ३४	२१ ५८	०० १८	२ ३६	४ ५७	७ १७
17	३	९ २१	११ २	१२ २८	१३ ४९	१५ २२	१७ १६	१९ ३०	२१ ५४	००१४	२ ३२	४ ५३	७ १३
18	४	९ १७	१० ५९	१२ २४	१३ ४५	१५ १८	१७ १२	१९ २६	२१ ५०	०० १०	२ २८	४ ४९	७ ९
19	५	९ १३	१० ५५	१२ २०	१३ ४१	१५ १४	१७ ८	१९ २२	२१ ४६	०० ०६	२ २४	४ ४५	७ ५
20	६	९ ९	१० ५१	१२ १६	१३ ३७	१५ १०	१७ ४	१९ १८	२१ ४२	०० ०२	२ २०	४ ४१	७ १
21	७	९ ५	१० ४७	१२ १२	१३ ३३	१५ ६	१७ ००	१९ १४	२१ ३८	२३ ५८	२ १७	४ ३७	६ ५७
22	८	९ ०१	१० ४३	१२ ८	१३ २९	१५ २	१६ ५६	१९ ११	२१ ३४	२३ ५४	२ १३	४ ३३	६ ५३
23	९	८ ५७	१० ३९	१२ ४	१३ २५	१४ ५८	१६ ५२	१९ ०७	२१ ३०	२३ ५०	२ ९	४ २९	६ ४९
24	१०	८ ५४	१० ३५	१२ ००	१३ २१	१४ ५४	१६ ४९	१९ ३	२१ २६	२३ ४६	२ ५	४ २५	६ ४५
25	११	८ ५०	१० ३१	११ ५६	१३ १७	१४ ५०	१६ ४५	१८ ५९	२१ २२	२३ ४२	२ १	४ २१	६ ४२
26	१२	८ ४६	१० २७	११ ५२	१३ १४	१४ ४६	१६ ४१	१८ ५५	२१ १८	२३ ३८	१ ५७	४ १७	६ ३८
27	१३	८ ४२	१० २३	११ ४८	१३ १०	१४ ४३	१६ ३७	१८ ५१	२१ १४	२३ ३४	१ ५३	४ १४	६ ३४
28	१४	८ ३८	१० १९	११ ४४	१३ ६	१४ ३९	१६ ३३	१८ ४७	२१ १०	२३ ३०	१ ४९	४ १०	६ ३०
29	१५	८ ३४	१० १५	११ ४०	१३ २	१४ ३५	१६ २९	१८ ४३	२१ ० ६	२३ २६	१ ४५	४ ६	६ २६
30	१६	८ ३०	१० ११	११ ३६	१२ ५८	१४ ३१	१६ २५	१८ ३९	२१ ० २	२३ २२	१ ४१	४ २	६ २२
31	१७	८ २६	१० ०७	११ ३२	१२ ५४	१४ २७	१६ २१	१८ ३५	२० ५८	२३ १८	१ ३७	३ ५८	६ १८
जन.	१८	८ २२	१० ०३	११ २८	१२ ५०	१४ २३	१६ १७	१८ ३१	२० ५४	२३ १४	१ ३३	३ ५४	६ १४
2	१९	८ १८	९ ५९	११ २४	१२ ४६	१४ १९	१६ १३	१८ २७	२० ५०	२३ १०	१ २९	३ ५०	६ १०
3	२०	८ १४	९ ५५	११ २०	१२ ४२	१४ १५	१६ ९	१८ २३	२० ४६	२३ ०६	१ २५	३ ४६	६ ६
4	२१	८ १०	९ ५१	११ १६	१२ ३८	१४ ११	१६ ५	१८ १९	२० ४२	२३ ०२	१ २१	३ ४२	६ २
5	२२	८ ६	९ ४७	११ १२	१२ ३४	१४ ०७	१६ १	१८ १५	२० ३८	२२ ५८	१ १७	३ ३८	५ ५८
6	२३	८ ०२	९ ४३	११ ८	१२ ३०	१४ ०३	१५ ५७	१८ ११	२० ३४	२२ ५४	१ १३	३ ३४	५ ५४
7	२४	७ ५८	९ ३९	११ ४	१२ २६	१३ ५९	१५ ५३	१८ ७	२० ३०	२२ ५०	१ ९	३ ३०	५ ५०
8	२५	७ ५४	९ ३५	११ ००	१२ २२	१३ ५५	१५ ४९	१८ ३	२० २६	२२ ४६	१ ५	३ २६	५ ४६
9	२६	७ ५०	९ ३१	१० ५६	१२ १८	१३ ५१	१५ ४५	१७ ५९	२० २२	२२ ४२	१ ०१	३ २२	५ ४२
10	२७	७ ४६	९ २७	१० ५२	१२ १४	१३ ४७	१५ ४१	१७ ५५	२० १८	२२ ३८	०० ५७	३ १८	५ ३८
11	२८	७ ४२	९ २३	१० ४८	१२ १०	१३ ४३	१५ ३७	१७ ५१	२० १४	२२ ३४	०० ५३	३ १४	५ ३४
12	२९	७ ३८	९ १९	१० ४४	१२ ०६	१३ ३९	१५ ३३	१७ ४७	२० १०	२२ ३०	०० ४९	३ १०	५ ३०
13	३०	७ ३४	९ १५	१० ४०	१२ ०२	१३ ३५	१५ २९	१७ ४३	२० ०६	२२ २६	०० ४५	३ ०६	५ २६
14	मा.	७ ३०	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी — जन.-फर. (माघ) — भा.स्टैं.टा. समापित काल जालन्धर

जनवरी	माघ	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	९ ११	१० ३६	११ ५८	१३ ३१	१५ २५	१७ ३९	२० ०२	२२ २२	०० ४१	३ ०२	५ २२	७ २६
15	२	९ ०७	१० ३२	११ ५४	१३ २७	१५ २१	१७ ३५	१९ ५८	२२ १८	०० ३७	२ ५८	५ १८	७ २२
16	३	९ ०४	१० २९	११ ५१	१३ २४	१५ १८	१७ ३२	१९ ५५	२२ १५	०० ३४	२ ५४	५ १४	७ १८
17	४	९ ००	१० २५	११ ४७	१३ २०	१५ १४	१७ २८	१९ ५१	२२ ११	०० ३०	२ ५०	५ १०	७ १४
18	५	८ ५६	१० २१	११ ४३	१३ १६	१५ १०	१७ २४	१९ ४७	२२ ०७	०० २६	२ ४६	५ ०६	७ १०
19	६	८ ५२	१० १७	११ ३९	१३ १२	१५ ६	१७ २०	१९ ४३	२२ ०३	०० २२	२ ४२	५ ०३	७ ०६
20	७	८ ४८	१० १३	११ ३५	१३ ८	१५ २	१७ १६	१९ ३९	२१ ५९	०० १८	२ ३८	४ ५९	७ ०२
21	८	८ ४४	१० ९	११ ३१	१३ ४	१४ ५८	१७ १२	१९ ३५	२१ ५५	०० १४	२ ३४	४ ५५	६ ५९
22	९	८ ४०	१० ०५	११ २७	१३ ००	१४ ५४	१७ ०८	१९ ३१	२१ ५१	०० १०	२ ३०	४ ५१	६ ५५
23	१०	८ ३६	१० ०१	११ २३	१२ ५६	१४ ५०	१७ ४	१९ २७	२१ ४७	०० ०६	२ २६	४ ४७	६ ५१
24	११	८ ३२	९ ५७	११ १९	१२ ५२	१४ ४६	१७ ००	१९ २४	२१ ४३	०० ०२	२ २३	४ ४३	६ ४७
25	१२	८ २८	९ ५३	११ १५	१२ ४८	१४ ४२	१६ ५६	१९ २०	२१ ३९	२३ ५८	२ १९	४ ३९	६ ४३
26	१३	८ २५	९ ५०	११ १२	१२ ४५	१४ ३९	१६ ५३	१९ १६	२१ ३६	२३ ५५	२ १५	४ ३५	६ ३९
27	१४	८ २१	९ ४६	११ ०८	१२ ४१	१४ ३५	१६ ४९	१९ १२	२१ ३२	२३ ५१	२ ११	४ ३१	६ ३५
28	१५	८ १७	९ ४२	११ ०४	१२ ३७	१४ ३१	१६ ४५	१९ ०८	२१ २८	२३ ४७	२ ०७	४ २७	६ ३१
29	१६	८ १३	९ ३८	११ ००	१२ ३३	१४ २७	१६ ४१	१९ ०४	२१ २४	२३ ४३	२ ०३	४ २३	६ २७
30	१७	८ ०९	९ ३४	१० ५६	१२ २९	१४ २३	१६ ३७	१९ ००	२१ २०	२३ ३९	१ ५९	४ २०	६ २४
31	१८	८ ५	९ ३०	१० ५२	१२ २५	१४ १९	१६ ३३	१८ ५६	२१ १६	२३ ३५	१ ५५	४ १६	६ २०
फर.	१९	८ १	९ २६	१० ४८	१२ २१	१४ १५	१६ २९	१८ ५२	२१ १२	२३ ३१	१ ५१	४ १२	६ १६
2	२०	७ ५७	९ २२	१० ४४	१२ १७	१४ ११	१६ २५	१८ ४८	२१ ०८	२३ २७	१ ४७	४ ०८	६ १२
3	२१	७ ५३	९ १८	१० ४०	१२ १३	१४ ०७	१६ २१	१८ ४४	२१ ०४	२३ २३	१ ४३	४ ०४	६ ८
4	२२	७ ४९	९ १४	१० ३६	१२ ०९	१४ ०३	१६ १७	१८ ४०	२१ ००	२३ १९	१ ३९	४ ००	६ ०४
5	२३	७ ४५	९ १०	१० ३२	१२ ०५	१३ ५९	१६ १३	१८ ३६	२० ५७	२३ १५	१ ३५	३ ५६	६ ००
6	२४	७ ४१	९ ०६	१० २८	१२ ०१	१३ ५५	१६ ०९	१८ ३२	२० ५३	२३ ११	१ ३२	३ ५२	५ ५६
7	२५	७ ३७	९ ०२	१० २४	११ ५७	१३ ५१	१६ ०५	१८ २८	२० ४९	२३ ७	१ २८	३ ४८	५ ५२
8	२६	७ ३३	८ ५८	१० २०	११ ५३	१३ ४७	१६ ०१	१८ २४	२० ४५	२३ ०३	१ २४	३ ४४	५ ४८
9	२७	७ २९	८ ५४	१० १६	११ ४९	१३ ४३	१५ ५७	१८ २१	२० ४१	२२ ५९	१ २०	३ ४०	५ ४४
10	२८	७ २५	८ ५०	१० १२	११ ४५	१३ ३९	१५ ५३	१८ १७	२० ३७	२२ ५५	१ १६	३ ३६	५ ४०
11	२९	७ २१	८ ४६	१० ०८	११ ४१	१३ ३५	१५ ४९	१८ १३	२० ३३	२२ ५१	१ १२	३ ३२	५ ३६
12	फा.	७ १७	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

सूर्य संक्रान्तियों में प्रतिवर्ष परिवर्तन के कारण देशी प्रविष्टे एवं अंग्रेजी तारीखों में कई बार परस्पर एक दिन का अन्तर पड़ जाता है। सूक्ष्मता के लिए सारिणी का प्रयोग अंग्रेजी तारीखानुसार करें।

दैनिक लग्न सारणी फर.-मार्च (फाल्गुन) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

फरवरी	फाल्गुन	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
12	१	८ ४२	१० ०४	११ ३७	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०९	२० २९	२२ ४७	१ ०८	३ २८	५ ३२	७ १४
13	२	८ ३८	१० ००	११ ३३	१३ २७	१५ ४१	१८ ०५	२० २५	२२ ४३	१ ०४	३ २४	५ २८	७ १०
14	३	८ ३४	९ ५६	११ २९	१३ २३	१५ ३७	१८ ०१	२० २१	२२ ३९	१ ००	३ २०	५ २४	७ ०६
15	४	८ ३०	९ ५२	११ २५	१३ १९	१५ ३३	१७ ५७	२० १७	२२ ३५	० ५६	३ १६	५ २०	७ ०२
16	५	८ २६	९ ४८	११ २१	१३ १५	१५ २९	१७ ५३	२० १३	२२ ३१	० ५२	३ १२	५ १६	६ ५८
17	६	८ २२	९ ४४	११ १७	१३ ११	१५ २५	१७ ४९	२० ०९	२२ २७	० ४८	३ ०८	५ १३	६ ५४
18	७	८ १८	९ ४०	११ १३	१३ ०७	१५ २१	१७ ४५	२० ०५	२२ २३	० ४४	३ ०४	५ ०९	६ ५०
19	८	८ १४	९ ३६	११ ०९	१३ ०३	१५ १७	१७ ४१	२० ०१	२२ १९	० ४०	३ ००	५ ०५	६ ४६
20	९	८ ११	९ ३३	११ ०६	१२ ५९	१५ १४	१७ ३७	१९ ५७	२२ १५	० ३६	२ ५६	५ ०१	६ ४२
21	१०	८ ०७	९ २९	११ ०२	१२ ५६	१५ १०	१७ ३३	१९ ५३	२२ ११	० ३२	२ ५३	४ ५७	६ ३८
22	११	८ ०३	९ २५	१० ५८	१२ ५२	१५ ०६	१७ २९	१९ ४९	२२ ०७	० २८	२ ४९	४ ५३	६ ३४
23	१२	७ ५९	९ २१	१० ५४	१२ ४८	१५ ०२	१७ २५	१९ ४५	२२ ०३	० २५	२ ४५	४ ४९	६ ३०
24	१३	७ ५५	९ १७	१० ५०	१२ ४४	१४ ५८	१७ २१	१९ ४१	२१ ५९	० २१	२ ४१	४ ४५	६ २६
25	१४	७ ५१	९ १३	१० ४६	१२ ४०	१४ ५४	१७ १७	१९ ३७	२१ ५५	० १७	२ ३७	४ ४१	६ २२
26	१५	७ ४७	९ ०९	१० ४२	१२ ३६	१४ ५०	१७ १३	१९ ३३	२१ ५१	० १३	२ ३३	४ ३७	६ १८
27	१६	७ ४३	९ ०५	१० ३८	१२ ३२	१४ ४६	१७ ०९	१९ २९	२१ ४७	० ०९	२ २९	४ ३३	६ १४
28	१७	७ ३९	९ ०१	१० ३४	१२ २८	१४ ४२	१७ ०५	१९ २५	२१ ४३	० ०५	२ २५	४ २९	६ ११
मार्च	१८	७ ३५	८ ५७	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१७ ०१	१९ २१	२१ ३९	० ०१	२ २१	४ २५	६ ०७
2	१९	७ ३१	८ ५३	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५७	१९ १७	२१ ३५	२३ ५७	२ १७	४ २१	६ ०३
3	२०	७ २८	८ ५०	१० २३	१२ १७	१४ ३१	१६ ५३	१९ १३	२१ ३१	२३ ५३	२ १३	४ १७	५ ५९
4	२१	७ २४	८ ४६	१० १९	१२ १३	१४ २७	१६ ४९	१९ ०९	२१ २७	२३ ४९	२ ०९	४ १३	५ ५५
5	२२	७ २०	८ ४२	१० १५	१२ ०९	१४ २३	१६ ४५	१९ ०५	२१ २३	२३ ४६	२ ०५	४ १०	५ ५१
6	२३	७ १६	८ ३८	१० ११	१२ ०५	१४ १९	१६ ४१	१९ ०१	२१ १९	२३ ४२	२ ०१	४ ६	५ ४७
7	२४	७ १२	८ ३४	१० ०७	१२ ०१	१४ १५	१६ ३७	१८ ५७	२१ १६	२३ ३८	१ ५७	४ ०२	५ ४३
8	२५	७ ०८	८ ३०	१० ०३	११ ५७	१४ ११	१६ ३३	१८ ५३	२१ १२	२३ ३४	१ ५३	३ ५८	५ ३९
9	२६	७ ०४	८ २६	९ ५९	११ ५३	१४ ०७	१६ ३०	१८ ५०	२१ ०८	२३ ३०	१ ५०	३ ५४	५ ३५
10	२७	७ ००	८ २२	९ ५५	११ ४९	१४ ०३	१६ २६	१८ ४६	२१ ०४	२३ २६	१ ४६	३ ५०	५ ३१
11	२८	६ ५६	८ १८	९ ५१	११ ४५	१३ ५९	१६ २३	१८ ४२	२१ ००	२३ २२	१ ४२	३ ४६	५ २७
12	२९	६ ५२	८ १४	९ ४७	११ ४१	१३ ५५	१६ १९	१८ ३९	२० ५६	२३ १९	१ ३८	३ ४२	५ २४
13	३०	६ ४८	८ १०	९ ४३	११ ३७	१३ ५१	१६ १५	१८ ३५	२० ५२	२३ १५	१ ३५	३ ३९	५ २०
14	चैत्र	६ ४४	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

दैनिक लग्न सारणी मार्च-अप्रैल (चैत्र) भा.स्टैं.टा. समाप्ति काल जालन्धर

मार्च	चैत्र	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ
		घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.	घं. मिं.
14	१	८ ०६	९ ३९	११ ३३	१३ ४७	१६ ११	१८ ३१	२० ४८	२३ ११	१ ३१	३ ३५	५ १६	६ ४०
15	२	८ ०२	९ ३५	११ २९	१३ ४३	१६ ०७	१८ २७	२० ४४	२३ ०७	१ २७	३ ३१	५ १२	६ ३६
16	३	७ ५८	९ ३१	११ २५	१३ ३९	१६ ०३	१८ २३	२० ४०	२३ ०३	१ २३	३ २७	५ ०८	६ ३२
17	४	७ ५४	९ २७	११ २१	१३ ३५	१५ ५९	१८ १९	२० ३६	२२ ५९	१ १९	३ २३	५ ०४	६ २८
18	५	७ ५०	९ २३	११ १७	१३ ३१	१५ ५५	१८ १५	२० ३२	२२ ५५	१ १५	३ १९	५ ००	६ २४
19	६	७ ४६	९ १९	११ १३	१३ २७	१५ ५१	१८ ११	२० २८	२२ ५१	१ ११	३ १५	४ ५६	६ २०
20	७	७ ४२	९ १५	११ ०९	१३ २४	१५ ४७	१८ ०७	२० २४	२२ ४७	१ ०७	३ ११	४ ५२	६ १६
21	८	७ ३८	९ ११	११ ०५	१३ २०	१५ ४३	१८ ०३	२० २०	२२ ४३	१ ०३	३ ०७	४ ४८	६ १२
22	९	७ ३४	९ ०७	११ ०१	१३ १६	१५ ३९	१७ ५९	२० १६	२२ ३९	०० ५९	३ ०३	४ ४४	६ ०८
23	१०	७ ३१	९ ०३	१० ५८	१३ १२	१५ ३५	१७ ५५	२० १२	२२ ३५	०० ५५	२ ५९	४ ४०	६ ४
24	११	७ २७	८ ५९	१० ५४	१३ ८	१५ ३१	१७ ५१	२० ०८	२२ ३१	०० ५१	२ ५५	४ ३७	६ ००
25	१२	७ २३	८ ५५	१० ५०	१३ ४	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ २७	०० ४७	२ ५१	४ ३३	५ ५६
26	१३	७ १९	८ ५१	१० ४६	१३ ०	१५ २३	१७ ४३	२० ०१	२२ २३	०० ४३	२ ४७	४ २९	५ ५२
27	१४	७ १५	८ ४८	१० ४२	१२ ५६	१५ १९	१७ ३९	१९ ५७	२२ १९	०० ३९	२ ४३	४ २५	५ ४८
28	१५	७ ११	८ ४४	१० ३८	१२ ५२	१५ १५	१७ ३५	१९ ५३	२२ १५	०० ३५	२ ४०	४ २१	५ ४४
29	१६	७ ०७	८ ४०	१० ३४	१२ ४८	१५ ११	१७ ३१	१९ ४९	२२ ११	०० ३१	२ ३६	४ १७	५ ४१
30	१७	७ ०३	८ ३६	१० ३०	१२ ४५	१५ ०७	१७ २७	१९ ४५	२२ ७	०० २७	२ ३२	४ १३	५ ३७
31	१८	६ ५९	८ ३२	१० २६	१२ ४१	१५ ०३	१७ २३	१९ ४१	२२ ०३	०० २३	२ २८	४ ०९	५ ३३
अप्रै.	१९	६ ५५	८ २८	१० २२	१२ ३७	१४ ५९	१७ १९	१९ ३७	२१ ५९	०० १९	२ २४	४ ०५	५ २९
2	२०	६ ५१	८ २४	१० १८	१२ ३३	१४ ५५	१७ १५	१९ ३३	२१ ५५	०० १५	२ २०	४ ०१	५ २५
3	२१	६ ४७	८ २०	१० १४	१२ २९	१४ ५१	१७ ११	१९ २९	२१ ५१	०० ११	२ १६	३ ५७	५ २१
4	२२	६ ४३	८ १६	१० १०	१२ २५	१४ ४७	१७ ०७	१९ २६	२१ ४७	०० ०७	२ १२	३ ५३	५ १७
5	२३	६ ३९	८ १२	१० ०६	१२ २१	१४ ४३	१७ ०३	१९ २२	२१ ४४	०० ०४	२ ०८	३ ४९	५ १३
6	२४	६ ३६	८ ०९	१० ०२	१२ १७	१४ ३९	१६ ५९	१९ १८	२१ ४०	२४ ००	२ ०४	३ ४५	५ ०९
7	२५	६ ३२	८ ०५	९ ५९	१२ १३	१४ ३५	१६ ५६	१९ १४	२१ ३६	२३ ५६	२ ००	३ ४१	५ ०५
8	२६	६ २८	८ ०१	९ ५५	१२ ०९	१४ ३१	१६ ५२	१९ १०	२१ ३२	२३ ५२	१ ५६	३ ३७	५ ०१
9	२७	६ २४	७ ५७	९ ५१	१२ ०५	१४ २७	१६ ४८	१९ ०६	२१ २८	२३ ४८	१ ५२	३ ३३	४ ५८
10	२८	६ २०	७ ५३	९ ४७	१२ ०१	१४ २४	१६ ४४	१९ ०२	२१ २४	२३ ४४	१ ४८	३ २९	४ ५४
11	२९	६ १६	७ ४९	९ ४३	११ ५७	१४ २०	१६ ४०	१८ ५८	२१ २०	२३ ४०	१ ४४	३ २५	४ ५०
12	३०	६ १२	७ ४५	९ ३९	११ ५३	१४ १६	१६ ३६	१८ ५४	२१ १६	२३ ३६	१ ४१	३ २१	४ ४६
13	वै.	६ ०८	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —	— —

भारत के प्रमुख नगरों में लग्नों का प्रारम्भ एवं समाप्तिकाल जानना

इस पंचांग के गत पृष्ठों में जो दैनिक लग्नसारणी दी गई है, वह जालन्धर के अक्षांश ३१।१९ पर आधारित है। भारत के किसी अन्य नगर में लग्नारम्भ अथवा समाप्तिकाल जानने के लिए नीचे दी गई तालिका में मेष, वृषादि राशियों के नीचे लिखे संस्कार अनुसार जालन्धर सारणी में जमा (+) करने अथवा (–) देने से आपको अभीष्ट तारीख एवं नगर में लग्नों का समाप्तिकाल भा. स्टै. टाईम में ज्ञात हो जाएगा। **उदाहरण स्वरूप**–मान लो आपने 16 जुलाई, 2013 ई. को दिल्ली में कन्या लग्न का समाप्तिकाल जानना है, तो सर्व प्रथम जालन्धर की दैनिक लग्न सारणी में देखने पर हमें १६ जुलाई को कन्या लग्न १२।४१ पर समाप्ति काल लिखा मिला है। तदनन्तर आगे सारणी में **दिल्ली** के आगे कन्या लग्न के नीचे देखने पर हमें –८ मिनट मिले। इन्हें जालन्धर में कन्या ल. समा., १२।४१ (घं. मिं.) में से और घटाने पर हमें **१२।३३ (घं. मिं.)** पर **कन्या लग्न** समाप्ति काल प्राप्त हुआ। **कन्या लग्न** का समाप्ति काल ही **तुला लग्न** का **प्रारम्भकाल** होगा। **नोट**–नीचे **लग्न संस्कार तालिका** में यदि किसी अभीष्ट नगर का नाम न मिले, तो आप अपने निकटस्थ नगर का संस्कार ग्रहण कर सकते हैं। पं. विवेक शर्मा.

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
अमृतसर	+२	+२	+२	+२	+३	+२	+३	+३	+३	+३	+२	+२
अम्बाला	–५	–५	–५	–३	–३	–६	–५	–५	–४	–५	–५	–५
अजमेर	+१२	+१२	+१३	+१०	+६	+४	–१	–३	–४	–१	+६	+१०
अबोहर	+५	+५	+५	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
अहमदाबाद	+२६	+३०	+३०	+२५	+१७	+७	–१	–५	–४	+२	+११	+१८
अलाहाबाद	–१५	–१२	–१३	–१५	–२१	–२९	–३४	–३७	–३६	–३२	–२६	–२०
अलीगढ़	–४	–३	–३	–५	–७	–१३	–१६	–१७	–१७	–१३	–११	–७
अयोध्या	–१८	–१८	–१५	–१९	–२१	–२५	–२८	–३०	–२८	–२७	–२४	–१६
अलवर	+२	+३	+३	+०	+१	–४	–६	–७	–७	–४	+१	+४
आगरा	–४	–२	–३	–६	–७	–१२	–१५	–१६	–१६	–१३	–१०	–६
अगरतला	–५०	–४७	–४६	–५३	–६०	–६७	–७५	–७८	–७६	–७३	–६४	–५३
इन्दौर	+१३	+१७	+१५	+१०	+३	–८	–१४	–१९	–१७	–१०	–१	+७
ऊना (हि.प्र.)	–३	–३	–३	–३	–२	–२	–२	–२	–२	–२	–२	–३
ऊधमपुर	–२	–२	–२	+११	+३	+४	+७	+७	+७	+६	+५	+२
उज्जैन	+१३	+१६	+१४	+८	+०	–७	–१४	–१९	–१७	–१०	–२	+६
उदयपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+७	+२	–४	–८	–६	–१	+६	+१३
करनाल	–५	–५	–५	–५	–५	–६	–६	–७	–७	–५	–४	–३
कालका	–५	–५	–५	–४	–४	–५	–६	–६	–७	–७	–४	–३
कुरुक्षेत्र	–४	–३	–३	–४	–५	–६	–६	–७	–७	–५	–३	–३
करतारपुर	+१	+१	+०	+०	–१	–१	+१	–०	–०	–०	–०	–१
कोटखाई	–७	–७	–७	–७	–७	–८	–७	–७	–७	–६	–६	–७
कोटा	+९	+११	+१०	+५	–१	–६	–११	–१४	–१३	–८	–२	+४
कपूरथला	+१	+१	+०	–०	–०	–१	+०	–०	–०	–०	–०	–१
काठमण्डू	–३२	–३१	–३१	–३०	–३३	–३८	–४०	–४२	–४२	–४०	–३६	–३३
कोलकत्ता	–३७	–३२	–३५	–४०	–४९	–५८	–६४	–६९	–६८	–६१	–५३	–४४
कानपुर	–११	–१०	–१०	–१३	–१८	–२२	–२५	–२७	–२६	–२१	–१७	–१३
कांगड़ा	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४
कुल्लू	–७	–७	–७	–६	–६	–६	–५	–४	–४	–४	–५	–५
कठुआ	–२	–२	–२	–१	–०	+१	+२	+२	+२	+२	+२	+१
कटड़ा	+३	+३	+२	+४	+६	+७	+७	+७	+७	+६	+६	+३
किश्तवाड़	–१	–१	–१	–०	+१	+१	+१	+२	+२	+२	+१	+१
खन्ना (पंजा.)	–२	–३	–३	–२	–२	–३	–३	–३	–३	–२	–२	–३
ग्वालियर	–२	+१	+०	–५	–९	–१२	–१६	–१८	–१७	–१३	–८	–५
गुरदासपुर	–१	–१	–१	+०	+१	+०	+१	+१	+१	+१	+१	+०
गोरखपुर	–२३	–२१	–२२	–२४	–२७	–३२	–३५	–३७	–३६	–३२	–२७	–२४
गुड़गांव	–१	–१	–१	–३	–३	–७	–१०	–११	–११	–९	–६	–४
गोहाटी	–५५	–४८	–५३	–५५	–६१	–६८	–७२	–७५	–७३	–६९	–६४	–६०
गाज़ियाबाद	–२	–१	–१	–२	–२	–७	–९	–११	–११	–९	–६	–३
गंगानगर	+६	+६	+६	+७	+७	+६	+६	+६	+६	+७	+७	+६
गया (बिहार)	–२६	–१८	–२३	–२७	–३३	–४२	–४७	–५१	–४१	–४४	–३७	–३२
चण्डीगढ़	–५	–५	–५	–५	–६	–६	–६	–६	–६	–६	–६	–५
चिन्तपूर्णी	–२	–१	–२	–२	–३	–३	–३	–२	–२	–२	–२	–१
चम्बा	–६	–६	–६	–५	–४	–२	+१	+२	+१	+०	+३	–४
जयपुर	+७	+८	+७	+३	+२	–३	–७	–९	–९	–७	–२	+३
ज्वालामुखी	–५	–५	–६	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४
जम्मू	–१	–२	–१	–१	+१	+४	+६	+७	+६	+५	+२	+१
जोधपुर	+१९	+२१	+२०	+१५	+१०	+५	+१	–२	–१	+४	+९	+१३
जीन्द	+०	+२	+१	–१	–३	–५	–६	–७	–७	–५	–४	–१
जैसलमेर	+२६	+२८	+२७	+२३	+१८	+१४	+१०	+९	+१०	+१३	+१७	+२२
झाँसी	–२	+१	+०	–६	–११	–१७	–२२	–२५	–२३	–१८	–१३	–७
जगन्नाथपुरी	–२२	–१६	–१३	–२६	–३७	–४९	–५९	–६४	–६३	–५५	–४४	–३२
दिल्ली	–२	–१	–१	–४	–४	–८	–११	–१२	–१२	–१०	–७	–५
दुर्ग (म. प्र.)	–६	–०	–२	–१०	–१९	–२७	–३७	–४२	–४२	–३१	–२१	–१४
देहरादून	–१०	–१०	–९	–१०	–९	–११	–१२	–१२	–१३	–११	–९	–९
धर्मशाला	–५	–५	–६	–५	–५	–५	–५	–५	–४	–४	–४	–४

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
नाहन (हि.प्र.)	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-७	-७	-५	-५	-६
नंगल (पंजा.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
नैनीताल	-१३	-११	-१२	-१४	-१३	-१७	-१८	-२०	-१९	-१७	-१४	-११
नवलगढ़	+७	+९	+९	+८	+६	+३	+१	+२	-२	-१	+४	+४
नवांशहर	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-३	-३	-२	-२
नागपुर	+३	+७	+५	+४	-१४	-२३	-३२	-३५	-३३	-२७	-७	-६
नदौन (हि.प्र.)	-३	-३	-३	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३	-३
नाभा (पंजा.)	-२	-२	-२	-२	-२	-२	-३	-३	-२	-२	-२	-२
पटियाला	-३	-३	-३	-४	-३	-३	-५	-५	-४	-३	-३	-३
पानीपत	-६	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-६	-६	-६	-५
पठानकोट	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१
पुंछ	-१	-२	-१	+१	+४	+८	+१२	+१४	+१२	+९	+६	+३
प्रयाग	-१६	-१४	-१५	-२०	-२४	-३०	-३५	-३७	-३७	-३१	-२७	-२१
पूना (महा.)	+२८	+३५	+३७	+२४	+११	-२	-१३	-१९	-१७	-९	+३	+१७
पंचकूला	-५	-५	-५	-४	-४	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-५
पटना	-२९	-२६	-२३	-३०	-३५	-४२	-४७	-४९	-४९	-४६	-४०	-३३
पालमपुर	-६	-६	-६	-५	-५	-५	-६	-६	-५	-५	-५	-५
फरीदकोट	+३	+४	+४	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
फगवाड़ा	-१	-१	-१	-१	-२	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-१
फाजिल्का	+५	+५	+६	+६	+५	+५	+६	+६	+६	+६	+५	+५
फिरोज़पुर	+४	+४	+५	+४	+३	+३	+४	+४	+४	+४	+३	+३
फरीदाबाद	-३	-२	-२	-३	-५	-९	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
बटाला	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
वाराणसी	-२०	-१६	-१६	-२३	-२६	-३३	-३८	-४१	-४१	-३७	-३२	-२५
बिलासपुर	-५	-५	-५	-४	-४	-५	-४	-४	-४	-३	-३	-४
बंगलौर	+२१	+२९	+२७	+१३	-१	-२१	-३६	-४४	-४१	-२८	-११	+६
बरेली	-११	-१०	-११	-१३	-१२	-१५	-१७	-१९	-१९	-१७	-१३	-११
बीकानेर	+१३	+१५	+१५	+१४	+१३	+९	+८	+६	+६	+८	+११	+१४
बड़ौदा	+२६	+३०	+२९	+२३	+१६	+७	+२	-५	-५	+१	+११	+११
बुलन्दशहर	-५	-५	-५	-७	-८	-१२	-१४	-१५	-१५	-१४	-११	-८
बरनाला	-१	-१	-२	-१	-१	-१	-१	-१	-०	-०	-०	-०
विशाखापटनम	-९	-१	+१	-१३	-२६	-४०	-५२	-५८	-५६	-४७	-३४	-२०
भटिण्डा	+३	+३	+३	+३	+३	+२	+४	+३	+३	+३	+२	+२
भुवनेश्वर	-२३	-१८	-२०	-२८	-३६	-४९	-५८	-६३	-६२	-५४	-४३	-३२
भरतपुर	-२	+०	+०	-५	-८	-१२	-१५	-१७	-१७	-१२	-१०	-५
भोपाल	+६	+१०	+८	+२	-३	-१३	-२०	-२३	-२२	-१७	-९	-१
मेरठ (उ.प्र.)	-६	-३	-४	-७	-४	-७	-१०	-११	-११	-१०	-७	-५

नाम शहर	मेष मिन्ट	वृष मिन्ट	मिथु. मिन्ट	कर्क मिन्ट	सिंह मिन्ट	कन्या मिन्ट	तुला मिन्ट	वृश्चि. मिन्ट	धनु मिन्ट	मकर मिन्ट	कुम्भ मिन्ट	मीन मिन्ट
मुरादाबाद	-८	-७	-७	-८	-१०	-१४	-१६	-१८	-१७	-१४	-११	-८
मण्डी (हि.प्र.)	-७	-७	-७	-७	-७	-६	-४	-४	-४	-६	-६	-६
मोगा	+१	+१	+१	+२	+१	+१	+२	+२	+२	+२	+१	+१
मथुरा	-२	+०	-१	-४	-६	-१०	-१२	-१३	-१३	-११	-८	-६
मद्रास	+१०	+१८	+१६	+१	-१३	-३१	-४६	-५५	-५२	-४०	-२३	-०५
मैसूर	+२६	+३६	+३७	+१९	+२	-१७	-३३	-४१	-३९	-२६	-९	+१०
मुक्तसर	+४	+४	+३	+४	+४	+३	+५	+४	+४	+४	+३	+३
मलेरकोटला	-१	-१	-१	-१	-१	-२	+०	-१	-१	-१	-२	-२
मुम्बई	+३१	+३७	+३५	+२५	+१७	+३	-८	-१४	-१२	-३	+९	+२१
रोपड़	-४	-३	-३	-४	-३	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-३
राँची	-२५	-२१	-२३	-२८	-३६	-४५	-५१	-५७	-५५	-४८	-३९	-३१
रायपुर (छत्ती.)	-८	-२	-४	-१२	-२१	-२९	-३९	-४४	-४४	-३४	-२३	-१६
रोहतक	-१	+१	+१	-२	-२	-६	-९	-१०	-१०	-८	-५	-३
लुधियाना	-२	-२	-१	-२	-१	-२	-२	-२	-२	-१	-१	-२
लखनऊ	-१४	-१२	-१२	-१६	-२२	-२४	-३०	-३०	-३०	-२७	-२३	-१८
शिलांग	-५५	-४९	-५२	-५५	-६१	-६९	-७४	-७६	-७५	-७१	-६५	-६१
श्रीनगर	-३	-३	-३	-१	+२	+८	+११	+१२	+११	+७	+४	+१
शिमला	-६	-६	-६	-६	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-७	-६
सोलन	-६	-५	-६	-६	-६	-६	-५	-५	-६	-६	-६	-६
सोनीपत	-२	-२	-२	-२	-३	-७	-१०	-११	-११	-९	-७	-५
सहारनपुर	-६	-६	-५	-७	-६	-७	-८	-९	-९	-७	-५	-६
सुन्दरनगर	-६	-६	-६	-५	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-४	-५
सूरत	+२८	+३३	+३१	+२४	+१५	+४	-४	-९	-८	+१	+१२	+२१
शाहपुर	-४	-४	-५	-५	-४	-४	-४	-४	-३	-३	-३	-३
हरिद्वार	-८	-७	-७	-९	-८	-१०	-११	-११	-१२	-११	-१०	-९
हैदराबाद	+११	+१८	+१५	+४	-७	-२१	-३३	-३९	-३७	-२८	-१५	-१
होशियारपुर	-३	-४	-३	-३	-२	-२	-१	-१	-१	-१	-२	-३
हमीरपुर	-५	-५	-४	-४	-३	-३	-२	-२	-२	-२	-२	-४
हाँसी	+२	+२	+३	+२	+०	-४	-५	-७	-५	-४	-१	+२
हिसार	+२	+४	+३	+१	+०	-२	-३	-४	-४	-२	-१	+१

अनिष्ट ग्रहों के लिए उपयोगी ग्रहरत्न (नग)

शुभ ग्रहों के प्रभाव में वृद्धि और अनिष्ट ग्रहों के कुप्रभाव को दूर करने के लिए उपयुक्त ग्रहरत्न एवं नग अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होते हैं। अनुकूल नग जहां भौतिक समृद्धि में सहायक हैं वहां अनेक प्रकार के असाध्य मानसिक रोगों में भी लाभकारी होते हैं। परन्तु ध्यान रहे असावधानीवश गलत अथवा प्रतिकूल नग धारणा कर लेने से कई बार लाभ की अपेक्षा अनिष्ट की सम्भावना बढ़ जाती है। गलत नग की अपेक्षा नग न धारण करना अधिक अच्छा है। सही नग, धातु आदि चयन के पश्चात् शुभ मुहूर्त में आमंत्रित किये हुए नग का प्रभाव द्विगुणित हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं। हमारे कार्यालय से आप अपनी जन्म कुण्डली के आधार पर उपयुक्त नग व धारण करने के लिए जन्मपत्री या वर्षफल बनवाएं।

(1) माणिक्य—इसे सूर्यमणि भी कहते हैं। सिंदूरी अथवा सुर्ख रंग का होता है। इसे सूर्य ग्रह की शान्ति के लिए रविवार को सोने अथवा ताम्बे की अँगूठी में अनामिका अँगुली में धारण करना चाहिए। रविवार को पुष्य, कृत्तिका, उत्तराषाढ़ा या उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र हो तो अधिक अच्छा है। '**ॐ घृणि सूर्याय नमः**' इस बीज मन्त्र का जाप करके धारण करने से तीव्र ज्वर, अतिसार, शिरपीड़ा, बवासीर, नेत्रादि रोगों में शुभ है।

(2) मोती—चन्द्र रत्न है। इसे शुक्लपक्ष के सोमवार या पूर्णिमा के दिन चाँदी की अँगूठी में जड़वा कर कनिष्ठका अँगुली में धारण करना चाहिए। रोहिणी, हस्त अथवा श्रवण नक्षत्र शुभ है। ४ रत्ती का वजन हो तो अधिक प्रभावशाली होता है। पेट के रोगों, दन्त के रोगों, हृदय रोग, ब्लडप्रेशर आदि रोगों में हितकारी है। चन्द्रकान्त मणि मोती का उपरत्न है।

(3) मूंगा—लाल सिन्दूरी रंग का मंगल ग्रह की प्रतिनिधित्व करता है। 8 रत्ति का मूंगा मंगलवार को मृगशिरा, चित्रा या धनिष्ठा नक्षत्र में या मकर राशिस्थ चन्द्रमा कालीन धारण करना चाहिए। इसे सोने अथवा ताँबे की अँगूठी में इस मन्त्र द्वारा '**ॐ भौं भौमाय नमः**' मध्यमा अँगुली में धारण करना श्रेयकर है। मूंगा रक्तविकार, मंदाग्नि मनः व शारीरिक दुर्बलता के लिए अत्यन्त लाभकारी है।

(4) पन्ना—हरे वर्ण वाला बुध रत्न है। इसको शुक्ल पक्ष के बुधवार के दिन आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में पहनें। छः रत्ती वजन हो तो अत्यन्त प्रभावकारी होता है। इसे सोने की अँगूठी में दायें हाथ की कनिष्ठिका अँगुली में धारण करना चाहिए। धारण करने से पूर्व बुध के बीज मन्त्र '**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**' का पाठ कर लेना शुभ है। पन्ना धारण करने वाले व्यक्ति पर जादू-टोने का प्रभाव नहीं होता। बुद्धि-तीक्ष्ण होती है।

(5) पुखराज—सफेद और हल्दी रंग दोनों में मिलता है। यह गुरु रत्न है। इसे पुनर्वसु, विशाखा या पू.भा. नक्षत्र कालीन गुरुवार की प्रातः सूर्योदय के समय सोने की अँगूठी में तर्जनी अँगुली में धारण करना चाहिए। पांच रत्ती का पुखराज अत्यन्त प्रभावकारी होता है। इसका बीज मन्त्र यह है- '**ॐ ऐं श्री बृहस्पतये नमः।**' यह नग बल, बुद्धि, विद्या व संतान सुख व स्त्रियों के सुखमय विवाह जीवन के लिए विशेष शुभ है।

(6) हीरा—शुक्र ग्रह की शान्ति के लिए हीरा पहना जाता है। यह 2 से 7 रत्ती तक होना चाहिए। इसको शुक्रवार के दिन भरणी, पूर्वाफाल्गुणी या पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र कालीन सोने या प्लाटिनम की अँगूठी में जड़वाकर शुभ मुहूर्त में धारण करना चाहिए। इसका बीज मन्त्र हमारी पंचांग के पृष्ठ 30 पर देखें। हीरे के अभाव में श्वेत गोमेध धारण कर सकते हैं। हीरा धारण करने से बल, वीर्य, धनलक्ष्मी, मंदाग्नि, स्वप्नभंग व कामजन्य रोगों की शान्ति होती है। 'फिरोज़ा' तथा 'ओपल' (Opel) इसके उपरत्न हैं।

(7) नीलम—यह नग नीली किरणों युक्त पारदर्शी होता है। नीलम पंचधातु या सुवर्ण की अँगूठी में कम-से-कम चार रत्ती का होना चाहिए। पुष्य, अनुराधा या उत्तराभाद्रापद नक्षत्र हो। शनिवार के दिन '**ॐ शं शनैश्चराय नमः।**' का बीज मन्त्र पढ़कर धारण करें। नीलम रत्न कुछ ही घण्टों में अपना असर दिखाने लगता है। यदि कोई अनिष्ट हो जाए या आँखों में पीड़ा अथवा रात को भयानक स्वप्न आवे तो इसे तुरन्त उतार देना चाहिए। उपयुक्त नीलम धारण करने से आकस्मिक धन लाभ कारोबार में तरक्की, रक्त विकार व चक्षुरोगों में लाभ होता है।

(8) राहु रत्न गोमेध—चार से सात रत्ती वजन का गोमेध स्वाती, शतभिषा या आर्द्रा नक्षत्र में पंचधातु या लोहे की अँगूठी में जड़वाकर शनिवार को राहु का बीजमन्त्र पढ़कर शुभ मुहूर्त में पहनना चाहिए। देखने में यह उल्लू की आँख के सामान लगता है। वकालत व राजपक्ष आदि की उन्नति के लिए गोमेध अत्यन्त लाभकारी है। रोग व शत्रुओं की शान्ति हेतु भी इसका प्रयोग प्रभावी रहता है।

(9) केतु रत्न लहसनिया—यह नग अँधेरे में बिल्ली की आँखों के समान चमकता है। इसको बुधवार के दिन कम-से-कम चार रत्ती के वजन का पंचधातु की अँगूठी में कनिष्ठका अँगुली में धारण करें। उस दिन अश्विनी, मघा या मूला नक्षत्र हो तो शुभ है। इसको धारण करने में भूत-प्रेतादि की बाधा नहीं रहती। संतान सुख, धन में वृद्धि व शत्रु विनाश में सहायता प्रदान करता है। अधिक विस्तृत जानकारी के लिए हमारे कार्यालय से '**सम्पूर्ण रत्न विज्ञान**' पुस्तक 150/- रु. भेजकर मंगवा सकते हैं।

नोट–गलत नग धारण करने की अपेक्षा नग न धारण करना अधिक श्रेयकर है। अपनी जन्म कुण्डली में ग्रहों की स्थिति अनुसार ही प्रग धारण करें। उपयुक्त नग धारण करने के लिए अपनी जन्म कुण्डली परामर्श हेतु भेज दें।

–पं. विवेक शर्मा ज्योतिषी

द्वादश लग्नों एवं राशियों का फल [ज्योतिष तत्त्व (फलित खण्ड) से उद्धृत]

मेष लग्न–मेष लग्न (राशि) का स्वामी **मंगल** है। जातक का मध्यम कद, मुख का वर्ण लाल अथवा गेहुँआ होगा। राशिपति मंगल की स्थिति शुभ होने से रक्तवर्ण नेत्रों वाला, चंचल एवं उग्र स्वभाव, अत्यन्त साहसी, सतर्क एवं महत्वाकांक्षी होगा। जातक उद्यमी, तीव्र बुद्धि, स्वतन्त्र विचारों वाला, अस्थिर किन्तु तेज़ स्मरण शक्ति वाला, अत्यधिक उत्साही, स्पष्टवादी एवं भ्रमणप्रिय व्यक्ति होगा। प्रायः अपने परिश्रम के बल पर आय एवं धन के साधन जुटा लेगा। सगे सम्बन्धियों की ओर से सहायता व सुख कम होगा। यह राशि चर और अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण मेष राशि (लग्न) का जातक परिवर्तनशील प्रकृति, अस्थिर स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित हो जाने वाला एवं शीघ्र ही मान जावे। व्यवसाय में अनेक कठिनाईयों के बावजूद उन्नति के लिए प्रयास करता रहता है। जायदाद एवं व्यवसाय में कई प्रकार के झंझट (उलझनें) आती हैं और इन्हीं कामों के द्वारा लाभ भी होता रहता है। पित्त, कफ, सिर दर्द, रक्त विकार, नेत्र विकार, त्वचा आदि रोगों का भय रहता है। मंगल शुभ होने पर जातक को खेल-कूद व संगीतादि में भी विशेष शौक रहता है। सामान्यतः **मूंगा** मेष लग्न वालों के लिए शुभ रहता है, परन्तु योग्य ज्योतिषी से परामर्श के बाद धारण करना चाहिए। **भाग्योदयकारक** वर्ष १६, २२, २८, ३२, ३६वें होंगे।

वृष लग्न–वृष लग्न का **स्वामी शुक्र** है। यदि शुक्र शुभ हो तो जातक सुन्दर, सुगठित शरीर व मध्यम कद वाला होगा। गोल, बड़ी व चमकदार आँखें, सुन्दर वर्ण एवं आकर्षक व्यक्तित्व वाला होगा। जातक परिश्रमी, हँसमुख एवं सौम्य प्रकृति वाला, धीर, शान्त एवं दृढ़ स्वभाव का होता है। जातक उदारहृदय, प्रसन्नहृदय और प्रभावशाली व्यक्ति होगा। स्वावलम्बी, उच्चाभिलाषी तथा भौतिक सुखों के लिए कठोर परिश्रम से भी पीछे नहीं हटेगा। जातक मधुरभाषी, सौन्दर्य प्रेमी, संगीत कला-साहित्यादि कार्यों में विशेष रुचि रखने वाला होगा। घर-दफ्तर आदि स्थानों पर सजावट रखेगा तथा ऐश्वर्य साधनों में निरन्तर वृद्धि करते रहने का प्रयास करेगा। जातक प्रायः अपनी इच्छानुसार ही कार्य करने वाला, ऐश्वर्ययुक्त जीवनयापन का इच्छुक, विपरीत योनि वालों के साथ मैत्री करने का आकांक्षी, व्यवहार कुशल तथा कठिन परिस्थितियों में भी अपना कार्य निकालने में कुशल होगा। जातक प्रायः चन्द्र-बुध की स्थिति शुभ होने पर कामर्स, गणित, बैंकिंग, एक्टिंग, वस्त्र उद्योग, क्रय-विक्रय (Trading) आदि में सफलता प्राप्त कर लेता है। **शुभ नग हीरा** है। भाग्योदायकारक वर्ष २८, ३६, ४२ एवं ४८वें होंगे।

मिथुन लग्न–मिथुन लग्न (राशि) का स्वामी बुध है। मिथुन लग्न वाला जातक, गौरवर्ण, चंचल आँखों वाला, सामान्य एवं ऊँचे कद वाला होगा। जातक अस्थिर किन्तु मौलिक विचारों से युक्त, तीव्र बुद्धि, परिवर्तनशील प्रकृति, मित्रों को हर प्रकार से सहायक तथा नीति के अनुसार आचरण करने वाला, तर्क-वितर्क करने में कुशल, दूर-दूर के स्थानों की यात्राएँ करने का सौभाग्य प्राप्त करेगा। जातक में बुद्धि तत्त्व एवं भाव तत्त्व दोनों प्रबल होने के कारण पठन-पाठन, कानूनी कार्य, व्यापार सम्बन्धी और लेखन सम्बन्धी कार्यों को बड़ी गम्भीरता से करेगा, मजबूत हृदय वाला परन्तु नर्म स्वभाव होने के कारण कमज़ोर समझा जाता है। द्विस्वभाव होने से एक ही समय पर एक से अधिक कार्य शुरू करने की प्रवृत्ति रहेगी, अपने कार्य-क्षेत्र (व्यवसाय) में प्रायः परिवर्तन करता रहता है तथा प्रायः अपने परिश्रम, बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर जीवन में सफलता प्राप्त कर लेगा। नए-नए मित्र बनाने में कुशल, बातचीत करने की कला में निपुण होगा। क्रय-विक्रय, पुस्तक-लेखन, लेखाकार (Accounts), बैंक, वकालत, अध्यापन, इंजीनियरिंग, कल-पुर्जों के कार्य-व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। **शुभ नग पन्ना है, स्त्रियों के लिए पुखराज** भी अच्छा होगा। भाग्योदयकारक वर्ष २२, ३२, ३५, ३६, ४२ वें होंगे।

कर्क लग्न–कर्क लग्न (राशि) का स्वामी चन्द्रमा है। जल तत्त्व प्रधान एवं चर राशि होने से जातक सुन्दर एवं आकर्षक मुखाकृति, गोल चेहरा और मध्यम कद होगा। **चन्द्र-मंगल** शुभ हो तो जातक बुद्धिमान, संवेदनशील, भावुकहृदय, नयायप्रिय व दयालु स्वभाव वाला होगा। सामान्यतः परिवर्तनशील स्वभाव, चंचल, जलीय वस्तुओं (Liquids) का प्रिय, उच्च कल्पनाशील, समयानुकूल काम निकालने में कुशल, मिलनसार प्रकृति होगी। यदि चन्द्रमा अशुभ हो तो चिड़चिड़ा स्वभाव, वातावरण से शीघ्र प्रभावित होने वाला होगा। प्राकृतिक सौन्दर्य, कला-संगीत व साहित्य में विशेष रुचि रखे तथा सौन्दर्यानुभूति भी विशेष रूप से रहे। ऐसा जातक परिस्थितिनुसार ढल जाने वाला, प्यार सम्बन्धों में सच्चा, ईमानदार और सहृदय दयालु प्रकृति का होगा। ऐसा जातक दिल से जिस काम को करना चाहे कर ही लेता है। कल्पना (विचार) शक्ति प्रबल होती है, अन्य पुरुष के भावों को शीघ्र समझ लेने की विशेष क्षमता होती है। कर्क राशि वालों को मकर, वृश्चिक, मीन राशि वालों के साथ मित्रता शुभ रहती है। **शुभ नग सुच्चा मोती** तथा **सफेद पुखराज** है। भाग्योदयकारक वर्ष २४, २५, २८, ३२, ३६, ४० होंगे।

सिंह लग्न–सिंह लग्न (राशि) का स्वामी सूर्य है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाला जातक सुन्दर-पुष्ट शरीर वाला, चौड़ा मस्तक, सुगठित, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला होगा। जातक बुद्धिमान, उद्यमी, कर्मठ, निडर, स्वतन्त्र विचारों वाला, पराक्रमी, व्यवहार कुशल, नीति के अनुसार आचरण करने वाला, उच्चाकांक्षी, खानपान का शौकीन, देश-विदेश में भ्रमण करने वाला, शीघ्र क्रुद्ध हो जाने की प्रकृति होने पर भी अपने बुद्धि-चातुर्य से स्थिति को सम्भाल लेने वाला होगा। छोटी-छोटी एवं मामूली बातों को उपेक्षा की दृष्टि से देखने वाला होगा तथा बड़े-बड़े कामों को भी अपने उद्यम द्वारा पूरा करने से तत्पर हो जाएगा। भाई-बन्धु होने पर भी उनका सुख कम रहता है। उच्चाभिलाषी होने के कारण प्रत्येक कार्य-व्यवसाय को बड़े पैमाने एवं उच्चस्तर पर करना पसन्द करेगा। उच्चस्तरीय, वैभवशाली एवं रईसी जीवन-यापन करने की प्रबल इच्छा रखेंगे जिसके कारण अपनी सीमा से बढ़कर भी खर्च कर डालते हैं। इस लग्न वाले जातक का बाह्य रूप में आकर्षक रूप एवं अच्छा स्वास्थ्य रहता है। **शुभ नग माणिक्य है। सिंह लग्न (राशि) वालों को सूर्य उपासना** करनी चाहिए। भाग्योन्नति वर्ष १६, २२, २४, २६, २८, ३२ होते हैं।

कन्या लग्न–कन्या लग्न (राशि) वाले जातक का मध्यम कद, कोमल शरीर, सुन्दर व आकर्षक आँखें, लम्बी नाक, वाणी तेज़ और बारीक होगी। जातक प्रियभाषी, हर कार्य में सहायक, लज्जाशील प्रकृति, नर्म स्वभाव और नीति के अनुकूल काम करने वाला होगा। कल्पनाशील, सूक्ष्मदर्शी, एवं संवेदनशील (Senstivie) स्वभाव होगा। शान्तचित्त एवं एकान्तप्रिय प्रवृत्ति होगी। परन्तु कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों में भी स्वयं को ढालने का सामर्थ्य होगा। एक ही समय पर अनेक यात्राएँ एवं विषयों में पारंगत होने की चेष्टा करेगा। संगीत, कला एवं साहित्य की ओर विशेष दिलचस्पी रखेगा। द्विस्वभाव एवं परिवर्तनशील प्रकृति होने के कारण एक विषय पर चिरकाल तक स्थिर नहीं हो पाता। **बुध-शुक्र** का शुभ योग होने से लेखा-गणित, (Account), संगीत, कला, अध्यापन, लेखन, क्रय-विक्रय आदि की ओर विशेष झुकाव रहेगा तथा सफलता भी होगी। धन की अपेक्षा बौद्धिक कार्यों में विशेष रुचि रहती है। बुद्धिमान, तीव्र स्मरणशक्ति एवं अध्ययनशील प्रकृति होगी। **शुभ नग पन्ना** है। भाग्योन्तिकारक वर्ष २५, ३२ तथा ३५, ३६, ४२ वें वर्ष होते हैं।

तुला लग्न—तुला लग्न (राशि) का स्वामी शुक्र है। तुला लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक श्वेत व सुन्दर वर्ण, मध्यम अथवा लम्बा कद, सौम्य एवं हंसमुख प्रकृति होगी। जातक/जातिका न्यायप्रिय, हंसमुख, व्यवहारशील एवं नीति के अनुसार कार्य करने में कुशल होगा। ईमानदार, मिलनसार, नए-नए मित्र बनाने में कुशल होगा। सौंदर्यानुभूति विशेष होगी, संगीत, कला, नाट्य की ओर विशेष झुकाव होगा। रहन-सहन का ढंग रईसी एवं प्रभावपूर्ण होगा। जातक पर संगीत का प्रभाव जल्दी होगा। **चन्द्र-शुक्र** शुभ हों, तो मानसिक एवं कल्पनाशक्ति प्रबल होगी, परन्तु मन की केन्द्रीय शक्ति बहुत देर तक नहीं रहती। जब तक किसी कार्य में लगा रहे तब तक दिलोजान और मजबूत दिल से करे, परन्तु अपने विचार व योजना में परिवर्तन करने में भी शीघ्र तैयार हो जाएगा। जातक को देश-विदेशों में अनेक स्थानों पर भ्रमण करने के अवसर प्राप्त होते हैं। बुद्धिमान, तर्कशील, सावधान एवं सतर्क रहने वाला, मध्यस्थता एवं न्याय करने में कुशल, विपरीत योनि (Sex) के प्रति विशेष झुकाव रखे। इनको **हीरा** (Diamond) अथवा **श्वेत मोती शुभ नग** है जोकि किसी सुयोग्य ज्योतिषी के परामर्शानुसार धारण करने चाहिएं। जीवन के २५, २७, ३२, ३३, ३५ एवं ४७वें वर्ष भाग्य वृद्धिकारक होंगे।

वृश्चिक लग्न—वृश्चिक लग्न (राशि) का स्वामी मंगल है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक सुन्दर मुख वाला, परिश्रमी, अपने सामर्थ्य पर ही भरोसा करने वाला, धार्मिक प्रवृत्ति होगी। **मंगल** शुभ हो तो उत्साही, उदार, परिश्रमी, साहसी, ईमानदार, स्पष्टवादी, परोपकारी, व्यवहार-कुशल, कर्त्तव्यनिष्ठ, दृढ़ संकल्प शक्ति वाला होगा। भाई बहनों अथवा सम्बन्धियों की सहायता कम मिलती है, निजी पुरुषार्थ द्वारा ही निर्वाह योग्य आय के संसाधन जुटा पाते हैं। तनिक विरुद्ध बात हो जाने पर शीघ्र उत्तेजित हो जाएंगे, परन्तु सच्चाई अथवा सुपात्रता की दृष्टि से सुयोग्य जन की सहायता करने में अपने स्वार्थ की भी बलि देने से पीछे नहीं हटेंगे। जातक जिस कार्य को करने का निश्चय कर लेता है, उसे दृढ़तापूर्वक पालन करने का प्रयास करता है। कैमिस्ट, इंजीनियर, वकील, पुलिस, सेना विभाग, अध्यापन, ज्योतिष, अनुसंधानकर्त्ता के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करेंगे। **शुभ नग मूँगा** है। शुभ रंग लाल, संतरी, पीला, हल्का गुलाबी (Pink) है। अपनी आयु के २४, २८, ३२, ३६, ४४वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

धनु लग्न—धनु लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। इस लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक का ऊँचा मस्तक, कान बड़े, लग्न भाव में क्रूर ग्रह होने की स्थिति में सिर मध्य अल्पबाल अथवा गंजा हो सकता है। **गुरु-बुध** की स्थिति शुभ हो तो सौम्य एवं शान्त, सरल स्वभाव, धार्मिक प्रकृत्ति, उदार हृदय, परोपकारी, संवेदनशील, करुणा-दया आदि भावनाओं से युक्त होगा। दूसरों के मनोभावों को जान लेने की विशेष क्षमता होगी, इस लग्न (राशि) प्रभावित व्यक्ति में बौद्धिक एवं मानसिक शक्ति की प्रबलता के साथ-साथ अश्व जैसी तीव्रता, उत्साह एवं उत्तेजना से कार्य करने की क्षमता होगी। द्विस्वभाव राशि के कारण शीघ्र कोई निर्णय नहीं ले पाएं और इनको क्रोध जल्दी नहीं आता, परन्तु जब आता है तो देर तक क्रोधित रहते हैं। अग्नि तत्त्व प्रधान होने के कारण कठिन से कठिन समस्याओं को अपने सब, साहस एवं परिश्रम के द्वारा सुलझा लेंगे तथा निजी पुरुषार्थ द्वारा जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करने वाला, धन, सम्पदा, भूमि-जायदाद व सवारी आदि सुखों को प्राप्त करने में सफल होगा। **मंगल-गुरु** शुभ हो तो उच्च व्यवसायिक विद्या के योग है। शिक्षक, धर्म-प्रचारक, राजनीतिक, वैद्य-डॉक्टर, वकील, पुस्तक व्यवसाय आदि के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। **शुभ नग पुखराज** है। अपनी आयु के २३, २७, ३२, ३६वें वर्ष विशेष भाग्योन्नति कारक होंगे।

मकर लग्न—मकर लग्न (राशि) का स्वामी शनि है। इस लग्न (राशि) में जन्म लेने वाले जातक का मध्यम कद, नयन नक्श तीखे, सुन्दर मुखाकृति, काले घने बाल एवं पतली कमर वाला होगा। जातक गम्भीर, भावुक, हृदय, संवेदनशील, उच्चाभिलाषी, सेवाधर्मी, मननशील एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाला होगा। बुध व शुक्र शुभ होने पर व्यवहार-कुशल, गहन विचार एवं सूक्ष्म विश्लेषण के पश्चात् ही महत्त्वपूर्ण निर्णय लेते है। क्षमाशील प्रायः कम होते हैं तथा इन्हें बदले एवं शत्रुता की भावना भुला पाना अत्यन्त कठिन होता है। चर राशि एवं लग्न होने से जातक की मानसिक एवं आत्मिक शक्ति प्रबल होगी। **गुरु-शनि** शुभ हो तो, जातक नर्म स्वभाव (विनम्र), विनयशील, व्यवहार-कुशल, नीति के अनुकूल आचरण करने वाला, तर्कशील, भली-बुरी बात की पहचान करने में कुशल, विश्वसनीय, मित्रता स्थापित करने में अत्यन्त सावधान (Selective) तथा ईमानदार होंगे। तर्क-वितर्क करने में कुशल, अपने विरुद्ध घात को हृदय से भुला पाना कठिन होता है। खांसी तथा वायु रोग से सावधानी बरतें। **शुभ नग नीलम** है। भाग्योन्नति वर्ष २२, २४, २८ एवं ३२, ४६ होते हैं।

कुम्भ लग्न—लग्नेश (राशिपति) शनि शुभ अवस्था में हो तो जातक मध्यम अथवा ऊँचे कद वाला, सुन्दर प्रभावशाली व्यक्तित्त्व होगा। बुद्धिमान, साधन सम्पन्न, तीव्र स्मरण शक्ति एवं गम्भीर प्रकृत्ति वाला होगा। दूसरों के प्रति दयाभाव रखने वाला, परोपकारी मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए हर प्रकार से सहायक होगा। व्यावहार कुशल, मिलनसार, स्पष्टवादी एवं निस्वार्थ भाव से सेवा करने में तत्पर होगा। जातक स्वाभिमानी, स्वतन्त्रताप्रिय एवं नए-नए मित्र बनाने में भी पीछे नहीं हटेगा। उद्योगी, उद्यमी, परिश्रमी प्रकृति एवं प्रबन्धात्मक योग्यता विशेष होगी एवं उपयुक्त साधन उपलब्ध होने पर देश-विदेशों में जाने के सुअवसर प्राप्त होंगे। महत्त्वकांक्षी होते हुए भी क्रियात्मक दृष्टिकोण रखेंगे तथा अनेक विघ्न-बाधाओं व कठिनाइयों के होने पर भी जीवन में उच्च स्थिति, धन पदादि प्राप्त करने में सफल होंगे। कुम्भ लग्न मे यदि गुरु मित्र क्षेत्री या शुभ में हो तो जातक उच्चाधिकारी, उच्चपदासीन, क्रय-विक्रय, प्रोफेसर, जज-वकील अथवा उच्च एवं धनी-व्यापारी होगा, प्रारम्भिक जीवन में आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष होगा। आर्थिक क्षेत्र में विशेष संघर्ष व कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। **शुभ नग नीलम** है। **स्त्रियों के लिए पुखराज नग शुभ** होगा।

मीन लग्न—मीन लग्न (राशि) का स्वामी गुरु है। मीन लग्न (राशि) में उत्पन्न जातक बुद्धिमान, गम्भीर एवं सौम्य प्रकृति, परोपकारी कार्य करने में तत्पर, ईमानदार, सत्यप्रिय, धार्मिक, धर्म-कर्म एवं फिलास्फी, साहित्य एवं गूढ़ विद्याओं की ओर विशेष अभिरुचि रखेगा। उच्चाभिलाषी, उच्चाकांक्षी एवं स्वाभिमानी प्रकृति, अपनी मान-मर्यादा एवं प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखें। सेवाभाव रखने वाला, तीव्र बुद्धि, परिश्रमी, उद्यमी, दूरदर्शी, व्यवहार कुशल एवं नीति के अनुसार आचरण करने वाला, विश्वसनीय, ईमानदार तथा हर प्रकार से मित्रों एवं सगे-सम्बन्धियों के लिए सहायक होगा। परिस्थितियों के अनुसार स्वयं को ढाल लेने की अपूर्व क्षमता होगी। देव तुल्य प्रकृति होती है। दूसरों पर न तो अन्याय करेंगे न ही किसी भान्ति अन्याय को सहन करेंगे। जातक कलाकार, चल-चित्र, व्यवसाय, खाने-पीने की वस्तुओं से सम्बन्धित, समाज सुधारक, अध्यापन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। **शुभ नग पुखराज** है। शुभ वैवाहिक जीवन के लिए **पन्ना** धारण करें। भाग्योन्नतिकारक वर्ष २४, २८, ३३, ३८, ४५ वर्ष होते हैं।

पुस्तकों के महासागर में से मोती रूप पुस्तकें वी. पी. द्वारा मंगवाएँ

टैक्निकल पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
सट्टे का कल्प वृक्ष (मंदा-तेजी)	120 रु.
मोटर मैकेनिक गाईड	250 रु.
मोटर वाईडिंग	300 रु.
पशु चिकित्सा	300 रु.
विवाहित आनन्द	80 रु.
गर्भावस्था व शिशुपालन	150 रु.
कष्टनिवारक उपाय-टोटके	120 रु.
संस्कृत-हिन्दी कोष	350 रु.
व्यापार रत्न	350 रु.
तबला वादन कोर्स	100 रु.
Dictionary (Big)	350 रु.
हिन्दी शब्द कोष	300 रु.
ताश के जादू	60 रु.
स्माल स्केल इण्डस्ट्रीज़ (बड़ी)	300 रु.
इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स	200 रु.
कम्पयूटर कोर्स (बड़ा)	320 रु.
इलैक्ट्रिक गाईड	150 रु.
फोटोग्राफी व कलर प्रोसेसिंग	100 रु.
जूडो कराटे सीखें	80 रु.
हारमोनियम सीखिए	100 रु.
होम टेलरिंग कोर्स	100 रु.
सिलाई कटाई शिक्षा	120 रु.
101 मैजिक ट्रिक्स	80 रु.
मोटर ड्राइवरी शिक्षा	80 रु.
हिन्दी उर्दू टीचर	30 रु.
घरेलू आयुर्वेदिक गाइड	330 रु.
महिलाओं के उद्योग	120 रु.
पोल्ट्री फार्मिंग	150 रु.
मॉडर्न सोप इन्डस्ट्रीज़	300 रु.
कॉस्मेटिक्स इन्डस्ट्रीज़	200 रु.
इन्वर्टर सर्विसिंग	150 रु.
ए. सी. मोटर वाईडिंग	200 रु.
स्क्रीन प्रिंटिंग गाईड	150 रु.
आर्य संगीत रामायण (नाटक)	165 रु.

घर में रखने योग्य पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
बनाइये खाना वेजीटेरियन	90 रु.
खाना खजाना	250 रु.
कुकरी बुक (बड़ी)	200 रु.
आचार, चटनी व मुरब्बे	80 रु.
भारतीय व्यंजन	80 रु.
आलू पनीर के व्यंजन	60 रु.
माइक्रोवेव कुकिंग	80 रु.
फल सब्ज़ी से चिकित्सा	80 रु.
चाइनिज़ कुकरी	80 रु.
हर्बल ब्यूटी बुक	180 रु.
योगासन चिकि. स्वा. रामदेव	140 रु.
प्राणायाम चिकित्सा	50 रु.
ब्यूटी पार्लर कोर्स (रंगीन)	180 रु.
हिन्दुओं के व्रत और त्यौहार	80 रु.
55 चालीसा एवं आरती संग्रह	60 रु.

चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
एलोपेथिक चिकि. (कोकचा)	350 रु.
वृहद् होम्योपैथिक चिकित्सा	300 रु.
अमृतसागर	200 रुपए
माधवनिदान	200 रुपए
स्वदेशी चिकित्सा सार	110 रुपए
घर का वैद्य	100 रुपए
रसराज महोदधि	250 रुपए
आयुर्वेदिक गाईड	350 रुपए
अनुपम आयुर्वेदिक गाईड	200 रुपए
एलोपैथिक मैडी. गाईड	350 रुपए
होम्योपैथी द्वारा ईलाज	100 रुपए
योगासन एवं साधना	100 रुपए
वृहद् बूटी प्रचार	150 रुपए
जड़ी-बूटियाँ	200 रुपए
आयुर्वेद सार संग्रह (वैद्यनाथ)	230 रु.
यूनानी चिकित्सा सार	150 रु.
सचित्र योगासन व ध्यान	120 रु.
वनौषधि शतक	250 रु.
भैषज्य भास्कर	100 रु.
ईलाजुलगुर्बा	120 रु.
दादी माँ के नुस्खे	100 रु.
भोजन द्वारा चिकित्सा	100 रु.
आयुर्वेद मंथन	80 रु.
महत्त्वपूर्ण जड़ी-बूटियां	300 रु.
रसेन्द्र सार संग्रह	295 रु.
गुणकारी जड़ी-बूटियां	80 रु.
आयुर्वेदिक पेटेण्ट चिकित्सा	150 रु.
होम्योपैथिक चिकित्सा	120 रु.
भावप्रकाश निघन्टु	195 रु.
योग के अद्भुत चमत्कार	80 रु.
आपका आरोग्य आपके हाथ	100 रु.
योगासन	100 रु.
प्राकृतिक चिकित्सा	100 रु.
घरेलू इलाज	100 रु.
चरक संहिता (सम्पूर्ण)	175 रु.
आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान	350 रु.
योगासन व स्वास्थ्य	100 रु.
प्राणायाम कुण्डलिनी हठयोग	95 रु.

यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

पुस्तक	मूल्य
काली किताब	550 रु.
काली किताब (छोटी)	300 रु.
महाइन्द्रजाल	600 रु.
असली प्राचीन इन्द्रजाल	200 रु.
शाबर मंत्र विद्या	120 रु.
तंत्र-मंत्र-यंत्र रहस्य	300 रु.
यंत्र-मंत्र-तंत्र महाशास्त्र	1000 रु.
काला ईल्म	120 रु.
इस्लामी तंत्र शास्त्र	105 रु.
हिन्दू तंत्र शास्त्र	120 रु.
श्री दुर्गा साधना तंत्र	150 रु.
भारतीय तंत्र विद्या	250 रु.
अनुभूत यंत्र तंत्र ओर टोटके	150 रु.
बगुलामुखी रहस्यम्	80 रु.
कालिका सिद्धि	150 रु.
सिद्ध शाबर मन्त्र	150 रु.
तांत्रिक सिद्धियां	100 रु.
काली तंत्र शास्त्र	100 रु.
तारा तंत्र शास्त्र	100 रु.
तांत्रिक मुद्रा विज्ञान	105 रु.
तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग	60 रु.
यंत्र-मंत्र-तंत्र टोटके	50 रु.
छिन्नमस्तका तंत्र शास्त्र	95 रु.
ब्रह्मास्त्र विद्या व बगुलामुखी सा.	800 रु.
महाकाल संहिता	600 रु.
धनदायक तांत्रिक प्रयोग	60 रु.
11000 गंडे ताबीज़ और टोटके	300 रु.
महाशक्तिशाली टोने टोटके	300 रु.
महाकाल संहिता (4 भाग)	2400 रु.
तन्त्रराजतन्त्रम् (2 भाग)	1200 रु.
श्रीदेवीरहस्यम् (2 भाग)	1200 रु.
मंत्र रहस्य	110 रु.
यंत्र विधान	200 रु.
यंत्र विद्या के 121 प्रयोग	90 रु.
नवग्रह अनुकूलन तंत्र	80 रु.
धन प्रदायक साधनाएं	80 रु.
ग्रह नक्षत्र तंत्रम्	80 रु.
श्री यन्त्रम् महिमा	80 रु.
मनोकामना सिद्धि	80 रु.
वशीकरण मन्त्र	80 रु.
चीन बंगाल का जादू	60 रु.
कामाक्षा मन्त्र	80 रु.
सूर्य तन्त्रम्	70 रु.
कामाख्या उपासना	200 रु.
रुद्रायमल तंत्र (बड़ा)	200 रु.
परमसिद्ध 121 चमत्कारी यन्त्र	100 रु.

कर्मकाण्ड सम्बन्धी पुस्तकें

पुस्तक	मूल्य
गण्डमूल नक्षत्र शांति प्रयोग	65 रु.
कार्तिक स्त्री प्रसूता शांति	30 रु.
जन्मदिन पूजा पद्धति	40 रु.
कर्मकाण्ड प्रदीपः	145 रु.
विवाह पद्धति	70 रु.
शिवरात्रि व्रत कथा (भा. टी.)	25 रु.
पौरोहित्यक कर्म-विधि	250 रु.
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	75 रु.
नित्यपूजा (क्यों और कैसे ?)	150 रु.
कर्मकाण्ड भास्कर	150 रु.
कर्मकाण्ड भारती	150 रु.
पूजा रहस्यम्	100 रु.
पूजा भास्कर	80 रु.
हवन रहस्यम्	70 रु.
नवग्रह पूजा विधान (नवग्रह उपायों सहित)	40 रु.
नित्यकर्म व देवपूजा पद्धति	100 रु.
रुद्राष्टाध्यायी भा. टी.	90 रु.
श्रीसूक्तम् व कनकधारा	25 रु.
महालक्ष्मी पूजन विधान	25 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा टीका)	100 रु.
गरुड़ पुराण (भाषा) बड़ा	200 रु.
सनातन संस्कार विधि	150 रु.
षोडश संस्कार रहस्य	150 रु.
श्राद्ध विवेक	150 रु.
नित्यकर्म पद्धति	150 रु.
पितृकर्म पद्धति	75 रु.
सर्वदेव पूजा पद्धति	30 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा प्रकाश	250 रु.
हवन पद्धति	80 रु.
वशिष्ठी हवन पद्धति	40 रु.
आदित्य हृदय स्तोत्र (भा.टी.)	25 रु.
सर्वदेव प्रतिष्ठा (लघु)	150 रु.
अन्त्येष्टि कर्म रहस्यम्	70 रु.
सर्व व्रतोद्यापन रहस्यम्	200 रु.
नित्यकर्म पूजा प्रकाश	120 रु.
दुर्गार्चन पद्धति	180 रु.

अपने आर्डर के साथ 100/- रु. पेशगी अवश्य भेजें। वी.पी. द्वारा मंगवाने का पता–

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर। फोन–2457959

मानव जीवन को सुधारने वाले धार्मिक ग्रन्थ

गो. तुलसीकृत रामायण

आठ काण्ड वाली सम्पूर्ण रामायण जिसमें गो० स्वामी तुलसी कृत दोहे व चौपाइयों को इतनी सरल भाषा में दिया गया है कि साधारण पढ़ा लिखा व्यक्ति भी श्रीराम चरित् की महिमा को हृदयांगम कर सकता है। इस पवित्र रामायण को पठन-पठनार्थ घर में रखना अथवा दान-दहेज में देना पुण्य का काम समझा जाता है। सुन्दर छपाई, चित्रों सहित व मोटे अक्षरों में इस रामायण की कीमत **501/- रु.।** आर्डर के साथ 100 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। **मध्यम रामायण** का मूल्य 250 रु. (डाक व्यय अलग)

सुखसागर बड़ा

श्रीमद्भागवत पुराण के 12 स्कन्धों का सरल हिन्दी अनुवाद जिसमें भगवान् विष्णु के 24 अवतारों का विशद वर्णन, शुकदेव जी द्वारा राजा परीक्षत को श्री कृष्ण, इत्यादि तत्त्वों को उदाहरण देकर समझाया गया है। इसके श्रवण और मनन मात्रा से परम शान्ति प्राप्त हो जाती है। **मूल्य सचित्र 451 रुपए।**

सम्पूर्ण 'कार्तिक माहात्म्य'

प्रस्तुत पुस्तक में कार्तिक मास में व्रत, स्नान, पूजन आदि के विशेष नियम, तुलसी एवं श्रीगङ्गा की उत्पत्ति, तुलसी, आँवला, पीपल, करवा-चौथ, अहोई व्रत तथा कार्तिक मास में दीप दान एवं मार्जन का महत्त्व, मुख्य पर्वों जैसे-एकादशी, धन, त्र्योदशी, दीपावली, अन्नकूट, भाई-दूज, भीष्मपंचक, कार्तिक व्रत उद्यापन, तुलसी विवाह विधि, तुलसी स्तोत्र एवं आरती और भगवान की आरतियां संग्रहीत हैं। **मूल्य-40 रु.**

श्री दुर्गा सप्तशती (भाषाटीका)

भगवती देवी पर यह पुस्तक अनेक वर्षों से अप्रकाशित रही है जोकि अब पं० देवी दयालु ज्योतिष कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। इसमें दुर्गा हवन विधि, सिद्ध सम्पुट मन्त्र नवार्ण, दुर्गा पाठ, शतचण्डी विधि श्री दुर्गा पाठाध्याय के अतिरिक्त और भी बहुत विशेषताओं का समावेश कर दिया गया है। मूल्य केवल 75 रुपए। सजिल्द 85 रुपए।

श्रीमद्भगवत् गीता (सचित्र)

भगवद् गीता विश्व ज्ञान का अपूर्व भण्डार है जिसमें कर्म, भक्ति और ज्ञान का अद्भुत समन्वय मिलता है। अर्जुन को दिया गया भगवान् कृष्ण का परम ज्ञान जो प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। 18 अध्याय वाली माहात्म्य व अनेक आरतियों सहित यह पुण्य ग्रन्थ आज ही मंगवाएँ। **मूल्य 220 रु.।**

चारों वेद (भा. टी.)

ऋग्वेद-4 खण्डों में, यजुर्वेद-1 खण्ड, अथर्ववेद-2 खण्ड, समावेद-1 खण्ड में उपलब्ध हैं जिसमें संस्कृत भाषा के साथ हिन्दी में भी विस्तार से समझाया गया है। जिसे प्रत्येक भारतीय को अवश्य पढ़ना चाहिए। आज ही मंगवाएँ। **मूल्य सम्पूर्ण सैट-1600 रु.।**

श्री शिव महापुराण (बड़ा) सचित्र

जिसमें शिव महिमा, पार्थिव, पूजन, शिव पूजन विधि, सृष्टि वर्णन, योग वर्णन इत्यादि पौराणिक कथाओं सहित विस्तृत वर्णन दिया गया है। शिव-भक्ति में श्रद्धा रखने वालों के लिए अनिवार्य ग्रन्थ है। **मूल्य केवल 500 रु.।** मनीआर्डर के साथ 200 रुपए पेशगी अवश्य भेजें। डाक व्यय 50 रु. पृथक।

कुछ अन्य उपयोगी ग्रन्थ

ग्रन्थ	मूल्य
श्रीमद्देवी भागवत पुराण	301/-
श्री विष्णु पुराण	300/-
श्री विश्वकर्मा महापुराण	200/-
व्यापार रत्न	350/-
धर्मसिन्धु (भाषा टीका)	500/-
निर्णयसिन्धु (भाषा टीका)	550/-
चाणक्य नीति	80/-
कर्मठगुरु (भा.टी.)	**400/-**
कवच संग्रह (भा.टी.)	100/-
मंत्र महोदधि	550/-
षोडश संस्कार रहस्य	150/-
मन्त्र सागर	120/-
बगुलामुखी महासाधना	150/-
मंत्र द्वारा कामना सिद्धि	95/-
मंत्र द्वारा रोग निवारण	80/-
मनोकामना पूरक मंत्र	80/-
योग वशिष्ठ महारामायण	300/-
गरुड़ पुराण भा. टी.	100/-
सामुद्रिक शास्त्र (दो भाग)	660/-
विशाल भृगु संहिता पद्धति	350/-
चन्द्र हस्त विज्ञान	**395/-**
असली आल्हाखण्ड	**151/-**
विवाहपद्धति देवीदयालु	**70/-**
दुर्गा सप्तशती (भा. टी.)	**75/-**
सूर्य पुराण भाषा	300/-
हस्त रेखा विज्ञान	100/-
तान्त्रिक सिद्धियाँ	100/-
रामायण तर्ज राधेश्याम	150/-
दुर्गार्चन रहस्यम्	150/-
श्रीगणेश महापुराण	300/-
मनुस्मृति	200/-
देवी-देवता सिद्धि	90/-
भजन सरोवर	150/-
शिव मंत्रावली	180/-

अपने आर्डर के साथ 100/- रुपए पेशगी अवश्य भेजें। वी. पी. द्वारा मंगवाने का पता-

जनरल बुक डिपो

अड्डा होशियारपुर, जालन्धर शहर

स्थापित सन् 1875 ई०

सर्वप्राचीन प्रतिष्ठित मशहूर आलम पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान

पंचाँगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय के नियम

गौरवमयी वर्ष प्रवेश 141 वाँ

परम पिता परमात्मा की असीम कृपा से उत्तरी भारत में सर्वप्राचीन एवं सुप्रतिष्ठित मशहूर पण्डित देवी दयालु ज्योतिष संस्थान से छपने वाली सुप्रसिद्ध पंचाँग दिवाकर व मुफीद-आलम जन्त्री, उर्दू, हिन्दी, पंजाबी एवं अन्य ज्योतिष व धार्मिक प्रकाशनों को, पंचाँग प्रवर्त्तक पं० देवी दयाल (लाहौर) से लेकर आज तक की दीर्घावधि में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जो ख्याति प्राप्त हुई है, वह हमारे सुविज्ञ पाठकों से छिपी नहीं।

हमारे ज्योतिष कार्यालय में प्रामाणिक जन्मपत्री एवं वर्षफल आदि शुद्ध गणित द्वारा तैयार किए जाते हैं जिससे आप घर बैठे ही अपना भविष्य जान सकते हैं। **ध्यान रहे,** सही फलादेश का आधार वैज्ञानिक ढंग से बनी शुद्ध जन्मपत्री है। जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्षों जैसे विद्या में सफलता, व्यवसाय एवं कैरियर सम्बन्धी प्रश्न, भाग्योदय, विवाह-सन्तानादि, पारिवारिक सुख, विदेश गमन योग इत्यादि प्रश्नों के उत्तर जन्मपत्री एवं ग्रहों के आधार पर अनुशीलन करके भेजे जाते हैं। यदि ग्रहों सम्बन्धी कोई विघ्न बाधाएं हों, तो अनिष्ट ग्रहों के उपाय भी शास्त्रोक्त विधि पर आधारित बतलाए जाते हैं।

मध्यम जन्मपत्री–संक्षिप्त रूप से अपना भविष्य जानने के लिए जन्म तारीख, जन्म समय, जन्म स्थान, पिता का नाम, दादा का नाम, गोत्र आदि लिखें। जिसकी फीस 801/- रु. होगी। विदेश में उत्पन्न जातक की जन्मपत्री के लिए 1600/- रु.

सम्पूर्ण वृहद् जन्मपत्री–आपके जीवन के महत्त्वपूर्ण पक्ष जैसे-नौकरी, व्यवसाय, शिक्षा, विवाहादि के सम्बन्ध में विशेष रूप से विवरण तथा हस्तलिखित उपाये दिए जाते हैं। बड़ी हस्तलिखित जन्मपत्री बनवाने के लिए जन्म समय, जन्म स्थान, जन्म तारीख, गोत्र, प्रसिद्ध नाम, पिता तथा माता का नाम, दादा का नाम, वर्तमान व्यवसाय आदि लिख भेजें। **वृहद् जन्मपत्री की फीस 1250/- रु. होगी।** विदेश में उत्पन्न जातक के लिए फीस 2100/- रु. अथवा 31 पौंड होगी। डाक व्यय अलग। वृहद् सप्तवर्गी (40 पृष्ठ) जन्मपत्री की फीस 2100/- रु. होगी जिसमें कैरियर सम्बंधी विशेष मार्गदर्शन एवं विशिष्ट उपायों का विवरण होगा।

कम्पयूटर (Computerized) शुद्ध / वैज्ञानिक जन्मपत्री–लेटैस्ट प्रामाणिक सौफ्टवेयर से तैयार कम्प्यूटर जन्मपत्री एवं हस्तलिखित उपायों सहित मध्यम 651/- रु., वृहद् षड्वर्गी फलादेश व हस्तलिखित उपायों सहित 901/- रु.

वर्षफल–आपके लिए आगामी वर्ष कैसा रहेगा? इसके लिए जन्म कुण्डली की फोटो कापी अवश्य साथ भेजें। यदि जन्मपत्री नहीं है, तो जन्म समय, तारीख, सन् ई०, व्यवसाय अंग्रेजी तारीख, स्थान तथा अपनी पारिवारिक व कारोबारी समस्या स्पष्ट लिखते हुए मनपसन्द फूल का नाम लिखें। फलादेश के लिए फीस 601/-रुपए अग्रिम भेजनी होगी। कृपया पूर्ण राशि अग्रिम भेजें। विदेश के लिए 21 पौंड होगी। डाक व्यय अलग।

वायदा एवं शेयर व्यापारियों को विशेष सूचना

वायदा व हाज़िर व्यापारियों के लिए रुई, सोना, चाँदी, कापर, बिनौले, खल, सरसों, गुड़, चने आदि के लिए दैनिक चाँस की एडवांस (Advance) रूप में अर्थात् आने वाले महीने की खास मासिक रिपोर्ट तैयार की जाती है। **एक मास की प्रति (एक) जिन्स की फीस 751/-रु. होगी।** जोकि मनीआर्डर या ड्राफ्ट आने पर लिखित रूप में एक महीने की एडवांस रिपोर्ट भेजी जाएगी।

जो सज्जन/व्यापारी प्रतिदिन रिपोर्ट के अतिरिक्त फोन पर भी बातचीत कर किसी जिन्स या शेयर बाज़ार का रूख जानना चाहते हैं, उनके लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी। फीस (Advance) आने पर ही आगामी मास की रिपोर्ट भेजी जाएगी।

शेयर-बाज़ार–शेयर बाज़ार के उतार-चढ़ाव तथा प्रमुख शेयरों में तेज़ी के चाँस के लिए शेयर बाज़ार की दैनिक अर्थात् एडवांस मासिक रिपोर्ट की फीस 751/-रु.। विस्तृत विज्ञापन **'व्यापारिक वस्तुओं व शेयरों में मन्दा-तेजी'** लेख के प्रारम्भ में देखें। प्रतिदिन फोन पर रुख जानने के लिए फीस 2500/-रु. मासिक होगी।

नोट : गुरुवार और रविवार को अवकाश रहता है। अतः दूर से आने वाले सज्जन फोन द्वारा पहले सम्पर्क करके समय निश्चित कर लें।

M.O./ ड्राफ्ट भेजने के लिए पता : पं. विवेक शर्मा (गणितकर्त्ता) सुपुत्र स्व. पं. पन्ना लाल ज्योतिषी

पंचांगदिवाकर ज्योतिष कार्यालय (पं. देवी दयालु ज्योतिषी एण्ड सन्ज़) चौंक अड्डा होशियारपुर, जालन्धर (पंजाब)-पिन 144008, फोन-0181-2457959